
मायण
तों काण्ड सम्पूर्ण



श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजी कृत-

श्रीरामचरितमानस



(भाषा टीका सहित)

आठों काण्ड सम्पूर्ण

टीकाकार-

श्री ज्वाला प्रसाद जी

श्रीरामचन्द्र-चतुर्दश-बनवास-तिथिपत्र, रामकलेवा, रामायण-माहात्म्य, रामायणजीकी आरती, रामशलाका-प्रश्न, हनुमान-चालीसा, हनुमानजीको आरती, तुलसी-दासजीका जीवन-चरित्र, जन्मकुण्डली, शिवस्तुति, गंगावतरण, सतीसुलोचना, अहिरावणवध, नारान्तकवध आदि (छेपक) कथाओं सहित।

—:०:—

प्रकाशक-

ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली, वाराणसी-१

बम्बई टाइप में छपा

मूल्य ६०)

प्रकाशक :
ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार
कचौड़ीगली, वाराणसी (भारत)

मूल्य ६०

मुद्रक :
ठाकुर प्रसाद प्रेस,
कचौड़ीगली, वाराणसी

त्रेता-काव्य निबन्ध करी शतकोटि रमायन,
इक अच्छर उच्चरे ब्रह्म हत्यादि परायन।
अ्रथ भक्तन सुख देन बहुरि बपु धरि बिस्तारी,
रामचरन रसमत्त रहत अहनिशि ब्रतधारी।
संसार अपार के पार को, सुगमरूप नौका लयो,
कलि कुटिल जीव निस्तार हित, वाल्मीकि तुलसी भयो।

तुलसीदास ने रामचरित-रस बरसाकर संसार को किस प्रकार एक सूत्र में बाँध दिया है यह स्वर्गीय पं० अम्बिकादत्तजी व्यास ने अपने एक कवित्त में इस प्रकार कहा हैं—

डगर-डगर अरु नगर-नगर माँहि।
कहनि पसारी रामचरित अवलि की।।
कहैं 'कवि अम्बादत्त' रामही की लीलनि सों।
भरि दीनो भीर सब चहलि-पहलि की।।
शूद्रन ते ब्राह्मरण लौं मूरख ते पण्डित लौं।
रसना डुलाई सबै 'जय जय' बलि की।।
यम को भगाय पाप-पुञ्ज को नशाय आज।
तुलसी गुसाईं नाक काटि लीनो कलि की।।

यमुना के किनारे 'दूबे-पुरवा नामक' एक ग्राम था। उसमें सभी जाति के लोग रहते थे। उसी में वर्तमान बाँदा जिलान्तर्गत रामपुर नगर के राजगुरु जो पराशर गोत्र के सरयूपारीण ब्राह्मण थे, निवास करते थे। उनका नाम आत्माराम और उनकी स्त्री का नाम हुलसी था। उनके पूर्वज सरयूपार के 'पतउँज' नामक ग्राम के रहने वाले थे जिससे वे पतउँज के दूबे कहलाते थे। आत्माराम एक सत्पात्र ब्राह्मण थे और प्रतिष्ठित पुरुषों में उनका बड़ा सम्मान होता था।। उन्हीं के घर अर्थात् पं० आत्मारामजी की धर्म पत्नी माता हुलसी के गर्भ से सम्वत् १५८९ में तुलसीदासजी का जन्म हुआ। इनका पहला नाम रामबोला था। बाल्यावस्था में ही इनके माता-पिता का स्वर्गबास हो गया था। इससे सूकर क्षेत्र के निवासी साधु नृसिंहदास के यह हाथ लगे जिन्होंने इनका पालन-पोषण किया। साधु-संगति से बाल्यकाल ही में इनको श्रीरामचन्द्रजी के चरण कमलों में प्रेम हो गया। तब महात्मा नृसिंहदास ने उनको अपना शिष्य बना लिया और उपदेश करने लगे।

श्रीरामचरित्र का वर्णन करते समय तुलसीदासजी के सोरठे से यह प्रकट होता है कि बाबा नरहरिदासजी इनके गुरु थे। जैसे—

सोरठा—बन्दौं गुरु-पदकञ्ज, कृपासिन्धु-नररूप हरि ।
महा मोह-तम-पुञ्ज, जासु बचन रविकर निकर ।।

तुलसीदासजी ने महर्षि वाल्मीकि प्रणीत रामचरितमानस का श्रवण पहले पहल गुरुदेव के मुखारविन्दसे स्रोरोंजीमें जो गंगाजीके तटपर है किया था, इसके प्रमाण में यह दोहा मिलता है ।

दोहा—मैं पुनि निज गुरुसन सुनी, कथा सु-शूकर खेत ।
समुझी नहिं तसि बालपन, तब अति रहेउँ अचेत ।।

इस प्रकार नृसिंहदास (नरहरिदास) की छत्र-छाया में तुलसीदासजी पले और शिक्षा प्राप्त करने लगे । माघ सुदी पंचमी संवत् १५९७ शुक्रवार के दिन बाबा नृसिंहदास ने इनका यज्ञोपवीत संस्कार श्रीअवधपुरी में सरयू-तट पर किया । उसी दिन इनको आचार्य ने गायत्री और गुरु ने श्रीराम-महामन्त्र की दीक्षा दी । जब आचार्य तथा पण्डितों ने इनसे गायत्री का उच्चारण करने को कहा, तो गोसाईं जी ने बहुत शुद्ध उच्चारण कर दिया । सुननेवाले दंग हो गए और यह कहने लगे कि, यह बालक तो देखने ही में भोला है, पर इसके पूर्व संस्कार बहुत दिव्य हैं । यज्ञोपवीतादि संस्कार करके शिष्य सहित गुरुवर नृसिंहदासजी काशी को चले । मार्ग में कई स्थानों और कई भगवद्-भक्तों को उपदेश देते हुए कुछ दिन बाद गुरु शिष्य काशी पहुँचे । काशी में पंचगंगा घाट बड़ा मनोहर और पुण्य-सलिला भागीरथी गंगा का केलि-कुंज है । इसी घाट पर शेष सनातन नाम के एक बहुत बड़े महात्मा रहते थे । जब शिष्य सहित गुरुवर नरहरि महाराज उनसे मिले तो उन्होंने महात्मा नरहरिजी से कहा, हे मुनिवर ! आप अपने इस शिष्य को कृपाकर मुझे दे दीजिए तो मैं इसे अपनी सम्पूर्ण विद्यायें सिखला दूँ । अर्थात् वेद, वेदान्त, शास्त्र, पुराण और काव्य आदि की समस्त शिक्षा दूँगा । क्योंकि यह बालक बड़ा होनहार है और यह आपकी कीर्तिको उज्ज्वल करेगा ।

महात्मा सनातन की इस उदारता से मुनिवर नरहरिजी प्रसन्न हो गये । उन्होंने उसी समय हमारे चरित-नायक को महात्मा शेष सनातन को सुपुर्द कर दिया । अब शेष सनातनजी ब्रह्मचारी को शिक्षा देने लगे और नरहरिजी चित्रकूट चले गये । तब ब्रह्मचारी रामबोला (तुलसीदासजी) काशी में पन्द्रह वर्ष तक विद्याध्ययन करते रहे । इस अवधि में उन्होंने वेद शास्त्र और पुराणों का भली-भाँति अध्ययन कर लिया । नम्र और गुरु परायण तो वे स्वभाव से ही थे, अतः विद्या-गुरु की इन्होंने भरपूर सेवा की । उसके थोड़े ही दिन बाद आचार्य शेषसनातनजी का स्वर्गवास हो गया । तुलसीदासजी ने विधिपूर्वक उनकी अंत्येष्ठि-क्रिया करके आचार्य ऋण से मुक्त हो अपनी जन्मभूमि को चले गये ।

उधर राजापुरमें तुलसीदासजी के कुल में कोई नहीं था । बन्धु-बान्धव सब एक तपस्वी के शाप से नष्ट हो गये थे । वहाँ पहुँचने पर गोसाईं जी ने एक भाँट के मुँह से कुल विध्वंस का सारा समाचार सुना । इससे वहाँ अपनी जन्म-भूमि पर पहुँच कर भी बहुत दुःखी हुए । अनन्तर उन्होंने विधिपूर्वक दान दे श्राद्ध किया और पिण्ड-दान दिया । ग्रामवासियोंने उन से मकान बनवाने के लिए आग्रह किया, तो उन्होंने जन्म-भूमि पर एक मकान बनाया । फिर उसी स्थान में रह कर रामायण की कथा कहते हुए जीवन बिताने लगे ।

कुछ लोग ऐसा भी कहते हैं कि, तुलसीदास का ब्याह नहीं हुआ था। पर यह असत्य है। उनका विवाह तारपितो नामक ग्राम में पं० दीनबन्धु सरयूपारी ब्राह्मण की कन्या के साथ हुआ था। वह विवाह करना नहीं चाहते थे, पर कन्या के पिता को एक देवी ने स्वप्न दिया जिससे उन्होंने हठ करके गोस्वामीजी का विवाह किया। तब ज्येष्ठ सुदी १३ सं० १५९३ गुरुवार अर्द्धरात्रिके शुभ मुहूर्त में हमारे चरित-नायकने भाँवरी फेरी। तुलसीदास जी बड़े सरल मति के थे, इससे कोहबर के समय स्त्रियों ने परिहास में उनको पछाड़ दिया। ब्याह के समय ही कन्या विदा हो आई। कन्या सर्वांग सुन्दरी थी। इससे घर पहुँच कर जब ग्राम की स्त्रियों ने उसका मुख देखा तो सब प्रसन्न हो गईं।

अब भार्या के मुख चन्द्र को देखकर तुलसीदास जी निहाल होने लगे और वे दिन रात उसी के रंग में रँगे रहते थे। उनके सामने प्रतिक्षण विषय-सुख की वृष्टि होने लगी। सुन्दर स्त्री के प्रेम में पागल रहते थे। उस सुख में उन्होंने पाँच वर्ष का समय पलक के समान व्यतीत किया। उसके प्रेम में वह इतने उन्मत्त हो रहे थे कि, एक क्षण भी उसको अपने नेत्रों से ओट होने देना नहीं चाहते थे।

इसी समय तुलसीदास की सास बीमार पड़ीं। कन्या को कई बार बुलावा भेजा, पर गोसाईंजी ने उन्हें बिदा न किया। तब अन्तिम बार उनका साला अपनी बहिन को बुलाने आया और कहा माताजी बहुत रुग्ण हैं, आप बिदा कर दीजिए। पर गोसाईं जी ने ध्यान न दिया। तब जब किसी कार्य वश तुलसीदास जी कहीं बाहर चले गये तो स्त्री भाई को साथ लेकर अपने मैके चली गई। इधर घर पहुँच कर जब गोसाईं जी ने देखा कि स्त्री नहीं है, तब विकल हुए। संध्या हो गई थी, सर्वदा सुख-भोग-विलास में पड़े रहनेके कारण एक क्षण भी अकेले घर रहना नहीं चाहते थे। मन को रोकते अवश्य, पर वह अपने सुख को कब भूलता? निदान सोचने-समझने में कुछ रात बीतने पर भी गोस्वामीजी चुप न रह सके और घर पर न रुके। वे यमुना पार करके ससुराल चल पड़े। पैदल चलकर और यमुना को पार करके लगभग अर्धरात्रि के समय वह अपने श्वसुर के द्वार पर पहुँचे। वहाँ सब लोग सो गये थे। तुलसीदास जी ने बहुत चिल्लाकर सबको जगाया। तब पति का शब्द सुनकर स्त्री दौड़ी हुई आई और किवाड़ खोल कर हँसती हुई बोली—

लाज न लागत आप को, दौरे आयो साथ।
धिक-धिक ऐसे प्रेम को, कहा कहहुँ मैं नाथ॥
अस्थि-चर्ममय देह मम, तामें जैसी प्रीति।
तैसी जो श्रीराम महँ, होत न तव भवभीति॥

स्त्री के यह बचन गोसाईंजी के हृदय में बाण की तरह लगे। वह उलटे पाँव वहाँ से लौट पड़े और चलकर काशी आकर विरक्त हो गये। उधर पति के वियोग से स्त्री भी रोती-रोती मूर्छित हो गई, अन्त में यह कहती हुई कि हाय! मैं पतिदेव को सन्मार्ग का उपदेश देने के लिए ही आई थी—अपने पति का ध्यान कर परलोक चल बसी।

इधर गोसाईं जी विरक्त हो अयोध्या, काशी, प्रयाग, चित्रकूट, मथुरा, कुरुक्षेत्र, जगन्नाथ, शूकर क्षेत्र आदि तीर्थों में भ्रमण करने लगे। पर उनका अधिक समय अयोध्या

और काशी में ही बीतता था। कुछ दिन बाद हनुमान जी का दर्शन भी हुआ। वह कथा ऐसे है कि, गोसाईं जी शौच के लिये प्रति दिन गंगा पार जाया करते थे और लौटते हुए लोटे में बचा जल एक आम के वृक्ष की जड़ में डाल दिया करते थे। उस आम पर एक प्रेत रहता था। एक दिन वह उस जल से तृप्त होकर गोसाईं जी के समक्ष आकर बोला कि, मैं तुमसे प्रसन्न हूं, कुछ माँगो। गोसाईं जी ने कहा—रामजी का दर्शन करा दो। प्रेत ने कहा, इतनी शक्ति तो मुझमें नहीं है, पर एक उपाय बतलाता हूँ। अमुक मन्दिर में रामायण की कथा होती है, वहाँ एक मनुष्य मैला कुचैला कपड़ा पहने कोढ़ी के रूप में सबसे पहले आता है और सबसे पीछे जाता है, वही हनुमान जी हैं, तुम उनके चरण पकड़ना, वह दर्शन करा देंगे।

अब गोसाईं जी उस मन्दिर में गए और हनुमान जी के पाँव पर गिरे। तब हनुमान जी ने कहा—अच्छा जाओ, चित्रकूट में दर्शन होगा। इसके विषय में यह दोहा प्रसिद्ध है—

चित्रकूट के घाट पर, भइ सन्तन की भीर।
तुलसिदास चन्दन घिसत, तिलक देत रघुबीर॥

हनुमान जी का आदेश ले गोसाईं जी चित्रकूट चले गये। एक दिन चित्रकूट के बन में घूम रहे थे कि, एक हरिण के पीछे दो सुन्दर राजकुमार राम-श्याम और दूसरे गौर लक्ष्मण धनुष-बाण लिए घोड़ा दौड़ाते जाते दिखाई पड़े। उनके रूप को देखकर गोसाईं जी मोहित हो गये। उसी समय हनुमान जी ने जाकर पूछा कि कुछ देखा ? गोसाईं जी ने कहा—हाँ, दो राजकुमार घोड़े पर चढ़े एक हरिण के पीछे गये हैं। तब हनुमान जी ने कहा, वे ही श्रीरामचन्द्र जी और लक्ष्मण जी थे।

गोसाईं जी ने दोनों मूर्तियों का ध्यान हृदय में धारण किया। इसी प्रकार एक दिन बन में फिरते हुए रामलीला देखी। उस समय श्रीराम जी लंका जीत विभीषण को राज्य दे सीता लक्ष्मण हनुमान आदि सहित अयोध्या जी को लौट रहे थे। लीला समाप्त होने पर तुलसीदास जी लौटे। तब ब्राह्मण रूपधारी हनुमान जी के मिलने पर गोसाईं जी ने कहा—"चलो आपको भी दिखला दें।" वहाँ गए तो चिन्ह तक नहीं देख पड़े। गोसाईं जी को हनुमान जी की बात स्मरण आई। उन्होंने कहा—हमको दर्शन तो हुआ; परन्तु हम भूले ही रहे। यह सुन समझकर तुलसीदास जी बहुत उदास हुए और रोते-रोते सो गये। स्वप्न में हनुमान जी ने कहा कि, कलियुग में किसी को प्रत्यक्ष दर्शन नहीं होता। पछताओ मत ! उठो और भगवान् की सेवा करो, तुम महान् भाग्यशाली हो, जो तुमको दर्शन हुआ, यह सुन गोसाईं जी का चित्त शांत हुआ।

अयोध्याजी में गोसाईं जी रहने लगे। वहाँ इन्होंने सम्वत् १६३१ में रामचरित मानस (रामायण) बनाना आरम्भ किया। इसका प्रमाण यह है—

संवत् सोलह सौ इकतीसा। करौं कथा हरिपद धरि सीसा॥
नवमी भौमवार मधुमासा। अवधपुरी यह चरित प्रकाशा॥

पूरा अरण्यकाण्ड भी न बना चुके थे, इसी बीच वैष्णवों से कलह हो जाने के कारण काशी में आकर निवास किये। परन्तु काशीजी में आतताइयों ने उन्हें बहुत तंग किया और

उनके साथ चोरी, ठगी, बेईमानी, मार-पीट तक कर डाले। परन्तु "संत त्रिटप सरिता गिरि धरणी। परहित हेतु इन्हन की करणी।" प्रकट करके उन्होंने दिखला दिया और दुष्टों को हार खानी पड़ी।

काशी में गोसाईं जी के चार मुख्य स्थान प्रसिद्ध हैं। १ अस्सी (तुलसीघाट)। २ गोपालमन्दिर, ३ प्रह्लादघाट, ४ संकटमोचन हनुमान। काशी में हनुमान जी की १२ मूर्तियाँ गोसाईं जी ने स्थापित की हैं। गोसाईं जी का पहला निवास-स्थान काशी में हनुमान फाटक मुहल्ले में था। यवनों के उपद्रव से गोसाईं जी वहाँ से उठकर गोपालमन्दिर आये। वहाँ से भी वल्लभ कुल वाले गोसाइयों से विरोध हो जाने पर अस्सी आए और मरण पर्यन्त वहीं रहे।

रामचरित-मानस बनाते समय अनेक स्थान पर हनुमान जी इनके सहायक हुए। तुलसीदास जी की कविता से मालूम पड़ता है कि, वे एक क्रोध-हीन, सहनशील, सन्तोषी और शान्तिप्रिय ब्राह्मण थे। तुलसीदास जी के गुणों सहित उनके समग्र जीवन का वर्णन किया जाय तो एक ग्रंथ बन जायगा। इस कारण हमने यहाँ अति संक्षेप से गोसाईं जी का जीवन चरित लिखना उचित समझा है। तुलसीदास जी संस्कृत साहित्य के अतिरिक्त उस समय के हिन्दी साहित्य के भी विज्ञ थे। भाषा कवियों के बहुत से भाव ज्यों के त्यों मिल गये हैं जैसे—"गिरा अनयन नयन बिनु बानी।" नन्ददास जी की पञ्चाध्यायी में "नैननके नहिं बैन, बैनके नैन नहीं हैं॥" इसी भाव को सूरदास ने कहा है कि "जो मेरी अखियाँ रसना होतीं, कहतीं रूप बनाई री।" तुलसीदास जी की कविता उनके मत को भली-भाँति पुष्ट करती है। गोसाईं जी ने अपने निबन्ध को सारगर्भित करने के लिए रामचरितमानस में कहीं वेद और वेदान्त के शब्दों तक को उद्धृत कर यह दरशा दिया है कि भाषा में सब प्रकार की कविता की जा सकती है। उत्तरकाण्ड में गोसाईं जी ने ईश्वर-स्वरूप का वर्णन किया है। यथा—

"सोइ सच्चिदानन्द घन रामा। अज विज्ञान रूप बल धामा।"

जब गोसाईं जी की चर्चा चारों ओर फैल गई, तब काशी के पण्डितों ने शंकर मतानुयायी श्रीमधुसूदन सरस्वती से जाकर कहा कि, तुलसीदास जी की बड़ी प्रशंसा हो रही है। तब उक्त दण्डी स्वामी ने गोस्वामी जी को धन्यवाद देकर यह श्लोक पढ़ा कि—

आनन्दकानने कश्चिज्जंगमस्तुलसीतरुः।
कवितामञ्जरी यस्य, रामभ्रमरभूषिता॥

इस श्लोक का अनुवाद काशिराज महाराज ने इस प्रकार किया है—

दोहा—तुलसी जंगम तरु लसे, आनँद-कानन खेत।
कविता जाकी मञ्जरी, रामभ्रमर-रस लेत॥

श्लोक का अर्थ यह है कि आनंद-कानन अर्थात् काशी में तुलसी एक चलायमान वृक्ष है। उसकी श्रेष्ठ कविता रूपी मंजरी है और वह श्रीरामरूप भ्रमर से भूषित है।

श्रीतुलसीदास जी ने मनुष्यों का चरित्र न लिखने का प्रण किया था, इसी कारण उन्होंने अपना परिचय नहीं लिखा और कहीं-कहीं जो अपने चरित का आभास मात्र दिया भी है तो उसमें अपनी दीनता और हीनता का ही वर्णन किया है।

॥ श्री तुलसीदासजी का जीवन-चरित्र समाप्त ॥

॥ जन्म-कुण्डली ॥

❀ रामजन्म-चक्र ❀



दोहा—रामचन्द्र शुभ लगन गुनि, पत्री सुभग बनाय ।
जाय समीप महीप के, कहत बसिष्ठ बुझाय ॥

❀ भरतजन्म-लग्न ❀



दोहा—रामजन्म जा दिन भयो, तादिन अन्तिम याम ।
मीन लग्न प्रगटे भरत, कैकइ सुत अभिराम ॥

❀ लषन-शत्रुहन-जन्म ❀



दोहा—कर्क लग्न अरु मध्य दिन, दशमी तिथि भृगुवार ।
भये सुमित्रा के लखन, अरु शत्रुहन अवतार ॥

श्रीगणेशाय नमः

श्रीमद् गोस्वामि तुलसीदासजी कृत–



बालकाण्ड

(सर्व-सञ्जीवनी टीका सहित)

।। मङ्गलाचरण ।।

श्लोकाः—वर्णानामर्थसङ्गानां रसानां छन्दसामपि ।
मङ्गलानां च कर्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ।।१।।

श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी ग्रन्थारम्भके लिए सबसे पहले श्रीगणेशजी और सरस्वतीजी की बन्दना करते हुए कहते हैं कि, जो समस्त वर्णों, अर्थ-समूहों, रसों और छन्दोंके तथा सब प्रकारके मङ्गलोंके कर्त्ता हैं, उन श्रीगणेशजी और श्रीसरस्वतीजी को मैं प्रणाम करता हूँ।।१।।

भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तस्थमीश्वरम् ।।२।।

फिर मैं उन भवानी (पार्वती) और श्रीशंकरजी (महादेवजी) की वन्दना करता हूँ कि जो श्रद्धा और विश्वास-स्वरूप (विश्वास की साक्षात् मूर्ति) हैं और जिनकी कृपा के बिना सिद्ध पुरुष भी अपने हृदय में स्थित ईश्वर को नहीं देख पाते ।। २ ।।

वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शङ्कररूपिणम् ।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ।। ३ ।।

अब मैं अपने श्रीगुरुदेवजी की बन्दना करता हूँ कि जो श्रीगुरुनारायण ज्ञानमय, नित्य, (अजर, अमर, अविनाशी) शंकरस्वरूप हैं और जिनके सहारे से वक्र (टेंढ़ा) चन्द्रमा भी सब स्थानों में वन्दनीय होता है ।।३।। यहाँ पर श्रीगोस्वामीजी वक्र चन्द्रमा का उदाहरण इसलिए देते हैं कि जैसे दूज का चन्द्रमा यद्यपि टेंढ़ा होता है तथापि शिवजी के मस्तक पर धारण करनेसे शिवजीके साथ ही वह भी पूजनीय हो जाता है, इसी प्रकार यद्यपि यह मेरी रचना टेंढ़ी अवश्य होगी, किन्तु गुरुदेव का आश्रय पाने से सम्मानित होगी ।

सीताराम-गुणग्राम पुण्यारण्यविहारिणौ ।
वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ ॥४॥

फिर मैं उन आदि कवि महर्षि वाल्मीकि और कपीश्वर श्रीहनुमानजीकी वन्दना करता हूँ कि, जो सर्वदा ही श्रीसीताजी और श्रीरामचन्द्रजीके गुण-ग्राम रूपी पवित्र वन में बिहार करनेवाले अत्यन्त शुद्ध, निर्मल और ज्ञानघन हैं ॥ ४ ॥

उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम् ।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम् ॥५॥

फिर मैं उन जगत्--जननी श्रीरामचन्द्रजी की बल्लभा (प्रिया) श्रीसीताजी के चरण कमलों में प्रणाम करता हूँ कि, जो श्रीसीताजी संसार की उत्पत्ति, स्थिति, संहार का कारण और समस्त क्लेशों को दूरकर सब प्रकार के कल्याण को करनेवाली हैं ॥ ५ ॥

यन्मायावशवर्ति-विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवाः सुराः,
यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाऽहेर्भ्रमः ।
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां,
वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम् ॥६॥

फिर मैं उन राम जैसे नाम से युक्त ईश्वर श्रीरामचन्द्रजी को प्रणाम करता हूँ कि जिनकी माया से समस्त जगत् सहित ब्रह्मादिक देवता भी वशीभूत हो रहे हैं और जिनकी सत्ता से ही यह मिथ्यारूप (रस्सीमें सर्पके समान प्रमाणित होने वाला) जगत् भी सत्य सा प्रतीत हो रहा है, और ऐसे संसार-सागर को पार करनेके लिए जिनके चरण-कमल ही नौका-रूप हैं तथा जो समस्त कारणों से परे और दुःख के हरनेवाले हैं ॥ ६ ॥

नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद् ।
रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि ॥
स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथगाथा ।
भाषानिबन्धमतिमञ्जुलमातनोति ॥७॥

अनेक पुराणों, वेदों और शास्त्रों से सम्मत जो श्रीवाल्मीकीय रामायण है उसका सार लेकर और कहीं-कहीं इसी प्रकार अन्य ग्रन्थों और अनुभवोंसे सार वस्तु लेकर मैं (तुलसीदास) अपने अन्तःकरणके सुखके लिये श्रीरामचन्द्रजी की कथारूप इस अत्यन्त सुन्दर ग्रन्थ की रचना करता हूँ ॥ ७ ॥

सोरठा—जेहि सुमिरत सिधि होइ, गणनायक करिवर बदन ।
करौ अनुग्रह सोइ, बुद्धिराशि शुभगुण सदन ॥१॥

जिनका सुमिरन (जप, तप, स्मरण) करने से सिद्धि (सफलता) प्राप्त होती है और जो बुद्धि के समूह व शुभ गुणों के धाम तथा श्रीमहादेवजी के सब गणों के नायक हैं और जिनका मुख हाथी के समान श्रेष्ठ है, वे श्रीगणेशजी मुझपर कृपा करें ॥ १ ॥

मूक होइ वाचाल, पंगु चढ़ै गिरिवर गहन ।
जासु कृपा सुदयाल, द्रवौ सकल कलिमल दहन ॥२॥

जिनकी कृपा से गूँगा मनुष्य भी बोलनेवाला हो जाता है और पाँवों से लँगड़ा (पंगु) मनुष्य भी ऊँचे दुर्गम पहाड़ की चोटी पर चढ़ जाता है, वही कलिकाल के पापों का नाश करनेवाले भगवान् मुझपर कृपा करें ॥ २ ॥

नील - सरोरुह श्याम, तरुण-अरुण-वारिजनयन ।
करौ सो मम उर धाम, सदा क्षीर-सागर-शयन ॥३॥

जो नीले कमल के समान साँवले रंगवाले हैं, जिनके नवीन खिले हुये कमल के समान लाल नेत्र हैं और जो सर्वदा क्षीर-सागर में निवास करते हैं, वे श्रीहरि भगवान् मेरे हृदय में अपना घर करें ॥ ३ ॥

कुन्द – इन्दु – समदेह, उमा-रमण-करुणा-अयन ।
जाहि दीन पर नेह, करौ कृपा मर्दनमयन ॥४॥

जिनका शरीर कुन्द नामक पुष्प और चन्द्रमा के समान उज्ज्वल है, जिनकी दीनों पर अधिक दया रहती है और जो करुणा एवं दया के घर हैं, वे पार्वती रमण (महादेवजी) मुझ पर कृपा करें ॥ ४ ॥

बन्दौं – गुरु–पद – कंज, कृपासिन्धु नररूपहरि ।
महा - मोहतम - पुञ्ज, जासु वचन रविकर निकर ॥५॥

अब मैं गुरुदेव के कमल रूपी चरणों की वंदना करता हूँ कि जो कृपा के समुद्र मनुष्य रूप से साक्षात् भगवान् हैं और जिनके बचन ही महामोह रूप अन्धकार-पटल को नाश करने के लिए सूर्य की अनेक किरणों के समूह हैं ॥ ५ ॥

बन्दौ गुरु–पद–पदुम–परागा ❀ सुरुचि सुबास सरस अनुरागा
अमिय मूरिमय चूरन चारू ❀ समन सकल-भव-रुज-परिवारू

फिर मैं गुरुदेव के चरण कमलों की उस रज को प्रणाम करता हूँ कि जिस धूलि की कृपा से उत्तम इच्छाओं की वासना का सरस अनुराग उत्पन्न होता है ॥ १ ॥ तथा जो अमृत-मय चूर्ण संसार के आवागमन सहित दुःखों का शमन (नाश) कर देता है ॥ २ ॥

सुकृत शंभु तन विमल विभूती ❀ मंजुल मङ्गल - मोद-प्रसूती
जनमन-मंजु मुकुर-मल-हरणी ❀ किये तिलक गुनगन वशकरणी

जिस पुण्यरूपी धूलि को श्रीमहादेवजी ने भी अपने शरीर में लगाया था, जिससे वह धूलि मन को हरने वाली, मंगल और आनन्द प्रदान करने वाली है ॥ ३ ॥ जो मनुष्यों के मन रूपी शीशे के मैल को हरण करती है, जिसका तिलक करने से समस्त गुणों का समूह आप ही आप वश में हो जाता है ॥ ४ ॥

श्रीगुरुपद-नख मणिगण जोती ❀ सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती

दलन मोह तम सो सुप्रकासू ❀ बड़े भाग उर आवइ जासू

गुरु देव के चरणारविन्दों के नखों में मणियोंकी-सी वह ज्योति है कि जिसका ध्यान करते ही हृदय में दिव्य दृष्टि (अद्‌भुत प्रकाश) हो जाता है ।। ५ ।। उस प्रकाश से मोह और अन्धकार नष्ट हो जाते हैं, परन्तु वह प्रकाश बड़े भाग्य से हृदय में आता है ।। ६ ।।

उघरहिं विमल विलोचन ही के ❀ मिटहिं दोष दुःख भव रजनी के
सूझहिं रामचरित मणिमानिक ❀ गुप्त प्रकट जहँ जो जेहि खानिक

जिस प्रकाशके आते ही हृदयके निर्मल नेत्र खुल जाते हैं और संसाररूपी रात्रिके दुख एवं दोष नष्ट हो जाते हैं ।।७।। फिर तो रामजी की मणि-माणिक रूपी गुप्त और प्रकट लीलायें जो जिस-जिस प्रकार से होती रहती हैं, प्रगट हो जाती हैं अर्थात् दिखलाई पड़ने लगती हैं।।८।।

दोहा—यथा सुअंजन आँजि दृग, साधक सिद्ध सुजान ।
कौतुक देखहिं शैल बन, भूतल भूरि निधान ।।१।।

जैसे सुजान साधक अपनी साधना को सिद्ध करने के लिए नेत्रों में सिद्धांजन को लगा कर वन और पृथ्वी-तल के अनेक कौतुक देखते हैं, ऐसे ही जो गुरुदेव के चरणारविन्दों की धूलि को हृदय के नेत्रों में लगाकर साधन करता है, उसे नाना प्रकार के कौतुक से भरी सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं ।। १ ।।

गुरुपद-रज मृदु मंजुल अंजन ❀ नयन अमिय दृग दोष विभंजन
तेहि करि विमल विवेक विलोचन ❀ बरणौं रामचरित भवमोचन

श्रीगुरुदेवके चरण कमलों की रज स्वच्छ नयनामृत अंजन के समान है और दृष्टि दोष निवारक है ।। १ ।। अतः उसी से मैं अपने ज्ञानरूपी नेत्रों को स्वच्छ करके आवागमन से मुक्त करने वाले श्रीरामचन्द्रजी के पवित्र यश का वर्णन करता हूँ ।। २ ।।

वन्दौ प्रथम महीसुर चरणा ❀ मोहजनित संशय सब हरणा
सुजन समाज सकल गुणखानी ❀ करउँ प्रणाम सप्रेम सुबानी

इसके पहले सब वर्णों में प्रथम ब्राह्मणों के चरणों की वन्दना करता हूँ कि जो मोह-जनित समस्त शंकाओं का समाधान करने वाले हैं ।।३।। साथ ही सत्पुरुषों के उस समाज की भी जो सर्वगुणों की खानि है-मैं प्रेम सहित सुन्दरवाणी से प्रणाम करता हूँ ।। ४ ।।

साधुचरित शुभ सरिस कपासू ❀ निरस विशद गुणमय फल जासू
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा ❀ बंदनीय जेहि जग यश पावा

यद्यपि साधु-चरित (सत्पुरुषों का चरित्र) कपास के समान नीरस अवश्य है; पर उसका फल बड़ा ही गुण देनेवाला है ।। ५ ।। क्योंकि सन्तजन दुःख सह कर भी पराये दोष को छिपाते हैं, इसी से वे हमारे लिए वंदनीय और संसार में यश पाने वाले हैं ।। ६ ।।

मुद—मङ्गल-मय सन्त समाजू ❀ जो जग जङ्गम तीरथराजू
रामभक्ति जहँ सुरसरि धारा ❀ सरसइ ब्रह्मविचार प्रचारा

उन सन्तों का समाज आनन्दमय और शुभप्रद है, जो संसार में चलते-फिरते तीर्थराज प्रयाग के समान पवित्र हैं ॥७॥ क्योंकि उनके मध्य में हर समय राम-भक्ति रूपी गंगा की धारा बहा करती है और उनका वही ब्रह्म विचार का प्रचार, सरस्वतीजी का प्रवाह है॥८॥

विधिनिषेधमयकलिमलहरणी ❀ कर्मकथा रविनन्दिनि वरणी
हरिहर कथा बिराजति बेनी ❀ सुनत सकल मुद मङ्गल देनी

उसमें विधि(ग्रहण करने के योग्य)और निषेध(त्याग करने योग्य)की जो कथा है वही कलियुगके पापोंको नाश करनेवाली यमुना सहित त्रिवेणीका संगम है ॥९॥ जहाँ विष्णु भगवान् और श्रीमहादेवजी की कथा केवल श्रवण मात्र से आनन्द और मंगल देनेवाली है ॥ १० ॥

वट विश्वास अचल निज धर्मा ❀ तीरथराज समाज सुकर्मा
सबहिं सुलभ सब दिन सब देशा ❀ सेवत सादर शमन कलेशा

जहाँ अपने धर्म पर अटल रहना ही विश्वासरूपी अक्षयवट है और जो तीर्थराज अच्छे कर्मों का ही एक समाज है ॥ ११ ॥ वह सबको सब दिनमें और सब देशों में आदर सहित सेवन करने से कष्टों को शान्त कर देता है ॥ १२ ॥

अकथ अलौकिक तीरथराऊ ❀ देइ सद्य फल प्रकट प्रभाऊ

वह अलौकिक सांधु समाजरूपी तीर्थराज सर्वदा ही प्रभाव युक्त फलको प्रत्यक्ष देनेवाला है।

दोहा—सुनि समुझहिं जन मुदितमन, मज्जहिं अति अनुराग ।
लहहिं चारि फल अछत तनु, साधु समाज प्रयाग ॥२॥

जो मनुष्य इसको सुन समझकर प्रसन्न मनसे इसमें गोता लगायेंगे वे इसी शरीरसे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों फल प्राप्त कर लेंगे ऐसा यह साधु समाज रूपी प्रयाग है ॥२॥

मज्जन फल पेखिय ततकाला ❀ काक होहिं पिक बकहु मराला
सुनि आश्चर्य करइ जनि कोई ❀ सत-संगति-महिमा नहिं गोई

इसमें स्नान करने का फल तत्काल देख लीजिये कि कौवा पपीहा और बगुला हंस हो जाता है ॥ १ ॥ कहने का तात्पर्य यह है कि, ऐसे सन्त समाजरूपी तीर्थराज में पड़ा हुआ मलिन मनुष्य भी निर्मल हो जाता है। यह सुनकर कोई आश्चर्य न करे, क्योंकि सत्संगति की महिमा किसी से छिपी हुई नहीं है ॥ २ ॥

बालमीकि नारद घटयोनी ❀निज-निज मुखनकही निजहोनी
जलचर थलचर नभचर नाना ❀ जे जड़ चेतन जीव जहाना

बाल्मीकि, नारद और घटयोनि अर्थात् कुम्भज ऋषि ने अपने २ मुख से अपनी २ होनी अर्थात् अपने जीवन-चरित्र को कह कर बतलाया है कि, सत्संगति के प्रभाव से हम क्या थे और क्या हो गये ? ॥ ३ ॥ इस प्रकार संसार में जो जड़ और चेतन नाना प्रकार के जलचर (जल में विचरने वाले), थलचर (पृथ्वी पर विचरने वाले) और नभचर (आकाश में विचरने वाले पक्षी आदि) जितने जीव हैं ॥ ४ ॥

मति कीरति गति भूति भलाई ❀ जब जेहि जतन जहाँ जेहि पाई
सो जानब सतसंग प्रभाऊ ❀ लोकहु वेद न आन उपाऊ

जिसने जब और जहाँ जिस उपायसे जो बुद्धि, कीर्ति, गति, बड़ाई, सम्पदा और भलाई पायी है, वह सत्संगति का ही प्रभाव जानो, इसके लिए लोक और वेदमें अन्य उपाय नहीं है।।६।।

बिनु सतसंग विवेक न होई ❀ रामकृपा बिनु सुलभ न सोई
सतसंगति मुद-मंगल मूला ❀ सोइ फल सिधि सब साधन फूला

बिना सत्संग के ज्ञान नहीं होता और वह बिना रामजी की कृपा के सुलभ नहीं होता। सत्संगति मंगल और प्रसन्नता का मूल है और वही सब साधनों का सिद्धिरूप फूल फल है।

शठ सुधरहिं सतसंगति पाई ❀ पारस परसि कुधातु सुहाई
विधिवश सुजन कुसङ्गति परहीं ❀ फणिमणिसम निज गुण अनुसरहीं

सत्संगको पानेसे शठ अर्थात् मूर्ख मनुष्य भी सुधर जाते हैं जैसे पारस मणिको पाकर लोहा सोनाके रूपमें होकर सुधर जाता है।।९।। सम्भव है कि सत्पुरुष भी दैवयोगसे कुसंगति में जा पड़ें किन्तु वे वहाँ भी सर्प की मणि के समान ही अपने गुणों को धारण करते हैं ।। १० ।।

विधि हरि हर कवि कोविद बानी ❀ कहत साधु महिमा सकुचानी
सो मोसन कहि जात न कैसे ❀ शाकवणिक मणिगुण गण जैसे

सत्पुरुषों की महिमा वर्णन करने में तो ब्रह्मा, विष्णु, महेश और कवि (वाल्मीकि) कोविद (बृहस्पतिजी) और वाणी (सरस्वतीजी) भी सकुचाती हैं ।।११।। उसको मैं ऐसे ही नहीं कह सकता हूँ, जैसे शाक बेचनेवाला मणियों के गुणों को नहीं कह सकता है ।। १२ ।।

दोहा—बंदौ संत समान चित, हित अनहित नहिं कोउ ।
अंजुलि गत शुभ सुमन जिमि, सम सुगंध कर दोउ ।।३।।

इसलिए मैं उन साधु पुरुषोंकी बंदना करता हूँ कि, जो संसारमें समान चित्तसे रहते हैं और जिनके लिए न कोई शत्रु है, न कोई मित्र है। जैसे अंजलिमें रखे हुए सुगन्धित पुष्प दोनों हाथों को बराबर सुगन्धित करते हैं, न किसी को कम, न किसी को अधिक ।।३।। वैसे ही--

संत सरल चित जगत हित, जानि सुभाव सनेहु ।
बाल विनय सुनि करि कृपा, रामचरणरति देहु ।।४।।

उन सन्तों का चित्त बड़ा ही सरल सीधा और लोकोपकारी होता है, उनको ऐसा जान कर मैं उनसे सप्रेम विनती करता हूँ कि, हे सत्पुरुषों ! कृपया मुझ बालक की प्रार्थना को सुनकर श्रीरामचन्द्रजी के चरणों में प्रीति दें ।। ४ ।।

बहुरि वन्दि खलगण सति भाये ❀ जे बिनु काज दाहिनेहु बायें
परहित हानि लाभ जिन केरे ❀ उजरे हर्ष विषाद बसेरे

फिर मैं उन दुष्टजनों की सच्चे भाव से वन्दना करता हूँ कि जो व्यर्थ ही में बायें और दाहिने अर्थात् मित्र और शत्रु हो जाते हैं ।।१।। जिनके लिए दूसरों की हानि करना ही अपना लाभ है और किसी के उजड़ जाने पर हर्ष करते और बसा हुआ देखकर विशेष दुखी होते हैं ।।२।।

हरि हर यश राकेश राहु से ❁ पर अकाज भट सहसबाहु से
जे परदोष लखहिं सह साखी ❁ परहित घृत जिनके मन माखी

वे हरि (श्रीविष्णु भगवान्) हर (श्रीमहादेवजी) के यशरूपी चन्द्रमा को ग्रसने के लिए राहु के समान हैं और पराये का अकाज करने में सहस्रबाहु के समान योद्धा हैं ।।२।। जो दूसरों में दोष निकालने के लिए हजार नेत्रवाले इन्द्र के समान हैं और पराये हितरूपी घृत को बिगाड़ने में जिनका मन मक्खी रूप हो जाते हैं ।। ४ ।।

तेज कृशानु रोष महिषेशा ❁ अघ-अवगुण-धन-धनिकधनेशा
उदयकेतु सम हित सबही के ❁ कुम्भकरण सम सोवत नीके

उन खलों का तेज अग्नि के समान प्रचण्ड और क्रोध यमराज के समान है और जो पाप तथा अवगुणों के धन से मानों कुबेर के समान धनी हैं ।। ५ ।। जिनका उदय होना वैसे ही उपद्रव कारक है जैसे केतु नामक तारा के उदय से अवश्य ही उपद्रव होता है, इसलिए उनका कुम्भकरण के समान सोते रहना ही अच्छा है ।। ६ ।।

पर अकाज लगि तनु परिहरहीं ❁ जिमि हिमउपल कृषीदलिगरहीं
बन्दौं खल जस शेष सरोषा ❁ सहसबदन बरणै परदोषा

इस प्रकार वे दुष्टजन पराया काम बिगाड़नेमें अपना शरीरतक त्याग देते हैं, जैसे खेती का नाश करने के लिये पाला (ओले) अपने आप भी गल जाते हैं ।।७।। इसलिए उन दुष्टजनों को शेषजी के समान जानकर मैं उनकी वन्दना करता हूँ, क्योंकि श्रीशेषजी तो विष्णु भगवान् का गुणानुवाद करने के लिए सहस्र मुख धारण किये हैं, परन्तु दुष्ट तो पराये छिद्रान्वेषण के लिए ही केवल एक मुख से हजारों मुख की बातें करते हैं ।। ८ ।।

पुनि प्रणवौं पृथुराज समाना ❁ पर अघ सुनइ सहसदश काना
बहुरि शक्रसम बिनवौं तेही ❁ संतत सुरा नीक हित जेही

फिर मैं उन खलों को राजा पृथु के समान जानकर वन्दना करता हूँ कि जो पराये पाप को सुनने के लिये दश हजार कान रखते हैं ।। ९ ।। फिर मैं उनको देवराज इन्द्र के समान जानकर बिनती करता हूँ कि जिनको देवताओं की सेना अति प्रिय है ऐसे ही खलों को मदिरा प्रिय होती है ।। १० ।।

बचन बज्र जेहि सदा पियारा ❁ सहस नयन परदोष निहारा

जैसे इन्द्र को अपना वज्र प्यारा होता है, वैसे ही खलों को वज्र के समान अपने कड़ुवे बचन प्रिय होते हैं, और वे इन्द्र के जैसे हजारों नेत्रों से पराया अमङ्गल देखा करते हैं ।।११।।

दोहा—उदासीन-अरि-मीत-हित, सुनत जरहिं खल रीति ।
जानु पाणियुग जोरिकर, बिनती करउँ सप्रीति ।।५।।

खलों की यह रीति है कि जब वे उदासीन मित्र अथवा हित किसी का भला सुनते हैं तो ईर्ष्या की आँच से जल जाते हैं। इसलिए मैं दोनों हाथ जोड़कर प्रेम-सहित इनकी विनती करता हूँ ।। ५ ।।

मैं आपन दिशि कीन्ह निहोरा ❀ तिन्ह निज ओर न लाउब भोरा
बायस पलिअहि अति अनुरागा ❀ होंहिं निरामिष कबहुँ कि कागा

यह प्रार्थना तो मैंने अपनी ओर से कर दी परन्तु वे भूलकर भी इसका ख्याल नहीं करेंगे ।।१।। जैसे कौवे को चाहे कितने भी प्रेम से पालो पर क्या वह कभी निरामिष हो सकता है ? ।।२।।

बन्दौं संत असज्जन चरणा ❀ दुःखप्रद उभय बीच कछु बरणा
बिछुरत एक प्राण हरि लेहीं ❀ मिलत एक दारुण दुख देहीं

अब मैं सन्तों और दुष्टों के भी चरणों को प्रणाम करता हूँ, यद्यपि ये दोनों ही दुखदायी हैं तथापि उनमें कुछ अन्तर कहा गया है ।।३।। एक सन्त हैं जो बिछुड़ने के समय प्राण हर लेते हैं और दूसरे दुष्ट जन मिलते ही दारुण दुःख देते हैं ।। ४ ।।

उपजहिं एक संग जलमाहीं ❀ जलज जोंक जिमि गुण बिलगाहीं
सुधा सुरा सम साधु असाधू ❀ जनक एक जग जलधि अगाधू

जल में कमल और जोंक साथ ही उपजते हैं पर उनके गुण अलग २ होते हैं, ऐसे ही सन्त और असन्तों के भी गुण अलग २ होते हैं ।। ५ ।। देखिए, अमृत और मदिरा का पिता समुद्र एक ही है पर उससे उत्पन्न दोनों के गुण समान जगत् में पृथक् २ हैं। इसी प्रकार सन्त और असन्त में भी अन्तर है, सन्त अमृत के समान हैं और असन्त मदिरा के समान हैं ।।६।।

भल अनभल निज निज करतूती ❀ लहत सुयश अपलोक विभूती
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू ❀ गरल अनल कलिमल सरि व्याधू

अपनी २करनी से सब भले और बुरे संसार में सुन्दर यश और अपयश को पाते हैं ।।७।। सन्त जन अमृत और गंगा के समान हैं, दुष्ट लोग विष, अग्नि और कर्मनाशा नदी के समान हैं ।।८।।

गुण अवगुण जानत सब कोई ❀ जो जेहि भाव नीक तेहि सोई

इस प्रकार गुण और अवगुण को सब कोई जानते हैं, परन्तु जिसको जो अच्छा लगता है, उसके लिए वही अच्छा है ।। ९ ।।

दोहा—भले भलाई पै लहहिं, लहहिं निचाई नीच।
सुधा सराहिय अमरता, गरल सराहिय मीच ।।६।।

भले भलाई से शोभा पाते हैं और नीच को उसकी नीचता ही शोभा देती है। जैसे अमृत अमरत्व प्रदान करता है और विष की सराहना इसीलिए है कि वह तत्काल मार डालता है ।।६।।

खल गह अगुण साधु गुणगाहा ❀ उभय अपार उदधि अवगाहा
तेहि ते कछु गुण दोष बखाने ❀ संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने

दुष्टजन तो अवगुणों को और सन्तजन गुणों को ग्रहण करते हैं परन्तु इन दोनों की गति को

अथाह समुद्रके समान अपार समझना चाहिये।।१।।इसीसे मैंने इनके गुण और दोषका थोड़ा विवेचन किया है, क्योंकि बिना पहिचाने इनका संग्रह और त्याग नहीं हो सकता ।। २ ।।

भलेउ पोच सब विधि उपजाये ❀ गनि गुण दोष वेद बिलगाये
कहहिं वेद इतिहास पुराना ❀ विधिप्रपञ्चगुण अवगुण साना

ब्रह्माजी ने ही सब भले और बुरे को उत्पन्न किया है और वेदने गणना करके अर्थात् उनके गुण दोषों का निश्चय करके अलग-२ किया है ।। ३ ।। इस बात को वेद इतिहास और पुराण भी कहते हैं कि विधाता का सारा प्रपञ्च गुण अवगुण से मिला हुआ है ।। ४ ।।

दुख सुख पाप पुण्य दिन राती ❀ साधु असाधु सुजाति कुजाती
दानव देव ऊँच अरु नीचू ❀ अमिय सजीवन माहुर मीचू

सुख-दुःख, पुण्य-पाप, रात-दिन, साधु-असाधु, सुजाति-कुजाति ।।५।। देवता-दानव, ऊँच-नीच, अमृत-विष, संजीवनी बूटी और मृत्यु ।। ६ ।।

माया ब्रह्म जीव जगदीशा ❀ लक्षि अलक्षि रङ्क अवनीशा
काशी मग सुरसरि क्रमनासा ❀ मरु मालव महिदेव गवासा
स्वर्ग नर्क अनुराग विरागा ❀ निगमागम गुण दोष विभागा

माया और ब्रह्म, जीव और ईश्वर, लक्ष और अलक्ष, दरिद्र और राजा ।।७।। काशी और मगध देश, गंगा और कर्मनाशा, मरु देश और मालवा देश ।।८।। ब्राह्मण और कसाई, स्वर्ग और नरक, प्रीति और वैराग्य--इन गुणों और दोषोंका विभाग वेदों और शास्त्रों ने किया है ।।९।।

दोहा—जड़ चेतन गुण दोषमय, विश्व कीन्ह करतार ।
संत हंस गुण गहहिं पय, परिहरि बारि बिकार ।।७।।

यह सब लोग भली भाँति जानते हैं कि श्रीब्रह्माजी ने इस जड़ चेतन रूप जगत् को गुण दोषमय बनाया है। तो भी जिस प्रकार हंस जल को त्याग कर दूध ही ग्रहण करता है, ऐसे ही सन्तजन दोष को त्याग कर गुण को ही ग्रहण करते हैं ।। ७ ।।

अस विवेक जब देइ विधाता ❀ तब तजि दोष गुणहिं मन राता
काल स्वभाव कर्म बरिआई ❀ भलेउ प्रकृति वश चूक भलाई

परन्तु जब विधाता ऐसा ज्ञान देते हैं, तभी मन दोषों को त्याग गुणों को ग्रहण करता है ।।१।। काल कर्म स्वभाव की प्रेरणा से कभी भले पुरुष भी प्रकृति के वश होकर सन्मार्ग से चूक जाते हैं ।। २ ।।

सो सुधारि हरिजन इमि लेहीं ❀ दलि दुख दोष विमल यश देहीं
खलहु करहिं भल पाय सुसंगू ❀ मिटहिं न मलिन स्वभाव अभंगू

किन्तु उसे भगवान् के भक्त सुधार लेते हैं तथा दुःखों और दोषों का दलन कर पवित्र यश देते हैं ।।३।। वैसे ही दुष्टजन भला संग पाकर भलाई तो करते हैं, पर उनका जो भंग न होने वाला मलिन स्वभाव है, वह नहीं मिटता ।। ४ ।।

लखि सुवेष जगवञ्चक जेऊ ❀ वेष प्रताप पूजियत तेऊ
उघरे अन्त न होय निबाहू ❀ कालनेमि जिमि रावण राहू

अच्छा वेश बनाकर वे भले ही जगत् को ठग लें, क्योंकि वेश के प्रताप से उनकी पूजा होतीं है ।।५।। परन्तु अन्त में उनकी पोल अवश्य खुल जायगी और उस पोल के खुलते ही उनका अन्त हो जायगा,निर्वाह नहीं होगा -जैसे कालनेमि,रावण और राहु का निर्वाह नहीं हुआ ।।६।।

किये कुवेष साधु सनमानू ❀ जिमि जग जामवन्त हनुमानू
हानि कुसङ्ग सुसङ्गति लाहू ❀ लोकहु वेद विदित सब काहू

इसके विपरत, साधु पुरुष जो सच्चे सत्पुरुष हैं चाहे कैसे भी कुवेश में क्यों न रहें पर उनका सर्वत्र सम्मान ही होता है, जैसे जामवन्त और हनुमान आज भी जगत् में पूजनीय हैं ।।७।। कुसंगति से हानि और अच्छी संगति से तो लाभ ही है, यह बात वेद में भी कही गई है और संसार में भी सब लोग अच्छी तरह जानते हैं ।।८।।

गगन चढ़ै रज पवन प्रसङ्गा ❀ कीचहिं मिलै नीच जल संगा
साधु असाधु सदन शुक सारी ❀ सुमिरहिं राम-देहिं गनि गारी

जैसे धूल वायु के सहारे आकाश पर चढ़ जाती है और जब वह नीचे गिरने वाले जल का साथ करती है तब वह कीचड़ बन जाती है ।।९।। जैसे तोता, मैना, साधु और असाधु सबके घर में रहते हैं अर्थात् पाले जाते हैं, परन्तु साधु के घर में पलनेवाले राम-राम कहते हैं और असाधु के घर में पलने वाले गिन-गिन कर गली देते हैं ।। १० ।।

धूम कुसङ्गति कारिख होई ❀ लिखिय पुराण मञ्जुमसि सोई
सोइ जल अनल अनिल संघाता ❀ होइ जलद जग जीवन दाता

देखिए, धुआँ एक ही है परन्तु वह कुसंगति के कारण कारिख बन कर पात्रों को और अन्यान्य पदार्थों को बिगाड़ देता है और सुसंगति पाकर वही स्याही बन कर शास्त्र और पुराणें को लिखता है ।।११।। फिर वही धुआँ अग्नि और पवन के संसर्ग से मेघ बन कर जगत् का जीवनदाता हो जाता है ।। १२ ।।

दोहा—ग्रह भेषज जल पवन पट, पाय कुयोग सुयोग ।
होहिं कुवस्तु सुवस्तु जग, लखहिं सुलक्खन लोग ।।८।।
सम प्रकाश तम पाख दुहुँ, नाम भेद विधि कीन्ह ।
शशि पोषक शोषक समुझि, जग यश अपयश दीन्ह ।।९।।
जड़ चेतन जग जीव जे, सकल राम मय जानि ।
बन्दौं सबके पद कमल, सदा जोरि जुग पानि ।।१०।।

देव दनुज नर नाग खग, प्रेत पितर गंधर्व।
बंदौं किन्नर रजनिचर, कृपा करहु अब सर्व ॥११॥

सूर्य और चन्द्रमा आदि ग्रह, औषधि, जल, वायु और वस्त्र ये सब कुयोग और सुयोग को प्राप्त होने से ही संसार में अच्छे और बुरे हो जाया करते हैं—इसको उत्तम पुरुष भली प्रकार जानते हैं ॥८॥ यद्यपि चन्द्रमाका प्रकाश दोनों पक्षोंके गर्भमें बराबर बना रहता है, पर विधाता ने नामसे भेद कर दिया है, कारण यह कि जो पक्ष चन्द्रमा का पोषक है उसको शुक्लपक्ष कहकर जगत् ने उसका यश बढ़ाया है और जो पक्ष चन्द्रमा को हीन बनानेवाला है, उसका नाम कृष्ण-पक्ष रखकर जगत् ने उसको अपयश दिया है ॥९॥ इससे मैं जड़ और चेतन संसार में जितने जीव हैं सबको राममय जानकर उन सबके कमलरूपी चरणों की सर्वदा हाथ जोड़कर वंदना करता हूँ ॥१०॥ फिर मैं समस्त देवता, दानव, नर, नाग, पक्षी, प्रेत, पितर, गन्धर्व और किन्नर तथा राक्षस आदि सबकी वन्दना करता हूँ कि सब लोग मुझपर कृपा करें ॥११॥

आकर चारि लाख चौरासी ❋ जाति जीव नभ जल थल बासी
सीय राम मय सब जग जानी ❋ करौं प्रणाम जोरि जुग पानी

इस प्रकार जो चार खानके (जरायुज, अण्डज, स्वेदज, उद्भिज) कुल चौरासीलाख जीव जल थल और आकाश में रहते हैं ॥१॥ मैं उस सारे संसार को सीताराम मय जान दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूँ ॥ २ ॥

जानि कृपा करि किंकर मोहू ❋ सब मिलि करहु छाँड़ि छल छोहू
निज बुधि बल भरोस मोहिं नाहीं ❋ ताते विनय करौं सब पाहीं

मुझको सब लोग अपना दास जानकर छल छोड़ और एक साथ मिलकर मेरे ऊपर कृपा करो ॥३॥ क्योंकि मुझे अपनी बुद्धि के बलका कुछ भी भरोसा नहीं है, इसीसे आप सब लोगों से विनय करता हूँ ॥ ४ ॥

करन चहौं रघुपति गुण गाहा ❋ लघुमति मोरि चरित अवगाहा
सूझ न एकौ अंग उपाऊ ❋ मम मति रंक मनोरथ राऊ

मैं श्रीरामचन्द्रजी के गुणों की गाथा करना चाहता हूँ अर्थात् रामायण लिखना चाहता हूँ; पर मेरी बुद्धि बहुत छोटी है और श्रीरामचन्द्रजी का चरित्र अति अथाह है ॥५॥ इससे मुझे कोई अङ्ग और उपाय नहीं सूझता (काव्य के अनेक अङ्ग हैं, जिसमें मुझे एकका भी ज्ञान नहीं है) क्योंकि मेरी बुद्धि तो महादरिद्र है और मनोरथ राजाके समान हैं ॥६॥

मति अति नीच ऊँच रुचि आछी ❋ चहिय अमिय जग जुरै न छाँछी
क्षमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई ❋ सुनिहहिं बाल बचन मन लाई

मेरी बुद्धि तो अत्यन्त नीच है और इच्छा बहुत बड़ी है, इच्छा तो अमृत की है और यहाँ जगत् में छाछ (मट्ठा) भी नहीं मिलता, तब कैसे बने ? इस कारण सज्जन पुरुष मेरी इस धृष्टता को क्षमा करेंगे और मुझ बालक की बात को मन लगाकर सुनेंगे ॥८॥

ज्यों बालक कह तोतरि बाता ❀ सुनहिं मुदित मन पितु अरु माता
हँसिहहिं कूर कुटिल कुविचारी ❀ जे परदूषण भूषण धारी

जैसे बालककी तोतली बातोंके कहने पर उसे माता और पिता मन लगाकर सुनते हैं उसी प्रकार मेरी कविता को बालकपन के समान जानकर आशा है लोग श्रवण करेंगे, पर उसमें जो पराये दोषों का भूषण धारण करने वाले क्रूर, कुटिल और कुविचारी हैं वे तो हँसेंगे ही ।।

निज कवित्त केहि लाग न नीका ❀ सरस होउ अथवा अति फीका
जे पर भणिति सुनत हरषाहीं ❀ ते वर पुरुष बहुत जग नाहीं

यों तो अपनी कविता किसे अच्छी नहीं लगती, चाहे वह सरस हो अथवा निरी फीकी परन्तु जो परायेकी रचना सुनकर प्रसन्न होते हैं, ऐसे उत्तम पुरुष संसार में अधिक नहीं हैं।

जग बहु नर सर सरि सम भाई ❀ जे निज बाढ़ बढ़हिं जल पाई
सज्जन सुकृत सिन्धु सम कोई ❀ देखि पूर बिधु बाढ़हिं जोई

हे भाई ! संसार में नदी और तालाब के समान ऐसे बहुतसे मनुष्य हैं जो जल को पाकर अपनी बाढ़ से बढ़ जाते हैं ।।१३।। ऐसे पुण्यात्मा और सज्जन समुद्र के समान कोई-कोई हैं जो कि पूर्ण चन्द्रमा को देखकर बढ़ते हैं ।।१४।।

दोहा—भाग छोट अभिलाष बड़, करउँ एक विश्वास ।
पैहैं सुख सुनि सुजन जन, खल करिहैं उपहास ।।१२।।

मेरा भाग्य तो छोटा है और अभिलाषा बड़ी है किन्तु एक विश्वास है कि सज्जन पुरुष मेरी बातें सुनकर सुख पावेंगे और दुष्ट लोग हँसी करेंगे ।।१२।।

खल परिहास होय हित मोरा ❀ काक कहहिं कलकंठ कठोरा
हंसहि बक दादुर चातकही ❀ हँसहिं मलिन खल विमलबतकही

परन्तु दुष्टजनों की हँसी और निन्दा से मेरा हित ही होगा, क्योंकि कौवे कोकिल के कंठ को कठोर ही कहते हैं ।।१।। इसी प्रकार हंस को बगुला और पपीहे को मेढ़क भी हँसते हैं, ऐसे ही मलिन स्वभाववाली इस सुन्दर वार्ता की हँसी करेंगे ।।२।।

कवित रसिक न रामपद नेहू ❀ तिनकहँ सुखद हास्य रस येहू
भाषा भणिति मोरि मति भोरी ❀ हँसिबे योग हँसे नहिं खोरी

फिर जो लोग कविता के रसके रसिक नहीं हैं और जिनका श्रीरामचन्द्रजी के चरणों में स्नेह नहीं है उनको तो यह हास्यरस युक्त होकर सुख देनेवाली है ।।३।। एक तो यह कविता भाषा में हो रही है दूसरे मेरी बुद्धि भोरी है, इससे यह हँसने ही योग्य है, तब यदि कोई हँसे तो क्या अनुचित है ? ।।४।।

प्रभुपद प्रीति न सामुझि नीकी ❀ तिनहिं कथा सुनि लागिहि फीकी
हरिहर पद रति मति न कुतरकी ❀ तिनकहँ मधुर कथा रघुबर की

क्योंकि जिनका भगवान्‌के चरणोंमें प्रेम नहीं है और समझ अच्छी नहीं है उनको तो यह कथा सुनकर फीकी ही लगेगी ॥५॥ परन्तु जिनको श्रीरामचन्द्रजी और श्रीमहादेवजी के चरणों में प्रेम है और जिनकी बुद्धि कुतर्कवाली नहीं है उनको श्रीरामचन्द्रजी की यह कथा अवश्य मीठी लगेगी ॥६॥

राम भक्ति भूषित जिय जानी ❀ सुनिहहिं सुजन सराहि सुबानी
कबि न होउँ नहिं चतुर प्रबीनू ❀ सकल कला सब बिद्या हीनू

मुझे आशा है कि मेरी कविताको रामभक्तिसे अलंकृत जानकर सज्जन लोग हृदयसे सुन्दर वाणी में प्रशंसा करेंगे ॥७॥ क्योंकि न तो मैं कवि हूँ और न बोलने में चतुर, किन्तु सब प्रकार की कलाओंसे रहित हूँ ॥८॥

आखर अर्थ अलंकृत नाना ❀ छन्द प्रबन्ध अनेक विधाना
भावभेद रसभेद अपारा ❀ कवित दोष गुण विविध प्रकारा

इतना अवश्य जानता हूँ कि काव्य में शब्द अर्थ और अलंकार नाना प्रकार के होते हैं और छन्द-प्रबन्ध भी अनेक प्रकार के होते हैं ॥९॥ और उसमें भाव-भेद और रस-भेद भी हैं तथा काव्य के दोष और गुण अनेक प्रकार के होते हैं ॥१०॥

कवित विवेक एक नहिं मोरे ❀ सत्य कहौं लिखि कागद कोरे

परन्तु क्या कहूँ; मुझमें तो काव्य का एक भी ज्ञान नहीं है, केवल कोरा कागज सामने है, इसपर लिखकर सत्य कह दे रहा हूँ ॥११॥

दोहा—भणिति मोरि सब विधि रहित, विश्व विदित गुण एक।
सो विचारि सुनिहहिं सुजन, जिनके विमल विवेक॥१३॥

यद्यपि मेरी कविता समस्त गुणोंसे रहित है तो भी इसमें संसार विदित एक गुण अवश्य है। यह विचार कर जिनको निर्मल ज्ञान है-ऐसे सज्जन मनुष्य सुनेंगे ही ॥१३॥

एहि महँ रघुपति नाम उदारा ❀ अति पावन पुराण श्रुति सारा
मंगल भवन अमंगल हारी ❀ उमा सहित जेहि जपत पुरारी

इसमें उदार श्रीरामचन्द्रजी का नाम है जो बड़ा पवित्र और वेदों पुराणोंका सार है वह(नाम) मंगलका घर और अमंगलको हरनेवाला है जिसको कि पार्वती सहित महादेवजी जपा करते हैं।

भणिति विचित्र सुकविकृत जोऊ ❀ रामनाम बिनु सोह न सोऊ
बिधुबदनी सब भाँति सँवारी ❀ सोह न बसन बिना बर नारी

मेरा ऐसा ख्याल है कि चाहे कोई कैसे भी सुकवि की बनाई हुई विचित्र कविता क्यों न हो, वह भी रामनाम के बिना शोभा नहीं पाती ॥ ३ ॥ जैसे चन्द्रमुखी स्त्री चाहे कितने भी भले प्रकारसे शृङ्गार क्यों न करले, पर बिना वस्त्रोंके उसकी भी शोभा नहीं होती ॥४॥

सब गुन रहित कुकविकृत बानी ❀ रामनाम यश अंकित जानी
सादर कहहिं सुनहिं बुध ताही ❀ मधुकर सरिस सन्त गुणग्राही

इसके विपरीत कैसे भी कुकविकी बनाई हुई गुण रहित कविता क्यों न हो यदि उसमें राम नाम अंकित है ।।५।। तो बुद्धिमान् और पण्डित जन उसी को आदर सहित कहते और सुनते हैं क्योंकि सत्पुरुष तो मधुकर (भौंरे) के समान गुणका ग्रहण करते हैं ।।६।।

यदपि कवित गुण एकौ नाहीं ❀ राम प्रताप प्रगट इहि माहीं
सोइ भरोस मोरे मन आवा ❀ को न सुसङ्ग बड़प्पन पावा

यद्यपि मुझमें काव्यका एक भी गुण नहीं है तो भी इसमें श्रीरामचन्द्रजीका प्रताप प्रकट है यही भरोसा मेरे मनमें है, क्योंकि अच्छी संगत को पाकर कौन बड़ा नहीं हो जाता? ।।८।।

धूमहु तजै सहज करुआई ❀ अगर प्रसङ्ग सुगन्ध बसाई
भणिति भदेस वस्तु भलि वरणी ❀ रामकथा जग मंगल करणी

जैसे धुयेंका स्वभाव कड़ुवा होता है पर अगर के प्रसङ्ग से वह भी अपनी कड़ुवाई छोड़ सुगन्धित हो जाता है ।।९।। इसी प्रकार मेरी कविता बहुत भद्दी तो है; किन्तु इसमें संसार का मंगल करनेवाली श्रीरामचन्द्रजी की कथा रूपी उत्तम वस्तुका वर्णन किया है ।।१०।।

छन्द—मंगल करनि कलिमल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की ।
गतिकूर कविता सरित की ज्यों परम पावन पाथ की ।।
प्रभु सुयश सङ्गति भणिति भलि होइहिं सुजन मन भावनी ।
भव अंग भूति मसान की सुमिरत सुहावनि पावनी ।।१।।

श्रीतुलसीदासजी कहते हैं कि श्रीरघुनाथजी की कथा मंगल करने वाली और कलियुग के पापों का नाश करनेवाली है । इस कविता रूपी नदी की गति टेढ़ी तो है, किन्तु गंगाजी की तरह परम पवित्र यह प्रभु श्रीरामचन्द्रजी के सुन्दर यश की संगति से अच्छी हो जायगी और सत्पुरुषों के मन को वैसे ही अच्छी लगेगी जैसे श्मशान की विभूति अपवित्र होती है परन्तु वही श्रीमहादेवजी के शरीर में लगकर स्मरण करने योग्य सुन्दर और पवित्र हो जाती है ।।१।।

दोहा—प्रिय लागिहिं अति सबहि मम, भणिति रामयश सङ्ग ।
दारु विचार कि करइ कोउ, बंदिय मलय प्रसङ्ग ।।१४।।
श्याम सुरभि पय विशद अति, गुणद करहिं तेहि पान ।
गिरा ग्राम्य सियराम यश, गावहिं सुनहिं सुजान ।।१५।।

श्रीरामचन्द्रजी के यश के संग से मेरी यह कविता सबको प्यारी लगेगी क्योंकि चन्दन के निकटवर्ती काष्ठका विचार कोई नहीं करता और वह भी मलय के प्रसंगसे वन्दनीय माना जाता है ।।१४।। जैसे काली गौ का दूध लाभ दायक समझ कर लोग पीते हैं ऐसे ही मेरी भाषा गँवारू तो है, परन्तु श्रीसीतारामजीका यश होने से ज्ञानी जन इसे गावेंगे और सुनेंगे ।।१५।।

मणि माणिक मुक्ता छबि जैसी ❀ अहि गिरि गज शिर सोह न तैसी
नृप किरीट तरुणीतनु पाई ❀ लहै सुयश शोभा अधिकाई

मणि माणिक और मुक्ता की जैसी शोभा है—वैसी सर्प पर्वत और हाथी के मस्तक पर नहीं

होती किन्तु यह सब राजा के मुकुट और तरुणी स्त्री के शरीर पर अधिक शोभा पाते हैं ।।

तैसेहि सुकवि कवित बुध कहहीं ❀ उपजहिं अनत-अनत छबि लहहीं
भक्तिहेतु बिधि भवन बिहाई ❀ सुमिरत शारद आवत धाई

उसी प्रकार अच्छे कवि और विद्वान् लोग कविता करते तो कहीं पर हैं और वह शोभा किसी दूसरे ही स्थान में पाती है ।।३।। जब भक्त अपनी कविता के लिए श्रीसरस्वतीजी का स्मरण करता है, तब वह भक्ति के कारण ब्रह्माजी के घरको छोड़कर दौड़ी हुई चली आती हैं ।।४।।

रामचरित सर बिनु अन्हवाये ❀ सो श्रम जाइ न कोटि उपाये
कवि कोविद अस हृदय विचारी ❀ गावहिं हरिगुण कलिमलहारी

तब बिना राम चरित्र रूपी सरोवर में स्नान कराये उसकी वह थकावट करोड़ों उपाय से भी दूर नहीं होती ।।५।। ऐसा मनमें विचारकर कवि और पण्डित जन श्रीहरि भगवान्‌का गुणानुवाद गाया करते हैं जो कलिके पापों को हरण करनेवाला है ।।६।।

कीन्हें प्राकृत जन-गुण-गाना ❀ शिरधुनि गिरा लगति पछिताना
हृदय सिन्धुमति सीप समाना ❀ स्वाती शारद कहहिं सुजाना

उस समय जब कोई प्रकृत मनुष्य का गुणगान करने लगते हैं, तब सरस्वती शिर धुन कर पछताने लगती है। विद्वान् लोग कहते हैं कि बिना सरस्वती की कृपाके कविताकी रचना नहीं होती क्योंकि हृदय समुद्र है उसमें बुद्धि सीप के समान है और सरस्वती स्वाती नक्षत्र है ।।८।।

जो बरषै बरवारि विचारू ❀ होहिं कवित मुक्तामणि चारू

जब सरस्वती श्रेष्ठ विचाररूपी जलकी वर्षा करती है तब कवितारूपी सुन्दर मोती उत्पन्न होते हैं।

दोहा—युक्ति बेधि पुनि पोहियहि, रामचरित वर ताग।
पहिरहिं सज्जन विमल उर, शोभा अति अनुराग ।।१६।।

फिर उन मोतियों को पाकर युक्ति रूपी सूजी से भेदकर रामचरित रूपी उत्तम तागे में पोहकर सज्जन अपने निर्मल हृदय में धारण करते और शोभा रूपी अति अनुराग को पाते हैं।।

जे जनमे कलिकाल कराला ❀ करतब बायस वेष मराला
चलत कुपंथ वेद-मग छाँड़े ❀ कपट कलेवर कलिमल भाँड़े

जो मनुष्य भयंकर कलियुग के समय में जन्मे हैं, उनके कर्म कौवेके-से और वेष हंस के समान हैं ।।१।। जो वेदमार्ग को छोड़कर कुमार्ग में चलते हैं, उनकी कपट की मूर्ति है और वे कलियुग के पापों के पात्र हैं ।।२।।

वंचक भक्त कहाइ राम के ❀ किंकर कंचन कोह काम के
तिनमहँ प्रथम रेख जग मोरी ❀ धिग धरमध्वज धंधक धोरी

वे ठग लोग राम के भक्त कहला कर कञ्चन, क्रोध और कामदेव के दास हैं ।।३।। उन-उनमें से संसार में पहले मेरी गिनती है, ऐसे धर्म की ध्वजा को धारण करनेवाले मुझको धिक्कार है ।।४।।

जो अपने अवगुण सब कहऊँ ❀ बाढ़ै कथा पार नहिं लहऊँ
ताते मैं अति अल्प बखाने ❀ थोरे महँ जानिहहिं सयाने

यदि मैं अपने सब अवगुण कहूं तो कथा बढ़ जायेगी और पार न पाऊँगा ।।५।। इसी कारण मैंने बहुत थोड़े में अवगुण कहे हैं, जिसे चतुर लोग थोड़े ही में जान लेंगे ।।६।।

समुझि विविध विधि विनती मोरी ❀ कोउ न कथा सुनि देइहिं खोरी
एतेहु पर करिहहिं जे शंका ❀ मोहिंते अधिक ते जड़मति रंका

मेरी अनेक प्रकार की विनती समझ कर और कथा सुनकर कोई मुझे दोष नहीं देंगे ।।७।। परन्तु इतने पर भी जो सन्देह करेंगे, वे मुझसे भी अधिक मूर्ख और बुद्धिहीन हैं ।।८।।

कवि न होउँ नहिं चतुर कहाऊँ ❀ मति अनुरूप राम-गुण गाऊँ
कहँ रघुपति के चरित अपारा ❀ कहँ मति मोरि निरत-संसारा

मैं न तो कवि हूँ, और न चतुर कहलाता हूँ अपनी बुद्धि के अनुसार रामजी के गुण गाता हूँ ।।९।। कहाँ रघुनाथजी के अपार चरित्र, कहाँ मेरी मति जो संसार में फँसी हुई है ।।१०।।

जेहि मारुत गिरि मेरु उड़ाहीं ❀ कहहु तूल केहि लेखे माहीं
समुझत अमित राम प्रभुताई ❀ करत कथा मन अति कदराई

जिस प्रबल वायु से मेरु पर्वत उड़ जाता है, उसके सामने रुई किस गिनती में है। इस कारण रामचन्द्र की अपार महिमा को समझकर कथा कहते हुए मेरा मन बहुत हिचकता है ।।१२।।

दोहा—शारद शेष महेश विधि, आगम निगम पुरान ।
नेति-नेति कहि जासु गुण, करहिं निरन्तर गान ।।१७।।

सरस्वती, शेष, महेश, ब्रह्मा, शास्त्र, वेद तथा पुराण ये नेति-नेति [अन्त नहीं है] ऐसा कहकर जिस प्रभु के गुण का सदैव गान करते हैं ।।१७।।

सब जानत प्रभु प्रभुता सोई ❀ तदपि कहे बिनु रहा न कोई
तहाँ वेद अस कारण राखा ❀ भजन प्रभाव भाँति बहु भाखा

यद्यपि सब जानते हैं कि प्रभु [रामजी] की वही प्रभुता है कि जो नेति-नेति [अन्त नहीं है] कहकर गाई जाती है, तथापि कहे बिना कोई नहीं रहा ।।१।। वहाँ ऐसा कारण है कि वेद में भजन का प्रभाव बहुत प्रकार से कहा गया है ।।२।।

एक अनीह अरूप अनामा ❀ अज सच्चिदानन्द परधामा
व्यापक विश्वरूप भगवाना ❀ तेहि धरि देह चरित कृत नाना

जो अद्वितीय, इच्छारहित, निराकार, नामहीन, अजन्मा, सत्-चित् आनन्द और सबसे परे जिसका स्थान है तथा जो सबमें व्यापक विश्वरूप भगवान् हैं, वही अवतार लेकर अनेक चरित्र करते हैं ।४।

सो केवल भक्तन हित लागी ❀ परम कृपालु प्रणत अनुरागी
जेहि जन पर ममता अरु छोहू ❀ तेहि करुणा करि कीन्ह न कोहू

वह केवल भक्तों के हित के लिये देह धारण करतेहैं, जो परम दयालु और दीन हितकारी हैं जिन भक्तों पर उनकी ममता और प्रीति है, उनपर करुणानिधान भगवान् ने क्रोध नहीं किया।

गई बहोरि गरीब निवाजू ❀ सरल सबल साहिब रघुराजू
बुध बरणहिं हरि यश अस जानी ❀ करहिं पुनीत सुफल निज बानी

वे गई हुई वस्तु को फिर देनेवाले हैं। जैसे सुग्रीव का गया हुआ राज्य फिर दिला दिया, ऐसे गरीब निवाज, सीधे बलवान् साहिब रघुराज (श्रीरामचन्द्रजी) हैं। ऐसा जानकर पंडित जन हरि भगवान् का यश वर्णन कर अपनी वाणी को पवित्र और सफल करते हैं ॥८॥

तेहि बल मैं रघुपतिगुण-गाथा ❀ कहिहौं नाइ रामपद माथा
प्रथम मुनिन्ह हरि कीरति गाई ❀ तेहि मग चलत सुगम मोहिं भाई

उसी बल से मैं श्रीरामचन्द्रजी के चरणों में माथा नवाकर श्रीरघुनाथजी के गुणों की कथा कहूँगा। वाल्मीकि ऋषि और मुनियों ने जो पहले हरि भगवान् की कीर्ति गाई है, उसी मार्ग से चलनेमें हे भाई! मुझको सुगमता है ॥१०॥

दोहा—अति अपार जे सरितवर, जो नृप सेतु कराहिं।
चढ़ि पिपीलिका परम लघु, बिनु श्रम पारहिं जाहिं ॥१८॥

जैसे बड़ी नदियों में जब राजा लोग पुल बँधवा देते हैं तो उनपर चढ़कर बहुत छोटी-छोटी चीटियाँ भी बिना थकावट के पार चली जाती हैं ॥१८॥

यहि प्रकार बल मनहिं दृढ़ाई ❀ कहिहौं रघुपति कथा सुहाई
ब्यास आदि कवि पुङ्गव नाना ❀ जिन्ह सादर हरि चरित बखाना

इसी प्रकार के बल से मन को दृढ़ करके श्रीरघुनाथजी की सुहावनी कथा कहूँगा। व्यास आदि जो अनेक कवीश्वर हो गये हैं, जिन्होंने आदर से भगवान् का चरित्र कहा है ॥२॥

चरण-कमल बन्दउँ तिन्ह केरे ❀ पुरवहु सकल मनोरथ मेरे
कलि के कविन्ह करौं परनामा ❀ जिन बरने रघुपति-गुन-ग्रामा

मैं उनके चरण कमलों की वन्दना करता हूँ, कि मेरे सब मनोरथ पूर्ण करो। कलियुग के कवियों को भी प्रणाम करता हूँ, जिन्होंने श्रीरघुनाथजी के अनेकगुणों का वर्णन किया है ॥४॥

जे प्राकृत कवि परम सयाने ❀ भाषा जिन्ह हरिचरित बखाने
भये अहहिं जे होइहिं आगे ❀ प्रणवौं सबहिं कपट छल त्यागे

और जो स्वाभाविक कवि चतुर हैं कि जिन्होंने भाषा में भगवान् के चरित्र का गान किया है। ऐसे जो थे, वर्तमान हैं और जो आगे होंगे, उनको मैं छल-कपट छोड़कर प्रणाम करता हूँ ॥६॥

होहु प्रसन्न देहु बरदानू ❀ साधु समाज भणिति सनमानू
जो प्रबन्ध बुध नहिं आदरहीं ❀ सो श्रम बादि बालकवि करहीं

वह सब प्रसन्न होकर यह वरदान दो कि साधुजनों की सभा में मेरी कविता का आदर होवे। पण्डित लोग जिसकी कविता का आदर नहीं करते वह परिश्रम बाल कवि वृथा ही करते हैं ॥८॥

कीरति भणिति भूति भलि सोई ❁ सुरसरि सम सबकर हित होई
राम सुकीरति भणिति भदेसा ❁ असमञ्जस अस मोहिं अँदेसा

लोक में बड़ाई और सम्पत्ति वही अच्छी होती है कि जिससे गंगाजी के समान सबका हित होता है ।।९।। श्रीरामजी की सुन्दर कीर्ति तो अच्छी है, पर मेरी कविता भद्दी है जिससे मुझे असमंजस और सन्देह है कि भाषा में मैं राम-कथा कहूँ या नहीं ? ।।१०।।

तुम्हरी कृपा सुलभ सोउ मोरे ❁ सियनि सुहावनि टाट पटोरे
करहु अनुग्रह अस जिय जानी ❁ विमल यशहिं अनुहरइ सुबानी

परन्तु आप लोगों की कृपा से वह भी मुझको सुलभ हो जायेगी, जैसे टाटसे रेशमकी सीयनि सुहावनी लगती है ।।११।। ऐसा अपने मन में जानकर मुझपर ऐसी कृपा करो कि जिससे मेरी वाणी रामजी का निर्मल यश वर्णन करने के योग्य हो जावे ।।१२।।

दोहा—सरल कवित कीरति विमल, सोइ आदरहिं सुजान ।
सहज बैर बिसराइ रिपु, जो सुनि करहिं बखान ।।१९।।

क्योंकि जो कविता सीधी हो और उसमें वर्णित यश निर्मल हो तो उसी का आदर सज्जन करते हैं, शत्रु भी अपना स्वाभाविक बैर छोड़, सुनकर उसकी सराहना करते हैं ।।१९।।

सो न होइ बिनु विमल मति, मोहिं मतिबल अति थोर ।
करहु कृपा हरियश कहौं, पुनि पुनि सबहिं निहोर ।।२०।।

परन्तु ऐसी कविता शुद्ध बुद्धिके बिना नहीं होती और मुझको बुद्धिका बल बहुत थोड़ा है । इससे मुझ पर कृपा करो जिससे भगवान् का यश कहूँ, इसीसे बार-बार मैं सबसे विनती करता हूँ।।२०।।

कवि कोविद रघुबर चरित, मानस मंजु मराल ।
बालविनय सुनि सुरुचि लखि, मोपर होहु कृपाल ।।२१।।

कवि और पण्डितजन श्रीरामचरित मानस के सुन्दर हंस हैं, जो मुझ बालक की विनती सुन और अच्छी रुचि देखकर मुझपर दयालु होंगे ।। २१ ।।

सोरठा—बंदौं मुनि-पदकंज, रामायण जिन निर्मयउ ।
सखर सकोमल मंजु, दोषरहित दूषणसहित ।।६।।

(अब मैं) श्रीवाल्मीकिजी के चरणारविन्दों की वन्दना करता हूँ, कि जिन्होंने रामायण बनाई है, वह रामायण 'सखर' खर राक्षस की कथा सहित है तथा 'सकोमल' कोमलता से युक्त है, 'मंजु' सुन्दर और दूषण राक्षस की कथा से युक्त है और दूषण से रहित है ।। ६ ।।

बंदौं चारिउ वेद, भव-वारिधि वोहित सरिस ।
जिनहिं न सपनेहुँ खेद, वरणत रघुपति विशद यश ।।७।।

फिर मैं चारों वेदों की वन्दना करता हूँ, जो भवसागर से पार होने के लिए बड़ी नौका के समान हैं, जिनको श्रीरामचन्द्रजी का निर्मल यश वर्णन करते हुए स्वप्न में भी क्लेश नहीं है।

बंदौं विधि-पदरेणु, भवसागर जेहि कीन्ह यह ।
सन्त सुधा शशि धेनु, प्रगटे खल विष वारुणी ॥८॥

ब्रह्माजी के चरण रज की वन्दना करता हूँ कि जिन्होंने यह संसार-सागर रचा है। जिसमें संत-जन, चन्द्रमा और कामधेनु अमृत रूप प्रकट हुए और दुष्टजन विष और मदिरा रूप प्रकट हुए हैं।८।

दोहा–बिबुध विप्र बुध गुरुचरण, बंदि कहउँ कर जोरि ।
होइ प्रसन्न पुरवहु सकल, मंजु मनोरथ मोरि ॥२२॥

फिर मैं देवता, ब्राह्मण, पंडित और गुरु के चरणों को हाथ जोड़, प्रार्थना करके कहता हूँ, कि सब लोग प्रसन्न होकर मेरा सुन्दर मनोरथ पूर्ण करो ॥२२॥

पुनि बंदौं शारद सुर-सरिता ❁ युगल पुनीत मनोहर चरिता
मज्जन पान पापहर एका ❁ कहत सुनत इक हर अविवेका

फिर मैं सरस्वती और गंगाजी की वन्दना करता हूँ, क्योंकि दोनों मनोहर और पवित्र चरित्र वाली हैं ॥१॥ एक (गंगा जी) तो स्नान, पान से पापों को हर लेती हैं और दूसरी अर्थात् सरस्वती कहने सुनने से अज्ञान को हर लेती हैं ॥ २ ॥

गुरु पितु मातु महेश भवानी ❁ प्रणवौं दीनबन्धु दिनदानी
सेवक स्वामि सखा सिय पीके ❁ हित निरुपधि सबबिधि तुलसीके

फिर मैं गुरु और पिता-मातारूप शिव और पार्वती को प्रणाम करता हूँ जो दीनबन्धु और नित्य मनोरथ के देने वाले हैं ॥३॥ जो शिव सीतापति के सेवक स्वामी और सखा हैं और तुलसीदास के तो बिना किसी छल के सब प्रकार से हित करने वाले हैं ॥ ४ ॥

कलि बिलोकि जगहित हरगिरिजा ❁ शाबर मंत्रजाल जिन्ह सिरिजा
अनमिल आखर अरथ न जापू ❁ प्रगट प्रभाव महेश प्रतापू

कलियुग को देख जगत् के हित के अर्थ जिन शिव-पार्वती ने बहुत से शाबर मन्त्रों का समूह रचा ॥५॥ जिनमें अनमेल अक्षर हैं और अर्थ भी कुछ नहीं, न जपने की कोई विधि है, परन्तु शिवजी के प्रताप से उनका प्रभाव प्रकट होता है ॥ ६ ॥

सो महेश मोपर अनुकूला ❁ करौं कथा मुद मंगल मूला
सुमिरि शिवाशिव पाइ पसाऊ ❁ बरनौं रामचरित चित चाऊ

वह शिवजी मुझ पर प्रसन्न हों कि मैं आनन्द-मंगल की मूल राम-कथा की रचना करूँ ॥७॥ अब श्रीपार्वतीजी और श्रीशिवजी का स्मरण कर उनकी प्रसन्नता प्राप्त कर मैं प्रसन्न चित्त से रामचरित्र का वर्णन करता हूँ ॥ ८ ॥

भणिति मोरि शिवकृपा विभाती ❁ शशिसमाज मिलि मनहुँ सुराती
जो यह कथा सनेह समेता ❁ कहिहहिं सुनिहहिं समुझि सचेता
होइहहिं रामचरण अनुरागी ❁ कलिमल रहित सुमंगल भागी

मेरी कविता शिवजी की कृपा से ऐसी सुशोभित होगी कि जैसे तारागण सहित चन्द्रमा से रात्रि सुशोभित होती है ।। ९ ।। जो इस कथा को प्रेम से कहेंगे और ध्यान देकर समझेंगे ।। १० ।। वे श्रीरामचन्द्रजी के चरणों में प्रेम करनेवाले और कलियुग के पापों से रहित होकर सुन्दर मंगल के भागी होंगे ।। ११ ।।

दोहा—सपनेहुँ साँचेहुँ मोहिं पर, जौं हर गौरि पसाउ।
तौ फुर होउ जो कहहुँ सब, भाषा भणिति प्रभाउ।२३।

यदि स्वप्न में भी सचमुच मुझपर श्रीमहादेवजी और पार्वतीजी की प्रसन्नता हो तो इस भाषा कविता का प्रभाव जो मैं कहता हूँ, वह सब सत्य होवे ।। २३ ।।

बंदौं अवधपुरी अति पावनि ❁ सरयू सरि कलि कलुष नसावनि
प्रणवउँ पुर नर नारि बहोरी ❁ ममता जिनपर प्रभुहिं न थोरी

अब मैं पवित्र अयोध्यापुरी की वन्दना करता हूँ कि जहाँ कलियुग के पाप नाश करने-वाली सरयू नदी बहती है ।।१।। फिर मैं अयोध्यापुरी के उन नरनारियों को प्रणाम करता हूँ, कि जिन पर प्रभु की थोड़ी ममता नहीं है अर्थात् बड़ी अधिक प्रीति है ।।२।।

सिय निन्दक अघ ओघ नसाये ❁ लोक विशोक बनाइ बसाये
बंदौं कौशल्या दिशि प्राची ❁ कीरति जासु सकल जग माची

जिन्होंने सीताजी की निन्दा करनेवाले धोबी के पाप-समूहको नाश कर उसे शोक रहित बैकुण्ठ लोक में बसा दिया ।।३।। अब मैं पूर्व-दिशारूपी कौशल्याजी की वन्दना करता हूँ कि जिनकी कीर्ति सारे संसार में फैली है ।। ४ ।।

प्रगटेउ जहँ रघुपति शशि चारू ❁ विश्व सुखद खल कमल तुषारू
दशरथ राउ सहित सब रानी ❁ सुकृत सुमंगल मूरति मानी

जहाँ पूर्ण चन्द्रमा रूप श्रीरघुनाथजी जगत् को सुख देनेवाले और कमल रूप रावण आदि खलों के लिए तुषार रूप (पाला) के समान प्रकट हुए ।।५।। और सब रानियों सहित राजा दशरथ जो पुण्य और आनन्द की मूर्ति थे, ऐसा मानकर ।। ६ ।।

करउँ प्रणाम करम मन बानी ❁ करहु कृपा सुत सेवक जानी
जिन्हहिं विरचि बड़भयउ विधाता ❁ महिमा अवधि राम पितुमाता

उनको कर्म, मन और वचन से प्रणाम करता हूँ कि वह अपने पुत्र (श्रीरामचन्द्रजी) का सेवक जानकर मुझपर कृपा करें ।। ७ ।। जिनको रचकर विधाताने भी बड़ाई पाई, क्योंकि श्रीरामचन्द्रजी के माता-पिता महिमा की अवधि अर्थात् सीमा हैं ।।८।।

सोरठा—बंदौ अवध भुवाल, सत्य प्रेम जेहि रामपद।
बिछुरत दीनदयाल, प्रिय तनु तृण इव परिहरेउ ।।९।।

इसलिए मैं अवध के राजा महाराज दशरथजी की वन्दना करता हूँ, जिनका सच्चा प्रेम श्रीरामचन्द्रजी के चरणों में था। जिन्होंने दीनदयालु श्रीरामचन्द्रजी के बिछुड़ते ही अपने प्यारे शरीर को तण के समान त्याग दिया ।। ९ ।।

प्रणवउँ परिजन सहित विदेहू ❀ जाहि राम पद गूढ़ सनेहू
जोग भोग महँ राखेउ गोई ❀ राम विलोकत प्रगटेउ सोई

फिर मैं परिवार सहित राजा जनकजी को प्रणाम करता हूँ, जिनका श्रीरामचन्द्रजी के चरणों में गुप्त स्नेह रहा ।।१।। परन्तु उस प्रेम-योग को भोग में उन्होंने ऐसे छिपा रखा था कि वह श्रीरामचन्द्रजी के दर्शन होते ही प्रकट हो गया ।।२।।

प्रणवउँ प्रथम भरत के चरणा ❀ जासु नेम ब्रत जाइ न वरणा
रामचरण पङ्कज मन जासू ❀ लुब्ध मधुप इव तजै न पासू

अब मैं पहले श्रीभरतजी के चरणों की वन्दना करता हूँ कि, जिनका नेम और व्रत वर्णनातीत है ।।३।। क्योंकि उनका मन श्रीरामचन्द्रजी के चरण कमलों में उस लोभी भौंरे के समान लगा रहता था कि, जो पुष्प को कभी भी छोड़ना नहीं चाहता ।। ४ ।।

बन्दौं लछिमन पद-जल जाता ❀ शीतल सुभग भक्त सुख दाता
रघुपति कीरति विमल पताका ❀ दण्ड समान भयउ जस जाका

फिर लक्ष्मणजी के चरणों की वन्दना करता हूँ कि, जो बड़े शीतल स्वभाववाले सुन्दर और भक्तों के सुखदाता हैं ।। ५ ।। और जिनका यश श्रीरामचन्द्रजी की उज्वल कीर्तिरूपी पताका के लिये दण्ड के समान हुआ ।। ६ ।।

शेष सहस्र शीस जग कारन ❀ जो अवतरेउ भूमि-भय-टारन
सदा सो सानुकूल रहु मोपर ❀ कृपासिन्धु सौमित्रि गुणाकर

जिन शेषजी ने पृथ्वी का भय मिटाने और संसार का कल्याण करने के लिये ही अवतार लिया था सो कृपासागर और गुणों के घर श्रीसुमित्रानन्दन मुझ पर सर्वदा सानुकूल रहें ।।८।।

रिपुसूदन-पद-कमल नमामी ❀ शूर सुशील भरत अनुगामी
महाबीर बिनवउँ हनुमाना ❀ राम जासु जस आपु बखाना

अब मैं उन शत्रुघ्नजी के चरण कमलों को सिर झुका रहा हूँ कि जो बड़े वीर सुन्दर स्वाभववाले और भरत के अनुगामी हैं ।। ९ ।। फिर मैं महावीर श्रीहनुमानजी से प्रार्थना कर रहा हूँ कि जिनके यश का वर्णन श्रीरामचन्द्रजी ने स्वयं अपने श्रीमुख से किया है।१०।।

सोरठा—प्रणवौं पवनकुमार, खलबन पावक ज्ञान घन।
जासु हृदय आगार, बसहिं राम शर चाप धर ।।१०।।

इससे मैं उन पवन-कुमार श्रीहनुमानजी की वन्दना करता हूँ कि, जो दुष्टजनरूपी वन को भस्म करने के लिए अग्नि के समान और ज्ञान के भण्डार हैं ।।१।।

कपिपति ऋच्छ निसाचर राजा ❀ अङ्गदादि जे कीस समाजा
बन्दउँ सबके चरन सुहाये ❀ अधम शरीर राम जिन्ह पाये

इसके पश्चात् श्रीसुग्रीवजी, श्रीजामवन्तजी और विभीषणजी तथा समस्त अंगदादि बानरों के समूह की वन्दना करता हूँ कि जिनको उस अधम देह से श्रीरामचन्द्रजी की प्राप्ति हुई थी ।।

रघुपति चरन उपासक जेते ❀ खग मृग सुरनर असुर समेते
बन्दउँ पद सरोज सब केरे ❀ जे बिनु काज राम के चेरे

इस प्रकार पक्षी, मृग, देवता और समस्त मनुष्यों तथा राक्षसों सहित जो श्रीरामचन्द्रजी के चरणारविंदों के उपासक (भक्त) हैं ।।१।। और जो निष्काम भाव से श्रीरामचन्द्रजी के दास हैं, मैं उन सभी के कमलरूपी चरणों की वन्दना करता हूँ ।। २ ।।

शुक सनकादि आदिमुनि नारद ❀ जे मुनिवर विज्ञान विशारद
प्रनवउँ सबहिं धरनि-धरि सीसा ❀ करहु कृपा जन जानि मुनीसा

और श्रीशुकदेव, सनकादि देवता, आदि कवि महर्षि वाल्मीकि, नारदजी आदिक और विज्ञान विशारद जो बड़े-बड़े विज्ञानी मुनीश्वर हैं ।। ३ ।। उन सबको मैं पृथ्वी पर शिर रखकर प्रणाम करता हूँ कि, वे अपना दास समझकर मुझपर कृपा करें ।। ४ ।।

जनकसुता जग जननि जानकी ❀ अतिशय प्रिय करुनानिधानकी
ताके युग पद कमल मनावौं ❀ जासु कृपा निर्मल मति पावौं

फिर जगत् माता श्रीजानकीजी जो करुणानिधान रामजी की अत्यन्त प्रिय हैं ।।५।। उनके दोनों चरणकमलों को मनाता हूँ, कि जिनकी कृपा से मुझको निर्मल बुद्धि प्राप्त होगी ।।६।।

पुनि मन वचन करम रघुनायक ❀ चरन कमल बन्दउँ सब लायक
राजिव नयन धरे धनु सायक ❀ भक्त-विपति-भंजन सुखदायक

फिर मैं अपने मनसा, वाचा, कर्मणा से उन रघुकुल के नायक श्रीरामचन्द्रजीके चरणकमलों की वन्दना करता हूँ कि जो सब प्रकारसे योग्य हैं ।। जिनके कमल के से सुन्दर नेत्र हैं जो सर्वदा ही धनुष बाण धारण किए रहते हैं और जो अपने भक्तोंकी विपत्ति को मेटकर सुख देने वाले हैं ।।८।।

दोहा—गिरा अर्थ जल बीचिसम, देखियत भिन्न न भिन्न ।
बन्दौं सीताराम पद, जिन्हहिं परम प्रिय खिन्न ।।२४।।

जिन श्रीसीताराम में केवल जल और तरंग-सा ही भेद है। उनके चरण कमलों में मेरा प्रणाम है, जिनको दुःखीजन बहुत प्रिय लगते हैं ।। २४ ।।

बन्दौं राम नाम रघुबर के ❀ हेतु कृशानु भानु हिमकर के
विधि हरिहरमय वेद प्रान सों ❀ अगुन अनूपम गुन निधान सों

मैं श्रीरामचन्द्रजी के उस 'राम' जैसे नाम की वन्दना करता हूँ कि, जो अग्नि सूर्य और चन्द्रमा का कारण रूप है ।। १ ।। और जो ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकरमय है और वेदका प्रणव (ॐ) स्वरूप है और वह गुण तथा उपमा रहित गुण का निधान (कोष) भी है ।। २ ।।

महामन्त्र जेइ जपत महेसू ❀ कासी मुकुति हेतु उपदेसू
महिमा जासु जान गनराऊ ❀ प्रथम पूजियत नाम प्रभाऊ

जिस महामन्त्र को श्रीशिवजी जपा करते हैं और जो काशी में वास करनेवाले प्राणियों की मुक्ति के लिये उपदेशरूप है अथवा इसी नाम का उपदेश करते हैं ।। ३ ।। और जिस नाम की महिमा को श्रीगणेशजी भली भाँति जानते हैं, क्योंकि वे इसी नाम के प्रभाव से देवताओं में प्रथम पूजनीय हुए हैं, और पूजे जाते हैं ।। ४ ।।

जान आदि-कवि नाम प्रतापू ❀ भयउ सिद्ध करि उलटा जापू
सहसनाम सम सुनि सिवबानी ❀ जपि जेई पिय संग भवानी

इस नामके प्रभाव को आदि कवि (महर्षि वाल्मीकि) जानते थे कि, जिसका उलटा जाप (मरा-मरा) करके वे सिद्ध हो गये ।।५।। उसी नाम को सहज नाम के समान शिवजी के मुख से सुनकर पार्वतीजी ने उसे जपकर शिवजी के साथ भजन किया ।। ६ ।।

हरषे हेतु हेरि हर ही को ❀ किय भूषन तिय भूषन ती को
नाम प्रभाव जान शिव नीके ❀ कालकूट फल दीन्ह अमी के

तब पार्वतीजी की राम-नाम पर ऐसी प्रीति देखकर श्रीमहादेवजी अत्यन्त हर्षित हुए और उनको संसार की सब स्त्रियों की मुकुटमणि जानकर अपने अंग का आभूषण कर आधे शरीर में धारणकर लिया अर्थात् अर्द्धांगिनी बना लिया ।।७।। इस प्रकार श्रीमहादेवजी राम नाम के प्रभाव को अच्छी तरह जानते हैं कि जिसके प्रभाव से कालकूट (हलाहलविष) ने भी उनको अमृत-सा फल दिया अर्थात् उस विष को भी पीकर वे अमर हो गये ।। ८ ।।

दोहा—बरषा ऋतु रघुपति भगति, तुलसी सालि सुदास ।
राम नाम वर वरन युग, सावन भादौं मास ।।२५।।

श्रीरामचन्द्रजी की भक्ति वर्षाऋतु रूप है और अच्छे दास धान के स्वरूप हैं जो राम नाम रूपी श्रावण और भादौं के दो महीनों को पाकर बढ़ते अर्थात् उन्नति करते हैं ।। २५ ।।

आखर मधुर मनोहर दोऊ ❀ वरन विलोचन जन जिय जोऊ
सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू ❀ लोक लाहु परलोक निबाहू

क्योंकि 'र' कार और 'म' कार ये दोनों अक्षर अत्यन्त ही मधुर और मनको हरनेवाले हैं और जो सब वर्णों (अक्षरों) के ऊपर रहने से ये मनके नेत्ररूप हैं और भक्तों के तो जीवन (प्राण) ही हैं ।।१।। जो स्मरण करने से सुलभ और सबको सुख देनेवाले हैं क्योंकि इनसे सांसारिक लाभ तो होता ही है; किन्तु परलोक में भी निर्वाह हो जाता है ।। २ ।।

कहत सुनत समुझत सुठि नीके ❀ राम लखन सम प्रिय तुलसी के
बरनत बरन प्रीति बिलगाती ❀ ब्रह्म जीव इव सहज सँघाती

ये कहने-सुनने और स्मरण करने से सभी प्रकार अच्छे हैं और मुझ तुलसीदास को तो राम और लक्ष्मणजी के समान प्यारे हैं ।।३।। इनको यदि मैं अलग-अलग वर्णन करूं तो

प्रीति में भेद पड़ता है; क्योंकि इनका साथ तो ब्रह्म और जीव का-सा स्वाभाविक है ।।४।।

नर नारायण सरिस सुभ्राता ❀ जगपालक विशेष जन-त्राता
भगति सुतिय कलकरन विभूषन ❀ जगहित हेतु बिमल विधु-पूषन

ये दोनों अक्षर नर-नारायण के समान सुन्दर भाई हैं जो जगत् का पालन कर अपने भक्तों की विशेष रक्षा करते हैं ।। फिर कैसे ये अक्षर हैं कि "भक्ति सुतिय कलकर्ण विभूषण" अर्थात् भक्ति रुपी सुन्दर स्त्री के कानों के आभूषण हैं, जो संसार के हित का कारण रूप साक्षात् सूर्य और चन्द्रमा स्वरूप हैं ।। ६ ।।

स्वाद तोष सम्र सुगति सुधा के ❀ कमठ शेष सम धर बसुधा के
जन-मन-मंजु-कञ्ज मधुकर से ❀ जीह जसोमति हरिहलधर से

फिर ये दोनों अक्षर अमृत के स्वाद और सन्तोष के समान हैं कि जो कच्छप और शेषजी के समान ही पृथ्वी के भार को धारण किए रहते हैं ।। ७ ।। और भक्तजनों के मन रूपी मनोहर कमल के लिए तो भ्रमररूप ही हैं और दोनों जीह (जिह्वा) रूपी माता यशोदा को कृष्ण और बलराम के समान प्यारे हैं ।।

दोहा—एक छत्र एक मुकुटमनि, सब बरननि पर जोउ ।
तुलसी रघुबर नाम के, बरन बिराजत दोउ ।।२६।।

श्रीतुलसीदासजी कहते हैं कि श्रीरामचन्द्रजी के नाम के ये दोनों अक्षर (रकार और मकार) सब वर्णों (अक्षरों) पर छत्र और मुकुट के समान शोभा देते हैं । रकार (ँ) तो छत्र है, दूसरा मकार अर्थात् अनुस्वार (ं) मुकुट के रूप में है ।।२६।।

समुझत सरिस नाम अरु नामी ❀ प्रीति परस्पर प्रभु अनुगामी
नाम रूप दोउ ईश उपाधी ❀ अकथ अनादि सुसामुझि साधी

नाम और नामी में कोई अन्तर नहीं है, नाम (शब्द) और नामी वह शक्ति है जिसका आवाहन किया जावे । यह दोनों ही समान हैं, क्योंकि दोनों की परस्पर प्रीति स्वामी और सेवक की-सी है ।।१।। नाम और रूप दोनों ईश्वर की उपाधियाँ हैं, जिनको उच्चकोटि के पुरुषों ने साधनों के द्वारा सिद्ध करके अकथ और अनादि बतलाया है ।।२।।

को बड़ छोट कहत अपराधू ❀ सुनि गुन भेद समुझिहहिं साधू
देखियत रूप नाम आधीना ❀ रूप ज्ञान नहिं नाम विहीना

इससे इन दोनों में किसी एक को छोटा और दूसरे को बड़ा कहकर कौन अपराध करे ? हाँ इनके गुण और दोष को सुनकर सन्त लोग ही समझ सकते हैं ।। ३ ।। क्योंकि उन्होंने उस रूप को नाम के अधीन रहते प्रत्यक्ष रूप में देखा है अथवा यह सभी लोग जानते हैं कि नाम के बिना रूप का ज्ञान नहीं हो सकता ।। ४ ।।

रूप विशेष नाम बिनु जाने ❀ करतलगत न परहिं पहिचाने
सुमिरिय नाम रूप बिनु देखे ❀ आवत हृदय सनेह विशेखे

बिना नाम जाने रूप की पहचान कठिन है, जैसे कोई चीज हाथ में रखी हो और

जब-तक उसका नाम न ज्ञात हो तो पहचान कैसे हो सके ? वैसे ही रूप का नाम विशेषण है ।। ५ ।। इसलिए हे प्यारे ! रूप के बिना देखे ही, नाम का सुमिरन करो, फिर तो वह आप ही आप विशेष स्नेह के साथ हृदय में आ बसेगा ।। ६ ।।

नाम रूप गति अकथ कहानी ❀ समुझत सुखद न परत बखानी
अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी ❀ उभय प्रबोधक चतुर दुभाषी

नाम और रूप की गति कैसी है ? इसकी कथा अकथनीय और समझने में सुखदायक है; किन्तु उसका वर्णन (बखान) नहीं किया जा सकता ।।७।। क्योंकि निर्गुण और सगुण के बीच में नाम ही साक्षी रूप दोनों पक्ष का चतुर दुभाषिया पुरुष है ।। ८ ।।

दोहा—रामनाम मणि दीप धरु, जीह देहरी द्वार ।
तुलसी भीतर बाहिरउ, जौं चाहसि उजियार ।।२७।।

श्रीतुलसीदासजी कहते हैं कि, हे सत्पुरुषों ! यदि आप अपने भीतर और बाहर प्रकाश देखना चाहते हों, तो जिह्वारूपी देहरी (मुँह) के द्वारपर रामनाम मणिरूपी दीपक को रख लो ।।२७।।

नाम जीह जपि जागहिं योगी ❀ विरति विरञ्चि प्रपञ्च वियोगी
ब्रह्मसुखहिं अनुभवहिं अनूपा ❀ अकथ अनामय नाम न रूपा

योगी जीभ से नाम जपकर संसार को वैराग्य से त्यागकर मोहरूपी रात में जागते हैं ।। १ ।। जागने से वे समस्त ब्रह्मानन्द का अनुभव करते हैं कि जो उपमारहित अकथनीय, रोगरहित है और जिसका नाम और रूप नहीं है ।। २ ।।

जाना चहहिं गूढ़ गति जेऊ ❀ नाम जीह जपि जानहिं तेऊ
साधक नाम जपहिं लव लाये ❀ होहिं सिद्ध अणिमादिक पाये

इसलिए जो लोग गूढ़ गतियों को जानना चाहते हैं वे नामको जिह्वा से ही जपकर उसे जान लेते हैं ।।३।। देखो, योगादिक क्रियाओं की साधना करनेवाले साधक लौ लगाकर अर्थात् अनवरत परिश्रम से नाम को जपकर अणिमा आदिक सिद्धियों को प्राप्त कर लेते हैं ।।४।।

जपहिं नाम जन आरत भारी ❀ मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी
राम भक्त जग चारि प्रकारा ❀ सुकृती चारिउ अनघ उदारा

अतः जो महान् संकटों में पड़े हों उनको चाहिये कि वे नामका जप किया करें, इससे समस्त बुरे संकटों से निवृत्त होकर वे सुखी हो जायेंगे ।। ५ ।। संसार में चार प्रकार के राम-भक्त होते हैं और चारों ही निष्पाप, उदारात्मा और पुण्यशाली कहे जाते हैं ।।६।।

चहुँ चतुरन्ह कहँ नाम अधारा ❀ ज्ञानी प्रभुहिं विशेष पियारा
चहुँयुग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ ❀ कलि विशेष नहिं आन उपाऊ

किन्तु उन चारों प्रकार के बुद्धिमानों को केवल नाम का ही आधार है उन चारों में से प्रभु को ज्ञानी ही विशेष प्यारा है ।। ७ ।। इस प्रकार चारों युगों और चारों वेदों में नाम का ही प्रभाव पाया गया है और कलियुग में तो सिवा इसके दूसरा कोई उपाय ही नहीं है ।।८।।

दोहा—सकल कामना हीन जे, राम भगति रस लीन।
नाम सुप्रेम पियूष ह्रद, तिन्हहुँ किए मन मीन ।।२८।।

इसके अतिरिक्त जो सांसारिक समस्त कामनाओं से परे राम भक्ति के रस में सराबोर हैं वे भी उसी राम-नाम के सुन्दर प्रेम रूपी तालाब में अपने मनको मछली बनाये रहते हैं ।।२८।।

अगुन सगुन दोउ ब्रह्म स्वरूपा ❀ अकथ अगाध अनादि अनूपा
मोरे मत बड़ नाम दुहूँते ❀ किय जेहि युग निज बस निजबूते

(अब उसके स्वरूप को देखिये) उस ब्रह्मके निर्गुण और सगुण दो स्वरूप हैं, जो अकथनीय अगाध, अनादि और अनुपम हैं ।। १ ।। परन्तु मेरी रायमें नाम इन दोनों से भी बड़ा है क्योंकि प्रत्येक युगों से यह उस (स्वरूप) को अपने वश में करता चला आ रहा है ।। २ ।।

प्रौढ़ सुजन जन जानहिं जनकी ❀ कहउँ प्रतीति प्रीति रुचि मनकी
एक दारुगत देखिय एकू ❀ पावक युग सम ब्रह्म विवेकू

इस बात को सभी विद्वान् और सज्जन पुरुष जानते हैं, इसलिये मैं जो कुछ अपनी प्रीति और मन के विश्वास के लिए कह रहा हूँ इसे भी वे जानेंगे, क्योंकि वे सर्वजनों की बात को जानने वाले होते हैं ।। ३ ।। इसी प्रकार ब्रह्म-स्वरूप का विचार भी दो प्रकार का होता है एक प्रत्यक्ष और दूसरा अप्रत्यक्ष, जैसे अग्नि काष्ठ में भी है और प्रत्यक्ष भी है ।। ४ ।।

उभय अगम युग सुगम नाम ते ❀ कहहुँ नाम बड़ ब्रह्म राम ते
व्यापक एक ब्रह्म अविनासी ❀ सत चेतन घन आनँदरासी

यद्यपि ब्रह्म के दोनों ही स्वरूप अगम हैं तथापि नाम से वे भी सुगम हो जाते हैं, इसलिये कहना पड़ता है कि ब्रह्म और राम इन दोनों ही से नाम बड़ा है ।। ५ ।। क्योंकि वह अविनाशी ब्रह्म एक और आनन्द की राशि होते हुए भी जड़ चैतन्य सब में समान रूप से व्याप्त है ।। ६ ।।

अस प्रभु हृदय अछत अविकारी ❀ सकल जीव जग दीन दुखारी
नाम निरूपन नाम जतन ते ❀ सोउ प्रगटत जिमि मोल रतनते

(सो खेद है कि) हृदय में ऐसे निर्विकारी प्रभु के वास करते हुए भी संसार के समस्त प्राणी दीन और दुखी हैं ।। ७ ।। उनको चाहिये कि वे यत्नपूर्वक नाम का निरूपण करें अर्थात् नाम की रट लगावें, फिर तो जैसे कसौटी पर कसते ही रत्नों का मूल्य प्रकट हो जाता है, वैसे ही वह (नाम और स्वरूप) भी प्रकट हो जाता है ।। ८ ।।

दोहा—निरगुन ते येहि भाँति बड़, नाम प्रभाव अपार।
कहउँ नाम बड़ राम ते, निज विचार अनुसार ।।२९।।

इस प्रकार नाम का प्रभाव भगवान् के निर्गुण स्वरूप से भी बहुत बड़ा है और उसकी महिमा अपार है, इससे मैं कहता हूँ कि, राम से भी नाम बड़ा है ।। २९ ।।

राम भगत हित नर तनु धारी ❀ सहि संकट किय साधु सुखारी
नाम सप्रेम जपत अनयासा ❀ भगत होहिं मुदमङ्गल-बासा

क्योंकि श्रीरामचन्द्रजी तो केवल अपने भक्तों को सुख देने के लिए ही नर शरीर धारण कर संकट सहते हुए साधु पुरुषों को सुखी किये थे ।। १ ।। किन्तु प्रेम सहित नामको जपनेवाले भक्तजन तो अनायास ही आनन्दमय मंगल रूप हो जाते हैं ।। २ ।।

राम एक तापस तिय तारी ❁ नाम कोटि खल कुमति सुधारी
ऋषि हित राम सुकेतु सुताकी ❁ सहित सेन सुत कीन्ह बेबाकी

श्रीरामचन्द्रजी ने तो केवल एकमात्र तापस तिय अर्थात् महर्षि गौतम की स्त्री अहिल्या का ही उद्धार किया था और उनके नाम ने तो कई करोड़ दुष्टों की बुद्धि को सुधार दिया है ।। ३ ।। श्रीरामचन्द्रजी ने तो ऋषि (विश्वामित्र) की यज्ञ-रक्षा के लिए सुकेतुपुत्री ताड़िका और उसके पुत्रो सहित राक्षसों की सेना का ही वध किया था ।। ४ ।।

सहित दोष दुख दास दुरासा ❁ दलइ नाम जिमि रवि निसि नासा
भंजेउ राम आपु भव चापू ❁ भव भय भंजन नाम प्रतापू

किन्तु नाम तो भक्तजनोंके समस्त दोष दुःख और दुराशाओंका उसी प्रकार नाश कर देता है कि जिस प्रकार सूर्य रात्रि के अन्धकार को दूर कर देते हैं ।।५।। श्रीरामचन्द्रजी ने तो शिवजी के धनुष को ही तोड़ा था, किन्तु नाम के प्रताप से तो समस्त संसार के भय नष्ट हो जाते हैं ।।

दण्डक बन प्रभु कीन्ह सुहावन ❁ जनमन अमित नाम किय पावन
निसिचर निकर दले रघुनन्दन ❁ नामसकलकलिकलुषनिकन्दन

श्रीरामचन्द्रजी ने तोकेवल दण्डक-वन को ही पवित्र किया था, किन्तु नाम ने तो अनेक मनुष्यों के मनको पवित्र कर दिया है ।।७।। माना कि श्रीरामचन्द्रजी ने राक्षसों की सेना का संहार किया है किन्तु, नाम तो कलिकाल के समस्त पापों का विशेष रूप से नाश करनेवाला है ।।८।।

दोहा—सेवरी गीध सुसेवकनि, सुगति दीन्ह रघुनाथ ।
नाम उधारे अमित खल, वेद विदित गुनगाथ ।।३०।।

श्रीरामचन्द्रजी ने तो केवल सेवरी भीलनी और गृद्धराज ऐसे सेवकों को ही सुगति दी है । परन्तु उनके नाम ने तो अमित (जिनका अन्त नहीं) खलों का उद्धार किया है । नाम के इस गुण की कथा वेद में विदित है ।। ३० ।।

राम सुकंठ विभीषण दोऊ ❁ राखेउ शरण जान सब कोऊ
नाम अनेक गरीब नेवाजे ❁ लोक वेद वर विरद विराजे

यह सभी लोग जानते हैं कि श्रीरामचन्द्रजी ने विभीषण और सुग्रीव को अपनी शरण में रखा था । परन्तु नाम ने तो अनेक गरीबों पर कृपा की है-यह संसार और श्रेष्ठ वेदों में विराजमान है।२।

राम भालु कपि कटक बटोरा ❁ सेतु हेतु श्रम कीन्ह न थोरा
नाम लेत भव सिन्धु सुखाहीं ❁ करहु विचार सुजन मन माहीं

श्रीरामचन्द्रजी ने सेतु बाँधने के समय रीछ और बन्दरों की सेना एकत्र करके समुद्र में पुल बाँधने के लिए परिश्रम किया था ।।३।। परन्तु नाम में तो इतना अधिक प्रभाव है कि, उसका स्मरण करते ही संसार रूपी समुद्र सूख जाता है अर्थात् वहाँ संसार भी लय हो जाता है, अक्षय समाधि लग जाती है और मोक्ष हो जाता है ।। ४ ।।

राम सकुल रण रावण मारा ❀ सीय सहित निजपुर पगु धारा
राजा राम अवध रजधानी ❀ गावत गुण सुर मुनिवर बानी

श्रीरामचन्द्रजी तो परिवार सहित रावण को मारकर सीता के सहित अपनी पुरी अयोध्या में आये थे ।। ५ ।। वहाँ ये (श्रीरामचन्द्रजी) राजा हुए और अयोध्या उनकी राजधानी हुई कि जिसके गुण को देवता और मुनीश्वर भी यशोगान करते हैं ।। ६ ।।

सेवक सुमिरत नाम सप्रीती ❀ बिनु श्रम प्रबल मोहदल जीती
फिरत सनेह मगन सुख अपने ❀ नाम प्रताप सोच नहिं सपने

किन्तु उनके भक्त जो प्रेम सहित नामकी रट लगाते रहते हैं वे तो बिना परिश्रम ही बलवान्से बलवान् मोहरूपी सेना पर विजय करते हैं ।।७।। फिर तो वे आत्मसुख में मग्न(मस्त) हो जहाँ चाहे विचरा करते हैं,क्योंकि नामके प्रतापसे उनके पास स्वप्न में भी चिन्ता नहीं आती ।।८।।

दोहा—ब्रह्म राम ते नाम बड़, वरदायक बरदानि ।
रामचरित शत कोटि महँ, लिय महेश जिय जानि ।।३१।।

इसी कारण मैं कहता हूँ कि 'नाम' ब्रह्म और श्रीरामचन्द्रजी से भी बड़ा है और वर देनेवाला बड़ा ही वरदानी है अथवा ब्रह्माआदिक बड़े से बड़े वरदानियों को भी वह वर देनेवाला है। देखो सौ करोड़ रामायण में से श्रीशिवजी ने इस 'राम नाम' को जान लिया है ।।३१।।

नाम प्रभाव शंभु अविनाशी ❀ साज अमंगल मंगल राशी
सुक सनकादि सिद्ध मुनि योगी ❀ नाम प्रसाद ब्रह्म सुख भोगी

नाम के प्रभाव से शंकरजी अविनाशी हो गए हैं, तभी से उनको अविनाशी पद प्राप्त हुआ है,; साथ ही अमंगल के साज होते हुए भी वे मङ्गल के राशि हो गये हैं।।१।। श्रीशुकदेवजी, सनक-सनन्दन आदि सिद्ध, मुनि और योगी ये सभी नाम के प्रसाद से ब्रह्म-सुख के भोगी हुए हैं ।२।

नारद जानेउ नाम प्रतापू ❀ जगप्रिय हरिहर हरि प्रियआपू
नाम जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू ❀ भक्त शिरोमणि भे प्रहलादू

श्रीनारदजी ने भी नाम के प्रताप को जाना, क्योंकि जगत् को हरि और शिव प्यारे हैं और हरि के प्यारे आप (नारदजी) हुए ।। ३ ।। फिर नाम के जपने से ही भगवान् ने बालक प्रह्लाद पर ऐसी कृपा की है कि, वे भक्तों में शिरोमणि हो गये ।।४।।

ध्रुव सगलानि जपेउ हरिनामू ❀ पायउ अचल अनूपम ठामू
सुमिरि पवनसुत पावन नामू ❀ अपने वश करि राखेउ रामू

कुमार-ध्रुव ने यद्यपि ग्लानि सहित भगवान् के नाम का जाप किया था तो भी उनको अनुपम (जिसकी कोई दूसरी उपमा न हो) और अचल (चलायमान न होनेवाले) मोक्ष लोक की प्राप्ति हुई है ।। ५ ।। फिर पवन-पुत्र श्रीहनुमानजी ने नाम का ही सुमिरन (स्मरण) करके भगवान् श्रीरामचन्द्रजी को अपने वश में कर लिया है ।। ६ ।।

अपर अजामिल गज गणिकाऊ ❀ भयेउ मुक्त हरिनाम प्रभाऊ

कहहुँ कहाँ लगि नाम बड़ाई ❀ राम न सकहिं नामगुण गाई

और दूसरे अजामिल तथा गणिका आदिक कितने ही ऐसे हो गये हैं कि, जो भगवान् के नाम के प्रभाव से मुक्त हो चुके हैं ॥ सो मैं नाम की प्रशंसा कहाँ तक करूँ, श्रीरामचन्द्रजी भी नाम के प्रभाव को अथवा उसके गुण का अपार यश कहने में समर्थ नहीं हो सकते ॥८॥

दोहा—नाम राम को कल्पतरु, कलि कल्याण निवास ।
जो सुमिरत भये भाँग ते, तुलसी तुलसीदास ॥३२॥

इस कारण कलिकाल में श्रीरामजी का नाम ही कल्पवृक्ष रूप कल्याण का निवास है । जिसका सुमिरन करने से मैं भाँग रूपी 'तुलसी' आज तुलसीदास हो रहा हूँ ॥ ३२ ॥

चहुँयुग तीन काल तिहुँ लोका ❀ भये नाम जपि जीव विशोका
वेद पुराण संत मत एहू ❀ सकल सुकृत फल राम सनेहू

इस प्रकार चारों युगों, तीनों कालों और तीनों लोकों में जितने भी जीव मोक्ष को प्राप्त हुए हैं वे सब केवल नाम को जपकर ही वैसे हुये हैं ॥१॥ वेद, पुराण और सज्जनों की सम्मति है कि श्रीरामचन्द्रजी में प्रेम होना ही समस्त पुण्यों का फल है ॥२॥

ध्यान प्रथम युग मख विधि दूजे ❀ द्वापर परितोषत प्रभु पूजे
कलि केवल मलमूल मलीना ❀ पाप पयोनिधि जनमन मीना

पहले युग (सतयुग) में ध्यान करने से, दूसरे युग (त्रेता) में यज्ञ करने से और द्वापर में पूजा द्वारा प्रभु सन्तुष्ट होते थे ॥३॥ किन्तु कलिकाल जो मलिन पापों का मूल है और जिस पापरूपी सागर में मनुष्यों के मन मछली के समान लगे हुए हैं ॥४॥

नाम काम तरु काल कराला ❀ सुमिरत समन सकल जगजाला
राम नाम कलि अभिमत दाता ❀ हित परलोक लोक पितुमाता

उसमें भगवान् का नाम ही कामरूपी वृक्ष के लिये भयानक काल है कि, जिसका सुमिरन करने से संसार की समस्त आपदाओं का हरण हो जाता है ॥५॥ इसलिये कलिकाल में श्रीरामचन्द्रजी का नाम ही अभीष्ट फल का देनेवाला है और यही इस संसार तथा परलोक में भी माता-पिता के समान हित करनेवाला है ॥ ६ ॥

नहिं कलिकरम न धरम विवेकू ❀ राम नाम अवलम्ब न एकू
कालनेमि कलि कपट निधानू ❀ नाम सुमति समरथ हनुमानू

इस प्रकार मैं देखता हूँ तो,इस कलिकाल में सिवा राम नाम के कर्म-धर्म और विवेक (ज्ञान) का कोई प्रभाव होता नहीं दिखाई पड़ रहा है ॥ ७ ॥ क्योंकि यह कपट का भण्डार कलियुग तो कालनेमि राक्षस के समान है और उसका नाश करने के लिए केवल 'नाम' ही सुन्दर बुद्धि और सामर्थ्यवान् हनुमान है ॥ ८ ॥

दोहा—रामनाम नर केशरी, कनक कशिपु कलिकाल ।
जापक जन प्रहलाद जिमि, पालहिं दलि सुरसाल ॥३३॥

इसलिये इस कलिकाल रूपी हिरण्यकशिपु दैत्य का नाश करने के लिए श्रीरामचन्द्रजी

का नाम नर-केशरी रूप अर्थात् नरसिंह भगवान् के समान है। उनको प्रहलाद जैसे जापक (जपनेवाले) पुरुष जपकर राक्षसों की सेना का नाश कर फिर रक्षा करते हैं ।।३३।।

भाव कुभाव अनख आलसहूँ ❀ नाम जपत मंगल दिशि दशहूँ
सुमिरि सो नाम राम गुण गाथा ❀ करौं नाय रघुनाथहिं माथा

अतः प्रभु का नाम चाहे भाव से, चाहे कुभाव से, चाहे आलस्य से और चाहे ईर्ष्या से ही क्यों न लें, किन्तु नाम का जप दशों दिशाओं में मंगल स्वरूप ही है ।।१।। सो मैं उसी नाम का स्मरण कर श्रीराम को शिर झुकाकर श्रीरामचन्द्रजी के गुणों की गाथा अर्थात् कथा का वर्णन करता हूँ ।। २ ।।

मोरि सुधारिहि सो सब भाँती ❀ जासु कृपा नहिं कृपा अघाती
राम सुस्वामि कुसेवक मोसे ❀ निजदिशि देखि दयानिधि पोसे

सो मुझे आशा है कि, वे ही मेरी इस रचना का सब प्रकार सुधार करेंगे कि जिनकी कृपा दया करते हुए भी कभी तृप्त नहीं होती ।।३।। परन्तु उसमें यह एक चिन्ता है कि, श्रीरामचन्द्रजी तो मेरे बड़े सुन्दर स्वामी हैं और मैं उनका बड़ा बुरा सेवक हूँ—इससे निर्वाह कैसे हो ? फिर भी दयानिधि भगवान् ने अपनी ओर निहारकर अर्थात् अपनी श्रेष्ठता के कारण मेरी रक्षा ही की है ।। ४ ।।

लोकहु वेद सुसाहिब रीती ❀ विनय सुनत पहिचानत प्रीती
धनी गरीब ग्राम नर नागर ❀ पण्डित मूढ़ मलीन उजागर

क्योंकि लोक और वेद में भी अच्छे स्वामी का यह नियम होता है कि वे विनय को सुनकर प्रीति को पहिचान लेते हैं ।। ५ ।। धनी गरीब, ग्रामीण तथा नगर के वासी, पण्डित-मूर्ख, मलिन और विख्यात एवं ।। ६ ।।

सुकविकुकविनिजमतिअनुसारी ❀ नृपहिं सराहहिं सब नर नारी
साधु सुजान सुशील नृपाला ❀ ईश अंशभव परम कृपाला

अच्छे और बुरे कवि, अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार राजा की प्रशंसा करते हैं ।। राजा साधु तथा सुन्दर बुद्धि वाले सुशील होते हैं राजा में परम कृपालु भगवान् का अंश रहता है ।।

सुनि सनमानहिं सबहिं सुबानी ❀ भणितिभक्तिमतिगतिपहिचानी
यह प्राकृत महिपाल सुभाऊ ❀ जानि शिरोमणि कोशलराऊ

इसी कारण वह सर्वसाधारण की कही हुई भक्ति, मति और सुन्दर गति को पहचानकर सबका आदर करते हैं ।।९।। यह तो प्राकृत-राजाओं का स्वभाव है और मेरे कोशलराज महाराज भगवान् श्रीरामचन्द्रजी तो राजाओं में भी शिरोमणि और महाज्ञानी हैं ।।१०।।

रीझत राम सनेह निसोते ❀ को जग मंद मलिन मति मोते

वे श्रीरामचन्द्रजी तो स्नेह करते ही रीझ जाते हैं, पर मुझसे बढ़कर इस संसार में मलिन और मन्द बुद्धिवाला कौन है ? (जो उनसे प्रेम नहीं करता) ।। ११ ।।

दोहा—सठ सेवक की प्रीति रुचि, रखिहहिं राम कृपालु ।

उपल किये जलयान जेहि, सचिव सुमति कपिभालु ।।३४।।
हौंहुँ कहावत सब कहत, राम सहत उपहास ।
साहिब सीतानाथ से, सेवक तुलसीदास ।।३५।।

परन्तु मुझे आशा है कि, इस मूर्ख दास की प्रीति और इच्छा को श्रीरामचन्द्रजी अवश्य रखेंगे । क्योंकि उन्होंने पत्थर की नाव बनाकर रीछ और बन्दरों को अपना सुबुद्ध मन्त्री बनाया था ।।३४।। मुझसे सब लोग कहते हैं कि, तुलसीदास ! तुम सीतानाथ भगवान् श्रीरामचन्द्रजी के दास हो, सो मैं समझता हूँ कि मुझ दास से श्रीरामजी की निन्दा होती है और उनको उपहास सहना पड़ता है, क्योंकि कहाँ तो श्रीरामजी जैसा साहब और कहाँ इस तुलसीदास जैसा सेवक, तब मेल कैसे हो सकता है ? ।।३५।।

अति बड़ि मोरि ढिठाई खोरी ❀ सुनि अघ नरकहुँ नाक सिकोरी
समुझि सहमि मोहिं अपडर अपने❀ सो सुधि राम कीन्ह नहिं सपने

जब मुझमें इतना दोष है कि, मैं बार-बार ढिठाई ही करता हूँ कि, जिसे सुनकर नरक भी नाक-भौं सिकोड़ेगा अर्थात् जिससे नरक भी घृणा करेगा ।। १ ।। जिसे कभी एकान्त में बैठकर समझता हूँ तो अपनी करनी का मुझे अपने आप ही भय लगता है, सो उसका श्रीरामचन्द्रजी ने स्वप्न में भी ख्याल नहीं किया ।।२।।

सुनि अवलोकि सुचित चित चाही❀भक्ति मोरि मति स्वामि सराही
कहत नसाइ होइ अति नीको ❀ रीझत राम जानि जन जीको

क्योंकि यदि ख्याल किए होते, अथवा देख और सुनकर स्थिर चित्त से कहीं विचार कर दिये होते, तो मेरी कहीं भी गुजर न होती लेकिन स्वामी श्रीरामचन्द्रजी ने तो मेरी मति और भक्ति की प्रशंसा ही की ।। ३ ।। यह बात अथवा यह प्रेम कहने योग्य नहीं, क्यं कि अच्छी बात कहने-सुनने से नष्ट हो जाती है । हाँ ! यह निश्चित सिद्धान्त है कि, श्रीरामचन्द्रजी अपने भक्त के हृदय की बात को जानकर रीझते हैं । कहने का भाव यह है कि, धार्मिक प्रार्थना के होते ही भगवान् उसे झट सुन लेते हैं ।।४।।

रहत न प्रभु चित चूक किये की ❀ करत सुरति सत बार हिये की
जेहिं अघ बधेउ व्याध जिमि बाली❀फिरि सुकण्ठ सोइ कीन्ह कुचाली

उन प्रभु के चित्त में भक्त की उस चूक का कोई ख्याल नहीं रहता जो कदाचित् हो जाया करती है, वह सौ बार उसके धार्मिक विचार का ही ख्याल करते हैं । नहीं तो जिस पाप के कारण उन्होंने एक ब्याध के समान बालि को मार डाला और वही कुचाल फिर सुग्रीव ने की ।।

सोइ करतूति विभीषण केरी ❀ सपनेहुँ सो न राम हिय हेरी
ते भरतहिं भेटत सनमाने ❀ राजसभा रघुबीर बखाने

वही करतूत विभीषण ने की थी कि, उसने मन्दोदरी को रख लिया था; किन्तु दयालु भगवान् श्रीरामचन्द्रजी ने स्वप्न में भी उसकी खोज अपने हृदय में न की किन्तु भरतजी से भेंट करते समय राज-सभा में श्रीरामचन्द्रजी ने उसका बखान ही किया ।।८।।

दोहा–प्रभु तरुवर कपि डार पर, ते किय आपु समान ।
तुलसी कहूँ न राम से, साहिब सीलनिधान ।।३६।।
राम निकाई रावरी, है सबही को नीक ।
जौं यह साँची है सदा, तौ नीको तुलसीक ।।३७।।
एहि बिधि निज गुन दोषकहि, सबहिं बहुरि सिरुनाइ ।
बरनौं रघुबर बिसद जस, सुनि कलिकलुष नसाइ ।।३८।।

श्रीतुलसीदासजी कहते हैं कि, यदि वे प्रभु ऐसा न होते तो क्या स्वयं वे तो वृक्ष के नीचे रहते और उन बन्दरों को जो कि, हर समय वृक्ष की डालों पर ही चढ़े रहते हैं उनको अपने समान बनाते, इसलिए उन श्रीरामचन्द्रजी महाराज से बढ़कर शीलनिधान स्वामी कोई नहीं है ।।३६।। सो हे श्रीरामचन्द्रजी महाराज ! आपकी यह निकाई हर किसी के लिये अच्छी है और यदि यह सर्वदा सत्य है तो मुझ तुलसीदास के लिए भी अच्छी ही होगी ।।३७।। इस प्रकार अपने गुण और दोष का वर्णन कर और फिर सबको शिर झुकाकर मैं श्रीरामचन्द्रजी के उस निर्मल यश का वर्णन करता हूँ कि, जिसको सुनने से कलियुग में पापों का सर्वथा ही नाश हो जायगा ।।३८।।

याज्ञवल्क्य जो कथा सुहाई ❀ भरद्वाज मुनिबरहिं सुनाई
कहिहौं सोइ संबाद बखानी ❀ सुनहु सकल सज्जन सुख मानी

याज्ञवल्क्य मुनि ने जो सुहावनी कथा भरद्वाज मुनि को सुनाई थी ।।१।। वही संवाद मैं वर्णन करूँगा, हे सज्जनों ! आप सब मनमें सुख मानकर सुनो ।। २ ।।

शम्भु कीन्ह यह चरित सुहावा ❀ बहुरि कृपाकरि उमहिं सुनावा
सो शिव कागभुशुण्डिहिं दीन्हा ❀ रामभक्त अधिकारी चीन्हा

इस सुन्दर चरित्र को (पहले पहल) श्रीशिवजी ने बनाया था, फिर कृपा करके उन्होंने पार्वतीजी को सुनाया ।।३।। फिर उसी को शिवजी ने काकभुशुण्डिजी को श्रीरामचन्द्रजी का भक्त व अधिकारी जानकर सुनाया है ।।४।।

तेहिसन याज्ञवल्क्य मुनि पावा ❀ तिन्ह पुनि भरद्वाज प्रति गावा
ते श्रोता वक्ता सम शीला ❀ समदर्शी जानहिं हरि लीला

फिर उसी को 'तेहिसन' अर्थात् काकभुशुण्डि से याज्ञवल्क्य मुनि ने पाया और उन्होंने अर्थात् याज्ञवल्क्य मुनि ने श्रीभरद्वाज मुनि से कहा ।।५।। वे दोनों श्रोता और वक्ता समान बुद्धिवाले समदर्शी और भगवान् की लीला को जानने वाले थे ।।६।।

जानहिं तीनि काल निज ज्ञाना ❀ करतलगत आमलक समाना
औरौ जे हरि भक्त सुजाना ❀ कहहिं सुनहिं समुझहिं विधिनाना

उनका ज्ञान इतना बढ़ा चढ़ा था कि वे भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों काल की बातों को हथेली में रखे हुए आँवले की भाँति जानते थे ।।७।। इनके अतिरिक्त और भी जो भगवान् के भक्त और अच्छे ज्ञानी हैं तथा जो एक दूसरे से भगवान् की लीला को आपस में अनेक प्रकार से कहते, सुनते और समझते हैं वे भी ज्ञानी और भक्त हैं ।।८।।

दोहा—मैं पुनि निज गुरुसन सुनी, कथा सो सूकर खेत।
समुझी नहिं तसि बालपन, तब अति रहेउँ अचेत ॥३९॥
श्रोता बकता ज्ञान निधि, कथा राम कै गूढ़।
किमि समुझौं मैं जीव जड़, कलिमल ग्रसित विमूढ़ ॥४०॥

इस प्रकार जब एक दूसरे से लोग कहते सुनते आपस में विचार करते चले आये, तब इधर के युग में, मैंने यह सुन्दर कथा कुरुक्षेत्र में अपने गुरु के मुख से सुनी; किन्तु उस समय मेरी बाल्यावस्था थी, जिससे जैसा समझना चाहिये था, वैसा ठीक रूप से समझ न सका, क्योंकि उस समय तक मैं बिल्कुल ही नासमझ था ॥३९॥ क्योंकि एक तो इस कथा के श्रोता-वक्ता ज्ञान के निधि, बहुत बड़े ज्ञानी और दार्शनिक थे और दूसरे श्रीरामचन्द्रजी की यह कथा बहुत गूढ़ अर्थात् कठिन है। तब भला कलियुग के पापों से ग्रस्त हुआ मैं जड़ जीव उसको समझने में कैसे समर्थ हो सकता था? ॥४०॥

तदपि कही गुरु बारहिं बारा ❁ समुझि परी कछु मति अनुसारा
भाषाबद्ध करब मैं सोई ❁ मोरे मन प्रबोध जेहि होई

तो भी श्रीगुरुदेवजी मेरे समझने के लिए इस कथा को बारम्बार कहते ही रहे। तब जैसी कुछ मेरी बुद्धि रही, उसके अनुसार जो कुछ समझ पाया, समझा ॥१॥ अब उसी को मैं भाषा-बद्ध करके ऐसे लिख रहा हूँ कि जिससे मेरे मन को अच्छा बोध (ज्ञान) हो जावे ॥

जस कछु बुधि विवेक बल मोरे ❁ तस कहिहौं हिय हरि के प्रेरे
निज संदेह मोह भ्रम हरणी ❁ करौं कथा भव सरिता तरणी

जैसा कुछ मुझमें बुद्धि और ज्ञान का बल है वैसा ही हरि (भगवान्) की प्रेरणा होने से कहूँगा। जिससे मेरे मन का मोह, भ्रम और सन्देह मिट जाय इसलिए मैं संसार रूपी नदी को पार करने के लिए नौका रूपी श्रीरामचन्द्रजी की इस कथा की रचना करता हूँ ॥४॥

बुध विश्राम सकल जन रंजनि ❁ रामकथा कलि कलुष विभंजनि
रामकथा कलि पन्नग भरणी ❁ पुनि विवेक पावक कहँ अरणी

यह श्रीराम-कथा पण्डित और बुद्धिमानजनों को आराम देनेवाली और सर्व साधारण लोगों को भी प्रसन्न करनेवाली तथा कलियुग के पापों को विशेष रूप से नाश करनेवाली है ॥५॥ यह राम-कथा (रामायण की कथा) कलियुग रूपी सर्प के नाश के लिए भरणी नामक नक्षत्र या गारुड़ी मंत्र है, फिर रामजी की कथा कैसी है कि, मानो विवेक रूपी अग्नि को उत्पन्न करने के लिए अरणी अर्थात् यज्ञ का वह काष्ठ है जिससे अग्नि उत्पन्न की जाती है ॥६॥

रामकथा कलि कामद गाई ❁ सुजन सजीवन मूरि सुहाई
सोइ बसुधातल सुधा तरङ्गिनि ❁ भव भंजनि भ्रमभेक भुअङ्गिनि

फिर रामजी की कथा कलिमें कामदरूपी अर्थात् कलियुग के समस्त दुःखों को दूर करने के लिए साक्षात् कामधेनुरूपी गौ है और सुजन, अच्छे पुरुषों के लिए सुन्दर संजीवनी जड़ी है

और वही श्रीरामचन्द्रजी की कथा इस पृथ्वीतल पर अमृत-नदी के समान है जो संसार के दुःखों का नाश करनेवाली और भ्रम रूपी मेढक को निगलने के लिए सर्प रूपी है ।।८।।

असुर सेन सम नरक निकन्दिनि❀साधु बिबुधकुल हित गिरिनंदिनि
सन्त समाज पयोधि रमा सी ❀ विश्वभार धर अचल क्षमा सी

फिर दैत्यों की सेना के समान नरक का नाश करने के लिये गंगाजी के तुल्य है, साधु और देवताओं के कुल का हित करने के लिये प्रत्यक्ष रूप में गिरिनन्दिनी अर्थात् दुर्गा स्वरूप और सत्पुरुषों के समाज रूप समुद्र में लक्ष्मी के समान और जगत् का भार धारण करने के लिए अचल पृथ्वी के समान है ।।१०।।

यम गण मुहँमसि जग यमुना सी❀ जीवनमुक्ति हेतु जनु काशी
रामहिं प्रिय पावनि तुलसी सी❀तुलसिदास हित हिय हुलसी सी

फिर श्रीरामचन्द्रजी की कथा यमराज के गणों के मुँह में स्याही लगाने के लिए इस जगत् में यमुना (नदी) के समान है और जीते जी मोक्ष को प्राप्त हो जाने के लिए मानों काशीपुरी है ।।११।। यह कथा श्रीरामचन्द्रजी को तुलसी वृक्ष के समान प्रिय है और मुझ तुलसीदास के लिए तो माता 'हुलसी' के समान प्रिय करनेवाली है ।।१२।।

शिव प्रिय मेकल शैल सुता सी❀ सकल सिद्धिप्रद संपति रासी
सदगुण सुरगण अम्ब अदिति सी❀ रघुबरभक्ति प्रेम परिमिति सी

फिर यह कथा श्रीमहादेवजी को मेकल नामक पर्वत की कन्या नर्मदा के समान प्रिय है और समस्त सिद्धियों को प्रदान करनेवाली सम्पदा की खान है ।।१३।। फिर यह रामकथा सद्गुणों की माता है और श्रीरामचन्द्रजी के प्रेम-भक्ति की तो मानों सीमा ही है ।। १४ ।।

दोहा–राम कथा मन्दाकिनी, चित्रकूट चित चारु ।
तुलसी सुभग सनेह बन, सिय रघुबीर विहारु ।।४१।।

इस प्रकार श्रीरामचन्द्रजी की कथा मन्दाकिनी गंगा के समान है जो इस चित्रकूट रूपी सुन्दर चित्त में बहती है। तुलसीदासजी कहते हैं कि, यह स्नेहरूपी वह वन है जिसमें श्रीसीतारामचन्द्रजी के विहार का वर्णन है ।। ४१।।

रामचरित चिन्तामणि चारू ❀ सन्त सुमति तिय सुभग सिंगारू
जगमंगल गुन ग्राम राम के ❀ राम भगति धन धर्म धाम के

श्रीरामचन्द्रजी का चरित्र सुन्दर चिन्तामणि के समान है और वही सन्तजनों की सुन्दर बुद्धि रूपी स्त्री का सुन्दर श्रृङ्गार है ।।१।। इस प्रकार श्रीरामचन्द्रजी का गुण-समूह संसार का कल्याण करनेवाला एवं भक्ति, धन और धर्म को प्रदान करनेवाला है ।। २ ।।

सदगुरु ज्ञान विराग योग के ❀ बिबुध वैद भव भीम रोग के
जननि जनक सिय राम प्रेम के❀ बीज सकल व्रत धर्म नेम के

यह रामचरित ज्ञान, वैराग्य और योग का सद्गुरु है और यह महा प्रबल संसार के रोगों का नाश करने के लिए विबुध वैद्य अर्थात् देवताओं के वैद्य अश्विनीकुमार के समान

हैं ॥ ३ ॥ यह राम-चरित श्रीसीतारामजी के प्रेम के लिए माता-पिता के समान है और समस्त व्रत, धर्म और नियमों का बीज-स्वरूप है ॥४॥

समन पाप संताप सोक के ❁ प्रिय पालक परलोक लोक के
सचिव सुभट भूपति बिचार के ❁ कुम्भज लोभ उदधि अपार के

यह समस्त शोक और पाप सन्तापों का नाश करने वाला और लोक-परलोक दोनों ही का प्रिय पालक है ॥५॥ विचार रूपी राजा का सचिव अच्छा मन्त्री है और लोभ रूपी अपार समुद्र को सोखने के लिए कुम्भज ऋषि के समान है ॥६॥

काम क्रोध कलिमल करिगन के ❁ केहरि सावक जन मन बन के
अतिथि पूज्य प्रीतम पुरारि के ❁ कामद घन दारिद दवारि के

यह काम क्रोध और कलियुग के पाप रूपी हाथियों के यूथ को नाश करने के लिए सिंह के बच्चे के समान है ॥७॥ यह भगवान् शंकरजी को अतिथि के समान प्रिय और पूजा करने योग्य है और यह दरिद्रता रूपी बन की अग्नि को नष्ट करने के लिए जलदाता मेघ के समान है ॥८॥

मंत्र महा मनि विषय व्याल के ❁ मेटत कठिन कुअङ्क भाल के
हरनि मोहतम दिनकर कर से ❁ सेवक सालिपाल जलधर से

यह राम-कथा मनुष्यों के विषयरूपी सर्प-विष को मिटाने के लिए महामणिरूपी वह अमोघ मंत्र है जो विधि के लिखे हुए महादारुण खोटे अङ्कों को भी मिटा देती है। इससे मोहरूप अन्धकार का वैसे ही नाश हो जाता है जैसे सूर्य की किरणों से रात्रि का अन्धकार दूर हो जाता है, अतः यह सेवक रूपी धान (चावल) की खेती का पालन करने के लिए मेघ के समान है ॥१०॥

अभिमत दानि देव तरुवर से ❁ सेवत सुलभ सुखद हरिहर से
सुकवि सरद नभ मन उडुगन से ❁ राम भगत जन जीवन धन से

यह इच्छित वस्तु को देने के लिए कल्पवृक्ष के समान दानी, और सेवा करने से अर्थात् कहनें सुनने और विचारने से विष्णु और शिवजी के समान सुख देनें वाली है ॥११॥ यह श्रेष्ठ कवियों के हृदय रूपी गगन मण्डल में तारागण के समान और राम भक्तों के लिए तो मानों उनका जीवन-धन ही है ॥ १२ ॥

सकल सुकृत फल भूरि भोग से ❁ जगहित निरुपधि साधु लोग से
सेवक मन मानस मराल से ❁ पावन गंग तरङ्गमाल से

यह समस्त पुण्य रूपी यज्ञादिक फलों के अमित भोग के समान है और संसार का कल्याण करनेमें निष्कलंक साधु जनों के समान है ॥१३॥ सेवकों (भक्तजनों) के मन रूपी मान-सरोवर में हंस के समान और पवित्र करने के लिए श्रीगङ्गाजी की लहरों के समान है ॥१४॥

दोहा—कुपथ कुतर्क कुचालि कलि, कपट दम्भ पाखण्ड।
दहन राम गुन ग्राम जिमि, इन्धन अनल प्रचण्ड ॥४२॥

फिर यह राम-कथा कलियुग के कुतर्क, कुपँथों सहित कपट, दम्भ और समस्त पाखण्ड रूपी इन्धन को भस्म करने के लिए प्रचण्ड अग्निरूप है ॥ ४२ ॥

दोहा—रामचरित राकेश कर, सरिस सुखद सब काहु ।
सज्जन कुमुद चकोर चित, हित विशेष बड़ लाहु ।।४३।।

इस प्रकार यह श्रीरामजी का सुन्दर चरित्र चन्द्रमा की किरणों के समान सर्व साधारण के लिए सुखदायक है । इसमें सज्जन पुरुषों का चित्त चकोर के समान लगा रहता है अथवा जैसे चकोर का चित्त अग्नि के लिए लालाइत रहता है, वैसे ही सन्तों का चित्त इस राम-चरित्र के चिन्तन में लगा रहता है, यही उनके लिए विशेष हितकर और महान् लाभ की वस्तु है ।।४३।।

कीन्ह प्रश्न जेहि भाँति भवानी ❁ जेहि विधि शंकर कहा बखानी
सो सब हेतु कहब मैं गाई ❁ कथा प्रबन्ध विचित्र बनाई

अतः जिस प्रकार भवानी श्रीपार्वतीजी ने प्रश्न किया था और जिस विधि से श्रीशंकर जी ने विशद वर्णन कर कहा था ।। १ ।। वह सब कारण मैं कथा की रीति से गाकर और विचित्र छन्द-प्रबन्ध के साथ बनाकर कहूँगा ।। २ ।।

जिन्ह यह कथा सुनी नहिं होई ❁ जनि आश्चर्य करै सुनि कोई
कथा अलौकिक सुनहिं जे ज्ञानी ❁ नहिं आश्चर्य करहिं अस जानी

जो लोग इस कथा को न सुने हों, वह कोई भी सुनकर आश्चर्य न करेंगे ।। ३ ।। क्योंकि जो लोग ज्ञानी हैं वे इस कथा को सुनकर इसलिए आश्चर्य नहीं करते कि ।।४।।

रामकथा की मिति जग नाहीं ❁ अस प्रतीति तिनके मन माहीं
नाना भाँति राम अवतारा ❁ रामायन शत कोटि अपारा

वे इस बात को अच्छी तरह जानते हैं और उनके मन में ऐसा विश्वास है कि श्रीरामचन्द्रजी की कथा की सीमा इस संसार में नहीं है ।। ५ ।। क्योंकि श्रीरामचन्द्रजी के अनेकों अवतार हो चुके हैं अथवा अनेकों रूपमें होते ही रहते हैं, इससे रामायणकी संख्या शतकोटि (सौ करोड़) के बराबर अपार है ।। ६ ।।

कल्प भेद हरि चरित सुहाये ❁ भाँति अनेक मुनीसन गाये
करिय न संशय अस उर आनी ❁ सुनिय कथा सादर रति मानी

अतः प्रभु के इस कल्पभेद के सुहावने चरित्र को मुनियों ने अनेक प्रकार से कहकर गाया है ।।७।। इस कारण ऐसा मनमें समझकर किसी प्रकार की शंका न कीजिए और सादर एवं प्रेम सहित मन लगाकर इस कथा को सुनिए ।। ८ ।।

दोहा—राम अनन्त अनन्त गुन, अमित कथा बिस्तार ।
सुनि आचरज न मानिहहिं, जिनके विमल विचार ।।४४।।

श्रीरामचन्द्रजी अनन्त हैं और उनके गुण भी अनन्त हैं एवं उनकी कथा का विस्तार भी अपार है, अतः जो निर्मल विचारवाले हैं, वे इस कथा को सुनकर आश्चर्य नहीं करेंगे ।।४४।।

इहि विधि सब संशय करि दूरी ❁ सिरधरि गुरुपद पंकज धूरी
पुनि सबही बिनवौं कर जोरी ❁ करत कथा जेहि लाग न खोरी

इस प्रकार सारी शंकाओं को दूर कर और श्रीगुरु महाराज के चरण कमलों की धूलि को शिर पर लगाकर ॥ १ ॥ फिर सबसे हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कि जिससे कथा की रचना करने के कारण मुझे कोई दोष न लगावे ॥ २ ॥

सादर शिवहिं नाइ अब माथा ❁ बरनौं विशद रामगुन गाथा
संबत् सोरह सौ इकतीसा ❁ करौं कथा हरिपद धरि सीसा

अब मैं श्रीमहादेवजी के चरणों में शिर झुकाकर श्रीरामचन्द्रजी के परम पावन चरित्र का वर्णन करता हूँ। संवत् १६३१ में श्रीहरि के चरणों पर शिर रखकर इसको आरम्भ करता हूँ ॥४॥

नवमी भौमवार मधुमासा ❁ अवधपुरी यह चरित प्रकाशा
जेहि दिन रामजनमश्रुति गावहिं ❁ तीरथ सकल तहाँ चलि आवहिं

चैत्र शुक्ल नवमी मंगलवार के दिन अयोध्यापुरी में इस चरित्र का प्रकाश कर रहा हूँ ॥५॥ जिस दिनको वेद श्रीरामचन्द्रजी का जन्म दिन मानकर उसका गुणानुवाद करते हैं और वहाँ समस्त तीर्थ चले आते हैं ॥६॥

असुर नाग खग नर मुनि देवा ❁ आय करहिं रघुनायक सेवा
जन्म महोत्सव रचहिं सुजाना ❁ करहिं राम कल कीरति गाना

यही नहीं देवता, दैत्य, नाग, मनुष्य, पशु, पक्षी और मुनि भी वहाँ आकर श्रीरामचन्द्रजी की सेवा करते हैं ॥७॥ वहाँ सुजान लोग जन्म-महोत्सव की रचना करते हैं और हर प्रकार से श्रीरामचन्द्रजी के मनोहर चरित्र का गान करते हैं ॥८॥ और—

दोहा—मज्जहिं सज्जन वृन्द बहु, पावन सरयू नीर।
जपहिं राम धरि ध्यान उर, सुन्दर स्याम शरीर ॥४५॥

जहाँ अनेक सज्जनों का समूह पवित्र सरयूके जल में स्नान कर श्रीरामचन्द्रजी के सुन्दर श्याम शरीर को हृदय में धारण कर उनके नाम का जप करते हैं ॥४५॥

दरस परस मज्जन अरु पाना ❁ हरै पाप कह वेद पुराना
नदी पुनीत अमित महिमा अति ❁ कहि न सकै सारदा विमल मति

इस प्रकार वेद-पुराण कहते हैं कि, श्रीसरयूजी दर्शन, स्नान और जलपान आदि करने से सब प्रकार के पापों को हर लेती हैं ॥१॥ उस परम पुनीत सरयू की महिमा ऐसी अपार है कि, जिसे निर्मल बुद्धिवाली शारदा (सरस्वतीजी) भी नहीं कह सकतीं ॥२॥ क्योंकि—

राम धामदा पुरी सुहावनि ❁ लोक समस्त विदित जग पावनि
चारि खानि जग जीव अपारा ❁ अवध तजे तनु नहिं संसारा

जहाँ श्रीरामचन्द्रजीके धाम को देने वाली अयोध्या अत्यन्त रमणीय है, इसकी पवित्रता जगत् के समस्त लोकों में विदित है॥३॥ संसार में चार प्रकारके [स्वेदज, अण्डज, उद्भिज और जरायुज] जितने भी अपार जीव हैं, वे श्रीअयोध्या में शरीर त्यागने पर फिर संसार में नहीं उतरते ॥४॥

सब विधि पुरी मनोहर जानी ❁ सकल सिद्धिप्रद मंगल खानी

विमल कथा कर कीन्ह अरम्भा ❋ सुनत नसाहिं काम मद दम्भा

अतः अयोध्यापुरी को सब प्रकार से मनोहर और समस्त सिद्धियों की प्रदाता और मंगल की खान जानकर ॥५॥ इस विमल कथा को यहाँ आरम्भ कर दिया है कि, जिसके श्रवण करने से काम, मद और दम्भ का नाश हो जाता है ॥६॥

रामचरित मानस यहि नामा ❋ सुनत श्रवण पाइय विश्रामा
मन करि विषय अनल बन जरई ❋ होइ सुखी जो यहि सर परई

(देखो) इसका नाम 'राम-चरित-मानस' है, इसको श्रवण करने से विशेष आराम मिलता है ॥७॥ विषयरूपी दावाग्नि में जलता हुआ जो मनुष्य इसमें आकर पड़ जाता है, वह सुखी हो जाता है ॥८॥ क्योंकि—

रामचरितमानस मुनि भावन ❋ विरचेउ शंभु सुहावन पावन
त्रिविध दोष दुख दारिद दावन ❋ कलिकुचाल कलिकलुष नसावन

इस परम पवित्र और सुहावने राम-चरित-मानस की रचना श्रीशंकरजी ने की है जो पहले मुनियों को बहुत अच्छी लग चुकी है ॥९॥ इससे यह दैहिक, दैविक और भौतिक तीनों प्रकार के दोष, दुःख और दरिद्रता को भस्म करनेवाली और कलि की कुचालों सहित समस्त कलि के पापों को नाश करनेवाली है ॥ १० ॥

रचि महेश निज मानस राखा ❋ पाइ सुसमय सिवा सन भाषा
ताते राम चरित मानस वर ❋ धरेउ नाम हिय हेरि हरषि हर

इसे पहले शिवजी ने रचकर अपने मनमें रक्खा और अच्छा समय पाकर श्रीपार्वतीजी से कहा था ॥११॥ इस कारण अपने मनमें प्रसन्न होकर शिवजी ने भी इसका वही श्रेष्ठ नाम रामचरित-मानस ही रखा ॥ १२ ॥

कहौं कथा सोइ सुखद सुहाई ❋ सादर सुनहु सुजन मन लाई

वही सुख देनेवाली सुहावनी कथा कहता हूँ, हे सज्जनों ! मन लगाकर सुनो ॥ १३ ॥

दोहा—जस मानस जेहि बिधि भयउ, जग प्रचार जेहि हेतु ।
अब सोइ कहौं प्रसङ्ग सब, सुमिरि उमा बृषकेतु ॥४६॥

(देखो) जिस प्रकार और जैसे इस 'रामचरित-मानस' की उत्पत्ति हुई है और जिस कारण इसका संसार में इतना प्रचार हुआ है, अब मैं उन सब प्रसंगों को श्रीशिवजी और श्रीपार्वतीजी का स्मरण करके कहता हूँ ॥ ४६ ॥

शम्भु प्रसाद सुमति हिय हुलसी ❋ राम चरित मानस कवि तुलसी
करउँ मनोहर मति अनुसारी ❋ सुजन सुचित सुनि लेहु सुधारी

श्रीशिवजी की कृपा से अब मेरी बुद्धि में सुन्दर उमंग (उत्साह) आ रहा है कि, मैं तुलसीदास इस राम-चरित-मानस का कवि हो रहा हूँ ॥१॥ मुझसे जहाँ तक हो सकेगा अपनी कल्पना से इसे अत्यन्त सुन्दर ही बनाऊँगा। तो भी, यदि इसमें कोई त्रुटि रह जाय तो आप सज्जन पुरुष स्थिर बुद्धि से इसे सुधार लीजियेगा ॥२॥ क्योंकि—

सुमति भूमितल हृदय अगाधू ❀ वेद पुरान उदधि घन साधू
बरषहिं राम सुयश वर बारी ❀ मधुर मनोहर मंगलकारी

इस 'राम-चरित-मानस' का प्रबन्ध मानसरोवर के समान है, इसमें जो गम्भीर हृदय के भीतर सुन्दर बुद्धि है वहीं भूमितल (पृथ्वी) है, वेद और पुराण समुद्र और सन्त लोग बादल के समान हैं ।।३।। वे श्रीरामचन्द्रजी के सुयशरूपी श्रेष्ठ जल की वर्षा करते हैं, जो अत्यन्त ही मधुर और मनको हरने वाला तथा मङ्गलों का मूल कारण है ।। ४ ।। और—

लीला सगुन जो कहहिं बखानी ❀ सोइ स्वच्छता करै मलहानी
प्रेम भक्ति जो बरनि न जाई ❀ सोइ मधुरता सुशीतलताई

इसमें जो भगवान् की सगुण-लीलाओं का वर्णन आयेगा, वही उस जल की स्वच्छता है जो मल (पाप) का नाश करने वाला है ।। ५ ।। और इसमें जो भगवान् के प्रेम और भक्ति का वर्णन आयेगा वही उस जल की मधुरता और शीतलता है ।। ६ ।।

सोइ जल सुकृत सालिहित होई ❀ रामभक्ति जन जीवन सोई
मेधा महिगत सो जल पावन ❀सिमिट श्रवण मग चलेउ सुहावन

वह जल पुण्य रूपी धान का हित करने वाला है और वही श्रीरामचन्द्रजी के भक्तजनों का जीवन है ।।७।। और वही पवित्र जल बुद्धि रूपी पृथ्वी पर फैल कर कर्ण रूपी मार्ग से शोभायमान होता हुआ प्रवाहित होता है ।। ८ ।।

भरेउ सो मानस सुथल थिराना ❀ सुखद सीत रुचि चारु चिराना

जिससे वह मानस भरकर सुन्दर हृदयरूपी स्थलमें स्थिर होकर जैसे शरद् ऋतु आ जानेसे सरोवर का जल स्वच्छ हो जाता है,वैसे ही सत्संग आदिको पाकर वही निर्मल और शीतल हो जायगा ।।

दोहा—सुठि सुन्दर सम्वाद वर, विरचेउ बुद्धि विचार ।
ते यहि पावन सुभग सर, घाट मनोहर चारि ।।४७।।

इसमें जो अत्यन्त शोभायमान चार सम्वाद रखे गये हैं वही इस पवित्र सुन्दर सरोवर के चार ऐसे घाट हैं जो सहसा ही मन को लुभा लेते हैं, 'चारि मनोहर घाट' यह कि, १—शिव-पार्वती-संवाद, २—काकभुशुण्डि-गरुड़-संवाद, ३—याज्ञवल्क्य-भरद्वाज-संवाद, ४—गोस्वामी तुलसीदास और श्रोताओं अथवा तुलसीदासजी और श्रीगुरु महाराज का संवाद है ।। ४७ ।।

सप्त प्रबन्ध सुभग सोपाना ❀ ज्ञान नयन निरखत मनमाना
रघुपति महिमा अगुन अबाधा ❀ बरनब सोइ बरबारि अगाधा

इसमें जो 'सप्त प्रबन्ध' सातकांड हैं वही तो 'सात सोपान' सात सीढ़ियाँ हैं जिन्हें ज्ञान चक्षु से देखने पर मन को शान्ति प्राप्त होती है ।।१।। इसमें जो श्रीरामचन्द्रजी की तीनों गुणोंसे परे बाधा रहित महिमा है, वही इस श्रेष्ठ जल की गहराई है, अब मैं उसी का वर्णन करता हूँ ।।२।।

राम सीय जल सलिल सुधा सम ❀ उपमा बोचि बिलास मनोरम
पुरइनि सघन चारु चौपाई ❀ युक्ति मंजुमनि सीप सुहाई

देखो, इसमें जो श्रीरामचन्द्रजी के यश का वर्णन है वही तो अमृत रूपी सुन्दर जल है और उसके बीच में जो उपमायें आयेंगी वे ही उस जल की सुन्दर तरङ्गों का विलास हैं ।।३।। इसमें जो सुन्दर चौपाइयाँ हैं वही इस मानसरोवर में सघन पुरइन (कमलिनी) के रूप में हैं और उसमें कवि की युक्ति को ही सुहावनी सीपियों में मोती के समान समझना चाहिये ।।४।। अथवा जैसे सीपियों में मोती की सुहावनी झलक विद्यमान रहती है वैसे ही इसकी चौपाइयों को स्वाभाविक गुणों से पूर्ण जानना चाहिये और

छन्द सोरठा सुन्दर दोहा ❀ सोइ बहुरङ्ग कमल कुल सोहा
अर्थ अनूप सुभाव सुभाषा ❀ सोइ पराग मकरन्द सुवासा

इसमें जो छन्द, सोरठे और दोहे हैं; वे ही इस मानसरोवर की कमलिनी रूप चौपाइयों के खिले हुए अनेक रंग के सुहावने कमल हैं। जिनके अर्थ अनुपम स्वाभाविक और सुन्दर भाषाओं से युक्त हैं, वही इन छन्द आदि कमलों पर पड़ी हुई पुष्परज के समान सुगन्धित धूल हैं ।।

सुकृत पुञ्ज मंजुल अलि माला ❀ ज्ञान विराग विचार मराला
धुनि अवरेब कबित गुन जाती ❀ मीन मनोहर ते बहु भाँती

उस पर पुण्यरूपी भौरों की कतार सर्वदा ही विचरा करती है और उसमें सम्मिलित जो ज्ञान और वैराग्य के विचार हैं, वे ही हंस के समान हैं ।। ७ ।। कविता के जो चार भेद होते हैं—ध्वनि, अवरेब, गुण और गति वही इस 'राम-चरित-मानस' की अनेक प्रकार की सुन्दर मछलियाँ हैं कि जिन्हें देखते ही मन मोहित हो जाता है ।। ८ ।।

अर्थ धर्म कामादिक चारी ❀ कहब गान विज्ञान विचारी
नवरस जप तप योग विरागा ❀ ते सब जलचर चारु तड़ागा

इसमें जो अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष का वर्णन ज्ञान-विज्ञान के विचारों से किया जा रहा है ।।९।। और जो श्रृङ्गार, वीर, रौद्र, वीभत्स आदि कविता के नौ रस हैं, तथा जप, तप, योग और वैराग्य आदि का जो वर्णन है, वही इस मानसरोवर के जलचारी जीव हैं ।। १० ।।

सुकृती साधु नाम गुन गाना ❀ ते विचित्र जल विहँग समाना
सन्त सभा चहुँदिसि अमराई ❀ श्रद्धा ऋतु बसन्त सम गाई

इसमें वे पुण्यात्माजन जो सर्वदा ही श्रीरामचन्द्रजी के नाम का यशोगान किया करते हैं उनको विचित्र जल-पक्षी का स्थान प्राप्त है ।। और उन सन्तों की सभा ही इस सरोवर के चारों ओर सुन्दर अमराई (बगीची) के समान है और उनकी जो श्रद्धा है वही सुन्दर बसन्त ऋतु है ।।

भक्ति निरूपन विविध विधाना ❀ क्षमा दया द्रुम लता विताना
संयम नियम फूल फल ज्ञाना ❀ हरिपद रति रस वेद बखाना

वे सन्तजन जो अनेक प्रकार से भाव भक्ति का निरूपण अर्थात् भक्ति का सविस्तार वर्णन करते रहते हैं, वह चर्चा ही क्षमा और दयामयी शाखाओं से युक्त इस राम-चरित-मानस पर लता बेलि के समान फैली हुई है ।। १३ ।। इसमें संयम-नियम फूल और फल ज्ञान है, भगवान् के चरणों में वही प्रेम, रस है जिसका वेद ने बखान किया है ।। १४ ।।

औरउ कथा अनेक प्रसंगा ❀ ते सुक पिक बहु वर्ण विहंगा

यही नहीं, और भी जो इसमें अनेक प्रकार की कथाएँ एवं प्रसंग वर्णन किये गए हैं, वे रंग-बिरंगे शुक (सुग्गा) और कोयल आदि पक्षी के रूप में हैं ।।१५।।

दोहा—पुलक बाटिका बाग बन, सुख सुबिहंग बिहारु ।
माली सुमन सनेह जल, सींचत लोचन चारु ।।४८।।

इस प्रकार जो राम-चरित-मानसकी उपरोक्त फुलवारियाँ बाग और बन हैं उसमें अच्छे-अच्छे सुन्दर विहंग तोता, मैंना, चातक आदि रंग-बिरंगे पक्षी सुख पूर्वक विहार (आनन्द) कर रहे हैं और उसमें सुन्दर मनरूपी माली अपने नेत्रों से स्नेहरूपी जल भर-भरकर सींच रहा है ।।४८।।

जे गावहिं यह चरित सँभारे ❀ ते यहि ताल चतुर रखवारे
सदा सुनहिं सादर नर नारी ❀ ते सुरवर मानस अधिकारी

जो लोग इस चरित्र को सँभालकर गाते हैं, वे ही इस तालाब के बुद्धिमान् रक्षक हैं ।।१।। और चाहे स्त्री हो या पुरुष; जो इसे सर्वदा सुनता है, वही देवताओं के समान इस मानस का श्रेष्ठ अधिकारी होता है ।।२।।

अति खल जे विषयी बक कागा ❀ यहि सर निकट न जाहिं अभागा
संबुक भेक सिवार समाना ❀ इहाँ न विषय कथा रस नाना

परन्तु जो महादुष्ट और विषयी पुरुष कौवे तथा बगुले के समान हैं, वे अभागे इस तालाब के निकट नहीं जाते ।।३।। क्योंकि वे तो विषय वासनाओं के इच्छुक रहते हैं और इसमें विषय सम्बन्धी उनके लिये कथा नहीं है ।।४।।

तेहि कारन आवत हिय हारे ❀ कामी काक बलाक बिचारे
आवत यहि सर अति कठिनाई ❀ राम कृपा बिनु आइ न जाई

इस कारण उन कौवे और बगुले रूप विचारे कामियों का हृदय यहाँ आते हुए थक जाता है ।।५।। क्योंकि इस सरोवर के निकट तक आना बहुत कठिन कार्य है, बिना श्रीरामचन्द्रजी की कृपा से आया नहीं जाता ।।६।।

कठिन कुसंग कुपंथ कराला ❀ तिनके बचन व्याघ्र हरि व्याला
गृह कारज नाना जंजाला ❀ तेइ अति दुर्गम सैल बिसाला

क्योंकि वे कुसंग में रहनेवाले हैं और उनका वह बुरा मार्ग उन्हें खा जाने वाला है इस कारण उनकी बातें ऐसी होती हैं मानों वे व्याघ्र, सिंह और साँप के समान काट खायेंगी ।।७।। दूसरे उनके लिए गृहस्थी के कार्य ही जंजाल के रूप में बड़े-बड़े दुर्गम पर्वत से हो जाते हैं, तब भला उनको समय कहाँ है ? ।।८।।

बहु बन विषय मोह मद माना ❀ नदी कुतर्क भयंकर नाना

फिर तो वे नाना प्रकार के विषयों में पड़कर मोह, मद और मान-सम्मान सम्बन्धी कुतर्कनाओं की भयङ्कर नदी में बह जाते हैं ।।९।।

दोहा—जे श्रद्धा सम्बल रहित, नहिं सन्तन कर साथ ।
तिन कहुँ मानस अगम अति, जिनहिं न प्रिय रघुनाथ ।।४९।।

अतः जो श्रद्धा-भक्ति से रहित हैं और जिनका सत्पुरुषों से कभी साथ नहीं पड़ा है और जिनको श्रीरामजी प्रिय नहीं हैं, उनके लिए तो यह मानस अत्यन्त ही अगम है ।।४६।।

जड़ता जाड़ विषम उर लागा ❀ गयउ न मज्जन पाव अभागा
जो करि कष्ट जाय पुनि कोई ❀ जातहि नींद जुड़ाई होई

यदि कभी कोई कष्ट करके वहाँ चले भी जाते हैं, तो जाते ही उन्हें निद्रारूपी जड़ाई आ जाती है ।।१।। फिर तो उस समय निद्रारूपी जूड़ी के आते ही, वे इस सरोवर में बिना स्नान और जल-पान किये ही वहाँ से चल देते हैं ।।२।।

करि न जाय सर मज्जन पाना ❀ फिरि आवै समेत अभिमाना
जो बहोरि कोइ पूछन आवा ❀ सर निन्दा करि ताहि सुनावा

इस प्रकार उनसे उस सरोवर में स्नान-पान करते नहीं बनता और वे अभिमान सहित लौट आते हैं ।।३।। यदि कोई फिर आकर उनसे पूछता है कि, कहो भाई ! सरोवर में स्नान तो करने गये थे कैसा रहा ? तब वे अपने दोष को न प्रकट कर सरोवर की निन्दा ही कह सुनाते हैं ।।४।।

सकल विघ्न व्यापहिं नहिं तेही ❀ राम कृपा करि चितवहिं जेही
सोइ सादर सर मज्जन करहीं ❀ महाघोर त्रयताप न जरहीं

परन्तु श्रीरामचन्द्रजी जिसकी ओर कृपा दृष्टि करके देख देते हैं, उसको समस्त विघ्नों में कोई भी विघ्न नहीं व्यापता ।।५।। फिर तो वह प्रेम पूर्वक इस सरोवर में स्नान करता है और उसे तीनों तापों में से कोई ताप नहीं लगते अर्थात् दैहिक, दैविक और भौतिक तीनों तापों से वह कभी नहीं ज़लता और सर्वदा आनन्दमय रहता है ।।६।।

ते नर यह सर तजहिं न काऊ ❀ जिनके रामचरित भल भाऊ
जो नहाइ चह यहि सर भाई ❀ सो सतसंग करै मन लाई

फिर तो वे पुरुष, जिनकी श्रीरामचन्द्रजी के चरित्र में उत्तम भावनाएँ होती हैं, वे इस सरोवर को कभी नहीं त्यागते ।।७।। अत: जो पुरुष इस सरोवर में स्नान करना चाहते हों उनको चाहियें कि, वे मन लगाकर सत्संग अर्थात् सत्पुरुषों का साथ करें ।।८।।

अस मानस मानस चखुचाही ❀ चहु कवि बुद्धि विमल अवगाही
भयो हृदय आनन्द उछाहू ❀ उमँगेउ प्रेम प्रमोद प्रवाहू

ऐसा यह मानस है कि, जब आन्तरिक प्रेम से एवं हृदय के नेत्रों से देखकर—जो इसमें स्नान करेगा, उसकी बुद्धि निर्मल हो जायगी ।।९।। फिर उसके हृदय में आनन्द की ऐसी लहरें उठेंगी कि, वह उस प्रेमानन्द की धारा में बह चलेगा ।। १० ।।

चली सुभग कविता सरिता सो ❀ राम विमल जस जल भरिता सो
सरयू नाम सुमंगल मूला ❀ लोक वेद मत मंजुल कूला

फिर तो उसके लिए यह कवितारूपी नदी श्रीरामचन्द्रजी के पवित्र यशरूपी जलसे सर्वदा भरी हुई रहेगी ।।११।। ऐसी कवितारूपी नदी का नाम 'सरयू' नदी होगा जो समस्त सुमंगलोंकी मूल होगी और जिसकी रक्षा में लोक और वेदरूपी दोनों तट सर्वदा ही विद्यमान होंगे ।।१२।।

नदी पुनीत सुमानस नन्दिनि ❀ कलि मल तट तरु मूलनिकन्दिनि

फिर तो मानस से निकली हुई उस पवित्र कवितारूपी नदी के किनारे कलिकाल के जितने पापरूप वृक्ष आयेंगे वह सबको जड़-मूल से उखाड़कर फेंक देगी ।।१३।।

दोहा—श्रोता त्रिविध समाज पुर, ग्राम नगर दुहुँ कूल ।
सन्तसभा अनुपम अवध, सकल सुमङ्गल मूल ।।५०।।

श्रोता तीन प्रकार के होते हैं (मुक्त, मुमुक्षु, विषयी) इन श्रोताओं के समाजही इस नदी के दोनों किनारों पर मानों ग्राम, पुर और नगर हैं और सकल सुमङ्गलों की जड़ सन्त महात्माओं की सभा ही इस नदी के किनारे पर मानों अयोध्यापुरी है ।।५०।।

राम भक्ति सुरसरि तहँ जाई ❀ मिली सुकीरति सरयु सुहाई
सानुज राम समर जस पावन ❀ मिलेउ महानद सोन सुहावन

जहाँ श्रीरामचन्द्रजी की भक्तिरूपी गङ्गा इस सुन्दर कीर्तिरूपी सुहावन सरयू नदी में जाकर मिल गई है ।।१।। और छोटे भाई लक्ष्मण सहित श्रीरामचन्द्रजी के संग्राम की जो पवित्र कीर्ति है, अत्यन्त सुन्दर सोनरूपी महानद जाकर उसमें मिल गया है ।।२।।

युग बिच भक्ति देव धुनि धारा ❀ सोहत सहित सुविरति विचारा
त्रिबिध ताप नासक तिमुहानी ❀ राम स्वरूप सिंधु समुहानी

इस प्रकार सरयू और महानदी दोनों के बीच में जो श्रीगंगाजी की धारा का मिलाप है वह ऐसी शोभा देती है, मानों ज्ञान और वैराग्यरूपी नदियों के बीच में भक्तिरूपी गङ्गा की धारा शोभायमान हुआ करती है ।। ३ ।। इस प्रकार यह तीन धारोंवाली (नदी) त्रिमुहानी श्रीरामचन्द्रजी के स्वरूप में जाकर मिल गई है ।।४।।

मानसमूल मिली सुरसरिही ❀ सुनत सुजन मन पावन करिही
बिच बिच कथा बिचित्र विभागा ❀ जनु सरि तीर तीर बन बागा

इस प्रकार इस श्रीराम-चरित-मानस रूपी मानसरोवर से प्रकट होने वाली सरयू नदी श्रीगङ्गाजी में जाकर मिल गई है, जो सुननेवालों के अन्तःकरण को पवित्र कर देती है ।।५।। इसमें श्रीरामचन्द्रजी की कथा के अतिरिक्त जो-जो अन्य प्रसंग बीच-बीच में आये हैं, वे मानों इस नदी के दोनों तट के वन और बाग के रूप में शोभायमान हैं ।।६।।

उमा महेस विवाह बराती ❀ ते जलचर अगनित बहु भाँती
रघुबर जनम अनंद बधाई ❀ भवँर तरंग मनोहरताई

रामचरित-मानस में जो श्रीमहादेवजी और श्रीपार्वतीजी के विवाह के बरातियों का वर्णन है वही मानों असंख्य और अनेक भाँतिके भयंकर जलचारी जीव हैं ।।७।। श्रीरामचन्द्रजीके जन्म की जो आनन्द बधाई है, वही मानों इस नदीके भँवर की तरंग है जो सहजहीमें मनको हर लेती है ।८।

दोहा—बालचरित चहुँ बन्धु के, बनज विपुल बहुरंग ।
नृप रानी परिजन सुकृत, मधुकर बारि बिहंग ।।५१।।

(इस रामचरित-मानसमें) चारों भाइयों के जो बाल-चरित्र हैं,वही मानों इस नदी में अनेक रंगों के अनेक कमल के फूल हैं और राजा दशरथ तथा रानी कौशल्या के जो पुण्य हैं, वही भ्रमर के समान हैं और कुटुम्ब के लोगों के जो पुण्य हैं, वही इस जल के पक्षी हैं ।।५१।।

सीय स्वयंवर कथा सुहाई ❀ सरित सुहावनि सो छबि छाई
नदी नाव पटु प्रश्न अनेका ❀ केवट कुशल उतर सविवेका

फिर जो श्रीसीतारामजीके स्वयंवर की कथा है, वही मानों इस नदी की सुन्दरता की शोभा है।। १ ।। और कुशल प्रश्न-कर्ताओं के जो अनेक प्रश्न हैं, वही मानों इस नदी की नौका हैं, और जो उन सबका सावधानीपूर्वक उत्तर दिया गया है, वह उत्तर ही कुशल केवट है ।।२।।

सुनि अनुकथन परस्पर होई ❀ पथिक समाज सोह सरि सोई
घोर धार भृगुनाथ रिसानी ❀ घाट सुबद्ध राम बर बानी

फिर जो इसमें परस्पर एक दूसरे के वार्तालाप हैं, वही मानो इस नदी तट के यात्रियों का सुन्दर समाज है ।।३।। और इसमें जो श्रीपरशुरामजी का भारी रोष है वही इस नदी की विकराल, बड़ी तेज धारा है और श्रीरामचन्द्रजी की जो मधुर वाणी है, वही मानो उस प्रवाह को रोकने के लिए अच्छे बँधे घाट हैं ।।४।।

सानुज राम विवाह उछाहू ❀ सो श्रम उमँग सुखद सब काहू
कहत सुनत हरषहिं पुलकाहीं ❀ ते सुकृती जन मुदित नहाहीं

फिर भाइयों सहित जो श्रीरामचन्द्रजी के विवाह का उत्सव है, वही मानों इस नदी की सर्व शोभायमान उमंग है ।। ५ ।। जो पुरुष इस कथा को कहते सुनते हैं, मानों वे ही पुण्यात्माजन आनन्द चित्त से इस नदी में स्नान करते हैं ।।६।।

राम तिलक हित मंगल साजा ❀ परब जोग जनु जुरेउ समाजा
काई कुमति कैकई केरी ❀ परी जासु फल बिपति घनेरी

फिर श्रीरामचन्द्रजी के राज्य तिलक के लिए जो तैयारी हुई है और जो समुदाय एकत्रित हुआ है वही मानों पर्व का मुहूर्त्त जानकर यात्रियों का समाज जुटा है और जो इसमें कैकेयी की कुमति है वही काई के रूप में है कि जिसके फलस्वरूप बड़ी भारी कठिन विपत्ति है ।।८।।

दोहा—समन अमित उतपात सब, भरत चरित जपजाग ।
कलि अघ खल अपगुन कथन, ते जलमल बक काग ।।५२।।

उन अनन्त उत्पातों को शान्त करने वाले महात्मा भरतजी के चरित्र ही मानो जप-यज्ञ हैं और कलियुग के पापों तथा दुष्टों के अवगुणों का जो वर्णन है, वही मानों इस नदी के जल का मल और बगुले तथा कौवे रूपी दुष्ट पक्षी हैं ।।५२।।

कीरति सरित छहूँ ऋतु रूरी ❀ समय सुहावनि पावन भूरी
हिम हिमसैलसुता शिव ब्याहू ❀ शिशिर सुखद प्रभु जनम उछाहू

इस प्रकार प्रभु श्रीरामजी की यह कीर्तिरूपी नदी छहों ऋतुओं में बहुत अच्छी और समय-

समयपर सुहावनी लगनेवाली अत्यन्त पवित्र है ।। इसमें जो श्रीशिव-पार्वतीजीके विवाहका वर्णन है वही तो मानों हेमन्त ऋतुहै और प्रभुके जन्म का जो उत्सव है, वही मानों सुखदाई शिशिर ऋतु है

बर्णन राम विवाह समाजू ❁ सो मुद मंगलमय रितुराजू
ग्रीषम दुसह राम बनगवनू ❁ पंथकथा खर आतप पवनू

फिर भगवान् श्रीरामचन्द्रजी के विवाह-समाज का जो वर्णन है, वही मानों आनन्द मंगल देने वाला ऋतुओं का राजा वसन्त ऋतु है ।। ३ ।। और श्रीरामचन्द्रजी के वनगमन का जो वर्णन है, वही मानों न सही जाने वाली ग्रीष्म ऋतु है और मार्ग की कथायें मानों प्रचण्ड धूप और आँधी के समान हैं ।। ४ ।।

बरषा घोर निसाचर रारी ❁ सुरकुल सालि सुमंगलकारी
राम राज सुख विनय बड़ाई ❁ बिसद सुखद सोइ शरद सुहाई

और राक्षसों के साथ जो घोर युद्ध हुआ है, वही मानों देव-कुलरूपी शालि(चावलो) का सुन्दर मंगल करने वाली वर्षा ऋतु है ।। ५ ।। और जो श्रीरामचन्द्रजी के राज्य का सुख विनय और बड़ाई है, वही निर्मल सुखद शोभायमान शरद् ऋतु है ।। ६ ।।

सती सिरोमनि सिय गुन गाथा ❁ सोइ गुण अमल अनूपम पाथा
भरत सुभाउ सुशीतलताई ❁ सदा एकरस बरनि न जाई

पतिव्रता स्त्रियों में शिरोमणि जो श्रीसीताजी हैं, उनके गुणों की जो कथा है वही मानों अनुपम और निर्मल गुणरूपी जल भरा हुआ है ।। ७ ।। फिर उस जल में जो महात्मा भरतजी का स्वभाव है वही मानों उस जल की शीतलता है, जो सर्वदा एक रस रहा करती है, जिसका वर्णन नहीं हो सकता ।।८।।

दोहा—अवलोकनि बोलनि मिलनि, प्रीति परसपर हास ।
भायप भलि चहुँ बन्धु की, जल माधुरी सुबास ।।५३।।

फिर चारों भाइयों का जो परस्पर देखना, बोलना और मिलना है, वही इस जल की विविध मधुरता है और जो उनकी परस्पर की प्रीति हँसना और अच्छा भाईपन है, वही इस जल की सुन्दर तीन प्रकार की सुगन्धि है ।। ५३ ।।

आरति विनय दीनता मोरी ❁ लघुता ललित सुवारि न खोरी
अद्भुत सलिल सुनत गुनकारी ❁ आस पियास मनोमल हारी

(तुलसीदासजी कहते है) इसमें जो मेरी अत्यन्त विनती और दीनता है, वही इस जल में हल्कापन, सुन्दरता और निर्मलता है ।।१।। इस प्रकार यह अद्भुत कथा रूपी जल श्रवण करने में गुणकारी और आशा रूपी प्यास तथा मनकी मलिनता को मिटाने वाली है ।।२।।

राम सुप्रेमहिं पोषत पानी ❁ हरत सकल कलिकलुष गलानी
भव श्रम सोषक तोषक तोषा ❁ समन दुरित दुख दारिद दोषा

यह जल श्रीरामचन्द्रजी के सुन्दर प्रेम को बढ़ाने वाला और कलियुग की समस्त पाप रूप

ग्लानियों को हरने वाला है। फिर यह संसार के सब परिश्रमों का शोषण कर सन्तोष को भी संतुष्ट करने वाला और दुःख दारिद्रय तथा कलियुग के समस्त दोषों को शान्त करने वाला है ।।४।।

काम कोह मद मोह नसावन ❀ विमल विवेक विराग बढ़ावन
सादर मज्जन पान किये ते ❀ मिटहिं पाप परिताप हिये ते

फिर यह काम, क्रोध, मद और मोह को नष्ट करने वाला तथा पवित्र ज्ञान और वैराग्य को बढ़ाने वाला है। इसको प्रेमपूर्वक पान करने से हृदय के सारे पाप संताप नष्ट हो जाते हैं ।।६।।

जिन यहि बारि न मानस धोये ❀ तिन कायर कलिकाल बिगोये
तृषित निरखि रविकरभववारी ❀ फिरहिं मृगा जिमि जीव दुखारी

(तब यह जानकर भी) जो इस जल से अपने मन को स्वच्छ नहीं कर लेते, उन कायर पुरुषों को मानों कलिकाल ने बिगाड़ दिया है अर्थात् मानों वे काठ के उल्लू हो गये हैं ।।७।। और इसको छोड़कर जो दूसरे प्रसंगों में पड़ते हैं वे प्राणी तो ऐसे दुःख पाते हैं, जैसे हरिण मृग-तृष्णा के जल के लिये इधर-उधर भूला फिरता है ।।८।।

दोहा—मति अनुहारि सुबारि बर, गुण गण मन अन्हवाय ।
सुमिरि भवानी शंकरहिं, कह कवि कथा सुहाय ।।५४।।

श्रीतुलसीदासजी कहते हैं, कि मैं अपनी बुद्धि के अनुसार इन गुणोंके समूहरूप श्रेष्ठ सुन्दर जल में अपने मन को स्नान कराकर और श्रीमहादेवजी तथा श्रीपार्वतीजी का स्मरण करके यह सुहावनी कथा कहता हूँ ।। ५४ ।।

दोहा—भरद्वाज जिमि प्रश्न किय, याज्ञवल्क्य मुनि पाय ।
प्रथम मुख्य संबाद सोइ, कहिहौं हेतु बुझाय ।।५५।।

याज्ञवल्क्य मुनि को पाकर भरद्वाज मुनि ने जैसे प्रश्न किया था, पहले मैं उसी मुख्य संवाद को कारण सहित समझाकर कहता हूँ ।।५५।।

दोहा—अब रघुपति पद पंकरुह, हिय धरि पाय प्रसाद ।
कहउँ युगल मुनिवर्यकर, मिलन सुभग संवाद ।।५६।।

अब मैं श्रीरामचन्द्रजी के चरण कमलों को हृदय में रख और उनका आशीर्वाद पाकर दोनों मुनियों के मिलाप से जो सुन्दर संवाद प्रकट हुआ है; उसे कहता हूँ ।। ५६ ।।

भरद्वाज मुनि बसहिं प्रयागा ❀ जिन्हहि रामपद अति अनुरागा
तापस सम दम दया निधाना ❀ परमारथ पथ परम सुजाना

श्रीभरद्वाज मुनि प्रयाग में वास करते थे, जिनका श्रीरामचन्द्रजी के चरणों में अत्यन्त गहरा प्रेम था ।। १ ।। वे एक उच्च कोटि के तपस्वी और शम, दम तथा दया की खानि और परमार्थ मार्ग 'भगवत् चर्चा' में बहुत ही प्रवीण थे ।। २ ।।

माघ मकरगत रवि जब होई ❀ तीरथपतिहिं आव सब कोई
देव दनुज किन्नर नर श्रेनी ❀ सादर मज्जहिं सकल त्रिबेनी

जब माघ महीने में मकर संक्रान्ति लगती थी तब सब लोग तीरथपति प्रयाग में स्नान करने आया करते थे (जैसे आज भी जाते हैं) ।। ३ ।। क्या देवता, क्या राक्षस, क्या किन्नर और क्या मनुष्य सभी आदर पूर्वक त्रिवेणी में स्नान करते थे और करते हैं ।।४।।

पूजहिं माधव पद जलजाता ❀ परसि अक्षयबट हरषहिं गाता
भरद्वाज आश्रम अति पावन ❀ परम रम्य मुनिवर मन भावन

वहाँ विन्दुमाधव के चरण-कमलों की पूजाकर प्रसन्नता से अक्षयवट की पूजा करते हैं ।।५।। वहीं भरद्वाज मुनि का अत्यन्त पवित्र आश्रम है जो बहुत ही सुन्दर और मुनियों के मन को भी अच्छा लगता है ।। ६ ।।

तहाँ होइ मुनि रिषय समाजा ❀ जाहिं जे मज्जन तीरथराजा
मज्जहिं प्रात समेत उछाहा ❀ कहहिं परसपर हरि गुन गाहा

तब वहाँ जितने ऋषि-मुनि तीर्थराज प्रयाग में स्नान करने जाया करते थे, उन सबका वहीं (आश्रम में) समाज लगता था ।। ७ ।। तब जब सब लोग उत्साह पूर्वक प्रातःकाल का स्नान कर लेते थे, तत्पश्चात् एक दूसरे से (परस्पर) हरिभगवान् के गुणों की चर्चा अर्थात् गुणानुवाद करते थे ।। ८ ।।

दोहा—ब्रह्म निरूपन धरम विधि, बरनहिं तत्त्व विभाग ।
कहहिं भगति भगवंत की, संजुत ज्ञान विराग ।।५७।।

(उस चर्चा में) वे ब्रह्म का निरूपण करते थे और धर्म विधि का नियम बनाकर सब तत्त्वों का पृथक्-पृथक् विभाग करते थे ।। ५७ ।।

एहि प्रकार भरि माघ नहाहीं ❀ पुनि सब निज निज आश्रमजाहीं
प्रति संवत अस होइ अनन्दा ❀ मकर मज्जि गवनहिं मुनिबृन्दा

इस प्रकार सारे मकर भर स्नान करके फिर सब लोग (ऋषि-मुनि) अपने-अपने आश्रमों को चले जाते थे ।।१।। प्रतिवर्ष ऐसा ही आनन्द हुआ करता था कि, सब लोग आते थे और फिर मकर-स्नान करके समस्त मुनीश्वर अपने-अपने स्थान को प्रस्थान किया करते थे ।।२।।

एक बार भरि मकर नहाये ❀ सब मुनिवर आश्रमहिं सिधाये
जागबलिक मुनि परम विवेकी ❀ भरद्वाज राखे पद टेकी

एक बार जब मकर भर स्नान करके सब मुनीश्वर अपने-अपने आश्रमों को चले गये । तब उनमें याज्ञवल्क्य मुनि जो परम ज्ञानी थे उनका पाँव पकड़ भरद्वाजजीने विनय पूर्वक उन्हें रोका ।

सादर चरन सरोज पखारे ❀ अति पुनीत आसन बैठारे
करि पूजा मुनि सुयश बखानी ❀ बोले अति पुनीत मृदुबानी

फिर आदर सहित उनके चरणों को धोकर अत्यन्त पवित्र आसन पर बिठाकर उनकी पूजा की । फिर उनकी (मुनीश्वर की) प्रशंसा कर भरद्वाजजी अत्यन्त पवित्र वाणी में बोले ।

नाथ एक संशय बड़ मोरे ❀ करतल वेद तत्त्व सब तोरे
कहत मोहिं लागत भय लाजा ❀ जो न कहौं बड़ होय अकाजा

हे नाथ ! मेरे हृदय में एक बड़ा ही संशय उत्पन्न हो गया है, सो आप वेद वक्ता और तत्त्ववेत्ता हैं अथवा वेदों का सम्पूर्ण तत्त्व आपके हाथ में है ।। ७ ।। उसे कहने में मुझे भय और लज्जा दोनों ही लग रही हैं, किन्तु यदि नहीं कहता हूँ तो बड़ा अकाज़ होता है ।।८।।

दोहा—सन्त कहहिं अस नीति प्रभु, श्रुति पुरान मुनि गाव ।
होइ न विमल विवेक उर, गुरुसन किये दुराव ।।५८।।

हे प्रभो ! सन्त महात्मा ऐसी नीति कहते हैं और वेद शास्त्रों ने भी ऐसा ही कहा है कि गुरु से दुराव और कपट करने से हृदय में विमल ज्ञान उत्पन्न नहीं होता ।। ५८ ।।

अस विचारि प्रकटौं निज मोहू ❀ कहहु नाथ करि जन पर छोहू
राम नाम कर अमित प्रभावा ❀ संत पुराण उपनिषद गावा

ऐसा विचार कर अपने अज्ञान एवं मोह को प्रगट करता हूँ, सो हे नाथ ! मुझ अपने दास पर कृपा करके उसे दूर कीजिये ।।१।। श्रीरामजी के नाम का प्रभाव अमित है अर्थात् उसका अन्त नहीं है, असीमित है—इस बात को सन्त पुराण और उपनिषदों ने भी गाया है ।।२।।

सन्तत जपत शंभु अविनासी ❀ शिव भगवान ज्ञान गुण रासी
आकर चारि जीव जग अहहीं ❀ काशी मरत परमपद लहहीं

जिस रामनाम को केवल सन्तजन ही नहीं जपते, वरन् ज्ञान और गुण के भण्डार अविनाशी शिवजी भी जपा करते हैं ।।३।। संसार में चार प्रकार के जितने जीव हैं, सबको काशी में मरने पर परमपद प्राप्त होता है ।। ४ ।।

सोऽपि राम महिमा मुनिराया ❀ शिव उपदेश करत करि दाया
राम कवन प्रभु पूछौं तोहीं ❀ कहहु बुझाय कृपानिधि मोहीं

सो हे मुनीश्वर ! यह श्रीरामचन्द्रजी के नाम का प्रभाव है या शिवजी की कृपा है, जो वे राम-नाम का उपदेश देकर उनको अच्छी गति देते हैं ।। ५ ।। हे प्रभो ! मैं आपसे पूछता हूँ कि, वे राम कौन हैं ? कृपा करके मुझे समझाकर कहिये ।। ६ ।।

एक राम अवधेश कुमारा ❀ तिनकर चरित विदित संसारा
नारि विरह दुख सहेउ अपारा ❀ भयउ रोष रन रावन मारा

एक राम तो अवधेश (श्रीदशरथ महाराज) के कुमार (पुत्र) हुए हैं, जिनके चरित्र को संसार जानता है कि ।। ७ ।। वे स्त्री के विरह से अपार दुःख को प्राप्त हुए थे और फिर क्रोध के वश होकर युद्ध में रावण को मारे थे ।। ८ ।।

दोहा—प्रभु सोइ राम कि अपर कोउ, जाहि जपत त्रिपुरारि ।
सत्य धाम सरवज्ञ तुम, कहहु विवेक विचारि ।।५९।।

सो हे प्रभो ! वह राम वही हैं या और कोई कि जिन्हें त्रिपुरारि (शिवजी) जपते रहते हैं । आप सत्य के धाम और समस्त बातों को जाननेवाले हैं, अतः ज्ञान पूर्वक विचार कर कहिये कि वे राम कौन हैं ? ।। ५९ ।।

जैसे मिटै मोह भ्रम भारी ❀ कहौ सो नाथ कथा विस्तारी
याज्ञवल्क्य बोले मुसुकाई ❀ तुमहिं विदित रघुपति प्रभुताई

सो हे नाथ ! जैसे यह मेरा बड़ा मोह और भ्रम मिट जाये वही कथा विस्तार पूर्वक वर्णन कीजिये ।।१।। तब याज्ञवल्क्य मुनि ने मुस्कुरा कर कहा—तुम्हें श्रीरामचन्द्रजी की तो सारी प्रभुता ज्ञात है अर्थात् तुम सब कुछ जानते हो ।।२।। क्योंकि—

रामभक्त तुम मन क्रम बानी ❀ चतुराई तुम्हारि मैं जानी
चाहहु सुना राम गुन गूढ़ा ❀ कीन्हेहु प्रश्न मनहुँ अति मूढ़ा

तुम मन-कर्म और वचन से रामजी के भक्त हो, तुम्हारी इस चतुरता को मैं जान गया ।।३।। श्रीरामचन्द्रजी के गुप्त गुणों को सुनना चाहते हो, जिससे ऐसा प्रश्न कर रहे हो मानों अत्यन्त मूढ़ हो ।।४।।

तात सुनहु सादर मन लाई ❀ कहौं राम की कथा सुहाई
महामोह महिषेस बिसाला ❀ राम कथा कालिका कराला

(अच्छा) हे तात ! मन लगाकर सुनो, अब मैं श्रीरामचन्द्रजी की सुहावनी कथा कहता हूँ। श्रीरामचन्द्रजी की यह कथा महामोह रूपी विशाल महिषासुरके लिए कराल कालिका देवी है ।।

रामकथा शशि किरन समाना ❀ संत चकोर करहिं तेहि पाना
ऐसेइ संशय कीन्ह भवानी ❀ महादेव तब कहा बखानी

फिर श्रीरामचन्द्रजी की कथा चन्द्रमा की किरणों के समान है कि जिसको सन्तरूपी चकोर सर्वदा पान करते हैं। (हे भरद्वाज ! श्रीरामचन्द्रजी की कथा के सम्बन्ध में आज तुम जैसे पूछ रहे हो) इसी प्रकार पार्वतीजी ने भी शंका की थी, तब श्रीमहादेवजी ने जो कहा था ।।

दोहा—कहौं सो मति अनुहारि अब, उमा शम्भु संवाद ।
भयउ समय जेहि हेतु यह, सुनु मुनि मिटहिं विषाद ।।६०।।

अब मैं वही 'शिव-पार्वतीसंवाद' अपनी बुद्धि के अनुसार कहता हूँ कि, वह जिस समय और जिस कारण से हुआ। हे मुनि ! सुनो, उसके सुनने से तुम्हारा विषाद नष्ट हो जायगा ।।६०।।

एक बार त्रेता युग माहीं ❀ शंभु गये कुंजभ ऋषि पाहीं
संग सती जगजननि भवानी ❀ पूजे रिषि अखिलेश्वर जानी

(सुनो) एक समय त्रेतायुग में जब श्रीमहादेवजी कुम्भज ऋषि के पास गये थे ।।१।। (और) साथ में जगत्-माता भवानी पार्वतीजी भी थीं, तब ऋषि (कुम्भज-ऋषि, अगस्त्यजी) ने उनको सम्पूर्ण लोकों का ईश्वर जानकर उनकी पूजा की ।।२।।

राम कथा मुनिवर्य बखानी ❀ सुनी महेश परम सुख मानी
ऋषि पूछा हरि भगति सुहाई ❀ कही शम्भु अधिकारी पाई

(उस अवसर पर) मुनियों में श्रेष्ठ अगस्त्यजी ने इसी राम-कथा की प्रशंसा में (अपना-विचार) कहा था जिसे श्रीमहादेवजी अत्यन्त सुख मानकर सुने थे ।।३।। इसी अवसर पर

मुनिदेव के पूछने पर जब श्रीमहादेवजी ने समझ लिया कि मुनिजी इसके पात्र हैं, तब उन्होंने अत्यन्त सुहावनी भगवद्‌भक्ति का वर्णन किया था ।।४।।

कहत सुनत रघुपति-गुण-गाथा ❁ कछु दिन तहाँ रहे गिरिनाथा
मुनिसन विदा माँगि त्रिपुरारी ❁ चले भवन सँग दक्षकुमारी

इस प्रकार परस्पर श्रीरामचन्द्रजी का गुणानुवाद करते हुए जब वहाँ शंकरजी को कुछ (अधिक) दिन व्यतीत हो गया ।।५।। तब (वे) मुनि (अगस्त्यजी) से विदा माँगकर साथ में दक्ष-पुत्री श्रीपार्वतीजी को लिए अपने घर (कैलास पर्वत) को चले ।।६।।

तेहि अवसर भंजन महि भारा ❁ हरि रघुवंश लीन्ह अवतारा
पिता बचन सुनि राज उदासी ❁ दंडक बन बिचरत अविनाशी

उस समय पृथ्वी का भार हरण करने के लिए भगवान् रघुकुल में अवतार ले चुके थे ।।७।। और पिता के वचन को सुनकर राज्य से उदासीन हो वे अविनाशी (जिनका कभी नाश नहीं होता) दण्डक वन में विचरण कर रहे थे ।।८।।

दोहा—हृदय विचारत जात हर, केहि विधि दरसन होइ ।
गुप्त रूप अवतरेउ प्रभु, गए जान सब कोइ ।।६१।।

(इधर) शंकरजी अपने मनमें यह विचार करते हुए मार्ग में चले जा रहे थे कि, किस प्रकार (प्रभु) दर्शन होगा, भगवान् गुप्तरूप से प्रकट हुए हैं यह बात सब लोग भली भाँति जान गये ।।

सोरठा—शङ्कर उर अति छोभ, सती न जानहिं मरम सोइ ।
तुलसी दरसन लोभ, मन डर लोचन लालची ।।१०।।

श्रीशंकरजी के हृदय में तो (ऐसा) अधिक क्षोभ (तर्क-वितर्क) हो रहा था और इधर पार्वतीजी इसका कुछ भेद नहीं जानती थीं। किन्तु तुलसीदासजी कहते हैं, कि उनके (भगवान् के) दर्शनों के लालची नेत्र भी नहीं मानते थे ।।१०।।

रावण मरण मनुज कर जाँचा ❁ प्रभु विधिबचन कीन्ह चह साँचा
जो नहिं जाउँ रहै पछितावा ❁ करत विचार न बनत बनावा

इधर शंकरजी अपने मनमें यह विचारते हुए जा रहे थे कि, रावण ने तो ब्रह्माजी से यह वरदान माँग ही लिया है कि, मैं मनुष्य के हाथ से मारा जाऊँ तो भगवान् श्रीब्रह्माजी के वचनों को पूर्ण किया चाहते हैं ।।१।। ऐसी अवस्था में यदि उनका दर्शन करने नहीं जाता हूँ तो मनमें पछतावा ही लगा रहेगा, ऐसा विचार करते थें, परन्तु किसी प्रकार भी बात बनती न थी अर्थात् किसी निश्चय पर न पहुँचते थे। क्योंकि 'गुप्तरूप अवतरेउ प्रभु, गये जान सब कोय' ।। २ ।।

इहि विधि भयउ शोचबस ईशा ❁ ताही समय जाय दशशीशा
लीन्ह नीच मारीचहिं संगा ❁ भयउ तुरत सोइ कपट कुरंगा

इस प्रकार महादेवजी चिन्ता कर ही रहे थे कि, उसी समय रावण ने जाकर नीच मारीच को अपना साथी बनाया (साथी बनाते ही) वह तुरन्त कपट मृग हो गया (इसका कोई-कोई

ऐसा भी अर्थ करते हैं कि, रावण बड़ा तांत्रिक था) मारीच को अपना साथी बनाते ही उसने (रावण ने) अपनी योग विद्या से माया मृग बना दिया ॥४॥

करि छल मूढ़ हरी बैदेही ❀ प्रभु प्रभाव तस विदित न तेही
मृग बधि बंधु सहित हरि आये ❀ आश्रम देखि नयन जल छाये

उस मूढ़ ने छल पूर्वक श्रीजानकीजी को तो हरण कर लिया परन्तु उसे यह नहीं ज्ञात हुआ कि, प्रभु श्रीरामचन्द्रजी का प्रभाव कैसा है ? ॥५॥ श्रीरामचन्द्रजी मृग के पीछे गये और थोड़ी देर में ही उसे मार कर भाई लक्ष्मणजी के सहित लौट आये, देखा तो आश्रम शून्य है, तब आश्रम को देखकर उनके नेत्रों में जल भर आया ॥६॥

विरह विकल नर इव रघुराई ❀ खोजत विपिन फिरत दोउ भाई
कबहूँ योग वियोग न जाके ❀ देखा प्रगट विरह दुख ताके

तब विरही मनुष्य के समान दोनों भाई श्रीरामचन्द्रजी और लक्ष्मणजी श्रीसीताजी को जंगल में खोजने लगे ॥७॥ जिसको मिलाप और विछोह का दुःख कभी नहीं हो सकता था, वह भी प्रकट रूप में विरही से दिखाई दिये ॥८॥

दोहा—अति विचित्र रघुपति चरित, जानहिं परम सुजान ।
ते मतिमन्द विमोह बस, हृदय धरहिं कछु आन ॥६२॥

इस प्रकार श्रीरामचन्द्रजी का चरित्र अत्यन्त विचित्र है जिसको अच्छे जानकार (अनुभवी) ही जानते हैं, वे क्या जानेंगे जो मोहपाश में बँधे हुए हैं और जो हृदय में और ही कुछ धारण किये रहते हैं ॥६२॥

शंभु समय तेहि रामहिं देखा ❀ उर उपजा अति हर्ष विशेषा
भरि लोचन छबि सिंधु निहारी ❀कुसमय जानि न कीन्हि चिन्हारी

उसी समय श्रीमहादेवजी ने श्रीरामचन्द्रजी को नेत्र भरकर देख लिया, परन्तु देखते ही उनके हृदय में ऐसा अधिक क्षोभ उत्पन्न हुआ कि ॥१॥ एकटक उनके सौन्दर्य (शोभा) के समुद्र को देखने लगे और कुसमय जानकर चिन्हार (जान-पहिचान) नहीं किया ॥२॥

जय सच्चिदानन्द जगपावन ❀ अस कहि चलेउ मनोज नसावन
चले जात शिव सती समेता ❀ पुनि पुनि पुलकित कृपानिकेता

और 'हे जगत् को पवित्र करनेवाले ! हे सच्चिदानन्द ! आपकी जय हो' ऐसा कहते हुए कामदेव को भस्म करनेवाले श्रीशिवजी चल दिये ॥३॥ इस प्रकार कृपा के धाम श्रीशिवजी अपने मन में बार-बार प्रसन्न होते हुए श्रीपार्वतीजी को साथ लिए चले जा रहे थे ॥४॥

सती सो दशा शंभु की देखी ❀ उर उपजा संदेह विशेखी
शंकर जगतवंद्य जगदीशा ❀ सुर नर मुनि सब नावत शीशा

उनकी उस दशा को देखकर पार्वतीजी के मन में भी विशेषरूप से संदेह उत्पन्न हो गया ॥५॥ सन्देह यह कि—श्रीशंकरजी तो जगत्-पूज्य और सारे जगत् के ईश्वर हैं जिनको देवता साधारण मनुष्य और मुनि लोग भी शिर झुकाते हैं ॥६॥

तिन्ह नृपसुतहिं कीन्ह परणामा ❁ कहि सच्चिदानंद परधामा
भये मगन छबि तासु विलोकी ❁ अजहुँ प्रीति उर रहत न रोका

वह शंकरजी एक राजा के लड़के को सच्चिदानन्द और परमधाम कहकर प्रणाम किये हैं ।।७।। शिवजी उस शोभा को देखकर ऐसे मग्न हैं कि, अब तक भी वह प्रीति इनके हृदय में अबाध्य रूप से चल रही है और रोके भी नहीं रुकती है ।।८।।

दोहा—ब्रह्म जो व्यापक बिरज अज, अकल, अनीह अभेद ।
सोकि देह धरि होइ नर, जाहि न जानत वेद ।।६३।।

इस प्रकार श्रीपार्वतीजी अपने मन में सोचती हैं कि, भला जो ब्रह्म सब में व्यापक, अजन्मा, माया-रहित, कला-रहित, अनीह, भेद-रहित, साक्षात् ईश्वर हैं कि, जिन्हें वेद भी नहीं जानते, क्या वे शरीर धारणकर मनुष्य रूप में आवेंगे ? ।।६३।।

विष्णु जो सुरहित नर तनुधारी ❁ सोउ सर्वज्ञ यथा त्रिपुरारी
खोजत सो कि अज्ञ इव नारी ❁ ज्ञानधाम श्रीपति असुरारी

यदि ऐसा हो भी तो वे भगवान् विष्णु, जिन्होंने देवताओं के लिये शरीर धारण किया है; और जो शंकरजी के समान ही सर्वज्ञता का पद लिए हुए आये हैं ? ।।१।। परन्तु यह क्या है कि, वे एक मूर्ख मनुष्य के समान स्त्री को ढूँढते फिर रहे हैं, क्योंकि लक्ष्मीपति भगवान् विष्णु तो राक्षसों के शत्रु और ज्ञान के धाम हैं ।।२।।

शंभु गिरा पुनि मृषा न होई ❁ शिव सर्वज्ञ जान सब कोई
अस संशय मन भयउ अपारा ❁ होइ न हृदय प्रबोध प्रचारा

फिर शंकरजी की ऊपर कही 'जय सच्चिदानन्द जग पावन' वाणी भी मिथ्या नहीं हो सकती क्योंकि शिवजी सर्वज्ञ हैं, यह सब कोई जानते हैं ।।३।। पार्वतीजी के मन में ऐसा अपार संशय उत्पन्न हुआ कि, उनके हृदय में किसी प्रकार भी सुन्दर बुद्धि का प्रचार नहीं हो पाता था ।।

यद्यपि प्रगट न कहेउ भवानी ❁ हर अन्तर्यामी सब जानी
सुनहु सती तव नारि सुभाऊ ❁ संशय अस न धरिय उर काऊ

तब यद्यपि पार्वतीजी ने उस शंका को प्रकट नहीं किया, तो भी अन्तर्यामी भगवान् शंकरजी सब कुछ जान गये ।।५।। और बोले—हे सती ! सुनो, 'तुम्हारा स्त्री का स्वभाव है, ऐसी शंका हृदय में कभी न लाओ' ।।६।। क्योंकि—

जासु कथा कुम्भज ऋषि गाई ❁ भक्ति जासु मैं मुनिहिं सुनाई
सोइ मम इष्टदेव रघुबीरा ❁ सेवत जाहि सदा मुनि धीरा

जिनकी कथा अगस्त्यजीने गाकर सुनाई है और जिनकी भक्ति को मैंने उन मुनि (अगस्त्य जी) को सुनाया ।। ७ ।। वही रघुकुल-शिरोमणि श्रीरामचन्द्रजी मेरे इष्ट देवता हैं, जिनकी मुनिजन सर्वदा ही धैर्य पूर्वक सेवा करते हैं ।।८।।

छन्द–मुनि धीर योगी सिद्ध सन्तत विमलमन जेहि ध्यावहीं।
कहि नेति निगम पुरान आगम जासु कीरति गावहीं॥
सोइ राम व्यापक ब्रह्म भुवन निकायपति मायाधनी।
अवतरे अपने भगतहित निजतन्त्र नित रघुकुल मनी॥२॥

जिनको धैर्यधारी मुनि, योगी, सिद्धजन और सन्तजन अपने पवित्र अन्तःकरण में स्मरण किया करते हैं ।। ध्यान करते हैं और 'अन्त नहीं' ऐसा कहकर वेद और पुराण जिसका यशोगान करते हैं ।। वही अपनी माया के धनी, सर्वव्यापक, निराकार स्वरूप ब्रह्म, श्रीरामचन्द्रजी चौदहों भुवन के स्वामी हैं, वही श्रीरामचन्द्रजी अपने भक्तोंका हित करने के लिए अपने तन्त्र के (यौगिक तन्त्रों द्वारा) रघुकुल में मणि रूप अवतार धारण किये हैं ।।२।।

सोरठा–लाग न उर उपदेश, यदपि कहेउ शिव बार बहु।
बोले बिहँसि महेश, हरिमाया बल जानि जिय॥११॥

इस प्रकार यद्यपि शिवजी ने अनेक बार कहा, पर वह उपदेश पार्वतीजीको न लगा। तब भगवान् की माया का ऐसा ही बल है—यह जी में जानकर श्रीमहादेवजी हँस कर बोले ।।११।।

जौं तुम्हरे मन अति संदेहू ❀ तौ किन जाइ परीक्षा लेहू
तब लगि बैठि रहौं बटछाहीं ❀ जब लगि तुम ऐहहु मोहिं पाहीं

यदि तुम्हारे मन में अधिक सन्देह हो तो जाकर परीक्षा क्यों नहीं लेती हो ?।।१।। तब तक मैं इस बट-वृक्ष की छाँह में बैठा रहूँगा, जब-तक तुम मेरे पास न आवोगी ।।२।।

जैसे जाइ मोह भ्रम भारी ❀ करहु सो यतन विवेक विचारी
चली सती शिव आयसु पाई ❀ करहि विचार करौं का भाई

जिस प्रकार तुम्हारी यह बड़ी शंका दूर हो, ज्ञान सहित वही उपाय करो। तब शिवजी की आज्ञा पाकर पार्वतीजी वहाँ से चलीं तो मन में विचार करने लगीं कि, हे भाई ! क्या करूँ ?

उहाँ शंभु अस मन अनुमाना ❀ दक्षसुता कहँ नहिं कल्याना
मोरे कहेउ न संशय जाहीं ❀ विधि विपरीत भलाई नाहीं

उधर शंकरजी अपने मन में ऐसा अनुमान करने लगे कि दक्षसुता पार्वती का कल्याण नहीं होगा ।।५।। क्योंकि जब मेरे कहने से भी इनका भ्रम दूर न हुआ तब विधाता ही उलटा हो गया है, फिर इनकी भलाई कैसे होगी ? ।।६।।

होइहैं सोइ जो राम रचि राखा ❀ को करि तर्क बढ़ावहिं साखा
अस कहि जपन लगे हरिनामा ❀ गई सती जहँ प्रभु सुखधामा

(अच्छा) होगा तो वही जो रामजी ने रच रखा है, इससे अब उसमें बहुत तर्क-वितर्क करके शाखा कौन बढ़ावे ?।।७।। ऐसा कहकर शंकरजी फिर हरि भगवान् का नाम जपने लगे, उधर श्रीपार्वतीजी वहाँ जा पहुँची, जहाँ सुखों के घर प्रभु श्रीरामचन्द्रजी थे ।।८।।

दोहा—पुनि पुनि हृदय विचार करि, धरि सीता कर रूप ।
आगे होइ चलि पन्थ तेहि, जेहि आवत सुर भूप ॥६४॥

तब बार-बार अपने मन में विचार कर उन्होंने सीताजी का रूप धारण किया और उसी मार्ग से चलीं कि, जिस मार्ग से देवताओं के राजा श्रीरामचन्द्रजी आ रहे थे ॥६४॥

लक्ष्मण दीख उमा कृत वेषा ❀ चकित हृदय भ्रम भयउ विशेषा
कहि न सकत कछु अति गंभीरा ❀ प्रभु प्रभाव जानत मति धीरा

तब ज्योंही श्रीलक्ष्मणजी ने श्रीपार्वती जी के उस बनावटी वेष को देखा, त्योंही उनका हृदय अत्यन्त भ्रम से चकित हो गया ॥१॥ किंतु वे अत्यन्त गंभीर होकर कुछ कह न सके; क्योंकि वे मतिधीर प्रभु श्रीरामचन्द्रजी के प्रभाव को अच्छी तरह जानते थे ॥२॥

सती कपट जानउ सुरस्वामी ❀ समदर्शी सब अन्तर्यामी
सुमिरत जाहि मिटै अज्ञाना ❀ सोइ सर्वज्ञ राम भगवाना

किंतु देवताओं के स्वामी (श्रीरामचन्द्रजी) पार्वती के उस कपट को (जो उनके हृदय में पहले ही उत्पन्न हो चुका था और जिस कारण श्रीमहादेवजी ने परीक्षा लेने को भेजा था) जान गये, क्योंकि वे सर्वदर्शी और सबके मन की बात को जाननेवाले अन्तर्यामी हैं ॥४॥

सती कीन्ह चह तहउँ दुराऊ ❀ देखहु नारि सुभाव प्रभाऊ
निज माया बल हृदय बखानी ❀ बोले बिहँसि राम मृदुबानी

परन्तु सतीजी ने वहाँ भी छिपाव किया, देखो स्त्री के स्वभाव का कैसा प्रभाव हुआ ॥५॥ तब अपनी माया शक्ति को हृदय में बखान कर श्रीरामचन्द्रजी हँसकर मीठी वाणी से बोले—॥६॥

जोरि पाणि प्रभु कीन्ह प्रणामू ❀ पिता समेत लीन्ह निज नामू
कहेउ बहोरि कहाँ वृषकेतू ❀ विपिन अकेलि फिरहु केहि हेतू

प्रभु श्रीरामचन्द्रजी ने हाथ जोड़कर उनको प्रणाम किया और अपने पिता महाराज दशरथ सहित अपना नाम बताया ॥७॥ फिर कहा कि श्रीमहादेवजी कहाँ, हैं ? आप अकेली इस वन में किस प्रयोजन से घूम रहीं हैं ? ॥८॥

दोहा—राम बचन मृदु गूढ़ सुनि, उपजा अति संकोच ।
सती सभीत महेश पहिं, चली हृदय बड़ सोच ॥६५॥

तब श्रीरामजी के ऐसे मीठे किंतु गूढ़ बचन को सुनकर (श्रीपार्वती को) अत्यन्त संकोच उत्पन्न हुआ अर्थात् वे लज्जित हो गईं, जिससे भयभीत हो फिर श्रीमहादेवजी के पास अपने मन में बड़ी चिन्ता करती हुई लौट पड़ीं ॥६५॥

मैं शंकर कर कहा न माना ❀ निज अज्ञान रामपहँ आना
जाइ उतर अब देहौं काहा ❀ उर उपजा अति दारुण दाहा

चिन्ता यह थी कि शंकरजी का कहना न मानकर अपनी अज्ञानता वश मैं श्रीरामचन्द्रजी के

पास चली आई ॥१॥ सो, अब जाकर वहाँ क्या उत्तर दूँगी ? इस प्रकार उनके हृदय में अत्यन्त दारुण दाह उत्पन्न हो गया ॥२॥

जाना राम सती दुख पावा ❁ निज प्रभाव कछु प्रगट जनावा
सती दीख कौतुक मग जाता ❁ आगे राम सहित सिय भ्राता

तब यह जानकर कि, सती को दुःख प्राप्त हुआ है, इससे उन्होंने (श्रीरामचन्द्रजी ने) अपना थोड़ा सा प्रभाव प्रकट कर दिखला दिया ॥ ३ ॥ वह प्रभाव यह था-मार्ग में जाते हुए सतीजी ने यह कौतुक देखा कि आगे-आगे श्रीरामचन्द्रजी जानकी और भ्राता लक्ष्मण सहित चले जा रहे हैं ॥ ४ ॥

फिर चितवा पाछे प्रभु देखा ❁ सहित बंधु सिय सुन्दर वेषा
जहँ-जहँ चितवहिं प्रभु आसीना ❁ सेवहिं सिद्ध मुनीश प्रवीना

फिर जो घूमकर पीछे देखा तो वही सुन्दर वेषवाले प्रभु रामजी सीता और लक्ष्मण सहित सुन्दर वेष में दिखलाई पड़े ॥ ५ ॥ इस प्रकार जहाँ-जहाँ सतीजी ने देखा वहाँ-वहाँ वही प्रभु विराजमान हैं और मुनियों में प्रवीण सिद्धजन उनकी सेवा कर रहे हैं ॥६॥

देखे शिव विधि विष्णु अनेका ❁ अमित प्रभाव एक ते एका
बंदत चरण करत प्रभु सेवा ❁ विविध वेष देखे सब देवा

उन्होंने देखा कि, वहाँ अनेक ब्रह्मा, विष्णु और महेश विराजमान हैं, जो एक से एक अमित प्रभाव वाले हैं ॥७॥ और वे सब प्रभु श्रीरामजी के चरणों की वन्दना करते हुए उनको सेवा कर रहे हैं, इस प्रकार अनेक वेषवाले सब देवताओं को देखा ॥८॥

दोहा—सती विधात्री इन्दिरा, देखी अमित अनूप ।
जेहि जेहि वेष अनादि सुर तेहि तेहि तनु अनुरूप ॥६६॥

फिर उन्होंने देखा कि सरस्वती, लक्ष्मी सहित सती भी अनेक अगणित रूप में अनुपम दिखलाई पड़ रही हैं । इस प्रकार जिस-जिस वेष में अनादि देवता (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) थे उन्हीं के शरीरानुरूप उनकी वे शक्तियाँ भी थीं ॥६६॥

देखे जहँ तहँ रघुपति जेते ❁ शक्तिन सहित सकल सुर तेते
जीव चराचर जे संसारा ❁ देखे सकल अनेक प्रकारा

इस प्रकार जहाँ श्रीरामचन्द्रजी दिखलाई दिये, वहाँ शक्तियों सहित समस्त देवता भी विराजमान थे ॥१॥ संसार में जितने चर और अचर जीव थे, उन सभी प्रकार के जीवों को पार्वती ने वहाँ देख लिया ॥२॥

पूजहिं प्रभुहिं देव बहु वेषा ❁ राम रूप दूसर नहिं देखा
अवलोके रघुपति बहुतेरे ❁ सीता सहित न वेष घनेरे

अनेक प्रकार का वेष धारण किये देवगण प्रभु श्रीरामचन्द्रजी का पूजन कर रहे हैं किन्तु श्रीरामचन्द्रजी के रूप से दूसरा रूप नहीं दिखलाई पड़ा अर्थात् वह रूप एक ही

था। यों सीताजी सहित श्रीरामचन्द्रजी बहुत संख्या में दिखलाई पड़े; किन्तु सबका वेश एक ही दिखलाई पड़ा ।।४।।

सोइ रघुबर सोइ लक्ष्मण सीता ❀ देखि सती अति भई सभीता
हृदय कम्प तनु सुधि कछु नाहीं ❀ नयन मूँदि बैठीं मगुमाहीं

तब वही राम, वही लक्ष्मण और वही सीताजी हैं, ऐसा देखकर सतीजी बहुत भयभीत हो गईं, उनका हृदय काँपने लगा, देह की कोई सुधि न रही, नेत्र बंद करके मार्गमें बैठ गयीं।

बहुरि बिलोकेउ नयन उघारी ❀ कछु न देखि तहँ दक्षकुमारी
पुनि पुनि नाय राम-पद शीशा ❀ चली तहाँ जहँ रहे गिरीशा

फिर दक्षकुमारी सतीजी ने जो नेत्र खोलकर देखा तो उस स्थान में कुछ भी दिखाई न पड़ा ।। ७ ।। फिर तो भगवान् श्रीरामचन्द्रजी के चरणारविन्दों में बारम्बार अपना शिर झुकाकर जहाँ देवाधिदेव शंकरजी विराजमान थे, वह वहाँ को चल पड़ीं ।।८।।

दोहा—गई समीप महेश तब, हँसि पूछी कुशलात।
लीन्ह परीक्षा कवन विधि, कहहु सत्य सब बात ।।६७।।

जब श्रीमहादेवजी के निकट पहुँची तब महादेवजी ने हँसकर कुशल पूछा और कहा सच्ची-सच्ची बात कहो कि किस प्रकार परीक्षा ली ? ।। ६७ ।।

सती समुझि रघुबीर-प्रभाऊ ❀ भय वश शिव सन कीन्ह दुराऊ
कछु न परीक्षा लीन्ह गुसाईं ❀ कीन्ह प्रणाम तुम्हारिहि नाईं

तब श्रीरामचन्द्रजी का प्रभाव समझकर सतीजी भय के मारे श्रीशिवजी से बात छिपा कर बोलीं ।। १ ।। हे गुसाईं ! मैंने तो कुछ भी परीक्षा नहीं ली, और तुम्हारे समान ही प्रणाम करके लौट आई ।।२।।

जो तुम कहा सो मृषा न होई ❀ मोरे मन प्रतीति अस होई
तब शंकर देखेउ धरि ध्याना ❀ सती जो कीन्ह चरित सब जाना

आपने जो कहा वह कभी झूठा नहीं हो सकता है, मेरे मन को ऐसा विश्वास हो गया है ।।३।। तब श्रीमहादेवजी ने जो ध्यान करके देखा तो सती ने जो चरित्र किया था, सब जान गये ।।४।।

बहुरि राम मायहिं शिर नावा ❀ प्रेरि सतिहिं जेहि झूठ कहावा
हरि इच्छा भावी बलवाना ❀ हृदय विचारत शंभु सुजाना

तब रामजी की माया को समझकर शिवजीने फिर शिरसे प्रणाम किया कि, जिसने सतीकी बुद्धिको फेरकर उनसे झूठ कहलवाया। शिवजी विचारने लगे कि भगवान् की इच्छा बलवान् है।

सती कीन्ह सीता कर वेषा ❀ शिव उर भयउ विषाद विशेषा
जो अब करौं सती सन प्रीती ❀ मिटै भक्ति पथ होय अनीती

सतीजी ने सीता का स्वाँग किया, इससे महादेवजी के मन में बड़ा खेद हुआ ।। अतः उन्होंने सोचा कि, यदि मैं सती के साथ प्रीति करूँगा तो भक्ति मार्ग नष्ट हो जायगा और अन्याय होगा।

दोहा—परम प्रेम नहिं जाइ तजि, किए प्रेम बड़ पाप।
प्रकट न कही महेश कछु, हृदय अधिक संताप ॥ ६८ ॥

प्रीति बहुत है जो छोड़ी भी नहीं जा सकती और यदि प्रेम करूँ तो बड़ा पाप होगा। इस कारण श्रीमहादेवजी ने प्रकट में तो कुछ नहीं कहा, किन्तु मनमें बड़ा संताप उत्पन्न हुआ ।।६८।।

तबहिं शंभु प्रभुपद शिर नावा ❀ सुमिरत राम हृदय अस आवा
यहि तन सतिहिं भेंट मोहिं नाहीं ❀ शिव संकल्प कीन्ह मनमाहीं

तब महादेवजी ने प्रभु के चरण कमलों में शिर झुकाकर श्रीरामजी का स्मरण किया तो मन में ऐसा आया कि ।। १ ।। अब इस शरीर से तो मुझ से और सती से भेंट न होनी चाहिये—ऐसा अपने मन में सत्य संकल्प किया ।। २ ।।

अस विचारि शंकर मतिधीरा ❀ चले भवन सुमिरत रघुबीरा
चलत गगन भइ गिरा सुहाई ❀ जय महेश भलि भक्ति दृढ़ाई

ऐसा विचार कर धीर बुद्धिवाले श्रीशिवजी रामजी का स्मरण करते हुए घर को चले ।। ३ ।। तब चलते ही यह सुहावनी आकाशवाणी हुई, कि 'हे महादेवजी ! आपकी जय हो, आपने भक्ति को भली भाँति दृढ़ किया' ।। ४ ।।

अस प्रण तुम बिनु करै को आना ❀ रामभक्त समरथ भगवाना
सुनि नभ गिरा सती उर शोचू ❀ पूछा शिवहिं समेत सँकोचू

भला ऐसा प्रण तुम्हारे बिना दूसरा कौन कर सकता है, तुम भगवान् के भक्त हो, यह सुनकर सती को बड़ी चिन्ता उत्पन्न हुई, तब संकुचित हो श्रीशिवजी से पूछने लगीं ।।

कीन्ह कवन प्रण कहहु कृपाला ❀ सत्यधाम प्रभु दीनदयाला
यदपि सती पूछा बहु भाँती ❀ तदपि न कहेउ त्रिपुर-आराती

हे प्रभो ! दीनदयाल ! सत्य के धाम ! आपने कौन सा प्रण किया है ? ।।७।। यद्यपि सतीजी ने बहुत तरह से पूछा, तो भी भगवान् शंकर (त्रिपुर-आराती) ने कुछ नहीं कहा ।।८।।

दोहा—सती हृदय अनुमान किय, सब जाना सर्वज्ञ।
कीन्ह कपट मैं शम्भु सन, नारि सहज जड़ अज्ञ ॥६९॥

तब सती जी ने अपने हृदय में यह अनुमान कर लिया कि, इन सर्वज्ञ ने सब कुछ जान लिया है। मैंने महादेवजी से छल किया, मैं स्त्री की जाति जड़ और मूर्ख हूँ ।। ६९ ।।

सोरठा—जल पय सरिस बिकाय, देखहु प्रीति की रीति भलि।
विलग होइ रस जाय, कपट खटाई परत ही ॥ १२ ॥

देखो, प्रीति की रीति कितनी उत्तम है कि जल भी दूध में मिलकर दूध के ही भाव बिकता है, किन्तु कपट रूपी खटाई से अलग हो जाता अर्थात् बिगड़ जाता है ।। १२ ।।

हृदय सोच समुझत निज करणी ❀ चिन्ता अमित जाय नहिं बरणी
कृपासिन्धु शिव परम अगाधा ❀ प्रगट न कहेउ मोर अपराधा

इस प्रकार अपनी करतूत को मन में सोच समझ कर महान् सोच हुआ। श्रीमहादेवजी कृपा के समुद्र हैं उन्होंने प्रकट में तो मेरा अपराध नहीं कहा यह पार्वती जी सोचने लगीं ॥

शंकर रुख अवलोकि भवानी ❀ प्रभु मोहिं तजेउ हृदय अकुलानी
निज अघ समुझि न कछु कहि जाई ❀ तपै अवाँ इव उर अधिकाई

तब श्रीमहादेवजी का रुख देखकर पार्वतीजी ने जान लिया कि स्वामी ने मुझे त्याग दिया, इससे वह व्याकुल हो गयीं ॥ ३ ॥ अपना पाप समझ कर कुछ कह न सकीं, हृदय कुम्हार के आवें की तरह बहुत तपने लगा ॥ ४ ॥

सतिहिं सोच जानि वृषकेतू ❀ कहेउ कथा सुन्दर सुख हेतू
वर्णत पंथ विविध इतिहासा ❀ विश्वनाथ पहुँचे कैलासा

तब सती को चिन्तित जानकर श्रीमहादेवजी सुखदायक अनेक ऐतिहासिक कथा कहने लगे ॥ ५ ॥ इसी प्रकार मार्ग में अनेक इतिहासों का वर्णन करते हुए विश्वनाथ शंकरजी कैलास में जा पहुँचे ॥ ६ ॥

तहँ पुनि शम्भु समुझि प्रण आपन ❀ बैठे बटतर करि कमलासन
शङ्कर सहज स्वरूप सँभारा ❀ लागि समाधि अखण्ड अपारा

फिर अपने प्रण को स्मरण कर श्री महादेवजी एक वट वृक्ष के नीचे कमलासन लगाकर बैठ गये, तब उनके इस प्रकार स्वरूप सँभालते ही सहज ही अखंड अपार समाधि लग गई ॥

दोहा—सती बसहिं कैलास तब, अधिक सोच मनमाहिं।
मरम न कोऊ जान कछु, युग सम दिवस सिराहिं ॥७०॥

फिर तो मन में अत्यन्त चिन्ता करती हुई सतीजी कैलास में वास करने लगीं। इस भेद को कोई कुछ भी नहीं जान सका और उनका एक-एक दिन युग के समान बीतने लगा ॥७०॥

नित नव सोच सती उर भारा ❀ कब जइहौं दुख सागर पारा
मैं जो कीन्ह रघुपति अपमाना ❀ पुनि पतिबचन मृषा करि जाना

इस प्रकार सतीजी के मन में अधिकाधिक नवीन सोच होने लगा कि मैं कब इस दुःख सागर से पार हो जाऊँगी ॥१॥ जो मैंने श्रीरामचन्द्रजी का अपमान किया और फिर पति के बचन को मिथ्या करके जाना ॥ २ ॥

सो फल मोहिं विधाता दीन्हा ❀ जो कछु उचित रहा सो कीन्हा
अब बिधि अस बूझिय नहिं तोहीं ❀ शंकर विमुख जिआवहु मोहीं

अब वही फल विधाताने मुझे दिया है और जो कुछ उचित था वही किया है। हे विधाता! तब तुमको ऐसा न करना चाहिए कि, तुम मुझको शंकरजी से विमुख करके जिलाओ ॥

कहि न जाय कछु हृदय गलानी ❀ मनमहँ रामहिं सुमिरि सयानी
जौं प्रभु दीनदयाल कहावा ❀ आरतिहरण वेद यस गावा

उनके हृदय की ग्लानि कुछ कही नहीं जाती, चतुर सतीजी मनमें श्रीरामचन्द्रजीका स्मरण कर कहने लगीं कि ॥५॥ हे प्रभो ! यदि आप दीन दयालु कहलाते हैं और दुःखहरण कर्ता हैं, जैसा वेदों ने भी आपका यशोगान किया है ॥६॥

तो मैं विनय करौं करजोरी ❀ छूटै बेगि देह यह मोरी
जो मेरे शिव-चरण सनेहू ❀ मन क्रम बचन सत्य व्रत येहू

तो मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि, मेरा यह शरीर शीघ्र ही छूट जाये । यदि शिवजी के चरणारविन्दों में मेरा सच्चा स्नेह है और अपने मन, वचन और शरीर से मेरा यह सच्चा व्रत है ॥

दोहा—तौ समदरशी सुनिय प्रभु, करौ सो बेगि उपाइ ।
होइ मरण जेहि बिनहिं श्रम, दुसह बिपत्ति बिहाइ ॥७१॥

तो हे समदर्शी प्रभु ! मेरी यह विनती सुनकर वही उपाय करो कि जिससे बिना परिश्रम ही मेरी मृत्यु हो जावे और यह असह्य (कठिन) विपत्ति छूट जावे ॥७१॥

इहि विधि दुखित प्रजेशकुमारी ❀ अकथनीय दारुन दुख भारी
बीते संबत सहस सतासी ❀ तजो समाधि शंभु अविनासी

इस प्रकार दक्षकुमारी सतीजी को ऐसा दारुण दुःख हुआ जो वर्णन नहीं किया जा सकता ॥१॥ उधर जब सत्तासी हजार वर्ष व्यतीत हो गये, तब अविनाशी श्रीमहादेवजी ने अपनी समाधि त्यागी ॥२॥

रामनाम शिव सुमिरन लागे ❀ जानेउ सती जगतपति जागे
जाइ शंभुपद-बंदन कीन्हा ❀ सन्मुख शंकर आसन दीन्हा

और राम-नाम जपने लगे तब, सतीजी ने जाना कि, जगतपति समाधि से जग गये हैं ॥३॥ तब वह शिवजी के चरणों में जा गिरीं तो शिवजी ने अपने सन्मुख आसन दिया ॥४॥

लगे कहन हरि कथा रसाला ❀ दक्ष प्रजेश भये तेहि काला
देखा विधि विचार सब लायक ❀ दक्षहिं कीन्ह प्रजापति नायक

तब शिवजी फिर श्रीरामचन्द्रजी की सुन्दर कथा कहने लगे, उसी समय सतीजी के पिता राजा दक्ष को प्रजापति का पद प्राप्त हुआ ॥५॥ क्योंकि जब ब्रह्माजी ने उन्हें विचार कर सब प्रकार योग्य देखा तो उनको सम्पूर्ण प्रजापतियों का नायक कर दिया ॥६॥

बड़ अधिकार दक्ष जब पावा ❀ अति अभिमान हृदय तब आवा
नहिं कोउ अस जन्मेउ जगमाहीं ❀ प्रभुता पाय जाहि मद नाहीं

जब दक्ष ने बड़ा अधिकार पाया, तब उनके मनमें अत्यन्त अभिमान उत्पन्न हो गया ॥७॥ संसार में ऐसा कौन है जिसको प्रभुता पाकर घमण्ड न हुआ हो ? ॥८॥

दोहा—दक्षलिये मुनि बोलि सब, करन लगे बड़ जाग।
नेवते सादर सकल सुर, जे पावत मख भाग ॥७२॥

तब दक्ष ने सब मुनियों को बुलाया और बड़ा यज्ञ करने लगे तथा जो यज्ञ में भाग पाया करते थे, उन सब देवताओं को भी आदर सहित न्योता दिया ॥७२॥

किन्नर नाग सिद्ध गन्धर्वा ❀ बधुन समेत चले सुर सर्वा
विष्णु विरञ्चि महेश बिहाई ❀ चले सकल सुर यान बनाई

किन्नर, नाग, सिद्ध, गन्धर्व और सभी देवता अपनी-अपनी स्त्रियों सहित दक्ष के घर को चले। ब्रह्मा, विष्णु और महादेवजी को छोड़ सब देवता अपने-अपने विमान सजाकर चले ॥

सती बिलोकेउ गगन बिमाना ❀ जात चले सुन्दर बिधि नाना
सुर सुन्दरी करहिं कल गाना ❀ सुनत श्रवण छूटहिं मुनि ध्याना

तब सती ने अनेक भाँति के शोभायमान विमानों को आकाश में जाते हुए देखा, जिनमें सुर सुन्दरियाँ गान कर रही थीं और जिनके सुनने से मुनियों के भी ध्यान छूट जाते थे।

पूछेउ तब शिव कहेउ बखानी ❀ पिता यज्ञ सुनि कछु हरषानी
जो महेश मोहिं आयसु देहू ❀ कछु दिन जाय रहौं मिस एहू

जब इस प्रकार आकाश-मार्ग में जाते हुए विमानों की भीड़ देखकर सतीजी ने श्रीमहादेवजी से पूछा—तब श्रीमहादेवजी ने प्रशंसा पूर्वक समाचार कहकर बतलाया कि, तुम्हारे पिता के घर में यज्ञ है, तब वह समाचार सुनकर सतीजी कुछ प्रसन्न हुईं ॥५॥ और उन्होंने अपने मनमें विचार किया कि यदि महादेव जी मुझको आज्ञा दें तो मैं इसी बहाने से जाकर कुछ दिन पिता के घर रहूँ ॥६॥ परन्तु—

पति परित्याग हृदय दुख भारी ❀ कहै न निज अपराध विचारी
बोली सती मनोहर बानी ❀ भय संकोच प्रेम रस सानी

पति के परित्याग का मनमें बड़ा दुःख था, वह कह न सकी ॥७॥ किन्तु फिर सतीजी भय संकोच और प्रेम-रस से युक्त यह वचन बोलीं ॥८॥

दोहा—पिता भवन उत्सव परम, जो प्रभु आयसु होइ।
तौ मैं जाउँ कृपा यतन, सादर देखन सोइ ॥ ७३ ॥

हे प्रभो! जब पिता के घर इतना भारी उत्सव है तो यदि मुझको आज्ञा दीजिए, तो हे कृपानिधान! वह यज्ञ देखने के लिये मैं आदर के साथ अपने पिता के घर चली जाऊँ ॥७३॥

कहेउ नीक मोरे मन भावा ❀ यह अनुचित नहिं नेवत पठावा
दक्ष सकल निज सुता बुलाई ❀ हमरे बैर तुम्हें बिसराई

शिवजी ने कहा यह तो बहुत ठीक है, परन्तु उन्होंने तुमको बुलाने के लिये नेवता नहीं भेजा ॥१॥ देखो दक्ष ने अपनी सब पुत्रियों को बुलाया है, किन्तु केवल हमारे वैर से ही तुम्हें भुला दिया ॥२॥

ब्रह्मसभा हमसन दुख माना ❀ तेहि ते अजहुँ करहिं अपमाना
जो बिनु बोले जाहु भवानी ❀ रहै न शील सनेह न कानी

ब्रह्मा की सभा में हमसे बड़ा दुःख मान लिया, जिससे आज भी हमारा अपमान करते हैं। हे भवानी ! यदि तुम वहाँ बिना बुलाये जाओगी तो शील, स्नेह और मान न रहेगा ॥

यदपि मित्र प्रभु पितु गुरु गेहा ❀ जाइय बिनु बोले न सँदेहा
तदपि विरोध मान जहँ कोई ❀ तहाँ गये कल्याण न होई

यद्यपि मित्र, प्रभु, पिता और गुरु के घर निस्सन्देह बिना बुलाए जाना चाहिये ॥५॥ तथापि जहाँ जाने से कोई शत्रुता मानता हो तो वहाँ जाने से कल्याण नहीं होता ॥६॥

भाँति अनेक शम्भु समुझावा ❀ भावी वश न ज्ञान उर आवा
कहप्रभु जाहुजो बिनहिंबुलाये ❀ नहिं भलि बात हमारे भाये

इस प्रकार शिवजी ने सतीजी को समझाया, परन्तु उनके मन में वह ज्ञान न आया ॥७॥ शिवजी ने कहा कि, यदि तुम बिना बुलाए जाओगी तो यह बात हमें अच्छी नहीं लगती ॥८॥

दोहा—कहि देखा हर जतन बहु, रहै न दक्षकुमारि।
दिये मुख्यगन संग तब, बिदा किये त्रिपुरारि ॥७४॥

जब शिवजी ने अनेक भाँति से कहकर देख लिया कि, दक्ष-पुत्री रुकती नहीं है। तब महादेवजी ने अपने कुछ मुख्य गणों को साथ देकर उन्हें बिदा कर दिया ॥७४॥

पिता भवन जब गई भवानी ❀ दक्ष त्रास काहु न सनमानी
सादर भलेहि मिली एकमाता ❀ भगिनी मिलीं बहुत मुसुकाता

जब भवानी सतीजी अपने पिताके घर पहुँची तब दक्षके भय से किसी ने उनका स्वागत नहीं किया। केवल एक माता भले ही आदर से मिली किन्तु बहिनें बहुत मुस्कुराती हुई मिलीं ॥२॥

दक्ष न कछु पूछी कुशलाता ❀ सतिहिं विलोकि जरे सब गाता
सती जाय देखेउ तब यागा ❀ कतहुँ न दीख शम्भु कर भागा

राजा दक्ष ने कुछ भी कुशल समाचार नहीं पूछा और सती को देखकर उनका शरीर जलने लगा ॥३॥ तब सती ने जाकर देखा तो यज्ञ हो रहा है और उसमें शिवजी का भाग कहीं नहीं देखा ॥४॥

तबचित चढ़ेउ जो शंकर कहेऊ ❀ प्रभु अपमान समुझि उर दहेऊ
पाछिलदुखनहृदयअस व्यापा ❀ जस यह भयउ महा परितापा

अब श्रीमहादेवजी की बात याद आई, उनका अपमान समझकर हृदय जलने लगा ॥ पति के त्याग का दुःख ऐसा नहीं व्यापा था, जैसा यह महान् दारुण दुःख उत्पन्न हुआ ॥६॥

यद्यपि जग दारुण दुख नाना ❀ सब ते कठिन जाति अपमाना
समुझिसतिहिंउपजा अति क्रोधा ❀ बहु बिधि जननी कीन्ह प्रबोधा

यद्यपि संसार में अनेक दुःख हैं, तथापि जाति का अपमान सबसे कठिन होता है ।।७।। यह समझकर सतीजीको बड़ा क्रोध उत्पन्न हुआ, तब माता ने आकर अनेक प्रकार से समझाया ।।८।। परन्तु—

दोहा—शिव अपमान न जाइ सहि, हृदय न होत प्रबोध ।
सकलसभहिं हठिहटकितब, बोलीं बचन सक्रोध ।।७५।।

शिवजी का अपमान सहने योग्य नहीं था, इस कारण उनके हृदय को कुछ भी प्रबोध न हुआ । तब सारी सभा को सुनाकर सती क्रोध के साथ यह बचन बोलीं ।।७५।।

सुनहु सभासद सकल मुनिन्दा ❁ कही सुनी जिन शंकर निन्दा
सो फल तुरत लहब सब काहू ❁ भली भाँति पछिताब पिताहू

हे सभासदों ! सुनो, जिन लोगों ने श्रीशिवजी की निन्दा सुनी और कही है ।। १ ।। वे लोग उसका फल तुरन्त पावेंगे और हे पिताजी ! तुम भी भली-भाँति पछताओगे ।। २ ।।

संत-शम्भु - श्रीपति-अपवादा ❁ सुनिय जहाँ तहँ असि मर्यादा
काटिय तासु जीभ जो बसाई ❁ श्रवण मूँदि नहिं चलिय पराई

क्योंकि जहाँ सन्त, शिवजी और विष्णु भगवान् की निन्दा सुनाई पड़े, वहाँ ऐसी मर्यादा है कि अपनी सामर्थ्य हो तो उसकी जीभ काट ले और बस न चले,तो कान बन्द करके वहाँ से चल दे।

जगदातमा महेश पुरारी ❁ जगत जनक सबके हितकारी
पिता मन्दमति निन्दत तेही ❁ दक्ष शुक्र संभव यह देही

श्रीमहादेवजी जगत् की आत्मा और संसारको उत्पन्न करने वाले सर्वसाधारण के हितकारी हैं, यह मेरा मन्दमति पिता उनकी निन्दा करता है कि जिसके अंश से मेरा शरीर पैदा हुआ है।।८।।

तजिहौं तुरत देह तेहि हेतू ❁ उर धरि चन्द्रमौलि वृषकेतू
असकहियोग अग्नि तनु जारा ❁ भयउ सकल मख हाहाकारा

इसलिए चन्द्रमा को धारण करने वाले वृषकेतु शिवजी को हृदय में धारण करके तुरन्त इस देह को उनके लिए त्याग दूँगी ।।७।। ऐसा कहकर सती ने अपना शरीर योगानल में भस्म कर दिया, यह देखकर सम्पूर्ण यज्ञ-मण्डप में कोलाहल होने लगा ।।८।।

दोहा—सती मरन सुन शम्भुगन, करन लगे मख खीस ।
यज्ञ विध्वंस विलोकिभृगु, रक्षा कीन्ह मुनीस ।।७६।।

सतीजी का मरना सुनकर श्रीमहादेवजी के गण यज्ञ को विध्वंस करने लगे । तब यज्ञ को विध्वंस होते देख भृगु ऋषि तथा अन्य मुनियों ने उसकी रक्षा की ।।७६।।

समाचार जब शङ्कर पाये ❁ वीरभद्र करि कोप पठाये
यज्ञविध्वंस जाइ तिन्ह कीन्हा ❁ सकलसुरनविधिवत फलदीन्हा

यह समाचार जब श्रीमहादेवजी को मिला तो उन्होंने कुपित होकर अपने गण वीरभद्र को भेजा ।। उन्होंने जाकर यज्ञ को विध्वंस कर दिया और सारे देवताओं को यथा योग्य फल दिया ।।

भइ जग-विदित दक्ष गति सोई ❀ जस कछु शंभु विमुख की होई
यह इतिहास सकल जग जाना ❀ ताते मैं संक्षेप बखाना

और दक्ष की वही संसार विदित गति हुई जैसी एक शम्भु विमुख की होती है ।।३।। इस इतिहास को सभी लोग जानते हैं, इसलिए मैंने संक्षेप ही में कहा है ।।४।।

सती मरत हरिसन बर माँगा ❀ जन्म-जन्म शिवपद अनुरागा
तेहि कारण हिम गिरि गृहजाई ❀ जनमी पारबती तनु पाई

सती ने मरते समय विष्णु भगवान् से यह वर माँगा था कि, जन्म-जन्म में श्रीमहादेवजी के चरणों में मेरा अनुराग बना रहे ।।५।। इस कारण हिमाचल के घर जाकर पार्वती का शरीर धारण कर जन्म लिया ।।६।।

जबते उमा शैलगृह आई ❀ सकल सिद्धि सम्पति तहँ छाई
जहँ तहँ मुनिन्ह सुआश्रम कीन्हे ❀ उचित बास हिम-भूधर दीन्हे

जब से पार्वती हिमाचल के घर जाकर उत्पन्न हुईं, तब से सिद्धियों ने आकर वहाँ बास कर लिया ।।७।। जहाँ-तहाँ मुनियों ने शोभायमान आश्रम बनाये और हिमाचल ने उनको उचित स्थान दिया ।।८।।

दोहा—सदा सुमन फल सहित सब, द्रुम नव नाना जाति ।
प्रकटी सुन्दर शैल पर, मणि आकर बहु भाँति ।।७७।।

फिर तो वहाँ के वृक्ष सर्वकाल नवीन-नवीन पत्र, पुष्प और फलों से युक्त हो गये और नाना भाँति की मणियों की खानें उस सुन्दर पहाड़ पर आकर प्रकट हो गईं ।।७७।।

सरिता सर पुनीत जल बहहीं ❀ खगमृग मधुप सुखी सब रहहीं
सहज बयर सब जीवन त्यागा ❀ गिरपरसकल करहिं अनुरागा

तालाब और नदियों से स्वच्छ और पवित्र जल बहने लगा, पक्षी और मृग आदिक सुखी हो रहने लगे ।।१।। सब जीवों ने स्वभावतः वैर का जीवन त्याग दिया और परस्पर प्रीति रखते हुए सब उस पर्वत पर प्रेम करने लगे ।।२।।

सोह शैल गिरिजा गृह आये ❀ जिमि नर राम भगति के पाये
नित नूतन मंगल गृह तासू ❀ ब्रह्मादिक गावहिं यश जासू

पार्वतीजी के जन्म से वह पर्वत ऐसा शोभायमान हो गया जैसे मनुष्य श्रीरामजी की भक्ति को पाकर शोभायमान हो जाते हैं ।।३।। पर्वतराज के घर नित्य मंगलाचरण होने लगे और ब्रह्मादिक आकर उनका यशोगान करने लगे ।।४।।

नारद समाचार जब पाये ❀ कौतुक हिमगिरि गेह सिधाये
शैलराज बड़ आदर कीन्हा ❀ पद पखारि वर आसन दीन्हा

जब यह समाचार नारदजीको मिला तब वे बड़े कौतुकके साथ दौड़े हुए हिमाचलके घर पहुँचे । हिमाचलने उनका बड़ा स्वागत किया और पाँव पखारकर सुन्दर आसन दिया ।।

नारि सहित मुनि-पद शिर नावा ❀ चरण सलिल सब भवन सिंचावा
निज सौभाग्य बहुत गिरि बरणा ❀ सुता बोलि मेली मुनि चरणा

गिरि ने अपनी स्त्री मैंना के साथ मुनि नारदजी के चरणों में प्रणाम करके उनके चरण जल से सारे घर को सिंचा दिया ।।७।। नारदजी के आने से पर्वतराज ने अपने सौभाग्य का बहुत वर्णन किया तथा कन्या पार्वतीको बुलाकर मुनिके चरणोंमें दण्डवत् कराया ।।८।।

दोहा—त्रिकालज्ञ सरबज्ञ तुम्ह, गति सर्वत्र तुम्हारि ।
कहहु सुता के दोष गुन, मुनिवर हृदय बिचारि ।।७८।।

फिर कहा—हे मुनिवर ! आप तीनों कालको जानने वाले हैं और आपकी गति सर्वत्र है, सो आप अपने मन में विचार कर कन्या के गुण और दोष को कहिये ।।७८।।

कह मुनि बिहँसि गूढ़ मृदुबानी ❀ सुता तुम्हारि सकल गुणखानी
सुन्दर सहज सुशील सयानी ❀ नाम उमा अम्बिका भवानी

तब नारदजी ने हँसकर मीठी और गूढ़ वाणी में कहा, आपकी कन्या सभी गुणों की खानि है । यह स्वभावतः सुशील और बुद्धिमती है अतः इसका उमा अम्बिका और भवानी नाम है ।।

सब-लक्षण-सम्पन्न कुमारी ❀ होइहि सन्तत पियहिं पियारी
सदा अचल यहि कर अहिवाता ❀ यहि ते यश पइहैं पितु माता

यह आपकी कुमारी सब लक्षण-सम्पन्न है और यह अपनी पतिकी अत्यन्त ही प्रिया होगी । इसका सौभाग्य सदा अचल रहेगा और इससे माता-पिता को जगत् में यश प्राप्त होगा ।।४।।

होइहि पूज्य सकल जगमाहीं ❀ यहि सेवत कछु दुर्लभ नाहीं
यहि कर नाम सुमिरि संसारा ❀ तिय चढ़िहहिं पतिब्रत असिधारा

यह सारे संसार में पूज्य होगी और इसकी सेवा करने से ऐसी कोई भी दुर्लभ वस्तु नहीं है जो न मिले । इसके नामको जपकर संसारकी स्त्रियाँ पतिव्रतधर्मरूपी तलवारकी धारपर चढ़ेंगी ।।६।।

शैल सुलक्षणि सुता तुम्हारी ❀ सुनहु जे अब अवगुण दुइचारी
अगुण अमान मातु-पितु हीना ❀ उदासीन सब संशय-छीना

हे पर्वतराज ! आपकी कन्या सुलक्षणी है, परन्तु इसमें जो दो-चार अवगुण हैं, अब वह भी सुनिये । इसे निर्गुण, मानरहित, माता-पिता से विहीन, उदासीन, सब सन्देह से रहित—।।८।।

दोहा—योगी जटिल अकाम तन, नगन अमंगल वेष ।
अस स्वामी यहि कहँ मिलिहिं, परी हस्त अस रेख ।। ७९ ।।

योगी, जटाधारी, निष्काम-चित्त, नग्न-शरीर, ऐसा अमंगल-वेषवाला पति इसको मिलेगा । क्योंकि इसके हाथ में ऐसी ही रेखा पड़ी हैं ।।७९।।

सुनि मुनि गिरा सत्य जिय जानी ❀ दुख दम्पतिहिं उमा हरषानी
नारदहूँ यह भेद न जाना ❀ दशा एक समुझत बिलगाना

तब नारदजी की यह वाणी सुन और उसे अपने मनमें सत्य समझकर हिमाचल और मैना के हृदय में बड़ा दुःख हुआ, किन्तु पार्वतीजी प्रसन्न हुईं, वह एक ऐसी दशा थी जो समझने में अलग थी जिसे नारदजा ने भी नहीं जाना ॥ २ ॥

सकलसखी गिरिजागिरिमयना ❁ पुलक शरीर भरे जल नयना
होइ न मृषा देवऋषि-भाषा ❁ उमा सो बचन हृदय धरि राखा

सब सखियों सहित पार्वती, हिमाचल और मैनाके शरीर पुलकित हो गये तथा नेत्रोंमें जल भर आया ॥३॥ तब नारदजी का बचन झूठा नहीं हो सकता, ऐसा मानकर पार्वती ने उसे अपने हृदय में रख लिया ॥ ४ ॥

उपजेउ शिव पद कमल सनेहू ❁ मिलन कठिन मन भा सन्देहू
जानि कुअवसर प्रीति दुराई ❁ सखि-उछंग बैठी पुनि जाई

महादेवजी के चरणकमल में स्नेह तो उत्पन्न हो गया परन्तु उनका मिलना कठिन है यह समझकर हृदय में संदेह भी हुआ ॥ ५ ॥ परन्तु कुअवसर जानकर वह उस प्रीति को छिपा लीं और उछलकर सखियों की गोद में जा बैठीं ॥ ६ ॥

झूठ न होइ देवऋषि बानी ❁ सोचहिं दम्पति सखी सयानी
उर धरि धीर कहैं गिरिराऊ ❁ कहहु नाथ का करिय उपाऊ

उधर हिमवान् और उनकी स्त्री मैना तथा पार्वती की चतुर सखियाँ सोच करने लगीं कि, देवर्षि नारदजी की वाणी असत्य नहीं हो सकती ॥७॥ तब हृदय में धैर्य धारण करके गिरिराज हिमाचल ने नारदजी से कहा—हे नाथ! कहिये, इसमें क्या उपाय किया जावे ?॥८॥

दोहा—कह मुनीश हिमवन्त सुनु, जो विधि लिखा लिलार।
देव दनुज नर नाग मुनि, कोउ न मेटनिहार ॥८०॥

इसपर नारदजी ने कहा कि, हे हिमवन्त ! सुनो, ब्रह्माजी ने जो कुछ ललाट में लिख दिया है उसको देवता, राक्षस, मनुष्य, नाग और मुनीश्वर कोई भी नहीं मिटा सकते ॥८०॥

तदपि एक मैं कहौं उपाई ❁ होय करै जो दैव सहाई
जस वर मैं वरणेउँ तुम पाहीं ❁ मिलिहि उमहिं कछु संशय नाहीं

तो भी मैं एक उपाय कहता हूँ, यदि भगवान् सहायता करें तो वैसा ही हो जावेगा। वरके विषय में मैंने तुमसे जो कहा ठीक वैसा ही वर पार्वतीको मिलेगा, इसमें कुछ शंका नहीं है।

जे जे वर के दोष बखाने ❁ ते सब शिव पहँ मैं अनुमाने
जो विवाह शंकर सन होई ❁ दोषौ गुण सम कह सब कोई

अभी मैंने जो-जो वर के दोष वर्णन किये, मैं अनुमान करता हूँ कि वे सब महादेवजी में विद्यमान हैं ॥ ३ ॥ यदि श्रीमहादेवजी के साथ विवाह होवे तो इन दोषों की भी लोग गुणों के ही समान प्रशंसा करेंगे ॥ ४ ॥

जो अहि सेज सयन हरि करहीं ❁ बुध कछु तिनकर दोष न धरहीं
भानु कृशानु सर्व रस खाहीं ❁ तिनकहँ मन्द कहत कोउ नाहीं

क्योंकि जो विष्णु भगवान् क्षीरसागर में शेषनाग की शय्या पर शयन करते हैं, उनको बुद्धिमान् पुरुष कुछ दोष नहीं देते ॥ ५ ॥ सूर्य और अग्नि सम्पूर्ण रसों को खा जाते हैं, किन्तु उनको कोई बुरा नहीं कहता ॥ ६ ॥

शुभ अरु अशुभ सलिल सब बहहीं ❀ सुरसरि कोउ न अपावन कहहीं
समरथ को नहिं दोष गोसाईं ❀ रवि पावक सुरसरि की नाईं

जैसे शुभ और अशुभ सभी तरह का जल श्रीगंगाजी में बहता है, किन्तु उसे कोई अपवित्र नहीं कहता ॥ ७ ॥ इसी प्रकार हे हिमवान् ! सूर्य, अग्नि और गंगाजी की तरह सामर्थ्यवान् को कुछ दोष नहीं लगता ॥ ८ ॥ परन्तु—

दोहा—जो अस ईर्षा करहिं नर, जड़ विवेक अभिमान ।
परहिं कल्प भरि नरक महँ, जीव कि ईश समान ॥८१॥

जो कोई मनुष्य ऐसी ईर्ष्या करेंगे वे मूर्ख, अहंकारी और अभिमानी होकर कल्पपर्यन्त नरक में पड़ेंगे, क्योंकि क्या जीव भी ईश्वर के समान हो सकता है ? ॥ ८१ ॥

सुरसरि-जल कृत वारुणि जाना ❀ कबहुँ न सन्त करहिं तेहि पाना
सुरसरि मिलै तो पावन कैसे ❀ ईश अनीशहिं अन्तर तैसे

जिस प्रकार गंगा-जलसे बनी मदिरा अपवित्र है उसे सन्तजन कभी पान नहीं करते ॥१॥ परन्तु गंगाजी में मिल जाने पर जिस भाँति मदिरा पवित्र हो जाती है ऐसे ही यह जीव भी ईश्वर में मिल जाने पर ईश्वर ही हो जाता है, ईश्वर और जीव में इतना ही अन्तर है ॥ २ ॥

शम्भु सहज समरथ भगवाना ❀ इहि विवाह सब बिधि कल्याना
दुराराध्य पै अहहिं महेसू ❀ आशुतोष किये कठिन कलेसू

भगवान् श्रीमहादेवजी स्वभावतः समर्थ हैं। इस विवाह के होने से सब प्रकार से कल्याण ही है ॥ ३ ॥ परन्तु शिवजी दुराराध्य एवं कठिन होते हुए भी क्लेश सहने के कारण शीघ्र ही संतुष्ट हो जाया करते हैं ॥ ४ ॥

जौं तप करै कुमारि तुम्हारी ❀ भाविउ मेटि सकैं त्रिपुरारी
यद्यपि वर अनेक जग माहीं ❀ यहि कहँ शिव तजि दूसर नाहीं

यदि यह आपकी कुमारी तप करे तो श्रीमहादेवजी भावी को भी मिटा सकते हैं। यद्यपि जगत् में अनेक वर विद्यमान हैं किन्तु इसके लिए श्रीशिवजी को छोड़ दूसरा कोई वर नहीं है ॥६॥

वरदायक प्रणतारति भंजन ❀ कृपासिन्धु सेवक-मन-रंजन
इच्छित फल बिनु शिव आराधे ❀ लहइ न कोटि योग जप साधे

वे वर देनेवाले, भक्तोंके दुःखको नाश करनेवाले, कृपाके समुद्र और भक्तोंके मनको प्रसन्न करने वाले हैं।। शिवजीकी आराधना किये बिना करोड़ों प्रकारकाजप और योग भी इच्छित फल नहीं देता।

दोहा—असकहि नारद सुमिरि हरि, गिरिजहिं दीन्ह असीस ।
होइहि यहि कल्याण अब, संशय तजहु गिरीस ॥८२॥

ऐसा कहकर नारदजीने श्री हरि भगवान्‌का स्मरण करके पार्वतीजीको आशीर्वाद दिया और कहा, हे गिरिराज, अब आप संशयको त्याग दीजिए इससे इसका अर्थात् पार्वतीका कल्याण होगा॥८२॥

कहि अस ब्रह्म भवन मुनि गयऊ ❀ आगिल चरित सुनहु जो भयऊ
पतिहिं एकान्त पाय कह मयना ❀ नाथ न मैं समुझेउँ मुनि बयना

ऐसा कहकर नारदजी तो ब्रह्माके लोकको चले गये, आगे जो चरित्र हुआ उसको सुनिए। पति को एकान्त में पाकर मैंना ने कहा—हे नाथ! मैं मुनि की बातों को न समझ सकी ॥२॥

जो घर वर कुल होय अनूपा ❀ करिय विवाह सुता अनुरूपा
न तु कन्या बरु रहै कुँवारी ❀ कन्त उमा मम प्राण पियारी

यदि घर,वर और कुल कन्याके अनुरूप हो तो कन्याके योग्य विवाह कीजिए॥३॥नहीं तो कन्या कुँआरी रह जाय किन्तु अनुचित विवाह न करूँगी ; हे स्वामी ! पार्वती मुझको प्राणोंसे भी अधिक प्रिय है ॥४॥

जो न मिलहि वर गिरिजहिं जोगू ❀ गिरि जड़ सहज कहहिं सब लोगू
सो विचारि पति करेहु विवाहू ❀ जो न बहोरि होय उर दाहू

यदि पार्वतीके योग्य वर नहीं मिलेगा तो सबलोग कहेंगे कि हिमाचल स्वभाव ही से जड़ है। हे स्वामी ! यह सोच-समझकर विवाह कीजिए जिससे कि पीछे हृदयमें दाह न उत्पन्न होवे॥६॥

अस कहि परीं चरण धरि शीशा ❀ बोले सहित सनेह गिरीशा
बरु पावक प्रगटै शशि माहीं ❀ नारद वचन अन्यथा नाहीं

ऐसा कह मैंना पतिके चरणोंमें मस्तक धरकर पृथ्वीमें गिर गईं,तब गिरिराजने स्नेहसहित कहा,चाहे चन्द्रमासे अग्नि भले ही प्रकट होवे परन्तु नारदजीकी बात अन्यथा नहीं हो सकती॥ इस कारण—

दोहा—प्रिया सोच परिहरहु सब, सुमिरहु श्रीभगवान।
पारबती निरमयउ जिन, सोइ करिहैं कल्यान॥८३॥

हे प्रिये ! सारी चिन्ता को त्यागकर श्रीहरि भगवान का स्मरण करो, क्योंकि जिन्होंने पार्वती को बनाया है, वही कल्याण करेंगे॥८३॥

अब जो तुमहिं सुता पर नेहू ❀ तौ अस जाय सिखावन देहू
करै सो तप जेहि मिलइँ महेशू ❀ आन उपाय न मिटइँ कलेसू

अब यदि तुमको अपनी कन्यापर प्रीति है तो जाकर उसको ऐसी शिक्षा दो कि,जिससे वह तपस्या करके श्रीमहादेवजी को प्राप्त करे, दूसरे किसी भी उपाय से यह दुःख मिटने वाला नहीं है।

नारद बचन स-गर्भ स-हेतू ❀ सुन्दर सब-गुण-निधि वृषकेतू
अस विचारि तुम तजु सब शंका ❀ सबहिं भाँति शंकर अकलंका

श्रीनारदजीकी बात स-गर्भ और गूढ़ होती है, श्रीमहादेवजी सुन्दर और सब गुणोंके समुद्र हैं। ऐसा मनमें विचारकर तुम सारी शंकाको त्याग दो क्योंकि शंकरजी सब प्रकारसे निष्कलंक हैं॥

सुनि पति-बचन हर्षि मन माहीं ❀ गई तुरत उठि गिरिजा पाहीं
उमहिं बिलोकि नयन भरि बारी ❀ सहित सनेह गोद बैठारी

तब पति की बात सुनकर मैना अपने मनमें आनन्दित होती हुई वहाँ से उठकर पार्वती के पास चली गयीं ॥५॥ वहाँ पार्वती को देखते ही उनके नेत्रों में जल भर आया, उन्होंने प्रेम पूर्वक उन्हें गोद में बिठा लिया ॥६॥

बारहिं बार लेत उर लाई ❀ गदगद कंठ न कछु कहि जाई
जगत-मातु सर्वज्ञ भवानी ❀ मातु सुखद बोलीं मृदुबानी

और गिरिजाको बारम्बार हृदयसे लगाने लगीं, कण्ठ गद्‌गद हो गया कुछ कहा नहीं जाता। तब जगत्‌माता जो सर्वज्ञ भवानी पार्वतीजी हैं, माता मैनाको सुखदेनेके लिए यह मीठी वाणी बोलीं।

दोहा—सुनहु मातु मैं दीख अस, सपन सुनावौं तोहिं ।
सुन्दर गौर सुविप्रवर, अस उपदेशेउ मोहिं ॥८४॥

हे माता ! मैंने एक ऐसा सपना देखा है जो तुमको सुनाती हूँ, मुझको एक सुन्दर गौर-वर्ण के उत्तम ब्राह्मण ने स्वप्न में ऐसा उपदेश दिया है कि—॥८४॥

करहु जाइ तप शैलकुमारी ❀ नारद कहा सो सत्य विचारी
मातु पितहिं पुनि यह मत भावा ❀ तप सुखप्रद दुख दोष नसावा

हे पार्वती ! नारदजी जो कह गये हैं, वह विचार सत्य है, तुम जाकर तपस्या करो ॥ फिर तुम्हारे माता-पिता को भी यह मत अच्छा लगा है, क्योंकि तपस्या से सुख होता है और दुःख-दोष मिट जाते हैं ॥२॥

तपबल रचै प्रपंच विधाता ❀ तपबल विष्णु सकल जगत्राता
तपबल शंभु करहिं संहारा ❀ तपबल शेष धरहिं महिभारा

तप के बल से ही श्रीब्रह्माजी जगत् की रचना करते हैं और श्रीविष्णुजी जगत् की रक्षा करते हैं ॥३॥ श्रीमहादेवजी जगत् का संहार करते हैं और तप के बल से ही श्रीशेष-नागजी पृथ्वी का भार उठाये रहते हैं ॥४॥

तप अधार सब सृष्टि भवानी ❀ करहु जाइ तप अस जिय जानी
सुनत बचन विस्मित महतारी ❀ सपन सुनायेहु गिरिहिं हँकारी

हे भवानी ! यह जितनी सृष्टि है, सब तपस्या के आधार से ही है, ऐसा जी में जान कर तपस्या करो ॥५॥ इस वचन को सुनकर माता मैना को आश्चर्य हुआ, तब उन्होंने हिमाचल को बुलवाकर वह स्वप्न कह सुनाया ॥६॥

मातु पितहिं बहु विधि समुझाई ❀ चली उमा तपहित हरषाई
प्रिय परिवार पिता अरु माता ❀ भये विकल मुख आव न बाता

तब पार्वतीजी माता-पिता को बहुत समझाकर प्रसन्न मन से तप करने को चल पड़ीं ॥७॥ उन्हें तप के लिए जाते देख माता-पिता और प्यारे परिवार के लोग बड़े व्याकुल हुए और किसी के मुख सेकोई बात न निकल सकी ॥८॥

दोहा—वेदशिरा मुनि आइ तब, सबहिं कहा समुझाइ ।
पारवती महिमा सुनत, रहे प्रबोधहिं पाइ ॥८५॥

तब वेदशिरा मुनि आकर सबको समझाये और कहे कि पार्वतीजी की बड़ी महिमा है जिसे सुनकर सबको ज्ञान और धीरज हुआ ।।८५।।

उर धरि उमा प्राण-पति-चरना ❀ जाइ विपिन लागीं तप करना
अति सुकुमारि न तनु तप योगू ❀ पतिपद सुमिरि तजेउ सब भोगू

उधर प्राणपति शिवजी के चरणों को हृदय में धारण कर पार्वतीजी बन में जाकर तपस्या करने लगीं ।।१।। यद्यपि पार्वतीजी अति सुकुमारी थीं और उनका शरीर तपस्या करने योग्य नहीं था, तथापि पति के चरणकमलों का स्मरण करके उन्होंने सब भोगों को त्याग दिया ।।२।।

नित नव चरण उपज अनुरागा ❀ बिसरी देह तपहिं मन लागा
संवत् सहस मूल फल खाये ❀ शाक खाइ शत वर्ष गँवाये

इससे शिवजी के चरणों में नित्य नवीन प्रीति उत्पन्न होने लगी, मनके तप में लीन होने से देह की सुधं बिसर गई ।।३।। तब एक हजार वर्ष तक तो पार्वतीजी ने कन्दमूल और फल खाया और सौ वर्ष केवल शाक ही खाकर बितायी ।।४।।

कछु दिन भोजन बारि बतासा ❀ किये कठिन कछु दिन उपवासा
बेलपात महि परे सुखाई ❀ तीन सहस संवत् सो खाई

फिर कुछ दिन केवल जल और वायु का ही भोजन किया और कुछ दिन तक कठिन उपवास किया ।।५।। बेल की पत्तियाँ जो सूखी हुई पृथ्वी पर गिरी रहती थीं तीन हजार वर्ष तक उसका ही भोजन करती रहीं ।।६।।

पुनि परिहरेउ सुखानेउ पर्णा ❀ उमा नाम तब भयेउ अपर्णा
देखि उमहिं तप-क्षीण शरीरा ❀ ब्रह्मगिरा भइ गगन गँभीरा

फिर उन्होंने सूखे पत्तों का खाना भी छोड़ दिया, तभी से उनका नाम अपर्णा प्रसिद्ध हुआ ।।७।। तब उनके शरीर को क्षीण देखकर आकाश से यह गम्भीर ब्रह्मवाणी हुई कि:—

दोहा—भयउ मनोरथ सफल तव, सुनु गिरिराज कुमारि ।
परिहरु दुसह कलेश सब, अब मिलिहहिं त्रिपुरारि ।।८६।।

हे गिरिराज कुमारी पार्वती ! सुनो, तुम्हारा सब मनोरथ पूर्ण हुआ; अतः तुम अपने इन सारे क्लेशों को त्याग दो, अब तुमको त्रिपुरारि अर्थात् श्रीमहादेवजी मिलेंगे ।।८६।।

अस तप काहु न कीन्ह भवानी ❀ भये अनेक धीर मुनि ज्ञानी
अब उर धरहु ब्रह्म-वर-बानी ❀ सत्य सदा संतत शुचि जानी

हे भवानी पार्वती ! लोक में अनेक धीर, मुनि और ज्ञानी हो गये हैं, परन्तु ऐसी तपस्या किसी ने भी नहीं की ।।१।। इससे अब तुम श्रेष्ठ ब्रह्मवाणी को अपने हृदय में सदा सत्य और पवित्र जानकर धारण करो ।।२।

आवैं पिता बुलावन जबहीं ❀ हठ परिहरि घर जायहु तबहीं
मिलहिं तुमहिं जब सप्त ऋषीशा ❀ जानेहु तब प्रमाण वागीशा

जब तुम्हारे पिता बुलाने आवें तब हठ छोड़कर घर चली जाना ।।३।। और जब तुम्हारी सप्तर्षियों से भेंट हो, तब इस आकाशवाणी का प्रमाण समझ लेना ।।४।।

सुनत गिरा विधि गगन बखानी ❀ पुलक गात गिरिजा हरषानी
उमा चरित मैं सुन्दर गावा ❀ सुनहु शंभुकर चरित सुहावा

तब ब्रह्माजी की ऐसी वाणी सुनकर पार्वतीजी का समस्त शरीर पुलकित हो गया ।।५।। तुलसीदासजी कहते हैं कि—यह तो पार्वतीजी का सुन्दर चरित्र मैंने वर्णन किया, अब श्रीमहादेवजी का सुहावना चरित्र सुनो ।।६।।

जबते सती जाय तनु त्यागा ❀ तबते शिव मन भयउ विरागा
जपहिं सदा रघुनायक नामा ❀ जहँ तहँ सुनहिं राम गुण-ग्रामा

जब से सतीजी ने दक्ष के यज्ञ में जाकर अपने शरीर को त्याग दिया, तब से शिवजी के मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया ।।७।। वे सर्वदा श्रीरामचन्द्रजी का नाम जपते हुए जहाँ-तहाँ रामजी का गुणगान सुनने लगे ।।८।।

दोहा—चिदानन्द सुखधाम शिव, विगत मोह मद काम ।
विचरहिं महि धरि हृदय हरि, सकल लोक अभिराम ।।८७।।

और तबसे चिदानन्द श्रीमहादेवजी मोह, मद और काम से रहित होकर समस्त सुखों के स्थान भगवान् श्रीहरि को हृदय में धारण कर भूमण्डल में विचरने लगे ।।८७।।

कतहुँ मुनिन्ह उपदेशहिं ज्ञाना ❀ कतहुँ राम गुण करहिं बखाना
यदपि अकाम तदपि भगवाना ❀ भक्त विरह दुख दुखी सुजाना

कहीं मुनियों को ज्ञानका उपदेश और कहीं भगवान् श्रीरघुनाथजी के गुणोंको बखानते थे। यद्यपि उन्हें कोई कामना नहीं थी, तथापि वे सुजान शिवजी भक्त-वियोगके दुःखसे दुःखी थे ।।

इहि विधि गयउ काल बहु बीती ❀ नित नव होय राम पद प्रीती
नेम प्रेम शंकर कर देखा ❀ अविचल हृदय भक्तिकी रेखा

इस प्रकार बहुत समय व्यतीत हो गया और रामजी के चरणों में नित्य नवीन प्रीति उत्पन्न होने लगी ।।३।। तब श्रीमहादेवजी के नेम-प्रेम को तथा उनके हृदय में भक्ति की ऐसी अचल रेखा को देखकर—

प्रकटे राम कृतज्ञ कृपाला ❀ रूप-शील-निधि तेज विशाला
बहु प्रकार शंकरहिं सराहा ❀ तुम बिन अस व्रत को निर्वाहा

ऐसे कृतज्ञ, कृपालु और शील-निधि श्रीरामचन्द्रजी प्रकट हुए कि, जिनका तेज विशाल है ।।५।। वे शंकरजी की प्रशंसा करके बोले, हे शिवजी ! आपके बिना ऐसा कौन है जो इस कठिन व्रत का निर्वाह करे ? ।।६।।

बहु विधि राम शिवहिं समुझावा ❀ पारवती कर जन्म सुनावा
अति पुनीत गिरिजा की करणी ❀ विस्तर सहित कृपानिधि बरणी

यह कहकर रामचन्द्रजी ने अनेक भाँति से शिवजी को समझाकर फिर पार्वतीजी के

जन्म की बात कह सुनाई ।।७।। श्रीरामचन्द्रजी ने अत्यन्त प्रेम से गिरिजा (पार्वती) की पवित्र कीर्ति का विस्तार सहित वर्णन किया ।।८।। कहा कि—

दोहा—अब बिनती मम सुनहु शिव, जो मोपर निज नेहु ।
जाइ बिवावहु शैलजहिं, यह मोहिं माँगे देहु ।।८८।।

हे महादेवजी ! अब आप मेरी यह विनती सुनिये कि, यदि आप का मेरे ऊपर स्नेह है तो जाकर पार्वती के साथ विवाह कर लीजिये, यह मुझको माँगने से दीजिये ।।८८।।

कह शिव यदपि उचित यह नाहीं ❁ नाथ बचन पुनि मेटि न जाहीं
शिर धरि आयसु करहिं तुम्हारा ❁ परम धरम यह नाथ हमारा

तब महादेवजी ने कहा—हे नाथ ! यद्यपि यह उचित नहीं है, तथापि आपकी आज्ञा मेटी नहीं जाती है ।। आपकी आज्ञा को शिरोधार्य कर पालन करें, हे नाथ ! हमारा यही परम धर्म है ।।

मातु पिता गुरु प्रभु की बानी ❁ बिनहिं बिचार करिय शुभ जानी
तुम सब भाँति परम हितकारी ❁ आज्ञा शिर पर नाथ तुम्हारी

क्योंकि माता-पिता, गुरु और स्वामी की बात बिना विचारे ही हितकारी एवं मंगलप्रद समझ कर करनी चाहिये ।।३।। आप सब प्रकार से मेरा हित करनेवाले हैं, इस कारण हे स्वामी ! आपकी आज्ञा शिरोधार्य है ।।४।।

प्रभु तोषेउ सुनि शंकर बचना ❁ भक्ति विवेक धर्मयुत रचना
कह प्रभु हर तुम्हार प्रण रहेऊ ❁ अब उर राखेहु जो हम कहेऊ

तब महादेवजी के धर्मयुत वचन सुनकर श्रीरामचन्द्रजी अत्यन्त संतुष्ट हुए। पश्चात् बोले—हे शंकर ! तुम्हारा प्रण रह गया, अतः जो मैंने कहा है, उसको हृदय में रखियेगा ।।

अन्तरध्यान भये अस भाखी ❁ शंकर सोइ मूरति उर राखी
तबहिं सप्तऋषि शिवपहँ आये ❁ बोले प्रभु अस बचन सुहाये

ऐसा कह श्रीरामजी अन्तर्धान हो गये और महादेवजी ने उसी मनोहर मूर्ति को अपने हृदय में धारण कर लिया ।।७।। उसी समय सप्तर्षि श्रीमहादेवजी के पास आये और शिवजी ने उनसे इस प्रकार सुहावने शब्द कहे ।।८।।

दोहा—पारवती पहिं जाइ तुम्ह, प्रेम परीक्षा लेहु ।
गिरिहिं प्रेरि पठवहु भवन, दूरि करेहु सन्देहु ।।८९।।

हे मुनियों ! आप पार्वती के पास जाकर उनके प्रेम की परीक्षा लें और हिमवन्त को ऐसी प्रेरणा करें कि, वे सन्देह को त्याग कर अपनी पुत्री को घर ले जावें ।।८६।।

सुनि शिव बचन परम सुख मानी ❁ चले हर्षि जहँ रहीं भवानी
ऋषिन गौरि देखी तहँ कैसी ❁ मूरतिवन्त तपस्या जैसी

तब महादेवजी की ऐसी वाणी सुनकर सप्तर्षिगण बहुत सुख मानकर हर्षित हो वहाँ को चले, जहाँ भवानी पार्वतीजी विराजमान थीं ।।१।। वहाँ ऋषियों ने भवानी गौरी को ऐसे देखा मानों कोई तपस्या की साक्षात् मूर्ति हो ।।२।।

बोले मुनि सुनु शैलकुमारी ❀ करहु कवन कारण तप भारी
केहि अवराधहु का तुम चहहू ❀ हम सन सत्य मर्म सब कहहू
सुनत ऋषिन के बचन भवानी ❀ बोली गूढ़ मनोहर बानी

तब मुनियों ने कहा—हे पार्वती ! सुनो, तुम किस कारण से यह महान् तपस्या कर रही हो ? ।।३।। किसकी आराधना करती हो और तुम क्या चाहती हो ? हमसे सब भेद सत्य कहो ।।४।। तब पार्वतीजी ऋषियों की बात सुनकर गूढ़ किन्तु मनोहर वाणी में बोलीं ।।५।।

कहत मर्म मन अति सकुचाई ❀ हँसिहहु सुनि हमारि जड़ताई
मन हठ परा न सुनै सिखावा ❀ चहत बारि पर भीति उठावा

मनका मर्म कहते हुए अत्यन्त संकोच होता है, आप हमारी जड़ताको सुनकर हँसेंगे । यह मेरा मन ऐसा हठमें पड़ रहा है कि, शिक्षाकी बात नहीं सुनता और जल पर भीत उठाना चाहता है ।।

नारद कहा सत्य सोइ जाना ❀ बिनु पंखन हम चहहिं उड़ाना
देखिय मुनि अविवेक हमारा ❀ चाहत पति शंकर अविकारा

नारदजीने जो कुछ कहा है उसको सत्य जानकर मैं बिना पंखके ही, उड़ना चाहती हूँ । हे मुनियों ! मेरी अज्ञानता तो देखिये कि, मैं अविकारी शंकरको पति बनाना चाहती हूँ ।।

दोहा—सुनत वचन विहँसे ऋषय, गिरि सम्भव तव देह ।
नारद कर उपदेश सुनि, कहहु बसेउ किहि गेह ।।९०।।

श्रीपार्वतीजी का यह बचन सुनकर सप्तर्षिगण हँसे और बोले कि, तुम्हारा शरीर पहाड़ से उत्पन्न हुआ है। कहो तो भला, श्रीनारदजी का उपदेश सुनकर किसका घर बसा है ।।९०।।

दक्ष सुतन्हि उपदेशिनि जाई ❀ तिन फिर भवन न देखा आई
चित्रकेतु कर घर उन घाला ❀ कनककशिपुकर पुनि असहाला

नारदजी ने दक्ष प्रजापति के पुत्रों को उपदेश दिया तो उन्होंने आकर फिर घर का दर्शन नहीं किया ।।१।। फिर चित्रकेतु के घर को भी इन्होंने ही नष्ट किया और यही हाल हिरण्यकशिपु का किया ।।२।।

नारद सिख जे सुनहिं नरनारी ❀ अवशिभवनतजि होहिंभिखारी
मन कपटी तन सज्जन चीन्हा ❀ आपु सरिस सबहीं चहँ कीन्हा

जो स्त्री-पुरुष नारदजी की शिक्षा सुनेंगे वे अवश्य घर छोड़कर भिखारी बन जायेंगे ।। ३ ।। देखने में शरीर से सज्जन हैं, किन्तु उनका मन कपटी है, सबको अपने ही समान भिखारी कर देना चाहते हैं ।।४।।

तेहि के बचन मानि विश्वासा ❀ तुम चाहहु पति सहज उदासा
निर्गुण निलज कुवेष कपाली ❀ अकुल अगेह दिगम्बर व्याली

उनके वचनों का विश्वास मानकर तुम ऐसे स्वाभाविक उदासीन को अपना पति बनाना चाहती हो कि ।।५।। जो निर्गुण, निर्लज्ज, बुरे वेषवाला, कुलहीन दिगम्बर और सर्पों का आभूषण धारण करनेवाला है ।।६।।

कहहु कवन सुख अस वर पाये ❀ भलि भूलिउ ठग के बौराये
पंच कहे शिव सती विवाही ❀ पुनि अवडेरि मराइनि ताही

कहो तो सही, ऐसा वर पाने से क्या सुख होगा ? ठग के बहकावे में आकर भले भूली हो ॥७॥ पंच कहते हैं कि शिवजी ने सती को व्याहा था, किन्तु उस पर कैसा झूठा-सच्चा अपवाद लगाकर दक्ष के यज्ञ में भेजकर मरवा दिया ॥ ८ ॥

दोहा—अब सुख सोवत सोच नहिं, भीख माँगि भव खाहिं ।
सहज एकाकिन्हके भवन, कबहुँ कि नारि खटाहिं ॥९१॥

अब सुख पूर्वक सोते हैं कोई चिन्ता नहीं है, भोजन के लिए संसार में भीख माँग लेते हैं, तब ऐसे अकेले स्वभाव से रहने वाले के गृह में क्या स्त्री ठहर सकती है ? ॥ ९१ ॥

अजहूँ मानहु कहा हमारा ❀ हम तुम कहँ वर नीक विचारा
अति सुन्दर शुचि सुखद सुशीला ❀ गावहिं वेद जासु यश लीला

तुम अब भी मेरा कहना मानो, हम तुम्हारे लिए अच्छे वर का विचार किये हैं ॥ वह वर अत्यन्त सुन्दर, पवित्र, सुख देनेवाला और सुशील है, जिसके यश और लीला को वेद गाते हैं ॥

दूषण-रहित सकल-गुण-रासी ❀ श्रीपति-पुर वैकुंठ निवासी
अस वर तुमहिं मिलाउब आनी ❀ सुनत बचन कह बिहँसि भवानी

वे दोष-रहित समस्त गुणों के समूह श्रीलक्ष्मीपति वैकुण्ठ में वास करने वाले हैं ॥३॥ ऐसा वर लाकर तुम्हें मिलावेंगे, तब यह बात सुनकर पार्वतीजी ने हँसकर कहा ॥४॥

सत्य कहहु गिरि भव तनु एहा ❀ हठ न छूट छूटै बरु देहा
कनकौ पुनि पषान ते होई ❀ जारेउ सहज न परिहरि सोई

आप सत्य कहते हो कि, पर्वत से उत्पन्न यह हमारा शरीर भले ही छूट जावे, परन्तु इसका हठ कैसे छूटे ? देखिए, सोना पाषाण से उन्पन्न होता है और तपाने पर भी अपने स्वभाव को नहीं छोड़ता ॥ ६ ॥

नारद बचन न मैं परिहरऊँ ❀ बसौ भवन उजरौ नहिं डरऊँ
गुरु के बचन प्रतीति न जेही ❀ सपनेहुँ सुगम न सुख सिधि तेही

चाहे मेरा घर उजड़ जावे किन्तु, मैं नारदजी की बात को कभी नहीं छोड़ूँगी। क्योंकि गुरु के वचन में जिसको विश्वास नहीं है उसको स्वप्न में भी सुख और सिद्धि सुगम नहीं है ॥

दोहा—महादेव अवगुन भवन, विष्णु सकल गुनधाम ।
जेहिकर मन रम जाहि सन, तेहि तेहिसन काम ॥९२॥

महादेवजी चाहे समस्त अवगुणों के घर और विष्णु भगवान् चाहे समस्त गुणों के धाम ही क्यों न हों, किन्तु जिसका मन जिसमें रम गया है उसको उसी से काम है ॥९२॥

जो तुम मिलतेउ प्रथम मुनीसा ❀ सुनतिउँ सिख तुम्हारि धरिशीशा
अब मैं जन्म शंभुहित हारा ❀ को गुण दूषण करै बिचारा

हे मुनियों ! यदि तुम मुझे पहले ही मिले होते तो मैं तुम्हारी शिक्षा को शिरोधार्य

करती ॥१॥ किन्तु अब अपना जन्म मैंने तो शिवजी को हार दिया, तब फिर वर के गुण का विचार कौन करे ? ॥ २ ॥

जो तुम्हरे हठ हृदय विशेषी ❀ रहि न जाय बिनु किये बरेषी
तौ कौतुकिअन्ह आलस नाहीं ❀ वर कन्या अनेक जगमाहीं

यदि आप लोगों के मन में विशेष हठ हो और बिना वर-रक्षा कराये रहा न जाता हो ॥३॥ तो आप ऐसे कौतुकियों को आलस्य नहीं है, संसार में अनेक वर और कन्यायें हैं ॥४॥

जन्म कोटि लगि रगरि हमारी ❀ वरौं शंभु नतु रहौं कुमारी
तजौं न नारद कर उपदेशू ❀ आपु कहैं शत बार महेशू

परन्तु, मेरी तो करोड़ जन्मोंके लिए यह रगड़ है, कि वरूँगी तो शिवजीको और नहीं तो क्वाँरी ही रहूँगी। मैं नारदजीका उपदेश नहीं त्याग सकती चाहे स्वयं शिवजी भी सौ बार कहें ॥

मैं पाँ परौं कहै जगदम्बा ❀ तुम गृह गवनहु भयउ विलम्बा
देखि प्रेम बोले मुनिज्ञानी ❀ जय जय जगदम्बिके भवानी

जगन्माता ने कहा, हे मुनियो ! मैं आपके पाँव पड़ती हूँ, अब आप लोग अपने घर जाइए, बहुत देर हो गई ॥७॥ तब पार्वतीजी का ऐसा प्रेम देखकर ज्ञानी मुनियों ने कहा, हे जगत् की माता भवानी ! आपकी जय हो ! जय हो ॥ ८ ॥

दोहा—तुम्ह माया भगवान शिव, सकल जगत पितुमात ।
नाइ चरन सिर मुनि चले, पुनिपुनि हरषित गात ॥९३॥

हे देवी ! आप माया रूप और श्रीमहादेव भगवान् परमेश्वररूप हैं, आप ही लोग संसार के माता-पिता हैं। इस प्रकार पार्वतीजी से कहकर और चरणों में मस्तक नवाकर मुनिजन प्रसन्नता पूर्वक चल दिए ॥ ९३ ॥

जाय मुनिन्ह हिमवन्त पठाये ❀ करि विनती गिरिजहिं गृह लाये
बहुरि सप्तऋषि शिवपहँ जाई ❀ कथा उमा की सकल सुनाई

तब मुनियोंने जाकर गिरिराज हिमवान् को भेजा तो विनती करके पार्वतीजीको घर ले आये। फिर सप्तर्षियों ने श्रीशिवजी के पास जाकर पार्वतीजी की वह सम्पूर्ण कथा कह सुनाई ॥२॥

भये मगन शिव सुनत सनेहा ❀ हरषि सप्तऋषि गवने गेहा
मन थिर करि तब शंभु सुजाना ❀ लगे करन रघुनायक ध्याना

ऐसा स्नेह सुनकर श्रीशिवजी मग्न हो गये और सप्तर्षिगण हर्षित हो अपने स्थान को गये ॥३॥ तब सुजान शिवजी मन को स्थिर करके श्रीरामचन्द्रजी का ध्यान करने लगे ॥४॥

तारक असुर भये तेहि काला ❀ भुज प्रताप बल तेज विशाला
ते सब लोक लोकपति जीते ❀ भये देव सुख सम्पति रीते

उसी समय तारक नाम का असुर उत्पन्न हुआ जिसने अपनी भुजाओं के बल से और प्रताप तथा तेज से ॥ ५ ॥ समस्त लोकों को जीत लिया जिस कारण सब देवता सुख सम्पत्ति से रहित हो गये ॥ ६ ॥

अजर अमर सो जीति न जाई ❀ हारे सुर करि विविध लराई
तब विरञ्चि सन जाइ पुकारे ❀ देखे विधि सब देव दुखारे

वह राक्षस अजर-अमर था किसीसे जीता नहीं जाता था, सब देवता अनेक प्रकारकी लड़ाई करके उससे हार चुके। तब ब्रह्माजी को पुकारा, ब्रह्माजी ने देखा कि, सब देवता दुःखी हैं ॥

दोहा—सब सन कहा बुझाइ विधि, दनुज निधन तब होइ।
शम्भु शुक्र सम्भूत सुत, यहि जीतै रन सोइ ॥९४॥

तब उनको समझा-बुझाकर ब्रह्माजी ने कहा कि इस राक्षस की मृत्यु तब होगी, जब भगवान् महादेवजी के वीर्य से पुत्र उत्पन्न होगा तब इसको युद्ध में जीतेगा ॥ ९४ ॥

तदपि एक मैं कहौं उपाई ❀ होइहि ईश्वर करिहिं सहाई
सती जो तजी दक्ष मख देहा ❀ जनमी जाइ हिमांचल गेहा

तो भी मैं एक उपाय कहता हूँ, ईश्वर सहायता करे तो वह सफल होगा ॥१॥ सतीजी जो अपने पिता दक्षके यज्ञमें शरीर त्यागकी थीं, अब वही जाकर हिमाचलके घर जन्मी हैं ॥२॥

तेहि तप कीन्ह शंभु हित लागी ❀ शिव समाधि बैठे सब त्यागी
यदपि अहै असमंजस भारी ❀ तदपि बात इक सुनहु हमारी

वहाँ उन्होंने श्रीशिवजी के लिए तपस्या की है और शिवजी सब कुछ त्याग समाधि लगाये बैठे हैं ॥३॥ यद्यपि यह बड़ा असमंजस है तो भी हमारी एक बात सुनो ॥४॥

पठवहु काम जाय शिव पाहीं ❀ करै क्षोभ शंकर मनमाहीं
तब हम जाइ शिवहिं शिरनाई ❀ करवाउब विवाह बरिआई

शिवजी के पास कामदेव को भेजो, वह जाकर श्रीशंकरजी के मन में क्षोभ उत्पन्न करे ॥ ५ ॥ तब हम जाकर श्रीशिवजी को शिर नवाकर बरंवस विवाह करा देंगे ॥ ६ ॥

इहि विधि भलेहि देव हित होई ❀ मति अति नीक कहा सब कोई
अस्तुति सुरन कीन्ह अतिहेतू ❀ प्रकटेउ विषम-बाण झषकेतू

इस प्रकारसे भलेही देवताओंका हित हो जायगा, ऐसा सब देवताओंने कहा। और सबने प्रेम पूर्वक कामदेवकी बड़ी स्तुतिकी, इससे वह कामदेव प्रगट हो गया कि जिसके बाण बड़े ही विषम हैं

दोहा—सुरन्ह कही निज विपति सब, सुनि मन कीन्ह विचार।
शंभु विरोध न कुशल मोहिं, विहँसि कहेउ अस मार ॥९५॥

तब सब देवताओं ने अपना दुःख कहा, उसको सुनकर उसने मन में विचार किया फिर हँसते हुए कामदेव बोला कि यह सब तो ठीक है; परंतु श्रीमहादेवजी से विरोध करने पर मेरा भला नहीं होगा ॥ ९५ ॥

तदपि करब मैं काज तुम्हारा ❀ श्रुति कह परम धर्म उपकारा
परहित लागि तजै जो देही ❀ सन्तत संत प्रशंसहिं तेही

तो भी मैं आप लोगों का कार्य करूँगा, क्योंकि वेद कहता है कि परोपकार ही परम धर्म है। जो पराये हित के लिए अपना शरीर त्यागे, अच्छे मनुष्य उसकी प्रशंसा करते हैं ।।

अस कहि चलेउ सबहिं शिरनाई ❀ सुमन चाप कर सहित सहाई
चलत मार अस हृदय विचारा ❀ शिव विरोध ध्रुव मरण हमारा

ऐसा कह सबको शिर नवाकर हाथ में पुष्प-धनुष लिये कामदेव अपने सहायकों सहित चला। चलते समय कामने विचारा कि शिवजी से विरोध करने पर निःसंदेह मेरी मृत्यु हो जावेगी ।।

तब आपन प्रभाव विस्तारा ❀ निज बश कीन्ह सकल संसारा
कोपेउ जबहिं वारिचर केतू ❀ क्षणमहँ मिटेउ सकल श्रुतिसेतू

तब कामदेव ने अपने प्रभाव को फैलाकर सारे संसार को अपने वश में कर लिया ।।५।। इस प्रकार जब कामदेव कुपित हुआ तब क्षण भर में शास्त्र की समस्त मर्यादा मिट गयी ।।६।।

ब्रह्मचर्य व्रत संयम नाना ❀ धीरज धर्म ज्ञान विज्ञाना
सदाचार जप योग विरागा ❀ सभय विवेक कटक सब भागा

ब्रह्मचर्य, व्रत और अनेक भाँति के संयम, धैर्य, धर्म-ज्ञान, विज्ञान ।। ७ ।। सदाचार, जप, योग, वैराग्य और जितने भी ज्ञान के सैनिक थे सब डर के मारे भाग गये ।। ८ ।।

छन्द—भागेउ विवेक सहाय सहित सो सुभट संयुत महि मुरे ।
सद्ग्रंथ पर्वत कन्दरन्हि महँ जाइ तेहि अवसर दुरे ।।
होनिहार का करतार को रखवार जग खरभर परा ।
दुइमाथ केहि रतिनाथ जेहि कहँ कोपि धनुशर करधरा।।३।।

इस प्रकार जब ज्ञान भी अपने सहायकों सहित भाग गया और रण के सुभट योद्धा ब्रह्मचर्य आदि ने रणभूमि से मुँह मोड़ लिया। सद्ग्रन्थ भागकर गुफाओं में जाकर छिप रहे, तब संसार में खलबली पड़ गई कि हे करतार ! यह क्या होनहार है ? एक माथेवाले तो सभी इस कामदेव के वशीभूत हैं। अब दो सिर के किस मनुष्य ने जन्म ले लिया है कि जिसके लिए कामदेव ने कोपकर धनुष-बाण हाथ में धारण किया है ।। ३ ।।

दोहा—जे सजीव जग चर अचर, नारि पुरुष अस नाम ।
ते निज-निज मरजाद तजि, भये सकल बस काम ।।९६।।

संसार में जितने भी चर-अचर जीव स्त्री-पुरुष ऐसे नाम के थे, वे सभी अपनी-अपनी मर्यादा को त्यागकर कामदेव के वश में हो गये ।। ९६ ।।

सबके हृदय मदन अभिलाषा ❀ लता निहारि नवहिं तरु शाखा
नदी उमँगि अंबुधि कहुँ धाई ❀ संगम करहिं तलाव तलाई

सबके हृदय में काम की इच्छा उत्पन्न हो गई, लताओं को देख वृक्षों की डालियाँ झुक गईं। नदियाँ उमँगकर समुद्र की ओर दौड़ीं और ताल-तलैया भी आपस में संगम करने लगे ।।

जहँ अस दशा जड़न की बरणी ❀ को कहि सकै सचेतन करणी
पशु पक्षी नभ जल थल—चारी ❀ भये काम वश समय निहारी

तब जहाँ जड़ों की ऐसी दशा कही गई है, वहाँ चेतन जीवों की करनीको कौन कह सकता है। आकाशचारी पक्षी, जलचारी और थलचारी सभी समयको देखकर कामदेवके वशमें हो गये ॥

मदन अन्ध व्याकुल सब लोका ❁ निसिदिन नहिं अवलोकहिं कोका
देव दनुज नर किन्नर व्याला ❁ भूत पिशाच प्रेत बैताला

सब लोग कामान्ध होकर व्याकुल हो गये, चकवी-चकवा भी रात-दिन को नहीं देखते थे ॥ और देवता, दैत्य, नर, किन्नर, सर्प, प्रेत, पिशाच, भूत और वैताल ॥ ५ ॥६॥

इनकी दशा न कहेउँ बखानी ❁ सदा कामके चेरे जानी
सिद्ध विरक्त महामुनि योगी ❁ तेपि कामवश भये वियोगी

इनको सर्वदा कामदेव का दास जानकर इनकी दशा का तो मैंने कुछ वर्णन नहीं किया किन्तु बड़े-बड़े सिद्ध, मुनि, योगी भी काम के वश वियोगी हो गये तथा उनका योग छूट गया ॥

छन्द—भये कामवस योगीश तापस पामरन की को कहे ।
देखहिं चराचर नारिमय जे ब्रह्ममय देखत रहे ॥
अबला बिलोकहिं पुरुषमय जग पुरुष सब अबलामयम् ।
दुइ दंडभरि ब्रह्माण्ड भीतर कामकृत कौतुक अयम् ॥४॥

जब योगीश्वर तपस्वी भी काम के वशीभूत हो गए, तब पामर लोगों की बात को कौन कहे ? क्योंकि जो सारे जगत् को ब्रह्ममय देखा करते थे, वही अब सब चर-अचर को स्त्रीमय देखने लगे और सम्पूर्ण-स्त्रियाँ जगत् को पुरुषमय और पुरुष सारे जगत् को स्त्रीमय देखने लगे, कामदेव का यह तमाशा ब्रह्माण्ड में दो घड़ी बना रहा ॥ ४ ॥

सोरठा—धरा न काहू धीर, सबके मन मनसिज हरे ।
जे राखे रघुबीर, ते उबरे तेहि काल महँ ॥१४॥

उस समय किसी ने भी धैर्य धारण न किया, सबके ही मन को कामदेव ने हर लिया । जिसको भगवान् ने बचाया, वही उस समय में बचा ॥ १४ ॥

उभय घरी अस कौतुक भयऊ ❁ जबलगि काम शंभु पहँ गयऊ
शिवहिं विलोकि सशंकेउ मारू ❁ भयउ यथा थिर सब संसारू

उसी दो घड़ी में ऐसा तमाशा दिखलाकर जब कामदेव महादेवजी के पास गया । तब महादेवजी को देखकर उसे बड़ी शंका उत्पन्न हुई । फिर सारा जगत् ज्यों का त्यों स्थिर हो गया ॥

भये तुरत जग जीव सुखारे ❁ जिमि मद उतरि गये मतवारे
रुद्रहिं देखि मदन भय माना ❁ दुराधर्ष दुर्गम भगवाना

तुरन्त ही संसारके समस्त प्राणी सुखी हो गये, जैसे शराबीका मद उतर गया हो । शिवजी को देखकर कामदेवने अत्यन्त भय माना क्योंकि महादेवजी दुराधर्ष दुर्गम और भगवान् हैं ॥

फिरत लाज कछु कहि नहिं जाई ❁ मरन ठानि मन रचेसि उपाई
प्रगटेसि तुरत रुचिर ऋतुराजा ❁ कुसुमित नव तरु राज विराजा

तब लौटते हुए उसे बड़ी लज्जा आयी कुछ कहा नहीं जाता, इससे उसने अपना मरना निश्चित कर उपाय रचा ।। ५ ।। और शोभायमान वसन्त ऋतु को प्रकट किया, उससे वृक्षों पर नये पुष्प और पत्ते शोभायमान हो गये ।। ६ ।।

वन उपवन वापिका तड़ागा ❀ परम सुभग सब दिशा विभागा
जहँ तहँ जनु उमँगत अनुरागा ❀ देखि मुयहु मन मनसिज जागा

वन, उपवन, बावली, सरोवर और समस्त दिशायें परम शोभा को प्राप्त हो गयीं। उसी समय जहाँ-तहाँ मानों प्रेम उमँग पड़ा हो जिसे देखकर मृत व्यक्तियों के हृदय में भी कामदेव जाग उठा ।।

छन्द—जागेउ मनोभव मुयहु मन बन सुभगता न परै कही ।
शीतल सुगन्ध सुमंद मारुत मदन अनल सखा सही ।।
बिकसे सरन्हि बहु कंज गुंजत पुञ्ज मंजुल मधुकरा ।
कलहंस सुक-पिक सरस रव करि गान नाचहिं अपसरा ।।५।।

उस समय मृतक और वृद्ध व्यक्तियों के हृदय में भी कामदेव जागृत हो गया और वन की सुन्दरता वर्णन नहीं की जाती । शीतल, मन्द, सुगन्ध वायु जो कामादिक के बढ़ाने में उसका मित्र, सहायक हो--बहने लगा ।। सरोवरों में भाँति-भाँति के कमल खिल गये, मनोहर भौरों के झुण्ड मधुर-मधुर गुंजार करने लगे; सुन्दर हंस, कोयल, तोते मधुर शब्द करने लगे, अप्सरायें सुन्दर गान करने और नाचने लगीं ।।५।।

दोहा—सकल कला करि कोटि विधि, हारेउ सेन समेत ।
चली न अचल समाधि शिव, कोपेउ हृदय निकेत ।।९७।।

इस प्रकार सब करोड़ों प्रकार की कला करके कामदेव अपनी सेना सहित हार गया और जब शिवजीकी अचल समाधि भंग न हुई, तब तो कामदेवने अपने हृदयमें महा क्रोध किया ।।९७।।

देखि रसाल-विटप-वर शाखा ❀ तेहि पर चढ़ेउ मदन मन माखा
सुमन चाप निज शर सन्धाने ❀ अति रिस ताकि श्रवणलगि ताने

फिर एक आम की सुन्दर शाखा देखकर कामदेव मनमें क्रोध करके उसपर चढ़ गया ।। और पुष्प के धनुष पर अपने बाण चढ़ाकर महान् क्रोध से शिवजी को देखकर निशाना बनाकर कान पर्यन्त उसे खैंचा ।। २ ।।

छाँड़े विषम विशिख उर लागे ❀ छूटि समाधि शंभु तब जागे
भयउ ईश मन क्षोभ विशेखी ❀ नयन उघारि सकल दिशि देखी

इस प्रकार जब उसने विषम पाँच बाणों को छोड़ा तो वे तीक्ष्ण बाण शिवजी की छाती में जा लगे, तब उनकी समाधि भंग हो गई और शिवजी जाग गये ।।३।। इससे उन ईश्वर के मनमें क्षोभ हुआ, उन्होंने नेत्र खोलकर सभी ओर देखा तो ।। ४ ।।

सौरभ पल्लव मदन विलोका ❀ भयउ कोप कंपेउ त्रयलोका
तब शिव तीसर नयन उघारा ❀ चितवत काम भयउ जरि छारा

आम की नवीन कोपलों पर कामदेव दिखाई पड़ा, फिर तो श्रीमहादेवजी को महान् क्रोध हुआ कि जिससे तीनों लोक काँप उठे ।। ५ ।। तब शिवजी ने तीसरा नेत्र खोला तो उससे देखते ही कामदेव जलकर राख हो गया ।। ६ ।।

हाहाकार भयउ जग भारी ❀ डरपे सुर भये असुर सुखारी
समुझि काम सुख सोचहिं भोगी ❀ भये अकंटक साधक योगी

फिर तो संसार में बड़ा हाहाकार मच गया, देवता भयभीत हो गये, असुरों को सुख हुआ ।। कामके सुखको समझकर भोगी चिन्तित और साधक-योगी विघ्न रहित हो गये ।।८।।

छंद–जोगी अकंटक भये पति-गति सुनत रति मुरछित भई ।
रोदति बदति बहु भाँति करुना करति शंकर पहँ गई ।।
अति प्रेम करि विनती विविधविधि जोरिकर सन्मुख रही ।
प्रभु आसुतोष कृपालु शिव अबला निरखि बोले सही ।।६।।

योगी अकण्टक हो गये, उधर पति की यह दशा सुनकर कामदेव की स्त्री रति मूर्च्छित हो गई और रोती-विलपती तथा अनेक भाँति से करुणा करती हुई श्रीमहादेवजी के पास पहुँची और अत्यन्त प्रेम पूर्वक अनेक प्रकार से विनती कर हाथ जोड़े हुए सामने जा खड़ी हुई, तब आशुतोष (शीघ्र प्रसन्न होनेवाले) श्रीमहादेवजी ने उस अबला को देखकर कहा ।।६।।

दोहा–अबते रति तव नाथकर, होइहि नाम अनंग ।
बिनु वपु व्यापिहि सबहिं पुनि, सुनु निज मिलन प्रसंग ।।९८।।

हे रति ! आज से तेरे पति का नाम 'अनंग' विख्यात होगा और अब यह बिना शरीर के ही सब किसी में व्याप्त होगा, फिर अपने पति से मिलने का प्रसंग सुन ।।९८।।

जब यदुवंश कृष्ण अवतारा ❀ होइहि हरण महा महिभारा
कृष्णतनय होइहि पति तोरा ❀ बचन अन्यथा होइ न मोरा

जब यदुकुल में भगवान् श्रीकृष्ण का महान् भूमि-भार हरण करनेके लिए अवतार होगा तब उन्हीं श्रीकृष्णचन्द्रजी का पुत्र प्रद्युम्न तेरा पति होगा, यह मेरी बात मिथ्या नहीं हो सकती ।।

रति गवनी सुनि शंकर बानी ❀ कथा अपर अब कहौं बखानी
देवन समाचार जब पाये ❀ ब्रह्मादिक बैकुण्ठ सिधाये

शंकरजी की बात सुनकर रति चली गई, अब दूसरी कथाका वर्णनकर कहता हूँ ।।३।। जब देवताओं को यह समाचार मिला, तब ब्रह्मा आदिक देवता बैकुण्ठ को चले गये ।।४।।

सब सुर विष्णु विरंचि समेता ❀ गये जहाँ शिव कृपा निकेता
पृथक्-पृथक् तिन कीन्ह प्रशंसा ❀ भये प्रसन्न चन्द्र अवतंसा

तब विष्णु और ब्रह्माजी के साथ सारे देवता उस स्थान को गये जहाँ कृपा के धाम शिवजी विराजमान थे ।।५।। तब उन लोगों ने पृथक्-पृथक् शिवजी की स्तुति की जिससे चन्द्रशेखर शिवजी प्रसन्न हुए ।। ६ ।।

बोले कृपा-सिन्धु वृषकेतू ❁ कहहु अमर आयेउ केहि हेतू
कह विधि तुम प्रभु अन्तरयामी ❁ तदपि भक्ति वश विनवौं स्वामी

इस प्रकार प्रसन्न होकर कृपासागर वृषकेतु श्रीमहादेवजी बोले, हे देवताओं ! कहिये आप लोग यहाँ किस कारण से आये हैं ? ।। ७ ।। ब्रह्माजी कहते हैं कि, हे प्रभु ! आप अन्तर्यामी हैं, तो भी भक्ति वश आपसे विनती करता हूँ ।। ८ ।।

दोहा—सकल सुरन्ह के हृदय अस, शंकर परम उछाह ।
निज नयनन्हि देखा चहहिं, नाथ तुम्हार विवाह ।।९९।।

हे शंकर जी ! सब देवताओं के हृदय में ऐसा अधिक उत्साह है कि, हे नाथ ! वे आपका विवाह अपनी आँखों से देखना चाहते हैं ।। ९९ ।।

यह उत्सव देखिय भरि लोचन ❁ सो कछु करिय मदन मदमोचन
काम जारि रति कहँ वर दीन्हा ❁ कृपासिन्धु यह अति भल कीन्हा

सो हे शिवजी ! जिस प्रकार यह उत्सव हम लोग नेत्र भरकर देखें, आप ऐसा ही कुछ उपाय कीजिये ।। १ ।। आपने कामदेव को भस्म कर रति को वरदान दिया, हे दया-सागर ! यह तो आपने बहुत अच्छा किया ।। २ ।।

साँसति करि पुनि करहिं पसाऊ ❁ नाथ प्रभुन्ह कर सहज सुभाऊ
पारवती तप कीन्ह अपारा ❁ करहु तासु अब अंगीकारा

हे नाथ ! प्रभुजनों का तो ऐसा सहज स्वभाव ही होता है कि, पहले कष्ट देकर तब दया करते हैं ।।३।। श्रीपार्वती ने तपस्या की है, अब आप उनको अंगीकार कीजिये ।।४।।

सुनिबिधि बचन समुझि प्रभुबानी ❁ ऐसेइ होउ कहा सुख मानी
तब देवन दुन्दुभी बजाईं ❁ बरषि सुमन जय जय सुर साईं

ब्रह्माजी की बात सुन और विष्णुजी की वाणी समझकर शिवजी ने सुखी होकर कहा कि, ऐसा ही होगा ।। ५ ।। फिर तो देवताओंने नगाड़े बजाकर पुष्प—वृष्टि की और बोले हे देवताओं के स्वामी ! आपकी जय हो, जय हो ।। ६ ।।

अवसर जानि सप्तऋषि आये ❁ तुरतहिं बिधि गिरि भवन पठाये
प्रथम गये जहँ रही भवानी ❁ बोले बचन मधुर छल सानी

फिर तो अवसर जानकर सप्तर्षि आये, तो शीघ्र ही ब्रह्माजी ने उनको हिमाचल के घर भेज दिया ।। वे पहले वहाँ गये, जहाँ पार्वतीजी थीं, और कपटसे युक्त यह मीठे वचन बोले ।।

दोहा—कहा हमार न सुनेहु तब, नारद कर उपदेश ।
अब भा झूठ तुम्हार प्रण, जारेउ काम महेश ।।१००।।

हे पार्वती ! उस समय तो तुमने नारद के उपदेश से हमारी बात नहीं सुनी ।। किन्तु अब तो तुम्हारा प्रण झूठा हुआ, क्योंकि श्रीमहादेवजीने तो काम को भस्म कर दिया ।।१००।।

सुनि बोलीं मुसुकाय भवानी ❀ उचित कहेउ मुनिवर विज्ञानी
तुम्हरे जान काम हर जारा ❀ अब लगि शम्भु रहे सविकारा

यह सुनकर श्रीपार्वतीजी मुस्कराकर बोलीं, हे विज्ञानी मुनियों! आप उचित ही कहते हैं आपके विचारमें तो अब श्रीमहादेवजीने कामदेवको भस्म कर दिया, परन्तु अबतक तो वे बड़े विकारी थे?

हमरे जान सदा शिव योगी ❀ अज अनवद्य अकाम अभोगी
जो मैं शिव सेयेउँ अस जानी ❀ प्रीति समेत कर्म मन बानी

किन्तु मेरे जान में तो शिवजी सर्वदा ही योगी, अजन्मा, निन्दारहित, कामहीन और भोग रहित हैं ।।३।। यदि मैंने प्रेम पूर्वक अपने मन, वचन और कर्म से शिवजी की सेवा की है ।।४।।

तौ हमार प्रण सुनहु मुनीशा ❀ करिहहिं सत्य कृपानिधि ईशा
तुम जो कहा हर जारेउ मारा ❀ सो अति बड़ अविवेक तुम्हारा

तो हे मुनियों! सुनो, हमारे प्रण को कृपानिधान भगवान् अवश्य सत्य करेंगे ।। किन्तु तुम जो यह कहते हो कि शिवजी ने कामदेव को जला दिया, सो यह आपका बड़ा भारी अज्ञान है ।।

तात अनल कर सहज स्वभाऊ ❀ हिम तेहि निकट जाय नहिं काऊ
गए समीप सो अवशि नसाई ❀ अस मनमथ महेश की नाई

हे तात! अग्नि का सहज स्वभाव है कि पाला या जाड़ा उसके निकट कभी नहीं जाता ।। ७ ।। और यदि निकट गया तो वह अवश्य ही नष्ट होगा, ऐसे ही कामदेव शिवजी के निकट गया तब उसका नाश तो निश्चित ही था ।। ८ ।।

दोहा—हिय हरषे मुनि बचन सुनि, देखि प्रीति विश्वास ।
चले भवानिहिं नाइ सिर, गयउ हिमाचल पास ।।१०१।।

श्री पार्वतीजी की शिवजी के प्रति ऐसी प्रीति देखकर मुनिगणों के हृदय में अत्यन्त प्रसन्नता हुई, फिर तो वे पार्वती को दण्डवत् करके हिमालय के पास गये ।। १०१ ।।

सब प्रसंग गिरिपतिहिं सुनावा ❀ मदन दहन सुनि अति दुख पावा
बहुरि कहेउ रतिकर वरदाना ❀ सुनि हिमवन्त परम सुख माना

वहाँ जाकर हिमाचलको सब प्रसंग सुनाया तो कामदेवका जलना सुनकर मनमें बहुत दुःख पाया ।। फिर रति के वरदान की बात कही तो उसे सुनकर हिमाचल ने परम सुख माना ।।

हृदय विचारि शम्भु प्रभुताई ❀ सादर मुनिवर लिए बुलाई
सुदिन सुनखत सुघरी सुहाई ❀ बेगि वेदविधि लगन धराई

इस प्रकार शंकरजी की प्रभुता को अपने हृदय में विचारकर हिमाचल ने आदरपूर्वक मुनियों को बुला लिया ।। फिर अच्छा दिन देख सुन्दर वेद विधि से शीघ्र लग्न धरा दिया ।।

पत्री सप्तऋषिन सो दीन्ही ❀ गहिपद विनय हिमाचल कीन्ही

जाय विधिहिं तिन दीन्ह सो पाती ❀ बाँचत प्रीति न हृदय समाती

और चिट्ठी लिखकर सप्तर्षियों को देकर हिमाचल ने चरण छूकर विनती की ।।५।। उस चिट्ठी को सप्तर्षियों ने ब्रह्मा जी को दिया जिसे बाँचने पर प्रीति हृदय में न समाई ।।६।।

लगन बाँचि अज सबहिं सुनाई ❀ हरषे मुनि सब सुर समुदाई
सुमन वृष्टि नभ बाजन बाजे ❀ मंगल कलश दसहुँ दिशि साजे

तब लग्न बाँचकर ब्रह्माजी ने सबको सुना दिया, उसे सुनकर मुनि और देवताओं के समुदाय को प्रसन्नता हुई ।।७।। फिर तो देवताओं ने बाजे बजाकर आकाश से पुष्पों की वर्षा की और दशों दिशाओं में माङ्गलिक कलश सजा दिये ।। ८ ।।

दोहा—लगे सँवारन सकल सुर, वाहन विविध विधान ।
होहिं सगुन मंगल सुखद, करहिं अप्सरा गान ।।१०२।।

सब देवताओं ने अपने-अपने वाहनों को अनेकों भाँति से सजा दिया । उस समय अत्यन्त सुन्दर माङ्गलिक शकुन हुए, अप्सरायें गीत गाने लगीं ।। १०२ ।।

शिवहिं शम्भुगण करहिं सिंगारा ❀ जटा मुकुट अहिमौर सँवारा
कुण्डल कंकण पहिरे ब्याला ❀ तन विभूति पट केहरि छाला

उधर शिवजी के गण उनका शृंगार करने लगे, जटा का मुकुट और सर्पों का मौर बनाया ।।१।। कानों में सर्प के कुण्डल, शरीर पर विभूति और हाथों में सर्पों के कंकण और शरीर पर वस्त्र के स्थान में सिंह की खाल पहनाई ।। २ ।।

शशि ललाट सुन्दर शिर गङ्गा ❀ नयन तीन उपवीत भुजङ्गा
गरल कण्ठ उर नर शिर माला ❀ अशुभवेष शिवधाम कृपाला

फिर तो ललाट पर चन्द्रमा और सुन्दर मस्तक पर गंगा शोभायमान हुईं और त्रिनेत्रको सर्पों का जनेऊ धारण कराया गया ।। ३ ।। कंठ में कालकूट विष और हृदय पर नरमुण्डों की माला धारण किये, भयंकर रूप परन्तु कल्याण के धाम, कृपा करने वाले ।।४।।

कर त्रिशूल अरु डमरु विराजा ❀ चले बसह चढ़ि बाजहिं बाजा
देखि शिवहिं सुरतिय मुसुकाहीं ❀ वर लायक दुलहिन जग नाहीं

जिनके हाथ में त्रिशूल और डमरू विराजमान है, बैल पर सवार होकर चले, बाजे बजने लगे।। शिवजी को देखकर देवताओं की स्त्रियाँ मुसकाने लगीं कि संसार में वर योग्य दुलहिन नहीं है ।।

विष्णु विरंचि आदि सुर ब्राता ❀ चढ़ि चढ़ि वाहन चले बराता
सुर समाज सब भाँति अनूपा ❀ नहिं बरात दूलह अनुरूपा

ब्रह्मा, विष्णु आदिक देवता अपने-अपने विमानों में बैठकर बारात में चले ।। इस प्रकार देवताओं का समाज तो सब प्रकार से अनुपम था, किन्तु बारात योग्य दूल्हा नहीं था ।।८।।

दोहा—विष्णु कहा अस बिहँसि तब, बोलि सकल दिशि राज ।
बिलग बिलग होइ चलहु सब, निज निज सहित समाज ।।१०३।।

तब विष्णुजी ने दिग्पालों को बुला हँसकर ऐसे कहा कि, सबलोग अपने-अपने समाज सहित अलग-अलग होकर चलिए ।। १०३ ।।

वर अनुहार बरात न भाई ❀ हँसी करैहहु पर पुर जाई
विष्णु बचन सुनि सुर मुसुकाने ❀ निज निज सेन सहित बिलगाने

वर के योग्य बरात नहीं है, हे भाइयों ! पराये नगर में जाकर क्या हँसी कराओगे ? विष्णुजीके यह वचन सुनकर सब देवता मुस्कराये और अपनी २ सेनाके सहित अलग २ हो गये ।।

मन ही मन महेश मुसुकाहीं ❀ हरि के व्यंग बचन नहिं जाहीं
अति प्रिय बचन सुनत हरिकेरे ❀ भृङ्गिहिं प्रेरि सकल गण टेरे

श्रीमहादेवजी मन ही मन में मुसुकाये और कहे कि, विष्णुजी के व्यंग अर्थात् हँसी के वचन नहीं जाते हैं ।।३।। तब महादेवजी विष्णुजी के अत्यन्त प्यारे वचन सुनकर अपने भृङ्गी नामक गण को भेजकर सब गणों को बुलवा लिये ।। ४ ।।

शिव अनुशासन सुनि सब आये ❀ प्रभु पद जलज शीश तिन नाये
नाना वाहन नाना वेषा ❀ विहँसे शिव समाज निज देखा

श्रीमहादेवजी की आज्ञा पाते ही सब गण उनके पास चले आये और उन्होंने प्रभु के चरणोंमें शिर नवाया ।। ५ ।। उन्हें देखकर श्रीमहादेवजी हँसने लगे क्योंकि उसमें अनेक प्रकार के वाहन और वेषवाले थे ।। ६ ।।

कोउ मुखहीन विपुलमुख काहू ❀ बिनुपद कर कोउ बहुपद बाहू
विपुल नयन कोउ नयन विहीना ❀ रिष्ट पुष्ट कोउ अति तन खीना

किसी का तो मुख ही नहीं था, किसी का बड़ा विशाल मुख था, कोई बिना पैर का और किसी के अनेक हाथ-पाँव थे ।।७।। किसी के बहुत नेत्र हैं, किसी के नेत्र ही नहीं, कोई स्वस्थ है और कोई शरीर से अति दुबला-पतला ।। ८ ।।

छंद—तनुखीन कोउ अति पीन पावन कोउ अपावन गति धरे ।
भूषन कराल कपाल कर सब सद्य सोनित तनु भरे ।।
खर स्वान सुअर शृगाल मुख गनवेष अगनित को गनै ।
बहु जिनिस प्रेत पिसाच जोगिनि भाँति बरनत नहिं बनै ।।७।।

कोई तो बहुत ही दुबला-पतला है और कोई बड़ा मोटा-ताजा है, किसी का शरीर पवित्र और किसी का अपवित्र है । सब गण विकराल मुण्डों की माला पहने हैं और उनके हाथों में ताजे लहू से भरे हुए खप्पर धरे हुए हैं । उन गणों में किसी का मुँह गधे का, किसी का कुत्ते का, किसी का सूअर और सियारका-सा है,उनके वेश अपार हैं, जिन्हें कोई गिन ही नहीं सकता और बहुत प्रेत-पिशाच व योगिनी को गिनते २ पार नहीं लग सकता ।। ७ ।।

सोरठा—नाचहिं गावहिं गीत, परम तरंगी भूत सब ।
देखत अति विपरीत, बोलहिं बचन विचित्र विधि।।१५।।

इनके भूत बड़े लहरी हैं, नाचते और गीत गाते हैं, बड़े विपरीत और विकराल दीखते और अनेक प्रकार के विचित्र वचन बोलते हैं ।। १५ ।।

जस दूलह तस बनी बराता ❁ कौतुक विविध होहिं मग जाता
इहाँ हिमाचल रचेउ बिताना ❁ अति विचित्र नहिं जाइ बखाना

जैसा दूल्हा है वैसी ही बरात भी बनी है, रास्ते में भाँति-भाँति के तमाशे होने लगे। हिमाचल ने सुन्दर मण्डप की अद्भुत रचना कराई थी, जिसका वर्णन नहीं हो सकता ।।

शैल सकल जहँ लगि जगमाहीं ❁ लघु विशाल नहिं बरनि सिराहीं
बन सागर सब नदी तलावा ❁ हिम गिरि सब कहँ नेवत पठावा

संसार में जितने छोटे-बड़े पहाड़ थे, जिसका वर्णन नहीं हो सकता। हिमाचल ने उनको तथा बन, समुद्र, नदियों और तालाब इत्यादि सबको निमन्त्रित किया था ।।४।।

कामरूप सुन्दर तनु धारी ❁ सकल समाज सहित वर नारी
आये सकल हिमांचल गेहा ❁ गावहिं मंगल सहित सनेहा

वे सब अपनी इच्छाके अनुकूल सुन्दर शरीर धारण किए, अपने समाज और उत्तम स्त्रियों के साथ हिमांचल के सुन्दर सदन को आये; वे अत्यन्त स्नेह सहित माङ्गलिक गीत गाते थे ।।

प्रथमहिं गिरि बहु गृह सँवराए ❁ जथा जोग जहँ तहँ सब छाए
पुर शोभा अवलोकि सुहाई ❁ लागै लघु विरञ्चि निपुनाई

हिमाचल ने पहले ही बहुत से घरों को सजा रक्खा था और सभी (उसी प्रकार जैसा जिसको चाहिये था) आमन्त्रित व्यक्ति उनमें जाकर ठहरे ।। ७ ।। उस समय नगर की सुहावनी शोभा देखकर ब्रह्माजी की भी चतुराई छोटी लगने लगी ।। ८ ।।

छंद—लघुलागि बिधिकी निपुनता अवलोकि पुरशोभा सही।
बन बाग कूप तड़ाग सरिता सुभगता सक को कही ।।
मंगल विपुल तोरन पताका केतु गृह गृह सोहहीं।
बनिता पुरुष सुन्दर चतुर छबि देखि मुनिमन मोहहीं ।।८।।

जब नगर की शोभा को देखकर ब्रह्माजी की चतुराई सत्य ही फीकी लगने लगी, तब बन बाग, कूप, तड़ाग और सरिता की सुन्दरता को कौन कह सकता है ? प्रत्येक घर में बहुतसे माङ्गलिक चिन्ह अर्थात् तोरण-झण्डी इत्यादि शोभायमान हैं। वहाँ के नर-नारियों की शोभा ऐसी सुन्दर है कि जिसको देखकर मुनिजनों के भी मन मोहित हो जाते हैं ।। ८ ।।

दोहा—जगदम्बा जहँ अवतरीं, सो पुर बरनि कि जाइ।
ऋधि सिधि सम्पति सकल सुख, नित नूतन अधिकाइ।१०४।

जहाँ जगत् की माता पार्वतीजीने आकर अवतार लिया है, उस पुरकी शोभा का वर्णन कैसेकिया जाय ? वहाँ ऋद्धि-सिद्धि सारी सम्पदायें नित्य नवीन रूप में आकर प्रकट हुआ करती थीं ।१०४।

नगर निकट बरात जब आई ❀ पुर खर-भर शोभा अधिकाई
करि बनाव सजि वाहन नाना ❀ चले लेन सादर अगवाना

जब नगर के निकट बारात आ गई, तब नगर में बड़ी खलबली मच गई ।। १ ।। पुर के सभी लोग अपने-अपने वाहनों को नाना प्रकार से सजाकर अगवानी लेने चले ।। २ ।।

हिय हरषे सुर सैन निहारी ❀ हरिहिं देख अति भए सुखारी
शिव समाज जब देखन लागे ❀ बिडरि चले बाहन सब भागे

तब देवताओं की सेना और उसमें श्रीहरि भगवान् को देखकर सब लोग बहुत ही प्रसन्न हुए ।। किन्तु जब श्रीमहादेवजी का समाज देखने लगे तो सबके वाहन घबड़ाकर भाग चले ।।

धरि धीरज तहँ रहे सयाने ❀ बालक सब लै जीव पराने
गए भवन पूछहिं पितु माता ❀ कहहिं बचन भय कम्पित गाता

उसमें से जो सयाने पुरुष थे वे तो धीरज धारण करके ठहरे रहे, किन्तु जो बालक थे वे तो अपने-अपने प्राण लेकर भाग चले ।।५।। जब घर पहुँचे और उनके माता-पिता पूछने लगे तो डर के मारे काँपते हुए यह वचन बोले ।।६।।

कहिय काह कहि जाइ न बाता ❀ यम कर धार किधौं बरियाता
बर बौराह बरद असवारा ❀ ब्याल कपाल विभूषन छारा

क्या कहें कुछ बात कही नहीं जाती है, यह यम की सेना है अथवा बरात है? बावला वर तो बैल के ऊपर सवार है और नर-कपाल के गहने धारण किये तथा शरीरमें भस्म लगाये हैं ।।

छंद– तनु छार ब्याल कपाल भूषन नगन जटिल भयंकारा ।
सँग भूत-प्रेत पिशाच जोगिनि विकट मुख रजनीचरा ।।
जो जियत रहहिं बरात देखत पुण्य बड़ तेहिकर सही ।
देखहिं उमा विवाह घर घर बात असि लरिकन्ह कही ।।९।।

समस्त शरीर में भस्म रमाये, सर्प और नर कपालोंका भूषण धारण किये, नग्न रूपमें जटा धारण किये और भयंकर है । उसके साथ भूत-प्रेत, पिशाच जोगिनी और विकट मुखवाले राक्षस हैं। जो इस बरात को देखकर जीता जागता रह गया तो सत्य जानो कि उसका बड़ा भारी पुण्य उदय है और वे ही उमा का विवाह देख सकेंगे । इस प्रकार की बात बालकों ने घर में कही ।।

दोहा–समुझि महेश समाज सब, जननि जनक मुसुकाहिं ।
बाल बुझाए विविध विधि, निडर होहु डर नाहिं ।।१०५।।

तब बालकों के माता-पिता श्रीमहादेवजी के समाज को समझ हँसने लगे और उन्होंने अनेक भाँति से बालकोंको समझा-बुझाकर कहा कि,निर्भय हो जाओ इसमें डरनेकी कोई बात नहीं है।१०५।

लै अगवान बरातहिं आए ❀ दिए सबहिं जनवास सुहाए
मयना शुभ आरती सँवारी ❀ संग सुमङ्गल गावहिं नारी

अगवानी करके लोग बारात को लिवा लाए और सबको सुन्दर जनवासा दिया। हिमाचलकी स्त्री मैना सुन्दर आरती सजाकर साथमें स्त्रियोंको ले सुन्दर माङ्गलिक गीत गाने लगीं ।।

कंचन थार सोह वर पानी ❁ परिछन चलीं हरहिं हरषानी
बिकट वेष रुद्रहिं जब देखा ❁ अबलन उर भय भयउ विशेषा

वे हाथ में सुवर्णका थाल सजाकर सुन्दर हाथमें ले प्रसन्न हो महादेवजी की आरती करने चलीं। किन्तु जब शिवजीको विकट वेशमें देखा तो उन स्त्रियोंको बड़ा भय उत्पन्न हुआ ।।

भागि भवन पैठीं अति त्रासा ❁ गयउ महेश जहाँ जनवासा
मयना हृदय भयउ दुख भारी ❁ लीन्ही बोलि गिरीश कुमारी

वे भागकर अधिक डर के मारे घर में जा बैठीं और श्रीमहादेवजी उस स्थान में गये जहाँ जनवासा था। मयना को हृदय में बड़ा दुःख हुआ तब उन्होंने पार्वतीजी को बुला लिया ।।

अधिक सनेह गोद बैठारी ❁ श्याम सरोज नयन भरि बारी
जेहिविधि तुम्हहिं रूपअसदीन्हा ❁ तेहि जड़ बर-बाउर कस कीन्हा

और अत्यन्त स्नेह पूर्वक गोदमें बैठाकर अपने नील कमलवत् नेत्रोंमें आँसू भरकर बोलीं ।। जिस ब्रह्मा ने तुमको ऐसा रूप दिया उसने वर को मूर्ख और बावला कैसे बना दिया? ।।८।।

छंद—कस कीन्ह वर बौराह विधि जेहि तुम्हहिं सुन्दरता दई।
जो फल चहिय सुरतरुहिं सो बरबस बबूरहिं लागई ।।
तुम्ह सहित गिरिते गिरौं पावक जरौं जलनिधि महँ परौं।
बरु जाउ अपजस होउ जग जीवत विवाह न हौं करौं ।।१५।।

भला जिस विधाता ने तुमको ऐसी सुन्दरता दी, उसने वर को बावला कैसे कर दिया? जो फल कल्पवृक्ष में लगना चाहिये था, उसे बरबस बबूल में लगा दिया। अब मैं तुम्हारे साथ पर्वत से गिर पड़ूँ या अग्नि में जल मरूँ अथवा समुद्र में जाकर कूद पड़ूँ। और घर चाहे उजड़े, चाहे अपयश हो जाय, किन्तु मैं संसार में जीते जी ऐसा विवाह न करूँगी ।।१५।।

दोहा—भईं विकल अबला सकल, दुखित देखि गिरिनारि।
करि विलाप रोदति वदति, सुतासनेह सँभारि ।।१०६।।

इस प्रकार पार्वतीजी की माता को दुःखी देखकर जितनी स्त्रियाँ थीं सब दुःखी हुईं। फिर कन्या के स्नेह को समझकर रोती-बिलपती हुई मैना कहने लगीं ।।१०६।।

नारद कर मैं काह बिगारा ❁ भवन मोर जिन्ह बसत उजारा
अस उपदेश उमहिं जिन्ह दीन्हा ❁ बौरे बरहिं लागि तप कीन्हा

मैंने नारद का क्या बिगाड़ा था कि, जिसने मेरे बसे हुए घर को उजाड़ दिया और जिन्होंने पार्वती को ऐसा उपदेश दिया कि, इसने बावले वर के लिए तपस्या की ।।२।।

साँचेहु उनके मोह न माया ❁ उदासीन धन धाम न जाया

पर घर घालक लाज न भीरा ❀ बाँझ कि जान प्रसव की पीरा

सत्यही उनको मोह, ममता नहीं है, न डर है, न भार्या है, सर्वदा उदासीन हैं, उन पराये घर-घालक को न लाज है, न डर है, कहा है—वन्ध्या स्त्री प्रसव की पीड़ा को क्या जानेगी ?

जननिहिं बिकल बिलोकि भवानी ❀ बोली युत-विवेक मृदु बानी
अस बिचार जनि सोचहु माता ❀ सो न टरै जो रचै विधाता

तब माता को व्याकुल देख पार्वतीजी ज्ञानयुक्त मीठी वाणी में बोलीं—हे माताजी ! आप ऐसा विचार मत करो । ब्रह्माजीने जो कुछ रचना कर दी है, वह किसी के टाले नहीं टलती ।।

करम लिखा जौं बाउर नाहू ❀ तौ कत दोष लगाइय काहू
तुम्हसन मिटहिं कि बिधिके अंका ❀ मातु व्यर्थ जनि लेहु कलंका

यदि मेरे कर्म में बावला ही पति लिखा हो तो फिर किसी को दोष क्यों लगाया जाय ? क्या तुम विधाता के अंक मिटा सकती हो ? इससे अपने पर व्यर्थ का कलंक मत लो ।।

छंद—जनि लेहु मातु कलंक करुना परिहरहु अवसर नहीं ।
दुखसुख जो लिखा लिलार हमरे जाब जहँ पाउब तहीं ।।
सुनि उमा बचन विनीत कोमल सकल अबला सोचहीं ।
बहु भाँति बिधिहिं लगाइ दूषन नयनबारि विमोचहीं ।।११।।

हे माता ! अब कलंक मत लो और मोह छोड़ दो, क्योंकि यह अवसर शोक करने और विलाप करने का नहीं है। जो दुःख-सुख हमारे ललाट में लिखा है वह जहाँ भी हम जावेंगी वहीं पावेंगी । श्रीपार्वतीजी के ऐसे कोमल और विनीत वचन को सुनकर सब स्त्रियाँ सोचने लगीं और बारम्बार अनेक भाँति से ब्रह्मा को दोष लगाकर नेत्रों से आँसू बहाने लगीं ।।११।।

दोहा—तेहि अवसर नारद ऋषय, अरु ऋषि सप्त समेत ।
समाचार सुनि तुहिनगिरि, गवने तुरत निकेत ।।१०७।।

उसी समय यह समाचार सुनकर देवर्षि नारदजी सप्तर्षियों के साथ हिमाचल के घर जा पहुँचे ।।

तब नारद सबहीं समुझावा ❀ पूरब कथा प्रसंग सुनावा
मयना सत्य सुनहु मम बानी ❀ जगदम्बा तव सुता भवानी

तब नारदजी ने सबको समझाकर पार्वतीजी के पूर्व जन्म की कथा का प्रसंग सुना दिया । और कहा—हे मैना ! तुम हमारी सच्ची वाणी सुनो, तुम्हारी यह कन्या जगत्‌की माता और भवानी है ।

अजा अनादिशक्तिअविनासिनि ❀ सदा शम्भु अरधङ्ग निवासिनि
जग सम्भव पालन लयकारिनि ❀ निज इच्छा लीला बपुधारिनि

यह अजन्मा, अनादिशक्ति, नाश रहित और सर्वदा श्रीमहादेवजीके अर्द्धाङ्ग में निवास करने-वाली हैं ।।३।। यह संसार को उत्पन्न करनेवाली, पालन करनेवाली और संहार करनेवाली हैं और जभी इच्छा करती हैं तभी नर-लीला करने को शरीर धारण करती हैं ।।४।।

जनमी प्रथम दक्ष गृह जाई ❀ नाम सती सुन्दर तनु पाई
तहहुँ सती शंकरहिं विवाहीं ❀ कथा प्रसिद्ध सकल जग माहीं

यह पहले राजा दक्षके घर में सती नाम से सुन्दर शरीर धारणकर उत्पन्न हो चुकी हैं और वहाँ भी सती नाम से श्रीमहादेवजी को ही ब्याही गई थीं, यह कथा सारे संसार में प्रसिद्ध है।

एक बार आवत शिव संगा ❀ देखेउ रघुकुल कमल पतंगा
भएउ मोह शिव कहा न कीन्हा ❀ भ्रमवश वेष सीय कर लीन्हा

एकबार श्रीमहादेवजी के साथ आते हुए इन्होंने रघुकुल कमल दिवाकर भगवान् श्रीरामचन्द्रजी को देखा था ।।७।। तब इनके मनमें ऐसा मोह उत्पन्न हो गया कि इन्होंने महादेवजी का कहना नहीं माना और भ्रम के कारण सीताजी का वेष धारण कर लीं ।।८।।

छंद—सियवेष सती जो कीन्ह तेहि अपराध शंकर परिहरी।
हर विरह जाइ बहोरि पितुके यज्ञ जोगानल जरी ॥
अब जनमि तुम्हरे भवन निज पतिलागि दारुन तप किया।
अस जानि संशय तजहु गिरिजा सर्वदा शंकर प्रिया ॥१२॥

तब सतीजी ने जो सीताजी का रूप धारण किया, उस अपराध से श्रीमहादेवजीने उन्हें त्याग किया। तब पति के वियोग से अपने पिता दक्ष के यज्ञ में जाकर योगाग्नि में जलकर भस्म हो गयीं। अब उन्होंने तुम्हारे घर जन्म लेकर अपने पतिके लिए कठिन तपस्या की है, ऐसा जानकर तुम समस्त सन्देहोंको त्याग दो क्योंकि पार्वतीजी सर्वदासे ही महादेवजी को प्यारी हैं ।।१२।।

दोहा—सुनि नारदके बचन तब, सबकर मिटा विषाद।
छनमहँ व्यापेउ सकल पुर, घर घर यह संवाद ॥१०८॥

तब नारदजी का वचन सुनकर सबका शोक मिट गया और क्षण भर में ही यह संवाद समस्त नगर-वासियों के घर-घर में फैल गया ।।१०८।।

तब मयना हिमवन्त अनन्दे ❀ पुनि पुनि पार्वती पद बन्दे
नारि पुरुष शिशु जुवा सयाने ❀ नगर लोग सब अति हरषाने

उस समय मैना और हिमाचलको ऐसा आनन्द हुआ कि वह बार-बार श्रीपार्वतीजी के चरणोंकी वन्दना करने लगे। स्त्री-पुरुष, बालक, युवा और वृद्ध नगर के सभी लोग बहुत आनन्दित हो गये ।।

लगे होन पुर मंगल गाना ❀ सजे सबन्हि हाटक घट नाना
भाँति अनेक भई जेवनारा ❀ सूपशास्त्र जस कछु व्यवहारा

फिर तो नगर में मांगलिक गीत होने लगे, सबलोग अपने यहाँ स्वर्ण के कलश सजा दिए। पाक-शास्त्र के अनुसार अनेक प्रकार के ब्यंजन तैयार हुए कि, जैसा कुछ ब्यवहार था।

सो जेवनार कि जाइ बखानी ❀ बसहिं भवन जेहि मातु भवानी
सादर बोले सकल बराती ❀ विष्णु विरंचि दव सब जाती

उस जेवनार का वर्णन कैसे हो सकता है कि, जिस घर में जगत् की माता भवानी श्रीपार्वतीजी निवास करती हैं उसका कहना ही क्या है ? पश्चात् हिमाचल ने समस्त बरातियों को जो ब्रह्मा, विष्णु, देवता आदि सब जाति के थे ॥ ६ ॥

विविध भाँति बैठी जेवनारा ❀ लागे परसन निपुन सुआरा
नारि बृन्द सुर जेवत जानी ❀ लगीं देन गारी मृदुबानी

उन सबकी अनेक पंगतों में जेवनार बैठायी गई, चतुर रसोइये पाक-पदार्थ परोसने लगे। स्त्रियाँ झुण्ड बना कर देवताओं को भोजन करते देख मीठी वाणी में गालियाँ देने लगीं ॥

छंद—गारी मधुर स्वर देहिं सुन्दरि व्यंग बचन सुनावहीं ।
भोजन करहिं सुर अति बिलम्ब विनोद सुनि सचुपावहीं ॥
जेंवत जो बढ़यो अनंद सो मुख कोटिहूँ न परै कह्यो ।
अँचवाइ दीन्हें पान गवने बास जहँ जाको रह्यो ॥ १३ ॥

इस प्रकार स्त्रियाँ मधुर-स्वर से गारी देने और हँसी के वचन सुनाने लगीं। देवतागण बहुत देर लगा करके भोजन करने लगे, जिनके विनोदसे सभीको सुख प्राप्त होने लगा॥ भोजन में जो आनन्द बढ़ा, वह करोड़ों मुख से भी कहा नहीं जा सकता। फिर सबको अँचवा कर पान दिया गया और जिनका जहाँ वास स्थान था वह वहाँ को चले गये ॥१३॥

दोहा—बहुरि मुनिन्ह हिमवन्त कहँ, लगन सुनाई आय ।
समय बिलोकि विवाह कर, पठये देव बुलाय ॥१०९॥

फिर मुनियों ने आकर हिमवन्त को लग्न का मुहूर्त सुनाया। तब बिवाह का समय देखकर समस्त देवताओं को बुलावा भेजा गया ॥ १०९ ॥

बोलि सकल सुर सादर लीन्हे ❀ सबहिं यथोचित आसन दीन्हे
वेदी वेद विधान सँवारी ❀ सुभग सुमंगल गावहिं नारी

इस प्रकार सब देवताओं को आदरपूर्वक बुलाकर सबको यथा योग्य आसन दिया गया ॥१॥ और वेद विधानानुसार वेदी को सजाया गया, सुन्दर स्त्रियाँ सुमंगल गीत गाने लगीं ॥२॥

सिंहासन अति दिव्य सुहावा ❀ जाइ न बरनि विरञ्चि बनावा
बैठे शिव विप्रन्ह शिरनाई ❀ हृदय सुमिरि निज प्रभु प्रभुताई

तब एक अत्यन्त मनोहर सिंहासन जिसका वर्णन नहीं हो सकता और जिसको स्वयं ब्रह्माजी ने बनाया था ॥ ३ ॥ उसपर भगवान् श्रीमहादेवजी ब्राह्मणो को सिर नवाकर और हृदय में अपने प्रभु स्वामी श्रीरामचन्द्रजी की प्रभुता का स्मरण कर बैठ गये ॥ ४ ॥

बहुरि मुनीसन्ह उमा बुलाईं ❀ करि शृंगार सखी लै आईं
देखत रूप सकल सुर मोहे ❀ बरनै छबि कवि अस जगको है

फिर मुनियों ने श्रीपार्वतीजी को बुलाया तो उनका श्रृंगार करके सखियाँ लिवा लायीं।

उनके रूप को देखकर सारे देवता मोहित हो गये, जगत् में ऐसा कौन कवि है जो उनकी शोभा का वर्णन कर सके ? ।। ६ ।।

जगदम्बिका जानि भव वामा ❁ सुरन मनहिं मन कीन्ह प्रणामा
सुन्दरता मरजाद भवानी ❁ जाइ न कोटिहुँ बदन बखानी

उन जगदम्बिका को श्री महादेवजी की स्त्री और संसार की माता जानकर देवताओं ने मन ही मन में प्रणाम किया ।।७।। क्योंकि वे भवानी पार्वतीजी सुन्दरता की मर्यादा हैं, जिनकी शोभा करोड़ों मुख से भो वर्णन नहीं की जा सकती ।। ८ ।।

छंद—कोटिहुँ वदन नहिं बनइ बरनत जग जननि शोभा महाँ ।
सकुचहिं कहत श्रुति शेष शारद मन्दमति तुलसी कहाँ ।।
छबिखानि मातु भवानि गवनी मध्य मण्डप शिव जहाँ ।
अवलोकि सकहिं न सकुचि पतिपद कमल मन मधुकर तहाँ१४।

जब करोड़ों मुख होने पर भी जगत् जननी की महती शोभा का वर्णन नहीं हो सकता तब श्रीतुलसीदासजी कहते हैं, कि मैं मन्द बुद्धिवाला कैसे वर्णन कर सकता हूँ । उनकी शोभा वर्णन तो वेद, शेषनाग और सरस्वती भी करते सकुचतीं हैं । जब शोभा की खानि माता भवानी उस मंडप के बीच में पहुँची जहाँ श्रीमहादेवजी विराजमान थे, तब संकोच के वश वे अपने पतिके चरणारविन्द को नहीं देख सकती हैं, किन्तु उनका मनरूपी भ्रमर वहीं लगा हुआ था ।।१४।।

दोहा—मुनि अनुशासन गनपतिहिं, पूजे शंभु भवानि ।
कोउ सुनि संशय करै जनि, सुर अनादि जियजानि ।।११०।।

पश्चात् मुनियों के आज्ञा देने पर शिव-भवानी ने श्रीगणेशजी का पूजन किया । इसे सुनकर कोई संशय न करे, क्योंकि गणेशजी अनादिकाल के देवता हैं ।। ११० ।।

जस विवाह कै विधि श्रुतिगाई ❁ महा मुनिन्ह सो सब करवाई
गहि गिरीश कुश कन्या पानी ❁ भवहिं समरपी जानि भवानी

जैसा वेदोचित विवाह का विधान है, वह सब महामुनियों ने करवाया । पुनः हिमाचलने अपने हाथ में कुश और कन्या का हाथ लेकर भवानी जान श्रीमहादेवजी को समर्पण किया ।।

पाणि-ग्रहण जब कीन्ह महेशा ❁ हिय हरषे तब सकल सुरेशा
वेद मन्त्र मुनिवर उच्चरहीं ❁ जय जय जय शंकर सुर करहीं

इस प्रकार जब श्रीमहादेवजीने पाणि-ग्रहण किया तब समस्त देवता हृदयमें आनन्दित हो गये । श्रेष्ठमुनि वेदमंत्रका उच्चारण करने लगे और देवता लोग शिवजी की जय-जय-जय करने लगे ।।

बाजहिं बाजन विविध विधाना ❁सुमन-वृष्टि नभ भइ विधिनाना
हर गिरिजा कर भयउ विवाहू ❁ सकल भुवन भरि रहा उछाहू

अनेक प्रकार के बाजे बजने लगे आकाश से अनेक प्रकार के फूलों की वर्षा हुई ।।५।। शिव-गिरिजा का विवाह हो गया और वह उत्साह समस्त पृथ्वी में भर गया ।।

दासी दास तुरग रथ नागा ❀ धेनु बसन मनि बस्तु बिभागा
अन्न कनक भाजन भरि याना ❀ दाइज दीन्ह न जाइ बखाना

दासी, दास, घोड़े, रथ, हाथी, गायें, वस्त्र, मणि और अनेक भाँति की वस्तुयें। अन्न, स्वर्ण के पात्र छकड़ों में भरकर अनेक प्रकार से ऐसा दहेज दिया गया कि जो वर्णन नहीं हो सकता ।।

छन्द—दाइज दियो बहु भाँति पुनि कर जोरि हिमभूधर कह्यो ।
का देउँ पूरनकाम शंकर चरन-पंकज गहि रह्यो ।।
शिव कृपासागर ससुर कर संतोष सब भाँतिहिं कियो ।
पुनि गहे पद पाथोज मयना प्रेम परिपूरन हियो ।।१५।

इस प्रकार अनेक भाँति से दहेज दे हिमाचल ने हाथ जोड़कर कहा, हे महादेवजी! आप पूर्ण काम हैं आपको क्या दूँ? ऐसा कहकर चरण कमल पकड़ लिये। तब कृपा के सागर श्रीमहादेवजी ने अपने ससुर को सब प्रकार से संतुष्ट किया। फिर अपने पूर्ण आन्तरिक प्रेम से मैना ने शिवजी के चरण कमल पकड़कर कहा ।। १५ ।।

दोहा—नाथ उमा मम प्रानप्रिय, गृह किंकरी करेहु ।
छमेहु सकल अपराध अब, होइ प्रसन्न बर देहु ।।१११।।

हे नाथ! यह पार्वती मेरे प्राणों के समान प्रिय है, सो इसे अपनी दासी बनायें और आपकी महिमा न जानकर जो कुछ मैंने अनजान में कहा हो, अब मेरे उन सब अपराधों को क्षमा कीजिए। उसके लिए कृपा करके प्रसन्नता पूर्वक मुझे वरदान दीजिये ।।१११।।

बहु बिधि शम्भु सासु समुझाई ❀ गवनी भवन चरन सिर नाई
जननी उमा बोलि तब लीन्हीं ❀ लै उछंग सुन्दर सिख दीन्हीं

तब महादेवजी ने अनेक भाँति से अपनी सास को समझाया और वह उनके चरणों में सिर नवाकर घर में चली गयीं। तब माता ने पार्वती को बुलाकर गोदी में लेकर यह शिक्षा दी कि—

करेहु सदा शंकर पद पूजा ❀ नारि धरम पतिदेव न दूजा
बचन कहहिं भरि लोचन बारी ❀ बहुरि लाय उर लीन्हि कुमारी

हे बेटी! सर्वदा ही श्रीमहादेव के चरण कमलों की पूजा करना क्योंकि, स्त्रियों के लिए पति से बढ़कर दूसरा देवता नहीं है ।।३।। ऐसा कहते हुए नेत्रों में जल भर लाईं और फिर कुमारी को छाती से लगा लीं ।।७।। और कहने लगीं—

कत विधि सृजी नारि जग माहीं ❀ पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं
भइ अति प्रेम विकल महतारी ❀ धीरज कीन्ह कुसमय विचारी

ब्रह्मा ने संसार में स्त्री जाति का सृजन ही क्यों किया, जो सर्वदा ही पराधीन रहती है और जिन्हें स्वप्न में भी सुख नहीं मिलता ।।५।। माता मैना व्याकुल हो गयीं, किन्तु कुसमय विचार कर उन्होंने धैर्य धारण किया ।। ६ ।।

पुनिपुनि मिलतिपरति गहिचरना॥ परम प्रेम कछु जाइ न बरना
सब नारिन्ह मिलि भेंटि भवानी ॥ जाइ जननि उर पुनि लपटानी

पार्वतीजी बारम्बार मिलती हैं, पैरों पर पड़ती हैं, अत्यन्त प्रीति है जिसका वर्णन नहीं हो सकता। अनन्तर सब स्त्रियों से मिलकर भवानी अपनी माता की छाती से फिर जा लिपटीं॥

छन्द–जननिहिं बहुरि मिलि चलीं उचित अशीस सब काहू दई।
फिरि-फिरि बिलोकति मातु तन तब सखी लै शिवपहिं गई॥
जाचक सकल सन्तोषि शंकर उमासहित भवनहिं चले।
सब अमर हरषे सुमन बरषि निशान नभ बाजहिं भले॥१६॥

इस प्रकार माता से मिलकर सतीजी चलीं सबने उचित आशीर्वाद दिया, परन्तु वह फिर-फिर माता की ओर देखती जा रही थीं। सब सखियाँ उनको लेकर श्री महादेवजी के पास गईं। पश्चात् सम्पूर्ण याचकों को सन्तुष्ट करके श्रीमहादेवजी उमा के साथ अपने स्थान (कैलाश) को चल पड़े, उस काल में समस्त देवता हर्षित हो आकाश से पुष्प वर्षा करने लगे॥१६॥

दोहा–चले संग हिमवन्त तब, पहुँचावन अति हेतु।
विविध भाँति परितोष करि, बिदा कीन्ह वृषकेतु॥११२॥

तब पहुँचाने के लिए हिमाचल अत्यन्त प्रेम पूर्वक महादेवजी के साथ चले। कुछ दूर जाने पर वृषकेतु (महादेवजी) ने उनको संतुष्ट करके विदा कर दिया॥११२॥

तुरत भवन आये गिरिराई ॥ सकल शैल सर लिये बुलाई।
आदर दान विनय बहु माना ॥ सबकर बिदा कीन्ह हिमवाना

हिमाचल तुरन्त घर लौट आये, फिर उन्होंने समस्त पहाड़ों, नदियों को बुला लिया॥१॥ और उनको आदर, दान, विनय और बहुत-सा सामान देकरके बिदा कर दिया॥२॥

जबहिं शम्भु कैलासहिं आये ॥ सुर सब निज निज लोक सिधाये
जगत मातु पितु शम्भु भवानी ॥ तेहि सिंगार न कहेउँ बखानी

इधर जब भगवान् शंकरजी कैलास में आये, तब समस्त देवतागण अपने-अपने लोकों को चले गये। शिवजी संसार के माता-पिता हैं, इससे उनका श्रृङ्गार नहीं कहा॥४॥

करहिं विविध विधि भोगविलासा॥ गनन्ह समेत बसहिं कैलासा
हर-गिरजा विहार नित नयऊ ॥यहिविधि विपुलकालचलिगयऊ

वे अनेक भाँति से भोग-विलास करने और अपने गणों के साथ कैलास में वास करने लगे। श्रीमहादेवजी और गिरिजाका नित्य नवीन विहार होने लगा और बहुत समय ब्यतीत हो गया।

तब जनमे षटवदन कुमारा ॥ तारक असुर समर जेहि मारा
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना ॥ षटमुख जनम सकल जग जाना

तब कुमार-स्वामि-कार्तिकेयजी उत्पन्न हुए, जिन्होंने युद्ध में तारक नामक असुर का विनाश किया था। यह कथा वेदों और पुराणों में विख्यात है, उनके जन्म को सारा जगत् जानता है।।

छंद—जगजान षटमुख जनम करम प्रताप पुरुषारथ महा।
तेहि हेतु मैं वृषकेतु सुतकर चरित संक्षेपहिं कहा।।
यह उमा शम्भु विवाह जे नर नारि सुनहिं जे गावहीं।
कल्याण काज विवाह मंगल सर्वदा सुख पावहीं।। १७।।।

स्वामी कार्तिकेयजी के जन्म, कर्म, प्रताप और महान् पुरुषार्थ को सारा जगत् जानता है। इसी कारण मैंने वृषकेतु श्रीमहादेवजी के पुत्र का चरित्र संक्षेप से ही वर्णन किया है। शिव और उमा के विवाह की इस कथा को जो स्त्री-पुरुष सुनेंगे और गान करेंगे वे अपने कल्याणकारक कार्य और विवाह आदि के मंगल में सर्वदा ही सुख लाभ करेंगे ।।१७।।

दोहा—चरित सिन्धु गिरिजारमन, वेद न पावहिं पार।
बरनै तुलसीदास किमि, अति मतिमन्द गँवार।।११३।।

श्रीमहादेवजी का चरित्र समुद्र है, वेदों को भी नहीं पार मिला है, तब मैं अत्यन्त मन्दबुद्धि वाला गँवार तुलसीदास किस प्रकार से वर्णन कर सकता हूँ? ।।११३।।

शम्भु चरित सुनि सरस सुहावा ❀ भरद्वाज मुनि अति सुख पावा
बहु लालसा कथा पर बाढ़ी ❀ नयन नीर रोमावलि ठाढ़ी

शंकरजीका स्वभावसे ही सुन्दर चरित्र सुनकर भरद्वाज मुनि ने बहुत सुख पाया और कथा सुननेके लिये बहुत लालसा बढ़ी, आँखों में आनन्दके आँसू भर आये और रोयें खड़े हो गये ।।

प्रेम विवश मुख आव न बानी ❀ दशा देखि हरषे मुनि ज्ञानी।
अहो धन्य तव जन्म मुनीशा ❀ तुमहिं प्रान सम प्रिय गौरीशा

प्रेममग्न होने के कारण मुख से बात नहीं आती, यह दशा देखकर ज्ञानी याज्ञवल्क्य-मुनि प्रसन्न हो बोले ।। हे मुनिराज! तुम्हारा जन्म धन्य है, तुम्हें शिवजी प्राणों से प्यारे हैं।।

शिवपद कमल जिन्हहिं रति नाहीं ❀ रामहिं ते सपनेहुँ न सुहाहीं
बिनु छल विश्वनाथ पद नेहू ❀ राम भगत कर लच्छन एहू

शंकरजी के चरण कमलों में जिनका प्रेम नहीं है, वे श्रीरामचन्द्रजी को स्वप्न में भी अच्छे नहीं लगते ।।५।। श्रीमहादेवजी के चरणों में निष्कपट स्नेह हो यही राम-भक्तका लक्षण है ।।६।।

शिव सम को रघुपति ब्रतधारी ❀ बिनु अघ तजी सती अस नारी
प्रन करि रघुपति भगति दृढ़ाई ❀ को शिव सम रामहिं प्रिय भाई

शिवजी के समान रघुनाथजी की भक्ति करनेवाला और कौन है जिन्होंने बिना पाप के ही सती ऐसी पतिव्रता को छोड़ दिया ।। ७ ।। शिवजी ने प्रण करके राम-भक्ति को दृढ़ कर दिया, तो हे भाइयों! रामचन्द्रजी को शिवजी के समान कौन प्यारा हो सकता है? ।।८।।

दोहा–प्रथमहिं मैं कहि शिवचरित, बूझा मरम तुम्हार।
सुचि सेवक तुम राम के, रहित समस्त विकार ॥११४॥

हे भरद्वाज ! पहले मैंने श्रीशिवजी के चरित्र का वर्णन किया है जिससे आपका मर्म जान लिया कि आप समस्त विकारों से रहित भगवान् श्रीरामचन्द्रजी के पवित्र सेवक हैं ॥११४॥

मैं जाना तुम्हार गुन शीला ❀ कहौं सुनहु अब रघुपति लीला
सुनु मुनि आजु समागम तोरे ❀ कहि न जाइ जस सुख मनमोरे

इस प्रकार मैंने आपके गुण शील को जान लिया, अब रामजी की लीला का वर्णन करता हूँ। हे मुनिवर ! सुनो, आज मेरे मन को जैसा सुख मिला है, वह वर्णन नहीं किया जाता है ॥

रामचरित अति अमित मुनीशा ❀ कहि न सकहिं शतकोटि अहीशा
तदपि यथा श्रुति कहौं बखानी ❀ सुमरि गिरापति प्रभु धनुपानी

हे मुनीश्वर ! रामजी के चरित्र का अन्त नहीं है, उसका सौ करोड़ शेष भी वर्णन नहीं कर सकते। तो भी मैंने जैसा सुना है, वैसा श्रीरामचन्द्रजी का स्मरण कर कहता हूँ ॥४॥

शारद दारु नारि सम स्वामी ❀ राम सूत्रधर अन्तरयामी
जेहि पर कृपा करहिं जनजानी ❀ कवि उर अजिर नचावहिं बानी

शारदा पराधीन काठ की पुतली के समान हैं और अन्तर्यामी रामजी उसके सूत्रधार हैं॥ अपना भक्त जानकर जिसपर कृपा करते हैं उस कवि के हृदय में सरस्वती नाचती रहती हैं॥

प्रनवौं सोइ कृपालु रघुनाथा ❀ बरनौं बिसद जासु गुन गाथा
परम रम्य गिरिवर कैलासू ❀ सदा जहाँ शिव उमा निवासू

मैं उन्हीं कृपालु श्रीराम-रघुनाथजी को प्रणाम कर उनके विशद चरित्र का वर्णन करता हूँ। एक कैलास नाम का बहुत सुन्दर पर्वत है जहाँ श्रीशिवजी और पार्वतीजी निवास करते हैं ॥

दोहा–सिद्ध तपोधन जोगिजन, सुर किन्नर मुनिवृन्द।
बसहिं तहाँ सुकृती सकल, सेवहिं सब सुखकन्द ॥११५॥

और जहाँ सिद्ध, तपोधन, योगीजन, देवता, किन्नर, मुनिवृन्द और पुण्यात्माजन वास करते हुए सुखदायक भगवान् श्रीमहादेवजी की सेवा किया करते हैं ॥ ११५ ॥

हरिहर विमुख धरम रति नाहीं ❀ ते नर तहँ सपनेहुँ नहिं जाहीं
तेहिगिरि पर बटबिटप बिशाला ❀ नित नूतन सुन्दर सब काला

परन्तु जो हरि (विष्णुजी) और हर (शिवजी) से विमुख हैं और जिनकी धर्म में रुचि नहीं है, वे मनुष्य वहाँ स्वप्न में भी नहीं जा सकते ॥ १ ॥ उसी पर्वत पर एक वट का विशाल वृक्ष है, जो नित्य नवीन और सब काल में सुन्दर बना रहता है ॥ २ ॥

त्रिविध समीर सुशीतल छाया ❀ शिवविश्राम विटप श्रुति गाया
एक बार तेहि तर प्रभु गयऊ ❀ तरु विलोकि उर अति सुख भयऊ

वहाँ हर समय शीतल, मन्द, सुगन्ध वायु बहा करता था, वेदों ने उस वृक्ष को श्रीमहादेवजी का वृक्ष कहा है। एक समय प्रभु उसके नीचे गये तो उसे देखकर अत्यन्त सुख उत्पन्न हुआ ॥

निजकर डाँसि नाग रिपु छाला ❁ बैठे सहजहिं शम्भु कृपाला
कुन्द इन्दु सम गौर शरीरा ❁ भुज प्रलम्ब परिधन मुनिचीरा

तब स्वयं अपने हाथ से व्याघ्र चर्म बिछाकर कृपालु श्रीमहादेवजी सहज ही बैठ गये। जिनका कुन्द के पुष्प और पूर्ण चन्द्र के समान गौर शरीर है, जिनकी लम्बी भुजायें हैं और जो मुनियोंके-से वल्कल आदि वस्त्र पहनते हैं ॥६॥

तरुन अरुन अम्बुज सम चरना ❁ नखद्युति भगत हृदय तम हरना
भुजग भूति भूषण त्रिपुरारी ❁ आनन शरद चन्द छवि हारी

उनके नवीन लाल कमल के समान सुन्दर चरण और नखों में अपूर्व ज्योति है जो भक्तजनों के हृदय के अन्धकार को दूर कर देती है ॥७॥ सर्प और विभूति यही त्रिपुरारि श्रीशिवजी के गहने हैं, जिनका मुख शरद-ऋतु के चन्द्रमा की छबि क्षीण करनेवाला है ॥८॥

दोहा—जटा मुकुट सुरसरित शिर, लोचन नलिन विशाल।
नीलकंठ लावन्यनिधि, सोह बालबिधु भाल ॥११६॥

मस्तक पर जटा का मुकुट और श्रीगंगाजी विराजमान हैं, जिनके कमल से बड़े बड़े नेत्र हैं और हलाहल विष के कारण नीला कण्ठ और ललाट पर बालचन्द्र शोभायमान है ॥११६॥

बैठे सोह कामरिपु कैसे ❁ धरे शरीर शान्त रस जैसे
पारवती भल अवसर जानी ❁ गई शम्भु पहँ मातु भवानी

वहाँ कामदेव के शत्रु श्रीमहादेवजी बैठे हुए कैसे शोभायमान हो रहे थे मानों स्वयं शान्त रस ही शरीर धारण कर बैठा हो ॥१॥ तब अच्छा अवसर जानकर माता श्रीपार्वती-जी शंकरजी के पास गईं ॥२॥

जानि प्रिया आदर अति कीन्हा ❁ बाम भाग आसन हर दीन्हा
बैठीं शिव समीप हरषाई ❁ पूरब जनम कथा चित आई

तब उनको अपनी प्रिया जानकर श्रीमहादेवजी ने आदर पूर्वक अपनी बायी ओर आसन दिया॥ ३ ॥ तब वह प्रसन्नता पूर्वक शिवजी के पास जा बैठीं तो पूर्व जन्म की कथा चित्त में स्मरण हो आई ॥४॥

पति हिय हेतु अधिक अनुमानी ❁ बिहँसि उमा बोलीं मृदुबानी
कथा जो सकल लोक हितकारी ❁ सोइ पूछन चह शैल कुमारी

तब स्वामीकी अपने पर पहिले से भी अधिक प्रीति है, ऐसा जानकर पार्वतीजी हँसकर प्रिय वाणी में बोलीं। जो कथा समस्त लोकका कल्याण करनेवाली है, उसेही पार्वती पूछना चाहीं ॥

विश्वनाथ मम नाथ पुरारी ❁ त्रिभुवनमहिमा विदित तुम्हारी
चरु अरु अचर नाग नर देवा ❁ सकल करहिं पद पंकज सेवा

हे विश्वनाथ ! हे मेरे नाथ ! हे त्रिपुरारि ! आपकी महिमा तीनों लोक में विख्यात है ।।७।। आपके चरण कमलों की सेवा चर, अचर, नाग, मनुष्य और देवता सभी करते हैं ।।८।।

दोहा—प्रभु समरथ सर्वज्ञ शिव, सकल कला गुनधाम ।
योग ज्ञान वैराग्य निधि, प्रनत कल्पतरु नाम ।।११७।।

हे प्रभो ! हे शंकर ! आप समर्थ, सर्वज्ञ, समस्त कला और गुणोंके धाम तथा योग-ज्ञान और वैराग्य के समुद्र हैं और शरणागत मनुष्य का मनोरथ पूरा करनेके लिए कल्पवृक्ष स्वरूप हैं ११७

जौं मोपर प्रसन्न सुखरासी ❀ जानिय मोहिं सत्य निज दासी
तौ प्रभु हरहु मोर अज्ञाना ❀ कहि रघुनाथ कथा विधि नाना

हे सुख की राशि! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मुझे अपनी सच्ची दासी जानकर ।।१।। हे प्रभो! श्रीरामचन्द्रजी की अनेक लीलाओं का वर्णन कर मेरे अज्ञान को नष्ट कीजिये ।।२।।

जासु भवन सुरतरु तर होई ❀ सह कि दरिद्र जनित दुख सोई
शशि भूषन अस हृदय बिचारी ❀ हरहु नाथ मम मतिभ्रम भारी

भला जिसके घरमें कल्पवृक्ष हो क्या वहभी दरिद्रतासे उत्पन्न दुख को सहे ? ।।३।। हे शशि-भूषण ! हे नाथ ! ऐसा हृदय में विचारकर मेरी बुद्धि के बड़े भ्रम को दूर कीजिये ।।४।।

प्रभु जे मुनि परमारथ वादी ❀ कहहिं रामकहँ ब्रह्म अनादी
शेष शारदा वेद पुराना ❀ सकल करहिं रघुपति गुन गाना

हे प्रभो ! जो परमार्थवादी मुनि हैं, वे श्रीरामचन्द्रजी को अनादि ब्रह्म कहते हैं ।।५।। शेष, शारदा, वेद और पुराण भी रघुनाथजी का गुणानुवाद करते हैं ।।६।।

तुम पुनि राम राम दिन राती ❀ सादर जपहु अनंग आराती
राम सो अवध नृपति सुत सोई ❀ की अज अगुन अलख गति कोई

हे कामदेव को भस्म करनेवाले ! आप भी दिन-रात राम-नामको ही आदर सहित जपते रहते हैं।। सो क्या राम दशरथजीके पुत्र हैं या कोई अजन्मा गुणरहित तथा अलख गतिवाले हैं ।।

दोहा—जो नृपतनय तो ब्रह्म किमि, नारि विरह मति भोरि ।
देखि चरित महिमा सुनत, भ्रमित बुद्धि अतिमोरि।।११८।।

यदि राजपुत्र हैं तो ब्रह्म कैसे हो सकते हैं ? स्त्री के वियोग में तो उनकी बुद्धि बावरी हो गई थी, उनके चरित्र को देख और महिमा को सुनकर मेरी बुद्धि अत्यन्त भ्रमित हो रही है ।।११८।।

जो अनीह व्यापक विभु कोऊ ❀ कहहु बुझाइ नाथ मोहिं सोऊ
अज्ञ जानि रिस उर जनि धरहू ❀ जेहि विधि मोह मिटै सोइ करहू

यदि वे कोई अनीह सर्वव्यापक, समर्थ और दूसरे विष्णु हों तो हे नाथ ! समझाकर कहिए। और मुझे मूर्ख समझकर हृदय में क्रोध न कीजिये, जिस प्रकार मेरा मोह मिटे वह यत्न कीजिये ।।

मैं बन दीख राम प्रभुताई ❀ अति भय विकल न तुमहिं सुनाई

तदपि मलिन मन बोध न आवा ❀ सो फल भली भाँति हम पावा

मैंने बन में श्रीरामचन्द्रजी की प्रभुता देखी—किन्तु अत्यन्त भय से विकल होकर आपको नहीं सुनाई। तब भी मेरा मन ऐसा मलिन था और अन्त में उसका फल भी मुझे मिल गया।

अजहूँ कछु संशय मन मोरे ❀ करहु कृपा बिनवौं कर जोरे
प्रभु तब मोहिं बहु भाँति प्रबोधा ❀ नाथसो समुझि करहुजनि क्रोधा

अब भी मेरे मन में कुछ संशय है सो अब मुझपर कृपा कीजिए, मैं हाथ जोड़कर विनय करती हूँ ।।५।।उस ससय भी आप (प्रभु) ने मुझे बहुत प्रकार से समझाया था, परन्तु बोध नहीं हुआ, वह समझकर हे नाथ ! क्रोध न कीजियेगा ।।६।।

तब कर अस विमोह अब नाहीं ❀ राम कथा पर रुचि मन माहीं
कहहु पुनीत राम गुन गाथा ❀ भुजगराज भूषन सुर नाथा

क्योंकि तब के समान अब मुझ में विशेष अज्ञानता नहीं है और अब मन में रामजी की कथा पर रुचि भी हो गई है ।। ७ ।। सो हे देवताओं के स्वामी ! हे शेषजी के भूषण को धारण करने वाले ! आप श्रीरामचन्द्रजी के गुणों की पवित्र कथा कहिये ।। ८ ।।

दोहा—बन्दौं पद धरि धरनि सिर, विनय करौं करजोरि ।
बरनहु रघुबर विशद यश, श्रुति सिद्धान्त निचोरि ।।११९।।

मैं पृथ्वी पर शिर रखकर आपके चरणों में प्रणाम करती हूँ और हाथ जोड़कर विनती करती हूँ कि रघुकुल में श्रेष्ठ श्रीरामका पवित्र यश जो वेदोंका सिद्धान्त-निचोड़ है वर्णन कीजिये ११९

यदपि योषिता अन अधिकारी ❀ दासी मन क्रम बचन तुम्हारी
गूढ़ौ तत्त्व न साधु दुरावहिं ❀ आरत अधिकारी जहँ पावहिं

यद्यपि स्त्री होने से मेरा इसमें अधिकार नहीं है तो भी मैं तो मन, कर्म और वाणी से आपकी दासी हूँ।। १ ।। और साधु पुरुष किसी गूढ़ तत्त्व को नहीं छिपाते, जहाँ उनको आर्त्त-अधिकारी मिल जाता है, वह उसे बतला देते हैं ।। २ ।।

अति आरति पूछौं सुरराया ❀ रघुपति कथा कहहु करि दाया
प्रथम सो कारन कहहु विचारी ❀ निर्गुन ब्रह्म सगुन बपुधारी

सो हे देवताओं के राजा ! मैं अत्यन्त उत्कण्ठा से पूछती हूँ, आप दया करके श्रीरामचन्द्रजी की कथा का वर्णन कीजिए ।।३।। पहले वह कारण विचारकर कहिए कि, जिसके द्वारा निर्गुण ब्रह्म ने सगुण शरीर को धारण किया है ।। ४ ।।

पुनि प्रभु कहहु राम अवतारा ❀ बाल चरित पुनि कहहु उदारा
कहहु यथा जानकी विवाही ❀ राज तजा सो दूषन काही

फिर हे प्रभो ! श्रीरामचन्द्रजी के अवतार का वर्णन करके फिर उनके उदारमना चरित्र का वर्णन कीजिए ।। ५ ।। जिस प्रकार श्रीजानकी से विवाह किया और जिसके कारण उन्हें राज्य त्यागना पड़ा, वह क्या दोष था ? ।। ६ ।।

बन बसि कीन्हे चरित अपारा ❁ कहहु नाथ जिमि रावन मारा
राज बैठि कीन्हीं बहु लीला ❁ सकल कहहु शंकर शुभशीला

फिर हे नाथ ! बन में निवास करके जो अनेक चरित्र किए और जैसे रावण का बध किया उसे कहिये ।। फिर जो राज्य पर बैठकर बहुत सी लीलायें कीं, हे शंकरजी ! वह सब कहिए।

दोहा—बहुरि कहहु करुनायतन, कीन्ह जो अचरज राम ।
प्रजा सहित रघुवंशमनि, किमि गवने निजधाम ॥१२०॥

फिर हे करुणानिधान ! वह भी कहिये जो रामजी ने आश्चर्य जनक कार्य किए हैं और प्रजा के सहित अपने धाम को किस प्रकार से चले गये, वह सारी कथा वर्णन कीजिए ।।१२०।।

पुनि प्रभु कहहु सो तत्त्व बखानी ❁ जेहि विज्ञान मगन मुनि ज्ञानी
भगति ज्ञान विज्ञान विरागा ❁ पुनि सब बरनहु सहित विभागा

फिर हे प्रभो ! आप उस तत्त्वका वर्णन कीजिये, जिस ज्ञान-विज्ञान में मुनि और ज्ञानी मग्न रहा करते हैं । फिर भक्ति, ज्ञान और वैराग्य सबका विभाग सहित वर्णन कीजिये ।।

औरौ राम रहस्य अनेका ❁ कहहु नाथ अति विमल विवेका
जो प्रभु मैं पूछा नहिं होई ❁ सोउ दयालु राखहु जनि गोई

श्रीरामचन्द्रजी के और भी जो अनेकों रहस्य हैं हे नाथ ! उस अत्यन्त पवित्र ज्ञान को कहिये कि जिससे निर्मल ज्ञान होवे ।। हे प्रभो ! जिसको मैंने न पूछा हो, उसे भी कृपाकर गुप्त न रखिये ।।

तुम त्रिभुवन गुरु वेद बखाना ❁ आन जीव पामर का जाना
प्रश्न उमाकर सहज सुहाई ❁ छल विहीन सुनि शिव मन भाई

क्योंकि आप त्रैलोक्यके गुरु हैं वेद ने ऐसा कहा है, फिर दूसरे पामर जीव आपको क्या जानें ? इस प्रकार पार्वतीजीके छल रहित साधारण सुन्दर प्रश्न सुनकर श्रीमहादेवजीका मन प्रसन्न हो गया ।।

हर हिय रामचरित सब आए ❁ प्रेम पुलकि लोचन जल छाए
श्री रघुनाथ रूप उर पावा ❁ परमानन्द अमित सुख पावा

फिर तो श्रीमहादेवजी के हृदय में श्रीरघुनाथजी का सब चरित्र आ गया, शरीर पुलकायमान हो गया और प्रेम युक्त नेत्रों में जल भर आया ।। ७ ।। हृदय में श्रीरघुनाथजी का रूप आ गया, जिससे आनन्द हुआ और उन्हें अत्यन्त सुख की प्राप्ति हुई ।। ८ ।।

दोहा—मगन ध्यान रस दंडयुग, पुनि मन बाहिर कीन्ह ।
रघुपति चरित महेश तब, हरषित बरनै लीन्ह ॥१२१॥

दो घड़ी तक ध्यान के आनन्द में लीन रहे, तत्पश्चात् अपने मन को ध्यान से बाहर कर महादेवजी प्रसन्न हो श्रीरामचन्द्रजी का चरित्र वर्णन करने लगे ।। १२१ ।।

झूठहु सत्य जाहि बिनु जाने ❁ जिमि भुजंग बिनु रजु पहिचाने
जेहि जाने जग जाइ हेराई ❁ जागे यथा सपन भ्रम जाई

महादेवजी ने कहा, हे पार्वती ! जिसके बिना जाने असत्य वस्तु भी सत्य जान पड़ती है, जैसे बिना पहचाने रस्सी सर्प के तुल्य है ।।१।। जिनके जानने पर संसार का भ्रम वैसे ही दूर हो जाता है, जैसे कि जागने पर स्वप्न का भ्रम चला जाता है ।।२।।

बन्दौं बालरूप सोइ रामू ❁ सब विधि सुलभ जपत जिसु नामू
मंगल भवन अमंगल हारी ❁ द्रवौ सो दशरथ अजिर विहारी

मैं उन्हीं बालरूप श्रीरामचन्द्रजी की वन्दना करता हूँ जिनका नाम जपने से अनायास ही सब कार्य सुलभ हो जाते हैं ।।३।। मंगल के घर ओर अमंगल को नष्ट करनेवाले दशरथ जी के आँगन में खेलते हुए हे रामजी ! मुझपर दया करो ।।४।।

करि प्रनाम रामहिं त्रिपुरारी ❁ हरषि सुधा सम गिरा उचारी
धन्य-धन्य गिरिराज कुमारी ❁ तुम्ह समान नहिं कोउ उपकारी

इस प्रकार श्रीरामचन्द्रजीको प्रणामकर प्रसन्न हो, श्रीमहादेवजी अमृत समान मधुर वचन बोले—हे पार्वती तुम धन्य हो ! धन्य हो !! तुम्हारे समान उपकारिणि कोई नहीं है ।।

पूछेहु रघुपति कथा प्रसंगा ❁ सकल लोक जस पावनि गंगा
तुम रघुबीर चरन अनुरागी ❁ कीन्हेउ प्रश्न जगत हितलागी

तुमने श्रीरामचन्द्रजी की कथा का जो प्रसंग पूछा है, वंह समस्त लोक को श्रीगंगाजी के समान पवित्र करनेवाला है ।।७।। तुम रामचन्द्रजीकी श्रीचरणानुरागी हो, क्योंकि तुमने संसार की भलाई के लिए प्रश्न किया है ।।८।।

दोहा—राम-कृपा ते पारबति, सपनेहु तव मन माहिं ।
शोक मोह सन्देह भ्रम, मम विचार कछु नाहिं ।।१२२।।

मेरे विचार में हे पार्वती ! भगवान् श्रीरामचन्द्रजी की कृपा से स्वप्न में भी तुम्हारे मन में शोक, मोह, सन्देह और भ्रम मेरे जाने में कुछ नहीं है ।।१२२।।

तदपि अशंका कीन्हेउ सोई ❁ कहत सुनत सबकर हित होई
जिन्ह हरिकथा सुनी नहिं काना ❁ श्रवण रन्ध्र अहि भवन समाना

यद्यपि इसमें कुछ शंका नहीं है तथापि तुमने ऐसी शंका की है कि जिसके कहने और सुनने से सबकी भलाई हो ।। १ ।। जिन्होंने भगवान् की कथा अपने कानों द्वारा नहीं सुनी है, उनके कान वैसे ही हैं जैसे सर्प का बिल हो ।।२।।

नयनन्हि सन्त दरश नहिं देखा ❁ लोचन मोर पंख करि लेखा
ते सिर कटु तूमरि सम तूला ❁ जे न नमत हरि गुरुपद मूला

जिनके नेत्रोंने सन्तजनोंका दर्शन नहीं किया है उनके नेत्र मोरपंखके नेत्रकी गिनतीमें हैं और वे शिर कडुवी तुम्बीके समान हैं जो गुरु और भगवान्‌के चरणों पर नहीं झुकते ।।४।।

जिन्ह हरि भगति हृदय नहिं आनी ❁ जीवत शव समान ते प्रानी
जो नहिं करै राम गुन गाना ❁ जीह सो दादुर जीह समाना

जिन लोगों ने विष्णु की भक्ति को हृदय में धारण नहीं किया है, वे प्राणी जीवित रहते हुए भी मृतक के तुल्य हैं ।।५।। जो मनुष्य श्रीरामजी का गुणानुवाद नहीं करते उनकी जिह्वा मेढक की जिह्वा के समान है ।।६।।

कुलिश कठोर निठुर सोइ छाती ❀ सुनि हरिचरित न जो हरषाती
गिरिजा सुनहु राम की लीला ❀ सुरहित दनुज विमोहन शीला

वह छाती वज्र से भी कठोर है जो भगवत् चरित्र श्रवण कर प्रसन्न नहीं होती। हे पार्वती ! रामजीकी लीला सुनो, जो देवताओंका हित और दैत्यों को मोहित करनेवाली है ।।८।।

दोहा—राम कथा सुरधेनु सम, सेवत सब सुखदानि ।
सन्त सभा सुरलोक सम, को न सुनै श्रस जानि ।।१२३।।

भगवान् रामजीकी कथा सुन्दर कामधेनुके समान है, जो सेवन करने से सब सुखोंको प्रदान करती है। सन्तजनोंका समाज देवपुरीके समान है ऐसा जानकर इसे कौन न सुनेगा ।।१२३।।

राम कथा सुंदर करतारी ❀ संशय बिहँग उड़ावन हारी
राम कथा कलि विटप कुठारी ❀ सादर सुनु गिरिराज कुमारी

श्रीरामचन्द्रजीकी कथा सुन्दर हाथों की तालीके समान संशयरूपी पक्षीको उड़ानेवाली है। श्रीराम-कथा कलियुगरूपी वृक्ष के लिए कुल्हाड़ी के समान है, हे पार्वती ! सादर सुनो।

राम नाम गुन चरित सुहाए ❀ जनम करम श्रगनित श्रुति गाए
जथा श्रनन्त राम भगवाना ❀ तथा कथा कीरति गुन गाना

वेदों में राम के नाम, गुण, सुन्दर चरित्र, जन्म, कर्म अगणित रूप में वर्णित हैं ।।३।। और जैसे भगवान् राम अनेक हैं, वैसे ही उनकी अनेक प्रकार की कथा और कीर्ति भी है ।।४।।

तदपि यथा श्रुति जसमति मोरी ❀ कहिहौं देखि प्रीति अति तोरी
उमा प्रश्न तव सहज सुहाई ❀ सुखद संत सम्मत मोहिं भाई

तथापि जैसा वेदों में वर्णित है और जैसी मेरी बुद्धि है, तुम्हारी अत्यन्त उत्कण्ठा देखकर अवश्य कहूँगा ।।५।। हे शैलपुत्री ! यह तुम्हारा प्रश्न सरल, सुन्दर और मान्य, सन्तों को सुख देनेवाला है, अतः यह मुझे भाया है ।।६।।

एक बात नहिं मोहिं सुहानी ❀ यदपि मोहबस कहेउ भवानी
तुम्ह जो कहा राम कोउ श्राना ❀ जेहि श्रुति गाइ धरहिं मुनिध्याना

हे पार्वती ! मुझे तुम्हारी एक ही बात नहीं भाती है, यद्यपि हे भवानी ! यह तुमने मोह के वश कहा है ।।७।। जो प्रश्न तुमने किया है कि, क्या राम कोई दूसरे हैं, जिनका वेद गान करते हैं और जिन्हें मुनिजन ध्यान में धारण करते हैं ।।८।।

दोहा—कहहिं सुनहिं अस श्रधम नर, ग्रसे जे मोह पिशाच ।
पाखंडी हरिपद बिमुख, जानहिं झूठ न साँच ।।१२४।।

ऐसा तो वे नीच मनुष्य कहते और सुनते हैं जिन्हें मोहरूपी पिशाच ने ग्रस लिया हो और जो ऐसे पाखण्डी मनुष्य हैं कि जिनकी भगवान् के चरणों में प्रीति नहीं है, वे सत्य असत्य के भेद को नहीं जानते ।। १२४ ।। क्योंकि—

अज्ञ अकोविद अन्ध अभागी ❁ काई विषय मुकुर मन लागी
लंपट कपटी कुटिल विशेषी ❁ सपनेहुँ सन्त सभा नहिं देखी

वे मूर्ख, अज्ञानी, अभागे और ज्ञान-चक्षु विहीन हैं, जिनके मनरूपी दर्पण पर विषयरूपी काई लगी हुई है ।। १ ।। और वे विषयों में लीन, लम्पट, कपटी और विशेष कुटिल हैं, जिन्होंने स्वप्न में भी सत्पुरुषों की सभा नहीं देखी है ।। २ ।।

कहहिं ते वेद असम्मत बानी ❁ जिन्हहिं न सूझ लाभ नहिं हानी

वे लोग वेद-प्रतिकूल वचन कहते हैं, जिनको हानि-लाभ कुछ नहीं दिखायी पड़ता ।।३।।

मुकुर मलिन अरु नयन बिहीना ❁ रामरूप देखहिं किमि दीना
जिन्हके अगुन न सगुन विवेका ❁ जलपहिं कलपित बचन अनेका

कारण कि उनका मनरूपी दर्पण साफ नहीं है और वे शास्त्ररूपी नेत्रों से रहित हैं, तब भला वे विचारे श्रीरामजी के स्वरूप को क्या देख सकते हैं ! ।।४।। वे तो यों ही व्यर्थ की बातें करते हैं; क्योंकि उनको निर्गुण और सगुण का विचार नहीं है ।। ५ ।।

हरि माया वश जगत भ्रमाहीं ❁ तिन्हहि कहत कछु अघटित नाहीं
बातुल भूत विवश मतवारे ❁ ते नहिं बोलहिं बचन सँभारे

भगवान् की माया के वश में पड़ा हुआ सारा संसार भ्रमित है। उन्हें कुछ कहते हुए अघटित नहीं है ।। ६ ।। क्योंकि बकवादी, भूत-वाधा में पड़े और मतवाले लोग, सँभालकर वचन नहीं बोलते ।। ७ ।।

जिन्ह कृत महामोह मद पाना ❁ तिन्हकर कहा करिय नहिं काना

ऐसे लोग महान् मोहरूपी मदिरा पिये रहते हैं, उनके कहने की ओर कान नहीं देना चाहिये ।।८।।

सोरठा—अस निज हृदय बिचारि, तजु संशय भजु रामपद ।
सुनु गिरिराज कुमारि, भ्रम तम रविकर बचन मम ।।१५।।

ऐसा अपने हृदयमें विचारकर सब संशयोंको छोड़ श्रीरामचन्द्रजीके चरणोंका भजन करो। हे पार्वती ! सुनो मेरा यह वचन भ्रमरूपी अन्धकारको नष्ट करनेको सूर्यकी किरणोंके समान है ।।

सगुनहिं अगुनहिं नहिं कछु भेदा ❁ गावहिं मुनि पुरान बुध वेदा
अगुन अरूप अलख अज जोई ❁ भगत प्रेमबस सगुन सो होई

सगुण और निर्गुण में भेद नहीं है, मुनिजन और वेद पुराण तथा बुद्धिमानों का ऐसा ही कहना है कि जो निर्गुण और अजन्मा है, वहीं भक्तोंके प्रेमवशीभूत हो सगुण हो जाते हैं ।। २ ।।

जो गुन रहित सगुन सो कैसे ❁ जल हिम उपल बिलग नहिं जैसे
जासु नाम भ्रम तिमिर पतंगा ❁ तेहि किमि कहिय विमोह प्रसंगा

जो गुणों से रहित हैं वह सगुण कैसे, जैसे जल से बर्फ अलग नहीं है। जिसका नाम मोह रूपी अन्धकार को दूर करने के लिए सूर्य के समान है उसको मोह का प्रसंग कैसे कहा जाय ?

राम सच्चिदानन्द दिनेशा ❀ नहिं तहँ मोहनिशा लवलेशा
सहज प्रकाश रूप भगवाना ❀ नहिं तहँ पुनि विज्ञान बिहाना

इस प्रकार सच्चिदानन्द श्रीरामचन्द्रजी सूर्य के समान हैं, जहाँ मोहरूपी रात्रि का लवलेश नहीं है, जो भगवान् स्वभाव से ही प्रकाशरूप हैं, वहाँ विज्ञान का प्रातःकाल नहीं होता ।।६।।

हरष विषाद ज्ञान अज्ञाना ❀ जीव धरम अहमिति अभिमाना
राम ब्रह्म व्यापक जग जाना ❀ परमानन्द परेश पुराना

हर्ष-विषाद, ज्ञान-अज्ञान, अन्धकार और अभिमान ये तो समस्त जीवों के धर्म हैं।।७।। श्रीरामचन्द्रजी तो सर्वव्यापी ब्रह्म हैं, संसार जानता है कि, ये परमानन्द-स्वरूप भगवान् सबसे परे और पुराण-पुरुषोत्तम हैं ।। ८ ।।

दोहा—पुरुष प्रसिद्ध प्रकाशनिधि, प्रकट परावर नाथ ।
रघुकुलमनि मम स्वामि सोइ, कहि शिव नायउ माथ ।१२५।

वही पुरुषों में प्रसिद्ध पुरुष, प्रकाश की खानि और प्रकट स्वामी हैं, वे ही रघुकुलमणि श्रीरामचन्द्रजी हमारे स्वामी हैं, ऐसा कहकर श्रीशिवजीने शिर झुका लिया ।। १२५ ।।

निज भ्रम नहिं समुझहिं अज्ञानी ❀ प्रभु पर मोह धरहिं जड़ प्रानी
जथा गगन घन पटल निहारी ❀ झंपेउ भानु कहहिं कुबिचारी

अज्ञानी अपने भ्रम को नहीं समझते और वे मूर्ख श्रीरामचन्द्रजी पर दोषारोपण करते हैं ।। जैसे आकाश में बादलरूपी परदा देखकर कुविचारी मनुष्य कह दिया करते हैं कि सूर्य छिप गया है ।। २ ।।

चितव जो लोचन अंगुलि लाए ❀ प्रगट जुगल शशि तेहि के भाए
उमा राम विषइक अस मोहा ❀ नभ तम धूम धूरि जिमि सोहा

जो मनुष्य आँख पर अँगुली लगाकर देखता है उसको दो चन्द्रमा दिखाई पड़ते हैं। हे पार्वती ! रामजी के विषय में मोह करना ऐसा ही है कि जैसे आकाश में धुँवा और धूलि-रूप अन्धकार है, ऐसे ही विषयों के मोह में पड़ा हुआ मन मलिन हो रहा है ।। ४ ।।

विषय करन सुर जीव समेता ❀ सकल एकते एक सचेता
सबकर परम प्रकाशक जोई ❀ राम अनादि अवधपति सोई

यों तो शब्दादिक विषयी इन्द्रियों सहित देवता और जीव एक से एक सयाने एवं चतुर हैं ।। ५ ।। परन्तु जो इन सबके परम प्रकाशक हैं, जिनका आदि अन्त कुछ भी नहीं है, वे ही अनादि और अवध के राजा श्रीरामचन्द्रजी हैं ।। ६ ।।

जगत प्रकाश्य प्रकाशक रामू ❀ मायाधीश ज्ञान गुन धामू
जासु सत्यता ते जड़ माया ❀ भास सत्य इव मोह सहाया

जगत् प्रकाश्य है और श्रीरामचन्द्रजी इसका प्रकाश करनेवाले, माया के स्वामी, ज्ञान और गुणों के घर हैं ।।७।। उन्हीं की सत्यता से यह जड़रूप माया मोह की सहायता पाकर सत्य के समान जान पड़ती है ।।८।।

दोहा—रजत सीप महँ भास जिमि, यथा भानु कर वारि ।
यदपि मृषा तिहुँकाल सोइ, भ्रम न सकै कोउ टारि ।।१२६।।

जैसे सीप में चाँदी का और सूर्य की किरणों में जल का भास होता है और जो कि यह दोनों ही बातें त्रिकाल में असत्य हैं तो भी इस सन्देह को कोई टाल नहीं सकता ।।१२६।।

यहि विधि जग हरि आश्रित रहई ❁ यदपि असत्य देत दुख अहई
जौं सपने शिर काटै कोई ❁ बिनु जागे दुख दूर न होई

इसी प्रकार संसार भगवान् के आश्रित रहता है और असत्य होते हुए भी दुःख देता रहता है ।।१।। जैसे कोई स्वप्न में किसी का सिर काट लेवे तो बिना जागे उसका दुःख दूर नहीं होता, वैसे ही संसार से बिना जागृत हुए दुःखों का नाश नहीं होता ।।२।।

जासु कृपा अस भ्रम मिटि जाई ❁ गिरिजा सोइ कृपालु रघुराई
आदि अंत कोउ जासु न पावा ❁ मति अनुमान निगम अस गावा

हे पार्वती ! जिसकी कृपा से ऐसा भ्रम नष्ट हो जाता है, वही कृपा करने वाले श्रीरामचन्द्रजी हैं ।। ३ ।। जिनका आदि अन्त कोई नहीं पा सकता और जिनके सम्बन्ध में वेद भी यही वर्णन करते हैं कि—।।४।।

बिनु पद चलै सुनै बिनु काना ❁ कर बिनु कर्म करै बिधि नाना
आनन रहित सकल रस भोगी ❁ बिनु वाणी बकता बड़ जोगी

वह बिना पैरों के चलता है और बिना हाथों से ही नाना प्रकार के कार्य करता है ।।५।। वह बिना मुख के सम्पूर्ण रसों को भोगता है और बिना वाणी के बोलता है तथा जो बड़ा योगी है ।।६।।

तन बिनु परस नयन बिनु देखा ❁ ग्रहै घ्राण बिनु बास अशेखा
अस सब भाँति अलौकिक करनी ❁ महिमा जासु जाइ नहिं बरनी

वह बिना शरीरके ही सबको स्पर्श करता और बिना नासिका के ही सब प्रकार की सुगंधियोंको ग्रहण करता है । उसका समस्त कार्य अलौकिक है, जिसकी महिमा वर्णन नहीं की जाती है।

दोहा—जेहि इमि गावहिं वेद बुध, जाहिं धरहिं मुनि ध्यान ।
सोइ दशरथ सुत भगत हित, कोशलपति भगवान ।।१२७।।

जिसे वेद और पण्डित इस प्रकार गाते हैं, जिनका मुनिजन ध्यान धरते हैं वे ही कोशलपति राजा दशरथ के पुत्र और भक्तों के हितकारी भगवान् श्रीरामचन्द्रजी महाराज हैं ।।१२७।।

काशी मरत जंतु अवलोकी ❁ जासु नाम बल करौं विशोकी
सोइ प्रभु मोर चराचर स्वामी ❁ रघुबर सब उर अंतरयामी

हे पार्वती ! काशी में मरते हुए जीवों को देखकर मैं जिसके नामके बल उसे शोकरहित करता हूँ ।।१।।वही मेरे प्रभु, चराचरके स्वामी श्रीरामचन्द्रजी सबके हृदयके जाननेवाले हैं ।।२।।

बिबसहुँ जासु नाम नर कहहीं ❀ जन्म अनेक रचित अघ दहहीं
सादर सुमिरन जो नर करहीं ❀ भव बारिधि गोपद इव तरहीं

और विवश होकर भी मनुष्य जिसके नाम को लेते हैं और जिससे उनके करोड़ों जन्म के संचित पाप भस्म हो जाते हैं ।। ३ ।। जो नर आदर पूर्वक उनका स्मरण करते हैं, वे इस संसार-सागर को गौ के खुर के समान सहज ही में पार कर जाते हैं ।।४।।

राम सो परमातमा भवानी ❀ तहँ भ्रम अतिअविहित तवबानी
अस संशय आनत उर माहीं ❀ ज्ञान विराग सकल गुन जाहीं

हे भवानी ! वे रामचन्द्रजी परमात्मा हैं, वहाँ भ्रम करना तुम्हारी यह बहुतही अनुचित बात है । हृदय में ऐसा संशय आते ही ज्ञान और वैराग्य आदि समस्त गुण नष्ट हो जाते हैं ।।६।।

सुनि शिव के भ्रम भंजन वचना ❀ मिटि गइ सब कुतर्क की रचना
भइ रघुपति पद प्रीति प्रतीती ❀ दारुन असंभावना बीती

शिवजी के ऐसे संदेह-नाशक वचनों को सुनकर पार्वतीजी की सारी कुतर्क रचना नष्ट गई ।। ७ ।। और श्रीरामचन्द्रजी के चरणों में उनका प्रेम और विश्वास दृढ़ हो गया तथा चित्त में जो कठिन अविश्वास था, वह दूर हो गया ।।८।।

दोहा—पुनि पुनि प्रभु पद कमल गहि, जोरि पंकरुह पानि ।
बोलीं गिरिजा वचन वर, मनहुँ प्रेमरस सानि ।।१२८।।

तब बारम्बार प्रभु महादेवजी के चरणकमलों को पकड़ते हुए अपने कमलवत् हाथों को जोड़कर पार्वतीजी मानों प्रेम-रस से युक्त यह श्रेष्ठ वाणी बोलीं कि—।।१२८।।

शशिकर सम सुनि गिरा तुम्हारी ❀ मिटा मोह शरदातप भारी
तुम्ह कृपालु सब संशय हरेऊ ❀ राम सरूप जानि मोहिं परेऊ

हे शिवजी ! चन्द्रमा की किरणों के समान आपकी वाणी सुनकर शरद् ऋतु की धूप के समान मेरा मोह दूर हुआ ।।१।। हे कृपालु ! आपने मेरी समस्त शंकायें दूर कर दीं जिससे अब मुझे श्रीरामचन्द्रजी का स्वरूप जान पड़ा है ।।२।।

नाथ कृपा अब गयउ विषादा ❀ सुखी भयउँ प्रभु चरन प्रसादा
अब मोहिं आपनि किंकरि जानी ❀ यदपि सहज जड़नारि अयानी

हे नाथ ! आपकी कृपा से अब मेरा सारा विषाद दूर हो गया और हे प्रभो ! अब मैं आप के चरणों के प्रसाद से सुखी हुई । यद्यपि स्त्रियाँ स्वभाव से ही मूर्ख होती हैं तो भी मुझे अपनी दासी जानकर ।।

प्रथम जो मैं पूछा सोइ कहहू ❀ जौं मोपर प्रसन्न प्रभु अहहू
राम ब्रह्म चिन्मय अविनासी ❀ सर्वरहित सब उर पुर वासी

हे प्रभो ! यदि आप मुझपर प्रसन्न हों तो जो, मैंने पहले पूछा है, उसे वर्णन कीजिये । यदि भगवान् श्रीरामचन्द्रजी चिन्मय ब्रह्म सब प्रपंचों से रहित और सबके हृदय में वास करनेवाले हैं ।।६।।

नाथ धरेउ नर-तन केहि हेतू ❀ मोहिं समुझाइ कहहु वृषकेतू

उमा वचन सुनि परम विनीता ❀ रामकथा पर प्रीति पुनीता

तो हे नाथ! किस कारण से मनुष्य शरीर धारण किया ? हे वृषकेतु ! यह बात मुझे भली-भाँति समझाकर कहिए। जब भोलानाथ ने पार्वती के ऐसे परम विनीत वचन सुने ॥

दोहा—हिय हरषे कामारि तब, शंकर सहज सुजान।
बहुविधि उमहिं प्रशंसि पुनि, बोले कृपानिधान ॥१२९॥

तब कामदेव के शत्रु स्वाभाविक बुद्धिमान् श्रीमहादेवजी अपने मन में प्रसन्न हो, अनेक प्रकार से पार्वतीजो की प्रशंसा करके वे कृपानिधान फिर यह वचन बोले ॥ १२९ ॥

सोरठा—सुनु शुभकथा भवानि, रामचरित मानस विमल।
कहा भुशुंडि बखानि, सुना बिहँग नायक गरुड़ ॥१६॥

हे पार्वती ! सुनो, अब मैं उस शुभ श्रीरामचन्द्रजी की कथा को कहता हूँ कि, जो मानसरोवर के समान निर्मल है। जिसको काकभुशुण्डिजी ने वर्णन किया और गरुड़ ने सुना ॥१६॥

सोरठा—सोइ संवाद उदार, जेहि विधि भा आगे कहब।
सुनहु राम अवतार, चरित परम सुन्दर अनघ ॥१७॥

वही उत्तम संवाद जो पहले हो चुका है उसे आगे वर्णन करूँगा। परन्तु पहले श्रीरामचन्द्रजी के अवतार की अत्यन्त सुन्दर पवित्र कथा सुनो ॥ १७ ॥

सोरठा—हरिगुण नाम अपार, कथारूप अगणित अमित।
मैं निजमति अनुसार, कहौं उमा सादर सुनहु ॥१८॥

हे पार्वती ! भगवान् के नाम और गुण तो अपार हैं और कथा तथा रूप भी अगणित और अमित हैं, परन्तु जहाँ तक मेरी बुद्धि है, उसके अनुसार वर्णन करता हूँ प्रेमपूर्वक सुनो ॥१८॥

सुनु गिरिजा हरि चरित सुहावा ❀ विपुल बिसद निगमागम गावा
हरि अवतार हेतु जेहि होई ❀ इदमित्थं कहि जाइ न सोई

हे पार्वती ! अब भगवान् का वह सुन्दर चरित्र सुनो, जिसको वेदों ने गाया है ॥१॥ भगवान् का अवतार जैसे होता है, वह कारण मुझसे यथार्थ कहते नहीं बनता है ॥ २ ॥

राम अतर्क बुद्धि मन बानी ❀ मति हमार अस सुनहु सयानी
तदपि सन्त मुनि वेद पुराना ❀ जस कछु कहहिं स्वमति अनुमाना

हे पार्वती! सुनो, तुम्हारा यह विचार कि रामजी मन, बुद्धि और वाणी तथा तर्कनाओं से परे हैं। तथापि मैं अपनी बुद्धि के अनुमान से सन्त, मुनि, वेद और पुराणों ने जैसा कुछ कहा है—

तस मैं सुमुखि सुनावौं तोहीं ❀ समुझि परै जस कारण मोहीं
जब-जब होइ धरम कै हानी ❀ बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी

हे सुन्दर मुखवाली पार्वती ! वैसा अब मैं तुमको सुनाता हूँ—जो कुछ कारण मेरी समझ में आता है। जब-जब धर्म की हानि होती है और नीचाभिमानी राक्षस बढ़ जाते हैं ॥

करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी ❀ सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी
तब तब प्रभु धरि विविध शरीरा ❀ हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा

उनकी वह अनीति जो वे करते हैं, जिनका वर्णन नहीं हो सकता और वे ब्राह्मण, गौ, देवता और पृथ्वीको दुःख देतेहैं। तब२ कृपाकेसागर भगवान् मनुष्य शरीरधारणकरसज्जनोंकाकष्ट दूर करतेहैं

दोहा--असुर मारि थापहिं सुरन्ह, राखहिं निज श्रुति सेतु।
जग विस्तारहिं विशद यश, रामजन्म कर हेतु ॥१३०॥

तब राक्षसोंको मारकर देवताओं की स्थापना करते हैं, और वे स्वयं वेदोंकी मर्यादाको स्थिरकर संसार में उज्वल कीर्ति फैलाते हैं, इन्हीं कारणों से रामजी अवतार लिया करते हैं ॥१३०॥

सोइ जस गाइ भक्त भव तरहीं ❀ कृपासिन्धु जगहित तनु धरहीं
राम जनम कर हेतु अनेका ❀ परम विचित्र एक ते एका

फिर उन्हीं कीर्तियों का यशोगान कर भक्त लोग इस जगत्‌रूपी भवजाल से पार हो जाते हैं और कृपासागर प्रभु अपने भक्तों के लिए अवतार लेते हैं ॥१॥ इस प्रकार श्रीरामचन्द्रजी के जन्म लेनेके अनेक कारण हैं जो एक से एक अधिक और परम विचित्र हैं ॥२॥

जनम एक दुइ कहौं बखानी ❀ सावधान सुनु सुमति भवानी
द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ ❀ जय अरु विजय जान सब कोऊ

उन जन्मों में दो-एकका बखान करता हूँ, हे सुन्दर बुद्धिवाली पार्वती! सावधान होकर सुनो ॥३॥ भगवान्‌के 'जय और विजय' नामक दो प्रिय द्वारपाल थे जिनको सब कोई जानते हैं॥

विप्र-साप ते दूनों भाई ❀ तामस असुर देह तिन्ह पाई
कनक कसिपु अरु हाटक लोचन ❀ जगतविदित सुरपति मदमोचन

उन दोनों भाइयों ने ब्राह्मणों के शाप से असुर की देह पाई। उनमें एक का नाम हिरण्यकशिपु और दूसरे का नाम हिरण्याक्ष था जो संसार में प्रसिद्ध हो इन्द्र का भी मानमर्दन करने वाले हुये॥

विजयी समर वीर विख्याता ❀ धरि वराह बपु एक निपाता
होइ नरहरि दूसर पुनि मारा ❀ जन प्रहलाद सुजस विस्तारा

ये दोनों युद्ध विजयी और विख्यातवीर हुए, तब हिरण्याक्ष को विष्णुने वाराह शरीर धारणकर मारडाला और हिरण्यकशिपुको भगवान्‌ने नृसिंह रूप हो मार भक्तप्रह्लादके यशका विस्तार किया

दोहा--भए निशाचर जाइ तेइ, महाबीर बलवान।
कुम्भकरन रावन सुभट, सुर विजई जग जान ॥१३१॥

फिर वे बड़े वीर, बलवान् निशाचर कुल में जाकर कुंभकर्ण और रावण नाम से बड़े योद्धा और देवताओं पर विजय करने वाले हुए जो संसार को विदित है ॥१३१॥

मुकुत न भयउ हते भगवाना ❀ तीनि जनम द्विजबचन प्रमाना
एक बार तिन्हके हित लागी ❀ धरेउ शरीर भगत अनुरागी

भगवान्‌के मारनेपर भी वे आवागमनसे रहित न हुए, क्योंकि ब्राह्मण का शाप उनके तीन जन्मों के लिए था। एकबार तो उनके हितके लिए भक्तोंकी सेवावश ही भगवान्‌ने शरीर धारण कियाथा।

कश्यप अदिति तहाँ पितु माता ❁ दशरथ कौशिल्या विख्याता
एक कल्प यहि विधि अवतारा ❁ चरित पवित्र किये संसारा

वहाँ कश्यप अदिति इनके माता-पिता थे, वही यहाँ दशरथ और कौशल्या नाम से प्रसिद्ध हुये। इस प्रकार अवतार लेकर प्रभुने एक कल्पतक संसार में नाना प्रकारके पवित्र चरित्र किए ॥

एक कल्प सुर देखि दुखारे ❁ समर जलंधर सन सब हारे
शम्भु कीन्ह संग्राम अपारा ❁ दनुज महाबल मरै न मारा

एक कल्प में जलन्धर ने देवताओं को परास्त कर दिया; जिसे देख सब दुखी हुए। तब शिवजीने अपार युद्ध किया, परन्तु वह दैत्य बड़ा बलवान् था, जो किसीके मारे न मरता था॥

परम सती असुराधिप नारी ❁ तेहिबल ताहि न जितहिं पुरारी

जलन्धर राक्षसकी स्त्री बड़ी सती थी, जिसके बल से महादेवजी उसे जीत न सकते थे॥

दोहा—छलकरि टारेउ तासु ब्रत, प्रभु सुर कारज कीन्ह।
जब तेहि जानेउ मरम तब, शाप कोप करि दीन्ह ॥१३२॥

तब भगवान्‌ने छल करके उसका व्रत भंग किया और देवताओंका कार्य किया। परन्तु जब उसको यह सब भेद जान पड़ा, तब उसने कुपित होकर इन्हें शाप दे दिया ॥१३२॥

तासु शाप हरि कीन्ह प्रमाना ❁ कौतुकनिधि कृपालु भगवाना
तहाँ जलंधर रावन भयऊ ❁ रन हति राम परमपद दयऊ

तब उसके शापको प्रमाणितकर कौतुकनिधि कृपालु भगवान्‌ने फिर एक बार अवतार लिया। वही जलन्धर रावण हुआ जिसे संग्राममें मारकर श्रीरामचन्द्रजीने मोक्ष दिया॥

एक जन्म कर कारन एहा ❁ जेहि लगि राम धरी नर देहा
प्रति अवतार कथा प्रभु केरी ❁ सुनि मुनि बरनी कविन्ह घनेरी

एकजन्मका कारण प्रभुके जन्म लेनेका यही था जिसके लिए श्रीरामचन्द्रजीने मानव शरीर धारण किया। भगवान्‌के हर एक अवतारकी कथाको मुनियोंसे सुनकर अनेक कवियोंने वर्णन किया है॥

नारद साप दीन्ह एक बारा ❁ कलप एक तेहि लगि अवतारा
गिरिजा चकित भई सुनि बानी ❁ नारद विष्णु भगत पुनि ज्ञानी

एकबार नारदजीनेशापदिया, तब एककल्पमें इसलिए अवतारहुआ। महादेवजीकीऐसीवाणीसुन कर पार्वतीजी चकित हो गयीं कि नारदजी तो भगवान्‌के भक्त और परम ज्ञानी मुनि हैं?॥६॥

कारन कौन शाप मुनि दीन्हा ❁ का अपराध रमापति कीन्हा
यह प्रसंग मोहिं कहहु पुरारी ❁ सुनि मन मोर आचरज भारी

फिर ऐसा क्या कारण था कि, मुनिने शाप दिया, विष्णुजीने मुनिका क्या अपराध किया था॥७॥ हे शिवजी! यह प्रसंग मुझसे कहिये, क्योंकि इसे सुनकर मेरा मन बड़े आश्चर्यमें है ॥८॥

दोहा–बोले बिहँसि महेश तब, ज्ञानी मूढ़ न कोइ।
जेहि जस रघुपति करहिं जब, सो तस तेहिछिन होइ॥१३३॥

तब महादेवजी हँसकर बोले—हे पार्वती ! न कोई ज्ञानी है, न कोई मूर्ख है। जब जिसको श्रीरामचन्द्रजी जैसा करना चाहते हैं, उस मुहूर्त में वह वैसा ही हो जाता है ॥१३३॥

सोरठा–कहौं राम गुन गाथ, भरद्वाज सादर सुनहु।
भव भंजन रघुनाथ, भजु तुलसी तजि मान मद॥ १९ ॥

याज्ञवल्क्यजी कहते हैं हे भरद्वाज ! मैं राम के गुणों को कहता हूँ, तुम आदर-पूर्वक सुनो। रामजी इस संसाररूपी भवजाल से पार करने वाले हैं। तुलसीदासजी कहते हैं कि, मान और मद छोड़कर उनका भजन करो ॥१९॥

हिमगिरि गुहा एक अति पावनि ❀ बह समीप सुरसरी सुहावनि
आश्रम परम पुनीत सुहावा ❀ देखि देव ऋषि मन अति भावा

हिमाचल पहाड़पर एक अत्यन्त पवित्र गुफा थी, जिसके निकट ही सुहावनी गंगाजी बहती थीं। वहाँ एक परम पवित्र सुन्दर आश्रम था जिसको देखकर देवर्षि नारदजीका मन बहुत लुभा गया॥

निरखि शैल सरि विपिन विभागा ❀ भयउ रमापति पद अनुरागा
सुमिरत हरिहिं श्वास गतिबाधी ❀ सहज विमल मन लागि समाधी

और वहाँ के पहाड़, वन के विभाग और नदीको देखकर नारदजी को श्रीविष्णु के चरणों में प्रेम पैदा हो गया ॥३॥ तब वे भगवान् का स्मरण करने लगे जिससे उनके श्वास की गति रुक गयी और विमल मन होने से सहज ही समाधि लग गयी ॥४॥

मुनि गति देखि सुरेश डेराना ❀ कामहिं बोलि कीन्ह सनमाना
सहित सहाय जाहु मम हेतू ❀ चलेउ हरषि हिय जलचर केतू

नारदजीकी यह दशा देख इन्द्र डर गया और कामदेवको बुलाकर सम्मान कर कहा-आप मेरे लिए अपनी सेना सहित नारदजीके पास जाओ, तब कामदेव प्रसन्न हो वहाँके लिये चलदिया ॥६॥

सुनासीर मन महँ अति त्रासा ❀ चहत देवऋषि ममपुर बासा
जे कामी लोलुप जगमाहीं ❀ कुटिल काक इव सबहिं डेराहीं

इन्द्र के मन में बड़ा भय था कि नारदजी मेरे पुर का राज्य चाहते हैं ॥७॥ जो संसार में कामी और लालची हैं, वे कुटिल कौवे की तरह सबसे डरते ही हैं ॥८॥

दोहा–सूख हाड़ लै भाग सठ, श्वान निरखि मृगराज।
छीनि लेइ जनि जानि जड़, तिमि सुरपतिहिं न लाज॥१३४॥

जिस प्रकार मूर्ख कुत्ता सूखी हड्डीको ले, सिंहको देखकर भागता है और वह मूर्ख अपने मनमें यही सोचता है कि यह हड्डी कहीं छिन न जावे, वैसे ही देवराज इन्द्रको लज्जा नहीं आई ॥१३४॥

तेहि आश्रमहिं मदन जब गयऊ ❀ निज माया बसंत निरमयऊ

कुसुमित बिबिध बिटप बहुरंगा ❋ कूजहिं कोकिल गुञ्जहिं भृङ्गा

जब उस आश्रम में कामदेव गया, तब अपनी माया से बसन्त ऋतु का निर्माण कर दिया ।।१।। उस समय वृक्षों पर अनेक रंग के फूल खिल गये, जिनपर कोकिल और भौंरे गुंजार करने लगे ।।२।।

चली सुहावनि त्रिविध बयारी ❋ काम कृशानु बढ़ावनहारी
रम्भादिक सुर नारि नवीना ❋ सकल असम शर कला प्रवीना

शीतल, मन्द, सुगन्ध तीनों प्रकार का वायु चलने लगा, जो कि कामाग्नि को बढ़ाने-वाला था । रम्भादिक देवताओं की नवीन स्त्रियाँ जो सब काम-कला में परम चतुर थीं ।।

करहिं गान बहु तान तरंगा ❋ बहुबिधि क्रीड़हिं पानि पतंगा
देखि सहाय मदन हरषाना ❋ कीन्हेसि पुनि प्रपंच विधिनाना

वे अनेक प्रकार की तानभरकर लय से गाने लगीं तथा बहुत प्रकार से हाथों को सूर्याकार कर गेंद उछालकर नाचने लगीं ।।५।। तब कामदेव अपनी इस सेना को देखकर हर्षित हुआ और नाना प्रकार के छल कपट करने लगा ।।६।।

कामकला कछु मुनिहिं न व्यापी ❋ निज भय डरेउ मनोभव पापी
सीम कि चापि सकै कोउ तासू ❋ बड़ रखवार रमापति जासू

किन्तु नारदजीको कुछ भी कामकला व्याप्त नहीं हुई, इससे पापी कामदेव अपने अपराध से आपही डरा ।।७।। जिसकी रक्षा श्रीविष्णु भगवान् स्वयं करते थे; उसकी सीमा को कौन दबा सकता है ? ।। ८ ।।

दोहा—सहित सहाय सभीत अति, मानि हारि मन मैन ।
गहेसि जाय मुनिवर चरण, कहि सुठि आरत बैन ।।१२५।।

तब कामदेवने अपनी सेना सहित डरकर और मनमें हार मानकर मुनिवर श्रीनारदजीके चरणों को पकड़ लिया और अत्यन्त दुःखभरी वाणीमें अपने अपराध की क्षमा प्रार्थना की ।।१२५।।

भयउ न नारद मन कछु रोषा ❋ कहि प्रिय वचन काम परितोषा
नाय चरन शिर आयसु पाई ❋ गयउ भवन तब सहित सहाई

नारदजीकेमनमें कुछ भी क्रोध नहीं हुआ, उन्होंने मीठी बातें कहकर कामदेवको संतोषदिलाया।।१।। तब वह नारदजीके चरणों में मस्तक झुका और आज्ञा पाकर अपने सहायकों सहित घरको चलागया

मुनि सुशीलता आपनि करनी ❋ सुरपति सभा जाय सब बरनी
सुनि सबके मन अचरज आवा ❋ मुनिहिं प्रशंसि हरिहिं शिरनावा

श्रीनारदजीकी सुशीलता और अपनी करनीको इन्द्रकी सभामें जाकर वर्णन कर दी । उसकोसुनकर सबके मनको आश्चर्य हुआ, उन्होंने मुनिकी प्रशंसा करके भगवान् श्री हरिको शिर नवाया ।।४।।

तब नारद गवने शिव पाहीं ❋ जिता काम अहमिति मनमाहीं
मार चरित शंकरहिं सुनावा ❋ अतिप्रिय जानि महेश सिखावा

तब नारदजी महादेवजी के पास गये, कामदेवके जीतने से बड़ा घमण्ड था। उन्होंने कामदेव के सारे चरित्र शिवजीको सुना दिये, तब इनको प्रिय जानकर महादेवजी ने यह शिक्षा दी ।।

बार बार विनवउँ मुनि तोहीं ❀ जिमि यह कथा सुनायहु मोहीं
तिमि जनि हरिहि सुनायहु कबहूँ ❀ चलेउ प्रसंग दुरायहु तबहूँ

हे मुनिवर ! मैं तुम्हारी बारम्बार विनती करता हूँ कि जिस प्रकार यह कथा मुझको सुनाया है। ऐसे प्रसंगों को भगवान्‌श्रीहरिको कभी मत सुनाना और चर्चा चले तो भी छिपा लेना।।

दोहा—शंभु दीन्ह उपदेश हित, नहिं नारदहिं सुहान।
भरद्वाज कौतुक सुनहु, हरि इच्छा बलवान ।।१३६।।

यद्यपि श्रीमहादेवजीने यह हितकारी उपदेश दिया पर वह नारदको अच्छा नहीं लगा। हे भरद्वाजजी ! अब जो कौतुक हुआ उसे सुनो, भगवान् श्रीहरिकी इच्छा ही बलवान् है ।। १३६।।

राम कीन्ह चाहहिं सोई होई ❀ करै अन्यथा अस नहिं कोई
शम्भु वचन मुनि मनहिं न भाए ❀ तब विरंचि के लोक सिधाए

भगवान् श्रीरामचन्द्रजी जो कुछ करना चाहते हैं वही होता है, ऐसा कोई नहीं है जो उसके विपरीत करे ।।१।। श्रीमहादेवजीके वचन नारदजीको अच्छे न लगे, तब वे ब्रह्मलोकको चले गये।

एक बार करतल वर बीणा ❀ गावत हरिगुन गान प्रवीना
क्षीरसिन्धु गवने मुनिनाथा ❀ जहँ बस श्रीनिवास श्रुतिमाथा

एक समय हाथमें सुन्दर वीणा लिए हुए परम प्रवीण श्रीहरिके गुणानुवाद गाते हुए।।३।। मुनिनाथ नारदजी क्षीरसागर में गए, जहाँ लक्ष्मीनिवास भगवान् विष्णु वास करते थे ।।४।।

हरषि मिले उठि रमानिकेता ❀ बैठे आसन ऋषिहि समेता
बोले बिहँसि चराचर राया ❀ बहुत दिनन्हि कीन्हीं मुनि दाया

तब लक्ष्मीकान्त श्रीविष्णु भगवान् प्रसन्नता पूर्वक उठकर नारदजीसे मिले और ऋषि समेत आसन पर विराजे ।।५।। फिर चराचरके स्वामी श्रीहरिने हँसकर कहा—हे मुनीश्वर ! आपने बहुत दिनों में पधारने की कृपा की है ।। ५ ।।

काम चरित नारद सब भाषे ❀ यद्यपि प्रथम बरजि शिव राखे
अति प्रचंड रघुपति कै माया ❀ जेहि न मोह अस को जग जाया

यद्यपि श्रीमहादेवजीने इस बातको कहनेके लिए पहले ही मना किया था, पर देवर्षिनारदजी कह दिये। श्रीरामचन्द्रजीकी माया अत्यन्त प्रबल है वह जिसको नहीं मोहती ऐसा कौन है ? ।।

दोहा—रूख बदन करि बचन मृदु, बोले श्रीभगवान।
तुम्हरे सुमिरन ते मिटहिं, मोह मार मद मान ।।१३७।।

तब श्रीभगवान्‌ने अत्यन्त रूखा मुख करके, मीठी वाणी से कहा—हे मुनिवर ! आपका तो केवल नाम मात्र स्मरण करने पर ही मोह, काम, मद और मान मिट जाते हैं ।। १३७ ।।

सुनु मुनि मोह होइ मन ताके ❀ ज्ञान विराग हृदय नहिं जाके
ब्रह्मचर्य ब्रतरत मति धीरा ❀ तुम्हहिं कि करै मनोभव पीरा

हे मुनीश्वर! सुनिए, मोह तो उसके मन में हुआ करता है, जिसके हृदयमें ज्ञान-वैराग्य नहीं होता। आप तो ब्रह्मचर्यमें निरत मतिधीर हैं, फिर आपको कामदेव क्या पीड़ा दे सकता है?

नारद कहेउ सहित अभिमाना ❀ कृपा तुम्हारि सकल भगवाना
करुणानिधि मन दीख बिचारी ❀ उर अंकुरेउ गर्व तरु भारी

तब नारदजीने घमण्डसे कहा हे भगवान्! यह सब आपकी ही कृपा है ।।३।। करुनानिधान भगवान् ने देखा तो नारदजी के हृदय मैं गर्वरूपी वृक्ष का अंकुर जम गया था ।।४।।

बेगि सो मैं डारिहौं उपारी ❀ पन हमार सेवक हितकारी
मुनिकर हित मम कौतुक होई ❀ अवसि उपाय करब मैं सोई

अतः उसे तुरन्त ही उखाड़ डालूंगा, क्योंकि हमारा प्रण अपने सेवक का भला करने का है। जिसमें नारदजीका भला हो और मेरा कौतुक भी हो जाये, मैं उस उपायको अवश्य करूँगा।।

तब नारद हरिपद सिरनाई ❀ चले हृदय अहमिति अधिकाई
श्रीपति निज माया तब प्रेरी ❀ सुनहु कठिन करनी तेहि केरी

तब अभिमान के सहित नारदजी भगवान्के चरणोंमें शिर नवाकर चल दिये। इसके बाद श्री विष्णु भगवान्ने अपनी मायाको फैलाया और उसने जो कठिन करनी की उसे सुनो।।८।।

दोहा—विरचेउ मगमहँ नगर तेहि, शत योजन विस्तार।
श्रीनिवास पुरते अधिक, रचना विविध प्रकार ।।१३८।।

उस मायाने मार्गमें सौ योजनके विस्तारका लम्बा और चौड़ा एक नगर निर्माण कर दिया, जिसकी भाँति-भाँति की रचना भगवान् श्री हरिके बैकुण्ठसे भी अधिक थी ।। १३८ ।।

बसहिं नगर सुन्दर नरनारी ❀ जनु बहु मनसिज रति तनुधारी
तेहि पुर बसै शीलनिध राजा ❀ अगनित हय गय सेन समाजा

उस नगर में मानों कामदेव और रति के समान शरीर धारण किए बहुत से सुन्दर स्त्री पुरुष निवास करते थे ।। १ ।। उसी पुर में शीलनिधि नाम का राजा वास करता था, जिसके पास अगणित घोड़े, हाथी और सेना का समाज था ।। २ ।।

सत सुरेस सम विभव बिलासा ❀ रूप तेज बल शील निवासा
विश्वमोहिनी तासु कुमारी ❀ श्रीविमोह जेहि रूप निहारी

सौ इन्द्र के समान जिसका ऐश्वर्य और विलास था तथा जो रूप, बल, तेज एवं शील का निवास था ।।३।। उसके एक कन्या थी, जिसका नाम विश्वमोहिनी था, जिसे देखकर लक्ष्मीजी भी मोहित हो जाती थीं ।। ४ ।।

सो हरिमाया सब गुनखानी ❀ शोभा तासु कि जाइ बखानी
करै स्वयम्बर सो नृप बाला ❀ आए तहँ अगणित महिपाला

वह कन्या श्रीहरिभगवान्‌की मायाके गुणोंकी खान थी, उसकी शोभा क्या बखानी जा सकती है? वह राजा अपनी पुत्रीका स्वयम्वर कर रहा था, जिसके लिये वहाँ अगणित राजा आये हुए थे ॥

मुनि कौतुकी नगर तेहि गयऊ ❀ पुरबासिन्ह सन पूछत भयऊ
सुनि सब चरित भूप गृह आये ❀ करि पूजा नृप मुनि बैठाये

तब कौतुकी नारदजी उस सुन्दर नगर में जाकर नगरवासियों से पूछते हैं ॥ ७ ॥ सब चरित सुनकर राजाके घर आये, राजा ने पूजा करके मुनि को बैठाया ॥ ८ ॥

दोहा—आनि देखाई नारदहिं, भूपति राजकुमारि ।
कहहु नाथ गुनदोष सब, यहिके हृदय बिचारि ॥१३९॥

तब राजा ने कन्याको लाकर नारदजी को दिखाया और कहा कि हे नाथ ! आप इस कन्या के दोष और गुण को अपने हृदय में विचारकर कहिये ॥ १३९ ॥

देखि रूप मुनि बिरति बिसारी ❀ बड़ी बार लगि रहेउ निहारी
लच्छन तासु विलोकि भुलाने ❀ हृदय हरष नहिं प्रगट बखाने

उसके रूप को मुनि बहुत देर तक देखते रहे और अपने वैराग्य को भूल गये ॥ १ ॥ उसके लक्षण देख उनके हृदयमें जो आनन्द पैदा हुआ उसको प्रकट करके नहीं कह सके ॥२॥

जो यहि बरै अमर सो होई ❀ समर भूमि तेहि जीत न कोई
सेवहिं सकल चराचर ताही ❀ बरै शीलनिधि कन्या जाही

फिर बोले--जिसको यह कन्या वरेगी वह अमर हो जायगा और उसको युद्धमें कोई जीत नहीं सकेगा ॥३॥ सभी चराचर जीव उसकी सेवा करेंगे जिसको यह शीलनिधि की कन्या वरेगी ॥

लच्छन सब विचारि उर राखे ❀ कछुक बनाइ भूप सन भाखे
सुता सुलच्छनि कहि नृप पाहीं ❀ नारद चले शोच मन माहीं

इस प्रकार उसके सम्पूर्ण लक्षणों को विचार कर नारदजी मन में रख लिए और कुछ बना कर राजा को सुना दिये ॥५॥ और कहा कि आपकी कन्या सुलक्षिणी है, राजासे ऐसा कहकर नारदजी चल दिए, किन्तु मनमें बड़ा ही सोच रहा ॥ ६ ॥

करौं जाइ सोइ जतन विचारी ❀ जेहि प्रकार मोहिं बरै कुमारी
जप तप कछु न होइ यहि काला ❀ हे विधि मिलै कवन विधि बाला

अब मैं जाकर वही उपाय करूँगा कि जिससे राजकुमारी मुझे वर ले, अर्थात् विवाह करले। इस समय जप-तप कुछ नहीं हो सकता, हे विधाता ! किस प्रकार यह कन्या मुझको मिलेगी ?

दोहा—यहि अवसर चाहिय परम, शोभा रूप विशाल ।
जो विलोकि रीझइ कुवँरि, तब मेलै जयमाल ॥१४०॥

क्योंकि इस समय तो अत्यन्त शोभा और सुन्दरता होनी चाहिए कि जिसको देख कर राजकुमारी मोहित हो जावे और मेरे गले में जयमाल पहना देवे ॥ १४० ॥

हरिसन माँगौं सुन्दरताई ❀ होइहि जात गहरु अति भाई
मोरे हित हरिसम नहिं कोऊ ❀ यहि अवसर सहाय सोइ होऊ

यदि इस समय भगवान्‌के पास सुन्दरता माँगने जाऊँ तो जानेमें बहुत देर लग जायगी और श्रीहरिके समान मेरा भला चाहनेवाला और कोई नहीं है, इस समय वही मेरे सहायक होंगे ।।

बहुविधि विनयकीन्ह तेहि काला❀ प्रगटेउ प्रभु कौतुकी कृपाला
प्रभु विलोकि मुनि नयन जुड़ाने ❀ होइहि काज हिये हरषाने

उस समय नारदजीने अनेक भाँतिसे विनती की तो कौतुकी और कृपालु भगवान् श्रीहरि प्रकट हो गये ।।३।। तब प्रभुका दर्शन करके मुनिवर के नेत्र शीतल हो गये और अब कार्य सिद्ध हो गया, ऐसा समझकर हृदय में हर्षित हुए ।।४।।

अति आरत कहि कथा सुनाई ❀ करहु कृपा प्रभु होहु सहाई
आपन रूप देहु प्रभु मोहीं ❀ आन भाँति नहिं पावौं ओहीं

और अत्यन्त दु:खित मन से कथा सुनाकर कहा—हे प्रभो ! कृपापूर्वक आप मेरी सहायता कीजिये ।।५।। हे प्रभो ! मुझे अपना रूप दीजिए; क्योंकि दूसरे प्रकार से मैं उस राज-कन्या को नहीं पाऊँगा ।।६।।

जेहिविधि नाथ होइ हित मोरा ❀ करहु सो बेगि दास मैं तोरा
निज मायाबल देखि विशाला ❀ हिय हँसि बोले दीनदयाला

हे नाथ ! जिससे मेरी भलाई हो शीघ्र वही उपाय कीजिये, क्योंकि मैं आपका दास हूँ । तब अपनी माया को प्रबल देख दीनों पर दया करनेवाले विष्णुजीने हँसकर कहा—।।८।।

दोहा—जेहि विधि होइहि परमहित, नारद सुनहु तुम्हार ।
सोइ हम करब न आन कछु, बचन न मृषा हमार ।।१४१।।

हे नारदजी ! सुनिये, जिस प्रकार आपका कल्याण होगा; हम वही करेंगे, यह मेरी बात झूठी नहीं हो सकती ।। १४१ ।।

कुपथ माँग रुज व्याकुल रोगी ❀ बैद न देइ सुनहु मुनि जोगी
यहि विधि हित तुम्हार मैं ठयऊ ❀ कहि अस अंतरहित प्रभु भयऊ

हे मुनि ! हे योगिराज ! जिस प्रकार रोग से सन्तप्त रोगी गरिष्ठ वस्तु खाने को माँगे तो वैद्य नहीं देता है ।। १ ।। वैसे ही हमने भी आपका हित करने को विचारा है, यह कह भगवान् अन्तर्ध्यान हो गये ।। २ ।।

माया विवश भए मुनि सूढ़ा ❀ समुझी नहिं हरि गिरा निगूढ़ा
गवने तुरत तहाँ ऋषिराई ❀ जहाँ स्वयंबर भूमि बनाई

उस समय श्रीनारदजी मायाके वशमें पड़कर ऐसे विमूढ़ हो रहे थे कि, श्रीहरिभगवान्‌की बात न समझ सके ।।३।। और फिर तुरन्त वहाँ चले गये कि, जहाँ स्वयंबर भूमि बनाई गयी थी ।।४।।

निज निज आसन बैठे राजा ❀ बहु बनाव करि सहित समाजा

मुनि मन हर्ष रूप अति मोरे ❀ मोहिं तजि आन बरहिनहिं भोरे

स्वयंवरमें बड़े-बड़े राजा अपने-अपने आसनोंपर विराजमान थे, नारदजीके मनमें प्रसन्नता थी कि मेरे पास तो अत्यन्त सुन्दर रूप है, अतएव दूसरे को यह कन्या भूलकर भी नहीं बरेगी ।।

मुनि हित कारन कृपानिधाना ❀ दीन्ह कुरूप न जाइ बखाना
सो चरित्र लखि काहु न पावा ❀ नारद जानि सबहिं शिर नावा

इधर मुनिवर नारदजीका हित करने वाले श्रीरामचन्द्रजी ने उन्हें ऐसा कुरूप कर दिया कि जो बखाना नहीं जाता ।।७।। इस चरित्रको कोई भी नहीं देख पाया और सबने नारदजी को मुनि जानकर प्रणाम किया ।। ८ ।।

दोहा—रहे तहाँ दुइ रुद्रगन, ते जानहिं सब भेउ ।
विप्र वेष देखत फिरहिं, परम कौतुकी तेउ ।। १४२ ।।

वहाँ पर उन सारे भेदों को जाननेवाले भगवान् श्रीमहादेवजीके दो गण मौजूद थे। जो परम कौतुकी ब्राह्मणों का वेष धारण किए सब कुछ देखते फिरते थे ।। १४२ ।।

जेहि समाज बैठे मुनि जाई ❀ हृदय रूप अहमिति अधिकाई
तहँ बैठे महेशगन दोऊ ❀ विप्र वेषगति लखै न कोऊ

जिस समाजमें नारदजी अपने मनमें अधिक रूपका घमण्ड किये बैठे थे ।।१।। उसी स्थान पर श्रीमहादेवजीके दो गण ब्राह्मणोंके भेषमें थे, इसलिए उन्हें कोई नहीं पहचान सका ।।२।।

करहिं कूट नारदहिं सुनाई ❀ नीकि दीन्हि हरि सुन्दरताई
रीझहि राजकुँअरि छबि देखी ❀ इनहि बरिहि हरि जानि विशेषी

वे नारदजीको सुना-सुनाकर हँस-हँसकर कहते थे कि इन्हें तो अच्छी सुन्दरता मिली है। इस छविको देखकर तो राजकुमारी अवश्य रीझेगी और विशेषतः हरि भगवान् समझकर इनको ही बरेगी।।

मुनिहिं मोह मन हाथ पराए ❀ हँसहिं शम्भुगन अति सचुपाये
जदपि सुनहिंमुनि अटपटि बानी ❀ समुझि न परै बुद्धि भ्रम सानी

नारदजीका मन तो मोहवश पराये हाथमें फँसा था और श्रीमहादेवजीके गण प्रसन्नतासे हँस रहे थे ।। ५ ।। यद्यपि नारदजी इन गणों की अटपटी बातें सुन रहे थे, किन्तु बुद्धि भ्रमित होने से बातें समझमें नहीं आईं ।। ६ ।।

काहु न लखा सो चरित विशेखी ❀ सो सरूप नृप कन्या देखी
मरकट बदन भयंकर देही ❀ देखत हृदय क्रोध भा तेही

उस विशेष चरित्रको किसीने नहीं देखा, केवल उस रूपको कन्याने देखा कि ।।७।। इनका मुख तो बन्दरके समान है, उस रूपको देखते ही उसके हृदयमें बड़ा क्रोध उत्पन्न हुआ ।।८।।

दोहा—सखी संग लै कुँवरि तब, चलि जनु राजमराल ।
देखत फिरइ महीप सब, कर सरोज जयमाल ।।१४३।।

तब वह राजकुमारी सखियोंको साथमें लिए इस प्रकारकी चालसे चली मानो राजहंस जा रहा हो। अपने कमल स्वरूप हाथोंमें जयमाल लिए सब राजाओंको देखती फिरती थी ।।१४३।।

जेहि दिशि बैठे नारद फूली ❀ सो दिशि तेहि न बिलोकेउ भूली
पुनि-पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं ❀ देखि दशा हरगन मुसुकाहीं

जिस दिशामें श्रीनारदजी फूले हुए बैठे थे उधर तो उसने भूलकर भी नहीं देखा। इधर बार-बार मुनि उचकते हैं और घबराते हैं तो वह दशा देखकर श्रीमहादेवजी के गण मुस्कुरा रहे थे ।।

धरि नृप तनु तहँ गयऊ कृपाला ❀ कुँअरि हरषि मेली जयमाला
दुलहिन लै गे लक्ष्मि निवासा ❀ नृप समाज सब भयउ निरासा

उसी समय विष्णुजी राजाका वेष धारण करके वहाँ गये तो राजकुमारीने हर्षित मनसे जयमाल पहना दी। फिर तो विष्णुजी दुलहिनको लेकर चले गये, राजाओंका समाज निराश हो गया ।।

मुनि अति बिकल मोहमति नाँठी ❀ मनि गिरि गई छूटि जनु गाँठी
तब हरगन बोले मुसुकाई ❀ निजमुख मकुर विलोकहु जाई

नारद मुनि अत्यन्त विकल हो गये, उनकी बुद्धि नष्ट हो गयी, मानों गाँठसे छूटकर मणि गिर गई हो। तब श्रीमहादेवजीके गणोंने हँसकर कहा जरा, दर्पण में अपना मुख तो जाकर देखिये ।।

अस कहि दोउ भागे भयभारी ❀ बदन दीख मुनि वारि निहारी
रूप बिलोकि क्रोध अति बाढ़ा ❀ तिन्हहिं सराप दीन्ह अति गाढ़ा

ऐसा कहकर दोनों डर के मारे भाग चले, नारदजीने अपने मुखको पानी में जाकर देखा ।।७।। अपना वेष देखते ही उनका क्रोध प्रचण्ड रूप से बढ़ गया, इससे उन्होंने उन दोनों गणों को भारी शाप दे दिया कि– ।।८।।

दोहा–होहु निशाचर जाइ तुम्ह, कपटी पापी दोउ ।
हँसेउ हमहिं सो लेहु फल, बहुरि हँसेउ मुनि कोउ ।।१४४।।

तुम दोनों बड़े कपटी और पापी हो इससे जाकर राक्षस हो जाओ। जैसे हमें हँसे थे, उसका फल लो, अब फिर आगे तो किसी मुनि की हँसी नहीं करोगे ? ।। १४४ ।।

पुनि जल दीख रूप निज पावा ❀ तदपि हृदय संतोष न आवा
फरकत अधर कोप मन माहीं ❀ सपदि चले कमलापति पाहीं

फिर जलमें देखा तो अपना पहले का रूप पाया, किन्तु हृदय में संतोष नहीं आया ।।१।। होठ फड़कने लगे, मनमें महा क्रोधित हो बड़े वेग से लक्ष्मीपति भगवान् विष्णु के पास चले ।।२।।

देहौं साप कि मरिहौं जाई ❀ जगत मोरि उपहास कराई
बीचहि पन्थ मिले दनुजारी ❀ संग रमा सोइ राजकुमारी

(अब या तो चलकर) शाप दूँगा या मरूँगा, क्योंकि उन्होंने संसार में मेरी हँसी कराई है ।। ३ ।। ऐसा विचारते हुए जा ही रहे थे कि, मार्ग में ही भगवान् मिल गए, जिनके साथ लक्ष्मी और राजकुमारी थीं ।। ४ ।।

बोले मधुर बचन सुरसाँई ❀ मुनि कहँ चले विकल की नाईं
सुनत बचन उपजा अति क्रोधा ❀ माया बस न रहा मन बोधा

तब विष्णुजी ने कोमल शब्दों में कहा, हे मुनि ! व्याकुल की तरह कहाँ जा रहे हैं ? यह वचन सुनते ही नारदजी हृदय में बड़े क्रोधित हो गये और मोहवश उनके हृदय में ज्ञान न रहा।।

पर संपदा सकहु नहिं देखी ❀ तुम्हरे इरषा कपट विशेखी
मथत सिन्धु रुद्रहिं बौरायहु ❀ सुरन प्रेरि विष पान करायहु

वे बोले कि, तुम इतने बड़े ईर्षालु और कपटी हो कि पराई सम्पदा को नहीं देख सकते हो ।।७।। समुद्र मथने के समय महादेवजी को पागल बना दिया और देवताओं को भेजकर उनको विष पिला दिया ।। ८ ।।

दोहा—असुर सुरा विष शंकरहिं, आपु रमा मनि चारु ।
स्वारथ साधक कुटिल तुम्ह, सदा कपट व्यवहार ।।१४५।।

इस प्रकार राक्षसों को मदिरा और महादेवजी को विष देकर आपने परम सुन्दर लक्ष्मी और कौस्तुभ मणि को ले लिया । अतः तुम सर्वदा ही कुटिल और कपट व्यवहारी हो ।।१४५।।

परम स्वतन्त्र न शिर पर कोई ❀ भावै मनहिं करहु तुम्ह सोई
भलेहि मन्द मन्दहिं भल करहू ❀ विस्मय हरष न हिय कछु धरहू

तुम पूरे स्वतन्त्र हो, तुम्हारे शिर पर दूसरा कोई नहीं है, इससे जो मन को अच्छा लगता है वही करते हो ।।१।। अच्छे को बुरा और बुरे को अच्छा करते हुए तुम्हारे हृदय में आश्चर्य और हर्ष कुछ नहीं होता ।। २ ।।

डहकि-डहकि परचेहु सब काहू ❀ अति अशंक मन सदा उछाहू
कर्म शुभाशुभ तुम्हहिं न बाधा ❀ अब लगि तुम्हहिं न काहू साधा

सबको डहका-डहका कर धोखा देते हो, अत्यन्त निर्भय हो, तुम्हारे हृदय में सर्वदा ही उत्साह बना रहता है ।। ३ ।। तुम्हें शुभ-अशुभ कर्मों की कोई बाधा भी नहीं है और अभी तक तुम्हें किसी ने साधा भी नहीं है ।। ४ ।।

भले भवन अब बायन दीन्हा ❀ पावहुगे फल आपन कीन्हा
बंचेहु मोहिं जवनि धरि देहा ❀ सोइ तनु धरहु साप मम एहा

परन्तु अब अच्छे घर पर न्योता दिया है, अपनी करनी का फल पाओगे ।।५।। जैसा देह धारण करा मुझे छले हो, मेरा शाप यही है कि तुम वही शरीर धारण करो ।। ६ ।।

कपि आकृति तुम्ह कीन्ह हमारी ❀ करिहहिं कीस सहाय तुम्हारी
मम अपकार कीन्ह तुम्ह भारी ❀ नारि बिरह तुम होब दुखारी

तुमने बन्दर के समान मेरा रूप कर दिया, अतः बन्दर ही तुम्हारी सहायता करेंगे। तुमने मेरा घोर अपकार किया है, इस कारण स्त्री-वियोगसे दुःखी होकर तुम भी दुःखी होवोगे ।।

दोहा—शाप शीश धरि हरषि हिय, प्रभु बहु बिनती कीन्ह ।

निज माया की प्रबलता, करषि कृपानिधि लीन्ह ।।१४६।।

तब प्रभु ने शाप को शिरोधार्य कर, मन में प्रसन्न हो बहुत प्रार्थना की। पश्चात् कृपा-निधान ने अपनी माया की प्रबलता को खींच लिया ।।१४६।।

जब हरि माया दूरि निवारी ❀ नहिं तहँ रमा न राजकुमारी
तब मुनि अति सभीत हरिचरना ❀ गहे पाहि प्रनतारति हरना

और जब भगवान् ने अपनी माया को हटा लिया तब न तो वहाँ लक्ष्मी रहीं और न राजकुमारी ही ।। १ ।। अब तो नारदजी भयभीत हो प्रभु के चरणों में गिर पड़े और कहने लगे कि हे भक्तों के दुःख हरने वाले ! मेरी रक्षा करो ।। २ ।।

मृषा होउ मम साप कृपाला ❀ मम इच्छा कह दीन दयाला
मैं दुर्बचन कहेउँ बहुतेरे ❀ कह मुनि पाप मिटहिं किमि मेरे

हे कृपानिधान ! मेरा शाप व्यर्थ हो जावे, दीनदयालुने कहा, यह मेरी इच्छा पर है—तब नारदजीने कहा कि, मैंने जो आपको बहुत दुर्बचन कहे सो, मेरा यह पाप कैसे नष्ट होगा ?

जपहु जाइ शंकर शत नामा ❀ होइहि हृदय तुरत विश्रामा
कोउ नहिं शिव समान प्रिय मोरे ❀ अस परतीति तजहु जनि भोरे

तब भगवान् ने कहा—जाकर शिव-शत नाम का जप करो तो तुम्हारे हृदय को शीघ्र शान्ति प्राप्त हो जावेगी ।। ५ ।। क्योंकि मुझे शिवजी के समान दूसरा कोई भी प्रिय नहीं है, ऐसा विश्वास भूलकर भी न त्यागिएगा ।। ६ ।।

जेहि पर कृपा न करहिं पुरारी ❀ सो न पाव मुनि भगति हमारी
अस हिय धरि महि बिचरहु जाई ❀ अब न तुम्हहिं माया नियराई

क्योंकि जिसपर महादेवजी कृपा नहीं करते, हे मुनि! वह हमारी भक्ति को नहीं पाता है। ऐसा हृदयमें धारणकर पृथ्वीपर जाकर बिचरो, अब तुम्हारे पास माया नहीं जा सकती ।।

दोहा—बहुविधि मुनिहिं प्रबोधि प्रभु, तब भये अन्तरध्यान।
सत्यलोक नारद चले, करत रामगुन गान ।।१४७।।

बहुत प्रकार नारदजी को समझा-बुझाकर भगवान् अन्तर्धान हो गये। और नारदजी श्रीरामचन्द्रजी का गुणगान करते हुए सत्यधाम अर्थात् बैकुण्ठ को चले गये ।। १४७ ।।

हरगन मुनिहिं जात पथ देखी ❀ विगत मोह मन हरष विशेषी
अति सभीत नारद पहिं आये ❀ गहिपद आरत बचन सुनाये

महादेवजी के गणों ने नारदजी को मार्ग में जाते हुए देखा कि, मुनिको अब मोह नहीं है और मन में अत्यन्त प्रसन्न हैं ।।१।। तब वे दोनों बहुत डरते-डरते नारदजी के पास आए और उनके पाँव पकड़कर आर्त वाणी में बोले—।।२।।

हरगन हम न विप्र मुनिराया ❀ बड़ अपराध कीन्ह फल पाया
शाप अनुग्रह करहु कृपाला ❀ बोले नारद दीनदयाला

हे मुनि ! हम ब्राह्मण नहीं हैं, महादेवजी के गण हैं, हमने जो महान् अपराध किया था, उसका फल पा लिया ।। ३ ।। हे कृपालु ! अब आप हम पर प्रसन्न हो शापानुग्रह कीजिए, तब दीनदयालु नारदजी बोले ।। ४ ।।

निश्चर जाइ होउ तुम दोऊ ❁ वैभव विपुल तेज बल होऊ
भुजबल विश्व जितब तुम जबहीं ❁ धरिहहिं विष्णु मनुज तन तबहीं

तुम दोनों जाकर महान् तेजस्वी, बली ओर ऐश्वर्यवान् राक्षस हो जाओ ।। ५ ।। जब तुम अपनी भुजाओं के बल से जहाँ तक पृथ्वी है संसार को जीत लोगे, तब उसी समय भगवान् विष्णु मनुष्य शरीर धारण करेंगे ।। ६।।

समर मरन हरि हाथ तुम्हारा ❁ होइहहु मुकुत न पुनि संसारा
चले युगल मुनिपद शिरनाई ❁ भए निशाचर कालहिं पाई

जब युद्धमें विष्णुके हाथसे तुम्हारा मरण होगा, तब तुम्हारी मुक्ति होगी । नारदजीके ऐसा कहते ही वे दोनों उनके चरणों पर शिर झुकाकर चल दिए और समय पाकर राक्षस हुए ।।

दोहा—एक कलप यहि हेतु प्रभु, लीन्ह मनुज अवतार ।
सुररंजन सज्जन सुखद, हरि भंजन भुविभार ।।१४८।।

इस प्रकार देवताओं को प्रसन्न करने और सज्जनों को सुख देने के लिए भगवान्ने एक कल्प में अवतार लिया और पृथ्वी का भार हरण किया था ।। १४८ ।।

यहि बिधि जनम करम हरि केरे ❁ सुन्दर सुखद विचित्र घनेरे
कलप-कलप प्रति प्रभु अवतरहीं ❁ चारु चरित नाना विधि करहीं

इसी प्रकार भगवान् के अनेक जन्म-कर्म होते हैं और उनके सुखप्रद बहुत से विचित्र चरित्र होते रहते हैं ।।१।। अवतार के द्वारा प्रत्येक कल्प में भगवान् बहुत प्रकार के ऐसे सुन्दर चरित्र करते रहते हैं ।। २ ।।

तब तब कथा मुनीशन्ह गाई ❁ परम पुनीत प्रबन्ध बनाई
बिबिध प्रसंग अनूप बखाने ❁ करहिं न सुनि आचरज सयाने

तब-तबकी कथा को मुनियों ने परम विचित्र प्रबन्ध में बनाकर गान किया है ।।३।। जिनमें अनेकों प्रसंग अनुपम ढंगसे वर्णन किये हैं, उसे सुनकर बुद्धिमान् लोग आश्चर्य नहीं करते ।। ४ ।।

हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता ❁ कहहिंसुनहिं बहुविधिश्रुतिसन्ता
रामचन्द्र के चरित सुहाये ❁ कल्प कोटि लगि जाहिं न गाए

भगवान् अनन्त हैं और उनकी कथा भी अनन्त हैं, जिसे वेद और सन्त अनेक प्रकारसे कहते और सुनते हैं । रामचन्द्रजीके सुन्दर चरित्र करोड़ों कल्प तक भी नहीं गाये जा सकते ।।

यह प्रसंग मैं कहा भवानी ❁ हरि माया मोहहिं मुनिज्ञानी
प्रभु कौतुकी प्रनत हितकारी ❁ सेवत सुखद सकल दुखहारी

हे भवानी ! यह प्रसंग मैंने तुमसे कहा कि, हरि की माया ऐसी है कि बड़े-बड़े मुनि

भी मोहित हो जाते हैं ।।७।। भगवान् भक्तों के हितकारी और कौतुकी हैं, उनकी सेवा सुखद है और वे समस्त दुःखों के नाश करने वाले हैं ।। ८ ।।

सोरठा—सुर नर मुनि कोउ नाहिं, जो न मोह माया प्रबल ।
अस बिचारि मनमाहिं, भजिय महामयापतिहिं ।।२०।।

देवता, मनुष्य और मुनियों में ऐसा कोई नहीं है कि, जिसे भगवान्‌की प्रबल माया मोहित न करती हो । ऐसा मन में विचारकर महामाया के स्वामी श्रीरामचन्द्रजी का भजन करो ।।२०।।

अपर हेतु सुनु शैलकुमारी ❀ कहौं विचित्र कथा विस्तारी
जेहि कारन अज अगुन अनूपा ❀ ब्रह्म भयउ कोशलपुर भूपा

हे पार्वती ! भगवान्‌के अवतार का अन्य कारण भी सुनो, जिसकी विचित्र कथा विस्तार से कहता हूँ । जिस कारण से वह अजन्मा, निर्गुण और अनुपम ब्रह्म अयोध्या के राजा हुए ।।

जो प्रभु विपिन फिरत तुम देखा ❀ बन्धु समेत धरे मुनि वेषा
जासु चरित अविलोकि भवानी ❀ सती शरीर रहिहु बौरानी

हे पार्वती ! जिस प्रभुको तुमने बनमें भाई लक्ष्मण सहित मुनिवेषमें घूमते हुए देखा था। हे भवानी ! जिनका चरित्र देखकर तुम अपने उस पहलेके सती शरीरमें बावरी-सी हो गई थी ।।

अजहुँ न छाया मिटति तुम्हारी ❀ तासु चरित सुनु भ्रम रुजहारी
लीला कीन्ह जो तेहि अवतारा ❀ सो सब कहिहौं मति अनुसारा

और तुम्हारे ऊपर जिसकी छाया अब-तक भी नहीं मिटती है, इसलिये उस भ्रम के रोग को नाश करनेवाले प्रभु का चरित्र सुनो ।।५।। उन्होंने जो-जो चरित्र उस अवतार में किए हैं, वह सारी लीला मैं अपनी बुद्धि के अनुसार कहूँगा ।। ६ ।।

भरद्वाज सुनि शंकर बानी ❀ सकुचि सप्रेम उमा मुसुकानी
लगे बहुरि बरनै वृषकेतू ❀ सो अवतार भयउ जेहि हेतू

याज्ञवल्क्यजी कहते हैं कि, हे भरद्वाज ! महादेवजी की ऐसी वाणीको सुनकर, पार्वतीजी सकुचकर सप्रेम आदर से मुसकाने लगीं ।।७।। फिर तो महादेवजी भगवान् का अवतार जिस कारण हुआ था, उसका वर्णन करने लगे ।।८।।

दोहा—सो मैं तुम्हसन कहौं सब, सुनु मुनीश मन लाइ ।
राम कथा कलिमल हरनि, मंगल करनि सुहाइ ।।१४९।।

वही मैं तुमसे सारी कथा कहता हूँ, हे मुनिश्वर ! मन लगाकर सुनो । श्रीरामचन्द्रजीकी कथा कलियुगके पापोंको नाश करनेवाली है ।। १४९ ।।

स्वायम्भुव मनु अरु सतरूपा ❀ जिनते भइ नर-सृष्टि अनूपा
दम्पति धरम आचरन नीका ❀ अजहुँ गाव श्रुति जिन्हकै लीका

उन स्वायंभुव मनु और उनकी स्त्री सतरूपा जिनसे मनुष्यों की अनुपम सृष्टि उत्पन्न हुई है। उन दम्पतियोंमें धर्मका आचरण इतना अच्छा था कि अब भी वेद जिनकी लीकको गाते हैं ।।२।।

नृप उत्तानपाद सुत तासू ❀ ध्रुव हरि भगत भये सुत जासू
लघु सुत नाम प्रियब्रत जाही ❀ वेद पुरान प्रशंसहिं ताही

उनके पुत्र राजा उत्तानपाद थे, जिसके बड़े पुत्र ध्रुवनामक श्रीभगवान्‌के भक्त हुए ।।३।। उनके छोटे पुत्र का नाम प्रियव्रत था, जिनकी वेद-पुराण प्रशंसा करते हैं ॥ ४ ॥

देवहूति पुनि तासु कुमारी ❀ जो मुनि कर्दम कै प्रिय नारी
आदिदेव प्रभु दीन दयाला ❀ जठर धरेउ जेहि कपिल कृपाला

मनुकी देवहूति नाम की कन्या थी जो कर्दम मुनिकी प्यारी स्त्री हुई ।। ५ ।। जिनके गर्भ से कृपालु आदि देव दीनदयालु स्वामी कपिल मुनि ने जन्म लिया ।। ६ ।।

सांख्यशास्त्र जिन्ह प्रगट बखाना ❀ तत्त्व विचार निपुन भगवाना
तेहि मनु राज कीन्ह बहुकाला ❀ प्रभु आयसु सबबिधि प्रतिपाला

जिन्होंने प्रसन्न होकर तत्त्वमय सांख्य-शास्त्र का वर्णन किया है, क्योंकि वे भगवान् तत्त्व के विचार में बड़े निपुण थे ।। ७ ।। उन मनु महाराज ने अधिक समय तक राज्य करते हुए भगवान् की आज्ञा का पालन किया ।। ८ ।।

सोरठा—होइ न विषय विराग, भवन बसत भा चौथपन ।
हृदय बहुत दुख लाग, जनम गयऊ हरि भगति बिन।।२१।।

जब उनको घर में रहते वृद्धा-अवस्था आई और विषयोंसे वैराग्य नहीं हुआ तो महान् दुःखी हो विचार करने लगे कि, मेरा यह जन्म तो भगवान्‌की भक्तिके बिना व्यर्थ ही चला गया २१

बरबस राज सुतहिं नृप दीन्हा ❀ नारि समेत गवन बन कीन्हा
तीरथ वर नैमिष विख्याता ❀ अति पुनीत साधक सिधिदाता

तब वे हठात् पुत्रको राज्य दे, रानी सहित जंगलको चले गये। तीर्थोंमें श्रेष्ठ नैमिषारण्य एक अत्यन्त पवित्र और विख्यात तीर्थ है, जिसमें जाकर साधकगण पवित्र सिद्धियोंको प्राप्त करते हैं।।

बसहिं जहाँ मुनि सिद्ध समाजा ❀ तहँ हिय हरषि चले मनु राजा
पंथ जात सोहहिं मतिधीरा ❀ ज्ञान भगति जनु धरेउ शरीरा

जहाँ मुनि और सिद्धजनोंका समाज वास करता था, राजर्षिमनु हर्षित होते हुए वहाँ गये तो मार्गमें वे मतिधीर कैसे शोभायमान लगते थे जैसे ज्ञान और भक्ति साक्षात् शरीर धारण किए जा रहे हों ।।

पहुँचे जाइ धेनुमति तीरा ❀ हरषि नहाने निरमल नीरा
आये मिलन सिद्ध मुनि ज्ञानी ❀ धर्म धुरन्धर ऋषि नृप जानी

चलते-चलते गोमती नदी के तट पर जा पहुँचे, वहाँ उन्होंने प्रसन्न हो उस निर्मल जलमें स्नान किया। उसी समय वहाँ अनेक सिद्ध, मुनि राजा को धर्मात्मा जानकर मिलने आये ।।

जहँ जहँ तीरथ रहे सुहाये ❀ मुनिन सकल सादर करवाये
कृश शरीर मुनि पट परिधाना ❀ सन्त सभा नित सुनहिं पुराना

तब जहाँ-जहाँ जो सुन्दर तीर्थ थे वह सब मुनियोंने आदर सहित कराए । वह दुबले-पतले शरीरवाले राजा मुनियोंके-से वस्त्र धारण किए सन्तोंकी सभामें नित्य पुराण सुनने लगे ।।

दोहा—द्वादस अक्षर मन्त्रवर, जपहिं सहित अनुराग ।
वासुदेव पद पंकरुह, दम्पति मन अतिलाग ।।१५०।।

मंत्रोंमें श्रेष्ठ जो द्वादश अक्षरका मंत्र है 'ओं नमो भगवते वासुदेवाय' उसे प्रेम सहित नित्य जपते थे, उन दम्पतियोंका मन भगवान् वासुदेवके चरणोंमें अत्यन्त लग गया ।। १५० ।।

करहिं अहार शाकफल कन्दा ❋ सुमिरहिं ब्रह्म सच्चिदानन्दा
पुनि हरि हेतु करन तप लागे ❋ वारि अहार मूल फल त्यागे

उस समय वे केवल शाक और कन्द फलों पर ही अपना आहार निश्चित किए सच्चिदानन्द ब्रह्मका स्मरण कर रहे थे ।।१।। फिर वे भगवान्को प्रसन्न करने के लिए तप करने लगे, तब उन्होंने जलका आहार करना आरम्भ किया और मूल तथा फलको छोड़ दिया ।।२।।

उर अभिलाष निरन्तर होई ❋ देखिय नयन परम प्रभु सोई
अगुण अखण्ड अनन्त अनादी ❋ जेहि चितवहिं परमारथ वादी

उनके हृदयमें सर्वदा यही अभिलाषा रहती थी कि उस सच्चिदानन्द भगवान्को नेत्रोंसे देखें। जो भगवान् गुण-रहित, अखण्ड, अनन्त और अनादि हैं और जिनको परमार्थवादी-ही देखते हैं।।

नेति नेति जेहि वेद निरूपा ❋ चिदानन्द निरुपाधि अनूपा
शम्भु विरंचि विष्णु भगवाना ❋ उपजहिं जासु अंश ते नाना

और जिनको वेद भी अन्त नहीं है, ऐसा कहकर गान करते हैं और जो प्रसन्न करनेवाले उपमा रहित हैं। जिनके अंशमात्र से अनेकों महादेव, ब्रह्मा और विष्णु उत्पन्न होते हैं ।।६।।

ऐसे प्रभु सेवक बस अहहीं ❋ भक्त हेतु लीला तन गहहीं
जो यह बचन सन्त श्रुति भाषा ❋ तौ हमार पूरिहि अभिलाषा

ऐसे स्वामी अपने सेवकके वशमें रहकर भक्तोंके हितार्थ लीला से शरीर ग्रहण करते रहते हैं ।।७।। यदि वेदका यह वचन सत्य है, तो मेरी अभिलाषा पूर्ण होगी ।।८।।

दोहा—यहि विधि बीते वर्ष षट, सहस वारि आहार ।
सम्वत् सप्त सहस्र पुनि, रहे समीर अधार ।। १५१ ।।

जब इस प्रकार महाराज मनुको केवल जलके आधार पर अर्थात् जलमात्र पीकर छह हजार वर्ष बीत गये, तो वे फिर सात हजार वर्ष तक वायु के आधार से रहे ।।१५१।।

वर्ष सहस दश त्यागेउ सोऊ ❋ ठाढ़े रहे एक पग दोऊ
विधि हरिहर तप देखि अपारा ❋ मनु समीप आये बहु बारा

दस हजार वर्ष तक उन्होंने उसको भी त्याग दिया और वे दोनों एक पाँवसे खड़े रह-

कर घोर तप करने लगे ।। १ ।।तब ब्रह्मा, विष्णु और महादेवजी उनका ऐसा भारी तप देखकर उनके पास कई बार आये ।।२।।

माँगहु वर बहुभाँति लुभाये ❀ परमधीर नहिं चलहिं चलाये
अस्थिमात्र होइ रहे शरीरा ❀ तदपि मनाग मनहिं नहिं पीरा

और बोले वर माँगो, बहुत भाँतिसे लुभाया; किन्तु वे परम धीर डिगाने से न डिगे। यद्यपि उनका शरीर सूखकर अस्थिमात्र हो रहा था, तो भी उनके मनमें तनिक भी पीड़ा न थी ।।

प्रभु सर्वज्ञ दास निज जानी ❀ गति अनन्य तापस नृप रानी
माँगु-माँगु अस भइ नभ बानी ❀ परम गँभीर कृपामृत सानी

तब सर्वज्ञ प्रभुने उन्हें अपना दास जान और राजा-रानीकी तपस्वियोंकी-सी गति देखकर कि, जैसी दूसरे की न हो, इतने में यह अत्यन्त गंभीर और कृपारूपी अमृतवाणी सुनाई कि वर माँगो ।।

मृतक जियावनि गिरा सुहाई ❀ श्रवणरन्ध्र होइ उर जब आई
हृष्ट-पुष्ट तन भये सुहाये ❀ मानहु अबहिं भवन ते आये

तब इस प्रकार जब मृतकको भी जिलानेवाली सुहावनीवाणी उनके कानके छेदोंको पारकर हृदय में पहुँची । तो, उनके शरीर पुनः हृष्ट-पुष्ट सुन्दर हो गये, मानों अभी घरसे चले आये हों ।।

दोहा—श्रवण सुधा सम बचन सुनि, पुलक प्रफुल्लित गात ।
बोले मनु करि दण्डवत, प्रेम न हृदय समात ।।१५२।।

जब कानोंसे उन्हें ऐसी अमृतवाणी सुनाई पड़ी, तब महाराज मनुका शरीर प्रेमसे पुलकित और प्रफुल्लित हो गया । वे दण्डवत् करके बोले जो प्रेम हृदय में नहीं समाता था ।।१५२।।

सुनु सेवक सुरतरु सुरधेनू ❀ विधि हरिहर बन्दित पद रेनू
सेवत सुलभ सकल सुखदायक ❀ प्रणतपाल सचराचर नायक

हे सेवकों के कल्पवृक्ष ! देवता और गायों के रक्षक ! आपके चरणों की धूलिकी ब्रह्मा, विष्णु और शिव वन्दना करते हैं ।।१।। आप सेवा करनेसे सुलभ और सब प्रकारका सुख देने-वाले तथा भक्तों का पालन करनेवाले और चराचर जगत् के स्वामी हैं ।।२।।

जौं अनाथ हित हम पर नेहू ❀ तौ प्रसन्न ह्वै यह वर देहू
जो स्वरूप बस शिव मनमाहीं ❀ जेहि कारण मुनि जतन कराहीं

हे अनाथों के भला करनेवाले ! यदि आपका हम पर स्नेह है, तो प्रसन्न हो यही वर दीजिये कि ।।३।। आपका जो स्वरूप श्रीमहादेवजीके हृदय में निवास करता है और जिसको जानने के लिए मुनिगण यत्न करते हैं ।।४।।

जो भुसुण्डि मन मानस हंसा ❀ सगुण-अगुण जेहि निगम प्रशंसा
देखहिं हम सो रूप भरि लोचन ❀ कृपा करहु प्रणतारति मोचन

जो रूप कागभुशुण्डिजी के मनरूपी मानसरोवर में हंस के समान है और जिसे सगुण

और निर्गुण कहकर वेदशास्त्र प्रशंसा करते हैं ।।५।। मैं आपके उसी रूप को नेत्र भरकर देखूँ, आप हम पर ऐसी कृपा करें।। ६ ।।

दम्पति बचन परम प्रिय लागे ❀ मृदुल विनीत प्रेम रस पागे
भक्त बछल प्रभु कृपा निधाना ❀ विश्ववास प्रगटे भगवाना

तब दम्पतियों के ऐसे मीठे और प्रेम-रस से पूर्ण वचन प्रभु को बहुत प्यारे लगे ।।७।। इस कारण भक्तवत्सल, कृपानिधान और विश्व में वास करने वाले प्रभु प्रकट हो गये ।।८।।

दोहा–नील सरोरुह नीलमणि, नील नीरधर श्याम ।
लार्जाहं तनु शोभा निरखि, कोटि कोटि शतकाम ।।१५३।।

उन नीलकमल, नीलमणि तथा नीले-नीले मेघ के समान श्याम वर्ण प्रभु के शरीर की शोभा देख सौ करोड़ कामदेव भी लज्जित हो जाते हैं ।। १५३ ।।

शरद-मयंक-बदन छबि सीवाँ ❀ चारु कपोल चिबुकदर ग्रीवाँ
अधर अरुण रद सुन्दर नासा ❀ बिधुकर निकर विनिन्दक हासा

शरद ऋतु के चन्द्रमा के समान जिनके मुख की कान्ति की शोभा थी, जिनके सुन्दर गाल, ठोढ़ी और शंखके समान गर्दन थी ।।१।। लाल-लाल ओठ, सुन्दर दाँत और नासिका तथा चन्द्रमा की किरणों को लज्जित करने वाला जिनका हँसना था ।। २ ।।

नव अंबुज अंबक छबि नीकी ❀ चितवनि ललित भावती जीकी
भृकुटि मनोज चाप छबिहारी ❀ तिलक ललाट पटल दुतिकारी

नवीन कमल के समान सुन्दर जिनके नेत्रों की शोभा थी और जिनकी सुन्दर चितवन जी को भाती थी ।।३।। जिनकी भौंहें कामदेव के धनुषकी शोभाको हरती थीं और चौड़े मस्तक पर विद्युत के समान चमकता हुआ तिलक शोभा दे रहा था ।। ४ ।।

कुण्डल मकर मुकुट सिरभ्राजा ❀ कुटिल केस जनु मधुप समाजा
उर श्रीवत्स रुचिर बनमाला ❀ पदिकहार भूषण मनि जाला

जिनके कानों में मकराकृत कुण्डल, शिर पर मुकुट विराजमान था और घुँघराले बाल, मानों भौंरों के झुण्ड के समान थे ।। ५ ।। श्रीवत्स का चिन्ह हृदय पर और कण्ठ में सुन्दर बनमाला तथा हीरे का हार और मणियों से जड़े हुए आभूषण थे ।। ६ ।।

केहरि कन्धर चारु जनेऊ ❀ बाहु विभूषन सुन्दर तेऊ
करिकर सरिस सुभग भुजदण्डा ❀ कटि निषंग कर सर कोदण्डा

जिनकी गर्दन सिंह के समान ऊँची और कन्धे में जनेऊ शोभायमान है तथा भुजाओं में सुन्दर भूषण धारण किए हुए हैं, ।।६।। जिनकी लम्बी बाहों में बाजूबन्द, कमर में तरकस और हाथ में धनुष-वाण शोभायमान है ।। ६ ।।

दोहा–तड़ित विनिंदक पीतपट, उदर रेख वर तीनि ।
नाभि मनोहर लेति जनु, जमुन भँवर छवि छीनि ।।१५४।।

जिनका पीताम्बर बिजलीको भी मात कर रहा है और पेट पर सुन्दर तीन रेखायें और मनको मोहनेवाली नाभि मानों यमुना के भँवरकी शोभा को छीन ले रही है ।।१५४।।

पद राजीव बरनि नहिं जाहीं ❀ मुनिमन मधुपबसहिं जिन्हमाहीं
बाम भाग शोभित अनुकूला ❀ आदिशक्ति छबिनिधि जगमूला

फिर उनके चरणकमलका वर्णन नहीं हो सकता कि, जिनमें मुनियोंके मनरूपी भौंरे बास करते हैं। जिनके वाम भाग में अनुकूल शोभा की खानि आदि शक्ति, श्रीसीताजी शोभायमान हैं ।।

जासु अंश उपजहिं गुणखानी ❀ अगनित उमा रमा ब्रह्मानी
भृकुटि विलास जासु जग होई ❀ राम बाम दिसि सीता सोई

जिनके अंशसे गुणोंकी खानि अगणित पार्वती, लक्ष्मी और ब्रह्माणी उत्पन्न होती हैं, जिनकी भृकुटि संकेतसे संसार की उत्पत्ति है, वह सीता श्रीरामचन्द्रजीके बाँये भाग में विद्यमान हैं।।

छबि समुद्र हरि रूप बिलोकी ❀ एक टक रहे नयन पट रोकी
चितवहिं सादर रूप अनूपा ❀ तृप्ति न मानहिं मनु सतरूपा

शोभाके समुद्र भगवान् विष्णुके रूप को देखकर नेत्रोंका पलक लेना रुक गया ।।५।। उस अनुपम रूप को सादर एवं प्रेमपूर्वक देखते हुए राजा मनु और शतरूपा को तृप्ति नहीं होती थी ।।६।।

हर्ष विवश तनु दशा भुलानी ❀ परे दण्ड इव गहि पद पानी
सिर परसे प्रभु निज करकंजा ❀ तुरत उठाए करुणापुञ्जा

ऐसे आनन्द के वश होने से शरीरकी दशा भूल गये और पाँव पकड़कर दण्ड के समान गिर पड़े ।। ७ ।। तब अपने कमल के समान हाथों से उनके मस्तक को स्पर्श करते हुए करुणा के समूह प्रभुने तुरन्त ही उन्हें पृथ्वीसे उठा लिया ।। ८ ।।

दोहा—हरषे कृपानिधान पुनि, अति प्रसन्न मोहिं जानि ।
माँगहु वर जोइ भाव मन, महादानि अनुमानि ।। १५५ ।।

फिर कृपानिधानने हर्षित होकर कहा—राजन्! मुझको अत्यन्त प्रसन्न और महादानी समझकर जो तुम्हारे मन को अच्छा लगे, सो वर माँगो ।। १५५ ।।

सुनि प्रभु बचन जोरि युगपानी ❀ धरि धीरज बोले मृदु बानी
नाथ देखि पद कमल तुम्हारे ❀ अब पूरे सब काम हमारे

तब प्रभुके ऐसे बचनको सुनकर महाराज हाथ जोड़ और धैर्य धारणकर मीठी वाणीमें बोले। हे नाथ! आपके चरण-कमलोंका दर्शनकर अब हमारे सब कार्य पूरे हो गये ।।२।।

एक लालसा बड़ि उरमाहीं ❀ सुगम अगम कहि जात सो नाहीं
तुम्हहिं देत अति सुगम गुसाईं ❀ अगम लाग मोहिं निज कृपणाईं

किन्तु हमारें मनमें एक और बड़ी लालसा है जो सुगम तथा अगम भी है, वह कही नहीं जाती ।। ३ ।। हे गोसाईं! यद्यपि आपको वह देने में अत्यन्त सुगम है; किन्तु मुझे अपनी कृपणता से अगम ही लगती है ।। ४ ।।

यथा दरिद्र बिबुध तरु पाई ❀ बहु सम्पति माँगत सकुचाई
तासु प्रभाव न जानहि सोई ❀ तथा हृदय मम संशय होई

जैसे दरिद्र कल्पवृक्षको पाकर भी अधिक सम्पत्ति माँगते हुए संकोच करता है ।।५।। और उसके प्रभाव को नहीं जानता है, वैसे ही मेरे हृदय में शंका हो रही है ।। ६ ।।

सो तुम जानहु अन्तर्यामी ❀ पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी
सकुच बिहाइ माँगु नृपु मोहीं ❀ मोसे नहिं अदेय कछु तोहीं

सो, हे अन्तर्यामी ! आप जानते हैं, मेरा मनोरथ पूर्ण कीजिये। तब भगवान् ने कहा—हे राजन् ! आप संकोच छोड़कर मुझसे माँगिये, मुझे तुम्हारे लिए अदेय कुछ नहीं है कि, जिसे न दे सकूँ ।।

दोहा—दानि शिरोमणि कृपानिधि, नाथ कहौं सतभाव ।
चाहौं तुम्हहिं समान सुत, प्रभुसन कवन दुराव ।।१५६।।

तब मनुने कहा—हे दानियोंमें शिरोमणि ! कृपाके सागर ! और हे नाथ ! मैं सच्चे भावसे कहता हूँ । मैं आपके ही समान पुत्र चाहता हूँ, प्रभु से कौन-सा छिपाव है ? ।। १५६ ।।

देखि प्रीति सुनि बचन अमोले ❀ एवमस्तु करुणानिधि बोले
आपु सरिस खोजउँ कहँ जाई ❀ नृप तव तनय होब मैं आई

तब मनुकी ऐसी प्रीति देख और उनके अमूल्य बचनोंको सुनकर करुणासागर प्रभु ने कहा—'एवमस्तु' ।।१।। परन्तु मैं अपने समान पुत्रको कहाँ जाकर खोजूँ ? इसलिए हे राजन् ! मैं स्वयं ही आकर तुम्हारा पुत्र होऊँगा ।। २ ।।

शतरूपहिं विलोकि कर जोरे ❀ देवि माँगु वर जो रुचि तोरे
जो वर नाथ चतुर नृप माँगा ❀ सोइ कृपालमोहिंअतिप्रियलागा

तब शतरूपाको हाथ जोड़े देख भगवान् ने कहा—हे देवि ! तुम्हारी भी जो इच्छा हो, वर माँगो ।। ३ ।। इस पर उन्होंने कहा—हे नाथ ! मेरे चतुर राजा ने जो वर माँगा है, मुझको भी वही प्रिय लगता है ।। ४ ।।

प्रभु परन्तु सुठि होत ढिठाई ❀ यदपि भक्ति हित तुम्हहिं सोहाई
तुम्ह ब्रह्मादि जनक जगस्वामी ❀ ब्रह्म सकल उर अन्तर्यामी

परन्तु हे प्रभो ! यद्यपि मेरी यह ढिठाई भी भक्तिके कारण आपको अच्छी लग रही है। तथापि आप ब्रह्मादिके पिता समस्त जगत्के स्वामी और सबके अन्तर्यामी साक्षात् ब्रह्मके स्वरूप हैं ।।६।।

अस समुझत मन संशय होई ❀ कहा जो प्रभुप्रमाण पुनि सोई
जे निज भक्त नाथ तव अहहीं ❀ जो सुख पावहिं जो गति लहहीं

परन्तु ऐसा समझते हुए मन में शंका होती है, प्रभु ने जो कहा है, वह प्रमाण सहित सत्य ही है ।। ७ ।। हे नाथ ! जो आपके अपने भक्त हैं उनके लिए आप जो करते हैं ।।८।।

दोहा—सोइ सुख सोइ गति सोइ भगति, सोइ निज चरण सनेहु ।
सोइ विवेक सोइ रहनि प्रभु, हमहिं कृपा करि देहु ।।१५७।।

वही सुख, वही गति, वही भक्ति, वही अपने चरणों में स्नेह, वही ज्ञान और वही रहनि, हे प्रभो ! कृपा करके मुझे दीजिये ॥ १५७ ॥

सुनि मृदुगूढ़ रुचिर वर रचना ❀ कृपासिन्धु बोले मृदु बचना
जो कछु रुचि तुम्हरे मनमाहीं ❀ मैं सो दीन्ह कछु संशय नाहीं

शतरूपाकी इस प्रकार मीठी और सुन्दर गूढ़ वाणीको सुनकर कृपासागर भगवान् मीठी वाणीमें बोले। अच्छा, तुम्हारे मनमें जो कुछ इच्छा है, वही बिना कुछ संशयके मैंने दिया ॥

मातु विवेक अलौकिक तोरे ❀ कबहुँ न मिटहिं अनुग्रह मोरे
बंदि चरण मनु कहेउ बहोरी ❀ अवर एक विनती प्रभु मोरी

हे माता ! मेरी इस कृपासे तुम्हारा यह अलौकिक-ज्ञान कभी न मिटेगा। तब महाराज मनुने प्रभुके चरणोंकी वन्दना करके फिर कहा कि—हे नाथ ! मेरी एक प्रार्थना और है ॥

सुत विषयक तव पद रति होऊ ❀ मोहिं बड़ मूढ़ कहै किन कोऊ
मनिबिनुफनिजिमिजलबिनुमीना❀ मम जीवन तिमि तुमहिं अधीना

आपके चरणों में मेरी पुत्र विषयक प्रीति होनी चाहिये, चाहे कोई मुझे बड़ा मूर्ख ही क्यों न कहे ? ॥ ५ ॥ जैसे मणि के बिना सर्प तथा जल के बिना मछली जीवित नहीं रह सकती, वैसे ही मेरा जीवन आपके अधीन रहे ॥ ६ ॥

अस वर माँगि चरण गहि रहेऊ ❀ एवमस्तु करुणानिधि कहेऊ
अब तुम्ह मम अनुशासन मानी ❀ बसहु जाइ सुरपति रजधानी

ऐसा वर माँगकर महाराज मनु ने प्रभुके चरणोंको पकड़ लिया-तब करुणाणनिधान भगवान्‌ने कहा, एवमस्तु अर्थात् ऐसा ही हो। फिर बोले-अब तुम मेरी आज्ञा मानकर इन्द्रकीराजधानीमें वास करो।

सोरठा—तहँ करि भोग विलास, तात गये कछु काल पुनि।
होइहहु अवध भुवाल, तब मैं होब तुम्हार सुत ॥२२॥

वहाँ कुछ समय तक भोग विलास करके, हे तात ! जब कुछ दिन बाद तुम अयोध्या के राजा होवेगे, तब मैं तुम्हारा पुत्र होऊँगा ॥ २२ ॥

इच्छामय नर वेष सँवारे ❀ होइहौं प्रकट निकेत तुम्हारे
अंसन सहित देह धरि ताता ❀ करिहौं चरित भगत सुखदाता

इस प्रकार मैं अपनी इच्छानुसार मानव शरीर धारणकर आप के घर प्रकट होऊँगा। हे तात ! अपने अंशों सहित शरीर धारणकर, भक्तों को सुख देने वाले चरित्र को करूँगा ॥

जे सुनि सादर नर बड़ भागी ❀ भव तरिहैं ममता मद त्यागी
आदि शक्ति जेहि जग उपजाया ❀ सो अवतरिहि मोरि यह माया

जिसको सुनकर मनुष्य भाग्यशाली बन, मोह और अहंकार को त्यागकर संसार से पार हो जायेंगे। जिस आदि शक्ति ने संसार को उत्पन्न किया है, वह मेरी यह माया भी अवतार लेगी ॥

पुरउब मैं अभिलाष तुम्हारा ❁ सत्य सत्य प्रण सत्य हमारा
पुनि-पुनि असिकहि कृपानिधाना ❁ अन्तर्ध्यान भये भगवाना

इस प्रकार मैं तुम्हारी अभिलाषाको पूर्ण करूँगा, यह मेरा प्रण सत्य है, सत्य है, सत्य है ॥५॥ ऐसा बारम्बार कहकर कृपानिधान भगवान् अन्तर्धान हो गये ॥६॥

दम्पति उर धरि भक्ति कृपाला ❁ तेहि आश्रम निवसे कछु काला
समय पाय तनु तजि अनयासा ❁ जाइ कीन्ह अमरावति बासा

पश्चात् राजा रानी कृपालु श्रीरामचन्द्रजीकी भक्तिको अपने हृदयमें धारणकर उस आश्रममें कुछ समयतक बने रहे। फिर समय पाकर अनायासही शरीर त्यागकर अमरलोकमें जा बास करनेलगे ॥

दोहा—यह इतिहास पुनीत अति, उमहिं कहेउ वृषकेतु ।
भरद्वाज सुनु अपर पुनि, रामजन्म कर हेतु ॥१५८॥

याज्ञवल्क्यजी कहते हैं, इस पवित्र इतिहास को श्रीमहादेवजी ने श्रीपार्वतीजी से कहा। हे भरद्वाज ! श्रीरामचन्द्रजी के जन्म का, अब अन्य कारण सुनो ॥१५८॥

सुनु मुनि कथा पुनीत पुरानी ❁ जो गिरिजा प्रति शम्भु बखानी
विश्वविदित एक कैकय देशू ❁ सत्यकेतु तहँ बसै नरेशू

हे मुनि ! अब वह पवित्र और पुरानी कथा सुनो, जो महादेवजीने पार्वतीसे कही है। संसार में प्रसिद्ध एक केकय नाम का देश है, वहाँ सत्यकेतु नाम का राजा बास करता था ॥२॥

धर्म-धुरन्धर नीति-निधाना ❁ तेज प्रताप शील बलवाना
तेहि के भये युगल सुत बीरा ❁ सब गुण धाम महा रणधीरा

वह राजा धर्मधुरन्धर और नीति का निधान, तेजस्वी, प्रतापी, शीलवान् और बलवान् था। उसके दो बड़े वीर पुत्र उत्पन्न हुए जो कि, सब गुणोंके घर और युद्ध में कुशल थे ॥४॥

रजधानी जेठे सुत आही ❁ नाम प्रतापभानु अस ताही
अपर सुतहिं अरिमर्दन नामा ❁ भुजबल अतुल अचल संग्रामा

जिसके बड़े पुत्र का नाम प्रतापभानु था, राजाने उसीको राजगद्दी का मालिक बनाया ॥५॥ दूसरे पुत्र का नाम अरिमर्दन था और वह भी महाभुजबली और समरमें अचल था ॥६॥

भाइहिं-भाइहिं परम सुप्रीती ❁ सकल दोष बरजित छल रीती
जेठे सुतहिं राज नृप दीन्हा ❁ हरिहित आपु गवन बन कीन्हा

दोनों भाइयोंमें सुन्दर प्रेम था और वे दोनों ही संपूर्ण दोषों और छलोंकी रीतिसे रहित थे। इससे राजा शीघ्रहीं अपने ज्येष्ठ पुत्रको राज्य दे स्वयं प्रभुका भजन करनेके लिए बनको चले गये ॥

दोहा—जब प्रताप रवि भयउ नृप, फिरी दुहाई देश ।
प्रजा पाल अति वेदविधि, कतहुँ नहीं अघ लेश ॥१५९॥

इधर जब प्रतापभानु राजा हुए तब समस्त देश में उनकी दुहाई फिरी और वह वेदकी रीति से प्रजा का पालन करने लगे। उस समय पाप का कहीं लेशं भी नहीं था ॥१५९॥

नृप हितकारक सचिव सुजाना ❀ नाम धर्मरुचि शुक्र समाना
सचिव सयान बन्धु बलबीरा ❀ आपु प्रतापपुञ्ज रणधीरा

राजाके पास धर्मरुचि नामक एक अत्यन्त राज-हितकारी मन्त्री शुक्राचार्यके समान था। एक तो चतुर मंत्री, दूसरे उसका भाई वड़ा ही बलवान् और तीसरे वह स्वयं बड़ा प्रतापी और रणधीर ।।

सेन सङ्ग चतुरङ्ग अपारा ❀ अमित सुभट बल समर जुझारा
सेन बिलोकि राउ हरषाना ❀ अरु बाजे गहगहे निसाना

उसके पास अपार चतुरंगिणी सेना थी, जिसमें असंख्य योद्धा थे, जो युद्ध करनेमें बड़े ही वीर थे। तब अपनी ऐसी सेना को देखकर राजा बड़ा प्रसन्न हुआ और गहगहे बाजे बजने लगे ।।

बिजय हेतु सब कटक बनाई ❀ सुदिन सोधि नृप चलेउ बजाई
जहँ तहँ परी अनेक लराई ❀ जीते सकल भूप बरिआई

तब एक दिन राजा प्रतापभानुने विजयके लिए अपनी सेनाको सजाया और उत्तम दिन शोध-कर धौंसा बजवाता हुआ चला। अनेक लड़ाइयाँ हुईं और उसने सब राजाओंको जीत लिया ।।

सप्तद्वीप भुजबल बश कीन्हे ❀ लै लै दण्ड छाँड़ि नृप दीन्हे
सकल अवनि मण्डल तेहिकाला ❀ एक प्रतापभानु महिपाला

उसने अपनी भुजाओं के बलसे सातों द्वीपोंको वशमें कर लिया और दण्ड लेकर सबको छोड़ दिया। फिर तो उस समय सारे भूमण्डल में एक राजा प्रतापभानु का ही राज्य हो गया ।।

दोहा—स्ववश विश्व करि बाहुबल, निजपुर कीन्ह प्रवेश ।
धर्म अर्थ कामादि सब, सेवहिं सभय नरेश ।।१६०।।

उसने अपने बाहुबलसे समस्त संसारको वशीभूत कर लिया। फिर नगरमें आया। उसे धर्म, अर्थ,काम और मोक्ष सब कुछ प्राप्त था। इस प्रकार सब राजा प्रतापभानुकी सेवा करते थे।। १६०।।

भूप प्रतापभानु बल पाई ❀ कामधेनु भइ भूमि सुहाई
सब दुख बर्जित प्रजा सुखारी ❀ धर्मशील सुन्दर नरनारी

उस समय राजा प्रतापभानु का बल पाकर पृथ्वी अत्यन्त सुन्दर और कामधेनु के समान हो गई। सब प्रजा प्रसन्न थी, किसीको कुछ दुःख न था और नर-नारी सुन्दर धर्मशील थे ।।

सचिव धर्म रुचि हरिपद प्रीती ❀ नृपहित हेतु सिखावत नीती
गुरु सुर सन्त पितर महिदेवा ❀ करै सदा नृप सबकी सेवा

मन्त्री धर्मरुचि भगवान्के चरणोंमें प्रीति करनेवाला था, वह राजाके हितार्थ राजनीति की शिक्षा दिया करता था ।।३।। राजा भी सर्वदा गुरु, देवता, सन्त, पितर और सब ब्राह्मणों की सेवा किया करता था ।।४।।

भूप धर्म जे वेद बखाने ❀ सकल करै सादर सुख माने
दिन प्रति देइ विविधविधि दाना ❀ सुनै शास्त्र बर वेद पुराना

राजाके लिए जितने धर्म वेदोंने वर्णन किए हैं वह सब कुछ राजा आदर सहित सुख मानकर करता था और प्रतिदिन विधिविधानसे दान देते हुए उत्तम शास्त्र और पुराणोंको सुना करता था ॥

नाना वापी कूप तड़ागा ❀ सुमन वाटिका सुन्दर बागा ॥
विप्र भवन सुर भवन सुहाये ❀ सब तीरथन विचित्र बनाये ॥

उसने अनेक बावली, कुएँ, तालाब, पुष्पवाटिका, सुन्दर वगीचे और बाग ॥७॥ ब्राह्मणोंके लिए भवन और देव मन्दिर तथा सब-तीर्थों को बहुत विचित्र ढंग से सुन्दर बनवा दिया ॥८॥

दोहा—जहँ लगि कहे पुराण श्रुति, एक-एक सब याग ।
बार सहस्र-सहस्र नृप, किये सहित अनुराग ॥१६१॥

इस प्रकार जहाँ तक वेदों और पुराणों ने यज्ञादिक बतलाये हैं, उन सबको एक-एक करके राजा प्रतापभानु ने प्रसन्नता सहित हजारों-हजार बार किया ॥ १६१ ॥

हृदय न कछु फल अनुसन्धाना ❀ भूप विवेकी परम सुजाना
करै जो धर्म कर्म मन बानी ❀ वासुदेव अर्पित नृप ज्ञानी

उसके मनमें फलकी कुछ इच्छा नहीं थी, क्योंकि वह राजा बड़ा ज्ञानी और बुद्धिमान् था । इस कारण उसके जितने धर्म-कर्म होते थे, उन सबको वासुदेवके लिए अर्पण किया करता था ॥

चढ़ि वर बाजि बार इक राजा ❀ मृगया कर सब साजि समाजा
विन्ध्याचल गँभीर बन गयऊ ❀ मृग पुनीत बहु मारत भयऊ

एक बार राजा उत्तम घोड़ेपर चढ़कर और शिकारका साज सजाकर ॥३॥ विन्ध्याचल के गहन बनमें गया और वहाँ पहुँचकर उसने बहुतसे पवित्र मृगों को मारा ॥ ४ ॥

फिरत विपिन नृप दीख बराहू ❀ जनु बन दुरेउ ससिहिं ग्रसि राहू
बड़ बिधु नहिं समात मुख माहीं ❀ मनहुँ क्रोध बस उगिलत नाहीं

बन में फिरते हुए एक बाराहको देखा, मानों राहु चन्द्रमाको ग्रस करके बनमें जा छिपा हो । किन्तु बड़ा होनेसे मुखमें नहीं समाता हो और परन्तु क्रोधके वश उसे उगलना भी नहीं चाहता हो ॥

कोल कराल दशन छबि गाई ❀ तनु विशाल पीवर अधिकाई
घुरघुरात हय आरव पाये ❀ चकित विलोकत कान उठाये

उसके विकराल दाँतोंकी शोभाका मैंने वर्णन किया है । उसका शरीर बहुत बड़ा और अधिक मोटा था ॥ ७ ॥ घोड़ेकी आहट पाकर घुरघुराता हुआ सूकर चकित हो कान उठा-उठाकर राजाकी ओर देखने लगा ॥ ८ ॥

दोहा—नील महीधर सिखर सम, देखि विशाल बराह ।
चपरि चलेउ हय सुटुकि नृप, हाँकि न होय निबाह ॥१६२॥

तब उस नीले पर्वतके शिखरके समान बड़े सूकरको देखकर घोड़ा चौकड़ी भरने लगा और राजा घोड़ेकी पीठपर चिपक गया । राजाने बागडोर छोड़ दिया; क्योंकि हाँकनेसे निर्वाह होना कठिन था ॥ १६२ ॥

आवत देखि अधिक रव बाजी ❀ चला बराह मरुत गति भाजी
तुरत कीन्ह नृप सर सन्धाना ❀ महि मिलि गयेउ बिलोकत बाना

घोड़ेको शीघ्रतासे आते देख और उसके टापोंका अधिक शब्द सुनकर सुअर वायु वेगसे भाग चला ॥१॥ उसे भागते देख राजाने झट बाण चढ़ाया तो सुअर पृथ्वीमें सट गया ॥२॥

तकि-तकि तीर महीश चलावा ❀ करि छल सुअर शरीर बचावा
प्रगटत दुरत जाय मृग भागा ❀ रिसिबस भूप चलेउ सँग लागा

राजाने बहुत ताक-ताककर तीर चलाये किन्तु सुअरने छलकरके शरीरको बचा लिया। कभी प्रकट कभी छिपता द्रुत गतिसे भागने लगा, राजा भी उसके पीछे लगा हुआ चला गया॥४॥

गयउ दूरि घन गहन बराहू ❀ जहाँ नहीं गज बाजि निबाहू
अति अकेल बन बहुत कलेशू ❀ तदपि न मृग मग तजइ नरेशू

सुअर बहुत दूर गहन बनमें चला गया जहाँकि हाथी और घोड़े नहीं जा सकते थे। इस प्रकार राजा बनमें अकेले पहुँचे और बहुत क्लेश पाने लगे फिर भी उन्होंने सुअरका पीछा न छोड़ा ॥६॥

कोल बिलोकि भूप बड़ धीरा ❀ भागि पैठि गिरिगुहा गँभीरा
अगम देखि नृप अति पछिताई ❀ फिरेउ महाबन परेउ भुलाई

सुअरने देखा कि राजा धैर्य्यवान् है तो भागकर पर्वतकी गंभीर गुफामें जा छिपा। तब उसे अगम देख राजा मनमें बहुत पछताते हुए वहाँसे लौट पड़े किन्तु वे महाबनमें मार्ग भूल गये॥

दोहा—खेद खिन्न क्षुद्धित तृषित, राजा बाजि समेत।
खोजत व्याकुल सरितसर, जल बिनु भयेउ अचेत ॥१६३॥

राजाको अत्यन्त प्यास लगी थी और उनका घोड़ा भी प्यासा था। इससे वे दुःखित और प्याससे अत्यन्त व्याकुल होकर नदी और तालाबको ढूँढ़ते हुए जल के बिना मूर्छितसे हो गये॥ १६३ ॥

फिरत बिपिन आश्रम एक देखा ❀ तहँ बस नृपति कपट मुनि वेषा
जासु देश नृप लीन्ह छुड़ाई ❀ समर सेन तजि गयेउ पराई

इस प्रकार बनमें घूमते हुए उन्होंने एक आश्रम देखा, जहाँ कपट मुनिके वेषमें एक राजा रहता था। जिसका देश प्रतापभानूने छीन लिया था जो अपनी सेनाको छोड़कर भाग गया था॥२॥

समय प्रतापभानु कर जानी ❀ आपन अति असमय अनुमानी
गयउ न गृह मन बहुत गलानी ❀ मिला न राजहिं नृप अभिमानी

उसने देखा कि यह समय प्रतापभानुका है मेरा नहीं, इससे अपना असमय जान कर घरको नहीं गया और अपने अहंकार वश वह अभिमानी राजा प्रतापभानुसे भी न मिला॥

रिस उर मारि रँक जिमि राजा ❀ विपिन बसै तापस कै साजा
तासु समीप गवन नृप कीन्हा ❀ यह प्रताप रवि तेहि तब चीन्हा

इसप्रकार अपना क्रोध मनमें छिपा दरिद्रके समान तपस्वीके वेषमें वनमें वास करने लगा अब संयोगवश महाराज प्रतापभानु उसीके समीप चले गये और उसने झट इनको पहचान लिया ॥

राउ तृषित नहिं सो पहिचाना ❀ देखि सुवेष महामुनि जाना
उतरि तुरँगते कीन्ह प्रणामा ❀ परम चतुर न कहेउ निजनामा

परन्तु राजा अत्यन्त प्यासे होनेके कारण उसे पहचान न सके वरन सुवेष देखकर कोई बड़ा मुनि समझे। वे घोड़े से उतरकर दण्डवत किए किन्तु मारे चतुरताके अपना नाम न बतलाया ॥

दोहा—भूपति तृषित बिलोकि तेहि, सरवर दीन्ह दिखाय।
मज्जन पान समेत हय, कीन्ह नृपति हरषाय ॥१६४॥

तब राजाको प्यासा देखकर सरोवर दिखला दिया, राजा प्रतापभानुने वहाँ प्रसन्नतापूर्वक घोड़ेके सहित स्नान और जलपान किया ॥१६४॥

गे श्रम सकल सुखी नृप भयऊ ❀ निज आश्रम तापस लै गयऊ
आसन दीन्ह अस्त रबि जानी ❀ पुनि तापस बोला मृदुबानी

जब उनकी थकावट दूर हो गई और राजा सुखी हुए, तब वह तपस्वी उनको अपने आश्रम में लिवा ले गया। सूर्य अस्त हो रहे थे, तब कपटी मुनि उनको आसन देकर कोमल वाणीमें बोला ॥

को तुम कस बन फिरहु अकेले ❀ सुन्दर युवा जीव पर हेले
चक्रवर्ति के लक्षण तोरे ❀ देखत दया लागि अति मोरे

तुम कौन हो ? इस बनमें अकेले कैसे घूम रहे हो ? सुन्दर युवावस्था पाकर प्राणों पर क्यों खेल रहे हो—अर्थात् जीवोंको क्यों दुःख देते हो ? ॥३॥ तुम्हारे शरीरमें तो चक्रवर्तियोंके-से लक्षण हैं, इससे तुमको देखकर मुझको बड़ी दया लग रही है ॥ ४ ॥

नाम प्रतापभानु अवनीशा ❀ तासु सचिव मैं सुनहु मुनीशा
फिरत अहेरहिं परेउँ भुलाई ❀ बड़े भाग्य देखेउँ पद आई

राजाने कहा—हे मुने ! सुनिए, प्रतापभानु नामके एक राजा हैं मैं उनका मन्त्री हूँ ॥५॥ मैं आखेट करते-करते भूल गया किन्तु आपके चरणोंका दर्शन कर बड़ा भाग्यशाली हुआ ॥६॥

हम कहँ दुर्लभ दरश तुहारा ❀ जानतहौं कछु भल होनिहारा
कह मुनि तात भयउ अँधियारा ❀ योजन सत्तर नगर तुम्हारा

अन्यथा मेरे लिए आपका दर्शन अत्यन्त ही दुर्लभ था, अब मैं जानता हूँ कि कुछ अच्छा होनेवाला है ॥७॥ मुनिने कहा—हे तात ! अँधेरा हो गया है, तुम्हारा नगर भी यहाँ से सत्तर योजन की दूरी पर है ॥८॥

दोहा—निशा घोर गम्भीर बन, पन्थ न सूझ सुजान।
बसहु आजु अस जानि जिय, जाएहु होत बिहान॥ १६५ ॥

हे चतुर ! इस घोर रात्रि और गहन वनमें मार्ग भी न दिखाई देगा, ऐसा जानकर तुम आज यहाँ बास करो और प्रातःकाल होते ही चले जाना ॥१६५॥

दोहा–तुलसी जस भवितव्यता, तैसी मिलै सहाय ।
आपु न आवै ताहि पै, ताहि तहाँ लै जाय ॥ १६६ ॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि, भवितव्यता अर्थात् होनहार जैसी होती हैं, उसके अनुसार ही बनाव वन जाता है । या तो वह उसके पास स्वयं ही आ जाता है, या उसको वहाँ ले जाकर पटक देता है ।।१६६।।

भलेहि नाथ आयसु धरि शीशा ❋ बाँधि तुरँग तरु बैठ महीशा
नृप बहु भाँति प्रसंसेउ ताही ❋ चरण बन्दि निज भाग्य सराही

तब हे नाथ ! बड़ा अच्छा है, कहकर राजा आज्ञा शिरोधार्य्यकर घोड़े को पेड़से बाँध आश्रममें जा बैठे । फिर तो अनेक प्रकारसे प्रशंसा करते हुए चरणोंकी वन्दनाकर अपने भाग्यको सराहने लगे ।।

पुनि बोलेउ मृदु गिरा सुहाई ❋ जानि पिता प्रभु करौं ढिठाई
मोहिं मुनीश सुत सेवक जानी ❋ नाथ नाम निज कहौ; बखानी

फिर सुन्दर वाणीमें बोले कि हे स्वामी ! मैं आपको पिताके समान जानकर ढिठाई करता हूँ । हे मुने ! मुझे अपना पुत्र और सेवक जानकर क्षमा करते हुए अपना नाम प्रकट कीजिये ।।४।।

तेहि नहिं जान नृपहिं सो जाना ❋ भूप सुहृद सो कपट सयाना
बैरी पुनि क्षत्रिय पुनि राजा ❋ छलबल कीन्ह चहै निजकाजा

राजाने उसको नहीं पहचाना, वह राजाको पहचान गया, प्रतापभानु सरल चित्त था; किन्तु वह मुनि छल-कपटमें बड़ा निपुण था ।।५।। एक तो शत्रु, दूसरे क्षत्रिय, तीसरे राजा और उसपर भी छल-वलसे पूर्ण, अपना कार्य सिद्ध करना चाहता था ।।६।।

समुझि राज्यसुख दुखित अराती ❋ अवाँ अनल इव सुलगै छाती
सरल बचन नृप के सुनि काना ❋ बैर सँभारि हृदय हरषाना

वह अपने राज्यका सुख सोच दुखित रहते हुए शत्रुतापर तुल गया, उसकी छाती कुम्हार के आँवेकी तरह सुलग रही थी । वह राजाका सरल वचन सुन पिछले वैरको स्मरणकर प्रसन्न हो गया ।।

दोहा–कपट बोरि वाणी मृदुल, बोलेउ युक्ति समेत ।
नाम हमार भिखारि अब, निर्धन रहित निकेत ।। १६७ ।।

वह युक्ति पूर्वक कपटसे सनी हुई मीठी वाणीमें बोला, अब तो मेरा नाम भिखारी है और मैं धनहीन भी हूँ, मेरे घर-द्वार कुछ नहीं है ।।१६७।।

कह नृप जे विज्ञान निधाना ❋ तुम सारिखे गलित अभिमाना
सदा रहहिं अपनपौ दुराए ❋ सब विधि कुशल कुवेष बनाए

राजाने कहा, जो विशेष ज्ञानी होते हैं वे आपहीके समान अभिमान रहित होते हैं । ऐसे लोग। सर्वदा ही सव प्रकारसे अपनेको छिपाये हुए, निपुण होकर भी बुरा वेष बनाये रहते हैं ।।२।।

तेहि ते कहहिं सन्त श्रुति टेरे ❋ परम अकिंचन प्रिय हरि केरे

तुम अस अधन भिखारि अगेहा ❀ होत विरञ्चि शिवहिं सन्देहा

इसी कारण शास्त्र ऐसे संतको परम दरिद्र कहते हुए भी भगवान्‌का भक्त मानते हैं। आप जैसे धनहीन भिखारी और गृहहीनको देखकर ब्रह्मा और महादेवजी भी सन्देहमें पड़ जाते हैं ॥

योसि सोसि तव चरण नमामी ❀ मोपर कृपा करिय अब स्वामी
सहज प्रीति भूपति कै देखी ❀ आपु विषय विश्वास विशेखी

आप चाहे जो कुछ भी हों, मैं आपके चरणोंमें प्रणाम करता हूँ; हे स्वामी ! अब मुझपर कृपा कीजिये ॥५॥ वह राजाकी प्रीतिको देख तथा अपनेमें उनका अधिक विश्वास देखकर ॥६॥

सब प्रकार राजहिं अपनाई ❀ बोलेउ अधिक सनेह जनाई
सुनु सतिभाव कहौं महिपाला ❀ इहाँ बसत बीते बहु काला

सब प्रकारसे राजाको अपनाकर अत्यन्त स्नेह प्रकट करते हुए वह कपटी मुनि बोला—हे राजन् ! सुनो, मैं अपना स्वभाव कहता हूँ कि मुझे यहाँ वास करते हुए बहुत समय व्यतीत हो गया ॥

दोहा—अबलगि मोहिं न मिलेउ कोउ, मैं न जनायेउँ काहु ।
लोक मान्यता अनल सम, करि तप कानन दाहु ॥१६८॥

अबतक मुझे न कोई मिला और न मैंने किसीको जनाया, क्योंकि लोक-बड़ाई अग्निके समान है। वह तपस्याको भस्म कर देती है, इसी कारण बनमें आकर तपस्या करता हूँ ॥१६८॥

सोरठा—तुलसी देखि सुवेष, भूलहिं मूढ़ न चतुर नर ।
सुन्दर केकी देखि, बचन सुधासम अशन अहि ॥२३॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि सुन्दर वेष देखकर मूर्ख ही नहीं बुद्धिमान् मनुष्य भी धोखा खा जाते हैं। मयूर देखनेमें तो शोभायमान लगते हैं, किन्तु आहार सर्पों का ही करते हैं ॥२३॥

ताते गुप्त रहौं जगमाहीं ❀ हरि तजि किमपि प्रयोजन नाहीं
प्रभु जानत सब बिनहिं जनाये ❀ कहहु कवन सिधि लोक रिझाये

इसीसे मैं छिपकर रहता हूँ और भगवान्‌को छोड़ और किसीसे कुछ प्रयोजन नहीं है। प्रभु तो बिना जनाये ही सब जान लेते हैं, फिर दुनियाँको रिझानेसे क्या फल सिद्ध होगा ? ॥ २ ॥

तुम शुचि सुमतिपरम प्रियमोरे ❀ प्रीति प्रतीति मोहिं पर तोरे
अब जो तात दुरावौं तोहीं ❀ दारुण दोष लगै अति मोहीं

हे राजन् ! तुमतो अन्तःकरण के शुद्धहो, बुद्धि भी निर्मल है और मुझमें तुम्हारी दृढ़ प्रीति एवं पक्का भरोसाहै। इससे तुम मेरे परम प्रियहो, हे तात ! यदि मैं तुमसे छल रखूँगा तो निश्चय पाप होगा ॥

जिमि-जिमि तापस कथै उदासा ❀ तिमि-तिमि नृपहिंहोयविश्वासा
देखा स्ववश कर्म मन बानी ❀ तब बोला तापस बक ध्यानी

जैसे-जैसे वह उदासीन अपनी बातें प्रकट करता था, वैसे-वैसे राजा का भरोसा उसपर दृढ़ होता जाता था ॥५॥ इस प्रकार जब उस कपटी मुनिने जान लिया कि अब यह मन बचन और शरीरसे मेरे वशमें है, तब वह बक-ध्यानी बोला ॥ ६ ॥

नाम हमार एकतनु भाई ❀ सुनि नृप बोलेउ पुनि शिरनाई
कहहु नामकर अर्थ बखानी ❀ मोहि सेवक अति आपन जानी

हे भाई! मेरा नाम एकतनु है, तब उसकी ऐसी बात सुनकर राजाने शिर नवाकर फिर उससे पूछा—हे मुनि! आप मुझको अपना अत्यन्त सेवक जानकर अपने नामका स्पष्ट अर्थ बतलाइए ॥

दोहा—आदि सृष्टि उपजी जबहिं, तब उत्पति भइ मोरि।
नाम एकतनु हेतु तेहि, देह न धरिय बहोरि ॥१६९॥

उसने कहा कि—हे राजन्! जब आदि सृष्टि उत्पन्न हुई थी तभी मैं उत्पन्न हुआ। इसीसे मेरा एकतनु नाम पड़ा है, क्योंकि मैंने उस प्रथम शरीरके सिवा आजतक दूसरा शरीर नहीं धारण किया॥

जनि आश्चर्य करहु मनमाहीं ❀ सुत तपते कछु दुर्लभ नाहीं
तप बल ते जग सृजै विधाता ❀ तप बल विष्णु करै परित्राता

हे पुत्र! यह सुनकर आश्चर्य मत करो, तपसे कुछ भी दुर्लभ नहीं है। तपस्याके बलसे ही ब्रह्मा जगत्की रचना करते हैं और तपस्याके प्रतापसे ही विष्णुजी संसारको पालते हैं ॥२॥

तप बल शम्भु करहिं संहारा ❀ तप बल शेष धरहिं महि भारा
तप अधार सब सृष्टि अपारा ❀ तप ते अगम न कछु संसारा

और तपोबलसे शिवजी संहार करते हैं, इसलिए तपसे संसारमें कुछ कठिन नहीं है। तपके बल से ही शेषजी पृथ्वीका भार धरते हैं और जितनी अपार सृष्टि है यह सब तपके आधारसे है ॥

भयउ नृपहिं सुनि अति अनुरागा ❀ कथा पुरातन कहै सो लागा
कर्म धर्म इतिहास अनेका ❀ करै निरूपण विरति विवेका

यह सुनकर राजाको बहुत प्रेम हुआ और वह तपस्वी पुरानी कथाका वर्णन करने लगा॥ ५ ॥ उसने अनेक धर्म-कर्म, इतिहास, ज्ञान और वैराग्यका वर्णन किया ॥ ६ ॥

उद्भव पालन प्रलय कहानी ❀ कहेसि अमित आश्चर्य बखानी
सुनि महीश तापस बश भयऊ ❀ आपन नाम कहन तब लयऊ
कह तापस नृप जानौं तोहीं ❀ कीन्हेउ कपट लाग भल मोहीं

उसने सृष्टिकी रचना, पालन और प्रलयकी कहानी कही और बहुतसी आश्चर्यकी बातें वर्णन कीं। यह बात सुन राजा तपस्वीके वश हो अपना नाम बताने लगा ॥ ७ ॥ तपस्वी बोला मैं तुम्हें जानता हूँ, पर तुमने जो छल किया वह मुझे अच्छा लगा ॥ ८ ॥

सोरठा—सुनु महीप अस नीति, जहँ तहँ नाम न कहहिं नृप।
मोहिं तोहिं पर अति प्रीति, परम चतुरता निरखि तव।२४।

क्योंकि हे राजन्! सुनो ऐसी नीति है कि, राजा लोगोंको अपना नाम जहाँ-तहाँ नहीं कहना चाहिये। आपकी इस चतुरताको देखकर आपपर मेरा प्रेम और भी बढ़गया है ॥२४॥

नाम तुम्हार प्रताप दिनेशा ❀ सत्यकेतु तव पिता नरेशा

गुरु प्रसाद सब जानिय राजा ❀ कहिय न आपन जानि अकाजा

तुम्हारा नाम प्रतापभानु है, तुम्हारे पिताका नाम सत्यकेतु था। हे राजन्! गुरुकी कृपासे हमें सब कुछ ज्ञात है पर दूसरेको नहीं कहते; क्योंकि अपना अनिष्ट हो जाता है ॥२॥

देखि तात तव सहज सुधाई ❀ प्रीति प्रतीति नीति निपुणाई
उपजि परी ममता मन मोरे ❀ कहेउँ कथा निज पूछे तोरे

हे पुत्र! तुम्हारी स्वाभाविक सरलता, प्रीति, नीति और निपुणताको देखकर तुम्हारे प्रति मेरे मनमें पूरी ममता उत्पन्न हो गई है ॥ ३ ॥ जिससे तुम्हारे पूछनेपर मैंने अपनी यह सारी कथा कही है ॥ ४ ॥

अब प्रसन्न मैं संशय नाहीं ❀ माँगु जो भूप भाव मन माहीं
सुनि सुबचन भूपति हर्षाना ❀ गहिपद विनय कीन्ह विधि नाना

हे राजन्! अब मैं तुमपर प्रसन्न हूँ इसमें सन्देह नहीं है, इससे जो तुम्हारे मनको अच्छा लगे वह माँगो ॥५॥ तब उनके ऐसे सुहावने वचन को सुनकर राजा मुनिके चरणों पर गिरकर अनेक प्रकारकी विनती करने लगा ॥६॥

कृपासिन्धु मुनि दर्शन तोरे ❀ चारि पदारथ करतल मोरे
प्रभुहिं तथापि प्रसन्न विलोकी ❀ माँगि अगम वर होउँ अशोकी

हे कृपासिन्धु मुनि! यद्यपि आपके दर्शनसे चारों ही पदार्थ मेरे हाथ आ गये ॥७॥ तथापि आपको प्रसन्न देखकर बड़ा अगम्य वर माँगकर शोक रहित होना चाहता हूँ ॥८॥

दोहा—जरा मरण दुख रहित तनु, समर न जीतै कोउ।
एक छत्र रिपुहीन महि, राज कलपसत होउ ॥१७०॥

मैं चाहता हूँ कि आपकी कृपासे मेरा यह शरीर जरा (बुढ़ापा), मृत्यु आदि दुःख से रहित हो जावे और युद्धमें मुझे कोई जीत न सके। पृथ्वी पर मेरा निष्कण्टक एक छत्र राज्य सौ कल्प तक होवे ॥१७०॥

कह तापस नृप ऐसेइ होऊ ❀ कारन एक कठिन सुनु सोऊ
कालहु तव पद नाइय सीसा ❀ एक विप्रकुल छाँड़ि महीसा

तपस्वीने कहा—हे राजन्! ऐसा ही होगा, परन्तु इसमें जो एक कठिन कारण है वह सुनो ॥१॥ हे राजन्! मेरे वरदानसे तो काल भी तुम्हारे चरणोंमें शिर नवायेगा; परन्तु एक ब्राह्मणका कुल तुम्हारे वशमें न होगा ॥२॥ क्योंकि—

तप बल बिप्र सदा बरियारा ❀ तिनके कोप न कोउ रखवारा
जो विप्रन बस करहु नरेशा ❀ तब तव वश विधि विष्णु महेशा

ब्राह्मण लोग तपस्याके बलसे बड़े बलवान् हो जाते हैं, उनके कोप करने पर संसार में ऐसा कोई नहीं है जो रक्षा कर सके ॥३॥ हे राजन्! यदि तुम ब्राह्मणोंको वशमें कर सको तो मानो ब्रह्मा, विष्णु और महादेव भी तुम्हारे वशमें हो गये ॥४॥

चल न ब्रह्म कुल सन बरियाई ❀ सत्य कहौं दोउ भुजा उठाई

बिप्र शाप बिनु सुनु महिपाला ❀ तोर नाश नहिं कवनेहुँ काला

अत: ब्राह्मणकुलसे बरिआई नहीं चल सकती, यह बात दोनों भुजा उठाकर कह रहा हूँ कि सत्य है । हे राजन् ! ब्राह्मणोंके शापके बिना तुम्हारा विनाश किसी कालमें भी संभव नहीं है ।।

हरषेउ राउ बचन सुनि तासू ❀ नाथ न होय मोर अब नासू
तव प्रसाद प्रभु कृपानिधाना ❀ मोकहँ सर्व काल कल्याना

तब उसकी ऐसी बातको सुनकर राजा अत्यन्त प्रसन्न हो बोला, हेनाथ ! अब मेरा नाश नहीं होगा । हे प्रभो ! कृपानिधान ! आपके प्रभावसे अब मेरा सर्वकालमें कल्याण ही होगा ।।

दोहा—एवमस्तु कहि कपट मुनि, बोला कुटिल बहोरि ।
मिलब हमार भुलाब जनि, कहहु त मोरि न खोरि ।।१७१।।

तब 'एवमस्तु' ऐसा कहकर वह कपटी मुनि कुटिल वाणीसे बोला कि, देखो यदि मेरा मिलन और अपना बनमें भूल जाना, यह किसीसे कहोगे तो फिर मेरा दोष न देना—अर्थात् कह दोगे तो अच्छा न होगा ।।१७१।।

ताते मैं तोहिं बरजौं राजा ❀ कहे कथा तव परम अकाजा
छठें श्रवण यह परत कहानी ❀ नाश तुम्हार सत्य मम बानी

हे राजन् ! मैं तुम्हें मना करता हूँ कि, यह कथा कहनेसे तुम्हारा बड़ा अनिष्ट होगा। क्योंकि जो यह बात छठें कानमें पड़ जायगी तो तुम्हारा नाश हो जायगा मेरी यह वाणी सत्य है ।।

यह प्रगटे अथवा द्विज शापा ❀ नाश तोर सुनु भानुप्रतापा
आन उपाय निधन तव नाहीं ❀ जो हरिहर कोपहिं मन माहीं

हे प्रतापभानु ! सुनो, यह बात प्रगट होनेसे या ब्राह्मणके शापसे तुम्हारा नाश हो सकता है । अन्यथा तुम्हारी मृत्यु नहीं है, चाहे भगवान् विष्णु और शिव भी अपने मनमें कोप क्यों न करें ।।

सत्य नाथ पद गहि नृप भाषा ❀ द्विज गुरुकोप कहहु को राखा
राखै गुरु जो कोप विधाता ❀ गुरु विरोध नहिं कोउ जग त्राता

तब मुनिका पाँव पकड़कर राजाने कहा—हे नाथ ! सत्य है, ब्राह्मण और गुरु के कोपसे कौन बचा सकता है ? ।।५।। ब्रह्माजी के कोप करने पर तो गुरु भी बचा लेतेहैं; किन्तु गुरुके विरोधसे संसार में कोई भी रक्षा नहीं कर सकता ।।६।।

जो न चलब हम कहे तुम्हारे ❀ होय नाश नहिं सोच हमारे
एकहि डर डरपत मन मोरा ❀ विप्रशाप अति घोर कठोरा

यदि मैं आपके कथनानुसार नहीं चलूँगा तो ऐसी दशामें मेरा नाश हो जावे, कोई चिन्ता नहीं है ।।७।। किन्तु हे नाथ ! एक भयसे मेरा मन बहुत ही भयभीत है कि ब्राह्मणों का शाप बड़ा कठोर होता है ।।८।।

दोहा—होंहिं विप्र वश कवन विधि, कहहु कृपा करि सोइ ।
तुम तजि दीनदयाल निज, हितू न देखौं कोइ ।।१७२।।

सो आप मुझे कृपापूर्वक यह बतलाइये कि, ब्राह्मण किस प्रकार मेरे वशमें होवेंगे ? हे दीनदयाल ! आपको छोड़कर मैं अपना कोई हितकारी नहीं देखता हूँ ।।१७२।।

सुनु नृप विविध यतन जगमाहीं ❀ कष्ट साध्य पुनि होइ कि नाहीं
अहै एक अति सुगम उपाई ❀ तहाँ परन्तु एक कठिनाई

हे राजन् ! सुनो, संसार में यत्न अनेक हैं, परन्तु वे सब कष्टसाध्य हैं कि सफल हों या न हों ।।१।। तब भी एक बहुत सरल युक्ति है, परन्तु वहाँ भी एक कठिनाई है ।।२।।

मम आधीन युक्ति नृप सोई ❀ मोर जाब तव नगर न होई
आजु लगे अरु जब तें भयऊँ ❀ काहू के गृह ग्राम न गयऊँ

वह युक्ति मेरे अधीन है, परन्तु तुम्हारे नगरमें मेरा जाना नहीं हो सकता ।। ३ ।। मैं जबसे पैदा हुआ हूँ, तबसे आज तक किसीके घर अथवा ग्राममें नहीं गया हूँ ।।४।।

जौं न जाउँ तव होय अकाजू ❀ बना आय असमंजस आजू
सुनि महीस बोले मृदुबानी ❀ नाथ निगम अस नीति बखानी

और यदि नहीं जाता हूँ तो तुम्हारा बड़ा अकाज होता है, यह तो आज बड़ा असमंजस हुआ। यह सुनकर राजा मधुर वाणीमें बोला कि, हे स्वामी! शास्त्रोंने ऐसी नीति कही है कि—

बड़े सनेह लघुन पर करहीं ❀ गिरिनिजशिरन सदातृण धरहीं
जलधि अगाध मौलि बह फेनू ❀ सन्तत धरणि धरत शिर रेनू

श्रेष्ठजन लघुओं पर स्नेह करते हैं, जैसे पहाड़--अपने मस्तक पर सदा तृण धारण किये रहते हैं ।।७।। अगाध समुद्र भी अपने शिरपर फेनको बहाया करता है, इसी प्रकार पृथ्वी भी धूल धारण किये रहती है ।।८।।

दोहा—अस कहि गहे नरेश पद, स्वामी होहु कृपालु ।
मोहिं लागि दुख सहिय प्रभु, सज्जन दीनदयालु ।। १७३ ।।

ऐसा कहकर राजाने उसका पाँव पकड़ लिया और कहा--हे स्वामी ! मुझपर कृपा कीजिये। हे प्रभो ! आप मेरे लिए यह कष्ट करें, क्योंकि आप सज्जन दीनों पर दया करने वाले हैं १७३

जानि नृपहिं आपन आधीना ❀ बोला तापस कपट प्रवीना
सत्य कहौं भूपति सुनु तोहीं ❀ जग महँ नहिं कछु दुर्लभ मोहीं

तब राजाको अपने अधीन जानकर वह कपटमें प्रवीण तपस्वी बोला ।।१।। हे राजन् ! सुनो, मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि, संसारमें मुझे कुछ भी दुर्लभ नहीं है ।।२।।

अवशि काज मैं करिहौं तोरा ❀ मन क्रम बचन भक्त तैं मोरा
योग-युक्ति-तप - मंत्र - प्रभाऊ ❀ फलै तबहिं जब करिय दुराऊ

मैं तुम्हारा कार्य अवश्य करूँगा, क्योंकि तुम अपने मन, कर्म और वचनसे मेरे भक्त हो ।।३।। परन्तु योग, युक्ति, तप और मंत्रका प्रभाव तभी फलता है जब वह गुप्त रखा जाता है ।।४।।

जौं नरेश मैं करउँ रसोई ❀ तुम परसो मोहिं जान न कोई

अन्न सो जोइ-जोइ भोजन करहीं ❁ सोइ-सोइ तव आयसु अनुसरहीं

हे राजन् ! यदि मैं भोजन बनाऊँ और तुम उसे परसो, परन्तु मुझे कोई जान न सके ।।५।। तब उस अन्नको जो-जो खायेगा, वह तुम्हारी आज्ञाका अनुसरण करेगा ।।६।।

पुनि तिनके गृह जीमे जोई ❁ तव वश होय भूप सुनु सोई
जाय उपाय रचौ तुम एहू ❁ संवत् भरि संकल्प करेहू

हे राजन् ! सुनो, फिर उसके यहाँ जो भोजन करेगा वह तुम्हारे वशमें हो जायगा ।।७।। इस प्रकार तुम जाकर ऐसा ही उपाय रचो और एक वर्ष तक ऐसा ही संकल्प करो ।।८।।

दोहा—नित नूतन द्विज सहस शत, बरहु सहित परिवार ।
मैं तुम्हरे संकल्प लगि, दिनहिं करब जेवनार ।।१७४।।

ऐसे ही नित्य एक लाख नवीन ब्राह्मणोंको भोजनके लिए सपरिवार निमन्त्रण दो । और मैं तुम्हारे संकल्प तक दिनमें ही भोजन तैयार कर दिया करूँगा ।। १७४ ।।

इहि विधि भूप कष्ट अति थोरे ❁ होइहैं सकल विप्र वश तोरे
करिहहिं विप्र होम मख सेवा ❁ तेहि प्रसंग सहजहिं वश देवा

हे राजन् ! इस प्रकार थोड़े ही कष्टसे समस्त ब्राह्मण तुम्हारे वशमें हो जावेंगे ।।१।। एवं ब्राह्मण जो होम यज्ञ और सेवा करेंगे उससे देवता शीघ्रही तुम्हारे वशमें हो जावेंगे ।।२।।

और एक तोहिं कहौं उपाऊ ❁ मैं यहि वेश न आउब काऊ
तुम्हरे उपरोहित कहँ राया ❁ हरि आनब मैं करि निज माया

एक और उपाय बतलाता हूँ, तुम्हारे यहाँ मैं इस वेषमें कभी नहीं आऊँगा ।। ३ ।। उसके लिए हे राजन् ! मैं तुम्हारे पुरोहितको अपनी मायासे हर लाऊँगा ।।४।।

तप बल तेहि करि आपु समाना ❁ रखिहौं इहाँ बरस परिमाना
मैं धरि तासु वेश सुनु राजा ❁ सब विधि तोर सँवारब काजा

और तपस्याके बलसे उसको अपने ही समान करके एक वर्ष तक यहाँ रखूँगा ।।५।। और हे राजन् ! मैं उसका वेष बनाकर सब विधिसे तुम्हारे कार्यको बनाऊँगा ।।६।।

गइ निशि बहुत शयन अब कीजै ❁ मोहिं तोहिं भूप भेंट दिन तीजै
मैं तप बल तोहिं तुरँग समेता ❁ पहुँचैहौं सोवतहि निकेता

हे भूपाल ! अब रात बहुत चली गई शयन करो, अब मेरी और तुम्हारी भेंट तीसरे दिन होगी । मैं अपनी तपस्या के बलसे तुम्हें घोड़ समेत शयन करतेही तुम्हारे घर पहुँचा दूँगा ।।

दोहा—मैं आउब सोइ वेष धरि, पहिचानेउ तब मोहिं ।
जब एकान्त बुलाय सब, कथा सुनावौं तोहिं ।।१७५।।

हे राजन् ! जब मैं पुरोहितका वेष बनाकर आऊँगा, तब तुम मुझे पहचान लेना । जब मैं एकान्तमें बुलाकर तुम्हें सब कथा सुनाऊँगा ।।१७५।।

शयन कीन्ह नृप आयसु मानी ❋ आसन जाइ बैठ छल ज्ञानी
श्रमित भूप निद्रा अति आई ❋ सो किमि सोव सोच अधिकाई

मुनि की आज्ञा मानकर राजा तो सो गया और वह छल-ज्ञानी आसनपर जा बैठा। श्रमित होनेसे राजाको अधिक नींद आ गई, किन्तु वह सोवेगा कैसे, उसको चिन्ता अधिक थी॥

कालकेतु निशिचर तहँ आवा ❋ जेहि सूकर होइ नृपहिं भुलावा
परम मित्र तापस नृप केरा ❋ जानै सो अति कपट घनेरा

वहाँ कालकेतु नामवाला राक्षस आया, जिसने शूकर बनकर राजाको धोखा दिया था ॥ ३ ॥ वह तपस्वी राजा का बड़ा मित्र था और वह बहुत कपट जानता था ॥ ४ ॥

तेहिके शत सुत अरु दशभाई ❋ खल अति अजय देव दुखदाई
प्रथमहिं भूप समर सब मारे ❋ विप्र संत सुर देखि दुखारे

उसके एक सौ पुत्र और दश भाई थे, जो महादुष्ट अजित और देवताओंको दुःख देने वाले थे ॥५॥ तब देवताओंको दुःखी देख राजाने समरमें उन सबको मार डाला था ॥६॥

तेहि खल पाछिल बयरु सँभारा ❋ तापस नृप मिलि मंत्र बिचारा
जेहि रिपु क्षय सोइ रचेसि उपाऊ ❋ भावी वश न जान कछु राऊ

उस दुष्टने अपने पिछले बैरको याद किया और तपस्वी राजाके साथ मिलकर सलाह किया और वह उपाय रचा कि शत्रुका नाश हो जाय, जिसे राजा प्रतापभानु कुछ भी न जान सका ॥

दोहा—रिपु तेजसी अकेल अपि, लघु कर गनिय न ताहु।
अजहुँ देत दुख रवि शशिहिं, शिर अवशेषित राहु ॥१७६॥

तेजस्वी शत्रु अकेला ही क्यों न हो, लेकिन उसको छोटा न गिनना चाहिये। यद्यपि राहु का शिरमात्र ही रह गया है, पर सूर्य और चन्द्रमा को दुःख दिया ही करता है ॥१७६॥

तापस नृप निज सखहिं निहारी ❋ हरषि मिलेउ उठि भयउ सुखारी
मित्रहिं कहि सब कथा सुनाई ❋ जातुधान बोला सुख पाई

तब वह तपस्वी अपने मित्रको देखकर प्रसन्न हो उठकर मिला और सुखी हुआ ॥१॥ मित्रसे सब कथा कहकर सुनाई तो वह राक्षस सुख पाकर बोला ॥ २ ॥

अब साधेउँ रिपु सुनहु नरेशा ❋ जौं तुम्ह कीन्ह मोर उपदेशा
परिहरि शोच रहहु तुम्ह सोई ❋ बिनु औषधि बिआधि बिधिखोई

हे राजन्! सुनो, अब मैंने शत्रुको अच्छी तरह शोधन कर लिया है। जो उपाय मैंने सोचा है उससे बिना औषधके ही विधाता रोगको अच्छा कर देगा, इसलिए चिन्ता त्याग तुम निर्भय रहो॥

कुल समेत रिपु मूल बहाई ❋ चौथे दिवस मिलब मैं आई
तापस नृपहिं बहुत परितोषी ❋ चला महाकपटी अति रोषी

मैं तुम्हारे शत्रुको कुल सहित नाशकर आजके चौथे दिन तुमसे मिलूंगा ॥५॥ इस प्रकार वह अत्यन्त क्रोधी, तपस्वी राजाको बहुत कुछ सान्त्वना देकर चला ॥ ६ ॥

भानुप्रतापहिं बाजि समेता ❀ पहुँचायसि सोवतहि निकेता
नृपहिं नारि पहँ शयन कराई ❀ हय गृह बाँधेसि बाजि बनाई

फिर प्रतापभानुको घोड़े सहित सोतेही उनके घर पहुँचा दिया ॥ ७ ॥ और राजाको ले जाकर रानीके पास सुला, घोड़ेको घुड़सालमें बाँध दिया ॥ ८ ॥

दोहा—राजाके उपरोहितहिं, हरि लै गयउ बहोरि ।
लै राखेसि गिरिखोह महँ, मायाकरि मतिभोरि ॥१७७॥

पश्चात् राजाके पुरोहितको हर ले गया और ले जाकर पर्वतकी कन्दरामें रख, माया कर उसकी बुद्धि को भ्रमित कर दिया ॥ १७७ ॥

आपु विरचि उपरोहित रूपा ❀ परेउ जाइ तेहि सेज अनूपा
जागेउ नृप अनभयउ बिहाना ❀ देखि भवन अति अचरज माना

फिर अपने आपको पुरोहितका रूप बना उसके घरपर पहुँच उसकी शय्यापर सो गया ॥१॥ इधर जब शेषरात्रिमें राजा निद्रासे जागा तो राजभवनको देखकर आश्चर्य करने लगा ॥२॥

मुनि महिमा मनमहुँ अनुमानी ❀ उठेउ गवहिं जेहि जान न रानी
कानन गयेउ बाजि चढ़ि तेही ❀ पुर नर-नारि न जानेउ केही

तब उसे पता चला कि यह उस मुनिकी महिमा है, फिर तो वह ऐसे धीरेसे उठा कि रानी को कुछ पता न चला ॥३॥ फिर घोड़े पर चढ़ बनमें चला गया, किसीको कुछ पता न चला ॥४॥

गये याम पुर भूपति आवा ❀ घर घर उत्सव बाजु बधावा
उपरोहितहिं देख जब राजा ❀चकितबिलोकिसुमिरिसोइकाजा

एक प्रहरके पश्चात् राजा फिर नगरमें आया, घर-घर उत्सव हुए ॥५॥ जब राजाकी दृष्टि पुरोहितपर पड़ी तब वह आश्चर्यचकित हो उस कार्यको स्मरणकर उनकी ओर देखने लगा ॥६॥

युग सम नृपहिं गये दिन तीनी ❀ कपटी मुनिपद हरि मति लीनी
समय जानि उपरोहित आवा ❀ नृपहिं मतो सब कहि समुझावा

राजाको तीन दिन एक युगके समान व्यतीत हुआ, क्योंकि कपटी मुनिने राजाकी बुद्धिका हरण कर लिया था ॥७॥ पश्चात् पुरोहित आया और राजाको सम्मति कह सुनाया ॥८॥

दोहा—नृप हरषेउ पहिचानि गुरु, भ्रमबस रहा न चेत ।
बरेउ तुरत शतसहस वर, विप्र कुटुम्ब समेत ॥१७८॥

राजाने पुरोहितको पहचानकर प्रसन्नता प्रकटकी और भ्रमवश उसको कुछ ख्याल न रहा । उसने एक लाख ब्राह्मणोंको कुल-परिवार सहित भोजनका निमन्त्रण दे दिया ॥१७८॥

उपरोहित जेवनार बनाई ❀छरस चारि विधि जस श्रुतिगाई
मायामय तेहि कीन्ह रसोई ❀ व्यञ्जन बहु गनि सकै न कोई

फिर षट्रस संयुक्त चारों प्रकारका भोजन जैसी विधि शास्त्रमें है पुरोहितने बनाई। उसने मायामय वह भोजन तैयार किया, जिन विशेष व्यंजनोंको कोई गिन नहीं सकता था ॥२॥

बिबिध मृगन्ह कर आमिष राँधा ❀ तेहि महँ बिप्र मांस खल साँधा
भोजन कहँ सब बिप्र बुलाये ❀ पद पखारि आसन बैठाये

उनमें कई प्रकारके जानवरोंका मांस पकाया और उस दुष्टने उसमें ब्राह्मणका भी मांस मिला दिया। जब भोजन तैयार हुआ तब ब्राह्मणोंको बुला राजाने पाँव धोकर आसनपर बिठा दिया।।

परसन लाग जबहिं महिपाला ❀ भइ अकाशवाणी तेहि काला
बिप्र बृन्द उठि-उठि गृह जाहू ❀ है बड़ि हानि अन्न जनि खाहू

जब राजा परोसने लगा तब उसी समय यह आकाशवाणी हुई कि।।५।। हे ब्राह्मणों! इस अन्नके खानेमें बड़ी हानि है, इससे सबलोग उठ-उठकर अपने घर चले जाओ ।।६।।

भयेउ रसोईं भूसुर माँसू ❀ सब द्विज उठे मानि विश्वासू
भूप विकल मति मोह भुलानी ❀ भावी वश न आव मुख बानी

यह रसोई ब्राह्मणके मांससे तैयार हुई है, इसका विश्वास मानकर सब ब्राह्मण उठ गये ।।७।। राजा मोहमें भूल गया और उसकी बुद्धि विकल हो गई, भावीवश उसके मुखसे कोई बात न निकल सकी ।।८।।

दोहा—बोले विप्र सकोप तब, नहिं कछु कीन्ह विचार।
जाय निशाचर होहु तुम, मूढ़ सहित परिवार ।।१७९।।

तब बिना कुछ विचार किये ही क्रोधयुक्त ब्राह्मण राजासे बोले—रे मूर्ख ! तुम अपने परिवार सहित जाकर राक्षस हो जाओ, क्योंकि—।।१७९।।

क्षत्रि-बन्धु तैं विप्र बुलाई ❀ घालै लिये सहित समुदाई
ईश्वर राखा धर्म हमारा ❀ जैहसि तैं समेत परिवारा

क्षत्रिय होकर तूने ब्राह्मणोंको उनके समुदाय सहित नष्ट करनेके लिए बुलाया था।।१।। ईश्वर ने ही हमारा धर्म रक्खा, इससे अब तू अपने परिवार सहित नष्ट हो जायगा ।।२।।

संवत् मध्य नाश तव होई ❀ जलदाता न रहै कुल कोई
नृप सुनि शाप विकल अतित्रासा ❀ भइ बहोरि वर गिरा अकासा

एक वर्षके भीतर तेरे कुलमें कोई जल देनेवाला न रह जायगा।।३।। ब्राह्मणोंके शापको सुनकर राजा अत्यन्त व्याकुल हो गया, तब फिर यह आकाशवाणी हुई कि—।।४।।

बिप्रहु शाप विचारि न दीन्हा ❀ नहिं अपराध भूप कछु कीन्हा
चकित विप्र सब सुनि नभबानी ❀ भूप गयउ जहँ भोजन खानी

हे विप्रों ! आपने विचारकर शाप नहीं दिया, राजाने कोई अपराध नहीं किया है। यह सुनकर सब ब्राह्मण चकित हो गये, एक दूसरेका मुँह देखने लगे; तब राजा पाक गृहमें गया ।।

तहाँ न असन न विप्र सुआरा ❀ फिरेउ राउ मन सोच अपारा
सब प्रसंग महिसुरन सुनाई ❀ त्रसित गिरेउ अवनी अकुलाई

देखा तो, न वहाँ भोजन है और न रसोइया, तब मनमें अपार चिन्ता करते हुए राजा लौट आये और वह प्रसंग ब्राह्मणोंको सुनाते हुए मूर्छित हो पृथ्वी पर गिर पड़े ॥८॥

दोहा—भूपति भावी मिटै नहिं, यदपि न दूषण तोर ।
किये अन्यथा होय नहिं, विप्र शाप अति घोर ॥ १८० ॥

(तब ब्राह्मण बोले) हे राजन् ! होनहार नहीं मिटता, यद्यपि आपका कोई दोष नहीं है—तथापि ब्राह्मणों का शाप कठिन होता है, वह मिट नहीं सकता ॥१८०॥

अस कहि सब महिदेव सिधाये ❁ समाचार पुर लोगन्ह पाये
सोचहिं दूषण दैवहिं देहीं ❁ विरचत हंस काग किय जेहीं

ऐसा कहकर ब्राह्मण चले गये, जब यह समाचार नगरके लोगों को मिला ॥१॥ तब वे चिन्ता करते हुए दैवको दोष देने लगे कि, जिसने राजारूपी हंसको कौवा कर दिया ॥२॥

उपरोहितहिं भवन पहुँचाई ❁ असुर तापसहिं खबरि जनाई
तेहि खल जहँ तहँ पत्र पठाये ❁ सजि-सजि सेन भूप सब आये

इधर उस राजाके पुरोहितको घर पहुँचाकर तपस्वीको सूचना दे दी ॥३॥ फिर तो उस दुष्टने यत्र-तत्र पत्र भेज दिये और बहुतसे राजा सेना सजाकर प्रतापभानुके घर पर चढ़ आये ॥

घेरेउ नगर निशान बजाई ❁ विविध भाँति नित होत लराई
जूझे सकल सुभट करि करणी ❁ बन्धु समेत परेउ नृप धरणी

और डंका बजाकर नगरको घेर लिये, अनेक प्रकारका युद्ध होने लगा ॥५॥ उसमें योद्धा और राजा प्रतापभानु अपने भाई सहित पराक्रम करके धराशायी हुआ ॥६॥

सत्यकेतु कुल कोउ न बाँचा ❁ बिप्र शाप किमि होइ असाँचा
रिपुहिं जीति नृप नगर बसाई ❁ निजपुर गे सब जय यश पाई

सत्यकेतुके कुलमें कोई न बच सका, भला ब्राह्मणोंका शाप असत्य क्यों होता ? इधर शत्रुको जीत नृपतिगण नगरको फिरसे बसा विजयको पाकर चले गये ॥८॥

दोहा—भरद्वाज सुनु जाहि जब, होइ विधाता बाम ।
धूरि मेरु सम जनक यम, ताहि व्याल सम दाम ॥१८१॥

हे भरद्वाज ! सुनो, जब जिसको विधाता टेढ़ा हो जाता है, तब उसको धूलि भी पहाड़ के समान और पिता यमराजके समान तथा रस्सी सर्पके समान हो जाती है ॥१८१॥

काल पाय मुनि सुनु सोइ राजा ❁ भयउ निशाचर सहित समाजा
दशशिर ताहि बीस भुजदण्डा ❁ रावण नाम बीर बरिबंडा

हे मुने ! सुनो, समय आनेपर वही राजा अपने आत्मीयों सहित जाकर राक्षस हुआ। उसके दश शिर और बीस भुजायें थीं, उसका नाम रावण हुआ जो सब वीरों में बड़ा बली था ॥

भूप अनुज अरिमर्दन नामा ❁ भयउ सो कुम्भकरण बलधामा
सचिव जो रहा धर्मरुचि जासू ❁ भयउ विमात्र बन्धु लघु तासू

राजा (प्रतापभानु) का छोटा भाई अरिमर्दन था, वह तो महाबलवान् कुम्भकर्ण नामसे विख्यात हुआ और जो उसका मन्त्री धर्मरुचि था, वह सौतेला भाई हुआ ।।४।।

नाम विभीषण जेहि जग जाना ❁ विष्णु-भक्त विज्ञान निधाना
रहे जो सुत सेवक नृप केरे ❁ भये निशाचर घोर घनेरे

उसका नाम विभीषण था जिसे संसार जानता है, वह परम ज्ञानी और विष्णु का भक्त हुआ ।।५।। और जो राजाके पुत्र और सेवक थे वे अन्य बहुत से भयंकर राक्षस हुए ।।६।।

कामरूप खल जिनिस अनेका ❁ कुटिल भयंकर विगत विवेका
कृपारहित हिंसक सब पापी ❁ वरणि न जाय विश्व परितापी

वे भी दुष्ट, कामरूप और माया करनेवाले, भयानक और अज्ञानी थे ।।७।। वे दया आदि गुणोंसे रहित और जीवघाती थे, जो वर्णन नहीं किया जाता ।।८।।

दोहा—उपजे यदपि पुलस्त्य कुल, पावन अमल अनूप ।
तदपि महीसुर शापवश, भये सकल अघरूप ।।१८२।।

यद्यपि उनका जन्म एक बड़े ही पवित्र और अनुपम पुलस्त्यजी के कुल में हुआ था; तथापि ब्राह्मणों के शाप के कारण वे पापरूप उत्पन्न हुए ।।१८२।।

कीन्ह विविध तप तीनों भाई ❁ परम उग्र सो बरणि न जाई
गयउ निकट तप देखि विधाता ❁ माँगहु वर प्रसन्न मैं ताता

फिर तीनों भाइयोंने अनेक प्रकारसे ऐसा तप किया, जिसका वर्णन नहीं हो सकता ।।१।। उनके ऐसे तपको देखकर ब्रह्माजी उनके पास गये और बोले हे पुत्रों ! वर माँगो ।।२।।

करि बिनती पदगहि दशशीशा ❁ बोला बचन सुनहु जगदीशा
हम काहू कर मरैं न मारे ❁ बानर मनुज जाति दुइ बारे

तब ब्रह्माजीका पाँव पकड़ विनय करते हुए रावण बोला—हे संसारके स्वामी ! सुनिये। हमें यह वर दो कि बन्दर और मनुष्य दो जातियोंको छोड़ मैं और किसीके मारे न मरूँ ।।४।।

एवमस्तु तुम बड़ तप कीन्हा ❁ मैं ब्रह्मा मिलि तोहिं वर दीन्हा
पुनि प्रभु कुम्भकर्ण पहँ गयऊ ❁ तेहि विलोकि मन विस्मय भयऊ

तब वे बोले 'एवमस्तु' ऐसा ही होगा । तुमने बड़ा तप किया है, इसलिए मैं ब्रह्मा तुझसे मिलकर यह वर प्रदान किया ।। ५ ।। फिर वे प्रभु (ब्रह्माजी) कुम्भकर्णके पास गए तो उसे देखकर उनके मनमें यह आश्चर्य हुआ कि—।।७।।

जौं यह खल नित करइ अहारा ❁ होइहि सब उजार संसारा
शारद प्रेरि तासु मति फेरी ❁ माँगेसि नींद मास षट केरी

यदि यह दुष्ट नित्यही भोजन करेगा तो सारा संसार उजाड़ हो जायेगा ।।७।। इससे सरस्वती का आवाहन कर उसकी बुद्धिको फेर दिया और उसने छह मास की नींद माँगी ।।८।।

दोहा—गयेउ विभीषण पास तब, कहा पुत्र बर माँगु।
तेहि माँगेउ भगवन्त पद, कमल अमल अनुरागु ॥१८३॥

तब ब्रह्माजी विभीषणके पास गये और कहा हे पुत्र ! वर माँगो। उसने माँगा कि भगवान्‌के चरणकमलोंमें मेरा अनुराग बना रहे ॥१८३॥

तिन्हहिं देइ वर ब्रह्म सिधाये ❀ हर्षित ते अपने गृह आये
मय तनुजा मन्दोदरि नामा ❀ परम सुन्दरी नारि ललामा

इस प्रकार उन सबको वर देकर ब्रह्माजी अपने लोकको चले गये और इधर रावणादि भी अपने घर चले आये। उसी समय मयदानव की कन्या जो परम सुन्दरी मन्दोदरी थी ॥

सोइ मय दीन्ह रावणहिं आनी ❀ भई सो यातुधान पटरानी
हर्षित भयउ नारि भल पाई ❀ पुनि दोउ बन्धु बिवाहेसि जाई

उसे मयदानवने लाकर रावणको दिया जो रावणकी मुख्य रानी हुई ॥३॥ तब ऐसी अच्छी स्त्रीको पाकर रावण बड़ा खुश हुआ। फिर जाकर दोनों भाइयोंका विवाह किया ॥४॥

गिरि त्रिकूट एक सिन्धु मँझारी ❀ विधि निर्मित दुर्गम बड़ भारी
सोइ मयदानव बहुरि सँवारा ❀ कनक रचित मणि भवन अपारा

समुद्रके बीचमें त्रिकूट नामक पर्वत पर ब्रह्माजीका बनाया हुआ एक बहुत बड़ा किला था ॥५॥ उसमें मयदानवने फिर सुवर्ण खचित मणियोंके अनेक भवन बना दिये ॥६॥

भोगावति जस अहिकुल बासा ❀ अमरावति जस शक्र निवासा
तिन ते अधिक रम्य अति बंका ❀ जग विख्यात नाम तेहि लंका

तब जैसे भोगावतीपुरीमें सर्पकुलका वास है, जैसे अमरावतीमें शक्र (इन्द्र) का निवास है ॥७॥ उससे भी अधिक सुन्दर गढ़ जो कि 'लंका' के नामसे जगत्‌में विख्यात था ॥८॥

दोहा—खाई सिंधु गँभीर अति, चारिहु दिशि फिरि आव।
कनक कोटमणि खचित दृढ़, बरणि न जाइ बनाव ॥१८४॥

उस सुवर्ण-मण्डित किलेके चारों ओर समुद्र सी अन्यन्त गम्भीर खाई थी, दृढ़तापूर्वक मणियोंसे खचित कोट था, जिसके बनाव का वर्णन नहीं किया जा सकता ॥१८४॥

हरिप्रेरित तेहि कल्प जोइ, यातुधान पति होय।
सूर प्रतापी अतुलबल, दल समेत बस सोय ॥१८५॥

तब भगवान्‌की दयासे उस समय जो भी यातुधानपति (राक्षसोंका राजा) होता था वह अत्यन्त शूरवीर प्रतापी अपने दल-बल सहित वहाँ बसता था। किन्तु ॥१८५॥

रहे तहाँ निशिचर भट भारे ❀ ते सब सुरन समर संहारे
अब तहँ रहहिं शक्र के प्रेरे ❀ रक्षक कोटि यक्षपति केरे

जब देवासुर संग्राम हुआ था, तब देवताओंने वहाँके घोर राक्षसोंका संहार कर दिया था ॥१॥ इससे अब वहाँ भगवान् इन्द्रकी प्रेरणासे यक्षपतिके एक करोड़ रक्षक रहते थे ॥२॥

दशमुख कतहुँ खबरि असि पाई ❁ सेन साजि गढ़ घेरेसि जाई
देखि विकट भट अति कटकाई ❁ यक्ष जीव लै गये पराई

जब यह समाचार रावणको मिला तो वह सेना सजाकर गढ़ को चारों ओरसे आकर घेर लिया। उस भयंकर सेना के विकट योद्धाओंको देखकर यक्ष प्राण लेकर भाग गये ।।४।।

फिरि सब नगर दशानन देखा ❁ गयउ सोच सुख भयउ विशेखा
सुन्दर सहज अगम अनुमानी ❁ कीन्ह तहाँ रावण रजधानी

रावणने सारे नगरको फिर कर देखा, चिन्ता दूर हो गई, बड़ा सुखी हुआ। फिर तो उसे सहज ही सुन्दर और अगम्य अनुमान कर रावणने वहाँ अपनी राजधानी स्थापित की ।। ६ ।।

जेहि जस जोग बाँटि गृह दीन्हें ❁ सुखी सकल रजनीचर कीन्हें
एक बार कुबेर पहँ धावा ❁ पुष्पक यान जीति लै आवा

और जिसके योग्य जैसा गृह था रावणने सब निशाचरोंको बाँटकर सब दैत्योंको सुखी कर दिया ।।७।। एक बार कुबेर पर धावा बोला तो पुष्पक विमान जीतकर ले आया ।।८।।

दोहा—कौतुक ही कैलास पुनि, लीन्हेसि जाय उठाय।
मनहुँ तौलि निज बाहुबल, चला अधिक सुख पाय।।१८६।।

फिर खेल ही में एक बार उसने कैलास पर्वतको जाकर उठा लिया, मानों वह अपनी भुजाओं के बल को तौलकर बड़ा सुखी होकर चला ।। १८६ ।।

सुख सम्पति सुत सेन सहाई ❁ जय प्रताप बल बुद्धि बड़ाई
नित नूतन सब बाढ़त जाई ❁ जिमि प्रतिलाभ लोभ अधिकाई

फिर तो सुख-सम्पदा और पुत्र तथा सहायकों सहित उसकी सेना, विजय, प्रताप, बल, बुद्धि और बड़ाई नवीन२ प्रकारसे ऐसे बढ़ने लगी जैसे लाभ पर लाभ होनेसे लालच बढ़ता जाता है ।।

अति बल कुम्भकर्ण अस भ्राता ❁ जेहि कहँ नहिं प्रतिभट जग जाता
करै पान सोवै षट मासा ❁ जागत होय तिहूँपुर त्रासा

उसके कुम्भकर्ण जैसा महाबली भाई था कि जिसके समान वीर संसारमें कोई नहीं था। वह मदिरा पीकर छह महीने सोता और एक दिन जागता तो त्रैलोक्य त्रसित हो जाता था ।।

जौं दिन प्रति अहार कर सोई ❁ विश्व वेगि सब चौपट होई
समर धीर नहिं जाय बखाना ❁ तेहि सम अधिक न कोउ बलवाना

यदि वह प्रतिदिन भोजन करता तो सारा संसार शीघ्र ही चौपट हो जाता। वह युद्धमें धैर्य-धारी था, जिसका वर्णन नहीं हो सकता और उसके समान अधिक बलवान् दूसरा कोई नहीं था ।।

बारिदनाद जेठ सुत तासू ❁ भट महँ प्रथम लीक जग जासू
जेहि न होय रण सन्मुख कोई ❁ सुरपुर नितहिं परावन होई

मेघनाद उसका ज्येष्ठ पुत्र था जो संसारके वीरोंमें गण्यमान था ।।७।। जिसके सामने युद्ध में कोई नहीं खड़ा हो सकता था तथा इन्द्रलोकमें जिसके भयसे भगदड़ मची रहती थी ।।८।।

दोहा—कुमुख अकम्पन कुलिशरद, धूम्रकेतु अतिकाय ।
एक-एक जग जीति सक, ऐसे सुभट निकाय ॥१८७॥

और कुमुख, अकम्पन, वज्रदन्त, धूम्रकेतु और अतिकाय ऐसे एक से एक बड़े योद्धा थे कि, अकेले संसारको जीत सकें ॥ १८७ ॥

कामरूप जानहिं सब माया ❀ सपनेहुँ जिनके मोह न दाया
दशमुख बैठि सभा एक बारा ❀ देख अमित आपन परिवारा

वे सभी कामरूप, मायावी थे, जिनके हृदयमें स्वप्नमें भी दया और ममताका आभास नहीं था । एक समय रावण अपनी सभामें बैठा था कि उसने अपने असंख्य परिवार को देखा ॥

सुत समूह जन परिजन नाती ❀ गनै को पार निशाचर जाती
सेन बिलोकि सहज अभिमानी ❀ बोला बचन क्रोध मद सानी

जिनमें जन परिजन और नाती-पोतों का वह अगणित निशाचरी समूह था कि जिसकी कौन गणना कर पावेगा ॥ ३ ॥ऐसी सेनाको देखकर स्वाभाविक अभिमानी रावण क्रोध और अहंकार युक्त वाणीमें बोला ॥ ४ ॥

सुनहु सकल रजनीचर यूथा ❀ हमरे बैरी बिबुध बरूथा
ते सन्मुख नहिं करहिं लराई ❀ देख सबल रिपु जाहिं पराई

हे सब निशाचरोंके यूथ ! तुम सबलोग सुनो, हमारे शत्रु देवतागण हैं ॥५॥ जो युद्ध में सामने लड़ने आते ही नहीं और शत्रुको बलवान् देखकर भाग जाते हैं ॥ ६ ॥

तिनकर मरण एक विधि होई ❀ कहौं बुझाय सुनहु अब सोई ।
द्विज भोजन मख होम सराधा ❀ सबकर जाय करहु तुम बाधा

उनका मरना एक उपायसे हो सकता है, अब वह समझाकर कहता हूँ सुनो ! तुमलोग जाकर ब्राह्मणोंके भोजनमें, उनके यज्ञ तथा श्राद्धादिक कर्मों में विघ्न-बाधा उपस्थित करो ॥

दोहा—क्षुधा क्षीन बलहीन सुर, सहजहिं मिलिहहिं आय ।
तब मारिहौं कि छाँड़िहौं, भलीभाँति अपनाय ॥ १८८॥

तब भूखसे क्षीण और निर्बल देवता सहजमें ही आकर मिलेंगे । तब इस प्रकार उनको भली-भाँति अपनाकर या तो मार ही डालूँगा या छोड़ दूँगा ॥ १८८ ॥

मेघनाद कहँ पुनि हँकरावा ❀ दीन्ह सीख बल बैर बढ़ावा
जो सुर समरधीर बलवाना ❀ जिनके लरिबे को अभिमाना

फिर मेघनादको बुलवाया और देवताओंसे वैर बढ़ानेकी शिक्षा दिया और कहा—देखो जो देवता युद्ध स्थलमें धैर्यधारी और बलवान् हैं तथा जिन्हें युद्ध करने का अभिमान है ॥

तिनहिं जीत रण आनहु बाँधी ❀ उठि सुत पितु अनुशासन साँधी
इहि बिधि सबहीं आज्ञा दीन्ही ❀ आपुन चलेउ गदा कर लीन्ही

उन्हें संग्राममें जीतकर तुम बाँध लाओ, तब पिता की आज्ञा मानकर वह सजग हो गया ।। ३ ।। इस प्रकार सब को आज्ञा देकर रावण स्वयं हाथमें गदा लेकर चला ।। ४ ।।

चलत दशानन डोलति अवनी ❁ गर्जत गर्भ स्रवत सुर रवनी
रावण आवत सुनेउ सकोहा ❁ देवन तकेउ मेरु गिरि खोहा

रावणके चलनेसे पृथ्वी डगमगाती और गर्जने से देवताओंकी स्त्रियोंके गर्भ गिर जाते थे। रावणको क्रोध युक्त आते सुन, देवताओंने सुमेरु गिरि पर्वतके खोहों का आश्रय लिया ।।६।।

दिगपालन के लोक सिधाये ❁ सूने सकल दशानन पाये
पुनि पुनि सिंहनाद करि भारी ❁ देइ देवतन्हि गारि प्रचारी

इधर रावण दिक्पालोंके लोकमें गया तो वहाँ बिलकुल सब सुनसान पाया ।। ७ ।। तब वह बार-बार घोर गर्जन करके देवताओं को ललकार कर गाली देने लगा ।।८।।

रण मदमत्त फिरै जग धावा ❁ प्रतिभट खोजत कतहुँ न पावा
रवि-शशि पवन वरुण धनुधारी ❁ अग्नि काल यम सब अधिकारी

(रावण) युद्धकेलिये मदान्धहो संसारमें दौड़ने लगा, किन्तु कोई अपने समान योद्धा न मिला। सूर्य, चन्द्रमा, वायुदेव, काल, अग्नि और यमराज आदि सभी उसके अधिकार में थे ।।१०।।

किन्नर सिद्ध मनुज सुर नागा ❁ हठि सबहीके पन्थहिं लागा
ब्रह्म-सृष्टि जहँ लगि तनुधारी ❁ दशमुख वशवर्ती नरनारी
आयसु करहिं सकल भयभीता ❁ नवहिं आय नित चरण विनीता

वह किन्नर, सिद्धजन, मनुष्य, देवता और वासुकि आदि सबके मार्गमें हठ करके पड़ा। ब्रह्मा की सृष्टिमें जहाँ तक शरीरधारी स्त्री-पुरुष थे सब रावणके वशवर्ती हो गये। सब भयभीत हो आज्ञा मानते और नित्य ही आकर उसके चरणोंमें विनीत हो प्रणाम करते थे ।।

दोहा—भुजबल विश्वहिं वश्यकरि, राखेसि कोउ न स्वतन्त्र।
मण्डलीक मणि रावण, राज्य करै निज मन्त्र ।।१८९।।

इस प्रकार अपनी भुजाओंके बलसे उसने संसार को अपने आधीन कर लिया। फिर तो वह मंडलीक रावण अपने मंत्रसे अथवा अपने विचारों द्वारा पृथ्वी का राज्य करने लगा ।।१८९।।

देव यक्ष गन्धर्व नर, किन्नर नाग कुमारि।
जीति बरीं निज बाहु बल, बहु सुन्दरि वर नारि ।।१९०।।

फिर तो उसने देवता, यक्ष, मनुष्य, गन्धर्व, किन्नर और नागों की कन्याओंको बरबस अपने बाहुबलसे जीतकर सुन्दर श्रेष्ठ स्त्रियोंसे विवाह किया ।।१९०।।

इन्द्रजीत सन जो कछु कहेऊ ❁ सो सब जनु पहिलेहि करि रहेऊ
प्रथमहिं जिन्हकहँ आयसु दीन्हा ❁ तिन्हकर चरित सुनहु जो कीन्हा

इन्द्रजीतसे उसने जो कुछ कहा था, वह सारा कार्य मानों उसने पहले ही कर लिया था। उसके पूर्व रावणने जिसको जैसी आज्ञा दी थी, उसका चरित्र सुनो कि क्या किया ।।

देखत भीमरूप सब पापी ❀ निशिचर निकर देव परितापी
करहिं उपद्रव असुर निकाया ❀ नाना रूप धरहिं करि माया

वे देखनेमें भयानक और पापी थे, सब निशाचरों का झुण्ड देवताओं को कष्ट देनेवाला था। इस प्रकार वे राक्षस उपद्रव करते और नाना रूप धारणकर अनेक प्रकार की माया करते थे ॥

जेहि बिधि होय धर्म निरमूला ❀ सो सब करहिं बेद प्रतिकूला
जेहि जेहि देश धेनु द्विज पावहिं ❀ नगर ग्राम पुर आगि लगावहिं

जिस प्रकारसे धर्म निर्मूल हो जावे, वे सभी वेदके प्रतिकूल आचरण करते थे ॥५॥ जिस जिस देशमें गौ-ब्राह्मण पाते, उस-उस नगर, ग्राम और पुरमें आग लगा देते थे ॥६॥

शुभ आचरण कतहुँ नहिं होई ❀ वेद विप्र गुरु मान न कोई
नहिं हरि भक्ति यज्ञ जप दाना ❀ सपनेहु सुनिय न वेद पुराना

उनके इस उपद्रवसे शुभाचरण कहीं नहीं होने पाता था और कोई भी वेद, ब्राह्मण और गुरु को नहीं मानता था ॥७॥ न कहीं कोई भगवद्भक्ति, न कहीं यज्ञ, जप और दान ही होते और न कोई वेद-पुराण को ही सुनने पाता था ॥८॥

छंद—जपजोग बिरागा तप मख भागा श्रवण सुनै दशशीशा ।
आपहिं उठि धावै रहै न पावै धरि सब घालै खीशा ॥
सब भ्रष्ट अचारा भा संसारा धर्म सुनिय नहिं काना ।
तेहि बहु विधि त्रासै देश निकासै जो कह वेद पुराना ॥१९॥

जहाँ कहीं रावण सुनता कि, यहाँ जप, योग, वैराग्य और तप एवं यज्ञ का भाग दिया जाता है—वहाँके लिये वह आप ही उठ दौड़ता था, कोई रहने न पाता और सबको पकड़ कर नष्ट कर देता था। ग्रन्थकार कहते हैं कि—संसारमें ऐसा भ्रष्टाचार हुआ कि धर्म कभी कानों से भी सुनाई नहीं पड़ता था। जो वेद-पुराण कहता था, उनको रावण बहुत प्रकारसे दण्ड देता और देशसे निकाल देता था ॥ १९ ॥

सोरठा—बरनि न जाय अनीति, घोर निशाचर जो करहिं ।
हिंसा पर अति प्रीति, तिनके पापन कवन मिति ॥२५॥

वे चोर (महादुष्ट) राक्षस अनीति और दुराचार करते थे, जो वर्णन करते नहीं बनता। हिंसापर उनका अत्यन्त प्रेम था—तब उनके पापों का क्या अन्त है ? ॥२५॥

बाढ़े खल बहु चोर जुआरी ❀ जे लम्पट परधन परनारी
मानहिं मात-पिता नहिं देवा ❀ साधुन सों करवावहिं सेवा

अनेक चोर, जुआड़ी और दुष्ट बढ़ गये, जो लम्पट और पराये धन तथा पर स्त्रीका ग्रहण करने वाले थे। माता-पिता और देवताओंको न मानने वाले वे साधुओंसे अपनी सेवा करवाते थे ॥२॥

जिनके यह आचरण भवानी ❀ ते निशिचर सम जानहु प्रानी

अतिशय देखि धर्म की हानी ❀ परम सभीत धरा अकुलानी

श्रीमहादेवजी कहते हैं-हे भवानी ! जिनका ऐसा आचरण हो उन प्राणियोंको राक्षसके समान जानो । तब धर्मकी अत्यन्त हानि देखकर पृथ्वी परम भयभीत और व्याकुल हो गई ।

गिरि सरि सिन्धु भार नहिं मोही ❀ जस मोहिं गरुअ एक सुरद्रोही
सकल धर्म देखहिं विपरीता ❀ कहि न सकै रावण भयभीता

पहाड़, नदी और समुद्रका भी भार मुझे वैसा नहीं है जैसा कि एक देवद्रोही मुझे बोझके समान है । सब धर्मों को विपरीत देखती, किन्तु रावणके भयसे कह न सकती थी ।।

धेनु रूप धरि हृदय विचारी ❀ गई तहाँ जहँ सुर मुनि झारी
निज सन्ताप सुनायेसि रोई ❀ काहू ते कछु काज न होई

तब हृदयमें विचार कामधेनुका रूप धारणकर पृथ्वी वहाँ गई, जहाँ मुनिगणों सहित देवगण रहते थे । उसने रो-रोकर अपना दु.ख सुनाया और कहा कि, किसीसे भी कार्य नहीं होता ।।

छंद–सुर मुनि गन्धर्वा मिलकरि सर्वा गे विरञ्चि के लोका ।
सँग गो तनुधारी भूमि विचारी परम विकल भय शोका ।।
ब्रह्मा सब जाना मन अनुमाना मेरो कछु न बसाई ।
जाकरि तैं दासी सो अविनासी हमरो तोर सहाई ।।२०।।

तब मुनियों और गन्धर्वों सहित मिलकर सब देवता पितामह ब्रह्माजीके लोकको गये । साथमें वह गौरूप विचारी पृथ्वी माता भी परम डरी हुई, व्याकुल और शोकित होकर गई । तब ब्रह्माजीने अनुमानके द्वारा सब जानकर अपने हृदयमें विचारकर कहा, हे पृथ्वी ! मेरा कुछ भी वश नहीं है । तू जिसकी दासी है वह अविनाशी भगवान् विष्णु, हमारे और तुम्हारे भी सहायक हैं ।। २० ।।

सोरठा–धरणि धरहु मन धीर, कह विरञ्चि हरिपद सुमिरि ।
जानत जनकी पीर, प्रभु भंजहिं दारुण विपति ।।२६।।

ब्रह्माजीने भगवान्‌के चरणोंका स्मरणकर कहा—हे पृथ्वी ! मनमें धैर्य धरो । प्रभु अपने भक्तोंके दुःखको जाननेवाले हैं, तुम्हारी इस दारुण विपत्तिका अवश्य नाश करेंगे ।।२६।।

बैठे सुर सब करहिं बिचारा ❀ कहँ पाइय प्रभु करिय पुकारा
पुर बैकुण्ठ जान कह कोई ❀ कोउ कह पयनिधि बस प्रभु सोई

इस प्रकार देवता बैठे हुए यह विचार करने लगे कि भगवान्‌को कहाँ पावें कि जाकर अपनी पुकार सुनायें । किसीने कहा बैकुण्ठमें चलना चाहिए और किसीने कहा भगवान् क्षीरसागरमें हैं।।

जाके हृदय भक्ति जस प्रीती ❀ प्रभु तहँ प्रकट सदा यह रीती
तेहि समाज गिरिजा मैं रहेऊँ ❀ अवसर पाय बचन एक कहेऊँ

जिसके हृदयमें जैसी प्रीति और भक्ति है, भगवान् उसी के अनुसार वहाँ प्रगट होते हैं, यह रीति सर्वदासे चली आई है । हे पार्वती ! उस सभामें मैं भी था, अवसर पाकर यह वचन कहा ।।

हरि व्यापक सर्वत्र समाना ❀ प्रेम ते प्रकट होहिं मैं जाना
देश काल दिशि विदिशहु माँहीं ❀ कहहु तो कहाँ जहाँ प्रभु नाहीं

भगवान् सर्वत्र समान भावसे व्याप्त हैं और मैं जानता हूँ कि वे प्रेमसे प्रकट होते हैं। देश, काल, दिशा, विदिशाओंमें कहो तो कौन ऐसा स्थान है कि जहाँ प्रभु नहीं हैं ॥६॥

अग-जगमय सब रहित विरागी ❀ प्रेम ते प्रभु प्रगटहिं जिमि आगी
मोर बचन सबके मन माना ❀ साधु साधु कहि ब्रह्म बखाना

वे स्वरादि सबमें मिले हुए, सबसे परे हैं, किन्तु वे प्रेमसे ऐसेही प्रकट होते हैं कि जैसे काष्ठसे अग्नि। हे पार्वती! मेरा वचन सबको अच्छा लगा, ब्रह्माजीने साधु-साधु कहकर बखान किया ॥

दोहा—सुनि विरंचि मन हरषतनु, पुलक नयन बह नीर।
अस्तुति करत जोरि कर, सावधान मतिधीर ॥१९१॥

ऐसा सुनकर ब्रह्माजीका मन प्रसन्न हो गया और शरीर पुलकायमान हो गया, नेत्रोंसे जल बहने लगा। फिर वे मतिधीर सावधान हो हाथ जोड़कर इसप्रकार स्तुति करने लगे ॥१९१॥

छंद—जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रणतपाल भगवंता।
गोद्विज हितकारी जय असुरारी सिंधुसुता प्रियकन्ता ॥
पालन सुर धरणी अद्भुत करणी मर्म न जानै कोई।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करहु अनुग्रह सोई ॥२१॥

हे देवताओंके स्वामी! हे भक्तोंको सुख देनेवाले और हे शरणागतों के रक्षक भगवान्! हे गौ-ब्राह्मणके हितकारी और राक्षसोंके शत्रु तथा सिन्धु-सुता (लक्ष्मी) के प्यारे कंत (पति) आपकी जय हो। हे भगवन्! आप देवताओंका और पृथ्वीका पालन करनेवाले हैं, आपके अद्भुत कार्योंके भेदको कोई नहीं जानता। आप सहजही कृपालु (कृपा करनेवाले) और दीनों पर दया करनेवाले हैं, वही आप मुझपर अनुग्रह (कृपा) करें ॥ २१ ॥

जय-जय अविनाशी सब घट बासी व्यापक परमानन्दा।
अविगत गोतीता चरित पुनीता माया रहित मुकुन्दा ॥
जेहिलागि विरागी अति अनुरागी विगत मोह मुनिवृन्दा।
निशिवासर ध्यावहिं गुणगण गावहिं जयति सच्चिदानन्दा२२

हे अविनाशी! सबके अन्तःकरण में वास करनेवाले, सर्व व्यापक, परम आनन्द स्वरूप! आपकी जय हो, जय हो। आपकी गति अद्वितीय है, आप इन्द्रियोंसे नहीं जाने जाते, आपके चरित्र पवित्र हैं, हे मुकुन्द! आप माया रहित हो, आपको माया नहीं व्यापती है। आप मुक्तिके देनेवाले हैं, जिस परमात्मा के लिए मुनि लोग विरागी हो अत्यन्त प्रीतिके साथ मोहको छोड़कर रात-दिन ध्यान करते और आपके गुणोंका गान करते हैं, ऐसे सच्चिदानन्द स्वरूप भगवान् की जय हो ॥ २२ ॥

**छंद—जेहि सृष्टि उपाई त्रिविध बनाई संग सहाय न दूजा ।
सो करहु अघारी चिंत हमारी जानिय भक्ति न पूजा ।।
जो भवभय भंजन मुनिमन रंजन गंजन विपति बरूथा ।
मनबचक्रम बानी छाँड़ि सयानी शरण सकल सुरयूथा ।।२३।।**

जिन्होंने अकेले ही अपने, उपाय (युक्ति) से त्रिगुणात्मक सृष्टि की रचना की है । वही पाप नाशक भगवान् हमारी चिन्ता करें । मैं न तो भक्ति जानता हूँ और न पूजा, जो संसार का भय नाश करनेवाले अर्थात् जरा-मरणसे मुक्त करनेवाले और मुनियों के मनको प्रसन्न करनेवाले और कैसी भी विपत्ति क्यों न हो, उसके समूहको जो भस्म करनेवाले हैं । देवताओंके यूथ (समूह) सहित मैं मनसा, वाचा और कर्मणा सयानपन छोड़कर उनकी शरण आया हूँ ।। २३ ।।

**शारद श्रुतिशेषा ऋषय अशेषा जाकहँ कोउ नहिं जाना ।
जेहि दीन पियारे वेद पुकारे द्रवौ सो श्री भगवाना ।।
भवबारिधि मन्दर सब विधि सुन्दर गुणमंदिर सुखपुंजा ।
मुनिसिद्ध सकलसुर परम भयातुर नमत नाथ पदकंजा ।।२४।।**

जिनको शारदा (सरस्वती), वेद, शेषनाग और समस्त ऋषि भी नहीं जानते । जो दीनजनों को प्यारे हैं और वेद भी जिनका यशोगान करते हैं, वही भगवान् हमपर दयालु होवें । संसाररूपी समुद्र को मंथन करनेके लिए मन्दराचल पर्वतके समान और सभी प्रकार सुन्दर गुणोंके धाम और सुखके समूह हैं । उन्हीं नाथ (भगवान्) के चरणकमलों में ये समस्त सिद्ध, मुनि और देवता परम भयभीत हो प्रणाम करते हैं ।।२४।।

**दोहा—जानि सभय सुर भूमि मुनि, बचन समेत सनेह ।
गगन गिरा गम्भीर भइ, हरण शोक सन्देह ।।१९२।।**

इस प्रकार देवता, पृथ्वी और मुनियोंके स्नेहमय वचनोंको सुन और उन्हें भयभीत जानकर शोक और सन्देह को नाश करनेवाली यह गम्भीर आकाशवाणी हुई कि— ।।१९२।।

**जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेशा ❀ तुमहिं लागि धरिहौं नर वेषा
अंशन सहित मनुज अवतारा ❀ लेहौं दिनकर वंश उदारा**

हे मुनियों सहित सुरेश ! भय न करो, तुम्हारे लिए मैं मनुष्य का शरीर धारण करूँगा ।।१।। मैं अपने अंशोंसे (शक्ति सहित) उदार सूर्य वंशमें मनुष्य रूपसे अवतार लूँगा ।।२।।

**कश्यप अदिति महातप कीन्हा ❀ तिन्ह कहँ मैं पूरब वर दीन्हा
ते दशरथ कौशल्या रूपा ❀ कोशलपुरी प्रकट नर भूपा**

पूर्व कालमें जो कश्यप ऋषि और उनकी पत्नी अदितिने घोर तप किया था, उन्हें मैं पहले ही वर दे चुका हूँ । अब वे ही राजा दशरथ और कौशल्या नामसे अयोध्यापुरी में प्रकट हुए हैं ।।

तिनके गृह अवतरिहौं जाई ❀ रघुकुल तिलक सो चारिउ भाई
नारद बचन सत्य सब करिहौं ❀ परम शक्ति समेत अवतरिहौं

उनके घर जाकर रघुकुलमें तिलक रूप चारों भाइयों सहित अवतार लूँगा ।।५।। नारदजीने जो वचन कहा है उसे अक्षरशः सत्य करनेके लिए अपनी परम शक्ति सहित अवतरित होऊँगा ।।६।।

हरिहौं सकल भूमि गरुआई ❀ निर्भय होहु देव समुदाई
गगन ब्रह्मबाणी सुनि काना ❀ तुरत फिरे सुर हृदय जुड़ाना

तब पृथ्वी का समस्त भार हरण करूँगा, हे देवताओं के समूह ! आप लोग निर्भय हो जावें ।। ७ ।। तब इस प्रकार आकाशवाणी सुनकर देवताओं का हृदय शीतल हो गया और वे तुरन्त ही लौट पड़े ।।८।।

तब ब्रह्मा धरणिहि समुझावा ❀ अभय भई भरोस जिय आवा

तब ब्रह्माजीने पृथ्वी को भलीभाँति समझाया, तो वह अभय हुई और उसके हृदय में विश्वास हुआ ।। ९ ।।

दोहा—गे बिरंचि निज लोक तब, देवन्ह इहै सिखाय ।
बानर तनु धरि धरणि महँ, हरि कहँ सेवहु जाय ।।१९३।।

तब देवताओं को समझाकर यह कहा कि,अब आप लोग भी बानर रूपसे पृथ्वी पर विचरण करते हुए भगवान्‌के चरणों की सेवा करें—पश्चात् ब्रह्माजी अपने लोक को चले गये ।।१९३।।

गये देव सब निज निज धामा ❀ भूमि सहित पायहु विश्रामा
जो कछु आयसु ब्रह्मा दीन्हा ❀ हरषे देव विलम्ब न कीन्हा

(ब्रह्माजीके कहने पर) सब देवता अपने-अपने स्थान को चले गये, पृथ्वी सहित सबको शांति मिली । ब्रह्माजीने जैसी आज्ञा दी थी देवताओंने प्रेमपूर्वक करनेमें विलम्ब न किया ।।

बनचर देह धरी क्षितिमाहीं ❀ अतुलित बल प्रताप तिन्ह पाहीं
गिरि तरुनख आयुधसब बीरा ❀ हरि मारग चितवहिं रणधीरा

और पृथ्वी पर आकर वानर शरीर धारण किया, जिनमें अतुलितबल और प्रताप था।।३।।पहाड़, वृक्ष और नख ही उनके शस्त्र हुए, वे रणधीर नित्य ही भगवान् का मार्ग देखते थे ।।४।।

गिरि कानन जहँ तहँ महि पूरी ❀ रह निजनिज अनीक रुचिरूरी
यह सब रुचिर चरित मैं भाषा ❀ अब सो सुनहु जो बीचहिं राखा

और पहाड़ों सहित जहाँ तक पूर्ण पृथ्वी थी, वे अपनी-अपनी सुन्दर सेना बनाकर रहने लगे ।। ५ ।। शिवजी पार्वतीजीसे कहते हैं कि—यह चरित तो मैंने कहा, अब वह सुनो जिसे बीच ही में छोड़ दिया था ।। ।। ६ ।।

अवधपुरी रघुकुल मनि राऊँ ❀ वेद विदित तेहि दशरथ नाऊँ
धर्मधुरन्धर गुणनिधि ज्ञानी ❀ हृदय भक्ति अति शारंगपानी

अयोध्यापुरी में रघुकुल के मणिरूप एक राजा हो चुके हैं, जो वेद में प्रसिद्ध है और

जिनका नाम दशरथ था ॥७॥ वे धर्मकी धुरीको धारण करनेवाले, गुणोंकी खानि और दानी थे; उनके हृदयमें भगवान्‌की भक्ति हर समय बनी रहती थी ॥८॥

दोहा—कौशल्यादिक नारि प्रिय, सब आचरण पुनीत।
पति अनुकूल प्रेमदृढ़, हरिपद कमल विनीत॥१९४॥

उनकी कौशल्या आदिक सब प्यारी स्त्रियोंका आचरण पवित्र था। वे सर्वदा ही पतिके अनुकूल रहती थीं, उनका प्रेम दृढ़ था और वे हरि भगवान्‌के चरणोंमें विनीत भाववाली थीं॥१९४॥

एक समय भूपति मन माहीं ❀ भइ गलानि मोरे सुत नाहीं
गुरु गृह गयउ तुरत महिपाला ❀ चरण लागि करिविनय विशाला

एक समय राजा (दशरथ) के मनमें यह ग्लानि उत्पन्न हुई कि, मेरे कोई पुत्र नहीं है ॥१॥ तब वे झट अपने गुरुके घर गये और पाँव पकड़कर बहुत प्रार्थना करने लगे ॥२॥

निज दुख सुख सब गुरुहिं सुनायउ❀कहि वशिष्ठबहुविधि समुझायउ
धरहु धीर होइहहिं सुत चारी ❀ त्रिभुवन विदित भक्त भयहारी

और अपना दुःख-सुख गुरु को सुनाया, तब वशिष्ठजीने बहुत प्रकारसे समझाकर कहा। धैर्य धरो, तुम्हारे चार पुत्र होंगे, जिन्हें तीनों लोक जानेंगे और वे भक्तोंका भय दूर करनेवाले होंगे॥

शृङ्गी ऋषिहिं वशिष्ठ बुलावा ❀ पुत्र काज शुभ यज्ञ करावा
भक्ति सहित मुनि आहुति दीन्हे ❀ प्रगटे अगिनि चरू कर लीन्हे

(ऐसा कहकर) वशिष्ठजीने शृङ्गी ऋषि को बुलाकर पुत्र प्राप्तिके लिए यज्ञ कराया। मुनिदेवने भक्ति पूर्वक जो आहुतियाँ प्रदान कीं तो अग्निदेव हाथ में खीर लेकर प्रकट हुए॥

जो वशिष्ठ कछु हृदय विचारा ❀ सकल काज भा सिद्ध तुम्हारा
यह हवि बाँटि देहु नृप जाई ❀ यथा जोग जेहि भाग बनाई

और बोले कि, हे नृप! वशिष्ठजी ने जो कुछ अपने हृदयमें विचारा है वह आपका सब कार्य पूर्ण होगा, इस हवि को यथा योग्य भाग करके अपनी रानियोंमें जाकर बाँट दीजिये॥

दोहा—तब अदृश्य भये पावक, सकल सभहिं समुझाइ।
परमानन्द मगन नृप, हरष न हृदय समाइ॥१९५॥

दशरथजीसे ऐसा कह तथा समस्त सभा को समझाकर अग्निदेव अन्तर्धान हो गये। राजा दशरथ ब्रह्मसुखमें मग्न हो गये और उनके प्रसन्नता की सीमा न रही ॥१९५॥

तबहिं राउ प्रिय नारि बुलाईं ❀ कौशल्यादि तहाँ चलि आईं।
अर्द्ध भाग कौशल्यहिं दीन्हा ❀ उभय भाग आधे कर कीन्हा

तब राजाने रानियोंको बुलाया तो कौशल्या आदिक रानियाँ चली आईं। तब उस हवि में से आधा भाग तो कौशल्या को दिया और जो आधा भाग बचा उसको दो भाग कर लिए॥

कैकेयी कहँ सो नृप दयऊ ❀ रहेउ सो उभय भाग पुनि भयऊ

कौशल्या कैकेयी हाथ धरि ❀ दीन्ह सुमित्रहिं मन प्रसन्न करि

एक भाग तो कैकेयी को दिया और एक भाग जो बचा उसके फिर दो भाग हुये ॥३॥ उसे कौशल्या और कैकेयी के हाथमें देकर उनको प्रसन्न कर राजाने सुमित्रा को दिये ॥४॥

यहि बिधि गर्भसहित सब नारी ❀ भईं हृदय हर्षित सुख भारी
जा दिन ते हरि गर्भहिं आये ❀ सकल लोक सुख सम्पति छाये

इस प्रकार सब रानियाँ गर्भवती हुईं तथा बड़ा हर्ष हुआ, उन्होंने परम सुख माना ॥५॥ जिस दिन से भगवान् हरि गर्भमें आये, उसी दिनसे संपूर्ण लोक में सुख सम्पदा छा गई ॥६॥

मन्दिर महँ सब राजहिं रानी ❀ शोभा शील तेज की खानी
सुखयुत कछुक काल चलि गयऊ ❀ जेहि प्रभु प्रकट सो अवसर भयऊ

महलमें सब रानियाँ शोभा देने लगीं जो कि शील और तेज की खानि थीं। जब ऐसे आनंद पूर्वक कुछ काल व्यतीत हुआ तब वह समय आया कि जिस समय भगवान् प्रकट हुए ॥

दोहा—योग लग्न ग्रह वार तिथि, सकल भये अनुकूल ।
चर अरु अचर हर्षयुत, रामजन्म सुखमूल ॥१९६॥

प्रभुके जन्मके समय योग, लग्न, ग्रह, वार-तिथि ये सबके सब अनुकूल हुए। और सारा चराचर जगत् आनन्द मग्न हुआ, क्योंकि श्रीरामचन्द्रजी का जन्म सुख का मूल है ॥१९६॥

नवमी तिथि मधुमास पुनीता ❀ शुक्लपक्ष अभिजित हरि प्रीता
मध्य दिवस अति शीत न घामा ❀ पावन सकल लोक विश्रामा

प्रभु का जन्म नवमी तिथि और पवित्र चैत्रमास, शुक्लपक्ष, अभिजित् नक्षत्र और मध्याह्नके समय हुआ था कि, जिसमें न अधिक सर्दी थी, न अधिक धूप, और ऐसा समय था कि जिसमें समस्त लोकों को विश्राम मिला ॥२॥

शीतल मन्द सुरभि बह बाऊ ❀ हर्षित सुर सन्तन मन चाऊ
बनकुसुमित गिरि गणमणिआरा ❀ श्रवहिं सकल सरितामृत धारा

शीतल, मन्द, सुगन्ध, त्रिविध बयार चलने लगी, देवता और संत मनमें बड़े प्रसन्न हुए। बन फूलोंसे प्रफुल्लित थे, समस्त पर्वत रत्नमय हो गये और सब नदियोंमें अमृतकी धारा बहने लगी ॥

सो अवसर विरंचि जब जाना ❀ चले सकल सुर साजि विमाना
गगन बिमल संकुल सुरयूथा ❀ गावहिं गुण गन्धर्व बरूथा

ब्रह्माजी उस अवसर को जान सब देवताओं सहित विमान को सजा प्रभुके पास चले। निर्मल आकाशमें देवताओं की भीड़ हुई, गन्धर्व लोग प्रभु का यशोगान करने लगे ॥६॥

बर्षहिं सुमन सुअंजलि साजी ❀ गहगह गगन दुन्दुभी बाजी
अस्तुति करहिं नाग मुनि देवा ❀ बहुबिधि लावहिं निज निज सेवा

देवता हाथ जोड़कर फूल बरसाने लगे, आकाशमें गहगहे नगाड़े बजने लगे। नाग मुनि देवता स्तुतिं करने लगे ॥

दोहा—सुर समूह बिनती करि, पहुँचे निज निज धाम।
जगनिवास प्रभु प्रगटेउ, अखिल लोक विश्राम ॥१९७॥

देवता गण विनती करके अपने-अपने घर पहुँचे। इस प्रकार सब लोगों को सुख देने-वाले जगन्निवास भगवान् प्रकट हुए ॥ १९७ ॥

छंद—भये प्रकट कृपाला दीनदयाला कौशिल्या हितकारी।
हर्षित महतारी मुनिमनहारी अद्भुत रूप निहारी ॥
लोचन अभिरामा तनुघनश्यामा निज आयुध भुजचारी।
भूषण बनमाला नयन विशाला शोभासिन्धु खरारी ॥२५॥

जब कृपाके सागर कौशल्याके हितकारी दीनदयालु प्रभु प्रकट हुए, तब उनका अद्भुत रूप देखकर माता कौशल्या दंग हो गईं। सुन्दर नेत्र, श्याम शरीर, चार भुजाओंमें शंख, चक्र, गदा, पद्म धारण किए। वनमाला पहिने, सब अंगोंमें आभूषण साजे, बड़े विशाल नेत्र वाले, शोभाके सागर और खर नामक राक्षसके वैरी, जिनकी शोभा को देखकर मुंनि लोगोंके भी मन मोहित हो जाते हैं ॥ २५ ॥

छंद—कह दुहूँ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनन्ता।
माया गुण ज्ञानातीत अमाना वेद पुराण भनन्ता ॥
करुणा सुखसागर सबगुण आगर जेहि गावहिं श्रुतिसन्ता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी प्रकट भये श्रीकन्ता ॥२६॥

ऐसे स्वरूप को देखकर दोनों हाथ जोड़े हुए माता कौशल्याने कहा—हे अनन्त प्रभु! मैं आपकी स्तुति कैसे करूँ? क्योंकि वेद और पुराण भी ऐसा ही कहते हैं कि, प्रभु का स्वरूप मायाके गुणोंसे परे, इन्द्रियजन्य ज्ञानसे अगोचर और प्रमाण का विषय नहीं है। हे प्रभो! मैं तो जानती हूँ कि, जिसे श्रुति और संत लोग गाते हैं। वही करुणाके सागर, भक्तानुरागी, लक्ष्मीपति मेरा हित करनेके लिए आप प्रकट हुए हैं ॥ २६ ॥

छंद—ब्रह्माण्ड निकाया निर्मित माया रोम-रोम प्रति वेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै ॥
उपजा जब ज्ञाना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत विधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुनाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ॥२७॥

हे प्रभो! वेद ऐसा कहते हैं कि—आपके रोम-रोममें मायासे रचे हुए अनेक ब्रह्माण्ड समूह मढ़े हुए हैं। सो वे आप मेरे उदरमें कैसे रहे, इस बातकी मुझे बड़ी हँसी आती है; केवल मैं ही नहीं, बड़े-बड़े धीर पुरुषोंकी भी बुद्धि यह बात सुनकर स्थिर क्यों रहेगी?

जब कौशल्याको ज्ञान प्राप्त हो गया, तब प्रभुजी हँसे; क्योंकि अभी तो उन्हें बहुत चरित्र करने थे। इसलिए प्रभुने माताको अनेक प्रकारकी कथा सुनाकर उन्हें ऐसा समझा दिया कि जिसमें उनके मनमें पुत्रका प्रेम उत्पन्न हो गया ।। २७ ।।

छंद—माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा ।
कीजै शिशुलीला अति प्रिय शीला यह सुख परम अनूपा ।।
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना ह्वै बालक सुरभूपा ।
यह चरित जो गावहिं हरिपद पावहिं सो न परहिं भवकूपा।२८।

तब माताकी वह बुद्धि विचलित हो गई और फिर बोलीं, कि हे तात ! यह स्वरूप छोड़ कर, दूसरे स्वरूपसे अतिशय प्रिय स्वभाववाली बाललीला करो; यह सुख मुझको बहुत अच्छा लगता है। तब माताका यह वचन सुन देवताओंके स्वामी प्रभुने बालक स्वरूप धारण कर रुदन करना आरम्भ किया। महादेवजी कहते हैं कि, हे पार्वती ! जो मनुष्य इस चरित्रको गाते हैं वे अवश्य भगवान्‌के पदको प्राप्त हो जाते हैं, वे कभी संसाररूपी कुँएमें नहीं गिरते ।।२८।।

दोहा—विप्र धेनु सुर संत हित, लीन्ह मनुज अवतार ।
निज इच्छा निर्मित तनु, माया गुण गोपार ।।१९८।।

इस प्रकार प्रभुने गौ, ब्राह्मण, देवता और संतजनोंका हित करनेके लिए अपनी इच्छासे शरीर धारण किया, क्योंकि प्रभु मायाके गुणोंसे परे और इन्द्रियोंसे अगोचर हैं ।।१९८।।

सुनि शिशु रुदन परम प्रिय बानी ❁ संभ्रम चलि आई सब रानी
हर्षित जहँ तहँ धाईं दासी ❁ आनँद मगन सकल पुर वासी

तब परम मधुर वात्सल्य पूर्ण बालक का रुदन सुन, सब रानियाँ अति सम्भ्रमके साथ वहाँ आयीं। और दासियाँ प्रसन्न होकर जहाँ-तहाँ दौड़ीं एवं नगरके सब लोग आनन्दमें मग्न हो गये ।।

दशरथ पुत्र जन्म सुनि काना ❁ मानहुँ ब्रह्मानन्द समाना
परम प्रेम मन पुलक शरीरा ❁ चाहत उठन करत मतिधीरा

जब दशरथजी अपने कानसे पुत्र-जन्मके समाचार सुने, तब वे ऐसे आनन्द मग्न हुए कि मानों ब्रह्मानन्दको ही पा लिया। मनमें अत्यन्त प्रेम बढ़ा, शरीरके रोम खड़े हो गये, यद्यपि प्रेमके मारे उठना चाहते थे, तथापि बुद्धिसे धीरज धरकर मनको वशमें कर रखा और नहीं उठे ।।

जाकर नाम सुनत शुभ होई ❁ मोरे गृह आवा प्रभु सोई
परमानन्द पूरि मन राजा ❁ कहा बुलाइ बजावहु बाजा

दशरथजीने अपने मनमें विचार किया कि, जिसका नाम सुननेसे भला हो जाता है, वे प्रभु हमारे घर आये हैं, इससे बढ़कर हमारा और बड़ा भाग्य क्या होगा ? राजाका मन परमानन्दसे पूर्ण हो गया, उन्होंने मन्त्रियोंको बुलाकर कहा कि, बधाईके बाजे बजवाओ ।। ६ ।।

गुरु वशिष्ठ कहँ गयउ हँकारा ❁ आये द्विजन सहित नृप द्वारा

अनुपम बालक देखिन्ह जाई ❀ रूपराशि गुण कहि न सिराई

फिर गुरु वसिष्ठजीको बुलावा भेजा, वे ब्राह्मणोंको साथ लेकर राजाके द्वार पर आये। वसिष्ठजीने जाकर उस बालकको देखा तो वह ऐसा रूपकी राशि था कि, जिसका वर्णन करते २ पार नहीं पा सकते ॥ ८ ॥

दोहा—तब नांदीमुख श्राद्ध करि, जातकर्म सब कीन्ह।
हाटक धेनु बसन मणि, नृप विप्रन कहँ दीन्ह ॥१९९॥

तब नान्दीमुख श्राद्ध करके, साङ्गोपाङ्ग जातकर्म संस्कार किया। राजाने ब्राह्मणोंको सुवर्ण, गौ, वस्त्र और रत्न आदि अनेक दान दिये ॥ १९९ ॥

ध्वज पताक तोरण पुर छावा ❀ कहि न जाय जेहि भाँति बनावा
सुमन बृष्टि अकाश ते होई ❀ ब्रह्मानन्द मगन सब कोई

ध्वजा-पताका आदिसे नगर छा गया, उस समय की बनावट किसी भाँति कहनेमें नहीं आ सकती ॥१॥ आकाशसे फूलोंकी वर्षा हुई, नगरके लोग ब्रह्मानन्दमें मग्न हो गये ॥२॥

वृन्द वृन्द मिलि चलीं लुगाईं ❀ सहज सिंगार किये उठि धाईं
कनक कलश मंगल भरि थारा ❀ गावत पैठहिं भूप दुआरा

सब स्त्रियाँ मिलकर सहज श्रृङ्गार किये जहाँ बैठी थीं, वहाँसे उठकर दौड़ती हुई उत्सव देखने चलीं ॥ कंचनके कलश और मांगलिक द्रव्य लेकर गाती हुई स्त्रियाँ राजद्वारमें जाती हैं ॥

करि आरती निछावरि करहीं ❀ बार बार शिशु चरणन परहीं
मागध सूत बंदि गुण गायक ❀ पावन गुण गावहिं रघुनायक

आरती कर न्योछावर करती हैं और बारम्बार बालकके चरणों पर गिरती हैं ॥ मागध, सूत, बन्दीजन और दूसरे भी गुण गानेवाले जो कवि लोग थे, वे प्रभुके पवित्र गुण गाते हैं ॥

सर्बस दान दीन्ह सब काहू ❀ जेहि पावा राखा नहिं ताहू
मृगमद चंदन कुंकुम कीचा ❀ मची सकल बीथिन बिचबीचा

उस समय सब किसीने सर्वस्व दान कर दिया, जिसने जो पाया, उसे अपने पास नहीं रक्खा। सब गलियोंके बीचमें कस्तूरी, चंदन और केसरका कीच सा हो गया ॥८॥

दोहा—गृह गृह बाज बधाव शुभ, प्रकट भए सुखकंद।
हर्षवन्त सब जहँ तहँ, नगर नारि नर वृन्द ॥२००॥

इस प्रकार समस्त सुखोंकी खानि भगवान्के प्रकट होते ही घर-घर में मांगलिक बाजे बजने लगे। नगरके स्त्री-पुरुषों का समूह जहाँ-तहाँ आनन्द मनाने लगा ॥ २०० ॥

केकय सुता सुमित्रा दोऊ ❀ सुन्दर सुत जन्मत भईं ओऊ
वह सुख सम्पति समय समाजा ❀ कहि न सकै शारद अहिराजा

कैकेयी और सुमित्रा दोनोंने सुन्दर पुत्रोंको जन्म दिया ॥ १ ॥ उस समयके समाजकी सुख-सम्पत्तिको सरस्वती और शेषजी भी नहीं कह सकते ॥ २ ॥

अवधपुरी सोहै इहि भाँती ❀ प्रभुहिं मिलन आई जनु राती
देखि भानु जनु मन सकुचानी ❀ तदपि बनी संध्या अनुमानी

प्रभुके जन्मोत्सवके समय अयोध्यामें जो गुलाल-अबीर उड़ी, उससे दिन भी रात्रिके समान दिखाई देने लगा । उससे यह अयोध्या ऐसी शोभा देने लगी मानों शोभा देखने को रात्रि आयी है । पर आगे सूर्यको देखकर मानों मनमें सकुचाकर संध्यारूप बन गयी है ॥

अगर धूप जनु बहु अँधियारी ❀ उड़ै अबीर मनहुँ अरुणारी
मन्दिर-मणि-समूह जनु तारा ❀ गृह गृह कलश सो इन्दु उदारा

नगरके भीतर जो अगर और धूप जल रही थीं वही तो मानों गाढ़ा अन्धकार था और जो अबीर उड़ती थी वही उसमें लाली थी । मन्दिरमें जो अनेक प्रकारके रत्न थे, वे ही मानों तारागण थे और राजभवन पर जो कलश जड़ा था, वही मानों उदार चन्द्रमा था ॥

भवन वेद धुनि अति मृदुबानी ❀ जनु खग मुखर समय सुखमानी
कौतुक देखि पतंग भुलाना ❀ एक मास तेहि जात न जाना

घरमें ब्राह्मण जो अत्यन्त मीठी वाणीसे वेद-ध्वनि करते थे, वह मानों संध्या समय पक्षी सुखमय रसभरी वाणी बोल रहे थे ॥ ७ ॥ उसे देखकर सूर्य भी मोहित हो गये, जिससे वे अपनी गतिको भूल एक महीने तक वहीं स्थिर रह गये ॥ ८ ॥

दोहा—मास दिवस कर दिवस भा, मर्म न जानै कोइ ।
रथ समेत रवि थाकेउ, निशा कवन विधि होइ ॥२०१॥

एक महीनेका दिन हुआ, इसका भेद किसीने न जाना । सूर्य नारायण अपने रथके साथ वहाँ रुक गये, तब रात्रि किस प्रकार होवे ? ॥ २०१ ॥

यह रहस्य काहू नहिं जाना ❀ दिनमणि चले करत गुणगाना
देखि महोत्सव सुर मुनि नागा ❀ चले भवन वरणत निज भागा

इस रहस्यमय बातकी किसीको खबर नहीं पड़ी, भगवान्‌के गुण गाते हुए सूर्यनाराण भी वहाँसे चले गये ॥१॥ प्रभुके जन्म महोत्सव को देखकर सब देवता, मुनि और नाग प्रसन्न हो अपने-अपने भाग्यको सराहते हुए अपने घर को चल दिये ॥ २ ॥

औरो एक कहौं निज चोरी ❀ सुनु गिरिजा अति दृढ़मति तोरी
काकभुशुण्डि संग हम दोऊ ❀ मनुज रूप जानै नहिं कोऊ

महादेवजी कहते हैं कि, हे पार्वती ! तेरी मति अत्यन्त दृढ़ है, इसलिये एक और भी चरित्रको तुमको कहता हूँ सो सुनो, जिसमें हमारी चोरी है ॥३॥ काकभुशुण्डि और मैं दोनों मनुष्य-रूप धारण कर साथ-साथ वहाँ गये, जिसकी किसीको खबर नहीं पड़ी ॥ ४ ॥

परमानन्द प्रेम सुख फूले ❀ बीथिन फिरहिं मगन मन भूले

यह सब चरित जान पै सोई ❀ कृपा राम की जापर होई

हम दोनों परमानन्दमें मग्न हो, प्रेम और सुखके मारे फूले-फूले गलियोंमें फिरते थे। परन्तु हे पार्वती ! यह सब चरित्र वही जान सकता है, जिसपर प्रभुकी कृपा हो ॥६॥

तेहि अवसर जोजेहि बिधि आवा ❀ दीन्ह भूप जो जेहि मन भावा
गज रथ तुरँग हेम गो हीरा ❀ दीन्हे नृप नाना विधि चीरा

उस समय वहाँ जो जिस तरह आया, जिसने जो मनमें चाहा, दशरथजीने उसको वही दिया। राजाने हाथी, घोड़े, रथ, सुवर्ण, गौ, हीरा, रत्न और वस्त्र आदि अनेक प्रकारके दान दिये ॥

दोहा—मन सन्तोषे सबन के, जहँ तहँ देहिं अशीश।
सकल तनय चिरजीवहु, तुलसिदास के ईश ॥ २०२ ॥

राजा दशरथने सबको संतुष्ट किया तो वे लोग जहाँ-तहाँ आशीर्वाद देने लगे कि तुलसीदासके स्वामी और राजादशरथके समस्त पुत्र चिरंजीवी रहें ॥ २०२ ॥

कछुक दिवस बीते एहि भाँती ❀ जात न जानहिं दिन अरु राती
नामकरण कर अवसर जानी ❀ भूप बोलि पठये मुनि ज्ञानी

कुछ दिन इस प्रकार बीते कि, रात और दिनकी भी खबर नहीं पड़ती थी ॥१॥ जब नामकरण संस्कार करनेका समय आया, तब राजाने ज्ञानी मुनि वशिष्ठजी को बुला भेजा ॥२॥

करि पूजा भूपति अस भाखा ❀ धरिय नाम जो मुनि गुनि राखा
इनके नाम अनेक अनूपा ❀ मैं नृप कहउँ स्वमति अनुरूपा

गुरूजीका सत्कार करके दशरथजीने कहा कि हे मुने ! आपने जो विचार रक्खा हो, वही नाम इनके धरिये। राजाके ऐसे वचन सुन वशिष्ठजी बोले कि, हे महाराज ! इनके नाम अनेक हैं और एकसे एक अनुपम हैं, परन्तु मैं अपनी बुद्धिके अनुसार कहता हूँ, सुनिये ॥४॥

जो आनन्द सिन्धु सुखरासी ❀ सीकर ते त्रैलोक्य सुपासी
सो सुखधाम राम अस नामा ❀ अखिल लोक दायक विश्रामा

जो आनन्दके समुद्र, सुखके पुंज, अपने अंशसे त्रिलोकीको सुपास करानेवाले हैं ॥५॥ जो सब लोकोंको आराम देनेवाले और सुखके धाम हैं, उनका राम ऐसा नाम है ॥६॥

विश्व-भरण पोषण कर जोई ❀ ताकर नाम भरत अस होई
जाके सुमिरन ते रिपुनाशा ❀ नाम शत्रुहन वेद प्रकाशा

जो संसारका भरण अर्थात् पालन-पोषण करनेवाले हैं उनका, नाम भरत होगा और जिसका स्मरण करनेसे शत्रुओंका नाश हो जाता है, उनका शत्रुघ्न ऐसा नाम वेदोंने प्रकाश किया है ॥

दोहा—लक्षण धाम राम प्रिय, सकल जगत आधार।
गुरु वशिष्ठ तेहि राखेउ, लक्ष्मण नाम उदार ॥ २०३ ॥

जो सुलक्षणोंके घर, रामचन्द्रजीके प्यारे, सब जगत्के आधार हैं। उनका नाम वशिष्ठजी ने लक्ष्मण रक्खा, जो परम उदार हैं ॥ २०३ ॥

धरे नाम गुरु हृदय बिचारी ❁ वेद तत्त्व नृप तव सुत चारी
मुनि जन धन सर्बस शिवप्राना ❁ बाल केलि रस तेहि सुख माना

गुरु वशिष्ठने अपने मनमें पक्का विचार करके ये नाम रक्खे और दशरथजीसे कहा कि महाराज ! ये आपके चारों पुत्र तत्त्व स्वरूप हैं ॥१॥ आपके पुत्र मुनि लोगोंके सर्वस्व धन हैं और महादेवजीके मानों प्राणही हैं। गुरुके ऐसे वचन सुन, बालकोंकी बाललीलाका आनन्द देख दशरथजीने अपने मनमें बड़ा सुख मान्‍ना ॥ २ ॥

बारहिं ते निज हित पति जानी ❁ लक्ष्मण रामचरण रति मानी
भरत शत्रुहन दूनौं भाई ❁ प्रभु सेवक जस प्रीति बढ़ाई

लक्ष्मण बचपनसे ही श्रीरामचन्द्रजीको अपना स्वामी और हितकारी जानकर उनके चरणोंमें बड़ी प्रीति रखने लगे ॥३॥ ऐसेही भरत और शत्रुघ्न ये दोनों भाई श्रीरामचन्द्रजी से प्रभु और सेवककी-सी प्रीति बढ़ाकर साथ रहने लगे ॥ ४ ॥

श्याम गौर सुन्दर दोउ जोरी ❁ निरखहिं छबि जननी तृण तोरी
चारिउ शील रूप गुणधामा ❁ तदपि अधिक सुखसागर रामा

श्याम और गौर दोनों सुन्दर जोड़ी थीं, तथा उनकी शोभाको देख, मातायें दृष्टि लगनेकी शंकासे तृण तोड़ती रहतीं ॥५॥ यद्यपि चारों भाई शील, रूप और गुणके धाम हैं तथापि राम तो उनमें सबकी अपेक्षा अधिक गुण और सुखके सागर ही हैं ॥ ६ ॥

हृदय अनुग्रह इन्दु प्रकाशा ❁ सूचित किरन मनोहर हासा
कबहुँ उछंग कबहुँ बर पलना ❁ मातु दुलारै कहि प्रिय ललना

जिनके हृदयमें दयारूप चन्द्रमाका प्रकाश सुन्दर हास्यरूप किरणोंसे सूचित होता है ॥७॥ उनको कभी तो माता गोदमें लेकर लहराती है और कभी रत्नजटित रेशमसे बुने हुए पालनेमें रखकर आनन्द भरी प्रिय वाणीसे लालन-लालन कह-कहकर झुलाती हैं ॥ ८ ॥

दोहा—व्यापक ब्रह्म निरंजन, निरगुन विगत विनोद ।
सो अस प्रेम भगति बस, कौशिल्या के गोद ॥ २०४ ॥

कवि कहते हैं कि, जो प्रभु सर्वत्र व्यापक स्वरूप निरंजन अर्थात् दोषरहित, निर्गुण, चेष्टा-रहित, अजन्मा व परब्रह्म हैं। वे ही प्रभुभक्तिके वश होकर कौशिल्याकी गोदमें विराजतेहैं॥२०४॥

काम कोटि छवि श्याम शरीरा ❁ नीलकञ्ज वारिद गम्भीरा
अरुन चरन पंकज नख जोती ❁ कमल दलन्हि बैठे जनु मोती

करोड़ों कामदेव की-सी मनोहर छवि है, श्यामकमल और बादलके समान श्याम शरीर है ॥१॥ अरुण चरण कमलोंके बीच नखोंकी ज्योति कैसी शोभायमान हो रही है कि, मानों कमल-दलके बीच मोती विराजमान है ॥ २ ॥

रेख कुलिस ध्वज अंकुश सोहै ❁ नूपुर धुनि सुनि मुनिमन मोहै

कटि किंकिनी उदर त्रय रेखा ❀ नाभि गँभीर जान जेहि देखा

चरणोंमें वज्र, ध्वजा और अंकुश शोभायमान हो रहे हैं, नूपुरकी ध्वनि सुनकर मुनियों के मन मोहित हो जाते हैं ।। ३ ।। कमरमें किंकिणीका शब्द होता है, उदरमें सुन्दर तीन रेखायें शोभायमान हो रही हैं, नाभि गम्भीर और सुन्दर है, जिसने देखा है वही उसकी सुन्दरता को जान सकता है ।। ४ ।।

भुज विशाल भूषरा जुत भूरी ❀ हिय हरि नख शोभा अतिरूरी
उर मणिमाल पदिक की शोभा ❀ विप्र चरण देखत मन लोभा

उनकी भुजायें विशाल हैं तथा उनका हृदय आभूषणोंसे युक्त है । वक्षःस्थल के बीच मणियोंका हार और बघनखा शोभायमान हो रहा है ।।५।। तथा भृगु ऋषिका चरण-चिन्ह हृदयमें ऐसा शोभायमान लगता है कि मन लुभा जाता है ।। ६ ।।

कम्बुकंठ अति चिबुक सुहाई ❀ आनन अमित मदन छबि छाई
दुइ दुइ दशन अधर अरुणारे ❀ नासा तिलक को बरणै पारे

शंख की-सी कंठके भीतर तीन रेखायें पड़ रही हैं, बहुत ही सुन्दर चिबुक (ठोड़ी) है, मुखारविंदपर भी असंख्य कामदेवकी छवि छा रही है ।।७।। दो-दो दाँत निकले हैं, लाल होंठ हैं, नासिका और तिलककी शोभा तो ऐसी है कि, जिसको कोई नहीं कह सकता ।। ८ ।।

सुन्दर श्रवण सुचारु कपोला ❀ अति प्रिय मधुर तोतरे बोला
नील कमल दोउ नयन विशाला ❀ विकट भृकुटि लटकनि वरमाला

सुन्दर कपोल व मनोहर कान हैं, अतिशय प्रिय और मधुर तोतली वाणी, नीलकमल जैसे सुन्दर विशाल दोनों नेत्र हैं, बड़ी विकट भृकुटि है, सुन्दर माला पैरों तक लंबी लटक रही है ।।

चिक्कन कच कुंचित गभुआरे ❀ बहु प्रकार रचि मातु सँवारे
पीत झँगुलिया तनु पहिराई ❀ जानु पानि बिचरत महि भाई
रूप सकहिं नहिं कहि श्रुति शेषा ❀ सो जानै सपनेहुँ जिन देखा

बहुत चिकने टेढ़े और घुँघराले बाल हैं, जिनको माता अनेक प्रकरसे रच-रच करके सँवारी हैं ।।११।। पीली झँगुलिया शरीरमें पहनायी है, जो घुटनों और हाथोंके बल पृथ्वी पर आनन्दसे सब भाई विचर रहे हैं।।१२।। उनके स्वरूपको वेद और शेष भी नहीं कह सकते, जिसने देखा है वही जान सकता है ।। १३ ।।

दोहा—सुख सन्दोह मोह पर, ज्ञान गिरा गोतीत ।
दम्पति परम प्रेमवश, करि शिशु चरित पुनीत ।।२०५।।

सुखके पुंज, मोह—अविद्यासे परे, ज्ञान, वाणी और इन्द्रियोंसे अगोचर प्रभु श्रीरामचन्द्रजी राजा-रानीके अतिशय प्रेमके वश होकर पवित्र बाललीला कर रहे हैं ।। २०५ ।।

यहि विधि राम जगत पितु माता ❀ कोशलपुर वासिन्ह सुखदाता
जिन रघुनाथ चरन रति मानी ❀ तिनकी यह गति प्रगट भवानी

महादेवजीने कहा कि—हे पार्वती ! इस तरह जगत्‌के माता-पितारूप श्रीरामचन्द्रजी

कोशलपुरके रहनेवाले लोगोंको सदा सुख देते रहते हैं। हे पार्वती ! जिन लोगोंकी रघुनाथजीके चरणोंमें परमप्रीति है, उनकी यह गति हो इसमें आश्चर्य ही क्या है ? उनकी गति सदा प्रकट है॥

रघुपति विमुख जतन कर कोरी ❀ कवन सकै भव बन्धन छोरी
जीव चराचर वश करि राखे ❀ सो माया प्रभु सों भय भाखे

जो प्रभुके चरणोंसे विमुख हैं वे चाहे करोड़ों उपाय क्यों न करें, पर किसी भाँति भवबन्धनसे नहीं छूट सकते ॥३॥ यह माया जो कि सारे चराचर जीव मात्र को अपने वशमें रखती है, वह भी प्रभुके आगे आती हुई भयसे बोलती है ॥ ४ ॥

भृकुटि विलास नचावैं ताही ❀ अस प्रभु छाँड़ि भजिय कहु काही
मन क्रम बचन छाँड़ि चतुराई ❀ भजत कृपा करिहहिं रघुराई

प्रभु उस मायाको अपनी भृकुटिके विलास मात्रसे नचाते हैं, ऐसे प्रभुको छोड़कर कहो किसको भजें। जो मनुष्य अपनी चतुराई छोड़ मन, कर्मसे प्रभुका भजन करते हैं उनपर प्रभु कृपा करतेहैं॥

यहिविधि शिशुविनोद प्रभु कीन्हा ❀ सकल नगर वासिन सुख दीन्हा
लै उछंग कबहूँ हलरावैं ❀ कबहुँ पालने घालि झुलावैं

प्रभुने इस तरह बाललीला करके सब नगर निवासियोंको सुख दिया ॥ ७ ॥ माता कौशल्या कभी तो प्रभुको गोदमें लेकर हलरातीं और कभी पालनेमें लेटाकर झुलाती हैं॥८॥

दोहा—प्रेम मगन कौसल्या, निशि दिन जात न जान ।
सुत सनेहवश माता, बाल चरित कर गान ॥२०६॥

माता कौशल्या पुत्रके प्रेमसे ऐसी आनन्दित हो रही थीं कि उनको रात और दिन बीतनेकी सुध नहीं थी। माता कौशल्या पुत्रके स्नेहवश होकर सदा प्रभुके बालचरित्रको गाया करतीथीं॥२०६॥

एकबार जननी अन्हवाये ❀ करि सिंगार पलना पौढ़ाये
निज कुल इष्टदेव भगवाना ❀ पूजा हेतु कीन्ह पकवाना

एक बार माताने प्रभुको नहला 'धुला' सिंगारकर पालनेमें लिटाया ॥ १ ॥ फिर अपने कुलके इष्ट देवता भगवान् की पूजा करनेके लिये पकवान बनाया ॥ २ ॥

करि पूजा नैवेद्य चढ़ावा ❀ आपु गईं जहँ पाक बनावा
बहुरि मात तहवाँ चलि आई ❀ भोजन करत देख सुत जाई

प्रभुकी पूजा करके प्रभुके आगे नैवेद्य रख और उठकर वहाँ गईं जहाँ पाक तैयार होता था ॥ ३ ॥ फिर कौशल्याजी उठकर वहाँ चली आयीं कि जहाँ नैवेद्य चढ़ाया था, तब आकर वे क्या देखती हैं कि, श्रीरामचन्द्रजी भोजन कर रहे हैं ॥ ४ ॥

गइ जननी शिशुपहिं भयभीता ❀ देखा बाल तहाँ पुनि सूता
बहुरि आइ देखा सुत सोई ❀ हृदय कम्प मन धीर न होई

तब कौशल्या भयभीत होकर अपने पुत्रके पास गयीं, वहाँ जाकर देखती हैं तो बालकरूप

प्रभु नींदमें सो रहे हैं। पीछे आकर देखा तो वही पुत्र उसी तरह भोजन पा रहा है ॥ ५ ॥ इस आश्चर्य को देख कौशल्याका हृदय काँपने लगा, मनमें धीरज नहीं होता था ॥ ६ ॥

इहाँ उहाँ दुइ बालक देखा ❀ मति भ्रम मोर कि आन विशेषा
देखि राम जननी अकुलानी ❀ प्रभु हँसि दीन्ह मधुर मुसुकानी

यहाँ और वहाँ दोनों स्थानोंमें वही बालक देखकर कौशल्याने मनमें विचार किया कि यह क्या हुआ ? मेरी बुद्धिमें भ्रम हो गया है या कुछ यह और ही वृत्तान्त है ॥७॥ यह चरित्र देखकर श्रीरामचन्द्रजीकी माता बहुत घबराईं, तब प्रभु मधुर मुस्कान से मुस्कराकर हँस दिये ॥८॥

दोहा—देखरावा मातहिं निज, अद्भुत रूप अखण्ड।
रोम-रोम प्रति लागे, कोटि-कोटि ब्रह्मण्ड ॥ २०७ ॥

फिर प्रभुने माताको अपना वह अद्भुत और अखण्ड स्वरूप दिखलाया कि जिस स्वरूपके रोम-रोममें करोड़ों ब्रह्माण्ड शोभायमान हो रहे थे ॥ २०७ ॥

अगनित रवि ससि शिव चतुरानन ❀ बहु गिरि सरित सिन्धु महि कानन
काल कर्म गुन ज्ञान सुभाऊ ❀ सोउ देखा जो सुना न काऊ

कौशल्याने प्रभुके स्वरूपमें असंख्य सूर्य, चन्द्र, महादेव, ब्रह्मा और अनेक पर्वत, नदियाँ, समुद्र, पृथ्वी, वन ॥१॥ काल, गुण, स्वभाव और भी दूसरे अनेक पदार्थ देखे, जो किसीके सुननेमें भी न आये थे ॥ २ ॥

देखी माया सब विधि गाढ़ी ❀ अति सभीत जोरे कर ठाढ़ी
देखा जीव नचावै जाही ❀ देखी भगति जो छोरे ताही

सब प्रकारसे अति कठिन प्रभुकी मायाको देखकर कौशल्या अति भयभीत हो हाथ जोड़ खड़ी रही ॥३॥ कौशल्याने प्रभुकी वह माया देखी कि जो जीवोंको नचाती है, फिर प्रभुकी उस भक्तिको देखा कि, जो जीवको बन्धनसे छुड़ा देती है ॥ ४ ॥

तनु पुलकित मुख वचन न आवा ❀ नयन मूँदि चरनन्हि सिर नावा
विसमयवन्त देखि महतारी ❀ भये बहुरि सिसुरूप खरारी

यह आश्चर्य देखकर कौशल्याका शरीर पुलकित हो गया, मुखसे वचन न निकला और आखें बन्दकर प्रभुके चरणोंमें शिर नवाया ॥५॥ माताको इस प्रकार अति विस्मय युक्त देख कर प्रभु पुनः बालक रूप हो गये ॥ ६ ॥

अस्तुति करि न जाय भय माना ❀ जगत पिता मैं सुत करि जाना
हरि जननिहिं बहुबिधि समुझाई ❀ यह जनि कतहुँ कहेसि सुनु माई

कौशल्या प्रभुका प्रभाव देखकर डर गयीं, इससे प्रभुकी स्तुति भी नहीं की गयी; क्योंकि उन्होंने सोचा कि जो संसार भरके पिता हैं, उनको मैंने पुत्र करके जाना है ॥ ७ ॥ भगवान् श्रीरामचन्द्रजीने माता को बहुत प्रकारसे समझाया और कहा कि—हे माता ! सुनो, यह सब बातें कहींपर कहना नहीं ॥ ८ ॥

दोहा—बार—बार कौशल्या, विनय करइ कर जोरि।

अब जनि कबहूँ व्यापै, प्रभु मोहिं माया तोरि ॥२०८॥

इस प्रकार माता कौशल्या बार-बार हाथ जोड़कर विनती करती और कहती हैं कि, हे प्रभो ! अब तुम्हारी यह माया मुझे कभी व्याप्त न होवे ॥ २०८ ॥

बाल चरित हरि बहुविधि कीन्हा ❁ अति अनन्द दासन कहँ दीन्हा
कछुक काल बीते सब भाई ❁ बड़े भये परिजन सुखदाई

प्रभुने अनेक प्रकारके बालचरित्र करके अपने दासजनोंको अतिशय आनन्द दिया। कुछ समय बीतनेके बाद सब भाई बड़े हो अपने कुटुम्बके लोगों को सुख देने लगे ॥ २ ॥

चूड़ाकरण कीन्ह गुरु आई ❁ विप्रन्ह पुनि दछिना बहु पाई
परम मनोहर चरित अपारा ❁ करत फिरत चारिउ सुकुमारा

तब वसिष्ठजीने आकर चूड़ाकरण (मुण्डन) संस्कार किया, फिर ब्राह्मणोंको बहुत सी दक्षिणा मिली। वे चारों ही सुन्दर कुँवर अति मनोहर अपार चरित्र करते विचरते थे ॥४॥

मन क्रम बचन अगोचर जोई ❁ दशरथ अजिर विचर प्रभु सोई
भोजन करत बोलावत राजा ❁ नहिं आवत तजि बाल समाजा

जो प्रभु मन, कर्म और वचनसे अगोचर हैं वे ही दशरथजीके आँगन में विचर रहे थे ॥५॥ जब राजा दशरथजी भोजन करने बैठते और उनको बुलाते तो वे अपने बाल समाज को छोड़कर नहीं आते थे ॥ ६ ॥

कौशल्या जब बोलन जाई ❁ ठुमुकि-ठुमुकि प्रभु चलहिं पराई
निगम नेति शिव अन्त न पावा ❁ ताहि धरै जननी हठि धावा

जब कौशल्या बुलाने जातीं, तब प्रभु ठुमुकि २ चालसे दौड़ते थे। जिसे वेद नेति २ कहकर पुकारते हैं और जिसका शिवजी भी पार नहीं पाते, उस परब्रह्मको दौड़कर माता पकड़ती थीं॥

धूसर धूरि भरे तनु आए ❁ भूपति बिहँसि गोद बैठाए

धूलमें खेलने से शरीर में मटमैली धूल लपेटे प्रभु पधारे तो हँसकर राजा दशरथजी नें गोद में बैठा लिया ॥ ९ ॥

दोहा—भोजन करत चपल चित, इत उत अवसर पाय।
भाजि चले किलकात मुख, दधि ओदन लपटाय ॥२०९॥

चंचल चित्त वे प्रभु भोजन करते समय ,इधर-उधर मौका देखकर; मुखसे किलकारी मारते हुए भाग जाते, उस समय उनके मुखमें दही-भात लिपटा रहता था ॥ २०९ ॥

बाल चरित अति सरल सुहाये ❁ शारद शेष शम्भु श्रुति गाये
जिनकर मन इन सन नहीं राता ❁ ते जग वञ्चित किए विधाता

प्रभु के बाल चरित्र अतिशय सरल और सुहावने हैं, जिन्हें शारदा, शेष भगवान् एवं महादेवजी और वेद गाते हैं ॥ १ ॥ जिनका मन प्रभुके गुणोंमें नहीं लगा, उन पुरुषोंको विधाताने मानों जगत् में ठग लिया है ॥ २ ॥

भये कुमार जबहिं सब भ्राता ❀ कीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता
गुरु गृह गये पढ़न रघुराई ❀ अल्प काल विद्या सब आई

जब सब भाई बड़े हुए, तब माता-पिता और वशिष्ठजीने उनका जनेऊ किया पश्चात् श्रीरामचन्द्र जी अपने भाइयों सहित गुरुके घर विद्या पढ़ने गये तो थोड़े समयमें ही सारी विद्यायें आ गईं ॥

जाकी सहज श्वास श्रुति चारी ❀ सो हरि पढ़ यह कौतुक भारी
विद्या विनय निपुण गुण शीला ❀ खेलहिं खेल सकल नृप लीला

जिसका स्वाभाविक श्वासही चारों वेद हैं वे प्रभु पढ़ें, यह बड़ा आश्चर्य है। इसप्रकार विद्या, विनय और शीलता आदि गुणोंमें दक्ष होकर प्रभु राजाओंके समस्त खेलोंको खेलते थे ॥

करतल बाण धनुष अति सोहा ❀ देखत रूप चराचर मोहा
जिन्ह वीथिन्ह बिहरहिं सब भाई ❀ थकित होहिं सब लोग लुगाई

हाथमें धनुष-बाण अत्यन्त शोभायमान है, जिसे देखतेही चर-अचर सभी मोहित हो जाते हैं। जिन गलियोंमें से सब भाई विचरते, वहाँके सब स्त्री-पुरुष उन्हें देखते ही चकित हो जाते ॥८॥

दोहा—कोसलपुर वासी नर, नारि वृद्ध अरु बाल।
प्रानहुँ ते प्रिय लागत, सब कहँ राम कृपाल ॥२१०॥

इसप्रकार अयोध्याके सब आबाल, वृद्ध नर-नारियोंको कृपालु श्रीरामचन्द्रजी प्राणसे भी अधिक प्रिय लगते थे ॥ २१० ॥

बंधु सखा सँग लेहिं बुलाई ❀ बन मृगया नित खेलहिं जाई
पावन मृग मारहिं जिय जानी ❀ दिन प्रति नृपहिं देखावहिं आनी

भाइयों और मित्रोंको बुलाकर नित्यही शिकार खेलने बनमें जाते थे और ये मृग पवित्र हैं ऐसा हृदयमें जानकर उन्हें मारते तथा प्रतिदिन ले आकर राजाको दिखलाया करते थे ॥२॥

जे मृग राम बान के मारे ❀ ते तनु तजि सुरलोक सिधारे
अनुज सखा सँग भोजन करहीं ❀ मातु पिता आज्ञा अनुसरहीं

जो मृग रामजीके बाणोंसे मरते वे शरीर छोड़ते ही देवलोक (बैकुण्ठ)को चले जाते। छोटे भाई और मित्रोंके साथ भोजन करते तथा माता-पिताकी आज्ञा का अनुसरण करते ॥

जेहि विधि सुखी होहिं पुरलोगा ❀ करहिं कृपानिधि सोइ संयोगा
वेद पुरान सुनहिं मन लाई ❀ आप कहहिं अनुजहिं समुझाई

अयोध्यापुरीके लोग जिस प्रकार सुखी हों, श्रीरामचन्द्र वही उपाय करते थे ॥५॥ वे मन लगाकर वेद-पुराण सुनते और फिर उसे स्वयं कहकर भाइयों को समझाते थे ॥ ६ ॥

प्रात काल उठिके रघुनाथा ❀ मात पिता गुरु नावहिं माथा
आयसु माँगि करहिं पुरकाजा ❀ देखि चरित हरषत मन राजा

प्रातःकाल उठकर श्रीरामचन्द्रजी माता-पिता और गुरुको प्रणाम करते थे। और आज्ञा माँगकर नगरका ऐसा काम करते थे कि जिस चरित्रको देखकर राजा मन में बहुत प्रसन्न होते थे ॥

दोहा—व्यापक अकल अनीह अज, निर्गुन नाम न रूप।
भक्त हेतु नाना विधि, करत चरित्र अनूप ॥२११॥

(गोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं) प्रभु सर्वव्यापक, चेष्टारहित, अजन्मा, निर्गुण और जिनका कोई नाम स्वरूप नहीं हो सकता वे भक्तजनोंके हितार्थ अनेक प्रकारसे अनुपम चरित्र करते हैं २११

यह सब चरित कहा मैं गाई ❋ आगिल कथा सुनहु मन लाई
विश्वामित्र महामुनि ज्ञानी ❋ बसहिं विपिन शुभ आश्रमजानी

महादेवजी पार्वतीजीसे कहते हैं कि—यह चरित्र मैंने गाया, अब आगे की कथा कहता हूँ। विश्वामित्र बड़े ज्ञानी मुनि थे जो बनमें मंगलदायक आश्रम जानकर बास करते थे ॥२॥

तहँ जप योग यज्ञ मुनि करहीं ❋ अति मारीच सुबाहुहिं डरहीं
देखत यज्ञ निशाचर धावहिं ❋ करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं

वहाँ वे मुनिदेव अपने योग, जप और यज्ञ करते थे परन्तु मारीच, सुबाहु नामके दो राक्षस उन्हें डराते थे। मुनिको यज्ञ करते देख दौड़ते और बड़ा उपद्रव कर मुनिको दुःख देते थे ॥४॥

गाधि तनय मन चिन्ता व्यापी ❋ हरि बिनु मरहिं न निशिचरपापी
तब मुनिवर मन कीन्ह विचारा ❋ प्रभु अवतरेउ हरन महि भारा

तब उन गाधिपुत्र (विश्वामित्र) के मनमें बड़ी चिन्ता हुई, तो उन्होंने सोचा कि, बिना हरि भगवान्‌के ये पापी राक्षस नहीं मरेंगे ॥५॥ मुनिश्रेष्ठ इस बात पर मनमें विचार करने लगे तो ज्ञात हो गया कि, पृथ्वीका भार उतारनेके लिए प्रभुका अवतार हो चुका है ॥ ६ ॥

यहि मिस देखौं प्रभु पद जाई ❋ करि बिनती आनौं दोउ भाई
ज्ञान विराग सकल गुन अयना ❋ सो प्रभु मैं देखब भरि नयना

इसी बहानेसे चलकर प्रभुके चरणोंका दर्शन करूँ और प्रार्थना पूर्वक दोनों भाइयोंको ले आऊँ। जो ज्ञान-वैराग्य आदि समस्त गुणोंके धाम हैं उन प्रभुको मैं नेत्रभर देखूँगा ॥ ८॥

दोहा—यहि विधि करत मनोरथ, जात न लागी बार।
करि मज्जन सरयू सलिल, गये भूप दरबार ॥२१२॥

इस प्रकार मनमें बहुत भाँतिके मनोरथ (इच्छायें) करते हुए उन्हें जाते देर न लगी। वे सरयू जलमें स्नानकर राजा दशरथके दरबारमें जा पहुँचे ॥ २१२ ॥

मुनि आगमन सुना जब राजा ❋ मिलन गयउ लेइ विप्र समाजा
करि दंडवत मुनिहिं सनमानी ❋ निज आसन बैठारेन्हि आनी

(उधर) जब राजा दशरथने मुनिका आगमन सुना तो, ब्राह्मणोंका समाज लेकर मिलने गये, और वे मुनिको दण्डवतकर स्वागत करते हुए अपने सिंहासनपर लाकर बिठा दिये ॥

चरण पखारि कीन्ह अति पूजा ❋ मो सम आजु धन्य नहिं दूजा
विविध भाँति भोजन करवावा ❋ मुनिवर हृदय हर्ष अति पावा

फिर चरण धोकर उनकी पूजा की और कहा आज मुझसे बढ़कर धन्य दूसरा कोई नहीं है। फिर अनेक प्रकारका व्यंजन युक्त भोजन कराया, जिससे विश्वामित्रके हृदयको प्रसन्नता प्राप्त हुई ॥

पुनि चरणन मेले सुत चारी ❀ राम देखि मुनि बिरति बिसारी
भए मगन देखत मुख शोभा ❀ जनु चकोर पूरण शशि लोभा

फिर चारों पुत्रोंको बुलाकर राजा दशरथने मुनिके चरणोंमें दण्डवत् करायी, तब रामचन्द्रजी को देख मुनिको अपने शरीरकी सुध-बुध भूल गई। मुखारविन्दकी शोभाको देखते ही वे ऐसे मग्न हो गये कि जैसे, पूर्णिमाके चन्द्रमाको देखकर चकोर लोभायमान हो जाता है ॥

तब मन हर्षि वचन कह राऊ ❀ मुनि अस कृपा कीन्ह नहिं काऊ
केहि कारण आगमन तुम्हारा ❀ कहहु सो करत न लावउँ बारा

तब राजा दशरथ मनमें प्रसन्न होकर बोले हे मुनिदेव ! ऐसी कृपा आपने कभी मेरे ऊपर नहीं की। कहिये किस कारणसे आपका आगमन हुआ है, उसे करते हुए मैं देर न लगाऊँगा ॥

असुर समूह सतावहिं मोहीं ❀ मैं याँचन आयेउँ नृप तोहीं
अनुज समेत देहु रघुनाथा ❀ निशिचर बध मैं होब सनाथा

हे राजन् ! राक्षसोंका समुदाय मुझे बहुत सताता है, सो मैं आपसे यह याचना करने आया हूँ कि, छोटे भाई सहित श्रीरामचन्द्रजीको मुझे दीजिए ताकि निशाचरोंके वधसे मैं सनाथ होऊँ॥

दोहा—देहु भूप मन हरिषत, तजहु मोह अज्ञान।
धर्म सुयस नृप तुम कहँ, इन कहँ अति कल्यान ॥ २१३ ॥

हे राजन् ! मोह और अज्ञानको छोड़कर प्रसन्न चित्तसे दीजिये। इसमें धर्मकी रक्षा के साथ-साथ तुम्हें बड़ा यश होगा और इनके लिये भी अत्यन्त कल्याण है ॥२१३॥

सुनि राजा अति अप्रिय बानी ❀ हृदय कम्प मुखदुति कुँभिलानी
चौथेपन पायउँ सुत चारी ❀ विप्र वचन नहिं कहेउ विचारी

ऐसी अप्रिय वाणीको सुनकर राजाका हृदय काँप उठा, मुखकी शोभा मलिन हो गई। कहा हे विप्र ! इस वृद्धावस्थामें चार पुत्र मिले हैं, सो आपने विचारकर वचन नहीं कहा ॥२॥

माँगहु भूमि धेनु धन कोषा ❀ सर्वस देउँ आजु सह रोषा
देह प्रान ते प्रिय कछु नाहीं ❀ सोउ मुनि देउँ निमिष इक माहीं

आप पृथ्वी, गौवें और समस्त धन एवं खजाना माँगो तो मैं दे दूँ ॥३॥ शरीर और प्राणसे प्रिय कुछ नहीं है, सो हे मुनिदेव ! मैं उसे भी एक क्षणमें दे दूँगा ॥४॥

सब सुतप्रियमोहिं प्राण की नाईं ❀ राम देत नहिं बनै गोसाईं
कहँ निशिचरअति घोर कठोरा ❀ कहँ सुन्दर सुत परम किशोरा

हे गोसाईं ! यद्यपि सभी पुत्र मुझे प्राणोंके समान प्रिय हैं, तथापि श्रीरामचन्द्रजीको देते नहीं बनता। कहाँ वे भयावने कठोर राक्षस और कहाँ ये परम सुन्दर किशोरावस्थाके बालक ॥६॥

सुनि नृप गिरा प्रेमरस सानी ❁ हृदय हर्ष माना मुनि ज्ञानी
तब वसिष्ठ बहुविधि समुझावा ❁ नृप संदेह नाश कहँ पावा

राजाकी ऐसी प्रेम युक्त वाणी सुनकर विश्वामित्रजी अपने हृदयमें प्रसन्न हुए ।। ७ ।। जब वसिष्ठजीने अनेक प्रकारसे समझाकर कहा—तब राजाका सन्देह नष्ट हुआ ।। ८ ।।

अति आदर दोउ तनय बुलाये ❁ हृदय लाइ बहु भाँति सिखाये
मेरे प्राणनाथ सुत दोऊ ❁ तुम मुनि पिता आन नहिं कोऊ

राजा दशरथने प्रेमपूर्वक दोनों पुत्रोंको बुलाकर अपने हृदयसे लगाकर अनेक प्रकारकी शिक्षा देते हुए कहा—हे मेरे प्राणोंके स्वामी दोनों पुत्र ! अब आजसे ये मुनिजी तुम्हारे पिता हैं ।।

दोहा—सौंपे भूपति ऋषिहिं सुत, बहु विधि देइ अशीश ।
जननी भवन गये प्रभु, चले नाइ पद शीश ।।२१४।।

राजा दशरथने प्रेमपूर्वक दोनों पुत्रोंको विश्वामित्रको सौंप, बहुत प्रकारसे उन्हें आशीर्वाद दिया । तब प्रभु अपनी माताके महलमें जा पहुँचे और उन्हें प्रणामकर चल दिए ।।२१४।।

सोरठा—पुरुषसिंह दोउ वीर, हर्षि चले मुनि भय हरण ।
कृपासिन्धु मति धीर, अखिल विश्व कारण करण ।।२७।।

फिर पुरुषोंमें सिंहरूप दोनों वीर मुनिका भय दूर करनेके लिए,प्रसन्न मनसे उनके साथ चले । जो कृपाके सागर और धीर बुद्धिवाले तथा समस्त संसारके कारण स्वरूप और रचयिता हैं ।।२७।।

अरुण नयन उर बाहु विशाला ❁ नील जलद तन श्याम तमाला
कटि पट पीत कसे वर भाथा ❁ रुचिर चाप शायक दुहुँ हाथा

जिनके लाल नेत्र और विशाल वक्षःस्थल तथा नील कमल और श्याम तमालके समान जिनका शरीर है । कमरमें पीताम्बर और श्रेष्ठ तरकस कसे, दोनों हाथमें सुन्दर धनुषबाण धारण किये हैं।

श्याम गौर सुन्दर दोउ भाई ❁ विश्वामित्र महानिधि पाई
प्रभु ब्रह्मण्य देव मैं जाना ❁ मोहिं हित पिता तजे भगवाना

ऐसे श्याम और गौरवर्ण महानिधि दोनों भाइयोंको पाकर, विश्वामित्रजी सोचने लगे कि जो प्रभु ब्राह्मणोंके देवता हैं, वे भगवान् आज मेरे लिये अपने पिताको छोड़ दिये हैं ।।४।।

चले जात मुनि दीन्ह दिखाई ❁ सुनि ताड़का क्रोध करि धाई
एकहि बाण प्राण हरि लीन्हा ❁ दीन जानि तेहि निजपद दीन्हा

ऐसा सोचते चले जा रहे थे कि, ताड़का राक्षसी दिखलाई पड़ी, मुनिने उसे रामचन्द्रजी को दिखलाया, यह सुनकर ताड़का क्रोधकर उनपर टूट पड़ी ।। ५ ।। तब रामचन्द्रजीने एकही बाणसे उसका प्राण हर लिया और दीन जान उसे अपना लोक दिया ।। ६ ।।

तब ऋषि निजनाथहिं जियचीन्हा❁ विद्यानिधि कहँ विद्या दीन्हा
जाते लाग न क्षुधा पिपासा ❁ अतुलित बल तन तेज प्रकाशा

तब ऋषिने अपने स्वामीको हृदयसे पहचानकर, विद्याओंके निधि श्रीरघुनाथजीको वह विद्या प्रदान की, जिससे भूख प्यास न लगे और शरीरमें अत्यन्त बल तथा तेज का प्रकाश बढ़े ॥८॥

दोहा—आयुध सर्व समर्पिकै, प्रभु निज आश्रम आनि ।
कन्दमल फल भोजन, दीन्ह भक्त हित जानि ॥ २१५ ॥

इस प्रकार विश्वामित्रने प्रभुको समस्त आयुध समर्पितकर, फिर आश्रममें लाकर, उन्हें भक्त हितकारी जानकर, कन्द-मूल और फल भोजन करनेको दिये ॥ २१५ ॥

प्रात कहा मुनिसन रघुराई ❀ निर्भय यज्ञ करहु तुम्ह जाई
होम करन लागे मुनि झारी ❀ आपु रहे मखकी रखवारी

प्रातःकाल होनेपर श्रीरामचन्द्रजीने मुनिसे कहा कि आप जाकर निर्भय यज्ञ कीजिये ॥१॥ फिर तो सब मुनि यज्ञ करने लगे और स्वयं प्रभु यज्ञ की रक्षामें नियुक्त हो गये ॥ २ ॥

सुनि मारीच निशाचर कोही ❀ लै सहाय धावा मुनि द्रोही
बिनुफर बाण राम तेहि मारा ❀ शतयोजन गा सागर पारा

तब यज्ञ हो रहा है, यह सुनकर मारीचने अत्यन्त क्रोध करके अपने सहायकोंको साथ लेकर धावा किया ॥३॥ रामचन्द्रजीने बिना फरके बाणसे मारकर उसे समुद्रके पार सौ योजन की दूरी पर पहुँचा दिया ॥ ४ ॥

पावक शर सुबाहु पुनि जारा ❀ अनुज निशाचर कटक सँहारा
मारि असुर द्विज निर्भय कारी ❀ अस्तुति करहिं देव मुनि झारी

फिर सुबाहु आया तो-श्रीरामचन्द्रजीने अग्निबाण चलाकर मारा, तबतक लक्ष्मणने समस्त राक्षसी सेनाका संहार कर दिया ॥५॥ ब्राह्मणको निर्भय करनेवाले प्रभुने सब राक्षसोंको मार डाला, देवतागण आकाश मण्डलमें आकर श्रीरामचन्द्रजीकी स्तुति करने लगे ॥ ६ ॥

तहँ पुनि कछुक दिवस रघुराया ❀ रहे कीन्ह विप्रन्ह पर दाया
भगति हेतु बहु कथा पुराना ❀ कहैं विप्र यद्यपि प्रभु जाना

फिर श्रीरामचन्द्रजीने कुछ समय तक ब्राह्मणोंपर दया भाव रखते हुए वहाँ वास किया ॥७॥ ब्राह्मण भक्तियुक्त पौराणिक कथायें कहते, यद्यपि भगवान् सब कुछ जानते थे ॥ ८ ॥

तब मुनि सादर कहा बुझाई ❀ चरित एक प्रभु देखिय जाई
धनुषयज्ञ सुनि रघुकुल नाथा ❀ हर्षि चले मुनिवरके साथा

तब मुनिने प्रेमपूर्वक समझाकर कहा—हे प्रभो ! अब आगे चलकर एक चरित्र तो देखिये॥९॥ धनुषयज्ञकी बात सुनकर रघुकुलके स्वामी श्रीरामचन्द्रजी प्रसन्न हो विश्वामित्रजीके साथ चले १०

आश्रम एक दीख मगमाहीं ❀ खग मृग जीव जन्तु तहँ नाहीं
पूछा मुनिहिं शिला प्रभु देखी ❀ सकल कथा मुनि कही विशेखी

मार्गमें एक आश्रम दिखाई पड़ा, जहाँ खग-मृग, पशु-पक्षी कोई नहीं था ॥११॥ केवल एक पत्थरकी शिला दिखाई पड़ी, तब उसको देखकर श्रीरामचन्द्रजीने जो पूछा तो मुनिने उसकी सारी कथा कह सुनायी ॥ १२ ॥

दोहा—गौतम नारी शाप वश, उपल देह धरि धीर।
चरण कमल रज चाहती, कृपा करहु रघुबीर॥ २१६॥

यह गौतमकी स्त्री है जो शापके वश शिलारूप हो गयी है। यह धैर्य धारण किए आपके चरणोंकी धूलिको चाहती है, सो हे रघुकुलके वीर श्रीरामचन्द्रजी! इसपर कृपा करो॥२१६॥

छन्द—परसत पदपावन शोक नशावन प्रगट भई तपपुञ्ज सही।
देखत रघुनायक जन सुखदायक सनमुख होइ कर जोरि रही॥
अति प्रेम अधीरा पुलक शरीरा मुख नहिं आवै वचन कही।
अतिशय बड़भागी चरणन लागी युगलनयन जलधार बही२८

तब उस पवित्र और शोकनाशक चरणोंका स्पर्श होते ही तप की राशि अहिल्या प्रकटहो गई और श्रीरामचन्द्रजीको देख हाथ जोड़कर खड़ी हो विनती करने लगी। उसका शरीर पुलकायमान हो गया, मुखसे कोई शब्द निकलना कठिन हो गया। तब अपनेको भाग्यशालिनी जानकर अहिल्या भगवान्के चरणों पर गिर पड़ी और दोनों नेत्रोंसे जलकी धारा बह चली॥२८॥

छन्द—धीरज मन कीन्हा प्रभु कहँ चीन्हा रघुपति कृपा भगति पाई।
अति निर्मल बानी अस्तुति ठानी ज्ञानगम्य जय रघुराई॥
मैं नारि अपावन प्रभु जगपावन रावनरिपु जन सुखदाई।
राजीव विलोचन भव-भय मोचन पाहि-पाहि शरणहिं आई॥

किन्तु मनमें धैर्य धारणकर उसने प्रभुको पहचान लिया और उसे श्रीरामचन्द्रजी की कृपासे भक्ति प्राप्त हो गई। फिर वह अत्यन्त निर्मल वाणीमें यह स्तुति करने लगी कि—हे रामचन्द्रजी! आप ज्ञानसे जाने जाते हैं, आपकी जय हो। मैं स्त्री हूँ, अपवित्र हूँ किन्तु, आप प्रभु तो संसारको पवित्र करनेवाले, भक्तोंके सुखदाता और रावणके शत्रु हैं। हे राजीवलोचन! आप संसारके भवजाल रूपी दुःखोंको नाश करनेवाले हैं, हे प्रभो! मैं आपकी शरण आई हूँ, त्राहि माम्! त्राहि माम्!॥ २९॥

छन्द—मुनिशाप जो दीन्हा अतिभल कीन्हा परम अनुग्रह मैं माना।
देखेउँ भरि लोचन भवभयमोचन इहै लाभ शंकर जाना॥
विनती प्रभु मोरी मैं मतिभोरी नाथ न वर माँगौं आना।
पद कमल परागा रस अनुरागा मन मम मधुप करै पाना॥

हे प्रभो! मुनिजीने जो शाप दिया वह बड़ा अच्छा किया, मैं उनका बड़ा उपकार मानती हूँ। शंकरजी जानते हैं कि, उससे मेरा बड़ा लाभ हुआ जो आज अपने नेत्रोंसे भरपूर आप भवभय-मोचन प्रभु का दर्शन किया। सो हे प्रभो! मेरी एक विनती है कि मैं बहुत भुलक्कड़ स्वभाव की हूँ, अतः हे नाथ! दूसरा कोई वर न माँगकर केवल यही वर माँगती हूँ कि, प्रभु के चरण कमलोंके पराग (धूलि) रसमें मेरा मन भौंरेके समान लगा रहे॥३०॥

छंद--जेहि पद सुर-सरिता परम पुनीता प्रगट भई शिव शीश धरी।
सोई पदपङ्कज जेहि पूजत अज मम शिर धरेउ कृपालु हरी॥
यहि भाँति सिधारी गौतमनारी बार-बार हरिचरन परी।
जो अतिमनभावा सो वर पावा गइ पतिलोक अनंद भरी॥३१॥

जिन चरणों से परम पवित्र श्रीगंगाजी प्रकट हुई हैं कि, जिसे शिवजी अपने शिरपर धारण किये रहते हैं। और जिस चरण कमल को ब्रह्माजी पूजते हैं, उसी को कृपालु भगवान् ने मेरे शिर पर रक्खा है। इस भाँति बारम्बार भगवान् के चरणोंपर शिर रखकर गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या ने जो उसके मन को अत्यन्त अच्छा लगा, वही वर पाया और आनन्द से पूर्ण होकर वह अपने पति के लोक में चली गयी ॥ ३१ ॥

दोहा—अस प्रभु दीनबन्धु हरि, कारन रहित दयालु।
तुलसिदास शठ ताहि भजु, छाँड़ि कपट जंजालु ॥२१७॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि रे मूर्ख! जो प्रभु ऐसे दीनबन्धु और बिना कारण ही दीनदयाल (दीनोंपर दया करनेवाले) हैं, तू छल-कपट छोड़कर उनका भजन कर ॥२१७॥

चले राम लछिमन मुनि संगा ❀ गए जहाँ जग पावनि गंगा
गाधि सुवन सब कथा सुनाई ❀ जेहि प्रकार सुरसरि महि आई

अब श्रीरामचन्द्रजी और लक्ष्मणजी मुनि के साथ वहाँ गये, जहाँ संसार को पवित्र करने वाली श्रीगंगाजी बह रही थीं। तब श्रीरामचन्द्रजी के पूछने पर विश्वामित्रजी ने पृथ्वी पर गंगावतरण की सब कथा कह सुनायी॥

॥ अथ क्षेपक गंगाजीकी उत्पत्ति ॥

अनुज सहित प्रभु कीन्ह प्रणामा ❀ बहु प्रकार सुख पायउ रामा

भगवान् ने भाई लक्ष्मण सहित श्रीगङ्गाजीको प्रणामकर बहुत प्रकार से सुख पाया॥

पुनि सुरसरि उतपति रघुराई ❀ कौशिक सन पूछा शिर नाई
कह मुनि तव कुलमहँ इक राजा ❀ नाम सगर तिहुँलोक विराजा

फिर रामचन्द्रजी ने विश्वामित्र को मस्तक नवाकर श्रीगंगाजीकी उत्पत्ति पूछी। मुनि ने कहा—हे राम! तुम्हारे कुल में एक सगर नामके तीनों लोक में विख्यात राजा हो चुके हैं॥

तिनके युग भामिनि सुकुमारी ❀ केशिनि ज्येष्ठ सुमति लघुप्यारी
सब प्रकार संपति गुण भ्राजा ❀ सुत विहीन मन विस्मय राजा

उनकी कोमल अंगवाली दो स्त्रियाँ थीं, बड़ी केशिनी और छोटी सुमति बड़ी प्यारी थी। उनमें सब प्रकार के सम्पत्ति आदि गुण तो थे, परन्तु पुत्र न होने से राजा के मन में बड़ा दुःख था॥

एक समय भामिनि दोउ साथा ❀ बन तप हेतु गयें रघुनाथा
सघन सुफल तरु सुन्दर नाना ❀ तहँ भृगुमुनि तप तेज निधाना

हे रामचन्द्र ! एक समय वह दोनों रानियों को साथ ले बनमें तपस्या के लिए गये। फल सहित अनेक सुन्दर-सुन्दर घने वृक्ष लगे हुए थे, जहाँ तप और तेज के निधान भृगु मुनि वास करते थे ॥

दोहा–सहित नारि नृप मुदित मन, रहे वर्ष शत एक।
कीन्हे तप भल देखि भृगु, अस्तुति कीन्ह अनेक ॥२१८॥

राजा रानियों सहित प्रसन्न मन से एक सौ वर्ष तक बन में रहे और कठिन तप किया तथा भृगुजी के दर्शन पाकर बहुत सी स्तुति की ॥ २१८ ॥

कहि निज दुख प्रणाम नृप कीन्हा ❁ दै अशीश तब मुनि वर दीन्हा
नृप रानी सन मुनि अस भाषा ❁ लेउ सो बर जो जेहिं अभिलाषा

राजा ने प्रणाम कर अपना दुःख कह सुनाया, तब मुनीश्वर ने आशीर्वाद देकर वरदान दिया। फिर मुनिने राजा की रानियों से यों कहा कि, जो जिसके मनमें आवे वह वही वर लेवे॥

सुनि मुनि चरण शीश तिन्ह नावा❁ देउ नाथ तुम कहँ जो भावा
एकहि कहा एक सुत होना ❁ दूसरि सहस साठि सुत लोना

उन्होंने सुनकर मुनीश्वर के चरणों पर माथा नवाकर कहा, हे स्वामी ! जों तुम्हारे मनमें आवे वही वरदान दो ॥३॥ उन्होंने एक को एक पुत्र होनेके लिये और दूसरी को सुन्दर साठ हजार पुत्र होने का वरदान दिया ॥ ४ ॥

हर्षित भयउ सुभग वर पाई ❁ हाथ जोरि चरणन शिर नाई
सहित भामिनिन्ह अवधहिं आयउ❁ हर्षसहित कछु दिवस गँवायउ

वे सुन्दर वर पाकर प्रसन्न हुये और हाथ जोड़कर चरणों में शिर नवाया ॥५॥ राजा स्त्रियों सहित अयोध्यापुरी में आये और आनन्द सहित कुछ दिन व्यतीत किये ॥६॥

जानि सुघरी नखत सुखदाई ❁ तब केशिनि असमंजस जाई
सुमति प्रसव तुम्बरि इक सोई ❁ भये सुत प्रगट कहे मुनि जोई

फिर सुन्दर घड़ी और सुखदायक नक्षत्र जानकर केशिनी ने असमंजस को उत्पन्न किया। और सुमति के गर्भ से तूँबी हुयी, जिसमें-से उतने पुत्र उत्पन्न हुए, जितने मुनि ने कहे थे ॥८॥

हर्ष सहित दिय दान नरेशू ❁ पूजि विप्र गुरु गौरि गणेशू
घृतघट सुन्दर तुरत मँगाये ❁ ते सब सुत नृप तिन्ह महँ नाये

राजा ने ब्राह्मण, गुरु, पार्वती और गणेशजी की पूजाकर आनन्द सहित दान दिये। राजा ने शीघ्र सुन्दर घी के घड़े मँगाये और उनमें सब पुत्रों को पधराया ॥ १० ॥

दोहा–इहि विधि भये सकल सुत, पूजे सब मन काम।
जाय दिवस निशि हर्षबस, सुनहु राम घनश्याम ॥११९॥

इस भाँति सब पुत्र उत्पन्न हुए और सब मनोकामना पूरी हुई, हे घनश्याम! रामचन्द्र! सुनो, फिर तो रात-दिन आनन्द के साथ बीतने लगे ॥ २१९ ॥

परिजन पुरजन रानि नरेशू ❀ अति सानँद तनु मिटा कलेशू
बालकेलि करि भयउ कुमारा ❀ लीला करैं अगम संसारा

कुटुम्बी, नगर के लोग, रानी और राजा सब आनन्द के वश अंग में फूले न समाते थे और दुःख मिट गये ॥ बाल लीला कर कुमार बड़े हुए और इस अगम संसार में चरित्र करने लगे ॥

होहिं सुकाज सकल मन चीते ❀ इहि सुख बसत बहुत दिन बीते
सरयू नदी अवध जो अहई ❀ विमल सलिल उत्तर दिशि बहई

सब मनमाने सुन्दर काम होने लगे और इसी सुख में रहते २ बहुत दिन बीत गये। सरयू नदी अयोध्यापुरीमें उसके उत्तर दिशाकी ओर बहती है, और उसमें निर्मल जल भरा है ॥

प्रजा लोग के बालक नाना ❀ नित उठि तहाँ करहिं अस्नाना
असमंजस तहँ तरणी आनी ❀ तिन्हहिं चढ़ाइ बोरि गहि पानी

वहाँ प्रजा लोगोंके बहुत से बालक नित्य उठकर स्नान करते थे ॥५॥ वहाँ असमंजस नौका ले आया और उन बालकोंका हाथ पकड़कर उसपर चढ़ा पानी में डुबो दिया ॥६॥

भये प्रजा सब परम दुखारी ❀ बालक बध लखि सुनहु खरारी
सकल गये जहँ बैठ नृपाला ❀ बोले बचन नाइ पद भाला

हे रामचन्द्र! सुनो, बालकों का मरना सुनकर सब प्रजाके लोग बड़े दुखी हुए। वे सब वहाँ गये, जहाँ राजा बैठा था (और उसके) चरणों को मस्तक नवाकर यह वचन बोले ॥

तजब देश बरु सुनहु नरेशू ❀ बिना तजे नहिं मिटइ कलेशू
तुम नृप चहहु प्रजा प्रतिपाला ❀ सुत तुम्हार भा सबकर काला

हे राजा! सुनो, यह अच्छा है कि, हम देश छोड़ देंगे क्योंकि बिना छोड़े दुःख दूर नहीं होगा। हे राजन्! आपतो प्रजाका पालन किया चाहते हो, परन्तु आपका पुत्र सबका काल हुआ ॥

दोहा—तव सुत कीन्हे पाप बहु, मारे बालक वृन्द।
तुम कहँ प्राण समानसुत, सकल प्रजनिकहुँ मंद ॥२२०॥

तुम्हारे पुत्र ने बड़ा पाप किया, जो बालकों का समूह मार डाला। तुमको वह पुत्र प्राण के समान है, परन्तु सब प्रजा को बुरा लगता है ॥ २२० ॥

प्रजा गिरा सुनि धीरज दीन्हा ❀ सुतहिं देश ते बाहर कीन्हा
तासु तनय जग विदित प्रभाऊ ❀ गुणनिधि अंशुमान तिहि नाऊँ

प्रजाकी वाणी सुनकर राजाने सबको धीरज दिया और पुत्र को देश से बाहर कर दिया ॥ उसका पुत्र अंशुमान गुणों का सागर हुआ कि, जिसका प्रभाव संसार में उजागर है ॥२॥

बसत हृदय नृप के सो कैसे ❀ फणि मणि मीन सलिल रह जैसे
गये प्रजा सब निज-निज धामा ❀ भये विशोच मनहिं विश्रामा

वह राजा के हृदय में कैसे बसा था जैसे, सर्प के पास मणि और जल में मछली रहती है ।। सब प्रजा लोग अपने-अपने घरको गये और चिन्ता रहित हो मन में विश्राम पाया ।।४।।

बहुरि नृपति मन कीन्ह विचारा ❀ आइ गयउ पन चौथ हमारा
द्विज मंत्रिन गुरु सुतनि बुलाये ❀ हिम गिरि विन्ध्य मध्य तब आये

फिर राजा ने मन में विचार किया कि, हमारा चौथापन अर्थात् बुढ़ापा आ गया । ब्राह्मण, मंत्री, गुरु और पुत्रों को बुलाया और वे हिमांचल और विन्ध्याचलके बीच में आये ।।६।।

रुचिर वेदिका एक बनाई ❀ देखत बनै बरनि नहिं जाई
मख अरंभ छाँड़ेउ तब तुरगा ❀ वेगवंत देखिय जिमि उरगा

(उन्होंने) एक सुन्दर वेदी बनाई, जो देखने ही में बन आवे, वर्णन नहीं की जाती । तब यज्ञ का आरंभ कर घोड़ा छोड़ा, वह ऐसा शीघ्र चलने वाला था, जैसे सर्प दीखते हैं ।।८।।

दोहा—सुरपति सुनि मख दारुन, मनमहँ करि अनुमान ।
आइ तुरँग तिन लीन्हेउ, मरम न काहू जान ।।२२१।।

तब इन्द्रने उस कठिन यज्ञ का आरम्भ सुनकर मनमें विचार किया और आकर राजाके यज्ञका घोड़ा चुरा लिया, यह भेद किसी ने नहीं जाना ।। २२१ ।।

राखेउ आनि कपिलमुनि पाहीं ❀ कोउ न जान काऊ गति नाहीं
जोगवत रहे जे सुभट सयाने ❀ लेत तुरंग तिनहुँ नहिं जाने

फिर उसे लाकर कपिल मुनि के पास रक्खा, जिसे किसी ने नहीं जाना और न किसी की वहाँ पहुँच थी ।। जो चतुर योद्धा रखवाले थे, उन्होंने भी घोड़ा लेते न जाना ।।२।।

तिन सब आइ कहा नृप पाहीं ❀ महाराज हम कहत डराहीं
लीन्ह तुरँग यह जान न कोई ❀ कहा करिय जो आयसु होई

उन सबने आकर राजा से कहा, कि हे राजन् ! हम कहने में डरते हैं । घोड़ा किसीने हर लिया और इसे कोई नहीं जानता, अब क्या करना चाहिये ! जो आज्ञा हो सो करें ।।

सुनत बचन नृप विस्मय पायउ ❀ सकल सुतन कहँ तुरत बुलायउ
जाइ तुरँग तुम हेरहु भाई ❀ सकल चले चरनन शिरनाई

यह बात सुनते ही राजाको दुःख हुआ और शीघ्र ही सब पुत्रोंको बुलाया और कहा हे भाई ! तुम जाकर घोड़े को खोजो, यह सुनकर सब चरणों में शिर नवाकर चले ।।६।।

सुरपति सम देखिय बलबीरा ❀ सकल धनुर्धर अति रनधीरा
तिनहिं चलत धरनी अकुलाई ❀ बलि पशु जीव भये अब आई

वे सब धनुषके धारण करने वाले, युद्धमें बड़े धैर्यशाली और बलमें इन्द्रके समान वीर दिखलाई देते थे। उनके चलनेसे पृथ्वी व्याकुल हुई और सब जीव बलि पशुके समान भयभीत होने लगे ॥

सुमन बाटिका उपवन बागा ❀ सरित कूप वापिका तड़ागा
नगर गाउँ मुनि आश्रम नाना ❀ गिरि कानन कंदर अस्थाना

फूलोंके बगीचा, बन, बाग, नदी, कुएँ, बावली, तालाब, नगर, ग्राम एवं बहुतसे मुनीश्वरों के धाम, पर्वत और गुफाओंमें जाकर ढूंढ़ा ॥ १० ॥

सोरठा—एहि विधि शोधेउ जाय, आये सब मिलि भूपपहँ।
चरनन माथहिं नाय, बोलें प्रभु कहुँ अश्व नहिं॥२८॥

इस भाँति जाकर पता लगाया और तब सब मिलकर राजाके पास आये और राजाके चरणों को माथा नवाकर बोले-हे स्वामी ! घोड़ा कहीं नहीं मिला ॥२८॥

खोदहु महि सुत फेरि पठाये ❀ चले सकल पूरब दिशि आये
तिनके कर जनु वज्र समाना ❀ योजन भरि खोदहिं बलवाना

फिर पुत्रोंको भेजा कि धरती खोदो, वे सब चले-चले पूर्व दिशामें आये ॥१॥ उनके हाथ मानों वज्रके समान थे और वे ऐसे बली थे कि चारकोश तक पृथ्वी नित्य खोदते थे ॥२॥

देखि अतुल बल बिबुध डेराने ❀ करिहहिं कहा सकल सकुचाने
शोधत महि पताल सब आये ❀ दिग्गज देखि सबन शिर नाये

इस अतुल बलको देखकर देवता डरे और तब सब सकुचाकर विचारने लगे कि, अब क्या करेंगे ? ॥ ३ ॥ पृथ्वीको ढूँढते हुए सब पातालमें आये और वहाँ दिशाके हाथीको देखकर सबने सिर नवाया ॥४॥

तिहि पूछा सब कथा सुनायउ ❀बहुरि सकल दक्षिण दिशिआयउ
इहि विधि पुनि दूसर गज देखा ❀ अति उत्तमगुण विमल विशेखा

उसने पूछा, तो सब कथा कह सुनाई और फिर सब दक्षिण दिशाको आये ॥५॥ फिर इसी भाँति दूसरा हाथी देखा—जिसमें बहुत अच्छे निर्मल गुण थे ॥६॥

ताहू कहँ प्रणाम पुनि कीन्हा ❀ चले खनत पश्चिम चित दीन्हा
तीसर देखि प्रदक्षिण कीन्हा ❀ पुनि उत्तर दिशि शोधन लीन्हा

फिर उसको भी प्रणाम किया और खोदते हुए पश्चिम दिशामें चित्तको लगाकर चले ॥७॥ तीसरे हाथीको देखकर परिक्रमा की और फिर उत्तर दिशा को ढूँढने चले ॥८॥

दिग्गज श्वेत देखि सुख पाये ❀सकल कपिल मुनिपहँ चलिआये
खोदत महि कोउ पार न आवा ❀सोइ भा चहुँदिशि जलधि सुहावा

उस दिशामें श्वेत हाथीको देख सुख पाये और (पृथ्वीको खोदते हुए) सब कपिल-मुनि के पास चले आये ॥९॥ खुदी हुई पृथ्वीका किसीको अन्त न मिला, वह मानों चारों दिशाओंमें सुहावना समुद्र हो गया ॥१०॥

दोहा—देखिन आइ तुरंग तब, बाँधा मुनिवर पास।
बोले बचन सक्रुद्ध होइ, भा चह सबकर नास ॥ २२२ ॥

जब आकर श्रेष्ठ मुनीश्वर (कपिल) के पास घोड़े को बँधा हुआ देखा। तब क्रोधमें भरकर वचन बोले, (महादेवजी कहते हैं, हे पार्वती !) सबका नाश हुआ चाहता है ॥२२२॥

खोदी महि हम चारिउ कोंधा ❀ रे रे दुष्ट बहुत तोहिं शोधा
कोउ कह चोर दीख बहु होई ❀ इहि सम छली और नहिं कोई

रे दुष्ट ! हमने पृथ्वीके चारों कोने खोद डाले और तुझे बहुत ढूँढ़ा ॥ १ ॥ किसीने कहा—यह बड़ा चोर दिखाई देता है। इसके बराबर छलिया दूसरा कोई नहीं है ॥२॥

सुनत बचन मुनि चितवा जबहीं ❀ भये भस्म क्षण महँ सब तबहीं
उमा वचन जिन समुझि न बोला ❀ सुधा होइ विष तिहिं कृमिडोला

ऐसे वचन सुनते ही जब मुनीश्वरने देखा, तब उसी क्षण सब भस्म हो गये। (महादेवजी बोले) हे पार्वती ! जिसने समझकर वचन न बोला उसको अमृत भी विषका कीड़ा हो डोलने लगता है ॥

पावक जानि धरे कर प्रानी ❀ जरहिं न काहे ते अभिमानी
जानि गरल जे संग्रह करहीं ❀ सुनहु राम ते काहे न मरहीं

जो प्राणी जान बूझकर अग्निको पकड़ेंगे, वे अभिमानी क्यों नहीं जलेंगे ॥५॥ (विश्वामित्र) कहने लगे—हे राम ! सुनो, जो जानकर विष इकट्ठा करते हैं वे क्यों नहीं मरेंगे ? ॥ ६ ॥

क्रोध कीन्ह बिन करे विचारा ❀ भये सकल तेहिते जरि क्षारा
वहाँ नृपति अँशुमान पठाये ❀ नहिं आये सुत तिन्हहिं बुलाये

बिना विचारे क्रोध किया, इससे सब जलकर राख हो गये ॥७॥ उधर जब पुत्रगण नहीं आये तब राजाने अंशुमानको वहाँ बुलाया और उनको लानेके लिए उसे भेजा ॥ ८ ॥

दोहा—दीन्हीं नृपति अशीश तब, अतिहित बारहिं बार।
बेगि फिरहु लै तुरँग सुत, मेरें प्राण अधार ॥२२३॥

राजाने बड़े प्यारसे बारबार आशीर्वाद दिया और कहा कि, मेरे प्राणोंके आधार पुत्र ! जाओ और घोड़े को लेकर जल्दी लौटना ॥ २२३ ॥

कहेउ नाइ पद शीश कुमारा ❀ विष्णु भक्त दुहुँ कुल उँजियारा
जहँ कहुँ निरखि मुनिन के धामा ❀ पूछि खबरि करि दण्ड प्रणामा

कुमार अंशुमान चरणोंको शिर नवाकर चला, जो विष्णुका भक्त और दोनों कुलोंमें उजेला करनेवाला था। जहाँ कहीं मुनीश्वरोंके स्थान देखता वहाँ दण्डवत् प्रणाम कर पूछता ॥२॥

चलें मुनिन्ह सन पाइ अशीशा ❀ खोजेहु पैहहु जाहु महीशा
इहि बिधि खोजत मग महँ जाता ❀ मिलेउ गरुड़ सुमतीकर भ्राता

मुनियोंसे यह आशीर्वाद पाकर चला कि, 'हे राजन्! जाकर खोज करो, घोड़ेको पाओगे।' इस प्रकार मार्गमें ढूंढ़ते हुए चले तो सुमतिके भाई गरुड़ मिले ॥ ४ ॥

चरण परत तब आशिष दयेऊ ❀ जरे सकल जेहि विधि सो कहेऊ
सुनतहिं वचन सोच भा भारी ❀ लै खगेश देखेउ थल बारी

तब चरण छूते ही आशीष दी और जिस भाँति सब पुत्र जले थे, सो सब कथा कही। वचन सुनते ही बड़ा शोच हुआ, तब गरुड़जीने ले जाकर जले हुए लोगोंका स्थान दिखलाया ॥

अंशुमान तहँ मज्जन कीन्हा ❀ क्रम-क्रम सबहिं तिलांजलि दीन्हा
बहुरि गरुड़ बोले सुन ताता ❀ मैं तोहिं कहौं सुनो इक बाता

वहाँ अंशुमानने स्नानकर क्रम-क्रमसे सबको तिलाञ्जलि दी। फिर गरुड़ बोले—हे प्यारे! तुमको एक बात कहता हूँ, सुनो ॥८॥

सोरठा—सुन सुत सोइ उपाइ, गंगा आवहिं अवनि महँ।
दरशन ते अघ जाइ, मज्जन किये अनेक फल ॥२९॥

हे पुत्र! सुनो, वही उपाय करो जिससे पृथ्वीपर गङ्गाजी आवें। उनके दर्शनसे सबके पाप दूर हो जायँगे और उनमें स्नान करनेसे बहुत पुण्य फल होगा ॥ २६ ॥

षष्टिसहससुत तरिहहिं यहिबिधि ❀ गंगा पाइ परम पावन निधि
सुनि अस बचन हृदय अति भाये ❀ सहित गरुड़ मुनिवर पहँ आये

इस भाँति अत्यन्त पवित्रताकी खानि गङ्गाजीको पाकर साठ हजार पुत्र तर जायँगे ॥१॥ ऐसे वचन सुनकर मनमें बहुत प्यारे लगे, फिर गरुड़ समेत कपिल मुनिके पास आये ॥२॥

भूप गरुड़ मुनि चरणन नायउ ❀ पूर्व कथा नृप ताहि सुनायउ
आशिष देइ तुरँग मुनि दीन्हा ❀ हर्षित हृदय गमन तब कीन्हा

तब राजा और गरुड़जीने मुनिके चरणोंको प्रणाम किया और मुनिने राजाको पहली कथा सुनाई। मुनीश्वरने आशीर्वाद देकर राजाको घोड़ा दिया, तब राजा मनमें प्रसन्न हो चले ॥४॥

नगर समीप गरुड़ पहुँचाई ❀ गयउ भवन तब निज रघुराई
वहाँ तुरँग ले नृप शिरनाई ❀ षष्टि सहस सुत मरण सुनाई

हे रामचन्द्र! गरुड़जी राजाको नगरके पास पहुँचाकर अपने लोकको गये ॥५॥ अंशुमानने घोड़ा लाकर राजाको शिर नवाकर साठ हजार पुत्रोंका मरना सुनाया ॥ ६ ॥

विस्मय-हर्ष-विवश नृप भयऊ ❀ कीन्हउ यज्ञ दान बहु दयऊ
बहु विधि नृपति राज तब कीन्हा ❀ प्रजालोक कहँ अति सुख दीन्हा

राजाने पुत्र शोकसे दुःखित और घोड़ा मिलनेसे आनन्दके वश होकर यज्ञ किया और बहुत दान दिये। तब राजाने बहुत तरहसे राज्य किया और प्रजा लोगोंको बहुत आनन्द दिया ॥

दोहा—अंशुमान कहँ राज दे, निजमन हरिपद लाग।
गयउ सगर तपकाज बन, हृदय अधिक अनुराग ॥२२४॥

राजा सगर अंशुमानको राज्य दे, अपना मन भगवान्‌के चरणोंमें लगाकर हृदय में बड़े प्रसन्न होते हुए बनमें तपके लिये चले गये ॥२२४॥

तासु तनय दिलीप नृप भयऊ ❀ तपकर हेतु उतर दिशि गयऊ
अतिहि अगम तप कीन्ह नृपाला ❀ भये कालवश गये कछु काला

अंशुमानके पुत्र राजा दिलीप हुए, सो अंशुमान इन्हें राज्य देकर तप करनेके लिए उत्तर दिशा को गये। राजाने बहुत ही कठिन तपस्या की। कुछ दिन बीते तो कालके वश हो मर गये ॥२॥

किहि विधि कहूँ दिलीप प्रभुताई ❀ सेवहिं सकल नृपति तिहिं आई
जुवत जासु मुख सुरपति रहई ❀ महिमा तासु कवन कबि कहई

दिलीपकी प्रभुता-बड़ाई किस भाँति कहूँ ? जिसकी सब राजा आकर सेवा करते थे। जिनका मुख इन्द्र देखता रहता था, उनकी बड़ाईको कौन कवि कह सकता है ? ॥ ४ ॥

भागीरथ अस सुत भये जासू ❀ पितुसम नीति अधिक उर तासू
तिनहिं बोलि नृप दीन्हेउ राजू ❀ आपु चले उठि तप के काजू

जिसके पुत्र भगीरथ नामके हुए, जिनके हृदयमें पिताके समान बहुत नीति हुई ॥५॥ उन्होंने भगीरथको बुलाकर राज्य दिया और आप उठकर तपके लिए चले गये ॥६॥

मन महँ करत पंथ अनुमाना ❀ सुरसरि आव तजौं नतु प्राना
अंशुमान सम तनु परिहरऊँ ❀ फिरि निज नगर नाम नहिं लेऊँ
इहि विधि करत विचार भुवाला ❀ जाइ कीन्ह तप परम विशाला

मार्गमें (चलते हुए) मनमें विचार करते जाते थे कि या तो गङ्गाजी आवें, नहीं तो प्राण छोड़ दूँगा ॥७॥ अंशुमानके समान अपना प्राण छोड़कर फिर नगरका नाम नहीं लूँगा ॥८॥ इस प्रकार विचार कर राजाने आकर बहुत कठिन तप किया ॥ ९ ॥

सोरठा—करत विचार भुवाल, जाइ कीन्ह बन प्रबल तप ।
बीते कछु इक काल, देह तजी कोउ प्रकट नहिं ॥३०॥

राजाने विचार करते-करते बनमें जा, बड़ा कठिन तप किया। तप करते २ कुछ काल बीतने पर देह छोड़ दी, परन्तु गंगाजी प्रकट नहीं हुईं ॥ ३० ॥

सुरसरि लागि तजे तनु भूपा ❀ सो तजि मूढ़ पिवहिं जल कूपा
इहाँ भगीरथ मन अस भयऊ ❀ पितु न आयहु दिन चलि गयऊ

राजा (दिलीप) ने गंगाजीके लिए अपना शरीर छोड़ दिया, इसलिये उन गंगा के जलको छोड़ जो कुएँका पानी पीते हैं, वे मूर्ख हैं ॥१॥ यहाँ भगीरथके मनमें ऐसा विचार हुआ कि, पिताको बहुत दिन हुए और आये नहीं ॥ २ ॥

काकुत्स्थ नाम तासु सुत भयेऊ ❀ दीन्हा राज नीति बहु कहेऊ
कहि सब पूर्व कथा सुत पाहीं ❀ दीन्ह अशीश चलेउ बनमाहीं

उन्होंने अपने काकुत्स्थ नामक पुत्रको राज्य दे, बहुत सी नीति सिखाई ॥ ३ ॥ फिर राजा पुत्रको सब कथा कह आशीर्वाद देकर बनको चले ॥४॥

निकसत नगर सगुन भल पाए ❀ अतिहि निविड़ बन तहँ नृप आये
देखि भगीरथ मन अति भावा ❀ सुरसरि हेतु तपहिं मन लावा

नगरसे निकलते ही अच्छे सगुन मिले और जहाँ बड़ा घना बन था वहाँ राजा आए। उस बनको देखते ही भगीरथके मनमें बहुत अच्छा लगा, वहाँ गङ्गाजीके लिए तपमें मन लगाया ॥

एक चरण दोउ भुजा उठायें ❀ रबि संमुख चितवहिं मन लाये
वर्ष सहस बीते इहि भाँती ❀ जात न जानहिं दिन अरु राती

एक पाँव पर खड़े हो और दोनों बाहोंको ऊपरको किए, चित्त लगाकर सूर्यके सन्मुख देखते थे। इस भाँति हजार वर्ष बीत गए और दिन-रात जाते हुए नहीं जाना ॥८॥

देखि उग्र तप बिधि चलि आयें ❀ बोले नृपसन वचन सुनाये
चाहहु नृप सो लेहु बरदाना ❀ बोले नृप करि अजहिं प्रमाना
जो माँगौं सो जानत अहहू ❀ मोसन माँगन प्रभु किमि कहहू

उनकी कठिन तपस्याको देखकर ब्रह्मा चले आये और राजासे यह सुन्दर बचन बोले। हे राजा ! जो चाहो, वह वरदान लो। तब राजा ब्रह्माको प्रमाण कर बोले—हे स्वामी ! जो माँगना चाहता हूँ, सो आप जानते ही हो, मुझसे माँगने को क्यों पूछते हो ? ॥११॥

सोरठा—तदपि कहौं प्रभु देहु, वर शुभ संतति वृद्धिकर ।
दूसर करहु सनेहु, गंगा आवहिं अवनि पर ॥३१॥

हे स्वामी ! तो भी कहता हूँ कि सुन्दर सन्तान बढ़ाने वाला वर दो और दूसरी कृपा यह करो कि गंगाजी पृथ्वीतल पर आवें ॥३१॥

एवमस्तु कहि पुनि बिधि कहहीं ❀ सुरसरि देउँ राखि को सकहीं
छूटि जाइ पुनि तुरत रसातल ❀ फिरहि न नृपति सुनिय पुनि भूतल

एवमस्तु (ऐसा ही हो), यह कहकर फिर ब्रह्मा बोले कि—गंगाजी को दूँगा तो परन्तु, उन्हें कौन रख सकता है ? ॥१॥ हे राजन् ! वे छूटकर शीघ्र ही पाताल को चली जायँगी, फिर पृथ्वी पर नहीं लौटेंगी ॥२॥

तेहि ते कहुँ इक तोहिं उपाहीं ❀ अति दयालु शंकर मन माहीं
सोइ सक राखि देवसरि आजू ❀ ताहि जपे तव होइहि काजू

इसलिए तुम्हें एक उपाय बतलाता हूँ कि, महादेवजी मनमें बड़ी दया करने वाले हैं ॥३॥ वे ही गंगाजी को रख सकते हैं, उन्हींका जप करनेसे तुम्हारा कार्य सिद्ध होगा ॥४॥

असकहि विधि अंतरहित भयऊ ❀ बहुरि भगीरथ शिव तप ठयऊ
विबुध वर्ष अंगुष्ठ अधारा ❀ बार बार शिव नाम उचारा

ऐसा कहकर ब्रह्माजी अन्तर्ध्यान हुए, फिर भगीरथ महादेवजीकी तपस्या करने लगे। देवताओंके वर्षसे वर्षभर अँगूठेके सहारे खड़े हो, बारम्बार श्रीशिवजीका नाम उच्चारण करने लगे।।

शिव कृपालु प्रगटे तब आई ❁ हाथ जोरि नृप कह शिर नाई
मैं राखब सुरसरि दे आसा ❁ बहुरि उमापति गे कैलासा

तब दयासागर शंकरजी आकर प्रकट हुए तो, राजाने हाथ जोड़ सिर नवा बिनती की। तब 'मैं गंगाजीको धारण करूँगा' ऐसी आशा देकर, फिर महादेवजी कैलास पर्वतको लौट गये ।।८।।

दोहा—वहाँ देवसरि शिव वचन, सुनि मन कीन्ह बिचार।
जाउँ रसातल शिवसहित, जात न लावौं बार ।।२२५।।

वहाँ गंगाजीने श्रीशिवजीके वचन सुन मनमें विचार किया कि, मैं शिव सहित रसातल को चली जाऊँगी और जानेमें देर नहीं लगाऊँगी ।।२२५।।

अन्तरयामी शिवहिं उपायी ❁ निज शिर जटा सुअगम बनायी
इहाँ भगीरथ अस्तुति कीन्हीं ❁सुनि मृदु गिरा छाँड़ि विधि दीन्हीं

श्रीशिवजी तो अन्तर्यामी हैं, उन्होंने यह उपाय किया कि अपने सिरपर सुन्दर अगम जटाजूट बनाये। यहाँ भगीरथने प्रार्थना की तो ब्रह्माजीने मीठी वाणी सुनकर गंगाजीको छोड़ दिया।।

छूटत सोर भयउ अति भारी ❁ चकित देव अहि दिग्गज चारी
सुरसरि पुनि शिव जटा समानी❁ एक वर्ष तहँ रहीं भुलानी

गंगाजीके छूटते ही बड़ा भारी शब्द हुआ, जिसको सुनकर देवता, शेषनाग और चारों दिशाओंके हाथी हक्के-बक्के हो गये। फिर गंगाजी महादेवजीकी जटाओं में समा गयीं और वहाँ एक वर्ष तक भूली रहीं ।।४।।

कौतुक देखि सकल सुर हर्षे ❁ कहि जय जयति सुमन सुर वर्षे
बहुरि भगीरथ सुमिरन कीन्हा ❁ शिव तब डारि बुंद इक दीन्हा

इस कौतुकको देखकर सब देवता प्रसन्न हुए और उन्होंने जय-जय कहकर फूल बर्षाये। फिर भगीरथने पुनः स्मरण किया, तब महादेवजी ने एक बूँद डाल दिया ।। ६ ।।

तिहिते भई तीन जल धारा ❁ एक गई नभ एक पतारा
गइ नभ सो भइ अघकर नाशिनि❁ देवन धरा नाम मन्दाकिनि

उसमें-से तीन जलकी धारायें हुईं, एक आकाशको गई और एक पाताल को ।।७।। जो आकाशको गई वह पाप-नाशिनी हुई और देवताओंने उसका नाम मन्दाकिनी नाम रखा।।८।।

सोरठा—दूसरि गई पताल, नाम प्रभावति हरन दुख।
तीसरि गंग विशाल, सुर संतन कहँ करन सुख ।।३२।।

दूसरी दुःख नाश करने के लिये पाताल को गई और प्रभावती नाम हुआ। तीसरी यह विशाल गंगा हैं जो देवता और साधुओंके लिए सुखकर हुईं ।।३२।।

आइ भगीरथ तब शिर नावा ❀ बोलीं सुरसरि बचन सुहावा
वेगवन्त रथ तैं नृप आनू ❀ तुरँग मरुतगति जिमि रथ भानू

फिर भगीरथने जाकर शिर नवाया तो गंगाजी यह सुन्दर वचन बोलीं ।।१।। हे राजन्! वायु की-सी चाल वाले घोड़ों का जल्दी चलनें वाला सूर्य के रथके समान रथ लाओ ।।२।।

तिहि रथ चढ़ि नृप चलु मम आगे ❀ चलिहौं मैं तव पाछे लागे
सुनि नृप तुरत दिव्य रथ आना ❀ चढ़ेउ हृदय सुमिरत भगवाना

हे राजन्! उसपर चढ़कर तू मेरे आगे-आगे चल, मैं तेरे पीछे लगी चलूंगी ।।३।। राजाने ऐसे वचन सुन तुरन्त सुन्दर रथ मँगाया और भगवान्का स्मरण करते हुए उस पर चढ़े ।।४।।

चलीं अग्रकरि नृपहिं सुरसरी ❀ देवन मुनिन सुमन झरि करी
चलत तेज कछु बरणि न जाई ❀ टूटहिं तरु गिरि शिला सुहाई

राजाको आगे कर गंगाजी चलीं, तब देवताओंने प्रसन्न होकर फूलोंकी झड़ी लगा दी। चलनेके तेज का कुछ वर्णन नहीं किया जा सकता, सुन्दर वृक्ष, पर्वत और पत्थर टूटते जाते थे ।।

करहिं कुलाहल बहु जिव जाती ❀ कमठ नक्र व्याकुल बहुभाँती
मज्जन करहिं देवता आई ❀ मुनिगण सिद्ध रहे तहँ छाई

जलमें अनेक जाति के जीव कोलाहल कर रहे थे, जैसे कछुये, मगर और घड़ियालआदि भाँति-भाँतिके जीव व्याकुल थे। उसमें देवता आकर स्नान करते और वहाँ तटपर मुनीश्वरों के समूह तथा सिद्ध लोग आश्रम बना कर निवास करने लगे ।।८।।

सोरठा—तर्पन कर मन लाइ, हर्ष हृदय नहिं जात कहि।
दरशनते अघ जाइ, तरहिं सकल सुरमुनि कहहिं ।। ३३ ।।

जिस प्रकार वे मन लगाकर तर्पण करते हैं और हृदयमें प्रसन्न हैं, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। सब देवता और मुनीश्वर कहते हैं कि, गङ्गाजीके दर्शन से पाप दूर होते हैं और प्राणी भव- सागरसे तर जाते हैं ।।३३।।

करि जो मज्जन तप मन लाई ❀ तिनकी महिमा कहि न सिराई
स्यंदन पर नृप सोहत कैसे ❀ तेजवन्त रवि देखिय जैसे

जो स्नानकर मन लगाकर तप करते हैं, उनकी महिमा बड़ाई करने से पूरी नहीं हो सकती। राजा रथ पर जाते हुए कैसे शोभायमान थे? जैसे तेजवंत सूर्य दिखाई देते हों ।।२।।

लाँघत शैल सुहावन देशा ❀ पीछे सुरसरि अग्र नरेशा
हरिद्वार समीप जब आई ❀ तीर्थ देखि सुरसरि मन भाई

सुन्दर पर्वत और देशोंको लाँघते हुए आगे-आगे राजा और पीछे-पीछे गंगाजी चली आती थीं ।।३।। जब हरिद्वारके पास आईं तो तीर्थ-स्थान देखके गंगाजीके मनमें अच्छा लगा ।।४।।

तीरथहूँ मन भा सुख भारी ❀ जब प्रयाग पहुँचीं अघहारी
तहँ मज्जन कीन्हे दुख जाई ❀ बहुरि देवसरि काशी आई

उस तीर्थके मनमें भी बड़ा सुख हुआ, फिर पापनाशिनी (गङ्गाजी) प्रयागमें पहुँचीं। वहाँ स्नान करने से दुःख नाश होता है, फिर गङ्गाजी काशी में आईं ॥६॥

सो शिवपुरी सहज सुखदाई ❁ बरणि न जाइ मनोहरताई
औरो तीर्थ विविध विधि जानो ❁ गई तहाँ किमि कहौं बखानी
मग लोगन कहँ करति सनाथा ❁ जाइ चलीं इहि विधि रघुनाथा

वह महादेवकी पुरी स्वभावही-से सुखदाई है। (उसकी) सुन्दरताई गाई नहीं जाती और बहुतसे तीर्थ जानों, जहाँ गंगाजी गईं मैं उनका बखान क्या करूँ? हे रामचन्द्र! मार्गके लोगोंको सनाथ करती हुई इस भाँति गंगाजी चलीं ॥९॥

दोहा—मिलीं बहोरि समुद्र महँ, उदधि हृदय हरखान।
लगेउ सराहन भगीरथहिं, तुमसम धन्य न आन ॥२२६॥

फिर समुद्र में मिलीं तो समुद्र भी मनमें प्रसन्न हो भगीरथको सराहने लगा कि, तुम्हारे समान धन्य और कोई नहीं है ॥२२६॥

कीन्हेउ अस जस करइ न कोई ❁ तप महिमा बल कस नहिं होई
सगर तनय तारे ततकाला ❁ हर्षवन्त तब भयउ भुवाला

तुमने ऐसा किया जैसा कोई न करेगा, तपकी महिमाका बल ऐसा क्यों न हो? ॥१॥ श्रीगंगाजीने सगरके पुत्रोंको तो उसी समय तार दिया, जिससे राजा आनन्दित हुए ॥ २ ॥

और रहे जे कुल महँ कोऊ ❁ तिन्हके संग तरे सब ओऊ
सकल सुरन्ह सँग तहाँ बिधाता ❁ नृप सन आइ कही अस बाता

तथा उनके कुल में और भी जो रहे, वह भी तर गये ॥३॥ सब देवताओंके साथ ब्रह्मा-जीने सन्मुख हो ऐसी बात कही ॥४॥

धन्य भगीरथ जग यश लयऊ ❁ तुम समान नृप और न भयऊ
आपनि सत्य प्रतिज्ञा करेऊ ❁ सम्मत वेद सबहिं सुख दयेऊ

हे भगीरथ! तुम धन्य हो! तुमने संसार में बड़ी बड़ाई ली और तुम्हारे समान दूसरा राजा नहीं हुआ ॥५॥ अपनी प्रतिज्ञा सच्ची की, और सब वेद ज्ञाताओंको सुख दिया ॥६॥

गंगासागर सब कोउ कहहीं ❁ अघ उलूक देखत रवि डरहीं
भागीरथी नाम अस कहहीं ❁ सुरमुनि नाग सिद्ध यश लहहीं
अस कहि विधि निजलोक सिधाये ❁ इहाँ भगीरथ अति सुख पाये

इसे सब कोई गंगासागर कहेंगे और पापरूपी उल्लू गंगारूपी सूर्यको देखते ही डरेंगे। गंगाजीका नाम भागीरथी भी होगा और देवता, मुनीश्वर, नाग और सिद्ध ये यश पावेंगे। ऐसा कहकर ब्रह्माजी अपने लोकको चले गये और यहाँ भगीरथने सुख पाया ॥९॥

छन्द—पाए अमित सुख बहुरि पूजेउ सुरसरिहिं मन लाइके।
तब दीन्ह आशिष मुदित गंगा नृप गये सुख पाइके ॥

इहि भाँति सुनि गंगा कथा तब राम ऋषि चरणन नये।
कह दास तुलसी राम लषनहिं महामुनि आशिष दये।।३२।।

तब सुख पाकर राजाने मन लगाकर फिर गङ्गाजीकी पूजा की तथा गङ्गाजीने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया और राजा सुख पाकर विदा हुए। इस प्रकार रामचन्द्रजीने प्रसन्न हो गङ्गाजी की कथा सुन, ऋषि विश्वामित्रके चरणोंमें मस्तक नवाया। तुलसीदासजी कहते हैं कि मुनिराजने रामचन्द्र और लक्ष्मणको आशीर्वाद दिया ।।३२।।

दोहा—कौशिक आशिष अमिय सम, सुनि हर्षे रघुनाथ।
प्रभु सुख पाइ कहा बहुरि, वेगि चलिय मुनिनाथ ।।२२७।।

विश्वामित्रके अमृत समान आशीर्वादको सुनकर रामचन्द्रजी प्रसन्न हुए। फिर भगवान्‌ने सुखपाकर कहा—हे मुनिनाथ! अब शीघ्र चलिए ।।२२७।। इति क्षेपक ।।

तब प्रभु ऋषिन्ह समेत नहाये ❀ विविध दान महिदेवन्ह पाये
हरषि चले मुनि वृन्द सहाया ❀ वेगि विदेह नगर नियराया

तब ऋषियों सहित प्रभुने वहाँ स्नान किया और ब्राह्मणोंने बहुत प्रकारका दान पाया। फिर मुनियों सहित वे प्रसन्न होकर आगे चले तो शीघ्रही विदेहराज जनकका नगर आ गया ।।

पुर रम्यता राम जब देखी ❀ हरषे अनुज समेत विशेखी
वापी कूप सरित सर नाना ❀ सलिल सुधासम मणि सोपाना

श्रीरामजीने जनकपुरकी शोभा देखी तो लक्ष्मण सहित बहुत प्रसन्न हुए। वहाँ बावली, कुएँ, नदी और अनेक तालाब थे, जिनमें मणिजटित सीढ़ियाँ बनी हुई थीं और उनमें अमृतके समान मधुर जल भरा था ।।४।।

गुञ्जत मंजु मत्त रस भृङ्गा ❀ कूजत कल बहु वरण विहङ्गा
बरन-बरन विकसे जलजाता ❀ त्रिविध समीर सदा सुख दाता

प्रफुल्लित कमलोंके रससे मतवाले भौंरे गूंज रहे थे और अनेक रङ्गके पक्षी मधुरवाणी बोल रहे हैं। रंग-बिरंगे कमल खिले हुए थे और सुखदेने वाला शीतल, मन्द, सुगन्ध वायु बह रहा था ।।

दोहा—सुमन वाटिका बाग बन, बिपुल विहङ्ग निवास।
फूलत फलत सुपल्लवित, सोहत पुर चहुँपास ।।२२८।।

फूलोंके बगीचा और बागों-बनोंमें पक्षीगण प्रसन्न हो वास करते थे। नगरके चारों ओर फूल और फल लगे हुए सुपल्लवित वृक्ष शोभा दे रहे थे ।।२२८।।

बनइ न बरनत नगर निकाई ❀ जहाँ जाइ मन तहाँ लुभाई
चारु बजार बिचित्र अँवारी ❀ मनिमय विधि जनु स्वकर सँवारी

नगरकी शोभा बखानी नहीं जाती, जिधर ही मनकी गति जाती, मन उधरही लुभाय-मन हो जाता। सुन्दर बाजारकी अटारियों को मानों ब्रह्माने स्वयं अपने हाथसे बनाया हो ।।२।।

धनिकबनिकवर धनद समाना ❀ बैठे सकल वस्तु लै नाना
चौहट सुन्दर गली सुहाई ❀ संतत रहहिं सुगंध सिंचाई

वहाँ कुबेरके समान श्रेष्ठ धनवान् व्यवसायी, समस्त वस्तुएँ लेकर बैठे थे ।।३।। सुन्दर गलियाँ और चौराहे क्या ही शोभायमान हैं कि, जिनके अच्छे-अच्छे लोग सदा सुगंधित द्रव्यों से छिड़काव करा रहे थे ।। ४ ।।

मंगलमय मन्दिर सब केरे ❀ चित्रित जनु रतिनाथ चितेरे
पुर नर-नारि सुभग सुचि संता ❀ धरम शील ज्ञानी गुनवन्ता

सबके घर ऐसे आनन्दमय हैं कि, मानो चितेरे कामदेवने ही उन्हें अपने हाथों से चित्रित किया है। नगरके सब स्त्री-पुरुष बड़े ही सुन्दर, पवित्र, धर्मशील, ज्ञानी और गुणज्ञ थे ।।६।।

अति अनूप जहँ जनक निवासू ❀ विथकहिं विबुध विलोकि बिलासू
होत चकित चित कोट विलोकी ❀ सकल भुवन शोभा जनु रोकी

महाराज जनकका निवास-स्थान (राजमहल) तो बड़ा ही अनुपम था कि, जिसके विलासको देखकर देवता भी विशेष रूपसे थकित हो जाते । किलेको देखते ही चित्त चकित हो जाता, मानो उसने समस्त भूमण्डलकी शोभाको अपने आगे रोक लिया है ।।८।।

दोहा—धवल धाम मनि पुरट पट, सुघटित नाना भाँति ।
सिय निवास सुन्दर-सदन, शोभा किमि कहि जाति ।।२२९।।

उस घरके समस्त धौरहरे और सुन्दर किवाड़ तो अनेक प्रकार की मणियों से सुन्दरतापूर्वक बनाये गये थे। किन्तु जो सीताजीका भवन था उसकी शोभा तो वर्णन से परे है ।।२२६।।

सुभग द्वार सब कुलिश कपाटा ❀ भूप भीर नट मागध भाटा
बनी विशाल बाजि गज शाला ❀ हय-गज-रथ संकुल सब काला

महलमें जानेके द्वार और किवाड़ों पर हीरे जड़े हुए थे, राजाके द्वार पर नट, मागध और भाटों की भीड़ लगी थी। घोड़े और हाथियों की शाला घोड़े, हाथी और रथों से भरी थीं ।।२।।

सूर सचिव सेनप बहुतेरे ❀ नृप गृह सरिस सदन सब केरे
पुर बाहिर सर सरित समीपा ❀ उतरे जहँ तहँ बिपुल महीपा

बहुतसे शूरवीर, मन्त्री और सेनापति थे, जिन सबके गृह राजाके सदनके ही समान थे । नगरके बाहर तालाब और नदियों के समीप, वहाँ कितने ही राजा लोग उतरे हुए थे ।।४।।

देखि अनूप एक अमराई ❀ सब सुपास सब भाँति सुहाई
कौशिक कहेउ मोर मन माना ❀ इहाँ रहिय रघुबीर सुजाना

तब एक बहुत ही सुन्दर बगीचा देखकर जहाँ कि, सब प्रकारका सुहावना सुपास था । विश्वामित्रजीने कहा—हे सुजान श्रीरामचन्द्रजी ! मेरा मन यहीं रहनेको कहता है ।।६।।

भलेहि नाथ कहि कृपा निकेता ❀ उतरे तहँ मुनिवृन्द समेता

विश्वामित्र महामुनि आये ❀ समाचार मिथिलापति पाये

तब श्रीरामचन्द्रने कहा—हे नाथ ! आपने अच्छा कहा, फिर मुनियों सहित विश्वामित्रजी वहाँ उतर पड़े । जब विश्वामित्रजी आ गये और यह समाचार महाराज जनकको मिला ।।८।।

दोहा—संग सचिव शुचि भूरि भट, भूसुर वर गुरु ज्ञाति ।
चले मिलन मुनि नायकहिं, मुदित राउ एहि भाँति ।।२३०।।

तब राजा जनक प्रसन्न हो, अपने पवित्र मन्त्री, गुरुदेव और कुछ वीरों तथा ब्राह्मणों एवं स्वजातियोंके सहित; प्रसन्न मनसे मुनिश्रेष्ठ विश्वामित्रजीसे इस प्रकार मिलने चले ।।२३०।।

कीन्ह प्रणाम चरण धरि माथा ❀ दीन्ह अशीश मुदित मुनिनाथा
विप्र वृन्द सब सादर बन्दे ❀ जानि भाग्य बड़ राउ अनन्दे

निकट पहुँच पाँव पकड़ कर प्रणाम किए तो विश्वामित्रने बड़ी प्रसन्नता से उनको आशीर्वाद दिया ।।१।। फिर राजा जनकजीने सब ब्राह्मणोंको आदर सहित प्रणाम किया और अपना बड़ा भाग्य जान आनन्दित हुए ।।२।।

कुशल प्रश्न कहि बारहिं बारा ❀ विश्वामित्र नृपहिं बैठारा
तेहि अवसर आये दोउ भाई ❀ गये रहे देखन फुलवाई

तब बारम्बार कुशल प्रश्न करते हुए विश्वामित्रजीने राजा जनकको अपने निकट बैठाया। उसी समय दोनों भाई (राम-लक्ष्मण) भी आ गए, जो फुलवारी देखने गये थे ।।४।।

श्याम गौर मृदु बयस किशोरा ❀ लोचन सुखद विश्वचित चोरा
उठे सकल जब रघुपति आए ❀ विश्वामित्र निकट बैठाए

जिनका साँवला और गोरा शरीर तथा किशोर अवस्था थी, जिन्हें देखते ही नेत्र सुखी हो जाते थे और जो अपनी शोभासे समस्त संसारके चित्तको चुरा लेते थे । जब श्रीरामचन्द्रजी आए तब सब लोग उठ खड़े हुए और विश्वामित्रजी ने उनको अपने निकट बैठा लिया ।।६।।

भये सब सुखी देखि दोउ भ्राता ❀ वारि विलोचन पुलकित गाता
मूरति मधुर मनोहर देखी ❀ भये विदेह विदेह विशेखी

दोनों भाइयोंको देखकर सब लोग सुखी हो गये, शरीर पुलकित हो गया और सबके नेत्रोंमें जल भर आया। श्रीरामचन्द्रजीकी मधुर और मनोहर मूर्तिको देखकर जनक विदेह हो गये।।८।।

दोहा—प्रेम मगन मन जानि नृप, करि विवेक मतिधीर ।
बोले मुनि पद नाइ शिर, गद्‌गद गिरा गँभीर ।।२३१।।

तब अपनेको प्रेममग्न जानकर, स्थिर बुद्धिवाले राजा जनक ज्ञानका आश्रय लेकर; मुनि विश्वामित्रके चरणोंमें शिर नवाकर गद्‌गद हृदयसे यह वाणी बोले ।। २३१ ।।

कहहु नाथ सुन्दर दोउ बालक ❀ मुनिकुलतिलक कि नृपकुलपालक
ब्रह्मजो निगम नेति कहिगावा ❀ उभय भेष धरि की सोइ आवा

हे नाथ ! कहिए, ये दोनों सुन्दर बालक मुनिकुलके तिलक हैं या राजकुल-पालक हैं । अथवा जिस ब्रह्मको वेद नेति-नेति कहकर पुकारते हैं, क्या वही ऐसा शरीर धारण करके आये हैं ? ।।

सहज विराग रूप मन मोरा ❀ थकित होत जिमि चन्द्र चकोरा
तातें प्रभु पूछेउँ सति भाऊ ❀ कहहु नाथ जनि करहु दुराऊ

क्योंकि मेरा जो सहज वैराग्यवाला मन है, इन्हें देख कर वैसेही मोहित हो रहा है; जैसे चकोर चन्द्रमा के लिए ।।३।। इससे हे प्रभो ! मैं सच्चे भावसे पूछता हूँ, इस कारण हे नाथ ! कहिए और कोई दुराव न कीजियेगा ।। ४ ।।

इन्हहिं बिलोकत अति अनुरागा ❀ बरबस ब्रह्म सुखहिं मन त्यागा
कह मुनि बिहँसि कहेउ नृपनीका ❀ बचन तुम्हार न होइ अलीका

इन्हें देखते हुए मनमें विशेष प्रेम हो गया है और मन जबर्दस्ती ब्रह्म सुखको त्याग रहा है ।।५।। तब विश्वामित्रजीने हँसकर कहा–हे राजन् ! आपने यह अच्छा ही कहा है, आपका वचन मिथ्या नहीं हो सकता ।। ६ ।।

ए प्रिय सबहिं जहाँ लगि प्राणी ❀ मन मुसुकाहिं राम सुनि वाणी
रघुकुल मणि दशरथके जाए ❀ मम हित लागि नरेश पठाए

संसारमें जितने भी प्राणी हैं ये सबको प्रिय हैं–मुनिकी यह वाणी सुनकर श्रीरामचन्द्रजी मनमें मुसकुराने लगे ।।७।। फिर विश्वामित्रजीने कहा कि, ये रघुकुलमणि राजा दशरथजीके पुत्र हैं । हमारे हितके लिए राजाने इन्हें भेजा है ।। ८ ।।

दोहा–राम-लषन दोउ बन्धुवर, रूप-शील-बल-धाम ।
मख राखेउ सब साखि जग, जीति असुर संग्राम ।।२३२।।

राम-लक्ष्मण ये दोनों श्रेष्ठ भाई, रूप, शील और बल के धाम हैं । इन्होंने संग्राम में राक्षसोंको जीतकर मेरे यज्ञ की रक्षा की है–संसार इसका साक्षी है ।। २३२ ।।

मुनि तव चरण देखि कह राऊ ❀ कहि न सकौं निज पुण्य प्रभाऊ
सुन्दर श्याम गौर दोउ भ्राता ❀ आनन्दहू के आनन्द दाता

तब राजा जनकने कहा–हे मुनिदेव ! आपके चरणोंको देखकर मैं अपने पुण्यका प्रभाव नहीं कह सकता । ये साँवले और गोरे सुन्दर दोनों भाई आनन्दको भी आनन्द देनेवाले हैं ।।२।।

इनकी प्रीति परस्पर पावनि ❀ कहि न जाइ मनभाव सुहावनि
सुनहु नाथ कह मुदित विदेहू ❀ ब्रह्मजीव इव सहज सनेहू

इनकी पारस्परिक प्रीति ऐसी पवित्र है, जो मनको मोहित करने वाली है और कही नहीं जाती है ।। ३ ।। इतना कहकर जनकने प्रसन्न होकर कहा–हे नाथ ! सुनिए, इनका पारस्परिक स्नेह वैसा ही स्वाभाविक है कि, जैसे ब्रह्म और जीवका स्नेह होता है ।।४।।

पुनि पुनि प्रभुहिं चितव नर नाहू ❀ पुलकगात उर अधिक उछाहू
मुनिहिं प्रशंसि नाइ पदसीसा ❀ चलेउ लिवाइ नगर अवनीसा

राजा जनक बारम्बार श्रीरामचन्द्रजी की ओर देखकर शरीर में पुलकायमान हो गये और उनके हृदय में अधिक आनन्द और उत्साह होता रहा ॥५॥ तब मुनि विश्वामित्रकी बड़ाई कर चरणों में सिर झुकाकर अपने नगरमें लिवाकर चले ॥ ६ ॥

सुन्दर सदन सुखद सब काला ❁ तहाँ बास लै दीन्ह भुवाला
करि पूजा सब विधि सेवकाई ❁ गयउ राउ गृह बिदा कराई

और उस सुन्दर गृहमें जो सब समयमें सुखदायक था, वहां लेजाकर राजा जनकने उनको वास दिया। फिर सब प्रकारसे उनकी पूजा और सेवा करके विदा हो अपने महल को चले गये ॥

दोहा—ऋषय संग रघुवंशमनि, करि भोजन विश्राम।
बैठे प्रभु भ्राता सहित, दिवस रहा भरियाम ॥ २३३ ॥

उधर जब श्रीरामचन्द्रजी विश्वामित्रजी के साथ भोजन और विश्राम करके भाई लक्ष्मण सहित बैठे, तब एक पहर दिन बाकी रहा ॥ २३३ ॥

लषन हृदय लालसा विशेषी ❁ जाइ जनकपुर आइय देखी
प्रभु भय बहुरि मुनिहिं सकुचाहीं ❁ प्रकट न कहहिं मनहिं मुसुकाहीं

उसी समय लक्ष्मणजीके हृदयमें बड़ी लालसा हुई कि जनकपुरको देख आयें ॥१॥ परन्तु भाई का भय और मुनिके संकोचसे, वे प्रगट रूपसे कह नहीं सकते थे, मुस्कुराते ही रहे ॥२॥

राम अनुज मन की गति जानी ❁ भक्त बछलता हिय हुलसानी
परम विनीत सकुचि मुसुकाई ❁ बोले गुरु-अनुशासन पाई

तब अनुजके मनकी ऐसी बातको जानकर श्रीरामचन्द्रजीके हृदय में भक्त-वत्सलता ने जोर मारा। तो, गुरुकी आज्ञा पाकर बहुत ही नम्र शब्दोंमें, सकुचाते हुए मुस्करा कर बोले ॥४॥

नाथ लषन पुर देखन चहहीं ❁ प्रभु संकोच डर प्रगट न कहहीं
जौं राउर मैं आयसु पावौं ❁ नगर देखाइ तुरत लै आवौं

हे नाथ! लक्ष्मणजी नगरको देखना चाहते हैं, किन्तु आपके संकोच एवं डरसे प्रकट नहीं कहते हैं ॥५॥ यदि मैं आपकी आज्ञा पाऊँ तो, इनको नगर दिखलाकर तुरन्त ले आऊँ ॥६॥

सुनि मुनीश कह बचन सप्रीती ❁ कस न राम राखहु तुम नीती
धर्मसेतु पालक तुम ताता ❁ प्रेम-विवश सेवक-सुख-दाता

यह सुनकर विश्वामित्रजीने कहा—हे राम! भला तुम क्यों न नीतिकी रक्षा करोगे। हे तात! तुम धर्म-सेतु पालक और प्रेमके वशमें रहनेवाले तथा अपने सेवकोंको सुख देनेवाले हो ॥८॥

दोहा—जाइ देखि आवहु नगर, सुखनिधान दोउ भाइ।
करहु सफल सबके नयन, सुन्दर बदन दिखाइ ॥ २३४ ॥

हे सुखके धाम! दोनों भाई जाकर नगरको देख आओ और अपने सुन्दर मुख दिखाकर सबके नेत्रों को सफल करो ॥ २३४ ॥

मुनिपद कमल बंदि दोउ भ्राता ❀ चले लोक-लोचन-सुखदाता
बालक बृन्द देखि अति शोभा ❀ लगे संग लोचन मन-लोभा

तब मुनिके कमलवत् चरणोंकी वन्दना करके संसारके नेत्रोंको सुख देनेवाले दोनों भाई चले। उनकी शोभाको देखकर, नगरके बालक उन नेत्र मनमोहक दोनों भाइयोंके साथ जा लगे ।।२।।

पीत बसन परिकर कटिभाथा ❀ चारु चाप शर सोहत हाथा
तनु अनुहरत सुचन्दन खोरी ❀ श्यामल गौर मनोहर जोरी

कमरमें पीताम्बर धारण किए, फेंटमें तरकस कसे और हाथमें सुन्दर धनुषवाण लिए ।।३।। शरीरके योग्य शोभा देनेवाला केसरका सुगन्धित चन्दन लगाए, श्याम और गौर-वर्णकी मनोहर जोड़ी शोभायमान हो रही थी ।। ४ ।।

केहरि कंधर बाहु विशाला ❀ उर अतिरुचिर नागमणि माला
सुभग श्रवण सरसीरुह-लोचन ❀ बदन-मयंक तापत्रय-मोचन

सिंहके-से कंधे और विशाल भुजाएँ तथा हृदय पर नागमणिकी माला पड़ी हुई थी। सुन्दर श्रवण और कमलवत् नेत्र तथा मनोहर चन्द्रमाका-सा मुखारविन्दका दर्शन करते ही तीनों पाप नष्ट हो जाते थे ।। ६ ।।

कानन कनक फूल छबि देहीं ❀ चितवत चितहिं चोरि जनु लेहीं
चितवनि चारु भृगुटिवर बाँकी ❀ तिलक रेख सोभा जनु चाँकी

कानोंमें सुवर्णके फूल ऐसे कुण्डल शोभा दे रहे हैं मानों, देखतेही चित्तको चुरा लेते हैं। उनकी सुन्दर चितवन और श्रेष्ठ सुन्दर भौहें तथा तिलककी रेखायें मानों शोभाकी मर्यादा हैं ।। ८ ।।

दोहा—रुचिर चौतनी सुभग सिर, मेचक कुञ्चित केश ।
नख सिख सुन्दर बन्धु दोउ, शोभा सकल सुदेश ।।२३५।।

सुन्दर मस्तक पर चमकती चौगसिया जड़ाऊ टोपी शोभायमान है और काले चिकने घुँघराले बाल हैं तथा नखशिख पर्यन्त सुन्दर दोनों भाई, सब अंगोंसे शोभायमान हैं ।। २३५ ।।

देखन नगर भूप सुत आए ❀ समाचार पुरवासिन पाये
धाए धाम काम सब त्यागे ❀ मनहुँ रंक निधि लूटन लागे

तब ऐसे राजपुत्र नगर देखने आये हैं, जब यह समाचार पुरवासियोंको मिला तो वे अपने घरका सारा कामकाज छोड़कर ऐसे दौड़े मानों दरिद्र खजाना लूटने लगे हों ।।२।।

निरखि सहज सुन्दर दोउ भाई ❀ होहिं सुखी लोचन फल पाई
युवती भवन झरोखन लागीं ❀ निरखहिं रामरूप अनुरागीं

तब ऐसे स्वभावसे सुन्दर दोनों भाइयोंको देखकर, सब अपने नेत्रोंका सुख पाकर सुखी हो गये। स्त्रियाँ महलके झरोखोंमें लगकर विशेष अनुरागसे श्रीरामचन्द्रजीके रूपको देखने लगीं ।।

कहहिं परस्पर वचन सप्रीती ❀ सखि इन कोटि काम छबि जीती
सुर नर असुर नाग मुनि माहीं ❀ शोभा अस कहुँ सुनियत नाहीं

और एक दूसरेसे प्रेम युक्त ऐसी वाणी कहने लगीं कि, हे सखी ! इन्होंने तो अनेकों कामदेव-को जीत लिया है। देवता-दैत्य और मनुष्योंमें भी ऐसी शोभा कहीं सुननेमें नहीं आई ॥

बिष्णु चारि भुज बिधि मुख चारी ❀ बिकट वेष मुख पंच पुरारी
अपर देव अस कोउ न आही ❀ यह छबि सखि पटतरिये जाही

चतुर्भुज विष्णु और चतुर्मुख ब्रह्मा और विकट वेषवाले श्रीमहादेवजी पाँच मुखवाले हैं, संसार-में देवताओंमें ऐसा कोई नहीं है कि, हे सखी ! जिनसे इनकी शोभाकी समता की जावे ॥

दोहा—वय किशोर सुखमा सदन, श्याम गौर सुखधाम ।
अंग-अंग पर वारिये, कोटि-कोटि शतकाम ॥२३६॥

देखो, किशोरावस्था में ही सुषमाके सदन और शोभाके धाम श्याम और गौरवर्णके दोनों भाई ऐसे हैं कि, इनके अंग-प्रत्यंग पर मानों करोड़ों कामदेव न्योछावर हो रहे हैं ॥२३६॥

कहहु सखी अस को तनु धारी ❀ जो न मोह यह रूप निहारी
कोउ सप्रेम बोली मृदुबानी ❀ जो मैं सुना सो सुनहु सयानी

हे सखी ! भला कहो तो सही कि, शरीर धारियों में ऐसा कौन है कि, जो इस रूप को देखकर न मोहित हो जावे ॥ १ ॥ तब कोई सखी प्रेम सहित मीठी वाणी में बोली—हे सयानी ! जो मैंने सुना है; वह तो सुनो ॥ २ ॥

ये दोउ नृप दशरथ के ढोटा ❀ बाल मरालन के कल जोटा
मुनि कौशिक मख के रखवारे ❀ जिन रण अजय निशाचर मारे

ये दोनों राजा दशरथके पुत्र हैं, यह जोड़ी राजहंसोंके समान बहुत ही सुन्दर है । ये मुनि विश्वामित्रके यज्ञकी रखवाली करनेवाले हैं, जिन्होंने युद्ध में अजेय राक्षसोंको मारा है ॥४॥

श्याम गात कलकञ्ज विलोचन ❀ जो मारीच सुभुज मदमोचन
कौशल्या सुत सो सुख खानी ❀ नाम राम धनुशायक पानी

इनमें जिसका साँवला शरीर और सुन्दर कमल जैसे बड़े-बड़े नेत्र हैं और जो मारीच और सुबाहुके अहंकार को नाश करनेवाले हैं ॥ ५ ॥ तथा जिनके हाथ में धनुष-बाण हैं, वह सुख की खानि कौशल्या के पुत्र हैं; इनका नाम रामचन्द्र है ॥ ६ ॥

गौर किशोर वेष वर काछे ❀ कर शर चाप राम के पाछे
लक्ष्मण नाम राम लघु भ्राता ❀ सुनु सखि तासु सुमित्रा माता

और जो किशोरावस्था के गौरवर्ण, सुन्दर वेष बनाये हाथ में धनुषवाण लिए, रामचन्द्र के पीछे-पीछे चल रहे हैं, इनके छोटे भाई हैं ॥ ७ ॥ हे सखी ! इनका नाम लक्ष्मण है, और इनकी माता सुमित्रा हैं ॥ ८ ॥

दोहा—बिप्र काज करि बन्धु दोउ, मग मुनिवधू उधारि ।
आए देखन चाप-मख, सुनि हरषीं सब नारि ॥२३७॥

वे दोनों भाई विश्वामित्रजी का कार्य करके मार्ग में गौतम मुनि की स्त्री अहिल्या को तार करके, धनुष-यज्ञ देखने आये हैं—यह सुनकर सब स्त्रियाँ प्रसन्न हो गयीं ॥ २३७ ॥

देखि राम छबि कोउ इक कहई ❀ योग्य जानकिहिं यह बर अहई
जो सखि इन्हहिं देखि नरनाहू ❀ प्रण परिहरि हठि करैं बिवाहू

तब श्रीरामचन्द्रजी की शोभा को देखकर एकने कहा—यह वर तो श्रीजानकीजी के योग्य है ॥ १ ॥ हे सखी ! यदि राजा इन्हें देख लें तो, अपने प्रण को त्यागकर हठ से इनके ही साथ विवाह कर देंगे ॥ २ ॥

कोउ कह ए भूपति पहिचाने ❀ मुनि समेत सादर सनमाने
सखि परन्तु प्रण राउ न तजई ❀ विधि वश हठि अविवेकहिं भजई

किसी ने कहा कि इनको राजा ने पहचाना है और मुनि सहित इनका सम्मान भी किया है ॥ ३ ॥ परन्तु ! विधि वश राजा शायद अपना प्रण नहीं त्याग सकें और हठ से अज्ञान को ही भजेंगे ॥ ४ ॥

कोउ कह जो भल अहइ विधाता ❀ सब कहँ सुनिय उचित फल दाता
तो जानकिहिं मिलिहि वर एहू ❀ नाहिन आलि इहाँ संदेहू

किसी ने कहा—सुनो, यदि विधाता भला है और सुना जाता है कि सबको उचित फल देने वाला है, तो हे सखी ! इसमें सन्देह नहीं कि, यह वर श्रीजानकीजी को ही मिलेगा ॥

जौं विधि वश अस बनै सँजोगू ❀ तौ कृतकृत्य होहिं सब लोगू
सखि हमरे अति आरति ताते ❀ कबहुँक ये आवहिं यहि नाते

यदि विधिवश ऐसा संयोग बन जाये, तो हम सब लोग कृतकृत्य हो जाँय । हे सखी ! हमको इससे और भी अधीरता है कि, भला इस नाते से ये कभी-कभी यहाँ आवेंगे तो सही ॥

दोहा—नाहित हमकहँ सुनहु सखि, इनकर दरसन दूरि ।
यह संघट तब होइ जब, पुण्य पुराकृत भूरि ॥२३८॥

नहीं तो हे सखी ! सुनो, हमको इनका दर्शन दूभर है । यह मिलाप तो तभी हो सकता है, जब पूर्व जन्म के अनेक पुण्य उदय होवें ॥ २३८ ॥

बोली अपर कहेउ सखि नीका ❀ यह विवाह अतिहित सबहीका
कोउ कह शंकर चाप कठोरा ❀ ये श्यामल मृदु गात किशोरा

तब एक दूसरी सखी ने कहा-हे सखी ! तुमने अच्छा कहा, यह विवाह सबको हितकारी होगा। कोई कहती है, महादेवजी का धनुष बड़ा है और इस साँवले बालक का कोमल शरीर है ॥

सब असमंजस अहै सयानी ❀ यह सुनि अपर कहै मृदुबानी
सखि इनकहँ कोउ-कोउ अस कहहीं ❀ बड़ प्रभाव देखत लघु अहहीं

हे सयानी ! सब असमंजस ही है, यह सुनकर दूसरी सखी ने मीठी वाणीमें कहा—हे सखी ! कोई-कोई इन्हें ऐसा कहते हैं कि ये देखने में तो छोटे हैं, किन्तु प्रभाव बहुत बड़ा है।।

परसि जासु पद पंकज धूरी ❀ तरी अहिल्या कृत अघ भूरी
सो कि रहहिं बिनु शिव धनु तोरे ❀ यह प्रतीति परिहरिय न भोरे

क्योंकि जिनके चरण कमलों की धूलि को स्पर्श करके बड़ी पापिन अहिल्या मुक्त हो गई ।।५।। वे क्या बिना शिवजी का धनुष तोड़े रहेंगे ? यह विश्वास कभी भूलकर भी नहीं त्यागना चाहिये ।।६।।

जेहि विरञ्चि रचि सीय सँवारी ❀ तेहि श्यामल वर रचेउ विचारी
तासु बचन सुनि सब हरषानी ❀ ऐसेइ होउ कहहिं मृदुबानी

जिस ब्रह्मा ने जानकी को इस प्रकार रचकर बनाया है, उन्होंने विचार कर इस साँवले वर को भी रचा है ।।७।। उसके वचन सुनकर सब स्त्रियाँ हर्षित हो मीठी वाणी से कहने लगीं कि—हे सखी ! ऐसा ही हो ।।८।।

दोहा—हिय हरषहिं बरषहिं सुमन, सुमुखि सुलोचनि वृन्द ।
जाहिं जहाँ जहँ बन्धु दोउ, तहँ तहँ परमानन्द ।।२३९।।

इस प्रकार सुन्दर मुख और कटीले नेत्रों वाली सब स्त्रियाँ अपने मनमें प्रसन्न होकर फूली नहीं समातीं और प्रभु पर फूलों की वर्षा करती हैं। और जहाँ-जहाँ दोनों भाई जाते, वहाँ-वहाँ ऐसा ही परमानन्द होता है ।।२३९।।

पुर पूरब दिशि गे दोउ भाई ❀ जहाँ धनुष मख भूमि बनाई
अति बिस्तार चारु गच ढारी ❀ विमल वेदिका रुचिर सँवारी

जब दोनों भाई नगर के पूर्व दिशा में गये, जहाँ स्वयंवर-भूमि की रचना हुई थी ।।१।। तब वहाँ देखा कि, लम्बा-चौड़ा चबूतरा बना हुआ है, जिस पर गचदार सुन्दर पवित्र वेदी बनाई गई है ।।२।।

चहुँ दिशि कंचन मञ्च विशाला ❀ रचे जहाँ बैठहिं महिपाला
तेंहि पाछे समीप चहुँ पासा ❀ अपर मंच मण्डली बिलासा

उसके चारों ओर राजाओं के लिए सुवर्ण जटित बड़े-बड़े मंच बने हुए हैं कि, जहाँ राजा लोग आकर बैठें ।।३।। उसके पीछे चारों ओर अन्य समुदायोंके लिए भी आस-पास बहुत ही सुन्दर मंडलाकार मचान बने हैं ।।४।।

कछुक ऊँचि सब भाँति सुहाई ❀ बैठहिं नगर लोग जहँ जाई
तिन्हके निकट विशाल सुहाए ❀ धवल धाम बहु बरण बनाए

फिर उससे कुछ ऊँचे स्थान सब प्रकार से सजाये हैं जो नगर निवासियों के बैठने के

लिये बने हैं ।। ५ ।। उसके पास ही कुछ और विशाल उज्वल स्थान भी ऊँचे-ऊँचे घरों के समान विविध रंग के बनाये गये हैं ।।६।।

जहँ बैठे देखहिं सब नारी ❋ यथा योग निजकुल अनुहारी
पुरबालक कहि-कहि मृदुबचना ❋ सादर प्रभुहिं देखावहिं रचना

जहाँ अपने कुलके अनुसार यथा योग्य नगर की सब स्त्रियाँ बैठकर देखेंगी। नगरके बालक प्रभु श्रीरामचन्द्रजी को ऐसी मीठी वाणी कहकर आदर सहित समस्त रचना दिखला रहे हैं ।।

दोहा—सब शिशु एहि मिसु प्रेमबश, परसि मनोहर गात।
तनु पुलकहिं हिय हर्ष अति, देखि-देखि दोउ भ्रात ।।२४०।।

इसी बहानेसे समस्त बालक श्रीरामचन्द्रजी का मनोहर शरीर स्पर्श करके और दोनों भाइयों को देख-देखकर हृदय में अत्यन्त हर्षित होते हुए, शरीर से पुलकायमान होते हैं ।।२४०।।

शिशु सब राम प्रेमवश जाने ❋ प्रीति समेत निकेत बखाने
निज-निज रुचि सब लेहिं बुलाई ❋ सहित सनेह जाहिं दोउ भाई

तब बालकों को प्रेमके वश जानकर श्रीरामचन्द्रजीने प्रेम पूर्वक उन्हें अपने घर बतलाये। अपनी-अपनी इच्छा से सब बुलाते और दोनों भाई प्रीति सहित उनके साथ चले जाते हैं ।।

राम दिखावहिं अनुजहिं रचना ❋ कहि मृदु मधुर मनोहर बचना
लव निमेष महँ भुवन निकाया ❋ रचे जासु अनुशासन माया

श्रीरामचन्द्रजी-लक्ष्मणजीको मीठी-मीठी मनोहर और कोमलवाणी कहकर मण्डपकी सब रचना दिखलाते हैं। जिस प्रभु की आज्ञासे माया पलभर में चौदहों भुवन की रचना कर देती है।।

भक्त हेतु सोइ दीन दयाला ❋ चितवत चकित धनुष मखशाला
कौतुक देखि चले गुरु पाहीं ❋ जानि विलम्ब त्रास मनमाहीं

वही दीनदयालु भक्तों के कारण बारम्बार, चकित चित्तसे स्वयंवर भूमि को देखते हैं ।।५।। तब यह लीला देखते हुए बहुत विलंब हो गया, ऐसा मनमें जानकर और गुरूजी का भय मानकर श्रीरामचन्द्रजी गुरु विश्वामित्रजी के पास चले ।। ६ ।।

जासु त्रास डर कहँ डर होई ❋ भजन प्रभाव देखावत सोई
कहि बातें मृदु मधुर सुहाई ❋ किये बिदा बालक बरिआई

हे पार्वती ! जिसके भयसे भय को भी भय होता है, वे प्रभु भजन का महत्त्व दिखलाते हैं। तब कई प्रकार की कोमल, मीठी बातें कहकर उन्होंने बालकों को जबरदस्ती बिदा किया ।।

दोहा—सभय सप्रेम विनीत अति, सकुच सहित दोउ भाइ।
गुरु पद पंकज नाइ शिर, बैठे आयसु पाइ ।।२४१।।

फिर बड़ी नम्रता, संकोच, प्रेम तथा भक्ति युक्त दोनों भाइयों ने आकर गुरु विश्वामित्रजी के चरणों में सिर झुकाया और आज्ञा पाकर बैठ गये ।। २४१ ।।

निशि प्रवेश मुनि आयसु दीन्हा ❀ सबहीं संध्या बंदन कीन्हा
कहत कथा इतिहास पुरानी ❀ रुचिर रजनि युग याम सिरानी

तब रात्रि होते देख मुनिजीने आज्ञा दी कि अब सन्ध्याँ वन्दन कर लो। दोनों भाइयोंने सन्ध्या किया और पुरानी ऐतिहासिक कथायें कहते हुए वह सुन्दर अर्ध रात्रि व्यतीत हो गई॥

मुनिवर शयन कीन्ह तब जाई ❀ लगे चरण चापन दोउ भाई
जिनके चरण सरोरुह लागी ❀ करत विविध जप जोग विरागी

तब विश्वामित्र अपने आसन पर जाकर सो रहे और दोनों भाई उनका पाँव दबाने लगे। जिनको प्राप्त करनेके लिए लोग विरक्त होकर अनेक प्रकारसे जप योग किया करते हैं॥

तेइ दोउ बन्धु प्रेम जनु जीते ❀ गुरुपद कमल पलोटत प्रीते
बार-बार मुनि आज्ञा दीन्ही ❀ रघुबर जाय शयन तब कीन्ही

उन दोनों भाइयोंको प्रेमने ऐसा विवश कर दिया है कि, वे अपने गुरुके चरण कमलोंको प्रेम सहित दबा रहे हैं। जब मुनिने बारम्बार आज्ञा दी, तब श्रीरामचन्द्रजीने जाकर शयन किया॥

चापत चरण लषन उर लाये ❀ सभय सप्रेम परम सचुपाये
पुनि-पुनि प्रभु कह सोवहु ताता ❀ पौढ़े धरि उर पद जलजाता

फिर लक्ष्मणजी मन लगाकर प्रेम सहित श्रीरामचन्द्रजीका पाँव दबाने लगे परन्तु भय से सकुचाते जाते थे॥ ७॥ और जब प्रभुने बारम्बार कहा कि हे तात! जाकर सोओ, तब उनके चरण कमलोंको हृदयमें धारणकर लक्ष्मणजी जाकर सोये॥ ८॥

दोहा—उठे लषन निशि विगत सुनि, अरुनशिखा धुनि कान।
गुरु ते पहिले जगतपति, जागे राम सुजान॥२४२॥

जब प्रातःकाल होनेको आया, तब अरुण शिखा (मुर्गा) की बोली कानमें पड़ते ही लक्ष्मणजी उठ गये। और गुरु विश्वामित्रसे पहलें ही सुजान श्रीरामचन्द्रजी भी जाग गये थे॥२४२॥

सकल शौच करि जाय नहाये ❀ नित्य निबाहि गुरुहिं शिर नाये
समय जानि गुरु आयसु पाई ❀ लेन प्रसून चले दोउ भाई

फिर सब लोग शौच आदिसे निवृत्त हो जाकर स्नान किए और नित्य कर्म कर राम-लक्ष्मणने मुनिके चरणोंमें आकर दण्डवत् किया॥१॥ फिर समय जान गुरुकी आज्ञा पाकर दोनों भाई उनकी पूजाके लिए फूल लेने चले गये॥२॥

भूप बाग वर देखेउ जाई ❀ जहँ वसन्त ऋतु रही लोभाई
लागे विटप मनोहर नाना ❀ बरण-बरण वर बेलि बिताना

देखा तो राजाका वह श्रेष्ठ बगीचा निकट ही था कि जिसमें सर्वदा ही बसंत ऋतु शोभायमान हो रही थी और जिसमें वर्ण-वर्णकी सुन्दर लता-बेलोंके सुन्दर चँदोवे और मनोहर वृक्ष लगे हुए थे॥

नव पल्लव फल सुमन सुहाये ❀ निज संपति सुर रूख लजाये

नये पल्लवोंमें फल-फूल शोभायमान हैं, मानों अपनी सम्पत्तिसे कल्पवृक्षको भी लज्जित करते हैं॥

चातक कोकिल कीर चकोरा ❀ कूजत विहँग नचत कल मोरा
मध्य बाग सर सोह सुहावा ❀ मनि सोपान विचित्र बनावा

और जिनपर पपीहा, कोयलं, तोते, चकोर और मोर नाचते हैं। बागके मध्य भागमें सुन्दर सरोवर भी था जिसमें मणियोंसे जड़ी सीढ़ियाँ विचित्र बनी थीं ।।७।।

विमल सलिल सरसिज बहुरंगा ❀ जल खग कूजत गुंजत भृङ्गा

जिसमें निर्मल जल था और अनेक रंगोंके कमल खिले हुए थे तथा भौंरे गुंजार कर रहे थे ।।

दोहा—बाग तड़ाग विलोकि प्रभु, हरषे बन्धु समेत ।
परमरम्य आराम यह, जो रामहिं सुखदेत ।। २४३ ।।

इस प्रकार बाग और तालाबको देखकर भाई लक्ष्मण सहित श्रीरामचन्द्रजी प्रसन्न हो गये, क्योंकि वह बड़ा ही रमणीय और श्रीरामचन्द्रजीको सुख देनेवाला था ।।२४३।।

चहुँदिशि चितय पूछि मालीगन ❀ लगे लेन दल फूल मुदित मन
तेहि अवसर सीता तहँ आई ❀ गिरिजा पूजन जननि पठाई

तब श्रीरामचन्द्रजी चारों ओर मालियोंसे पूछ प्रसन्न मनसे दल और फूल लेने लगे। उसी समयमें वहाँ सीताजी आ गयीं, जिन्हें पार्वतीजीकी पूजा करनेको माताने भेजा था ।।

संग सखी सब सुभग सयानी ❀ गावहिं गीत मनोहर बानी
सर समीप गिरिजा गृह सोहा ❀ बरणि न जाइ देखि मन मोहा

उनके साथमें सब सुन्दर चतुर सखियाँ थीं जो, मनोहर वाणीमें गीत गा रही थीं ।।३।। सरोबरके पास पार्वतीजीका मनमोहक मन्दिर था, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता ।।४।।

मज्जन करि सर सखिन्ह समेता ❀ गईं मुदित मन गौरि निकेता
पूजा कीन्ह अधिक अनुरागा ❀ निज अनुरूप सुभग वर माँगा

तब सरोवरमें सखियों सहित स्नान कर, सीताजी प्रसन्न मनसे पार्वतीजीके मन्दिरमें गयीं ।।५।। और बड़े प्रेमसे उनकी पूजा करके अपने योग्य सुन्दर वर माँगा ।। ६ ।।

एक सखी सिय संग बिहाई ❀ गई रही देखन फुलवाई
ते दोउ बन्धु बिलोकेउ जाई ❀ प्रेम विवश सीता पहँ आई

उसमें सीताजीका साथ छोड़कर एक सखी फुलवाड़ी देखने गई थी, जिसने वहाँ दोनों बन्धुओं को जाकर देखा तो वह प्रेमसे विशेष वशीभूत हो सीताजीके पास दौड़ी हुई आई ।।८।।

दोहा—तासु दशा देखी सखिन, पुलकगात जल नयन ।
कहु कारण निज हर्षकर, पूछहिं सब मृदु बयन ।।२४४।।

सखियोंने देखा कि, उसकी दशा विचित्र है, शरीर बड़ा पुलकायमान हो रहा है और नेत्रोंसे जल बह रहा है। तब सब पूछने लगीं कि, हे सखी! अपने हर्षका कारण कहो ।।२४४।।

देखन बाग कुँवर दोउ आये ❀ बय किशोर सब भाँति सुहाये
श्याम गौर किमि कहौं बखानी ❀ गिरा अनयन नयन बिनु बानी

तब उसने कहा दो राजकुमार फुलवाड़ी देखने आये हैं, जिनकी किशोरावस्था है और सब भाँतिसे सुन्दर हैं। उनके साँवले-गोरे रूपको मैं क्या कहूँ ? क्योंकि वाणीको नेत्र नहीं, नेत्रको वाणी नहीं ॥

सुनि हरषीं सब सखी सयानी ❀ सिय हिय अति उतकंठा जानी
एक कहहि नृप सुत तेइ आली ❀ सुने जे मुनि सँग आये काली

उसकी ऐसी बात सुनकर सब सखियाँ प्रसन्न हो गईं और सीताके हृदयमें अधिक इच्छा हो गई। तब एक सखी कहती है हे सखी ! वे वही राजपुत्र हैं जो कल मुनिजीके साथ आये हैं ॥

जिन्ह निज रूप मोहनी डारी ❀ कीन्हे स्ववश नगर नर नारी
बरणत छबि जहँ तहँ सब लोगू ❀ अवशि देखिअहि देखन जोगू

और जिन्होंने अपने रूपकी मोहनीसे नगरके स्त्री-पुरुषोंको वश में कर लिया है। उनकी शोभाका जहाँ-तहाँ सभी लोग वर्णन करते हैं, चलो देखें-जो अवश्य ही देखने योग्य हैं ॥

तासु बचन अति सियहिं सुहाने ❀ दरश लागि लोचन अकुलाने
चलीं अग्र करि प्रिय सखि सोई ❀ प्रीति पुरातन लखै न कोई

उसका कहना सीताजीको अत्यन्त ही अच्छा लगा और दर्शन के लिए नेत्र व्याकुल हो उठे। तब उस प्यारी सखीको आगे लेकर सीताजी चलीं, जिसमें प्रीतिको कोई लख न सके ॥

दोहा—सुमिरि सीय नारद बचन, उपजी प्रीति पुनीत।
चकित विलोकति सकल दिशि, जनु शिशु मृगी सभीत ॥ २४५ ॥

नारदजी के बचन स्मरण कर पवित्र प्रीति उत्पन्न हो गई। इसीसे सीताजी चकित हो चारों ओर ऐसे देख रही हैं मानों बालहरिणी भयभीत होकर देख रही हो ॥२४५॥

कंकण किंकिणि नुपूर धुनि सुनि ❀ कहत लषन सन राम हृदय गुनि
मानहुँ मदन दुन्दुभी दीन्ही ❀ मनसा विश्व विजय कहँ कीन्ही

तब आभूषणोंकी ध्वनि सुन करके श्रीरामचन्द्रजीने लक्ष्मणसे कहा—हे लक्ष्मण ! यह तो ऐसा जान पड़ता है, मानो समस्त विश्वका विजय करनेको कामदेव डङ्का बजा रहा हो ॥

अस कहि फिर चितये तेहि ओरा ❀ सिय मुख शशि भये नयन चकोरा
भये विलोचन चारु अचंचल ❀ मनहुँ सकुचि निमि तजेउ दृगंचल

ऐसा कहकर उन्होंने सीताके चन्द्रमुखकी ओर देखा तो नेत्र चकोर हो गए ॥३॥ फिर तो वे सुन्दर चञ्चल नेत्र ऐसे ही स्थिर हो गए जैसे, संकोचवश राजा निमि पलकसे हट गये हों ॥४॥

देखि सीय शोभा सुख पावा ❀ हृदय सराहत बचन न आवा
जनु बिरंचि सब निज निपुणाई ❀ बिरचि विश्व कहँ प्रगटि दिखाई

सीताजीकी शोभा देख श्रीरामचन्द्रजी सुख पा उसे हृदयमें सराहते हैं, परन्तु मुखसे वचन नहीं आता। मानों ब्रह्माजीने सीताजीको रचने में सारी निपुणताको प्रत्यक्ष कर दिखा दिया हो ॥

सुन्दरता कहँ सुन्दर करई ❀ छवि गुण दीप शिखा जनु बरई
सब उपमा कवि रहे जुठारी ❀ केहि पटतरिय विदेह कुमारी

वह रचना सुन्दरताको भी सुन्दर कर रही थी, मानो सौंदर्यगृहमें कोई दीप शिखा जल रही हो। सीताजी की समता किससे हो? सब उपमायें तो कवियों द्वारा जूठी हो गई हैं।।८।।

दोहा—सिय शोभा हिय बरणि प्रभु, आपनि दशा विचारि।
बोले शुचिमन अनुजसन, बचन समय अनहारि ।।२४६।।

तब सीताकी शोभाका मनमें वर्णन कर तथा अपनी दशाका विचार कर श्रीरामचन्द्रजी पवित्र शब्दोंमें अपने छोटे भाई लक्ष्मणसे समयके अनुकूल यह वचन बोले ।।२४६।।

तात जनक तनया यह सोई ❀ धनुष यज्ञ जेहि कारण होई
पूजन गौरि सखी लै आई ❀ करत प्रकाश फिरति फुलवाई

हे भाई! जिसके कारण धनुषयज्ञ हो रहा है, यह वही जनककी पुत्री जानकी हैं जो सखियोंको लेकर पार्वतीकी पूजा करने आई हैं और इस फुलवाड़ीमें प्रकाश करती हुई घूम रही हैं ।।

जासु विलोकि अलौकिक शोभा ❀ सहज पुनीत मोर मन क्षोभा
सो सब कारण जान विधाता ❀ फरकहिं सुभग अंग सुनु भ्राता

जिसकी अलौकिक शोभाको देखकर मेरा सहजही पवित्र मन क्षुब्ध हो उठा है। सो यह सब कारण क्या है, इसको तो विधाता ही जाने, किन्तु हे भाई! सुनो, मेरा दाहिना अंग फड़क रहा है ।।

रघुवंशिन्ह कर सहज सुभाऊ ❀ मन कुपंथ पग धरैं न काऊ
मोहिंअतिशय प्रतीति जिय केरी ❀ जेहि सपनेहुँ पर नारि न हेरी

रघुवंशियोंका तो यह विश्वास है कि वे भूलकर भी कुमार्गपर पाँव नहीं देते। मुझे अपने मनका पक्का विश्वास है कि, जिसने स्वप्नमें भी किसी परनारीकी खोज नहीं की है ।।६।।

जिन्हके लहहिं न रिपुरण पीठी ❀ नहिं लावहिं परतिय मन डीठी
मंगन लहहिं न जिन्हके नाहीं ❀ ते नरवर थोरे जग माहीं

जिनकी पीठको संग्राममें शत्रु नहीं पाये हैं और जो पराई स्त्रीकी ओर कभी आँख नहीं उठाते और जिनके घरसे याचक कभी निराश नहीं जाते, ऐसे श्रेष्ठ पुरुष संसारमें बहुत थोड़े हैं ।।८।।

दोहा—करत बतकही अनुजसन, मन सिय रूप लुभान।
मुख सरोज मकरन्द छबि, करत मधुप इव पान ।।२४७।।

लक्ष्मणके साथ वार्तालाप करते हुए श्रीरामचन्द्रजी सीताजीके रूप पर मन ही मन मुग्ध हो गये। उनका मन-भ्रमर सीताके मुख कमलके सौन्दर्यरूप मकरन्दका पान करने लगा।।२४७।।

चितवत चकित चहूँदिशि सीता ❀ कहँ गये नृप किशोर मन चीता
जहँ विलोकि मृग शावक नयनी ❀ जनु तहँ बरस कमल सित श्रयनी

इधर चकित होकर सीताजी चारों ओर देखने लगीं कि, वे मनके चाहे किशोर कहाँ गये। वह मृगछौनेके समान नेत्रवाली जहाँ ही देखती थी मानो वहाँ ही श्वेत कमलों की धारा बरसती हो।।

लता ओट तब सखिन्ह लखाए ❀ श्यामल गौर किशोर सुहाए
देखि रूप लोचन ललचाने ❀ हरषे जनु निज निधि पहिचाने

तब सखियोंने सीताजीसे उन राजकिशोरोंको लताकी आड़में जाते हुए दिखाया ।।३।। तब उनका रूप देखकर सीताजीके नेत्र ऐसे ललच गए जैसे कोई खोई हुई निधि पा जावे ।।४।।

थके नयन रघुपति छबि देखी ❁ पलकन हूँ परिहरी निमेखी
अधिक सनेह देह भइ भोरी ❁ शरद शशिहिं जनु चितव चकोरी

श्रीरामचन्द्रजीकी शोभा को देखते-देखते नेत्र थक गये और पलकें बन्द होना भूल गयीं ।।५।। अत्यन्त स्नेहके कारण देहकी सुधि वैसे ही भूल गई, जैसे शरद् ऋतुके चन्द्रमा-को देखकर चकोरी भूल जाती है ।।६।।

लोचन मग रामहिं उर आनी ❁ दीन्हे पलक कपाट सयानी
जब सिय सखिन्ह प्रेमवश जानी ❁ कहि न सकहिं कछु मन सकुचानी

श्रीरामचन्द्रजीकी शोभाको नेत्रों के मार्ग से अपने हृदय में लाकर सीताने पलक रूपी किवाड़ों को बन्द कर लिया ।।७।। जब सखियोंने सीताको प्रेमके वश जाना तो किसीसे कुछ कहते न बना और मन ही मनमें सकुचायीं ।।८।।

दोहा—लता भवन ते प्रकट भये, तेहि अवसर दोउ भाइ ।
निकसे जनु जुग विमल विधु, जलद पटल बिलगाइ।।२४७।।

उसी समय दोनों भाई लता भवनसे बाहर ऐसे प्रगट हुए, मानों मेघ पटलसे होकर दो निर्मल चन्द्रमा बाहर निकल आये हों ।।२४८।।

शोभा सींव सुभग दोउ वीरा ❁ नील पीत जलजात शरीरा
मोरपंख शिर सोहत नीके ❁ गुच्छा-बिच बिच कुसुम कलीके

दोनों सुन्दर वीर राम-लक्ष्मण बड़े ही सुन्दर और शोभा की सीमा थे, उनके नीले और पीले कमलके समान शरीर मनको मोहित कर रहे थे ।।१।। शिरपर सुन्दर अलकें शोभाय-मान हो रही थीं, जिनके बीच-बीचमें पुष्पके गुच्छे गुँथे हुए थे ।।२।।

भाल तिलक श्रम बिंदु सुहाए ❁ श्रवण सुभग भूषण छबि छाए
विकट भृकुटि कच घूँघर बारे ❁ नव-सरोज-लोचन-रतनारे

ललाट पर जो तिलक लगाये हैं, श्रमके कारण उन पर पसीनेकी बूँदें शोभायमान हो रही हैं और कानों में सुन्दर आभूषणकी शोभा छा रही है ।।३।। टेढ़ी भृकुटि, घुँघराले बाल और नवीन कमलके समान रतनारे नेत्र हैं ।।४।।

चारु चिबुक नासिका कपोला ❁ हास बिलास लेत मन मोला
मुख छबि कहि न जाइ मोहि पाहीं ❁ जो बिलोकि बहु काम लजाहीं

उनकी सुन्दर ठोढ़ी, नाक और गाल सुन्दर हैं । उनके हास्य का विलास मानों मन-को मोल ले लेता है ।।५।। मुखकी शोभा तो कुछ कही नहीं जाती, जिसको देखकर अनेको कामदेव भी लज्जित हो जाते हैं ।।६।।

उर मणिमाल कम्बु कल ग्रीवाँ ❀ काम कलभकर भुजबल सीवाँ
सुमन समेत बाम कर दोना ❀ साँवर कुँअर सखी सुठि लोना

हृदय पर मणियों की माला पड़ी है और शंखके समान सुन्दर कण्ठ है तथा हाथीके बच्चेकी सूँड़के समान भुजदण्ड हैं। बायें हाथमें फूलों का दोना लिए हे सखी! साँवला कुमार बड़ा ही सुन्दर और सलोना है ॥८॥

दोहा—केहरि कटि पटपीतधर, सुखमा शील निधान।
देखि भानुकुल भूषणहिं, बिसरा सखिन अपान ॥२४९॥

सिंहकी-सी कमरपर पीताम्बर धारण किए मानो सुख और शीलके निधान ऐसे सूर्यवंश-भूषण श्रीरामचन्द्रजीको देखकर सखियोंने अपने आपको खो दिया ॥२४९॥

धरि धीरज इक सखी सयानी ❀ सीता सन बोली गहि पानी
बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू ❀ भूप किशोर देखि किन लेहू

उसी समय एक चतुर सखी धैर्य धारण कर हाथ पकड़कर सीताजीसे बोली कि, गौरी भवानी का ध्यान फिर कर लेना, अभी इन राजपुत्रोंको क्यों नहीं देख लेती हो? ॥२॥

सकुचि सीय तब नयन उघारे ❀ सनमुख दोउ रघुसिंह निहारे
नख-शिख देखि रामकी शोभा ❀सुमिरि पिताप्रण मनअतिछोभा

उसके ऐसा कहने पर सीताजीने सकुचाकर नेत्र खोलकर देखा कि, वे दोनों रघुवंशी सामने ही हैं। तब रामजी की शोभा और अपने पिताके प्रणका स्मरण कर मनमें अत्यन्त क्षुभित हो गयीं ॥

परवश सखिन लखीं जब सीता ❀ भयउ गहरु सब कहहिं सभीता
पुनि आउब इहि बिरियाँ काली ❀ अस कहि मन बिहँसी इक आली

जब सखियोंने समझा कि, अब सीता परवश हो गई हैं, तब वे सब भयभीत हो कहने लगीं आज बड़ी देर हुई। कल फिर इसी समयमें आवेंगी, ऐसा कहकर एक सखी मनमें मुसकुराने लगी ॥

गूढ़ गिरा सुनि सिय सकुचानी ❀ भयउ विलम्ब मातु भय मानी
धरि बड़ि धीर राम उर आनी ❀ फिरीं अपनपौ पितु वश जानी

तब उनकी ऐसी गूढ़ वाणी सुनकर सीताजी सकुचा गईं और अधिक विलम्ब होनेसे माता का भय मानकर श्रीरामचन्द्रजी को हृदयमें स्थान दे, अपने को पिताके अधीन जानकर चलीं ॥

दोहा—देखन मिस मृग विहँग तरु, फिरइ बहोरि-बहोरि।
निरखि-निरखि रघुबीर छबि, बाढ़ी प्रीति न थोरि ॥२५०॥

तब मृग, पक्षी और वृक्षों को देखनेके बहानेसे बारम्बार फिर जाती हैं। और श्रीरामचन्द्रजी की शोभाको देख-देखकर प्रीति बढ़ती ही जाती है, कम नहीं होती ॥ २५० ॥

जानि कठिन शिव चाप विसूरति ❀ चलीं राखि उर श्यामल मूरति
प्रभु जब जात जानकी जानी ❀ सुख सनेह शोभा की खानी

परन्तु शिवजीके धनुषको कठोर जानकर सीताजी चिन्ता करती हुई श्रीरामजीकी साँवली मूर्ति को हृदयमें रखकर चलीं। उधर जब प्रभु श्रीरामचन्द्रजीने श्रीजानकीजी को जाते हुए जाना ॥

परम प्रेम मय मृदुमसि कीन्ही ❀ चारुचित्र भीतर लिखि लीन्ही
गई भवानी भवन बहोरी ❀ बंदि चरण बोली कर जोरी

तब प्रेमरूपी स्याहीसे उनके उस सुन्दर चित्रको अपने हृदयमें लिख लिया। सीताजी फिर भवानी गौरीके मन्दिरमें जाकर उनके चरणोंकी वन्दना करके हाथ जोड़कर बोलीं—॥

जय-जय-जय गिरिराज किशोरी ❀ जय महेश-मुखचन्द्र-चकोरी
जय गजबदनि खडानन माता ❀ जगत जननि दामिनि द्युतिगाता

हे गिरिराज किशोरी ! आपकी जय हो। हे श्रीशिवजीके मुखरूपी चन्द्रमा की चकोरी ! आपकी जय हो। हे गणेश और स्वामिकार्तिकेयकी माता ! और हे संसारको उत्पन्न करने वाली ! आपके शरीरकी शोभा बिजलीकी चमकके समान है, आपकी जय हो ॥६॥

नहिं तव आदि मध्य अवसाना ❀ अमित प्रभाव वेद नहिं जाना
भव-भव विभव पराभवकारिणि ❀ विश्वविमोहनि स्ववशविहारिणि

आपका आदि, मध्य और अन्त नहीं है, आपके अमित प्रभावको वेद भी नहीं जानते ॥ ७ ॥ आप संसारकी उत्पत्ति, पालन और लयका कारण हैं तथा संसारको विशेष रूपसे मोहित कर अपनी इच्छासे विहार करनेवाली हैं ॥ ८ ॥

दोहा—पति देवता सुतीय महँ, मातु प्रथम तव रेख।
महिमा अमित न कहि सकहिं, सहस शारदा शेष ॥२५१॥

हे माता ! सती और पतिव्रता स्त्रियोंमें आपकी प्रथम गणना है। आपकी अमित महिमाको हजार जिह्वा वाले शेष और शारदा (सरस्वती) भी नहीं कह सकती हैं ॥२५१॥

सेवत तोहिं सुलभ फलचारी ❀ वर दायिनि त्रिपुरारि पियारी
देवि पूजि पद-कमल तुम्हारे ❀ सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे

हे श्रीमहादेवजीकी प्यारी ! हे वर देनेवाली ! आपकी सेवा करनेसे चारों पदार्थ (अर्थ धर्म, काम, मोक्ष) प्राप्त होते हैं ॥१॥ हे देवि ! आपके चरण कमलोंकी पूजाकर देवता, मनुष्य और मुनि सब लोग सुखी होते हैं ॥ २ ॥

मोर मनोरथ जानहु नीके ❀ बसहु सदा उर पुर सबहीके
कीन्हेउँ प्रकट न कारन तेही ❀ अस कहि चरण गही बैदेही

आप मेरा मनोरथ भली-भाँति जानती हैं, क्योंकि आप सबके हृदयरूपी नगरमें सर्वदा निवास करनेवाली हैं ॥ ३ ॥ ऐसा कहकर सीताजी पार्वतीजीके चरणों पर गिर पड़ीं और अपने कारणको प्रकट नहीं कीं ॥ ४ ॥

विनय प्रेमवश भई भवानी ❀ खसी माल मूरति मुसुकानी
सादर सिय प्रसाद शिर धरेऊ ❀ बोली गौरि हरष हिय भरेऊ

सीताजीकी इस प्रार्थनासे पार्वतीजी प्रेमके विवश हो गयीं, उनकी माला गिर पड़ी और मूर्तिने मुसकुरा दिया ॥५॥ तब सीताजीने सादर उसे अपने शिरपर रख लिया और हृदयमें हर्षित हो पार्वतीजी बोलीं—॥ ६ ॥

सुनु सिय सत्य अशीष हमारी ❁ पूजहिं मनकामना तुम्हारी
नारद बचन सदा शुचि साँचा ❁ सो वर मिलहि जाहि मन राँचा

हे सीते ! सुनो, हमारा सत्य आशीर्वाद है कि तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होगी। नारदजी-का वचन सर्वदा ही पवित्र और सच्चा है, जो वर तुम्हारे मन को रुचा है, वही मिलेगा ॥

छन्द—मन जाहि राचेउ मिलहि सो बर सहज सुन्दर साँवरो ।
करुणानिधान सुजान शील सनेह जानत रावरो ॥
यहि भाँति गौरि अशीष सुनि सिय सहित हिय हर्षित अली ।
तुलसी भवानिहिं पूजि पुनि पुनि मुदितमनमन्दिर चली। ३ ३॥

जिस वरको मनमें पसन्द किया है, वह स्वभावतः सुन्दर साँवला वर तुम्हें मिलेगा। क्योंकि करुणाके ससुद्र शीलवान चतुर श्रीरामचन्द्रजी तुम्हारे स्नेहको जानते हैं। इस प्रकार भवानी (पार्वती) का आशीर्वाद सुनकर सीताजी सहित सब सखियाँ हृदयमें प्रसन्न हो गईं। गोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं कि, पार्वतीकी फिर-फिर पूजा करके सीताजी मनमें प्रसन्न होकर अपने मन्दिर (घर) की ओर चलीं ॥ ३३ ॥

सोरठा—जानि गौरि अनुकूल, सियहिय हर्ष न जाय कहि ।
मंजुल मंगल मूल, वाम अंग फरकन लगे ॥३४॥

तब श्रीपार्वतीजी को अनुकूल जानकर सीताजीके हृदयमें जो हर्ष हुआ, वह कहा नहीं जाता। उनका सुन्दर और मङ्गलोंका मूल बायाँ अङ्ग फड़कने लगा ॥ ३४ ॥

हृदय सराहत सीय लुनाई ❁ गुरु समीप गवने दोउ भाई
राम कहा सब कौशिक पाहीं ❁ सरल सुभाव छुआ छल नाहीं

इधर अपने हृदयमें सीताजीकी शोभाको मनमें सराहते हुए दोनों भाई गुरुके पास चले ॥१॥ और सरल स्वभाव वाले जिनमें छल-कपटका स्पर्श तक नहीं है, ऐसे श्रीराम-चन्द्रजीने पहुँच कर वहाँ पर सारा समाचार विश्वामित्रजीसे कह सुनाया ॥ २ ॥

सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्ही ❁ पुनि अशीष दोउ भाइन्ह दीन्ही
सुफल मनोरथ होहिं तुम्हारे ❁ राम-लषण सुनि भये सुखारे

पुष्प पाकर मुनिजीने पूजा की और फिर दोनों भाइयों को आशीर्वाद दिया कि ॥३॥ तुम्हारे मनोरथ सुफल होवें—यह सुनकर श्रीरामचन्द्रजी और लक्ष्मणजी सुखी हुए ॥ ४ ॥

करि भोजन मुनिवर विज्ञानी ❁ लगे कहन कछु कथा पुरानी
विगत दिवस मुनि आयसु पाई ❁ संध्या करन चले दोउ भाई

फिर भोजन करके महा विज्ञानी मुनि विश्वामित्रजी कुछ प्राचीन कथायें कहने लगे। दिनका अवसान होनेपर गुरुजीकी आज्ञा पा दोनों भाई (राम-लक्ष्मण) सन्ध्या करने चले ।।६।।

प्राची दिशि शशि उगेउ सुहावा ❁ सियमुखसरिस देखि सुख पावा
बहुरि विचार कीन्ह मनमाहीं ❁ सीय वदन सम हिमकर नाहीं

इतनेमें पूरब दिशामें चन्द्रमा निकलकर शोभायमान हुए तो, उसे सीताजीके मुखके समान देखकर श्रीरामचन्द्रजीने बड़ा सुख पाया ।।७।। फिर मनमें विचार किया तो सीताजी-के मुखके समान चन्द्रमाकी शोभा नहीं थी ।। ८ ।।

दोहा—जन्म सिन्धु पुनि बन्धु विष, दिन मलीन सकलंक ।
सिय मुख समता पाव किमि, चन्द्र वापुरो रंक ।।२५२।।

क्योंकि चन्द्रमाका जन्म समुद्रसे हुआ है और विष उसका भाई है तथा वह दिनमें मलिन हो जाता है और कलंक युक्त है। इसलिए बेचारा दरिद्र चन्द्रमा सीताजीके मुख-की समताको कैसे पा सकता है ? ।। २५२ ।।

घटै बढ़ै बिरहिन दुखदाई ❁ ग्रसै राहु निज संधिहि पाई
कोक शोकप्रद पंकज द्रोही ❁ अवगुण बहुत चन्द्रमा तोही

फिर यह घटा-बढ़ा करता है और विरहियों को दुःखदायक है तथा अपना सन्धि-स्थान पाकर राहु इसको ग्रस लेता है—अर्थात् ग्रहण लगता है ।।१।। यह चकोरोंको शोकप्रद और कमलका शत्रु है, इसलिए हे चन्द्रमा ! तुझमें बहुत दोष हैं ।।२।।

वैदेही मुख पटतर दीन्हे ❁ होइ दोष बड़ अनुचित कीन्हे
सियमुख छबि विधु ब्याज बखानी ❁ गुरुपहिं चले निशा बड़ि जानी

यदि तुझसे सीताजीके मुखकी पटतर देते हैं तो ऐसा करना बड़ा अनुचित और दोषपूर्ण होगा ।।३।। सीताजीके मुखकी शोभा को चन्द्रमाके बहानेसे वर्णन कर और रात्रि अधिक चली गई यह जानकर, भाई सहित श्रीरामचन्द्रजी गुरुजीके पास चले आये ।।४।।

करि-मुनि-चरण-सरोज प्रणामा ❁ आयसु पाइ कीन्ह विश्रामा
विगत निशा रघुनायक जागे ❁ बन्धु बिलोकि कहन अस लागे

फिर मुनि (विश्वामित्र) के चरण कमलोंको प्रणाम कर और उनकी आज्ञा पाकर विश्राम करने लगे ।।५।। जब प्रातःकाल हुआ और श्रीरामचन्द्रजी सोकर उठे, तब भाई लक्ष्मणको देखकर ऐसा कहने लगे ।।६।।

उगेउ अरुण अवलोकहु ताता ❁ पंकज-कोक-लोक-सुख दाता
बोले लषण जोरि युग पाणी ❁ प्रभु प्रभाव सूचक मृदु वाणी

हे भाई ! उठो, देखो कि कमल, लोक और चक्रवाकोंको सुख देनेवाले सूर्य उदय हो गए हैं। तब दोनों हाथ जोड़कर लक्ष्मणजी प्रभुके प्रभावको सूचित करनेवाली यह मीठी वाणी बोले ।।८।।

दोहा—अरुणोदय सकुचे कुमुद, उडुगन ज्योति मलीन ।
तिमि तुम्हार आगमन सुनि, भये नृपति बलहीन ॥२५३॥

जैसे अरुणोदय होनेसे कमल संकुचित हो जाते हैं और तारागणोंका तेज मलिन हो जाता है, वैसे ही आपका आगमन सुनकर राजा लोग बलहीन हो गये हैं ॥ २५३ ॥

नृप सब नखत करहिं उजियारी ❀ टारि न सकहिं चाप बल भारी
कमल कोक मधुकर खग नाना ❀ हरषहिं सकल निसा अवसाना

ये राजा नक्षत्रोंके समान प्रकाश करनेवाले हैं, जो धनुषकी गम्भीरता रूप अन्धकारको टाल नहीं सकते । जैसे रात्रिके अन्तमें कमल, चक्रवाक, भौंरे और अनेक पक्षी प्रसन्न हो जाते हैं ॥

ऐसेहि प्रभु सब भक्त तुम्हारे ❀ होइहहिं टूटे धनुष सुखारे
उदय भानु बिनु श्रम तम नाशा ❀ दुरे नखत जग तेज प्रकाशा

वैसे ही हे प्रभु ! धनुष टूटने पर आपके समस्त भक्त सुखी होंगे। जैसे सूर्यके उदय होते ही बिना परिश्रम अन्धकारका नाश हो जाता है, नक्षत्र छिप जाते हैं तथा संसारमें प्रकाश फैल जाता है ॥

रबि निज उदय ब्याज रघुराया ❀ प्रभु प्रताप सब नृपन दिखाया
तव भुजबल महिमा उदघाटी ❀ प्रगटी धनु विघटन परिपाटी

वैसे ही सूर्यने अपने उदयके बहाने राजाओंको अपना प्रभाव दिखलाया है । आपकी भुजाओं-के बलने आपकी महिमा स्थापित की; धनुषका टूटना तो परम्परासे चला आता है ॥६॥

बन्धु बचन सुनि प्रभु मुसुकाने ❀ होइ शुचि सहज पुनीत नहाने
नित्य क्रिया करि गुरु पहँ आये ❀ चरण सरोज सुभग शिर नाये

भाईकी बात सुनकर प्रभु मुसका दिए और स्वभावसे पवित्र प्रभुने स्नान किया ॥७॥ फिर सन्ध्या-दिक क्रियाओंको कर गुरुजीके पास आए तथा सुन्दर कमलवत् चरणोंमें शिर झुकाये ॥८॥

शतानन्द तब जनक बुलाये ❀ कौशिक मुनि पहँ तुरत पठाये
जनक विनय तिन आय सुनाई ❀ हर्षे बोलि लिये दोउ भाई

उसी समय राजा जनकने शतानन्दको बुलाकर शीघ्र विश्वामित्रजीके पास भेजा । उन्होंने जाकर जनकजीकी प्रार्थना कह सुनाई, तब विश्वामित्र प्रसन्न होकर दोनों भाइयोंको बुलाये ॥१०॥

दोहा—शतानंद पद बन्दि प्रभु, बैठे गुरुपहँ जाय ।
चलहु तात मुनि कहेउ तब, पठवा जनक बुलाय ॥२५४॥

तब जनकके पुरोहित शतानन्दजीके चरणोंको प्रणामकर गुरूजीके पास जाकर बैठ गये । तब विश्वामित्रजीने कहा—हे तात ! चलो राजा जनकने बुलावा भेजा है ॥२५४॥

सीय स्वयम्बर देखिय जाई ❀ ईश काहि धौं देइ बड़ाई
लषन कहा यश भाजन सोई ❀ नाथ कृपा तव जापर होई

चलकर स्वयंवर तो देख लिया जाय, देखें न जाने आज विधाता किसको बड़ाई देता है ? लक्ष्मणजी ने कहा, हे नाथ ! इसका पात्र वही होगा जिसपर आपकी कृपा होगी ॥२॥

हर्षे सुनि सब मुनिवर बानी ❀ दीन्ह असीस सबहिं सुख मानी
पुनि मुनिवृन्द समेत कृपाला ❀ देखन चले धनुष मखशाला

लक्ष्मणजी की वाणी सुनकर सब मुनि हर्षित हुए और सबने ही सुख मानकर उनको आशीर्वाद दिया। फिर मुनियों के साथ कृपालु श्रीरामचन्द्रजी यज्ञशाला देखने चले ॥४॥

रंग भूमि आये दोउ भाई ❀ अस सुधि सब पुरबासिन पाई
चले सकल गृह काज बिसारी ❀ बालक युवा जरठ नर नारी

जब दोनों भाई रंगभूमि (स्वयंवर-मण्डप) में पहुँचे हैं, ऐसा समाचार पाकर बाल-वृद्ध, नर-नारी, समस्त पुरवासी अपने गृहका सब काम-काज छोड़कर चल दिये ॥६॥

देखी जनक भीर भइ भारी ❀ शुचि सेवक सब लिये हँकारी
तुरत सकल लोगन्ह पहँ जाहू ❀ आसन उचित देउ सब काहू

तब जनक ने देखा कि भीड़ बहुत बढ़ी है—इससे उन्होंने अपने सब चतुर सेवकों को बुलाकर कहा—शीघ्र ही सब लोगों के पास जाओ और सबको उचित आसन दो ॥८॥

दोहा—कहि मृदु बचन विनीत तिन, बैठारे नर नारि।
उत्तम मध्यम नीच लघु, निज-निज थल अनुहारि ॥२५५॥

तब उन लोगोंने सब स्त्री-पुरुषोंको मीठे और नम्र वचन कहकर उत्तम, मध्यम, नीच और लघु का विचार करते हुए जो जिस योग्य था, उसको उस-उस स्थानमें बिठा दिया ॥२५५॥

राज कुँवर तेहि अवसर आये ❀ मनहुँ मनोहरता छबि छाये
गुणसागर नागर वर वीरा ❀ सुन्दर श्यामल गौर शरीरा

उसी समय राम-लक्ष्मण भी वहाँ आ गये, मानों उनके शरीरमें मनोहरता छाई हुई है। गुणों के सागर तथा चतुरतामें श्रेष्ठ, उनका सुन्दर श्यामल गौर शरीर क्या ही शोभायमान था ॥

राज समाज विराजत रूरे ❀ उडुगण महँ जनु युग बिधु पूरे
जिनकी रही भावना जैसी ❀ प्रभु मूरति देखी तिन तैसी

तब वे उस राज समाज में वैसे ही विराजमान हुए, मानों तारागणों के मध्यमें दो पूर्ण चन्द्रमा शोभायमान हों। तब जिसकी जैसी भावना रही, उसने प्रभुकी मूर्तिको वैसा ही देखा ॥

देखहिं भूप महा रणधीरा ❀ मनहुँ वीर-रस धरे शरीरा
डरे कुटिल नृप प्रभुहिं निहारी ❀ मनहुँ भयानक मूरति भारी

राजाओंने रामको रणधीर देखा मानों, साक्षात् वीररसने शरीर धारण किया हो। प्रभु श्रीरामचन्द्रजीको देखकर सब दुष्ट राजा ऐसेही डर गए, मानो वे कोई बड़ी भयानक मूर्ति हैं ॥

रहे असुर छल जो नृप वेषा ❀ तिन्ह प्रभु प्रकट कालसम देखा
पुरवासिन्ह देखे दोउ भाई ❀ नर भूषण लोचन सुखदाई

वहाँ जो असुर छिपे हुये राजाओं के वेशमें विद्यमान थे, उन्होंने प्रभुको प्रत्यक्ष कालके समान देखा। परन्तु पुरवासियोंने रामजीको नर-भूषण और नेत्रों को सुख देनेवालेके समान देखा ॥

दोहा—नारि विलोकहिं हर्षि हिय, निज निज रुचि अनुरूप ।
जनु सोहत शृंगार धरि, मूरति परम अनूप ।।२५६।।

स्त्रियाँ तो चित्तमें प्रसन्न होकर अपनी-अपनी रुचिके अनुसार ऐसे देखने लगीं, मानो शृंगार रस कोई अनुपम शरीर धारण करके शोभायमान हो रहा हो ।।२५६।।

विदुषन प्रभु विराट मय दीशा ❁ बहु मुख कर पग लोचन शीशा
जनक जाति अवलोकहिं कैसे ❁ सजन सगे प्रिय लागहिं जैसे

जो विद्वान् थे उन्होंने प्रभुको विराट्मय देखा कि, अनेक मुख-हाथ, पाँव-नेत्र और शिर हैं । राजा जनककी जातिके लोगोंने ऐसा देखा जैसे, कोई अपना प्रिय सम्बन्धी लगता हो ।।

सहित विदेह विलोकहिं रानी ❁ शिशु सम प्रीति न जाय बखानी
योगिन परम तत्त्वमय भाषा ❁ शांत शुद्ध मन सहज प्रकाशा

और रानी सुनयना सहित राजा जनक तो प्रभुको शिशुके समान देखने लगे, जिनका प्रेम वर्णन नहीं किया जाता ।।३।। परन्तु योगियों को वे शान्त, शुद्ध और मनमें सहज प्रकाश करनेवाले, परमतत्त्वके समान भासमान हुए ।।४।।

हरि भक्तन देखे दोउ भ्राता ❁ इष्टदेव इव सब सुख-दाता
रामहिं चितव भाव जेहि सीया ❁ सो सनेह सुख नहिं कथनीया

और भक्तोंने दोनों भाइयोंको अपने इष्टदेवके समान ही सब सुखोंका दाता देखा । किन्तु जिस भावसे श्रीरामजीको सीताजीने देखा, उस स्नेहका वर्णन नहीं हो सकता ।।६।।

उर अनुभवति न कहि सक सोऊ ❁ कवन प्रकार कहै कवि कोऊ
जेहि विधि रहा जाहि जस भाऊ ❁ तेहिं तस देखेउ कोशल राऊ

क्योंकि हृदयके अनुभवको वह भी नहीं कह सकती हैं, फिर कोई कवि उसे किस प्रकार कहेगा । जिसका जैसा भाव था, उसने वैसा ही श्रीरामचन्द्रजीके रूप को देखा ।।८।।

दोहा—राजत राज समाज महँ, कोशलराज-किशोर ।
सुन्दर स्यामल गौर तन, विश्वविलोचन-चोर ।।२५७।।

इस प्रकार साँवले और गोरे विश्वके नेत्रचोर अयोध्याके राजकुमार राम-लक्ष्मण राज-समाजमें शोभायमान हुए ।।२५७।।

सहज मनोहर मूरति दोऊ ❁ कोटि काम उपमा लघु सोऊ
शरद चंद निंदक मुख नीके ❁ नीरज नयन भावते जीके

दोनों मूर्तियाँ स्वभाव ही-से मनोहर थीं, जिनके लिए करोड़ों कामदेवकी उपमा भी छोटी है ।।१।। उनका मुख शरद्के चन्द्रमाको भी निन्दित करता था, कमलसे नेत्र अच्छे लग रहे थे ।।२।।

चितवनि चारु मार-मद-हरणी ❁ भावति हृदय जाति नहिं बरणी
कल कपोल श्रुति कुण्डल लोला ❁ चिबुक अधर सुन्दर मृदु बोला

उनकी चितवन कामदेवके अहंकारको हरने वाली, हृदयको अच्छी लगती थी, जिसका वर्णन नहीं होता।।३।।सुन्दर गाल और कानोंमें कुण्डल हैं, ठोड़ी-ओठ सुन्दर तथा वचन कोमल हैं ।।४।।

कुमुद बंधुकर निंदक हासा ❁ भृकुटी विकट मनोहर नासा
भाल विशाल तिलक झलकाहीं ❁कचविलोकिअलिअवलिलजाहीं

उनका हँसना चन्द्र किरणोंकी भी निन्दा करने वाला था, टेढ़ी भौहें, मनोहारी सुन्दर नासिका विशाल ललाटपर तिलककी झलक और बालोंको देख भौरोंका झुण्ड लज्जित होता था ।।

पीत चौतनी शिरनि सुहाई ❁ कुसुम कली बिच-बीच बनाई
रेखा रुचिर कंबु कल ग्रीवाँ ❁ जनु त्रिभुवन सुषमा की सीवाँ

शिरपर पीले रंगकी चौगसिया टोपी शोभायमान थी, जिसके बीच-बीचमें फूलोंकी कलियाँ बनी हुई थीं। कंठमें शंखके समान सुन्दर तीन रेखायें मानों त्रैलोक्यकी शोभाकी सीमा थीं ।।

दोहा—कुञ्जरमणि कंठा कलित, उरन्हि तुलसिका माल।
वृषभ कंध केहरि ठवनि, बलनिधि बाहु विशाल ।।२५८।।

गलेमें सुन्दर गजमोतियोंका कंठा पहने थे, हृदयपर तुलसीकी माला विराजमान थी। बैलके-से ऊँचे कंधे, सिंहकी-सी चाल और बलके धाम तथा लम्बी भुजायें थीं ।। २५७ ।।

कटि तूणीर पीतपट बाँधे ❁ कर शर धनुष बाम कर काँधे
पीत यज्ञ उपवीत सुहाए ❁ नख शिख मंजु महा छबि छाए

कमरमें पीताम्बर और तरकस बाँधे हुए हाथ में बाण लिए, बायें कन्धेपर श्रेष्ठ धनुष और पीले रंगका यज्ञोपवीत शोभायमान था, उनके नखसे शिखा पर्यन्त महाशोभा छाई हुई थी ।।

देखि लोग सब भये सुखारे ❁ इकटक लोचन टरत न टारे
हर्षे जनक देखि दोउ भाई ❁ मुनि—पद—कमल गहे तब जाई

उनके ऐसे स्वरूपको देखकर लोग ऐसे सुखी हो गए कि दृष्टि टाले नहीं टलती। राजा जनकने भी दोनों भाइयोंको देखकर प्रसन्न हो विश्वामित्रजीके कमलवत् चरणोंको जाकर छूआ ।।४।।

करि विनती निज कथा सुनाई ❁ रंग अवनि सब मुनिहिं दिखाई
जहँ जहँ जाहिं कुँवर वर दोऊ ❁ तहँ-तहँ चकित चितव सबकोऊ

फिर विनय पूर्वक सारा समाचार कहकर रंगभूमिका सब स्थान दिखाया। उनके साथ वे दोनों श्रेष्ठ राजकुमार जहाँ-जहाँ जाते, वहाँ-वहाँ सब कोई चकित भावसे देखते थे ।। ६ ।।

निज निज रुचि रामहिं सब देखा ❁ कोउ न जान कछु मरम विशेखा
भलि रचना मुनि नृप सन कहेऊ ❁ राजा मुदित महा सुख लहेऊ

अपनी-अपनी रुचिके अनुसार सब लोगोंने रामको देखा, परन्तु भेद विशेष कोई न जान सका।।७।।विश्वामित्रजी ने जनकसे रंगभूमिकी प्रशंसा की तो राजा जनक सुखी हुए।।८।।

दोहा—सब मंचन ते मंच इक, सुन्दर बिशद विशाल ।
मुनि समेत दोउ बन्धु तहँ, बैठारे महिपाल ।। २५९ ।।

तब राजा जनकने विश्वामित्र सहित दोनों भाइयोंको लाकर एक बड़े मञ्चपर बिठा दिया कि, जो सब मंचोंसे बहुत ही सुन्दर था ॥ २५६ ॥

प्रभुहिं देखि सब नृप हिय हारे ❀ जनु राकेश उदय भये तारे
असि प्रतीति सबके मन माहीं ❀ राम चाप तोरब शक नाहीं

प्रभुको देखकर सब राजा हृदयमें ऐसे हार मान गये, मानों चन्द्रमाके उदय होनेसे तारे टिमटिमा रहे हों। मनमें यह दृढ़ विश्वास हो गया कि श्रीरामचन्द्रजी धनुषको तोड़ेंगे इसमें सन्देह नहीं ॥

बिनु भंजेउ भव धनुष विशाला ❀ मेलिहि सीय राम उर माला
अस विचारि गवनहु घर भाई ❀ यश प्रताप बल तेज गँवाई

शिवके बड़े धनुषको बिना तोड़े ही सीताजी रामचन्द्रजीके गलेमें जयमाल पहना देंगी। हें भाई ! ऐसा विचार कर अपने यश, प्रताप, बल और तेजको गँवाकर घर जाओ ॥ ४ ॥

बिहँसे अपर भूप सुनि बानी ❀ जे अविवेक अंध अभिमानी
तोरेहुँ धनुष ब्याह अवगाहा ❀ बिन तोरे को कुँवरि बिवाहा

उनकी ऐसी वाणी सुनकर अन्य अज्ञानी और अन्धाभिमानी राजा हँसने लगे कि—धनुष तोड़नेपर भी विवाह कर लेना कठिन ही है, बिना तोड़े कुमारीको विवाहने वाला कौन है ? ॥

एक बार कालहु किन होई ❀ सिय हित समर जितब हम सोई
यह सुनि अपर भूप मुसुकाने ❀ धर्मशील हरि-भक्त सयाने

चाहे काल ही क्यों न हो ? एक बार तो हम लोग सीताके लिए उसे भी युद्धमें जीत लेंगे । तब उनकी बात सुनकर जो धर्मशील भगवान्के भक्त अन्य राजा थे मुसकुराने लगे ॥८॥

सोरठा—सीय बिवाहब राम, गर्व दूरि करि नृपन के ।
जीति को सक संग्राम, दशरथ के रण बाँकुरे ॥३५॥

क्योंकि वे जानते थे कि इन सब राजाओंका गर्व चूर्ण कर, श्रीरामचन्द्रजी ही सीतासे विवाह करेंगे । भला इन महाराज दशरथके रणबाँकुरोंको संग्राममें कौन जीत सकता है ? ॥३५॥

वृथा मरहु जनि गाल बजाई ❀ मन मोदक नहिं भूख बुताई
सिख हमार सुनि परम पुनीता ❀ जगदम्बा जानहु जिय सीता

व्यर्थ गाल बजाकर क्यों प्राण देते हो, भला कहीं मनके लड्डुओंसे भूख जाती है । हमारी यह परम पवित्र शिक्षा सुनो और सीताजीको हृदयमें जगत्की माता जानो ॥२॥

जगत पिता रघुपतिहिं विचारी ❀ भरि लोचन छवि लेहु निहारी
सुन्दर सुखद सकल गुणराशी ❀ ये दोउ बंधु शंभु उरवासी

और रामको जगत्-पिता विचारकर आँख भर इनकी शोभा देख लो ॥३॥ ये दोनों भाई सब गुणोंके धाम तथा श्रीमहादेवजीके हृदयमें सर्वदा ही वास किया करते हैं ॥ ४ ॥

सुधा समुद्र समीप बिहाई ❀ मृग जल निरखि मरहु कत धाई
करहु जाइ जा कहँ जोइ भावा ❀ हम तो आजु जन्म फल पावा

अमृतके समुद्रको छोड़कर मृगतृष्णाके जलको देख दौड़कर क्यों प्राण देते हो? जिसको जो अच्छा लगे करे; परन्तु हम सब तो आज अपने जन्म लेनेका फल पा रहे हैं ॥६॥

अस कहि भले भूप अनुरागे ❀ रूप अनूप बिलोकन लागे
देखहिं सुर नभ चढ़े बिमाना ❀ बरषहिं सुमन करहिं कल गाना

ऐसा कहकर अच्छे राजा श्रीरामजीके अनुपम रूपको देखने लगे ॥७॥ देवता विमानों में बैठकर भगवान्‌का दर्शन करते और यशोगान करके फूलोंकी वर्षा करते थे ॥ ८ ॥

दोहा—जानि सुअवसर सीय तब, पठवा जनक बुलाइ।
चतुर सखी सुन्दरि सकल, सादर चलीं लिवाइ ॥२६०॥

तब सुन्दर अवसर जानकर राजा जनकने सीताजीको बुला भेजा। सब सुन्दर सखियाँ जो बड़ी ही चतुर (बुद्धिमती) थीं, प्रेमपूर्वक सीताजीको साथ लेकर आगे चलीं ॥२६०॥

सिय शोभा नहिं जाइ बखानी ❀ जगदम्बिका रूप-गुण-खानी
उपमा सकल मोहिं लघु लागी ❀ प्राकृत नारि अंग अनुरागी

सीताजीके सौन्दर्यको बखाना नहीं जाता, क्योंकि वे जगत् माता और रूप-गुणकी खानी हैं। इस कारण मुझे सारी उपमायें छोटी लगती हैं; क्योंकि वे प्राकृतिक स्त्रियों की हैं ॥२॥

सीय वरणि तेहि उपमा देई ❀ कुकवि कहाइ अयश को लेई
जौं पटतरिय तीय सम सीया ❀ जग असि युवति कहाँ कमनीया

तब सीताजीके वर्णनमें ऐसी उपमा देकर संसारमें कुकवि कहाकर कौन अपयश लेवे? यदि सीताजीको साधारण स्त्रियोंके समान कहें, तो संसारमें ऐसी सुन्दर स्त्री कहाँ? ॥४॥

गिरा मुखर तनु अर्ध भवानी ❀ रति अति दुखित अतनुपति जानी
बिष बारुणी बन्धु प्रिय जेही ❀ कहिय रमा सम किमि बैदेही

यदि सरस्वतीसे उपमा देवें तो वह बहुत बाचाल हैं और पार्वती भी अर्द्धाङ्गिनी हैं और कामदेवकी स्त्री 'रति' तो अपने पतिको शरीरहीन जानकर अत्यन्त दुःखित हैं! फिर जिसका प्यारा भाई मदिरा और विष है, उस लक्ष्मीको भी सीताजीके समान कैसे कहें? ॥६॥

जो छबि-सुधा पयोनिधि होई ❀ परम-रूपमय कच्छप सोई
शोभा रजु मन्दर शृङ्गारू ❀ मथै पाणि पंकज निज मारू

यदि शोभारूपी अमृत क्षीर सागर हो, और उसमें अत्यन्त रूपमयी सुन्दरता कच्छप हो ॥७॥ और शोभारूपी रस्सीसे शृङ्गाररूपी मन्दराचल पर्वतको कामदेव ही अपने हाथसे मँथन करे ॥८॥

दोहा—यहि विधि उपजै लक्ष्मि जब, सुन्दरता सुख मूल।
तदपि सकोच समेत कवि, कहहिं सीय सम तूल ॥२६१॥

तब उस प्रकारसे सुन्दर सुखकी मूल जो कोई लक्ष्मी प्रकट होगी तो, उसको भी सीताजीके समान कहनेमें कविको लज्जा आती है ॥ २६१ ॥

चलीं सङ्ग लै सखी सयानी ❀ गावहिं गीत मनोहर बानी
सोह नवल तनु सुन्दर सारी ❀ जगत जननि अतुलित छबिभारी

सयानी सखियाँ सीताजीको अपने साथ लेकर मनोहर वाणीमें गीत गाती हुईं चलीं, उनके शरीर पर नवीन सुन्दर साड़ी शोभायमान थी और जगत्‌की माता अत्यन्त शोभासे परिपूर्ण थीं ॥

भूषण सकल सुदेश सुहाये ❀ अङ्ग अङ्ग रचि सखिन बनाये
रङ्गभूमि जब सिय पगु धारी ❀ देखि रूप मोहे नर नारी

उत्तम और शोभायमान आभूषणोंको सखियोंने रच-रचकर सब अंगोंमें पहना दिया था। जब सीताजीने रंगभूमिमें पदार्पण किया तब उनके रूपको देखकर सभी स्त्री-पुरुष मोहित हो गये ॥

हरषि सुरन दुंदुभी बजाई ❀ बरषि प्रसून अपसरा गाई
पाणि सरोज सोह जयमाला ❀ अवचट चितये सकल भुवाला

देवताओंने प्रसन्न होकर दुन्दुभी बजाई और अप्सराओंने फूल वर्षाकर गान किया। उनके कमलवत् हाथोंमें जयमाल शोभायमान है, यह देखकर सब राजा आश्चर्य करने लगे ॥६॥

सीय चकित चित रामहिं चाहा ❀ भये मोहवश सब नर नाहा
मुनि समीप बैठे दोउ भाई ❀ लगे ललकि लोचन निधि पाई

किन्तु सीताजीने चकित चित्त हो रामको ही चाहा और सभी राजा मोहके वशीभूत हो गये। सीताजी दोनों भाइयोंको मुनिके समीप बैठे देख लालायित हो उधर देखने लगीं ॥

दोहा--गुरुजन लाज समाज बड़ि, देखि सीय सकुचानि।
लगीं बिलोकन सखिन तन, रघुवीरहिं उर आनि ॥२६२॥

किंतु गुरुजनों की लाज और बृहत् समाजको देखकर सीताजी संकुचित हो गईं और श्रीरामचन्द्रजी को अपने हृदयसे स्थान दे सखियों के शरीर की ओर देखने लगीं ॥२६२॥

राम रूप अरु सिय छबि देखी ❀ नर नारिन परिहरी निमेखी
सोचत सकल कहत सकुचाहीं ❀ विधिसन विनय करहिं मनमाहीं

श्रीरामचन्द्रजीके रूप और सीताजीकी शोभाको सभी स्त्री-पुरुष एक टकसे देख रहे थे ॥ १ ॥ सब सोच रहे थे; किन्तु कुछ कहते हुए सकुचाते और मनमें अपनी सफलताके लिए ब्रह्माजीसे प्रार्थना करते थे ॥ २ ॥

हरु बिधि बेगि जनक जड़ताई ❀ मति हमारि अस देहु सुहाई
बिनु बिचार प्रण तजि नरनाहू ❀ सीय राम कर करइ विवाहू

हे विधाता ! राजाकी जड़ताको आप हर लें और हमारी जैसी सुहावनी बुद्धि उन्हें दे देवें कि, बिना विचारे ही वे अपने प्रणको त्याग श्रीरामचन्द्रजीके साथ सीताजीका बिवाह कर देवें ॥

जग भल कहहिं भाव सब काहू ❀ हठ कीन्हे अंतहुँ उर दाहू
यह लालसा मगन सब लोगू ❀ वर साँवरो जानकी जोगू

इसे संसार अच्छा कहेगा, क्योंकि यह सभी को अच्छा लग रहा है, अथवा हठ करनेसे हृदय जलेगा–किंतु, इसी लालसामें सभी लोग मगन थे कि यह साँवला वर जानकीके योग्य है ।।

तब बंदी जन जनक बुलाये ❀ विरुदावली कहत चलि आये
कह नृप जाइ कहहु प्रण मोरा ❀ चले भाट हिय हर्ष न थोरा

तब राजा जनकने बन्दीजनोंको बुलाया तो, वे उनका यशोगान करते हुए आये। राजाने कहा कि, जाकर सबको मेरा प्रण कह सुनाओ, तब भाँट लोग अपने हृदयमें प्रसन्न होते हुए चले ।।

दोहा–बोले बन्दी बचन वर, सुनहु सकल महिपाल ।
प्रण विदेह कर कहहिं हम, भुजा उठाइ विशाल ।।२६३।।

फिर वे बन्दीजन इस प्रकार श्रेष्ठ वाणी बोले–हे समस्त राजा लोगो ! सुनिए, हम अपनी विशाल भुजाएँ उठाकर महाराज जनक का प्रण कहते हैं ।।२६३।।

नृप-भुजबल-बिधु शिव धनु राहू ❀ गरुअ कठोर बिदित सब काहू
रावण बाण महाभट भारे ❀ देखि सरासन गवहिं सिधारे

राजाओंके बाहुबल रूपी चन्द्रमा को ग्रसनेके लिए यह धनुष राहुके समान है, इसकी गुरुता सबको विदित है कि–रावण और बाणासुर जैसे वीर इसके भारीपन को देखकर चुपचाप चले गये ।।२।।

सोइ पुरारि कोदंड कठोरा ❀ राज समाज आजु जोइ तोरा
त्रिभुवन–जय–समेत वैदेही ❀ बिनहि बिचारि बरइ हठि तेही

वही त्रिपुरारि महादेवजीका यह कठोर धनुष है कि, आज इस राज समाजमें जो इसको तोड़ देगा। वह त्रिभुवन विजयी कहलावेगा और बिना विचारे ही हठपूर्वक सीता उसको बरेंगी ।।

सुनि प्रण सकल भूप अभिलाषे ❀ भट मानी अतिशय मनमाषे
पौरकर बाँधि उठे अकुलाई ❀ चले इष्टदेवन्ह शिर नाई

ऐसे प्रण को सुनकर सभी राजा हर्षित हुए, किन्तु जो अभिमानी थे, वे अपने मनमें बहुत क्रोधित हुए ।।५।। वे कमरमें फेटा बाँधकर व्यग्रता से खड़े हो अपने इष्टदेवों को शिर नवाकर धनुष की ओर चले ।।६।।

तमकि ताकि तकि शिवधनु धरहीं ❀ उठइ न कोटि भाँति बल करहीं
जिन्हके कछु विचार मनमाहीं ❀ चाप समीप महीप न जाहीं

तमककर, देखते हुए और इधर-उधर शिवजीके धनुष को पकड़ते हैं, करोड़ों भाँति से बल करने पर भी वह नहीं उठता है ।।७।। जिन राजाओं के मनमें कुछ भी विचार था, वे धनुषके समीप नहीं जाते हैं ।।८।।

दोहा–तमकि धरहिं धनु मूढ़ नृप, उठइ न चलहिं लजाइ ।
मनहुँ पाइ भट बाहुबल, अधिक अधिक गरुआइ ।।२६४।।

किन्तु जो मूर्ख राजा थे बारंबार तमककर धनुषको पकड़ते, परन्तु नहीं उठता था, तब लज्जित हो कर चले जाते। मानों वीरोंका बाहुबल पाकर धनुष और भी अधिकाधिक भारी होता जा रहा था।।

भूप-सहस-दश एकहि बारा ❀ लगे उठावन टरत न टारा
डगै न शंभु शरासन कैसे ❀ कामी बचन सती मन जैसे

दश हजार राजा एक साथ मिलकर उठाने लगे; किन्तु वह टालनेसे भी ऐसे ही नहीं टलता था जैसे, कामी पुरुष का वचन सुनकर सती स्त्रियों का मन चलायमान नहीं होता।।२।।

सब नृप भये योग उपहासी ❀ जैसे बिनु बिराग संन्यासी
कीरति विजय वीरता भारी ❀ चले चाप कर सरबस हारी

तब सभी राजा निन्दाके ऐसे योग्य हो गए, जैसे बिना वैराग्यके संन्यासी हो जावे।। वे अपनी कीर्ति, विजय और वीरता को धनुष के आगे व्यर्थ ही हारकर चल दिये।।४।।

श्रीहत भये हारि हिय राजा ❀ बैठे निज निज जाइ समाजा
नृपन्ह विलोकि जनक अकुलाने ❀ बोले बचन रोषु जनु साने

सब राजा अपने हृदयमें हार मानकर प्रभात्रहीन हो, अपने२ समाजमें जाकर बैठ गए। तब राजाओंको ऐसे देखकर जनकजी व्याकुल हो गए और मानों क्रोधसे युक्त हो ऐसी वाणी बोले।।

दीप दीप के भूपति नाना ❀ आए सुनि हम जो प्रण ठाना
देव दनुज धरि मनुज शरीरा ❀ विपुल वीर आए रणधीरा

हमने जो प्रण ठाना था उसे सुनकर द्वीप-द्वीपके अनेक राजा आए हुए हैं। जिनमें देवता और राक्षस अनेक वीर और रणधीर राजा मनुष्य शरीर धारण कर आए हुए हैं।।

दोहा—कुँवरि मनोहरि विजय बड़ि, कीरति अति कमनीय।
पावनहार विरंचि जनु, रचेउ न धनु दमनीय।।२६५।।

(फिर) सीता मनोहर हैं और उसको विजय करने की बात अत्यन्त महान् है और जिसकी कीर्ति भी बहुत चाहने योग्य है। परन्तु क्या इसको प्राप्त करनेवाला कोई भी ऐसा पुरुष ब्रह्माने नहीं बनाया जो इस धनुष को तोड़ दे ?।।२६५।।

कहहु काहि यह लाभ न भावा ❀ काहु न शंकर चाप चढ़ावा
रहा चढ़ाउब तोरब भाई ❀ तिल भरि भूमि न सकेउ छुड़ाई

सो कहो, यह लाभ किसको अच्छा नहीं लगता, परन्तु किसीने भी शिवजीके धनुष को नहीं चढ़ाया। हे भाइयों! चढ़ाना और तोड़ना तो दूर रहा, कोई तिलभर भी भूमि न छुड़ा सका।।

अब जनि कोउ माखै भट मानी ❀ वीर विहीन मही मैं जानी
तजहु आस निज निज गृह जाहू ❀ लिखा न विधि वैदेहि विवाहू

अब कोई योद्धा अपने मनमें अमर्ष न माने, मैंने जान लिया कि पृथ्वी वीरों से विहीन है। अब आपलोग आशा छोड़ अपने २ घर जाइये, ब्रह्माजीने जानकीका विवाह ही नहीं लिखा है।।

सुकृत जाइ जौं प्रण परिहरऊँ ❀ कुँवरि कुँवारि रहै का करऊँ
जो जनतेउँ बिनु भट भुवि भाई ❀ तौ प्रण करि करतेउँ न हँसाई

प्रण त्यागके दोषसे पुण्यक्षीण हो जायगा, इससे यदि जानकी क्वाँरी ही रहे तो मैं क्या करूँ? हे भाइयो! यदि मैं पहले जानता कि पृथ्वी वीर-विहीन है तो, मैं प्रण करके अपनी हँसी न कराता ॥

जनक बचन सुनि सब नर नारी ❀ देखि जानकिहिं भये दुखारी
माषे लषन कुटिल भइ भौंहैं ❀ रदपट फरकत नयन रिसौहैं

राजा जनककी ऐसी वाणी सुन और जानकीकी ओर देखकर सब स्त्री-पुरुष दुःखी हुए। परन्तु लक्ष्मणजी क्रोधित हो गए, उनकी भौंहें चढ़ गईं; होठ फड़कने लगे और नेत्रोंमें क्रोध छा गया ॥

दोहा—कहि न सकत रघुबीर डर, लगे बचन जनु बाण।
नाइ राम पद कमल शिर, बोले गिरा प्रमाण ॥२६६॥

श्रीरामचन्द्रजीके भयसे वे कुछ कह नहीं सके, परन्तु राजा जनककी बातें उन्हें बाण के समान लगीं। तब श्रीरामचन्द्रजीके चरणों में शिर नवाकर प्रणाम कर बोले ॥ २६६ ॥

रघुबंसिन्ह महँ जहँ कोउ होई ❀ तेहि समाज अस कहइ न कोई
कही जनक जस अनुचित बानी ❀ विद्यमान रघुकुल मणि जानी

रघुवंशियोंमें जहाँ भी कोई होगा उस समाज में कोई ऐसी बात न कहेगा। रघुकुलके शिरोमणि श्रीरामचन्द्रजीको विद्यमान जानते हुए भी, जनकने जैसी अनुचित बात कही है ॥

सुनहु भानु—कुल—पंकज भानू ❀ कहौं स्वभाव न कछु अभिमानू
जौं राउर अनुशासन पाऊँ ❀ कन्दुक इव ब्रह्माण्ड उठाऊँ

हे सूर्यवंशरूपी कमलके सूर्य! मैं कुछ भी अभिमान न रखते हुए, अपना स्वभाव कहता हूँ कि—यदि आपकी आज्ञा पाऊँ तो, (यह धनुष तो क्या है) ब्रह्माडको भी गेंदके समान उठा लूं ॥

काँचे घट जिमि डारौं फोरी ❀ सकौं मेरु मूलक इव तोरी
तव प्रताप महिमा भगवाना ❀ का बापुरो पिनाक पुराना

और उसे कच्चे घड़ेके समान फोड़ डालूं। यही क्या! सुमेरु पर्वतको भी मूलीके समान तोड डालूं। हे प्रभो! आपकी महिमाके प्रतापसे यह विचारा जीर्ण धनुष तो क्या चीज है?॥

नाथ जानि अस आयसु होऊ ❀ कौतुक करौं विलोकिय सोऊ
कमलनाल जिमि चाप चढ़ावौं ❀ सत योजन प्रमाण लै धावौं

हे नाथ! ऐसा जानकर आज्ञा मिले, फिर देखिए कि मैं क्या कौतुक करता हूँ। इसको मैं कमलदण्डके समान उठाकर चढ़ा दूं, और सौ योजन तक इसे लिये हुए दौड़ा चला जाऊँगा ॥

दोहा—तोरौं छत्रक दंड जिमि, तव प्रताप बल नाथ।
जौं न करौं प्रभु-पद-शपथ, पुनि न धरौं धनु हाथ ॥२६७॥

हे नाथ! आपके प्रताप बलसे मैं इसे बरसाती छत्ते (कुकुरमुत्ते) के दण्डके समान तोड़ दूं। प्रभुकी

शपथ खाकर कहता हूँ, यदि मैं ऐसा न कर सकूँ तो फिर हाथमें धनुषबाण नहीं लूँगा ॥२६७॥

लषण सकोप बचन जब बोले ❀ डगमगानि महि दिग्गज डोले
सकल लोक सब भूप डराने ❀ सिय हिय हर्ष जनक सकुचाने

जब श्रीलक्ष्मणजी क्रोधसे बोले, तब पृथ्वी डगमगाने लगी और दिशाओंके हाथी हिल गये। सारी जनता, समस्त राजा डर गए, सीताजी के मनमें प्रसन्नता हुई और जनकजी सकुचा गये ॥

गुरु रघुपति सब मुनि मन माहीं ❀ मुदित भये पुनि पुनि पुलकाहीं
सैनहिं रघुपति लषण निवारे ❀ प्रेम समेत निकट बैठारे

साथ ही गुरु विश्वामित्र और श्रीरामचन्द्रजी तथा समस्त मुनिजन मनही मन बारम्बार आनन्दित हुए। तब श्रीरामचन्द्रजी ने संकेतसे लक्ष्मणजीको प्रेमपूर्वक अपने निकट बिठा लिये ॥

विश्वामित्र समय शुभ जानी ❀ बोले अति सनेहमय बानी
उठहु राम भंजहु भव चापू ❀ मेटहु तात जनक परितापू

तब विश्वामित्रजी उस समय शुभ लग्न जानकर अत्यन्त स्नेह युक्त वाणीमें बोले। हे रामचन्द्र ! अब उठो और धनुषको तोड़कर, हे तात! राजा जनकके हृदयका संताप दूर करो॥

सुनि गुरु बचन चरण शिर नावा ❀ हर्ष विषाद न कछु उर आवा
ठाढ़ भये उठि सहज सुभाये ❀ ठवनि युवा मृगराज लजाये

तब गुरुकी ऐसी आज्ञा सुन श्रीरामचन्द्रजी उनके चरणमें शिर नवा, हर्ष विषाद-रहित हो अपने सहज स्वभावसे उठ खड़े हुए कि, जिस ढंगको देखकर युवासिंह भी लज्जित हो जाय ॥

दोहा—उदित उदय-गिरि-मंचपर, रघुबर—बाल--पतंग ।
विकसे संत सरोज सब, हर्षे लोचन भृंग ॥२६८॥

जब मंचरूपी उदयाचल पर्वत पर श्रीरामचन्द्रजी बालसूर्यके रूपमें उदय हुए। तब समस्त संतरूपी कमल आनन्दसे खिल गये और उनके नेत्ररूपी भौंरे प्रसन्न हो गये ॥ २६८ ॥

नृपति केरि आशा-निशि नाशी ❀ बचन-नखत अवलीन प्रकाशी
मानी महिप कुमुद सकुचाने ❀ कपटी भूप उलूक लुकाने

राजाओंकी आशा रूपी रात्रिका नाश हो गया, वे अपने वचन रूपी नक्षत्रों द्वारा जुगनूकी तरह प्रकाशित हुये। अभिमानी राजा तो ऐसे संकुचित हुए, जैसे सूर्योदयको देख रात्रि-विकासी कमल सकुचा जाते हैं और कपटी राजा भी इसी प्रकार उल्लूके समान छिप गये ॥

भये विशोक कोक मुनि देवा ❀ वर्षहिं सुमन जनावहिं सेवा
गुरुपद वन्दि सहित अनुरागा ❀ राम मुनिन्ह सन आयसु माँगा

इस प्रकार चक्रवाकरूपी मुनि और देवताओं की चिन्ता जाती रही, वे भगवान्‌पर फूल बरसाने लगे। तब श्रीगुरुदेवजीके चरणों की वन्दनाकर रामजीने मुनियोंसे आज्ञा माँगी ॥

सहजहिं चले सकल जग स्वामी ❀ मत्त-मंजु वर कुंजर गामी
चलत राम सब पुर नर नारी ❀ पुलक पूरि तन भए सुखारी

पश्चात् सारे संसारके स्वामी अपने उसी ढङ्गसे चले, जैसे श्रेष्ठ और सुन्दर हाथी गमन करता हो। श्रीरामचन्द्रजीके चलते ही नगरके सब स्त्री-पुरुष सुखी हो गये ॥६॥

बंदि पितर सुर सुकृत सँभारे ❀ जो कछु पुण्य प्रभाव हमारे
तो शिवधनु मृणाल की नाईं ❀ तोरहिं राम गनेश गोसाईं

पितरों और देवताओंके आगे अपने पुण्य को सँभालने लगे कि, यदि हमारे पुण्य का कुछ प्रभाव हो तो, हे गनेश गुसाईं ! इस शिव धनुष को श्रीरामचन्द्रजी अवश्य तोड़ डालें ॥

दोहा—रामहिं प्रेम समेत लखि, सखिन समीप बोलाइ ।
सीता मातु सनेह बस, बचन कहहिं बिलखाइ ॥२६९॥

श्रीरामचन्द्रजीको प्रेमपूर्वक दृष्टिसे देख और अपनी सखियों को समीप बुलाकर। सीताजी की माता स्नेहके वश हो सखियोंसे बिलखकर यह बचन कहने लगीं ॥२६९॥

सखि सब कौतुक देखन हारे ❀ जेउ कहावत हितू हमारे
कोउ न बुझाइ कहइ नृप पाहीं ❀ ये बालक असि हठ भल नाहीं

हे सखी, इतने दर्शक यहाँ बैठे हैं और जो हमारे हितेच्छू ही कहलाते हैं। इनमें-से कोई भी तो राजाके पास जाकर नहीं कहता कि, ये बालक ऐसे हठ करनेके योग्य नहीं हैं ॥

रावण बाण छुआ नहिं चापा ❀ हारे सकल भूप करि दापा
सो धनु राजकुँवर कर देहीं ❀ बाल मराल कि मंदर लेहीं

जब रावण और बाणासुर भी इसे नहीं छू सके और समस्त राजा भी हार मान गए। वह धनुष आप इन राजकुमारोंके हाथमें देना चाहते हैं, भला कहीं बाल हंस भी मंदराचल को उठा सकता है?

भूप सयानप सकल सिरानी ❀ सखि विधिगति कछु जाइ न जानी
बोली चतुर सखी मृदु बानी ❀ तेजवन्त लघु गनिय न रानी

मालूम पड़ता है कि, राजाकी समस्त चतुराई समाप्त हो गयी; हे सखी ! ब्रह्मा की गति कुछ जानी नहीं जाती। तब एक चतुर सखी बोली कि, हे महारानीजी ! तेजवंत को आप छोटा न गिनिए ॥

कहँ कुंभज कहँ सिन्धु अपारा ❀ सोखेउ सुयश सकल संसारा
रवि मण्डल देखत लघु लागा ❀ उदय तासु त्रिभुवन तम भागा

कहाँ कुंभज ऋषि और कहाँ अपार समुद्र कि, जिसे उन्होंने सोख लिया और जिनका सुयश संसारमें विदित है। सूर्य छोटा है, परन्तु उदय होते ही तीनों लोकों का अंधकार भाग जाता है ॥

दोहा—मंत्र परम लघु जासु वश, विधि हरिहर सुर सर्व ।
महामत्त गजराज कहँ, वशकर अंकुश खर्व ॥२७०॥

मन्त्र बहुत छोटा होता है, परन्तु ब्रह्मा, विष्णु, महेश और समस्त देवता उसके वशमें रहते हैं॥ एक छोटा-सा अंकुश बड़ेसे-बड़े मतवाले हाथी को भी अपने वशमें कर लेता है ॥ २७० ॥

काम कुसुम धनु-शायक लीन्हें ❀ सकल भुवन अपने वश कीन्हें
देवि तजिय संशय अस जानी ❀ भंजहिं धनुष राम सुनु रानी

कामदेव फूलों का ही बाण लिए रहता है, परन्तु सारे भूमण्डल को वशमें कर लिया ।। हे देवि ! ऐसा जानकर शंका छोड़ दो, हे रानीजी ! सुनिए, श्रीरामचन्द्रजी धनुषको तोड़ेंगे ।।

सखी बचन सुनि भइ परतीती ❁ मिटा बिषाद बढ़ी अति प्रीती
तब रामहिं बिलोकि बैदेही ❁ सभय हृदय बिनवति जेहि तेही

सखीकी बात सुनकर रानीको विश्वास हुआ, सारा शोक मिटकर श्रीरामचन्द्रजीके प्रति अधिक प्रेम बढ़ा । श्रीरामचन्द्रजीकी ओर देख सीताजी मनमें जिस-तिसकी वन्दना करने लगीं ।।

मनही मन मनाव अकुलानी ❁ होउ प्रसन्न महेश भवानी
करहु सफल आपनि सेवकाई ❁ करि हित हरहु चाप गरुआई

और मन ही मन व्याकुल होकर कहने लगीं कि, हे महादेव और पार्वतीजी ! आप प्रसन्न हो जाइए । मेरी की हुई सेवाओं को सुफलकर धनुष की गुरुता को हरण कर लीजिए ।।

गणनायक बरदायक देवा ❁ आजु लगे कीन्हेउँ तव सेवा
बार बार बिनती सुनि मोरी ❁ करहु चाप गरुता अति थोरी

हे गणेशजी ! आप वरदानी देवता हैं, मैंने आज तक आपकी सेवा की है । सो मेरी बार-बार विनती को सुनकर धनुष की गंभीरता को हरकर बहुत थोड़ा कर दीजिए ।।

दोहा—देखि देखि रघुबीर तन, सुर मनाव धरि धीर ।
भरे बिलोचन प्रेमजल, पुलकावली शरीर ।।२७१।।

इस प्रकार रामचन्द्रजीके शरीरकी ओर देख-देखकर धैर्य धारणकर देवताओंको मनाती हुई अपने विशाल नेत्रोंमें जल भरे हुये सीताजी शरीरसे पुलकित हो गयीं ।। २७१ ।।

नीके निरखि नयन भरि शोभा ❁ पितु पन समुझि बहुरि मन छोभा
अहह तात दारुन हठ ठानी ❁ समुझत नहिं कछु लाभ न हानी

और भली भाँति रामजीके शरीरकी शोभाको देखती हुई, पिताके प्रणका स्मरणकर दुखित हो कहतीं । हा ! पिताजीने यह दारुण हठ ठान लिया और कुछ लाभ-हानि नहीं समझा ।।

सचिव सभय सिख देइ न कोई ❁ बुध समाज बड़ अनुचित होई
कहँ धनु कुलिशहुँ चाहि कठोरा ❁ कहँ श्यामल मृदुगात किशोरा

कोई मंत्री भयके वश नहीं समझा रहा है, बुद्धिमानों के समाज में यह बड़ा अनुचित हो रहा है । कहाँ वज्रसे कड़ा धनुष और कहाँ यह श्यामल और कोमल किशोरावस्था का शरीर ।।

बिधि केहि भाँति धरौं उर धीरा ❁ सिरस सुमन कत बेधिय हीरा
सकल सभा कै मति भइ भोरी ❁ अब मोहिं शम्भुचाप गति तोरी

हे ब्रह्मा ! मनमें किस प्रकार धैर्य धरूँ, भला सिरस का फूल कहीं हीरे को वेध सकता है ? सभा की बुद्धि भ्रममें पड़ी है, हे शिवजीके धनुष ! अब मुझे तेरा ही भरोसा है ।।

निज जड़ता लोगन पर डारी ❁ होहु हरुअ रघुपतिहिं निहारी
अति परिताप सीय मन माहीं ❁ लवनिमेष युग सत सम जाहीं

अब अपनी जड़ता अन्य लोगों पर छोड़ श्रीरामचन्द्रजी को देखकर हे धनुष ! तू हल्का हो जा । सीताजी को बहुत दुःख हुआ, एक-एक पल सैंकड़ों युगके समान बीतने लगा ।।

दोहा–प्रभुहिं चितव पुनि चितव महि, राजत लोचन लोल।
खेलत मनसिज मीनयुग, जनु विधुमंडल डोल ॥२७२॥

वे कभी प्रभु की ओर तथा कभी पृथ्वी की ओर देखने लगती थीं । उनके सुन्दर नेत्र ऐसे चंचल हो गए मानो कामदेव रूपी मछलियाँ चन्द्रमण्डलमें हिल रही हों ।। २७२ ।।

गिरा अलिनि मुखपंकज रोकी ❀ प्रगट न लाज निशा अवलोकी
लोचन जल रह लोचन कोना ❀ जैसे परम कृपिण कर सोना

सीताजी अपनी वाणी रूपी भ्रमरी को कमलवत् मुखमें ही रोक लेती हैं और लज्जा रूपी रात्रि को देखकर उसे प्रकट नहीं होने देतीं ।।१।। नेत्रों का जल भी नेत्रों के ही कोनेमें ऐसे ही छिपा रह जाता है, जैसे अत्यन्त कृपण का सोना छिपा रहता है ।।२।।

सकुचीं व्याकुलता बड़ि जानी ❀ धरि धीरज प्रतीति उर आनी
तन मन वचन मोर प्रण साँचा ❀ रघुपति पद सरोज मन राँचा

तब अधिक व्यग्रता जानकर सकुचित हो गईं और मनमें धैर्य धारण कर यह कहने लगीं कि, यदि मेरा प्रण सच्चा है और मन केवल श्रीरामचन्द्रजीके ही चरणों में लगा हुआ है ।।४।।

तो भगवान सकल उर वासी ❀ करिहहिं मोहिं रघुपतिकी दासी
जेहिके जेहिपर सत्य सनेहू ❀ सो तेहि मिलत न कछु संदेहू

तो सबके घट-घटमें बास करनेवाले ईश्वर मुझे श्रीरामचन्द्रजीकी दासी बनावेंगे । क्योंकि जिसका जिसपर सच्चा स्नेह होता है, वह उसे मिलता ही है, इसमें कुछ सन्देह नहीं है ।।६।।

प्रभु तन चितइ प्रेम प्रण ठाना ❀ कृपानिधान राम सब जाना
सियहिं बिलोकि तकेउ धनु कैसे ❀ चितव गरुड़ लगु ब्यालहिं जैसे

प्रभु की ओर देखकर अपना वह प्रेम-प्रण निश्चित किया, जिसे श्रीरामचन्द्रजी ने जान लिया । तब सीताजी की ओर देखकर उन्होंने धनुषकी ओर कैसे देखा ? कि जैसे गरुड़ छोटे सर्पको देखता हो ।।

दोहा–लषण लखेउ रघुवंशमणि, ताकेउ हर कोदंड।
पुलकि गात बोले वचन, चरण चापि ब्रह्मण्ड ॥२७३॥

इधर लक्ष्मणजीने देखा कि, अब श्रीरामचन्द्रजी महादेवजीके धनुषको तोड़ने जा रहे हैं, तब वे अपने चरणसे पृथ्वी सहित समस्त ब्रह्माण्डको दबाकर, पुलकित हो यह वचन बोले ।।२७३।।

दिशिकुञ्जरहु कमठ अहि कोला ❀ धरहु धरणि धरि धीर न डोला
राम चहहिं शंकर धनु तोरा ❀ होहु सजग सुनि आयसु मोरा

हे दिशाओंके दिग्गज ! कच्छप और शेषनागजी ! धैर्यपूर्वक पृथ्वीको धरे रहना, हिलने न पावे। अब श्रीरामचन्द्रजी शिव-धनुषको तोड़ना चाहते हैं, मेरी आज्ञा सुनकर सजग हो जाओ ।।

चाप समीप राम जब आए ❀ नर नारिन्ह सुर सुकृत मनाए
सब कर संशय अरु अज्ञानू ❀ मंद महीपन कर अभिमानू

जब श्रीरामचन्द्रजी धनुषके समीप आए तब सब स्त्री-पुरुषोंने अपने पुण्य युक्त देवताओं को मनाया ॥३॥ सबका सन्देह और अज्ञान तथा अज्ञानी राजाओंका अभिमान ॥४॥

भृगुपति केरि गर्व गरुआई ❀ सुर मुनिवरन केरि कदराई
सियकर सोच जनक पछितावा ❀ रानिन्ह कर दारुन दुख दावा

परशुरामका गुरुता पूर्ण घमंड, और देवताओं तथा मुनियों का कायरपन ॥ ५ ॥ फिर सीताजीका शोच, राजा जनकका पछतावा तथा रानियोंकी कठिन दुःखाग्नि ॥ ६ ॥

शंभु चाप बड़ बोहित पाई ❀ चढ़े जाइ सब संग बनाई
राम बाहुबल सिन्धु अपारू ❀ चाहत पार न कोउ कनहारू

यह सब शिव धनुषरूपी बड़े जहाजको पाकर समूह बना उसपर जा चढ़े और श्रीरामजी का बाहुबल जो अपार समुद्र है, उससे पार होना चाहते हैं, परन्तु कोई मल्लाह नहीं है ॥८॥

दोहा–राम बिलोके लोग सब, चित्र लिखेसे देखि।
चितई सीय कृपायतन, जानी विकल विशेखि ॥२७४॥

श्रीरामचन्द्रजीने देखा तो सब लोग ऐसे दिखाई पड़े मानों कागजपर लिखे चित्र हों, तब उन कृपानिधानने सीताजीकी ओर देखा तो ज्ञात हुआ कि वह बहुत विकल हैं ॥२७४॥

देखी विकल विपुल बैदेही ❀ निमिष बिहात कलप सम तेही
तृषित बारि बिनु जो तनु त्यागा ❀ मुए करै का सुधा तड़ागा

उन्होंने देखा कि, सीताजी अत्यन्त विकल हैं और उनका एक-एक पल कल्पके समान बीत रहा है ॥१॥ तब श्रीरामचन्द्रजीने सोचा, यदि जलके बिना कोई शरीर छोड़ देगा, तो मरने पर अमृतका सरोवर भी क्या कर सकता है ? ॥ २ ॥

का वर्षा जब कृषी सुखाने ❀ समय चूक पुनि का पछिताने
अस जिय जानि जानकी देखी ❀ प्रभु पुलके लखि प्रीति विशेषी

जब खेती सूख गई तो वर्षासे क्या ? समय पर चूक हो तो पछतानेसे क्या ? ऐसा मनमें जानकर जब प्रभुजी सीताजीको देखे तो विशेष प्रीतिको देख शरीर पुलकित हो गया ॥४॥

गुरुहिं प्रणाम मनहिं मन कीन्हा ❀ अति लाघव उठाइ धनु लीन्हा
दमकेउ दामिनि जिमिघन लयऊ ❀ पुनि धनु नभ मंडल सम भयऊ

तब गुरुको मनही मनमें प्रणाम कर, शीघ्रतासे धनुषको उठा लिया जिसमें बिजली-सी चमक हुई और जब झुकाया तो मानों वह धनुष आकाश मण्डलके समान शोभित हुआ ॥३॥

लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़े ❀ काहु न लखा देखि सब ठाढ़े

तेहि क्षण मध्य राम धनु तोरा ❀ भरेउ भुवन धुनि घोर कठोरा

उसे उठाकर चढ़ाते और खींचते किसीने नहीं देखा, सब खड़े रह गये ।।७।। उसी क्षण श्रीरामचन्द्रजीने धनुषको तोड़ दिया, जिसकी कठोर ध्वनि भूमण्डलमें भर गई ।।८।।

छंद--भरि भुवन घोर कठोर रव रविबाजि तजि मारग चले।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहिकोल कूरम खलभले ।।
सुर असुर मुनि कर कान दीन्हे सकल विकल विचारहीं।
कोदंड भंजेउ राम तुलसी जयति वचन उचारहीं ।। ३४ ।।

इस प्रकार जब धनुष टूटनेका वह घोर शब्द चारों ओर भर गया, तब उसके शब्दको सुनकर सूर्यके घोड़े अपना मार्ग छोड़ चले । दिशा के हाथी चिग्घाड़ने लगे, पृथ्वी डोल गई, कच्छप, शेषनाग और वाराह भी आपसमें कसमसा गये ।। देवता, मुनि तथा असुरोंने कानोंमें उँगली डाल ली और सब व्याकुल होकर यह विचारने लगे कि, यह क्या हो गया ? इस प्रकार जब श्रीरामचन्द्रजीने धनुषको तोड़ा, तब सब लोग उनकी जय-जयकार करने लगे ।।३४।।

सोरठा--शंकर चाप जहाज, सागर रघुबर बाहुबल।
बूड़े सकल समाज, चढ़े जे प्रथमहि मोहवश ।।३६।।

इस प्रकार श्रीरामचन्द्रजीके उस बाहुबलरूपी सागरमें जो लोग श्रीशिवजीके धनुषरूपी जहाजपर मोहके वशीभूत होकर चढ़े थे, वे सबके सब अपने समाज सहित डूब गए ।।३६।।

प्रभु दोउ चाप खंड महि डारे ❀ देखि लोग सब भये सुखारे
कौशिक रूप पयोनिधि पावन ❀ प्रेम वारि अवगाह सुहावन

प्रभुने धनुषके दो टुकड़े करके पृथ्वीपर डाल दिया, सब लोग देखकर निहाल हो गये । तब कौशिकरूपी क्षीरसागरके प्रेमरूपी अथाह सुहावने जलमें सब लोग सुखी हो गये ।।२।।

राम रूप राकेश निहारी ❀ बढ़त बीचि पुलकावलि भारी
बाजत नभ गहगहे निशाना ❀ देव बधू नाचहिं करि गाना

श्रीरामचन्द्रजीके स्वरूप रूपीपूर्ण चन्द्रमाको देखकर सबका आनन्द उत्तरोत्तर बढ़ने लगा ।। आकाशमें गहगहे नगाड़े बजने लगे तथा देवताओंकी स्त्रियाँ गानकर नाचने लगीं ।।४।।

ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीशा ❀ प्रभुहिं प्रशंसहिं देहिं अशीशा
वर्षहिं सुमन रंग बहु माला ❀ गावहिं किन्नर गीत रसाला

ब्रह्मादिक देवता और सिद्ध मुनीश्वर प्रभु (श्रीरामचन्द्र) की प्रशंसा करके आशीर्वाद देने लगे । अनेक रंगके पुष्प तथा मालायें बरसाने और किन्नर रसीले गीत गाने लगे ।।६।।

रही भुवन भरि जय-जय बानी ❀ धनुष भंग धुनि जात न जानी
मुदित कहहिं जहँ तहँ नर-नारी ❀ भंजेउ राम शंभु धनु भारी

उनकी जय-जय वाणी समस्त पृथ्वीपर गूँज उठी, जिससे धनुर्भंगकी ध्वनि जानी न जाती। जहाँ-तहाँ स्त्री-पुरुष प्रसन्न होकर यही कहते थे कि, रामजीने शिवजीके भारी धनुषको तोड़ा है॥

दोहा--बंदी मागध सूतगण, विरद वर्दहिं मतिधीर।
करहिं निछावर लोग सब, हय गज धन मणि चीर॥२७५॥

धीर बुद्धिवाले बन्दीजन तथा भाट पूर्व-पुरुषोंका यशोगान करने और सब लोग जिनके पास जो था, हाथी, घोड़ा, धन, मणि और वस्त्र निछावर करने लगे॥२७५॥

झाँझ मृदंग शंख शहनाई ❀ भेरि ढोल दुन्दुभी सुहाई
बाजहिं बहु बाजने सुहाये ❀ जहँ तहँ युवतिन मंगल गाये

झाँझ, मृदंग, शंख, शहनाई, भेरी, ढोल और सुहावनी दुन्दुभी बजने लगी॥१॥ अनेक प्रकारके सुन्दर बाजे बजने लगे और जहाँ-तहाँ युवती स्त्रियाँ मंगल गीत गाने लगीं॥२॥

सखिन सहित हरषीं अति रानी ❀ सूखत धान परा जनु पानी
जनक लहेउ सुख शोच बिहाई ❀ पैरत थके थाह जनु पाई

रानी सखियों सहित अत्यन्त प्रसन्न हो गईं, मानों सूखे धानपर पानी बरस गया हो। राजा जनक चिन्ता त्यागकर ऐसे सुखी हुए मानों, किसी थके हुए तैराकको थाह मिल गई हो॥४॥

श्रीहत भए भूप धनु टूटे ❀ जैसे दिवस दीप छबि छूटे
सीय सुखहिं वरणिय केहि भाँती ❀ जनु चातकी पाइ जल स्वाती

धनुष टूट जानेपर सब राजा ऐसे तेजहीन होगए जैसे, सूर्योदयसे दीपककी शोभा नष्ट हो जावे। सीताजीके सुखका तो किसप्रकार वर्णन करूँ, मानों पपीहेको स्वातीका जल प्राप्त हो गया हो।

रामहिं लषण विलोकत कैसे ❀ शशिहिं चकोर-किशोरक जैसे
शतानन्द तब आयसु दीन्हा ❀ सीता गमन राम पहँ कीन्हा

श्रीरामचन्द्रजीको लक्ष्मणजी कैसे देख रहे हैं, जैसे चकोरका बच्चा चन्द्रमाको देखता हो। तब पुरोहित शतानन्दजीने ज्यों ही आज्ञा दी, सीता जी श्रीरामचन्द्रजीके पास चल पड़ीं॥

दोहा--संग सखी सुन्दर चतुर, गावहिं मंगलचार।
गवनी बाल-मराल गति, सुखमा अंग अपार॥२७६॥

उनके साथमें सुन्दर सखियाँ मंगल गाती हुई चलीं और सीताजी ऐसे चलीं कि जैसे कोई हंसकी छौनी जाती हो, उनके अंगों से अपार शोभा प्रकट हो रही थी॥२७६॥

सखिन मध्य सिय सोहति कैसी ❀ छबि गण मध्य महा छबि जैसी
कर सरोज जयमाल सुहाई ❀ विश्व विजय शोभा जनु छाई

सखियोंके मध्यमें सीताजी ऐसी शोभायमान थीं जैसे, छवि समूहके मध्यमें महाशोभा विद्यमान हो। उनके हाथमें जयमाल ऐसेही शोभा दे रहा था, मानों संसार विजयकी शोभा छा रही हो॥

तन सकोच मन परम उछाहू ❀ गूढ़ प्रेम लखि परै न काहू
जाइ समीप राम छबि देखी ❀ रहि जनु कुँवरि चित्र अवरेखी

शरीरमें संकोच किन्तु मनमें बड़ा उत्साह था, भीतरी प्रेम किसीको न दिखा। निकट पहुँच-कर रामकी शोभाको देखा तो, मानों जानकीजी चित्र लिखितके समान स्थिर हो गयीं ॥

चतुर सखी लखि कहा बुझाई ❀ पहिरावहु जयमाल सुहाई
सुनत युगल कर माल उठाई ❀ प्रेम विवश पहिराइ न जाई

तव एक बुद्धिमती सखीने समझाकर कहा—इनको सुन्दर जयमाल पहना दो। यह सुन दोनों हाथोंसे जयमाल उठाया तो सही, किन्तु स्नेहके वश पहनाया नहीं जाता था ॥

सोहत जनु जुग जलज सनाला ❀ शशिहि सभीत देत जयमाला
गावहिं छबि अवलोकि सहेली ❀ सिय जयमाल राम उर मेली

उस समय ऐसी शोभा हुई कि, मानों डंडीयुक्त दो कमल चन्द्रमाको संकोचके साथ विजयमाल देते हों॥ उस शोभाको देखकर सखियाँ गाने लगीं, इसी बीच सीताजीने जयमाल पहना दिया ॥

सोरठा—रघुबर उर जयमाल, देखि देव वरषहिं सुमन।
सकुचे सकल भुआल, जनु विलोकि रवि कुमुदगण ॥३७॥

श्रीरामचन्द्रजीके हृदयपर जयमाल देख देवताओंने फूल बरसाये। जिसे देख समस्त राजा ऐसे संकुचित हो गए जैसे, रात्रिविकासी कमल सूर्यको देखकर संकुचित हो जाते हैं ॥३७॥

पुर अरु ब्योम बाजने बाजे ❀ खल भये मलिन साधु सब गाजे
सुर किन्नर नर नाग मुनीशा ❀ जय जय कहि सब देहिं अशीशा

नगर और आकाशमें बाजे बजने लगे, दुष्ट लोग मलिन हो गए और साधुजनोंको प्रसन्नता प्राप्त हुई। देवता, किन्नर, मनुष्य, नाग और मुनीश्वर सब जय-जय कहकर आशीर्वाद देने लगे ॥

नाचहिं गावहिं बिबुध-बधूटी ❀ बार बार कुसुमावलि छूटी
जहँ तहँ विप्र वेद धुनि करहीं ❀ बन्दी बिरुदावलि उच्चरहीं

देवताओंकी स्त्रियाँ नाचने-गाने और बारम्बार फूलोंकी लड़ियाँ बरसाने लगीं। ब्राह्मण लोग जहाँ-तहाँ वेद-ध्वनि करने और बन्दीजन राजा जनकका यशोगान करने लगे ॥४॥

महि पाताल नाक यश व्यापा ❀ राम बरीं सिय भंजेउ चापा
करहिं आरती पुर नर नारी ❀ देहिं निछावर बित्त बिसारी

फिर तो श्रीरामचन्द्रजीने धनुषको तोड़कर सीताको वर लिया, यह यश चारों ओर पाताल और पृथ्वीतल पर व्याप्त हो गया ॥५॥ नगरके स्त्री-पुरुष आरती करने और धनका मोह छोड़कर न्योछावर करने लगे ॥६॥

सोहति सीय राम की जोरी ❀ छबि शृंगार मनहुँ इक ठोरी
सखी कहहिं प्रभुपद गहु सीता ❀ करति न चरण परस अति भीता

उस समय सीता-रामकी जोड़ी ऐसी शोभायमान हुई जैसे, शोभा और शृंगार एक साथ हों ॥७॥ सखियोंने कहा हे सीते ! अब प्रभुका चरण पकड़ो, परन्तु अत्यन्त भयके कारण वह उनके चरणोंका स्पर्श नहीं करतीं थीं ॥८॥

दोहा—गौतम तिय गति सुरति करि, नहिं परसति पग पानि।
मन हरषे रघुवंशमनि, प्रीति अलौकिक जानि ॥२७७॥

अहिल्याकी दशाका ख्याल करके, सीताजी अपने हाथोंसे श्रीरामचन्द्रजीके चरणोंका स्पर्श नहीं करतीं। उनकी इस अलौकिक प्रीतिको जानकर रामजी हर्षित हुए ॥२७७॥

तब सिय देखि भूप अभिलाषे ❀ कूर कपूत मूढ़ मन माषे
उठि-उठि पहिरि सनाह अभागे ❀ जहँ तहँ गाल बजावन लागे

तब सीताजीको देखकर राजा लोग ललचाने लगे, वे मूर्ख मनही मन कुढ़ने लगे ॥१॥ और अभागे उठ-उठकर अपने बख्तर पहनकर जहाँ-तहाँ गाल बजाने लगे ॥२॥

लेहु छुड़ाय सीय कह कोऊ ❀ धरि बाँधहु नृप बालक दोऊ
तोरे धनुष चाह नहिं सरई ❀ जीवत हमहिं कुँअरि को बरई

कोई कहता, सीताको छीन लो और दोनों राजकुमारोंको पकड़कर बाँध लो ॥३॥ धनुषके तोड़नेसे चाहकी पूर्ति नहीं होगी, हमारे जीतेजी राजकुमारीको कौन वर सकता है ? ॥४॥

जौं विदेह कछु करइ सहाई ❀ जीतहु समर सहित दोउ भाई
साधु भूप बोले सुचि बानी ❀ राज समाजहिं लाज लजानी

यदि राजा जनक कुछ सहायता करें, तो दोनों भाइयों सहित युद्धमें इन्हें भी जीत लो। यह सुन सज्जन राजाओंने कहा, ऐसे राजसमाजको देखकर तो लाज भी लजाती है ॥

बल प्रताप वीरता बड़ाई ❀ नाक पिनाकहि संग सिधाई
सोइ शूरता कि अब कहुँ पाई ❀ असबुधि तो विधि मुँह मसिलाई

तुम्हारा बल, प्रताप, वीरता, बड़ाई तो धनुषके साथ ही चली गई। वही पराक्रम है या और कहींसे पा गए, यदि यही बुद्धि है तो जानो ब्रह्माने मुँहमें कालिख ही लगा दिया है ॥

दोहा—देखहु रामहिं नयन भरि, तजि इर्षा मद मोहु।
लषन रोष पावक प्रबल, जानि सलभ जनि होहु ॥२७८॥

रे मूर्खो ! ईर्ष्या और मद-मोहको त्यागकर श्रीरामचन्द्रजीको नेत्र भरकर देख लो। नहीं तो लक्ष्मणजीका क्रोध प्रचण्ड अग्निके समान है, जान-बूझकर पतंग क्यों होते हो ? ॥२७८॥

बैनतेय बलि जिमि चह कागू ❀ जिमि ससि चहै नाग अरि भागू
जिमि चह कुशल अकारण कोही ❀ सुख संपदा चहै शिव-द्रोही

जैसे गरुड़ के भाग को कौवा खाना चाहे और जैसे सिंह के भाग को खरगोश लेना चाहे ॥ जैसे बिना कारण ही शिवजी का शत्रु सुख और सम्पदा को प्राप्त करना चाहे ॥२॥

लोभी-लोलुप कीरति चहई ❀ अकलंकता कि कामी लहई
हरिपद विमुख सुगति जिमि चाहा ❀ तस तुम्हार लालच नरनाहा

जैसे लोभी, लालची और परधनहारी कीर्ति को, कामी निष्कलंकता को चाहे और जैसे भगवान् से विमुख अच्छी गति चाहे, हे राजाओं! तुम्हारा लालच भी वैसा ही है ॥३॥

कोलाहल सुनि सीय सकानी ❀ सखी लिवाय गईं जहँ रानी
राम सुभाय चले गुरु पाहीं ❀ सिय सनेह वरणत मन माहीं

उस कोलाहल को सुनकर सीताजी शंकित हो गईं, तब जहाँ रानी थीं सखियाँ उन्हें वहाँ लिवा ले गईं। श्रीरामचन्द्रजी सीताजी के स्नेह को बखानते हुए गुरुजी के पास चले ॥४॥

रानिन सहित शोच वश सीया ❀ अबधौं विधिहि काह करणीया
भूप बचन सुनि इत उत तकहीं ❀ लषण राम डर बोलि न सकहीं

सीता सहित रानियाँ चिन्ता के वश हो गईं कि, देखो विधाता अब क्या करना चाहता है ? लक्ष्मणजी राजाओं के वचन सुनकर क्रुद्ध हैं, पर रामजीके भयसे कुछ बोलते नहीं ॥५॥

दोहा--अरुण नयन भृकुटी कुटिल, चितवत नृपन्ह सकोप ।
मनहुँ मत्त गजगण निरखि, सिंह किशोरहिं चोप ॥२७९॥

वे लाल-लाल नेत्र, टेढ़ी भौंहों से क्रोधयुक्त राजाओं को ऐसा देखते हैं, मानो मतवाले हाथियों को मारने के लिए कोई सिंह का बच्चा बड़े चाव से देखता हो ॥२७९॥

खरभर देखि विकल पुर नारी ❀ सब मिलि देहिं महीपन गारी
तेहि अवसर सुनि शिव धनु भंगा ❀ आये रघुकुल कमल पतंगा

ऐसी खलबली को देखकर नगर की स्त्रियाँ व्याकुल हो एक स्वरसे राजाओंको गाली देने लगीं ॥१॥ उसी समय शिवजी के धनुष को भंग हुआ जानकर परशुरामजी वहाँ आ गये ॥

देखि महीप सकल सकुचाने ❀ बाज झपट जनु लवा लुकाने
गौर शरीर भूति भलि भ्राजा ❀ भाल विशाल त्रिपुण्ड बिराजा

उनको देख समस्त राजा लोग डरकर ऐसे छिप गए, जैसे बाज को देखकर लवा पक्षी छिप जाता है ॥ ३ ॥ परशुरामजी के गोरे शरीर पर विभूति बड़ी शोभा दे रही थी और विशाल ललाट पर त्रिपुण्ड (चन्दन का खौर तिलक) शोभा दे रहा था ॥४॥

शीश जटा शशि बदन सुहावा ❀ रिसवश कछुक अरुण होइ आवा
भृकुटी कुटिल नयन रिसराते ❀ सहजहिं चितवत मनहुँ रिसाते

उनके शिर पर जटा और चन्द्रमा का-सा सुन्दर मुख क्रोध के वश कुछ लाल हो गया था ॥ ५ ॥ भौंहें टेढ़ी किए लाल नेत्रों से जिधर ही देखते बड़े क्रुद्ध ज्ञात होते थे ॥६॥

वृषभ-कंध उर बाहु विशाला ❀ चारु जनेउ माल मृगछाला
कटि मुनि बसन तूण दुइ बाँधे ❀ धनु शर कर कुठार कल काँधे

उनका बैल के समान ऊँचा कन्धा, चौड़ी छाती और लम्बी भुजायें थीं, जो सुन्दर जनेऊ पहने थे ।।७।। वे दो तरकस बाँधे तथा हाथमें धनुष-बाण और कन्धे पर फरसा रखे हुए थे ।।८।।

दोहा--शांत-वेश करनी कठिन, बरनि न जाइ स्वरूप।
धरि मुनि तनु जनु वीररस, आयेउ जहँ सब भूप ।।२८०।।

उनका ऐसा वेश जो बड़ा शान्त; किन्तु कार्य कठिन था कि, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता है । जहाँ सब राजा थे, वे वहाँ मानों वीर रस शरीर धारण किए आया हो ।।२८०।।

देखत भृगुपति वेष कराला ❀ उठे सकल भय विकल भुग्राला
पितु समेत कहि-कहि निज नामा ❀ लगे करन सब दण्ड प्रणामा

श्रीपरशुरामजी के ऐसे कठोर वेश को देखते ही, समस्त राजा भय से व्याकुल हो उठ खड़े हुए ।।१।। सब ने पिता सहित अपना-अपना नाम कहकर दण्डवत् प्रणाम किया ।।२।।

जेहि सुभाय चितवहिं हित जानी ❀ सो जानहि जनु आयु खुटानी
जनक बहोरि आइ शिर नावा ❀ सियहिं बोलाइ प्रणाम करावा

परशुरामजी जिसका स्वभावसे भी हित देखते, वह जानता मानों जीवन का अन्त आ गया । राजा जनकने भी आकर सिर झुकाया और सीताजी को बुलाकर प्रणाम कराया ।।४।।

आशिष दीन्ह सखी हरषानी ❀ निज समाज लै गईं सयानी
विश्वामित्र मिले पुनि आई ❀ पद-सरोज मेले दोउ भाई

परशुरामजी ने आशीर्वाद दिया तो सखियाँ हर्षित हो, सीताजी को अपने समाज में लिवा ले गईं ।। ५ ।। फिर विश्वामित्रजी आकर मिले और राम-लक्ष्मण दोनों भाइयों को भी उनके चरण कमलों में झुका दिया ।। ६ ।।

राम लषन दशरथ के ढोटा ❀ दीन्ह अशीष जानि भल जोटा
रामहिं चितइ रहे थकि लोचन ❀ रूप अपार मार-मद-मोचन

और कहा—ये दशरथके पुत्र राम और लक्ष्मण हैं, परशुरामजीने आशीर्वाद दिया। रामजी को देख उनके नेत्र चकित हो गए; जो अपार रूपवान् तथा कामदेवके मदका नाश करनेवाले थे ।

दोहा--बहुरि बिलोकि विदेह सन, कहा काह अति भीर ।
पूछत जानि अजान जिमि, व्यापेउ कोप शरीर ।।२८१।।

फिर परशुरामजीने राजा जनककी ओर देखकर कहा—कहो ! यह अपार भीड़ कैसी है। जानते हुए भी अनजानसे पूछते हैं और ऐसा कहते ही उनके शरीरमें क्रोध व्याप्त हो गया ।।२८१।।

समाचार कहि जनक सुनाये ❀ जेहि कारण महीप सब आये
सुनत बचन फिरि अनत निहारे ❀ देखे चाप खण्ड महि डारे

तब जनकजीने वह समाचार कह सुनाया, जिस कारण सब राजा आए थे ।।१।। उनकी बात सुनकर परशुरामजीने दूसरी ओर खण्डित धनुषको पृथ्वी पर पड़ा देखा ।।२।।

अति रिस बोले बचन कठोरा ❁ कहु जड़ जनक धनुष केहि तोरा
बेगि दिखाव मूढ़ नतु आजू ❁ उलटौं महि जहँ लगि तव राजू

तब अत्यन्त क्रोधित हो उन्होंने कहा—रे मूर्ख जनक ! कह तो सही कि, इस धनुषको किसने तोड़ा है । उसे शीघ्र दिखा, नहीं तो आज तेरे राज्यकी समस्त पृथ्वीको उलट दूँगा ॥

अति डर उतर देत नृप नाहीं ❁ कुटिल भूप हरषे मन माहीं
सुर मुनि नाग सिद्ध नर नारी ❁ सोचहिं सकल त्रास उर भारी

राजा जनक भयवश उत्तर नहीं देते, यह देख दुष्ट राजा अपने मनमें प्रसन्न हुए। किन्तु देवता मुनि, नाग, सिद्ध और सभी स्त्री व-पुरुष अपने हृदयमें भयभीत हो चिन्ता करने लगे ॥६॥

मन पछिताति सीय महतारी ❁ विधि सँवारि सब बात बिगारी
भृगुपति कर सुभाव सुनि सीता ❁ अर्ध निमेष कलप सम बीता

सीताजी की माता पश्चात्ताप करने लगीं कि, ब्रह्माने सब बात बनाकर भी बिगाड़ दी ॥७॥ सीताजीने जब सुना कि, परशुरामजीका ऐसा टेढ़ा स्वभाव है तो उनका आधा पल कल्पके समान बीतने लगा ॥ ८ ॥

दोहा—सभय विलोके लोग सब, जानि जानकी भीर ।
हृदय न हर्ष विषाद कछु, बोले श्रीरघुबीर ॥२८२॥

श्रीरामचन्द्रजी सबको डरा हुआ देखकर और सीताजी को दुःखित जान, मन में कुछ सुख और दुःख न मानकर बोले ॥ २८२ ॥

नाथ शंभु धनु भंजनि हारा ❁ होइहि कोउ इक दास तुम्हारा
आयसु काह कहिय किन मोही ❁ सुनि रिसाय बोले मुनि कोही

हे नाथ ! इस धनुषको तोड़नेवाला कोई आपका दास ही होगा ॥ १ ॥ सो आपकी क्या आज्ञा है, मुझसे क्यों नहीं कहते हैं ? यह सुनकर वे क्रोधी मुनि क्रुद्ध होकर बोले ॥ २ ॥

सेवक सो जो करै सेवकाई ❁ अरि करनी करि करिय लराई
सुनहु राम जेहि शिव धनु तोरा ❁ सहसबाहु सम सो रिपु मोरा

सेवक तो वह है जो सेवकाई करे, न कि शत्रु-सी करनी करके लड़ाई करे । हे राम ! सुनो, जिसने शिवजीका धनुष तोड़ा है वह सहस्रबाहुके समान ही मेरा शत्रु है ॥ ४ ॥

सो बिलगाइ बिहाइ समाजा ❁ नतु मारे जैहैं सब राजा
सुनि मुनि बचन लषण मुसुकाने ❁ बोले परशु धरहिं अपमाने

वह इस समाजको छोड़ अलग होवे, नहीं तो ये सब राजा मारे जायँगे ॥५॥ यह वचन सुनकर लक्ष्मणजी हँसे और परशुरामको यथेष्ट अपमानकी बात बोलने लगे ॥ ६ ॥

बहु धनुही तोरेउँ लरिकाईं ❁ कबहुँ न अस रिस कीन्ह गुसाईं
यहि धनु पर ममता केहि हेतू ❁ सुनि रिसाइ कह भृगुकुल केतू

हे स्वामी ! मैंने लड़कपनमें तो बहुत-सी धनुहियोंको तोड़ा है, पर तब ऐसा क्रोध आपने कभी न किया। इस धनुषपर इतनी प्रीति किस कारण है ? यह सुनकर परशुरामजी क्रुद्ध होकर बोले ।।

दोहा--रे नृप बालक कालवश, बोलत तोहिं न सँभार ।
धनुही सम त्रिपुरारि धनु, विदित सकल संसार ।।२८३।।

तब परशुरामजी बोले रे राजपुत्र ! कालके वश होकर तुझसे सँभालके नहीं बोला जाता ! सारे संसारमें विदित इस शिव-धनुषकी समता तू धनुहीसे करता है ? ।।२८३।।

लषण कहा हँसि हमरे जाना ❁ सुनहु देव सब धनुष समाना
का क्षति लाभ जीर्ण धनु तोरे ❁ देखा राम नये के भोरे

लक्ष्मणजीने हँसकर कहा—हे देव ! सुनो, मेरी समझसे तो सब धनुष एक ही समान हैं। इस जीर्ण धनुषको तोड़नेमें क्या हानि लाभ है, रामचन्द्रजी क्या इसे आज नयेके भूलसे देखे हैं ? ।।२।।

छुअत टूट रघुपतिहिं न दोषू ❁ मुनि बिनु काज करिय कत रोषू
बोले चितै परशु की ओरा ❁ रे शठ सुनेसि सुभाउ न मोरा

यह तो छूतेही टूट गया, इसमें रामजीका दोष नहीं है; आप व्यर्थही क्या क्रोध करते हैं ? तब परशुरामजी फरसेकी ओर देखकर बोले—रे मूर्ख ! तूने मेरे स्वभावको नहीं सुना है ।।

बालक बोलि बधौं नहिं तोहीं ❁ केवल मुनि जड़ जानेसि मोहीं
बाल-ब्रह्मचारी अति कोही ❁ विश्वविदित क्षत्री-कुल-द्रोही

रे मूर्ख ! मैं तुझे बालक जानकर वध नहीं करता हूँ, मुझे केवल मुनि ही मत समझना । मैं बाल ब्रह्मचारी और अत्यन्त क्रोधी हूँ। संसार जानता है कि, मैं क्षत्रियोंके कुलका विध्वंसक हूँ ।।

भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्हीं ❁ बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्हीं
सहसबाहु भुज छेदन हारा ❁ परशु विलोकु महीप कुमारा

मैंने अपनी भुजाओंके बलसे इस पृथ्वीको राजाओंसे विहीन कर, कई बार ब्राह्मणों के हाथोंमें दे दिया है । हे राजपुत्र ! सहस्रबाहुकी भुजाओंको काटनेवाले इस फरसेको देखो ।।८।।

दोहा--मातु पितहिं जनि सोचबस, करसि महीप किशोर ।
गर्भन के अर्भक दलन, परशु मोर अति घोर ।।२८४।।

हे राजपुत्र ! अपने माता और पिताको चिन्ताके वश मत करो, इस मेरे अत्यन्त घोर और कठोर फरसेको देखो, जिसने कितनी ही गर्भिणियोंके गर्भका दलनकर दिया है ।।२८४।।

बिहँसि लषण बोले मृदुबानी ❁ अहो मुनीश महाभट मानी
पुनि-पुनि मोहिं दिखाव कुठारा ❁ चहत उड़ावन फूँकि पहारा

इस पर लक्ष्मणजी हँसते हुए यह मीठी वाणी बोले—अहो मुनीश्वर ! तुम अपनेको महायोद्धा मानते हो और बारंबार मुझे फरसा दिखाते हो, जैसे पहाड़को फूंककर उड़ा दोगे ।।२।।

देखि कुठार शरासन बाना ❀ मैं कछु कहा सहित अभिमाना
इहाँ कुम्हड़ बतिया कोउ नाहीं ❀ जो तरजनी देखि मरि जाहीं

मैंने आपके शरीरपर फरसा और धनुषबाण देखकर कुछ अभिमान सहित कहा है ।।३।। यहाँ कोई कुम्हड़ी की बतिया नहीं है, जो तर्जनी उँगली दिखाते ही मर जायगा।।४।।

सुर महिसुर हरिजन अरु गाई ❀ हमरे कुल इन्हपर न सुराई
भृगुकुल समुझि जनेउ बिलोकी ❀ जो कछु कहहु सहौं रिस रोकी

क्योंकि देवता, ब्राह्मण और गौ आदि पर हमारे कुलमें शूरता नहीं की जाती । परन्तु आपको भृगुकुलका जान और आपके जनेऊको देखते हुए जो कुछ कहें वह मैं सहूँगा ।।६।।

बधे पाप अपकीरति हारे ❀ मारतहू पाँ परिय तुम्हारे
कोटि-कुलिस-सम बचन तुम्हारा ❀ व्यर्थ धरहु धनु बाण कुठारा

क्योंकि इनको मारना पाप है, आप मुझे मारें भी तो मैं पाँव ही पड़ूँगा । आपके वचन हो करोड़ों वज्रके समान हैं, जो सहे नहीं जाते; तब इस फरसे और धनुष-बाणको तो व्यर्थ ही धारण किए हैं ।। ८ ।।

दोहा—जो बिलोकि अनुचित कहेउँ, छमहु महा मुनि धीर ।
सुनि सरोष भृगुवंशमणि, बोले गिरा गम्भीर ।।२८५।।

हे धैर्यधारी मुनीश्वर ! यदि आपको देखकर कुछ अनुचित कहा हो तो, उसे क्षमा कीजियेगा । यह सुनकर परशुरामजी क्रोधयुक्त हो, यह गम्भीर वाणी बोले ।।२८५।।

कौशिक सुनहु मन्द यह बालक ❀ कुटिल कालवस निजकुल घालक
भानुवंश राकेश कलंकू ❀ निपट निरंकुश अबुध अशंकू

हे विश्वामित्रजी ! सुनिए, यह मूर्ख बालक तो मानों, कालके वशीभूत हो रहा है । सूर्यवंश में यह चन्द्रमाके कलंकके समान है तथा अत्यन्त ही निरंकुश, मूर्ख और निडर है ।।२।।

काल कवल होइहि क्षण माहीं ❀ कहौं पुकारि खोरि मोहिं नाहीं
तुम हटकहु जो चहहु उबारा ❀ कहि प्रताप बल रोष हमारा

मैं पुकारकर कह देता हूँ कि, यह क्षण भरमें ही कालकवलित हो जायगा; फिर मेरा दोष मत देना । यदि तुम इसे बचाना चाहते हो तो—मेरा प्रताप, बल, और क्रोध बतलाकर मना कर दो ।।

लषण कहेउ मुनि सुयश तुम्हारा ❀ तुमहिं अछत को बरणै पारा
अपने मुख तुम आपनि करणी ❀ बार अनेक भाँति बहु बरणी

लक्ष्मणजीने कहा, हे मुनि ! आपका सुन्दर यश आपको छोड़कर, कौन वर्णन कर पार पा सकता है । आप अपनेही मुखसे अपनी करनी, अनेक बार बहुत भाँतिसे बखान चुके हैं ।।६।।

नहिं सन्तोष तो पुनि कछु कहहू ❀ जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू
वीर ब्रती तुम्ह धीर अछोभा ❀ गारी देत न पावहु शोभा

उसपर यदि आपको सन्तोष नहीं हुआ हो तो, फिर कुछ कह लीजिए। क्रोधको रोक दुःख क्यों सहते हैं ? आप तो वीरव्रती हैं, इस कारण गाली देनेसे शोभा न पाइयेगा ॥

दोहा—सूर समर करनी करहिं, कहि न जनावहिं आपु।
विद्यमान रण पाइ रिपु, कायर करहिं प्रलापु ॥२८६॥

क्योंकि वीर लोग समरमें युद्ध करनेवाले होते हैं और कहकर अपनेको जनाते नहीं कि हम ऐसे हैं। यह कायरोंका काम है कि, शत्रुको युद्धाङ्गणमें पाकर भी ऐसा प्रलाप करते हैं ॥ २८६ ॥

तुम्ह तो काल हाँकि जनु लावा ❀ बार-बार मोहिं लागि बुलावा
सुनत लषणके बचन कठोरा ❀ परशु सुधारि धरेउ कर घोरा

तुम तो मानों कालको ही हाँककर लाये हो, जिसको मेरे लिए बारम्बार बुलाते हो। लक्ष्मणकी ऐसी कड़ी बात सुनकर, परशुरामजीने उस कठोर फरसेको सम्भालकर कहा ॥

अब जनि देइँ दोष मोहिं लोगू ❀ कटुबादी बालक बध योगू
बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा ❀ अब यह मरणहार भा साँचा

अब लोग मेरा दोष मत देंगे, क्योंकि यह कटुवादी बालक वध करने योग्य ही है ॥ अब तक मैंने इसे बालक समझकर बहुत बचाया, परन्तु अब यह सचमुच मरना ही चाहता है ॥

कौशिक कहा छमिय अपराधू ❀ बाल दोष गुण गनहिं न साधू
कर कुठार मैं अकरन कोही ❀ आगे अपराधी गुरु द्रोही

विश्वामित्रजीने कहा—अपराध क्षमा कीजिए, साधुजन बालकोंके दोष पर ध्यान नहीं देते। परशुरामजीने कहा कि, मुझ अकारण क्रोधीके हाथमें कुठार मौजूद है और मेरे गुरु (शंकरजी) का द्रोही अपराधी मेरे आगे उपस्थित है ॥ ६ ॥

उतर देत छाँड़ौं बिनु मारे ❀ केवल कौशिक शील तुम्हारे
नतु यहि काटि कुठार कठोरे ❀ गुरुहिं उऋण होतेउँ श्रम थोरे

हे कौशिक ! यह उत्तर देता है और मैं इसे बिना मारे ही छोड़ देता हूँ, यह केवल तुम्हारा ही शील है। नहीं तो इसी फरसेसे काटकर, थोड़े ही श्रमसे गुरुके ऋणसे उऋण हो जाता ॥८॥

दोहा—गाधि सुवन कह हृदय हँसि, मुनिहिं हरिअरइ सूझ।
अजगव खंडेउ ऊख जिमि, अजहुँ न बूझ अबूझ ॥२८७॥

तब विश्वामित्रने अपने मनमें हँसकर कहा कि, मुनिको तो अभी भी हरियाली ही दीखती है। इन्हें ज्ञान नहीं हुआ कि जिन्होंने धनुषको ऊखके समान तोड़ दिया, वे रामचन्द्र कौन हैं? ॥२८७॥

कहेउ लषन मुनिशील तुम्हारा ❀ को नहिं जान विदित संसारा
माता पितहिं उऋण भये नीके ❀ गुरु ऋण रहा शोच बड़ जीके

लक्ष्मणजीने कहा—हे मुनि ! संसारमें ऐसा कौन है, जो तुम्हारे शीलको नहीं जानता कि, माता-पितासे तो उस प्रकार उऋण हुए ; अब गुरु-ऋणकी मनमें चिन्ता लगी है ।।२।।

सो जनु हमरेहि माथे काढ़ा ❀ दिन चलि गए ब्याज बहु बाढ़ा
अब आनिय व्यवहरिया बोली ❀ तुरत देउँ मैं थैली खोली

सो वह मानों हमारे ही शिर निकाला है और दिन भी बहुत बीत गए, इसलिये व्याज अधिक बढ़ गया है ।।३।। इससे अब व्यवहरियाको बुला लीजिये तो मैं झट थैली खोल दूं ।।४।।

सुनि कटु बचन कुठार सुधारा ❀ हाय-हाय सब सभा पुकारा
भृगुवर परशु देखावहु मोहीं ❀ विप्र विचारि बचौं नृप द्रोही

यह कटु वाक्य सुन परशुरामजी अपना फरसा सँभालने लगे; तो सारी सभाके लोग हाय-हाय पुकारने लगे ।।५।। तब लक्ष्मणजी ने कहा—हे परशुरामजी ! आप मुझे फरसा दिखाते हैं, परन्तु हे राजाओंके द्रोही ! मैं आपको ब्राह्मण विचारकर छोड़ देता हूँ ।।६।।

मिले न कबहुँ सुभट रण गाढ़े ❀ द्विज देवता घरहिं के बाढ़े
अनुचित कहि सब लोग पुकारे ❀ रघुपति सयनहिं लषण निवारे

आपको कभी युद्धमें गाढ़े योद्धा तो मिले नहीं, ब्राह्मण देवता घर के ही वीर होते हैं ।।७।। इसपर सबने कहा, यह अनुचित है । तब संकेत द्वारा श्रीरामचन्दजीने लक्ष्मणजीको मना कर दिया ।। ८ ।।

दोहा--लषण उतर आहुति सरिस, भृगुवर कोप कृशानु ।
बढ़त देखि जलसम बचन, बोले रघुकुल भानु ।।२८८।।

भृगु श्रेष्ठ परशुरामजीके कोपानलमें लक्ष्मणजीका उत्तर आहुति था । इससे क्रोधको बढ़ते देखकर रघुकुलके सूर्यरूप श्रीरामचन्द्रजी यह जल सदृश शीतल वचन बोले ।।२८८।।

नाथ करहु बालक पर छोहू ❀ शुद्ध दूध मुख करिय न कोहू
जो पै प्रभु प्रभाव कछु जाना ❀ तौकि बराबरि करत अयाना

हे नाथ ! इस बालक पर दया कीजिए, यह दुधमुँहा है; इसपर क्रोध न कीजिए ।। हे स्वामी ! यदि आपके प्रभावको कुछ भी जानता होता तो, यह अनजान आपकी बराबरी क्यों करता ।।

जौं लरिका कछु अनुचित करहीं ❀ गुरु पितु मातु मोद मन भरहीं
करिय कृपा शिशु सेवक जानी ❀ तुम्ह सम शील धीर मुनि ज्ञानी

यदि बालक कुछ अनुचित बात कर जाते हैं तो, गुरु-पिता-माता मनमें आनन्द मनाते हैं। अतः इसे अपना सेवक जानकर कृपा करें, आप सम शील और बड़े धीर ज्ञानी मुनि हैं ।।

राम बचन सुनि कछुक जुड़ाने ❀ कहि कछु लषण बहुरि मुसकाने
हँसत देखि नख-शिख रिस व्यापी ❀ राम तोर भ्राता बड़ पापी

रामजीकी बात सुन परशुरामजी कुछ शांत ही हुए थे कि, लक्ष्मणजी कुछ कहकर मुसकुरा दिये ।। इससे उनका क्रोध बढ़ गया, उन्होंने कहा—हे राम ! तुम्हारा यह भाई बड़ा पापी है ।।

गौर शरीर श्याम मन माहीं ❀ कालकूट मुख पय मुख नाहीं
सहज टेढ़ अनुहरै न तोहीं ❀ नीच मीच सम देख न मोहीं

गौर शरीर, मनमें कालिमा, यह दूधमुख नहीं विषमुख है, तुम्हारे समान नहीं है ।। और इतना परशुरामजीने लक्ष्मणसे कहा--रे दुष्ट ! मुझे तू काल समान क्यों नहीं देखता ?

दोहा--लषण कहेउ हँसि सुनहु मुनि, क्रोध पापकर मूल ।
जेहि वश जन अनुचित्त करहिं, होहिं विश्व प्रतिकूल ।।२८९।।

तब लक्ष्मणजीने हँसकर कहा--हे मुनि ! सुनिये, क्रोध पापकी जड़ है । जिसके वश होने से मनुष्य अनुचित करके संसारके प्रतिकूल हो जाते हैं ।।२८९।।

मैं तुम्हार अनुचर मुनिराया ❀ परिहरि कोप करिय अब दाया
टूट चाप नहिं जुरहिं रिसाने ❀ बैठिय होइहिं पाँय पिराने

हे मुनिश्रेष्ठ ! मैं तो आपका आज्ञाकारी हूँ, क्रोधको त्यागकर अब दया कीजिए ।।१।। टूटा हुआ धनुष क्रोध करनेसे जुड़ नहीं सकता, अब बैठ जाइये, पैर दर्द करते होंगे ।। २ ।।

जौं अति प्रिय तौ करिय उपाई ❀ जोरिय कोउ बड़ गुनी बुलाई
बोलत लषनहिं जनक डेराहीं ❀ मष्ट करहु अनुचित भल नाहीं

यदि आपको यह अत्यन्त ही प्रिय हो तो, किसी गुणीको बुलाकर जुड़वा लीजिए ।। लक्ष्मणजी तो बोलते हैं परन्तु, जनकजी डरकर बोले--चुप रहो, अनुचित बात अच्छी नहीं होती ।।४।।

थर-थर काँपहिं पुर नर नारी ❀ छोट कुमार खोट अति भारी
भृगुपति सुनि-सुनि निर्भय बानी ❀ रिस तनु जरै होइ बल हानी

नगरके स्त्री-पुरुष थर-थर काँपते हैं कि, यह छोटा राजकुमार तो बड़ा खोटा है । लक्ष्मणजी की निर्भय वाणी सुन श्रीपरशुरामजी क्रोधसे जलते हैं और उनकी शक्ति क्षीण होती जाती है ।।

बोले रामहिं देइ निहोरा ❀ बचौं बिचारि बन्धु लघु तोरा
मन मलीन तन सुन्दर कैसे ❀ विष रस भरा कनक-घट जैसे

तब श्रीरामचन्द्रजीकी दोहाई देकर बोले--तुम्हारा भाई विचार करके ही इसे बचाता हूँ, नहीं तो इसका मन बड़ा मलिन है और शरीर सुन्दर है, जैसे सोनेके घड़ेमें विष भरा होवे ।।

दोहा--सुनि लक्ष्मण विहँसे बहुरि, नयन तरेरे राम ।
गुरु समीप गवने बहुरि, परिहरि वाणी बाम ।।२९०।।

यह सुनकर लक्ष्मणजी फिर मुस्कराये, तब श्रीरामचन्द्रजीने उन्हें आँख तरेर कर मना कर दिया । इससे वे अपनी व्यंगवाणी त्याग कर गुरु विश्वामित्रके पास चले गये ।।२९०।।

अति बिनीत मृदु शीतल बानी ❀ बोले राम जोरि युग पानी
सुनहु नाथ तुम्ह सहज सुजाना ❀ बालक बचन करिय नहिं काना

तब रामचन्द्रजीने हाथ जोड़कर अत्यन्त नम्र और मीठी वाणीमें कहा--हे नाथ ! सुनिए, आप स्वभावतः सुन्दर ज्ञानी हैं, इससे बालककी बात पर ध्यान न दीजिये ।।

बरैं बालक एक सुभाऊ ❀ इन्हिं न सन्त विदूषहिं काऊ
तिन नाहीं कछु काज बिगारा ❀ अपराधी मैं नाथ तुम्हारा

क्योंकि बरैं और बालक का स्वभाव एक-सा होता है, इनको सन्त महात्मा दोष नहीं देते। फिर इसने तो आपका कुछ काम नहीं बिगाड़ा है, हे नाथ ! आपका अपराधी तो मैं हूँ ।।

कृपा कोप बध बन्ध गुसाईं ❀ मोपर करिय दासकी नाईं
कहिय वेग जेहि विधि रिस जाई ❀ मुनि नायक सो करिय उपाई

हे गोसाईं ! आप अपनी कृपा, कोप, बध, बन्धन जो कुछ भी करना चाहें तो वह दासके समान मुझपर ही कीजिए। कहिये, आपका यह क्रोध कैसे जायगा ? मैं शीघ्र वही उपाय करूँ ।।

कह मुनि राम जाइ रिस कैसे ❀ अजहुँ अनुज तव चितब अनैसे
एहिके कंठ कुठार न दीन्हा ❀ तो मैं काह कोप करि कीन्हा

परशुरामजी ने कहा—हे राम ! क्रोध कैसे जायेगा, अब भी तेरा भाई टेढ़ा होकर ही देखता है। यदि मैंने इसके गले पर फरसा नहीं चलाया, तो क्रोध करके ही क्या किया ? ।।

दोहा--गर्भ श्रवहिं अवनिप रवनि, सुनि कुठार गति घोर।
परसु अछत देखौं जियत, बैरी भूप किशोर ।।२९१।।

भला मेरे जिस कुठार की गति को सुनकर राजमहल की रानियों के गर्भ गिर जाते हैं। उस फरसे के रहते हुए, मैं आज इस राजा के लड़के को जीता देख रहा हूँ ।।२९१।।

बहै न हाथ दहै रिस छाती ❀ भा कुठार कुण्ठित नृप-घाती
भयउ बाम बिधि फिरेउ सुभाऊ ❀ मोरे हृदय कृपा कस काऊ

परन्तु हाथ नहीं चलता, मालूम होता है कि, मेरा यह फरसा कुंठित हो गया है ।।१।। और यह भी जान पड़ता है कि विधाता उल्टा हो गया है, नहीं तो मेरे हृदयमें कृपा कैसी ? ।।२।।

आजु दैव दुख दुसह सहावा ❀ सुनि सौमित्र विहँसि शिर नावा
नाथ-कृपा-मूरति अनुकूला ❀ बोलत बचन झरत जनु फूला

आज ब्रह्माने तो मुझे बड़ा ही दुःख सहाया, यह सुन लक्ष्मणने हँसकर प्रणाम किया। और बोले—हे स्वामी ! आप तो दया की मूर्ति हैं, ऐसे बोलते हैं मानों फूल झड़ रहे हैं ।।४।।

जो पै कृपा जरहिं मुनि-गाता ❀ क्रोध भये तनु राख विधाता
देखु जनक हठि बालक एहू ❀ कीन्ह चहत जड़ यमपुर गेहू

हे मुने ! यदि कृपा करते हुए भी आपका शरीर जलता है, तो विधाता ही रक्षा करे ।।५।। यह सुनकर परशुरामजीने कहा—हे जनक ! देखो, यह बालक तो बड़ा ही हठी है और यह यमपुर में निवास करना चाहता है ।।६।।

बेगि करहु किन आँखिन ओटा ❀ देखत छोट खोट नृप-ढोटा
बिहँसे लषण कहा मुनि पाहीं ❀ मूँदिय आँख कतहुँ कोउ नाहीं

इसको शीघ्र मेरी आँखोंकी ओट क्यों नहीं करते, यह देखने ही में छोटा है; परन्तु बड़ा खोटा है। इसपर लक्ष्मणजीने कहा–आँख बन्द कर लीजिए, तो आपके सामने कहीं कोई नहीं है ।।

दोहा--परशुराम तब रामप्रति, बोले बचन सक्रोध ।
शंभु शरासन तोरि शठ, करसि हमार प्रबोध ।।२९२।।

इसपर परशुरामजी अत्यन्त क्रोधित होकर श्रीरामचन्द्रजी से बोले–रे मूर्ख ! शिवजी के धनुष को तोड़कर, अब मुझे अपनी बातों से प्रबोध करने चला है ? ।। २९२ ।।

बन्धु कहै कटु संमत तोरे ❁ तू छल विनय करसि कर जोरे
कर परितोष मोर संग्रामा ❁ नाहित छाँड़ु कहाउब रामा

तेरा भाई जो कुछ कहता है, उसमें तेरी सम्मति है और तू हाथ जोड़कर छल पूर्वक विनय करता है। अतः मेरे संतोष के लिए तू मेरे साथ युद्ध कर, नहीं तो राम कहलाना छोड़ दे ।।२।।

छल तजि समर करहु शिव द्रोही ❁ बंधु सहित नतु मारौं तोहीं
भृगुपति बकहिं कुठार उठाए ❁ मन मुसकाहिं राम सिर नाए

हे शिवद्रोही ! छल छोडकर तू युद्ध कर, नहीं तो तेरे भाई सहित तुझे मार डालूँगा। परशुरामजी फरसा उठाकर बकते रहे और श्रीरामचन्द्रजी माथा नवाकर मनमें मुसकाते रहे ।। ४ ।।

गुनहु लषण कर हम पर रोषू ❁ कतहुँ सुधाइहुँ ते बड़ दोषू
टेढ़ जानि शंका सब काहू ❁ बक्र चन्द्रमा ग्रसै न राहू

फिर बोले–आप लक्ष्मणका क्रोध हमपर उतारते हैं ? सीधेपन से कहीं-कहीं बड़ा दोष हो जाता है।।५।। टेढ़े से सबको शंका रहती है, टेढ़े चन्द्रमाको राहु भी नहीं ग्रसता ।।६।।

राम कहेउ रिस तजिय मुनीशा ❁ कर कुठार आगे यह शीशा
जेहि रिस जाइ करिय सोइ स्वामी ❁ मोहिं जानि आपन अनुगामी

रामजी ने कहा–हे मुनीश्वर ! क्रोध को त्याग दीजिये, मैं आपके आगे शिर झुकाता हूँ। हे स्वामी ! मुझे अपना अनुगामी जानकर वैसा ही कीजिये, जैसे आपका क्रोध जाये ।।८।।

दोहा--प्रभु सेवकहिं समर कस, तजहु विप्रवर रोष ।
वेष विलोकि कहेसि कछु, बालकहूँ नहिं दोष ।। २९३ ।।

हे विप्रश्रेष्ठ ! भला, स्वामी और सेवक में लड़ाई कैसी ? क्रोध को त्याग दीजिये। फिर इस बालक का कुछ दोष भी नहीं है। इसने आपका वीर वेष देखकर ही कुछ कह दिया है ।।

देखि कुठार बाण धनुधारी ❁ भइ लरिकहिं रिस बीर विचारी
नाम जान पै तुमहिं न चीन्हा ❁ वंश सुभाव उतर तेहि दीन्हा

आपको फरसा और धनुष्-बाणधारी देख और योद्धा विचार कर ही लड़केको क्रोध आ गया। आपका नाम तो जानता था पर पहचान न सका और वंश स्वभाव से इसने उत्तर दिया ।।

जौं तुम अवतेउ मुनिकी नाईं ❁ पद रज शिर शिशु धरत गोसाईं
छमहु चूक अनजानत केरी ❁ चहिय विप्र उर कृपा घनेरी

हे स्वामी ! यदि आप मुनिके समान आते तो, यह आपके चरणों की रज को मस्तक पर लगाता । आप ब्राह्मण हैं, इस अनजाने की चूक को क्षमा कीजिये ।। ४ ।।

हमहिं तुमहिं सरबरि कस नाथा ❀ कहहु त कहाँ चरण कहँ माथा
राम-मात्र लघु नाम हमारा ❀ परशु सहित बड़ नाम तुम्हारा

हे नाथ ! हमारी आपकी बराबरी कैसी ? कहिए तो कहाँ चरण और कहाँ माथा ।।५।। हमारा छोटा नाम तो केवल 'राम' मात्र है और आपका परशु सहित बड़ा नाम है ।।६।।

देव एक गुण धनुष हमारे ❀ नवगुण परम पुनीत तुम्हारे
सब प्रकार हम तुम सन हारे ❀ क्षमहु विप्र अपराध हमारे

हे देव ! हमारे तो केवल एक धनुषका ही गुण है और आपमें तो परम पवित्र नौगुण हैं ।। हे ब्राह्मण देवता! हम तो सभी प्रकार आपसे हारे हैं, हमारे अपराधको क्षमा कीजिए ।।

दोहा--बार बार मुनि विप्रवर, कहा राम सन राम ।
बोले भृगुपति सरुष हँसि, तहूँ बंधु सम बाम ।।२९४।।

इस प्रकार जब श्रीरामचन्द्रजीने बार-बार 'विप्रवर' परशुरामजी से कहा, तब भृगुपति (परशुरामजी) क्रोध की हँसी लिए बोले—तू भी भाई के समान ही टेढ़ा है ।। २९४ ।।

निपटहिं द्विज करि जानेसि मोहीं ❀ मैं जस विप्र सुनावौं तोहीं
चाप स्रुवा सर आहुति जानू ❀ कोप मोर अति घोर कृशानू

किन्तु तू मुझे निरा ब्राह्मण ही जानता हैं, पर मैं जैसा ब्राह्मण हूँ वह तुझे सुनाता हूँ। मेरे धनुषको श्रुवा (अग्निमें आहुति देने का पात्र) जानो और मेरा क्रोध ही प्रचण्ड अग्नि है ।।

समिधि सेन चतुरंग सुहाई ❀ महा महीप भये पशु आई
मैं यहि परशु काटि बलि दीन्हें ❀ समर यज्ञ जग कोटिन्ह कीन्हें

और सुन्दर चतुरंगिणी सेना ही इसकी समिधा है, जिसमें बड़े-बड़े राजा पशुके रूपमें आए और जिनको मैं इसी फरसेसे काटकर, क़रोड़ों युद्ध रूपी यज्ञ कर चुका हूँ ।।४।।

मोर प्रभाव विदित नहिं तोरे ❀ बोलसि निदरि विप्र के भोरे
भंजेउ चाप दाप बड़ बाढ़ा ❀ अहमिति मनहुँ जीति जग ठाढ़ा

तुझे मेरा प्रभाव विदित नहीं है, इसी कारण ब्राह्मणके धोखेसे मेरा निरादर कर बोलता है । धनुष तोड़ दिया तो अहंकार हो गया कि, मानो संसारको ही जीत कर खड़ा है ।।

राम कहा मुनि कहहु विचारी ❀ रिस अतिबड़ि लघु चूक हमारी
छुवतहिं टूट पिनाक पुराना ❀ मैं केहि हेतु करौं अभिमाना

रामजीने कहा—हे मुनि ! जरा विचार करें, हमारी चूक तो बहुत छोटी है और आपका क्रोध अपार है । यह पुराना धनुष तो छूते ही टूट गया, फिर मैं क्या घमंड करूँगा ? ।।८।।

दोहा--जो हम निदरहिं विप्रवर, सत्य सुनहु भृगुनाथ ।
तौ अस को जग सुभट जेहि, भयवश नावहिं माथ ।।२९५।।

हे भृगुनाथ ! सुनिए, यदि हम आप जैसे श्रेष्ठ ब्राह्मण का ही अपमान करेंगे तो भला संसारमें ऐसा कौन योद्धा है कि, जिसको भय के वश होकर हम शिर नवावेंगे ? ।।२८५।।

देव दनुज भूपति भट नाना ❀ समबल अधिक होउ बलवाना
जो रन हमहिं प्रचारै कोऊ ❀ लरहिं सुखेन काल किन होऊ

देवता, राक्षस, राजा लोग और अनेक योद्धा चाहे वे बराबरके हों या बलवान् । यदि संग्राममें हमें कोई ललकारेगा, तो वह काल ही क्यों न हो, हम उसके साथ युद्ध करेंगे ।।

छत्री तनु धरि समर सकाना ❀ कुल कलंक तेहि पामर जाना
कहौं स्वभाव न कुलहिं प्रशंशी ❀ कालहु डरहिं न रण रघुवंशी

क्योंकि क्षत्रिय युद्धसे शंकित नहीं होता, यदि हुआ तो--उसके समान कुलका कलंकी कौन होगा ? यह मैं अपना स्वभाव कहता हूँ कि, युद्धमें रघुवंशके वंशज कालको भी नहीं डरते ।।

विप्रवंश की अस प्रभुताई ❀ अभय होइ जो तुमहिं डराई
सुनि मृदु बचन गूढ़ रघुपति के ❀ उघरे पटल परशुधर मति के

फिर ब्राह्मण कुलकी तो ऐसी प्रभुता है कि, जो आपको डरेगा वह भय रहित हो जावेगा। श्रीरामचन्द्रजीकी ऐसी कोमल, मींठी और गूढ़ वाणी सुनकर परशुरामजी की आँखें खुल गयीं ।।

राम रमापति कर धनु लेहू ❀ खैंचहु चाप मिटै सन्देहू
देत चाप आपुहिं चढ़ि गयऊ ❀ परशुराम मन विस्मय भयऊ

तब बोले--अच्छा, हे राम ! इस धनुषको हाथमें लेकर, खींचो तो संदेह दूर हो ।। धनुषके देते ही वह स्वयं ही चढ़ गया, तब तो परशुरामजी को बड़ा आश्चर्य हुआ ।।८।।

दोहा--जाना राम प्रभाव तब, पुलक प्रफुल्लित गात ।
जोरि पाणि बोले बचन, हृदय न प्रेम समात ।।२९६।।

तब श्रीरामचन्द्रजी के प्रभावको जानकर परशुरामजी पुलकित शरीर हो, हाथ जोड़कर यह वचन बोले कि, जो प्रेम हृदय में नहीं समाता ।। २९६ ।।

जय रघुवंश-बनज-बन-भानू ❀ गहन दनुज-कुल दहन कृशानू
जय सुर-विप्र धेनु-हितकारी ❀ जय मदमोह कोह भ्रम हारी

हे रघुवंशरूपी कमलवनको सूर्यके समान प्रफुल्लित करने वाले ! और राक्षस कुलके संहारक !।।१।। आपकी जय हो, हे देवता-ब्राह्मण और गौवोंके हित करनेवाले ! आपकी जय हो ।।२।।

बिनय शील करुणा गुण-सागर ❀ जयति बचन रचना अति नागर
सेवक सुखद सुभग सब अंगा ❀ जय शरीर छबि कोटि अनंगा

हे विजयी, शीलवंत और गुणोंके सागर ! आपकी जय हो । हे सेवकोंके सुखदाता ! आपके सभी अंग बड़े सुन्दर हैं, जिनपर करोड़ों कामदेव न्योछावर हैं, आपकी जय हो ।।

करौं काह मुख एक प्रशंसा ❀ जय महेश मन मानस हंसा
अनुचित बहुत कहेउँ अज्ञाता ❀ क्षमहु क्षमा मंदिर दोउ भ्राता

मैं अपने एक मुखसे बड़ाई क्या करूँ, हे महादेवजीके मन मन्दिरमें विचरनेवाले ! आपकी जय हो। अनजानमें मैंने जो अनुचित कहा, उसे क्षमा करो, आप दोनों भाई क्षमा के धाम हैं ॥

कहि जय जय जय रघुकुल केतू ❀ भृगुपति गये बनहिं तप हेतू
अपभय कुटिल महीप डेराने ❀ जहँ तहँ कायर गवहिं पराने

हे रामचन्द्रजी ! आपकी जय जय जय हो, ऐसा कह कर श्रीपरशुरामजी तप हेतु वनको चले गये। भय विशेष से कायर और दुष्ट राजा भयभीत हो, धीरे से जहाँ-तहाँ भाग गये ॥८॥

दोहा—देवन दीन्हीं दुन्दुभी, प्रभु पर बरषहिं फूल।
हरषे पुर नर नारि सब, मिटा मोहमय शूल ॥२९७॥

देवताओंने दुन्दुभी बजाकर प्रभु, श्रीरामचन्द्रजी पर फूल बरसाये और इसप्रकार जनकपुरके सब स्त्री-पुरुष प्रसन्न हुए; उनकी सब मोहमयी पीड़ा जाती रही ॥ २९७ ॥

अति गहगहे बाजने बाजे ❀ सबहिं मनोहर मंगल साजे
यूथ यूथ मिलि सुमुखि सुनयनी ❀ करहिं गान कल कोकिल बयनी

लोग जोर-जोरसे नगाड़े बजाने लगे, सबने सुन्दर मांगलिक साज सजाये ॥१॥ सुन्दर स्त्रियाँ झुण्ड-झुण्डमें मिलकर, कोकिल कंठसे मधुर गान करने लगीं ॥ २ ॥

सुख बिदेह कर बरणि न जाई ❀ जन्म दरिद्र मनहुँ निधि पाई
विगत त्रास भइ सीय सुखारी ❀ जनु विधु उदय चकोर कुमारी

राजा जनकका सुख तो बखान नहीं किया जाता; मानो जन्मके दरिद्रने खजाना पा लिया हो ॥ सीताजी ऐसी सुखी हुईं, मानों चन्द्रमाके उदय होनेसे चकोरकी-बच्ची सुखी हो गई हो ॥४॥

जनक कीन्ह कौशिकहिं प्रणामा ❀ प्रभु प्रसाद धनु भंजेउ रामा
मोहिं कृतकृत्य कीन्ह दुहुँ भाई ❀ अब जो उचित सो कहिय गोसाँई

उसी समय राजा जनकने विश्वामित्रको प्रणाम कर कहा, आपके प्रसादसे श्रीरामचन्द्रजी ने धनुष को तो तोड़ दिया ॥५॥ हे गोसाईं ! अब जो उचित कार्य करने हों, वह कहिये ॥६॥

कह मुनि सुनु नरनाह प्रवीना ❀ रहा विवाह चाप आधीना
टूटतही धनु भयउ विवाहू ❀ सुर नर नाग विदित सब काहू

विश्वामित्रजीने कहा—हे बुद्धिमान् राजा ! विवाह तो धनुषके अधीन था ॥ ७ ॥ सो धनुषके टूटते ही विवाह हो तो गया, जिसे देवता, मनुष्य और नाग सब कोई जानते हैं ॥८॥

दोहा—तदपि जाइ तुम करहु अब, यथावंश व्यवहार।
बूझि विप्रकुल बृद्ध गुरु, बेद-बिदित आचार ॥२९८॥

तो भी अब अपने कुल के वृद्धजनों और ब्राह्मणोंसे पूछकर जैसे तुम्हारे वंशका व्यवहार हो, वैसा वेद विदित आचार करो॥ २९८ ॥

दूत अवधपुर पठवहु जाई ❀ आनहिं नृप दशरथहिं बुलाई
मुदित राउ कहि भलेहि कृपाला ❀ पठए दूत बोलि तेहि काला

अयोध्याके लिये दूत भेज दो कि, राजा दशरथको बुला लावें। राजा जनकने प्रसन्न होकर कहा—हे कृपालो! आपने अच्छा कहा, ऐसा कहकर उन्होंने उसी समय दूतोंको भेज दिया ।।२।।

बहुरि महाजन सकल बुलाये ❀ आइ सबनि सादर शिर नाये
हाट बाट मन्दिर पुर बासा ❀ नगर सवाँरहु चारिहुँ पासा

फिर उन्होंने सब महाजनोंको बुलाया, सबने आकर सादर सिर झुकाकर प्रणाम किया। राजाने कहा—देखो, सब बाजार, गलियाँ, देवस्थान और समस्त नगरको चारों ओर से सजा दो ।।४।।

हरषि चले निज निज गृह आए ❀ पुनि परिचारक बोलि पठाए
रचहु विचित्र वितान सुहाई ❀ शिर धरि वचन चले सचुपाई

तब सब लोग प्रसन्न हो, अपने-अपने घर आए और फिर सब परिचारकों को बुलाकर; कह दिया कि, बहुत सुन्दर मण्डप की रचना करो, वे आज्ञा पा वचन को शिरोधार्य कर चले ।।६।।

पठये बोलि गुणी तिन्ह नाना ❀ जे वितान बिधि कुशल सुजाना
विधिहिं बन्दि तिन्ह कीन्हअरंभा❀ विरचे कनक कदलि के खंभा

फिर तो उन्होंने अनेक वितान-विधिके कुशल ज्ञाता गुणियोंको बुला लिया। उन्होंने विधिकी वन्दना कर कार्य प्रारम्भ किया और केलेके समान सुन्दर सुवर्णके स्तंभ बना दिये ।।८।।

दोहा--हरित मणिन के पत्र फल, पद्मराग के फूल।
रचना देखि विचित्र अति, मन विरंचिकर भूल ।।२९९।।

उन खम्भोंमें उन्होंने हरित मणिके पत्ते, फल और पद्मरागके फूल बना दिये। उस अत्यन्त विचित्र रचनाको देखकर, ब्रह्माजी का भी मन भूल जाता था ।।२९९।।

वेणु हरित मणिमय सब कीन्हे ❀ सरल सपर्ण परहिं नहिं चीन्हे
कनक कलित अहिबेलि बनाई ❀ लखि नहिं परै सपर्ण सुहाई

उस सजावटमें जो हरे बाँस लगे थे, उन्हें भी शिल्पकारोंने ऐसे बना दिए थे कि—जो सरलतासे पहचाने नहीं जा सकते थे। सुवर्णमें पानोंकी सुन्दर बेलि बनी थी।

तेहिके रचि पचि बंध बनाए ❀ बिच बिच मुक्ता दाम सुहाए
माणिक मरकत कुलिश पिरोजा ❀ चीर कोर पचि रचे सरोजा

उनमें भी पच्चीकारी हुई थी, मूँगोंकी माला के बीच-बीचमें मोतियोंके दाने शोभा दे रहे थे।। यही नहीं, मणि-माणिक्य, हीरे और पिरोजोंकी कोरोंको चीरकर कमल बनाये थे ।।४।।

किये भृङ्ग बहुरंग विहंगा ❀ गुञ्जहिं कुञ्जहिं पवन प्रसंगा
सुर प्रतिमा खम्भन्हि गढ़ि काढ़ी ❀ मङ्गल द्रव्य लिए सब ठाढ़ी
चौके भाँति अनेक पुराई ❀ सिन्धुर मणिमय सहज सुहाई

जिनपर अनेक रंग-विरंगके भौंरें और पक्षी बैठे हुए पवन प्रसंगसे गूँजते,और कूजते थे। खम्भोंमें देवताओंकी मूर्तियाँ गढ़ कर काढ़ी गई थीं, जो मांगलिक द्रव्य लिये खड़ी थीं। जो गजमुक्तांसे अनेक प्रकारके चौके पूरे गये थे, वे सहज ही सुन्दर लगते थे ।।७।।

दोहा--सौरभ पल्लव सुभग सुठि, किये नीलमणि कोर।
हेम बौर मरकत घवरि, लसत पाटमय डोर ॥३००॥

सुन्दर नीलमकी कोरोंको चीरकर, बड़े मनोहर आमके पत्ते भी सुन्दर और श्रेष्ठ बनाए गए थे तथा सोनेके बौरमें नीलमके छोटे-छोटे टिकोरोंके गुच्छे थे ॥३००॥

रचे रुचिर वर बन्दनि वारे ❀ मनहुँ मनोभव फन्द सँवारे
मंगल-कलश अनेक बनाए ❀ ध्वज पताक पट चमर सुहाए

इस प्रकार उस मण्डपकी श्रेष्ठ रचनाको मानों, कामदेव अपने ही हाथों से सँवार रहा था। अनेक मांगलिक कलश बनाए गए थे जो, चारों और शोभायमान हो रहे थे ॥ २ ॥

दीप मनोहर मणिमय नाना ❀ जाइ न वरणि विचित्र बिताना
जेहि मण्डप दुलहिन बैदेही ❀ सो बरणै अस मति कवि केही

उसपर मनको हरनेवाले मणियुक्त विचित्र दीपक बनाये गये, जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता। जिस मंडपमें श्रीजानकीजी दुलहिन हों उसका वर्णन करे, ऐसी किस कवि की बुद्धि है।।४।।

दूलह राम रूप-गुण-सागर ❀ सो वितान तिहुँ लोक उजागर
जनक भवनकी शोभा जैसी ❀ गृह-गृह प्रति पुर देखिय तैसी

तब ऐसे श्रीरामचन्द्रजी के समान दूल्हा जिस मण्डपमें थे, वह मण्डप तो तीनों लोक में प्रकाशमान था। राजा जनकके घरकी जैसी शोभा, सबके घरोंमें दीख पड़ती थी ॥६॥

जेहि तिरहुत तेहि समय निहारी ❀ तेहि लघु लागि भुवन दश चारी
जो सम्पदा नीच गृह सोहा ❀ सो विलोकि सुरनायक मोहा

उस समयके तिरहुतको जिसने देखा, उसे चौदहों लोक छोटे दिखाई पड़े ॥ ७ ॥ उस समय जनकपुर के नीचोंके घरकी भी संम्पदाको देखकर इन्द्र मोहित हो गए।।८।।

दोहा--बसै नगर जेहि लक्ष्मि कर, कपट नारि वरवेष।
तेहि पुरकी शोभा कहत, सकुचहिं शारद शेष ॥२०१॥

क्योंकि जिस नगरमें साक्षात् लक्ष्मी कपटसे, श्रेष्ठ स्त्री का वेश बनाकर निवास करती थीं; उसकी शोभाका वर्णन करनेमें तो शेषनाग और सरस्वती भी संकुचित हो जाती हैं ॥२०१॥

पहुँचे दूत राम पुर पावन ❀ हरषे नगर विलोकि सुहावन
भूप द्वार तिन्ह खबरि जनाई ❀ दशरथ नृप सुनि लिये बुलाई

उधर राजा जनकके दूत अयोध्यामें पहुँचे तो, ऐसे सुहावने नगरको देखकर प्रसन्न हो गए। जब उन्होंने अपने आने का समाचार सुनाया तो, सुनकर राजा दशरथने उन्हें बुला लिया ॥

करि प्रणाम तिन्ह पाती दीन्हीं ❀ मुदित महीप आप उठि लीन्हीं
बारि विलोचन बाँचत पाती ❀ पुलक गात आई भरि छाती

तब प्रणाम कर दूतोंने वह पत्रिका दी तो, राजा दशरथने प्रसन्न होकर स्वयं उठकर ले ली ॥ पत्रको बाँचते ही उनके विशाल नेत्रोंमें जल भर आया और शरीर पुलकायमान हो गया ॥

राम लषण उर कर वर चीठी ❀ रहि गये कहत न खाटी मीठी
पुनि धरि धीर पत्रिका बाँची ❀ हरषी सभा बात सुनि साँची

राम-लक्ष्मणके हाथकी पत्रिका लेकर राजा दशरथने हृदयमें लगा लिया और मारे आनन्दके कुछ कह न सके। धैर्य धर कर पढ़ा तो, व्याहका समाचार जानकर सभा हर्षित हो गई ॥६॥

खेलत रहे तहाँ सुधि पाई ❀ आए भरत सहित दोउ भाई
पूछत अति सनेह सकुचाई ❀ तात कहाँ ते पाती आई

उधर भरत और शत्रुघ्न जहाँ खेलते थे, जब यह समाचार उनको मिला तब भरत सहित दोनों भाई दौड़ हुए आए और बड़े संकोचसे पूछा कि, पिताजी ! यह पत्र कहाँसे आया है॥८॥

दोहा—कुशल प्राव प्रिय बन्धु दोउ, अहहिं कहहु केहि देश।
सुनि सनेह साने बचन, बाँची बहुरि नरेश ॥३०२॥

कहिए ! हमारे प्राणोंसे प्यारे दोनों भैया कुशलसे तो हैं ? किस देशमें हैं ? उनके ऐसे स्नेहयुक्त वचन को सुनकर राजाने फिर पत्र को पढ़कर सुना दिया ॥३०२॥

सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता ❀ अधिक सनेह समात न गाता
प्रीति पुनीत भरत की देखी ❀ सकल सभा सुख लहेउ विशेषी

पत्रको सुनकर भरत-शत्रुघ्न दोनों भाई प्रसन्न हो गए और ऐसा प्रेम बढ़ा कि जो हृदय में नहीं समाता। भरतजी की पवित्र प्रीतिको देखकर सभाके सब लोग आनन्दित हुए ॥२॥

तब नृप दूत निकट बैठारे ❀ मधुर मनोहर वचन उचारे
भैया कहहु कुशल दोउ बारे ❀ तुम नीके निज नयन निहारे

तब राजा दशरथ ने दूतोंको बैठाकर, मीठी वाणीमें यह वचन उच्चारण किये कि—हे भाई ! कहो, हमारे दोनों बालक कुलशसे तो हैं ? क्या तुम अपनी आँखसे देखे हो ? ॥४॥

श्यामल गौर धरे धनु हाथा ❀ वय किशोर कौशिक मुनि साथा
पहिचानेहु तुम्ह कहहु सुभाऊ ❀ प्रेम बिवश पुनि-पुनि कह राऊ

वे साँवले और गोरे, हाथमें धनुष धारण किए, किशोरावस्था अर्थात् १६ वर्षके हैं ॥ और विश्वामित्र मुनि उनके साथ हैं, यदि तुम पहचानते हो तो—उनका स्वभाव कहो ?॥६॥

जा दिन ते मुनि गये लिवाई ❀ तबतें आजु साँचि सुधि पाई
कहहु विदेह कवन विधि जाने ❀ सुनि प्रिय वचन दूत मुसुकाने

जिस दिनसे मुनि जी लिवा ले गए हैं, तबसे आज ही सच्चा समाचार पाया है। कहो, राजा जनकने उन्हें किस प्रकार पहचाना ? ऐसी मीठी बात सुनकर दूत मुसकुराने लगे ॥८॥

दोहा—सुनहु महीपति मुकुटमनि, तुम्ह सम धन्य न कोउ।
राम लषन जाके तनय, विश्व विभूषन दोउ ॥३०३॥

फिर बोले—हे राजाओंके मुकुटमणि ! सुनिए, आपसे बढ़कर भाग्यशाली आज कोई नहीं है कि, जिसके संसारके अलङ्कार रूप राम-लक्ष्मण ऐसे वे दोनों पुत्र हैं ॥ ३०३ ॥

पूछन योग न तनय तुम्हारे ❀ पुरुषसिंह तिहुँपुर उँजियारे
जिन्हके यश प्रतापके आगे ❀ शशि मलीन रवि शीतल लागे

तुम्हारे पुत्र पूछनेके योग्य नहीं हैं, वे मनुष्योंमें सिंहरूप और तीनों लोकोंमें प्रकाश करने वाले हैं। जिनकी कीर्ति और प्रभावके आगे चन्द्रमा मलिन और सूर्य शीतल लगते हैं ।।२।।

तिन्ह कहँकहिय नाथ किमिचीन्हे ❀ देखिय रवि कि दीप कर लीन्हे
सीय स्वयम्बर भूप अनेका ❀ सिमिटे सुभट एकते एका

हे महाराज ! उनके लिए आप क्या कहते हैं, क्या सूर्य को दीपक लेकर देखा जाता है ? ।।३।। सीताजीके स्वयंवरमें एकसे एक बढकर अनेक योद्धा आए और दुबक गये ।।४।।

शम्भु शरासन काहु न टारा ❀ हारे सकल बीर बरियारा
तीनि लोक महँ जे भट मानी ❀ सबकै सकति शम्भु धनु भानी

परन्तु श्रीमहादेवजीके धनुषको कोई भी टाल न सका और सभी वीर योद्धा हार गए। त्रैलोक्यमें जितने भी अपनेको वीर मानते थे, सबकी शक्तिको धनुषने भङ्ग कर दिया ।।६।।

सकइ उठाइ सुरासुर मेरू ❀ सो हिय हारि गयउ करि फेरू
जेहि कौतुक शिव शैल उठावा ❀ सोउ तेहि सभा पराभव पावा

जो सुर-असुर सुमेरु पर्वतको भी उठा लिए थे, वे भी हार मानकर धनुषका फेरा लगाकर चले गये। जिस रावणने कैलाश उठा लिया था, वह भी सभामें हार मान गया ।।

दोहा—तहाँ राम रघुवंशमनि, सुनिय महा महिपाल।
भंजेउ चाप प्रयास बिनु, जिमि गज पंकज नाल ।। ३०४ ।।

हे पृथ्वीपते ! सुनिये, वहाँ रघुकुलके मणिस्वरूप श्रीरामचन्द्रजीने बिना परिश्रम ही धनुषको इस प्रकार तोड़ा था कि; जैसे हाथी कमलनालको तोड़ डालता है ।। ३०४ ।।

सुनि सरोष भृगुनायक आए ❀ बहुत भाँति तिन आँखि देखाए
देखि राम बल निज धनु दीन्हा ❀ करि बहु बिनय गवन बन कीन्हा

पश्चात् धनुषका टूटना सुनकर परशुरामजी आए और उन्होंने बहुत प्रकार से आँखें दिखलाईं ।।१।। किन्तु वे भी रामजीके बलको देख, विनय करके वनकी ओर चले गए ।। २ ।।

राजन राम अतुल बल जैसे ❀ तेज निधान लखन पुनि तैसे
कम्पहिं भूप विलोकत जाके ❀ जिमि गज हरि किशोर के ताके

हे राजन् ! जैसे रामजी बलवाले हैं, वैसे ही लक्ष्मणजी तेजके निधान हैं। उनको देखते ही राजा लोग ऐसे डर गए, जैसे हाथी सिंहके बच्चेको देखते ही डर जाते हैं ।।४।।

देव देखि तव बालक दोऊ ❀ अवनि आँखि तर आव न कोऊ
दूत बचन रचना प्रिय लागी ❀ प्रेम प्रताप वीर रस पागी

हे देव! आपके दोनों बालकोंको देखकर, पृथ्वीमें कोई आँखके तले नहीं आता। इस प्रकार प्रेम प्रताप और बीर-रससे परिपक्व, दूतोंकी यह वचन रचना राजाको अत्यन्त ही प्यारी लगी ।।

सभा समेत राउ अनुरागे ❁ दूतहिं देन निछावरि लागे
कहि अनीति ते मूँदहिं काना ❁ धर्म बिचारि सबहिं सुख माना

जिसे सुनकर राजा दशरथ विशेष प्रेममें मग्न हो गए और दूतोंको न्योछावर देने लगे। तब उन्होंने कानोंपर हाथ धर लिया और इस धर्मकी ओर विचार करते हुए सबलोगोंने सुख माना ॥

दोहा—तब उठि भूप वसिष्ठ कहँ, दीन्ह पत्रिका जाइ।
कथा सुनाई गुरहिं सब, सादर दूत बोलाइ ॥ ३०५ ॥

तब महाराज दशरथने उठकर वह पत्रिका महर्षि वसिष्ठजीको जाकर दी। और सादर दूतों को बुलाकर वह सब कथा गुरूजीको कह सुनाई ॥ ३०५ ॥

सुनि बोले गुरु अति सुखपाई ❁ पुण्य पुरुष कहँ महि सुख छाई
जिमि सरिता सागर महँ जाहीं ❁ यद्यपि ताहि कामना नाहीं

वह समाचार सुनकर वशिष्ठजीने बहुत सुख पाया और कहा कि पुण्यवान् पुरुषोंके लिए पृथ्वीमें इसी प्रकारसे सुख छाया रहता है। निष्काम ही नदियाँ समुद्रमें जाती हैं।।२।।

तिमि सुख संपति बिनहिं बुलाए ❁ धर्मशील पहिं जाहिं सुहाए
तुम्ह गुरु विप्र धेनु सुर सेवी ❁ तस पुनीत कौशल्या देवी

वैसे ही धर्मात्मा पुरुषोंके पास, बिना बुलाये ही सुख सम्पत्ति चली जाती है। हे राजन्! आप जैसे गुरु-ब्राह्मण, गौ तथा देवताकी सेवा करने वाले हैं, वैसे ही कौशल्या देवी भी हैं ॥४॥

सुकृती तुम समान जगमाहीं ❁ भयउ न है कोउ होनेउ नाहीं
तुमते अधिक पुण्य बड़ काके ❁ राजन राम सरिस सुत जाके

इस संसारमें आपके समान पुण्यवान् न कोई हुआ है, न है और न कोई होने ही वाला है। आपसे बढ़कर पुण्य किसका है? जिसके राम जैसे शोभायमान पुत्र हैं॥ ६ ॥

बीर विनीत धर्म-व्रत-धारी ❁ गुणसागर बालक वर चारी
तुम कहँ सर्वकाल कल्याना ❁ सजहु बरात बजाइ निसाना

आपके चारों ही पुत्र वीर, विजयी और धर्मव्रतधारी तथा श्रेष्ठ गुणोंके समुद्र हैं। इससे आपके लिए सर्वकालमें कल्याण ही है, अब डंका बजाकर बारात सजाइये ॥ ८ ॥

दोहा—चलहु बेगि सुनि गुरुवचन, भलेहि नाथ शिर नाइ।
भूपति गवने भवन तब, दूतन्ह बास दिवाइ ॥३०६॥

तब शीघ्र चलो, गुरुका ऐसे वचन सुनकर राजा दशरथने शिर नवा कर कहा—हे नाथ! बहुत अच्छा। फिर दूतोंको वास दिलाकर राजा अपने महलमें चले गये ॥ ३०६ ॥

राजा सब रनिवास बोलाई ❁ जनक पत्रिका बाँचि सुनाई
सुनि सन्देश सकल हरषानी ❁ अपर कथा सब भूप बखानी

राजाने सब रानियोंको बुलाकर जनककी पत्रिका पढ़कर सुनाई। वह समाचार सुनकर सब रानियाँ प्रसन्न हो गईं और अन्य समाचार भी राजाने आद्योपान्त वर्णन कर दिये ॥

प्रेम-प्रफुल्लित राजहिं रानी ❁ मनहुँ शिखिन सुनि बारिद बानी
मुदित अशीस दीन्ह गुरु नारी ❁ अति आनन्द मगन महतारी

राजा और रानियाँ प्रेमसे ऐसे प्रफुल्लित हो गईं कि, मानों मेघ का शब्द सुनकर मोर प्रसन्न हो गये हों। गुरुकी स्त्रीने प्रसन्न हो आशीर्वाद दिया और कौशल्याके आनन्दका अन्त न रहा ॥

लेहिं परस्पर अति प्रिय पाती ❁ हृदय लगाइ जुड़ावहिं छाती
राम लखन कै कीरति करनी ❁ बारहिं बार भूपवर बरनी

उस अत्यन्त प्यारी पत्रिका को लोग एक दूसरे से लेती हैं और हृदय से लगाकर छाती ठंडी करती हैं। दशरथजी बारम्बार रामलक्ष्मण की कीर्ति, करनी का बखान करते हैं ॥

मुनि प्रसाद कहि द्वार सिधाये ❁ रानिन्ह तब महिदेव बुलाये
दिये दान आनन्द समेता ❁ चले विप्रवर आशिष देता

यह सब कुछ मुनिजी का प्रसाद है, यह कह राजा दशरथ द्वारपर चले गये। रानियोंने ब्राह्मणों को बुलाकर सानन्द दान दिया और श्रेष्ठ ब्राह्मण आशीर्वाद देते हुए चले गये ॥८॥

सोरठा—याचक लिए हँकारि, दीन्ह निछावरि कोटि विधि।
चिरजीवहु सुत चारि, चक्रवर्ति दशरत्थ के ॥३८॥

फिर रानियोंने याचकों को बुलवा लिया और करोड़ों न्योछावर दिये। इससे प्रसन्न होकर वे आशीर्वाद देने लगे कि चक्रवर्ती महाराज दशरथ के चारों पुत्र चिरंजीवी रहें ॥ ३८ ॥

कहत चले पहिरे पट नाना ❁ अरु बाजे गहगहे निशाना
समाचार सब लोगन्ह पाए ❁ लागे घर-घर होन बधाए

इस प्रकार कहते हुए, वे अनेकों प्रकार के वस्त्र पहने चले जाते थे और जोर-जोर से डंके बज रहे थे। यह समाचार पाकर अयोध्यापुरी के प्रत्येक घरोंमें बधाइयाँ होने लगीं ॥

भुवन चारिदश भरेउ उछाहू ❁ जनक सुता रघुवीर विवाहू
सुनि शुभ कथा लोग अनुरागे ❁ मग गृह गली सँवारन लागे

चौदहों लोक में आनन्द भर गया कि सीतारामका विवाह है, उस मङ्गल को सुनकर लोग विशेष प्रेम के वश हो गए और अपने घर, मार्ग तथा गलियों को सजाने लगे ॥

यद्यपि अवध सदैव सुहावनि ❁ राम पुरी मंगलमय पावनि
तदपि प्रीति की रीति सुहाई ❁ मङ्गल रचना रची बनाई

यद्यपि राम की पुरी अयोध्या सर्वदा मंगलमय पवित्र और सुहावनी है। तथापि प्रीति की सुहावनी रीतिके अनुसार लोगोंने उस मांगलिक रचना को बहुत ही रचकर बनाया था ॥

ध्वज पताक पट चामर चारु ❁ छावा परम विचित्र बजारू
कनक कलश तोरण मणिजाला ❁ हरद दूब दधि अक्षत माला

ध्वजा, पताका, वस्त्र और सुन्दर मृगछालों से बाजार को सजाकर, बड़ा ही विचित्र बना दिया। मणियों की झालरें, सोने के कलश, हल्दी, दूर्वा, दही और अक्षत, मालाओं से ॥

दोहा—मंगलमय निज निज भवन, लोगन रचे बनाइ।
बीथी सीचीं चतुर सब, चौके चारु पुराइ ॥३०७॥

अपने-अपने घरों को सब लोगों ने रचकर मंगलमय बना दिया और सब बुद्धिमानों ने गलियों को सिचवाकर चौक पुरवा दिये ॥ ३०७ ॥

जहँ तहँ यूथ यूथ मिलि भामिनि ❀ सजि नवसप्त सकलद्युति दामिनि
बिधु बदनी मृग शावक लोचनि ❀ निजस्वरूप रतिमान विमोचनि

फिर सब सुन्दर स्त्रियाँ षोडश शृङ्गार करके; जहाँ-तहाँ झुण्डके झुण्ड आपस में मिलती हैं। जो चन्द्रमुखी हिरन के बच्चेकी-सी आँखें और जो रतिके रूप का मान मर्दन करती थीं ॥

गावहिं मंगल मंजुल बानी ❀ सुनि कलरव कलकंठ लजानी
भूप भवन किमि जाइ बखाना ❀ विश्व विमोचन रचेउ विताना

उनके मंगलगान को सुनकर, कोकिल भी लज्जित हो जाती थी। राजभवन तो बखाना नहीं जा सकता है, जहाँ कि संसार को मोहित करनेवाले मण्डप की रचना हुई थी ॥

मंगल द्रव्य मनोहर नाना ❀ राजत बाजत विपुल निसाना
कतहुँ विरद बन्दी उच्चरहीं ❀ कतहुँ वेद धुनि भूसुर करहीं

अनेक प्रकार के मांगलिक द्रव्य सजाये गए जो, बजते हुए बाजोंके बीच शोभायमान हो रहे थे। कहीं बन्दीजन वंश का वर्णन करते, तो कहीं ब्राह्मण वेद-ध्वनि कर रहे थे ॥

गावहिं सुन्दरि मंगल गीता ❀ लै लै नाम राम अरु सीता
बहुत उछाह भवन अति थोरा ❀ मानहुँ उमँगि चला चहुँ ओरा

सुन्दरियाँ राम-सीता का नाम ले-लेकर मांगलिक गीत गाती थीं। उस महान् उत्सव के आगे राज-भवन अत्यन्त छोटा था--इससे वह मानों उमँड़ कर चारों ओर से बह चला ॥

दोहा—शोभा दशरथ भवनकी, को कवि बरणै पार।
जहाँ सकल सुर शीशमनि, राम लीन्ह अवतार ॥३०८॥

जिसमें सब देवताओं के शिरोमणि श्रीरामचन्द्रजीने अवतार लिया था, ऐसे महाराज दशरथ के राजभवनकी शोभा का वर्णन कर कौन कवि पार पा सकता है ? ॥ ३०८ ॥

भूप भरत पुनि लिये बुलाई ❀ हय गय स्यंदन साजहु जाई
चलहु बेगि रघुबीर बराता ❀ सुनत पुलक पूरे दोउ भ्राता

फिर राजा दशरथ ने भरत को बुलवाया और कहा कि, जाकर हाथी-घोड़े और रथों को सजाकर बारात को शीघ्र ले चलो। यह सुन दोनों भाई प्रेम से पुलकित हो गये ॥ २ ॥

भरत सकल साहनी बुलाए ❀ आयसु दीन्ह मुदित उठि धाए
रचि रचि जीन तुरँग तिन्ह साजे ❀ वर्ण वर्ण वर बाजि बिराजे

फिर भरतजीने सब सेनापतियोंको बुलाकर आज्ञा दी, वे प्रसन्न हो उठ दौड़े और रच-रच कर वर्ण-वर्ण के घोड़ों पर जैसी जीन चाहिये थीं; सजा दीं ॥ ४ ॥

सुभग सकल सुठि चञ्चल करणी ❀ अय इव जरत धरत पग धरणी
नाना जाति न जाहिं बखाने ❀ निदरि पवन जनु चहत उड़ाने

वे सब बड़े सुन्दर चंचल घोड़े, जिनका पृथ्वी पर पाँव नहीं पड़ता था। वर्णन नहीं किए जाते, मानों वायुका निरादर कर उड़ना चाहते हैं ॥ ६ ॥

तिन पर छयल भये असवारा ❀ भरत सरिस सब राजकुमारा
सब सुन्दर सब भूषण धारी ❀ कर शर चाप तूण कटि भारी

उनपर भरतके समान आयुवाले, जितने सुन्दर बालक थे सवार हुए। जो सुन्दर वस्त्राभूषण धारण किए, हाथमें धनुषबाण लिए हुए और कमरमें भारी तरकस बाँधे हुए थे ॥ ८ ॥

दोहा—छरे छबीले छैल सब, सूर सुजान नवीन।
युग पदचर असवार प्रति, जे असि-कला प्रवीन ॥३०९॥

उन सब छँटे हुए सुन्दर छवि वाले, 'चतुर' नवीन, एक-एक वीरके साथ दो-दो पैदल सिपाही, जो कि तलवार चलानेकी कलामें पूरे चतुर थे, नियुक्त हुए ॥ ३०९ ॥

बाँधे विरद वीर रण गाढ़े ❀ निकसि भये पुर बाहर ठाढ़े
फेरहिं चतुर तुरँग गति नाना ❀ हरषहिं धुनि सुनि पणव निसाना

वे रण बाँकुरे वीर, मानों किसी गाढ़े संग्रामका बाना बाँधे हुए, नगरके द्वारपर निकल कर खड़े हैं ॥ वे चतुर घोड़ोंके सवार पणव आदि डंकेकी चोट सुनकर प्रसन्न हो रहे थे ॥

रथ सारथिन विचित्र बनाए ❀ ध्वज पताक मणि भूषण लाए
चमर चारु किंकिणि धुनि करहीं ❀ भानु-यान-शोभा अपहरहीं

सारथियोंने भी रथोंको ध्वजा, पताका, मणियोंसे बने आभूषणों द्वारा विचित्र प्रकारसे ऐसे बना दिया। जिन पर सुन्दर चँवर बँधे थे और किंकिणी बज रही थीं, इससे वे मानों सूर्यके रथकी शोभाको छीन रहे थे ॥४॥

श्यामकर्ण अगणित हय होते ❀ ते तिन्ह रथन सारथिन जोते
सुन्दर सकल अलंकृत सोहें ❀ जिनहिं विलोकत मुनि मन मोहें

अनगिनती श्यामकर्ण बछेड़ोंको सारथियोंने रथोंमें जोता ॥ ५ ॥ सभी घोड़े सुन्दर भूषणालंकृत थे कि, जिन्हें देखकर मुनियोंका भी मन मोहित हो जाता था ॥ ६ ॥

जे जल चलहिं थलहिं की नाईं ❀ टाप न बूड़ बेग अधिकाईं
अस्त्र शस्त्र सब साज सजाई ❀ रथी सारथिन लिए बुलाई

वे जलमें भी चलते तो मालूम होता कि पृथ्वीपर ही चल रहे हैं, उनके वेगसे चलने के कारण उनकी टाप नहीं डूबती थी ॥ रथियोंने सब अस्त्र-शस्त्रोंको सजाकर सारथियोंको बुलाया ॥

दोहा—चढ़ि चढ़ि रथ बाहर नगर, लागी जुरन बरात।
होहिं सगुन सुन्दर सबहिं, जो जेहि कारज जात ॥३१०॥

और रथों तथा हाथियों पर चढ़-चढ़कर, नगरके बाहर बारात इकट्ठी होने लगी ॥ इस प्रकार जो जिस कार्यसे जाता, उन सबको सुन्दर शकुन होने लगे ॥ ३१० ॥

कलित करिवरन्हि परी अँवारी ❀ कहि न जाइ जेहि भाँति सँवारी
चले मत्त गज घंट बिराजे ❀ मनहुँ सुभग सावन घन गाजे

हाथियों पर ऐसे सुन्दर हौदे पड़े थे कि, वर्णन नहीं हो सकता ॥१॥ चले तो घण्टोंके बजनेसे ऐसा शब्द उत्पन्न होता था, मानों सावनके बरसने वाले बादल गरज रहे हैं ॥२॥

बाहन अपर अनेक बिधाना ❀ शिविका सुभग सुखासन याना
तिन चढ़ि चले बिप्रवर बृन्दा ❀ जनु तनु धरे सकल श्रुति छन्दा

और भी अनेक प्रकारकी सवारियाँ जैसे—सुन्दर पालकी, सुखपाल और विमान आदि हैं ॥ उन पर ब्राह्मणोंका समूह चढ़ कर ऐसे चला, मानों शरीर धारण किए वेद चल रहे हैं ॥

मागध सूत बन्दि गुण गायक ❀ चले यान चढ़ि जो जेहि लायक
बेसर ऊँट वृषभ बहु जाती ❀ चले वस्तु भरि अगणित भाँती

मागध, सूत और गुणोंके गाने वाले बन्दीजन जो जिस योग्य थे, वे वैसी सवारियों पर चढ़कर चले । बहुत जातिके पशु अनेक प्रकारकी वस्तुयें अपने ऊपर लेकर चले ॥

कोटिन्ह काँवरि चले कँहारा ❀ बिबिध बस्तु को बरणै पारा
चले सकल सेवक समुदाई ❀ निज-निज साज समाज बनाई

करोड़ों कहार भी अपनी बँहगियोंमें, सब प्रकारकी वस्तुओंको भरकर ले चले जिनका वर्णन नहीं होता । समस्त सेवकोंका समुदाय भी, अपने २ समाजका साज बनाकर चला ॥८॥

दोहा—सबके उर निर्भर हरष, पूरित पुलक शरीर ।
कबहिं देखिबे नयन भरि, राम-लषन दोउ बीर ॥३११॥

सबके हृदयमें परम हर्ष है, शरीर इस प्रसन्नतासे पूर्ण है कि, कब चलकर राम-लक्ष्मण दोनों वीरोंको आँख भरकर देखेंगे ॥ ३११ ॥

गर्जहिं गज-घंटा-धुनि घोरा ❀ रथ रव बाजि हिंस चहुँ ओरा
निदरि घनहिं घुम्मरहिं निसाना ❀ निजपराय कछु सुनिय न काना

हाथियोंकी चिल्लाहट, गज घंटोंकी ध्वनि और रथोंकी घरघराहटका शब्द चारों ओर फैल गया । नगाड़ोंकी घोर ध्वनिसे अपना और पराया कुछ भी कानोंसे सुनाई नहीं पड़ता था ॥

महा भीर भूपति के द्वारे ❀ रज होइ जाय पषान पँवारे
चढ़ी अटारिन देखहिं नारीं ❀ लिये आरती मंगल थारीं

राजाके द्वार पर बड़ी भारी भीड़ हो गई, पत्थर डालो तो धूल हो जाये ॥३॥ अटारियों पर चढ़ी हुई स्त्रियाँ आरतीके मंगल थाल लिए, बारातका उत्सव देख रही हैं ॥ ४ ॥

गावहिं गीत मनोहर नाना ❀ अति आनन्द न जाइ बखाना
तब सुमन्त्र दुइ स्यन्दन साजी ❀ जोते रवि-हय-निंदक बाजी

स्त्रियाँ नाना प्रकार के मनोहर गीत गा रही थीं, उस अत्यन्त आनन्द को बखाना नहीं जा सकता ।। तब सुमन्तने दो रथ सजाये, जो सूर्यके रथको भी लजानेवाले थे ।। ६ ।।

दोउ रथ रुचिर भूप पहिं आने ❀ नहिं शारद पहिं जाहिं बखाने
राज-समाज एक रथ साजा ❀ दूसर तेज पुञ्ज अति भ्राजा

फिर उन दोनों सुन्दर रथोंको राजा दशरथके पास ले आये, जिनकी सुन्दरता सरस्वती भी नहीं कह सकतीं ।। जिसमें एक तो राज समाज के योग्य था और दूसरा जो तेजका समूह था ।।८।।

दोहा—तेहि रथ रुचिर बसिष्ठ कहँ, हरषि चढ़ाइ नरेश ।
आपु चढ़ेउ स्यंदन सुमिरि, हर-गुरु गौरि गणेश ।।३१२।।

उस सुन्दर रथ पर राजा दशरथने, पहले गुरु वशिष्ठको हर्षित होकर चढ़ाया और फिर श्रीमहादेवजी, गुरुजी, पार्वतीजी और गणेशजीको स्मरण कर स्वयं भी जा चढ़े ।। ३१२ ।।

सहित बसिष्ठ सोह नृप कैसे ❀ सुर गुरु संग पुरंदर जैसे
करि कुल रीति वेद विधि राऊ ❀ देखि सबहिं सब भाँति बनाऊ

उस समय गुरुवर वसिष्ठ सहित राजा दशरथ, बृहस्पति सहित इन्द्रके समान शोभायमान हो रहे थे ।। इस प्रकार वेद विधिसे कुलकी सब रीतियाँ कर, राजाने सब सजावटको देखा ।।

सुमिरि राम गुरु आयसु पाई ❀ चले महीपति शंख बजाई
हर्षे विबुध बिलोकि बराता ❀ बरषहिं सुमन सुमंगल दाता

श्रीरामचन्द्रजीका स्मरण कर और गुरुसे आज्ञा लेकर, राजा दशरथ शंख बजाकर चले। बारातको देखकर देवता प्रसन्न हो, सुन्दर आनन्द देनेवाले पुष्पोंकी वर्षा करने लगे ।४।।

भयउ कोलाहल हय गज गाजे ❀ ब्योम बरात बाजने बाजे
सुर-नर-नारि सुमंगल गाई ❀ सरस राग बाजहिं सहनाई

फिर हाथी और घोड़ोंके गर्जन और बाजोंके बजनेसे, आकाशमें बड़ा कोलाहल शब्द उत्पन्न हुआ ।। देवलोकके स्त्री-पुरुष भी मंगल गाने लगे और सरस रागसे शहनाई बजने लगी ।।६।।

घंट घंटि धुनि बरणि न जाई ❀ सरवँ करहिं पायक फहराई
करहिं विदूषक कौतुक नाना ❀ हास कुशल कलगान सुजाना

घंटे और घंटियोंके शब्द बखाने नहीं जाते, पायकगण झंडियोंको फहराते हुए पटेबाजी करते जाते । विदूषकगण हँसी करते और राजाका यश गाते हुए नकलें कर रहे थे ।।८।।

दोहा—तुरँग नचावहिं कँवर वर, अकनि मृदंग निशान ।
नागर नट चितवहिं चकित, डिगहिं न ताल बँधान ।।३१३।।

श्रेष्ठ राजकुमार अपने घोड़ोंको मृदङ्गकी थपकियों पर इस प्रकार नचाते कि, जिन्हें चतुर नट चकित होकर देखते रह जाते; परन्तु वे घोड़े तालके ठेकेसे कहीं नहीं डिगते थे ।।३१३।।

बनै न बरनत बनी बराता ❀ होहिं सगुन सुन्दर शुभदाता
चारा चाखु वाम दिशि लेई ❀ मनहुँ सकल मंगल कहि देई

बारातका जैसा बनाव हुआ था वह बखानते नहीं बनता, शुभदायक सुन्दर शकुन हो रहे थे। बायीं ओर नीलकण्ठ चारा ले रहा था, मानों समस्त मंगलोंको कहे दे रहा था ॥

दाहिन काग सुखेत सुहावा ❀ नकुल दरस सब काहू पावा
सानुकूल बह त्रिबिध बयारी ❀ सघट सबाल आब वर नारी

और दाहिनी ओर अच्छे खेतमें बैठे हुए, कौवे और न्योलेका दर्शन मिला ॥ अनुकूल वायु बहने लगा और सुहागिन स्त्रियाँ बालक सहित, जलका घड़ा लिए चलीं आ रही थीं ॥

लोआ फिरिफिरि दरश दिखावा ❀ सुरभी सनमुख शिशुहिं पिआवा
मृग माला दाहिन दिशि आई ❀ मंगल गण जनु दीन्ह दिखाई

लोमड़ी बारम्बार दिखाई पड़ी, सामने ही सुन्दर गौ बछड़ेको दूध पिला रही थी ॥ और दाहिनी दिशामें मृगोंकी कतार चली आई, जो सर्व मंगलोंको दिखाए दे रही थी ॥६॥

क्षेमकरी कह क्षेम विशेखी ❀ श्यामा बाम सुतरु पर देखी
सनमुख आयहु दधि अरु मीना ❀ कर पुस्तक दुइ विप्र प्रवीना

क्षेमकरी नामक पक्षी कुशल-क्षेम कह रही थी, श्यामा चिड़िया बाईं ओर अच्छे वृक्ष पर बैठी हुई दिखाई पड़ी। सामनेही दही और मछली आये, हाथ में पुस्तक लिए दो ब्राह्मण भी आये ॥

दोहा—मंगलमय कल्यानमय, अभिमत फल दातार।
जनु सब साँचे होनहित, भये शकुन इक बार ॥ ३१४ ॥

वे समस्त मंगलमय और कल्याणमय, इच्छित फल देनेवाले सब शकुन; मानों सत्य होनेके लिए एक साथ ही उत्पन्न हो गये ॥ ३१४ ॥

मंगल शकुन सुगम सब ताके ❀ सगुण ब्रह्म सुन्दर सुत जाके
राम सरिस वर दुलहिन सीता ❀ समधी दशरथ जनक पुनीता

सभी शकुन सुन्दर और मंगलदायक हुए, क्योंकि श्रीरामचन्द्रजी सरीखे वर एवं सीताजी सरीखी दुलहिन और राजा दशरथ तथा जनक जैसे पवित्र समधी थे ॥ २ ॥

सुनि अस ब्याह शकुन सब नाचे ❀ अब कीन्हे विरंचि हम साँचे
यहि विधि कीन्ह बरात पयाना ❀ हय गय गाजहिं हने निसाना

ऐसे व्याहको सुनकर सभी शकुन अपने मनमें नाच उठे कि, आज ब्रह्माने हमें सत्य कर दिया ॥३॥ इसी प्रकार हाथी-घोड़े और गाजे-बाजे सहित बारातने प्रस्थान किया ॥४॥

आवत जानि भानुकुल केतू ❀ सरितन्ह जनक बँधाये सेतू
बीच-बीच वर बास बनाए ❀ सुरपुर सरिस संपदा छाए

सूर्यवंशकी ध्वजा श्रीमहाराज दशरथजीको आते हुए जानकर, राजा जनकजीने नदियों पर पुल बँधवा दिये और बीच-बीचमें ठहरनेके लिए, स्वर्गसे सुन्दर वास-स्थान बनवा दिये थे ॥६॥

अशन शयन वर बसन सुहाये ❀ पावहिं सब निज-निज मन भाये
नित नूतन सुख लहि अनुकूले ❀ सकल बरातिन मन्दिर भूले

जिसमें सबलोग श्रेष्ठ भोजन पलंग और सुन्दर वस्त्र अपने २ मनमाने पाते चले आ रहे हैं। इस प्रकार नित्य ही नवीन सुख प्राप्तकर समस्त बारातियोंको घरकी सुधि भूल गई।।८।।

दोहा—आवत जानि बरात वर, सुनि गहगहे निशान।
सजि गजरथ पदचर तुरँग, लेन चले अगवान ।।३१५।।

इधर जब जनकपुर वासियोंने सुना कि, वह श्रेष्ठ सुन्दर बारात अपने हाथी-घोड़ों और पैदल सेना सहित डंका बजाती हुई आ रही है; तब सब लोग अगवानी करने चले ।।३१५।।

कनक-कलश कल कोपर थारा ❁ भाजन ललित अनेक प्रकारा
भरे सुधासम सब पकवाना ❁ भाँति-भाँति नहिं जाय बखाना

सोनेके कलश तथा उत्तम थाल और झारी आदि बहुत भाँतिके सुन्दर पात्र। जिनमें तरह-तरह के अमृतके-से स्वादयुक्त पक्वान्न भरे थे, जो बखाने नहीं जाते ।। २ ।।

फल अनेक वर वस्तु सुहाई ❁ हरषि भेंट हित भूप पठाई
भूषण बसन महामणि नाना ❁ खग मृग हय गज बहु विधि याना

फिर अनेक प्रकारकी उत्तम वस्तुयें, महाराज दशरथकी भेंटके लिए राजा जनकने पठाईं। बहुतसे आभूषण, वस्त्र, श्रेष्ठ मणियाँ, मृग, हाथी, घोड़े और भाँति-भाँतिकी सवारियाँ ।।४।।

मंगल सगुन सुगन्ध सुहाये ❁ बहुत भाँति महिपाल पठाये
दधि चिउरा उपहार अपारा ❁ भरि-भरि काँवरि चले कँहारा

इस प्रकारकी मांगलिक बहुत भाँतिकी सुगंधित वस्तुओंको जनकजीने भेजा था ।। ५ ।। कहार लोग दही, चिउड़ा आदि सामग्रियोंको बहँगियोंमें भर-भरकर ले चले ।। ६ ।।

अगवानिन जब देखि बराता ❁ उर आनन्द पुलक भर गाता
देखि बनाव सहित अगवाना ❁ मुदित बरातिन हने निशाना

जब अगवानियोंने बारातको देखा तो उनके हृदयमें आनन्द, शरीर पुलकसे छा गया। अगवानियों को ठाट सहित देख, अयोध्याके बारातियोंने प्रसन्न होकर जोर-जोरसे अपने डंके बजाये ।।८।।

दोहा—हरषि परस्पर मिलन हित, कछुक चले बगमेल।
जनु आनन्द समुद्र दुइ, मिलत बिहाइ सुबेल ।।३१६।।

तब बारातियोंमें-से कुछ लोग अपने घोड़ोंकी लगाम ढीली करके, एक-दूसरेसे मिलनेके लिए ऐसे आगे बढ़े मानों, अपनी मर्यादाको छोड़कर दो समुद्र आपसमें मिल रहे हों ।। ३१६ ।।

बरषि सुमन सुर सुन्दरि गावहिं ❁ मुदित देव दुन्दुभी बजावहिं
वस्तु सकल राखी नृप आगे ❁ विनयकीन्ह तिन्ह अति अनुरागे

देवताओंकी स्त्रियाँ फूल बरसाकर मंगल गाती थीं, दुन्दुभियाँ बज रही थीं। दशरथजी के आगे सब सामाग्री लेजाकर सबने रखी और प्रेमानुरागसे विनय किया ।। २ ।।

प्रेम समेत राउ सब लीन्ही ❁ बहु बकशीस याचकन्ह दीन्ही
करि पूजा मान्यता बड़ाई ❁ जनवासे कहँ चले लिवाई

तब राजा दशरथने प्रेम सहित उन सब वस्तुओंको ले, पुरस्कारमें याचकोंको दे दिया। फिर द्वारपूजा कर, दशरथजीको सम्मान सहित जनवासेमें ले जाकर पहुँचाया ।। ४ ।।

वसन विचित्र पाँवड़े परहीं ❀ नृप दशरथ तापर पग धरहीं
देखि धनद धनमद परिहरहीं ❀ बरषि सुमन सुर जय-जय करहीं

जहाँ विचित्र वस्त्र (पाँवड़े) बिछाये जाते थे और राजा दशरथ उनपर अपने पैर धरते थे। जिन्हें देखकर कुबेर भी अपने धनके अभिमानको त्याग दिए, देवता लोग फूलों की वर्षा कर जय-जयकार करते थे ।। ६ ।।

अति सुन्दर दीन्हेउ जनवासा ❀ जहँ सब कहँ सब भाँति सुपासा
जानी सिय बरात पुर आई ❀ कछु निज महिमा प्रगट जनाई

जहाँ सब प्रकारका सुपास था, ऐसे अत्यन्त सुन्दर स्थानमें जनवासा दिया गया। सीताजीने बरातको आई हुई जानकर, कुछ अपनी मायाको भी प्रकट कर जतला दिया ।।८।।

हृदय सुमिरि सब सिद्धि बोलाई ❀ भूप पहुनई करन पठाई

सब सिद्धियोंको हृदयमें स्मरण कर कह दिया कि, राजाकी पहुनाई करो ।।९।।

दोहा—सिधि सब सिय आयसु अकनि, गईं जहाँ जनवास।
लिये संपदा सकल सुख, सुरपुर भोग बिलास ।।३१७।।

इस प्रकार सीताजीकी आज्ञा सुनकर, सब सिद्धियाँ स्वर्गका-सा सारा सुखभोग और सारी संपदाको लेकर जनवासेमें गईं तथा समस्त सुखोंको उपस्थित कर दिया ।। ३१७ ।।

निज-निज बास बिलोकि बराती ❀ सुरसुख सकल सुलभ सब भाँती

तब अपने २ निवास स्थानको देखकर बरातियोंको सब देव-सुख सुलभ होने लगा ।।

बिभव भेद कछु कोउ न जाना ❀ सकल जनक कर करहिं बखाना
सिय महिमा रघुनायक जानी ❀ हरषे हृदय हेतु पहिचानी

उस ऐश्वर्यका कोई भेद न जान सका, सब जनवासेके सुख की ही प्रशंसा करने लगे। श्रीरामचन्द्रजी सीताजीकी महिमा जान और हेतुको पहिचानकर हृदयमें प्रसन्न हुए ।।३।।

पितु आगमन सुनत दोउ भाई ❀ हृदय न अति आनन्द समाई
सकुचन्ह कहि न सकत गुरु पाहीं ❀ पितु दरसन लालच मन माहीं

फिर पिताजीका आगमन सुनकर, दोनों भाई बहुतही प्रसन्न हुए ।। ४ ।। संकोचके मारे गुरु विश्वामित्रसे कह नहीं सकते थे, परन्तु पिताजीके दर्शनकी मनमें बड़ी लालसा थी ।।५।।

विश्वामित्र विनय बड़ि देखी ❀ उपजा उर संतोष विशेखी

तब उनकी बड़ी विनम्रताको देख विश्वामित्रजीके हृदयमें विशेष सन्तोष उत्पन्न हुआ ।।

हरषि बन्धु दोउ हृदय लगाये ❀ पुलकित अंग अंग जल छाये
चले जहाँ दशरथ जनवासे ❀ मनहुँ सरोवर तके पियासे

उन्होंने प्रसन्न होकर दोनों भाइयोंको हृदय से लगा लिया, शरीर पुलकित हो गया, नेत्रों में आँसू आ गए। फिर जहाँ जनवासा था, वहाँ दशरथजीके पास चले ॥ ८ ॥

दोहा—भूप विलोके जबहिं मुनि, आवत सुतन समेत।
उठे हरषि सुख सिन्धु महँ, चले थाह सी लेत ॥३१८॥

इधर जब राजा दशरथने, मुनि विश्वामित्रको पुत्रों सहित आते देखा। तो प्रसन्न हो उठ कर ऐसे चले मानों, कोई सुखके समुद्रमें थाह-सी लेता चला हो ॥३१८॥

मुनिहिं दण्डवत कीन्ह महीशा ❀ बार-बार पदरज धरि शीशा
कौशिक राउ लिये उर लाई ❀ कहि अशीश पूछी कुशलाई

तब महाराज दशरथने मुनि श्रेष्ठ विश्वामित्रकी पदधूलिको शिर पर रख दण्डवत् प्रणाम किया ॥१॥ विश्नामित्रने राजा को हृदयसे लगाकर आशीर्वाद देते हुए कुशल-क्षेम पूछा ॥२॥

पुनि दण्डवत करत दोउ भाई ❀ दीख नृपति उर सुख न समाई
सुत उर लाइ दुसह दुख मेंटे ❀ मृतक शरीर प्राण जनु भेंटे

फिर दोनों भाइयोंको दण्डवत् करते हुए देखकर राजा अत्यन्त सुखी हुये ॥ और पुत्रों को हृदयसे लगाकर अपने दुःसह दुःखको मिटा दिए, जैसे मृतक शरीरमें प्राण आ गये हों ॥

पुनि वसिष्ठ पद शिर तिन्ह नाये ❀ प्रेम मुदित मुनिवर उर लाये
विप्र—वृन्द बन्दे दोउ भाई ❀ मन भावती असीसें पाई

फिर राम-लक्ष्मणने वसिष्ठजीके चरणोंमें शिर झुकाया, तो वसिष्ठजीने हृदयसे लगा लिया ॥ पश्चात् दोनों भाइयोंने ब्राह्मणोंकी वन्दना की और मनभावती आशिषें पाईं ॥६॥

भरत सहानुज कीन्ह प्रणामा ❀ लिये उठाइ लाइ उर रामा
हरषे लषण देखि दोउ भ्राता ❀ मिले प्रेम परिपूरित गाता

फिर शत्रुघ्न सहित भरतजी ने रामजी को प्रणाम किया, तो रामचन्द्रजी ने उठाकर हृदय से लगा लिया ॥७॥ फिर दोनों भाइयों को देखकर लक्ष्मणजी प्रसन्न हो मिले, उनका शरीर प्रेमसे परिपूर्ण हो गया ॥८॥

दोहा—पुरजन परिजन जाति जन, याचक मंत्री मीत।
मिले यथाविधि सबहिं प्रभु, परम कृपालु विनीत ॥३१९॥

फिर परम कृपालु विनीत श्रीरामचन्द्रजी नगरवासी, कुटुम्बी, जातिके लोग, याचक, सब मन्त्री और मित्रोंसे जैसा चाहिए था, उन सब से उस प्रकार से मिले ॥ ३१९ ॥

रामहिं देखि बरात जुड़ानी ❀ प्रीति कि रीति न जाइ बखानी
नृप समीप सोहत सुतचारी ❀ जनु धन धर्मादिक तनु धारी ॥

श्रीरामचन्द्रजीको देख बरातियोंका हृदय शीतल हो गया, उस प्रीतिकी रीति को बखाना नहीं जा सकता। राजा दशरथके समीप चारों पुत्र, चार पदार्थके समान शोभायमान हो रहे थे ॥२॥

सुतन्ह समेत दशरथहिं देखी ❀ मुदित नगर नर नारि विशेषी
सुमन बरषि सुर हनहिं निसाना ❀ नाक नटी नाचहिं करि गाना

इस प्रकार पुत्रोंके सहित राजा दशरथको देखकर, जनकपुरके स्त्री-पुरुष बहुत ही प्रसन्न हुए और देवता आकाशसे पुष्प-वर्षाकर, नगाड़े बजाने तथा अप्सरायें नाचने गाने लगीं।

शतानन्द अरु विप्र सचिव गण ❀ मागध सूत विदुष बंदीजन
सहित बरात राउ सनमाना ❀ आयसु माँगि फिरे अगवाना

फिर शतानन्दजी और ब्राह्मण, मंत्रीगण, मागध, भाँट, विदूषक तथा बन्दीजनों ने सारी बारात के सहित महाराज दशरथका आदर-सत्कार कर, आज्ञा लेकर अगवानी कर लौट गये ॥ ६ ॥

प्रथम बरात लगन तें आई ❀ ताते पुर प्रमोद अधिकाई
ब्रह्मानन्द लोग सब लहहीं ❀ बढ़हिं दिवस निशि बिधि सन कहहीं

बारात शुभ लग्न-मुहूर्त से कुछ पहले ही आ गई थी, इससे नगरमें ऐसी प्रसन्नता बढ़ी कि सब ब्रह्मानन्दका सुख पाते हुए; रात-दिनको बढ़ जानेकी ब्रह्माजीसे प्रार्थना करने लगे ॥८॥

दोहा—राम सीय शोभा अधिक, सुकृत अवधि दोउ राज।
जहँ-तहँ पुरजन कहहिं अस, मिलि नरनारि समाज ॥३२०॥

जहाँ-तहाँ नगरके स्त्री-पुरुष झुण्डके झुण्ड आपसमें यह वार्ता करने लगे कि, राम-सीता तो शोभाकी मर्यादा हैं और राजा दशरथ तथा राजा जनकजी ये दोनों पुण्यकी सीमा हैं ॥ ३२० ॥

जनक सुकृत मूरति वैदेही ❀ दशरथ-सुकृत राम धरि देही
इन सम कोउ न शिव अवराधे ❀ कोउ न इन समान फल साधे

श्रीजानकीजी तो जनकजीके पुण्योंकी मूर्ति हैं और दशरथजीके पुण्योंने श्रीरामचन्द्रजीका शरीर धारण कर लिया तथा इनके समान किसीने शिवजीकी आराधना नहीं की है ॥२॥

इन सम कोउ न भयउ जगमाहीं ❀ है नहिं कतहूँ होनेउ नाहीं
हम सब सकल सुकृत की राशी ❀ भये जग जनमि जनकपुरवासी

इनके समान संसारमें दूसरा कोई नहीं उत्पन्न हुआ, न कोई है और न होनेवाला है ॥ हम सब भी समस्त पुण्यकी राशि बन संसारमें उत्पन्न होकर जनकपुरके वासी हुए हैं ॥४॥

जिन जानकी राम छबि देखी ❀ को सुकृती हम सरिस विशेखी
पुनि देखब रघुवीर-विवाहू ❀ लेब भली विधि लोचन लाहू

भला हमारे समान पुण्यशाली और कौन है ? जो राम-जानकीकी शोभाको देखते हैं। और अब श्रीरामचन्द्रजीका विवाह देखकर नेत्रों का लाभ उठावेंगे ॥ ६ ॥

कहहिं परस्पर कोकिल बयनी ❀ यहि विवाह बड़ लाभ सुनयनी
बड़े भाग विधि बात बनाई ❀ नयन अतिथि होइहिं दोउ भाई

इस प्रकार वे कोकिलके समान बोलनेवाली स्त्रियाँ कहने लगीं—हे सुनयनी ! बड़े भाग्यसे ब्रह्माने यह बात बनाई है कि, अब ये दोनों भाई हमारे नेत्रोंके अतिथि होंगे ॥ ८ ॥

दोहा—बारहिं बार सनेहबस, जनक बोलाउब सीय।
लेन आइहहिं बंधु दोउ, कोटि-काम-कमनीय ॥३२१॥

फिर स्नेहके वश राजा जनकजी बार-बार सीताजीको बुलावेंगे ही और तब यह करोड़ों कामदेव की शोभावाले दोनों भाई सीताजीको लेने आवेंगे ।। ३२१ ।।

बिबिध भाँति होइहि पहुनाई ❀ प्रिय न काहि अस सासुर माई
तब-तब राम लषणहिं निहारी ❀ होइहिं सब पुर लोग सुखारी

तब अनेक प्रकारसे इनकी पहुनाई होवेगी, भला ऐसी ससुराल और मैका (मैहर) किसको प्रिय न होगा ? और तब-तब राम-लक्ष्मण को देखकर समस्त पुर के लोग सुखी होवेंगे ।।२।।

सखि जस राम लषण कर जोटा ❀ तैसेइ भूप संग दुइ ढोटा
श्याम गौर सब अंग सुहाए ❀ ते सब कहहिं देखि जे आए

हे सखी ! जैसा राम-लक्ष्मण का जोड़ा है, वैसे ही राजा दशरथ के साथ दो सुन्दर बालक और हैं । दर्शक कहते हैं कि, उनके साँवले और गोरे अंग बड़े ही सुहावने हैं ।।४।।

कहा एक मैं आजु निहारे ❀ जनु बिरंचि निज हाथ सँवारे
भरत रामहीं की अनुहारी ❀ सहसा लखि न सकहिं नरनारी

उनमें-से एक सखीने कहा--मैंने भी देखा है कि, मानों ब्रह्मा ने स्वयं अपने हाथों से बनाया है ।। भरत तो राम ही के अनुरूप हैं, सहसा कोई भी स्त्री-पुरुष उन्हें पहचान नहीं सकता ।।

लषन शत्रुसूदन इक रूपा ❀ नख-शिख ते सब अंग अनूपा
मन भावहिं मुखवरणि न जाहीं ❀ उपमा कहुँ त्रिभुवन कोउ नाहीं

और लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न भी एक ही रूप के हैं, नख से शिखापर्यन्त उनके सभी अङ्ग अनुपम हैं ।। वे मन को ऐसे अच्छे लगते हैं, जिनकी उपमा में त्रिलोक में कोई नहीं है ।।८।।

छन्द—उपमा न कोउ कह दास तुलसी कतहुँ कवि कोविद कहैं ।
बल विनय विद्या शील शोभा सिन्धु इन्हसे एइ अहैं ।।
पुरनारि सकल पसारि अञ्चल बिधिहिं बचन सुनावहीं
ब्याहिअहुँ चारिउ भाइ यहि पुर हम सुमंगल गावहीं ।।३५।।

श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं कि इनकी उपमा के लिए कहीं भी कोई नहीं है । बल, विनय, विद्या और शील तथा शोभा के समुद्र, इनके समान यदि कोई है तो ये ही हैं ।। नगर की स्त्रियाँ आँचल पसारकर विधातासे यही विनती करती हैं कि, हे विधाता ! इन चारों भाइयोंका ब्याह इसी नगर में हो और हम सब मंगल गावें ।। ३५ ।।

सोरठा—कहहिं परस्पर नारि, वारि बिलोचन पुलकि तन ।
सखि सब करब पुरारि, पुण्य पयोनिधि भूप दोउ ।।३९।।

स्त्रियाँ नेत्रोंमें जल भरकर और शरीर से पुलकायमान हो आपस में यही कहती हैं कि, हे सखी ! महादेवजी सब कुछ ठीक करेंगे, क्योंकि दोनों ही राजा पुण्य के समुद्र हैं ।।३९ ।

इहि विधि सकल मनोरथ करहीं ❀ आनँद उमँगि-उमँगि उर भरहीं
जे नृप सीय स्वयंबर आए ❀ देखि बन्धु सब तिन सुख पाए

इस प्रकार सब अपनी इच्छाको प्रगट करती हुईं उमगते हुए आनंदसे हृदय भर ले रही हैं।।१।। इधर जितने राजा सीताजी के स्वयम्बर में आये थे वे सब भाइयों को देखकर सुखी हुए ।। २ ।।

कहत राम यश विशद विशाला ❁ निज-निज भवन गए महिपाला
गये बीति कछु दिन एहि भाँती ❁ प्रमुदित पुरजन सकल बराती

फिर रामचन्द्रजी का पवित्र यश वर्णन करते हुए सब राजा अपने-अपने स्थानको चले गये । इस प्रकार बारातियों और पुरजनों के सम्मिलित आनन्द में कुछ दिन बीत गये ।।

मंगल मूल लगन दिन आवा ❁ हिम ऋतु अगहन मास सुहावा
ग्रह तिथि नखत योग वर बारू ❁ लगन शोधि विधि कीन्ह विचारू

तब वह विवाह-लग्न जो हेमन्त ऋतु और शोभायमान अगहन के महीने में पड़ी थी ।। उसके ग्रह, तिथि, नक्षत्र और उत्तम योग, दिन और मुहूर्त पर ब्रह्माजीने विचार किया ।।

पठै दीन्ह नारद सन सोई ❁ गनी जनकके गणकन जोई
सुनी सकल लोगन यह बाता ❁ कहहिं ज्योतिषी अपर विधाता

और उसे नारदजीके द्वारा जनकजीके पास भेज दिया, वही लग्न जनकके ज्योतिषियोंने निश्चित कर रक्खा था ।। तब यह सुनकर सबने कहा ठीक ही है, ज्योतिषी एक दूसरे विधाता होते हैं ।।

दोहा—धेनु धूरि बेला विमल, सकल सुमंगल मूल ।
विप्रन कहेउ विदेह सन, जानि समय अनुकूल ।।३२२।।

तब उस पवित्र गोधूलि के निर्मल समय को सब प्रकार के सुन्दर मङ्गलों का मूल और लग्न के अनुकूल समय जानकर ब्राह्मणों ने राजा जनक से कहा ।। ३२२ ।।

उपरोहितहिं कहेउ नरनाहा ❁ अब बिलंब कर कारण काहा
शतानन्द तब सचिव बोलाए ❁ मंगल कलश साजि सब लाए

उसे सुनते ही जनकने अपने पुरोहित से कहा कि, अब विलम्ब करने का क्या कारण है ? ।। तब शतानन्द ने मन्त्रियों को बुलाया तो वे सब मंगल कलश सजाकर ले आये ।।२।।

शंख निशान पणव बहु बाजे ❁ मंगल कलश शकुन सब साजे
सुभग सुबासिनि गावहिं गीता ❁ करहिं वेद धुनि विप्र पुनीता

फिर तो शङ्ख, नगाड़े, ढोल आदि अनेक बाजे बजने लगे और शुभ शकुनके कलश सजाये गये । सुन्दर सुहागिन स्त्रियाँ गीत गाने लगीं और पवित्र ब्राह्मण वेद-ध्वनि करने लगे ।।

लेन चले सादर यहि भाँती ❁ गये जहाँ जनवास बराती
कोशलपति कर देखि समाजू ❁ अतिलघु लाग तिन्हहिं सुरराजू

इस प्रकार पुरोहितजी सबको साथ लेकर जनवासेमें गए और कोशलपति महाराज दशरथके समाजको देखकर उन्हें देवराज इन्द्र भी अत्यन्त तुच्छ दीखने लगे ।। ६ ।।

भयउ समय अब धारिय पाऊ ❁ यह सुनि परा निसानन्हि घाऊ
गुरुहिं पूछि करि कुल विधि राजा❁ चले संग मुनि साधु समाजा

अब समय हो गया है, चरण पधारिए, यह सुनते ही नगाड़े बजने लगे ।। तब राजा दशरथने गुरुसे पूछकर अपने कुलकी समस्त रीतियाँ कीं और अपने समाज सहित चले ।।८।।

दोहा—भाग्य विभव अवधेशकर, देखि देव ब्रह्मादि ।
लगे सराहन सहसमुख, जानि जनम निजवादि ।।३२३।।

अवध नरेश महाराज दशरथके उस भाग्य ऐश्वर्यको देखकर ब्रह्मादिक देवता और हजारों मुखसे शेषजी उनको प्रशंसा करने लगे, साथही उन्होंने अपने जन्मको व्यर्थ माना ।।३२३।।

सुरन सुमंगल अवसर जाना ❀ बरषहिं सुमन बजाइ निशाना
शिव-ब्रह्मादिक विबुध बरूथा ❀ चढ़े विमानन्हि नाना यूथा

फिर तो उस मंगल समयको जानकर देवता नगाड़े बजाकर आकाशसे पुष्प-वृष्टि करने लगे । शिव और ब्रह्मादिक देवताओंने भाँति-भाँतिके अनेक समूहसे विमानोंमें बैठकर ।।२।।

प्रेम पुलक तन हृदय उछाहू ❀ चले विलोकन राम विवाहू
देखि जनकपुर सुर अनुरागे ❀ निज-निज लोक सबहिं लघुलागे

सबलोग शरीर और हृदयमें प्रेम और उत्साह लिए श्रीरामचन्द्रजीका विवाह देखने चले । जनकपुरको देखकर देवताओंको अनुराग हुआ तथा उन सबको अपने२ लोक छोटे लगे ।।४।।

चितवहिं चकित विचित्र विताना ❀ रचना सकल अलौकिक नाना
नगर नारि नर रूप-निधाना ❀ सुघर सुधर्म सुशील सुजाना

वे चकित चित्तसे देखते हैं तो मण्डप बड़ाही विचित्र और सभी रचनायें भी अलौकिक हैं । नगरके स्त्री-पुरुष रूपके निधान और अपने सुन्दर धर्मको भली-भाँति जाननेवाले हैं ।।

तिन्हहिं देखि सब सुरपुर नारी ❀ भये नखत जनु विधि उँजियारी
विधिहिं भयउ आश्चर्य विशेषी ❀ निज करणी कछु कतहुँ न देखी

उन सबको देखकर स्वर्गपुरीकी स्त्रियोंकी ऐसी शोभा हुई कि, जैसी चन्द्रमाके आगे तारागणोंकी शोभा होती है ।।७।। उस रचनाको देख ब्रह्माजीको बड़ा आश्चर्य हुआ तथा उन्होंने अपनी करनी कहीं भी न देखी ।। ८ ।।

दोहा—शिव समुझाए देव सब, जनि आश्चर्य भुलाहु ।
हृदय विचारहु धीर धरि, सिय-रघुवीर-विवाहु ।।३२४।।

तब श्रीशिवजीने समस्त देवताओंको समझाकर कहा—इस आश्चर्यमें मत भूलो और हृदय में धैर्य धारणकर इसपर विचार करो । कि यह उन सीता और रामका विवाह है ।।३२४।।

जेहिकर नाम लेत जगमाहीं ❀ सकल अमंगल मूल नशाहीं
करतल होहिं पदारथ चारी ❀ ते सियराम कहेउ कामारी

और श्रीमहादेवजीने कहा—संसारमें जिनका नाम लेनेसे समस्त अमंगलोंके मूलका नाश हो जाता है और सहज ही-में चारों पदार्थ हाथके नीचे रहते हैं, ये वही सीतारामजी हैं— ।। २।।

यहि विधि शंभु सुरन समुझावा ❀ पुनि आगे बर बसह चलावा
देवन देखे दशरथ जाता ❀ महामोद मन पुलकित गाता

इस प्रकार देवताओंको समझाकर फिर शिवजीने अपने श्रेष्ठ बैल को आगे चलाया ।। उधर देवताओंने देखा कि दशरथजी महाप्रसन्न मन और पुलकित शरीर चले जा रहे हैं ।।

साधु समाज संग महिदेवा ❀ जनु तनु धरे करहिं सुर सेवा
सोहत साथ सुभग सुत चारी ❀ जनु अपवर्ग सकल तनु धारी

उनके साथमें सन्तोंका समाज और भूदेव ब्राह्मण जा रहे हैं मानों देवताही उनकी सेवा कर रहे हैं। राजाके चारों पुत्र भी ऐसे ही शोभायमान हैं मानों चारों मुक्ति ही शरीर धारण किए हों ।।

मरकत कनक बरण बर जोरी ❀ देखि सुरन भई प्रीति न थोरी
पुनि रामहिं बिलोकि हिय हरषे ❀ नृपहिं सराहि सुमन तिन्ह बरषे

उस जोड़ीको देखकर देवताओंके हृदयमें प्रीति उत्पन्न हुई । रामचन्द्रजीको देखकर वे बहुत प्रसन्न हुए और राजाके भाग्यकी बड़ाई करते हुए उनपर फूल बरसाने लगे ।।८।।

दोहा—रामरूप नखशिख सुभग, बारहिं बार निहारि ।
पुलकगात लोचन सजल, उमा समेत पुरारि ।।३२५।।

तब इस प्रकार श्रीरामचन्द्रजीको नखसे शिखा पर्यन्त बारम्बार देखते हुए पार्वतीके सहित श्रीशिवजीका शरीर पुलकायमान हो गया और नेत्रोंमें जल भर आया ।।३२५।।

केकिकंठ दुति श्यामल अंगा ❀ तड़ित विनिन्दक बसन सुरंगा
ब्याह-विभूषण विविध बनाये ❀ मंगलमय सब भाँति सुहाये

मोरकण्ठकी कान्तिके समान साँवले शरीरपर पीताम्बर धारण किये हैं।।१।।ब्याहके समय के ऐसे श्रेष्ठ गहने भी पहने हुए थे कि, जो सब प्रकारसे शोभायमान और लाभप्रद थे ।।२।।

शरद विमल विधु बदन सुहावन ❀ नयन नवल राजीव लजावन
सकल अलौकिक सुन्दरताई ❀ कहि न जाइ मनही मन भाई

उनका मुख शरत्कालके चन्द्रमाके समान है, नीलकमलको लजानेवाले नेत्र और सारा सौन्दर्य अलौकिक ईश्वरीय है, जो कहा नहीं जाता और मनही मनको अच्छा लगता है।।४।।

बंधु मनोहर सोहहिं संगा ❀ जात नचावत चपल तुरंगा
राजकुँवर वरबाजि नचावहिं ❀ वंश प्रशंसक विरद सुनावहिं

ऐसे मनको हरनेवाले भरत आदि भाई अपने चंचल घोड़ोको नचाते हुए चले जाते हैं और वन्दीजन राजाका यशोगान करते और सुनाते जाते हैं ।। ६ ।।

जेहि तुरंग पर राम बिराजे ❀ गति बिलोकि खगनायक लाजे
कहि न जाइ सब भाँति सुहावा ❀ वाजिवेष जनु काम बनावा

जिस घोड़े पर श्रीरामचन्द्रजी विराजमान थे उसकी चालको देखकर गरुड़ भी लज्जित होता था । वह सब प्रकारसे ऐसा अच्छा लगता था कि, मानों कामदेव ही घोड़ा बन गया है ।।

छन्द—जनु बाजिवेष बनाइ मनसिज रामहित अति सोहई।
अपने सुवय बल रूप गुण गति सकल भुवन विमोहई ॥
जगमगति जीन जड़ाव जोति सुमोति मणि माणिक लगे।
किंकिणि ललाम लगाम सहित विलोकि सुरनर मुनि ठगे॥३६॥

मानों कामदेव ही घोड़ेका वेश धारणकर श्रीरामचन्द्रजीके लिए अत्यन्त शोभित हो रहा है ।। जो अपनी सुन्दर अवस्था, बल, रूप, गुण और चालसे समस्त भूमण्डलको मोहित कर रहा है ।। उसकी जीन जिसमें बहुत ही सुन्दर जड़े हुए मणि-माणिक्य और मोतियोंसे जगमगा रही थी ।। और जिसकी सुन्दर लगाममें जो किंकिणी लगी हुईं थीं उसे देखकर देवता, मनुष्य तथा मुनियोंके भी मन मुग्ध हो जाते थे ।। ३६ ।।

दोहा—प्रभु मनसहिं लवलीन मन, चलत बाजि छवि पाव।
भूषित उडुगण तड़ित घन, जनु वर बर्हि नचाव ॥३२६॥

प्रभुकी मनसामें जिसका मन लवलीन है, अतः उस घोड़ेका चलना ऐसीही शोभाको प्राप्त होता है, जैसे तारागण और बिजलीसे भूषित बादलको देखकर आँखरूपी मोर नाचता है॥३२६॥

जेहि बर बाजि राम असवारा ❀ तेहि शारदहु न बरणै पारा
शंकर रामरूप अनुरागे ❀ नयन पंचदश अति प्रिय लागे

जिस घोड़ेपर श्रीरामचन्द्रजी सवार थे उसकी शोभा सरस्वती भी नहीं कह सकती। श्रीरामचन्द्रजीके स्वरूपको देखते हुए शंकरजी ने अपने पन्द्रहों नेत्रोंको सफल समझा ॥२॥

हरि हित सहित राम जब जोहे ❀ रमा समेत रमापति मोहे
निरखि राम छबि विधि हरषाने ❀ आठै नयन जानि पछिताने

इसी प्रकार जब विष्णुने देखा तो लक्ष्मी सहित उनका भी मन मोहित हो गया और ब्रह्माजी भी श्रीरामचन्द्रजीकी शोभाको देखकर प्रसन्न हुए तथा अपने पास आठ ही नेत्र हैं—यह जानकर मनमें खेद करने लगे ॥४॥

सुर सनेह उर बहुत उछाहू ❀ बिधि ते डेढ़ सुलोचन लाहू
रामहिं चितव सुरेश सुजाना ❀ गौतम शाप परम हित माना

परन्तु स्वामिकीर्तिकेयजी प्रसन्न हुए; क्योंकि इनके ब्रह्माजीसे डेवढ़े नेत्र थे ॥५॥ जब इन्द्रने श्रीरामचन्द्रजीको देखा, तो मुनि गौतमके शापको बड़ाही हितकर माना ॥६॥

देव सकल सुरपतिहिं सिहाहीं ❀ आजु पुरन्दर सम कोउ नाहीं
मुदित देवगण रामहिं देखी ❀ नृप समाज दुहुँ हर्ष विशेखी

समस्त देवता इन्द्रकी प्रशंसा करते थे कि, आज इन्द्रके समान कोई नहीं है ॥ रामचन्द्रजीको देखकर देवता प्रसन्न हुए और दोनों राज सभाओंमें विशेष हर्ष हुआ ॥८॥

छन्द—अति हर्ष राज समाज दुहुँ दिशि दुन्दभी बाजहिं घनी ।
बरषहिं सुमन सुरहर्षि कहि जय जयति जय रघुकुल मनी ॥
इहि भाँति जानि बरात आवत बाजने बहु बाजहीं ।
रानी सुआसिनि बोलि परिछन हेतु मंगल साजहीं ॥३७॥

दोनों राज-समाजमें दोनों ओरसे अत्यन्त प्रसन्नता पूर्वक बहुतसे बाजे बज रहे थे । उसी समय श्रीरामचन्द्रजीकी जयहो-जयहो, ऐसा कहकर देवताओंने फूल बरसाये । इधर बारात आते हुए जानकर अनेक बाजे बजने लगे । जनकरानी सुहागिनियोंको बुलाकर परिछन एवं आरतीके मांगलिक द्रव्य सजाने लगीं ॥३७॥

दोहा—सजि आरती अनेक विधि, मंगल सकल सँवारि ।
चलीं मुदित परिछन करन, गजगामिनि वर नारि ॥३२७॥

इस प्रकार समस्त मंगलोंसे युक्त आरतीको अनेक प्रकारसे सजाकर; श्रेष्ठ गजगामिनी स्त्रियाँ प्रसन्नता पूर्वक परिछन करने चलीं ॥३२७॥

बिधु बदनी मृगशावक लोचनि ❁ सब निजतनु छबि रतिमदमोचनि
पहिरे बरण-बरण वर चीरा ❁ सकल विभूषण सजे शरीरा

वे चन्द्रवदनी और मृगनयनी स्त्रियाँ जो अपनी शोभासे रतिके मानको भी मर्दन करने वाली थीं । चटकीले-भड़कीले वस्त्र पहने उत्तम आभूषणोंको साजे हुई थीं ॥ २ ॥

सकल सुमंगल अंग बनाये ❁ करहिं गान कलकण्ठ लजाये
चाल विलोकि काम गज लाजहिं ❁ कंकन किंकिनि नूपुर बाजहिं

सब सुन्दर अंगोंको बनाए, कोकिल कंठसे गान करती चली जाती हैं । कंकण करधनी आदिसे सुसज्जित जिनकी चालको देखकर मतवाले हाथी भी लज्जित हो जाते थे ॥ ४ ॥

बाजहिं बाजन बिविध प्रकारा ❁ नभ अरु नगर सुमंगल चारा
शची शारदा रमा भवानी ❁ जे सुरतिय शुचि सहज सयानी

अनेक प्रकारके बाजे बज रहे थे, आकाशमण्डल और नगरमें सुन्दर मंगलाचार हो रहे थे । इन्द्राणी, सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती और देवताओंकी पवित्र स्त्रियाँ जो स्वभावतः चतुर थीं ॥

कपट नारि वर वेष बनाई ❁ मिलीं सकल रनिवासहिं जाई
करहिं गान कल मंगल बानी ❁ हर्ष विवश सब काहु न जानी

वे सब छलसे पटरानियोंका सुन्दर वेश बनाकर राजाजनकके रनिवासमें जा मिलीं और मंगलमयी वाणीमें सुन्दर गीत गाने लगीं, हर्षसे विवश हो उनको किसीने पहचाना भी नहीं ॥

छन्द—को जान केहि आनन्दवश सब ब्रह्मवर परिछन चलीं ।
कलगान मधुर निसान बरषहिं सुमन सुर शोभा भलीं ॥

आनन्दकन्द विलोकि दूलह सकल हिय हर्षित भईं ।
अम्भोज अम्बुक अम्बु उमँगि सुअंग पुलकावलि छईं ॥३८॥

कोई जानता भी तो कैसे, सभी तो उस आनन्दके वशीभूत थे और सबके सब उस श्रेष्ठ दूल्हा (ब्रह्म)का परिछन करनेको चलीं थीं । नगाड़े बज रहे थे, स्त्रियाँ सुन्दर गीत गा रही थीं, देवतागण आकाशसे फूल बरसा रहे थे और इसप्रकार बहुतही शोभा छाई हुई थी । उस समय आनंदकन्द श्रीरामचन्द्रजीको दूल्हा रूपमें देखकर समस्त स्त्रियोंका हृदय प्रसन्न हो गया और उनके कमलवत् नेत्रोंमें जल भर आया तथा शरीर पुलकायमान हो गया ॥३८॥

दोहा—जो सुख भा सिय-मातु मन, देखि राम बर-वेष ।
सो न सकहिं कहि कलपशत, सहस शारदा शेष ॥३२८॥

परन्तु श्रीरामचन्द्रजीके मनोहर वेशको देखकर जो सुख सीताजीकी माताके मनमें हुआ उसको हजार जिह्वावाले शेषनाग और सरस्वती भी सौ कल्पतक वर्णन करें; तो भी नहीं कह सकतीं ॥ ३२८ ॥

नयन नीर भरि मंगल जानी ❀ परिछन चलीं मुदित मन रानी
वेद विहित अरु कुल आचारू ❀ कीन्ह भली विधि सब व्यवहारू

तब रानीने मंगलका समयजानकर नेत्रोंके जलको रोक प्रसन्न मनसे परिछन करने चलीं । वेदमें जैसा आचार बतलाया गया है,उस विधिके अनुसार अपने कुलकी समस्त रीतियाँ भली भाँति कीं ॥

पंच शब्द ध्वनि मंगल गाना ❀ पट पाँवड़े परहिं विधि नाना
करि आरती अर्घ तिन दीन्हा ❀ राम गवन मंडप तब कीन्हा

फिर तो उस पञ्च-शब्दकी ध्वनि और मंगलाचारके गानेके साथ, अनेक भाँतिके वस्त्रोंके पाँवड़े पड़ने लगे । उसी समय रानीने आरती कर अर्घ्य दिया, तब श्रीरामचन्द्रजी मण्डपमें गए ॥

दशरथ सहित समाज विराजे ❀ विभव विलोकि लोकपति लाजे
समय-समय सुर वर्षहिं फूला ❀ शान्ति पढ़हिं महिसुर अनुकूला

तब अपने समाज सहित दशरथजी वहां आए तो, उनके ऐश्वर्यको देखकर लोकपाल भी लजा गए । समय २ पर देवता फूल बरसाते थे और योग्य ब्राह्मण शांति पाठ करते थे ॥

नभ अरु नगर कोलाहल होई ❀ आपन पर कछु सुनै न कोई
इहि विधि राम मंडपहिं आये ❀ अर्घ देइ आसन बैठाये

आकाश और नगरमें कोलाहल मच रहा था, अपना और पराया कोई किसीका कुछ नहीं सुनता था । जब रामचन्द्रजी मण्डपमें आए तो, उनको अर्घ्य देकर आसनपर बिठाया गया ॥

छन्द—बैठारि आसन आरती करि निरखि वर सुख पावहीं ।
मणि बसन भूषण भूरि वारहिं नारि मंगल गावहीं ॥
ब्रह्मादि सुर-वर विप्र-वेष बनाइ कौतुक देखहीं ।
अवलोकि रघुकुल कमल रवि छबि सफल जीवनलेखहीं ।३९॥

इस प्रकार दूल्हेको आसनपर बिठा आरतीकर स्त्रियाँ सुख पा रही हैं। मणि, वस्त्र तथा आभूषण उनपर निछावर करती हुईं मांगलिक गीत गा रही हैं ॥ ब्रह्मादिक बड़े-बड़े देवता ब्राह्मणोंका वेश सजाकर, वह कौतुक देख रहे हैं और सूर्यवंशरूपी कमलको प्रफुल्लित करने-वाले श्रीरामचन्द्रजीकी शोभाको देखकर, अपना जीवन सफल कर रहे हैं ॥३९॥

दोहा—नाऊ बारी भाट नट, राम निछावरि पाइ।
मुदित अशीषहिं नाइ सिर, हर्ष न हृदय समाइ ॥३२९॥

इसी प्रकार नाऊ, बारी, भाट और नट भी श्रीरामचन्द्रजीकी न्योछावर पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुए और शिर नवाकर आशीर्वाद देने लगे। वह हर्ष हृदयमें नहीं समाता था ॥३२९॥

मिले जनक दशरथ अति प्रीती ❀ करि वैदिक लौकिक सब रीती
मिलत महा दोउ राज विराजे ❀ उपमा खोजि खोजि कवि लाजे

पश्चात् समस्त विधियोंको पूर्ण करके, राजा जनक महाराज दशरथजीसे प्रीति पूर्वक मिले। उनके मिलनेसे जैसी शोभा प्राप्त हुई, उस उपमाको कवि खोजकर लज्जित हो गए ॥

लही न कतहुँ हारि हिय मानी ❀ इन्ह सम एहि उपमा उर आनी
समधी देखि देव अनुरागे ❀ सुमन बरषि यश गावन लागे

और जब कहीं न मिली तो हृदयमें हार मानकर, यही कह दिया कि इनके समान ये ही हैं ॥३॥ दोनों समधियोंको देखकर देवता पुष्प बरसाकर, उनका यशोगान करने लगे ॥४॥

जग विरंचि उपजावा जबतें ❀ देखे सुने ब्याह बहु तबतें
सकल भाँति सब साज समाजू ❀ सम-समधी देखे हम आजू

ब्रह्माने जबसे संसारमें हमें पैदा किया, तबसे हमने बहुत ब्याह देखे और सुने हैं ॥५॥ परन्तु सब प्रकारके साज-सामानवाले सम-समधी हमने आज ही देखे हैं ॥६॥

देव गिरा सुनि सुन्दर साँची ❀ प्रीति अलौकिक दुहुँ दिशि माँची
देत पाँवड़े अर्घ सुहाये ❀ सादर जनक मंडपहिं ल्याये

तब आकाशसे देवताओंकी ऐसी सुन्दर और सत्यवाणीको सुनकर, दोनों ओर अलौकिक प्रीति बढ़ गई। फिर अर्घ्य देते तथा सुन्दर पाँवड़े बिछाते हुए, राजाजनकजी सबको मण्डपमें लिवा ले गए॥

छन्द—मंडप विलोकि विचित्र रचना रुचिरता मुनि मन हरे।
निज पानि जनक सुजान सब कहँ आनि सिंहासन धरे ॥
कुल इष्ट सरिस वसिष्ठ पूजे विनय करि आशिष लही।
कौशिकहिं पूजत परम प्रीतिकि रीति तौ न परै कही॥ ४०॥

मण्डपकी विचित्र रचना और सौन्दर्यको देखनेसे मुनियोंके भी मन मोहित हो जाते थे। तब राजा जनकने स्वयं अपने हाथसे, सबके लिए सिंहासन लाकर रखा। फिर जैसे कोई अपने कुल-देवताकी पूजा करता हो, उसी प्रकार राजा जनकने महर्षि वशिष्ठकी पूजा की और प्रार्थना करके आशीर्वाद लिया। किन्तु मुनिवर विश्वामित्रजीकी पूजा करनेमें तो इतना अधिक प्रेम बढ़ा कि, उस प्रीतिका वर्णन नहीं हो सकता ॥४०॥

दोहा—वामदेव आदिक ऋषय, पूजे मुदित महीश।
दिये दिव्य आसन सबहिं, सब सन लही अशीश ॥३३०॥

फिर महाराज जनकने प्रसन्नतापूर्वक वामदेव आदि ऋषियोंकी पूजा की और सुन्दर आसन देकर सबसे आशीर्वाद ग्रहण किया ॥ ३३० ॥

बहुरि कीन्ह कोशलपति पूजा ❁ जानि ईश सम भाव न दूजा
कीन्ह जोरि कर विनय बड़ाई ❁ कहि निज भाग्य विभव बहुताई

फिर राजा जनक ने कोशलपति महाराज दशरथजीकी पूजा की और उनको ईश्वरके समान ही जाना ॥ फिर हाथ जोड़कर उनकी प्रार्थना और प्रशंसाकर अपने भाग्य-वैभवको धन्य माना ॥

पूजे भूपति सकल बराती ❁ समधी सम सादर सब भाँती
आसन उचित दिए सब काहू ❁ कहौं कहा मुख एक उछाहू

फिर राजा जनकने सब भाँति समस्त बारातियोंका समधी जैसाही आदर सहित भलीभाँति पूजनकर, सबको यथायोग्य आसनपर बिठाया, मैं एक मुखसे उस उत्साहका क्या वर्णन करूँ? ॥

सकल बरात जनक सनमानी ❁ दान मान बिनती वर-बानी
विधिहरिहरदिशिपतिदिनराऊ❁ जे जानहिं रघुबीर सुभाऊ

जनकजीने दान-मान, विनती और श्रेष्ठ वाणीसे सब बरातका सम्मान किया। तब ब्रह्मा, विष्णु, महादेव आदि जो श्रीरामचन्द्रजीके स्वभावको भलीभाँति जानते थे ॥

कपट बिप्र-वर वेष बनाये ❁ कौतुक देखहिं अति सचुपाये
पूजे जनक देव-सम जाने ❁ दिए सुआसन बिनु पहिचाने

कपटसे ब्राह्मणका सुन्दर वेश बनाए उस विनोदको अत्यन्त शान्ति से देख रहे थे। राजा जनकजीने उन सबकी देवताके समान पूजा की और बिना पहचाने ही सुन्दर आसन दिया ॥८॥

छन्द—पहिचान को केहि जान सबहि अपान सुधि भोरी भई।
आनन्दकन्द बिलोकि दूलह उभय दिशि आनँदमई ॥
सुर लखे राम सुजान पूजे मानसिक आसन दये।
अवलोकि शील सुभाव प्रभुके विबुध मन प्रमुदित भये॥४१॥

कौन किसको जाने और पहचाने, सबको अपनीही सुधि न रही। क्योंकि आनन्दकन्द श्रीरामचन्द्रजी जैसे दूलह को देखकर तो दोनों ही पक्ष आनन्दमय था (किन्तु) श्रीरामचन्द्रजीने देवताओंको पहचानकर मन ही मन उनकी पूजा की और वैसा ही मानसिक आसन दिया। तब प्रभुके ऐसे शील-स्वभावको देखकर देवताओंका मन प्रसन्न हो गया ॥ ४१ ॥

दोहा—रामचन्द्र मुखचन्द्र छवि, लोचन चारु चकोर।
करत पान सादर सकल, प्रेम-प्रमोद न थोर ॥३३१॥

फिर तो सब किसीके चकोररूपी सुन्दर नेत्र श्रीरामचन्द्रजीके मुखचन्द्रका प्रेमपूर्वक पान करने लगे, क्योंकि प्रेमका आनन्द थोड़ा नहीं था ॥ ३३१ ॥

समय विलोकि वसिष्ठ बोलाये ❀ सादर शतानंद सुनि आये
बेगि कुँवरि अब आनहु जाई ❀ चले मुदित मुनि आयसु पाई

तब समयको देखकर महर्षि वसिष्ठजीने शतानन्दजीको बुलाया, तो वे सुनते ही आदर सहित आ गए ॥१॥ तब वसिष्ठजीने कहा, अब सीताजीको शीघ्र लिवा लाइये, ऐसी आज्ञा पाकर वे प्रसन्न मनसे चल पड़े ॥ २ ॥

रानी सुनि उपरोहित बानी ❀ प्रमुदित सखिन समेत सयानी
विप्र-बधू कुल वृन्द बुलाई ❀ करि कुल रीति सुमंगल गाई

पुरोहितकी वाणी सुनकर सखियों सहित रानी प्रसन्न हो गई ॥ ३ ॥ उन्होने ब्राह्मणों की स्त्रियों के समूह को बुलाकर अपने कुलकी रीतियाँ की ॥ ४ ॥

नारि वेश जे सुर वर वामा ❀ सकल सुभाय सुन्दरी श्यामा
तिन्हहि देखि सुख पावहिं नारी ❀ बिनु पहिचान प्राणते प्यारी

तब जो देवताओंकी श्रेष्ठ स्त्रियाँ थीं, वे सभी नारी वेष में सुन्दर स्वभाव की सुन्दरी थीं, उन्हें देखकर जनकपुर की स्त्रियाँ बहुत सुखी होने लगीं। जान-पहचान नहीं थी, फिर भी वे प्राणोंसे प्यारी थीं॥

बार-बार सनमानहिं रानी ❀ उमा रमा शारद सम जानी
सीय सँवारि समाज बनाई ❀ मुदित मंडपहिं चलीं लिवाई

किन्तु रानी सुनयना उन्हें पार्वती, लक्ष्मी और सरस्वतीके समान जानकर बारम्बार सम्मान करती थीं। फिर सीताजीका शृङ्गारकर सब समाज बनाकर मण्डपमें लिवा चलीं॥

छन्द—चलि ल्याइ सीतहिं सखी सादर सजि सुमंगल भामिनी।
नव सप्त साजे सुन्दरी सब मत्त कुञ्जर गामिनी॥
कलगान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिं काम कोकिल लाजहीं।
मंजीर नूपुर कलितकंकण ताल गति वर बाजहीं॥४२॥

तब उनमें जो सुन्दर सखियाँ माँगलिक और मनभावने वेश बनाकर सीताजी को अपने साथ लेकर चलीं तो वे सोलहों शृङ्गार किए मतवाले हाथीके समान सुन्दर चाल से चलती थीं। उनके सुन्दर गान मुनियोंके भी ध्यानको छुड़ानेवाले और कामदेव तथा कोकिलाको भी लज्जित करनेवाले थे। उनके पाँवोंके बिछुवे मंजीर के समान और हाथों के सुन्दर कंगन उनकी चाल गति पर सुन्दर तालसे बज रहे थे॥ ४२ ॥

दोहा—सोहति बनिता वृन्द महँ, सहज सुहावनि सीय।
छवि ललनागण मध्य जनु, सुखमा अति कमनीय॥३३२॥

ऐसी स्त्रियोंके झुण्डमें सहज सुन्दरी सीताजी ऐसी शोभा दे रही थीं, मानों स्वयं सुन्दरता ही उत्तम स्त्री बनकर छविरूपी नारियोंके मध्य में विराज रही हो॥ ३३२ ॥

सिय सुन्दरता वरणि न जाई ❀ लघु मति बहुत मनोहरताई
आवत देखि बरातिन सीता ❀ रूपराशि सब भाँति पुनीता

इसप्रकार सीताजीकी सुन्दरता तो वर्णन नहीं की जाती, मेरी बुद्धि छोटी है और सुन्दरता बहुत है। इधर जब रूपराशि पूर्ण सब प्रकारसे पवित्र सीताजीको आते हुए बरातियों ने देखा ॥

सबहिं मनहिं मन कीन्ह प्रणामा❀ देखि राम भये पूरन कामा
हर्षे दशरथ सुतन समेता ❀ कहि न जाइ उर आनँद जेता

तब सब किसी ने मन ही मन प्रणाम किया और श्रीरामचन्द्रजीको देखकर समझा कि अब कार्य पूर्ण हुआ ॥३॥ पुत्रों सहित राजा दशरथके प्रसन्नता की सीमा न रही ॥४॥

सुर प्रणाम करि वर्षहिं फूला ❀ मुनि अशीष धुनि मंगल मूला
गान-निशान कुलाहल भारी ❀ प्रेम प्रमोद नगर-नर-नारी

देवता लोग प्रणाम करके फूल बरसाने लगे और मुनि लोग समस्त मंगलोंकी मूल आशीर्वादात्मक ध्वनि करने लगे। गान-वाद्यसे कोलाहल मच गया, सब प्रेमसे प्रमुदित हो गये ॥६॥

यहि विधि सीय मण्डपहिं आई ❀ प्रमुदित शान्ति पढ़हिं मुनिराई
तेहि अवसर करि विधि व्यवहारू❀ दुहुँ कुलगुरु सब कीन्ह अचारू

इस प्रकार जब सीताजी मण्डप में आईं तब मुनि लोग प्रसन्न मनसे शान्ति-पाठ पढ़ने लगे। उस समय दोनों कुल के गुरुओं ने वेद-विधि से सब आचारों को किया ॥८॥

छन्द—आचार करि गुरु गौरि गणपति मुदित विप्र पुजावहीं।
सुर प्रगट पूजा लेहिं देहिं अशीश अति सुख पावहीं॥
मधुपर्क मंगल द्रव्य जो जेहि समय मुनि मनमहँ चहैं।
भरि कनक कोपर कलस सो सब लिये परिचारक रहैं॥४३॥

जब (दोनों) गुरु वेद की विधि करा चुके तब ब्राह्मण प्रसन्न मन से गौरी-गणपति की पूजा कराने लगे तो देवता प्रकट होकर पूजा लेने लगे और अत्यन्त सुख पाकर आशीर्वाद देने लगे। मुनिगण अपने मनमें जिस समय मधुपर्क और मंगल-द्रव्य आदि जिस वस्तु की इच्छा करते वह सब सुवर्ण के थाल और कलशोंमें लिये हुए सेवक खड़े रहते ॥ ४३ ॥

कुल रीति प्रीति समेत रवि कहिदेत सब सादर किये।
यहि भाँति देव पुजाइ सीतहिं सुभग सिंहासन दिये॥
सियराम अवलोकनि परस्पर प्रेम काहु न लखि परै।
मन बुद्धि वर वाणी अगोचर प्रगट कवि कैसे करै॥४४॥

इस प्रकार कुल की समस्त रीतियाँ भगवान् सूर्य स्वयं ही बतला देते थे और वे उन सबको करते जाते थे ॥ तब देवताओं की पूजा कर चुकने पर सीताजी को सुन्दर आसन दिया गया। उस समय सीताजी और श्रीरामचन्द्रजी में जो पारस्परिक अवलोकन हुआ उसे कोई कवि कैसे वर्णन कर सकता है ? क्योंकि वे तो मन, वाणी और-श्रेष्ठ बुद्धिसे भी अगोचर हैं ॥ ४४ ॥

दोहा—होम समय तनु धरि अनल, अतिसुख आहुति लेहिं।
बिप्र वेष धरि वेद सब, कहि विवाह विधि देहिं॥३२३॥

हवन के समय तो अग्निदेव ने साक्षात् शरीर धारण कर आहुतियाँ ली और इसी प्रकार चारों वेदोंने भी ब्राह्मण का रूप धारण कर विवाहकी सारी विधियाँ बतलाईं ॥३२३॥

जनक पाटमहिषी जग जानी ❀ सीय मातु किमि जाय बखानी
सुयश सुकृत सुख सुन्दरताई ❀ सब समेटि बिधि रची बनाई

श्री सीताजी की माता का तो बखान ही क्या हो सकता है कि, जो जनककी पटरानी हैं ॥१॥ मानों ब्रह्माने सारे सौन्दर्य को एकत्र कर उनको अपने हाथ से बनाया था ॥२॥

समय जानि मुनिवरन बुलाई ❀ सुनत सुआसिनि सादर ल्याई
जनक बाम दिशि सोह सुनयना ❀ हिमगिरि संग बनी जनु मयना

अब समय हो गया है–ऐसा जानकर मुनियो नें उन्हें बुलाया। सुनते ही उन्हें सुहागिनें सादर ले आईं ॥३॥ राजा जनक के बाईं ओर बैठी रानी सुनैना पर्वतराज हिमाचल के साथ रानी मैना की तरह शोभित हुईं ॥ ४ ॥

कनक कलश मणि कोपर रूरे ❀ सुचि सुगन्ध मंगल जल पूरे
निजकर मुदित राउ अरु रानी ❀ धरे रामके आगे आनी

पाँव धोनेके लिए सुवर्णके कलशमें सुगन्धित जल भरा था और मणि निर्मित थाल रखे थे ॥५॥ उसे अपने हाथसे राजा और रानीने प्रसन्नतासे उठाकर श्रीरामचन्द्रजीके आगे रख दिया ॥६॥

पढ़हिं वेद मुनि मंगल बानी ❀ गगन सुमन झरि अवसर जानी
वर विलोकि दम्पति अनुरागे ❀ पाँय पुनीत पखारन लागे

मुनीश्वर मंगलवाणी में वेद पढ़ते तथा शुभ अवसर को जानकर आकाश से फूलोंकी वर्षा होती थी ॥७॥ राजा-रानी वरको देखकर प्रसन्नतासे उनका पवित्र पाँव धोने लगे ॥८॥

छन्द–लागे पखारन पाँय पंकज प्रेम तनु पुलकावली।
नभ नगर गान निसान जय ध्वनि उमँगि जनु चहुँदिशिचली॥
जे पद सरोज मनोज अरि उर सर सदैव विराजहीं।
जे सुकृतसुमिरत विमलतामनसकलकलिमल भाजहीं॥४५॥

श्रीरामचन्दजी के चरण-कमल को धोते हुए उनका शरीर प्रेमसे प्रफुल्लित हो गया। आकाश मण्डल तथा नगर में गान-वाद्य और जय-जय की ध्वनि चारों ओर गूँज गई। क्योंकि जो चरण-कमल कामदेव के शत्रु श्री महादेवजी के हृदय-सरोवर में सर्वदा ही विराजमान रहते हैं और जिनके स्मरण से कलि का मल दूर भाग जाता है ॥ ४५ ॥

जे परसि मुनि बनिता लही गति रही जो पातकमई।
मकरंद जिन्हको शम्भु शिर सुचिता अवधि सुर बरनई॥
करि मधुप मन मुनि जोगि जन जे सेइ अभिमत गति लहैं।
ते पद पखारत भाग्य भाजन जनक जय जय सब कहैं॥४६॥

जिन चरणों को स्पर्श कर वह पातकमयी मुनि-पत्नी अहिल्या भी सद्गति को प्राप्त हुई। तथा जिन चरण कमलों के मकरंदरूपी पवित्र गंगा को श्रीशिव जी अपने मस्तक पर धारण किए रहते हैं और जिनको देवगण पवित्रता की मर्यादा कहते हैं और मुनीश्वर अपने मन को भौंरा बनाये जिनका सेवन कर मोक्ष प्राप्त करते हैं; उन्हीं चरणों को भाग्यशाली जनकजी धोते हैं और सबलोग श्रीरामचन्द्रजी की जय बोलते हैं ॥ ४६ ॥

छन्द—बर कुँवर करतल जोरि शाखोच्चार दोउ कुल गुरु करैं।
भयो पानिग्रहन विलोकि विधि सुर मनुज मुनि आनँद भरैं॥
सुखमूल दूलह देखि दम्पति पुलक तनु हुलस्यो हियो।
करि लोक वेद विधान कन्यादान नृप भूषन कियो ॥४७॥

तब इस प्रकार कन्या और वर का हाथ जोड़कर दोनों कुल गुरु शाखोच्चार करने लगे। पाणिग्रहण को देखकर देवताओं सहित ब्रह्मा और मनुष्यों सहित मुनिगण आनन्दित हो गये॥ इस प्रकार समस्त सुखों के मूल दूल्हे को देखकर राजा जनक और उनकी रानी का भी हृदय उमंग आया तथा शरीर पुलकायमान हो गया। तब इस प्रकार राजाओं के शिरोमणि राजा जनकजी ने वेद-विधान से समस्त लोकाचार करते हुए कन्यादान किया ॥ ४७ ॥

हिमवन्त जिमि गिरिजा महेशहिं हरिहिं श्रीसागर दई।
तिमि जनक रामहिं सिय समर्पी विश्व कल कीरति नई॥
किमि करै विनय विदेह कीन्ह विदेह मूरति साँवरी।
करि होम विधिवत गाँठि जोरी होन लागी भाँवरी ॥४८॥

जैसे हिमाँचलने श्रीमहादेवजी को पार्वती और समुद्र ने विष्णु भगवान् को लक्ष्मीजी को अर्पित कर दिया था, उसी प्रकार राजा जनक ने भी श्रीरामचन्द्रजी के लिए श्रीसीताजीको अर्पण कर दिया कि जिनकी सुन्दर कीर्ति समस्त जगत् में व्याप्त हो रही है, राजा जनक विनती करना चाहते हैं तो नहीं कर पाते, क्योंकि उस साँवली मूर्तिके आगे वे विदेह राजा यों ही विदेह हो रहे थे। उसी समय सविधि होम कर मुनियों ने गाँठ-बन्धन कराकर भाँवरी फिरा दी ॥४८॥

दोहा—जय धुनि बन्दी वेद-धुनि, मंगल गान निशान।
सुनि हरषहिं बरषहिं बिबुध, सुरतरु सुमन सुजान ॥३२४॥

फिर तो बन्दीजन जय घोष करने और ब्राह्मण वेद ध्वनि करने लगे। स्त्रियाँ गीत गाने लगीं और जोरसे नगाड़े बजने लगे जिसे सुनकर हर्षित देवता आकाशसे फूलोंकी वर्षा करने लगे॥३२४॥

कुँवर कुँवरि कल भाँवरि देहीं ❀ नयन लाभ सब सादर लेहीं
जाइ न वरणि मनोहर जोरी ❀ जो उपमा कछु कहउँ सो थोरी

कुँवर और कुंवरि सुन्दर भाँवरी देते हैं और सब लोग आदर सहित नेत्रों का लाभ लेते हैं॥ उस मनोहर जोड़ीका वर्णन नहीं किया जाता, यदि कुछ भी उपमा कहूँ तो वह थोड़ी है॥२॥

राम सीय सुन्दर परिछाहीं ❀ जगमगाहिं मणि खंभन माँहो

मनहुँ मदन रति धरि बहु रूपा ❀ देखहिं राम-विवाह अनूपा

श्रीरामचन्द्र और सीताजीकी परछाहीं मणि जटित खम्भोंमें ऐसे जगमगाती थीं मानों कामदेव और रति अनेक रूप धारण किए श्रीरामचन्द्रजीका अनुपम विवाह देखने आये हों ।।

दरश लालसा सकुच न थोरी ❀ प्रगटत दुरत बहोरि बहोरी
भये मगन सब देखनिहारे ❀ जनक समान अपान बिसारे

दर्शनकी लालसा तो है, किन्तु संकोच भी थोड़ा नहीं है, इससे वह फिर २ प्रगट होते और छिप जाते हैं ।। देखनेवाले प्रसन्न हो गए और राजा जनकके समान अपनेको भूल गये ।।

प्रमुदित मुनिन भाँवरी फेरी ❀ नेग सहित सब रीति निवेरी
राम सीय शिर सेन्दुर देहीं ❀ शोभा कहि न जात विधि केहीं

मुनियोंने प्रसन्न होकर भाँवरी फिराई और नेग सहित सब विधियोंको निपटाया । राम सीताके मस्तकमें सिंदूर देते हैं, वह शोभा किसी प्रकार भी वर्णन नहीं की जाती है ।।

अरुण-पराग जलज भरि नीके ❀ शशिहिं भूख अहि लोभ अमीके
बहुरि वसिष्ठ दीन्ह अनुशासन ❀ वर दुलहिन बैठे इक आसन

मानों लाल कमलमें उसका रज अच्छी तरह भरा हुआ है, सर्प मानों चन्द्रमाको अमृत के लोभसे विभूषित कर रहा है ।। वशिष्ठजीकी आज्ञासे वर-दुलहिन एक आंसन पर बैठे ।।

छन्द—बैठे बरासन राम जानकि मुदित मन दशरथ भये ।
तनु पुलकि पुनि-पुनि देखि अपने सुकृत सुरतरु फल नये ।।
भरि भुवन रहा उछाह राम विवाह भा सबही कहा ।
केहि भाँति वरणि सिराति रसना एक मुख मङ्गलमहा ।४९।

इस प्रकार जब श्रीरामचन्द्रजी और सीताजी उस श्रेष्ठ आसन पर जा बैठे तो उसे देखकर राजा दशरथ मनमें बहुत प्रसन्न हुए । और अपने उस पुण्य रूपी कल्पवृक्षके नवीन फलको देखकर बारम्बार शरीर पुलकायान हो गया । इस प्रकार श्रीरामजीके विवाहका उत्सव समस्त भूमण्डलमें भर गया और श्रीरामचन्द्रजीका विवाह हो गया, यह सब लोगोंने कहा । उसका वर्णन कर मेरा एक मुख कैसे शान्त हो ? क्योंकि मंगल महान् था ।।४९।।

तब जनक पाइ वसिष्ठ आयसु ब्याह साज सँवारिकै ।
मांडवी श्रुतिकीरति उर्मिला कुँवरि लई हँकारिकै ।।
कुशकेतु कन्या प्रथम जो गुण शील सुख शोभामई ।
सब रीति प्रीति समेत करि सो ब्याहि नृप भरतहिं दई।।५०।।

तब महर्षि वसिष्ठजीकी आज्ञा पाकर राजा जनकने ब्याहका साज सजाकर कुमारी मांडवी, श्रुतिकीर्ति तथा उर्मिला को बुला लिया । और प्रथम राजा कुशध्वजकी कन्या मांडवीको जो कि, गुण और समस्त सुख शोभाकी खानि थी, उसे समस्त रीति और प्रीति सहित राजा जनकने भरतको ब्याह दी ।। ५० ।।

छन्द—जानकी लघु भगिनि जो सुन्दरि शिरोमणि जानिकै।
सो जनक दीन्ही ब्याहि लषणहिं सकल विधि सनमानिकै ॥
जेहि नाम श्रुतिकीरति सुलोचनि सुमुखि सब गुण आगरी।
सो दई रिपुसूदनहिं भूपति रूप शील उजागरी ॥ ५१ ॥

और जो सीताजीकी छोटी बहन थी उसे सुन्दरियोंमें शिरोमणि जानकर राजा जनक ने सब प्रकारकी विधियोंसे युक्त और सम्मान सहित श्री लक्ष्मणजीके साथ ब्याह दिया और जिसका नाम श्रुतिकीर्ति था तथा जो समस्त गुणोंकी खानि सुन्दरता और शीलमें विख्यात थी उसे राजाने शत्रुघ्नको अर्पण कर दिया ॥५१॥

अनुरूप वर दुलहिनि परस्पर लखि सकुचि हिय हर्षहीं।
सब मुदित सुन्दरता सराहहिं सुमन सुरगण वर्षहीं ॥
सुन्दरी सुन्दर वरन युत सब एक मण्डप राजहीं।
जनु जीव अरु चारिहु अवस्था विभुन सहित विराजहीं॥५२॥

आपसमें दुलहिनें अपने समान ही योग्य वरको देखकर सकुचातीं और हृदयमें हर्षित होती हैं और सब लोग उनकी सुन्दरताकी सराहना करते तथा उनपर फूल बरसाते हैं। सब सुन्दरियाँ सुन्दर वरोंके साथ एक मंडपमें ऐसे विराजमान हैं, मानों जीव और चारों अवस्थायें अपने स्वामियोंके साथ विराजमान हों ॥ ५२ ॥

दोहा—मुदित अवधपति सकल सुत, बधुन समेत निहारि।
जनु पाये महिपाल मणि, क्रियन सहित फल चारि॥३३५॥

इस प्रकार बहुओंके साथ अपने सब पुत्रोंको देखकर राजा दशरथ ऐसे प्रसन्न होते हैं मानों वह महिप-मणि अपनी क्रियाओं सहित चारों पदार्थका फल पा गये हों ॥ ३३५ ॥

जस रघुबीर ब्याह विधि वरणी ❋ सकल कुँवर ब्याहे तेहि करणी
कहि न जाइ कछु दायज भूरी ❋ रहा कनक मणि मण्डप पूरी

श्रीरामचन्द्रजीके विवाहकी जैसी विधि कही गई है, उसी विधिसे सब राजकुमार ब्याहे गये। उस अधिक दायजको कहा नहीं जा सकता, ब्याह-मंडप मणियों और सुवर्णसे भर गया॥

कम्बल बसन विचित्र पटोरे ❋ भाँति-भाँति बहुमोल न थोरे
गज रथ तुरँग दास अरु दासी ❋ धेनु अलंकृत काम दुहासी

और जो भाँति-भाँतिके ऊनी, सूती और रेशमी वस्त्र तथा कम्बल थे वे बहुत ही मूल्यवान् थे। हाथी, घोड़े, रथ, दास और दासियाँ तथा भूषण-वस्त्रोंसे सजी दूध देने वाली गौयें॥

वस्तु अनेक करिय किमि लेखा ❋ कहि न जाइ जानहिं जिन देखा
लोकपाल अवलोकि सिहाने ❋ लीन्ह अवधपति अति सुखमाने

अनेक वस्तुओंकी गिनती कोई कैसे कर सकता है, जिन्होंने देखा, वे ही जानते हैं॥ उसे देखकर लोकपाल भी सिहाते थे, जिन्हें राजा दशरथने बहुत सुख मानकर ग्रहण किया॥

दीन्ह याचकन जो जेहि भावा ❀ उबरा सो जनवासे आवा
तब करजोरि जनक मृदुबानी ❀ बोले सब बरात सनमानी

फिर याचकोंको जो अच्छा लगा उन्हें वही दिया और फिर जो बचा वह जनवासेमें आया ।। तब राजा जनकजी हाथ जोड़कर सब बरातियोंका सम्मान करते हुए बोले ।। ८ ।।

छन्द—सनमानि सकल बरात आदर दान बिनय बढ़ायके ।
प्रमुदित महा मुनि वृन्द वन्दे पूजि प्रेम लड़ायके ।।
शिरनाय देव मनाय सबसन कहत कर सम्पुट किये ।
सुर साधु चाहत भाव सिंधुकि तोषजल अंजलि दिये।।५३।।

(कैसे बोले ?) समस्त बारातियोंको दान, मान और विनय पूर्वक आदर देते हुए राजा जनकजीने महा मुनियोके समाजकी वन्दना की । पूजा कर, हाथ जोड़कर बोले—हे देववृन्द ! और समस्त महात्माओं ! आप तो केवल भावके ही भूखे हैं, सो जैसे समुद्रमें एक चुल्लू जल देना कुछ नहीं है वैसे ही आपके समक्ष हमारी यह प्रार्थना-सेवा कुछ नहीं है ।।५३।।

कर जोरि जनक बहोरि बन्धु समेत कोशलराय सों ।
बोले मनोहर बचन सानि सनेह शील सुभाय सों ।।
सम्बन्ध राजन रावरे हम बड़े अब सब बिधि भये ।
यह राज साज समाज सेवक जानिबी बिनु गथ लये ।।५४।।

इसके पश्चात् अपने भाई कुशध्वज एवं बन्धुओं सहित राजा जनकजी महाराज दशरथसे हाथ जोड़कर शील-स्नेहसे युक्त बहुत मीठी वाणी बोले कि हे राजन् ! आपके सम्बन्धसे हमलोग सब प्रकारसे बड़े हुए और अबसे यह सारा राज समाज बिना मूल्य ही आपका सेवक है ।।५४।।

ए दारिका परिचारिका करि पालबी करुणामयी ।
अपराध क्षमिबो बोलि पठये बहुत हौं ढीठी दयी ।।
पुनि भानुकुल भूषन सकल सनमानि बिधि समधी किये ।
कहि जात नहिं बिनती परस्पर प्रेम परिपूरन हिये ।।५५।।

सो हे राजन् ! आप हमारी इन कन्याओंको अपनी दासी समझकर करुणा दृष्टिसे इनका पालन करिएगा, हमने आपको यहाँ तक आनेका कष्ट दिया, हमारी इस ढिठाईको क्षमा कीजिये । जब जनकजीने ऐसा कहा तब महाराज दशरथजीने समधौरा किया । समधियोंकी पारस्परिक बिनती कही नहीं जाती क्योंकि दोनों ही विनय और प्रेमसे परिपूर्ण थे ।।५५।।

वृन्दारकागण सुमन बरषहिं राउ जनवासे चले ।
दुन्दुभी ध्वनि वेदधुनि नभ नगर कौतूहल भले ।।
तब सखिन मङ्गल गान करत मुनीश आयसु पाइके ।
दूलह दुलहिनिन सहित सुन्दरि चलीं कोहबर ल्याइके।।५६।।

यह देखकर देवाङ्गनायें आकाशसे फूलोंकी वर्षा करने लगीं। उसी समय राजादशरथ जनवासे की ओर चले। नगाड़ों की ध्वनि और वेद-ध्वनिसे आकाश-मण्डल और नगर में मानों सुन्दर उत्सव दिखलाई दे रहा था। तब मुनिवर वसिष्ठजीकी आज्ञा पाकर सखियाँ गीत गाती हुई दूल्हा और दुलहिनोंको साथ लेकर कोहबरकी ओर चलीं ॥५६॥

दोहा—पुनि-पुनि रामहिं चितव सिय, सकुचति मन सकुचैन।
हरति मनोहर मीन-छबि, प्रेम-पियासे नैन ॥३३६॥

सीताजी श्रीरामचन्द्रजीकी ओर देखतीं और सकुचाती हैं, पर उनका मन नहीं सकुचता। उस समय प्रेमके प्यासे नेत्र मनोहर मीनकी शोभाको क्षीण कर रहे थे ॥३३६॥

श्याम शरीर सुभाय सुहावन ❋ शोभा कोटि मनोज लजावन
जावक-युत-पद-कमल सुहाये ❋ मुनिवर मधुप रहत जहँ छाये

क्योंकि रामचन्द्रजीका साँवला शरीर करोड़ों कामदेवको भी लज्जित कर रहा था। चरणकमलोंमें महावर लगी हुई थी कि जिनमें मुनियोंके मन-मधुप निरन्तर लगे रहते हैं ॥२॥

पीत पुनीत मनोहर धोती ❋ हरत बाल रवि दामिनि जोती
कल किंकिणि कटिसूत्र मनोहर ❋ बाहु विशाल विभूषण सुन्दर

उनकी पीली धोती मानों बाल सूर्य और बिजलीकी ज्योतिको भी क्षीण किये दे रही थी। कमरमें करधनी शोभायमान थी और लम्बी भुजाओंमें भूषण धारण किये थे ॥४॥

पीत जनेउ महाछबि देई ❋ कर मुद्रिका चोरि चित लेई
सोहत ब्याह साज सब साजे ❋ उर आयत सब भूषण राजे

उनपर पीला जनेऊ महान् शोभा दे रहा था, हाथोंकी अँगूठी तो चित्तको चुराये ले रही थी। ब्याहके सभी साज सजाये हुए और सभी प्रकारके आभूषण धारण किए थे ॥६॥

पीत उपरना काँखा स्रोती ❋ दुहुँ आचरनि लगे मनि मोती
नयन कमल कल कुण्डल काना ❋ बदन सकल सौंदर्य निधाना

कन्धे पर काँधासीता पीला दुपट्टा जनेऊके समान पड़ा हुआ था, उसके दोनों आँचलों में मणि और मोती लगे हुये थे, कमलसे नेत्रों और कानोंमें कुण्डल पहने हुए थे ॥८॥

सुन्दर भृकुटि मनोहर नासा ❋ भाल तिलक रुचिरता निवासा
सोहत मुकुट मनोहर माथे ❋ मंगलमय मुकुता मणि गाथे

सुन्दर भृकुटी, मनोहर नासिका और मस्तक पर तिलक विराजमान था, फिर मस्तक पर मनोहर मुकुट था जिसमें मणियाँ गुथी हुई थीं ॥ १० ॥

छन्द—गाथे महामणि मौर मञ्जुल अंग सब चित चोरहीं।
पुर-नारि सुन्दर वर विलोकहिं निरखि छवि तृण तोरहीं॥
मणि बसन भूषण वारि आरति करहिं मङ्गल गावहीं।
सुर सुमन वर्षहिं सूत मागध बंदि सुयश सुनावहीं ॥५७॥

इसप्रकार दिव्य लणियोंसे गुँथा हुआ सुन्दर मौर सहित सब अङ्गोंकी शोभा चित्तको चुराए ले रही थी। जनकपुरकी स्त्रियाँ उन सुन्दर वरोंकी शोभा देखकर इसलिए तिनके तोड़ने लगीं कि,कहीं नजर न लग जाये। वे मणि, वस्त्र तथा आभूषणकी न्योछावर करके मंगल गाती हुई आरती करती थीं, तथा देवता फूल बरसाते और बन्दीजन यश बखानते थे ॥५७॥

छन्द--कोहबरहिं आने कुँवर कुँवरि सुआसिनिन्ह सुख पाइकै।
अति प्रीति लौकिक रीति लागी करन मङ्गल गाइकै ॥
लहकौरि गौरि सिखाव रामहिं सीयसन शारद कहैं।
रनिवास हास विलास रस वश जन्मको फल सब लहैं ॥५८॥

इस प्रकार सब सौभाग्यवती स्त्रियोंने दूल्हा और दुलहिनोंको कोहबरमें लाकर बैठा दिया। तो वहाँ पर मंगलके साथ सब प्रकार की लौकिक रीतियाँ की गईं। उस समय पार्वतीजी श्रीरामचन्द्रजीको और सरस्वतीजी श्रीजानकीजीको लहकौर सिखा रही थीं। इस प्रकार उस समयके हास-विलासके द्वारा समस्त रनिवासकी स्त्रियाँ, अपने जन्म लेनेका फल पा रही थीं अर्थात् उस आनन्दको देखकर वे अपना जन्म सुफल कर रही थीं ॥५८॥

निज पाणि मणिमहँ देखि प्रति मूरति स्वरूप निधान की।
चालति न भुजबल्ली बिलोकति बिरह वश भइ जानकी ॥
कौतुक विनोद प्रमोद प्रेम न जाइ कहि जानहिं अली।
वरकुँवरि सुन्दरि सकल सखिन लिवाय जनवासहिं चली ५९

उस समय सीताजीने देखा तो हाथकी मणिमें रूप निधान (पतिदेव) की मूर्ति पड़ी हुई है। तब अपना हाथ हटाते ही वह छाया विलग हो जाती, इस कारण उन्होंने अपनी भुजवल्लीको वहाँ से न हटाई और श्रीरामचन्द्रजीके प्रेम-विरहसे व्याकुल हो गईं। उस कौतुक और आमोद-प्रमोदका वर्णन नहीं हो सकता। उन स्त्रियोंने ही जाना, जो वहां मौजूद थीं। पश्चात् सुन्दर दूल्हा और दुलहिनोंको साथ लेकर सखियाँ जनवासेको चलीं ॥

तेहि समय सुनिय अशीश जहँ-तहँ नगर नभ आनँद महा।
चिरजियहु जोरी चारु चारिउ मुदित मन सबही कहा ॥
योगीन्द्र सिद्ध मुनीश देव बिलोकि प्रभु दुन्दुभि हनी।
चले हरषि बरसि प्रसून निज-निज लोक जयजय जयभनी ६०

उस समय जहाँ देखो, नगर भरमें चारों ओरसे महान् आनन्द और आशीर्वादात्मक यही ध्वनि हो रही थी कि, चारों जोड़ी चिरंजीवी रहें-लोग प्रसन्न मनसे ऐसा कह रहे थे। और प्रभु श्रीरामचन्द्रजीको देखकर सिद्ध-मुनि और देवतागण जोर-जोरसे नगाड़े बजाते और फूलोंकी वर्षा करते हुए तथा जय हो! जय हो! जय हो! ऐसा शब्द करते हुए अपने २ लोकको चल पड़े ॥ ६० ॥

दोहा–सहित बधूटिन कुँवर सब, तब आये पितु पास।

शोभा मंगल मोद भरि, उमँगेउ जनु जनवास ॥३३७॥

इस प्रकार अपनी २ पत्नियोंके सहित सब राजकुमार पिता महाराज दशरथ के पास आए॥ फिर तो मानों उस शोभा, मंगल और प्रेमसे सारा जनवास हर्षसे उमड़ पड़ा ॥ ३३७ ॥

पुनि जेवनार भयउ बहु भाँती ❀ पठये जनक बुलाय बराती
परत पाँवड़े बसन अनूपा ❀ सुतन समेत गमन किय भूपा

फिर बहुत प्रकारके व्यंजनों सहित जेवनार तैयार हुई, जनकजीने सब बारातियों को बुला भेजा। जब पुत्रों सहित राजा चले तो अनुपम वस्त्रों के पाँवड़े पड़ने लगे ॥ २ ॥

सादर सबके पाँव पखारे ❀ यथा-योग पीढ़न बैठारे
धोये जनक अवधपति चरणा ❀ शील सनेह जाय नहिं वरणा

फिर प्रेम पूर्वक सबके चरण धोकर उनको यथा योग्य पीढ़ों(आसनों)पर बिठाया। जनकजी ने दशरथजीका चरण जिस शील और स्नेहसे धोया वह वर्णन नहीं किया जा सकता ॥ ४॥

बहुरि राम-पद-पङ्कज धोये ❀ जे हर हृदय कमल महँ गोये
तीनिउ भाइ राम सम जानी ❀ धोये चरण जनक निज पाणी

प्रथम रामचन्द्रजीके चरणारविन्दोंको धोकर फिर भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न इन तीनों भाइयोंको रामचन्द्रजीके समान ही जानकर अपने हाथों से उनके चरण धोए ॥ ६ ॥

आसन उचित सबहिं नृप दीन्हें ❀ बोलि सूपकारी सब लीन्हे
सादर लगे परन पनवारे ❀ कनक नील-मणि परन सँवारे

फिर सबको यथोचित आसन देकर राजाने उत्तमोत्तम पाक कर्त्ताओंको बुला लिया। तब ऐसी पत्तलें पड़ने लगीं कि, जिनमेंके पत्ते सुवर्ण नीलमणिकी कीलोंसे गुँथे हुए थे ॥ ८ ॥

दोहा—सूपोदन सुरभी सरपि, सुन्दर स्वादु पुनीत।
क्षणमहँ सबके परुसिगे, चतुर सुआर विनीत ॥३३८॥

फिर तो वे चतुर रसोइए नम्रता सहित क्षण मात्र में ही सुन्दर, सुस्वादु और पवित्र दाल-भात और गो घृत सबके आगे परस गए ॥ ३३८ ॥

पंच कवल करि जेंवन लागे ❀ गारि गान सुनि अति अनुरागे
भाँति अनेक परे पकवाना ❀ सुधा सरिस नहिं जाहिं बखाना

फिर तो पंच-ग्रासीकर लोग भोजन करने लगे और भोजनके समय गाली-गानको सुनकर आनन्दित हुए। भाँति-भाँतिके पक्वान्न परोसे गये जिनमें अमृतसा स्वाद भरा था ॥ २ ॥

परुसन लगे सुआर सुजाना ❀ ब्यञ्जन विविध नाम को जाना
चारि भाँति भोजन विधि गाई ❀ एक-एक विधि वरणि न जाई

तब चतुर रसोइयोंने हर प्रकारके व्यंजनोंको परसा कि, जिनकी चार विधियाँ(चर्व्य, भक्ष्य, लेह्य, चोष्य)कही गई हैं, परन्तु उनमें एक-एक विधिके भोजनका वर्णन नहीं किया जा सकता है ॥ ४ ॥

छरस रुचिर ब्यञ्जन बहु जाती ❀ एक-एक रस अगणित भाँती

जेंवत देंहि मधुर ध्वनि गारी ❀ लै लै नाम पुरुष अरु नारी

वहाँ सुन्दर छहों रसके अगणित प्रकारके भोजन करते समय स्त्रियाँ, मीठी वाणी से अयोध्याकी स्त्रियों और पुरुषों के नाम ले-लेकर गालियाँ देने लगीं ।। ६ ।।

समय सुहावनि गारि विराजा ❀ हँसत राउ मुनि सहित समाजा
यहि विधि सब ही भोजन कीन्हा ❀ आदर सहित आचमन कीन्हा

उस समय की सुहावनी गालीको सुनकर राजा दशरथ अपने समाज सहित हँस रहे थे । इस विधिसे सबने भोजनकर सादर आचमन किया ।। ८ ।।

दोहा—देइ पान पूजे जनक, दशरथ सहित समाज ।
जनवासे गवने मुदित, सकल भूप शिरताज ।। ३३९ ।।

फिर सबको पान देकर राजा जनकने समाज सहित महाराज दशरथजीकी पूजा की और तब वे समस्त राजाओं के शिरोमणि प्रसन्न मनसे जनवासेको गमन किए ।। ३३९ ।।

नित नूतन मङ्गल पुर माहीं ❀ निमिष सरिस दिन यामिनि जाहीं
बड़े भोर भूपति-मणि जागे ❀ याचक गुण-गण गावन लागे

जनकपुरमें नित्य ही नया-नया आनन्द बढ़ने लगा, पलकके समान रात-दिन व्यतीत होने लगे ।। फिर बड़े तड़के ही महाराज दशरथ जागे तो याचकगण उनका गुण गाने लगे ।। २ ।।

देखि कुँवरवर-बधुन समेता ❀ किमि कहि जाय मोद मन जेता
प्रात क्रिया करि गे गुरु पाहीं ❀ महा प्रमोद प्रेम मन माहीं

चारों कुमारों और सुन्दर बहुओंको देखकर सबके मनमें जैसा आनन्द था कैसे कहा जाये ? प्रातः क्रिया करके प्रसन्न मनसे राजा दशरथ गुरु वसिष्ठजीके पास पहुँचे ।। ४ ।।

करि प्रणाम पूजा कर जोरी ❀ बोले गिरा अमिय जनु बोरी
तुम्हरी कृपा सुनिय मुनिराजा ❀ भयउ आजु मम पूरण काजा

तब उनके समीप जाकर हाथ जोड़कर प्रणाम किए और फिर अमृतमें डुबोयी हुई ऐसी मीठी वाणी बोले कि हे मुनिराज ! सुनिए, आपकी कृपासे आज मेरे सभी मनोरथपूर्ण हुये ।।

अब सब विप्र बुलाय गोसाईं ❀ देहु धेनु सब भाँति सुहाई
सुनि गुरु करि महिपाल बड़ाई ❀ पुनि पठये मुनि वृन्द बुलाई

हे गोसाईं ! अब ब्राह्मणोंको बुलाकर सब प्रकारसे सजी हुई गौवोंको दान दे डालिये । यह सुनकर वसिष्ठजीने राजाकी प्रशंसा की और फिर मुनियोंको बुला भेजा ।। ८ ।।

दोहा—बामदेव अरु देवऋषि, बालमीकि जाबालि ।
आये मुनिवर निकर तब, कौशिकादि तपशालि ।।३४०।।

तब आज्ञा पाते ही वामदेव, देवर्षि नारद, महर्षि वाल्मीकि, जाबालि और विश्वामित्रादिक तपशाली और श्रेष्ठ मुनिगण आ पहुँचे ।। ३४० ।।

दण्ड प्रणाम सबहिं नृप कीन्हा ❀ पूजि सप्रेम बरासन दीन्हा

चारि लक्ष्य बर धेनु मँगाई ❁ काम सुरभि सम शील सुहाई

राजा दशरथ ने सबको दण्ड प्रणाम किया और पूजाकर सबको उत्तम आसनोंपर बिठाया फिर चार लाख उत्तम गौवें मँगाई जो कि कामधेनुके समान अत्यन्त शोभायमान थीं ॥ २ ॥

सब विधि सकल अलंकृत कीन्हीं ❁ मुदित महीप ऋषिन्ह कहँ दीन्हीं
करत विनय बहु विधि नरनाहू ❁ लहेउँ आजु जग जीवन लाहू

तब उन गौवोंको सब प्रकार अलंकृत कर हर्षित हो राजाने ऋषियोंको प्रदान किया और बहुतसी प्रार्थना करते हुए राजाने कहा कि आज मुझे संसारमें जीने का लाभ मिला ॥ ४ ॥

पाइ अशीश महीश अनन्दा ❁ लिये बोलि पुनि याचक वृन्दा
कनक बसन मणि हय गय स्यंदन ❁ दिये बूझि रुचि रविकुल नन्दन

आशीर्वाद पाकर राजा दशरथ बड़े ही आनन्दित हुए, फिर उन्होंने याचकोंको बुलाया। और इच्छानुसार स्वर्ण, घोड़े, हाथी और रथ जिसने जो माँगा प्रदान किया ॥ ६ ॥

चले पढ़त गावत गुण-गाथा ❁ जय जय जय दिनकर कुलनाथा
इहि विधि राम विवाह उछाहू ❁ सकै न बरणि सहसमुख जाहू

तब सबके सब महाराज दशरथका यशोगान करते हुए जहाँके तहाँ चले गये, इस प्रकार श्रीरामचन्द्रजीके विवाह उत्सवको हजार मुखवाले शेषजी भी वर्णन नहीं कर सकते ॥

दोहा—बार-बार कौशिक चरण, शीश नाय कह राउ।
यह सब सुख मुनिराज तव, कृपाकटाक्ष प्रभाउ ॥३४१॥

राजा दशरथ बारम्बार विश्वामित्रके चरणोंमें शिर नवाते हैं और कहते हैं कि, हे मुनिराज! यह सारा सुख आपकी कृपासे ही प्राप्त हुआ है ॥३४१॥

जनक सनेह शील करतूती ❁ नृप सब भाँति सराह विभूती
नित उठि बिदा अवधपति माँगहिं ❁ राखहिं जनक सहित अनुरागहिं

जनकजीके स्नेह-शील और कीर्तिको राजा दशरथजी सराहते और नित्य प्रति चलना चाहते, किन्तु अत्यन्त प्रेम सहित महाराज जनक उनको रख लेते हैं ॥ २ ॥

नित नूतन आदर अधिकाई ❁ दिन प्रति सहस भाँति पहुनाई
नित नव नगर अनंद उछाहू ❁ दशरथ गवन सुहाइ न काहू

नित्य ही आनन्द बढ़ता जाता है और प्रतिदिन हजारों प्रकारकी पहुनाई होती है। नगरमें नित्य ही नवीन आनन्दोत्सव होते, दशरथजीका जाना किसीको अच्छा नहीं लगता है ॥४॥

बहुत दिवस बीते इहि भाँती ❁ जनु सनेह रजु बँधे बराती
कौशिक शतानन्द तब जाई ❁ कहा विदेह नृपहिं समुझाई

जब इस प्रकार बहुत दिन बीत गए और सब बराती स्नेहरूपी रस्सी में बँधे हुए थे। तब विश्वामित्र और शतानन्दजी, जनकजीके पास जाकर सब प्रकार से समझाकर बोले ॥६॥

अब दशरथ कहँ आयसु देहू ❁ यद्यपि छाँड़ि न सकहु सनेहू

भलेहि नाथ कहि सचिव बुलाये ❀ कहि जयजीव शीस तिन्ह नाये

अब महाराज दशरथको जाने की आज्ञा दीजिए—यद्यपि आप स्नेहको छोड़ नहीं सकते। तब हे नाथ! बहुत अच्छा, ऐसा कहकर उन्होंने अपने मंत्रियोंको बुलाया तो वे आकर शिर नवाये।

दोहा—अवधनाथ चाहत चलन, भीतर करहु जनाव।
भये प्रेमवश सचिव सुनि, विप्र सभासद राव॥३४२॥

तब राजा जनकने कहा—हे मन्त्रिवर! महाराज दशरथजी अब जाना चाहते हैं, रनिवास में खबर कीजिए। यह सुनकर मन्त्रियों सहित सभासद प्रेमके वश हो गये॥ ३४२॥

पुरवासिन सुनि चली बराता ❀ पूछत सकल परस्पर बाता
सत्य गवन सुनि सब बिलखाने ❀ मनहुँ साँझ सरसिज सकुचाने

बरातको विदा होते देख पुरवासी व्याकुल होकर एक दूसरेसे पूछने लगे कि सत्य ही बरात की विदाई है? यह सुनकर लोग दुःखी हुये, जैसे सन्ध्या समयमें कमल सकुचा जाते हैं॥

जहँ जहँ आवत बसे बराती ❀ तहँ तहँ सीध चला बहु भाँती
विविध भाँति मेवा पकवाना ❀ भोजन साज न जाइ बखाना

तब आते समय मार्गमें जहाँ-जहाँ बरातियोंको वास करना पड़ा था, वहाँ-वहाँके लिए अनेक प्रकारका सीधा, सामान भाँति-भाँतिका मेवा और पक्वान्न चल पड़ा जो वर्णनातीत है॥

भरि भरि बसह अपार कँहारा ❀ पठये जनक अनेक सुआरा
तुरँग लाख रथ सहस-पचीसा ❀ सकल सँवारे नख अरु शीशा

वह अपार सामग्री अगणित बैलों और कहारोंपर लादकर राजा जनकने भेजी॥ ५॥
फिर एक लाख घोड़े और पचीस हजार रथ सबको शिरसे पैर तक सजाकर॥ ६॥

मत्त सहस दश कुञ्जर साजे ❀ जिनहिं देखि दिशि कुञ्जर लाजे
कनकबसनमणिभरि-भरियाना ❀ महिषी धेनु वस्तु विधि नाना

साथ ही दसहजार मतवाले हाथी सजाये जिन्हें देखकर दिग्गज भी लज्जित होते थे तथा सुवर्ण, मणि और वस्त्रादिसे विमानोंको भरकर गाय, भैंस आदि सभी पदार्थ संग्रहकर दिया गया॥

दोहा—दाइज अमित न कहिय सकि, दीन्ह विदेह बहोरि।
जो अवलोकत लोकपति, लोक संपदा थोरि॥३४३॥

फिर महाराज जनकने इतना अपार दायज दिया जो कहा नहीं जाता। उसे देखकर लोकपति भी अपने लोकोंकी संपत्तिको थोड़ी गिनने लगे॥ ३४३॥

सब समाज इहि भाँति बनाई ❀ जनक अवधपुर दीन्ह पठाई
चली बरात सुनत सब रानी ❀ विकल मीन गण जनु लघुपानी

इस प्रकार समस्त समाजको ठीककर राजाजनकने अयोध्यापुरीको भेज दिया। बरातकी विदाई सुनकर रानियाँ वैसे ही व्याकुल हो गयीं, जैसे थोड़े पानीमें मछलियाँ व्याकुल हो जाती हैं॥

पुनि-पुनि सीय गोद करि लेहीं ❀ देइ अशीष सिखावन देहीं
होइहहु सन्तत पियहिं पियारी ❀ चिर अहिबात अशीष हमारी

वे बारम्बार सीताजी को गोदमें लेतीं और आशीर्वाद देकर शिक्षा देती हुई कहतीं, तुम्हारा सोहाग अचल होवे और अपने प्रियतमको सर्वदा ही प्रिय रहो ॥ ४ ॥

सासु श्वसुर गुरु सेवा करहू ❀ पति रुख लखि आयसु अनुसरहू
अति सनेह वश सखी सयानी ❀ नारि धर्म सिखवहिं मृदुबानी

सास, ससुर और गुरुकी सेवा करती हुई पतिके रुखको देखकर उनकी आज्ञाका पालन करना। इसप्रकार चतुर सखियाँ अत्यन्त स्नेह युक्त वाणीमें (सीताजीको) स्त्रीधर्म सिखाने लगीं॥

सादर सकल कुँवरि समुझाई ❀ रानिन बार-बार उर लाई
बहुरि बहुरि भेंटति महतारी ❀ कहहिं विरंचि रची कत नारी

इस प्रकार सबने प्रेम पूर्वक सीताजीको समझाया और रानियोंने बारम्बार हृदयसे लगाया। माता फिर-फिर भेंटतीं और कहतीं कि, ब्रह्माने स्त्रीको क्यों बनाया ? ॥

दोहा—तेहि अवसर भाइन सहित, राम भानु-कुलकेतु।
चले जनक मन्दिर मुदित, बिदा करावन हेतु ॥३४४॥

उसी समय भानुकुलके केतु रूप श्रीरामचन्द्रजी अपने भाइयों सहित प्रसन्न मनसे विदाईके लिए राजा जनकके महल (रनिवास) की ओर चले ॥ ३४४ ॥

चारिउ भाइ सुभाव सुहाये ❀ नगर नारि नर देखन आये
कोउ कह चलन चहत हैं आजू ❀ कीन्ह विदेह विदा कर साजू

तब उन स्वाभाविक सुन्दर चारों भाइयोंको देखनेके लिए नगरके स्त्री-पुरुष आ गये ॥ १ ॥ कोई कहता कि, आज ही चले जायँगे, विदेहराजने सब तैयारी कर दी है ॥ २ ॥

लेहु नयन भरि रूप निहारी ❀ प्रिय पाहुने भूप सुत चारी
को जानै केहि सुकृत सयानी ❀ नयन अतिथि कीन्हे विधि आनी

नेत्र भरकर इनके स्वरूपको देख लो क्योंकि राजाके चारों पुत्र प्यारे पाहुने हैं। हे सखी ! कौन जानता है कि किस पुण्य-प्रतापसे ब्रह्माने इन्हें लाकर हमारे नेत्रोंका अतिथि किया है ॥

मरणशील जिमि पाव पियूषा ❀ सुरतरु लहै जन्म कर भूखा
पाव नारकी हरिपद जैसे ❀ इनकर दरशन हम कहँ तैसे

नहीं तो इनका दर्शन हम लोगोंको वैसे ही दुर्लभ है, जैसे मृतकको अमृत, दरिद्रको कल्पवृक्ष और नारकी मनुष्यको भगवान्का परम पद (मोक्ष) दुर्लभ होता है ॥ ६ ॥

निरखि राम शोभा उर धरहू ❀ निज मन फणि मूरतिमणि करहू
इहि विधि सबहिं नयनफल देता ❀ गये कुँवर सब राज निकेता

श्रीरामचन्द्रजीकी शोभाको देखकर उन्हें सर्पकी मणिके समान अपने हृदय में रख लो ॥ ७ ॥ इस प्रकार नेत्रोंका फल देते हुए सब राजकुमार रनिवासमें जा पहुँचे ॥ ८ ॥

दोहा—रूप सिन्धु सब बन्धु लखि, हरषि उठेउ रनिवासु ।
करहिं निछावरि आरती, महामुदित मन सासु ।।३४५।।

तब उन रूपके समुद्र चारों भाइयोंको देखकर सारा रनिवास हर्षित हो उठा और सास रानी सुनयना प्रसन्न मनसे उनकी आरती करके न्योछावर देने लगीं ।। ३४५ ।।

देखि राम छबि अति अनुरागीं ❁ प्रेम-विवश पुनि पुनि पद लागीं
रही न लाज प्रीति उर लाई ❁ सहज सनेह बरणि किमि जाई

इस प्रकार श्रीरामजीकी शोभाको देखकर अत्यन्त प्रेमके वशीभूत हो बारबार चरणोंपर गिरने लगीं । यह स्वाभाविक स्नेह कैसे वर्णन हो, तब लज्जा-रहित प्रीति हृदयमें आ गई ।।

भाइन सहित उबटि अन्हवाये ❁ छरस अशन अति हेतु जिंवाये
बोले राम सुअवसर जानी ❁ शील सनेह सकुच मृदुबानी

फिर सब भाइयोंको उबटन लगा स्नान कराकर बड़े प्रेमसे षट्रस भोजन कराया । तब अच्छा समय जानकर श्रीरामचन्द्रजी सकुचा कर शील स्नेह युक्त मीठी वाणीमें बोले ।।

राउ अवधपुर चहत सिधाये ❁ बिदा होन हित हमहिं पठाये
मातु मुदित मन आयसु देहू ❁ बालक जानि करब नित नेहू

राजा अवधपुरको जाना चाहते हैं, विदाईके लिए हमको भेजा है । हे माताजी ! प्रसन्न मनसे आज्ञा दीजिए और अपना बालक जानकर सर्वदा प्रेम रखियेगा ।। ६ ।।

सुनत बचन बिलखेउ रनिवासू ❁ बोलि न सकहिं प्रेमवश सासू
हृदय लगाय कुँवरि सब लीन्हीं ❁ पतिन सौंपि विनती अति कीन्हीं

यह सुनते ही रनिवास दुःखी हो गया, सुनैनाजी प्रेमसे कुछ बोल न सकीं ।। ७ ।। उन्होंने सब राजकुमारियोंको हृदयसे लगाकर उन्हें उनके पतियोंको विनय पूर्वक सौंप दिया ।। ८ ।।

छन्द—करि विनय सिय रामहिं समर्पी जोरिकर पुनि पुनि कहै ।
बलि जाउँ तात सुजान तुम कहँ विदित गति सबकी अहै ।।
परिवार पुरजन मोहिं राजहिं प्राण प्रिय सिय जानवी ।
तुलसी सुशील सनेह लखि निज किंकरी करि मानवी ।।६१।।

तुलसीदासजी कहते हैं कि सीताजीको श्रीरामचन्द्रजीको सौंपकर बारंबार विनती कर हाथ जोड़कर कहने लगीं, कि हे तात ! मैं तुम्हारी बलि जाऊँ, तुम चतुर हो, सबके मनकी गतिको जानते हो । अतः इन कुटम्ब सहित पुरवासियों युक्त मुझे और राजाको यह सीता प्राणोंसे भी अधिक प्रिय है; सो तुम इसके सुन्दर शील और प्रेमको देख अपनी दासीके समान मानना ।। ६१ ।।

सोरठा—तुम परिपूरन काम, ज्ञान शिरोमणि भाव प्रिय ।
जन गुनगाहक राम, दोषदलन करुनायतन ।। ४० ।।

तुम सर्वदा ही परिपूर्ण काम और भाव-प्रिय ज्ञानियोंमें शिरोमणि हो ।। हे राम! तुम भक्तोंके गुण-ग्राहक और उनके दोषोंको नष्ट करनेवाले और करुणाके धाम हो ।। ३५ ।।

अस कहि रही चरन गहि रानी ❀ प्रेम पंक जनु गिरा समानी
सुनि सनेह सानी वर बानी ❀ बहु विधि राम सासु सनमानी

ऐसा कहकर रानी सुनैना उनके पाँवको पकड़कर ऐसे चुप हो रहीं मानों प्रेमपंकमें वाणी लुप्त हो गई हो ।। १ ।। तब उस स्नेह-युक्त श्रेष्ठ वाणीको सुनकर रामजी बहुत प्रकारसे सासुका सम्मान किये ।। २ ।।

राम विदा माँगत कर जोरी ❀ कीन्ह प्रणाम बहोरि बहोरी
पाइ अशीष बहुरि शिरनाई ❀ भाइन सहित चले रघुराई

फिर श्रीरामचन्द्रजीने हाथ जोड़कर विदा मांगी और बारम्बार प्रणाम किये ।। तब आशीर्वाद पाकर शिर झुकाए, और श्रीरामचन्द्रजी भाइयों सहित चल पड़े ।। ४ ।।

मंजु मधुर मूरति उर आनी ❀ भईं सनेह शिथिल सब रानी
पुनि धीरज धरि कुँवरि हँकारी ❀ बार-बार भेटहिं महतारी

तब उनकी सुन्दर मूर्तिको हृदयमें लाकर सब रानियाँ स्नेहसे शिथिल हो गयीं ।। फिर धैर्य धारण कर कुमारियोंको बुलाकर मातायें बारम्बार भेंटने लगीं ।। ६ ।।

पहुँचावहिं फिरि मिलहिं बहोरी ❀ बढ़ी परस्पर प्रीति न थोरी
पनि-पुनि मिलत सखिन बिलगाई ❀ बाल वत्स जनु धेनु लवाई

इस प्रकार पहुँचातीं और मिलतीं, प्रीति बहुत बढ़ गई। तब उस प्रकारके बारम्बार मिलाप से वैसा ही प्रकट हो रहा था मानों कोई नवीन ब्याई गौ अपने बछड़ेसे मिल रही हो ।।८।।

दोहा—प्रेम विवश नर नारि सब, सखिन सहित रनिवास ।
मानहु कीन्ह विदेह पुर, करुना विरह निवास ।।३४६।।

इस प्रकार सखियों सहित सारा रनिवास प्रेमके वशीभूत हो गया, मानों करुणा और विरहने जनकपुरमें निवासकर लिया हो ।। ३४६ ।।

शुक-सारिका जानकी ज्याये ❀ कनक पींजरन राखि पढ़ाये
ब्याकुल कहहिं कहाँ वैदेही ❀ सुनि धीरज परिहरै न केही

सीताजीने जो तोता और मैना सोनेके पिंजड़ोंमें रखकर पाला और पढ़ाया था। वे व्याकुल होकर कहने लगे कि सीता कहाँ हैं ? उसे सुनकर जो धैर्य न छोड़े ऐसा कौन है ? ।। २ ।।

भये विकल खग मृग यहि भाँति ❀ मनुज दशा कैसे कहि जाती
बन्धु समेत जनक तब आये ❀ प्रेम उमँगि लोचन जल छाये

जब सुआ एवं तोता जैसे पक्षी और मृग ऐसे विकल हुए तो मनुष्यकी दशा क्या कहें।।३।। उसी समय प्रेम युक्त नेत्रोंमें जल भरे भाई कुशध्वज सहित राजा जनक भी आ गये ।।४।।

सियहिं बिलोकि धीरता भागी ❀ रहे कहावत परम विरागी

लीन्ह राउ उर लाय जानकी ❁ मिटी महा मर्याद ज्ञान की

यद्यपि वे बड़े विरागी थे; किन्तु सीताज़ीको देखते ही उनका धैर्य जाता रहा ।। ५ ।। उनके ज्ञानकी मर्यादा लुप्त हो गई और सीताजीको हृदयसे लगा लिये ।। ६ ।।

समुझावत सब सचिव सयाने ❁ कीन्ह विचार सुअवसर जाने
बारहिं बार सुता उर लाई ❁ सजि सुन्दर पालकी मँगाई

मन्त्री समझाने लगे, तब सुअवसर जानकर उन्होंने धैर्य धारण किया ।।७।। और पुत्री को बारम्बार हृदयसे लगाकर सजी हुई पालकी मँगायी ।। ८ ।।

दोहा--प्रेम विवश नर नारि सब, जानि सुलगन नरेश ।
कुँवरि चढ़ाई पालकी, सुमिरे सिद्धि गणेश ।।३४७।।

समस्त स्त्री-पुरुष प्रेमके विशेष वश हो गए तब सुन्दर लग्न जानकर राजाने राजकुमारी को पालकीमें चढ़ाकर सिद्धिदाता गणेशजीका स्मरण किया ।। ३४७ ।।

बहुबिधि भूप सुता समुझाई ❁ नारि धर्म सब रीति सिखाई
दासी दास दिये बहुतेरे ❁ शुचि सेवक जे प्रिय सिय केरे

बहुत प्रकारसे राजा जनकने पुत्रीको समझाकर स्त्री-धर्म और कुलकी रीतियाँ सिखाई तथा सीताजीके प्रिय जितने भी पवित्र सेवक और दासियाँ थीं सबको साथ कर दिया ।।२।।

सीय चलत ब्याकुल पुरवासी ❁ होहिं शकुन शुभ मंगलरासी
भूसुर सचिव समेत समाजा ❁ चले संग पहुँचावन राजा

सीताजीके चलते ही नगरके रहनेवाले लोग व्याकुल हो गए और मंगलोंकी राशि शुभ शकुन होने लगे ।।६।। तब ब्राह्मणों और मन्त्रियोंके समाज सहित राजा जनक पहुँचाने चले ।।४।।

समय विलोकि बाजने बाजे ❁ रथ गज बाजि बरातिन साजे
दशरथ विप्र बोलि सब लीन्हे ❁ दान मान परिपूरण कीन्हे

उधर बरातियोंने अपने हाथी, घोड़े और रथ सजा लिए और समय देखकर बाजे बजने लगे ।।५।। राजा दशरथने समस्त ब्राह्मणोंको बुलाकर दान-मानसे सन्तुष्ट किया ।।६।।

चरण सरोज धूरि धरि शीशा ❁ मुदित महीपति पाय अशीशा
सुमिरि गजानन कीन्ह पयाना ❁ मंगल मूल शकुन भे नाना

फिर उनके चरणोंकी धूलि शिर पर चढ़ाकर प्रसन्न मनसे आशीर्वाद लिए और श्रीगणेश जीका स्मरण कर प्रस्थान किए तो नाना प्रकारके मंगलोंके मूल शकुन होने लगे ।।८।।

दोहा-- सुर प्रसून बरषहिं हरषि, करहिं अप्सरा गान ।
चले अवधपति अवधपुर, मुदित बजाइ निसान।।३४८।।

तब देवताओंने प्रसन्न होकर फूल बरसाया, अप्सराओंने गीत गाया । इस प्रकारसे अवध नरेश राजा दशरथजी डङ्का बजाते हुए अयोध्यापुरीको चले ।। ३४८ ।।

नृप करि विनय महाजन फेरे ❁ सादर सकल माँगने टेरे

भूषण बसन बाजि गज दीन्हें ❀ प्रेम पोषि ठाढ़े सब कीन्हें

फिर राजा दशरथने विनयपूर्वक समस्त श्रेष्ठजनोंको लौटाकर प्रेमपूर्वक समस्त मँगतोंको बुलाकर सबको खड़ाकर आभूषण, वस्त्र और हाथी घोड़े भी दिये ॥ २ ॥

बार-बार विरुदावलि भाखी ❀ फिरे सकल रामहिं उर राखी
बहुरि-बहुरि कोशलपति कहहीं ❀ जनक प्रेमवश फिरा न चहहीं

तब वे राजाकी विरुदावली बखानकर रामजीको अपने हृदयमें स्थान देकर लौट पड़े। कोशलपति (दशरथजी) बारम्बार कहते, किन्तु प्रेमके वश राजा जनक नहीं लौटते ॥

पुनि कह भूपति बचन सुहाये ❀ फिरिय महीप दूरि बड़ि आये
राउ बहोरि उतरि भए ठाढ़े ❀ प्रेम प्रवाह बिलोचन बाढ़े

उन्होंने फिर सुहावनी वाणीमें कहा—राजन् ! अब लौटिये, बहुत दूर आ गए ॥५॥ फिर वे स्वयं रथसे उतरकर खड़े हो गए और उनके नेत्र प्रेमजलसे डबडबा गए ॥ ६ ॥

तब विदेह बोले कर जोरी ❀ बचन सनेह-सुधा जनु बोरी
करौं कवनविधि विनय सुहाई ❀ महाराज मोहिं दीन्ह बड़ाई

तब राजा जनकजीने हाथ जोड़कर मानों स्नेहरूपी अमृत रससे युक्त वाणीमें कहा—हे महाराज ! मैं आपकी सुन्दर विनय किस प्रकार करूँ, आपने मुझको बड़ाई दी है ॥

दोहा--कोशलपति समधी सजन, सनमाने सब भाँति ।
मिलन परस्पर विनय अति, प्रीति न हृदय समाति ॥३४९॥

तब राजा दशरथजीने ऐसे सुनकर समधीका सब प्रकारसे सम्मान किया । फिर मिलते समयकी वह पारस्परिक विनती और प्रीति हृदयमें नहीं समाती ॥ ३४९ ॥

मुनिमंडलिहिं जनक शिरनावा ❀ आशीर्वाद सबहिं सन पावा
सादर पुनि भेंटे जामाता ❀ रूप शील गुणनिधि सब भ्राता

फिर राजा जनकजीने मुनीश्वरोंकी मण्डलीको शिर झुकाकर सबसे आशीर्वाद पाया और फिर रूपशील और गुणनिधि राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न सब भाइयोंको भेंटकर ॥

जोरि पंकरुह पाणि सुहाये ❀ बोले बचन प्रेम जनु छाये
राम करौं केहि भाँति प्रशंसा ❀ मुनि महेश मन मानस हंसा

फिर कमल समान दोनों हाथ जोड़ सुहावने वचन वोले कि, हे राम ! मैं तुम्हारी प्रशंसा किस प्रकार करूँ ? तुम श्रीमहादेवजी और समस्त मुनियोंके मानस-सरोवरके हंस हो ॥ ५ ॥

करहिं योग योगी जेहिं लागी ❀ क्रोध मोह ममता मद त्यागी
व्यापक ब्रह्म अलख अविनासी ❀ चिदानन्द निर्गुण गुण रासी

जिनके लिए योगिजन क्रोध-मोह, ममता और मद त्यागकर योग किया करते हैं। जो व्यापक, ब्रह्म, अलख अविनाशी, सत्य, चैतन्य, निर्गुण और गुणों की राशि हैं ॥ ६ ॥

मन समेत जेहि जान न बानी ❀ तरकि न सकहिं सकल अनुमानी

महिमा निगम नेति करि कहहीं ❀ जो तिहुँकाल एक रस रहहीं

जिसे मन और वाणी नहीं जान सकती और जहां तर्क और समस्त अनुमान भी सफल नहीं होते। जिसकी महिमाको वेद नेति-नेति कहते हैं और जो तीनों कालमें एकरस रहता है ॥

दोहा--नयन विषय मोकहँ भयउ, सो समस्त सुख मूल।
सबहिं लाभ जग जीव कहँ, भये ईश अनुकूल ॥ ३५० ॥

वही समस्त सुखोंके मूल आप मेरे नेत्रोंके विषय हुए (अर्थात् मुझे दर्शन दिये) आप जैसे ईश्वर के अनुकूल होनेपर जीवको इस संसारमें सभी प्रकारका लाभ प्राप्त हो जाता है ॥३५० ॥

सबहिं भाँति मोहिं दीन्ह बड़ाई ❀ निज जन जानि लीन्ह अपनाई
होहिं सहस दश शारद शेषा ❀ करहिं कल्प कोटिन भरि लेखा

सो आपने मुझे सब प्रकारसे बड़ाई दी, जो अपना भक्त जानकर अपना लिया है ॥१॥ इस बातको यदि दस हजार मुखसे शेष और सरस्वती भी करोड़ों कल्पों तक लिखें तो भी ॥२॥

मोर भाग्य राउर गुण गाथा ❀ कहिं न सिराहिं सुनिय रघुनाथा
मैं कछु कहौं एक बल मोरे ❀ तुम रीझहु सनेह सुठि थोरे

हे रामजी ! यह तो मेरा सौभाग्य है अन्यथा आपके गुणोंके समूहको कहकर कोई नहीं पार पा सकता। मैं तो केवल इतना ही कह सकता हूँ कि आप थोड़े ही स्नेहसे रीझ जाते हो ॥

बार बार मागहुँ कर जोरे ❀ मन परिहरै चरण जनि भोरे
सुनि वर बचन प्रेम जनु पोषे ❀ पूरण-काम राम परितोषे

मैं हाथ जोड़कर बारम्बार यही माँगता हूँ कि, भूलसे भी मेरा मन आपके चरणोंको न त्यागे। जनककी ऐसी प्रेमपूर्ण श्रेष्ठ वाणीको सुनकर श्रीरामचन्द्रजी सब प्रकार सन्तुष्ट हुए ॥

करि वर बिनय ससुर सनमाने ❀ पितु कौशिक वशिष्ठ सम जाने
बिनती बहुरि भरत सन कीन्हीं ❀ मिलि सप्रेम पुनि आसिष दीन्हीं

जनकजीको अपने पिता और गुरुके ही समान जानकर श्रीरामचन्द्रजीने विनती कर उनका सम्मान किया। फिर जनकजीने भरतजीकी विनती की एवं उन्हें आशीर्वाद दिया ॥

दोहा--मिले लषण रिपुसूदनहिं, दीन्ह अशीश महीश।
भये परस्पर प्रेमवश, फिरि फिरि नावहिं शीश ॥ ३५१ ॥

पश्चात् लक्ष्मण और शत्रुघ्नसे मिलकर राजा जनकने उन्हें भी आशीर्वाद दिया, और इस प्रकार सबलोग परस्पर इस प्रेमके वश हो बारम्बार शिर झुकाने लगे ॥३५१॥

बार बार करि विनय बड़ाई ❀ रघुपति संग चले सब भाई
जनक गहे कौशिक पद जाई ❀ चरण रेणु शिर नयनन लाई

तब बारम्बार विनती और बड़ाईकर सब भाइयों सहित श्रीरामचन्द्रजी चले तो जनकजी विश्वामित्रजीको दण्डवत्कर उनके चरणोंकी धूलिको शिर और नेत्रोंपर चढ़ाकर बोले ॥

सुनु मुनीश वर दरशन तोरे ❀ अगम न कछु प्रतीति मन मोरे

जो सुख सुयश लोकपति चहहीं ❁ करत मनोरथ सकुचत अहहीं

हे मुनीश्वर ! सुनिए, आपके दर्शनसे कुछ अगम नहीं है, मेरे मनमें यह विश्वास है। जो सुख और सुयश लोकपाल चाहते हैं और मनोरथके लिए संकुचित रहा करते हैं ॥४॥

सो सुख सुयश सुलभ मोहिं स्वामी ❁ सब विधि तव दर्शन अनुगामी
कीन्ह विनय पुनि-पुनि शिर नाई ❁ फिरे महीपति आसिष पाई

सो हे स्वामी ! वही सुख और सुन्दर यश आपके दर्शनोंसे मुझे सहज ही प्राप्त हो गया। विनती करते हुए राजा जनकजी विश्वामित्रजीसे भी आशीर्वाद लिये ॥ ६ ॥

चली बरात निसान बजाई ❁ मुदित छोट बड़ सब समुदायी
रामहिं निरखि ग्राम नरनारी ❁ पाय नयन फल होहिं सुखारी

तव प्रसन्न मनसे डङ्का बजाकर सारे समाज सहित बारातने प्रस्थान किया ॥७॥ ग्रामके स्त्री-पुरुष श्रीरामचन्द्रजीको देख अपने नेत्रोंका फल पाकर सुखी होने लगे ॥ ८ ॥

दोहा—बीच-बीच वर-वास करि, मग लोगन सुख देत।
अवध समीप पुनीत दिन, पहुँची आइ जनेत ॥ ३५२ ॥

तब मार्गमें कहीं-कहीं वास करते और मार्गके लोगोंको सुख देते हुए, शुभ दिनमें बरात अयोध्याके पास आ पहुँची ॥ ३५२ ॥

हने निसान पणव बहु बाजे ❁ भेरि शंख ध्वनि हय गज गाजे
झाँझ भेरि डिंडिमी सुहाई ❁ सरस राग बाजहिं सहनाई

तब तो निशान, ढोल और बहुत से बाजे बजने लगे, शंख और नगाड़ोंकी ध्वनि होने लगी, घोड़े-हाथी चिग्घाड़ने लगे। झाँझ, मृदंग और शहनाई रसीले रागसे बजने लगी ॥२॥

पुरजन आवत अकनि बराता ❁ मुदित सकल पुलकावलि गाता
निज निज सुन्दर सदन सँवारे ❁ हाट बाट चौहट पुर द्वारे

जब नगरवासियोंने सुना कि, बारात आ रही है तो सब लोग प्रसन्न हो पुलकायमान हो गये ॥३॥ और अपने-अपने सुन्दर घरोंको सजाकर नगरके द्वारोंको सजा दिये ॥४॥

गली सकल अरगजा सिंचाई ❁ जहँ तहँ चौके चारु पुराई
बनी बजार न जात बखाना ❁ तोरण केतु पताक बिताना

समस्त गलियोंको अरगजासे सींचकर जहाँ-तहाँ सुन्दर चौक पुरा दिया ॥५॥ तोरण-ध्वजा पताकाओंसे सजो हुई बाजारकी बनावट बखानी नहीं जाती ॥ ६ ॥

सकल पूँगिफल कदलि रसाला ❁ रोपे बकुल कदम्ब तमाला
लगे सुभग तरु परसत धरणी ❁ मणिमय आलबाल कलकरणी

फल सहित सुपारी, केले, आम जहाँ-तहाँ रोप दिए गये, पृथ्वीमें रोपते ही वे वृक्ष लग गये और फलोंके भारसे पृथ्वीको छूने लगे जिनके गमलों पर मणियोंकी सुन्दर रचना हुई थी ॥

दोहा—विविध भाँति मंगल कलश, गृह गृह रचे सँवारि ।
सुर ब्रह्मादि सिहाहिं सब, रघुबर पुरी निहारि ।।३५३।।

घर-घरमें शोभायुक्त माङ्गलिक कलश सजाकर रखे गए । ऐसी श्री रघुनाथजीकी पुरी अयोध्याको देखकर ब्रह्मादिक देवता भी ईर्ष्या करने लगे ।। ३५३ ।।

भूप भवन तेहि अवसर सोहा ❀ रचना देखि मदन मन मोहा
मंगल शकुन मनोहरताई ❀ ऋधि सिधि सुख सम्पदा सुहाई

उस समय राजा दशरथका भवन कैसा शोभित था कि जिसकी रचना देखकर कामदेवका भी मन मोहित हो रहा था। ऐसा मंगल शकुन, मनोहरता सिद्धियाँ, सुख और सम्पदा शोभायमान थीं।।

जनु उछाह सब सहज सुहाए ❀ तनु धरि धरि दशरथ गृह आए
देखन हेतु राम बैदेही ❀ कहहु लालसा होइ न केही

मानों समस्त उत्साह साक्षात् शरीर धारण कर राजा दशरथके गृहमें आए थे । तब भला कहो तो सही कि सीता-रामका दर्शन करनेकी किसे इच्छा नहीं होगी ? ।।

यूथ यूथ मिलि चलीं सुआसिनि❀निज छबि निन्दहिं मदन बिलासिनि
सकल सुमंगल सजे आरती ❀ गावहिं जनु बहु वेष भारती

झुण्डकी झुण्ड कोमलाङ्गी स्त्रियाँ जो रतिका भी निरादर करनेवाली थीं, हाथमें सुन्दर आरती सजाकर चलीं मानों सरस्वती ही बहुत-सा रूप धारणकर गा रही हों ।। ६ ।।

भूपति भवन कोलाहल होई ❀ जाय न बरणि समय सुख सोई
कौशल्यादि राम महतारी ❀ प्रेम विवस तनु दशा बिसारी

राजा दशरथके गृहमें कोलाहल हो रहा था, उस समयके सुखको बखाना नहीं जाता ।। कौशिल्यादि मातायें प्रेमके वशीभूत हो अपने शरीरकी दशाको भूल रही थीं ।।

दोहा—दिये दान विप्रन विपुल, पूजि गनेश पुरारि ।
प्रमुदित परम दरिद्र जनु, पाय पदारथ चारि ।। ३५४ ।।

उन्होंने श्रीमहादेवजी और गणेशजीकी पूजाकर ब्राह्मणोंको प्रसन्न मनसे बहुत-सा दान दिया तो वे ऐसे प्रसन्न हुए मानों परम दरिद्रको चारों पदार्थ मिल गये हों ।।३५४।।

प्रेम प्रमोद विबश सब माता ❀ चलहिं न चरन शिथिल भे गाता
राम दरश हित अति अनुरागीं ❀ परिछन साज सजन सब लागीं

इस प्रकारके प्रेमानन्दसे विवश हो माताओंका पाँव नहीं उठता था ।।१।। परन्तु श्रीरामजीके दर्शनोंके लिए अत्यन्त अनुरागसे युक्त वे आरतीका साज़ सजाने लगीं ।। २ ।।

विविध विधान बाजने बाजे ❀ मंगल मुदित सुमित्रा साजे
हरद दूब दधि पल्लव फूला ❀ पान पूँगिफल मंगल मूला

अनेक प्रकारके बाजे बजने लगे और सुमित्राने प्रसन्न मनसे मंगल थाल सजाये ।। ३ ।। हल्दी, दूब, दही, पल्लव, फूल, पान-सुपारी और मांगलिक पदार्थ उसमें रखे ।। ४ ।।

अचछत अंकुर रोचन लाजा ❀ मंजुल मंजरि तुलसि बिराजा

छुहे पुरट घट सहज सुहाये ❀ मदन सकुचि जनु नीड़ बनाये

अक्षत, अँखुये, गोरोचन, लावा और तुलसीकी कोमल मंजरी और रँगे हुए सोनेके घड़े, जो साधारण ही बड़े शोभायमान थे, मानों कामदेव रूपी पक्षीने घोंसला बनाया हो ॥६॥

शकुन सुगन्ध न जाइ बखानी ❀ मंगल सकल सर्जाहि सब रानी
रचीं आरती विविध विधाना ❀ मुदित करहिं कल मंगल गाना

सब रानियाँ शुभप्रद सुगन्धियोंसे ऐसा युक्त हो रही थीं कि बखान नहीं हो सकता। विविध भाँतिकी आरती सजाकर और प्रसन्न होकर सब सुन्दर मांगलिक गीत गाती हुई ॥

दोहा—कनकथार भरि मंगलन्हि, कमल करनि लिये मात।
चलीं मुदित परिछन करन, पुलक प्रफुल्लित गात ॥३५५॥

मातायें अपने कमलवत् हाथोंमें सुवर्णके थालमें मांगलिक द्रव्योंको भरकर लिए हुए प्रसन्न मनसे परिछन करने चलीं, उनके शरीर पुलकायमान हो रहे थे ॥ ३५५ ॥

धूप धूम नभ मेचक भयउ ❀ सावन घन मण्डल जनु छयऊ
सुरतरु सुमन माल सुर वर्षहिं ❀ मनहुँ बलाक अवलि मन कर्षहिं

उस समय धूम्राच्छन्न आकाश ऐसा हो गया, मानों सावनके बादल आकाशको छाए हों, देवतागण कल्पवृक्षके पुष्प-मालाओंको ऐसे बरसा रहे थे मानों बगुलोंका झुण्ड उड़ रहा हो ॥ २ ॥

मंजुल मणिमय बन्दनवारे ❀ मनहुँ पाकरिपु चाप सँवारे
प्रकटहिंदुरहिंअटन्हिपरभामिनि❀चारु चपल जनु दमकहिं दामिनि

और सुन्दर मणि युक्त बन्दनवारें ऐसी लटकती हैं, मानों इन्द्रने धनुष सँभाला है। बारात देखनेको अटारियोंपर स्त्रियाँ बिजलीके समान लुक-छिप रही थीं ॥ ४ ॥

दुन्दुभि ध्वनि घन गरजहिं घोरा ❀ याचक चातक दादुर मोरा
सुर सुगन्ध शुचि बरसहिं बारी ❀ सुखी सकल शशिपर नर नारी

नगाड़े ऐसे बजते हैं मानों बादल घोर गरजते हैं और मांगनेवाले मानों पपीहे, मेढक और मोर हैं। देवता सुगन्ध युक्त निर्मल जल बरसाते और सब स्त्री-पुरुष सुखी हो रहे हैं ॥६॥

समय जानि गुरु आयसु दीन्हा ❀ पुर प्रवेश रघुकुल मणि कीन्हा
सुमिरि शंभु गिरजा गणराजा ❀ मुदित महीपति सहित समाजा

तब उपयुक्त समय देख गुरुदेवकी आज्ञासे श्रीरामचन्द्रजीने नगरमें प्रवेश किया ॥७॥ तब राजा दशरथ अपने समाज सहित शंकर-पार्वती एवं गणेशजीका स्मरण करके प्रसन्न हुए ॥८॥

दोहा—होहिं शकुन बरसहिं सुमन, सुर दुन्दुभी बजाइ।
विबुध बधू नाचहिं मुदित, मंजुल मंगल गाइ ॥ ३५६ ॥

तब शकुन होने लगे, देवता लोग दुन्दुभी बजाते हुए फूलोंकी वर्षा करने लगे और देवताओंकी स्त्रियाँ प्रसन्नतासे नाच-नाचकर सुन्दर मांगलिक गीत गाने लगीं ॥ ३५६ ॥

मागध सूत बन्दि नट नागर ❀ गावहिं यश तिहुँ लोक उजागर
जय धुनि विमल वेद बर-बानी ❀ दश दिशि सुनिय सुमंगल सानी

माँगनेवाले, पौराणिक, भाट और चतुर नट तीनों लोकोंमें उँजाला करनेवाले यशको गाते हैं ।।१।। सुन्दर आनन्दसे सनी हुई दशों दिशाओंमें वेद वाणी सुनाई देती है ।।२।।

विपुल बाजने बाजन लागे ❀ नभ सुर नगर लोग अनुरागे
बने बराती बरनि न जाहीं ❀ महा मुदित मन सुख न समाहीं

अनेक प्रकारके बाजे बजने लगे, आकाशमें देवता और नगरवासी मनुष्य प्रसन्न हुये। बारातियों का बनाव बखाना नहीं जाता और उस समयकी अत्यन्त प्रसन्नताका सुख मनमें नहीं समाता ।।४।।

पुरवासिन तब राउ जुहारे ❀ देखत रामहिं भये सुखारे
करहिं निछावरि मणिगणचीरा ❀ वारि विलोचन पुलक शरीरा

तब पुरवासियोंने राजाको जुहार की और सब श्रीरामचन्द्रजीको देखकर सुखी हो गये ।।५।। नेत्रोंमें जल भरकर मणियोंके समूह और वस्त्रोंकी न्योछावर देने लगे ।।६।।

दोहा–इहि विधि सबहीं देत सुत, आये राजदुआर ।
मुदित मातु परिछन करहिं, बधुन समेत कुमार ।। ३५७ ।।

इस प्रकार सबको सुख देते हुये राजद्वार पर आये तो मातायें प्रसन्न मनसे दुलहिनों सहित राजकुमारोंका परिछन करने लगीं ।। ३५७ ।।

शिविका सुभग उहार उघारी ❀ देखि दुलहिनिन्ह होहिं सुखारी
आरति करहिं मुदित नर नारी ❀ हर्षहिं निरखि कुँवर वर चारी

जब पालकियोंका ओहार उठाकर देखा तो दुलहिनोंको देख सुखी हो गयीं। चारों कुमारोंको देख स्त्री पुरुष प्रसन्न हो आरती कर प्रसन्न होते ।। २ ।।

करहिं आरती बारहिं बारा ❀ प्रेम प्रमोद कहै को पारा
भूषण मणि पट नाना जाती ❀ करहिं निछावरि अगणित भाँती

बारम्बार आरती करती हैं, उस प्रेमानन्दको कहकर कौन पार पावेगा ?।।३।। स्त्रियाँ वस्त्र, आभूषण और अनेक जातिकी मणियाँ अनेक प्रकारसे न्योछावर करती हैं ।।४।।

बधुन समेत देखि सुत चारी ❀ परमानन्द मगन महतारी
पुनिपुनिसीय राम-छबि देखी ❀ मुदित सफल जग जीवन लेखी

मातायें चारों पुत्रोंको बहुओं सहित देखकर परमानन्दके सुखमें मग्न हैं ।। ५ ।। बारम्बार सीताजी और श्रीरामचन्द्रजीकी शोभा देखकर प्रसन्न होती हैं ।। ६ ।।

सखी सीय मुख पुनि-पुनि चाही ❀ गान करहिं निज सुकृत सराहीं
बर्षहिं सुमन छनहिं छन देवा ❀ नाचहिं गावहिं लावहिं सेवा

सखियाँ बारम्बार सीताजीके मुखकी ओर देखकर अपने पुण्यकी सराहना करती हुई गीत गाती हैं। देवता प्रसन्न हो फूल बरसा क्षण-क्षणमें अपनी सेवा जनाते हैं ।। ८ ।।

देखि मनोहर चारिउ जोरी ❀ शारद उपमा सकल ढँढोरी
देत न बनहिं निपट लघु लागी ❀ इक टक रहीं रूप अनुरागी

उन मनोहर चारों जोड़ियोंकी उपमा खोजते २ शारदा भी चकित होती हैं। परन्तु सारी उपमायें अत्यन्त छोटी लगीं तो रूप पर मोहित होकर एक दृष्टिसे देखती ही रह गयीं ॥८॥

दोहा—निगम नीति कुलरीति करि, अर्घ पाँवड़े देत।
बधुन सहित सुत परिछि सब, चलीं लिवाय निकेत ॥३५८॥

इस प्रकार मातायें वेद विधिसे परिछन और अपने कुलकी रीति करके आगे २ जल गिराते तथा पाँवड़े बिछाते हुए बहुओं सहित पुत्रोंको लिवाकर घरमें चली गयीं ॥ ३५८ ॥

चारि सिंहासन सहज सुहाये ❀ जनु मनोज निज हाथ बनाये
तिन पर कुँवरि कुँवर बैठारे ❀ सादर पाँव पुनीत पखारे

फिर जो सहज ही शोभायमान चार सिंहासन थे जिनको कि मानों कामदेवने ही अपने हाथसे बनाया था उस पर दूल्हा और दुलहिनोंको बैठाकर फिर आदर सहित पवित्र पाँव धोये ॥२॥

धूप दीप नैवेद्य वेद-विधि ❀ पूजे वर दुलहिनि मंगलनिधि
बारहिं बार आरती करहीं ❀ व्यजन चारु चामर शिर ढरहीं

फिर वेद विधानसे धूप-दीप, नैवेद्य करके कल्याणनिधि वर दुलहिनोंकी पूजा कर ॥४॥ बारम्बार आरती कर मस्तकपर शोभायमान पंखे और चँवर डुलाने लगीं ॥ ४ ॥

वस्तु अनेक निछावरि होहीं ❀ भरी प्रमोद मातु सब सोहीं
पावा परमतत्त्व जनु योगी ❀ अमृत लहेहु जनु संतत रोगी

आनन्द मग्न हो सब मातायें अनेक प्रकारकी वस्तुयें न्योछावर दती हैं और प्रसन्नतामें भरी हुई कैसी दीखती हैं कि, मानों योगीने परम तत्त्व पाया हो या रोगीको अमृत मिल गया हो ॥

जन्म रङ्क जनु पारस पावा ❀ अन्धहिं लोचन लाभ सुहावा
मूक बचन जनु शारद छाई ❀ मानहु समर शूर जय पाई

मानों जन्मके दरिद्रको पारसमणि और अन्धेको सुन्दर नेत्रोंका लाभ हुआ हो ॥ ७ ॥ जैसे गूँगेमें सरस्वतीका निवास हो गया हो या किसी शूरने विजय पाई हो ॥ ८ ॥

दोहा—यहि सुखते शतकोटि गुन, पावहिं मातु अनन्द।
भाइन सहित विवाहि घर, आये रघुकुलचन्द ॥३५९॥

इन सब सुखोंसे भी करोड़ गुना अधिक आनन्द माताओंको उस समय हुआ जब सब भाइयों सहित श्रीरामचन्द्रजी विवाह करके घर आ गये ॥ ३५९ ॥

दोहा—लोकरीति जननी करहिं, वर दुलहिन सकुचाहिं।
मोद विनोद बिलोकि बड़, राम मनहिं मुसुकाहिं ॥३६०॥

मातायें लोक रीति करतीं जिसे देखकर दूल्हा और दुलहिनें सकुचाती थीं। इस बड़े उत्सवके आनन्दको देखकर श्रीरामचन्द्रजी मन ही मनमें मुसकुराते थे ॥ ३६० ॥

देव पितर पूजे विधि नीकी ❀ पूजी सकल बासना जीकी
सबहिं बन्दि माँगहिं बरदाना ❀ भाइन सहित राम कल्याना

देवता और पितरोंकी भलीभाँति पूजा की गई क्योंकि मनकी सब इच्छा पूरी हुई। उनकी वन्दनाकर सबने यही वरदान माँगा कि भाइयों सहित श्रीरामचन्द्रजीका कल्याण होवे ।।२।।

अन्तरहित सुर आशिष देहीं ❀ मुदित मातु अञ्चल भरि लेहीं
भूपति बोलि बरातिन लीन्हे ❀ यान बसन मणि भूषण दीन्हे

देवता आकाशसे आशीर्वाद देते और मातायें अंचलोंमें भरकर ले रही थीं ।।३।। राजा दशरथने बारातियोंको बुला उन्हें रथ, वस्त्र और आभूषण दिये ।। ४ ।।

आयसु पाइ राखि उर रामहिं ❀ मुदित गये सब निज-निज धामहिं
पुर-नर-नारि सकल पहिराये ❀ घर-घर बाजहिं अनँद बधाये

फिर वे आज्ञा पा रामजीको हृदयमें धारण कर प्रसन्न हो अपने-अपने घर चले गये। नगर के सब स्त्री पुरुषोंको पहनावा दिया गया और घर-घरमें आनन्दकी बधाई बज रही थी ।।

याचक जन याचहिं जोइ-जोई ❀ प्रमुदित राउ देहिं सोइ-सोई
सेवक सकल बजनियाँ नाना ❀ पूरन किये दान सनमाना

याचकोंने जो-जो माँगा राजाने प्रसन्न मनसे वही-वही दिया ।। ७ ।। समस्त सेवकोंको तथा अनेक भाँतिके बाजा बजानेवालोंको दान-सम्मानसे पूर्ण किया गया ।। ८ ।।

दोहा—देहिं अशीश जुहारि सब, गावहिं गुन गन गाथ।
तब गुरु भूसुर सहित गृह, गमन कीन्ह रघुनाथ ।।३६१।।

याचकगण राजाकी जुहार कर आशीर्वाद देते हुए उनके गुणोंके समूहकी गाथा गाते हैं। तब ब्राह्मणों सहित राजा दशरथजी अपने राजमहलको चले ।। ३६१ ।।

जो वसिष्ठ अनुशासन दीन्हा ❀ लोक वेद विधि सादर कीन्हा
भूसुर भीर देखि सब रानी ❀ सादर उठीं भाग्य बड़ि जानी

वसिष्ठजीने जो आज्ञा दी महाराजने उन सब वैदिक रीतियोंको प्रेमसे पूर्ण किया ।।१।। ब्राह्मणोंकी भीड़ देख सब रानियाँ अपना बड़ा भाग्य जानकर आदर सहित उठी ।। २ ।।

पायँ पखारि सकल अन्हवाये ❀ पूजि भलीं विधि भूप जिंवाये
आदर दान प्रेम परिपोषे ❀ देत अशीश चले मन तोषे

और सबका पाँव धो स्नान कराकर पूजा कीं, फिर भलीभाँति राजाने भोजन कराया ।।३।। ब्राह्मण प्रसन्नतासे आशीर्वाद देते हुए मनसे संतुष्ट हो घर चले गये ।। ४ ।।

बहु विधि कीन्ह गाधिसुत पूजा ❀ नाथ मोहिं सम धन्य न दूजा
कीन्ह प्रशंसा भूपति भूरी ❀ रानिन्ह सहित लीन्ह पग धूरी

तब राजाने विश्वामित्रकी पूजाकर कहा—हे नाथ! मेरे समान दूसरा कोई धन्य नहीं हैं।५। राजा ने प्रशंसा करके रानियों सहित उनकी भी चरण धूलिको अपने मस्तकपर चढ़ाया ।।६।।

भीतर भवन दीन्ह वर बासू ❀ मन जोगवत रह नृप रनिवासू
पूजे गुरु पद कमल बहोरी ❀ कीन्ह विनय मन प्रीति न थोरी

फिर उनको अन्तःपुरमें सुन्दर वास-स्थान दिया। फिर राजा दशरथने वशिष्ठजीके चरणों की पूजा की और प्रेम सहित विनती किए तथा मनमें थोड़ी प्रीति नहीं, बहुत है ॥ ८ ॥

दोहा--बधुन समेत कुमार सब, रानिन सहित महीश।
पुनि पुनि वन्दत गुरु चरन, देत अशीश मुनीश ॥३६२॥

इस प्रकार बहुओं सहित चारों कुमार और रानियों सहित राजा दशरथने बारम्बार गुरुदेवके चरणोंकी वन्दना की और मुनीश्वरने आशीर्वाद दिया ॥ ३६२ ॥

विनय कीन्ह उर अति अनुरागे ❀ सुत सम्पदा राखि सब आगे
नेग माँगि मुनि नायक लीन्हा ❀ आशीर्वाद बहुत विधि दीन्हा

फिर राजाने पुत्र और सारी सम्पदाको उनके आगे रखकर अत्यन्त प्रेमपूर्वक विनती किया और हृदयमें अत्यन्त प्रसन्न हुए। वसिष्ठने अपना नेग मांगकर लिया और अनेक आशीर्वाद दिया॥

उर धरि रामहिं सीय समेता ❀ हर्षि कीन्ह गुरु गवन निकेता
बिप्रबधू सब भूप बुलाईं ❀ चीर चारु भूषण पहिराईं

पश्चात् राम-सीताको हृदयमें धारणकर हर्षित हो वशिष्ठजी अपने घर चले गये॥३॥ तब राजाने सब ब्राह्मणोंकी पत्नियोंको बुलाकर उनको सुन्दर आभूषण और वस्त्र पहनाया ॥ ४ ॥

बहुरि बुलाइ सुआसिनि लीन्हीं ❀ रुचि विचारि पहिरावनि दीन्हीं
नेगी नेग योग सब लेहीं ❀ रुचि अनुरूप भूपमणि देहीं

फिर सुहागिनियोंको बुलाकर उनकी रुचिके अनुसार सबको पहनावा दिया। सब नेगी अपना नेग-योग लेते और राजाओंके शिरोमणि दशरथजी सबको रुचिके अनुसार देते थे ॥

प्रिय पाहुने भूप जे आने ❀ भूपति भली भाँति सनमाने
देव देखि रघुबीर बिवाहू ❀ वर्षि प्रसून प्रशंसि उछाहू

राजाके यहाँ जितने प्यारे पाहुने आए थे उनका उन्होंने बड़ा सम्मान किया ॥ ७ ॥ श्रीरामचन्द्रजीका विवाह हो गया यह देख देवता फूल बरसाकर उत्सव करते थे ॥ ८ ॥

दोहा--चले निसान बजाय सुर, निज निज पुर सुख पाय।
कहत परस्पर राम यश, हर्ष न हृदय समाय ॥३६३॥

इस प्रकार देवगण श्रीरामचन्द्रजीका यश वर्णन करते और नगाड़े बजाते हुए आनन्द पूर्वक अपने स्थानको चले गये, वह हर्ष हृदयमें नहीं समाता ॥ ३६३ ॥

सब विधि सबहिं समदि नरनाहू ❀ रहा हृदय भरि पूरि उछाहू
जहँ रनिवास तहाँ पगु धारे ❀ सहित बधूटिन कुँवर निहारे

तब राजाने सबका सब प्रकारसे सम्मान किया और मनमें पूरा आनन्द भर गया ॥ १ ॥ फिर जहाँ रनिवास था, वहाँ पधारे और बहुओं सहित कुमारोंको देखे ॥ २ ॥

लिये गोद भरि मोद समेता ❀ को कहि सकइ भयउ सुख जेता
बधू सप्रेम गोद बैठारीं ❀ बार-बार हिय हरषि दुलारीं

और सानन्द गोद में लिए, उस समय जितना सुख हुआ उसे कौन कह सकता है? बहुओं को स्नेह सहित गोदमें बैठाये और मनमें प्रसन्न हो बारम्बार लाड़-प्यार किया ॥

देखि समाज मुदित रनिवासू ❁ सबके उर आनँद किय बासू
कहेउ भूप जिमि भयउ विवाहू ❁ सुनि-सुनि हर्ष होत सब काहू

उस समाजको देखकर सारा रनिवास आनन्दमग्न हो गया। फिर जैसे विवाह हुआ दशरथजी कहने लगे, उसे सुन-सुनकर सबके हृदयमें हर्ष हो रहा था ॥ ६ ॥

जनक राज गुण शील बड़ाई ❁ प्रीति रीति सम्पदा सुहाई
बहुविधि भूप भाट जिमि बरणी ❁ रानी सब प्रमुदित सुनि करणी

राजा जनकके गुण, शील, स्वभाव, प्रीति, रीति और सम्पदाकी शोभाको भाँटके समान राजा दशरथने वर्णन किया, उस कीर्तिको सुनकर सब रानियाँ प्रसन्न हो गयीं ॥ ८ ॥

दोहा--सुतन समेत नहाय नृप, बोलि लिये गुरु ज्ञाति।
भोजन कीन्ह अनेक विधि, घरी पाँच गई रात ॥३६४॥

पश्चात् राजा दशरथने पुत्रों सहित स्नान किया और अपनी जातिके बड़े लोगों को बुलाकर पाँच घड़ी रात गये भोजन किया ॥ ३६४ ॥

मङ्गलगान करहिं वर भामिनि ❁ भइ सुखमूल मनोहर यामिनि
अँचेइ पान सबकाहुन पाये ❁ स्रग सुगन्ध भूषित छवि छाये

सुन्दर स्त्रियाँ मंगलगान करती थीं और वह रात मनको हरन वाली औरगुणोंकी मूल हुई। आचमन कर सबने पान खाया और शरीरमें सुगन्धित द्रव्य लगा सजकर शोभासे छा गये ॥

रामहिं देखि रजायसु पाई ❁ निज निज भवन चले शिरनाई
प्रेम प्रमोद विनोद बड़ाई ❁ समय समाज मनोहरताई

तब श्रीरामचन्द्रजीका दर्शनकर आज्ञा ले शिर नवाकर लोग अपने-अपने घर गये ॥३॥ उस समयके प्रेमानन्द, उत्सव, बड़ाई और समाजकी मनोहरता को ॥ ४ ॥

कहि न सकहिं श्रुति शारद शेषू ❁ वेद विरञ्चि महेश गणेशू
सो मैं कहौं कवन विधि वरणी ❁ भूमि-नाग शिर धरइ कि धरणी

वेद, सरस्वती, शेषजी, ब्रह्मा, शिव और गणेशजी भी नहीं कह सकते। तब भला उसे मैं कैसे कह सकता हूँ, कहीं पृथ्वीके छोटे सर्प भी पृथ्वीको अपने शिर पर धारण कर सकते हैं ? ॥६॥

नृप सब भाँति सबहिं सनमानी ❁ कहि मृदु बचन बुलाई रानी
बधू लरकिनी पर घर आईं ❁ राखहु नयन पलक की नाईं

राजा दशरथने सब भाँति सबका सम्मान कर मीठी वाणीसे रानियोंको बुलाकर कहा कि, यह लड़कियाँ पराये घरमें आई हैं, इनकी रक्षा नेत्रोंकी पलकके समान करती रहना ॥

दोहा--लरिका श्रमित उनींद वश, शयन करावहु जाय।
अस कहि गे विश्राम गृह, रामचरण चित लाय ॥३६५॥

और ये लड़के भी थककर निद्राके वश हो रहे हैं सो जाकर इन्हें शयन कराओ। ऐसा कहकर राजा श्रीरामचन्द्रजीके चरणों में चित्त लगाकर विश्रामगृह में चले गये ॥३६५॥

भूप वचन सुनि सहज सुहाये ❁ जटित कनकमणि पलँग डसाये
सुभग सुरभि पयफेन समाना ❁ कोमल कलित सुपेती नाना

तब महाराजके वचन सुनकर मणि-जटित कंचनके पलँग बिछाये गये ।। जिनकर गौके दुधके सुहावने फेनके समान कोमल और चमकती तोशकें बिछी थीं ।। २ ।।

उप बरहन वर बरनि न जाहीं ❀ स्रग सुगन्ध मनि मन्दिर माहीं
रतन दीप सुठि चारु चँदोवा ❀ कहत न बनै जान जेहि जोवा

उसपर उत्तम तकिया लगी हुई थी, जो वर्णन नहीं किया जाता, रत्नोंके सुन्दर दीपक जल रहे थे, बड़े सुन्दर चँदोवे कहते नहीं बनता, जिसने देखा है वही जान सकता है ।।४।।

सेज रुचिर रचि राम उठाये ❀ प्रेम समेत पलङ्ग बैठाये
आज्ञा पुनि-पुनि भाइन दीन्हीं ❀ निज-निज सेज शयन सब कीन्हीं

इस प्रकार सुन्दर सेज सजाकर श्रीरामचन्द्रको उठाकर प्रेमसहित पलँगपर सुला दिया गया ।। जब श्रीरामचन्द्रजीने भाइयोंको आज्ञा दे दी तो वे अपनी शय्यापर जाकर सोये ।।

देखि श्याम मृदु मंजुल गाता ❀ कहहिं सप्रेम बचन सब माता
मारग जात भयावन भारी ❀ केहि विधि तात ताड़का मारी

तब श्रीरामचन्द्रजीके उस कोमल और साँवले शरीरकी ओर देखकर मातायें प्रेमसे पूछने लगीं ।। हे पुत्र ! मार्गमें जाते हुए उस भयावनी ताड़काको तुमने किस प्रकार मारा ?

दोहा–घोर निशाचर बिकट भट, समर गनैं नहिं काहु ।
मारे सहित सहाय किमि, खल मारीच सुबाहु ।।३६६।।

वे मारीच और सुबाहु नामक भयंकर राक्षस और कुटिल योद्धा जो बड़े ही दुष्ट और वीर थे कि, जो समरमें किसीको नहीं गिनते थे उनको सहायकों सहित तुमने कैसे मारा ? ।।३६६।।

मुनि प्रसाद बलि तात तुम्हारी ❀ ईश अनेक करवरें टारी
मख रखवारी करि दुहुँ भाई ❀ गुरु प्रसाद सब विद्या पाई

हे प्यारे ! मैं तुम्हारी बलि जाऊँ, मुनि विश्वामित्रकी कृपाने तुम्हारे अनेक संकटोंको टाला है ।। तभी तो उनके मखकी रक्षाकर गुरुप्रसादसे दोनों भाइयोंने सब विद्या प्राप्त की ।।२।।

मुनि तिय तरी लगत पगधूरी ❀ कीरति रही भुवन भरि पूरी
कमठ-पीठ पबि-कूट - कठोरा ❀ नृप समाज महँ शिव धनु तोरा

और तुम्हारे चरणोंकी धूलि लगते ही अहिल्या तर गयी, यह यश समस्त भूमण्डलमें भर गया । जो वज्र से भी कठिन था, उस महादेवजीके धनुषको तुमने तोड़ दिया ।। ४ ।।

विश्व विजय यश जानकि पाई ❀ आये भवन ब्याहि सब भाई
सकल अमानुष कर्म तुम्हारे ❀ केवल कौशिक कृपा सुधारे

जिसको तोड़नेसे संसारकी जय समेत जानकीको पाये और भाइयों सहित ब्याहकर घर आये हो ।।५।। तुम्हारे ये सभी कर्म देव-स्वरूप हैं जो केवल मुनि की कृपासे हुए हैं ।।६।।

आजु सुफल जग जन्म हमारे ❀ देखि तात बिधु बदन तुम्हारे
जे दिन गये तुम्हहिं बिनु देखे ❀ सो विरञ्चि जनि पारहिं लेखे

हे प्यारे ! आज तुम्हारे चन्द्रवत् मुखको देखकर हमें संसारमें जन्म लेनेका फल मिला ।। परन्तु जितने दिन तक तुम्हें नहीं देखा उतने दिन ब्रह्माजी अपनी गिनतीमें न करें ।। ८ ।।

दोहा—राम प्रतोषी मातु सब, कहि विनीत वर बयन ।
सुमिरि शम्भु गुरु विप्रपद, किये नींद वश नयन ।। ३६७ ।।

तब श्रीरामचन्द्रजीने सब माताओंको नम्र वाणीमें सुन्दर वचन कहकर सन्तुष्ट किया । फिर श्रीमहादेवजी और गुरु ब्राह्मणोंके चरणोंका स्मरणकर नींदके वश हो गये ।। ३६७ ।।

नींदउ बदन सोह सुठि लोना ❁ मनहुँ साँझ सरसीरुह सोना
घर-घर करहिं जागरण नारी ❁ देहिं परस्पर मंगल गारी

उस नींदसे भी मुख ऐसा शोभायमान लग रहा था जैसे संध्या समय लालकमल शोभायमान होता है । घर-घर स्त्रियाँ जागरण कर आपसमें आनन्दकी गाली देती हैं ।। २ ।।

पुरी बिराजत राजत रजनी ❁ रानी कहहिं बिलोकहु सजनी
सुन्दर बधुन सासु लै सोई ❁ फणिपति जनु शिरमणि उर गोई

उस रातमें अयोध्यापुरी बड़ी शोभायमान लग रही थी, सुन्दर बहुओंको सास लेकर जो सोईं तो ऐसी शोभा हुई मानों नागिन अपने शिरको मणिको हृदयमें दबाये हुए पड़ी है ।।

प्रात पुनीत काल प्रभु जागे ❁ अरुण चूड़ वर बोलन लागे
बन्दी मागध गुणगण गाये ❁ पुरजन द्वार जुहारन आये

प्रातःकाल होते ही श्रीरामचन्द्रजी जागे और मुर्गे बोलने लगे ।। तो भाट तथा माँगनेवाले गुणोंके समूहोंका गान करने लगे और नगरके लोग द्वारपर जुहार (प्रणाम) करने आये ।।६।।

बंदि विप्र सुर गुरु पितु माता ❁ पाय अशीष मुदित सब भ्राता
जननिन्ह सादर बदन निहारे ❁ भूपति संग द्वार पगु धारे

सभी भाई देवता, गुरु ब्राह्मण तथा माता-पिताके चरणोंकी वन्दनाकर उनसे आशीर्वाद पाकर प्रसन्न हुए ।। माताओंका आदरसहित मुख देखे, फिर राजद्वार पर आये ।। ८ ।।

दोहा—कीन्ह शौच सब सहज शुचि, सरित पुनीत नहाइ ।
प्रात क्रिया करि तात पहँ, आये चारिउ भाइ ।।३६८।।

फिर स्वभावसे पवित्र चारों भाई शौचादिसे निवृत्त हो पवित्र नदी सरयूमें स्नान संध्या-वन्दन से निवृत्त हो पिता राजा दशरथके पास आये ।। ३६८ ।।

भूप बिलोकि लिए उर लाई ❁ बैठे हरषि रजायसु पाई
देखि राम सब सभा जुड़ानी ❁ लोचन लाभ अवधि अनुमानी

तब उन्हें देखकर राजाने हृदयसे लगा लिया, फिर आज्ञा पाकर सव भाई बैठ गये ।। श्रीरामचन्द्रजीको देखकर सारी सभा के लोग अपने नेत्रोंका लाभ पाकर शीतल हो गये ।।२।।

पुनि बसिष्ठ मुनि कौशिक आये ❁ सुभग आसनन्हि मुनि बैठाये
सुतन समेत पूजि पग लागे ❁ निरखि राम दोउ उर अनुरागे

फिर गुरुवर वसिष्ठ और विश्वामित्रजी आये तो राजाने उन्हें सुन्दर आसनोंपर बिठाया ।। फिर पुत्रों सहित उनके चरण पूजे और श्रीरामचन्द्रको देख दोनों मुनि प्रेममें मग्न हो गये ।।४।।

कहहिं बसिष्ठ धर्म-इतिहासा ❀ सुनहिं महीप सहित रनिवासा
मुनि मन अगम गाधिसुत करणी ❀ मुदित बसिष्ठ विपुल विधि वरणी

तब वशिष्ठजी धर्मशास्त्र और पुराणोंकी कथा कहने लगे, जिसको रनिवास सहित राजा दशरथ सुनने लगे। उन्होंने विश्वामित्रजीके तपकी वह चर्चा की जो मुनियोंके भी मनको अगम है।।

बोले वामदेव सब साँची ❀ कीरति कलित लोक तिहुँ माँची
सुनि आनन्द भयउ सब काहू ❀ राम लषन उर अधिक उछाहू

बामदेवजीने कहा—सब सत्य है, इनकी सुन्दर कीर्ति तीनों लोकमें विख्यात हो गई है। यह सुनकर सबको आनन्द हो गया और राम लक्ष्मणके हृदयमें तो अधिक उत्साह हुआ ।।८।।

दोहा—मंगल मोद उछाह नित, जाहिं दिवस इहि भाँति।
उमँगी अवध अनन्द भरि, अधिक २ अधिकाति ।।३६९।।

इस प्रकार नित्य आनन्द मगलोत्सवमें दिन व्यतीत होते गये। अयोध्यापुरी आनन्दके प्रवाहसे उमड़ गई और आनन्द अधिकाधिक बढ़ता गया।। ३६९ ।।

सुदिन सोधि कर-कंकण छोरे ❀ मंगल मोद विनोद न थोरे
नित नव सुख सुर देखि सिहाहीं ❀ अवध जन्म याचहिं विधि पाहीं

फिर एक अच्छा दिन शोधकरके कंकड़ छोड़े गये और नित्य ही उस नवीन सुखको देखकर देवता सिहाने लगे और अयोध्यामें अपना जन्म पानेके लिये ब्रह्मासे याचना करने लगे।।२।।

विश्वामित्र चलन नित चहहीं ❀ राम सप्रेम विनय वश रहहीं
दिन-दिन शतगुण भूपति भाऊ ❀ देखि सराह महामुनि राऊ

विश्वामित्रजी नित्य चलना चाहते परन्तु श्रीरामचन्द्रजीके प्रेम और विनय वश रह जाते। प्रतिदिन राजादशरथ सैकड़ों प्रकारसे सौगुना सम्मान करते और विश्वामित्र प्रशंसा करते थे ।।

माँगत बिदा राउ अनुरागे ❀ सुतन समेत ठाढ़ भए आगे
नाथ सकल सम्पदा तुम्हारी ❀ मैं सेवक समेत सुत नारी

जब विश्वामित्रजीने चलनेके लिए अन्तिम आज्ञा माँगी तो पुत्रों सहित राजाने कहा—हे नाथ! यह सारी सम्पदा आपकी है और मैं स्त्री तथा पुत्रों सहित आपका सेवक हूँ ।।६।।

करब सदा लरिकन पर छोहू ❀ दरशन देत रहब पुनि मोहू
अस कहि राउ सहित सुत रानी ❀ परेउ चरण मुख आव न बानी

इन लड़कों पर सर्वदा प्रेम रखिएगा और मुझे दर्शन देते रहिएगा। ऐसा कहकर रानी तथा पुत्रों सहित राजा मुनिके चरणों पर गिर पड़े और आगे कोई शब्द मुँहसे न निकला ।।८।।

दीन्ह अशीश विप्र बहु भाँती ❀ चले न प्रीति रीति कहि जाती
राम सप्रेम संग सब भाई ❀ आयसु पाइ फिरे पहुँचाई

जब विश्वामित्रजी अनेक प्रकारसे आशीर्वाद देकर बिदा ले चले तो वह प्रीति कही नहीं जाती। सब भाइयोंके साथ श्रीरामचन्द्रजी मुनिको पहुँचाकर आज्ञा पा लौट आये ।।

दोहा—रामरूप भूपति भगति, ब्याह उछाह अनन्द ।
जात सराहत मनहिं मन, मुदित गाधिकुल चन्द ॥३७०॥

इस प्रकार विश्वामित्रजी श्रीरामचन्द्रजीके रूप तथा दशरथजीकी भक्ति और व्याहके उत्सवको सराहते हुए प्रसन्नता पूर्वक चले गये ॥ ३७० ॥

वामदेव रघुकुल—गुरु ज्ञानी ❁ बहुरि गाधिसुत कथा बखानी
सुनि मुनि सुयश मनहिं मन राऊ ❁ बरनत आपन पुण्य प्रभाऊ

इधर ज्ञानी वामदेव और रघुकुलके गुरु वसिष्ठजीने विश्वामित्रजी की कथा कही । मुनिके उस सुयशको सुनकर राजा दशरथ अपने पुण्य प्रताप और भाग्यकी बड़ाई करने लगे ॥२॥

बहुरे लोग रजायसु भयऊ ❁ सुतन समेत नृपति गृह गयऊ
जहँ तहँ राम ब्याह यश गावा ❁ सुयश पुनीत लोक तिहुँ छावा

फिर राजाने सबको जानेकी आज्ञा दी तो लोग चले और स्वयं राजा भी अपने पुत्रों सहित घर आये ॥३॥ जहाँ-तहाँ लोग श्रीरामचन्द्रजीके विवाहका यशोगान करने लगे, उनका पुनीत यश तीनों लोकोंमें छा गया ॥ ४ ॥

आए राम ब्याहि घर जबते ❁ बसे अनन्द अवध सब तबते
प्रभु विवाह जस भयउ उछाहू ❁ सकहिं न बरणि गिरा अहिनाहू

जबसे श्रीरामचन्द्रजी व्याह करके घर आये तबसे सभी प्रकारके आनन्द अयोध्यापुरीमें आ बसे । और उन प्रभुके विवाहमें जैसा उत्साह हुआ उसका वर्णन सरस्वती भी नहीं कर सकती ॥

कविकुल जीवन पावन जानी ❁ राम--सीय यश मंगल--खानी
तेहिते मैं कछु कहा बखानी ❁ करन पुनीत हेतु निज बानी

किन्तु श्रीरामचन्द्रजी और सीताजी का यह पवित्र यश कविकुलका जीवन, परम पवित्र है ॥७॥ यह जानकर मैं अपनी वाणीको पवित्र करनेके लिये कुछ वर्णन किया हूँ ॥८॥

छन्द--निज गिरा पावन-करन-कारन रामयश तुलसी कह्यो ।
रघुवीर चरित अगाध वारिधि पार कवि कवने लह्यो ॥
उपवीत ब्याह उछाह मंगल सुनि जे सादर गावहीं ।
वैदेहि राम प्रसाद ते जन सर्वदा सुख पावहीं ॥६२॥

इस प्रकार केवल अपनी वाणीको पवित्र करनेके लिए मैं तुलसीदास रामचन्द्रजीका चरित्रवर्णन करता हूँ । किन्तु श्रीरामचन्द्रजीका चरित्र अपार समुद्रके समान है, तब भला उसका पार कोई कवि क्या पा सकता है ? जो जन श्रीरामचन्द्रजीके यज्ञोपवीत और ब्याहके उत्साहप्रद मङ्गलोंको आदर सहित सुनेंगे और गावेंगे वे मनुष्य श्रीसीता रामजीकी कृपासे सर्वदा सुखको प्राप्त होंगे ॥

सोरठा--सिय रघुवीर विवाह, जे सप्रेम गावहिं सुनहिं ।
तिन्हके सदा उछाह, मंगलायतन राम यश ॥४१॥

इस प्रकार जो श्रीरामचन्द्रजी और सीताजीके विवाहको आदर पूर्वक गावेंगे और सुनेंगे वे सर्वदा ही आनन्दवान् बने रहेंगें, क्योंकि श्रीरामचन्द्रजीका यश मंगलों का घर है ॥४१॥

❁ बालकाण्ड--समाप्त ❁

श्रीगणेशाय नमः

श्रीमद् गोस्वामि तुलसीदासजी कृत—



अयोध्याकाण्ड

(सर्व-सञ्जीवनी टीका सहित)

।। मङ्गलाचरण ।।

श्लोक:-यस्याङ्के च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके
भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट् ।
सोऽयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा
सर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशंकरः पातु माम् ॥१॥

श्रीतुलसीदासजी शिव-वन्दना करते हुए कहते हैं कि जिनके बायें अंगमें पार्वतीजी, मस्तक पर गंगाजी, ललाटपर बालचन्द्रमा, कण्ठमें हलाहल विष और वक्षस्थलपर सर्पराज सुशोभित हैं, जो भस्मसे विभूषित, भूदेवताओंमें श्रेष्ठ, सबके स्वामी, कल्याणस्वरूप, सबमें व्याप्त, कल्याण करनेवाले और चन्द्रमाकी सी आभावाले हैं, वे श्रीमहादेवजी सर्वदा मेरी रक्षा करें ।। १ ।।

प्रसन्नतायां न गताऽभिषेकतस्तथा न मम्लौ वनवासदुःखतः ।
मुखाम्बुजश्री रघुनन्दनस्य मे सदास्तु सा मञ्जुलमङ्गलप्रदा ।२।

श्रीरामचन्द्रजीके मुखकी वह शोभा, जो राज्याभिषेकसे न तो प्रसन्न हुई और न वनवासके दुःखोंसे मलिन, वही मुख-श्री मेरे लिये सदा सुन्दर मंगलको देनेवाली हो ।। २ ।।

नीलाम्बुज-श्यामल-कोमलाङ्गं सीतासमारोपित-वामभागम्।
पाणौ महाशायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ।।३।।

फिर नीलकमलके सदृश जिनके श्याम और कोमल अंग हैं, जिनके वाम भागमें श्रीसीताजी सुशोभित हैं और जिनके दोनों हाथोंमें श्रेष्ठ बाण और सुन्दर धनुष है, उन रघुवंशियोंके नाथ श्रीरामचन्द्रजीको मैं नमस्कार करता हूँ ।। ३ ।।

दोहा--श्रीगुरु चरण सरोज-रज, निज मनमुकुर सुधारि ।
बरणौं रघुवर विमल यश, जो दायक फलचारि ।। १ ।।

अब श्री गुरुदेवजी के चरण-कमलोंकी धूलिसे अपने मनरूपी दर्पण को साफ करके मैं श्रीरामचन्द्रजीके निर्मल यशका वर्णन करता हूँ, जो चारों फलको देनेवाला है ।। १ ।।

जब ते राम ब्याहि घर आये ❀ नित नव मङ्गल मोद बधाए
भुवन चारिदश भूधर भारी ❀ सुकृत मेघ बरषहिं सुख बारी

जब श्रीरामचन्द्रजी विवाह करके घर आये तबसे अयोध्यामें प्रतिदिन नये मंगल और उत्सव होते हैं ।।१।। चौदहों लोक भारी पर्वत हैं, जिनसे पुण्यरूपी बादल सुखरूपी जलकी वर्षा करते हैं ।।२।।

ऋधि सिधि सम्पति नदी सुहाई ❀ उमँगि अवध अम्बुधि कहँ आई
मणि गण पुरनर-नारि सुजाती ❀ शुचि अमोल सुन्दर सब भाँती

इस वर्षा द्वारा ऋद्धि, सिद्धि और सम्पत्तिरूपी नदियाँ बढ़कर अयोध्यारूपी समुद्रमें मिलनेके लिये आई हैं ।।३।। नगरके स्त्री-पुरुष ही सब प्रकारके सुन्दर पवित्र रत्नोंके समूह हैं ।।

कहि न जाय कछु नगर विभूती ❀ जनु इतनिय विरञ्चि करतूती
सब विधि सब पुरलोग सुखारी ❀ रामचन्द्र मुख चन्द्र निहारी

उस अयोध्या नगरका ऐश्वर्य कुछ कहा नहीं जाता, मानों ब्रह्माकी करतूति इतनीही है ।।५।। नगरके सब लोग श्रीरामचन्द्रजीका मुखचन्द्र देखकर सब प्रकारसे सुखी हैं ।।६।।

मुदित मातु सब सखी सहेली ❀ फलित बिलोकि मनोरथ बेली
रामरूप गुण शील सुभाऊ ❀ प्रमुदित होहिं देखि मुनि राऊ

सब मातायें अपनी सहेलियों सहित इस मनोरथ-वेलिको फलती देखकर प्रसन्न हैं ।।७।। श्रीरामचन्द्रजीके रूप गुण देख, वसिष्ठजी सहित दशरथजी अत्यन्त प्रसन्न होते हैं ।।८।।

दोहा--सबके उर अभिलाष अस, कहहिं मनाइ महेश ।
आपु अछत युवराजपद, रामहिं देहिं नरेश ।। २ ।।

इसलिए सबके हृदयमें ऐसी इच्छा है और शिवजीसे विनती करके यही कहते हैं कि, राजा जीतेजी श्रीरामचन्द्रजीको युवराज पद देवें तो बहुत अच्छा हो ।। २ ।।

एक समय सब सहित समाजा ❀ राज सभा रघुराज विराजा
सकल सुकृति मूरति नरनाहू ❀ राम सुयश सुनि अतिहि उछाहू

एक समय समाज सहित राजा दशरथजी राजसभामें बैठे थे ।।१।। तब एक तो राजा सब पुण्यकी मूर्ति ही थे दूसरे श्रीरामचन्द्रजीका सुन्दर यश सुनकर उन्हें अत्यन्त आनन्द होता था।।२।।

नृप सब रहहिं कृपा अभिलाषे ❀ लोकप करहिं प्रीति रुख राखे
त्रिभुवन तीनि काल जगमाहीं ❀ भूरि भाग दशरथ सम नाहीं

देशके सब राजा दशरथजीकी कृपाके इच्छुक हैं, लोकपाल भी उनकी प्रीतिपूर्ण भावभंगिमा की प्रेमसे रक्षा करते रहते। तीनों लोकोंमें और कालोंमें दशरथजी-सा भाग्यमान् कोई नहीं था ।।

मंगल-मूल राम सुत जासू ❀ जो कछु कहिय थोर सब तासू
राउ स्वभाव मुकुर कर लीन्हा ❀ वदन विलोकि मुकुट सम कीन्हा

क्योंकि जिनके मंगलमूल श्रीरामचन्द्रजी पुत्र हैं, उनके लिए जो कुछ कहा जाय सब थोड़ा है। राजाने सहज ही दर्पण हाथमें लिया और मुखको देखकर मुकुटको सीधा किया ।।

श्रवण समीप भये सित केशा ❀ मनहुँ जरठपन अस उपदेशा
नृप युवराज रामकहँ देहू ❀ जीवन जन्म लाहु किन लेहू

तब देखा कि कानोंके पास बाल सफेद हो गए हैं, मानों बुढ़ापा ऐसा उपदेश दे रहा है कि—हे राजन् ! श्रीरामचन्द्रजीको युवराज पद देकर अपने जीवनका लाभ क्यों नहीं लेते ॥

दोहा—अस विचारि उर आनि नृप, सुदिन सुअवसर पाय ।
प्रेम पुलकि तन मुदित मन, गुरुहिं सुनायहु जाय ॥ ३ ॥

ऐसा विचार हृदयमें लाकर राजाने अच्छा अवसर पाकर प्रेमसे पुलकित शरीर हो, प्रसन्न मनसे जाकर गुरु वसिष्ठजीको सुनाया ॥ ३ ॥

कहेउ भुआल सुनिय मुनिनायक ❀ भये राम सब विधि सब लायक
सेवक सचिव सकल पुरवासी ❀ जे हमरे अरि मित्र उदासी

राजा दशरथ कहने लगे—हे मुनिनायक ! सुनिए, अब श्रीरामचन्द्रजी सब प्रकारसे योग्य हो गये हैं । सेवकों, सचिवों और नगरवासियों को और जो हमारे मित्र आदि हैं ॥ २ ॥

सबहिं राम प्रिय जेहि विधि मोहीं ❀ प्रभु अशीश जनु तनु धरि सोहीं
विप्र सहित परिवार गोसाईं ❀ करहिं छोह सब रौरेहि नाईं

उन सभी लोगों को श्रीरामचन्द्रजी वैसे ही प्रिय हैं जैसे मुझे प्रिय हैं, यह आपका आशीर्वाद है । जो हमसे उच्चवर्ण के हैं वे भी अपने परिवार सहित आपके समान रामचन्द्रजीपर प्रेम करते हैं ॥

जे गुरु चरण रेणु शिर धरहीं ❀ ते जनु सकल विभव वश करहीं
मोहिं सम यह अनुभयउ न दूजे ❀ जनु पायहुँ रज पावनि पूजे

जो गुरुके चरणोंकी धूलिको मस्तक पर धारण करते हैं वे मानों समस्त ऐश्वर्योंको अपने वशमें कर लेते हैं । जो कुछ मैंने पाया है यह आपकी चरण धूलिको पूजनसे ही पाया है ॥

अब अभिलास एक मन मोरे ❀ पूजिहिं नाथ अनुग्रह तोरे
मुनि प्रसन्न लखि सहज सनेहू ❀ कहेउ नरेश रजायसु देहू

सो हे नाथ ! अब एक अभिलाषा मेरे मनमें है जो आपकी कृपासे पूर्ण होगी, तब राजाकी स्वाभाविक स्नेह देखकर वशिष्ठजी प्रसन्न हो बोले—हे नरेश ! जो कुछ कहो वह करनेको तैयार हूँ ॥

दोहा—राजन राउर नाम यश, सब अभिमत दातार ।
फल अनुगामी महिपमणि, मन अभिलाष तुम्हार ॥ ४ ॥

क्योंकि हे राजन् ! आपका नाम और यश सब मनोवांछित फलको देनेवाला है । हे महिपमणि ! आपकी अभिलाषाका क्या पूछना है, वह तो फलके पीछे चलनेवाली है ॥ ४ ॥

सब विधि गुरु प्रसन्न जिय जानी ❀ बोलेउ राउ बिहँसि मृदुबानी
नाथ राम करिअहि युवराजू ❀ कहिय कृपाकरि करिय समाजू

तब सब प्रकारसे गुरुजीको मनमें प्रसन्न जानकर राजादशरथजी मीठी वाणी बोले—हे नाथ ! यदि आप कहें तो श्रीरामचन्द्रजीके युवराज-हित सब साज-समाज एकत्र करूँ ॥ २ ॥

मोहिं अछत यह होइ उछाहू ❀ लहहिं लोग सब लोचन लाहू
प्रभु प्रसाद शिव सबहिं निबाहीं ❀ यह लालसा एक मनमाहीं

क्योंकि हम चाहते हैं कि यह उत्सव हमारे जीतेजी हो जावे। आपके प्रसादसे शिवजी ने सब कुछ निबाह दिया है और अब यही एक अभिलाषा मनमें है ॥ ४ ॥

पुनि न सोच तनु रहउ कि जाऊ ❀ जेहि न होइ पाछे पछिताऊ
सुनि मुनि दशरथ बचन सुहाये ❀ मंगल मोद मूल मन भाये

फिर मुझे चिन्ता नहीं कि शरीर रहे या जावे, जिससे पीछे पछतावा न हो। दशरथजी के ऐसे वचनको सुनकर वशिष्ठजीको यह मंगल और आनन्द-मूल वचन मनमें अच्छे लगे ॥

सुनु नृप जासु विमुख पछिताहीं ❀ जासु भजन बिनु जरनि न जाहीं
भयउ तुम्हार तनय सोइ स्वामी ❀ राम पुनीत प्रेम अनुगामी

हे राजन्! सुनो, जिसके विरोधसे लोग पश्चात्ताप करते हैं और जिसकी सेवा बिना हृदय का ताप नहीं मिटता। वही स्वामी आपके पुत्र हुए हैं और वह राम प्रेमके अनुगामी हैं ॥

दोहा--वेगि विलम्ब न करिय नृप, साजिय सबहिं समाज।
सुदिन सुमंगल तबहिं जब, राम होंहि युवराज ॥ ५ ॥

इससे हे राजन्! विलम्ब मत करो, शीघ्र ही सब समाजको सजाओ और सब पदार्थ इकट्ठे करो, वही सुदिन सुमंगल है, जब रामजी राजा हों ॥ ५ ॥

मुदित महीपति मन्दिर आये ❀ सेवक सचिव सुमन्त बुलाये
कहि जयजीव शीश तिन्ह नाये ❀ भूप सुमङ्गल बचन सुनाये

राजा दशरथने हर्षित होकर राज भवनमें आकर सेवकों सहित मन्त्री सुमन्तको बुलाया॥ सुमन्तने जयजीव कहकर शिर नवाया, तो दशरथजीने सुन्दर मंगलदायक बात सुनाई ॥२॥

प्रमुदित मोहिं कह्यो गुरुआजू ❀ रामहिं राज देहु युवराजू
जो पाँचहिं मत लागइ नीका ❀ करहु हरषि हिय रामहिं टीका

आज गुरुजीने प्रसन्न होकर मुझसे कहा है कि हे राजन्! रामको युवराजपद दो। इसलिये पंचोंको जो राय भली लगे तो प्रसन्न हृदयसे रामका राज्याभिषेक करें ॥ ४ ॥

मन्त्री मुदित सुनत प्रियबानी ❀ अभिमत बिरव परेउ जनु पानी
बिनती सचिव करहिं कर जोरी ❀ जियहु जगतपति बरस करोरी

इस प्रिय वाणीको सुनते ही मन्त्रिगण हर्षित हो गए मानों अभिमतरूपी पौधेमें पानी पड़ गया। मन्त्री हाथ जोड़कर विनय करने लगे, कि हे संसारके स्वामी! आप करोड़ों वर्ष जियें॥

जग मङ्गल भल काज विचारा ❀ बेगिय नाथ न लाइय बारा
नृपहिं मोद सुनि सचिव सुभाषा ❀ बढ़त बिटप जनु लही सुसाखा

हे नाथ! आपने संसारके लिये मंगलप्रद अच्छा कार्य सोचा है, इसे करनेमें विलम्ब न कीजिये। मन्त्रियोंके इन सुन्दर वचनोंसे राजा दशरथजीको महान् आनन्द हुआ ॥ ८ ॥

दोहा—कहेउ भूप मुनिराज कर, जोइ जोइ आयसु होइ।
रामराज्य अभिषेक हित, वेगि करिय सोइ सोइ ॥ ६ ॥

राजा दशरथजीने कहा—मुनिराज वसिष्ठजीकी जो-जो आज्ञा हो, वह-वह श्रीरामचन्द्रजीके राज्याभिषेकके लिए शीघ्र करो ॥ ६ ॥

हरषि मुनीस कहेउ मृदुबानी ❀ आनहु सकल सुतीरथ पानी
औषधि मूल फूल फल पाना ❀ कहे नाम गनि मङ्गल नाना

वशिष्ठजीने प्रसन्न होकर मीठी वाणीसे कहा—सब उत्तम तीर्थोंका जल ले आओ ॥१॥ औषधि, जड़, फल और पान आदि अनेक नाम जो मङ्गलप्रद थे, गिनकर बतलाये ॥२॥

चामर चर्म बसन बहु भाँती ❀ रोम पाटपट अगनित जाती
मनिगन मङ्गल वस्तु अनेका ❀ जो जग योग्य भूप अभिषेका

चँवर, मृगछाला आदि और बहुत प्रकारके वस्त्र और बहुत जातिके रोवें तथा रेशमी वस्त्र, रत्न आदि वशिष्ठजीने बतलाया जो संसारमें राज्याभिषेकके लिए प्रयोजनीय हैं ॥

वेदबिहित कहि सकल विधाना ❀ कहेउ रचहु पुर विविध बिताना
पनस रसाल पुंगफल केरा ❀ रोपहु वीथिन पुर चहुँ फेरा

वशिष्ठजीने वेदके अनुसार सब रीतियाँ कहीं और नगरमें कई प्रकारसे मण्डप सजानेके लिए कहा और कटहल, आम, सोपारी और केलेके वृक्ष नगरके चारों ओर गलियोमें लगाओ ॥

रचहु मंजु मनि चौके चारू ❀ कहउ बनावन बेगि बजारू
पूजहु गनपति कुल गुरु देवा ❀ सब बिधि करहु भूमिसुर सेवा

फिर उत्तम मणियोंके सुन्दर चौक पूरो और नगरके लोगोंको शीघ्र बाजार सजानेके लिये कह दो। श्रीगणेशजी, गुरु और कुलदेवकी पूजाकर ब्राह्मणोंकी सब प्रकार सेवा करो ॥

दोहा—ध्वज पताक तोरण कलश, सजहु तुरँग रथ नाग।
शिरधरि मुनिवर बचन सब, निज निज कार्जहिं लाग ॥७॥

झण्डे, झण्डियाँ फाटक, कलश, घोड़े, रथ और हाथियोंको सजाओ। सब लोग मुनिवर वशिष्ठजीके वचनोंको मानकर अपने-अपने कार्यमें लग गये ॥ ७ ॥

जो मुनीश जेहि आयसु दीन्हा ❀ सो जनु काज प्रथम तेहि कीन्हा
विप्र साधु सुर पूजत राजा ❀ करत रामहित मंगल काजा

मुनीश्वर वशिष्ठजीने जिसको जो आज्ञा दी वह उस कार्यको शीघ्रतासे करने लगा। दशरथ जी ब्राह्मणों और देवताओंको पूजते हैं और रामके हितके लिये मंगल कार्योंको करते हैं ॥

सुनत राम अभिषेक सुहावा ❀ बाजे गृह-गृह अवध बधावा
राम सीय तन सकुन जनाये ❀ फरकहिं मंगल अंग सुहाये

श्रीरामजीके राजतिलकका समाचार सुनते ही अयोध्यामें घर-घर बधावे बजने लगे। राम और सीताके शरीरमें शकुन बतलाकर उनके दाहिने और बायें अंग फड़कने लगे ॥४॥

पुलकि सप्रेम परस्पर कहहीं ❀ भरत आगमन सूचक अहहीं

भये बहुत दिन अति अवसेरी ❀ सगुन प्रतीति भेंट प्रिय केरी

राम सीता प्रसन्न हो परस्पर कहते हैं कि ये शकुन भरतजीके आगमन-सूचक हैं। बहुत दिन हो गए, बड़ी प्रतीक्षा की, अब ये शकुन विश्वास दिलाते हैं कि प्रियकी भेंट होगी ॥६॥

भरत सरिस प्रिय को जगमाहीं ❀ इहइ सगुन फल दूसर नाहीं
रामहिं बन्धु सोच दिन राती ❀ अण्डनि कमठ हृदय जेहि भाँती

भरतके समान संसारमें कौन प्यारा है, इस शकुनका यही फल है दूसरा नहीं भरतजी आते हैं। श्रीरामचन्द्रको भाईकी चिन्ता रातोदिन है, जैसे कछुयेके हृदयमें अण्डोंका रहता है ॥८॥

दोहा--तेहि अवसर मङ्गल परम, सुनि हरषेउ रनिवास।
शोभित लखि विधु बढ़त जनु, वारिधि बीचि बिलास ॥८॥

उस समय यह परम मंगलका समाचार सुनकर राजमहल हर्षित हो उठा। वह ऐसा जान पड़ता था जैसे पूर्णिमाके चन्द्रमाको देखकर समुद्रकी तरंगोंका विलास बढ़ता है ॥ ८ ॥

प्रथम जाइ जिन्ह बचन सुनाये, ❀ भूषन बसन भूरि तिन्ह पाये
प्रेम पुलकि तन मन अनुरागीं ❀ मङ्गल साज सजन सब लागीं

रनिवासमें जिन्होंने पहले यह समाचार सुनाया, उन्होने बहुतसे आभूषण और वस्त्र पाये, रानियोंका शरीर प्रेमसे पुलकित हो गया, सब मांगलिक साज सजाने लगीं ॥ २ ॥

चौके चारु सुमित्रा पूरे ❀ मणिमय विविध भाँति अति रूरे
आनँद मगन राम महतारी ❀ दिए दान बहु विप्र हँकारी

सुमित्राने सुन्दर चौके पूरीं जो रत्नमय, कई प्रकारसे अत्यन्त ही रम्य थे। रामजीकी माता कौशल्याजी भी आनन्दमें मग्न थीं, उन्होंने ब्राह्मणोंको बुलाकर बहुतसे दान दिये ॥४॥

पूजेउ ग्रामदेव सुर नागा ❀ कहेउ बहोरि देन बलि भागा
जेहि विधि होइ राम कल्याना ❀ देहु दया करि सो बरदाना

फिर ग्रामदेव और महादेवजीकी पूजा कर पुनः बलि भाग देनेको कहा ॥५॥ फिर वरदान माँगा जिस प्रकारसे रामजीका कल्याण हो, दया करके वही वरदान दीजिये ॥ ६ ॥

बार बार गनपतिहिं निहोरा ❀ कीजै सफल मनोरथ मोरा
गावहिं मङ्गल कोकिल बयनी ❀ बिधु बदनी मृग शावक नयनी

सब बारम्बार श्रीगणेशजीसे निहोरा करती हैं कि मेरा यह मनोरथ सुफल कीजिये। चन्द्रमाके समान सुन्दर मुखवाली मृगलोचनी और कोयलकी-सी मीठी बोली बोलनेवाली स्त्रियाँ मंगल गीत गाती हैं ॥ ८ ॥

दोहा--राम-राज अभिषेक सुनि, हिय हरषे नर नारि।
लगीं सुमङ्गल सजन सब, बिधि अनुकूल विचारि ॥ ९ ॥

श्रीरामचन्द्रजीका राज्याभिषेक सुनकर नगरके स्त्री-पुरुष हृदयसे हर्षित हो गए और सब विधाताको अनुकूल जानकर सुन्दर मंगल साज सजाने लगे ॥ ९ ॥

तब नरनाह बसिष्ठ बुलाये ❀ राम धाम शिख देन पठाये
गुरु आगमन सुनत रघुनाथा ❀ द्वार आइ पद नायउ माथा

जब राजा दशरथजीने गुरु वसिष्ठको बुलाकर श्रीरामचन्द्रजीको शिक्षा देनेको भेजा ।।१।। तब गुरुजीका आगमन सुनते ही रामचन्द्रजीने द्वारपर आकर प्रणाम किया ।। २ ।।

सादर अर्घ देइ घर आने ❀ षोडश भाँति पूजि सनमाने
गहे चरण सिय सहित बहोरी ❀ बोले राम कमल कर जोरी

फिर आदर पूर्वक अर्घ्य देकर महलमें ले आये और षोडशोपचारसे पूजनकर सम्मान किया । फिर सीताजीके साथ साष्टांग दण्डवत् की और कमलवत् हाथोंको जोड़कर बोले ।।४।।

सेवक सदन स्वामि आगमनू ❀ मङ्गल मूल अमङ्गल दमनू
यदपि उचित अस बोलि सप्रीती ❀ पठइय नाथ काज अस नीती

यद्यपि सेवकके घर स्वामीका आना मंगलका देनेवाला और अमंगलका नाश करनेवाला है ।।५।। तो भी हे नाथ ! यह उचित था कि दासको बुलाकर कार्यके लिये भेजते ।। ६ ।।

प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू ❀ भयउ पुनीत आजु मम गेहू
आयसु होइ सो करउँ गोसाईं ❀ सेवक लहै स्वामि सेवकाई

किन्तु हे प्रभो ! आपने अपना प्रभुत्व छोड़कर मेरे ऊपर स्नेह किया, जिससे मेरा घर पवित्र हो गया । हे गोसाईं ! जो आज्ञा हो वह करूँ; सेवक स्वामीकी सेवा ही-से शोभा पाता है ।।

दोहा—सुनि सनेह साने बचन, मुनि रघुबरहिं प्रशंस ।
राम कस न तुम कहहु अस, हंस वंश अवतंश ।। १० ।।

तब ऐसे प्रेमपूर्ण वचनोंको सुनकर मुनि वसिष्ठजी श्रीरामचन्द्रजीकी प्रशंसा करते हुए बोले—हे राम ! तुम ऐसा क्यों न कहो, क्योंकि तुम तो सूर्यवंशके भूषण हो ।। १० ।।

वरणि राम गुण शील सुभाऊ ❀ बोले प्रेम पुलकि मुनि राऊ
भूप सजेउ अभिषेक समाजू ❀ चाहत तुमहिं देन युवराजू

मुनिराज वसिष्ठजी श्रीरामचन्द्रजीके गुण और शील स्वभावका वर्णन करके प्रेमसे पुलकित होकर बोले । राजाने राजतिलककी तैयारी की है, वे तुम्हें युवराजपद देना चाहते हैं ।।

राम करहु सब संयम आजू ❀ जो बिधि कुशल निबाहै काजू
गुरु सिख देइ राउ पहँ गयऊ ❀ राम हृदय अस विस्मय भयऊ

हे राम ! आज सब संयमके कार्य करो, यदि विधाता कुशलसे कार्य निभा दे । वसिष्ठजी रामको यह शिक्षा दे राजाके पास गए, इधर रामजीके हृदयमें ऐसा आश्चर्य हुआ ।।

जनमे एक सङ्ग सब भाई ❀ भोजन शयन केलि लरिकाई
कर्णबेध उपवीत विवाहा ❀ सङ्ग सङ्ग सब भयउ उछाहा

हम सब भाई एक साथ पैदा हुए, लड़कपनमें खाना सोना और खेल भी साथ ही साथ हुआ । कर्णछेदन, यज्ञोपवीत, व्याह आदि सब साथ हुए ।। ९ ।।

विमल वंश यह अनुचित एकू ❀ अनुज विहाइ बड़ेहिं अभिषेकू
प्रभु सप्रेम पछितानि सुहाई ❀ हरहु भक्त मनकी कुटिलाई

उत्तम कुलमें यह बात बड़ी अनुचित ज्ञात होती है कि छोटे भाइयोंको छोड़कर बड़ेको राज्य-तिलक होता है। प्रभुका ऐसा सुन्दर पछितावा भक्तोंकी कुटिलताको हर लेता है ।।

दोहा—तेहि अवसर आये लषण, मगन प्रेम आनन्द।
सनमाने प्रिय वचन कहि, रविकुल कैरवचन्द ।।११।।

उसी समय लक्ष्मण प्रेमके आनन्दमें मग्न होते हुए वहाँ आये। तब रविकुलरूपी कमलोंके लिए चन्द्रवत् श्रीरामजीने प्रिय वचन कहकर उनका आदर-सत्कार किया ।। ११ ।।

बाजहिं बाजन विविध विधाना ❀ पुर प्रमोद नहिं जाइ बखाना
भरत आगमन सकल मनावहिं ❀ आवहिं वेगि नयन फल पावहिं

अनेक प्रकारके बाजे बजते हैं, नगरका आनन्द वर्णन नहीं किया जा सकता ।।१।। सब लोग मनाते हैं, कि भरतजी शीघ्र आ जायँ और हम सब नेत्रोंका फल पावें ।। २ ।।

हाट बाट घर गली अथाई ❀ कहहिं परस्पर लोग लुगाई
काल्हि लगन भलि केतिक बारा ❀ पूजहिं विधि अभिलाष हमारा

बाजारमें, रास्तेमें, घरमें, गलीमें और बैठकमें सभी जगह स्त्री-पुरुष सब परस्पर यही कहते हैं कि कल किस समय अच्छी लग्न है जब ब्रह्मा हमारी कामनाओंको पूर्ण करेंगे ।।४।।

कनक सिंहासन सीय समेता ❀ बैठहिं राम होइ चित चेता
सकल कहहिं कब होइहि काली ❀ विघ्न मनावहिं देव कुचाली

सब यही कहते हैं कि वह समय कब होगा जब सोनेके सिंहासनपर सीता सहित श्रीरामचन्द्रजी बैठेंगे, परन्तु कुचाली देवता विघ्न मनाते हैं कि ये जाकर रावणका वध करें ।।

तिन्हहिं सोहाइ न अवध बधावा ❀ चोरहिं चाँदनि राति न भावा
शारद बोलि विनय सुर करहीं ❀ बारहिं बार पायँ लैं परहीं

उनको अयोध्याका गाना-बजाना अच्छा नहीं लगता जैसे चोरको चाँदनी रात। देवता सरस्वतीका आवाहन करके प्रार्थना करते हैं और बारम्बार पैरोंको पकड़कर विनती करते ।।

दोहा—बिपति हमार बिलोकि बड़ि, मातु करिय सोइ आज।
राम जाहिं बन राज तजि, होइ सकल सुरकाज ।।१२।।

और कहते हैं, हे माता! हमारी बड़ी विपत्ति देखकर आप वही यत्न करें जिससे श्रीरामचन्द्रजी राज्य छोड़कर बनमें चले जावें ।। १२ ।।

सुनि सुर विनय ठाढ़ि पछिताती ❀ भयउँ सरोज विपिन हिमराती
देखि देव पुनि करइँ निहोरी ❀ मातु तोहिं नहिं थोरिउ खोरी

देवताओंकी ऐसी प्रार्थना सुनकर सरस्वती खड़ी २ पछताने लगीं कि मैं कमल वनके लिए हेमंत ऋतुकी रात्रिके समान हो गई? देवता कहते, हे माता! तुम्हें इससे कुछ भी दोष नहीं लगेगा ।।

विस्मय-हर्ष रहित रघुराऊ ❀ तुम जानहु रघुबीर सुभाऊ
जीव कर्म वश सुख दुख भागी ❀ जाइय अवध देव हित लागी

तुम श्रीरामचन्द्रजीका स्वभाव जानती हो कि, वे विस्मय और हर्षसे रहित हैं ॥ ३ ॥ जीव अपने-अपने कर्मानुसार सुख-दुःखके भागी होते हैं, इससे तुम अयोध्या जाओ ॥४॥

बार बार गहि चरण सँकोची ❀ चली विचारि विबुध मति पोची
ऊँच निवास नीच करतूती ❀ देखि न सकहिं पराइ विभूती

देवताओंने बारम्बार पाँव पकड़कर सरस्वतीको संकोचित किया तब वे चलीं। देवताओं का निवास तो ऊँचा है पर कार्य नीचके समान है, जो दूसरेका ऐश्वर्य नहीं देख सकते ॥

आगिल काज विचारि बहोरी ❀ करिहैं चाह कुशल कवि मोरी
हरषि हृदय दशरथपुर आई ❀ जनु ग्रहदशा दुसह दुखदाई

फिर आगेका कार्य विचार कर कि कुशल कवि मेरी चाह करेंगे ॥७॥ वह हर्षित हृदयसे अयोध्यामें ऐसे आई, मानों दुस्सह दुखदाई ग्रहदशा आ गई हो ॥ ८ ॥

दोहा—नाम मन्थरा मन्दमति, चेरि कैकई केरि।
अयश पेटारी ताहि करि, गई गिरामति फेरि ॥ १३ ॥

तब अयोध्यामें पहुँचकर वह मन्दबुद्धि मन्थरा रानी कैकेयीकी दासीको अपयशकी पिटारी बनाकर उसकी बुद्धिको फेरकर चली गई ॥ १३ ॥

देखि मन्थरा नगर बनावा ❀ मंजुल मङ्गल बाज बधावा
पूछेसि लोगन काह उछाहू ❀ राम तिलक सुनि भा उर दाहू

मन्थराने नगरकी सजावटको देखा और सुना कि सुन्दर मांगलिक बाजे बज रहे हैं ॥१॥ उसने लोगोंसे पूछा तो रामका तिलक सुनकर उसके हृदयमें दाह हुआ ॥ २ ॥

करै विचार कुबुद्धि कुजाती ❀ होइ अकाज कवन विधि राती
देखि लागि मधु कुटिल किराती ❀जिमि गँव तकेउ लेउँ केहिभाँती

तब वह कुबुद्धि कुजाति विचार करती है कि किस प्रकार इसी रातमें विघ्न पड़े ॥३॥ जैसे शहदके छत्तेके लिए कुटिल किरातिनि यह दाँव लगाए कि इसे किस प्रकार ले लूं ॥ ४ ॥

भरत मातु पहँ गइ बिलखानी ❀का अनमनि हँसि हँसि कह रानी
उतरु न देइ न लेइ उसाँसू ❀ नारि चरित करि ढारइ आँसू

तब वह उदास होकर कैकेयीके पास गई, रानीने हँसकर कहा, तू मलिन क्यों है ? मन्थरा उत्तर नहीं देती और ऊँची श्वास ले स्त्री-चरित्र करके आँसू गिराती है ॥६॥

हँसि कह रानि गाल बड़ तोरे ❀ दीन्ह लखन सिख अस मन मोरे
तबहुँ न बोलि चेरि बड़ि पापिनि ❀ छाँड़इ श्वाँस कारि जनु साँपिनि

कैकेयीनें हँसकर कहा, तेरे बड़ा गाल है, ऐसा मेरे मनमें आता है कि लक्ष्मणने तुझे कुछ सिखा दिया है। इतने पर भी बड़ी पापिनी मन्थरा नहीं बोली, मानों नागिन साँस छोड़ती है ॥

दोहा—सभय रानि कह कहसि किन, कुशल राम महिपाल।
भरत लखन रिपुदमन सुनि, भा कुबरी उर शाल ॥१४॥

तब रानीने भयभीत होकर कहा—कहती क्यों नहीं, राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न कुशलसे तो हैं ? यह सुनकर कुबरीके हृदयमें पीड़ा हुई, उसका हृदय जल उठा ।। १४ ।।

कत सिख देइ हमहिं कोउ माई ❀ गाल करब केहिकर बल पाई
रामहिं छाँड़ि कुशल केहि आजू ❀ जिनहिं जनेश देइ युवराजू

तब मन्थरा बोली, हे माता ! कोई मुझे क्या शिक्षा देगा । और मैं किसका बल पाकर गर्व करूँगी ? रामके सिवा आज किसकी कुशल है, जिन्हें राजा युवराज-पद दे रहे हैं ।।

भयउकौशिलहिविधिअति दाहिन❀ देखत गर्व रहत उर नाहिन
देखहु कस न जाइ पुर शोभा ❀ जो अवलोकि मोर मन क्षोभा

अब कौशल्याका ब्रह्मा दाहिना हो गया है, राम-राज्याभिषेककी तैयारी देख उनके हृदयमें गर्व नहीं समाता ।। जाकर नगरकी सजावट क्यों नहीं देखतीं जिसे देखकर मेरा मन क्षुब्ध है।।

पूत विदेश न शोच तुम्हारे ❀ जानति हौ वश नाह हमारे
नींद बहुत प्रिय सेज तुराई ❀ लखहु न भूप कपट चतुराई

पुत्र भरत विदेशमें हैं, तुम्हें शोच नहीं है, जानती हो कि राजा हमारे वशमें हैं । पलँग पर तोशक-तकिया लगाकर सोना बहुत प्रिय है परन्तु राजाकी चतुराई नहीं देखती हो ।।

सुनि प्रिय बचन मलिन मन जानी❀ झुकी रानि अब रहु अरगानी
पुनि अस कबहुँ कहसि घरफोरी ❀ तौ धरि जीभ कढ़ावउँ तोरी

मन्थराके प्रिय वचन सुनकर रानीने उसे मलिन मन जाना, वह खीझ गई और डपट कर बोली, अब दूर ही रहे । ऐ घरफोड़नी ! फिर ऐसा कहेगी तो जीभ खिंचवा लूँगी ।।

दोहा—काने खोरे कूबरे, कुटिल कुचाली जानि ।
तिय विशेष पुनि चेरि कहि, भरत मातु मुसकानि ।।१५।।

जो काने, अङ्गहीन, कुबड़े, कुटिल और दुराचारी हैं, यदि वे स्त्री हैं तो अधिक अवगुण समझो, फिर दासी हुई तो कहना ही क्या है ? ऐसा कहकर कैकेयी मुसकुराई ।। १५ ।।

प्रिय वादिनि शिख दीन्हेउँ तोहीं ❀ सपनेहुँ तोपर कोप न मोहीं
सुदिन सुमङ्गल दायक सोई ❀ तोर कहा फुर जेहि दिन होई

कैकेयीने कहा हे प्रियवादिनि ! मैंने तुझे शिक्षा दी है तेरे ऊपर स्वप्नमें भी क्रोध नहीं है। जिस दिन तेरा कहा सत्य होगा, वही दिन सुदिन सुमंगलोंका देनेवाला होगा ।। २ ।।

जेठ स्वामि सेवक लघु भाई ❀ यह दिनकर कुल-रीति सुहाई
राम तिलक जौं साँचेहु काली ❀ माँगु देहुँ मन भावत आली

क्योंकि बड़ा भाई स्वामी और छोटा सेवक, यह सूर्यवंशकी सुन्दर रीति है । यदि सचमुच ही कल "रामका तिलक" है तो हे सखी ! अपनी मनभाती वस्तु माँग, मैं दूँगी ।।

कौशल्या सम सब महतारी ❀ रामहिं सहज स्वभाव पियारी
मोपर करहिं सनेह विशेखी ❀ मैं करि प्रीति परीक्षा देखी

कौशल्याके ही समान रामको सब मातायें सहज स्वभाव से प्यारी हैं। फिर मेरे ऊपर तो राम और भी प्रेम करते हैं ? मैंने उनके प्रीतिकी परीक्षा करके इस बातको देखा है ॥६॥

जो विधि जन्म देइ करि छोहू ❀ होहिं राम सिय पूत पतोहू
प्राण ते अधिक राम प्रिय मोरे ❀ तिनके तिलक क्षोभ कस तोरे

यदि ब्रह्मा कृपा करके पुन: मनुष्य का जन्म दे तो राम और सीता मेरे पुत्र और पुत्रवधू हों। राम मुझे प्राणोंसे अधिक प्यारे हैं, उनके राज्य तिलकसे तुझे दुःख क्यो है ? ॥ ८ ॥

दोहा—भरत शपथ तोहिं सत्य कहु, परिहरि कपट दुराव।
हरष समय विस्मय करसि, कारण मोहिं सुनाव ॥१६॥

तुझे भरतकी शपथ है, तू कपट छोड़कर सत्य कह कि, इस हर्षके समय तू खेद क्यों कर रही है ? मुझे इसका कारण सुना ॥ १६ ॥

एकहि बार आस सब पूजी ❀ अब कछु कहब जीभ करि दूजी
फोरै योग कपार अभागा ❀ भलेउ कहत दुख रौरेहि लागा

तब मन्थरा बोली, एक ही बारमें आशा पूर्ण हो गई अब कुछ कहना होगा तो दूसरी जीभ से कहूँगी। अभागा सिर फोड़ने ही योग्य है जो अच्छा कहते हुए भी आपको बुरा लगा ॥

कहैं झूठ फुर बात बनाई ❀ सो प्रिय तुमहिं करुइ मैं माई
हमहुँ कहब अब ठकुरसोहाती ❀ नाहिं त मौन रहब दिन राती

हे माता ! जो झूठी-सच्ची बातें बनाकर कहते हैं वे तुम्हें प्रिय हैं और मैं कड़वी हूँ। इसलिए अब मैं भी ठकुरसोहाती बातें कहूँगी, या रात दिन चुप रहूँगी ॥ ४ ॥

करि कुरूप विधि परवश कीन्हा ❀ बवा सो लुनिअ लहिय जो दीन्हा
कोउ नृप होउ हमैं का हानी ❀ चेरि छाँड़ि नहिं होउब रानी

ब्रह्माने कुरूप बनाकर परवश कर दिया, जो बोया है सो काटती हूँ—जो दिया है सो पाती हूँ। कोई भी राजा हो हमें क्या हानि है ! मैं दासी छोड़कर रानी तो न हो जाऊँगी ॥

जारइ योग सुभाव हमारा ❀ अनभल देखि न जाइ तुम्हारा
ताते कछुक बात अनुसारी ❀ क्षमब देबि बड़ि चूक हमारी

यह मेरा स्वभाव ही जलाने लायक है कि आपका बुरा मुझसे देखा नहीं जाता ॥७॥ इसलिए मैंने कुछ बात कही थी, सो हे देवि ! क्षमा करो, मुझसे यह बड़ी भूल हुई ॥ ८ ॥

दोहा—गूढ़ कपट प्रिय बचन सुनि, तीय अधरबुधि रानि।
सुर माया वश बैरिनिहिं, सुहृद जानि पतिआनि ॥१७॥

स्त्रियाँ क्षणिक-बुद्धि होती हैं; रानीने देवताओं की मायाके वशमें होनेके कारण कपट युक्त प्यारी दासीके वचनोंको सुनकर उसे सुहृद् जानकर उसपर विश्वास किया ॥ १७ ॥

सादर पुनि-पुनि पूछति ओही ❀ शवरी गान मृगी जनु मोही
तसि मति फिरी रही जसि भावी ❀ रहसी चेरि घात जनु फावी

वह बारम्बार मन्थरासे पूछती है, मानों भिल्लनीके गानसे मृगी मोहित हो गई है ।।१।। जैसी होनी थी वैसी ही बुद्धि फिर गयी, तब अच्छा घात जानकर दासी हर्षित हुई ।।२।।

तुम पूँछहु मैं कहत डेराऊँ ❀ धरेउ मोर घरफोरी नाऊँ
सजि प्रतीति बहु विधि गढ़िछोली ❀ अवध साढ़साती जनु बोली

तुम पूछती हो पर मैं कहते डरती हूँ, क्योंकि मेरा घरफोड़नी नाम रख दिया ।। ३ ।। ऐसी बातोंसे कैकेयीको अपने अनुकूल करके अयोध्याकी साढ़ेसाती मन्थरा बोली ।। ४ ।।

प्रिय सियराम कहा तुम रानी ❀ रामहिं तुम प्रिय सो फुर बानी
रहे प्रथम दिन सो अब बीते ❀ समय फिरे रिपु होहिं पिरीते

हे रानी ! तुमने कहा कि मुझे राम-सीता प्यारे हैं और रामको आप प्यारी हैं, यह बात सत्य है; पर यह बात पहले थी, अब नहीं, समय पलट जानेपर मित्र शत्रु हो जाते हैं ।।६।।

भानु कमल कुल पोषनिहारा ❀ बिनु जल जारि करै तेहि छारा
जरि तुम्हारि चह सवति उपारी ❀ रूँधहु करि उपाय वर बारी

सूर्य कमल-कुलका पोषण करता है, परन्तु बिना जलके जलाकर छार कर देता है । आपकी जड़ सौत उखाड़ना चाहती है, सो उसे उपायरूपी बाड़ी लगाकर रूँध दो ।। ८ ।।

दोहा—तुमहिं न सोच सोहाग बल, निज वश जानहु राव ।
मन मलीन मुहँ मीठ नृप, राउर सरल स्वभाव ।।१८।।

तुमको अपने सौभाग्यके बलसे सोच नहीं है, और राजाको अपने वशमें जानती हो । और वह मनके कपटी और मुँहके मिठबोले हैं और आपका स्वभाव सरल है ।।१८।।

चतुर गँभीर राम-महतारी ❀ बीच पाइ निज काज सँवारी
पठये भूप भरत ननिअउरे ❀ राम मातु मत जानब रउरे

किन्तु रामजीकी माता चतुर हैं, उन्होंने अवसर पाकर अपना कार्य बना लिया । राजा ने जो भरतजीको ननिहाल भेजा है इसमें रामकी माता कौशल्याकी ही सम्मति समझें ।।

सेवहिं सकल सवति मोहिं नीके ❀ गर्वित भरत मातु बल पीके
शाल तुम्हार कौशिलहिं माई ❀ चतुर कपट नहिं परत लखाई

कौशल्या चाहती हैं कि सब सौतें मुझे अच्छी तरह सेवें और इंधर आप पतिके बल पर गर्वित हैं, जो कौशल्याके हृदयमें शालती हैं, वह चतुर हैं, उनका कपट लख नहीं पड़ता ।।

राजहिं तुमपर प्रीति विशेखी ❀ सवति स्वभाव सकैं नहिं देखी
करि प्रपंच भूपहिं अपनाई ❀ राम तिलक हित लगन धराई

इधर राजा आपके ऊपर प्रेम करते हैं; किन्तु उसे कौशल्या सौतके स्वभाववश देख नहीं सकती । राजाको अपनाकर रामके राज्याभिषेकके लिए मुहूर्त्त निश्चय करा लिया ।।

यह कुल उचित राम कहँ टीका ❀ सबहिं सोहाइ मोहिं सुठि नीका
आगिल बात समुझि डर मोहीं ❀ दैव देउ फल सो फिरि ओहीं

इस कुलमें राम को तिलक होना उचित है, यह सबको अच्छा है और मुझे भी अच्छा लगता है; परन्तु अगली बात विचारकर मुझे डर लगता है, सो यह फल उलटा उसे ही मिले ॥

दोहा—रचिपचि कोटिक कुटिलपन, कीन्हेसि कपट-प्रबोध ।
कहेसि कथा शत सवतिकर, जेहि विधि बाढ़ विरोध ॥१९॥

तब मंथराने कितने ही कुटिलपनेकी बातें कहकर कैकेयीके हृदयमें कपट का प्रबोध करा दिया । उसने सौ सौताकी कथा कही, जिससे बैर-विरोध और भी बढ़े ॥ १९ ॥

भावीवश प्रतीति उर आई ❋ पूँछि रानि निज शपथ दिवाई
का पूछहु तुम अजहुँ न जाना ❋ निजहित अनहितपशुपहिचाना

भावीवश कैकेयीके हृदयमें विश्वास हो गया जिससे रानी अपनी शपथ दिलाकर पूछने लगी ॥१॥ मंथरा बोली आप क्या पूछती हैं ? क्या अभी तक भी आप नहीं समझीं ? अपना भला-बुरा तो पशु भी पहचानते हैं ? ॥ २ ॥

भयउ पाख दिन सजत समाजू ❋ तुम सुधि पायउ मोसन आजू
खाइय पहिरिय राज तुम्हारे ❋ सत्य कहे नहिं दोष हमारे

पन्द्रह दिनोंसे रामके तिलककी तैयारी हो रही है और आप आज मुझसे इसकी खबर पा रही हैं ? मैं आपके राज्यमें खाती पहनती हूँ; इससे मुझे कहनेमें कुछ दोष नहीं है ॥ ४॥

जो असत्य कछु कहब बनाई ❋ तौ विधि देइहि मोहि सजाई
रामहिं तिलक कालिह जो भयऊ ❋तुम कहँविपति बीज विधि बयऊ

यदि मैं कुछ असत्य बना कर कहूँगी तो भगवान् इसका दण्ड मुझे देगा । यदि कल रामको राजतिलक हो गया तो समझ रखिये कि ब्रह्माने आपके लिए विपत्तिका बीज बो दिया ॥६॥

रेखा खैंचि कहौं बल भाखी ❋ भामिनि भइउ दूध की माखी
जौं सुत सहित करौ सेवकाई ❋ तौ घर रहहु न आन उपाई

अब मैं रेखा खींचकर कहती हूँ कि हे भामिनि ! अब आप दूध की मक्खीकी तरह हो जाओगी । यदि पुत्र सहित सेवा करोगी तो घरमें रह सकोगी, अन्यथा नहीं ॥८॥

दोहा—कद्रू बिनतहिं दीन्ह दुख, तुमहिं कौशिल्या देव ।
भरत बन्दि-गृह सेइहैं, राम लषन कर नेव ॥२०॥

जैसे कद्रूनें बिनता को दुःख दिया था, वैसे ही कौशिल्या भी तुम्हें दुःख देगी । भरत जेलखानेमें रहेंगे और लक्ष्मण रामके मन्त्री होंगे ॥२०॥

कैकयसुता सुनत कटु बानी ❋ कहि न सकै कछु सहमि सुखानी
तनु पसेव कदली जनु काँपी ❋ कुबरी दशन जीभ तब चाँपी

कैकेयी यह कटुवाणी सुनते ही डरकर सूख गयी कुछ कह न सकी, शरीरमें पसीना हो आया और केलेकी तरह काँपने लगीं, तब यह देखकर मन्थराने दाँतोंके नीचे जीभ दबा ली ॥

कहि कहि कोटिक कपट कहानी ❋ धीरज धरहु प्रबोधिसि रानी
कीन्हेसि कठिन पढ़ाय कुपाठू ❋ जिमि न नवै फिरि उकठ कुकाठू

तब मन्थराने करोड़ों कपटकी कहानियाँ कहकर रानीको समझाया कि धीरज धरिये। उसने कैकेयीको बुरा पाठ पढ़ाकर ऐसा कठिनकर दिया जैसे उकठा काष्ठ फिर नहीं झुकता।।

फिरा कर्म प्रिय लागि कुचाली ❀ बकिहिं सराहत मनहुँ मराली
सुनु मन्थरा बात फुर तोरी ❀ दहिनि आँखि नित फरकत मोरी

कर्म लौटनेसे बुरी चालवाली दासी भी प्यारी लगी। वह बगुलीको मानों हंसिनी समझ कर सराहने लगी कि हे मन्थरा! तेरी बात सच है मेरी दाहिनी आँख नित्य फड़कती है।।

दिन प्रति देखौं राति कुसपने ❀ कहौं न तोहिं मोहवश अपने
काह कहौं सखि सूध सुभाऊ ❀ दाहिन बाम न जानौं काऊ

मैं प्रतिदिन रातमें बुरे स्वप्न देखती हूँ, किन्तु अपने भूलसे तुझसे नहीं कहती हूँ। हे सखी! मैं क्या कहूँ? मेरा तो सीधा स्वभाव है मैंने किसीको दाहिना बाँया नहीं जाना।।

दोहा—अपने चलत न आजु लगि, अनभल काहुक कीन्ह।
केहि अघ एकहि बार मोहिं, दैव दुसह दुख दीन्ह।।२१।।

मैंने तो अपने अधिकार भरमें किसीकी बुराई नहीं की, न जाने किस पापके कारण दैवने मुझे सहसा एक साथ ही यह असह्य दुःख दिया है।। २१।।

नैहर जन्म भरब बरु जाई ❀ जियत न करब सवति सेवकाई
अरि वश दैव जियावै जाही ❀ मरण नीक तेहि जीव न चाही

मैं मैकेमें जाकर भले ही जन्म बिताऊँगी परन्तु जीतेजी सौतकी सेवा नहीं करूँगी।। जिसे ईश्वर शत्रु के अधीन रखकर जिलाता है, उसका मरना ही अच्छा है उसे जीना नहीं चाहिए।।

दीन बचन कह बहु बिधि रानी ❀ सुनि कुबरी तिय माया ठानी
अस कस कहहु मानि मन ऊना ❀ सुख सोहाग तुम कहँ दिन दूना

रानी अनेक प्रकारके दीन वचन कही, जिन्हें सुनकर कुबरीने त्रिया-चरित्र ठाना। और कहने लगी कि आप ऐसा क्यों कहती हो, आपका सुख अहिवात दिन दूना है।।

जेहि राउर अस अनभल ताका ❀ सो पाइहि यह फल परिपाका
जबते कुमति सुना मैं स्वामिनि ❀ भूख न बासर नींद न यामिनि

जिसने आपकी ऐसी बुराई सोची है वही इसका परिणाम भोगेगी। हे स्वामिनि! मैंने जबसे यह बुरी सलाह सुनी है, तबसे न तो दिनमें भूख लगती है न रातमें नींद आती है।।

पूछेउँ गुनिन रेख तिन्ह खाँची ❀ भरत भुवाल होहिं यह साँची
भामिनि करहु तो कहौं उपाऊ ❀ हैं तुम्हरे सेवा वश राऊ

मैंने गुणियोंसे पूछा तो उन्होंने रेखा खींचकर कहा कि भरत राजा होंगे यह सत्य है। हे भामिनी! जो करो तो मैं उपाय कहूँ, क्योंकि राजा तुम्हारी सेवासे तुम्हारे वशमें हैं।।

दोहा— परउँ कूप तव वचन लगि, सकौं पूत पति त्यागि।
कहसि मोर दुख देखि बड़, कस न करब हित लागि।।२२।।

रानीने कहा—मैं तेरे कहनेसे कुएँमें गिर सकती हूँ, अपने पुत्र और पतिको छोड़ सकती हूँ क्योंकि तू मेरा बड़ा दुःख देखकर कहती है, मैं उसे अपनी भलाईके लिए क्यों न करूँगी ।२२।

कुबरी करी कुबलि कैकेयी ❀ कपट छुरी उर पाहन टेयी
लखै न रानि निकट दुख कैसे ❀ चरै हरित तृण बलि पशु जैसे

कुबरी रूपी कसाइनने कपटरूपी छुरीको हृदयरूपी पत्थरपर तेज करके कैकेयीको कबुली बनाया । कैकेयी अपने पासके दुःखको वैसे ही नही देखती है जैसे बलि पशु हरी घासको चरता है ।।

सुनत बचन मृदु अन्त कठोरी ❀ देति मनहुँ मधु माहुर घोरी
कहै चेरि सुधि अहै कि नाहीं ❀ स्वामिनि कहेउ कथा मोहि पाहीं

मन्थराकी तो ये बातें सुननेमें मधुर हैं, परन्तु परिणाम कठोर है, मानों शहदमें मक्खन घोलकर दे रही है । कहा—हे स्वामिनि ! जो कथा मुझसे कही थी उसकी सुध है या नहीं ।।

दुइ बरदान भूप सन थाती ❀ माँगहु आजु जुड़ावहु छाती
सुतहिं राज रामहिं बनवासू ❀ देहु लेहु सब सवति हुलासू

आपके वे दोनों वरदान जो राजाके पास धरोहर हैं उन्हें आज मांगकर अपनी छाती ठंढी कीजिए । पुत्रको राज्य और रामचन्द्रको बनवास दे सब सौतोंसे आनन्द छीन लो ।।

भूपति राम-शपथ जब करहीं ❀ तब माँगेहु जेहि बचन न टरहीं
होइ अकाज आजु निशि बीते ❀ बचन मोर प्रिय मानहु जीते

किन्तु जब राजा रामचन्द्रका सौगन्ध खायें तब माँगना जिससे बात न टले । आजकी रात बीत जानेसे काम बिगड़ जायेगा, मेरी इस बातको प्राणोंसे भी प्रिय समझो ।।

दोहा—बड़ कुघात करि पातकिनि, कहेसि कोपगृह जाहु ।
काज सँवारेहु सजग सब, सहसा जानि पतिआहु ।।२३।।

इस प्रकार उस पापिन मन्थराने कैकेयीके ऊपर बडी घात लगाकर कहा कि अब तुम कोप-गृहमें जाओ और सब काम होशियारीके साथ करना, जल्दी राजापर विश्वास न करना ।२३।

कुबरिहिं रानि प्राणप्रिय जानी ❀ बार-बार बड़ बुद्धि बखानी
तोहिं सम हित न मोर संसारा ❀ बहे जात कर भयेसि अधारा

फिर तो कुबरीको रानी कैकेयी बड़ी बुद्धिवाली कहकर उसकी बड़ाई करने लगी ।।१।। और बोली--मन्थरे ! तेरे समान इस संसारमें मेरा हित चाहनेवाला दूसरा कोई नहीं है, तू मुझ बहते हुए की आधार हुई ।।

जौं विधि पुरव मनोरथ काली ❀ करौं तोहिं चखपूतरि आली
बहु विधि चेरिहिं आदर देई ❀ कोप भवन गवनी कैकेई

हे सखी ! यदि मेरा मनोरथ कल विधाता पूर्ण कर दें तो मैं तुझे अपने आँखोंकी पुतली कर लूँगी । इसीप्रकार दासी मन्थराको आदर देकर कैकेयी कोपभवनको चली गयी ।।

विपति बीज वर्षाऋतु चेरी ❀ भुइँ भइ कुमति कैकई केरी
पाइ कपट जल अंकुर जामा ❀ बर दोउ दलदुख फल परिनामा

महाविपत्ति ही वीज है, दासी मन्थरा वर्षाऋतु है, कैकेयीकी दुर्बुद्धि ही पृथ्वी है। दोनों वर उसके अंकुरके नवीन दो पत्ते हैं और जो अन्तमें दुःख होगा वही इस पौधेका फल है।

कोप समाज साजि सज सोई ❀ राज करत तेहि कुमति बिगोई
राउर नगर कोलाहल होई ❀ यह कुचाल कछु जान न कोई

कैकेयी क्रोधका साज सजाकर कोप-भवनको चली, उसकी दुर्बुद्धिने उसे राज्य करते हुए नष्ट कर डाला। नगरमें रामतिलकका हर्ष है; किन्तु इस कुचालका खबर किसीको नहीं है॥

दोहा--प्रमुदित पुर-नर नारि सब, साजि सुमंगलचार।
एक प्रविशहिं एक निर्गमहिं, भीर भूप-दरबार॥२४॥

नगरके सब स्त्री-पुरुष आनन्दित हैं, सुमंगलाचार साज रहे हैं। कुछ लोग प्रविष्ट होते हैं, कुछ लोग निकलते हैं, इस प्रकार राजा दशरथ के द्वार पर भीड़ लगी है॥ २४॥

बाल सखा सुनि हिय हरषाहीं ❀ मिलि दश पाँच रामपहँ जाहीं
प्रभु आदरहि प्रेम पहिचानी ❀ पूछहिं कुशल छेम मृदुबानी

श्रीरामचन्द्रजीके लड़कपनके साथी हर्षमें दश-पाँच मिलकर उनके पास जाते हैं। श्रीरामचन्द्रजी उनका आदर-सत्कार करते हैं और मीठी बातोंसे कुशल-क्षेम पूछते हैं॥२॥

फिरहिं भवन फिरि आयसु पाई ❀ करत परस्पर राम बड़ाई
को रघुबीर सरिस संसारा ❀ शील सनेह निबाहन हारा

फिर आज्ञा पाकर घरोंको लौटते और आपसमें उनकी बड़ाई करते हुए कहते हैं॥३॥ श्रीरामचन्द्रजीके समान संसारमें शील और स्नेहका निबाहनेवाला कौन है!॥ ४॥

जेहि जेहि योनि करम बस भ्रमहीं ❀ तहँ तहँ ईश देहि यह हमहीं
सेवक हम स्वामी सियनाहू ❀ होउ नात यहि ओर निबाहू

हे विधाता! हम कर्मवश जिन-जिन योनियोंमें जन्में उन-उन योनियोंमें हमें यही दो कि हम तो सेवक हों और श्रीरामचन्द्रजी हमारे स्वामी हों और इसका अन्त तक निर्वाह हो॥६॥

अस अभिलाष हृदय सब काहू ❀ कैकयसुता हृदय अति दाहू
को न कुसंगति पाइ नसाई ❀ रहै न नीचमते चतुराई

एक ओर तो सबके मनमें ऐसा हर्ष है, उधर कैकेयीको बहुत जलन हो रही है। सत्य है कि बुरी संगति पाकर कौन नष्ट नहीं होता, नीच बुद्धिके आनेसे चतुराई चली जाती है॥

दोहा--साँझ समय सानन्द नृप, गये कैकयी गेह।
गवन निठुरता निकट किय, जनु धरि देह सनेह॥२५॥

तब सन्ध्या समय राजा दशरथ आनन्दपूर्वक कैकेयीके भवनमें ऐसे गए मानों निठुरता के पास साक्षात् स्नेह ही शरीर धारण करके गया हो॥ २५॥

कोप भवन सुनि सकुचेउ राऊ ❀ भयवश अगहुण परै न पाऊ
सुरपति बसै बाहु बल जाके ❀ नरपति रहहिं सकल रुख ताके

राजा दशरथ कैकेयीके कोपगृहमें जानेकी बात सुनकर सकुचा गये, भयके कारण आगे पैर नहीं पड़ता। इन्द्र जिनकी भुजाओंके सहारे बसता था, सब राजे जिसका रुख देखा करते थे।

सो सुनि तिय रिस गये सुखाई ❀ देखहु काम प्रताप बड़ाई
सभय नरेश प्रिया पहँ गयऊ ❀ देखि दशा दुख दारुन भयऊ

वे ही राजा दशरथ स्त्रीका क्रोध सुनते ही सूख गये, यह कामदेवके प्रतापका बड़प्पन तो देखिये। डरते-डरते राजा कैकेयीके पास गए और उसकी दशा देखकर हृदयमें भारी दुःख हुआ॥

शूल कुलिश असि अगँवनिहारे ❀ ते रतिनाथ सुमन शर मारे
भूमि शयन पट मोट पुराना ❀ दिये डारि तनु भूषण नाना

जो राजा त्रिशूल और तलवारके चोट सहने वाले थे वह कामदेवके बाणोंसे मारे गये॥ कैकेयी भूमिमें लेटी है और मोटा पुराना वस्त्र पहने तथा गहने उतारकर बिखरा दिये हैं॥

कुमतिहिं कस कुरूपता फावी ❀ अन अहिवात सूच जनु भावी
जाइ निकट नृप कह मृदुबानी ❀ प्राणप्रिया केहि हेतु रिसानी

उस दुर्बुद्धि कैकेयी को वह कुवेश कैसा ठीक फब रहा था जो असौभाग्यकी सूचना दे रहा है॥ राजा निकट जाकर मीठी वाणीसे बोले—हे प्राणप्रिये! किस कारण से क्रुद्ध हो?॥

छन्द--केहि हेतु रानि रिसानि परसत पानि पतिहि निवारई।
मानहुँ सरोष भुजंग भामिनि विषम भाँति निहारई॥
दोउ वासना रसना दशन वर मरम ठाहरु देखई।
तुलसी नृपति भवितव्यता बश काम कौतुक लेखई॥१॥

हे रानी! किस कारणसे क्रोध किया है, ऐसा कहकर राजा दशरथ कैकेयीको प्यार से हाथों द्वारा स्पर्श करते हैं, पर वह उन्हें झटक देती है और ऐसे देखती है मानों साँपिन क्रोधित होकर तीखी नजरोंसे देखती हो। उसकी दोनों अभिलाषायें ही उस साँपिनकी दोनों जीभें हैं। कैकेयी साँपिनके समान मर्म-स्थान देख रही है, तुलसीदासजी कहते हैं कि राजा होनहारके वशमें होनेके कारण उसके क्रोधको काम-क्रीड़ा ही समझ रहे थे॥ १॥

सोरठा--बार बार कह राउ, सुमुखि सुलोचनि पिकबयनि।
कारन मोहि सुनाउ, गजगामिनि निज कोपकर॥१॥

राजा बारम्बार कहते हैं कि—हे सुमुखि! हे सुलोचनि! हे कोकिलबयनि! हे गजगामिनि! तुम मुझे अपने कोपका कारण सुनाओ॥ १॥

अनहित तोर प्रिया केहि कीन्हा ❀ केहिदुइसिरकेहियम चह लीन्हा
कहु केहि रंकहिं करौं नरेसू ❀ कहु केहि नृपहिं निकारौं देसू

हे प्रिये! तेरा अनभल किसने किया है? किसे दो शिर हो गये हैं? किसे यम लेना चाहते हैं। बता किस दरिद्रको राजा बना दूँ और किस राजाको देशसे निकाल दूँ॥ २॥

सकउँ तोर अरि अमरहु मारी ❀ काह कीट बपुरे नर नारी
जानसि मोर स्वभाव बरोरु ❀ तव मुख आनन चन्द्र चकोरु

यदि तेरा शत्रु अमर भी हो तो उसे भी मार सकता हूँ। फिर संसारी स्त्री-पुरुष तो किस गिनतीमें हैं ? हे वरोरु ! जानती हो कि मेरा मन तेरे मुखचन्द्रका चकोर है ॥ ४ ॥

प्रिया प्रान सुत सरबस मोरे ❀ परिजन प्रजा सकल बस तोरे
जो कछु कहहुँ कपटकरि तोहीं ❀ भामिनि राम-सपथ सत मोहीं

हे प्रिये ! मेरा प्राण, चारों पुत्र, परिजन तथा प्रजा सब तेरे वशमें हैं॥५॥ इसमें यदि मैं कुछ कपट करके कहूँ तो हे भामिनि ! मुझे रामकी सौगन्ध है ॥ ६ ॥

बिहँसि माँगु मन भावति बाता ❀ भूषन साजु मनोहर गाता
घरी कुघरी समुझि जिय देखू ❀ बेगि प्रिया परिहरहु कुवेषू

हे प्रिये ! हँसकर मनको भानेवाली बात मुझसे माँगो और मनोहर शरीरमें गहने सजा। हे प्यारी ! मौका-बे-मौका अपने हृदयमें विचार लो और इस कुवेशको शीघ्र ही त्याग दो ॥८॥

दोहा—यह सुनि मन गुनि शपथ बड़ि, बिहँसि उठी मतिमन्द ।
भूषन सजति बिलोकि मृग, मनहुँ किरातिनि फन्द ॥२६॥

तब राजाकी ओरसे ऐसी बात सुनकर निर्बुद्धि कैकेयी हँसने लगी। तत्पश्चात् शरीरमें आभूषण ऐसे सजाने लगी मानों मृगको देखकर कोई किरातनी जाल रच रही हो ॥ २६ ॥

पुनि कह राउ सुहृद जिय जानी ❀ प्रेम पुलकि मृदु मंजुल बानी
भामिनि भयउ तोर मन भावा ❀ घर-घर नगर अनंद बधावा

फिर राजा दशरथजी कैकेयीको सुहृद् समझकर प्रेमसे पुलकित हो मीठी वाणीसे बोले कि, हे भामिनि ! तेरे मनको भानेवाली बात हो गई, नगरके प्रत्येक घरोंमें आनन्दोत्सव हो रहा है ॥

रामहिं देउँ कालि युवराजू ❀ सजहु सुलोचनि मङ्गल साजू
दलकि उठेउ सुनि हृदय कठोरू ❀ जनु छुइ गयउ पाक बरतोरू

कल रामको युवराज पद दूँगा, हे सुनयनी ! मंगलसाज सजो। दशरथजीके वचनोंसे कैकेयीके हृदयमें असह्य ठेस लगी, मानों पका बरतोड़ (फोड़ा) छू गया हो ॥ ४ ॥

ऐसेउ पीर बिहँसि तेइ गोई ❀ चोरनारि जिमि प्रगट न रोई
लखी न भूप कपट चतुराई ❀ कोटि कुटिल गुन गुरुहि पढ़ाई

ऐसी पीड़ाको भी कैकेयीने हँसकर छिपा ली, जैसे कोई चोरकी स्त्री प्रत्यक्ष नहीं रोती ॥ राजाने उसका कपट-चातुर्य न समझा, क्योंकि वह करोड़ों कुटिलोंमें श्रेष्ठ गुरुकी पढ़ाई थी ॥

यद्यपि नीति निपुन नरनाहू ❀ नारि चरित जलनिधि अवगाहू
कपट सनेह बढ़ाइ बहोरी ❀ बोली बिहँसि नयन मुहँ मोरी

यद्यपि राजा दशरथ नीतिमें निपुण थे, पर स्त्री-चरित्र समुद्र सा अगाध है, उसे राजा दशरथजी नहीं जान सके, तब कैकेयी कपट पूर्ण प्रेम बढ़ाकर हँसती हुई पुनः बोली ॥ ८ ॥

दोहा—माँगु माँगु पै कहहु पिय, कबहूँ देहु न लेहु ।
देन कहे बरदान दुइ, सोउ पावत सन्देहु ॥ २७ ॥

हे प्रियतम ! आप माँग-माँग तो बराबर ही कहते हैं, परन्तु कुछ देते-लेते नहीं। आप दो वरदान देनेके लिए कहे थे, वह भी मुझे पानेमें सन्देह ज्ञान पड़ता है ॥२७॥

जानेउ मरम राउ हँसि कहई ❀ तुम्हहिं कोहाब परम प्रिय अहई
थाती राखि न माँगेउ काऊ ❀ बिसरि गयउ मम भोर सुभाऊ

राजा हँसकर कहने लगे—मैं तुम्हारा भेद समझ गया, तुम्हें नाराज होना ही अधिक प्यारा है। मेरे पास थाती रखकर तुमने उसे कभी माँगा नहीं और सीधे स्वभावके कारण मुझे भी भूल गया।

झूठेहुँ दोष हमहिं जनि देहू ❀ दुइ के चारि माँगि किन लेहू
रघुकुल रीति सदा चलि आई ❀ प्राण जाइ बरु बचन न जाई

दो के चार क्यों नहीं माँग लेती हो, मुझे झूठा दोष मत दो ॥३॥ रघुकुलमें सर्वदासे यही रीति चली आई है कि प्राण चाहे चला जाय, पर वचन नहीं टलता ॥ ४ ॥

नहिं असत्य सम पातक पुञ्जा ❀ गिरि सम होहिं कि कोटिक गुञ्जा
सत्य मूल सब सुकृत सुहाए ❀ वेद पुराण विदित मुनि गाए

झूठ बोलनेके समान अन्य पापोंके समूह नहीं हो सकते। सत्य समस्त सुन्दर सुकृतोंकी जड़ है, ऐसा वेद और पुराणोंसे विदित है और मुनियोंने भी ऐसा ही गान किया है ॥ ६ ॥

तेहि पर राम सपथ करवाई ❀ सुकृत सनेह अवधि रघुराई
बात दृढ़ाइ कुमति हँसि बोली ❀ कुमति बिहंग कुलह जनु खोली

इसपर भी सुकृत और स्नेहकी मर्यादा रामकी कसम करवाई और बातको खूब पक्का करके हँसकर बोली मानो कुमतिरूपी कुत्सित शिकारीने बाजकी टोपी खोल दी हो ॥८॥

दोहा—भूप मनोरथ सुभग बन, सुख सुविहंग समाज।
भिल्लिनि जिमि छाँड़न चहति, बचन भयंकर बाज ॥२८॥

महाराज दशरथजीका जो मनोरथ है, वह तो सुन्दर वन है और उस मनोरथका जो सुख है वह उत्तम पक्षियोंका समाज है, उस वनमें कैकेयी रूपी व्याधिनी मानों अपने भयङ्कर वचनरूपी बाजको छोड़ना चाहती है ॥ २८ ॥

सुनहु प्राणपति भावत जीका ❀ देहु एक वर भरतहिं टीका
दूसर वर माँगहुँ कर जोरी ❀ पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी

हे प्राणपति ! वे जो दोनों वर हमारे मनको भाते हैं, उसमें एक वरमें तो भरतको राज्य-तिलक, दो और दूसरे वरसे आप मेरा मनोरथ यह पूर्ण कीजिये कि—॥२॥

तापस वेष विशेष उदासी ❀ चौदह बरस राम बनवासी
सुनि तिय वचन भूप हिय सोकू ❀ शशिकर छुवत विकल जिमि कोकू

तपस्वी वेश धारणकर विशेष उदासी हो चौदह वर्ष तक रामचन्द्र बनवासी हों। स्त्रीकी यह बात सुनकर राजा शोकित हो गये मानों चन्द्रकिरणोंको छूते ही चकवा विकल हो जावे ॥

गये सहमि कछु कहि नहिं आवा ❀ जनु सचान बन झपटेउ लावा
विवरन भये निपट नरपालू ❀ दामिनि हनेउ मनहुँ तरु तालू

राजा ऐसे सहम गए कि, कुछ बोल न सके, मानों बाजने वनके अन्दर वटेरको झपट लिया हो ॥५॥ राजा अत्यन्त विवर्ण हो गये, मानों ताड़वृक्ष पर बिजली टूट पड़ी हो ॥६॥

माथे हाथ मूँद दोउ लोचन ❀ तनु धरि सोच लागु जनु सोचन
मोर मनोरथ सुरतरु फूला ❀ फलत करिनि जनु हतेउ समूला

राजा दोनो हाथ सिर पर रख, नेत्र मूंद, सोच करने लगे, मानों सोच ही शरीर धरकर सोचने लगा ॥७॥ कहने लगे कि--मेरे फलते वृक्षको मूल समेत मानों हाथोने उखाड़ दिया ॥८॥

अवध उजार कीन्ह कैकेयी ❀ दीन्हेसि अचल विपति कै नेयी

कैंकेयीने अयोध्याको उजाड़ दिया और विपत्तिकी पक्की नींव डाल दी ॥९॥

दोहा–कवने अवसर का भयउ, गयउँ नारि विश्वास ।
योगसिद्धि फल समय जिमि, यतिहि अविद्या नास ॥२९॥

हा ! यह किस समय क्या हो गया ? मैं स्त्रीके विश्वासमें पड़ गया । जैसे योगसिद्ध योगी को फलके समय अविद्या नाश कर देती है ॥२९॥

इहि विधि राउ मनहिं मन दहई ❀ देखि कुभाँति कुमति अस कहई
भरत कि राउर पूत न होहीं ❀ आनेहु मोल बेसाहि कि मोहीं

इसप्रकार राजा मनही मनमें जलते हैं, तब उनको वैसे देखकर वह दुर्बुद्धि कैकेयी ऐसे कहती है, क्य भरत आपके पुत्र नहीं हैं ? क्या आप मुझे मोल खरीद लाये हैं ? ॥ २ ॥

जो सुनि सर सम लागि तुम्हारे ❀ काहे न बोलेहु बचन सँभारे
देहु उतर अस कहउ कि नाहीं ❀ सत्य-सिन्धु तुम रघुकुल माहीं

जो सुनते ही आपको बाणके जैसे लगे तो पहले ही सँभालके क्यो नही कहे ? अब उत्तर दो, या नहीं कहो । तुम रघुकुलमें सत्यके समुद्र कहलाते हो ॥४॥

देन कहेउ वर अब जनि देहू ❀ तजहु सत्य जग अपयश लेहू
सत्य सराहि कहेउ वर देना ❀ जानेहु लेइहि माँगि चबेना

वर देने को कहकर अब मत दो, सत्यको त्यागकर जगत्में अपयश लो । सत्यको सराहना करके वर देनेको कहा था, क्या यही समझा था कि यह चबेना ही माँग लेगी ! ॥ ६ ॥

शिवि दधीचि बलि जो कछु भाषा ❀ तनु धन तजेउ बचन प्रण राखा
अति कटु बचन कहति कैकेई ❀ मानहुँ लोन जरे पर देई

शिव, दधीचि और बलिने अपना शरीर और धन गवाँ दिया, पर वचन नहीं गँवाया । कैंकेयी राजाको ऐसे कटु वाक्य कहती है, मानों ज़ले पर नमक छिडकती है ॥ ८ ॥

दोहा–धरम धुरन्धर धीर धरि, नयन उघारे राउ ।
शिरधुनि लीन उसाँस अति, मारेसि मोहिं कुठाउँ ॥३०॥

धर्म धुरन्धर राजा दशरथने धीरज धरकर आँख खोली और शिर धुनकर लम्बी साँस ले, यह वचन कहा कि—अरे पापिनि ! मुझे बुरी ठौर मारा है ॥ ३० ॥

आगे देखि जरति रिस भारी ❀ मनहुँ रोष तरवारि उघारी
मूठि कुबुद्धि धार निठुराई ❀ धरी कूबरी सान बनाई

राजाने देखा तो सामने क्रोधसे जलती हुई कैकेयी मानों नगी तलवार लिए खड़ी है। जिसकी कुबुद्धि ही मूठ है, निठुरपन ही तीक्ष्ण धार है जो कुबरीरूपी सान पँ चढ़ाके पैनाई है ।।

लखेउ महीप कराल कठोरा ❀ सत्यकि जीवन लेइहि मोरा
बोलेउ राउ कठिन करि छाती ❀ वाणी विनय न तासु सुहाती

राजाने उसे कराल और कठोर देख कर समझा कि यह तो सत्य या मेरी जिन्दगी ही लेगी। तब वे छातीको कड़ी करके बिनती करते हुए बोले--जो कैकेईको अच्छी न लगी ।। ४ ।।

प्रिया बचन कस कहति कुभाँती ❀ रीति प्रतीति प्रीति करि हाँती
मोरे भरत राम दुइ आँखी ❀ सत्य कहौं करि शंकर साखी

हे प्रिये! तू किस प्रकार ऐसे कुभाँतिके वचन कहती है, तुमने तो रीति प्रतीति और प्रीति को भी खो दिया है। मैं शिवजीको साक्षी देकर कहता हूँ कि भरत और राम मेरी दोनों आँखें हैं ।।

अवसि दूत मैं पठउब प्राता ❀ ऐहहिं बेगि सुनत दोउ भ्राता
सुदिन साधि सब साज सजाई ❀ देहौं भरतहिं राज बजाई

अवश्य ही प्रातःकाल होते ही मैं दूतको भेजूंगा और मेरी आज्ञा पाते ही दोनों भाई शीघ्र आ जायँगे। तब मैं उत्तम दिन देख सब साज सजाकर बाजा बजवाकर भरतको राज्य दे दूँगा ।।८।।

दोहा—लोभ न रामहिं राज कर, बहुत भरतपर प्रीति।
मैं बड़ छोट बिचार कर, करत रहेउँ नृप नीति ।।३१।।

हे प्रिये ! श्रीरामचन्द्रजीको राज्यका लोभ नहीं है, उनकी तो भरतपर बड़ी प्रीति है। यह तो बड़े-छोटेका विचार करके मैं राजनीति कर रहा था ।। ३१ ।।

राम शपथ शत कहौं सुभाऊ ❀ राम मातु मोहिं कहा न काऊ
मैं सब कीन्ह तोहिं बिनु पूछे ❀ ताते परेउ मनोरथ छूछे

मैं रामकी शपथ खाकर कहता हूँ कि इस सम्बन्धमें रामकी माताने मुझसे कभी कुछ नहीं कहा। मैंनें तुमसे बिना पूछे जो यह क्रिया उसीसे मेरा सब मनोरथ छूँछा पड़ गया ।।

रिस परिहरि अब मङ्गल साजू ❀ कछु दिन गये भरत युवराजू
एकहिं बात मोहिं दुख लागा ❀ बर दूसर असमंजस माँगा

अब तुम क्रोधको छोड़कर माङ्गलिक साज सजाओ, कुछ दिन बाद भरतको युवराजपद दे दूंगा परन्तु मुझको एक ही बातका दुःख लग रहा है कि तुमने जो दूसरा वर माँगा है वह असमंजसका है।

अजहूँ हृदय जरत तेहि आँचा ❀ रिस परिहास कि साँचहु साँचा
कहु तजि रोष राम अपराधू ❀ सब कोउ कहत राम सुठि साधू

उसकी आँचसे मेरा हृदय अबतक जल रहा है, यह क्रोध हँसीका है अथवा सच है, अच्छा तुम्हीं रामचन्द्रका अपराध बताओ क्योंकि रामचन्द्रको सब लोग बड़ा सीधा और नेक कहते हैं।

तुहूँ सराहसि करसि सनेहू ❀ अब सुनि मोहिं भयउ सन्देहू
जासु सुभाव अरिहुँ अनुकूला ❀ सो किमि करहिं मातु प्रतिकूला

तू भी स्नेह और प्रशंसा ही करती रही। अब यह सुनकर मुझे सन्देह हुआ कि, जिन श्रीरामचन्द्रजीका स्वभाव शत्रुके भी अनुकूल है, वह तुम्हारे प्रतिकूल कैसे करेंगे ? ॥८॥

दोहा–प्रिया हास रिस परिहरहु, माँगु बिचारि विवेक।
जेहि देखौं अब नयन भरि, भरत राज अभिषेक ॥३२॥

हे प्रिये ! अब तुम इस हास्यके रोषको त्यागकर विवेकसे विचारकर, वर माँगो जिससे मैं नेत्र भरकर भरतका राज्याभिषेक देखूं ॥ ३२ ॥

जियइ मीन बरु बारि विहीना ❀ मणि बिनु फणिक जियइ दुखदीना
कहउँ सुभाव न छल मन माहीं ❀ जीवन मोर राम बिनु नाहीं

चाहे जलके बिना मछली और मणिके बिना सर्प दीन दुःखी होकर जीता रहे किन्तु मैं तो अपने स्वभावको निष्कपट भावसे कहता हूँ कि, श्रीरामचन्द्रके बिना मेरा जीना नहीं है॥

समुझि देखु जिय प्रिया प्रवीना ❀ जीवन राम दरश आधीना
सुनि मृदु बचन कुमति जिय जरई ❀ मनहुँ अनल घृत आहुति परई

हे चतुर प्रिये ! अपने जी में समझकर देखो कि मेरा जीवन रामके दर्शनके ही अधीन हैं। यह मीठे तथा कोमल वचन सुनकर कुमति कैकेयी जल उठी जैसे घृतकी आहुति अग्निमें पड़ गई हो॥

कहहु करहु किन कोटि उपाया ❀ इहाँ न लागिहि राउर माया
देहु कि लेहु अयश कर नाहीं ❀ मोहिं न बहुत प्रपंच सोहाहीं

कैकेई कहने लगी–हे महाराज ! चाहे करोड़ों उपाय क्यों न कीजिए, पर यहाँ आपकी माया न लगेगी वर दीजिए, या तो ना करके संसार में अपयश लीजिए, मुझे बहुत प्रपंच अच्छा नहीं लगता।

राम साधु तुम साधु सयाने ❀ राम मातु भलि सब पहिचाने
जस कौशिला मोर भल ताका ❀ यस फल उनहिं देउँ करि साका

राम साधु हैं और तुम सयाने साधु हो, रामकी माता भी भली हैं, मैंने सब पहिचान लिया है। कौशिल्याने मेरा जैसा भला देखा है, मैं वैसा ही फल उसे शाका करके दूँगी॥

दोहा–होत प्रात मुनि वेष धरि, जो न राम बन जाहिं।
मोर मरण राउर अयश, नृप समझहु मन माहिं ॥३३॥

प्रातःकाल होते ही यदि रामचन्द्र मुनियोंका वेश धारण करके वनको नहीं चले जायँगे तो मेरी मृत्यु होगी और आपको अपयश होगा। हे राजन् ! इसे आप अपने मनमें विचार लें॥३३॥

अस कहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी ❀ मानहुँ रोष तरंगिनि बाढ़ी
पाप पहार प्रगट भइ सोई ❀ भरी क्रोध जल जाइ न जोई

यह कहकर कुटिल कैकेयी उठकर खड़ी हुई मानों क्रोधरूपी नदी और भी बढ़ गयी है। यह नदी पाप रूपी पर्वतसे प्रकट हुई है, जिसमें क्रोधरूपी जल भर रहा है जो देखी नहीं जाती, बड़ी डरावनी है॥

दोउ बर कूल कठिन हठ धारा ❀ भँवर कूबरी बचन प्रचारा
ढाहत भूप रूप तरु मूला ❀ चली बिपति बारिधि अनुकूला

दोनों बर उस नदीके दो तट हैं और कैकेयीका कठिन हठ कठोर धारा है और जो कुबड़ीकी बातोंका फैलावा है वही नदीका भँवर है। जब नदीमें बाढ़ आ जाती है, तो वह तटके वृक्षोंको बहा देती है, राजा दशरथजी यहाँ वृक्षरूप हैं सो यह धारा उनको जड़से काटती हुई विपत्तिरूपी समुद्रमें ले जा रही है ॥ ४ ॥

लखी नरेश बात सब साँची ❀ तिय मिसु मीचु शीशपर नाची
गहि पद विनय कीन्ह बैठारी ❀ जनि दिनकर कुल होसि कुठारी

राजाने देखा कि सब बात सच्ची है, स्त्रीके बहानेसे ही मेरे सिरपर मृत्यु नाच रही है ॥ तब वे फिर उसके पैर पकड़ और बैठाकर विनती करने लगे कि तुम सूर्यवंशमें कुल्हाड़ी स्वरूप मत बनो ॥

माँगु माथ अबहीं देउँ तोहीं ❀ राम बिरह जनि मारसि मोहीं
राखु राम कहँ जेहि तेहि भाँती ❀ नाहित जरिहि जनम भरि छाती

शिर माँगो तो, मैं अभी तुमको दे दूँगा, पर मुझे रामचन्द्रजीके वियोगमें मत मारो। जिस प्रकारसे हो सके तुम रामचन्द्रजीको रख लो नहीं तो जन्म भर छाती जलती ही रहेगी ॥

दोहा—देखी व्याधि असाधि नृप, परेउ धरनि धुनि माथ।
कहत परम आरत बचन, राम-राम रघुनाथ ॥३४॥

इतनेपर भी जब राजाने कैकेयीका हठरूपी रोग असाध्य देखा, तब शिर पीटते हुए पृथ्वीपर गिर पड़े और राम-राम ! हे रघुनाथ ! यह दीन वचन कहने लगे ॥ ३४ ॥

व्याकुल राउ शिथिल सब गाता ❀ करिनि कलपतरु मनहुँ निपाता
कण्ठ सूख मुख आव न बानी ❀ जनु पाठीन दीन बिनु पानी

राजा व्याकुल हो गये, उनके सारे अग ऐसे शिथिल हो गये मानों हथिनीने कल्पवृक्षको उखाड़ डाला है ॥ कण्ठ सूख गया, मुखसे बात नहीं निकलती, मानों जलके बिना मछली दीन हो रही है ॥

पुनि कह कटु कठोर कैकेयी ❀ मनहुँ घाव महँ माहुर देई
जौं अन्तहु अस करतब रहेऊ ❀ माँगु माँगु केहिके बल कहेऊ

फिर कठोर कैकेयी कड़ुवे वचन कहने लगी मानों घावमें विष दे रही है। हे महाराज! जो अन्तमें आपका यही करतब था, तो माँग लो ! माँग लो ! यह बात किसके बलसे कही थी ॥

दुइ कि होहिं इक समय भुवालू ❀ हँसब ठठाइ फुलाउब गालू
दानि कहाउब अरु कृपणाई ❀ चाहिय क्षेमि कुशल रौताई

हे राजन् ! दो बातें एक समयमें कैसे हो सकती हैं, ठठाकर हँसना और गालोंका फुलाना ! दानी कहलाना और कन्जूसी भी करना, शूर-वीर होकर कुशल-क्षेमकी भी इच्छा करें।

छाँड़हु बचन कि धीरज धरहू ❀ जनि अबला इव करुणा करहू
तनु तिय तनय धाम धन धरणी ❀ सत्यसन्ध कहँ तृण सम बरणी

अपने वचनको छोड़िये या धीरज धरें, परन्तु स्त्रीकी तरह करुणा न कीजिये। सत्य-वादीके लिए शरीर, स्त्री, घर, धन और पृथ्वी यह सब तृणके समान वर्णन किए गए हैं ॥

दोहा—मर्म वचन सुनि राउ कह, कछुक न दूषन तोर।
लागेउ तोहि पिचाश जनु, काल कहावत मोर ॥३५॥

यह मर्मभेदी बातें सुनकर राजाने कहा-तेरा इसमें कुछ दोष नहीं हैं; क्योंकि तुझको तो पिशाचकी तरह मेरा काल आकर लग गया है जो यह सारी बातें कहला रहा है ॥३५॥

चहत न भरत भूप पद भोरे ❀ बिधिवश कुमति बसी उर तोरे
सो सब मोर पाप परिणामू ❀ भयउ कुठाहर जेहि बिधि बामू

भरत तो भूलकर भी राज्यपद नहीं चाहते, होनहारके वश होकर ही तेरे हृदयमें यह कुबुद्धि हुई है सो यह सब मेरे ही पापोंका परिणाम है कि जिससे विधाता कुसमयमें टेढ़ा हो गया है ॥

सुबस बसिहि फिरि अवध सुहाई ❀ सब गुणधाम राम प्रभुताई
करिहहिं भाइ सकल सेवकाई ❀ होइहि तिहुँपुर राम बड़ाई

अयोध्या फिर अच्छी प्रकारसे बसेगी और सब गुणोंके धाम श्रीरामचन्द्रजीकी प्रभुता होगी। सब भाई उनकी सेवा करेंगे और तीनों कालमें श्रीरामचन्द्रजीकी बड़ाई होगी ॥४॥

तोर कलंक मोर पछिताऊ ❀ मुएहु न मिटहि न जाइहि काऊ
अब तोहि नीक लाग करु सोई ❀ लोचन ओट बैठ मुख गोई

परंतु हे पापिनी! तेरा यह कलंक और मेरा पछतावा मर जानेपर भी न मिटेगा और न कभी जायगा अब जो तेरे जी को अच्छा लगे उसे ही कर, किन्तु मुख छिपाकर मेरी आँखोंकी आड़में बैठ जा॥

जब लगि जियौं कहौं कर जोरी ❀ तबलौं जनि कछु कहसि बहोरी
फिरि पछितैहसि अन्त अभागी ❀ मारेसि गाय नाहरू लागी

हाथ जोड़ता हूँ जबतक जिऊँ फिर कुछ मत कहना। हे अभागिनी! जैसे कोई सिंहको तृप्त करने को गायका बध करे और सिंहके न खानेपर पछतावे, वैसे ही तू भी पीछे पछतायेगी ॥

दोहा—परेउ राउ कहि कोटि विधि, काहे करसि निदान।
कपट सयानि न कहति कछु, जागति मनहुँ मशान ॥३६॥

महाराज उसको करोड़ों प्रकारसे समझाकर पृथ्वीपर गिर पड़े और कहा नाश किए डालती है। किन्तु तो भी वह कपटमें सयानी कैकेयी कुछ नहीं बोली, मानों स्मशान जगाती है ॥३६॥

राम राम कहि बिकल भुआलू ❀ जनु बिनु पंख बिहंग बिहालू
हृदय मनाइ भोर जनि होई ❀ रामहिं जाय कहै जनि कोई

राम-रामकी रट लगाते हुए राजा ऐसे विकल हो गए जैसे पंखके बिना पक्षी व्याकुल हो जाते हैं। वे मन-ही-मन मना रहे थे कि सबेरा न होवे और यह बात कोई श्रीरामचन्द्रसे जाकर न कह देवे ॥

उदय करहु जनि रबि रघुकुल गुर ❀ अवध बिलोकि शूल होइहि उर
भूप प्रीति कैकयि निठुराई ❀ उभय अवधि बिधि रची बनाई

हे रघुकुलके गुरु भगवान् सूर्य ! आप उदय न हों क्योंकि अयोध्यापुरीको देखकर आपके हृदयमें शूल होगा। क्योंकि ब्रह्माने महाराजदशरथकीप्रीतिऔरकैकेयीकीनिष्ठुरताकीसीमाबनाकररची है।

बिलपत नृपहिं भयउ भिनुसारा ❁ बीणा बेणु शंख धुनि द्वारा
पढ़हिं भाट गुण गावहिं गायक ❁ सुनत नृपहिं जनु लागत शायक

राजाको विलपते प्रातःकाल हो गया और द्वारपर वीणा बाँसुरी तथा शंखकी ध्वनि होने लगी। भाट लोग विरुदावली पढ़ने लगे किन्तु वह सब कुछ राजाको बाणके समान लगते थे ।। ६।।

मङ्गल सकल सुहाहिं न कैसे ❁ सहगामिनिहिं विभूषण जैसे
तेहि निशि नींद परी नहिं काहू ❁ राम दरश लालसा उछाहू

राजाको ये सब मंगल ऐसे ही अच्छे नहीं लगते जैसे सहगामिनि स्त्रीको आभूषण ।। ७ ।। उस रातमें किसीको नींद नहीं पड़ी, सबके हृदयमें रामके दर्शनकी अभिलाषाका उत्साह था।।८।।

दोहा—द्वार भीर सेवक सचिव, कहहिं उदित रवि देखि।
जागे अजहुँ न अवधपति, कारण कवन विशेखि ।।३७।।

राजद्वारपर नगरवासियोंकी भीड़ लगी है. सूर्यको निकलते देखकर सेवकोंसे मन्त्रिगण कहते हैं कि, अभीतक राजा नहीं जागे, इसका क्या विशेष कारण है ।। ३७ ।।

पछिले पहर भूप नित जागा ❁ आजु हमहिं बड़ अचरज लागा
जाहु सुमन्त जगावहु जाई ❁ कीजिय काज रजायसु पाई

राजा नित्य तड़के उठते थे, आज हमें बड़ा आश्चर्य लग रहा है कि, अभीतक नहीं जागे, ।।१।। हे सुमन्त ! तुम जाकर राजाको जगाओ और आज्ञा पाकर कार्य करो ।। २ ।।

गे सुमन्त तब राउर पाहीं ❁ देखि भयावन जात डराहीं
धाइ खाइ जनु जाइ न हेरा ❁ मानहुँ बिपति बिषाद बसेरा

तब सुमन्त रनिवासमें गए, वहाँ भयावना देखकर जाते हुए डरते हैं। रनिवास मानों दौड़ कर खा जायेगा, वह देखा नहीं जाता, मानों विपत्ति और विषादका अड्डा बन गया है ।।४।।

पूछें कोउ न उत्तर देई ❁ गे जेहि भवन भूप कैकेई
कहि जयजीव बैठ सिरनाई ❁ देखि भूपगति गयउ सुखाई

पूछनेसे कोई उत्तर नहीं देता, जिस भवनमें राजा और कैकेयी थे सुमन्त उस महलमें गये और जयजीव कहके मस्तक नवाकर (प्रणाम करके) बैठे राजाकी दशा देखकर सुमन्त सूख गये ।।

सोच विकल विवरन महि परेऊ ❁ मानहुँ कमल मूल परिहरेऊ
सचिव सभीत सकइ नहिं पूछी ❁ बोली अशुभ भरी शुभ छूँछी

उन्होंने देखा कि सोचमें राजा विकल हैं, रंग बदरंग हो गया है, पृथ्वीपर पड़े हैं मानों जड़से छूटा कमल हो। भयसे मन्त्री कुछ न पूछ सके इतनेमें कैकेयी बोली—।। ८ ।।

दोहा—परी न राजहिं नींद निशि, हेतु जान जगदीश।
राम राम रटि भोर किय, मरम न कहेउ महीश ।।३८।।

राजाको रातभर नींद नहीं आई, इसका कारण ईश्वर ही जानें। परन्तु राजाने रातभर राम-राम कहकर भोर कर दिया और अपना कुछ भेद नहीं बतलाया ॥ ३८ ॥

आनहु रामहिं बेगि बुलाई ❀ समाचार तब पूँछहु आई
चले सुमन्त राउ रुख जानी ❀ लखी कुचालि कीन्ह कछु रानी

(इसलिए हे सुमन्त) रामको शीघ्र ही बुला लाओ तब आकर समाचार पूछो ॥१॥ राजा का रुख जानकर सुमन्तजी चले और समझ लिया कि रानीने कुछ कुचाल किया है ॥२॥

सोच बिकल मग परइ न पाऊ ❀ रामहिं बोलि कहहिं का राऊ
उर धरि धीरज गयउ दुआरे ❀ पूछहिं सकल देखि मन मारे

सोचसे व्याकुल पैर आगे नहीं पड़ता कि रामको बुलाकर राजा क्या कहेंगे ? हृदयमें धैर्य धारणकर द्वारपर गए तो सब पूछने लगे कि क्या कारण है ? ॥ ४ ॥

समाधान तब करि सबहीका ❀ गयउ जहाँ दिनकर कुल टीका
राम सुमन्तहिं आवत देखा ❀ आदर कीन्ह पिता सम लेखा

फिर सुमन्तजी सब लोगोंको सन्तोष देकर वहाँ गए जहाँ सूर्यवंशके श्रेष्ठ रामजी थे। रामजीने सुमन्तको आते देखकर उनका आदर किया और उन्हें पिताके समान समझा ॥६॥

निरखि बदन कह भूप रजाई ❀ रघुकुल दीपहिं चलेउ लिवाई
राम कुभाँति सचिव सँग जाहीं ❀ देखि लोग जहँ तहँ बिलखाहीं

श्रीरामचन्द्रजीके मुखको देखकर और राजाकी आज्ञा कहकर सुमन्तजी रघुवंश में श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रजीको लिवा ले चले ॥७॥ श्रीरामचन्द्रजी मन्त्रीके साथ कुभाँतिसे "पैदल वेश-भूषाहीन अकेले" चले जा रहे थे, यह देखकर सबलोग जहाँ-तहाँ दुःखी हो रहे थे ॥८॥

दोहा—जाय दीख रघुवंशमणि, नरपति निपट कुसाज।
सहमि परेउ लखि सिंहिनिहि, मनहुँ वृद्ध गजराज ॥३९॥

वहाँ जाकर रामजीने अपने पिता दशरथजीको देखा कि वे अस्त-व्यस्त पड़े हैं, मानों कोई बूढ़ा गजराज सिंहिनीको देख सहमकर पृथ्वी पर गिर पड़ा हो ॥ ३९ ॥

सूखे अधर जरहिं सब अंगू ❀ मनहुँ दीन मनि हीन भुवंगू
सरुष समीप देखि कैकेयी ❀ मानहुँ मीच घरी गनि लेयी

राजाके ओठ सूख रहे थे, शरीरमें ज्वर ऐसा चढ़ा था, मानों सर्प मणिके बिना दुःखी है, कुपित कैकेयीको पास ही बैठे देखा, वह ऐसी बैठी है मानों राजाके मरनेकी घड़ी गिन रही है ॥

करुनामय मृदु राम सुभाऊ ❀ प्रथम दीख दुख सुना न काऊ
तदपि धीर धरि समय बिचारी ❀ पूछी मधुर बचन महतारी

रामका स्वभाव तो कोमल और करुणापूर्ण था, उन्होंने इसके पहले कभी ऐसा दुःख, शोक देखा और सुना न था तथापि धैर्य धारणकर असमय विचार मीठे वचनोंसे मातासे पूछा ॥

मोहिं कहु मातु तात दुख कारन ❀ करिय जतन जेहि होइ निवारन
सुनहु राम सब कारन एहू ❀ राजहिं तुम पर बहुत सनेहू

हे माता ! मुझे पिताजीके दुःखका कारण बताओ जिससे उपाय किया जाय कि वह मिट जाये। कैकेयीने कहा हे रामचन्द्र ! सुनो सब कारण यही है कि राजाका तुम्हारे ऊपर बड़ा स्नेह है ॥

देन कहेउ मोहिं दुइ वरदाना ❀ माँगेउँ जो कछु मोहिं सोहाना
सो सुनि भयउ भूप उर सोचू ❀ छाँड़ि न सकहिं तुम्हार सँकोचू

ये मुझे दो वरदान देनेको कहे थे, सो मुझे जो कुछ अच्छा लगा मैंने माँगा ॥७॥ उसे सुन राजाके मनमें ऐसा सोच हो गया है, क्योंकि ये तुम्हारा संकोच नहीं छोड़ सकते ॥८॥

दोहा—सुत सनेह इत वचन उत, संकट परउ नरेस।
सकहु त आयसु धरहु सिर, मेटहु कठिन कलेस ॥४०॥

एक ओर तो पुत्रका स्नेह और दूसरी ओर वचन, इसी अंजमंजसमें राजा पड़े हैं। यदि तुम कर सको तो आज्ञा मानकर इनके कठिन क्लेशको दूर करो ॥४०॥

निधरक बैठि कहइ कटु बानी ❀ सुनत कठिनता अति अकुलानी
जीभ कमान बचन सर नाना ❀ मनहुँ महिप मृदु लक्ष समाना

कैकेयी निर्भय बैठी हुई ऐसा कटुवचन बोल रही है कि जिसे सुनकर कठिनता भी अत्यन्त अकुला गई ॥ जिसकी जीभ कमान और वचन ही बाण हैं, मानों राजा ही मृदु निशान हैं ॥

जनु कठोरपन धरे शरीरू ❀ सिखइ धनुष—विद्या वर वीरू
सब प्रसंग रघुपतिहिं सुनाई ❀ बैठी मनु तनु धरि निठुराई

मानों कठोरपन ही श्रेष्ठ योद्धाका शरीर धारणकर धनुष-विद्या सीख रहा है ॥३॥ सब कथा श्रीरामचन्द्रजीको सुनाकर वह ऐसे बैठ गई मानों निठुरता ही शरीर धारणकर बैठी है ॥४॥

मन मुसुकाहिं भानुकुलभानू ❀ राम सहज आनन्द निधानू
बोले बचन बिगत सब दूषण ❀ मृदु मंजुल जनु वाग विभूषण

श्रीरामचन्द्रजी मनमें मुसकुराते हैं, क्योंकि वे तो स्वभावतः आनन्दके घर हैं। फिर श्रीरामचन्द्रजी दोष-रहित वचन बोले जो ऐसे कोमल और सुन्दर थे, मानों वाणीके भूषण ही हैं ॥

सुनु जननी सोइ सुत बड़भागी ❀ जो पितु-मातु बचन अनुरागी
तनय मातु—पितु—तोषनिहारा ❀ दुर्लभ जननी यह संसारा

हे माता ! सुनो, वह पुत्र बड़ा भाग्यवान् है जो माता-पिताके वचनमें प्रेम करता है। हे माता ! माता पिताको सन्तोष देने वाला पुत्र संसारमें दुर्लभ है ॥८॥

दोहा—मुनिवर मिलन विशेष बन, सबहिं भाँति हित मोर।
तेहि महँ पितु आयसु बहुरि, सम्मत जननी तोर ॥४१॥

हे माता ! बनमें मुनिगण विशेष रूपसे मिलेंगे, इसमें मेरा सब प्रकारसे भला होगा। इतने पर भी पिताकी आज्ञा है और इससे भी बड़ी बात आपकी सम्मत्ति है ॥४१॥

भरत प्रान प्रिय पावहिं राजू ❀ विधि सबविधिमोहिसनमुखआजू
जौं न जाउँ बन ऐसेहु काजा ❀ प्रथम गनिय मोहिं मूढ़ समाजा

और भी उत्तम बात यह है कि प्राण प्यारे भरत राज्य पावेंगे ! अब विधाता सब प्रकार से मुझे अनुकूल हैं । यदि इतने कार्यसे भी मैं बन न जाऊँ तो मुझे मूर्ख समझना चाहिए ।।

सेवहिं अरँड कल्पतरु त्यागी ❀ परिहर अमृत लेहिं विष माँगी
तेउ न पाइ अस समय चुकाहीं ❀ देखु विचारि मातु मनमाहीं

जो कल्पवृक्षको छोड़कर रेंण वृक्षको सेते हैं और अमृतको छोड़कर विष ही माँगते हैं। वे भी ऐसा मौका पाकर नहीं चूकेंगे, हे माता ! मनमें विचार कर देख लो ।।४।।

अंब एक दुख मोहिं विसेषी ❀ निपट बिकल नर-नायक देखी
थोरहि बात पितहिं दुख भारी ❀ होति प्रतीति न मोहिं महँतारी

हे माता ! मुझे एक बातका विशेष दुःख है कि महाराजको बड़ा व्याकुल देखता हूँ। थोड़ी सी बातके लिए पिताजीको इतना भारी दुःख हो । हे माता ! मुझे विश्वास नहीं होता है ।।६।।

राउ धीर गुन-उदधि-अगाधू ❀ भा मोहिते कछु बड़ अपराधू
जातें मोहिं न कहत कछु राऊ ❀ मोर सपथ तोहिं कहु सतिभाऊ

राजा धैर्यवान् और गुणोंके अथाह समुद्र हैं, मुझसे कोई बड़ा अपराध हो गया है जिससे महाराज मुझसे कुछ कहते नहीं । हे माता ! तुम्हें मेरी शपथ है, तुम सच्ची बात कहो ।।८।।

दोहा—सहज सरल रघुपति बचन, कुमति कुटिल करि जान ।
चलइ जोंक जिमि वक्रगति, यद्यपि सलिल समान ।।४२।।

श्रीरामजीका वचन स्वभावसे सरल और निर्मल है तो भी उस कुमतिने उसे अति कुटिल करके जाना । सत्य है कि यद्यपि जल सदा बराबर रहता है तो भी जोंक सदा टेढ़ी चलती है ।।

रहसी रानि राम रुख पाई ❀ बोली कपट सनेह जनाई
शपथ तुम्हारि भरत कै आना ❀ हेतु न दूसर मैं कछु जाना

श्रीरामचन्द्रजीका रुख देखकर रानी प्रसन्न हुई और कपट से स्नेह जनाकर बोलीं कि, हे राम ! मुझे तुम्हारी शपथ और भरत की दोहाई है, मैं राजाके अन्य दुःखका कारण नहीं जानती ।।

तुम अपराध योग नहिं ताता ❀ जननी जनक बन्धु सुखदाता
राम सत्य तुम जो कछु कहहू ❀ तुम पितु मातु बचन रत अहहू

हे तात ! तुम अपराधके योग्य नहीं हो, तुम तो माता पिता और भाइयोंको सुख देनेवाले हो । हे राम ! तुमने जो कहा है सत्य है, तुम्हारी माता पिताके वचनोंमें परम प्रीति है ।।

पितहिं बुझाइ कहहु बलि सोई ❀ चौथेपन जेहि अजस न होई
तुम सम सुकृत सुवन जेहि दीन्हे ❀ उचित न तासु निरादर कीन्हे

अब तुम पिताको समझाकर कह दो, जिससे बुढ़ापेमें इनसे अपराध न होवे। राजाके जिस पुण्यके प्रतापसे तुम्हारे जैसे पुत्र हुए उस पुण्य का निरादर करना योग्य नहीं है ।।

लागहिं कुमुखि बचन शुभ कैसे ❀ मगह गयादिक तीरथ जैसे
रामहिं मातु बचन सब भाये ❀ जिमि सुरसरिगत सलिल सुहाये

उस कुमुखीके बचन कैसे अच्छे लगते हैं कि जैसे मगध देशके बीच गया आदिक तीर्थ, और रामको कैकेयीके वचन कैसे अच्छे लगते हैं कि जैसे गंगामें मिलकर कर्मनाशाका जल।

दोहा—गइ मुरुछा रामहिं सुमिरि, नृप फिरि करवट लीन्ह।
सचिव राम आगमन कहि, विनय समय समकीन्ह ॥४३॥

इतने में राजा दशरथकी मूर्छा चली गई और रामको स्मरणकर, उन्होंने फिर करवट लिया। तब सुमन्तने श्रीरामचन्द्रजीका आगमन कह, समयके अनुसार विनय किया ॥४३॥

अवनिप अकनि राम पगु धारे ❀ धरि धीरज तब नयन उघारे
सचिव सँभारि राउ बैठारे ❀ चरण परत नृप राम निहारे

जब राजाने सुना कि राम पधारे हैं, तब धीरज धरकर आँखें खोलीं ॥ १ ॥ सुमन्तने राजाको बिठाया और पैरोंमें पड़ते हुए राजाने रामको देखा ॥ २ ॥

लिये सनेह विकल उर लाई ❀ गइ मणि फणिक बहुरि जिमिपाई
रामहिं चितै रहेउ नरनाहू ❀ चला विलोचन वारि प्रवाहू

तब स्नेहसे विकल हो राजाने उन्हें छातीसे लगा लिया, मानों सर्पने गई हुई मणि पा लिया हो ॥३॥ राजा श्रीरामचन्द्रजीको देखते रहे, इतनेमें नेत्रोंसे जलका प्रवाह बहने लगा ॥४॥

शोक विकल कछु कहै न पारा ❀ हृदय लगावत बारहिं बारा
बिधिहिं मनाव राउ मन माहीं ❀ जेहि रघुनाथ न कानन जाहीं

शोकसे विह्वल होनेके कारण राजा कुछ कह न सके, बारम्बार श्रीरामचन्द्रजीको छाती से लगाते रहे ॥५॥ राजा अपने मनमें ब्रह्माको मनाते हैं कि राम बनको न जायँ ॥६॥

सुमिरि महेशहिं करहिं निहोरी ❀ बिनती सुनहु सदाशिव मोरी
आशुतोष तुम औढर दानी ❀ आरति हरहु दीन जन जानी

राजा महादेवजीका स्मरण करके निहोरा कर कहते हैं कि, हे महादेव! मेरी एक बिनती सुनो, आप भक्तों पर बहुत शीघ्र प्रसन्न होते हो, मुझे दीन जानके मेरा दुःख हरण कीजिये ॥

दोहा—तुम प्रेरक सबके हृदय, सो मति रामहिं देहु।
बचन मोर तजि रहहिं घर, परिहरि शील सनेहु ॥४४॥

हे शिव! आप सबके हृदयके प्रेरक हो सो आप श्रीरामचन्द्रजीको ऐसी बुद्धि दो कि वह अपने स्वाभाविक प्रेम को त्यागकर मेरे बचनको न मानें और घरमें रह जायँ ॥४४॥

अयश होउ बरु सुयश नसाऊँ ❀ नरक परौं बरु सुरपुर जाऊँ
सब दुख दुसह सहावहु मोहीं ❀ लोचन ओट राम जनि होहीं

चाहे संसारमें अपयश होता है तो भले होवे और सुयश नाश हो तो होवे, चाहे नरक में पड़ूँ या स्वर्गमें जाऊँ, चाहे घोर दुःसह दुःख सहूँ, पर राम नेत्रोंके सामनेसे न हटें ॥२॥

अस मन गुनइ राउ नहिं बोला ❀ पीपर पात सरिस मन डोला
रघुपति पितुहिं प्रेमवश जानी ❀ पुनि कछु कहेउ मातु अनुमानी

राजा मनमें इस तरहका विचार करते, मुँहसे कुछ नहीं कहते हैं, उनका मन पीपलके पत्ते के समान डोल रहा है। रामजी पिताको प्रेमवश जान माताका अभिप्राय समझ फिर कुछ बोले ॥

देश काल अवसर अनुसारी ❁ बोले बचन बिनीत बिचारी
तात कहौं कछु करौं ढिठाई ❁ अनुचित क्षमब जानि लरिकाई

श्रीरामचन्द्रजीने देश कालको विचार अवसर अनुमानकर समयानुसार विनीत शब्दोंमें कहा—कि हे पिता ! कुछ कहता हूँ जिसे लड़कपनकी ढिठाई जानकर क्षमा कीजियेगा ॥

अति लघु बात लागि दुख पावा ❁ काहे न मोहिं कहि प्रथम जनावा
देखि गुसाँईंहि पूँछेउ माता ❁ सुनि प्रसंग भये शीतल गाता

आप इतनी छोटीसी बातके लिए इतना दुःख पाये हैं, सो पहले ही कह कर क्यों नहीं जना दिया ॥७॥ आपको देख, मातासे पूछा तो प्रसङ्ग सुनकर शरीर शीतल हुआ ॥ ८ ॥

दोहा—मंगल समय सनेह वश, शोच परिहरिय तात ।
आयसु देइय हरषि हिय, कहि पुलके प्रभु गात ॥४५॥

हे तात ! यह समय मंगलका है आप क्यों इस समय स्नेहके वश सोच कर रहे हैं। उसे त्यागिये और हर्षित हो आज्ञा दीजिये ऐसा कह रामजीका शरीर रोमाञ्चित हो गया ॥४५॥

धन्य जन्म जगतीतल तासू ❁ पितहिं प्रमोद चरित सुनि जासू
चारि पदारथ करतल ताके ❁ प्रिय पितु मातु प्रान सम जाके

श्रीरामचन्द्रजी पुनः कहने लगे, संसारमें उसीका जन्म लेना धन्य हैं, जिसके चरित्रको सुनकर पिताको अतीव आनन्द हो। उसीके हाथमें चारों पदार्थ हैं जिसे माता पिता प्रिय हैं ॥२॥

आयसु पालि जनम फल पाई ❁ ऐहहुँ बेगिहि होइ रजाई
बिदा मातु सन आवउँ माँगी ❁ चलिहहुँ बनहिं बहुरि पगलागी

आज्ञाका पालन और जन्मका फल पाकर मैं शीघ्र ही लौट आऊँगा। मुझे आज्ञा दीजिये ॥३॥ मैं मातासे बिदा माँग आऊँ, फिर आपके पैर पकड़कर वनको चला जाऊँगा ॥४॥

अस कहि राम गवन तब कीन्हा ❁ भूप सोच बस उतर न दीन्हा
नगर ब्यापि गइ बात सुतीछी ❁ छुअत चढ़ी जनु सब तन बीछी

ऐसा कहकर रामजी चले, तब राजाने शोकके कारण उत्तर नहीं दिया ॥५॥ यह तीक्ष्ण बात सारे नगरमें ऐसी तीव्रतासे फैल गई मानों बिच्छूने डङ्क मार दिया हो ॥ ६ ॥

सुनि भे विकल सकल नर नारी ❁ बेलि बिटप जिमि देखि दवारी
जो यह सुनइ धुनइ शिर सोई ❁ बड़ विषाद नहिं धीरज होई

यह बात सुनकर सब स्त्री-पुरुष व्याकुल हो गए, जैसे दावाग्नि देखकर लतायें और वृक्ष व्याकुल होते हैं ॥७॥ जो जहाँ इस बातको सुनता है, वह वहीं अपना माथा पीटने लगता है, नगरमें बड़ा दुःख फैला है, किसीको धैर्य नहीं होता ॥ ८ ॥

दोहा—मुख सुखाहिं लोचन स्रवहिं, शोक न हृदय समाइ ।
मनहुँ करुन रस कटकई, उतरी अवध बजाइ ॥४६॥

लोगोंके मुख सूख रहे हैं, नेत्रोंसे अश्रु टपकते हैं, लोग रोते हैं, शोक हृदयमें नहीं समाता। मानों करुण-रसकी सेना अयोध्यामें डंकेकी चोटके साथ उतर आयी है ॥ ४६ ॥

भलि बनाय विधि बात बिगारी ❀ जहँ तहँ देहिं कैकइहिं गारी
इहि पापिनिहिं बूझि का परेऊ ❀ छाइ भवन पर पावक धरेऊ

लोग कहने लगे क्या अच्छी विधि बन गई थी, पर इस कैकेईने बिगाड़ दिया ॥ यह कहकर कैकेयीको गाली देते हैं और कहते हैं कि इसने छाये हुए घर पर आग रख दी है ॥२॥

निजकर नयन काढि चह दीखा ❀ डारि सुधा विष चाहति चीखा
कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी ❀ भइ रघुवंश वेणु बन आगी

यह तो अपने हाथों ही अपनी आँखें निकालकर देखना चाहती है, अमृतको फेंककर विष चीखना चाहती है॥ यह कुटिल कैकेई रघुवंशरूपी बाँसके बनके लिए आगके समान हुई ॥

पालव बैठि पेड़ एहि काटा ❀ सुख महुँ शोक ठाट धरि ठाटा
सदा राम इहि प्रान समाना ❀ कारन कवन कुटिलपन ठाना

इसने डालपर बैठकर पेड़को काटा है, सुखमें शोकका ठाट बाँधा है। इसे राम तो सदा प्राणके समान प्यारे थे, फिर इसने किस कारणसे कुटिलता की, यह समझ नहीं पड़ता ॥

सत्य कहहिं कवि नारि सुभाऊ ❀ सब विधि अगम अगाध दुराऊ
निज प्रतिबिंब बरुक गहि जाई ❀ जानि न जाइ नारि गति भाई

कवि लोग ठीक कहते हैं कि स्त्री जिस भावको छिपाना चाहे वह सब प्रकार अगम और अथाह ही रहता है। चाहे अपना प्रतिबिम्ब पकड़ा जा सके लेकिन हे भाई! स्त्रीकी गति नहीं जानी जाती।

दोहा—काह न पावक जरि सकै, का न समुद्र समाय।
का न करै अवला प्रबल, केहि जग काल न खाय ॥४७॥

आग किसे नहीं जलाती, समुद्रमें क्या नहीं समा सकता? प्रबल स्त्री क्या नहीं कर सकती, संसारमें काल किसे नहीं खाता? ॥ ४७ ॥

का सुनाइ बिधि काह सुनावा ❀ का देखाइ चह काह देखावा
एक कहहिं भल भूप न कीन्हा ❀ वरविचारि नहिं कुमतिहिं दीन्हा

विधाताने क्या सुनाकर क्या सुनाया और क्या दिखाकर क्या दिखलाना चाहता है। कुछ लोग कहते कि यह राजाने अच्छा नहीं किया इस मूर्खाको विचारकर वरदान नहीं दिया ॥ २ ॥

जो हठि भयउ सकल दुख भाजन❀ अबला विवश ज्ञान गुण गाजन
एक धरम परिमिति पहिचाने ❀ नृपहिं दोष नहिं देहिं सयाने

जो वरदान निश्चय ही सब दुखोंका कारण हुआ, स्त्रीके वशमें होकर मानों राजाका ज्ञान और गुण जाता रहा परन्तु धर्मकी मर्यादा पहिचाननेवाले राजाको दोष नहीं देते ॥४॥

शिवि दधीचि हरिचन्द कहानी ❀ एक एक सन कहहिं बखानी
एक भरत कर संमत कहहीं ❀ एक उदासभाव सुनि रहहीं

कुछ लोग परस्पर राजा शिवि, दधीचि और हरिश्चन्द्रकी कहानी कहते हैं ॥५॥ कछ लोग इस कार्यमें भरतकी सम्मति बतलाते हैं और इस बातको सुनकर उदास रह जाते हैं ॥६॥

कानमूंदि कर रद गहि जीहा ❀ एक कहहिं यह बात अलीहा
सुकृत जाहिं अस कहत तुम्हारे ❀ राम भरत कहँ प्राण पियारे

कुछ लोग हाथोंसे कान बन्दकर और दाँतोंसे जीभ दबाकर कहने कि यह बात झूठी है ॥ ऐसा कहनेसे तुम्हारे पुण्य नष्ट होते हैं, श्रीरामचन्द्रजी भरतको प्राणोंसे प्यारे हैं ॥८॥

दोहा—चन्द चुवइ बरु अनल कन, सुधा होइ विषतूल ।
सपनेहुँ कबहुँ कि करहिं कछु, भरत राम प्रतिकूल ॥४८॥

चन्द्रमासे चाहे आगकी चिनगारियाँ निकलें, चाहे अमृत विषके समान हो जाये, किन्तु भरत स्वप्नमें भी श्रीरामचन्द्रजीके विरुद्ध कुछ नहीं कर सकते हैं ॥ ४८ ॥

एक बिधातहिं दूषन देहीं ❀ सुधा दिखाइ दीन विष जेहीं
खरभर नगर सोच सब काहू ❀ दुसह दाह उर मिटा उछाहू

कुछ लोग विधाताको दोष देते हैं जिसने अमृत दिखाकर विष दिया। इस प्रकार सारे नगर में खलबली मची है, सबको चिन्ता है, हृदयमें दुस्सह जलन हो रही है और उत्साह नष्ट हो गयाहै।

विप्रबधू कुलमान्य जठेरी ❀ जो प्रिय परम कैकई केरी
लगीं देन सिख शील सराही ❀ बचन बान सम लागहिं ताही

ब्राह्मणोंकी स्त्रियाँ, कुलपूज्य और बड़ी स्त्रियाँ, जो कैकेईको प्राणसे प्यारी थीं वे उसके शिष्टाचारकी बड़ाई करके उसे शिक्षा देने लगीं, पर उसे उनकी बातें बाणके समान लगती थीं ॥

भरत न मोहिं प्रिय राम समाना ❀ सदा कहहु यह सब जग जाना
करहु राम पर सहज सनेहू ❀ केहि अपराध आजु बन देहू

इसे संसार जानता है कि रामके समान तुम्हें भरत प्यारे नहीं। तुम रामचन्द्रजी पर सर्वदा प्रेम करती थीं, फिर किस अपराधके कारण आज उन्हें बन दे रही हो ॥ ६ ॥

कबहुँ न कियहु सवति अवरेसू ❀ प्रीति प्रतीति जान सब देसू
कौसिल्या अब काह बिगारा ❀ तुम जेहि लागि बज्र पुर पारा

तुमने कभी सौतियाडाह नहीं किया, सब देश तुम्हारे प्रेम और विश्वासको जानता है। फिर कौशिल्याने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है कि जिसके लिए तुमने नगर पर बज्र गिरा दिया है॥

दोहा—सीय कि पियसँग परिहरहिं, लषन कि रहिहहिं धाम ।
राज कि भूँजब भरत पुर, नृप कि जियहिं बिनु राम ॥४९॥

क्या सीता पतिका साथ छोड़ देंगी ? क्या लक्ष्मणजी घर पर रहेंगे ? क्या भरतजी अयोध्याका राज्य भोगेंगे, क्या राजा दशरथ बिना रामके जियेंगे ? ॥ ४९ ॥

अस बिचारि जिय छाँड़हु कोहू ❀ शोक कलंककोट जनि होहू
भरतहिं अवशि देहु युवराजू ❀ कानन काह राम कर काजू

ऐसा विचारकर अपने हृदयसे क्रोध दूर कर दो, शोक और कलंकका आगार मत बनो ॥१॥ भरतको युवराजका पद अवश्य दो; किन्तु रामके बन जानेका क्या कार्य है ?॥२॥

नाहिन राम राज के भूखे ❀ धरम धुरीन विषय रस रूखे
गुरु गृह बसहिं राम तजि गेहू ❀ नृप सन अस वर दूसर लेहू

श्रीरामचन्द्रजी राज्यके भूखे नहीं हैं, वे तो विषय-रससे उदासीन और धर्म-धुरन्धर हैं ॥३॥ तुम राजासे दूसरा वर माँग लो, कि रामजी घर छोड़कर गुरुके घर जाकर रहें ॥४॥

जौं नहिं लगिहहु कहे हमारे ❀ नहिं लागिहि कछु हाथ तुम्हारे
जौं परिहास कीन्ह कछु होई ❀ तौ कहि प्रकट जनावहु सोई

यदि तुम हमारे कहनेके अनुसार न करोगी तो तुम्हारे हाथ कुछ भी न लगेगा ॥५॥ यदि तुमने कुछ हँसी की हो, तो उसे कहकर स्पष्ट बतला दो ॥ ६ ॥

राम सरिस सुत कानन जोगू ❀ काह कहहिं सुनि तुम्ह कहँ लोगू
उठहु बेगि सोइ करहु उपाई ❀ जेहि विधि सोक कलंक नसाई

क्या रामचन्द्रके समान पुत्र बन जानेके योग्य हैं ? यह सुनकर तुमको लोग क्या कहेंगे ? जल्दीसे उठो और वही उपाय करो कि जिससे शोक और कलंक नष्ट हो जावे ॥ ८ ॥

छन्द—जेहि भाँति शोक कलंक जाइ उपाइ करि कुल पालहू।
हठि फेरि रामहिं जात बन जनि बात दूसरि चालहू ॥
जिमि भानु बिनु दिन प्राणबिनु तनु चन्द बिनु जिमि जामिनी।
तिमि अवध तुलसीदास प्रभु बिनु समुझिधौं जिय भामिनी।२।

जिस प्रकार शोक और कलंक जाय वह उपाय करके कुलका पालन करो और हठ करके श्रीरामजीको बन जानेसे लौटा लो, दूसरी बात न करो। तुलसीदासजी कहते हैं कि जिस प्रकार सूर्यके बिना दिन मलिन हो जाता है, प्राणके बिना शरीर निःशक्त हो जाता है, वैसे हे रानी ! श्रीरामके बिना अयोध्याको समझ लो ॥२॥

सोरठा—सखिन्ह सिखावन दीन्ह, सुनत मधुर परिणाम हित।
तेइ कछु कान न कीन्ह, कुटिल प्रबोधी कूबरी ॥२॥

सखियोंने ऐसी शिक्षा दी जो कि सुननेमें मधुर और परिणाममें हितकर थी; परन्तु दुष्टा कुबड़ीकी समझाई हुई उस कैकेयीने कुछ भी ध्यान नहीं दिया ॥ २ ॥

उतर न देइ दुसह रिस रूखी ❀ मृगिहि चितवजनु बाघिनि भूखी
ब्याधि असाधि जानि तिन्हत्यागी❀ चलीं कहत मतिमंद अभागी

असह्य क्रोधसे रुष्ट हुई उत्तर नहीं देती, जैसे भूखी बाघिनि हरिणियोंकी ओर देख रही हो। तब सखियोंने कैकेयीको समझाना छोड़ दिया और दुर्बुद्धि अभागिनी कहती चल दीं।

राज करत इहि दैव बिगोई ❀ कीन्हेसि अस जस करै न कोई
यहि बिधि बिलपहिं पुर नरनारी❀ देहिं कुचालिहिं कोटिक गारी

इसे राज्य करते हुए दैवने बिगाड़ दिया, इसने जैसा किया वैसा कोई नहीं करेगा ।।३।। इस प्रकार कहकर नगरके स्त्री-पुरुष विलाप करते और कैकेयीको करोड़ों गालियाँ देते हैं ।। ४ ।।

जरहिं विषम ज्वर लेहिं उसाँसा❀ कवन राम बिनु जीवन आसा
बिपुल वियोग प्रजा अकुलानी ❀ जनु जलचरगण सूखत पानी

सभी विषम ज्वरसे जलते हैं और लम्बी साँसें ले कहते हैं कि श्रीरामजीके बिना जीनेकी क्या आशा है ? प्रजा ऐसे घबरा गई जैसे जलमें रहनेवाले जीव पानी सूखते देखकर घबड़ा जाते हैं ।।

अति विषाद वश लोग लुगाई ❀ गये मातु पहिं राम गुसाँई
मुख प्रसन्न चित चौगुन चाऊ ❀ हृदय सोच जनि राखहिं राऊ

नगरके स्त्री और पुरुष बहुत दुखके वशमें हैं, तब श्रीरामजी माता कौशल्याके पास गये । उनका मुख प्रसन्न है मनमें सोच केवल इतना ही है कि, कहीं राजा रोक न लें ।।८।।

दोहा–नव गयंद रघुवंशमणि, राज अलान समान ।
छूट जानि बन गमन सुनि, उर आनँद अधिकान ।।५०।।

श्रीरामजी नवीन पकड़े हुए हाथीके समान हैं और राज्य जंजीरके समान है । बन गमन सुनकर मानों जंजीरका बन्धन छूट गया, ऐसा समझ हृदयमें बड़ा आनन्द हुआ ।। ५० ।।

रघुकुल तिलक जोरि दोउ हाथा❀ मुदित मातु पद नायउ माथा
दीन्ह असीस लाइ उर लीन्हें ❀ भूषन बसन निछावरि कीन्हें

तब माताके निकट पहुँचकर श्रीरामचन्द्रजीने माता कौशिल्याके पैरों पर शिर नवाया । माताने आशीर्वाद देकर हृदयसे लगा लिया और गहने तथा कपड़े न्योछावर किए ।।

बार बार मुख चुंबति माता ❀ नयन नेह जल पुलकित गाता
गोद राखि पुनि हृदय लगाये ❀ स्रवत प्रेम रस पयद सुहाये

माता कौशिल्या बार-बार रामजीका मुँह चूमती हैं, शरीरमें रोमांच हो गया । फिर उन्होंने रामजीको हृदयसे लगा लिया, कौशिल्याजीके स्तनोंसे मारे प्रेमके सुन्दर दूध टपकने लगा ।।

प्रेम प्रमोद न कछु कहि जाई ❀ रंक धनद पदवी जनु पाई
सादर सुन्दर बदन निहारी ❀ बोली मधुर बचन महतारी

उनका प्रेम और आनन्द कुछ कहा नहीं जाता, मानों दरिद्रको कुबेरका पद मिल गया हो ।।५।। फिर रामजीका सुन्दर मुख देखकर माता कौशिल्या यह मीठे वचन बोलीं ।।६।।

कहहु तात जननी बलिहारी ❀ कबहि लगन मुद-मङ्गलकारी
सुकत सील सुख सींव सुहाई ❀ जन्म लाभ कइ अवधि अघाई

हे तात ! कहो, माता बलिहारी जाती है, वह कल्याण करनेवाली राज्याभिषेककी मुहूर्त कब है । जो पुण्यशील और सुखकी सुन्दर सीमा तथा संसारमें जन्म पानेकी पूर्ण अवधि है ।।

दोहा–जेहिं चाहत नर नारि सब, अति आरत इहि भाँति ।
जिमि चातक चातकि तृषित, वृष्टि शरद ऋतु स्वाति ।।५१।।

जिस (लग्न) को सब स्त्री-पुरुष चाहते हैं और उस लग्नमें तुम्हारा राज्याभिषेक देखने के लिए इतने व्याकुल हैं जैसे प्यासे पपीहरी पपीहा स्वाती नक्षत्रकी बूंदको चाहते हैं ॥५१॥

तात जाउँ बलि बेगि नहाहू ❀ जो मन भाव मधुर कछु खाहू
पितु समीप सब जायहु भैया ❀ प्रेम विवश सादर कह मैया

हे तात ! बलि जाऊँ, तुम जल्दी जाकर नहा आओ और जो कुछ मनचाहे कुछ मीठा पक्वान्न खाओ ॥१॥ हे भैया ! तब पिताके पास जाओ, माताने प्रेमवश ऐसे वचन कहे ॥२॥

मातु बचन सुनि अति अनुकूला ❀ जनु सनेह सुरतरु के फूला
सुख मकरन्द भरे श्रीमूला ❀ निरखि राम मन भँवर न भूला

तब माताके अति अनुकूल वचन सुन प्रभु प्रसन्न हुए मानों स्नेहरूपी कल्पवृक्षके फूल झड़ रहे हों। प्रभुका मनरूप भ्रमर राज्य-लक्ष्मीके सुखरूपी परागको देखकर भी मोहित नहीं हुआ ॥

धर्म धुरीण धर्म गति जानी ❀ कहेउ मातु सन अति मृदुबानी
पिता दीन्ह मोहिं कानन राजू ❀ जहँ सब भाँति मोर बड़काजू

रामजी धर्मधुरन्धर हैं सो धर्मकी गतिको जानकर प्रभुने बहुत मीठी वाणीमें मातासे कहा कि हे माताजी ! मुझे पिताने बनका राज्य दिया है जहाँ जानेसे मेरा बड़ा कार्य सिद्ध होगा ॥

आयसु देहु मुदित मन माता ❀ जेहि मुद-मङ्गल-कानन जाता
जनि सनेहु बस डरपसि भोरे ❀ आँनद मातु अनुग्रह तोरे

हे माता ! प्रसन्नचित होकर मुझे आज्ञा दो जिससे बन जाते हुए मुझे आनन्द रहे। हे माता ! स्नेहवश होकर भूलसे भी मत डरना, आपकी कृपासे मुझे सब प्रकार आनन्द होगा ॥

दोहा—वर्ष चारिदश बिपिन बसि, करि पितु बचन प्रमान ।
आइ पाँय पुनि देखिहौं, मन जनि करसि मलान ॥५२॥

चौदह वर्षतक बनमें निवास कर, पिताके वचनको पूराकर, फिर आकर मैं आपके चरणोंका दर्शन करूँगा, आप मनमें किसी बातका खेद मत करो ॥ ५२ ॥

बचन बिनीत मधुर रघुबरके ❀ सर सम लगे मातु उर करके
सहमि सूखि सुनि शीतल बानी ❀ जिमि जवास पर पावस पानी

प्रभुके विनीत और मधुर वचन माताके हृदयमें बाणसे लगे और उनका हृदय काँप उठा व उस शीतल वाणीको भी सुनकर ऐसी सहम गयों मानों जवासपर वर्षा ऋतुका जल पड़ गया हो ॥

कहि न जाय कछु हृदय विषादू ❀ जनु सहमेउ करि केहरि नादू
नयन सलिल तन थरथर काँपी ❀ माँजा मनहुँ मीनकहँ व्यापी

कौशिल्याके हृदयकी ग्लानि कुछ कहनेमें नहीं आती मानों सिंहकी गर्जन सुन हथिनी सहमगई हो। नेत्रोंसे नीर बह रहा है, शरीर काँपता है मानों मछलीको वर्षा ऋतुका प्रथम जल लग गया है ॥

धरि धीरज सुत बदन निहारी ❀ गद्‌गद बचन कहति मँहतारी
तात पितहिं तुम प्राण पियारे ❀ देखि मुदित नित चरित तुम्हारे

फिर कौशल्या धीरज धर पुत्रके मुख-कमलको देख, गद्गद कंठसे कहने लगीं कि हे तात! तुम पिताको प्राणसे प्यारे हो, जो तुम्हारे चरित्रको देखकर सर्वदा प्रसन्न होते थे ।। ६ ।।

राज देन कहँ शुभ दिन साधा ❀ कहेउ जान बन केहि अपराधा
तात सुनावहु मोहिं निदानू ❀ को दिनकर कुल भयउ कृसानू

तुमको तो राजतिलक देनेको कहे थे, फिर बनमें जानेके लिए किस अपराधसे कहा ? हे तात ! सच कहो कि आज इस सूर्यवंशरूप कमलको जलानेके लिएं अग्निरूप कौन हुआ है ? ।। ८ ।।

दोहा—निरखि रामरुख सचिव सुत, कारन कहेउ बुझाइ ।
सुनि प्रसंग रहि मूक जिमि, दशा बरनि नहिं जाइ ।।५३।।

तब प्रभुका रुख देखकर मंत्रीके पुत्रने उसका कारण समझाकर कौशल्यासे कहा सो प्रसंग सुनते ही कौशल्या गूँगीकी तरह रह गयीं, उनकी दशा कुछ कही नहीं जाती ।। ५३ ।।

राखि न सकहिं न कहिसक जाहू ❀ दुहूँ भाँति उर दारुन दाहू
लिखत सुधाकर लिखिगा राहू ❀ विधि गति वाम सदा सब काहू

कौशल्या ने तो रामजीको रख सकती हैं न जानेको कह सकती हैं दोनों तरफसे उनके हृदयमें अति दारुण दाह है कि विधाताकी गति जानी नहीं जाती जो सबके लिए सर्वदा खड़ी रहती है ।।

धर्म सनेह उभय मति घेरी ❀ भइ गति साँप छछूँदर केरी
राखौं सुतहिं करौं अनुरोधू ❀ धरम जाइ अरु बंधु विरोधू

कौशल्याकी बुद्धिको धर्म और स्नेह दोनोंने घेर लिए, साँप छछून्दरकी गति हो गई । यदि रोककर पुत्रको रखूँ तो इससे धर्म जाता है और भाईसे विरोध होता है ।। ४ ।।

कहौं जान बन तौ बड़ि हानी ❀ संकट सोच विकल भइ रानी
बहुरि समुझितिय धर्म सयानी ❀ राम भरत दोउ सुत सम जानी

और यदि बनमें जानेको कहूँ तो उससे भी बड़ी हानि है, रानी संकटके सोचमें विवश हो गयीं । फिर वह सयानी स्त्री-धर्मको समझ राम और भरत दोनों पुत्रोंको बराबर जानकर ।।

सरल स्वभाव राम महतारी ❀ बोलीं बचन धीर धरि भारी
तात जाउँ बलि कीन्हेउ नीका ❀ पितु आयसु सब धर्मक टीका

फिर बड़े धैर्य और स्वभावसे यह मधुर वचन बोलीं कि—हे तात ! मैं बलिजाऊँ, तुम भले जाओ तुमने यह बहुत अच्छा किया, क्योंकि पिताकी आज्ञाका पालन ही सब धर्मोंमें मुख्य है ।।

दोहा—राज देन कहि दीन्ह बन, मोहिं न शोच लवलेश ।
तुम बिनु भरतहिं भूपतिहिं, प्रजहिं प्रचण्ड कलेश ।।५४।।

पिताने तुम्हें राज देनेको कहकर जो बनवास दिया उसका मेरे मनमें रंच भी शोच नहीं है परन्तु तुम्हारे बिना भरत, राजा और प्रजाको महादारुण दुख होगा, उसे कौन मिटावेगा ?।।५४।।

जौं केवल पितु आयसु ताता ❀ तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता
जौं पितु मातु कहेउ बन जाना ❀ तौ कानन शत अवध समाना

हे तात ! मैं बलिजाऊँ, यदि केवल पिताकी आज्ञा हो तो तुम मुझ माताको बड़ी जान बनमें मत जाओ और यदि माता पिता दोनोंकी आज्ञा हो तो तुम्हारे लिए बन सैंकड़ों अयोध्याकेसमान है।

पितु बनदेव मातु बनदेवी ❀ खग मृग चरण सरोरुह सेवी
अन्तहु उचित नृपहिं बनवासू ❀ बय बिलोकि हिय होत हरासू

बनके देवताओं और देवियोंको माता-पिता तथा पक्षियोंको अपने चरण कमलोंके सेवक समझो। राजाको अन्तमें तो बनमें जाना ही चाहिये परन्तु तुम्हारी अवस्था देखकर दुःख होता है ।।

बड़ भागी बन अवध अभागी ❀ जो रघुवंश तिलक तुम त्यागी
जो सुत कहौं संग मोहिं लेहू ❀ तुम्हरे हृदय होइ सन्देहू

अहो ! आज बन भाग्यशाली है और अयोध्या भाग्यहीन है कि, जिसको तुमने त्याग दिया। हे पुत्र ! यदि मैं तुमसे कहूँ कि मुझे अपने साथ ले चलो तो इससे तुम्हारे मनमें सन्देह होगा ।।

पुत्र परम प्रिय तुम सबहीके ❀ प्राण प्राण के जीवन जीके
ते तुम कहहु मातु बन जाऊँ ❀ मैं सुनि बचन बैठि पछिताऊँ

परन्तु हे पुत्र ! तुम सबको अतिशय प्रिय हो, तुम प्राणोंके प्राण जीवोंके जीवन हो ।। वही तुम बन जानेको कहते हो और यह वचन सुनकर मैं बैठी पछताती हूँ ।। ८ ।।

दोहा—यह विचारि नहिं करउँ हठ, झूठ सनेह बढ़ाइ।
मानि मातुकें नात बलि, सुरति बिसरि जनि जाइ ।।५५।।

इन बातोंको विचारकर झूठा स्नेह बढ़ाकर मैं तुमसे कुछ हठ नहीं करती, परन्तु बलि जाऊँ माताके नातेको जानकर मेरी सुरति बिसार न देना ।। ५५ ।।

देव पितर सब तुम्हहिं गोसाँई ❀ राखहिं पलक नयन की नाँई
अवधि अम्बु प्रिय परिजन मीना ❀ तुम करुणाकर धर्म धुरीना

हे पुत्र ! देवता और पितर सब तुम्हारी पलककी समान रक्षा करें ।। हे धर्मधुरन्धर राम ! तुम दयाकी खान हो, जिसमें चौदहवर्ष बनवासकी अवधि जल है और प्यारा परिवार मछली है।।

अस विचारि सोइ करहु उपाई ❀ सबहिं जियत जेहि भेटहु आई
जाहु सुखेन बनहिं बलि जाऊँ ❀ करि अनाथ जन परिजन गाऊँ

ऐसा विचारकर वही उपाय करो कि जिस तरह सबके जीतेजी आ मिलो। हे पुत्र ! बलिजाऊँ। तुम जन-परिजन और नगरको अनाथ करके आनन्दसे जाओ ।। ४ ।।

सब कर आजु सुकृत फल बीता ❀ भयउ कराल काल विपरीता
बहुबिधि बिलपि चरण लपटानी ❀ परम अभागिनि आपुहिं जानी

आज सबके पुण्यका फल नष्ट हो गया है, कराल काल विपरीत हो गया। इस तरह विलाप करती हुई कौशल्या अपनेको परम अभागिनि समझकर रामके चरणोंमें लिपट गईं ।।

दारुण दुसह दाह उर व्यापा ❀ बरनि न जाय विलाप कलापा
राम उठाय मातु उर लावा ❀ कहि मृदु बचन बहुत समुझावा

कौशल्याके हृदयमें जो दुःसह दारुण दुःख व्यापा वह कहनेमें नहीं आता। श्रीरामचन्द्रजीने माताको उठाकर छातीसे लगाया और कोमल वचन कहकर बहुत समझाया ॥८॥

दोहा—समाचार तेहि समय सुनि, सीय उठी अकुलाय।
जाइ सासु पदकमल युग, बन्दि बैठि शिर नाय ॥५६॥

उसी समय सीता बनवासका समाचार सुन अकुलाकर उठीं और सासु (कौशल्या) के निकट जा सासुके दोनों चरण कमलोंको प्रणामकर शिर झुकाके समीपमें बैठ गईं ॥ ५६ ॥

दीन्ह अशीश सासु मृदुबानी ❋ अति सुकुमारि देखि अकुलानी
बैठि नमित मुख सोचइ सीता ❋ रूपराशि पति प्रेम पुनीता

कौशल्याने कोमल वाणीसे आशीर्वाद दिया और अति सुकुमार देखकर व्याकुल हो गईं। सीता सोच करती सासके पास बैठ गईं जो रूपकी राशि और पतिप्रेममें पवित्र थीं ॥

चलन चहत बन जीवननाथा ❋ कवन सुकृत सन होइहि साथा
की तनु प्रान कि केवल प्राना ❋ विधि करतब कछु जाइ न जाना

प्राणनाथ वनमें जाना चाहते हैं, अब किस पुण्यसे साथ चलना होवे ? क्या शरीर और प्राण दोनों प्रभुके साथ जायेंगे कि अकेला प्राण ही ? ब्रह्माकी बात कुछ जानी नहीं जाती॥

चारु चरण नख लेखति धरणी ❋ नूपुर मुखर मधुर कवि बरणी
मनहुँ प्रेमवश विनती करहीं ❋ हमहिं सीय पद जनि परिहरहीं

सीताजी मनोहर चरणोंसे पृथ्वीपर लिखती हैं, चरणोंके नूपुर मधुर ध्वनि करते हैं।।५।। मानों प्रेमवश होकर विनती करते हैं कि सीताके पद हमारा परित्याग न करें ॥ ६ ॥

मंजु विलोचन मोचति बारी ❋ बोली देखि राम महतारी
तात सुनहु सिय अति सुकुमारी ❋ सासु-ससुर परिजनहिं पियारी

और सुन्दर नेत्र कमलोंसे जल छोड़ती हैं, उसे देख राम-माता कौशिल्याने कहा कि हे तात ! सुनो, सीता अति सुकुमारी हैं, सासु, ससुर और परिजनोंको बहुत प्यारी हैं ॥८॥

दोहा—पिता जनक भूपाल मणि, ससुर भानुकुल भानु।
पति रविकुल कैरव विपिन, विधु गुणरूप निधानु ॥५७॥

राजाओंमें रत्नरूप राजाजनक तो इनके पिता हैं और सूर्यकुलके सूर्य श्रीदशरथजी श्वसुर हैं और रविकुल कुमुद बनको प्रफुल्लित करनेके लिए साक्षात् चन्द्ररूप तुम इसके पति हो॥

मैं पुनि पुत्र-बधू प्रिय पाई ❋ रूप राशि गुण शील सुहाई
नयन पुतरि करि प्रीति बढ़ाई ❋ राखेहुँ प्रान जानकिहिं लाई

फिर मैंने जो यह प्रिय पुत्र-बधू पाई है वह रूपकी राशि और सुन्दर गुणशीलवाली हैं ॥१॥ इस जानकीको मैंने नेत्रोंकी पुतलीके समान प्रेम बढ़ाकर प्राणके समान पालकर रखा है ॥२॥

कल्प बेलि जिमि बहुविधि लाली ❋ सींचि सनेह सलिल प्रतिपाली
फूलत फलत भयउ विधि बामा ❋ जानि न जाइ काह परिणामा

मैंने कल्पलताकी भाँति स्नेहरूपी जलसे सींचकर अच्छी तरह पालन किया। जब इसके फूलने-फलनेका समय आया तब विधाता प्रतिकूल हो गया, जाना नहीं जाता कि क्या परिणाम है ॥

पलँग पीठ तजि गोद हिंडोरा ❀ सिय न दीन्ह पगु अवनि कठोरा
जिवन मूरि जिमि जोगवति रहेऊँ ❀ दीप बाति नहिं टारन कहेऊँ

इस सीताने पलँगको, गोद और हिंडोलेको छोड़कर कभी धरती पर पाँव नहीं रखा है। मैंने इसे जीवन-जड़ीकी भाँति पालन किया और दीपककी बत्ती तक टालनेको नहीं कहा है ॥

सोइ सिय चलन चहति बन साथा ❀ आयसु काह होइ रघुनाथा
चन्द किरन रस रसिक चकोरी ❀ रवि रुख नयन सकै किमि जोरी

वही सीता तुम्हारे साथ बन चलना चाहती है, हे राम! तुम्हारी क्या आज्ञा है? चन्द्रमाकी किरणोंके रसको चाहनेवाली चकोरी सूर्यसे कैसे आँख मिला सकती है ? ॥८॥

दोहा—करि केहरि निसिचर चरहिं, दुष्ट जन्तु बन भूरि ।
विष बाटिका कि सोह सुत, सुभग सजीवन मूरि ॥५८॥

बनमें हाथी, शेर, राक्षस और दुष्ट हिंसक जीव फिरते रहते हैं। हे पुत्र! इसलिए कहती हूँ कि विषकी फुलवाड़ीके बीच क्या सुन्दर सुहावनी संजीवनी बूटी शोभा दे सकती है ? ॥

बन हित कोल किरात किशोरी ❀ रची विरञ्चि विषय रस भोरी
पाहन कृमि जिमि कठिन स्वभाऊ ❀ तिनहि कलेश न कानन काऊ

बनके लिए विधाताने कोल और किरातोंकी स्त्रियोंको रचा है जो विषय-रससे भारी हैं, पत्थरके कृमिको जंगलमें दुःख नहीं होता; क्योंकि उसका स्वभाव ही कड़ा है ॥

कै तापस तिय कानन जोगू ❀ जेहि तप हेतु तजा तब भोगू
सिय बन बसहिं तात केहि भाँती ❀ चित्र लिखित कपि देखि डेराती

अथवा तपस्वियोंकी स्त्रियाँ बनके योग्य हैं जिन्होंने तपस्याके हेतु सब भोग तज दिए हैं। हे तात! सीता बनमें किस तरह रहेगी कि जो चित्र लिखे बन्दरको भी देखकर डर जाती हैं ॥

सुरसरि सुभग बनज बनचारी ❀ डाबर जोग कि हंस कुमारी
अस विचारि जस आयसु होई ❀ मैं सिख देउँ जानकिहि सोई

क्या गंगाजीके सुन्दर कमल-बनमें विचरण करनेवाली हंसकी कन्या मैले तालाबके योग्य हो सकती है ऐसा विचारकर मुझसे कहो जैसी तुम्हारी आज्ञा हो मैं सीताको वैसी ही शिक्षा दूं॥

जो सिय भवन रहै कह अम्बा ❀ मोकहँ होइ प्राण अवलम्बा
सुनि रघुबीर मातु प्रियबानी ❀ शील सनेह सुधा जनु सानी

कौशल्याजी कहती हैं कि यदि सीता घरमें रहे तो मुझको बड़ा अवलम्ब रहेगा। श्रीरामचन्द्रजी माताकी शील और स्नेहयुक्त मानों अमृतसे सनी हो ऐसी प्रिय वाणी सुनकर ॥

दोहा—कहि प्रिय बचन विवेकमय, कीन्ह मातु परितोष ।
लगे प्रबोधन जानकिहिं, प्रगटि विपिन गनदोष ॥५९॥

श्रीरामचन्द्रजी अपने विवेकपूर्ण वचनोंसे माताको सन्तुष्ट कर, बनके समस्त गुणों और अवगुणोंको प्रकट करके सीताको समझाने लगे ॥५९॥

मातु समीप कहत सकुचाहीं ❀ बोले राम समुझि मन माहीं
राजकुमारि सिखावन सुनहू ❀ आन भाँति जिय जनि कछु धरहू

माताके समीपमें कहते हुए श्रीरामचन्द्र सकुचाते थे। तो भी मनमें समझकर कहने लगे—हे राजकुमारी! मेरी शिक्षा सुनो, तथा इसे सुनकर मनमें कुछ और न समझना ॥२॥

आपन मोर नीक जो चहहू ❀ बचन हमार मानि घर रहहू
आयसु मोर सासु सेवकाई ❀ सब बिधि भामिनि भवन भलाई

यदि तुम अपना और मेरा भला चाहती हो तो मेरा वचन मानकर घरमें रहो॥३॥मेरी आज्ञा है कि तुम सासुकी सेवा करो, हे भामिनी! इसीमें तुम्हारी सब प्रकारसे भलाई है ॥४॥

इहि ते अधिक धरम नहिं दूजा ❀ सादर सासु ससुर पद पूजा
जब जब मातु करिहिं सुधि मोरी ❀ होइहिं प्रेम बिकल मति भोरी

आदरके साथ सासु-श्वसुरके चरणकमलोंकी पूजा करना, इससे बढ़कर दूसरा धर्म नहीं है ॥५॥ जब-जब माता मेरी सुध करें और प्रेमसे विकल हो जायँ ॥६॥

तब तब तुम कहि कथा पुरानी ❀ सुन्दरि समुझायहु मृदुबानी
कहौं स्वभाव शपथ शत मोहीं ❀ सुमुखि मातु हित राखौं तोहीं

हे सुन्दरि! तब-तब तुम पुरानी कथायें कहकर कोमलवाणीसे समझाना ॥ हे सुमुखी! मैं सत्य कहता हूँ और मुझे सौगन्ध है कि, मैं तुम्हें यहाँ केवल माताके हितार्थ ही रखना चाहता हूँ ॥

दोहा—गुरु श्रुति सम्मत धर्मफल, पाइय बिनहिं कलेश।
हठ वश सब संकट सहे, गालव नहुष नरेश ॥६०॥

यदि तुम मेरा कहना मानकर सासु श्वसुरकी सेवा करोगी तो धर्मका फल पावोगी और हठ करोगी तो गालव ऋषि और राजा नहुषकी भाँति सब प्रकारका दुःख सहोगी ॥६०॥

मैं पुनि करि प्रमाण पितु बानी ❀ बेगि फिरब सुनु सुमुखि सयानी
दिवस जात नहिं लागहिं बारा ❀ सुन्दरि सिखवन सुनहु हमारा

हे सुमुखि सयानी! सुनो, मैं पिताका वचन पालन करके शीघ्र ही लौटूंगा ॥ १ ॥ हे सुन्दरि! दिन जाते हुए देर नहीं लगता, तुम मेरी यह शिक्षा सुनो ॥२॥

जो हठ करहु प्रेमवश बामा ❀ तौ तुम दुख पावहु परिणामा
कानन कठिन भयंकर भारी ❀ घोर घाम हिम वारि बयारी

हे स्त्री! प्रेमके वश होकर हठ करोगी तो परिणाममें दुःख पाओगी। बन तो महा कठिन और भयंकर होता है, जहाँ घोर धूप, जल और वायुसे बड़ा ही कष्ट उठाना पड़ता है ॥

कुश कटंक मग कंकर नाना ❀ चलब पयादेहि बिनु पदत्राना
चरणकमल मृदु मंजु तुम्हारे ❀ मारग अगम भूमिधर भारे

मार्ग में कुश, काँटे और अनेक कंकड़ पड़े रहते हैं, जिन पर बिना जूतेके ही पैदल चलना होगा। तुम्हारे चरणकमल अत्यन्त कोमल और मनोहर हैं, मार्गमें बड़े-बड़े पहाड़ आवेंगे ॥

कंदर खोह नदी नद नारे ❋ अगम अगाध न जाहिं निहारे
भालु बाघ वृक केहरि नागा ❋ करहिं गान सुनि धीरज भागा

कंदराएँ, खोह, नदी, नद और नाले ऐसे-ऐसे अगम-अगाध और भयकर आते हैं कि जिन्हें देखते नहीं बनता। रीछ आदि ऐसे घोर शब्द करते हैं कि जिसे सुनकर धैर्य भाग जाता है।

दोहा—भूमि शयन बल्कल बसन, असन कन्द फल मूल।
तेकि सदा सब दिन मिलहिं, समय-समय अनुकूल ॥६१॥

पृथ्वी पर सोना पड़ता है, पेड़ोंकी छालके वस्त्र पहनने पड़ते हैं, और भोजनके लिए कन्दमूल फल मिलते हैं, सो भी सब दिन नहीं, समयानुकूल मिलते हैं ॥ ६१ ॥

नर अहार रजनीचर करहीं ❋ कपट वेष बहु कोटिक धरहीं
लागइ अति पहार कर पानी ❋ विपिन विपति नहिं जाय बखानी

राक्षस मनुष्योंको पकड़ कर खा जाते हैं और करोड़ों प्रकारके कपट वेष धरते हैं॥ पहाड़का पानी बहुत लगता है तथा बनकी ऐसी अनेक विपत्तियाँ हैं जो कही नहीं जातीं ॥२॥

व्याल कराल विहँग बन घोरा ❋ निशिचर निकर नारि नर चोरा
डरपहिं धीर गहन सुधि आये ❋ मृगलोचनि तुम भीरु सुभाये

बनमें भयानक सर्प व पक्षी होते हैं और निशाचर स्त्री-पुरुषोंको चुराकर ले जाते हैं। हे मृगलोचनि! वनमें बड़े-बड़े धैर्यवान् भी घबरा जाते हैं, तुम तो स्वभाव से ही डरपोक हो॥

हंसगमनि तुम नहिं बन योगू ❋ सुनि अपयश मोहिं देइहिं लोगू
मानस सलिल सुधा प्रतिपाली ❋ जियहि कि लवण पयोधिमराली

हे हंसगामिनी! तुम बनके योग्य नहीं हो, सुनकर लोग मुझे दोष देंगे। भला जो हंसिनि मानसरोवरके जलसे प्रतिपाली गई है क्या वह कभी खारे समुद्रमें जी सकती है ?॥

नव रसाल बन बिहरन शीला ❋ सोह कि कोकिल विपिन करीला
रहहु भवन अस हृदय बिचारी ❋ चन्द्रबदनि दुख कानन भारी

देखिए! आमके नवीन बनमें विचरने वाली कोयल क्या कभी करीलके बनमें सुहावनी लग सकती है? हे चन्द्रमुखी! इसप्रकार विचारकर घरमें रहिए, क्योंकि बन बड़ा क्लेशकारी है।

दोहा—सहजहृदय गुरु स्वामि शिख, जो न करहिं हित मानि।
सो पछिताय अघाय उर, अवसि होय हित हानि ॥६२॥

जो स्वभावसे ही मित्र गुरु और स्वामीकी शिक्षा मानकर पालन नहीं करते, वे अपने मनमें बहुत पछताते हैं, उनके हितको अवश्य ही हानि होती है ॥ ६२ ॥

सुनि मृदु बचन मनोहर पियके ❋ लोचन नलिन भरे जल सियके
शीतल शिख दाहक भइ कैसे ❋ चकइहिं शरद चाँदनी जैसे

प्रियके ऐसे कोमल और मनोहरवचन सुनकर सीताके कमलवत्नेत्रोंमेंजलभरआया रामचन्द्र की वह शीतल सिखावन वैसेही दाहक हुई जैसे चकवीको शरदऋतुकी चाँदनी दग्धकारक होतीहै।।

उतर न आव विकल बैदेही ❁ तजन चहत मोहिं परम सनेही
बरबस रोकि बिलोचन बारी ❁ धरि धीरज उर अवनि कुमारी

उसपर अत्यन्त विकल सीतासे कुछ उत्तर देते न बना क्योंकि उनको ज्ञात हो गया किमेरेपरम स्नेही मुझको यहीं छोड़ देना चाहते हैं इससे नेत्रोंमें जलको रोक हृदयमें धीरज धरकर ।।

लागि सासु पद कह कर जोरी ❁ क्षमहु देबि बड़ि अविनय मोरी
कीन्ह प्राणपति मोहिं सिख सोई ❁ जेहि बिधि मोर परमहित होई

सासुके पैरोंपर गिर पड़ी और हाथ जोड़कर बोली हे देवि ! मैं बड़ा अनुचित कर रहीहूँमेरी इस अविनयको क्षमा कीजियेग। मुझे प्राणपतिने वही शिक्षा दी है जिसमें मेरा कल्याण होवे ।।

मैं पुनि समुझि देखि मन माहीं ❁ पिय वियोग सम दुख जग नाहीं

फिरभी मैं अपने मनमें देखतीहूँ तोसंसारमें पतिके वियोगके समान दूसरा कोई दुःख नहींहै।

दोहा—प्राणनाथ करुणायतन, सुन्दर सुखद सुजान ।
तुम बिनु रघुकुल कुमुद विधु, सुरपुर नरक समान ।।६३।।

हे प्राणनाथ, करुणानिधि ! हे सुन्दर सुखदाता सुजान प्रभो ! हे रघुकुल-कुमुद बनके चन्द्रमारूप ! आपके बिना तो मुझे स्वर्ग भी नरकके समान है ।। ६३ ।।

मातु पिता भगिनी प्रिय भाई ❁ प्रिय परिवार सुहृद समुदाई
सासु ससुर गुरु सुजन सहाई ❁ सुत सुन्दर सुशील सुखदाई

क्योंकि माता, पिता, बहिन, प्यारा भाई, प्यारा परिवार, सुहृद-समुदाय, सास-ससुर, गुरु,स्वजन और सहायक तथा सुन्दर शील सम्पन्न और सुख देने वाले पुत्र ।।

जहँ लगि नाथ नेह अरु नाते ❁ पिय बिनु तियहिं तरणि ते ताते
तन धन धाम धरणि पुर राजू ❁ पति बिहीन सब शोक समाजू

और जितनेभी नेहनाते हैं बिना पतिके स्त्रीको सूर्यसे भी अधिक तप्त करने वाले हैं। इस प्रकार शरीर,धन,घर,धरती,और नगरकाराज्य यह सबकुछपतिके बिनासभी शोकके समान हैं।।

भोग रोग सम भूषण भारू ❁ यम यातना सरिस संसारू
प्राणनाथ तुम बिनु जग माहीं ❁ मोकहुँ सुखद कतहुँ कोउ नाहीं

इसीप्रकार भोग रोगके समान और गहने बोझके समान और संसार यम-यातना के समान है, इसलिए हे प्राणनाथ ! आपके विना मुझे संसारमें कहीं कोई सुख देनेवाला नहीं है ।।

जिय बिनु देह नदी बिनु बारी ❁ तैसेहि नाथ पुरुष बिनु नारी
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे ❁ शरद विमल विधुबदन निहारे

जैसे प्राणके बिना देह और जलके बिना नदी नही होती वैसेही पुरुषके बिनास्त्री । हे नाथ ! चन्द्रमाके समान आपका मुख देखते रहनेसेही मुझे सारे सुखआपके साथमेंही मिलेंगे ।।

दोहा–खग मृग परिजन नगर बन, बलकल विमल दुकूल।
नाथ साथ सुर सदन सम, पर्णशाल सुख मूल ॥६४॥

हे नाथ! आपके साथ रहने में पक्षियों और मृगोंको ही मैं अपना परिजन कुटुम्बी समझूँगी और बनको ही नगर तथा बल्कलको रेशमी वस्त्र और कुटियाको ही स्वर्गकेसमान समझूँगी॥६४॥

बन देवी बन देव उदारा ❁ करिहैं सासु ससुर सम सारा
कुस किसलय साथरी सुहाई ❁ प्रभु सँग मंजु मनोज तुराई

उदार बनदेवी और बनदेव ही सासु-ससुरके समान मेरा पालन करेंगे॥१॥ कुश और पत्तों की साथको ही आपके साथ कामदेवकी तोशकके समान शोभायमान होगी ॥ २ ॥

कंदमूल फल अमिय अहारू ❁ अवध सौध सत सरिस पहारू
क्षण-क्षण प्रभुपद कमल विलोकी ❁ रहिहौं मुदित दिवसजिमिकोकी

और कन्दमूल फल अमृतके समान भोजन होंगे और पहाड़ अयोध्याके राजमहलके समान सुखदायी होगा॥३॥ क्षण-क्षणमें आपके चरण कमलोंको देखकर मैं प्रसन्न रहूँगी ॥४॥

बन दुख नाथ कहे बहुतेरे ❁ भय विषाद परिताप घनेरे
प्रभु वियोग लवलेश समाना ❁ होहिं न सब मिलि कृपानिधाना

हे नाथ! आपने बनमें बहुत दुःख कहे हैं जो भय, शोक और क्लेशसे भरे हैं ॥५॥ परन्तु हे कृपानिधान! सब मिलकर भी आपके वियोगके बराबर नहीं है ॥ अस्तु—

अस जिय जानि सुजानशिरोमनि ❁ लेइय संग मोहिं छाँड़िय जनि
बिनती बहुत करौं का स्वामी ❁ करुणामय उर अन्तरयामी

हे ज्ञान शिरोमणि! ऐसा मनमें जानकर मुझको अपने ही साथ ले चलिए और यहाँ छोड़िए नहीं। हे स्वामी! आपकी बहुतसी क्या बिनती करूँ; क्योंकि आप करुणामय और अन्तरयामीहैं॥

दोहा–राखिय अवध जो अवधि लगि, रहत न जनिअहि प्राण।
दीनबन्धु सुन्दर सुखद, शील सनेह निधान ॥६५॥

हे दीनबन्धो! हे सुखके देनेवाले! यदि अयोध्यामें इस अवधि तक मुझे रखेंगे तो हे शील और स्नेहके निधान! तब-तक मेरे प्राणोंको यहाँ रहते हुए न पावेंगे ॥६५॥

मोहिं मग चलत न होइहि हारी ❁ क्षण क्षण चरण सरोज निहारी
सबहिं भाँति पिय सेवा करिहौं ❁ मारग जनित सकल श्रम हरिहौं

मार्गमें चलती हुई मैं क्षण-क्षणमें आपके चरण कमलोंको देखूँगी॥१॥ हे प्रियतम! मैं सब प्रकारसे आपकी सेवा ही करूँगी, जिससे रास्तेकी सारी थकावट दूर हो जायेगी ॥२॥

पाँय पखारि बैठि तरु छाहीं ❁ करिहौं बाउ मुदित मन माहीं
श्रम कन सहित श्याम तनु देखे ❁ कहँ दुख समय प्राणपति पेखे

फिर जब मैं आपका चरण धोकर वृक्षकी छायामें बैठकर प्रसन्न मनसे आपको वायु करूँगी। तब हे स्वामी! जो श्रम-कण सहित आपके श्याम शरीर को देखकर मुझे दुःख कहाँ रहेगा? ॥

सम महि तृण तरुपल्लव डासी ❀ पाँव पलोटहि सब निशि दासी
बार-बार मृदु मूरति जोही ❀ लागिहि तात बयारि न मोही

फिर समतल पृथ्वी पर वृक्षके पत्ते बिछाकर यह दासी रातभर आपके पाँव दबाती हुई इस मधुर मूर्तिका बार-बार दर्शन करेगी, जिससे मुझे तप्त वायु नहीं लगेगी ? ।।

को प्रभु सँग मोहिं चीतव निहारा❀सिंह बधुहिं जिमि शशक सियारा
मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू ❀ तुमहिं उचित तप मोकहँ भोगू

प्रभुके साथ रहते हुए मुझ सिंहनीकी ओर कौन आँख उठाकर देख सकता है ? क्या मैं सुकुमारी हूँ और आप बन जानेके योग्य हैं, क्या आप तप करें और मैं भोग भोगूँ यही उचित है?

दोहा—ऐसेउ बचन कठोर सुनि, जौं न हृदय बिलगान ।
तौ प्रभु विषम वियोग दुख, सहिहैं पामर प्रान ।।६६।।

यदि ऐसी कठोर बातें सुनकर भी मेरा हृदय न पिघला तो निश्चयही प्रभुके वियोगका कठिन दुःख सहन करने योग्य मेरे ये नीच प्राण हैं।। ६६ ।।

अस कहि सीय विकल भइ भारी❀ बचन बियोग न सकी सँभारी
देखि दशा रघुपति जिय जाना ❀ हठ राखे राखै नहिं प्राना

ऐसा कहकर सीताजी बहुत व्याकुल हो गईं और वियोगके उन बचनोंको सँभाल न सकीं । तब यह देखकर श्रीरामचन्द्रजीने जान लिया कि हठ करनेसे तो यह प्राणों को न रखेंगी ।।

कहेउ कृपालु भानुकुल नाथा ❀ परिहरि शोच चलहु बन साथा
नहिं विषाद कर अवसर आजू ❀ बेगि करहु बन गमन समाजू

इस कारण सूर्यकुलके कृपालु श्रीरामचन्द्रजोने कहा कि अब चिन्ता छोड़कर साथमें बनको चलो ।।३।। आज का अवसर दुःखका नहीं है, शीघ्र ही बन गमनका साज करो ।।४।।

कहि प्रिय बचन प्रिया समुझाई ❀ लगे मातु पद आशिष पाई
बेगि प्रजा दुख मेटहु आई ❀ जननी निठुर बिसरि जनि जाई

इस प्रकार सीताको प्यारी बातें समझाकर श्रीरामचन्द्रजी कौशिल्याको प्रणामकर आशीर्वाद पाये ।। कौशिल्याजीने कहा कि जाओ, परन्तु इस निठुर माताको भुला मत देना ।।

फिरहि दशाविधिबहुरि कि मोरी❀ देखिहौं नयन मनोहर जोरी
सुदिन सुघरी तात कब होई ❀ जननी जियत बदन बिधु जोई

हा विधाता ! क्या मेरी दशा कभी लौटेगी जो इस मनोहर जोड़ीको फिर देखूंगी ? हे तात ! वह अच्छा दिन कब आवेगा कि जब मैं जीतेजी तुम्हारे चन्द्र मुखको देखूँगी ।।८।।

दोहा—बहुरि बच्छ कहि लाल कहि, रघुपति रघुबर तात ।
कबहिं बुलाय लगाय उर, हरषि निरखिहौं गात ।।६७।।

वह दिन कब आवेगा कि जब मैं फिर कभी हे लाल ! हे रघुपति ! हे रघुवर ! हे तात ! ऐसे कह-कहकर तुमको बुला छातीसे लगाकर प्रसन्न होते हुए तुम्हारा सुन्दर मुख देखूंगी ।।६७।।

लखि सनेह कातर महतारी ❀ बचन न आव विकल भइ भारी
राम प्रबोध कीन्ह विधि नाना ❀ समय सनेह न जाइ बखाना

माता कौशल्या स्नेहसे कातर होकर विह्वल हो गयीं और उनके मुँहसे वचन न निकल सका तब श्रीरामचन्द्रने उन्हें अनेक प्रकारसे समझाया, उस समयका स्नेह वर्णन नहीं हो सकता

तब जानकी सासु पग लागी ❀ सुनिय मातु मैं परम अभागी
सेवा समय दैव बन दीन्हा ❀ मोर मनोरथ सुफल न कीन्हा

उसी समय सीता सासुके चरणको छूकर बोली, हे माता ! सुनिए, मैं बड़ी अभागिनी हूँ । क्योंकि जब सेवा करनेका समय आया तब ईश्वरने मुझे वन दिया जिससे मेरा मनोरथ सफल न हुआ ।।

तजब क्षोभ जनि छाँड़ब छोहू ❀ कर्म कठिन कछु दोष न मोहू
सुनि सिय बचन सासु अकुलानी ❀ दशा कवन विधि कहौं बखानी

परन्तु हे माता ! इस क्षोभको छोड़कर मुझपर प्रेम रखियेगा, कर्मकी गति कठिन है मेरा कुछ दोष नहीं ।। सीताजीके वचन सुनकर कौशल्या बहुत घबराईं जो कहा नहीं जाता ।।६।।

बारहि बार लाइ उर लीन्हीं ❀ धरि धीरज शिख आशिष दीन्हीं
अचल होइ अहिबात तुम्हारा ❀ जब लगि गंग यमुन जल धारा

वह सीताको बार-बार हृदयसे लगा धैर्य और शिक्षा देकर आशीर्वाद देती हुई बोलीं, कि हे पुत्री ! जब तक गंगा और यमुनाके जलका प्रवाह रहे तब तक तुम्हारा सौभाग्य अचल रहे ।।

दोहा—सीतहिं सासु अशीष शिख, दीन्ह अनेक प्रकार ।
चलीं नाइ पद पद्म शिर, अतिहित बारहि बार ।।६८।।

इस प्रकार कौशल्याने सीताको अनेक प्रकारकी शिक्षा तथा आशीर्वाद दिये । तब सीताजी बड़ी प्रीतिके साथ बार-बार सासुके चरण-कमलोंमें शिर नवाके चलीं ।। ६८ ।।

समाचार जब लछिमन पाये ❀ ब्याकुल बिलखि बदन उठि धाये
कंप पुलक तन नयन सनीरा ❀ गहे चरन अति प्रेम अधीरा

जब यह समाचार लक्ष्मणजीको मिला तब वे व्याकुल हो उठ दौड़े, उनका शरीर थर-थर काँपने लगा। रोम खड़े हो गये और नेत्रोंमें जलभर आया और वे प्रेमसे अधीर हो रामजीके पैरोंपर गिर पड़े।

कहि न सकत कछु चितवत ठाढ़े ❀ मीन दीन जनु जलते काढ़े
सोच हृदय विधि का होनिहारा ❀ सब सुख सुकृत सिरान हमारा

उनसे कुछ कहते न बना ऐसे दुःखी हो गए जैसे बिना जल के मछली दुःखित हो जाती है । हृदयमें सोचने लगे कि हे विधाता ! क्या अब मेरे पुण्योंका अन्त हो गया ।। ४ ।।

मो कहँ काह कहब रघुनाथा ❀ रखिहहिं भवन कि लेइहहिं साथा
राम बिलोकि बन्धु कर जोरे ❀ देह गेह सबसन तृन तोरे

देखें मेरे लिए क्या कहते हैं, घरमें रक्खेंगे या साथ ले चलेंगे । जब श्रीरामचन्द्रजीने भाई को इस प्रकार शरीर घर तथा सबसे संबन्ध तोड़े और सामने हाथ जोड़े हुए खड़े देखा ।।

बोले बचन राम नय नागर ❀ सील-सनेह-सरल - सुख-सागर
तात प्रेम बस जनि कदराहू ❀ समुझि हृदय परिनाम उछाहू

तब नीतिमें निपुण, सुन्दर स्वभाववाले, प्रेम, शील और सुखके सागर रामजी बोले—हे तात ! हृदयमें यह समझकर कि अन्तमें सुख होगा, प्रेमके वश होकर ऐसे अधीर मत होओ ।

दोहा—मात पिता गुरु स्वामि सिख, सिर धरि करहिं सुभाय ।
लहेउ लाभ तिन्ह जनमकर, नतरु जनम जग जाय ।।६९।।

क्योंकि जो लोग माता पिता गुरु और स्वामीकी शिक्षाको स्वभावत: शिरोधार्य करते है मानों उनका जन्म लेना सुफल हो गया, नहीं तो संसारमें उनका जन्म व्यर्थ ही है ।।६९।।

अस जिय जानि सुनहु सिख भाई ❀ करहु मातु पितु पद सेवकाई
भवन भरत रिपुसूदन नाहीं ❀ राउ वृद्ध मम दुख मन माहीं

हे भाई ! ऐसा अपने हृदय में जानकर माता और पिताके चरणोंकी सेवा करो ।। क्योंकि घर पर भरत,शत्रुघ्न नहीं हैं और राजा बूढ़े हैं और उनके मनमें मेरे बन जानेका दुःख है ।।

मैं बन जाउँ तुमहिं लै साथा ❀ होइहिं सब बिधि अवध अनाथा
गुरु पितु मात प्रजा परिवारू ❀ सब कहँ परै दुसह दुख भारू

यदि मैं तुम्हें साथ लेकर बन जाऊँ तो अयोध्या सब प्रकारमे अनाथ हो जायगी और इसप्रकार, गुरु, पिता तथा कुटुम्बके सब लोगों पर बड़ा असह्य दुःख पड़ जायगा ।।

रहहु करहु सबकर परितोषू ❀ नतरु तात होइहिं बड़ दोषू
जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी ❀ सो नृप अवसि नरक अधिकारी

इसलिए मैं कहता हूँ कि तुम यहाँ रहो और सबको समझाओ, नहीं तो हे प्यारे ! बड़ा दुःख होगा क्योंकि जिस राजाकी प्रजा दुःखी रहती है वह राजा अवश्य ही नरकमें जाने योग्य है ।।

रहहु तात अस नीति विचारी ❀ सुनत लषन भये ब्याकुल भारी
सियरे बदन सूखि गे कैसे ❀ परसत तुहि न तामरस जैसे

हे प्यारे ! ऐसी नीति विचार तुम यहीं रहो यह बात सुनते ही लक्ष्मणजी बहुत व्याकुल हो गए, रामजीके शीतल वचनोंको सुनकर ऐसे मुरझा गए जैसे पाला लगते ही कमल मुरझा जाता है ।।

दोहा—उतर न आवत प्रेम वश, गहे चरन अकुलाइ ।
नाथ दास मैं स्वामि तुम, तजहुत कहा बसाइ ।।७०।।

प्रेमके वश लक्ष्मणजीसे उत्तर न बना, व्याकुल होकर रामजीके पैर पकड़ लिए और बोले कि हे नाथ ! मैं सेवक हूँ और आप स्वामी, त्याग दीजिएगा तो मेरा क्या वश है ? ।।७०।।

दीन्ह मोहिं सिख नीक गोसाँई ❀ लाग अगम अपनी कदराई
नरवर धीर धरम-धुर-धारी ❀ निगम नीति कहँ ते अधिकारी

हे गोसाँई ! आपने अच्छी शिक्षा दी, किन्तु अपनी कायरता वश मुझे बहुत कठिन लगती है । आप धैर्यवान् और धर्मकी धुरकी धारण करनेवाले हैं और मैं तो कायर हूँ ।।२।।

मैं शिशु प्रभु सनेह प्रतिपाला ❀ मंदर मेरु कि लेहिं मराला
गुरु पितु मातु न जानउँ काहू ❀ कहउँ सुभाव नाथ पतिआहू

मैं तो बच्चेके समान आपके प्रेमसे पला हुआ हूँ, भला कहीं हंस भी मन्दराचलको उठा सकता है ? मैं माता पिता गुरु किसीको नहीं जानता हे नाथ ! मेरा तो आपही से प्रेम है ।।

जहँ लगि जगत सनेह सगाई ❀ प्रीति प्रतीति निगम निपुनाई
मोरे सबइ एक तुम स्वामी ❀ दीनबन्धु उर अन्तर्यामी

संसारमें जहाँ तक प्रेम और स्नेहका सम्बन्ध और प्रीतिकी निपुणता है, हे स्वामी ! मेरे तो आपही एक स्वामी हैं, हे दीनबन्धो ! आप अन्तर्यामी और घट-घटकी जानेवाले हैं ।।

धर्म नीति उपदेशिय ताही ❀ कीरति भूति नीति प्रिय जाही
मन क्रम बचन चरण रति होई ❀ कृपासिन्धु परिहरिय कि सोई

हेप्रभो ! धर्म और नीतिका उपदेश तो उसे चाहिए कि जिसे कीर्ति अच्छी लगतीहो । पर हेकृपासिन्धु! जो मन, वचन और कर्मसे आपके चरणोमें प्रीति करता हो, क्या उसका त्याग करना उचित है ? ।।

दोहा–करुणासिन्धु सुबन्धु के, सुनि मृदु बचन बिनीत ।
समुझाए उर लाइ प्रभु, जानि सनेह सभीत ।।७१।।

करुणासागर रामजीने भाई लक्ष्मणके कोमल और बिनीत वचन सुन उन्हें स्नेह से भयभीत जान, छातीसे लगाके समझाया ।। ७१ ।।

मागहुँ बिदा मातु सन जाई ❀ आबहु बेगि चलहु बन भाई
मुदित भये सुनि रघुबर बानी ❀ भयउ लाभ बड़ गइ बड़ि हानी

और कहा कि हे भाई ! तुम जाकर पहले मातासे विदा माँग आओ फिर शीघ्र ही बनको चलो । प्रभुके वचन सुन, लक्ष्यण प्रसन्न हुए उन्हें बड़ा लाभ हुआ और मनकी ग्लानि मिट गई ।।

हरषित हृदय मातु पहँ आये ❀ मनहुँ अन्ध फिरि लोचन पाये
जाइ जननि पद नायउ माथा ❀ मन रघुनन्दन जानकि साथा

लक्ष्मणजी प्रसन्न चित्त हो माता सुमित्राके पास आए मानों अन्धेने फिरसे नेत्र पा लिया हो । जिनका मन सीता-रामके साथ था उन लक्ष्मणने माताके पास जाकर चरणोंमें शिर नवाया ।।

पूछेहु मातु मलिन मन देखी ❀ लषण कहेउ सब कथा विशेखी
गई सहमि सुनि बचन कठोरा ❀ मृगी देखि दव जनु चहुँ ओरा

तब उन्हें दुखी देख माता सुमित्राने पूछा तो लक्ष्मणने सारा वृत्तान्त कह सुनाया । उसे सुन सुमित्रा ऐसे सहम गयीं जैसे मृगी चारों ओरसे दावानल को देख सहम जाती है ।।

लषण लखेउ भा अनरथ आजू ❀ यहि सनेह वश करब अकाजू
माँगत विदा समय सकुचाहीं ❀ जान संग विधि कहहिं कि नाहीं

लक्ष्मणने देखा कि अनर्थ हुआ, यह तो प्रेमके वश अकाज करेंगी । लक्ष्मणजी विदा माँगते हुए सकुचाते हैं, कि रामजीके साथ जानेके लिए माता आज्ञा देती हैं या नहीं ।।

दोहा—समुझि सुमित्रा राम सिय, रूप सुशील सुभाव।
नृप सनेह लखि धुनेउ शिर, पापिनि कीन्ह कुदाव ॥७२॥

लक्ष्मणजीके मुखसे बनवासके समाचार सुने, सीता-रामके शील स्नेह और स्वभावको समझ रामके स्नेहको देख, सुमित्राने शिर पीटा और कहा कि पापिनने बुरा दाँव किया ॥७२॥

धीरज धरेउ कुअवसर जानी ❀ सहज सुहृद बोली मृदु बानी
तात तुम्हारि मातु वैदेही ❀ पिता राम सब भाँति सनेही

सुमित्राने अशुभ समय जानकर धैर्य धारण किया और सहजही मीठी वाणी बोलीं कि हे तात ! तुमपर प्रेम करनेवाली सीता माता और श्रीरामचन्द्र पिताके समान हैं ॥

अवध तहाँ जहँ राम निवासू ❀ तहँइ दिवस जहँ भानु प्रकासू
जौं पै सीय राम बन जाहीं ❀ अवध तुम्हार काज कछु नाहीं

वहीं अयोध्या है जहाँ रामजी रहें, क्योंकि वहीं दिन है जहाँ सूर्यका प्रकाश हो। जब सीता और राम वनको जा रहे हैं, तब तुम्हारा अयोध्यामें रहनेका कुछ काम नहीं है ॥४॥

गुरु पितु मातु बन्धु सुर साँई ❀ सेइहिं सकल प्रान की नाँईं
राम प्रान प्रिय जीवन जीके ❀ स्वारथ रहित सखा सबही के

गुरु, पिता, माता भाई देवता और स्वामी इन सबकी सेवा अपने प्राणके समान करनी चाहिए रामजी सबके प्राणके समान प्यारे हैं और जीवोंके भी जीवन और सबके निःस्वार्थी मित्र हैं ॥

पूजनीय प्रिय परम जहाँते ❀ सब मानिअहिं राम के नाते
अस जिय जानि संग बन जाहू ❀ लेहु तात जग जीवन लाहू

संसारमें जो भी आदरणीय और प्रिय हैं उन सबको रामके ही सम्बन्धसे माना चाहिए ऐसा समझकर इनके साथ वनको जाओ और संसार में जन्म लेनेका यह लाभ लो ॥ ८॥

दोहा—भूरि भाग भाजन भयउ, मोहिं समेत बलि जाउँ।
जौं तुम्हरे मन छाँड़ि छल, कीन्ह राम पद ठाउँ ॥७३॥

मैं तुम्हारी बलैया लेती हूँ; यदि तुम्हारा मन छल छोड़कर रामके चरणों लगा है, तो हमारे सहित तुम बड़े भाग्यशाली हो ॥ ७३ ॥

पुत्रवती युवती जग सोई ❀ रघुपति भगत जासु सुत होई
नतरु बाँझ भलि बादि बिआनी ❀ राम विमुख सुत ते हित हानी

संसारमें वही स्त्री पुत्रवती है जिसका पुत्र रामजीका भक्त हो नहीं तो बाँझ रहती। उसने व्यर्थ ही पुत्र उत्पन्न किया, क्योंकि पुत्रका रामजीमें प्रेम न होनेसे भला नहीं होता ॥ २ ॥

तुम्हरेहिं भाग राम बन जाहीं ❀ दूसर हेतु तात कछु नाहीं
सकल सुकृत कर बड़ फल एहू ❀ राम सीय पद सहज सनेहू

हे प्यारे ! श्रीरामचन्द्र तुम्हारे भाग्यसे ही बन जाते हैं दूसरा कोई कारण नहीं है। सब सुकर्मों का सबसे बड़ा फल यही है कि राम और सीताके चरणोंमें तुम्हारा सहज स्वाभाविक प्रेम हो ॥

राग रोष इर्षा मद मोहू ❀ जनि सपनेहुँ इन्हके वश होहू
सकल प्रकार विकार बिहाई ❀ मन क्रम बचन करेहु सेवकाई

राग, रोष, ईर्ष्या, मद और मोह आदिके वशमें कभी न होना और इस प्रकार समस्त बिकारोंको त्याग अपने मन, वचन और कर्मसे राम सीताकी सेवामें तल्लीन रहना ।।

तुम कहँ बन सब भाँति सुपासू ❀ सँग पितु-मातु राम सिय जासू
जेहि न राम बन लहहिं कलेशू ❀ सुत सोइ करेहु इहै उपदेशू

तुम्हारे लिए बनमें सबप्रकार का सुपास है क्योंकि राम-सीता तुम्हारे साथ पिता माताके तुल्य रहेंगे । हे पुत्र ! तुम वही यत्न करना कि जिसमें श्रीरामचन्द्रको बनमें कष्ट न होने पावे ।।

छन्द—उपदेश यहि जेहि तात तुम्हते राम सिय सुख पावहीं ।
पितु मातु प्रिय परिवार पुर सुख सुरति बन बिसरावहीं ।।
तुलसी सुतहिं शिख देइ आयसु देइ पुनि आशिष दई ।
रति होउ अविरल अमल सिय रघुबीर पद नित-नित नई ।।

हे पुत्र ! तुम्हारे लिए मैं यही उपदेश देती हूँ कि राम और सीता बनमें जिस प्रकार सुख पावें और माता-पिता कुटुम्ब और नगरके सुखकी सुधि भुलावें तुम वही करना, तुलसीदास जी कहते हैंकि इसी प्रकार पुत्रको शिक्षा और आज्ञा देकर सुमित्राने फिर आशीर्वाद दिया कि तुम्हारी प्रीति श्रीरामचन्द्रजी और सीताजीके चरणोंमें सदा विमल और नित्य नवीन होती रहे ।।

सोरठा—मातु चरन सिर नाय, लषन चले शंकित हृदय ।
बागुर विषम तुराइ, मनहुँ भागु मृग भागवस ।।३।।

तब माता के चरणोंमें सिर झुका लक्ष्मणजी शंकित हृदयसे ऐसे झट चल दिए, मानों कोई हिरन कठिन बन्धनको तुड़ाकर निकल भागा हो ।। ३ ।।

गये लषन जहँ जानकिनाथा ❀ भे मन मुदित पाइ प्रिय साथा
बन्दि राम सिय चरण सुहाये ❀ चले संग नृप मन्दिर आये

इस प्रकार लक्ष्मणजी वहाँ गये, जहां श्रीरामचन्द्रजीका प्रिय साथ पाकर प्रसन्न हुए ।।१।। वे राम-सीताके चरणोंकी बन्दना करके साथ चल दिए और राजभवन में आये ।।२।।

कहहिं परस्पर पुर नर नारी ❀ भलि बनाइ बिधि बात बिगारी
तनु कृश मन दुख बदन मलीने ❀ विकल मनहुँ माखी मधु छीने

(उनको देखकर)नगरके स्त्री-पुरुष आपसमें कहने लगे—विधाताने बात बनाकर फिर बिगाड़ दी । सबलोग शरीरसे ऐसे दीन और मलीन हो गए मानों मक्खोसे मधु छिन गया हो ।।

कर मीजहिं शिर धुनि पछिताहीं ❀ जिमि बिनु पंख बिहँग अकुलाहीं
भइ बड़ि भीर भूप दरबारा ❀ जाय न बरणि विषाद अपारा

सब लोग हाथ मलते इस प्रकार पछता रहे हैं, जैसे पंखहीन पक्षी व्याकुल हो जाता है । राजदरबारमें बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई, उस अपार शोकका वर्णन नहीं किया जाता है ।।

सचिव उठाइ राउ बैठारे ❀ कहि प्रिय बचन राम पगु धारे
सिय समेत दोउ तनय निहारी ❀ ब्याकुल भयउ भूमिपति भारी

मन्त्रीने महाराजको उठाकर बैठाया और प्रिय वचनसे कहा कि श्रीरामचन्द्र पधारे हैं ।।७।।
तब सीता सहित दोनों पुत्रोंको देख पृथ्वीपति राजा दशरथ बड़े व्याकुल हो गये ।।८।।

दोहा—सीय सहित सुत सुभग दोउ, देखि-देखि अकुलाय ।
बारहिं बार सनेह बस, राउ लिये उर लाय ।।७४।।

(इस प्रकार) सीता सहित दोनों सुन्दर पुत्रों को देख-देखकर राजा दशरथ व्याकुल हो गए और स्नेहके वशीभूत होकर उनको बारम्बार छातीसे लगाने लगे ।।७४।।

सके न बोलि बिकल नरनाहू ❀ शोक जनित उर दारुण दाहू
नाइ शीश पद अति अनुरागा ❀ उठि रघुनाथ बिदा तब माँगा

राजा दशरथ कुछ बोल नहीं सकते थे क्योंकि हृदयमें शोकजनित दारुण दाह हो रहा था । तब श्रीरामचन्द्रने चरणोंमें शिर झुकाकर उठकर अत्यन्त प्रेमसे चलनेकी बिदा मांगी ।।२।।

पितु अशीश आयसु मोहिं दीजै ❀ हर्ष समय बिस्मय कत कीजै
तात किये प्रिय प्रेम प्रमादू ❀ यश जग जाइ होइ अपवादू

हे पिताजी ! अब मुझको आशीर्वाद और आज्ञा दीजिए, हर्षके समय शोक क्यों करते हैं । हे तात ! प्रेममें प्रमोद ठीक नहीं, ऐसा करनेसे संसारसे यश जाता रहता है, और निन्दा होती है ।।

सुनि सनेह वश उठि नरनाहू ❀ बैठारे रघुपति गहि बाहू
सुनहु तात तुमकहँ मुनि कहहीं ❀ राम चराचर—नायक अहहीं

ऐसा सुनकर स्नेहसे चक्रवर्ती राजा दशरथने उठकर बाँह पकड़ रामचन्द्रको बैठा लिया । और बोले, हे तात ! सुनो तुमको मुनिलोग ऐसा कहते हैं कि राम चराचरके स्वामी हैं ।।

शुभ अरु अशुभ कर्म अनुहारी ❀ ईश देइ फल हृदय बिचारी
करै जो कर्म पाव फल सोई ❀ निगम नीति अस कह सब कोई

शुभाशुभ कर्मके अनुसार ईश्वर हृदयमें विचारकर फल दिया करते हैं । वेद शास्त्र और नीतिमें भी ऐसा ही लिखा है कि जो जैसा कर्म करता है, वह वैसा ही फल पाता है ।।८।।

दोहा—और करै अपराध कोउ, और पाव फल भोग ।
अति बिचित्र भगवन्त गति, को जग जानै योग ।।७५।।

परन्तु हे तात ! यह बड़ा आश्चर्य है कि अपराध तो और कोई करे और कोई अन्य फल भोगे । भगवान्‌की यह गति बड़ी विचित्र है, जो किसीके ध्यानमें नहीं आ सकती ।। ७५ ।।

राउ राम राखन हित लागी ❀ बहुत उपाय कीन्ह छल त्यागी
लखे राम रुख रहत न जाने ❀ धरम धुरन्धर धीर सयाने

इस प्रकार राजादशरथने लक्ष्मण और रामको रखनेके लिए निष्कपट होकर कई उपाय किए परन्तु राम का रुख रहनेका न पाया, क्योंकि राम बड़े धर्म-धुरन्धर धीर और सुजान थे ।।

तब नृप सीय लाइ उर लीन्हीं ❁ अतिहित बहुत भाँति सिख दीन्हीं
कहि बनके दुख दुसह सुनाये ❁ सासु श्वसुर पितु सुख समुझाये

तब दशरथजीने सीताको हृदयसे लगा अनेक प्रकारकी हितकारी शिक्षा दी ।। ३ ।। बन सम्बन्धी अनेक दुःखोंको कहकर सुनाया और घरके सुखोंका भी स्मरण दिलाया ।।४।।

सिय मन राम चरण अनुरागा ❁ घर न सुगम बन विषम न लागा
औरो सबहिं सीय समुझाई ❁ कहिकहिविपिनविपतिअधिकाई

सीताका मन श्रीरामके चरणोंका अनुरागी था इसकारण उन्हें न तो घर सुगम दिखाई पड़ा और न बन कठिन लगा। अन्य लोगोंने भी बनकी बड़ी विपत्तियोंको कहकर सीताको समझाया ।।

सचिव-नारि गुरु-नारि सयानी ❁ सहित सनेह कहहिं मृदु बानी
तुम कहँ तौ न दीन्ह बनवासू ❁ करहु जो कहहिं श्वसुर गुरु सासू

तब मन्त्रियोंकी स्त्रियाँ और गुरु-पत्नियोंने कोमल वाणीसे कहा ।।७।। तुमको तो राजा ने बनवास नहीं दिया है, अतः तुम सासु श्वसुर और गुरु जैसा कहें वैसा करो ।।८।।

दोहा—शिख शीतल हित मधुर मृदु, सुनि सीतहिं न सुहानि ।
शरदचन्द्र चाँदनि निरखि, जनु चकई अकुलानि ।।७६।।

इस प्रकार वह हितकारी शिक्षा भी सीताजीको अच्छी न लगी। अतएव उस शिक्षा को सुनकर, वह ऐसी व्याकुल हो गईं जैसे शरदको चांदनीको देख चकई व्याकुल हो जाती है।।७६।।

सीय सकुच वश उतर न देई ❁ सो सुनि तमकि उठी कैकेयी
मुनिपट भूषन भाजन आनी ❁ आगे धरि बोली मृदु बानी

सीता संकोचके वश कुछ उत्तर नहीं देतीं तब और लोगोंके वचन सुन कैकेई क्रोधित हो गई। वह शीघ्र ही मुनियोंकेसे वस्त्राभूषण और पात्र आदि लाकर आगे धरकर बोली ।।

नृपहिं प्राणप्रिय तुम रघुबीरा ❁ शील सनेह न छाँड़िहिं भीरा
सुकृत सुयश परलोक नशाऊ ❁ तुमहिं जान बन कहहिं न राऊ

हे राम ! तुम राजाको प्राणोंसे भी प्यारे हो जिससे वे तुम्हारा शील और स्नेह छोड़ नहीं सकते ।। चाहे इनका सुकृत, सुन्दर यश और परलोक सब बिगड़ जाय, परन्तु ये तुम्हें बन जानेको नहीं कह सकते ।।

अस बिचारि सोइ करहु जो भावा ❁ राम जननि सिख सुनि सुखपावा
भूपहिं बचन बान सम लागे ❁ करहिं न प्रान पयान अभागे

ऐसा विचारकर तुम्हें जो अच्छा लगे सो करो ।। ५ ।। यह वचन राजाको बाणके समान लगे, राजाने कहा अब भी ये अभागे प्राण देहको छोड़कर नहीं निकलते हैं ।।६।।

शोक विकल मुरछित नरनाहू ❁ कहा करिय कछु सूझ न काहू
राम तुरत मुनि बेष बनाई ❁ चले जनक जननी शिर नाई

क्या करें ? किसीको कुछ नहीं सूझता ऐसा कहकर राजा शोकसे विकल हो मूर्छित हो गये। श्रीरामचन्द्रजी तुरन्त मुनिका बेश बनाकर, माता पिताको शिर नवा, वहाँ से चल पड़े ।।

दोहा—सजि बन साज समाज प्रभु, बनिता बन्धु समेत ।
बंदि बिप्रगुरु-चरण प्रभु, चले करि सबहिं अचेत ॥७७॥

इस प्रकार बनका साज सजा श्रीरामचन्द्रजी सीता और लक्ष्मणके साथ गुरु और ब्राह्मणोंको प्रणाम कर तथा सबको अचेत कर प्रभु अयोध्यासे चल पड़े ॥७७॥

निकसि वसिष्ठ द्वार भये ठाढ़े ❁ देखे लोग बिरह दव डाढ़े
कहि प्रिय बचन सबहिं समुझाये ❁ विप्र वृन्द रघुबीर बुलाये

वसिष्ठजी निकलकर वाहर खड़े हुए तो देखा लोग विरहके दावानलसे दग्ध हो रहे हैं। तब मीठी वाणी कहकर सबको समझाये, उसी समय श्रीरामचन्द्रजीने ब्राह्मण वृन्दोंको बुलाया । २ ।

गुरु सन कहि बरषासन दीन्हे ❁ आदर दान बिनय बहु कीन्हे
याचक दान मान सन्तोषे ❁ नीति पुनीत प्रीति परितोषे

गुरु वसिष्ठजीसे कहकर सादर विनयपूर्वक उन्हें चौदह वर्षके लिए भोजन दिलाये । और भिखारियोंको भी दान-मानसे सन्तुष्ट कर पवित्र प्रीति और नीतिसे सबको सन्तुष्ट किये ॥४॥

दासी दास बुलाइ बहोरी ❁ गुरुहिं सौंपि बोले कर जोरी
सबकर सार सँभार गोसाईं ❁ करब जनक जननी की नाईं

फिर दास और दासियोंको बुलाके गुरुको सौंप दिया और हाथ जोड़के गुरुसे कहा हे स्वामी! जैसे माता-पिता अपनी संतानकी सार सँभाल करते हैं ऐसे ही आप इनका भार संभाल करना ॥६॥

बारहिं बार जोरि युग पानी ❁ कहत राम सबसन मृदु बानी
सोइ सब भाँति मोर हितकारी ❁ जेहिते रहैं भुआल सुखारी

श्रीरामचन्द्रजी बारबार हाथ जोड़ सबसे मीठी वाणीसे कहने लगे—हे भाइयो ! मेरा वही सब प्रकारसे हितकारी है कि जिससे राजा सुखी रहें ॥८॥

दोहा—मातु सकल मोरे विरह, जेहि न होहिं दुख दीन ।
सोइ उपाय तुम करब सब, पुरजन परम प्रवीन ॥७८॥

फिर हे प्रवीण पुरजन ! आप सब लोग मिलकर वही उपाय करना कि जिस प्रकार सभी माताएँ मेरे बिरहसे व्याकुल दीन और दु:खी न होने पावें ॥७८॥

यहि विधि राम सबहिं समुझावा ❁ गुरु पद-पद्म हर्षि शिर नावा
गणपति गौरि गिरीश मनाई ❁ चले अशीष पाइ रघुराई

इस प्रकार सबको समझाकर श्रीरामचन्द्रजीने प्रसन्न होकर गुरुके चरणकमलोंकी बन्दना की पश्चात् गणपति गौरी महादेवजीको मनाये और आशीर्वाद ले चल दिये ॥२॥

राम चलत अति भयउ विषादू ❁ सुनि न जाइ पुर आरत नादू
कुसगुन लंक अवध अति शोकू ❁ हर्ष विषाद विवश सुर लोकू

श्रीरामजीके चलते ही बड़ा दु:ख छा गया, नगरके लोगोंका आर्त्तनाद सुना नहीं जा सकताथा लंकामें अपशकुन और अयोध्यामें बड़ा शोक हुआ, देवताओंमें भी हर्ष और शोक छा गया ॥

गइ मूर्छा तब भूपति जागे ❁ बोलि सुमन्त कहन अस लागे
राम चले बन प्राण न जाहीं ❁ केहि सुख लागि रहत तनु माहीं

उसी समय दशरथजी मूर्छासे जागे तो सुमन्तको बुलाकर कहने लगे कि रामके वनमें जाने पर भी ये प्राण नहीं निकले तो अब ये किस सुखके लिए शरीरमें पड़े हैं ? ।।

यहि ते कवन व्यथा बलवाना ❁ जो दुख पाइ तजहिं तन प्राना
पुनि धरि धीर कहहिं नरनाहू ❁ लै रथ संग सखा तुम जाहू

इससे बढ़कर दूसरा दुःख कौन है कि, जिसको पाकर ये प्राण शरीरको छोड़ेंगे। फिर धैर्य धारण करके राजाने कहा कि—हे सखा ! तुम रथ लेकर रामके साथ जाओ ।।

दोहा—सुठि सुकुमार कुमार दोउ, जनकसुता सुकुमारि ।
रथ चढ़ाइ दिखराइ बन, फिरेहु गये दिन चारि ।।७९।।

ये दोनों कुँवर राम लक्ष्मण बहुत सुकुमार हैं और सीता भी अत्यन्त सुकुमारी हैं। इसलिए तुम इन्हें रथपर चढ़ा बनको दिखाकर चारदिन बनमें फिराके फिर लौट आओ ।।७९।।

जो नहिं फिरहिं धीर दोउ भाई ❁ सत्यसिंधु दृढ़ व्रत रघुराई
तौ तुम विनय करेहु कर जोरी ❁ फेरिय प्रभु मिथिलेश किशोरी

और यदि सत्यके सागर और दृढ़ प्रतिज्ञ दोनों भाई न लौटें तो तुम हाथ जोड़कर बिनती करना और ज्यों-त्यों करके सीताको अवश्य ही लौटा ले आना। राम सीताको अवश्य ही लौटा देंगे ।।

जब सिय कानन देखि डेराई ❁ कहेउ मोर सिख अवसर पाई
सासु श्वसुर अस कहउ सँदेशू ❁ पुत्रि फिरिय बन बहुत कलेशू

जब सीता बनको देखके डरे, तब अवसर पाकर मेरी यह बात कहना कि तुम्हारी सासु और श्वसुरने ऐसा सन्देश कहलाया है कि हे पुत्री ! तुम लौट चलो बनमें बहुत क्लेश हैं।।

पितु गृह कबहुँ कबहुँ ससुरारी ❁ रहेउ जहाँ रुचि होइ तुम्हारी
यहि विधि करहु उपाय कदंबा ❁ फिरै तो होइ प्राण अवलम्बा

कभी पिताके घर कभी ससुरालमें जहाँ तुम्हारी जैसी इच्छा हो रहना ।।५।। इस तरह के अनेक उपाय करना जो सीता लौट आवे तो मेरे प्राणोंको बड़ा सहारा होवे ।।६।।

नाहिं त मोर मरण परिणामा ❁ कछु न बसाय भयो बिधि बामा
अस कहि मूर्छि परेउ महि राऊ ❁ राम लषन सिय आनि दिखाऊ

नहीं तो परिणामस्वरूप मेरी मृत्यु है, कुछ वश नहीं चलता, ब्रह्मा उलटा हो गया है हे सखा ! सीता, राम, लक्ष्मणको मुझे लाकर दिखा ऐसा कह राजादशरथ मूर्छित हो पृथ्वीपर गिरपड़े।

दोहा—पाय रजाय नाइ शिर, रथ अति बेगि बनाय ।
गये जहाँ बाहर नगर, सीय सहित दोउ भाय ।।८०।।

तब राजाकी आज्ञा पा, सिर नवा बड़े बेगवाला रथ तैयारकर, सुमन्त वहाँ गए, जहाँ नगरके बाहर सीता सहित दोनों भाई थे ।।८०।।

तब सुमन्त नृप बचन सुनायें ❀ करि विनती रथ राम चढ़ाये
चढ़ि रथ सीय सहित दोउ भाई ❀ चले हरषि अवधहिं शिर नाई

तब रामचन्द्रके निकट पहुँच सुमन्तने राजाके बचन सुनाए और बिनती करके राम को रथपर चढ़ाया। सीतासहित दोनोंभाई रथपर चढ़ अवधको प्रणामकर हर्षित हो चल दिये ।।

चलत राम लखि अवध अनाथा ❀ विकल लोग लागे सब साथा
कृपासिंधु बहु विधि समुझावहिं ❀ फिरहिं प्रेम वश पुनि फिर आवहिं

रामके जाते ही अयोध्या अनाथ हो गई सबलोग व्याकुलहो रामके साथजाने लगे।। कृपासिंधु-राम उन्हें अनेक प्रकारसे समझाते हैं सो पीछे फिरते भी हैं पर प्रेमवश फिर दौड़ आते हैं ।।

लागत अवध भयानक भारी ❀ मानहुँ काल राति अँधियारी
घोर जन्तु सब पुर नर नारी ❀ डरपहिं एकहिं एक निहारी

उस समय अयोध्या कैसे भयानक लगती थी कि मानों मूर्तिमान अँधेरी कालरात्रि है ।। पुरीके नर-नारी मानों भयानक जीवजन्तु हैं, जो एक-एकको देखकर डरते हैं ।।

घर मशान परिजन जनु भूता ❀ सुत हित मीत मनहुँ यमदूता
बागन विटप बेलि कुम्हिलाहीं ❀ सरित सरोवर देखि न जाहीं

घर श्मशानके समान परिजन भूतोंके समान और पुत्र हितैषी व मित्र मानों यमराज के दूतोंके समान दीखते हैं बागोंमें वृक्ष-लता कुम्हला रही हैं नदियों और तालाबोंकी ओर देखा नहीं जाता।।

दोहा--हय गज कोटिन केलि मृग, पुर पशु चातक मोर ।
पिक रथाङ्ग शुक सारिका, सारस हंस चकोर ।।८१।।

करोड़ों हाथी, घोड़े, पुरके मृग, चातक, मोर, कोकिला, चकवा, तोता, मैना, सारस हंस और चकोर ।।८१।।

राम वियोग विकल सब ठाढ़े ❀ जहँ तहँ मनहुँ चित्र लिखि काढ़े
नगर सकल बन गहवर भारी ❀ खग मृग बिकल सकल नरनारी

सभी रामके वियोगसे विकल हो मानो लिखे हुए चित्रके समान जहाँ-तहाँ खड़े थे, सारा नगर मानों भारी गहन बन हो गया है, पशु-पक्षी और नगरके नर-नारी सब विकल हो गये ।।

विधि कैकेयि किरातिनि किन्हीं ❀ जेहि दव दुसह दशहुँ दिशि दीन्हीं
सहि न सकेउ रघुबर विरहागी ❀ चले लोग सब ब्याकुल भागी

बिधाताने कैकेईको भीलनी बनाकर और उसके हाथ से नगर में चारों ओर दुःसह दावा-नल लगवा दिया है। रामचन्द्रके इसवियोग को कोई सह नहीं सकता, सबलोग व्याकुल होकर भागे चले जाते हैं।।

सबहिं विचार कीन्ह मन माहीं ❀ राम लषन सिय बिनु सुख नाहीं
जहाँ राम तहँ सकल समाजू ❀ बिनु रघुबीर अवध केहि काजू

तब सबलोगोंने मनमें विचार किया कि, सीताराम और लक्ष्मणके बिना कहीं सुख नहीं है। जहाँ राम हैं वहीं सब सुखका सामान है, बिना रामके यह अयोध्या किस कामकी ? ।।

चले साथ अस मंत्र दृढ़ाई ❁ सुर दुर्लभ सुख सदन बिहाई
राम चरण पंकज प्रिय जिनहीं ❁ विषय भोग वश करै कि तिनहीं

ऐसा मन्त्र निश्चय करके अपने भवनको जो देव भवनके समान है त्यागकर सब साथ चले जिनकी श्रीरामजीके चरण कमलोंमें ऐसी प्रीति है, उनको विषय भोग कैसे वश कर सकते हैं ।।

दोहा—बालक वृद्ध बिहाइ गृह, लगे लोग सब साथ।
तमसा तीर निवास किय, प्रथम दिवस रघुनाथ ।।८२।।

इस प्रकार सभी लोग बालक और बूढ़ोंको छोड़ रामजीके साथ लगे । तब उनके साथ पहले दिन श्रीरामचन्द्रजीने तमसा नदीके तट पर विश्राम किया ।। ८२ ।।

रघुपति प्रजा प्रेम वश देखी ❁ सदय हृदय दुख भयउ विशेषी
करुणामय रघुनाथ गुसाईं ❁ बेगि पाइअहि पीर पराई

उधर जब श्रीरामजीने प्रजाको प्रेमवश देखा तो करुण हृदय उनके मनमें बड़ा दुःख हुआ ।।१।। भगवान् श्रीरामचन्द्रजी करुणामय हैं, वे पराई पीड़ाको शीघ्र जानते हैं ।।२।।

कहि सप्रेम मृदु बचन सुहाये ❁ बहु विधि राम लोग समुझाये
किये धर्म उपदेश घनेरे ❁ लोग प्रेम वश फिरहिं न फेरे

तब प्रेम सहित कोमल और सुहावने वचन कहकर श्रीरामचन्द्रजीने लोगोंको अनेक प्रकारसे समझाया और बहुत-सा धर्मोपदेश दिया परन्तु लोग प्रेमके वश होनेके कारण फेरनेसे पीछे न फिरे ।

शील सनेह छाँड़ि नहिं जाई ❁ असमंजस वश भे रघुराई
लोग सोक श्रम वश गये सोई ❁ कछुक देवमाया मति मोई

किन्तु श्रीरामचन्द्रजी स्नेहको नहीं त्याग सके, द्विविधाके वश हो गये ।।५।। जब शोक और प्रेमके वश लोग सो गये, तब देवमायाने भी उनकी बुद्धिको मोहित कर लिया ।।६।।

जबहिं याम युग यामिनि बीती ❁ राम सचिव सन कहेंउ सप्रीती
खोज मारि रथ हाँकहु ताता ❁ आन उपाय बनहिं नहिं बाता

तब दो पहर रात्रि बीत जाने पर रामने सुमंतसे प्रेमपूर्वक कहा ।।७।। कि हे तात ! अब खोज मारके रथको चलाओ नहीं तो और किसी उपायसे बात नहीं बनेगी ।। ८ ।।

दोहा—राम लषन सिय यान चढ़ि, शंभु चरन शिर नाइ ।
सचिव चलायउ तुरत रथ, इत उत खोज दुराइ ।।८३।।

फिर तो राम लक्ष्मण सीता शिवजीके चरण-कमलोंको प्रणामकर रथ पर चढ़े । तब सुमन्तने इधर-उधरकी खोज छिपाके रथको शीघ्रतासे हाँक दिया ।। ८३ ।।

जागे सकल लोग भये भोरू ❁ गे रघुबीर भयउ अति शोरू
रथ कर खोज कतहुँ नहिं पावहिं ❁ राम राम कहि चहुँ दिशि धावहिं

प्रातःकाल प्रभुके जाने पर सब लोग जागे तो बड़ा शोर करने लगे ।।१।। रथको बहुत खोजे पर कहीं पता न लगा । तब 'राम राम' ऐसे कहकर चारों ओर दौड़ने लगे ।। २ ।।

मनहु बारिनिधि बूड़ जहाजू ❀ भयउ बिकल जनु बनिक समाजू
एकहिं एक देहिं उपदेशू ❀ तजेउ राम हम जानि कलेशू

कहीं पता न लगनेसे ऐसे व्याकुल हो गये मानों समुद्रके बीच जहाज डूबते समय बणिक समाज विकल हो गये हों। एक-एकको उपदेश देने लगे कि प्रभुने क्लेश समझकर हमें त्याग दिया है ॥

निन्दहिं आपु सराहहिं मीना ❀ धिग जीवन रघुबीर विहीना
जौ पै प्रिय वियोग विधि कीन्हा ❀ तौं कस मरण न माँगे दीन्हा

लोग अपनेको धिक्कारते हैं और मछलीकी सराहना करते हैं कि जो जलके बिना प्राण त्याग देती हैं। जब विधाताने प्रियका वियोग कर दिया तो माँगने पर मौत क्यों नहीं देता है ॥

यहि बिधिकरत प्रलाप कलापा ❀ आये अवध भरे परितापा
विषम वियोग न जाइ बखाना ❀ अवधिआश राखहिं सब प्राना

इस प्रकार प्रलाप करते लोग दुःखी हो अयोध्यामें आये। वह विषम वियोग कहा नहीं जाता, केवल अवधिकी आशासे सबने प्राणकी रक्षा की कि, प्रभु चौदह वर्ष बाद पधारेंगे ॥

दोहा—राम दरस हित नेम ब्रत, लगे करन नर-नारि।
मनहुँ कोक कोकी कमल, दीन विहीन तमारि ॥८४॥

प्रभुके विरहसे नर-नारी प्रभुके दर्शन निमित्त नियम और व्रत करने लगे और ऐसे दीन हो गए जैसे सूर्यके वियोगसे चकवा चकवी और कमल कुम्हिला जाते हैं ॥ ८४ ॥

सीता सचिव सहित दोउ भाई ❀ शृंगबेर पुर पहुँचे जाई
उतरे राम देवसरि देखी ❀ कीन्ह दण्डवत हर्ष विशेखी

इधर दोनों भाई श्रीराम तथा जानकीजी और सुमन्तके सहित शृङ्गबेरपुर जा पहुँचे ॥१॥ वहाँ श्रीगंगाजीको देखकर श्रीरामजी रथसे उतरकर विशेष हर्षसे दण्डवत् किये ॥ २ ॥

लषण सचिव सिय कीन्ह प्रनामा ❀ सबहिं भाँति सुख पायेउ रामा
गंग सकल मुद मंगल मूला ❀ सब सुखकरनि हरनि सब शूला

फिर लक्ष्मणजी मंत्री सुमन्त तथा सीताने प्रणाम किया और श्रीरामचन्द्रने सब प्रकारसे सुख पाया, श्रीगंगा महारानी सर्वसुख दानी आनंद मंगलकी मूल और समस्त शूलको हरनेवाली हैं ॥

कहि-कहि कोटिक कथा प्रसङ्गा ❀ राम विलोकत गंग तरंगा
सचिवहिं अनुजहिं प्रियहिं सुनाई ❀ बिबुध नदी महिमा अधिकाई

इस प्रकार गंगा संबंधी करोड़ों कथायें कहते हुए श्रीरामचन्द्रजी गंगाकी तरंगोंको देखने लगे फिर उस देव नदीकी अधिक महिमाको मन्त्री सुमंत लक्ष्मण और प्रिय सीताको सुनाने लगे ॥

मज्जन कीन्ह पन्थ श्रम गयऊ ❀ शुचि जल पियत मुदित मन भयऊ
सुमिरत जाहि मिटहिं भ्रम भारू ❀ तेहि श्रम यह लौकिक व्यवहारू

फिर स्नानकर श्रम-रहित हुए और पवित्र जल पीते ही मन प्रसन्न हो गया। जिन रामचन्द्रका स्मरण करते ही संसारका भ्रम मिट जाता है, उनका यह लौकिक व्यवहार है।

दोहा—शुद्ध सच्चिदानंदमय, राम भानु-कुल-केतु ।
चरित करत नर अनुहरत, संसृति सागर सेतु ।।८५।।

श्रीरामचन्द्रजी शुद्ध सच्चिदानन्दमय और संसारके सेतु होकर भी मनुष्योंके समान चरित्र कर रहे थे कि जिससे जीवोंको संसार-सागर पार करनेमें कठिनाई न हो ।। ८५ ।।

यह सुधि गुह निषाद जब पाई ❁ मुदित लिये प्रिय बन्धु बुलाई
लै फल मूल भेंट भरि भारा ❁ मिलन चला हिय हर्ष अपारा

उधर जब निषादराज गुहको समाचार मिला तो वह प्रसन्न होकर अपने प्रिय बान्धवोंके सहित रामचन्द्रसे भेंट करनेके लिए फल मूल टोकरीमें भरकर अपार हर्षके साथ मिलने चला ।।२।।

करि दण्डवत भेंट धरि आगे ❁ प्रभुहिं विलोकत अति अनुरागे
सहज सनेह विवस रघुराई ❁ पूछत कुशल निकट बैठाई

निकट पहुँचकर भेंट आगे रख अत्यन्त प्रेमसे श्रीरामचन्द्रजीको दण्डवत् कर उन्हें देखने लगा ।। उसके सहज स्नेहके विवश श्रीराम उसको अपने निकट बैठाकर कुशल समाचार पूछने लगे।।

नाथ कुशल पद पंकज देखे ❁ भयउँ भाग भाजन जन लेखे
देव धरणि धन धाम तुम्हारा ❁ मैं जन नीच सहित परिवारा

निषादने कहा—हे नाथ ! आपके चरण कमलोंका दर्शन करनेसे मैं आज भाग्यशाली हुआ । हे देव ! यह पृथ्वी, धन और घर आपका ही है, मैं तो सकुटुम्ब आपका तुच्छ सेवक हूँ ।।

कृपा करिय पुर धारिय पाऊँ ❁ थापिय जन सब लोग सिहाऊँ
कहेउ सत्य सब सखा सुजाना ❁ मोहिं दीन्ह पितु आयसु आना

अतः आप कृपाकर इस नगरमें पदार्पण कीजिए और मुझे अपना सेवक स्थापित कीजिए जिससे सब लोग सिहावें ।। ७ ।। तब रामचन्द्रजीने कहा—हे चतुर सखा ! आपने सब सत्य कहा; किन्तु मुझे तो पिताजीकी दूसरी ही आज्ञा है ।। ८ ।।

दोहा—वर्ष चारि दश बास बन, मुनिव्रत वेष अहार ।
ग्राम बास नहिं उचित सुनि, गुहहिं भयउ दुख भार ।।८६।।

उसके अनुसार मुझे मुनियोंके समान व्रतवेषभोजनकरते हुए चौदहवर्षतकबनमें वास करना चाहिए और ग्रामोंमें जाना निषेध है श्रीरामचन्द्रकी यह बात सुनकर गुहको बड़ा दुःख हुआ ।।८६।।

राम लषन सिय रूप निहारी ❁ कहहिं सप्रेम ग्राम नर-नारी
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे ❁ जिन पठये बन बालक ऐसे

तब श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मण और सीताका रूप देखकर ग्रामके स्त्री पुरुष प्रेम सहित कहने लगे । हे सखी ! भला कहो तो वे माता पिता कैसे हैं कि जिन्होंने ऐसे बालकोंको बनमें भेज दिया है ।।

एक कहहिं भल भूपति कीन्हा ❁ लोचन लाभ हमहिं विधि दीन्हा
तब निषादपति उर अनुमाना ❁ तरु सिंसुपा मनोहर जाना

कोई कहतीं राजाने यह बहुत अच्छा काम किया जिसमें विधाताने हमको नेत्रोंका लाभ दिया है उसी समय निषादराज गुहने अपने मनमें विचार किया तो उसे शीशमका वृक्ष उत्तम जान पड़ा।

लै रघुनाथहिं ठाँव दिखावा ❀ कहेउ राम सब भाँति सुहावा
पुरजन करि जुहार घर आये ❀ रघुवर सन्ध्या करन सिधाये

वह श्रीरामचन्द्रजीको साथ लेकर जहाँ पहुँच स्थान दिखाकर कहने लगा कि यह सब प्रकार सुन्दर हैं। पुरवासियोंने जुहार किया और लौट आये, श्रीरामचन्द्रजी संध्या बंदन करने गये।

गुह सँभारि साथरी डँसाई ❀ कुश किशलय मय मृदुल सुहाई
सुचि फल मूल मधुर मृदु जानी ❀ दोना भरि-भरि राखेसि आनी

इतनेमें निषादराज गुहने कुश और कोमल पत्तोंको वहुत सँभालके एक सुन्दर शय्या बनाई और फिर जिन मूल और फलोंको पवित्र, मधुर और कोमल जाना उन्हें दोनामें भर-भरकर रखा ॥

दोहा—सिय सुमन्त भ्राता सहित, कन्द मूल फल खाय।
शयन कीन्ह रघुवंश मणि, पाँय पलोटत भाय ॥८७॥

इस प्रकार रघुवंशमणि श्रीरामचन्द्रजीने सीता सुमंत और लक्ष्मण सहित कन्द मूल फल खाकर शयन किया और लक्ष्मणजी पाँव दबाने लगे ॥ ८७ ॥

उठे लषण प्रभु सोवत जानी ❀ कहि सचिवहिं सोवन मृदुबानी
कछुक दूरि सजि बाण शरासन ❀ जागन लगे बैठि बीरासन

फिर प्रभु रामचन्द्रको सोया जानकर लक्ष्मणजी उठे और मंत्रीसे मीठी वाणी द्वारा बोले कि तुम भी सो जाओ और स्वयं धनुष पर वाण चढ़ाकर कुछ दूर वीरासनसे बैठकर जागरण करनेलगे॥

गुह बुलाय पाहरू प्रतीती ❀ ठाँव-ठाँव राखे अति प्रीती
आपु लषण पहँ बैठेउ जाई ❀ कटि भाथा शर चाप चढ़ाई

साथ ही निषादने भी अपने विश्वासी पहरेदारोंको बुलाकर उनको जगह २ पर तैनात कर दिया और स्वयं कमरमें तरकस और हाथमें धनुष चढ़ाकर लक्ष्मणजीके पास बैठा ॥

सोवत प्रभुहिं निहारि निषादू ❀ भयउ प्रेम वश हृदय विषादू
तनु पुलकित जल लोचन बहई ❀ बचन सप्रेम लषन सन कहई

तब श्रीरामचन्द्रजीको सोते देख निषाद प्रेमके वशीभूत होकर बड़ा ही दुःखित हुआ ॥५॥ वह पुलकित शरीर आँखोंमें जल भरकर अत्यन्त प्रीति सहित लक्ष्मणसे बोला ॥ ६ ॥

भूपति भवन स्वभाव सुहावा ❀ सुरपति सदन न पटतर पावा
मणिमय रचित चारु चौबारे ❀ जनु रतिपत्ति निज हाथ सँवारे

हे लक्ष्मण! राजा दशरथजीके मंदिरकी समतामें तो इन्द्रका भी घर कुछ नहीं है ॥७॥ क्योंकि वह मणियोंसे जटित ऐसा विचित्र बना है, मानों कामदेवने ही अपने हाथसे सँवारा हो ॥ ८ ॥

दोहा—शुचि सुविचित्र सुभोग मय, सुमन सुगन्ध सुबास।
पलँग मंजुमणि दीप जहँ, सब विधि सकल सुपास ॥८८॥

यही क्या; वहाँ तो बड़े-बड़े पवित्र सुन्दर भोगकी सामग्रियाँ जैसे सुगन्धवाले फूल शोभायमान हैं, पलंग सुहावने मणियोंके दीपक और सब स्थानोंमें सब प्रकारके सुभीते हैं ॥ ८८ ॥

विविध बसन उपधान तुराई ❀ छीर फेन मृदु विसद सुहाई
तहँ सिय राम शयन निशि करहीं❀निज छबि रति मनोज मद हरहीं

वहाँ तो दूधके फेनके समान सुहावने भाँति २ के वस्त्र और तकिये बिछौनेपर सीता तथा राम रातमें सोया करते थे और अपनी शोभासे रति तथा कामदेवका भी गर्व चूर्ण करते थे ॥

ते सिय राम साथरी सोये ❀ श्रमित बसन बिनु जाहिं न जोये
मातु पिता परिजन पुरवासी ❀ सखा सुशील दास अरु दासी

आज वही सीताराम इस वृक्षकी साथरी पर सो रहे हैं जो अत्यन्त थके हुए और बिना वस्त्रके हैं ॥ ३ ॥ माता-पिता, परिजन, नगरवासी-सुशील सखा, दास और दासी ॥४॥

जुगवहिं जिनहिं प्राण की नाईं ❀ महि सोवत सो राम गुसाईं
पिता जनक जगविदित प्रभाऊ ❀ ससुर सुरेश सखा रघुराऊ

यह सब जिनको प्राणोंके समान देखा करते थे वे ही स्वामी पृथ्वीपर सो रहे हैं ॥५॥ फिर जगत्प्रसिद्ध महाराज जनक जिनके पिता और महाराज दशरथजी जिनके श्वसुर हैं ॥ ६ ॥

रामचन्द्र पति सो वैदेही ❀ सोवत महि विधि बाम न केही
सिय रघुबीर कि कानन जोगू ❀ कर्म प्रधान सत्य कह लोगू

और श्रीरामचन्द्रजी जैसे जिनके पति हैं, वही सीता आज पृथ्वीपर सो रही हैं। विधाता किसको विपरीत नहीं होता ? क्या रामचन्द्र और सीता बनके योग्य हैं, इससे कर्मकी प्रधानता सत्य है॥

दोहा—कैकयनन्दिनि मन्द मति, कठिन कुटिल प्रण कीन्ह ।
जेहि रघुनन्दन जानकिहिं, सुख अवसर दुख दीन्ह ॥८९॥

हा ! केकयराजकी मन्दमति पुत्रीने यह बड़ा कठिन और कुटिल प्रण किया कि जिसने श्रीरामचन्द्रजी व सीताजीको सुखके अवसरमें दुख दिया है ॥८९॥

भइ दिनकर कुल विटप कुठारी ❀ कुमति कीन्ह सब विश्व दुखारी
भयउ विषाद निषादहिं भारी ❀ राम सीय महि शयन निहारी

कुमति कैकेयीने इस सूर्यवंशरूपी वृक्षके लिए कुल्हाड़ी वन सारे संसारको दुख दे दिया। इस प्रकार श्रीरामचन्द्र व सीताका पृथ्वीपर शयन करना देखकर निषादको भारी दुख हुआ ॥

बोले लषण मधुर मृदु बानी ❀ ज्ञान विराग भक्ति रस सानी
काहु न कोउ सुख दुख करदाता ❀ निज कृत कर्म भोग सब भ्राता

तब लक्ष्मणजी ज्ञान वैराग्य और भक्तिरसमें सनी हुई मीठी वाणी द्वारा बोले कि ! हे भाई ! कोई किसीको दुख-सुख देनेवाला नहीं है, किन्तु सब अपने-अपने कर्मोंका फल भोगते हैं ॥ ४ ॥

योग वियोग भोग भल मंदा ❀ हित अनहित मध्यम भ्रम फन्दा
जन्म मरण जहँ लगि जगजालू ❀ संपति विपति कर्म अरु कालू

योग, वियोग, भोग, अच्छा, बुरा, हित, अनहित, मध्यम ये सब भ्रमके फन्दे हैं । जन्म से लेकर मृत्यु तक यह संसारका जो कुछ जाल है, सम्पत्ति, विपत्ति, कर्म और काल ॥६॥

धरणि धाम धन पुर परिवारू ❁ स्वर्ग नरक जहँ लगि व्यवहारू
देखिय सुनिय गुनिय मन माहीं ❁ माया कृत परमारथ नाहीं

पृथ्वी, घर, धन, परिवार, स्वर्ग और नरक जहाँ तक सांसारिक व्यवहार है ।।७।। देखिये, सुनिये और विचारिये तो यह सब मायाकृत है, इनमें जरा भी परमार्थ नहीं है ।।८।।

दोहा—सपने होय भिखारि नृप, रंक नाकपति होय ।
जागे लाभ न हानि कछु, तिमि प्रपंच जिय जोय ।।९०।।

जैसे कोई भिखमंगा स्वप्न में राजा हो जाय और देवराज इन्द्र कंगाल हो जाय तो जागनेपर इनको कुछ हानि-लाभ नहीं होता, वैसे ही यह सब प्रपंच है, मनमें विचारकर देखो ।।९०।।

अस विचारि नहिं कीजिय रोषू ❁ काहुहि बादि न देइय दोषू
मोह निशा सब सोवनि हारा ❁ देखिय सपन अनेक प्रकारा

ऐसा विचारकर किसीपर क्रोध मत कीजिए और न किसीको व्यर्थका दोष ही दीजिये ।।१।। मोह रूपी रात्रिमें सभी सोये हुए अनेक प्रकारके स्वप्न देखते हैं ।।२।।

यहि जग यामिनि जागहिं योगी ❁ परमारथी प्रपंच वियोगी
जानिय तबहिं जीव जग जागा ❁ जब सब विषय बिलास बिरागा

इस संसाररूपी रात्रिमें योगीही जागते हैं, क्योंकि वे परमार्थी और प्रपंचसे वियोगी हैं ।। ३ ।। जगत्‌में जीवको जागा हुआ तब जाने, जब उसको सब विषयोंसे वैराग्य हो जावे ।।४।।

होय विवेक मोह भ्रम भागा ❁ तब रघुनाथ चरण अनुरागा
सखा परम परमारथ एहू ❁ मन क्रम बचन रामपद नेहू

ज्ञान होनेपर मोह और भ्रम भाग जाता है, तब श्रीरामचन्द्रजीके चरणोंमें प्रीति होती है । हे सखा ! परम परमार्थ तो यही है कि मन कर्म वचनसे श्रीरामचन्द्रजीके चरणोंमें स्नेह हो ।।

राम ब्रह्म परमारथ रूपा ❁ अविगत अचल अनादि अनूपा
सकल विकार रहित गत भेदा ❁ कहि नित नेति निरूपहिं वेदा

क्योंकि राम ब्रह्म और परमार्थ स्वरूप हैं वे अनादि और भीतर बाहरसे परिपूर्ण हैं । किन्तु देखने में नहीं आते, और अनुभवोंसे भी वे अलक्ष्य हैं । उनके लिए आदि और अन्त नहीं मिलता ।।

दोहा—भक्त भूमि भूसुर सुरभि, सुरहित लागि कृपालु ।
करत चरित धरि मनुज तन, सुनत मिटहिं जग जाल ।।९१।।

वे कृपालु भक्त, भूमि, ब्राह्मण, गौ और देवताओंके हितार्थ मनुष्य शरीर धारण करके चरित्र करते हैं । उनके चरित्र श्रवणमात्रसे सांसारिक जाल नष्ट हो जाते हैं ।।९१।।

सखा समुझि अस परिहरि मोहू ❁ सिय रघुबीर चरण रति होहू
कहत राम गुण भा भिनुसारा ❁ जागे जग मङ्गल दातारा

हे सखा ! ऐसा समझकर तुम मोह त्यागकर राम और सीताके चरणोंमें प्रीति करो ! इस प्रकार श्रीरामचन्द्रजीका गुणगान करते हुए प्रातःकाल हो गया और श्रीरामचन्द्रजी जागे ।।

सकल शौच करि राम नहाये ❀ शुचि सुजान वट क्षीर मँगाये
अनुज सहित शिर जटा बनाये ❀ देखि सुमन्त नयन जल छाये

फिर आकर स्नान किया तब उन पवित्र, सुजान श्रीरामचन्द्रजीने बरगदका दूध मँगाये और छोटे भाई लक्ष्मणजीकी और अपनी जटा बनाई, यह देखकर सुमन्तकी आँखोंमें आँसू छा गया।।

हृदय दाह अति बदन मलीना ❀ कह कर जोरि बचन अति दीना
नाथ कहेउ अस कोशल नाथा ❀ लै रथ जाहु राम के साथा

सुमन्तका हृदय जल रहा था, मुख मलिन था, उसी समय उसने हाथ जोड़कर अत्यन्त दीन हो यह वचन कहा—हे नाथ ! मुझे कोशलनाथने ऐसाकहा है कि तुम रथ लेकर रामके साथ जाओ।

बन दिखाय सुरसरि अन्हवाई ❀ आनहु फेरि बेगि दोउ भाई
लषण राम सिय आनहु फेरी ❀ संशय सकल सँकोच निबेरी

और उन्हें वन दिखा गंगा स्नान कराकर दोनों भाइयोंको यहाँ शीघ्र लौटा लाना ।। इसमें संशय और संकोच न करके लक्ष्मण जानकी और श्रीरामचन्द्रजीको फेर लाना ।।८।।

दोहा—नृप अस कहेउ गुसाँइ जस, कहिय करौं बलि सोइ ।
करि बिनती पायँन परेउ, दीन बाल जिमि रोइ ।।९२।।

हे गुसाइं ! राजाने तो ऐसा ही कहा है, किन्तु बलि जाऊँ, अब आप जैसा कहें वैसा करूँ । ऐसी बिनती करके सुमन्त श्रीरामचन्द्रजीके पैरोंपर गिर पड़े और रोने लगे ।। ६२ ।।

तात कृपाकरि कीजिय सोई ❀ जाते अवध अनाथ न होई
मंत्रिहिं राम उठाय प्रबोधा ❀ तात धर्म मग तुम सब सोधा

हे तात ! अब आप कृपाकरके वही कीजिये कि जिसमें अयोध्यापुरी अनाथ न होवे । तब सुमन्तको उठाकर श्रीरामचन्द्रजी बोले, हे तात ! तुमं धर्मके मार्गका शोधन कर चुके हो ।।

शिवि दधीचि हरिचन्द नरेशा ❀ सहे धर्म हित कोटि कलेशा
रंतिदेव बलि भूप सुजाना ❀ धर्म धरेउ सहि संकट नाना

शिवि, दधीचि और हरिश्चन्द्र आदि राजाओंने धर्मके लिए करोड़ों कष्ट सहे हैं। रन्तिदेव और चतुर महाराज बलिने भी नाना प्रकारके संकट सहनकर धर्मको धारण किया है ।। ४ ।।

धर्म न दूसर सत्य समाना ❀ आगम निगम पुराण बखाना
मैं सोइ धर्म सुलभ करि पावा ❀ तजे सो तिहुँपुर अपयस छावा

वेद शास्त्र और पुराणोंमें सत्यके समान दूसरा धर्म नहीं है ।।५।। मैंने उसी धर्मको सुलभ करके पाया है, इसको त्याग देनेसे तीनों लोकोंमें अपयश छा जायगा ।।६।।

संभावित कहँ अपयश लाहू ❀ मरन कोटि सम दारुन दाहू
तुम सन तात बहुत का कहहूँ ❀ दिये उतर फिर पातक लहऊँ

प्रतिष्ठित पुरुषके लिए अपयश करोड़ मृत्युके समान दुःख देने वाला होता है ।।७।। हे तात ! मैं तुमसे बहुत क्या कहूँ; यदि उत्तर दूँ तो पाप लगेगा ।।८।।

दोहा–पितु पद गहि कहि कोटि विधि, विनय करब कर जोरि।
चिंता कवनिहुँ बातकी, तात करिय जनि मोरि ॥९३॥

आप पिताके पास पहुँच उनका चरण पकड़कर करोड़ों प्रकारसे मेरी ओर से हाथ जोड़कर बिनती करना। हे तात! यह कि, मेरे लिए आप किसी बातकी चिन्ता न करें ॥९३॥

तुम पुनि पितु सम अति हित मोरे ❀ विनती करौं तात कर जोरे
सब बिधि सोइ कर्त्तव्य तुम्हारे ❀ दुख न पाव पितु सोच हमारे

तुम मेरे पिताके समान हो, अतएव मैं हाथ जोड़कर विनती करता हूँ कि, आप वही कर्तव्य करें कि, जिससे पिताजी हमारे चिन्तासे दुःखी न होवें ॥२॥

सुनि रघुनाथ सचिव संवादू ❀ भयउ सपरिजनविकल निषादू
पुनि कछु कही लषण कटु बानी ❀ प्रभु बरजेउ बड़ अनुचित जानी

श्रीरामचन्द्रजी व मंत्री सुमन्त जी का संवाद सुनकर निषाद अपनेपरिजनों सहित व्याकुल हो गया, उसीसमय लक्ष्मणजीने कुछ कड़वी बातेंकहीं तो श्रीरामचन्द्रजीने उनको मना कर दिया ॥

सकुचि राम निज सपथ देवाई ❀ कहब न तात लषन लरिकाई
कह सुमन्त पुनि भूप सँदेसू ❀ सहि न सकहिं सिय विपिनकलेशू

और अपनी सौगन्ध देकर कहा हे तात! आप लक्ष्मणका लड़कपन पिताजीसे मत कहना सुमन्त राजादशरथका संदेश कहने लगे कि सीता अत्यन्त सुकुमारी हैं, बनका दुःख नहीं सह सकेंगी ॥

जेहि विधि अवधआव फिर सीया ❀ सोइ रघुनाथ तुमहिं करनीया
नतरु निपट अवलम्ब विहीना ❀ मैं न जियब जिमि जल बिनु मीना

हे श्रीरामचन्द्रजी! आपको ऐसाही उपाय करना चाहिए कि सीता अयोध्याकोलौटजावें नहीं तो मैं बिलकुल सहारा हीन होकर वैसेही नहीं जिऊँगा जैसे जलके बिना मछली नहीं जीती ॥

दोहा–मैके ससुरे सकल सुख, जबहिं जहाँ मन मान।
तब तहँ रहहि सुखेन सिय, जब लगि विपति बिहान ॥९४॥

नैहर और ससुरालमें हर तरहके सुख हैं सो जब-तक विपत्तिका विहान (सबेरा) नहीं होता, तब-तक सीता जहाँ मन भावे आनन्द से रहा करेंगी ॥९४॥

विनती भूप कीन्ह जेहि भाँती ❀ आरति प्रीति न सो कहि जाती
पितु सँदेश सुनि कृपा निधाना ❀ सियहिं दीन्हसिखकोटिविधाना

राजादशरथने दुःख और प्रेमसे जो विनय किया है, वह मैं वर्णन नहीं कर सकता। तब पिता का सन्देश सुनकर कृपानिधान श्रीरामचन्द्रसीताको करोड़ों प्रकारकी शिक्षादेने लगे

सासु ससुर गुरु प्रिय परिवारू ❀ फिरहु त सबकर मिटै खँभारू
सुनि पति बचन कहति बैदेही ❀ सुनहु प्राणपति परम सनेही

और कहने लगे कि यदि तुम अयोध्याको लौट जाओ तो सास, ससुर, गुरु और समस्तप्यारे परिवारका दुःख मिट जायगा। यह सुनकर सीताजी बोलीं, हे प्राणपति, स्नेही! सुनिये ॥

प्रभु करुणामय परम बिबेकी ❀ तनु तजि रहति छाँह किमि छेंकी
प्रभा जाइ कहँ भानु बिहाई ❀ कहँ चन्द्रिका चन्द्र तजि जाई

हे प्रभो ! हे करुणामय ! हे परमज्ञानी ! शरीर के विना परछाहीं किसप्रकार रह सकती है। सूर्यको छोड़कर धूप कहाँ जाये और चन्द्रमाको छोड़कर चाँदनी कहाँ जा सकती है ? ।।

पतिहिं प्रेम मय विनय सुनाई ❀ कहति सचिव सन गिरा सुहाई
तुम पितु ससुर सरिस हितकारी ❀ उतर देउँ फिरि अनुचित भारी

इस प्रकार पतिदेवको प्रेममय विनती सुनाकर सीता फिर सुमन्त से बोलीं—तुम तो पिता और ससुरके समान ही मेरा हित करने वाले हो, फिर उत्तर देना बड़ा अनुचित हैं ।।

दोहा—आरत बस सन्मुख भयउँ, बिलग न मानब तात ।
आरज सुत पदकमल बिनु, बादि जहाँ लगि नात ।।९५।।

यहाँ मैं आज दुःख वश आपके सन्मुख हुई, सो हे तात ! आप इससे मुझे कुछ विलग न मानियेगा। क्योंकि इन आर्यपुत्रके चरणारविन्दोंके बिना जितने सम्बन्ध हैं सब व्यर्थ हैं ।।९५।।

पितु वैभव विलास मैं दीठा ❀ नृप मणि मुकुट मिलत पद पीठा
सुख निधान अस पितु गृह मोरे ❀ पिय विहीन मन भाव न भोरे

मैंने अपने पिताके वैभव विलासको देखा है कि देशके सभी राजा उनको मस्तक झुकाते रहते हैं ।।१।। पिताका गृह सुखका निधान है, किन्तु पति-विहीन होकर मेरे मनको वह भूलकर भी अच्छा नहीं लगता है ।।२।।

श्वसुर चक्कवइ कोशल राऊ ❀ भुवन चारिदश प्रगट प्रभाऊ
आगे होइ जेहि सुरपति लेई ❀ अर्ध सिंहासन आसन देई

फिर कोशलराज चक्रवर्ती महाराज दशरथजी मेरे श्वसुर हैं जिनका चौदहो भुवनोंपर प्रभाव है ।।३।। इन्द्रभी जिनका आगेसे स्वागतकर अपने आधे सिंहासन पर बिठाते हैं ।।४।।

श्वसुर एतादृश अवध निवासू ❀ प्रिय परिवार मातु सम सासू
बिनु रघुपति पद पद्म परागा ❀ मोहिं सपनेहुँ सो सुखद न लागा

इस प्रकारके अवध निवासी श्वसुर, प्रिय परिवार और सासु जो माता के ही समान हैं किन्तु इन रघुपतिके चरणकमलोंके स्पर्शके बिना मुझको कोई स्वप्न में भी अच्छा नहीं लगता ।।

अगम पंथ बन भूमि पहारा ❀ करि केहरि सर सरित अपारा
कोल किरात कुरंग विहंगा ❀ मोहिं सब सुखद प्राणपति संगा

ऐसा अगम मार्ग, बनकी भूमि, पहाड़, हाथी, सिंह, तालाब, बड़ी नदी, कोल, भील, शूकर, मृग और पक्षी यह सब मुझको प्राणपतिके साथ रहने पर सुखमय हैं ।। ।।

दोहा—सासु ससुर सन मोरिहुति, विनय करब परि पाय ।
मोर सोच जनि करिय कछु, मैं बन सुखी सुभाय ।।९६।।

इस कारण आप हमारे सासु, श्वसुरके चरणोंमें पड़कर बिनती कीजिएगा कि, वे मेरी कुछ भी चिन्ता न करें; क्योंकि मैं बन में भी स्वभावत. सुखी हूँ ।।९६।।

प्राणनाथ प्रिय देवर साथा ❁ वीर धुरीण धरें धनु भाथा
नहिं मग श्रम भ्रम दुख मन मोरे ❁ मोहिं लगि सोच करिय जनि मोरे

फिर इन प्राणनाथ और प्यारे देवर के साथ चलते हुए मनमें मार्गकी थकावट तथा सन्देह और दुःख नहीं होगा। इस कारण मेरे लिए भूलकर भी चिन्ता मत कीजिएगा ॥

सुनि सुमन्त सिय शीतल बानी ❁ भयउ विकल जनु फणिमणिहानी
नयन सूझ नहिं सुनहिं न काना ❁ कहिन सकहिं कछु अतिअकुलाना

सीताकी ऐसी शीतल वाणी सुनकर सुमन्त उससर्पके समान व्याकुल हो गए जो अपनी मणि खो जानेसे व्याकुल हो जाता है। उनकी आँखोंमें अन्धेरा छा गया, कुछ कहते न बना ॥

राम प्रबोध कीन्ह बहु भाँती ❁ तदपि होत नहिं शीतल छाती
यतन अनेक साथ हित कीन्हें ❁ उचित उतर रघुनन्दन दीन्हें

तब श्रीरामचन्द्रजीने प्रेमसे सुमन्तको समझाया—बुझाया, सुमन्त श्रीरामचन्द्रजीको अपने साथ वापस चलनेका यत्न करने लगे, किन्तु श्रीरामचन्द्रजीने समुचित उत्तर दे दिया ॥

मेटि जाय नहिं राम रजाई ❁ कठिन कर्म गति कछु न बसाई
राम लषन सिय पद शिर नाई ❁ फिरेउ वणिक जनु मूरि गँवाई

श्रीरामचन्द्रजीकी आज्ञा मेटी नहीं जाती और कर्मकी गति कठिन है कुछ वश नहीं चलता ॥ यह सोच सुमन्त शिर नवाकर ऐसे लौटे मानों किसी बनियेने अपना मूलधन गँवा दिया हो ॥

दोहा—रथ हाँकेउ हय राम तन, हेरि हेरि हिहिनाहिं।
देखि निषाद विषाद वश, धुनहिं शीश पछिताहिं ॥९७॥

तब उन्होंने रथ हाँक दिया, घोड़े श्रीरामचन्द्रजीके शरीरकी ओर देख-देखकर हिन-हिनाने लगे। यह देखकर निषादराज महादुःखी हो अपना शिर पीटतेहुए पछताने लगा ॥ ९७ ॥

जासु वियोग विकल पशु ऐसे ❁ प्रजा मातु पितु जीवहिं कैसे
बरबस राम सुमन्त पठाये ❁ सुरसरि तीर आप चलि आये

भला जिनके वियोगमें पशु तक इस प्रकार व्याकुल हैं तो प्रजा और माता-पिता कैसे जियेंगे। इस प्रकार श्रीरामजी सुमन्तको बरबस भेज स्वयं गंगाके किनारे पर चले आये ॥

माँगी नाव न केवट आना ❁ कहै तुम्हार मर्म मैं जाना
चरन कमल रज कहँ सब कहई ❁ मानुष करनि मूरि कछु अहई

और आकर उन्होंने नाव माँगा, परन्तु केवट नहीं लाया और बोला मैं आपका सारा भेद जानता हूँ। सबलोग कहते हैं कि आपके चरणोंकी धूलिमें मनुष्य करनेकी कोई जड़ी है ॥

छुअत शिला भइ नारि सुहाई ❁ पाहन ते न काठ कठिनाई
तरनिउ मुनि घरनी होइ जाई ❁ बाटि परइ मोरि नाव उड़ाई

जिसको छूतेही पत्थरकी शिला सुन्दर स्त्री हो गई, फिर पत्थरसे तो यह काठ कठिन नहीं है। मेरी नौका भी मुनिकी स्त्री हो जायगी। रहने दीजिए, मेरी नौका उड़ जायगी, मैं ऐसा न करूँगा।

यहि प्रतिपालउँ सब परिवारू ❀ नहिं जानउँ कछु और कवारू
जो प्रभु अवशि पार गा चहहू ❀ तौ पद पद्म पखारन कहहू

इससे मैं अपने सारे परिवार का पालन-पोषण करता हूँ मेरे पास कोई दूसरा धन्धा नहीं है यदि आप अवश्य ही पार जाना चाहते हैं तो मुझे चरण-कमल धो लेने की आज्ञा दीजिये ॥

छन्द–पद पद्म धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं।
मोहिं राम राउरि आनि दशरथ शपथ सब साँची कहौं ॥
बरु तीर मारहिं लषन पै जब लगि न पाँव पखारिहौं।
तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपालु पार उतारिहौं ॥४॥

हे नाथ ! आपके चरण कमलोंको धोकर तब नाव पर चढ़ाऊँगा। आप से नाव की उतराई नहीं लूँगा। हे राम ! मुझे आपकी शपथ और महाराज दशरथजी की सौगन्ध है। मैं यह सारी बात सच कहता हूँ, चाहे लक्ष्मण मुझपर बाण ही क्यों न चला देवें, किन्तु जब तक मैं आपके पैर नहीं धो लूँगा, तब तक हे कृपालु ! आपको पार न उतारूँगा ॥

सोरठा–सुनि केवट के बैन, प्रेम लपेटे अटपटे।
बिहँसे करुणाऐन, चितै जानकी लषन तन ॥४॥

तब केवट की प्रेम-मिश्रित अटपटी वाणीको सुनकर सीता और लक्ष्मण की ओर देखते हुए दया के घर श्रीरामचन्द्रजी हँसे ॥४॥

कृपा-सिन्धु बोले मुसुकाई ❀ सोइ करहु जेहि नाव न जाई
बेगि आनि जल पाँय पखारू ❀ होत विलम्ब उतारहु पारू

फिर कृपासागर श्रीरामचन्द्रजी मुसकुराकर बोले कि अच्छा वही करो कि जिसमें तुम्हारी नाव न जाये ॥ जाओ जल लाकर शीघ्र ही पाँव धो लो, देर हो रही है मुझे पार उतार दो ॥

जासु नाम सुमिरत इक बारा ❀ उतरहिं नर भव सिन्धु अपारा
सो कृपालु केवटहिं निहोरा ❀ जेहि जग किय तिहुँ पगते थोरा

जिसका नाम एकबार स्मरण करते ही मनुष्य अपार संसार सागरसे पार हो जाते हैं। उन्हीं दयालु श्रीरामचन्द्रजीने मलाह से प्रार्थना की, जिन्होंने संसार को तीन पग से भी कम बना दिया था ॥

पद नख निरखि देवसरि हरषी ❀ सुनि प्रभुवचन मोहमति करषी
केवट राम रजायसु पावा ❀ पानि कठवता भरि लै आवा

श्रीरामचन्द्रजीके चरण नख को देखकर गङ्गाजी प्रसन्न हो गईं; परन्तु श्रीरामजी की बातें सुनकर मोहबुद्धि दूर हो गई, केवट रामकी आज्ञा पाकर कठौतेमें पानी भरकर ले आया ॥

अति आनन्द उमँगि अनुरागा ❀ चरण सरोज पखारन लागा
बरषि सुमन सुर सकल सिहाहीं ❀ एहि सम पुण्य पुञ्ज कोउ नाहीं

फिर आनन्द की उमंग में वह श्रीरामचन्द्रजीके चरण कमल धोने लगा। उस समय देवता लोग उसपर फूल वर्षाकर प्रशंसा करने और कहने लगे कि इसके समान पुण्यवान् दूसरा कोई नहीं है।

दोहा—पद पखारि जलपान करि, आपु सहित परिवार ।
पितर पार करि प्रभुहिं पुनि, मुदित गयउ लै पार ॥९८॥

श्रीरामजी के चरण धोकर कुटुम्ब समेत स्वयं उस जल को पीकर पहले अपने पितरों को पार कर, फिर सानन्द श्रीरामजी को गङ्गा पार ले गया ॥९८॥

उतरि ठाढ़ भए सुरसरि रेता ❀ सीय राम गुह लखन समेता
केवट उतरि दण्डवत कीन्हा ❀ प्रभु सकुचे यहि कछु नहिं दीन्हा

सीताजी, श्रीरामजी, गुह और लक्ष्मणजी नावपरसे उतरकर गङ्गाजीकी बालूपर खड़े हो गये केवटने उतरकर दण्डवत् किया, तब श्रीरामजीने सोचा कि इसे कुछ उतराई नहीं दी ।।

पिय हिय की सिय जाननिहारी ❀ मनि मुँदरी मन मुदित उतारी
कहेउ कृपालु लेहु उतराई ❀ केवट चरन गहेउ अकुलाई

तब पतिके हृदयकी बात जाननेवाली सीताजीने प्रसन्न चित्तसे मणि जटित मुँदरी उँगलीसे निकालीं ।। दयालु श्रीरामजीने केवटसे कहा अपनी उतराई लो, केवटने श्रीरामजीकेचरण पकड़े

नाथ आजु मैं काह न पावा ❀ मिटे दोष दुख दारिद दावा
बहुत काल मैं कीन्ह मँजूरी ❀ आजु दीन्ह विधि बनि भरिपूरी

हे स्वामी ! आज मैंने क्या नहीं पाया, मेरे दोष-दुख और दरिद्रता की आग मिट गई। मैंने बहुत दिनों तक मजदूरी की, लेकिन विधाताने आज ही भरपूर मजदूरी दी है ॥६॥

अब कछु नाथ न चाहिय मोरे ❀ दीन दयालु अनुग्रह तोरे
फिरती बार जो कछु मोहिं देबा ❀ सो प्रसाद मैं शिर धरि लेबा

हे दीनों पर दया करने वाले स्वामी ! आपकी कृपासे अब मुझे कुछ नहीं चाहिये। लौटते समय आप जो कुछ देंगे, वह प्रसाद सिरपर धरकर ले लूंगा ॥८॥

दोहा—बहुत कीन्ह प्रभु लषन सिय, नहिं कुछ केवट लेइ ।
बिदा कीन्ह करुनायतन, भक्ति विमल बर देइ ॥९९॥

श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मण और सीताजी ने बहुत उपाय किए, लेकिन केवट ने कुछ नहीं लिया । तब दया सागर रामजी ने उसे विमल भक्ति का वरदान देकर बिदा किया ॥९९॥

तब मज्जन करि रघुकुल नाथा ❀ पूजि पारथिव नायउ माथा
सियसुरसरिहिं कहेउ कर जोरी ❀ मातु मनोरथ पुरउब मोरी

तब रघुवंशके स्वामी रामजीने स्नान करके शिवजी का पारथी पूजन कर प्रणाम किया और सीताजी ने गङ्गाजीसे हाथ जोड़कर कहा हे माता ! मेरा मनोरथ पूर्ण कीजियेगा ॥ २ ॥

पति देवर सँग कुशल बहोरी ❀ आइ करौं जेहि पूजा तोरी
सुनि सिय विनय प्रेम रस सानी ❀ भइ तब विमल बारि बरबानी

जिससे मैं पति और देवरके साथ सकुशल लौट आकर, आपकी पूजा करूँ ॥३॥ प्रेम रससे भरी हुई सीताजीकी यह प्रार्थना प्रेम-रसमें सुनी सुनकर पवित्र जलसे यह सुन्दर शब्द निकला।।

सुनु रघुबीर प्रिया बैदेही ❀ तव प्रभाव जग विदित न केही
लोकप होहिं बिलोकत तोरे ❀ तोहिं सेवत सब सिधि कर जोरे

हे रामजीकी प्रिया सीताजी ! सुनो, तुम्हारा प्रभाव संसारमें किसे नहीं मालूम है ? तुम्हारे देखते ही लोग लोकपाल हो जाते हैं, सब सिद्धियाँ हाथ जोड़े हुए तुम्हारी सेवा करती हैं ॥

तुम जो हमहिं बड़ि बिनय सुनाई ❀ कृपा कीन्ह मोहिं दीन्ह बड़ाई
तदपि देवि मैं देब अशीशा ❀ सुफल होन हित निज बागीशा

तुमने हमसे जो बड़ी प्रार्थना की है यह मेरे ऊपर कृपा करके मुझे बड़ाई दी है । तथापि हे देवि ! मैं अपनी वाणी सफल होनेके लिए तुम्हें यह आशीर्वाद देती हूँ कि-॥८॥

दोहा—प्राणनाथ देवर सहित, कुशल कोशला आय ।
पूजिहिं सब मनकामना, सुयश रहहिं जग छाय ॥१००॥

अपने प्राणनाथ (श्रीरामचन्द्रजी) और देवर (लक्ष्मणजी) सहित कुशल मंगलसे अयोध्या पहुँचोगी और सारी मनोकामना पूर्ण होकर संसारमें सुन्दर कीर्ति छा जायगी ॥१००॥

गंग बचन सुनि मंगल मूला ❀ मुदित सीय सुरसरि अनुकूला
तब प्रभु गुहहिं कहेउ घर जाहू ❀ सुनत सूख मुख भा उर दाहू

गङ्गाजीकी इस मंगलमूल वाणीको सुनकर सीताजी प्रसन्न हो गयीं । तब श्रीरामचन्द्रने गुहसे कहा कि अब तुम लौट जाओ तो सुनते ही उसका मुँह सूख गया और हृदय जलने लगा ॥

दीन बचन गुह कह कर जोरी ❀ विनय सुनहु रघुकुलमणि मोरी
नाथ साथ रहि पन्थ दिखाई ❀ करि दिन चारि चरण सेवकाई

वह हाथ जोड़कर दीन वचनसे बोला—हे रघुकुलमणि! मेरी प्रार्थना सुनिये । हे नाथ! मैं आप के साथ रहकर बनकामार्ग दिखाऊँगा और इस प्रकार चार दिन आपके चरणोंकी सेवा करूँगा ॥

जेहि बन जाइ रहब रघुराई ❀ परनकुटी मैं करब सुहाई
तब मोहिं कहँ जस देब रजाई ❀ सोइ करिहउँ रघुबीर दोहाई

हे राम! आप जिस बनमें रहेंगे, में वहाँ आपके लिए सुन्दर पर्णकुटी बना दूँगा । फिर मुझको जैसी आज्ञा आप देंगे, करूँगा । हे रामजी! इसके लिए मैं बार २ आपकी दोहाई देता हूँ॥६॥

सहज सनेह राम लखि तासू ❀ संग लीन्ह गुह हृदय हुलासू
पुनि गुह ग्याति बोलि सब लीन्हें ❀ करि परितोष बिदा सब कीन्हें

निषादके इस स्वाभाविक स्नेहको देखकर श्रीरामचन्द्रजीने प्रसन्नतापूर्वक उसे अपने साथ ले लिया, फिर तो गुहने अपने जातिके सब लोगोंको बुलाकर उनको सन्तुष्ट करके लौटा दिया ॥

दोहा—तब गनपति शिव सुमिरि प्रभु, नाइ सुरसरिहिं माथ ॥
सखा अनुज सिय सहित बन, गमन कीन्ह रघुनाथ ॥१०१॥

इसके पश्चात् श्रीरामचन्द्रजी श्रीगणेशजी और शिवजीको स्मरण करके श्रीगंगाजीको शिर झुकाकर सखा निषाद, लक्ष्मण और सीता को साथ ले बनमें चल पड़े ॥ १०१ ॥

तेहि दिन भयउ विटपतर बासू ❀ लषन सखा सब कीन्ह सुपासू
प्रात प्रात-कृत करि रघुराई ❀ तीरथराज दीख प्रभु जाई

उस दिन वृक्षके नीचे ही सबका बास हुआ, लक्ष्मणजी और सखा निषादने वहाँ का सब प्रबंध किया। प्रातः श्रीरामचन्द्रजीने सन्ध्या-वंदन कर तीर्थराज प्रयागका दर्शन किया ॥

सचिव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी ❀ माधव सरिस मीत हितकारी
चारि पदारथ भरा भँडारू ❀ पुण्य प्रदेश देश अति चारू

उस समय सत्य मन्त्री, श्रद्धा प्यारी स्त्री और वेणीमाधव सरीखे मित्र ही हितेक्षु तथा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष से पूर्ण जितने पुण्यप्रदेश थे, वे ही उनके लिए अत्यन्त सुहावने राज्य हुए ॥४॥

क्षेत्र अगम गढ़ गाढ़ सुहावा ❀ सपनेहुँ जिन्ह प्रतिपक्षन पावा
सेन सकल तीरथ वर बीरा ❀ कलुष-अनीक-दलन रणधीरा

क्षेत्रकी अगम भूमि ही सुन्दर गढ़ था, जिसका शत्रु स्वप्नमें भी नहीं पा सकते थे और सब तीर्थ ही सेना और उसके उत्तम योद्धा पापरूपी सेनाका नाश करनेवाले थे ॥६॥

संगम सिंहासन सुठि सोहा ❀ क्षत्र अक्षयवट मुनि मन मोहा
चँवर यमुन अरु गंग तरंगा ❀ देखि होहिं दुख दारिद भंगा

गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम सुन्दर सिंहासन, अक्षयवट क्षत्र, और गंगा यमुना चँवर थीं, जिन सबका दर्शन करनेसे दुःख और दरिद्र नष्ट हो जाते हैं ॥८॥

दोहा—सेवहिं सुकृती साधु शुचि, पावहिं सब मन काम ।
बन्दी बेद पुरान गन, कहहिं विमल गुन ग्राम ॥१०२॥

ऐसे प्रयाग समाजकी पुण्यात्मा और पवित्र साधुजन सेवा करते हुए समस्त मनोकामनाको पूर्ण करते हैं। वेद पुराण रूपी समस्त वंदीजन आदिक प्रयागका ऐसा ही यशोगान करते हैं ॥

को कहि सकै प्रयाग प्रभाऊ ❀ कलुष पुञ्ज कुञ्जर मृगराऊ
अस तीरथपति दीख सुहावा ❀ सुख सागर रघुपति सुख पावा

प्रयागराजकी महिमाका वर्णन कोई क्या करेगा! वह पापरूपी हाथियोंका नाश करनेके लिए सिंहके समान है। तीर्थराजको देख श्रीरामचन्द्रजी सुखी हो गये ॥२॥

कहि सिय लषनहिं सखहिं सुनाई ❀ श्रीमुख तीरथराज बड़ाई
करि प्रणाम देखत बन बागा ❀ कहत महातम अति अनुरागा

फिर तो उन्होंने स्वयं अपने मुहँसे सीता लक्ष्मण और निषादको तीर्थराजकी बड़ाई कह सुनाई और फिर प्रणाम कर वहांके बनवागको देखते और प्रेमपूर्वक माहात्म्य कहते हुए चल दिए ॥

यहि बिधि आइ विलोकी बेनी ❀ सुमिरत सकल सुमंगल देनी
मुदित नहाय कीन्ह शिव सेवा ❀ पूजि यथा बिधि तीरथ देवा

इस प्रकार अब वह सुमंगलदाता त्रिवेणीके तट पर पहुँचे, उसका दर्शन किए फिर स्नान किए, और महादेवजीकी सेवा तथा समस्त देवताओंकी यथोचित पूजा की ॥ ६ ॥

तब प्रभु भरद्वाज पहँ आये ❀ करत दण्डवत मुनि उर लाये
मुनि मन मोद न कछु कहि जाई ❀ ब्रह्मानन्द राशि जनु पाई

पश्चात् मुनिश्रेष्ठ भरद्वाजके पास आए और दण्डवत् करते ही मुनिने उनको अपने हृदय से लगा लिया। मुनिके मनमें जो ब्रह्मानन्दका सुख हुआ वह कहा नहीं जाता ॥ ८ ॥

दोहा—दीन्ह अशीष मुनीश उर, अति अनंद अस जानि।
लोचन गोचर सुकृत फल, मनहुँ किये बिधि आनि ॥१०३॥

मुनिवर भरद्वाजजीने आनन्दित होकर श्रीरामचन्द्रजीको आशीर्वाद दिया और ऐसे प्रसन्न हुए मानों ब्रह्माने समस्त सुकृतका फल उनके समक्ष लाकर खड़ा कर दिया ॥ १०३ ॥

कुशल प्रश्न करि आसन दीन्हे ❀ पूजि प्रेम परिपूरन कीन्हे
कन्द मूल फल अंकुर नीके ❀ दिये आनि मुनि मनहुँ अमीके

कुशल प्रश्न पूछकर आसन दिया और प्रीति पूर्वक मुनिने सप्रेम पूजा की तथा कन्द मूल और अच्छे-अच्छे अँकुर जो अमृतके समान स्वाद देनेवाले थे, लाकर रख दिये ॥ २ ॥

सीय लषन जन सहित सुहाये ❀ अति रुचि राम मूल फल खाये
भये विगत श्रम राम सुखारे ❀ भरद्वाज मृदु बचन उचारे

फिर तो लक्ष्मण और गुह सहित श्रीरामचन्द्रजीने बड़े प्रेमसे मूल फल खाये ॥ थकावट दूरकर रामजी सुखी हुये। तब मुनिश्रेष्ठ भरद्वाज श्रीरामचन्द्रजीसे यह मीठी वाणी बोले ॥

आजु सफल तप तीरथ यागू ❀ आजु सफल जप जोग विरागू
सफल सकल शुभ साधन साजू ❀ राम तुमहिं अवलोकत आजू

हे राम ! आज मेरे तप, तीर्थ, यज्ञ, जप, योग और त्याग सब कुछ सफल हो गये हैं। हे श्रीरामचन्द्र ! आज आपका दर्शन करनेपर मेरे शुभ साधनोंकी सफलता मिल गई ॥६॥

लाभ अवधि सुख अवधि न दूजी ❀ तुम्हरे दरश आश सब पूजी
अब करि कृपा देहु वर एहू ❀ निज पद सरसिज सहज सनेहू

मेरे लाभ और सुखकी मर्यादा आपके दर्शन मात्रसे पूर्ण हो गई, अब आप कृपा करके मुझको यही वर दीजिये कि, आपके चरण-कमलोंमें मेरा सहज स्नेह बना रहे ॥ ८ ॥

दोहा—कर्म बचन मन छाँड़ि छल, जब लगि जन न तुम्हार।
तब लगि सुख सपनेहुँ नहीं, किये कोटि उपचार ॥१०४॥

क्योंकि जबतक यह जीव कर्म, मन और वचनोंसे कपट छोड़कर आपका दास नहीं हो जाता, चाहे करोड़ों उपचार क्यों न करे, उसे स्वप्नमें भी सुख नहीं मिलता ॥ १०४ ॥

सुनि मुनि बचन राम सकुचाने ❀ भाव भक्ति आनन्द अघाने
तब रघुबर मुनिसुयस सुहावा ❀ कोटि भाँति कहि सबहिं सुनावा

मुनिका ऐसा वचन सुनकर श्रीरामचन्द्र सकुचा गये तथा भक्ति भावके आनन्दसे पूर्ण हो गये ॥१॥ तब श्रीरामचन्द्र जी मनसे मुनिका करोड़ों भाँतिसे सुयश बखान करते बोले ॥२॥

सो बड़ सो सबगुन गन गेहू ❁ जेहि मुनीश तुम आदर देहू
मुनि रघुबीर परस्पर नवहीं ❁ बचन अगोचर सुख अनुभवहीं

हे मुनि! आप जिसका आदर करें वही बड़ा और सब गुणोंका घर है। भरद्वाजजी और श्रीरामचन्द्रजी परस्पर एक दूसरेको जो नमस्कार करने लगे,उस सुखको कौन अनुभव कर सकता है?॥

यहि सुधि पाइ प्रयाग निवासी ❁ बटु तापस मुनि सिद्ध उदासी
भरद्वाज आश्रम सब आये ❁ देखन दशरथ सुअन सुहाए

जब यह समाचार प्रयागवासियोंको मिला,तब वे ब्रह्मचारी, तपस्वी, मुनि, सिद्ध और उदासी सबलोग भरद्वाजजीके आश्रमपर राजादशरथके पुत्रोंके दर्शनके लिए आ पहुँचे ॥ ६ ॥

राम प्रणाम कीन्ह सब काहू ❁ मुदित भये लहि लोचन लाहू
देंहि अशीश परम सुख पाई ❁ फिरे सराहत सुन्दरताई

श्रीरामचन्द्रजीने सबको प्रणाम किया,लोग नेत्रोंका लाभ पाकर प्रसन्न हो गयेऔर परम सुख पाकर आशीर्वाद देने लगे और श्रीरामचन्द्रजीकी शोभा वर्णन करते हुए चले गए ॥८॥

दोहा–राम कीन्ह विश्राम निशि, प्रात त्याग अन्हाय।
चले सहित सिय लषन जन, मुदित मुनिहिं शिरनाय।१०५।

श्रीरामचन्द्रजी सारी रात विश्रामकर प्रातः होते ही प्रयागमें स्नानकर सीता और लक्ष्मण सहित प्रसन्नता पूर्वक मुनिको शिर नवाकर चल पड़े ॥ १०५ ॥

राम सप्रेम कहेउ मुनि पाहीं ❁ नाथ कहिय हम केहि मग जाहीं
मुनि मन विहँसि राम सन कहहीं ❁ सुगम सकल मग तुमकहँ अहहीं

श्रीरामचन्द्रजीने भरद्वाज मुनिसे पूछा कि हे नाथ! कहिए,अब हम किस मार्गसे जायें? तब मुनिने हँसकर कहा-हे राम! आपके लिए सभी मार्ग सुगभ हैं ॥ २ ॥

साथ लागि मुनि शिष्य बुलाये ❁ सुनि मन मुदित पचासक धाये
सबन्हि रामपर प्रेम अपारा ❁ सबहि कहहिं मगु दीख हमारा

तथा साथ भेजनेके लिए मुनिने जो शिष्योंको बुलाया तो वे प्रसन्न हो पचासोंकी संख्यामें दौड़ पड़े। सभीको श्रीरामचन्द्रसे प्रेम था, कहने लगे कि मार्ग हमारा देखा हुआ है ॥४॥

मुनि बटु चारि संग तब दीन्हे ❁ जिन्ह बहु जनम सुकृत सबकीन्हे
करि प्रणाम ऋषि आयसु पाई ❁ प्रमुदित हृदय चले रघुराई

उनमें जिनके अनेक जन्मके पुण्य थे, ऐसे चार ब्रह्मचारियोंको मुनिने उनके साथ कर दिया ॥ फिर तो श्रीरामचन्द्रजी भरद्वाजजीको प्रणामकर प्रसन्नचित्त वहांसे चल पड़े ॥६॥

ग्राम निकट जब निकसहिं जाई ❁ देखहिं दरश नारि नर धाई
होहिं सनाथ जनम फल पाई ❁ फिरहिं दुखित मन संग पठाई

गाँवके समीप पहुँचनेपर वहांके,स्त्री-पुरुष दौड़कर उनका दर्शन करते और जन्म लेनेका फल पाकर सनाथ हो अपने मनको उनके साथ भेजकर आप दुःखी हो लौट जाते ॥ ८ ॥

दोहा–बिदा किए बटु विनय करि, फिरे पाइ मन काम ।
उतरि नहाए जमुन जल, जो शरीर सम श्याम ॥१०६॥

आगे आकर श्रीरामचन्द्रने उन ब्रह्मचारियोंको लौटा दिया, वे अपनी अभिलाषा पाकर लौट गए। यमुना पारकर रामचन्द्रने स्नान किया जो उनके शरीरके समानही श्याम रंगकी हैं ॥

सुनत तीरबासी नर नारी ❀ धाये निज निज काज बिसारी
लषन राम सिय सुन्दरताई ❀ देखि करहिं निज भाग्य बड़ाई

यह सुनते ही यमुना तटके वासी स्त्री-पुरुष अपने गृहकार्यों को त्यागकर दौड़ पड़े और आकर श्रीरामचन्द्रजीकी सुन्दरताको देखकर अपने भाग्यको धन्य-धन्य कहने लगे ॥ २ ॥

अति लालसा सबहि मनमाहीं ❀ नाम गाँव पूछत सकुचाहीं
जे तिन्ह महँ वयवृद्ध सयाने ❀ तिन्ह करि युक्ति राम पहिचाने

उन सभी लोगोंके मनमें अत्यन्त लालसा थी किन्तु इनका नाम और ग्राम पूछते हुए सकुचाते थे। परन्तु वृद्ध और चतुरोंने अपनी युक्ति लगाकर श्रीरामचन्द्रजीको पहिचान ही लिया ॥४॥

सकल कथा कहि तिनहिं सुनाई ❀ बनहिं चले पितु आयसु पाई
सुनि सविषाद सकल पछिताहीं ❀ रानी राय कीन्ह भल नाहीं

फिर तो सब लोगोंको सारी कथा सुना दी और कहा कि पिताकी आज्ञा पालन करनेके लिए हम बनको चले हैं। यह सुनकर वे लोग कहने लगे कि राजा-रानीने अच्छा नहीं किया ॥ ६ ॥

तेहि अवसर तापस इक आवा ❀ तेजपुंज लघु बयस सुहावा
कवि अलखित गति वेष बिरागी ❀ मन क्रम बचन राम अनुरागी

उसी समय वहाँ एक तपस्वी आया जो अत्यन्त छोटी अवस्थाका किन्तु सुन्दर था। वह वैरागियोंका-सा वेष धारण किये था और श्रीरामचन्द्रजीमें प्रेम करने वाला था ॥८॥

दोहा–सजल नयन तनु पुलक निज, इष्टदेव पहिचानि ।
परेउ दंडजिमि धरणि तल, दशा न जाइ बखानि ॥१०७॥

तब तपस्वी अपने इष्टदेव श्रीरामचन्द्रको पहचान नेत्रोंमें जलभर पुलकित शरीरहो दण्डवत् करते हुए पृथ्वीपर पेटके बल गिर पड़ा, उसकी वह दशा बखानी नहीं जा सकती ॥१०७॥

राम सप्रेम पुलकि उर लावा ❀ परम रंक जनु पारस पावा
मनहुँ प्रेम परमारथ दोऊ ❀ मिलत धरे तनु कह सब कोऊ

श्रीरामचन्द्रजीने प्रेम पूर्वक उसे उठाकर हृदयसे लगा लिया, उस मिलन को देखकर सब कोई कहने लगे कि प्रेम और परमार्थ ही दोनों साक्षात् शरीर धारण किये हुए हैं ॥ २ ॥

बहुरि लषण पायन सो लागा ❀ लीन्ह उठाय उमँगि अनुरागा
पुनि सिय चरन धूरि धरि शीशा ❀ जननि जानि शिशु दीन्ह अशीशा

फिर वह लक्ष्मणजीके चरणोंपर गिरा तो लक्ष्मणजीने उसे प्रेम पूर्वक उठा लिया। पश्चात् उसने सीताजीके चरणोंकी धूलि ग्रहण की तो माताके समान सीताजीने भी उसे आशीर्वाद दिया ॥ ४ ॥

कीन्ह निषाद दण्डवत तेही ❁ मिलेउ मुदित लखि राम सनेही
पियत नैन पुट रूप पियूषा ❁ मुदित सुग्रसन पाइ जिमि भूखा

यह देख निषादने उसको दण्डवत् किया तो उसे रामजीका भक्त समझकर उसने प्रसन्नता पूर्वक निषादको हृदयसे लगा लिया। पश्चात् वह श्रीरामजीके रूपामृतको अपने नेत्रपुटसे पान करनेलगे

राम लषन सिय रूप निहारी ❁ होहिं सनेह बिकल नर नारी
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे ❁ जिन पठये बन बालक ऐसे

इस प्रकार वहाँ समस्त लोग श्रीरामचन्द्र, लक्ष्मण और सीताका दर्शनकर स्नेहसे व्याकुल हो गये। स्त्रियां कहने लगीं कि वे माता-पिता कैसे हैं कि जिन्होंने ऐसे बालकोंको बनमें भेज दिया है।।

दोहा–तब रघुबीर अनेक विधि, सखहिं सिखावन दीन्ह।
राम रजायसु शीश धरि, भवन गवन तेहि कीन्ह ।।१०८।।

तब श्रीरामचन्द्रजीने अनेक प्रकारसे सखा निषादको घर जानेके लिए समझाया तो वह श्रीरामचन्द्रजीकी आज्ञासे विवश हो अपने घरको लौट पड़ा ।। १०८ ।।

पुनि सिय राम लषन कर जोरी ❁ यमुनहिं कीन्ह प्रनाम बहोरी
चले ससीय मुदित दोउ भाई ❁ रवितनया कर करत बड़ाई

फिर तो सीता और लक्ष्मण सहित श्रीरामचन्द्रजीने यमुनाको प्रणाम किया और तब उस सूर्य नन्दिनीकी प्रशंसा करते हुए प्रसन्नता पूर्वक सीता सहित दोनों भाई आगे के लिए चल पड़े ।।

पथिक अनेक मिलहिं मगु जाता ❁ कहहिं सप्रेम देखि दोउ भ्राता
राज सुलक्षण अंग तुम्हारे ❁ देखि शोच हिय होत हमारे

मार्ग पर चलते हुए अनेक पथिक मिले, वे इन दोनों भाइयोंको देखकर प्रेमपूर्वक कहने लगे। आप लोग राज्य-लक्षणोंसे युक्त हैं, आपको देखकर हमारे मनमें चिन्ता होती है ।।४।।

मारग चलहु पयादेहि पाये ❁ ज्योतिष झूठ हमारेहिं भाये
अगम पंथ गिरि कानन भारी ❁ तेहि महँ साथ नारि सुकुमारी

कहिए किस कारण आप पाँव पैदलही मार्गमें चल रहे हैं, हमारा ज्योतिष झूठा है क्या?एक तो इस मार्गमें बड़े-बड़े पहाड़ और बन अगम हैं, दूसरे आपके साथमें यह सुकुमारी स्त्री हैं ।।

करि केहरि बन जाय न जोई ❁ हम सँग चलहिं जो आयसु होई
जाब जहाँ लगि तहँ पहुँचाई ❁ फिरब बहोरि तुमहिं शिर नाई

इस बनमें हाथी और सिंह भरे हैं जो देखे नहीं जाते, आज्ञा हो तो हम साथ चलें। जहाँ तक आप जायेंगे हम पहुँचा देंगे और फिर आपको प्रणाम करके लौट आयेंगे ।। ८ ।।

दोहा–यहि विधि पूछहिं प्रेमबश, पुलकगात जल नैन।
कृपासिंधु फेरहिं तिन्हहिं, कहि विनीत मृदु बैन ।।१०९।।

इस प्रकार पुलकित होकर, नेत्रोंमें जल भरे हुए, प्रेमके वशीभूत होकर सब मीठी वाणी द्वारा पूछते हैं। परन्तु कृपाके समुद्र श्रीरामचन्द्रजी सबको विनीत वाणी कहकर लौटाते हैं ।।१०९।।

जे पुर गाँव बसहिं मग माहीं ❀ तिन्हहिं नाग सुर नगर सिहाहीं
केहि सुकृती केहि घरी बसाये ❀ धन्य पुण्य मय परम सुहाये

श्रीरामचन्द्रजीके उस मार्गमें जो नगर और गाँव बसे थे उनकी देवलोक और नागलोकमे भी अधिक बड़ाई है। न जाने परमात्माने किस मुहूर्तमें बसाया था जो परम पुण्यमय और धन्य थे ॥

जहँ जहँ रामचरन चलि जाहीं ❀ तिन्ह समान अमरावति नाहीं
पुण्य पुञ्ज मग निकट निवासी ❀ तिन्हहिं सराहहिं सुरपुर बासी

जहाँ-जहाँ श्रीरामचन्द्रजीके चरण पहुँच जाते थे, उसके समान इन्द्रपुरी भी कुछ नहीं थी ॥ उस मार्गके निकट वासी पुण्योंके समूह हैं, जिनकी प्रशंसा इन्द्रपुरीके वासी भी करते थे ॥४॥

जे भरि नयन बिलोकहिं रामहिं ❀ सीता लषन सहित घनश्यामहिं
जे सर सरित राम अवगाहहिं ❀ तिन्हहिं देव सर सरित सराहहिं

जो सीता और लक्ष्मण सहित घनश्याम श्रीरामचन्द्रजीको देख लेते थे और जिस तालाब नदीमें श्रीराम स्नान करते थे उसकी प्रशंसा तो मानसरोवर और गंगाजी भी करती थीं ॥

जेहि तरु तर प्रभु बैठहिं जाई ❀ करहिं कल्पतरु तासु बड़ाई
परसि राम पद पद्म परागा ❀ वर्णत भूमि भूरि निज भागा

जिस वृक्ष के नीचे जाकर श्रीरामचन्द्र बैठते थे, उस वृक्ष की कल्पवृक्ष भी सराहना करते और श्रीरामजीके चरण कमलके परागको स्पर्श करके पृथ्वी अपने भाग्यकी बड़ाई करती थी ॥

दोहा—छाँह करहिं घन बिबुध गन, बरसहिं सुमन सिहाहिं ।
देखत गिरि वन बिहँग मृग, राम चले मगु जाहिं ॥११०॥

इस भाँति बादल छाया करते और देवतालोग फूल बरसाकर (भगवान् का) यशोगान करने लगे। श्रीरामचन्द्रजी पहाड़ों, बनों, पक्षी और मृगोंको देखते हुए मार्गमें चले जा रहे थे॥११०॥

सीता लषन सहित रघुराई ❀ गाँव निकट जब निकसहिं जाई
सुनि सब बाल वृद्ध नर नारी ❀ चलहिं तुरत गृह काज बिसारी

श्रीरामचन्द्रजी सीता और लक्ष्मण सहित जब गाँवोंके निकट पहुँचते, तब वहाँ उनके आगमन का समाचार सुनकर सब अपने घरका काम-काज छोड़कर झट उन्हें देखने चल देते थे ॥२॥

राम लषन सिय रूप निहारी ❀ पाय नैन फल होहिं सुखारी
सजल बिलोचन पुलक शरीरा ❀ सब भए मगन देखि दोउ बीरा

और पहुँचकर राम, सीता, लक्ष्मणका दर्शनकर सुखी हो जाते और नेत्रोंमें आनन्दका जल भर आता इस प्रकार राम लक्ष्मण दोनों वीरोंको देख लोग ऐसा मग्न हो जाते कि ॥४॥

बरनि न जाय दशा तिन केरी ❀ लहि जनु रंकन्ह सुरमणि ढेरी
एकन्ह एक बोलि सिख देहीं ❀ लोचन लाहु लेहु छिन एहीं

उनकी दशा वर्णन नहीं की जाती है मानों जन्मके दरिद्रको चिन्तामणिकी ढेरी मिल गई हो ॥ एक दूसरे को बुलाकर शिक्षा देते थे कि, आओ ! क्षणभर नेत्रोंका फल ले लो ॥६॥

रामहिं देखि एक अनुरागे ❀ चितवत चले जाहिं सँग लागे
एक नयन मग छबि उर आनी ❀ होहिं शिथिल तन मन बर बानी

श्रीरामचन्द्रजीको देखकर लोग तो ऐसा प्रेमानुरागी हो गए कि साथ जाने लगे और कुछ नेत्रोंसे उनकी छविको अपने हृदयमें धारण कर तन मन और वाणी से शिथिल हो जाते ।।

दोहा—एक देखि बट छाँह भल, डासि मृदुल तृण पात ।
कहहिं गँवाइय छिनकश्रम, गवनब अबहिं कि प्रात।।१११।।

कुछ लोग वरगदकी छाया देखकर तृण और पत्ते बिछाकर श्रीरामजीसे कहते थे कि क्षण भर यहाँ विश्रामकर फिर चाहे आप अभी चले जाइए या प्रातःकाल चले जाइयेगा ।।१११।।

एक कलस भरि आनहिं पानी ❀ अँचइय नाथ कहहिं मृदुबानी
सुनि प्रिय बचन प्रीति अति देखी❀ राम कृपालु सुशील विशेषी
जानी श्रमित सीय मन माहीं ❀ घरिक बिलंब कीन्ह बट छाहीं

कोई घड़ाभर पानी ले आकर कहते कि हे नाथ! जल पीजिए। उनकी अत्यन्त प्रीति देखकर रामजी सीताको थकी हुई जानकर, वटकी छायामें घड़ी भर समय बिताये ।।३।।

मुदित नारि नर देखहिं शोभा ❀ रूप अनूप नयन मन लोभा
एकटक सब सोहहिं चहुँओरा ❀ रामचन्द्र—मुखचन्द्र चकोरा
तरुण तमाल बरन तन सोहा ❀ देखत कोटि मदन मन मोहा

वह अनुपम रूप देखते ही मन मोह जाता है, चारों ओर सुन्दर कतारोंमें खड़े होकर लोग श्रीरामजीका मुख ऐसे ही देखते जैसे चन्द्रमाको चकोर देखते हैं। उनकी तरुण अवस्थाके शरीर पर करोड़ों कामदेव मोहित हो रहे थे ।।६।।

दामिनि बरन लषन सुठि नीके ❀ नख सिख सुभग भावते जीके
मुनि पट कठिन कसे तूणीरा ❀ सोहत कर कमलन्ह धनु तीरा

लक्ष्मणजी बिजलीके समान नखसे शिखा पर्यन्त बहुत ही सुन्दर और जीके सुहावने हैं। मुनियोंके-से वस्त्र, कमरमें तरकस कसे थे और हाथमें धनुषबाण शोभायमान था ।।८।।

दोहा—जटा मुकुट सीसनि सुभग, उर भुज नयन बिशाल ।
शरद पर्व बिधुवदन वर, लसत स्वेदकण जाल ।।११२।।

सिर पर सुन्दर सुहावनी जटा मुकुट और विशाल वक्षस्थल नेत्र और भुजायें थीं और शरद्चंद्र के समान सुन्दर मुखारविंद पर पसीनेके जलबिंदु मोतीके समान शोभा दे रहे थे ।। ११२ ।।

बरनि न जाइ मनोहर जोरी ❀ शोभा अमित मोरि मति थोरी
राम लषन सिय सुन्दरताई ❀सब चितवहिं मन बुधि चितलाई

वह मनोहर जोड़ी वर्णन करनेमें नहीं आ सकती क्योंकि मेरी बुद्धि बहुत कम है। उस समय वहाँ के सबलोग-लुगाई श्रीरामजी लक्ष्मण और सीताकी सुन्दरताको देख-देखकर रह गए ।।

थके नारि नर प्रेम पियासे ❀ मनहुँ मृगी मृग देखि दियासे
सीय समीप ग्राम तिय जाहीं ❀ पूछहिं अति सनेह सकुचाहीं

प्रेमके प्यासे सब स्त्री-पुरुष चकित हो पीछे दौड़ आते थे। सीताजीके पास गाँवकी स्त्रियाँ जातीं; परन्तु पूछनेके समय अतिशय स्नेहके कारण सकुचाती हैं ॥ ४ ॥

बार-बार सब लागहिं पाएँ ❋ कहहिं बचन मृदु सरल सुहाएँ
राजकुमार विनय हम करहीं ❋ तिय सुभाव कछु पूछत डरहीं

सब स्त्रियाँ बारम्बार सीताजीके चरणोंमें लगतीं और कोमल अति सुहावने वचन कहतीं कि हे राजकुमारी! हम आपसे विनती करती हैं, परन्तु स्त्री स्वभावसे पूछती हुई कुछ डरती हैं॥

स्वामिनि अविनय क्षमब हमारी ❋ बिलग न मानब जानि गँवारी
राजकुँवर दोउ सहज सलोने ❋ इन्हतें लहि दुति मरकत सोने

हे स्वामिनी! जो अपराध हो सो क्षमा करना और हमें गँवारी जानकर हमारे कहनेको बुरा न मानना। दोनों राजकुमारोंकी सुन्दरता मरकत मणि व सोनेकी क्रांतिके समान है॥

दोहा—श्यामल गौर किशोर वर, सुन्दर सुखमा ऐन।
शरद शर्वरी नाथ मुख, शरद सरोरुह नैन ॥११३॥

इनकी सुन्दरता, किशोर अवस्था बहुत ही सुन्दर है। ये सुखमा के धाम हैं। शरद् ऋतु के पूर्ण चन्द्रमाके सदृश इनका मुख है और शरद् ऋतुके कमलके से सुन्दर नेत्र हैं ॥११३॥

कोटि मनोज लजावति हारे ❋ सुमुखि कहहु को अहहिं तुम्हारे
सुनि सनेह मय मंजुल बानी ❋ सकुचि सीय मन महँ मुसुकानी

इनको देखकर करोड़ों कामदेव लजा जाते हैं सो हे सुमुखी! ये तुम्हारे कौन हैं? उन स्त्रियोंकी ऐसी स्नेह भरी मधुर वाणी सुनके सीताजी संकोचके कारण मन ही मन मुसकुराईं॥

तिन्हहिं बिलोकि बिलोकत धरनी ❋ दुहुँ सँकोच सकुचति बर बरनी
सकुचि सप्रेम बाल मृगनयनी ❋ बोली मधुर बचन पिक बयनी

सीताजी उन स्त्रियोंकी ओर देख, फिर पृथ्वीकी ओर देखने लगीं। संकोचसे सकुचा गईं। फिर वह हिरणके बच्चोंके समान नेत्रवाली पिकबयनी (सीता) मधुर वाणीके साथ बोलीं॥

सहज सुभाव सुभग तन गोरे ❋ नाम लषण लघु देवर मोरे
बहुरि बदन बिधु अंचल ढाँकी ❋ पिय तन चितइ भौंह करि बाँकी

और जो सहज स्वभावसे सुन्दर, गौर शरीर हैं इनका लक्ष्मण नाम है, ये मेरे छोटे देवर हैं॥ फिर अपना चन्द्रमुख अंचलकी ओटसे छिपा अपने प्रियतम रामकी ओर देखने लगीं॥

खंजन मंजु तिरीछे नयननि ❋ निजपति कहेउ तिन्हहिं सिय सयननि
भईं मुदित सब ग्राम बधूटी ❋ रंकन्ह रतनराशि जनु लूटी

इशारेसे अपने पतिको जता दिया। सीताजीकी इस चतुराईको देख गाँवकी सब स्त्रियाँ बहुत प्रसन्न हुईं, मानों दरिद्रोंने रत्नोंका ढेर लूट लिया हो॥ ८॥

दोहा—अति सप्रेम सिय पाँय परि, बहुबिधि देहिं अशीश।
सदा सोहागिनि रहहु तुम, जबलगि महि अहिशीश ॥११४॥

गाँवकी स्त्रियाँ सीताकी चतुराईको देख पाँवोंमें पड़ अनेक प्रकारका आशीर्वाद देती हैं और कहती हैं कि, हे स्वामिनि ! जब तक शेषजीके सिर पर पृथ्वी रहे तब तक आप सुहागिन बनी रहें ।।

पारबती सम पति प्रिय होहू ❀ देवि न हम पर छाँड़ब छोहू
पुनि पुनि विनय करहिं कर जोरी ❀ जो यहि मारग फिरिय बहोरी

आप पार्वतीके समान पतिको प्रिय होवें । हे देवि ! हम पर छोह न छोड़िएगा, फिर हाथ जोड़कर बिनती करती हैं कि हे देवि ! यदि आप फिर इस मार्गसे आवें तो ।। २ ।।

दर्शन देबि जानि निज दासी ❀ लखीं सीय सब प्रेम पियासी
मधुर बचन कहि कहि परितोषी ❀ जनु कुमुदिनी कौमुदी पोषी

हमें अपनी दासी जानकर अवश्य दर्शन देना ऐसा वचन सुन सबको प्रेमकी प्यासी जान सीताजीने मधुर वचन कहकर सबको ऐसे प्रसन्न किया कि मानों चाँदनी रात्रिको पाकर कमलिनी खिल गई हों ।

तबहिं लषन रघुबर रुख जानी ❀ पूँछेउ मगु लोगन मृदुबानी
सुनत नारि नर भये दुखारी ❀ पुलकित अङ्ग बिलोचन बारी

उस समय लक्ष्मणजीने प्रभुका रुख जानकर लोगोंसे कोमल वाणी द्वारा मार्ग पूछा । प्रभुके जानेका विचार जान लोग दुःखी हो नेत्रोंमें जल भर लाये ।। ६ ।।

मिटा मोद मन भये मलीने ❀ विधि निधि दीन्ह लेत जनु छीने
समुझि कर्म गति धीरज कीन्हा ❀ शोधि सुगम मगु तिन्ह कहि दीन्हा

सबका मन मलिन हो गया, मानों विधाताने निधि देकर छीन लिया हो । फिर कर्मकी गति समझकर मनमें धैर्य किया और अच्छा मार्ग शोध कर प्रभुसे कह दिये ।। ८ ।।

दोहा–लषन जानकी सहित बन, गमन कीन्ह रघुनाथ ।
फेरे सब प्रिय बचन कहि, लिये लाइ मन साथ ।।११५।।

तब लक्ष्मण और सीताके साथ प्रभुने बनको प्रस्थान किया, प्रभु उनके मनको तो अपने साथ ले लिए और लोगोंको प्रिय वचन कहकर लौटा दिये ।। ११५ ।।

फिरत नारि नर अति पछिताहीं ❀ दैवहिं दोष देहिं मन माहीं
सहित विषाद परस्पर कहहीं ❀ बिधि करतब सब उलटे अहहीं

पीछे लौटते हुए नर नारी बहुत पछताते हैं और मन ही मन दैवको दोष लगाते हैं, सब लोग विषादके साथ आपसमें कहते हैं अहह ! विधाताके सब कर्तव्य उलटे हैं ।। २ ।।

निपट निरंकुश निठुर निशंकू ❀ जेहि शशि कीन्ह सरुज सकलंकू
रूख कलपतरु सागर खारा ❀ तेहि पठये बन राजकुमारा

हाय ! विधाता बड़ा निष्ठुर है कि जिसने चन्द्रमाको रोगी और कलंक सहित किया है। जिसने रूखको कलपवृक्ष और समुद्रको खारा किया उसीने इन राजकुमारोंको बनमें भेजा है ।।

जौं पै इन्हहिं दीन्ह बनबासू ❀ कीन्ह बादि बिधि भोग बिलासू
ए बिचरहिं मगु बिनु पद त्राना ❀ रचे बादि बिधि बाहन नाना

जब विधाताने इनको बनवास दिया तो फिर उसने भोग विलासको वृथा ही बनाया। जब ये मार्गमें नंगे पाँव फिरते हैं तो फिर नाना प्रकारकी सवारियाँ वृथा ही क्यों बनाई? ॥६॥

ए महि परहिं डासि कुल पाता ❀ सुभग सेज कत सृजत विधाता
तरुवर बास इनहिं बिधि दीन्हा ❀ धवलधाम रचिपचिश्रम कीन्हा

यदि ये पृथ्वी पर पड़ी हुई पत्तियाँ ही बिछाके सो रहते हैं तो उस विधाताने सुन्दर शय्या क्यों रची जब विधाताने इन्हें वृक्षके नीचे निवास दिया तो फिर महल बनाके वृथाही परिश्रम क्योंकिया

दोहा—जो ये मुनिपट धरि जटिल, सुन्दर सुठि सुकुमार।
विविध भाँति भूषण बसन, बादि किये करतार ॥११६॥

जब ये सुन्दर सुकुमार श्रेष्ठ राजकुमार शिर पर जटा धर मुनिवेश धारण किए हैं तो फिर विधाताने नाना प्रकारके जो वस्त्र आभूषण आदि बनाए हैं वे वृथा ही हैं ॥११६॥

जो ये कन्द मूल फल खाहीं ❀ बादि सुधादि असन जग माहीं
एक कहहिं ए सहज सुहाये ❀ आप प्रगट भये बिधि न बनाये

यदि ये कन्दमूल फल भोजन करते हैं तो जगत्‌में अमृतादि पदार्थ वृथा हैं ॥१॥ कोई कहते हैं कि ये स्वयं आप ही प्रकट हुए हैं, इनको विधाताने नहीं रचा है ॥२॥

जहँ लगि बेद कही बिधि करनी ❀ श्रवण नयन मन गोचर बरनी
देखहु खोजि भुवन दस चारी ❀ कहँ अस पुरुष कहाँ असि नारी

क्योंकि विधाताकी करतूति वेदमें जहाँ तक कही है और जो देखने-सुनने और सोचनेमें आती है। उन सबको चौदहों भुवनमें खोजकर देख लो तो कहाँ ऐसा पुरुष और ऐसी स्त्री कहाँ है?

इनहिं देखि बिधिमन अनुरागा ❀ पटतर योग बनावन लागा
कीन्ह बहुत श्रम एक न आये ❀ तेहि इर्षा बन आनि दुराये

इनको देखकर विधाता मनमें प्रसन्न हो इनके समान ही बनाने लगा तो परिश्रम बहुत किया, परन्तु एक भी बना न सका, तब ईर्ष्याके इन्हें बनमें लाकर छिपा दिया ॥६॥

एक कहहिं हम बहुत न जानहिं ❀ आपुहिं परम धन्यकरि मानहिं
ते पुनि पुण्य पुञ्ज हम लेखे ❀ जे देखत देखहिं जिन देखे

कोई बोले कि, हम ज्यादा तो नहीं जानते पर इनके दर्शन करनेसे हम अपनेको अत्यन्त धन्य मानते हैं। हम उनको पुण्यकी राशि समझते हैं कि, जिन्होंने इनका दर्शन किया है और करेंगे ॥८॥

दोहा—यहि विधि कहि-कहि बचन प्रिय, लेहिं नयन भरि नीर।
किमि चलिहैं मारग अगम, सुठि सुकुमार शरीर ॥११७॥

इस प्रकार प्रिय वचन कहकर, लोग नेत्रोंमें जल भर लेते हैं और कहते हैं कि ये सुकुमार सुन्दर राजकुमार ऐसे कठिन मार्गमें कैसे चलेंगे ॥ ११७ ॥

नारि सनेह विकल सब होहीं ❀ चकई साँझ समय जिमि सोहीं
मृदु पद कमल कठिन मग जानी ❀ गहबरि हृदय कहहिं मृदुबानी

गाँवकी सब स्त्रियाँ स्नेहके कारण ऐसी बिकल हो रही हैं कि मानों संध्याके समय चकई दुःखित हो सोच रही है। उनके चरण कमलोंको अतिशय कोमल और बनको कठिन जानकर कहती हैं कि,

परसत मृदुल चरण अरुणारे ❀ सकुचति महि जिमि हृदय हमारे
जौं जगदीश इनहिं बन दीन्हा ❀ कस न सुमनमय मारग कीन्हा

इन लाल रंगके कोमल चरणोंको छूते ही पृथ्वी वैसे ही द्रवीभूत होती है जैसे हमारे हृदय द्रवीभूत होते हैं। यदि परमेश्वरने इनको बनवास दिया तो फिर मार्गको फूलोंका क्यों नहीं बनाया ।।

जो माँगे पाइय बिधि पाहीं ❀ राखिय सखि इन आँखिन्ह माहीं
जे नरनारि न अवसर आए ❀ तिन्ह सियराम न देखन पाए

यदि विधाताके पास माँगनेसे मिल सकता तो हे सखी ! हम इन्हें आँखोंमें रख लेतीं। जो स्त्री-पुरुष उस समय न आ सके, उन्हें राम और सीताका दर्शन न हो सका ।।६।।

सुनि सरूप पूछहिं अकुलाई ❀ अबलगि गये कहाँ दोउ भाई
समरथ धाय बिलोकहिं जाई ❀ प्रमुदित फिरहिं जन्म फल पाई

जब वे उनकी सुन्दरताको सुनते तो व्याकुल होकर पूछते कि, कहाँ तक गये होंगे ? तब ज्ञात होने पर जिन्हें सामर्थ्य थी, वे दौड़कर जा देखते और जन्मका फल पाकर लौट आते ।।८।।

दोहा—अबला बालक वृद्धजन, कर मीजहिं पछिताहिं ।
होहिं प्रेमवश लोग सब, राम जहाँ जहँ जाहिं ।।११८।।

स्त्री बालक और बूढ़े हाथ मलते हुए पछताते हैं। इस प्रकार श्रीरामचन्द्रजी जहाँ-जहाँ जाते थे, वहाँके लोग प्रेमके वशवर्ती हो जाते थे ।।११८।।

गाँव गाँव अस होइ अनन्दू ❀ देखि भानुकुल कैरव चन्दू
जे कछु समाचार सुनि पावहिं ❀ ते नृप रानिहि दोष लगावहिं

प्रत्येक गाँवमें सूर्यवंशकुमुदके चन्द्रमा श्रीरामचन्द्रजीका दर्शन करके बहुत आनन्द होता। जो लोग सुन पाते वे राजा और रानी कैकेयीको दोष लगाते हैं ।।२।।

कहहिं एक अति भल नरनाहू ❀ दीन्ह हमहिं निज लोचन लाहू
कहहिं परस्पर लोग लुगाई ❀ बातें सरल सनेह सुहाई

कोई कहता कि राजा दशरथ बहुत अच्छे हैं कि जिन्होंने हमको नेत्रोंका लाभ दिया। स्त्री-पुरुष आपसमें इस प्रकारकी सरल स्नेह-युक्त सुन्दर बातें कहते हैं ।। ४ ।।

ते पितु मातु धन्य जिन्ह जाये ❀ धन्य सो नगर जहाँ ते आये
धन्य सो देश शैल बन गाऊँ ❀ जहँ जहँ जाहिं धन्य सो ठाऊँ

वे पिता-माता धन्य हैं जिन्होंने इनको जन्म दिया और वह नगर भी धन्य है कि जहाँसे आये हैं। फिर वह देश, पहाड़, वन, गाँव और वह स्थान भी धन्य है कि जहाँ ये जायँगे ।।६।।

सुख पायउ बिरंचि रचि तेही ❀ ए जेहिके सब भाँति सनेही
राम लषन पथ कथा सुहाई ❀ रही सकल मग कानन छाई

ब्रह्मा उन्हें रचकर प्रसन्न हुआ कि जिनके वे सब प्रकार से प्रिय हैं। श्रीरामचन्द्रजी सीताजी और लक्ष्मणजी की कथा समस्त मार्ग और वनमें छा गई ॥ ८ ॥

दोहा—यहि विधि रघुकुल कमल रवि, मग लोगन्ह सुख देत।
जाहिं चले देखत बिपिन, सिय सौमित्र समेत ॥११९॥

इस प्रकार रघुवंश रूपी कमल के सूर्य श्रीरामचन्द्रजी मार्ग में मिलने वालों को सुख देते सीता तथा लक्ष्मण को साथ लिए बन को देखते चले जा रहे हैं ॥ ११९ ॥

आगे राम लषन पुनि पाछे ❋ तापस वेष विराजत काछे
उभय मध्य सिय सोहित कैसी ❋ ब्रह्म जीव बिच माया जैसी

आगे राम और उनके पिछे लक्ष्मण तपस्वियोंका वेश बनाये शोभायमान हैं। उनके बीच सीता वैसेही शोभायमान लगती हैं जैसे ब्रह्म और जीवके बीचमें माया सुशोभित रहती है ॥२॥

बहुरि कहउँ छबि जस मन बसई❋ जनु मधु मदन मध्य रति लसई
उपमा बहुरि कहौं जिय जोही ❋ जनु बुध बिधु बिच रोहिनि सोही

और जैसे वसन्त और कामदेव के बीचमें रति शोभायमान है ॥ उस उपमा को फिर अपने जी में सोचकर कहता हूँ कि जैसे चन्द्रमा और बुधके बीचमें रोहिणी शोभित हो ॥४॥

प्रभु पद रेख बीच बिच सीता ❋ धरति चरन मगु चलति सभीता
सीय राम पद अंक बराये ❋ लषन चलहिं मगु दाहिन बाँये

मार्गमें श्रीरामचन्द्रजीके चरण चिन्होंके बीचमें सीताजी अपना पाँव भय सहित ऐसे रखती थीं कि कहीं उनके पद-चिन्हों पर न पड़ जायँ और लक्ष्मणजी भी दायें और बायें होकर चलते थे ॥

राम लषन सिय प्रीति सुहाई ❋ बचन अगोचर किमि कहि जाई
खग मृग मगन देखि छबि होहीं❋ लिए चोर चित राम बटोही

इस प्रकार श्रीराम और लक्ष्मणकी प्रीतिका वर्णनकरना वाणीसे परे हैं, उनकी शोभाको देखकर मृग, पक्षी मग्न हो जाते थे क्योंकि बटोही श्रीरामचन्द्रजीने उन सबके चित्तको चुरा लिया था ॥

दोहा—जिन्ह जिन्ह देखे पथिक प्रिय, सिय समेत दोउ भाय।
भव मगु अगम अनंद तेइ, बिनु श्रम रहे सिराइ ॥१२०॥

जिन-जिन लोगों ने सीता सहित प्यारे पथिक श्रीराम-लक्ष्मण दोनों भाइयों को देखा वे इस संसाररूप अगम मार्गको बिना परिश्रम ही आनन्द से पार कर गए ॥ १२० ॥

अजहुँ जासु उर सपनेहुँ काऊ ❋ बसहिं राम सिय लषन बटाऊ
राम धाम पथ पाइहि सोई ❋ जो पथ पाव कबहुँ मुनि कोई

आज भी जिनके हृदय में कभी स्वप्न में भी, राम लक्ष्मण और सीता बटोही बास करते हैं, वह उस मार्ग को प्राप्त होता है कि जो कभी ही किसी मुनि को प्राप्त होता है ॥ २ ॥

तब रघुबीर श्रमित सिय जानी ❋ देखि निकट बट शीतल पानी
तहँ बसि कन्दमूल फल खाई ❋ प्रात नहाय चले रघुराई

तब श्रीरामचन्द्र जी ने सीताजी को थकी हुई जानकर एक विशाल वट-वृक्षके फल मूल खाकर रात भर विश्राम किया और भोर होते ही श्रीरामचन्द्र जी स्नान करके फिर चल पड़े ।।

देखत बन सर शैल सुहाए ❀ बालमीकि आश्रम प्रभु आए
राम दीख मुनिबास सुहावन ❀ सुन्दर गिरि कानन जल पावन

श्रीरामचन्द्रजी हर प्रकार बन को देखते हुए महर्षि वाल्मीकिजी के आश्रम पर आये। श्रीरामचन्द्रजीने देखा कि मुनिका निवास स्थान बड़ा ही सुन्दर है और वहाँका जल बड़ा पवित्र है।

सरनि सरोज विटप बन फूले ❀ गुंजत मंजु मधुप रस भूले
खग मृग विपुल कुलाहल करहीं ❀ बिरहित बैर मुदित मन चरहीं

सरोवर में कमल और वन में वृक्ष फूले हुए हैं, उनपर सुन्दर भौंरे रसमें गाते हुए गूँज रहे हैं। वहाँ पशु पक्षी अत्यन्त कलोल करते हैं जिनमें बैर भाव नहीं है, प्रसन्न मन से विचरण कर रहे हैं ।।

दोहा—शुचि सुन्दर आश्रम निरखि, हरषे राजिवनैन ।
सुनि रघुबर आगमन मुनि, आगे आए लैन ।।१२१।।

ऐसे पवित्र और सुन्दर आश्रम को देख कर कमल नयन श्रीरामचन्द्रजी प्रसन्न हो गए। इतने में मुनि श्रेष्ठ बालमीकिजी प्रभु का आगमन सुनकर स्वागतार्थ आगे लेने आये ।।१२१।।

मुनिकहँ राम दण्डवत कीन्हा ❀ आशिरबाद विप्रवर दीन्हा
देखि राम छवि नयन जुड़ाने ❀ करि सनमान आश्रमहिं आने

मुनि को देख श्रीरामचन्द्रजीने दण्डवत् किया, बालमीकिजीने आशीर्वाद दिया। श्रीराम जी की शोभा को देख कर मुनि के नेत्र तृप्त हो गये और वे उन्हें अपने आश्रममें लिवा लाये ।।

तब मुनि आसन दिए सुहाए ❀ मुनिवर अतिथि प्रान प्रिय पाए
कन्द मूल फल मधुर मँगाए ❀ सिय सौमित्रि राम फल खाए

इस प्रकार मुनि ने प्राण-प्रिय पाहुनों को पाकर उनको बैठने के लिए सुन्दर आसन दिया। फिर कंदमूल और फल मँगाये जिन्हें सीता और लक्ष्मणके साथ रामचन्द्रने खाया ।।४।।

बालमीकि मन आनन्द भारी ❀ मंगल मूरति नयन निहारी
दोउ कर कमल जोरि रघुराई ❀ बोले बचन श्रवन सुखदाई

बाल्मीकिजी इन मङ्गल मूर्तियोंको अपने नेत्रोंसे देखकर मनहीमन अत्यन्त आनंदितहुए। तबउसी समय अपने कमलवत् हाथोंको जोड़कर श्रीरामचन्द्रजी कानोंको सुख देने वाले मीठे वचन बोले।।

तुम त्रिकालदरशीं मुनिनाथा ❀ विश्व बदर जिमि तुम्हरे हाथा
अस कहि प्रभु सब कथा बखानी ❀ जेहि जेहि भाँति दीन्ह बन रानी

हे मुनिनाथ ! आप त्रिकालदर्शी हैं, सारा संसार आपके हाथ में वेर के समान है। ऐसा कहकर प्रभु ने सारी कथा कही कि जिस-जिस प्रकार से रानी ने वन दिया था ।।८।।

दोहा—तात बचन पुनि मातु हित, भाइ भरत अस राउ ।
मो कहँ दरस तुम्हार प्रभु, सब मम पुण्य प्रभाउ ।।१२२।।

तब एक तो पिताका वचन, दूसरे माताका हित, तीसरे भाई भरत जैसे सुयोग्य राजाका होना और चौथे हे प्रभो ! आपका दर्शन, यह मेरा पुण्य उदय हुआ ॥१२२॥

देखि पायँ मुनिराय तुम्हारे ❀ भये सुकृत सब सफल हमारे
अब जस राउर आयसु होई ❀ मुनि उदबेग न पावहिं कोई

सो हे मुनिराज ! आपके चरणोंका दर्शन कर लेनेपर आज मेरे सब सुकृत कर्म सफल हो गए ॥१॥ अब आप ऐसी आज्ञा दें कि जिससे कोई उद्विग्न भी न होवे ॥२॥

मुनि तापस जिनते दुख लहहीं ❀ ते नरेश बिनु पावक दहहीं
मंगल मूल विप्र परितोषू ❀ दहइ कोटि कुल भूसुर रोषू

जिनसे तपस्वियोंको दुःख मिलता है वह राजा नष्ट हो जाता है। ब्राह्मणोंको सन्तुष्टकरना मंगलोंका मूल है और ब्राह्मणोंका क्रोध करोड़ों कुलको विध्वंस कर डालता है ॥४॥

अस जिय जानि कहिय सोइ ठाऊँ ❀ सिय सौमित्रि सहित तहँ जाऊँ
तहँ रचि रुचिर परण तृन शाला ❀ बास करौं कछु काल कृपाला

ऐसा मनमें जानकर वह स्थान बतलाइए कि जहाँ सीता और लक्ष्मण सहित मैं जाऊँ॥ और वहीं सुन्दर तृणशाला बनाकर, हे कृपालु ! कुछ समय तक बास करूँ ॥६॥

सहज सरल सुनि रघुबर बानी ❀ साधु साधु बोले मुनि ज्ञानी
कस न कहहु अस रघुकुल केतू ❀ तुम पालक सन्तत श्रुति सेतू

श्रीरामचन्द्रजीकी इस सहज बातको सुनकर मुनियोंमें ज्ञानी वाल्मीकिजी उन्हें धन्य-धन्य कहने लगे, हे श्रीरामचन्द्रजी ! तुम ऐसा क्यों न कहो, तुम तो सदा वेदोंकी मर्यादाके पालक हो ॥८॥

छन्द–श्रुति सेतु पालक राम तुम जगदीश माया जानकी ।
जो सृजति जग पालति हरति रुख पाइ कृपानिधान की ॥
सो सहज शीश अहीश महिधर लषन सचराचर धनी ।
सुर काज धरि नर राज तनु चले दलन खलनिशिचर अनी॥५॥

हे श्रीरामचन्द्रजी ! आप मर्यादाका पालन करनेवाले हैं, और सीताजी आपकी माया हैं। जो आपका संकेत पाकर संसारको उत्पन्न, पालन और नाश करती हैं और सहस्रों शीशवाले (शेषनाग) पृथ्वीको धारण करनेवाले चराचर जगत्के स्वामी लक्ष्मणजी हैं। देवताओंके लिए मनुष्यरूप धारणकर आपलोग राक्षसोंकी सेनाका संहार करनेके लिए बनको चले हैं ॥

सोरठा–राम स्वरूप तुम्हार, बचन अगोचर बुद्धि पर ।
अविगत अकथ अपार, नेति नेति जेहि निगम कह ॥५॥

हे राम ! आपका स्वरूप वाणी और बुद्धिसे परे है, आपकी गति ऐसी अपार है कि कही नहीं जाती और वेद भी सदा जिसको नेति-नेति अर्थात् अन्त नहीं है ऐसा कहा करते हैं ॥५॥

जग पेखन तुम देखन हारे ❀ बिधि हरि शंभु नचावनिहारे
तेउ नहिं जानहिं मरम तुम्हारा ❀ और तुमहिं को जाननिहारा

हे श्रीरामजी ! जो संसारका प्रपंच देखनेवाले और ब्रह्मा, विष्णु महेशको भी नचाने वाले हैं वे भी आपके भेदको नहीं जानते, तब आपको जाननेवाला दूसरा कौन है ?॥२॥

सोइ जानै जेहि देहु जनाई ❀ जानत तुम्हहिं तुम्हहिं होइ जाई
तुम्हरी कृपा तुम्हहिं रघुनन्दन ❀ जानत भक्त भक्ति उर चन्दन

तुम्हें तो वही जान सकता है कि जिसे तुम जना देते हो और तुम्हें जानकर फिर तुम्हारा ही हो जाता है, उसके हृदयमें आपकी शीतल भक्ति चन्दनके समान बनी रहती है।॥४॥

चिदानन्द मय देह तुम्हारी ❀ बिगत बिकार जान अधिकारी
नर तनु धरहु सन्त सुर काजा ❀ चहहु कहहु जस प्राकृत राजा

हे श्रीरामजी ! आपका स्वरूप चिदानन्दमय है, इसे अधिकारी व्यक्ति ही जानता है । आप सन्तों और देवताओंका हित करनेके लिए ही मनुष्य शरीर धारण किए हैं ॥६॥

राम देखि सुनि चरित तुम्हारे ❀ जड़ मोहहिं बुध होहिं सुखारे
तुम्ह जो कहहु करहु सब साँचा ❀ जस काछिय तस चाहिय नाचा

हे राम ! तुम्हारा चरित्र देख-सुनकर मूर्ख मोह जाते और पण्डित सुखी होते हैं । आप जो कहते हैं, उसको सत्य करते हैं. सत्य ही है कि भेषके अनुकूल ही नाचना चाहिए ॥८॥

दोहा—पूछेउ मोहिं कि रहहुँ कहँ, मैं पूछत सकुचाउँ ।
जहँ न होउ तहँ देउँ कहि, तुमहिं देखावौं ठाउँ ॥१२३॥

जो मुझसे पूछते हो कि कहाँ रहूँ, सो इसको कहते हुए मैं सकुचाता हूँ । क्योंकि जहाँ आप न हों, वह स्थान मैं कहूँ; किन्तु आप तो सर्वत्र हैं फिरभी मैं वह स्थान दिखा देता हूँ।१२३।

सुनि मुनि बचन प्रेम रस साने ❀ सकुचि राम मन महँ मुसुकाने
बाल्मीकि हँसि कहहिं बहोरी ❀ वाणी मधुर अमिय रस बोरी

मुनि वाल्मीकिकी ऐसी प्रेमरससे सनी वाणी सुनकर श्रीरामचन्द्रजी मनमें संकुचित हो मुसकुराए । उसी समय वाल्मीकिजीने हँसकर अमृतरसमें सराबोर ऐसी वाणी कही ॥ २ ॥

सुनहु राम अब कहौं निकेता ❀ जहाँ बसहु सिय लषन समेता
जिनके श्रवण समुद्र समाना ❀ कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना

हे श्रीरामचन्द्रजी ! सुनो, अब मैं वह स्थान कहता हूँ कि जहाँ वास करोगे । जिनके श्रवण समुद्रके समान हों और उनमें प्रविष्ट होने को आपकी सुहावनी कथा नदियोंके समान होवे ॥ ४ ॥

भरहिं निरन्तर होहिं न पूरे ❀ तिन्हके हृदय सदन तव रूरे
लोचन चातक जिन्ह करि राखे ❀ रहहिं दरश जलधर अभिलाषे

इस प्रकारसे निरन्तर भरनेपरभी पूरे नहीं होते होंउन लोगोंका हृदयही आपका उत्तम सदन है। जिन्होंने अपने नेत्रों को चातकोंके समान कर रखा हो ओर जो दर्शनके इच्छुक हों ॥६॥

निदरहिं सिन्धु सरित सरबारी ❀ रूप बिन्दुजल होहिं सुखारी
तिन्हके हृदय सदन सुखदायक ❀ बसहु बन्धु सिय सह रघुनायक

जो उस पपीहेके समान आपके स्वरूप बूँदसे ही सुखी हो जाते हैं उनके हृदयमें आपका घर होवे ।। हे श्रीरघुनाथजी ! आप उस स्थान में लक्ष्मण और सीता सहित निवास करें ।।८।।

दोहा—यश तुम्हार मानस विमल, हंसिनि जीहा जासु ।
मुक्ताहल गुनगन चुनइ, बसहु राम हिय तासु ।।१२४।।

जिसकी जिह्वा आपके विमल यश रूपी मानसरोवर की हंसिनी हो और जो आपके गुणगान रूपी मोतियोंको ही चुँगा करती हो, हे श्रीरामचन्द्रजी ! आप उसीके हृदयमें जाकर वास कीजिये।

प्रभु प्रसाद शुचि सुभग सुवासा ❀ सादर जासु लहइ नित नासा
तुम्हहिं निवेदित भोजन करहीं ❀ प्रभु प्रसाद पट भूषण धरहीं

फिर जिसकी नासिका आपके पवित्र प्रसाद के सुगन्ध को प्राप्त करती है जो पहले आपको अर्पण करके फिर स्वयं भोजन करते हों और प्रभु का प्रसाद रूप ही वस्त्र व आभूषणों को धारण करतेहों।।

शीश नवहिं सुर गुरु द्विज देखी ❀ प्रीति सहित करि विनयविशेषी
कर नित करहिं राम पद पूजा ❀ राम भरोस हृदय नहिं दूजा

और जो गुरु, देवता और ब्राह्मणों को देखते ही शिर झुका देते हों और प्रीति सहित उनसे विनय करते हों और जो अपने हाथ से प्रति दिन आपके चरणों की पूजा करते हों ।।

चरन राम तीरथ चलि जाहीं ❀ राम बसहु तिन्हके मन माहीं
मन्त्रराज नित जपहिं तुम्हारा ❀ पूजहिं तुमहिं सहित परिवारा

फिर जो पाँवउठाकर रामतीर्थोंमें जाया करतेहैं, हे श्रीरामचन्द्रजी ! आप उन्हींके मनमेंबास कीजिए जो नित्य आपके "राम" ऐसे मन्त्रराज का जप करते हैं और कुटुम्ब समेत आपकी सेवामें रहते हों।।

तर्पण होम करहिं विधि नाना ❀ बिप्र जिमाय देहिं बहु दाना
तुम्हते अधिकगुरुहिं जिय जानी ❀ सरल भाव सेवहिं सनमानी

जो अनेक प्रकार से तर्पण और होम करते हैं और ब्राह्मणों को भोजन कराकर बहुत सा दान देते हों । जो आप से भी बढ़कर गुरु को जानते हों और उनकी सेवा करते हों ।।८।।

दोहा—सबकर माँगहिं एक फल, रामचरन रति होउ ।
तिन्हके मन मन्दिर बसहु, सिय रघुनन्दन दोउ ।।१२५।।

और जो इन सारी बातों का एक मात्र फल यह माँगते हों कि श्रीरामजी के चरणों में एक-मात्र प्रीति हो । उनके मन-मन्दिरमें सीता और दोनों रघुवंश कुमार बास कीजिए ।।१२५।।

काम क्रोध मद मान न मोहा ❀ लोभ न क्षोभ न राग न द्रोहा
जिन्हके कपट दम्भ नहिं माया ❀ तिन्हके हृदय बसहु रघुराया

जिनके हृदय में काम, क्रोध, मान, मोह, लोभ, शान्ति, प्रेम, द्रोह, ।।१।। कपट, दम्भ और माया नहीं है, हे श्रीरघुनाथजी ! उनके हृदय में बास कीजिए ।। २ ।।

सबके प्रिय सबके हितकारी ❀ सुख दुख सरिस प्रशंसा गारी
कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी ❀ जागत सोवत शरण तुम्हारी

जो सबको प्यारे, हित करने वाले और जिसको सुख-दुःख प्रशंसा और गाली भी समान होवे। जो सोच-विचार कर सच्ची बात कहते हों जिसको जागते सोते केवल आप की ही शरण हो ॥

तुम्हहिं छाँड़ि गति दूसरि नाहीं ❀ राम बसहु तिन्हके मन माहीं
जननी सम जानहिं पर नारी ❀ धन पराय विष ते विष भारी

आपको छोड़ जिसको दूसरी गति न हो, हे रामचन्द्रजी! आप उसी के हृदय में वास कीजिए जो पराई स्त्री को माता के समान समझता हो और पराये धन को बड़ा विष जानता हो ॥६॥

जे हरषहिं परसम्पति देखी ❀ दुखित होहिं परबिपति विशेखी
जिनहिं राम तुम प्राण पियारे ❀ तिनके उर शुभ सदन तुम्हारे

जो पराई सम्पत्ति को देखकर प्रसन्न हों और जो पराया दुःख देखकर बहुत दुखी हों, हे श्रीरामचन्द्रजी! जिनको आप प्राण के समान प्यारे हों उनका हृदय आपका सुन्दर घर होवे ॥८॥

दोहा—स्वामि सखा पितु मातु गुरु, जिन्हके सब तुम तात।
तिन्हके मन मन्दिर बसहु, सीय सहित दोउ भ्रात ॥१२६॥

हे रामचन्द्रजी! जिनके लिए सखा, पिता, माता और गुरु सब कुछ आप ही हैं। उनके मन मन्दिर में सीता सहित दोनों भाई बास करें ॥ १२६ ॥

अवगुण तजि सबके गुण गहहीं ❀ विप्र धेनु हित संकट सहहीं
नीति निपुण जिन्हके जग लीका ❀ घर तुम्हार तिन्हके मन नीका

जो अवगुण को त्याग कर सबके गुणों को ही ग्रहण करते हैं, जो गौ ब्राह्मण के लिए संकट सह लेते हैं। जिनकी गणना नीति-निपुण में है, उनके ही मन में आपका उत्तम घर हो ॥

गुण तुम्हार समुझहिं निजदोसू ❀ जेहि सब भाँति तुम्हार भरोसू
राम भक्त प्रिय लागहिं जेही ❀ तेहि उर बसहु सहित बैदेही

जो लोग शुभ कर्म तो आपका और अशुभ अपना समझते हों और जिन्हें सब प्रकार से आप ही का भरोसा हो, हे श्रीरामचन्द्रजी! उनके ही हृदय में आप जानकी सहित बसिए ॥४॥

जाति पाँति धन धर्म बड़ाई ❀ प्रिय परिवार सदन सुख दाई
सब तजि रहहिं तुम्हहिं लौ लाई ❀ तेहि के हृदय बसहु रघुराई

जो जाति-पाँति धन, धर्म और बड़ाई व प्यारा कुटुम्ब और घर सबको छोड़कर केवल आप ही से लौ लगाता हो, हे श्रीरामचन्द्रजी! तुम उसी के हृदय में बास करो ॥ ६ ॥

स्वर्ग नरक अपवर्ग समाना ❀ जहँ तहँ देखि धरे धनु बाना
मन क्रम बचन जो राउर चेरा ❀ राम करहु ताके उर डेरा

जिसके लिए स्वर्ग, नरक और मुक्ति भी एक समान हो और जो सब जगह आप ही को धनुषबाण लिए हुए देखता हो। जो आपका ही सेवक हो, हे श्रीरामचन्द्रजी! तुम उसके हृदय में वास करो ॥

दोहा—जाहि न चाहिय कबहुँ कछु, तुम्ह सन सहज सनेह।
बसहु निरन्तर तासु उर, सो राउर निज गेह ॥१२७॥

जिसे कभी कुछ नहीं चाहिये और जो आपसे ही स्वाभाविक स्नेह रखता हो, हे राम ! आप उसके ही हृदयमें सर्वदा वास करें, यही आपका घर है ।। १२७ ।।

इहि विधि मुनिवर ठाँव दिखाये ❀ बचन सप्रेम राम मन भाये
कह मुनि सुनहु भानुकुल नायक ❀ आश्रम कहौं समय सुख दायक

इस प्रकार मुनिश्रेष्ठ वाल्मीकिजीने रहनेके लिये स्थान दिखाया जो श्री रामचन्द्रजीको बहुत अच्छा लगा। तब मुनिने कहा हे सूर्य-वंश के नायक ! अब मैं समयानुसार सुख देनेवाला आश्रम बताता हूँ ।।

चित्रकूट गिरि करहु निवासू ❀ तहँ तुम्हार सब भाँति सुपासू
शैल सुहावन कानन चारू ❀ करि केहरि मृग विहँग विहारू

आप चित्रकूट पहाड़ पर निवास कीजिये, वहाँ आपको सब प्रकारकी सुविधा होगी। वह पर्वत और बन बड़ा ही सुहावना है उसमें हाथी, सिंह आदि बैर छोड़कर बिहार किया करते हैं ।।

नदी पुनीत पुरान बखानी ❀ अत्रि प्रिया निज तप बल आनी
सुरसरि धार नाउँ मन्दाकिनि ❀ जो सब पातक-पोतक डाकिनि

वहाँ एक पवित्र नदी है, पुराणोंमें जिसका वर्णन है, जिसे अनुसूयाजी अपने तपके बलसे लाई हैं वह गंगाजीकी धारा है, जो सब पाप रूपी बच्चोंको खानेके लिए डाकिनी है ।।६।।

अत्रि आदि मुनिवर तहँ बसहीं ❀ करहिं जोग जप-तप तन कसहीं
चलहु सफल श्रम सबकर करहू ❀ राम देहु गौरव गिरिवरहू

वहाँ अत्रि आदि श्रेष्ठ मुनि बसते हैं, वे योग, जप, द्वारा अपने शरीरको कसते हैं। हे राम ! आप चलकर सबका परिश्रम सफल करिये और पर्वतोंमें श्रेष्ठ चित्रकूट पर्वतको गौरव दीजिये ।।

दोहा—चित्रकूट महिमा अमित, कही महामुनि गाइ ।
आइ नहाए सरित वर, सिय समेत दोउ भाइ ।।१२८।।

महामुनि वाल्मीकिजीने चित्रकूटकी अत्यधिक महिमा गाकर कही (विस्तारसे बताई) तब सीता सहित दोनों भाइयोंने आकर सरितवर मन्दाकिनीमें स्नान किया ।।१२८।।

रघुबर कहेउ लषन भल घाटू ❀ करहु कतहुँ अब ठाहर ठाटू
लषन दीख पय उतर करारा ❀ चहुँदिशिफिरेउ धनुषजिमिनारा

रामजीने कहा हे लक्ष्मण ! यह घाट अच्छा है, अब कहीं ठहरनेका प्रबन्ध करो। लक्ष्मणजीने पयस्विनी नदीके उत्तर तटको देखा कि नाला धनुषके समान चारों दिशाओंमें घूमा हुआ है ।।

नदी पनच सर सम दम दाना ❀ सकल कलुष कलि साउज नाना
चित्रकूट जनु अचल अहेरी ❀ चुकइ न घात मार मुठ भेरी

लक्ष्मणजीने कहा, इस धनुषाकार घूमे हुए नाला रूपी धनुषकी प्रत्यंचा नदी(मंदाकिनी)है, शम दम और दान ही बाघ हैं जो कलियुगमें फल देने वाले पाप जैसे बहुतसे पशुओंको मार देता है ।।

अस कहि लषन ठाउँ देखरावा ❀ थल विलोकि रघुबर सुख पावा
रमेउ राम मन देवन्ह जाना ❀ चले सहित सुरपति परधाना

ऐसा कहकर लक्ष्मणजीने स्थान दिखलाया तो स्थान देखकर रामजीने सुख पाया। देवताओंने जब सुना कि रामजी यहाँ रह गए तो इन्द्रको अपना प्रधान बना चित्रकूटको चले ॥६॥

कोल किरात वेष सब आए ❀ रचे परन तृन सदन सुहाए
बरणि न जाइ मंजु दुइ शाला ❀ एक ललित लघु एक बिशाला

ये सब देवता कोल, किरातोंका वेश धारण करके आए और चित्रकूटमें पत्तों और घासके सुन्दर घर बनाये जो बखाने नहीं जाते, एक सुन्दर छोटा और दूसरा बड़ा था ॥८॥

दोहा—लषन जानकी सहित प्रभु, राजत रुचिर निकेत।
सोह मदन मुनि-वेष जनु, रति ऋतुराज समेत ॥१२९॥

लक्ष्मण और सीता सहित श्रीरामचन्द्रजी (पत्ते और घासकी) सुन्दर कुटीमें शोभा पा रहे हैं। मानों साक्षात् कामदेवही मुनिका वेष धारण किए रति और वसन्त सहित सुशोभित हो ॥१२९॥

अमर नाग किन्नर दिगपाला ❀ चित्रकूट आए तेहि काला
राम प्रणाम कीन्ह सब काहू ❀ मुदित देव लहि लोचन लाहू

देवता, नाग, किन्नर और दिक्पाल जब चित्रकूटमें आए तो श्रीरामजीने सबको प्रणाम किया। देवता नेत्रोंका लाभ पा राम-लक्ष्मण और सीताजीका दर्शन करके प्रसन्न हो गये ॥२॥

बरषि सुमन कह देव समाजू ❀ नाथ सनाथ भये हम आजू
करि बिनती दुख दुसह सुनाए ❀ हरषित निज निज सदन सिधाए

देवतागण फूल बरसाकर कहने लगे—हे नाथ ! आज हम सनाथ हो गए, सबने विनय करके अपना दुस्सह दुःख सुनाया और प्रसन्न होकर अपने अपने घर गये ॥४॥

चित्रकूट रघुनन्दन छाए ❀ समाचार सुनि सुनि मुनि आये
आवत देखि मुदित मुनिवृन्दा ❀ कीन्ह दण्डवत रघुकुल चन्दा

चित्रकूट पर्वतपर श्रीरामचन्द्रजी बसे हैं, यह समाचार सुनकर मुनि लोग देखनेके लिये आये। तब मुनि मण्डलीको प्रसन्न हो आते देखकर, रघुवंशमें चन्द्रमा तुल्य रामजीने उन्हें प्रणाम किया ॥६॥

मुनि रघुबरहिं लाइ उर लेहीं ❀ सुफल होन हित आशिष देहीं
सिय-सौमित्र राम छबि देखहिं ❀ साधन सफल सकल करि लेखहिं

मुनिगण श्रीरामचन्द्रजीको हृदय लगाते और आशीर्वाद देते हैं। सब लोग सीता लक्ष्मण और श्रीरामजीकी छबिको देखते हैं और अपने सम्पूर्ण साधनोंको सफल समझते हैं ॥८॥

दोहा—यथा योग सनमानि प्रभु, बिदा किये मुनिवृन्द।
करहिं जोग जप यज्ञ तप, निज आश्रमन्हि सुछन्द ॥१३०॥

यथोचित सम्मान करके श्रीरामजीने मुनियोंको बिदा किया। वे लोग अपने-अपने आश्रमोंमें निर्भय होकर योग, जप, यज्ञ और तप करने लगे ॥ १३० ॥

यह सुधि कोल किरातन्ह पाई ❀ हरषे जनु नव निधि घर आई
कन्दमूल फल भरि भरि दोना ❀ चले रंक जनु लूटन सोना

जब वहाँ श्रीरामजीके आनेका समाचार कोल और किरातोंनें पाया तो वे इतने प्रसन्न होकर चले मानों दरिद्र सोना लूटने जा रहे हों ।।२।।

तिन्ह महँ जिन्ह देखे दोउ भ्राता ❀ अपर तिन्हहिं पूछहिं मगु जाता
कहत सुनत रघुबीर निकाई ❀ आइ सबन्हि देखे रघुराई

उनमें जिन्होंने दोनों भाइयोंको देखा था, उनसे दूर राह चलते जन भी पूछते हैं। इस प्रकार श्रीरामचन्द्रजीकी निकाई कहते-सुनते उन सबने आकर श्रीरामजीको देखा ।।४।।

करहिं जोहारु भेंट धरि आगे ❀ प्रभुहिं बिलोकहिं अति अनुरागे
चित्र लिखे जनु जहँ तहँ ठाढ़े ❀ पुलक शरीर नयन जल बाढ़े

वे लोग आगे उपहार रखकर प्रणाम करते हैं और श्रीरामचन्द्रजीको प्रेमसे देखते हैं। वे सब चित्र लिखेसे जहाँके तहाँ निश्चल खड़े हैं, शरीरमें रोमांच हो रहा है और नेत्रोंमें जल बढ़ गया है ।।

राम सनेह मगन सब जाने ❀ कहि प्रिय बचन सकल सनमाने
प्रभुहिं जोहारि बहोरि बहोरी ❀ बचन बिनीत कहहिं कर जोरी

श्रीरामजीने उन सबको स्नेहमें मग्न समझा, तब प्रिय वचन कहकर सबका सम्मान किया। फिर वे सब श्रीरामचन्द्रजीको बारम्बार प्रणाम कर हाथ जोड़कर यह नम्र वचन कहते हैं ।।

दोहा—अब हम नाथ सनाथ सब, भये देखि प्रभु पाय।
भाग हमारे आगमन, राउर कोशल राय ।।१३१।।

हे नाथ ! अब हम आपके चरण देखकर सनाथ हो गये। हे कोशलराय ! हमारे भाग्यसे आपका आगमन हुआ ।।१३१।।

धन्य भूमि बन पंथ पहारा ❀ जहँ जहँ नाथ पाउँ तुम्ह धारा
धन्य बिहँग मृग कानन चारी ❀ सफल जनम भये तुम्हहिं निहारी

हे नाथ ! वह भूमि, वह बन, वह मार्ग, जहाँ-जहाँ आपने चरण रक्खे हैं वे सब धन्य हैं। जंगली पशु-पक्षी भी धन्य हैं जिनके जन्म आपके दर्शनसे सफल हो गये ।।२।।

हम सब धन्य सहित परिवारा ❀ देखि दरश भरि नयन तुम्हारा
कीन्ह बास भल ठाउँ बिचारी ❀ इहाँ सकल रितु रहब सुखारी

हम सब लोग भी सकुटुम्ब धन्य हैं क्योंकि नेत्र भरकर आपकी शोभाको देखेंगे और आपने अच्छा स्थान समझकर निवास किया; यहाँ आप सब ऋतुओंमें सुखी रहेंगे ।।४।।

हम सब भाँति करब सेवकाई ❀ करि केहरि मृग बाघ बराई
बन बेहड़ गिरि कन्दर खोहा ❀ सब हमार प्रभु पग पग जोहा

हम लोग सब प्रकारसे आपकी सेवा करेंगे। हाथी, सिंह, सर्प और शेरसे बचायेंगे। यहाँके बन, बावली, पर्वतकी गुफायें और खोह सब हमारा पग-पग देखा हुआ है ।।६।।

तहँ तहँ तुम्हहिं अहेर खेलाउब ❀ सर निरझर भल ठाउँ देखाउब
हम सेवक परिवार समेता ❀ नाथ न सकुचब आयसु देता

हम लोग जहाँ-तहाँ आपको शिकार खेलावेंगे और तालाब झरने आदि अच्छे-अच्छे स्थान दिखायेंगे। हम सकुटुम्ब आपके सेवक हैं, हे नाथ! आप आज्ञा देनेमें मत सकुचायेंगे ॥

दोहा—बेद बचन मुनिमन अगम, ते प्रभु करुना ऐन।
बचन किरातन्ह के सुनत, जिमि पितु बालक बैन ॥१३२॥

जो प्रभुजी वाणीसे अगम्य हैं, वेद और मुनिगण भी जिनका पार नहीं पाते, कृपालु प्रभु किरातोंके वचन इस प्रकार सुनते हैं जैसे पिता बालकके वचन सुनता है ॥१३२॥

रामहिं केवल प्रेम पियारा ❀ जानि लेउ जो जाननि हारा
राम सकल बनचर तब तोषे ❀ कहि मृदु बचन प्रेम परिपोषे

श्रीरामजीको केवल प्रेम प्यारा है इस बातको जो जाननेवाला है वह जान ले। श्रीरामजीने संपूर्ण वनवासियोंको सन्तुष्ट किया और नम्र वचन कहकर प्रेमवाक्यों से उनके मनको परितुष्ट किया ॥

बिदा किये सिरुनाइ सिधाये ❀ प्रभु गुन कहत सुनत घर आए
एहि विधि सिय समेत दोउ भाई ❀ बसहिं बिपिन सुर मुनि सुखदाई

श्रीरामजीने उन्हें विदा किया वे प्रणाम करके चले और श्रीरामजीके गुण कहते अपने घर आये ॥ इस प्रकार सीता सहित देवता और मुनियोंको सुख देनेवाले दोनों भाई बनमें जा बसे ॥

जबते आइ रहे रघुनायक ❀ तबते बन भये मंगल दायक
फूलहिं फलहिं बिटप बिधि नाना ❀ मंजु लसित बर बेलि बिताना

जबसे श्रीरामचन्द्रजी आकर रहने लगे, तबसे बन मंगलदायक हो गया। श्रेष्ठ लताओंसे सुन्दर वितानयुक्त वृक्ष नाना प्रकारसे फूलने और फलने लगे ॥

सुरतरु सरिस सुभाव सुहाए ❀ मनहुँ बिबुध बन परिहरि आए
गुन्ज मंजुतर मधुकर श्रेनी ❀ त्रिविध बयारि बहइ सुखदेनी

वे वृक्ष स्वभावतः कल्पवृक्ष समान सुशोभित हैं, मानों नंदन बनको छोड़कर स्वर्गसे मृत्यु लोकमें चले आये हैं, भ्रमर मंडली अति सुन्दर गुंजार कर रही है और शीतल मंद वायु बहता है ॥

दोहा—नीलकंठ कल कंठ सुक, चातक चक्क चकोर।
भाँति भाँति बोलहिं बिहँग, स्रवन सुखद चित चोर ॥१३३॥

मोर, कोयल, तोता, पपीहा, चक्रवाक तथा चकोरादि नाना प्रकारके पक्षी बोलते हैं जो कानोंको सुख देनेवाला और चित्तको चुरा लेनेवाला है ॥१३३॥

करि केहरि कपि कोल कुरंगा ❀ विगत बैर बिचरहिं सब संगा
फिरत अहेर राम छवि देखी ❀ होहिं मुदित मृग वृंद विशेखी

हाथी, सिंह, बन्दर, सुअर और हिरन बैर रहित होकर सब एक साथ बिचरते हैं, तब शिकार के लिऐ घूमते हुए श्रीरामचन्द्रजीके सौन्दर्यको देखकर मृगोंका समूह प्रसन्न हो जाता है ॥

बिबुध बिपिन जहँ लगि जगमाहीं ❀ देखि राम बन सकल सिहाहीं
सुरसरि सरसइ दिनकर कन्या ❀ मेकल सुता गोदावरि धन्या
सरवर सिन्धु नदी नद नाना ❀ मंदाकिनि कर करहिं बखाना

संसारमें देवताओंके जितने बन हैं सब श्रीराम-बनको देखकर ईर्ष्या करते हैं। गंगा, यमुना, सरस्वती, नर्वदा और गोदावरी आदिक नदियाँ कि जो धन्य हैं वे तथा सब बड़े सरोवर, समुद्र, नदी और नद सब मंदाकिनीकी प्रशंसा करते हैं ॥

उदय अस्त गिरि अरु कैलासू ❁ मन्दर मेरु सकल सुर बासू
सैल हिमांचल आदिक जेते ❁ चित्रकूट यश गावहिं तेते
बिंध्य मुदित मन सुख न समाई ❁ बिनु श्रम बिपुल बड़ाई पाई

उदयाचल, अस्ताचल, कैलास, मन्दराचल सब देवताओंका निवास-स्थान सुमेरुगिरि और हिमांचल आदि जितने पर्वत हैं, सब चित्रकूटकी महिमा गाते हैं। विन्ध्याचल तो इतना प्रसन्न है कि उसके मनमें सुख नहीं समाता, क्योंकि उसको बिना परिश्रमके ही बहुत बड़ाई मिली है।

दोहा—चित्रकूटके बिहँग मृग, बेलि विटप तृन जाति।
पुण्य पुञ्ज सब धन्य अस, कहहिं देव दिनराति ॥१३४॥

चित्रकूटके पशु, पक्षी, लता, वृक्ष और सब उद्भिज जीव धन्य और पुण्यके समूह हैं ऐसा रात-दिन देवता कहते हैं ॥ १३४ ॥

नयनवन्त रघुबरहिं विलोकी ❁ पाइ जन्म फल होहिं बिसोकी
परसि चरन चर अचर सुखारी ❁ भए परम पदके अधिकारी

चेतन जीव श्रीरामचन्द्रजीको देखकर और अपने जन्मका फल पाकर शोक रहित हुए। चराचर जीव श्रीरामचन्द्रजीके चरणोंको स्पर्श करके सुखी हो मोक्षके अधिकारी हुये ॥

सो बन सैल सुभाय सुहावन ❁ मंगल मय अति पावन पावन
महिमा कहिय कवन बिधि तासू ❁ सुखसागर जहँ कीन्ह निवासू

वह बन और पर्वत स्वभावतः सुहावने मगलमय और अत्यधिक पवित्र हैं, जिनकी महिमा किस प्रकारसे कही जा सकती है जहाँ स्वयं सुख सागर श्रीरामचन्द्रजीने ही निवास किया था ॥

बन पयोधि तजि अवध बिहाई ❁ जहँ सिय राम लषन रहे आई
कहि न सकहिं सुखमा जसकानन ❁ जौं शत सहस होहिं सहसासन

जिस बनमें सीता, श्रीराम और लक्ष्मण क्षीर सागर और अयोध्याको त्याग कर वहाँ आके निवास किए, उस बनकी शोभा यदि एक लाख शेषनाग हों तो भी नहीं कह सकते ॥

सो मैं बरनि कहौं बिधि केहीं ❁ डाबर कमठ कि मन्दर लेहीं
सेवहिं लषन करम मन बानी ❁ जाइ न शील सनेह बखानी

उसे मैं किस प्रकारसे वर्णन करूँ, क्या कछुआ मन्दराचल पर्वतको उठा सकता है? लक्ष्मणजी सीता और श्रीरामजीकी मनसा, वाचा, कर्मणासे जो सेवा करते हैं, वह शील, स्नेह बखाना नहीं जा सकता ॥

दोहा—छिन छिन लखि सियराम पद, जानि आपुपर नेहु।
करत न सपनेहुँ लषन चित, बन्धु मातु पितु गेहु ॥१३५॥

लक्ष्मणजी प्रति क्षण सीता और श्रीरामचन्द्रजीके चरण देखकर और उनका अपने ऊपर प्रेम जानकर स्वप्नमें भी माता-पिता, भ्राता और घरका स्मरण नहीं करते ॥१३५॥

राम संग सिय रहति सुखारी ❀ पुर परिजन गह सुरति बिसारी
छिन-छिन पिय विधुबदननिहारी ❀ प्रमुदित मनहुँ चकोर कुमारी

श्रीरामजीके साथ सीताजी नैहरके लोग, कुटुम्ब और घरकी सुध भूलकर सुखी रहतीं ।। वह प्रतिक्षण पतिके चन्द्रवत् मुखको देखकर ऐसी प्रसन्न रहतीं मानों चकोरी प्रसन्न है ।।

नाह नेह नित बढ़त बिलोकी ❀ हरषित रहति दिवस जिमि कोकी
सिय मन राम चरन अनुरागा ❀ अवध सहस सम बन प्रिय लागा

पतिके प्रेमको बढ़ता हुआ देखकर सीताजी चकईकी तरह प्रसन्न रहतीं । सीताजीके मनमें श्रीरामजीके चरणोंमें ऐसा प्रेम था कि सैकड़ों अयोध्याके समान ही बन उन्हें प्रिय लगता ।।

परन कुटी प्रिय प्रियतम संगा ❀ प्रिय परिवार कुरंग विहंगा
सासु ससुर सब मुनि तिय मुनिवर ❀ असन अमिय सम कन्द मूल फर

प्रियतम पति के साथ पर्णशाला ही प्रिय है, हिरनें और पक्षी ही प्यारे कुटुम्ब हैं, मुनि तिय सास और मुनिवर ससुर के समान हैं, कन्द मूल और फल ही अमृत के समान भोजन हैं ।।

नाथ साथ साथरी सुहाई ❀ मदन शयन शत सम सुखदाई
लोकप होहिं विलोकत जासू ❀ तेहि कि मोह सक विषय विलासू

सीताको पतिके साथ सुन्दर साथ ही कामदेवकी सैकड़ों शय्याके समान सुख देनेवाली थी। जिसके केवल देखने मात्रसे मनुष्य लोकपाल हो जाते हैं क्या उसे वियष विलास मोह सकतेहैं?

दोहा—सुमिरत रामहिं तजहिं जन, तृणसम विषय बिलास।
राम प्रिया जगजननि सिय, कछु न आचरज तासु ।।१३६।।

जिन श्राराम के स्मरण करते ही मनुष्य विषय-सामग्री को तिनके के समान त्याग देते हैं। सीताजी उन्हीं राम की स्त्री और संसार की माताहैं,इसलिए उनके लिए कुछ आश्चर्य नहीं।।

सीय लषन जेहिबिधिसुखलहहीं ❀ सोइ रघुनाथ करहिं सोइ कहहीं
कहहिं पुरातन कथा कहानी ❀ सुनहिं लषन सियअति सुखमानी

जिस प्रकार सीताजी और लक्ष्मण को सुख मिलता है श्रीरामजी वही करते हैं। श्रीरामजी पुराणों की कथायें कहते, जिसे सीता और लक्ष्मण अत्यन्त सुख मान कर सुनते हैं ।।

जब जब राम अवध सुधि करहीं ❀ तब तब बारि विलोचन भरहीं
सुमिरि मातु पितु परिजन भाई ❀ भरत सनेह सील सेवकाई
कृपासिन्धु प्रभु होहिं दुखारी ❀ धीरज धरहिं कुसमय विचारी

जब-जब श्रीरामजी अयोध्या की याद करते हैं, तब-तब नेत्रों में जल भर आता है। माता, पिता, कुटुम्ब और भाई भरत के प्रेम शिष्टाचार और सेवा का स्मरण कर कृपा-सागर, श्रीरामजी दुःखी हो जाते हैं, पर कुसमय विचार कर धैर्य धारण करते हैं ।।

लखि सियलषणविकलहोइजाहीं ❀ जिमिपुरुषहिं अनुसर परिछाहीं
प्रिया बन्धु गति लखि रघुनन्दन ❀ धीर कृपालु भक्त उर चन्दन
लगे कहन कछु कथा पुनीता ❀ सुनि सुख लहहिं लषन अरुसीता

श्रीरामजी को दुःखी देखकर सीताजी और लक्ष्मणजी दोनों जन इस प्रकार व्याकुल हो जाते हैं जिस प्रकार छाया व्यक्ति का अनुसरण करती है। स्त्री और भाई की यह दशा देखकर धैर्यवान् कृपालु और भक्तों को सुख देनेवाले श्रीरामचन्द्रजी पवित्र कथायें कहने लगते हैं जिसे सुनकर सीता और लक्ष्मण को सुख मिलता है ॥८॥

दोहा—राम लषन सीता सहित, सोहत परन निकेत।
जिमि बासव बस अमरपुर, शची जयन्त समेत ॥१३७॥

सीता और लक्ष्मण सहित श्रीरामचन्द्रजी पर्णकुटी में इस प्रकार शोभा पाते हैं, जिस प्रकार इन्द्राणी और जयन्त सहित इन्द्रपुरी में इन्द्र निवास करते हैं ॥१३७॥

जोगवहिं प्रभु सिय लषनहिं कैसे ❀ पलक बिलोचन गोलक जैसे
सेवहिं लषन सीय रघुबीरहिं ❀ जिमि अविवेकी पुरुष शरीरहिं

सीता और लक्ष्मण की रक्षा प्रभु इस प्रकार करते हैं जैसे पलकें दोनों आँखों की रक्षा करती हैं ॥ १ ॥ लक्ष्मणजी और सीताजी रामजी की ऐसी सेवा करते हैं कि जैसे मूर्ख मनुष्य अपने शरीर की सेवा करते हैं ॥ २ ॥

यहि विधि प्रभु बनबसहिं सुखारी❀ खग मृग सुर तापस हितकारी
कहेउँ राम बन गवन सुहावा ❀ सुनहु सुमंत अवध जिमि आवा

इस प्रकार पशु, पक्षी, देवता और तपस्वियों के हितकारी श्रीरामचन्द्रजी बन में सुखसे बसते हैं ॥३॥ रामजी का सुन्दर बन गमन कहा, अब सुमन्त अयोध्या में जैसे आए, वह सुनिये॥४॥

फिरेउ निषाद प्रभुहिं पहुँचाई ❀ सचिव सहित रथ देखेसि आई
मंत्री विकल बिलोकि निषादू ❀ कहि न जाइ जस भयउ विषादू

निषाद श्रीरामचन्द्रजी को पहुँचाकर लौटा तो उसने आकर मन्त्री सहित रथ को देखा। तब मन्त्री को व्याकुल देख कर निषादराज को जैसा दुःख हुआ, वह कहा नहीं जा सकता॥६॥

राम राम सिय लषन पुकारी ❀ परेउ धरनितल व्याकुल भारी
देखि दखिन दिशि हय हिहिनाहीं ❀ जनु बिनु पंख विहँग अकुलाहीं

सुमन्त राम-राम, सीता और लक्ष्मण कह कर अत्यन्त व्याकुल होकर पृथ्वी पर गिर पड़े घोड़े दक्षिण की ओर देख कर ऐसे व्याकुल हैं, मानों बिना डैने के पक्षी व्याकुल हो रहे हैं।

दोहा—नहिं तृन चरहिं न पियहिं जल, मोचत लोचन बारि।
व्याकुल भयउ निषादपति, रघुबर बाजि निहारि॥१३८॥

वे घोड़े न तो घास खाते हैं, न जल पीते हैं केवल आँखों से जल गिरा रहे हैं। तब इस प्रकार श्रीरामचन्द्रजी के घोड़ों को देखकर निषाद बहुत व्याकुल हो गया ॥ १३८ ॥

धरि धीरज तब कहइ निषादू ❀ अब सुमन्त परिहरहु विषादू
तुम पंडित परमारथ ज्ञाता ❀ धरहु धीर लखि बाम बिधाता

तब धैर्य धारण करके गुहराज कहने लगा, हे सुमन्तजी! अब आप दुःख त्याग दें। आप विद्वान् और परमार्थ के ज्ञाता हैं, इस समय विधाता प्रतिकूल हैं, यह समझ कर धैर्य धारण करो ॥

बिबिध कथा कहि-कहिमृदुबानी ❀ रथ बैठारेउ बरबस आनी
शोक शिथिल रथसकइ न हाँकी ❀ रघुबर बिरह पीर उर बाँकी

गुहराजने नाना प्रकार की कथायें मीठी वाणीसे कहकर सुमन्तको जबरदस्ती रथ पर लाकर बैठाया। शोक शिथिल वे रथ नहीं चला सकते, हृदयमें श्रीरामचन्द्रजी के बिरहकी बड़ी पीड़ा है

तरफराहिं मगु चलहिं न घोरे ❀ बनमृग मनहुँ आनि रथ जोरे
अढुकि परहिं फिरि हेरहिं पीछे ❀ राम बियोग बिकल दुख तीछे

घोड़े इधर-उधर भागते हैं रास्ता नहीं चलते, मानो रथ में जङ्गली जानवर जोते गये हैं वे रुक जाते हैं और उलटकर पीछेकी ओर देखने लगते हैं, वे राम वियोग के कठिन दुःखसे व्याकुल हैं।।

जो कह राम लषन बैदेही ❀ हिकरि हिकरि हय हेरहिं तेही
बाजिबिरहगतिकिमिकहिजाती ❀ बिनुमनिफनिकबिकलजेहिभाँती

जो मनुष्य राम-लक्ष्मण-सीता का नाम लेते हैं उन्हीं की ओर घोड़े हिकर-हिकर कर देखने लगते हैं। घोड़े विरह से व्याकुल हैं, जैसे बिना मणि के सर्प व्याकुल हो रहा है ।।

दोहा—भयउ निषाद बिषाद बस, देखत सचिव तुरंग।
बोलि सुसेवक चारि तब, दिये सारथी संग ।। १३९ ।।

गुहराज निषाद सुमन्त और घोड़ों को देखकर अत्यन्त दुःखी हो गया, तब उसने अपने चार अच्छे सेवकों को बुलाकर सुमन्तजी के साथ कर दिया ।। १३९ ।।

गुह सारथिहि फिरेउ पहुँचाई ❀ बिरह बिषाद बरनि नहिं जाई
चले अवध लइ रथहि निषादा ❀ होहिं छनहिं छन मगन बिषादा

फिर सुमन्त को थोड़ी दूर पहुँचाकर गुहराज लौट आया, उसके विरह का दुःख कहा नहीं जा सकता। सुमन्त रथ लेकर अयोध्या की ओर चले पर वे प्रतिक्षण दुःख में मग्न हो रहे थे ।।

सोच सुमन्त बिकल दुख दीना ❀ धिक जीवन रघुबीर बिहीना
रहहिं न अंतहु अधम शरीरू ❀ जस न लहेउ बिछुरत रघुबीरू

सुमन्तजी व्याकुल और दुःख से दुखी होकर सोचते हैं कि बिना रामचन्द्रजीके इस जीवनको धिक्कार है, यह अधम शरीर अन्तमें न रहेगा, पर इसने रामचन्द्रजीके बिछुड़ते समय यश न लिया।।

भए अजस अब भाजन प्राना ❀ कवन हेतु नहिं करत पयाना
अहह मन्द मति अवसर चूका ❀ अजहुँ न हृदय होत दुइ टूका

मेरे प्राण अपयश और पाप के पात्र हो गये, न जाने किस कारण से चले नहीं जाते। हा ! मन्दमति हृदय ! समय चूक गया, तू अब भी दो टुकड़े क्यों नहीं हो जाता ।।

मींजि हाथ सिर धुनि पछिताई ❀ मनहुँ कृपिण धनराशि गँवाई
बिरद बाँधि वर बीर कहाई ❀ चलेउ समर यश सुभट पराई

सुमन्तजी हाथ मलकर और माथा पीटकर पश्चात्ताप करते हैं, मानों किसी कंजूसने धनराशि गँवा दी हो अथवा कोई अच्छा वीर यश पाकर और श्रेष्ठ वीर कहलाकर जैसे युद्धसे भाग चला हो।।

दोहा—बिप्र बिबेकी बेद बिद, सम्मत साधु सुजाति।
जिमि धोखे मद पान करि, सचिव सोचु तेहि भाँति ॥१४०॥

जिसप्रकार कोई विचारवान् वेदका ज्ञातावेदकी सम्मतिके अनुकूल चलनेवालासज्जन औरब्राह्मण धोखेसे शराब पी लेवे और सोच करे, उसी प्रकार सुमन्तजी सोच कर रहे हैं ॥१४०॥

जिमि कुलीन तिय साधु सयानी ❀ पति देवता करम मन बानी
रहइ करम बस परिहरि नाहू ❀ सचिव हृदय तिमि दारुन दाहू

जैसे किसी कुलीन पतिव्रता स्त्रीको कामवश निजपतिके अतिरिक्त अन्य पुरुषसे संसर्ग करना पड़े और उसके हृदयमें कठिन जलन हो वैसेही सुमन्त के हृदयमें कठिन जलन हो रही है ॥

लोचन सजल दीठि भइ थोरी ❀ सुनइ न श्रवन बिकलमति भोरी
सूखहिं अधर लागि मुहँ लाटी ❀ जिउ न जाइ उर अवधि कपाटी
बिबरन भयउ न जाइ निहारी ❀ मारेसि मनहुँ पिता महतारी
हानि गलानि बिपुल मन ब्यापी ❀ जमपुर पंथ सोच जिमि पापी

सुमन्तजीके नेत्रोंमें जल भर रहा है, दृष्टि कम हो गई है। कानों से सुनाई नहीं पड़ता, हृदय व्याकुल है, बुद्धि भुला गई है। ओठ सूख रहे हैं, मुँहपर पपड़ी पड़ गई है और प्राण नहीं जाते, वे ऐसा सोच रहे हैं जैसे नरकके मार्ग में पापी सोचा करता है ॥

बचन न आव हृदय पछिताई ❀ अवध काह मैं देखब जाई
राम रहित रथ देखिहि जोई ❀ सकुचिहि मोहि बिलोकत सोई

सुमन्तसे बोला नहीं जाता, वे पश्चात्ताप करते हैं, मनमें सोचते हैं कि मैं अयोध्यामें जाकर क्या देखूँगा। क्योंकि जो श्रीराम-रहित रथ को देखेगा, वही मुझेदेखकरसंकुचितहो जायगा ॥

दोहा—धाइ पूछिहहिं मोहि जब, बिकल नगर नर नारि।
उतरु देब मैं सबहि तब, हृदय बज्र बैठारि ॥१४१॥

जब नगरके व्याकुल स्त्री-पुरुष मुझसे पूछेंगे कि राम लक्ष्मण और जानकी कहाँ हैं? तब मैं अपने हृदय पर बज्र रखकर सबको उत्तर दूंगा ॥१४१॥

पुछिहहिं दीन दुखित सब माता ❀ कहब काह मैं तिन्हहिं बिधाता
पूछिहि जबहिं लषन महतारी ❀ कहिहउँ कवन सँदेश सुखारी

जब मुझसे दीन और दुःखित सब मातायें पूछेंगी कि राम कहाँ हैं, हे विधाता! तब मैं उनसे क्या कहूँगा। जब लक्ष्मणजीकी माता सन्देश पूछेंगी; तब मैं कौन सन्देश कहूँगा ॥

राम जननि जब आइहि धाई ❀ सुमिरि बच्छ जिमि धेनु लवाई
पूछत उतर देब मैं तेही ❀ गे बन राम लषन बैदेही

जबरामकीमाता कौशिल्या दौड़कर आवेंगी जैसेसद्यःप्रसूता गौ अपने बच्चेका स्मरणकरकेदौड़ी हुई आती है, तबमैं उनके पूछनेपर यही उत्तर दूंगा कि श्रीरामलक्ष्मण और सीता बनको चले गये

जोइ पूछइ तेहि ऊतरु देबा ❀ जाइ अवध अब यह सुख लेबा
पूछिहि जबहिं राउ दुख दीना ❀ जिवन जासु रघुनाथ अधीना

देइहौं उतरु कवन मुँह लाई ❀ आयउँ कुशल कुँवर पहुँचाई
सुनत लषन सिय राम सँदेसू ❀ तृन जिमि तनु परिहरहिं नरेसू

जो मुझसे पूछेगा, उससे क्या उत्तर दूंगा, अब अयोध्यामें जाकर यही मुख लूंगा ? जब दुःखसे दीन राजा पूछेंगे जिनका जीवन श्रीरामजीके अधीन है, तब मैं किस मुख से यह उत्तर दूंगा कि कुमारोंको कुशल पूर्वक पहुँचा आया। श्रीराम-लक्ष्मण और सीताका समाचार सुनते ही राजा अपना शरीर तृणके समान त्याग देंगे ॥८॥

दोहा--हृदय न बिदरेउ पंक जिमि, बिछुरत प्रियतम नीर।
जानत हौं मोहिं दीन्ह बिधि, यम जातना शरीर ॥१४२॥

मेरा हृदय उस प्रकार फट नहीं गया, जिस प्रकार अपने प्यारे जलके बिछुड़ते ही कीचड़ फट जाता है। इससे मुझे जान पड़ता है कि विधाता ने यम यातना मेरे शरीर को दिया है॥ १४२॥

एहि बिधि करत पन्थ पछितावा ❀ तमसा तीर तुरत रथ आवा
बिदा किये करि विनय निषादा ❀ फिरे पाँय परि बिकल बिषादा

इस प्रकार रास्ते में पश्चात्ताप करते रथ शीघ्र तमसा नदी के तट पर पहुँच गया। सुमन्तजी ने विनती करके चारों निषादोंको विदा कर दिया, वे प्रणाम करके लौट गये ॥

पैठत नगर सचिव सकुचाई ❀ जनु मारेसि गुरु बाभन गाई
बैठि विटप तर दिवस गँवावा ❀ साँझ समय तब अवसर पावा

नगर(अयोध्या)में प्रवेश करते हुए सुमन्त ऐसा सकुचे मानों गुरु ब्राह्मण और गाय को मारा है। इसलिए वृक्ष के नीचे बैठकर दिन बिताया तब संध्या समय अँधेरेमें उन्हें मौका मिला ॥

अवध प्रवेस कीन्ह अँधियारे ❀ पैठ भवन रथ राखि दुआरे
जिन्ह जिन्ह समाचार सुनि पाये ❀ भूप द्वार रथ देखन आये

अँधेरेमें सुमन्तजीने अयोध्यामें प्रवेश किया, और रथ दरवाजे पर छोड़कर राजभवनमें गये, जिन-जिन लोगोंने रथके आनेकी खबर पायी वे लोग राजद्वार पर रथको देखने आये ॥

रथ पहिचानि विकल लखि घोरे ❀ गरहिं गात जिमि आतप ओरे
नगर नारि नर व्याकुल कैसे ❀ निघटत नीर मीन गन जैसे

रथको पहचानकर और घोड़ोंको बेचैन देखकर लोगों का शरीर गलने लगा जैसे धूपसे ओले गलते हैं। नगरके सब स्त्री-पुरुष ऐसे व्याकुल हैं जैसे जलके घट जाने से मछलियाँ ॥

दोहा--सचिव आगमन सुनत सब, विकल भयउ रनिवास।
नगर भयंकर लाग तेहि, मानहुँ प्रेत निवास ॥१४३॥

मन्त्रीका आगमन सुनते ही सम्पूर्ण रनिवास व्याकुल हो गया। सुमन्तजी को नगर ऐसा भयानक मालूम पड़ा मानो भूतों का डेरा है॥ १४३ ॥

अति आरत सब पूछहिं रानी ❀ उतर न आव विकल भइ बानी
सुनइ न स्रवन नयन नहिं सूझा ❀ कहहु कहा नृप जेहि तेहि बूझा

अत्यन्त दुःख से सब रानियाँ पूछतीं तो सुमन्त से उत्तर नहीं देते वनता, वाणी व्याकुल हो गयी। न कान से सुनाई पड़ता और न आँख से दिखाई देता है ।।

दासिन्ह दीख सचिव बिकलाई ❀ कौशिल्या गृह गईं लिवाई
जाइ सुमन्त दीख कस राजा ❀ अमिय रहित जनु चंद विराजा

जब दासियों ने सुमन्तजी को व्याकुल देखा, तब वे उन्हें कौशिल्याजी के भवन में लिवा ले गयीं। राजा इस समय कैकेई के यहाँ से आकर कौशिल्याजी के भवन में थे ।।

आसन सयन विभूषन हीना ❀ परेउ भूमि तल निपट मलीना
लेइ उसाँस सोच एहि भाँती ❀ सुरपुर ते जनु खसेउ ययाती

दशरथजी विस्तर के बिना आभूषणों को उतार कर अत्यन्त मलीन होकर पृथ्वी पर लेटें हैं। वे आह भरी साँसें ले रहे हैं उनको ऐसा शोक हो रहा है मानों ययाति सुर लोक से गिर पड़े।।

लेत सोच भरि छिन-छिन छाती ❀ जनु जरि पंख परेउ सम्पाती
राम राम कह राम सनेही ❀ पुनि कह राम लषन बैदेही

दशरथजी शोक से प्रतिक्षण आह भरी साँसें लेते हैं; मानो संपाती पखों के जलने से गिर पड़ा है। राजा दशरथ राम-राम और प्यारे राम कहते हैं, पुनः श्रीराम लक्ष्मण और सीता कहते हैं ।।

दोहा—देखि सचिव जयजीव कहि, कीन्हेउ दण्ड प्रनाम।
सुनत उठे व्याकुल नृपति, कहु सुमन्त कहँ राम ।।१४४।।

सुमन्तजी ने राजा को देख कर जयजीव कह कर दण्ड प्रणाम किया। उसे सुनते ही दशरथ जी व्याकुल होकर उठे और कहा—हे सुमन्त! कहो, राम कहाँ हैं? ।। १४४ ।।

भूप सुमन्त लीन्ह उर लाई ❀ बूड़त कछु अधार जनु पाई
सहित सनेह निकट बैठारी ❀ पूछत राउ नयन भरि बारी

राजा ने सुमन्तजी को हृदय से लगा लिया मानो डूबते हुए मनुष्य को कुछ सहारा मिल गया। उन्हें प्रेमपूर्वक अपने पास बैठा कर राजा आँखों में जल भर कर पूछते हैं ।।

राम कुशल कहु सखा सनेही ❀ कहँ रघुनाथ लषन बैदेही
आनेहु फेरि कि बनहिं सिधाए ❀ सुनत सचिव लोचन जल छाये

हे प्यारे मित्र! श्रीरामजी की कुशल कहिये, राम-लक्ष्मण और सीता कहाँ हैं? उन्हें लौटा लाए कि, बन को चले गए, यह सुनते ही सुमन्त की आँखों में जल भर आया ।।

शोक बिकल पुनि पूछि नरेशू ❀ कहु सिय राम लषन संदेशू
राम रूप गुण शील सुभाऊ ❀ सुमिरि सुमिरि उर सोचत राऊ

शोकाकुल राजा दशरथजी सुमन्त से पूछते हैं कि आप श्रीराम और जानकीजी का संदेश कहिये। राजा दशरथ श्रीरामचन्द्रजी के रूप, शील और स्वभाव का स्मरण कर मन में सोचते हैं।।

राज सुनाइ दीन्ह बनवासू ❀ सुनि मन भयउ न हर्ष हरासू
सो सुत बिछुरत गये न प्राना ❀ को पापी जग मोहिं समाना

राज्य सुनाकर बनवास दिया, जिसे सुनकर मन में प्रसन्नता या विषाद नहीं हुआ। मेरे प्राण क्यों नहीं निकल गये, इससे जगत् में मेरे समान पापी कौन है ? ॥ ८ ॥

दोहा--सखा राम सिय लषन जहँ, तहाँ मोंहि पहुँचाउ।
नाहिं त चाहत चलन अब, प्राण कहौं सतभाउ ॥१४५॥

हे सखे ! जहाँ रामचन्द्र, सीता और लक्ष्मण हैं, वहाँ मुझे ले चलिये। नहीं तो मेरे प्राण अब चलने को उद्यत हैं, यह मैं ठीक कहता हूँ ॥ १४५ ॥

पुनि-पुनि पूछत मंत्रिहिं राऊ ❁ प्रीतम सुवन सँदेश सुनाऊ
करहु सखा सोइ वेगि उपाऊ ❁ राम लषन सिय नयन दिखाऊ

राजा दशरथजी सुमन्त से बार२ पूछते हैं कि प्रिय पुत्र का सन्देश सुनाइये. सुमन्त ! तुम शीघ्र ही कोई ऐसा प्रयत्न करो कि जिससे राम लक्ष्मण और सीता को आँखों से देख लूँ ॥

सचिव धीर धरि कह मृदुबानी ❁ महाराज तुम पंडित ज्ञानी
वीर सुधीर धुरंधर देवा ❁ साधु समाज सदा तुम सेवा

सुमन्त धैर्य धर कर मीठी वाणी से बोले कि, हे महाराज ! आप पण्डित और ज्ञानी हैं। आप बीर, धीर-धुरन्धर और देवताके समान हैं, आपने सर्वदा साधु-समाज की सेवा की है ॥

जनम मरन सब दुखसुख भोगा ❁ हानि-लाभ प्रिय मिलन वियोगा
काल करम बस होहिं गुसाँई ❁ बरबस रात दिवस की नाँई

जीना, मरना, सुख, दुःख, भोग, हानि, लाभ, प्रिय का मेल और बिछोह ये सब हे गुसाईं ! काल और कर्म के वश हो बिना रोक-टोक के रात और दिन की भाँति हुआ करते हैं ॥

सुख हर्षहिं जड़ दुख बिलखाहीं ❁ दोउ सम धीर धरहिं मनमाहीं
धीरज धरहु विवेक विचारी ❁ छाँड़िय शोच सकल हितकारी

मूर्ख सुख से प्रसन्न और दुःख में रोते हैं, परन्तु पण्डित सुख-दुःख में धैर्य धारण करते हैं। ज्ञान से विचार कर शोच को छोड़ दीजिए, इसी में सब प्रकार भलाई है ॥

दोहा--प्रथम बास तमसा भयउ, दूसर सुरसरि तीर।
न्हाइ रहे जलपान करि, सीय सहित दोउ बीर ॥१४६॥

पहिला वास तमसा नदी के तीर पर, दूसरा गङ्गाजी के तट पर हुआ। फिर सीताजी के साथ दोनों वीर (राम और लक्ष्मण) स्नान किए और जलपान किये ॥ १४६ ॥

केवट कीन्ह बहुत सेवकाई ❁ सो यामिनि शृंगबेर गँवाई
होत प्रात बट क्षीर मँगावा ❁ जटा मुकुट निज शीश बनावा

मल्लाह ने बहुत सेवा किया, श्रीरामचन्द्रजी ने उस रात को शृङ्गवेरपुर में व्यतीत किया। फिर प्रातःकाल बड़ का दूध मँगाकर शिर पर जटा-मुकुट बनाये ॥

राम सखा तब नाव मँगाई ❁ सियहिं चढ़ाय चढ़े रघुराई
लषन धरे धनु बान बनाई ❁ आपु चढ़े प्रभु आयसु पाई

तब 'निषादने' नौका मंगाई जिस पर श्रीरामचन्द्रजी प्यारी जानकी को चढ़ा कर स्वयं भी चढ़ गये। फिर आज्ञा पाकर लक्ष्मण भी धनुष बाण रख नौका पर चढ़े॥

विकल विलोकि मोंहि रघुबीरा ❁ बोले मधुर बचन धरि धीरा
तात प्रणाम तात सन कहेऊ ❁ बार बार पद पंकज गहेऊ

श्रीरामचन्द्रजी मुझे व्याकुल देखकर धीरज धर मीठे बचन से बोले-हे तात! मेरा प्रणाम पिताजी से कहिएगा और मेरी ओर से उनके चरण-कमल को पकड़िएगा॥

करब पाँय परि विनय बहोरी ❁ तात करिय जनि चिन्ता मोरी
बन मग मंगल कुशल हमारे ❁ कृपा अनुग्रह पुण्य तुम्हारे

और पुनः चरणों पर गिर कर यह प्रार्थना कीजिएगा कि हे तात! हमारी चिन्ता न करें। आपकी कृपा और पुण्य के प्रभाव से बन के मार्ग में हमारा मंगल ही होगा॥

छन्द--तुम्हरे अनुग्रह तात कानन जात सब सुख पाइहौं।
प्रतिपालि आयसु कुशल देखन पाँय पुनि फिरि आइहौं॥
जननी सकल परितोषि करि परि पाँय करि बिनती घनी।
तुलसी करिय सोइ यतन जेहि विधि कुशल रह कोशलधनी।६

हे तात! आपकी दया से बन में जाकर भी मुझे सम्पूर्ण सुख मिलेगा। आपकी आज्ञाका पालन कर कुशल से फिर आपका दर्शन करने आऊँगा। मेरी ओर से आप सब माताओं के पैर पकड़ कर घमी प्रार्थना से संतोष दीजियेगा। गुसाईं तुलसीदासजी कहते हैं कि श्रीरामचन्द्रजी ने कहा कि हे सुमन्तजी! आप उन उपायों को करना,जिससे महाराज कुशलपूर्वक रहें॥

सो०--गुरु सन कहब सँदेश, बार बार पद पदम गहि।
करब सोइ उपदेश, जेहि न शोच मोंहि अवधपति॥६॥

और हमारे गुरु महामुनि वशिष्ठजी के चरण कमल को पुनः पकड़कर यह संदेश कहिएगा कि वे ऐसी शिक्षा देंगे जिससे अवध के स्वामी महाराज दशरथजी मेरे विषय में शोच न करें॥६॥

पुरजन परिजन सकल निहोरी ❁ तात सुनायहु विनती मोरी
सोइ सब भाँति मोर हितकारी ❁ जासे रहैं भुवाल सुखारी

और हे तात! मेरे नगर के और कुटुम्ब के जो लोग हैं उनका निहोरा कर यह मेरी प्रार्थना सुना दीजिएगा कि वही मेरा हर प्रकार से हित चाहने वाला है कि जिसमें मेरे पिताजी सुखी रहें॥

कहब सँदेश भरतके आये ❁ नीति न तजब राजपद पाये
पालहु प्रजहिं करम मन बानी ❁ सेवहु मातु सकल सम जानी

जब भरतजी आ जायँ तो उनसे यह कहिएगा कि राज्य पाकर वे राजनीति न छोड़ेंगे। मन, कर्म और वाणी से प्रजा की रक्षा करेंगे और सब माताओंको समान समझकर उनकी सेवा करेंगे॥

और निबाहब भायप भाई ❁ करि पितु मातु चरण सेवकाई
तात भाँति तेहि राखब राऊ ❁ शोच मोर जेहि करहिं न काऊ

और माता-पिता के चरणों की सेवा करते हुए भाई पन को निबाहना, हे तात ! आप महाराज कोशल-नरेश को उसी प्रकार रखिएगा कि जिससे वे मेरी चिन्ता न करें ।।

लषन कहेउ कछु बचन कठोरा ❀ बरजि राम पुनि मोहिं निहोरा
बार बार निज शपथ दिवाई ❀ कहब न तात लषन लरिकाई

लक्ष्मणजी कुछ निष्ठुर वचन बोले तब श्रीरामचन्द्रजी ने उन्हें रोककर, मेरा निहोरा किया। बारम्बार अपनी शपथ दिलाई कि हे तात ! लक्ष्मण के लड़कपन की बातें आप न कहियेगा।।

दोहा—करि प्रणाम कछु कहन लिय, सिय भइ शिथिल सनेह ।
थकित बचन लोचन सजल, पुलक पल्लवित देह ।।१४७।।

श्रीसीताजी स्नेह से शिथिल हो गयीं, वे नमस्कार करके कुछ कहना ही चाहती थीं कि वाणी थक गई, नेत्रों में आँसू भर आए और शरीर में रोमांच हो आया ।। १४७ ।।

तेहि अवसर रघुबर रुख पाई ❀ केवट पारहिं नाव चलाई
रघुकुल तिलक चले इहि भाँती ❀ देखेउँ ठाढ़ कुलिस धरि छाती

उसी काल में श्रीरामचन्द्रजी का रुख देख कर केवट ने नौकाको उस पार के लिए चलाया। इस प्रकार रघुकुल-तिलक श्रीरामजी चल दिये, मैं छाती पर बज्र रखकर खड़ा-खड़ा देखता रहा।।

मैं आपन किमि कहौं कलेसू ❀ जियत फिरेउँ लिये राम सँदेसू
अस कहि सचिव बचन रहि गयऊ ❀ हानि गलानि शोच बस भयऊ

मैं अपने दुःख को किस प्रकार वर्णन करूँ कि जो जिन्दा ही श्रीरामचन्द्रजी का संदेश लेकर लौट आया। ऐसा कहकर मंत्री सुमंतजी की वाणी रुक गई वे हानि ग्लानि शोक के वशीभूत होगये।।

सुनत सुमन्त बचन नरनाहू ❀ परेउ धरणि उर दारुण दाहू
तलफत विषम मोह मन माँपा ❀ माँजा मनहुँ मीन कहँ व्यापा

सुमन्तजीके वचन को सुनकर दशरथजी पृथ्वी पर गिर पड़े, हृदय में बड़ा कष्ट हुआ। दशरथजी विषम मोह से तड़पने लगे, जैसे वर्षा के प्रथम जलसे मछली विक्षिप्त हो जाती है।।

करि बिलाप सब रोवहिं रानी ❀ महा विपति किमि जाय बखानी
सुनि विलाप दुखहू दुख लागा ❀ धीरजहू कर धीरज भागा

यह सुनकर सब रानियाँ विलाप कर रोने लगीं, वह महान् विपत्ति कही नहीं जा सकती। उस विलाप को सुन कर दुःख को भी दुःख हुआ और धैर्य का भी धैर्य जाता रहा ।।८।।

दोहा—भयउ कोलाहल अवध अति, सुनि नृप राउर सोर ।
बिपुल बिहँग बन परेउ निशि, मानहुँ कुलिश कठोर ।।१४८।।

उस समय रानियों के रोने से अयोध्या नगर में ऐसा कोलाहल मच गया कि मानों बहुत पक्षियों से युक्त जंगल में कठोर बज्रपात हुआ हो ।। १४८ ।।

प्राण कंठगत भयउ भुवालू ❀ मणि विहीन जिमि व्याकुल व्यालू
इन्द्रिय सकल विकल भइँ भारी ❀ जनुसर सरसिज बन बिन बारी

दशरथजीके प्राण कंठगत हो गए, जैसे मणिसे रहित सर्प व्याकुल हो जाता है। उनकी सब इन्द्रियाँ विकल हो गईं, जैसे पानीके बिना तालाब और कमल हो जाते हैं ॥

कौशल्या नृप दीख मलीना ❀ रविकुल रवि अथयउ जिय जानी।
उर धरि धीर राम महतारी ❀ बोली बचन समय अनुहारी

कौशिल्याजीने दशरथजीको मलिन देखा तब उन्हें पता चला कि सूर्यवंशका सूर्य अस्ताचलको जाना चाहता है तब श्रीरामचन्द्रजीकी माता हृदयमें धैर्य धारण कर समयके अनुसार यह वचन बोलीं ॥

नाथ समुझि मन करिय विचारू ❀ राम वियोग पयोधि अपारू
कर्णधार तुम अवधि जहाजू ❀ चढ़ेउ सकलप्रिय पथिक समाजू

हे स्वामी ! मनमें सोचकर विचार कीजिये, श्रीरामचन्द्रजीका विरह रूपी सागर अथाह है, आप उसके पार उतारनेवाले हैं, चौदह वर्षकी अवधिरूपी जहाज पर सब चढ़े हैं ॥

धीरज धरिय तो पाइय पारू ❀ नाहिंत बूड़हि सब परिवारू
जो जिय धरिय विनय प्रिय मोरी ❀ राम लषन सिय मिलहिं बहोरी

धीरज धरनेसे पार हो सकते हैं नहीं तो सारा परिवार डूब जायेगा। हे प्रिय ! यदि अपने हृदयमें मेरी प्रार्थना रख लेंगे तो पुनः राम लक्ष्मण और सीता मिलेंगे ॥

दोहा—प्रिया वचन मृदु गूढ़ सुनि, चितयउ आँखि उघारि।
तलफत मीन मलीन जिमि, सींचत सीतल वारि ॥१४९॥

कौशिल्याके मीठे और गूढ़ वचन सुनकर नेत्र खोलकर देखे जैसे मछली जलके बिना तड़पती हो और ठण्डे जलसे सींचा जाय वैसे ही कौशिल्याके वचन दशरथजीके लिये थे ॥ १४९ ॥

धरि धीरज उठि बैठि भुआलू ❀ कहु सुमंत कहँ राम कृपालू
कहाँ लषन कहँ राम सनेही ❀ कहँ प्रिय पुत्रवधू वैदेही

राजा दशरथ धैर्य धारण कर उठ बैठे और सुमन्तसे बोले कि हे मन्त्री ! कहो, कृपालु रामचन्द्रजी कहाँ हैं ॥ लक्ष्मण कहाँ हैं, और प्यारे पुत्रकी स्त्री जानकी कहाँ हैं ? ॥ २ ॥

विलपत राउ बिकल बहु भाँती ❀ भइ युग सरिस सिरात न राती
तापस अंध श्राप सुधि आई ❀ कौशल्यहिं सब कथा सुनाई

इस भाँति राजा विलाप कर रहे थे, रात्रि युगके समान हो गई, बीतती नहीं। इतनेमें तपस्वी अन्धोंकी सुधि आ गई, तो राजा दशरथजीने कौशिल्याको अन्धे तपस्वीकी कथा कह सुनायी ॥

भयउ विकल बरनत इतिहासा ❀ राम रहित धिक जीवन आसा
सो तनु राखि करब मैं काहा ❀ जेहि सप्रेम प्रण मोर निबाहा

दशरथजी श्रवणकुमारकी कथा वर्णनकर बोले, श्रीरामजीके बिना जीना धिक्कार है, अब मैं इस देहको रखकर क्या करूँगा ? ॥ ६ ॥

हा रघुनन्दन प्राण पिरीते ❀ तुम बिनु जियत बहुत दिन बीते
हा जानकी लषन हा रघुबर ❀ हा पितु हितचितचातक जलधर

हा प्राणोंसे प्यारे राम ! तुम्हारे बिना जीते बहुत दिन हो गये ।। ७ ।। हा सीते ! हा लक्ष्मण ! हा रघुवर ! हा पिताके हितकारी कल्याण रूप चित्तके चातक ।। ८ ।।

दोहा—राम राम कहि राम कहि, राम राम कहि राम ।
तनु परिहरि रघुबर बिरह, राउ गये सुरधाम ।।१५०।।

दशरथजी अनेक बार राम-राम कहकर श्रीरामजीके विछोहमें देहको त्यागकर स्वर्गको चले गये ।। १५० ।।

जियन मरन फल दशरथ पावा ❀ अण्ड अनेक अमल यश छावा
जियत राम बिधुबदन निहारा ❀ राम बिरह करि मरन सँवारा

दशरथजी अपने जीने और मरनेका फल पा गये, उनकी पवित्र कीर्ति अनेक ब्रह्माण्डोंमें छा गई जो जीवन भर श्रीरामजीके चन्द्रमुखका दर्शन किए और उनके विछोहमें प्राण त्याग दिये ।।

शोक विकल सब रोवहिं रानी ❀ रूप शील बल तेज बखानी
करहिं बिलाप अनेक प्रकारा ❀ परहिं भूमि तल बारहिं बारा

शोकसे दुःखी होकर सब रानियाँ रुदन करने लगीं, राजाके स्वरूप शील पराक्रम और प्रभावका वर्णन करके विविध प्रकारसे विलाप करती हैं बारम्बार पृथ्वी पर गिर पड़ती हैं ।।

बिलपहिं विकल दास अरुदासी ❀ घर-घर रुदन करहिं पुरबासी
अथयउ आजु भानुकुल भानू ❀ धर्म अवधि गुन रूप निधानू

सब दासियाँ बेहोश होकर विलाप करने लगीं, घर-घर नगरके लोग रुदन कर रहे थे । सूर्य वंशका सूर्य आज डूब गया जो धर्म-मर्यादा और गुण तथा सौंदर्यका निधान था ।।६।।

गारी सकल कैकइहिं देहीं ❀ नयन बिहीन कीन्ह जग जेहीं
इहि विधि बिलपत रैन सिरानी ❀ आये सकल तहाँ मुनि ज्ञानी

सब लोग कैकेयीको गाली देने लगे कि जिसने संसारको आँखोंसे रहित कर दिया । इस प्रकार रोते हुए रात्रि बित गई, प्रातःकाल सब बड़े-बड़े मुनि और ज्ञानी लोग वहाँ आये ।।८।।

दोहा—तब बशिष्ठ मुनि समय सम, कहि अनेक इतिहास ।
शोक निवारेउ सबहिं कर, निज विज्ञान प्रकाश ।।१५१।।

तब उस समय श्रीवशिष्ठजी समयानुसार बहुत-सा इतिहास कहकर, अपने विज्ञानकी ज्योतिसे सबके शोकका निवारण किये ।। १५१ ।।

तेल नाव भरि नृप तनु राखा ❀ दूत बुलाय बहुरि अस भाषा
धावहु वेगि भरत पहँ जाहू ❀ नृप सुधि कतहुँ कहेउ जनि काहू

फिर नौकामें तेल भरकर उसमें राजाके शरीरको रक्खा, पुनः दूतको बुलाकर कहा कि तुम दौड़ते हुए श्रीभरतजीके पास जाओ, परन्तु राजाकी मृत्युका समाचार किसीसे न कहना ।।२।।

एतनहिं कहेहु भरत सन जाई ❀ गुरु बुलाय पठये दोउ भाई
सुनि मुनि आयसु धावन धाये ❀ चले वेगि वर बाजि लजाये

तुम जाकर भरतजीसे इतना ही कहना कि गुरुजी दोनों भाइयोंको बुला रहे हैं। तब उनकी आज्ञा सुनकर दूत दौड़े, उस समय उनकी चाल देखकर श्रेष्ठ घोड़े भी लजा गये ॥

अनरथ अवध अरंभेउ जबते ❀ कुशकुन होंहि भरत कहँ तबते
देखहिं राति भयानक सपना ❀ जागि करहिं कटु कोटि कलपना

उधर जबसे अवधपुरीमें अनर्थ प्रारम्भ हुआ, तभीसे भरतजीको अशकुन होने लगे। वे रात्रिके समय डरावने सपने देखते, जागने पर करोड़ों भाँतिकी अनर्थकारी कल्पना करते थे।

विप्र जिवाय देहिं नित दाना ❀ शिव अभिषेक करहिं बिधिनाना
माँगहिं हृदय महेश मनाई ❀ कुशल मातु पितु परिजन भाई

उसकी शान्तिके लिए वे ब्राह्मणोंको नित्य भोजन कराकर दान देते और मन ही मन शिवको मनाते थे कि हमारे माता, पिता, भाई और कुटुम्ब सब लोग सुखी रहें ॥८॥

दोहा—इहि बिधि सोचत भरत मन, धावन पहुँचे जाय।
गुरु अनुशासन श्रवन सुनि, चले महेश मनाय ॥१५२॥

इस प्रकार भरतजी मनमें विचार ही रहे थे कि दूतोंने पहुँचकर सब समाचार कहा। तब गुरुजीकी आज्ञा सुनकर भरतजी शिवजीका ध्यानकर वहाँसे चल दिये ॥ १५२ ॥

चले समीर बेगि हय हाँके ❀ लाँघत सरित शैल बन बाँके
हृदय शोच बड़ कछु न सोहाई ❀ अस जानहिं जिय जाइँ उड़ाई

पुनः अपने घोड़ोंको वायुकी गति सदृश हाँककर नदी, पहाड़ और जंगलोंको लाँघते चल दिये। कुछ कहा नहीं जाता, हृदय चाहता था कि उड़कर अयोध्यामें चलूँ ॥ २ ॥

एक निमेष वर्ष सम जाई ❀ इहि बिधि भरत नगर नियराई
अशकुन होंहि नगर पैठारा ❀ रटहिं कुभाँति कुखेत करारा

भरतजीका एक क्षण एक वर्षके समान व्यतीत होता था, इस प्रकार वह अयोध्याके समीप पहुँचे। अवधपुरीमें पैठते ही बुरे शकुन होने लगे, काले २ कौवे बुरे स्थानोंमें भयानक शब्द बोल रहे थे॥

खर शृगाल बोलहिं प्रतिकूला ❀ सुनि सुनि होहिं भरत हिय शूला
श्रीहत सर सरिता बन बागा ❀ नगर विशेष भयावन लागा

गदहे और गीदड़ विरुद्ध शब्द बोलते थे, यह सुनकर भरतजीके हृदयमें शूल चुभता था। तालाब, नदी, जंगल और बगीचे शोभाहीन दिखाई पड़ते थे अयोध्या अत्यन्त भयानक मालूम होती थी ॥

खग मृग हय गय जाहिं न जोये ❀ राम वियोग कुरोग बिगोये
नगर नारि नर निपट दुखारी ❀ मनहुँ सबहिं सब सम्पति हारी

पक्षी, हिरन, घोड़े और हाथी देखते न बनते श्रीरामजीके वियोगमें सबकी बुरी दशा थी। अवधपुरीके मनुष्य और स्त्री बहुत कष्टमें थे, मानों सभीने अपना सारा धन खो दिया हो॥

दोहा—पुरजन मिलहिं न कहहिं कछु, गवहिं जुहारहिं जाहिं।
भरत कुशल पूछि न सकहिं, भय विषाद मनमाहिं ॥१५३॥

नगरमें बसनेवाले मिलते हैं, कुछ कह नहीं रहे हैं, प्रणामकर लेते हैं, वे डर और विषाद होनेसे भरतजीसे कुशल भी नहीं पूछ सकते हैं ।। १५३ ।।

हाट बाट नहिं जाय निहारी ❀ जनु पुर चहुँदिशि लागि दवारी
आवत सुत सुनि कैकयनन्दिनि ❀ हरषी रविकुल जलरुह चन्दिनि

बाजार और मार्गकी ओर देखा नहीं जाता मानों पुरीके चारों ओर आग लग गई है, पुत्रके आगमनको सुनकर रानी कैकेयी अत्यन्त प्रसन्न हुई, जो सूर्यकुल कमलके लिये चाँदनीके समानही थी।

सजि आरती मुदित उठि धाई ❀ द्वारहिं भेंटि भवन लै आई
भरत दुखित परिवार निहारा ❀ मानहु तुहिन बनज बन मारा

वह आरती सजाकर प्रसन्न हो उठकर दौड़ी और द्वारपर मिलकर अपने महलमें ले आई। भरतजी महाराज कुटुम्बको इस प्रकार दुखी देखे जैसे कमलके बन पर पाला गिरा हो ।।४।।

कैकेयी हरषित इहि भाँती ❀ मनहुँ मुदित दव लाइ किराती
सुतहि सशोच देखि मन मारे ❀ पूछति नैहर कुशल हमारे

कैकेयी इस प्रकार प्रसन्न हुई कि जैसे किराती जंगलमें आग लगाकर प्रसन्न होती है। तब श्री भरतजीको शोकसे युक्त मनमारे देखकर पूछती हैं कि मेरे नैहरमें कुशल तो है ?।।

सकल कुशल कहि भरत सुनाई ❀ पूछी निज कुल को कुशलाई
कहु कहँ तात कहाँ सब माता ❀ कहँ सियरामलषन प्रिय भ्राता

इसके पश्चात् भरतजीने ननिहालका कुशल कहकर अपने कुलकी कुशल पूछी। हे माता ! कहो पिताजी कहाँ हैं, सब मातायें कहाँ हैं, सीता, रामजी और प्रिय भाई लक्ष्मण कहाँ हैं ?

दोहा—सुनि सुत बचन सनेहमय, कपट नीर भरि नयन ।
भरत श्रवन मन शूल सम, पापिनि बोली बयन ।।१५४।।

तब पुत्रके स्नेहसे सने हुए वचनको सुनकर नेत्रोंमें कपटके आँसू भरकर पापिन कैकेयी भरतजीके श्रवण और मनके लिए शूलके समान यह वाणी बोली ।। १५४ ।।

तात बात मैं सकल सँवारी ❀ भइ मन्थरा सहाय बिचारी
कछुक काज बिधिबीच बिगारेउ ❀ भूपति सुरपति पुर पगु धारेउ

हे तात ! मैंने सारी बातें बना रक्खी हैं, विचारी मंथराने मेरी सहायता की, परन्तु ब्रह्माने थोड़ा सा काम बीचमें बिगाड़ दिया कि महाराज (दशरथ) स्वर्गको चले गये ।।२।।

सुनत भरत भये विकल विषादा ❀ जनु सहमेउ करि केहरि नादा
तात तात हा तात पुकारी ❀ परेउ भूमितल ब्याकुल भारी

भरतजी कैकेयीके वचन सुनकर इस प्रकार दुःखी हुए जैसे हाथी सिंहके गर्जनको सुनकर सहम जाता है। फिर तात! हा तात ! चिल्लाकर पृथ्वी पर गिर पड़े और अत्यन्त व्याकुल हो गये ।।४।।

चलत न देखन पायउँ तोहीं ❀ तात न रामहि सौंपेउ मोहीं
बहुरि धीर धरि उठे सँभारी ❀ कहु पितु मरण हेतु महतारी

हा पिता ! पयान करते समय आपको नहीं देख सका हे तात ! आपने मुझे रामचन्द्रजी को नहीं सौंपा। पुन: धीरजधर सँभालकर उठे और कैकेयीसे पूछे हे माता ! पिताके मरनेका कारण कहो

सुनि सुत बचन कहति कैकेयी ❀ मर्म पाँछि जनु माहुर देई
आदिहि ते सब आपनि करनी ❀ कुटिल कठोर मुदित मन बरनी

भरतजीकी वाणी को सुनकर कैकेयी ऐसे बोली, जैसे घाव को पोछ कर उसपर जहर (विष) रक्खा जाय। कुटिल और कठोर कैकेयी प्रसन्न हो प्रारम्भ से ही अपनी सब करनी कह सुनाई।।

दोहा—भरतहिं बिसरेउ पितु मरण, सुनत राम बन गौन।
हेतु आपनो जानि जिय, थकित रहे धरि मौन ॥१५५॥

तब श्रीरामजी का बन जाना सुन कर भरत को पिता के मरने का दुःख तो भूल गया। परन्तु राम बन-गमन में अपने को हेतु जानकर वे मौन (चुपचाप) होकर बैठे रहे ।।१५५।।

विकलबिलोकिसुतहिसमुझावति ❀ मनहुँ जरे पर लोन लगावति
तात राउ नहिं सोचन योगू ❀ बढ़इ सुकृत जस कीन्हेउ भोगू

पुत्र को व्याकुल देखकर कैकेयी जले पर नमक जैसा समझाती है ।। १ ।। हे तात ! पिताजी का सोच करना ठीक नहीं, जो भोग उन्होंने किया वह बड़े पुण्य का फल था ।।२।।

जीवत सकल जनम फल पाये ❀ अन्त अमरपति सदन सिधाये
अस जिय जानि शोच परिहरहू ❀ सहित समाज राज्यपुर करहू

वे अपने जीवनकाल में ही जन्म का फल पा गये, पीछे (अन्त में) बैकुण्ठ लोक को गये हैं। यह समझकर हे पुत्र ! सोच छोड़ कर समाज के साथ अयोध्या का राज करो ।।४।।

सुनि सुठि सहमेउ राजकुमारा ❀ पाके क्षत जनु लाग अँगारा
धीरज धरि भरि लेहिं उसाँसा ❀ पापिनि सबहिं भाँति कुल नासा

कैकेयी के वचन सुनकर भरतजी वैसेही ठिठक गये, जैसे पके चोट पर अंगार लग गया हो फिर धैर्य धारण कर उसाँस लेते हुए बोले हे पापिनी ! तूने सब भाँति से कुल का नाश किया ।।६।।

जोपै कुरुचि रही अस तोहीं ❀ जनमत काहे न मारेसि मोहीं
पेड़ काटि तैं पल्लव सींचा ❀ मीन जियन हित वारि उलीचा

जो तेरी रुचि ऐसी खोटी थी तो जन्म लेते ही मुझे क्यों नहीं मार डाला ? तूने वृक्ष को काट कर पल्लव को सींचा है और मछली को जीने के लिए जल को उलीचा है ।।८।।

दोहा—हंस वंश दशरथ जनक, राम लषन से भाय।
जननी तू जननी भई, बिधि ते कहा बसाय ॥१५६॥

सूर्यवंशमें मेरा जन्म हुआ, मेरे जैसा पुत्र और दशरथ ऐसे पिता और राम लक्ष्मण ऐसे भाई हुये। हे माता ! तू मेरी जननी हुई, ब्रह्मा से कोई वश नहीं चलता ।।१५६।।

जबते कुमति कुमत जिय ठयऊ ❀ खण्ड खण्ड होइ हृदय न गयऊ
बर माँगत मन भई न पीरा ❀ गरि न जीह मुँह परेउ न कीरा

हे दुष्ट बुद्धिवाली ! जब ऐसी कुबुद्धि तेरे मनमें उपजी तब तेरे हृदयके टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो गये, वरदान माँगते समयते रे मन में पीड़ा क्यों नहीं हुई, जीभ गिर क्यों नहीं गयी ? ।।२।।

भूप प्रतीति तोर किमि कीन्हीं ❀ मरनकाल विधि मति हरि लीन्हीं
विधिहु न नारि हृदय गति जानी ❀ सकल कपट अघ अवगुन खानी

महाराज दशरथजीने तेरा विश्वास क्यों कर लिया, मरते समय ब्रह्माने उनकी बुद्धि को क्यों हर लिया, ? श्रीब्रह्माजी भी स्त्री की गति को नहीं पहचानते, जो सब पाप और दुर्गुणों की खान हैं।

सरल सुशील धर्मरत राऊ ❀ सो किमि जानहिं तीय सुभाऊ
अस को जीव जन्तु जग माहीं ❀ जेहि रघुनाथ प्राण प्रिय नाहीं

तब भला वे सुशील परम धार्मिक महाराज स्त्री के स्वभाव को किस भाँति पहचान करते। विश्व में ऐसा कौन जीव अथवा जन्तु है कि जिसको श्रीरामचन्द्रजी प्राणों से भी प्यारे नहीं हैं ।।६।।

भे अति अहित राम ते तोहीं ❀ को तू अहसि सत्य कहु मोहीं
जो हसि सो हसि मुँह मसिलाई ❀ आँखि ओट उठि बैठहि जाई

उन्हीं श्रीरामजी से तेरा अपकार हुआ, सत्य कह कि तू कौन है ? जो कुछ भी हो, तू अपने मुख में कालिख लगा मेरी आँखों से ओझल होकर बैठ ।।८।।

दोहा—राम विरोधी हृदय ते, प्रकट कीन्ह बिधि मोहिं।
मो समान को पातकी, बादि कहौं कछु तोहिं ।।१५७।।

तेरे जैसे राम-विरोधी हृदय से विधाता ने मुझे उत्पन्न किया, इसलिए मेरे समान पापी कौन है ? किन्तु तुझे तो कुछ कहना ही व्यर्थ है ।।१५७।।

सुनि शत्रुघन मातु कुटिलाई ❀ जरहिं गात रिस कछु न बसाई
तेहि अवसर कुबरी तहँ आई ❀ बसन विभूषण विविध बनाई

शत्रुघ्नजी माता की कुटिलता को सुन कर जलने लगे अर्थात् क्रोध में आ गये, पर कुछ वश नहीं चलता ।। उसी समय अनेक प्रकार के कपड़े और गहनों से सुशोभित कुबड़ी वहाँ पर आ गई ।।

लखि रिस भरेउ लषन लघु भाई ❀ बरत अनल घृत आहुति पाई
हुमकि लात तकि कूबर मारा ❀ परि मुँह भरि महि करत पुकारा

लक्ष्मणजीके छोटे भाई शत्रुघ्नजी उसे देख कर बहुत ही क्रुद्ध हुए, उन्होने हुंकार कर उसके कूबर पर ऐसा लात मारा कि वह चिल्लाती हुई मुँह के बल पृथ्वी पर गिर पड़ी ।।४।।

कूबर टूटेउ फूट कपारू ❀ दलित दशनमुख रुधिर प्रचारू
आह दैव मैं काह नशावा ❀ करत नीक फल अपयश पावा

कूबर टूट गया, सर फूट गया, दाँत टूट गये तब वह बोल उठी कि हा दैव ! मैंने किस कार्य को बिगाड़ा है ? मैंने तो अच्छा किया किन्तु उसका परिणाम बुरा मिल रहा है ।।६।।

सुनि रिपुहनलखि नखशिखखोटी ❀ लगे घसीटन धरि धरि चोटी
भरत दयानिधि दीन्ह छुड़ाई ❀ कौशिल्या पहँ गे दोउ भाई

यह सुन कर श्रीशत्रुघ्न उसे नाखूनसे चोटी तक बुरी समझकर चोटी पकड़कर घसीटने लगे। परन्तु श्रीभरतजी ने उसे छुड़ा दिया और दोनों भाई माता कौशिल्या के पास पहुँचे ।।८।।

दोहा—मलिन बसन विवरण विकल, कृस शरीर दुखभार।
कनक कलप बरबेलि बन, मानहुँ हनी तुषार ।।१५८।।

कौशिल्याजीके कपड़े मैले हैं, रङ्ग बदल गया है, दुःखके बोझसे शरीर क्षीण हो गया है। जान पड़ता है कि जंगलमें सुवर्णके समान पीले रंगकी सुन्दर लतापर पाला पड़ गया है ।।१५८।।

भरतहिं देखि मातु उठि धाई ❀ मूर्छित अवनि परी झँइ आई
देखत भरत विकल भये भारी ❀ परे चरण तन दशा बिसारी

श्रीकौशिल्याजी भरतको देखकर उठ दौड़ीं, बेहोशी आनेके कारण पृथ्वी पर गिर पड़ीं। यह देख भरतजी बहुत दुःखी हुए और शरीरकी सुधि भूलकर उनके पैरोंपर गिर पड़े ।।२।।

मातु तात कहँ देहु दिखाई ❀ कहँ सियराम लषन दोउ भाई
कैकइ कत जनमी जग माँझा ❀ जो जनमी भइ काहे न बाँझा

हे माता ! पिताजी कहाँ हैं मुझे दिखाओ और सीताजी तथा श्रीरामचन्द्रजी और लक्ष्मणजी कहाँ हैं ? इस संसारके बीच कैकेयीने क्यों जन्म लिया, यदि जन्मी तो बाँझ क्यों न हुई ।।४।।

कुल कलंक जेहि जन्मेउ मोहीं ❀ अपयश भाजन प्रियजन द्रोही
को त्रिभुवन मोहिं सरिस अभागी ❀ गति असि तोरि मातु जेहि लागी

जिसने मेरे समान कुल-कलंकी द्रोह करने वाले पुत्र को जन्म दिया। हे माताजी ! मेरे समान जगत् में कौन अभागा है जिसके कारण आपकी यह दशा हुई ।।६।।

पितु सुरपुर बन रघुकुल केतू ❀ मैं केवल सब अनरथ हेतू
धिक मोहिं भयउँ वेणु बन आगी ❀ दुसह दाह दुख दूषन भागी

पिताजी सुरधाम को सिधारे, रघुवंश में श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रजी बन को गए, इन सब अनर्थों का कारण केवल मैं हूँ। मुझे धिक्कार है कि, मैं बाँस के जंगल के लिए अग्नि रूप हुआ कि जो जलन, दुःख और पाप का भागी हुआ ।।८।।

दोहा—मातु भरतके बचन मृदु, सुनि पुनि उठी सँभारि।
लिये उठाय लगाय उर, लोचन मोचति बारि ।।१५९।।

श्रीकौशिल्याजी भरतके मीठे बचन को सुन सँभल कर उठीं और उन्हें उठा कर हृदय से लगा लिया, उनकी आँखों से आँसू गिरने लगे ।।१५९।।

सरल सुभाव मातु उर लाये ❀ अति हित मनहुँ राम फिरि आये
भेंटेउ बहुरि लषन लघु भाई ❀ शोक सनेह न हृदय समाई

कौशिल्याजीने भरतको छातीसे लगा लिया मानों श्रीरामचन्द्रजी जंगलसे लौट आये। पुनः शत्रुघ्ननें उनसे भेंट किया, उस समयका शोक और प्रेम उनके हृदय में न समा सका ।।२।।

देखि स्वभाव कहत सब कोई ❀ राममातु अस काहे न होई
माता भरत गोद बैठारे ❀ आँसु पोंछि मृदु बचन उचारे

कौशिल्याजीको देख सब लोग यही कहने लगे कि श्रीरामजीकी माता ऐसी क्यों न हों? कौशिल्याने भरतको अंक (गोद)में बैठा लिया और आँसू पोंछकर यह मीठी वाणी बोलीं ।।

अजहुँ वत्स बल धीरज धरहू ❀ कुसमय समुझि शोक परिहरहू
जनि मानहु जिय हानि गलानी ❀ काल करमगति अघटित जानी

हे वत्स! तुम धैर्य धारण करो, बुरा समय समझ कर शोक को त्याग दो। काल और कर्म की गति को निश्चल समझ कर मन में हानि अथवा ग्लानि न करो ।।६।।

काहुहि दोष देहु जनि ताता ❀ भा मोहिं सब बिधि बाम बिधाता
जौं ऐसेहु दुख मोहिं जियावा ❀ अजहुँ को जानै का तेहि भावा

हे तात! किसी को दोषी न बनाओ, मेरे लिए तो ब्रह्मा हर तरह से टेढ़े हो गये हैं। यदि ऐसे दुख में भी मैं जो गई तो पता नहीं कि, समय अभी क्या दिखानेवाला है? ।।८।।

दोहा—पितु आयसु भूषन बसन, तात तजे रघुबीर।
बिस्मय हर्ष न हृदय कछु, पहिरे बल्कल चीर ।।१६०।।

हे भरत! पिताकी आज्ञासे श्रीरामचन्द्रजी ने सब गहने व कपड़े उतार दिए और मन में आश्चर्य अथवा प्रसन्नता कुछ भी नहीं की, तथा केले की छाल धारण कर ली ।।१६०।।

मुख प्रसन्न मन राग न रोषू ❀ सबकर सब बिधि करि परितोषू
चली विपिन सुनि सिय सँग लागी ❀ रही न राम चरन अनुरागी

मुखपर प्रसन्नता मनमें न तो प्रेम न द्वेष, हर प्रकारसे सब लोगोंको संतुष्टकर वे बनको चले, यह सुन कर सीता भी साथ गईं और श्रीरामजी के चरणों में प्रेम के कारण रुकी नहीं ।।२।।

सुनतहिं लषन चले उठि साथा ❀ रहे न यत्न किये रघुनाथा
तब रघुपति सबहीं शिर नाई ❀ चले संग सिय अरु लघु भाई

श्रीरामजी का बन-गमन सुन कर लक्ष्मण भी उनके साथ लग गये और न रुके। फिर श्रीरामचन्द्रजी सबको प्रणाम कर सीता और लक्ष्मण के साथ बन को चल दिये ।। ४ ।।

राम लषन सिय बनहिं सिधाये ❀ गयउँ न सँग नहिं प्राण पठाये
यह सब भा इन आँखिन आगे ❀ तउ न तजत तनु जीव अभागे

श्रीराम लक्ष्मण और सीता बनको गए न तो मैं उनके साथ ही गई और न तो अपने प्राणों को ही भेजा। यह सारी घटना मेरे नेत्रोंके सामने ही हुई। पर हा! अभागा जीव इस देहको नहीं छोड़ता ।।

मोहिं न लाज निज नेह निहारी ❀ राम सरिस सुत मैं महतारी
जियन मरन भल भूपति जाना ❀ मोर हृदय शतकुलिश समाना

अब नेह 'प्रेम' देख कर मुझे लज्जा नहीं आती कि श्रीराम जैसा पुत्र और मेरे सदृश माता। जीने और मरने के रहस्य को तो राजा समझते थे कि जो श्रीरामजी के जाने पर प्राण त्याग दिये ।।८।।

दोहा—कौशिल्याके बचन सुनि, भरत सहित रनिवास।
व्याकुल विलपति राजगृह, मानहुँ शोक निवास ।।१६१।।

श्रीकौशिल्या का यह वचन सुन कर भरत के सहित सारा रनिवास और राजा के घर के नौकर-चाकर व्याकुल हो गये, मालूम पड़ता था कि वहाँ शोकका घर बन गया है ।।१६१।।

बिलपहिं बिकल भरत दोउ भाई ❀ कौशिल्या लिये हृदय लगाई
भाँति अनेक भरत समुझाये ❀ कहि विवेक वर बचन सुहाये

भरत और शत्रुघ्न दोनों भाई व्याकुल होकर रोने लगे, उस समय कौशिल्याजीने उन्हें हृदयसे लगा लिया और अनेक तरहके ज्ञान और विचार भरे वचन कहकर भरतजीको समझाने लगीं ।।

भरतहु मातु सकल समुझाई ❀ कहि पुराण श्रुति कथा सुनाई
छल विहीन सुचि सरल सुबानी ❀ बोले भरत जोरि युग पानी

भरत जी ने भी वेद और पुराणों की कथाओं को कह कर सब माताओं को समझाया और दोनों हाथ जोड़ कर छल रहित सुन्दर और पवित्र यह वचन बोले ।।४।।

जे अघ मातु पिता गुरु मारे ❀ गाइ गोठ महि सुरपर जारे
जो अघ तिय बालक बध कीन्हें ❀ मीत महीपति माहुर दीन्हें

हे माता! जो पाप माता पिता और गुरुके मारनेसे होता है, जो पाप गोशालाको जलाने से होता है। जो स्त्री और बालकके मारनेसे होता है और जो राजाको जहर देनेसे होता है

जे पातक उप पातक अहहीं ❀ कर्म बचन मन भव कवि कहहीं
ते पातक मोहिं देउ बिधाता ❀ जो यह होय मोर मत माता

संसार में जितने बड़े-बड़े और छोटे-छोटे पाप हैं जो मन वचन और कर्म से होते हैं जो पण्डितोंने कहा है। हे माता! वे पाप हमें लगें यदि श्रीरामचन्द्रजीके बन जानेमें मेरी राय हो

दोहा—जे परिहर हरिहर चरन, भजहिं भूतगन घोर।
तिनकी गति मोहिं देउ बिधि, जो जननी मत मोर ।।१६२।।

जो लोग शिव और विष्णुके पैरोंको छोड़कर पिशाचोंकी अथवा बुरे लोगों एवं अधर्मियोंकी सेवा करतेहैं। उन्हेंजोफलहोता है विधातावहीफलमुझे देवें यदिमेरीराय श्रीरामचन्द्रजीके बनजानेमेंहो

बेचहिं वेद धर्म दुहि लेहीं ❀ पिशुन पराय पाप कहि देहीं
कपटी कुटिल कलहप्रिय क्रोधी ❀ वेद विदूषक विश्व विरोधी

जो वेदकी विक्री करते हैं, धन लेकर कन्या का विवाह करते हैं, जो छली और टेढ़े हैं कलह ही जिन्हें प्रिय है, जो वेदकी निन्दा करते हैं, और जो सारे संसारकी बुराई में लगे रहते हैं ।।

लोभी लम्पट लोल लबारा ❀ जे ताकहिं परधन पर दारा
पावउँ मैं तिनकर गति घोरा ❀ जो जननी यह सम्मत मोरा

जो लालची, गुण्डे, चंचल और लबार हैं। जो दूसरे के धन और स्त्री को बुरी दृष्टिसे देखते हैं, हे माताजी! यदि इसमें मेरी राय हो तो उन्हीं लोगों की-सी बुरी गति मुझे मिले ।।

जो नहिं साधु संग अनुरागे ❀ परमारथ पथ बिमुख अभागे
जो न भजहिं हरि नर तनु पाई ❀ जिनहिं न हरिहर सुयश सुहाई

जो अभागे हैं और सज्जनों के साथ में मन नहीं लगाते और परमार्थ के विपरीत चलते हैं, जो मनुष्य का देह पाकर भगवान् का भजन नहीं करते हैं ।।६।।

तजि श्रुति पंथ बाम मगु चलहीं ❀ बंचक बिरचि वेष जग छलहीं
तिनकी गति शंकर मोहिं देऊ ❀ जो जननी यह जानौं भेऊ

जो वेद के रास्ते छोड़ कर वाम मार्ग 'एक पंथ अथवा उलटे मार्ग' से चलते हैं और जगत् को धोखा देते हैं। यदि यह भेद मैं जानता होऊँ तो शिवजी उनकी सी गति मुझे देवें ।।८।।

दोहा—मातु भरतके बचन सुनि, साँचे सरल सुभाय।
कहति राम प्रिय तात तुम, सदा बचन मन काय ।।१६३।।

इसी भाँति सच्चे और सरल स्वभावसे ही भरतजीके सीधे बचन सुन कर श्रीकौशिल्याजी बोलीं कि हे तात! तुम सर्वदा मन, वचन और देह से रामजी के प्यारे हो ।।१६३।।

राम प्रान ते प्रान तुम्हारे ❀ तुम रघुपतिहिं प्रान ते प्यारे
बिधु विष चुवै स्रवै हिम आगी ❀ होंहिं बारिचर बारि बिरागी

हे तात! तुम्हारे लिए रामजी प्राणो से प्यारे हैं और तुम उनके लिए प्राणों से प्यारे हो चाहे चन्द्रमा से विष टपकने लगे, बरफ से आग निकले और मछलियाँ जलसे विराग ले लें।।

भये ज्ञान बरु मिटइ न मोहू ❀ तुम रामहिं प्रतिकूल न होहू
मत तुम्हार अस जो जग कहहीं ❀ सो सपनेहुँ सुख सुगति न लहहीं

और चाहे ज्ञान होने पर मोह का नाश न हो, परन्तु हे भरत! तुम रामके विरुद्ध नहीं हो सकते। जगत् में जो कोई इस कार्यमें तुम्हारी सम्मति कहेगा, वह स्वप्नमें भी सुख नहीं पावेगा ।।

अस कहि मातु भरत हिय लाये ❀ थन पय स्रवहिं नयन जल छाये
करत बिलाप विपुल इहि भाँती ❀ बैठेहि बीति गई सब राती

यह कह कर कौशिल्याजीने भरतजीको छातीसे लगा लिया उनके स्तनोंसे दूध बहने लगा आँखोंमें जल भर आया। इस प्रकार बहुत विलाप करते हुए बैठे ही बैठे सारी रात्रि चली गई ।।

बामदेव बसिष्ठ मुनि आये ❀ सचिव महाजन सकल बुलाये
मुनि बहुँ भाँति भरत उपदेशे ❀ कहि परमारथ बचन सुदेशे

इसके पश्चात् वामदेव और वशिष्ठ मुनि आये और सब महाजनों को भी बुलाये। वे ऋषि बहुत प्रकार से भरतजी को परमार्थ का उपदेश देने लगे कि ।।८।।

दोहा—तात हृदय धीरज धरहु, करहु जो अवसर आज।
उठे भरत गुरु बचन सुनि, करन कहेउ सब काज ।१६४।

हे तात! मनमें धीरज रखिए और यह कार्य कीजिये कि जो आज करना आवश्यक है,तब गुरुजीकी बात सुनकर भरतजी उठ खड़े हुए और गुरुने उन्हें सब कार्य करनेको कहा ।।१६४।।

नृप तनु वेद बिहित अन्हवावा ❀ परम विचित्र विमान बनावा
गहि पद भरत मातु सब राखीं ❀ रहीं राम दर्शन अभिलाखीं

भरत जी ने राजा के मृतक देह को स्नान कराकर अत्यन्त सुन्दर विमान बनाया। मातायें जलना चाहती थीं, परन्तु भरतजी ने समझा-बुझा कर रोक दिया ॥ २ ॥

चन्दन अगर भार बहु आये ❀ अमित अनेक सुगन्ध सुहाये
सरजू तट रचि चिता बनाई ❀ जनु सुरपुर सोपान सुहाई

इसके पश्चात् बहुत अधिक सुगन्ध वाले चन्दन और अगर के बहुत से भार आये। सरजू नदी के किनारे पर सुन्दर चिता बनाई गई जो स्वर्ग जाने के लिए सुन्दर सीढ़ी है ॥ ४ ॥

यहिविधिदाह क्रिया सब कीन्हीं ❀ विधिवतन्हायतिलांजलि दीन्हीं
शोधि स्मृति सब वेद पुराना ❀ कीन्ह भरत दशगात्र बिधाना

इस प्रकार दाह-क्रिया को भरत जी समाप्त किये और विधिपूर्वक स्नान कर तिल की अंजलि दिये। फिर उन्होंने स्मृति, वेद और पुराणका विचारकर दशगात्रकी भी क्रिया की ॥६॥

जहँ जहँ मुनिवर आयसु दीन्हा ❀ तहँ तस सहस भाँति सब कीन्हा
भये विशुद्ध किये सब दाना ❀ धेनु बाजि गज बाहन नाना

जहाँ जिस प्रकार गुरुजी आज्ञा दिए वहाँ हजारों प्रकार से भरतजी उस कार्य को किए और अनेक गाय, घोड़े, हाथी तथा और भी सवारी दान देकर पवित्र हुए ॥८॥

दोहा—सिंहासन भूषन बसन, अन्न धरनि धन धाम।
दिये भरत लहि भूमिसुर, भे परिपूरन काम ॥१६५॥

इसके पश्चात् श्रीभरत जी विप्रों को सिंहासन, आभूषण, वस्त्र, अन्न, पृथ्वी, सम्पत्ति और घर का दान दिए जिन्हें पाकर वे सब सन्तुष्ट हो गये ॥१६५॥

पितु हित भरत कीन्ह जस करनी ❀ सो मुख लाख जाइ नहिं बरनी
सुदिन सोधि मुनिवर तहँ आये ❀ सकल महाजन सचिव बुलाये

पिताके कल्याणके लिए भरतजीने जिन कार्यों को किया वह लाखों मुखसे नहीं कहा जा सकता फिर सुन्दर दिन देखकर मुनि वशिष्ठजी वहाँ आये और सब मन्त्रियों तथा महाजनोंको बुलाये॥

बैठे राज-सभा सब जाई ❀ पठए बोलि भरत दोउ भाई
भरत बसिष्ठ निकट बैठारे ❀ नीति धर्म मय बचन उचारे

सब मुनि राज-सभा में जाकर बैठे और दोनों भाई भरत और शत्रुघ्न को बुला लिये॥ तब वसिष्ठ मुनि भरत को समीप में बैठाकर नीति और धर्म से युक्त वाणी बोले ॥४॥

प्रथम कथा सब मुनिवर बरनी ❀ कैकइ कुटिल कीन्ह जस करनी
भूप धर्म व्रत सत्य सराहा ❀ जेहि तन परिहरि प्रेम निबाहा

पहले कैकेयी ने जो टेढ़ा काम किया था उसको मुनि कह सुनाये, बाद में जो महाराज दशरथजीने देह त्यागकर प्रीतिको निबाहा उनके धर्म व्रत और सच्चाई की प्रशंसा की ॥६॥

कहन राम गुन शील सुभाऊ ❀ सजल नयन पुलके मुनि राऊ
बहुरि लषन सिय प्रीति बखानी ❀ शोक सनेह मगन मुनि ज्ञानी

श्रीरामजी के गुण, शील और स्वभाव का वर्णन करते हुए वसिष्ठजी को रोमांच हो आया। वे लक्ष्मण और सीताजी के प्रेम को सोच कर और भी मग्न हो गये ॥८॥

दोहा–सुनहु भरत भावी प्रबल, बिलखि कहेउ मुनिनाथ।
हानि लाभ जीवन मरन, जस अपजस बिधि हाथ ॥१६६॥

फिर वंशिष्ठजी विलख कर बोले–हे भरत! होनहार बलवान् है। उन्नति, हानि और मरना, यश और अपयश यह सब विधाता के हाथ हैं ॥१६६॥

अस बिचारि केहि दीजिय दोषू ❀ व्यर्थ काहि पर कीजिय रोषू
तात बिचार करहु मन माहीं ❀ सोच योग्य दशरथ नृप नाहीं

हे भरतजी! ऐसा समझ कर किसे दोषी ठहराया जाय, व्यर्थ ही किसी पर क्यों क्रोध किया जाय। हे तात! आप मनमें विचार करें तो महाराज दशरथ चिन्ता करने के योग्य नहीं हैं ॥

सोचिय विप्र जो वेद विहीना ❀ तजि निज धर्म विषय लवलीना
सोचिय नृपहि जो नीति न जाना ❀ जेहि न प्रजा प्रिय प्रान समाना

जो ब्राह्मण वेद नहीं जानता और अपने धर्मको त्याग विषयोंमें मन लगाता तथा जो राजा राजनीति नहीं जानता और प्रजा को प्राण के समान नहीं समझता वह सोचने योग्य है ॥४॥

सोचिय वैश्य कृपण धनवानू ❀ जो न अतिथि शिव भक्त सुजानू
सोचिय शूद्र विप्र अपमानी ❀ मुखर मान प्रिय ज्ञान गुमानी

जो वैश्य कंजूस हो, न अतिथि की सेवा करे. और न महादेवजीकी भक्ति करे जो शूद्र होकर ब्राह्मण का अपमान करे, बहुत बोले और ज्ञान का घमंड करे वह सोचने योग्य है ॥

सोचिय पुनि पति बंचक नारी ❀ कुटिल कलह प्रिय इच्छा चारी
सोचिय बटु निज ब्रत परिहरई ❀ जो नहिं गुरु आयसु अनुसरई

फिर पति को धोखा देने वाली उस स्त्री को सोच करना चाहिए कि जो कुटिल और झगड़ालू है और जो स्वतन्त्र रहने वाली है। और वह ब्रह्मचारी शोचनीय है कि जो व्रत तोड़ कर गुरु की आज्ञा को नहीं मानता ॥८॥

दोहा–सोचिय गृही जो मोहबस, करै धर्म पथ त्याग।
सोचिय यती प्रपंचरत, बिगत विवेक विराग ॥१६७॥

जो गृहस्थ मोहमें फँसकर धर्मके मार्गको छोड़ दे वह सोचने योग्य है। जो यती (साधु) विचार और वैराग्य से हीन प्रपंच में लगा रहता है उसको सोच करना चाहिये ॥ १६७ ॥

बैखानस सोइ सोचन योगू ❀ तप बिहाय जेहि भावइ भोगू
सोचिय पिसुन अकारन क्रोधी ❀ जननि जनक गुरु बन्धु बिरोधी

यदि बानप्रस्थी तप छोड़ भोग में मन रखे और जो चुगलखोर है यथा जो बिना कारण ही क्रोध करता है और जो माता-पिता, गुरु और भाइयों से द्वेष रखता है वह शोचनीय है ॥

सब विधि सोचिय पर अपकारी ❀ निज तनु पोषक निर्दय भारी
सोचिय लोभनिरत रत कामी ❀ सुर श्रुति निन्दक परधन स्वामी

जो शरीरका पोषक और दयासे हीन, दूसरेकी बुराई चाहता है, जो लोभी है और जो पराये धनका स्वामी बन बैठा हो, वह सोचनेके योग्य है ॥ ४ ॥

सोचनीय सबही बिधि सोई ❀ जो न छाँड़ि छल हरि जन होई
सोचनीय नहिं कोशल राऊ ❀ भुवन चारि दश प्रगट प्रभाऊ

जो छलको छोड़कर भगवान्‌का भजन न करे वह सर्वदा शोचनीय है परन्तु जिस प्रकार महाराज दशरथका प्रताप चौदहों भुवनमें फैला हुआ है, वह शोचके योग्य नहीं है ॥६॥

भयउ न अहइ न अब होनिहारा ❀ भूप भरत जस पिता तुम्हारा
विधि हरिहर सुरपति दिशिनाथा ❀ बरनहिं सब दशरथ गुन गाथा
तीनिकाल त्रिभुवन जग माहीं ❀ भूरि भाग्य दशरथ सम नाहीं

हे भरत ! जैसे आपके पिताजी थे वैसा न कोई राजा हुआ, और न होनेवाला है। जिसके गुणको ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इन्द्र और दिक्पाल भी वर्णन करते हैं ॥ तीनों कालों और तीनों लोकों तथा इस संसारमें दशरथके समान बड़ी भाग्य वाला कोई नहीं हुआ ॥

दोहा—कहहु तात केहिं भाँति कोउ, करहिं बड़ाई तासु।
राम लषन तुम शत्रुहन, सरिस सुवन सुचि जासु ॥१६८॥

हे तात ! भला कहो तो सही कि, महाराज दशरथजीकी प्रशंसा कौन कर सकता है कि जिसके राम, लक्ष्मण और शत्रुघ्न और तुम्हारे जैसे पवित्र पुत्र हुए हैं ॥ १६८ ॥

सब प्रकार भूपति बड़भागी ❀ बादि बिषाद करिय तेहि लागी
यह सुनि समुझि शोक परिहरहू ❀ शिर धरि राज रजायस करहू

हे भरत ! सब प्रकारसे राजा दशरथ बड़े भाग्यवान् थे, उनके विषयमें शोक करना व्यर्थ है। यह जानकर शोक छोड़ दीजिये और राजाकी आज्ञा शिर पर रखकर राज्य कीजिये ॥

राउ राजपद तुम कहँ दीन्हा ❀ पिता बचन फुर चाहिय कीन्हा
तजे राम जेहि बचनहिं लागी ❀ तनु परिहरेउ राम बिरहागी

महाराजने आपको राज्य दे दिया है पिताकी वाणी सच्ची करनी चाहिये। महाराज दशरथजी बात ही के हेतु रामको छोड़ दिए और उन्हींके विछोह रूप आगमें अपने देहकी आहुति दे दिये ॥

नृपहिं बचन प्रिय नहिं प्रिय प्राना ❀ करहु तात पितु वचन प्रमाना
करहु शीश धरि भूप रजाई ❀ है तुमकहँ सब भाँति भलाई

महाराजको बात प्यारी थी न कि प्राण, हे तात! उनकी बातको मानकर उनका प्रिय कीजिये आप महाराजकी आज्ञा सिर पर रख उसको पालिए इसीमें सब प्रकार आपकी भलाई है ॥

परशुराम पितु आज्ञा राखी ❀ मारी मातु लोक सब साखी
तनय यजातिहिं यौवन दयऊ ❀ पितु आज्ञा अघ अयश न भयऊ

सारा संसार यह जानता है कि परशुरामजीने अपने पिताकी बात मानकर माताको मार डाला। पिताकी आज्ञा होनेके कारण उन्हें न तो पाप हुआ और न तो अपयश ॥

दोहा—अनुचित उचित विचार तजि, जो पालहिं पितु बयन।
ते भाजन सुख सुयश के, बसहिं अमरपति अयन ॥१६९॥

जो अच्छा या बुरा कुछ भी न विचारकर पिताकी आज्ञाको पालन करते हैं वे आनन्द और सुन्दर यशको पाते हैं और स्वर्गमें वास करते हैं ॥ १६९ ॥

अवसि नरेश बचन फुर करहू ❀ पालहु प्रजा शोक परिहरहू
सुरपुर नृप पाइहिं परितोषू ❀ तुम कहँ सुकृत सुयश नहिं दोषू

राजाकी आज्ञा अवश्य सत्य कीजिये, प्रजाकी रक्षा कीजिए और शोकका परित्याग कीजिये। इससे राजा स्वर्गमें सन्तुष्ट होंगे और तुम्हें दोष न लगकर सुन्दर यश मिलेगा ॥

वेद विदित सम्मत सबहीका ❀ जेहि पितु देइ सो पावइ टीका
करहु राज्य परिहरहु गलानी ❀ मानहु मोर बचन हित जानी

पिता जिसे राज्य दे वही अधिकारी है, यह बात वेदमें लिखो है और सर्व सम्मत है। मेरा वचन हितकर मानकर ग्लानिको छोड़कर राज्य कीजिये ॥ ४ ॥

पुनि सुख लहब राम वैदेही ❀ अनुचित कहब न पण्डित केही
कौशिल्यादि सकल महतारी ❀ तेउ प्रजा सुख होंहिं सुखारी

यह सुनकर श्रीरामजी और जानकीजीको आनन्द होगा और कोई भी पण्डित इसे अनुचित न कहेगा। प्रजाके सुखसे कौशलया आदि सभी मातायें सुखी होंगी ॥ ६ ॥

प्रेम तुम्हार राम कर जानहिं ❀ सो सब विधि तुमसन भल मानहिं
सौंपेउ राज्य राम के आये ❀ सेवा करेहु सनेह सुहायें

मातायें श्रीरामजीसे आपकी प्रीतिको पहचानती हैं वे आपसे हर प्रकार सुखी होंगी। श्रीरामचन्द्रजीके आने पर राज्य लौटाकर प्रेमके सहित उनकी सेवा 'टहल' करना ॥ ८ ॥

दोहा—कीजिय गुरु आयसु अवशि, कहहिं सचिव कर जोरि।
रघुपति आये उचित जस, तब तस करब बहोरि ॥१७०॥

मन्त्री हाथ जोड़कर कहते हैं कि गुरुकी आज्ञा अवश्य कीजिए, श्रीरामचन्द्रजीके आने पर जैसा उचित समझिएगा वैसा कीजियेगा ॥ १७० ॥

कौशल्या धरि धीरज कहई ❀ पूत पथ्य गुरु आयसु अहई
सो आदरिय करयि हित मानी ❀ तजिय विषाद काल गति जानी

तब धैर्य धारणकर कौशिल्या बोलीं कि—हे पुत्र ! मुनिका वचन सुन्दर औषधि है, उसे लाभकारी मानकर आदरके साथ करो और समयका प्रभाव समझकर विषाद छोड़ दो ॥

बन रघुपति सुरपुर नरनाहू ❀ तुम यहि भाँति तात कदराहू
परिजन प्रजा सचिव सब अम्बा ❀ तुमहीं सुत सब कहँ अवलम्बा

श्रीरामचन्द्रजी बनमें हैं, राजा स्वर्गमें और तुम इस प्रकार कायरता प्रकट करते हो, कुटम्ब, प्रजा, मन्त्री और सब माताओंके हे पुत्र ! तुम्हीं एक सहारा हो ॥ ४ ॥

लखि बिधि बाम काल कठिनाई ❀ धीरज धरहु मातु बलि जाई
सिर धरि गुरु आयस अनुसरहू ❀ प्रजा पालि पुरजन दुख हरहू

हे भरत ! विधाताको टेढ़ा और समयकी कठिनताको देखकर धीरज धरो, गुरुकी आज्ञा शिर पर रखकर उसका अनुसरणकर नगरके लोगोंका कष्ट निवारण करो ।। ६ ।।

गुरुके बचन सचिव अभिनन्दन ❁ सुनत भरत हियहित जनु चन्दन
सुनी बहोरि मातु वर बानी ❁ शील सनेह सरल रस सानी

वशिष्ठजीकी वाणी और मन्त्रियोंकी सराहना सुनकर भरतके मनमें मानो चन्दनके समान सुखद हुआ ।। फिर उन्होंने शील और प्रेममें पगे सीधे तथा रससे सने हुए माताके वचन सुने ।।

छन्द—सानी सरल रस मातु बानी सुनि भरत व्याकुल भये
लोचन सरोरुह श्रवत सींचत बिरह उर अंकुर नये
सो दशा देखत समय तेहि बिसरी सबहि सुधि देहि की
तुलसी सराहत सकल सादर सींव सहज सनेह की ।।७।।

माताकी सीधी और रससे पगी वाणीको सुनकर भरतजी व्याकुल हो गये । उनके कमल रूपी नेत्रोंसे आँसू टपकने लगा जिससे वे मनमें उत्पन्न विरहके अंकुर सींचने लगे ।। इस समय की अवस्था देखकर किसीको भी अपनी सुध न रही । तुलसीदासजी कहते हैं कि उस समय स्वाभाविक प्रीतिकी सीमाको सब लोग सराहने लगे ।।

सोरठा—भरत कमल कर जोरि, धर्म धुरंधर धीर धरि ।
बचन अमिय जनु बोरि, देत उचित उत्तर सबहिं ।।७।।

पश्चात् कमल रूपी हाथोंको जोड़कर धर्ममें धुरन्धर भरतजी धैर्य धारणकर वचनोंको मानो अमृतमें डुबोकर सब लोगोंको यथोचित उत्तर देने लगे ।। ७ ।।

मोहिं उपदेस दीन्ह गुरु नीका ❁ प्रजा सचिव संमत सबही का
मातु उचित पुनि आयसु दीन्हा ❁ अवसि सीस धरि चाहिय कीन्हा

गुरुने मुझे अच्छा उपदेश दिया और प्रजा मंत्री सभी जनोंकी राय है । माताकी भी उचित आज्ञा प्राप्त हुई जिसे शिर पर रखकर अवश्य करना चाहता हूँ ।। २ ।।

गुरुपितु मातु स्वामि हित बानी ❁ सुनि मन मुदित करिय भल जानी
उचित कि अनुचित किये बिचारू ❁ धर्म जाय सिर पातक भारू

क्योंकि गुरु, पिता, माता और स्वामीका हितकारक वचन सुनकर उसे ठीक समझकर प्रसन्न मनसे करना चाहिए ।।३।। उचित-अनुचितका विचार करे तो धर्म चला जाता है और भारी पाप भी लद जाता है ।। ४ ।।

तुम तो देहु सरल सिख सोई ❁ जो आचरत मोर हित होई
यद्यपि यह समुझत हौं नीके ❁ तदपि होत परितोष न जीके

आप लोग तो ऐसी ही अच्छी शिक्षा दे रहे हैं कि जिस पर चलनेसे मेरा कल्याण हो । यद्यपि मैं यह बात समझ रहा हूँ, फिर भी जीको सन्तोष नहीं होता ।। ६ ।।

अब तुम विनय मोरि सुनि लेहू ❁ मोहिं अनुहरत सिखावन देहू
उत्तर देउँ छमउ अपराधू ❁ दुखित दोष गुन गनहिं न साधू

आपलोग मेरी प्रार्थनाको सुनकर उसके अनुसार उपदेश करें और यह जो मैं उत्तर देता हूँ इस दोषको आप लोग क्षमा करेंगे क्योंकि दुःखीके दोष और गुण सज्जन लोग नहीं गिनते ।।८।।

दोहा–पितु सुरपुर सियराम बन, करन कहहु मोहिं राज ।
यहिते जानहु मोर हित, कै आपन बड़ काज ।।१७१।।

पिताजी इन्द्रपुरीमें हैं, सीता और श्रीरामजी जंगलमें हैं और मुझे राज्य करनेको कहते हैं, इसमें आप लोग मेरा हित समझते हैं अथवा कोई अपना बड़ा कार्य ।। १७१ ।।

हित हमार सियपति सेवकाई ❀ सो हरि लीन्ह मातु कुटिलाई
मैं अनुमान दीख मन माहीं ❀ आन उपाय मोर हित नाहीं

हमारी भलाई तो श्रीरामजीके टहलमें थी जिसे कैकेयीकी कुटिलताने हर लिया । मनमें अनुमान कर मैंने देखा तो संसारमें इसके अतिरिक्त मेरी भलाईका अन्य कोई यत्न नहीं है ।।

सोक समाज राज केहि लेखे ❀ लषन राम सिय पद बिनु देखे
बादि बसन बिनु भूषन भारू ❀ बादि बिरति बिनु ब्रह्म बिचारू

श्रीराम लक्ष्मण और सीताका चरण न देखकर इस सोचसे भरे राज्यका कौन-सा काम है । कपड़ा न हो तो गहना किस कामका, और ब्रह्मका विवेक न हो तो विराग किस काम का ?

सरुज सरीर बादि बहु भोगा ❀ बिनु हरि भक्ति जाय जप जोगा
बादि जीव बिनु देह सुहाई ❀ बादि मोर सब बिनु रघुराई

शरीरमें रोग है तो विविध प्रकारके भोग वृथा हैं, भगवद्भक्ति बिना जपयोग किस कामका ? जीव न रहे तो सुन्दर देह वृथा, इसी तरह रामजीके बिना मेरा सब कुछ व्यर्थ है ।।

जाउँ रामपहँ आयसु देहू ❀ एकहि आंक मोर हित एहू
मोहिं नृप करि आपन भल चहहू ❀ सो सनेह जड़ताबस कहहू

मेरी यही एक विनय है कि रामजीके निकट जानेकी आज्ञा मुझे दी जाय, हमको राजा बना करके आप लोग अपनी भलाई चाहते हैं, तो यह प्रेम और मूढ़तावश कहते हैं ।।८।।

दोहा–कैकइ-सुअन कुटिल मति, रामविमुख गतलाज ।
तुम चाहत सुख मोहबस, मोहिंसे अधमके राज ।।१७२।।

मैं कैकेयीका दुष्ट पुत्र श्रीरामजीके विमुख होकर लज्जा रहित हूँ, सो मेरे जैसे नीचके राज्यमें आप लोग आनन्द चाहते हैं ? ।। १७२ ।।

कहौं साँच सब सुनि पतियाहू ❀ चाहिय धर्मशील नरनाहू
मोहिं राज हठि देइहहु जबहीं ❀ रसा रसातल जाइहि तबहीं

मैं ठीक कह रहा हूँ, आप लोग विश्वास रक्खें, राजाको धर्मात्मा होना चाहिए ।। मुझे हठपूर्वक ज्योंही आप लोग राज्य देंगे, उसी काल पृथ्वी रसातलमें चली जायेगी ।। २ ।।

मो समान को पाप निवासी ❀ जेहि लगि सीय राम बनवासी
राउ राम कहँ कानन दीन्हा ❀ बिछुरत गमन अमरपुर कीन्हा

मेरे ऐसा पापी कौन है कि जिसके लिए राम-सीता और लक्ष्मण बन को चले गये। राजा ने श्रीरामजी को बन दिया और उनका विछोह होते ही स्वर्ग को प्रस्थान कर दिया ॥४॥

मैं शठ सब अनरथ कर हेतू ❀ बैठि बात सब सुनहु सचेतू
बिनु रघुबीर बिलोकि अवासू ❀ रहे प्रान सहि जग उपहासू

मैं दुष्ट सब बुराइयों का कारण हूँ कि बैठकर सब बातोंको सचेत होकर सुनता हूँ और श्रीरामजी के बिना घरको देख कर मेरे प्राण रह गए और जगत् में हँसी सह रहा हूँ ॥६॥

राम पुनीत विषय रस रूखे ❀ लोलुप भूप भोग के भूखे
कहँ लगि कहौं हृदय कठिनाई ❀ निदरि कुलिस जेंहि लही बड़ाई

श्रीरामजी पुनीत और भोगों को न चाहने वाले हैं, राजा तो लालची होते हैं और भोग चाहते हैं। मैं अपने हृदयकी कठोरताका वर्णन किस प्रकार करूँ जो वज्रका भी निरादर कर रहा है

दोहा—कारनते कारज कठिन, होइ दोष नहिं मोर।
कुलिस अस्थितें उपलते, लोह कराल कठोर ॥१७३॥

कारणसे कार्य कठिन होता है जैसे हड्डीसे बज्र बना और पत्थर से लोहा, पर उन दोनों की अपेक्षा लोहा अधिक कठोर होता है; परन्तु मैं तो और भी बढ़ गया हूँ ॥ १७३ ॥

कैकेयीभव तनु अनुरागे ❀ पामर प्रान अघाइँ अभागे
जो प्रियविरह प्रान प्रिय लागे ❀ देखब सुनब बहुत अब आगे

मेरा यह नीच प्राण कैकेयी से उत्पन्न देहके साथ प्रीति रखता है ॥१॥ यदि इस प्राण को श्रीरामजीका विछोह ही पसन्द है तब तो आगे बहुत कुछ देखना है ॥२॥

लखन रामसिय कहँ बन दीन्हा ❀ पठइ अमरपुर अतिहित कीन्हा
लीन्ह बिधवपन अपयस आपू ❀ दीन्हेउ प्रजहिं सोक संतापू

राम लक्ष्मण और सीता को बन दिया, महाराज दशरथजी को स्वर्ग में भेज स्वाभी की भलाई किया ॥ अपने विधवा हुई और बुरा यश कमाया, प्रजा को शोक और दुःख दिया ॥

मोहिं दीन्ह सुख सुयश सुराजू ❀ कीन्ह कैकयी सबकर काजू
इहि पर मोर कहा अब नीका ❀ तेहि पर देन कहहु तुम टीका

मुझे सुख, सुयश और स्वराज्य दिया, मानों कैकेयी ने सभी का काम कर दिया। इस पर भी तुम राज्य का टीका देने को कह रहे हो; क्या यही अच्छाई है ? ॥ ६ ॥

कैकयिजठर जनमि जगमाहीं ❀ यह मोहिं कहँकछु अनुचित नाहीं
मोर बात सब बिधिहि बनाई ❀ प्रजा पाँच कत करहु सहाई

ककेयीके उदरसे जन्म हुआ है तो मेरे लिए यह कोई बुरी बात नहीं है। मेरी यह सब बात ब्रह्मा ने रच दी है, अब आप पाँच प्रजा वर्ग मिलकर मेरी क्या सहायता करते हैं ? ॥

दोहा—ग्रह ग्रहीत पुनि बात बस, तेहि पुनि बीछी मार।
ताहि पियाइहि बारुनी, कहहु कवन उपचार ॥१७४॥

जिसको शनैश्चर आदि ग्रह पकड़ लिये हों और जो रोग के वश हो, तिस पर भी बिच्छू डँस लिया हो, शराब भी पिला दिया हो तो भला उसके लिए कौन सी औषधि हो सकती है ? ।।

कैकयि सुवन जोग जग जोई ❀ चतुर बिरंचि दीन्ह मोहिं सोई
दसरथतनय राम लघु भाई ❀ दीन्ह मोहिं बिधि बादि बड़ाई

कैकेयी के पुत्र के योग्य जो होना चाहिए बुद्धिमान् विधाता ने सब मुझको दिया । महाराज दशरथजीका पुत्र और श्रीरामजीका छोटा भाई भरत, यह प्रशंसा ब्रह्मा ने व्यर्थ ही दिया है ।।

तुम्ह सब कहहु कढ़ावन टीका ❀ राय राज सबहीकहँ नीका
उतर देउँ केहि विधि केहि केही ❀ कहहु सुखेन यथा रुचि जेही

आप लोग राज्य का टीका कराने को कहते हैं, भला राज्य किसे स्वीकार नहीं है ? मैं किस प्रकार सबको उत्तर दूँ, जो आप लोगों को कहना हो सुखसे कहते चलिये ।। ४ ।।

मोहिं कुमातु समेत बिहाई ❀ कहहु कहहिं को कीन्ह भलाई
मोहिं बिनु को सचराचर माहीं ❀ जेहि सियराम प्रानप्रिय नाहीं

मुझे और मेरी कुटिल माता को छोड़ कर कौन किसकी कैसी भलाई किया है भला कहिए तो । मुझे छोड़ कर कौन ऐसा है कि जिसे सीता और श्रीरामचन्द्र प्राणोसे प्यारे न हों ।।६।।

परमहानि सबकहँ बड़लाहू ❀ अदिन मोर नहिं दूषन काहू
संशय शील प्रेम बस अहहू ❀ सबइ उचित अब जो कछु कहहू

मेरी जो इतनी बड़ी हानि हुई यह सब मेरे दुष्ट दिनकी बातें हैं इसमें किसी का दोष नहीं है । इससे सन्देह शोक और स्नेह के अधीन होकर जो आप लोग कहें सब उचित ही है ।।

दोहा—राम मातु सुठि सरल चित, मोपर प्रेम बिसेषि ।
कहहिं सुभाव सनेहबस, मोरि दीनता देषि ।।१७५।।

श्रीरामजी की माता पवित्र हैं और उनका सरल स्वभाव है वे मुझ पर विशेष प्रेम रखती हैं।। और स्वभावसे ही प्रेम होनेसे मेरी दरिद्रता (दीनता) देखकर राजा होने को कहती हैं ।।

गुरुविवेकसागर जगजाना ❀ जिन्हहिं बिस्व कर बदर समाना
मोहिकहँ तिलक साज सज सोऊ ❀ भयेबिधिविमुख-विमुख सबकोऊ

गुरु वशिष्ठजी महाराज ज्ञानके समुद्र हैं, विश्व जानता है, वह भी मुझे राज्य-तिलक देने को कहते हैं, इससे मेरा तो विधाता ही रुष्ट है और आप सब भी मुझसे रुष्ट ही हैं ।।२।।

परिहरि रामसीय जगमाहीं ❀ को नहिं कहहिं मोर मत नाहीं
सो मैं सुनब सहब सुख मानी ❀ अंतहु कीच तहाँ जहँ पानी

श्रीसीताजी और रामजी को छोड़ कर सभी लोग इसमें मेरी सम्मति बतायेंगे ।। सो मैं सब सुखपूर्वक सहन करूँगा, क्योंकि जहाँ जल है वहीं कीचड़ है ।। ४ ।।

डर न मोहिं जग कहै कि पोचू ❀ परलोकहु कर नाहिन सोचू
एकइ बड़ उर दुसह दवारी ❀ मोहिं लगि भे सियराम दुखारी

मुझे जगतके लोग डरपोक कहेंगे इसका मुझे कुछ भी भय नहीं है, परलोकका भी डर नहीं है परन्तु मेरे मनमें एक यही आग धधक रही है कि मेरे कारण राम-सीताको दुःख हुआ ॥६॥

जीवन लाभ लषन भल पावा ❀ सब तजि रामचरन मन लावा
मोर जनम रघुबरबन लागी ❀ झूठ काह पछिताउँ अभागी

जीवनका फल तो भाई लक्ष्मणजीको मिला जो उन्होंने श्रीरामजीके चरणोंमें मन लगाया ॥७॥ मेरा तो जन्म श्रीरामजीके बन जानेके लिए ही हुआ, तब मैं झूठा पश्चात्ताप क्या करूँ ? ॥८॥

दोहा—आपनि दारुन दीनता, सबहिं कहेउँ समुझाय ।
देखे बिनु रघुबीरपद, जियकी जरनि न जाय ॥१७६॥

सब लोगोंको समझाकर अपनी दुस्सह गरीबी कह रहा हूँ कि श्रीरामचन्द्रजीके चरणों को बिना देखे जीकी जलन नहीं मिट सकती है ॥ १७६ ॥

आन उपाय मोहिं नहिं सूझा ❀ को जियकी रघुबरबिनु बूझा
एकहि आँक इहै मनमाहीं ❀ प्रातकाल चलिहौं प्रभुपाहीं

मुझको दूसरा उपाय नहीं दीखता है; क्योंकि श्रीरामचन्द्रजीके बिना मेरे हृदयको कौन पहचान सकता है? मैंने यही विचार कर रक्खा है कि प्रातः होते ही प्रभुके पास चलूँगा ॥२॥

यद्यपि मैं अनभल अपराधी ❀ भइ मोहिं कारन सकल उपाधी
तदपि चरन सनमुख मोहिं देखी ❀ छमि सब करिहहिं कृपा विशेखी

मैं बुरा और दोषी तो हूँ मेरे हेतुसे सब उपद्रव हुआ, तथापि अपने चरणोंके समीप मुझे देखकर विशेष कृपा करनेवाले प्रभु मेरे सब दोषोंको क्षमा कर देंगे ॥ ४ ॥

सील सकुचि सुचि सरल सुभाऊ ❀ कृपा सनेह सदन रघुराऊ
अरिहुक अनभल कीन्ह न रामा ❀ मैं सिसु सेवक यद्यपि बामा

क्योंकि प्रभु तो शील संकोचसे सरल चित्तवाले दया और प्रेमके घर हैं वह तो शत्रुकी भी बुराई नहीं करते मैं यद्यपि टेढ़ा हूँ तथापि उनका बालपनसे ही दास हूँ ॥ ६ ॥

तुम पै पाँच मोर भल मानी ❀ आयसु आसिष देहु सुबानी
जेहि सुनि विनय मोहिं जन जानी ❀ आवहिं बहुरि राम रजधानी

इसलिए आप पंच लोग भी मेरा भला जानकर अच्छे वचनोंसे ऐसी आज्ञा और आशीर्वाद दें कि जिससे प्रभु मेरी प्रार्थना मानकर पुनः राजधानी अयोध्यामें लौट आवें ॥८॥

दोहा—यद्यपि जनम कुमातुते, मैं सठ सदा सदोस ।
आपन जानि न त्यागिहैं, मोहिं रघुबीर भरोस ॥१७७॥

यद्यपि मेरा जन्म एक दुष्ट मातासे हुआ है और मैं सर्वदासे शठ और दोषी हूँ, फिर भी मैं श्रीरामजीका भरोसा रखता हूँ कि वह अपना जानकर मेरा त्याग नहीं करेंगे ॥ १७७ ॥

भरत बचन सब कहँ प्रिय लागे ❀ राम सनेह सुधा जनु पागे
लोग वियोग विषम दुख दागे ❀ मन्त्र सजीव सुनत जनु जागे

भरतजीकी वाणी सबको प्यारी लगी, मानो वह श्रीरामजीके प्रेमरूपी अमृतसे सनी थी। सब लोग विछोहके कठोर तापसे दुःखी थे, उनके लिए इसने सजीवन मंत्रका काम किया ।।

मातु सचिव गुरु पुर नर नारी ❀ सकल सनेह विकल भये भारी
भरतहिं कहहिं सराहि सराही ❀ राम प्रेम मूरति जनु आही

मातायें, मन्त्री, गुरु और नगरके सभी स्त्री-पुरुष प्रेमसे बहुत विकल हो-होकर भरतकी सराहना करते हैं कि श्री रामजीके प्रेमकी मूर्ति-स्वरूप भरतजी हैं ।।४।।

तात भरत अस काहे न कहहू ❀ प्रान समान राम प्रिय अहहू
जो पामर आपनि जड़ताई ❀ तुम्हहिं लगाइ मातु कुटिलाई

हे भरत जी ! आप ऐसा क्यों न कहोगे, जब कि आप प्राणके तुल्य श्रीरामजीको प्यारे हो ।।५।। वह नीच है जो माताकी कुटिलताको अपनी मूर्खतासे तुम्हें लगायेगा ।।६।।

सो सठ कोटिन पुरुषसमेता ❀ बसहिं कल्पशत नरकनिकेता
अहि अघ अवगुन मनि नहिं गहई ❀ हरै गरल दुख दारिद दहई

वह नराधम करोड़ों पुरुषोंके सहित सैकड़ों कल्प तक नरकका वासी होगा ।।७।। मणि सर्पके पाप और दुर्गुणोंको नहीं लेती किन्तु वह दुःख और दरिद्रताका शमन करती है ।।८।।

दोहा—अवसि चलिय बन राम जहँ, भरत मन्त्र भल कीन्ह ।
सोक सिंधु बूड़त सबहिं, तुम अवलंबन दीन्ह ।।१७८।।

लोग कहते हैं कि भरतजी यह अच्छा विचार किए हैं कि श्रीरामजीके पास बनमें चला जाय । हे तात ! सब लोग शोक-सागरमें डूब रहे थे, आपने सहारा दे दिया ।।१७८।।

भा सबके मन मोद न थोरा ❀ जनु घन धुनि सुनि चातक मोरा
चलत प्रात लखि निर्नय नीके ❀ भरत प्रानप्रिय भे सबहीके

सब लोगके हृदयमें बड़ा ही मोह हुआ मानो चातक और मोरने बादलकी ध्वनि सुन ली हो । प्रातःकाल चलना होगा, यह सुनकर भरतजी सभीको प्राणोंके समान प्रिय होने लगे ।।

मुनिहिं बन्दि भरतहिं सिरनाई ❀ चले सकल घर बिदा कराई
धन्य भरतजीवन जगमाहीं ❀ सील सनेह सराहत जाहीं

सब लोग मुनिकी प्रार्थनाकर भरतजीको शिर नवा विदा ले घरको चले ।। भरतजीके शील और स्नेहकी प्रशंसा करते हुए चले जाते थे कि संसारमें उनका जीवन धन्य है ।। ४ ।।

कहहिं परस्पर भा बड़ काजू ❀ सकल चलैकर साजहिं साजू
जेहि राखहिं घर रहि रखवारी ❀ सो जानै जनु गरदन मारी

सब लोग आपस में कहते हैं कि बड़ा भारी काम हो गया, फिर चलनेका सामान करते हैं ।। जिसे घरकी रक्षाके लिए रोकते वह समझता कि उसका सिर काटा जा रहा है ।।६।।

कोउ कह रहन कहिय जनि काहू ❀ को न चहै जगजीवन लाहू
केहि न भाव लक्ष्मण सिय रामू ❀ सबको प्रिय हिय सदा सकामू

कोई कहता है कि किसीको रुकनेको न कहो, संसारमें जीनेका लाभ कौन नहीं चाहता ।। श्रीराम, लक्ष्मण और सीताजीके दर्शन कौन नहीं चाहता । सबको श्रीरामचन्द्रजी हृदयसे

प्यारे हैं और रामजीके दर्शन की सदा अभिलाषा है ।

दोहा--जरौ सुसंपतिसदन सुख, सुहृद मातु पितु भाय ।
सन्मुख होत जो रामपद, करै न सहज सहाय ।।१७९।।

सुन्दर धन, घर का सुख, मित्र, माता, पिता तथा भाई ये सभी नष्ट हो जायँ यदि श्रीरामजी के सम्मुख होने में स्वभावतः सहायता नहीं पहुँचाते ।।१७९।।

घर-घर बाहन सार्जाहं नाना ❀ हर्षित हृदय प्रभात पयाना
भरत जाय घर कीन्ह बिचारू ❀ नगर बाजि गज भवन भँडारू

प्रत्येक घर-घरमें सवारी साजी जा रही है, सब लोग इस हेतु प्रसन्न हैं कि प्रातः होते ही सब लोग चलेंगे ।। भरतजीने घर पहुँचकर घोड़े, हाथी, घर और भण्डार के विषय में विचार किया ।।

संपति सब रघुपतिकी आही ❀ जो बिनु यतन चलौं तजि ताही
तौ परिनाम न मोरि भलाई ❀ पापि सिरोमनि स्वामि दुहाई

यह सब धन श्रीरामचन्द्रजी का है यदि बिना उपाय किए चलता हूँ तो अंतमें मेरा भला नहीं होगा, श्रीरामजी की शपथ कर कहता हूँ कि इससे मैं पापियों का सिरताज बन जाऊँगा ।। ४ ।।

करहि स्वामि हित सेवक सोई ❀ दूषनकोटि देइ कि न कोई
अस बिचारि सुचि सेवक बोले ❀ जो सपनेहुँ निज धरम न डोले

दास तो वही है जो स्वामीका भला करना चाहे, कोई कितना भी दोषो क्यों न हो, यह विचारकर श्रीरामजीके पवित्र सेवक जो स्वप्नमें भी धर्म को नहीं छोड़ सकते थे, उन्हें बुलाया।।६।।

कहि सब मरम धरम सब भाखा❀ जो जेहि लायक सो तेहि राखा
करि सब जतन राखि रखवारे❀ राम मातु पहँ भरत सिधारे

सब लोगोंसे धर्मका छिपा हुआ रहस्य कह कर जो जिस कार्य के योग्य था, उसे वहाँ ही रख, इस प्रकार उपाय कर रक्षक नियुक्त कर श्रीभरतजी श्रीरामजी की माता कौशिल्याजीके पास गये ।।

दोहा—आरत जननी जानि सब, भरत सनेह सुजान ।
कहेउ सजावन पालकी, सजन सुखासन यान ।।१८०।।

तब सब माताओं को दुःखी समझ कर सज्जन तथा परम स्नेही भरतजी ने बैठने का जिसमें सुखद सुन्दर आसन हो, ऐसी पालकी बनाने की आज्ञा (नौकरों को) दी ।। १८० ।।

चक चकई इव पुरनरनारी❀ चलब प्रात उर आरत भारी
जागत सब निसि भये बिहाना ❀ भरत बोलाए सचिव सुजाना

चकई चकवा के तुल्य सब अवधपुरी के रहने वाले सबेरा होनेका माँगन माँग रहे हैं । जागते-जागतें सब रात व्यतीत हो गई, सबेरा हो गया भरतजी ने बुद्धिमान् मंत्री को बुला कर ।।

कहहु लेहु सब तिलक समाजू ❀ बनहिं देब मुनि रामहिं राजू
बेगि चलहु सुनि सचिव जुहारे ❀ तुरत तुरँग रथ नाम सँवारे

भरतजीने कहा तिलककी सामग्री ले लीजिए । बनमें ही मुनिजी रामजीको राज्य देंगे ।। भरतजी की वाणी सुन कर सचिव लोग प्रणाम कर शीघ्र ही सब साज सजा लिये ।। ४ ।।

अरुन्धती अरु अग्नि समाऊ ❁ रथ चढ़ि चले प्रथम मुनिराऊ
बिप्रबृन्द चढ़ि बाहन नाना ❁ चले सकल तप तेज निधाना

सबसे आगे मुनि वशिष्ठ तथा अरुन्धती अग्नि के समाज सहित रथ में बैठ कर चले। फिर सभी तप और तेज के निधान ब्राह्मण लोग अनेक सवारियों पर बैठ कर चले ।। ६ ।।

नगर लोग सब सजि सजि याना❁ चित्रकूटकहँ कीन्ह पयाना
सिविका सुभग न जाय बखानी ❁ चढ़ि-चढ़ि चलत भईं सब रानी

अवधपुरी के रहनेवाले सुन्दर सवारियोंपर चढ़कर चित्रकूटको चले। सारी रानियाँ पालकियोंपर बैठ कर चलीं कि जिस पालकी की सुन्दरता का वर्णन नहीं किया जा सकता ।। ८ ।।

दोहा—सौंपि नगर सुचि सेवकन्हि, सादर सबहिं चलाय।
सुमिरि रामसिय चरन तब, चले भरत दोउ भाय ।।१८१।।

फिर अच्छे नौकरोंको अवधपुरीमें नियुक्त कर आदरके साथ और लोगों को चला कर श्रीराम और श्रीजानकी जी के चरणों का स्मरण कर भरत और शत्रुघ्न चले ।। १८१ ।।

रामदरस हित सब नरनारी ❁ जनु करि-करिनि चले तकि बारी
बन सिय राम समुझि मनमाहीं ❁ सानुज भरत पयादेहि जाहीं

श्रीरामचन्द्रजी के दर्शनके लिए सब स्त्री-पुरुष इस तरह चले जैसे हाथी और हथिनी जल देख कर चलती हैं राम और सीता बनमें हैं यह विचारकर शत्रुघ्नजी और भरतजी दोनों भाई पैदल ही चले

देखि सनेह लोग अनुरागे ❁ उतरि चले हय गज रथ त्यागे
जाइ समीप राखि निज डोली ❁ राम मातु मृदु बानी बोली

इस प्रेम को देखकर बड़ा प्रेम हुआ और सब लोग बाहन त्याग कर पैदल ही चले ।। पश्चात् कौशिल्याजी भरतके निकट जाकर पालकीको रखवाकर यह मीठी वाणी बोलीं ।।४।।

तात चढ़उ रथ बलि महतारी ❁ होइहिं प्रिय परिवार दुखारी
तुम्हरे चलत चलहिं सब लोगू ❁ सकल सोक कृस नहिं मगजोगू

हे तात! रथ पर चढ़ो, प्यारा कुटुम्ब कष्ट पा रहा है, तुम्हारे पैदल चलनेसे सब लोग पैदल चल रहे हैं, सब शोक के मारे कृशित हैं, इससे मार्ग चलने में समर्थ नहीं हैं ।। ६ ।।

सिरधरि बचन चरन सिरनाई ❁ रथ चढ़ि चलत भये दोउ भाई
तमसा प्रथम दिवस करि बासू ❁ दूसर गोमति तीर निवासू

तब माता का वचन सिर पर रखकर उन्हें नमस्कारकर दोनों भाई रथपर बैठकर चले ।। पहले दिन तमसा नदी के किनारे और दूसरे दिन गोमती के तट पर निवास किये ।।८।।

दोहा—पय अहार फल असन इक, निशि भोजन सब लोग।
करत राम हित नेम ब्रत, परिहरि भूषन भोग ।।१८२।।

सब लोग दूध पीते थे और एक समय फलाहार करते हुए तथा भूषण और भोग को त्यागकर श्रीरामजीके लिए नियम और ब्रत करते हुए चले ।। १८२ ।।

सई तीर बसि चले बिहाने ❀ सृंगबेरपुर सब नियराने
समाचार सब सुनेउ निषादा ❀ हृदय बिचार करै सविषादा

इसके बाद सई नदी के तट पर रह कर प्रातःकाल चल दिए और शृङ्गवेरपुर के समीप आ गये। सब समाचार सुन मल्लाह मन में विचार कर खेद करने लगा ॥ २ ॥

कारन कवन भरत बन जाहीं ❀ है कछु कपट भाव मनमाहीं
जौ पै जिय न होति कुटिलाई ❀ तौ कत लीन्ह संग कटकाई

क्या हेतु है जो भरत बनको जा रहे हैं, मालूम होता है कि मनमें कुछ छल भरा है। यदि उनके हृदयमें कुटिलता न होती, तो साथमें सेना क्यों ले लेते ? ॥ ४ ॥

जानहिं सानुज रामहिं मारी ❀ करौं अकंटक राज सुखारी
भरत न राजनीति उर आनी ❀ तब कलंक अब जीवन हानी

सोचते हैं कि राम-लक्ष्मण को मार निर्द्वन्द्व राज्य कर सुखी होऊँ। भरतने हृदय में राजनीति का ज्ञान नहीं किया, क्योंकि तब तो कलंक था, अब तो जीनेमें भी बाधा है ॥६॥

सकल सुरासुर जुरहिं जुझारा ❀ रामहिं समर न जीतनहारा
का आचरज भरत अस करहीं ❀नहिं विषबेलि अमिय फल फरहीं

निषाद कहता है कि लड़ाई में यदि सारे देवता और असुर भी आएँ तब भी श्रीरामचन्द्रजी को जीत नहीं सकते। भरत ऐसा करें तो इसमें आश्चर्य नहीं, विषकी लतामें अमृत फल नहीं होता।

दोहा—अस बिचारि गुह ग्याति सन, कहेउ सजग सब होहु।
हथवाँसहु बोरहु तरनि, कीजिय घाटा रोहु ॥१८३॥

यही सोच कर निषाद अपनी जाति वालों से बोला कि देखो भाई ! सब तैयार हो जाओ, पतवार और नाव डुबाओ और मार्ग रोक दो ॥ १८३ ॥

होहु सजग सब रोकहु घाटा ❀ ठाटहु सकल मरनके ठाटा
संमुख लोह भरतसन लेहू ❀ जियत न सुरसरि उतर न देहू

सब लोग सजग होकर घाट रोक लो और मर मिटने पर तैयार हो जाओ। भरत के सामने हथियार लो और उन्हें जीते जी गङ्गा के पार न उतरने दो ॥ २ ॥

समर मरन पुनि सुरसरि तीरा ❀ राम काज छणभंगु शरीरा
भरत भाइ नृप मैं जन नीचू ❀ बड़े भाग्य अस पाइय मीचू

एक तो युद्ध में प्राण देना दूसरे श्रीरामचन्द्र का कार्य यह शरीर तो नष्ट होने वाला ही है। भरतजी तो रामजी के भाई और राजा हैं, बड़े भाग्य से ऐसी मृत्यु मिलती है ॥ ४ ॥

स्वामिकाज करिहौं रन रारी ❀ लेइ हौं सुयश भुवनदसचारी
तजौं प्रान रघुनाथ निहोरे ❀ दुहूँ हाथ मुद मोदक मोरे

स्वामी के कार्य के लिए रण में युद्ध करूँगा, और चौदहों भुवन में सुन्दर कीर्ति प्राप्त करूँगा। रामजी के लिए प्राण निकलने पर अच्छा ही है, मेरे तो दोनों हाथों में लड्डू है ॥ ६ ॥

साधु समाज न जाकर लेखा ❀ रामभक्त महँ जासु न रेखा
जाय जियत जग सो महिभारू ❀ जननी जीवन विटप कुठारू

जिसकी गिनती सज्जनों में नहीं है तथा जो रामजी के भक्तों में नहीं हैं, ऐसे मनुष्य का संसार में जीना व्यर्थ है, वह पृथ्वी का बोझ है और माता के जीवनरूपी वृक्ष के लिए कुठार ही हुआ है ।।

दोहा—विगतविषाद निषाद पुनि, सबहिं बढ़ाय उछाह ।
सुमिरि राम माँगेउ तुरत, तरकस धनुष सनाह ।।१८४।।

पुनः मल्लाह शोक त्याग कर सबका उत्साह बढ़ा कर श्रीरामजी का स्मरण कर शीघ्र ही तूणीर, धनुष और बख्तर माँगा ।। १८४ ।।

बेगिहिं भाइहिं सजहु सँजोऊ ❀ सुनि रजाय कदराय न कोऊ
भले नाथ सब कहहिं सहर्षा ❀ एकहिं एक बढ़ावहिं कर्षा

फिर बोला कि हे भाइयो ! शीघ्र ही तैयार हो जाओ, आज्ञा सुन कर डरो न । तब हे स्वामी ! ठीक है, वे सब (कुटुम्बी) ऐसा कह कर आपस में एक दूसरे को उत्साह देने लगे।।

चले निषाद जुहारि जुहारी ❀ शूर सकल रन रुचै न रारी
सुमिरि रामपद पंकज पनहीं ❀ भाथा बाँधि चढ़ावहिं धनुहीं

सब कुटुम्ब के लोग निषाद राज को प्रणाम कर युद्ध के लिए चले क्योंकि वह युद्ध उन्हें प्रिय था । वे सब श्रीरामजी के चरणों का स्मरण कर धनुष और तरकस बाँधने लगे ।। ४ ।।

अँगिरि पहिरि कूँडि सिर धरहीं ❀ फरसा बाँस सेल सम करहीं
एक कुसल अति ओड़न खाँड़े ❀ कूदहिं गगन मनहुँ छिति छाँड़े

बख्तर पहन टोप सिर पर रखने और फरसा बाँस और बरछी की धार निकालने लगे। जो लोग अखाड़े में कूदने में तेज थे वे ऐसा फाँदते थे कि मानों जमीन छोड़ आकाश में जाना चाहते थे ।।

निज-निज साज समाज बनाई ❀ गुहरावतहिं जुहारहिं जाई
देखि सुभट सब लायक जाने ❀ लै लै नाम सकल सनमाने

सब अपना-अपना समाज सजा कर निषादराज को जाकर प्रणाम करते हैं । निषादराज उन्हें देख कर बहादुर, योग्य समझ, नाम ले-लेकर सबकी प्रशंसा करने लगा ।। ८ ।।

दोहा—भाइहु लावहु धोख जनि, आजु काज बड़ मोहु ।
सुनि सरोष बोले सुभट, बीर अधीर न होहु ।।१८५।।

निषाद बोला कि हे भाइयो ! आज मेरा बड़ा कार्य है धोखा न देना । यह सुन कर सब वीर क्रोध से बोले कि हे बहादुर निषादराज ! आप धीरज को न त्यागिए ।। १८५ ।।

राम प्रताप नाथ बल तोरे ❀ करहिं कटक बिनु भट बिनु घोरे
जियत पाँव नहिं पीछे धरहीं ❀ रुंड मुंडमय मेदिनि करहीं

हे नाथ ! रामजीके प्रभाव और आपके बलसे हम लोग इस सारी सेनाको योद्धाओंसे विहीन कर देंगे । जीतेजी पैर पीछे न रखेंगे तथा पृथ्वीको सर और धड़सें भर देंगे ।। २ ।।

देखि निषादराज भल टोलू ❀ कहेउ बजाउ जुझाऊ ढोलू
इतना कहत छींक भइ बायें ❀ कहेउ शकुनिअन्ह खेत सुहाये

गुहराज अपने गोल को सजा देख कर मारू बाजा बजाने की आज्ञा दी। तब आज्ञा करते ही बायीं ओर छींक हुई और शकुन को जान कर बोले कि यह तो शुभ है लड़ाई में विजय होगी ॥

बूढ़ एक कह शकुन विचारी ❀ भरतहिं मिलिय न होइहि रारी
रामहिं भरत मनावन जाहीं ❀ शकुन कहै अस विग्रह नाहीं

तब उसमें से एक बुड्ढा शकुन का विचार करके बोला कि आप भरतजी से मिलिये लड़ाई नहीं होगी। भरतजी श्रीरामजी को मनाने के लिए जा रहे हैं, झगड़ा नहीं है ॥६॥

सुनि गुह कहइ नीक कह बूढ़ा ❀ सहसा करि पछितांहिं विमूढ़ा
भरत सुभाव शील बिनु बूझे ❀ बड़ि हित हानि जानि बिनु जूझे

यह सुनकर निषाद बोला कि बूढ़ा ठीक कह रहा है, बिना विचारे काम नहीं करना चाहिए। भरतजी के स्वभाव और शोल को न जानकर युद्ध करने से हित की बड़ी हानि होगी ॥८॥

दोहा—गहहु घाट भट सिमिट सब, लेउँ मरम मिलि जाइ।
बूझि मित्र अरि मध्यगति, तब तस करब उपाइ ॥१८६॥

आप सब लोग तट पर सजे रहें, मैं जाकर उनका भेद ले आऊँ। तब मित्र, शत्रु तथा उदासीन का भेद जान कर इसके अनुसार उपाय करूँगा ॥ १८६ ॥

लखब सनेह सुभाय सुहाये ❀ बैर प्रीति नहिं दुरत दुराये
अस कहि भेट सँजोवन लागे ❀ कंदमूल फल खग मृग माँगे

स्वभावसे ही शत्रुता और मित्रता जान पड़ेगी, क्योंकि यह छिपाने से नहीं छिपती। यह कह निषादराजने कन्द, मूल, फल, पक्षी तथा मृग मँगा कर भेंट की तैयारी की ॥२॥

मीन पीन पाठीन पुराने ❀ भरि भरि भार कँहारन आने
सकल साज सजि मिलन सिधाये ❀ मंगल मूल शकुन शुभ पाये

कहाँर सब बहँगियों में भर कर पुरानी मोटी-मोटी मछलियाँ लाये और भेंट का सब सामान ठीक करा कर मिलने के लिए निषाद चल दिया। मार्ग में उसे सुन्दर शकुन देखने को मिले ॥

देखि दूरि ते कहि निज नामू ❀ कीन्ह मुनीसहिं दंडप्रनामू
जानि रामप्रिय दीन्ह असीसा ❀ भरतहिं कहेउ बुझाय मुनीसा

इसके बाद दूर से ही अपना नाम लेकर श्रीवसिष्ठजी को नमस्कार किया ॥ मुनिजी ने राम का प्यारा समझकर गुह को आशीर्वाद दिया और सब बात समझा कर भरतजी से बोले ॥६॥

राम सखा सुनि स्यंदन त्यागा ❀ चले उतरि उमगत अनुरागा
गाँव जाति गुह नाम सुनाई ❀ कीन्ह जुहारि माथ महि लाई

हे भरतजी ! "यह रामजी का साथी है" यह सुनकर भरतजी रथ छोड़ दिये और पैदल चले। तब निषाद ने अपना नाम-ग्राम सुना कर पृथ्वी पर सिर रख उन्हें नमस्कार किया ॥८॥

दोहा—करत दंडवत देखि तेहि, भरत लीन्ह उर लाय।
मनहुँ लषनसन भेट भइ, प्रेम न हृदय समाय ।।१८७।।

तब दण्डवत् करते देख भरतजी उसे हृदय से लगा लिए। मानो लक्ष्मणजी से भेंट हो गई, प्रसन्नता मन में नहीं समाती ।। १८७ ।।

भेंटेउ भरत ताहि अति प्रीती ❀ लोक सिहाहिं प्रेमकी रीती
धन्य धन्य ध्वनि मंगल मूला ❀ सुर सराहि तेहिं बरसहिं फूला

श्रीभरतजी निषाद से प्रीति सहित मिल रहे हैं और सभी लोग उस प्रीति के प्रकार की प्रशंसा कर रहे हैं। चारों ओर से धन्य-धन्य की ध्वनि हो रही है; देवता फूल बरसा रहे हैं ।।

लोक वेद सब भाँतिहिं नीचा ❀ जासु छाँह छुइ लेईहिं सींचा
तेहि भरि अंक राम लघु भ्राता ❀ मिलत पुलक परिपूरित गाता

जो लोक और वेद में सभी जगह नीच है जिसे छूने से शरीर जल से सींचना पड़ता है। उसे राम के भाई भरतजी गोदी में भर कर रोमांचित देह से मिलते हैं ।।४।।

राम राम कहि जे जमुहाहीं ❀ तिन्हिं न पापपुंज समुहाहीं
यहि तौ राम लाइ उर लीन्हा ❀ कुल समेत जग पावन कीन्हा

जो लोग राम-राम कह कर जमुहाई लेते हैं उन्हें पाप का समूह नहीं छूता। फिर इसे तो स्वयं श्रीरामचन्द्रजी ने छाती से लगाकर कुल सहित संसार को पवित्र करने वाला बना दिया है ।।

करमनास जल सुरसरि परई ❀ तेहि को कहहु शीश नहिं धरई
उलटा नाम जपत जग जाना ❀ बालमीकि भये ब्रह्मसमाना

कर्मनाशा का जल यदि गंगा में पड़ जाय तो कहो उसे कौन नहीं सिर पर रखता है? सारे संसार को विदित है कि उलटा नाम का जप करने से वाल्मीकिजी ब्रह्म के समान हो गये।।८।।

दोहा—श्वपच सबर खश यवन जड़, पामर कोल किरात।
राम कहत पावन परम, होत भुवन विख्यात ।।१८८।।

चाण्डाल, भील, खश, म्लेच्छ, नीच जातियाँ और जो भी कोल किरात आदि हैं, वे सब राम-राम कहते ही पवित्र और संसार में प्रसिद्ध हो जाते हैं ।। १८८ ।।

नहिं अचरज यग-युग चलि आई ❀ केहि न दीन्ह रघुबीर बड़ाई
राम नाम महिमा सुर करहीं ❀ सुनि-सुनि अवधलोग सुख लहहीं

इसमें आश्चर्य कुछ भी नहीं है, हर युग से यह बात चली आ रही है कि, किसे श्रीरामचन्द्रजी ने बड़ाई नहीं दी है। देवताओं से राम नाम की महिमा सुन अयोध्या-निवासी सुख पाते हैं ।।

राम सखहिं मिलि भरत सप्रेमा ❀ पूछहिं कुशल सुमंगल छेमा
देखि भरत कर शील सनेहू ❀ भा निषाद तेहि समय विदेहू

श्रीभरतजी निषाद से प्रीति पूर्वक मिल कर कुशल-मंगल पूछते हैं। निषाद भरतजी का शील और स्नेह देखकर ऐसा बिदेह हो गया कि उसे शरीर तक की सुध न रही ।। ४ ।।

सकुचि सनेह मोद मन बाढ़ा ❀ भरतहिं चितवत इकटक ठाढ़ा
धरि धीरज पद बन्दि बहोरी ❀ विनय सप्रेम कहत कर जोरी

पहले की करतूत से लजाता हुआ निषाद स्नेह से खड़ा हो गया और भरतजी को देखने लगा। फिर धीरज रख कर उनके चरणों की बन्दना कर प्रीति के साथ हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगा॥

कुशल मूल पद पंकज देखे ❀ मैं तिहुँकाल कुसल निज लेखे
अब प्रभु परम अनुग्रह तोरे ❀ सहित कोटिकुल मंगल मोरे

फिर बोला कि हे महाराज ! कुशलकी मूल आपके चरण-कमलोंको देखकर भूत-भविष्य और वर्तमान अपना ही नहीं, आपकी कृपासे करोड़ों कुल समेत मेरा मङ्गल है ॥ ८ ॥

दोहा—समुझि मोरि करतूति कुल, प्रभु महिमा जिय जोय ।
जो न भजइ रघुबीर पद, जग बिधिबंचित होय ॥१८९॥

हे प्रभो ! मेरी करतूत, कुल और प्रभुकी महिमाको जानकर भी जो रामजीके चरणोंको नहीं भजता है, वह संसारमें ठग लिया जाता है ॥ १८९ ॥

कपटी कायर कुमति कुजाती ❀ लोक वेद बाहर सब भाँती
राम कीन्ह आपन जबहींते ❀ भयउँ भुवन भूषन तबहींते

मैं छली, डरपोक, दुष्ट मतिवाला, कुजाती तथा हर प्रकारसे लोक और वेदके बाहर हूँ। परन्तु जबसे श्रीरामजीने मुझे अपनाया तभीसे मैं सारे भुवन (पृथ्वी)का भूषण हो गया हूँ ॥

देखि प्रीति सुनि विनय सुहाई ❀ मिलै बहोरि लषन लघु भाई
कह निषाद निज नाम सुबानी ❀ सादर सकल जुहारी रानी

इसके बाद निषादके उस प्रेमको देख और उसकी सुन्दर प्रार्थना सुनकर शत्रुघ्नजी मिले। इसके अनन्तर निषादने अपना नाम लेकर सब रानियोंको सादर प्रणाम किया ॥ ४ ॥

जानि लषन सम देंहि असीसा ❀ जियहु सुखी सतलाख बरीसा
निरखि निषाद नगर नर नारी ❀ भए सुखी जनु लषन निहारी

लक्ष्मणके सदृश उसे जानकर सब आशीर्वाद देती हैं कि सुख पूर्वक सैंकड़ों लाखों वर्ष तक जीओ। पुरके सब स्त्री-पुरुष गुहको लक्ष्मणजीके समान देखकर सुखी हुए ॥ ६ ॥

कहहिं लहेउ यह जीवनलाहू ❀ भेंटउ रामभाइ भरि बाहू
सुनि निषाद निज भाग्य बड़ाई ❀ प्रमुदित मन लइ चलेउ लिवाई

सब लोग कहते हैं कि यह निषाद रामजीके भाईसे भर बाँह मिलकर जीनेका फल ले लिया। गुह अपने भाग्यकी बड़ाई सुन प्रसन्न मन उन्हें लेकर चला ॥ ८ ॥

दोहा—सनकारे सेवक सकल, चले स्वामि रुख पाय ।
घर तरुवर सर बाग बन, वास बनायउ जाय ॥१९०॥

तब निषादराजका संकेत पाकर सभी निषादचले दिए औरपवृक्ष, तालाब तथा बाग-बगीचेके और उसके आस-पास बहुतसे घर बना दिये ॥ १९० ॥

सृंगबेरपुर भरत दीख जब ❋ भे सनेहबस अंग शिथिल तब
सोहत दिये निषादहिं लागू ❋ जनु तनु धरे विनय अनुरागू

फिर भरतजी शृङ्गवेरपुर ज्योंही देखे कि उनके अङ्ग ढीले पड़ गये। वह निषादके कांधे पर हाथ रखकर मालूम पड़ते हैं कि मानों प्रेमका शरीर धरकर पधारे हैं ।। २ ।।

इहि विधि भरत सेन सब संगा ❋ दीख जाय जग पावनि गंगा
रामघाट कहँ कीन्ह प्रनामा ❋ भा मन मुदित मिले जनु रामा

इसी भाँति भरतजीने सेना सहित जाकर जगत्पावनी गंगाजीके दर्शन किए और रामघाटको प्रणाम किए। मन ऐसा प्रसन्न हुआ कि मानों श्रीरामजी मिल गए हों ।। ४ ।।

करहिं प्रनाम नगर नर नारी ❋ मुदित ब्रह्ममय वारि निहारी
करि मज्जन माँगहिं करजोरी ❋ रामचन्द्रपद प्रीति न थोरी

अवधपुरीके स्त्री-पुरुष नमस्कार करते और ब्रह्म मय जलका दर्शन कर प्रसन्न होते हैं। तब उस जलमें मज्जन कर भरतजी हाथ जोडकर बोले कि श्रीरामजीके चरणोंमें अति प्रेम हो ।।

भरत कहेउ सुरसरि तव रेनू ❋ सकलसुखद सेवक सुरधेनू
जोरि पानि माँगहिं बर एहू ❋ सीय राम पद सहज सनेहू

भरतजी बोले कि हे गंगे! तुम्हारी रेणुका सब सुख देनेवाली और भक्तोंके लिए कामधेनु है ।। मैं हाथ जोड़कर यही वर माँगता हूँ कि श्रीरामजीके चरणोंमें हमारी प्रीति होवे ।।

दोहा—एहि विधि मज्जन भरत करि, गुरु अनुशासन पाय।
मातु नहानी जानि सब, डेरा चले लिवाय ।।१९१।।

इस भाँति भरतजी स्नान कर गुरुकी आज्ञा लेकर माताओंको स्नान कराकर डेरे पर ले आये ।।

जहँ जहँ लोगन्ह डेरा कीन्हा ❋ भरत सोध सबहीकर लीन्हा
गुरु सेवा करि आयसु पाई ❋ राम मातु पहँ गे दोउ भाई

पुनः सब लोग जहाँ-जहाँ डेरा किए थे, वहाँ जाकर भरतजीने सबकी देख भाल की। फिर दोनों भाई गुरुकी सेवा कर माता कौशिल्याजीके पास गये ।। २ ।।

चाँपि पाँव कहि कहि मृदुबानी ❋ जननी सकल भरत सनमानी
भाइहिं सौंपि मातु सेवकाई ❋ आपु निषादहिं लीन्ह बुलाई

तब माताओंके पैर दबा सुन्दर मीठे वचन बोलकर भरतजी सब माताओंका सम्मान किये ।। इसके बाद शत्रुघ्नजीको माताओंकी सेवामें नियुक्त करके स्वयं गुहको बुलाये ।।४।।

चले सखा करसों कर जोरे ❋ शिथिल शरीर सनेह न थोरे
पूछत सखहिं सो ठाँव दिखाऊ ❋ नेकु नैन मन जरनि जुड़ाऊ

भरतजी निषादका हाथ पकड़कर चल दिए, शरीर ढीला पड़ गया। वे निषादसे कहते हैं कि हे मित्र! अब तुम मुझे वह स्थान दिखाकर नेत्रोंकी जलनको दूर करो ।। ६ ।।

जहँ सियराम लषन निसि सोये ❋ कहत भरे जल लोचन कोये
भरत बचन सुनि भयउ विषादू ❋ तुरत तहाँ लै गयउ निषादू

जहाँ पर रात्रिमें श्रीरामचन्द्रजी और सीताजी शयन किये थे, यह कहते ही आँखोंमें आँसू भर गए। गुहको भरतजीका वचन सुनकर बड़ा विषाद हुआ और वहाँ पर उन्हें ले गया ॥८॥

दोहा—जहँ शिंशुपा पुनीत तरु, रघुवर किय विश्राम।
अति सनेह सादर भरत, कीन्हेउ दंड प्रणाम ॥१९२॥

जहाँ शीशमके पवित्र वृक्षके नीचे श्रीरामचन्द्रजीने विश्राम किया था, उस स्थानको देखकर भरतजीने आदरपूर्वक दण्ड प्रणाम किया ॥ १९२ ॥

कुस साथरी निहारि सुहाई ❀ कीन्ह प्रनाम प्रदच्छिन लाई
चरन रेख रज आँखिन लाई ❀ बनै न कहत प्रीति अधिकाई

भरतजीने कुशकी सुन्दर चटाई देखकर प्रदक्षिणाकर प्रणाम किया और उन चरणोंकी धूलिको आँखोंसे लगाए, वह अधिक प्रीति कहते नहीं बनती ॥ २ ॥

कनकबिंदु दुइ चारिक देखे ❀ राखे शीश सीयसम लेखे
सजल विलोचन हृदय गलानी ❀ कहत सखा सन बचन सुबानी

तब दो-चार सोनेके बिन्दुओंको जो कि श्रीजानकीजीके वस्त्रोंसे झरे पड़े थे उन्हें देख कर भरतजीने श्रीजानकीजीके समान समझकर शिर पर रख लिया ॥ ४ ॥

श्रीहत सीयबिरह द्युतिहीना ❀ यथा अवध नरनारि मलीना
पिता जनक देउँ पटतर केही ❀ करतल भोग जोग जग जेही

ये श्रीसीताजीके विरहमें ऐसे शोभाहीन हो रहे हैं मानो अयोध्याके नर-नारी श्रीरामके विरहमें मलिन हैं। श्री जानकीके पिता जनकजीकी मैं क्या उपमा दूँ? ॥६॥

श्वसुर भानुकुल भानु भुआलू ❀ जिहि सिहात अमरावतिपालू
प्राननाथ रघुनाथ गुसाँई ❀ जो बड़ होत सो रामबड़ाई

जिनका ऐश्वर्य देख इन्द्र भी सिहाते और बड़ाई करते हैं। जिनके गणपति (स्वामी) महाराज श्रीरामचन्द्रजी हैं जो ईश्वर हैं और जो बड़ा होता है वह श्रीरामजीकी कृपासे ही होता है ॥

दोहा—पति देवता सुतीयमनि, सीय साथरी देखि।
विदरत हृदय न हहरि करि, पवितै कठिन विसेखि ॥१९३॥

पतिव्रता स्त्रियोंमें शिरोमणि सीताजीकी कुश-शय्याको देखकर भी मेरा हृदय विदीर्ण नहीं होता, तो यह वज्रसे भी अधिक कड़ा है ॥१९३॥

लालन जोग लषन लघु लोने ❀ भे न भाइ अस अहहिं न होने
पुरजन प्रिय पितु मातु दुलारे ❀ सिय रघुबीरहिं प्रान पियारे

प्यार करने योग्य सुकुमार लक्ष्मणसे छोटे भाई इस संसारमें न हुए हैं न होंगे। वे पुरवासी, माता पिता तथा श्रीरामचन्द्रजी और श्रीजानकीजी के प्राणोंसे भी अधिक प्यारे हैं ॥२॥

मृदुमूरति सुकुमार सुभाऊ ❀ तात बात तन लाग न काऊ
ते बन सहहिं बिपति सब भाँती ❀ निदरे कोटि कुलिस यह छाती

जो कोमलमूर्ति सुकुमार स्वभाव युक्त हैं, तप्त वायु जिनके शरीर में कभी नहीं लगी उन्होंने बनमें सब प्रकारकी विपत्ति सही। इस छातीने तो कोटि वज्रोंका भी तिरस्कार कर दिया ॥

राम जनमि जगकीन्ह उजागर ❀ रूप सील सुख सब गुन आगर
पुरजन परिजन गुरु पितु माता ❀ राम स्वभाव सबहिं सुखदाता

श्रीरामचन्द्रजी तो जन्म लेकर संसारको प्रकाशित कर दिये। वे अपने स्वभावसे नगर के लोगोंको, कुटुम्बियोंको, गुरु, माता तथा पिता सभीको सुख देनेवाले हैं ॥६॥

बैरिउ राम बड़ाई करहीं ❀बोलनि मिलनि विनयमन हरहीं
शारद कोटि-कोटि शत शेषा ❀ करि न सकहिंप्रभु गुण गणलेषा

शत्रु भी श्रीरामचन्द्रजीकी प्रशंसा करते हैं, वे अपने बोलने, मिलने और विनयसे सबको मोह लेते हैं। करोड़ों सरस्वती और सैकड़ों शेष भी श्रीरामजीके गुणके समूहको नहीं गिन सकते ॥

दोहा—सुखस्वरूप रघुवंसमनि, मंगलमोद निधान।
ते सोवत कुस डासि महि, विधिगतिअतिबलवान॥१९४॥

वे सुख स्वरूप रघुनाथजी मंगल तथा आनन्दके घर हैं, पृथ्वीमें कुशा बिछाकर शयन करते हैं, अहो ! विधाता की गति बड़ी प्रबल होती है ॥ १९४ ॥

राम सुना दुख कानन काऊ ❀ जीवनतरु जिमि जुगवत राऊ
पलकनयन फनिमनि जेहि भाती ❀ जुगवहि जननि सकल दिनराती

श्रीरामजीने कभी दुःखका नाम न सुना था, राजा उनकी संजीवनी जड़ीकी भाँति सुरक्षा करते थे। जैसे पलक नेत्रोंकी और सर्प मणिकी रक्षा करता है, इसी प्रकारसे दिन रात सब रानियाँ रघुनाथजी को रक्षा करती थीं ॥२॥

ते अब फिरत बिपिन पदचारी ❀ कन्दमूल फल फूल अहारी
धिक कैकयी अमंगल मूला ❀ भइसि प्रानप्रियतम प्रतिकूला

वे श्रीरामचन्द्रजी कन्दमूल फल खाकर वनमें पैदल चलते हैं। हा, उस अमंगल की मूल कैकेईको धिक्कार है कि जो ऐसे श्रीरामजीके प्रतिकूल हो गई ॥ ४ ॥

मैं धिकधिक अघउदधि अभागी ❀ सब उत्पात भयउ जेहि लागी
कुलकलंककरि सृजेउ विधाता ❀ साँइ द्रोहिमोहिं कीन्ह कुमाता

और मुझ अभागे पापके सागर को धिक्कार है कि जिसके कारणसे यह सब उत्पात हुए हैं। मुझे विधाताने कुल कलंक पैदा किया और कुमाताने स्वामीका द्रोही बना दिया ॥

सुनि सप्रेम समुझाव निषादा ❀ नाथ करियकत वादि विषादा
राम तुमहिं प्रिय तुमप्रिय रामहिं ❀ यह निरदोष दोष बिधि बामहिं

यह सुन निषाद प्रेमपूर्वक समझाने लगा—हे नाथ ! वृथा क्यों विषाद करते हैं ॥ श्रीरामजी तुम्हें और तुम श्रीरामजीको प्यारे हो, यह सत्य है और यह दोष विधिकी वामता का है ॥

छन्द—विधि बामकी करनी कठिन जेहि मातु कीन्हीं बावरी।
तेहि राति पुनि-पुनि करहिं प्रभु सादर सराहन रावरी॥

तुलसी न तुम्ह सो राम प्रीतम कहत हौं सोहैं किये।
परिनाम मंगल जानि अपने आनिये धीरज हिये ॥८॥

बाम विधाताकी करनी कठिन है जिसने माताको बौरी कर दिया, उस रातमें रामजी बार-बार आपकी सराहना करते थे। तुलसीदासजी कहते हैं, तुम्हारे समान कोई रामजीका प्यारा नहीं है। यह मैं सौगन्ध कर कहता हूँ कि परिणाममें भलाई ही है यह जानकर मनमें आप धीरज धरें॥

सोरठा—अन्तर्यामी राम, सकुच सप्रेम कृपायतन।
चलिय करिय विस्राम, यह बिचार दृढ़ आनि मन ॥८॥

श्रीरामचन्द्रजी अन्तरयामी, संकोच-स्नेहके सागर हैं। ऐसा विचारकर विश्राम कीजिये॥

सखा बचन सुनि उर धरि धीरा ❁ बास चले सुमिरत रघुबीरा
यह सुधि पाय नगर नर नारी ❁ चले बिलोकन आरत भारी

सखाके वचन सुन मनमें धीरज धर श्रीरामजीका स्मरण करते हुए भरतजी वास-स्थान पर चले ॥१॥ नगरके स्त्री-पुरुष यह खबर पाकर बड़ा दुःख करते हुए देखने चले ॥२॥

प्रदच्छिना करि करहिं प्रनामा ❁ देहिं कैकयिहिं खोरि निकामा
भरि-भरि बारि बिलोचन लेहीं ❁ बाम बिधातहिं दूषन देहीं

नगरके नरनारी प्रदक्षिणा कर प्रणाम करते हुए कैकेयीको वृथा अनेक दोष देते हैं॥ नेत्रोंमें जल भरकर विपरोत ब्रह्माको भी दोष देते हैं ॥ ४ ॥

एक सराहहिं भरत सनेहू ❁ कोउ कह नृपहिं निबाहेउ नेहू
निंदहिं आपु सराहि निषादहिं ❁ को कहिसकहिंविमोह विषादहिं

स्त्री-पुरुषोंमेंसे कोई भरतजीका स्नेह सराहते कोई कहते राजाने प्रेम निबाहा। अपनी निन्दाकर निषादकी सराहना करते हैं। उस विशेष मोह और विषादका वर्णन कौन करे॥

इहि विधि राति लोग सब जागा ❁ भा भिनुसार गुदारा लागा
गुरहिं सुनाव चढ़ाइ सुहाई ❁ नयी नाव सब मातु चढ़ाई

इस प्रकार रात भर सब लोग जागरण किए प्रातः होते ही उतारा लगना प्रारम्भ हुआ। तब एक अच्छी नावमें गुरुजीको चढ़ाकर नयी नावमें सब माताओंको चढ़ाये ॥ ८ ॥

दण्ड चारि महँ भे सब पारा ❁ उतरि भरत तब सबहि सँभारा

चार घड़ीमें सब लोग पार हो गये, तब भरतजीने उतरकर सबकी शोध कर ली।

दोहा—प्रात क्रिया करि मातु पद बंदि गुरहिं सिर नाय।
आगे किये निषादगन, दीन्हेउ कटक चलाय ॥१९५॥

भरतजी प्रातःक्रिया करके माताओं तथा गुरुके चरणोंमें शिर नवाकर निषादको आगे कर सेनाको चलानेकी आज्ञा दी ॥ १९५ ॥

किये निषाद-नाथ अगआई ❁ मातु पालकी सकल चलाई
साथ बुलाइ भाइ लघु दीन्हा ❁ विप्रन सहित गमन गुरु कीन्हा

निषादको आगे करके सब माताओंकी पालकी चलाई ।। भरतजी छोटे भाई शत्रुघ्नको साथ लिए और गुरु वसिष्ठ ब्राह्मणोंके साथ गमन किए ।। २ ।।

आपु सुरसरिहिं कीन्ह प्रनामू ❁ सुमिरे लषन सहित सियरामू
गवने भरत पयादे पाये ❁ कोतल संग जाहिं डोरिआये

भरतजीने गंगाजीको प्रणाम किया, पुनः लक्ष्मण सहित श्रीरामजीका स्मरण करते हुए भरतजी पैदल ही चले और घोड़ोंकी बागडोर पकड़े सेवक चले ।। ४ ।।

कहहिं सुसेवक बारहिं बारा ❁ होइहिं नाथ अश्व असवारा
राम पयादेहिं पाँव सिधाये ❁ हम कहँ रथ गज बाजि बनाये

अच्छे सेवक बार-बार भरतजीसे कहने लगे कि आप घोड़े पर सवार होइये। यह सुनकर भरतजी बोले कि श्रीरामचन्द्रजी पैदल गये हैं, रथ, हाथी और घोड़े हमारे लिए सजाये हैं ?

सिरबल जाउँ उचित अस मोरा ❁ सबते सेवक धरम कठोरा
देखि भरत गति सुनि मृदुबानी ❁ सब सेवकगन करहिं गलानी

शिरके बल जाना यही मेरे लिये उचित है क्योंकि सेवकका धर्म बड़ा कठोर होता है। भरतजीकी दशा देखकर तथा मधुर वचन सुनकर सब दास मनमें ग्लानि करते ।। ८ ।।

दोहा—भरत तीसरे पहर कहँ, कीन्ह प्रवेस प्रयाग ।
कहत रामसिय रामसिय, उमँगि उमँगि अनुराग ।।१९६।।

भरतजी तीसरे पहर प्रयागमें पहुँचे, प्रेमसे अनुराग उमड़ आया और सीता-राम सीता-राम कह रहे थे ।। १९६ ।।

झलका झलकत पायन कैसे ❁ पंकजकोस ओसकन जैसे
भरत पयादेहिं आये आजू ❁ भये दुखित सुनि सकल समाजू

पाँवमें छाले इस प्रकार झलकने लगें, जैसे कमलकी कली पर ओसकी बूँदें झलकती हैं। भरतजी आज पैदल ही आये, यह सुनकर सब लोग दुःखी हुए ।। २ ।।

खबरि लीन्ह सब लोग अन्हाये ❁ कीन्ह प्रनाम त्रिवेनिहिं आये
सविधि सितासित नीर नहाने ❁ दिये दान महिसुर सनमाने

वहाँ पहुँचकर भरतजीने सब लोगोंकी सुधि ली वे लोग स्नान किये फिर स्वयं त्रिवेणी आकर प्रणाम किये और विधिपूर्वक गंगा-यमुनाके जलमें स्नान कर दान दे ब्राह्मणोंका सम्मान किये ।।

देखत स्यामल धवल हिलोरे ❁ पुलक सरीर भरत कर जोरे
सकल कामप्रद तीरथ राऊ ❁ वेद विदित जग प्रगट प्रभाऊ

श्याम और श्वेत हिलोरोंको देखकर भरतजी हाथ जोड़कर बोले। तीर्थराज सब कामनाओंको देनेवाला है, यह बात वेद विदित और संसारमें प्रसिद्ध है ।। ६ ।।

माँगौं भीख त्यागि निजधरमू ❁ आरत काह न करहिं कुकरमू
अस जिय जानि सुजान सुदानी ❁ सफल करहिं जग जाचक बानी

क्षत्रिय को भीख माँगना मना है सो मैं अपना धर्म त्याग कर भीख माँगता हूँ दुःखी पुरुष क्या कुकर्म नहीं करता, ऐसा जी में जान हे सुजान! मुझ याचक की वाणी सफल करो ॥

दोहा—अर्थ न धर्म न काम रुचि, गति न चहौं निर्वान।
जन्म जन्म रति रामपद, यह बरदान न आन ॥१९७॥

अर्थ, धर्म, काम में मेरी प्रीति नहीं है और मैं मुक्ति भी नहीं चाहता, मुझे केवल यही वरदान दो कि जन्म-जन्मान्तर में राम-सीता के चरणों में मेरी प्रीति होवे ॥ १९७ ॥

जानहिं राम कुटिल करि मोही ❀ लोग कहैं गुरु साहिब द्रोही
सीताराम चरन रति मोरे ❀ अनुदिन बढ़ै अनुग्रह तोरे

चाहे राम मुझे कुटिल करके जानें और लोग गुरु साहब का द्रोही मुझे कहें ॥ १ ॥ परन्तु सीता और श्रीरामजी के चरणों में तुम्हारी कृपा से दिन-रात प्रेम बढ़े ॥ २ ॥

जलद जन्मभरि सुरति बिसारे ❀ जाचत जल पवि पाहन डारे
चातक रटनि घटें घटिजाई ❀ बढ़े प्रेम सबभाँति भलाई

जैसे बादल पपीहे को जन्मभर भूला रहता है और वह उसपर पत्थर और बज्र डालता है, पर पपीहेकी रटनि घटती नहीं। यदि उसकी रटनि घट जाय तो उसके प्रेम की पराकाष्ठा नष्ट हो जाय क्योंकि प्रेम बढ़ने पर ही उसकी सब प्रकारसे बड़ाई है ॥ ४ ॥

कनकहि बान चढ़े जिमि दाहे ❀ तिमि प्रियतम पद प्रेम निबाहे
भरत बचन सुनि माँझ त्रिबेनी ❀ भइ मृदुबानि सुमंगलदेनी

जैसे अग्नि के दाह से सोना शोभित होता है इसी प्रकार प्रेम युक्त स्वामी के चरणों में मन लगाने से सेवक की शोभा होती है। भरतजी के वचन सुन त्रिवेणी में मंगलदायक वाणी हुई ॥ ६ ॥

तात भरत तुम सब विधि साधू ❀ रामचरन अनुराग अगाधू
बादि गलानि करहु मनमाहीं ❀ तुम सम रामहिं प्रिय कोउ नाहीं

हे तात भरत! तुम सब प्रकारसे साधु हो और श्रीरामजी के चरणों में तुम्हारा अगाध प्रेम है। मन में वृथा ग्लानि मत करो, तुम्हारे समान श्रीरामजी को दूसरा कोई प्यारा नहीं है ॥८॥

दोहा—तनु पुलके हिय हरष सुनि, बेनिबचन अनुकूल।
भरत धन्य कहि धन्य कहि, नभसुर वरषहिं फूल ॥१९८॥

यह वचन सुन कर भरतजी प्रसन्न हो गये और त्रिवेणी के अनुकूल वचन सुनकर भरतजी को धन्य-धन्य कह कर देवता फूल बरसाने लगे ॥ १९८ ॥

प्रमुदित तीरथराज निवासी ❀ बैखानस बटु गृही उदासी
कहहिं परस्पर मिलि दस पाँचा ❀ भरतसनेह सील सुचि साँचा

प्रयाग के रहने वाले, ब्रह्मचारी, गृहस्थ, उदासी परस्पर दस-पाँच मिल कर कहते कि भरत का स्नेह पवित्र और सत्य है ॥ २ ॥

सुनत रामगुनग्राम सुहाये ❀ भरद्वाज मुनिवर पहँ आये
दंड प्रनाम करत मुनि देखे ❀ मूरतिवंत भाग्य निज लेखे

श्रीरामजी के गुणानुवाद को सुनते हुए भरतजी भरद्वाज मुनि के पास आए। मुनि ने भरतजी को दण्ड प्रणाम करते देखा और जाना कि यह मेरे भाग्य की मूर्ति धारण कर आ गए हैं ॥

धाइ उठाइ लाइ उर लीन्हे ❀ दीन्ह असीस कृतारथ कीन्हे
आसन दीन्ह नाइ सिर बैठे ❀ चहत सकुचि गृह जनु भजि पैठे

भरद्वाजजी दौड़ के उठाकर हृदय से लगा आशीर्वाद दे कृतार्थ किये ॥ ५ ॥ आसन दिया और भरतजी सिर नवा के बैठे, जैसे कोई सकुचा कर घर में बैठना चाहता हो ॥६॥

मुनि पूछहिं कछु यह बड़ सोचू ❀ बोले ऋषि लखि सील सँकोचू
सुनहु भरत हम सब सुधि पाई ❀ बिधि करतबपर कछु न बसाई

फिर मुनि कुछ पूछेंगे भरतजी को यह बड़ा सोच है। तब शील संकोच देख कर मुनि बोले—सुनो भरतजी! हमने सब सुधि पा ली है, विधाता के कर्तव्य पर कुछ वश नहीं है ॥८॥

दोहा—तुम गलानि जिय जनि करहु, समुझि मातु करतूति।
तात कैकइहिं दोष नहिं, गई गिरा मति धूति ॥१९९॥

हे तात! तुम अपने मनमें माताकी करतूतको समझकर शोच मत करो। क्योंकि तुम्हारी माताका भी कुछ दोष नहीं है, सरस्वती उसकी मतिको बिगाड़ गई थी ॥ १९९ ॥

इहौ कहत भल कहइ न कोऊ ❀ लोक वेद बुध संमत दोऊ
तात तुम्हार विमल यश गाई ❀ पाइहि लोकहु वेद बड़ाई

इतना कहने में भी कोई भला न कहेगा क्योंकि लोक और वेद पण्डितोंको दोनों संमत हैं। लोकमत मे कैकेयी दोषी है वेद मत से सरस्वती, तुम्हारे यशको गाकर लोक-वेद दोनोंमें बड़ाई है।।२॥

लोकवेदसम्मत सब कहई ❀ जेहि पितु राज्य देइ सो लहई
राउ सत्यब्रत तुमहिं बोलाई ❀ देत राज सुख धर्म बड़ाई

लोक और वेद का सिद्धान्त है कि जिसको पिता राज्य दे, वह पावे। सत्यवादी राजा दशरथ तुम्हें ही बुला कर राज्य देते तो सब सुख और धर्म बड़ाई विदित होती। परन्तु

रामगवन बन अनरथ मूला ❀ जो सुनि सकल विस्व भइ शूला
सो भावी वश रानि अयानी ❀ करि कुचालि अंतहु पछितानी

श्रीरामजी का बन जाना सब अनर्थों की जड़ है जिसे सुन कर सारे संसार को शूल के समान चुभने लगा। यह बुरी बात कैकेयी ने होनहारवश कर डाला और पीछे पछताई भी ॥६॥

तहँ न तुम्हार अल्प अपराधू ❀ कहै सो अधम अयान असाधू
करतेहु राज तुमहिं नहिं दोषू ❀ रामहिं होत सुनत संतोषू

इसमें तुम्हारा थोड़ा भी दोष कह कर कौन नीच और अज्ञानी, दुष्ट बनेगा? ॥ यदि तुम राज्य करते तब भी तुमको दोष न होता और श्रीरामचन्द्रजी को भी सुन कर प्रसन्नता होती ॥८॥

दोहा—अब अति कीन्हेउ भरत भल, तुमहिं उचित मत एहु।
सकल सुमंगल मूल जग, रघुबर चरन सनेहु ॥२००॥

हे भरतजी ! अब भी आप अच्छा ही विचार किए जो सर्वथा ही उचित है, क्योंकि संसार में श्रीरामचन्द्रजी के चरणोंमें स्नेह होना ही सब मङ्गलोंकी जड़ है ॥२००॥

सो तुम्हार धन जीवन प्राना ❀ भूरिभाग्य को तुम्हहि समाना
यह तुम्हार अचरज नहिं ताता ❀ दसरथसुवन रामप्रियभ्राता

सो यह प्रेम ही आपका धन-प्राण सभी कुछ है अब आपके समान बड़भागी कौन है । महाराज दशरथजीका पुत्र और श्रीरामचन्द्रजीका छोटा भाई होने से यह कुछ भी आश्चर्य नहीं है॥

सुनहु भरत रघुपति मनमाहीं ❀ प्रेमपात्र तुमसम कोउ नाहीं
लषन राम सीतहिं अति प्रीती ❀ निसि सब तुम्हहिं सराहत बीती

हे भरतजी ! सुनिए,श्रीरामचन्द्रजीके मनमें आपके तुल्य प्रीतिका पात्र कोई नहीं है। कारण कि उस दिन लक्ष्मण, सीता और श्रीरामचन्द्रजीको आपकी बड़ाई करते हुए सारी (रात्रि) बीत गई ॥

जाना मरम अन्हात प्रयागा ❀ मगन होहिं तुम्हरे अनुरागा
तुमपर अस सनेह रघुबर के ❀ सुख जीवन जग जस जड़ नरके

मैंने तो प्रयागमें स्नान करते समय श्रीरामचन्द्रजी के प्रेमको देखा कि वे आपके प्रेममें (लवलीन) हो गये ॥५॥ श्रीरामचन्द्रजी का आप पर ऐसा ही स्नेह रहता है जिस भाँति मूढ़ मनुष्यको सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने पर हुआ करता है ॥६॥

यह न अधिक रघुबीर बड़ाई ❀ प्रनत कुटुंबपाल रघुराई
तुम तो भरत मोर मत एहू ❀ धरे देह जनु रामसनेहू

इसमें श्रीरामचन्द्रजीकी कोई बहुत अधिक प्रशंसा नहीं है,कारणकि श्रीरामचन्द्रजीपरिवारकेरक्षक हैं। हे भरतजी ! मेरे विचारसे तुम ऐसे मालूम होते हो कि श्रीरामचन्द्रजी के प्रीतिकी देह ही हो ॥

दोहा—तुमकहँ भरत कलंक यह, हम सबकहँ उपदेस ।
राम भक्ति रस सिद्धिहित, भा यह समय गनेश ॥२०१॥

हे भरतजी ! जो बात आपके विचार में कलंक है, वही हम लोगों के लिए शिक्षा का विषय है। श्रीरामचन्द्रजीके भक्तिरूपी रसकी सिद्धिके लिए यह आरम्भिक समय है ॥२०१॥

नवबिधु विमल तात जस तोरा ❀ रघुबरकिंकर कुमुदचकोरा
उदित सदा अथइहि कबहूँ ना ❀ घटिहि न जगनभ दिन-दिनदूना

हे तात ! नए चन्द्रमाके समान आपकी कीर्ति शुभ है श्रीरामचन्द्रजीके दास कुमुद और चकोर हैं ॥ विशेषता यह है कि यह चन्द्रमा सदा उदय रहेगा और कभी डूबेगा नहीं ॥२॥

कोक बिलोकि प्रीति अति करहीं ❀ प्रभु प्रताप रवि छबिहि न हरहीं
निशिदिन सुखद सदा सब काहू ❀ ग्रसिहि न केकइ करबत राहू

आपका यश चन्द्रमा स्वरूप होगा जिससे भक्त गण अत्यन्त प्रेम करेंगे और रामका प्रताप रूप सूर्य भी उस छबिका हरण नहीं करेगा तथा सब दिन सबको सुख पहुँचायेगा ॥ ४ ॥

परन राम - सुप्रेम - पियूषा ❀ गरु अपमान दोष नहिं दूषा
राम भक्ति अब अमिय अघाहू ❀ कीन्हें सुलभ सुधा बसुधाहू

आपका यशरूपी चन्द्रमा श्रीरामचन्द्रजीके प्रेम रूप सुयशसे पूर्ण होगा। चन्द्रमा बृहस्पतिके अपमानसे दूषित हो गया है, परन्तु आपका यशरूप चन्द्र गुरुके अपमानसें दूषित नहीं है ॥

भूप भगीरथ सुरसरि आनी ❁ सुमिरत सकल सुमंगल खानी
दसरथगुनगन बरनि न जाहीं ❁ अधिक कहा जेहि सम जग नाहीं

राजा भगीरथ गंगाको लाए जो स्मरण मात्रसे मंगल देनेवाली हैं। महाराज दशरथके गुण समूहका तो वर्णन नहीं किया जा सकता है, जिसके समान संसारमें कोई नहीं है ॥८॥

दोहा—जासु सनेह सकोच बश, राम प्रगट भे आइ।
जे हरहिय नयनन्हि कबहुँ, निरखे नाहिं अघाइ ॥२०२॥

जिस दशरथजी के प्रेम और संकोच के कारण श्रीरामचन्द्रजी आकर जन्म लिए और जिनका दर्शन श्री शिवजी हृदयके नेत्रोंसे भी करके सन्तोष नहीं पाए ॥ २०२ ॥

कीरति बिधु तुम कीन्ह अनूपा ❁ जहँ बस रामप्रेम मृगरूपा
तात गलानि करहु जिय जाये ❁ डरहु दरिद्रहिं पारस पाये

हे तात ! तुमने उपमारहित कीर्तिरूप चन्द्रमाको बनाया, जिसमें रामका प्रेम मृगरूप होकर बस रहा है ॥ हे तात ! ग्लानि न कीजिए, पारसको भी पाकर दरिद्रतासे डरते हो ? ॥

सुनहु भरत हम झूठ न कहहीं ❁ उदासीन तापस बन रहहीं
सब साधन कर सुफल सुहावा ❁ लषनराम सिय दर्शन पावा

हे भरतजी ! सुनिए, मैं झूठ नहीं कहता, हमारे शत्रु मित्र नही हैं और हम तपस्वी हैं सब साधनोंका फलरूप यही है कि मैंने लक्ष्मण और राम-सीताका दर्शन पाया ॥४॥

तेहि फलकर फल दरस तुम्हारा ❁ सहित प्रयाग सुभाग हमारा
भरत धन्य तुम जग जस लयऊ ❁ कहि अस प्रेम मगन मुनि भयऊ

और श्रीरामचन्द्रजीके दर्शन का फल तुम्हारा दर्शन है, आज हम प्रयागवासियोंके धन्य भाग्य हैं ॥५॥ हे भरतजी ! तुम धन्य हो, ऐसा कहकर भरद्वाज मुनि प्रेममें मग्न हो गए ॥

सुनि मुनि बचन सभासद हरषे ❁ साधु सराहि समन सुर बरषे
धन्य-धन्य ध्वनि गगन प्रयागा ❁ सुनि-सुनि भरत मगन अनुरागा

मुनिके वचन सुनकर सभासदगण प्रसन्न हुए और देवतालोग साधुवाद देकर फूल बरसाये। प्रयागके आकाशमें धन्य-धन्य की आवाज होने लगी जिसे सुनकर भरतजी प्रेममें मग्न हो गए ॥

दोहा—पुलकगात हिय रामसिय, सजल-सरोरुह-नैन।
करि प्रनाम मुनिमंडलिहिं, बोले गदगद बैन ॥ २०३ ॥

भरतजी का शरीर पुलकायमान हो गया, उनके कमलवत् नेत्रों में जलभर आया। वे मुनिगणोंको प्रणाम कर आनन्दके ये वचन बोले ॥ २०३ ॥

मुनिसमाज अरु तीरथराजू ❁ साँचेहु सपथ अघाइ अकाजू
इहि थल जो कछु कहिय बनाई ❁ इहि सम अधिक न अघ अधमाई

यहाँ मुनियोंका तो समाज है और यह तीर्थराज है यहाँ सच्ची सौगन्धसे भी अकाज होता है। क्योंकि इस स्थानमें यदि कुछ भी बनाकर कहा जाये तो इसके बराबर कुछ पाप नहीं है ॥

तुम सर्वज्ञ कहौं सतिभाऊ ❀ उर अंतर्यामी रघुराऊ
मोहिं न मातु करतब कर सोचू ❀ नहिं दुख जिय जग जानहिं पोचू

तुम सर्वज्ञ हो यह मैं सद्भावसे कहता हूँ। श्रीरामजी सबके मनकी बातको जाननेवाले हैं॥ मुझे माताके कर्तव्यका सोच नहीं है और जगत् भी मुझे पोच जाने इसका भी सोच नहीं है।

नाहिं न डर बिगरहिं परलोकू ❀ पितउ मरे कर नाहिं न शोकू
सुकृत सुयश भरि भुवन सुहाये ❀ लछमनराम सरिस सुत पाये

मुझे परलोक बिगड़नेका भी डर नहीं है और न पिताके मरनेका ही शोक है। जिनका पुण्य और यश फैल रहा है कि लक्ष्मण और रामके समान उन्होंने पुत्र पाया॥

रामबिरह तजि तन छिनभंगू ❀ भूप सोच कर कौन प्रसंगू
रामलषनसिय बिनु पग पनहीं ❀ करि मुनिवेष फिरहिं बन बनहीं

श्रीरामचन्द्रजीके बिरहमें क्षणमें भंग होने योग्य शरीरका त्याग कर दिया इसमें महाराजके शोकका प्रसंग ही क्या है? परन्तु श्रीराम लक्ष्मण और सीता नंगे पैर बनमें फिरते हैं॥ ८॥

दोहा—अजिनबसन फल असन महि, शयन डासि कुसपात।
बसि तरुतर नित सहत हिम, आतप बरषा बात॥२०४॥

मृग चर्मके वस्त्र, भोजन करनेको फल, कुश और पत्तोंकी शय्या पर शयन और वृक्षके नीचे जाड़ा गर्मी व वर्षाको सहन करना पड़ता है॥ २०४॥

इह दुखदाह दहै नित छाती ❀ भूख न बासर नींद न राती
इह कुरोगकर औषध नाहीं ❀ सोधेहुँ सकल विस्व मनमाहीं

इस दुःखसे मेरी छाती नित्य प्रति जलती है और मुझे दिनमें भूख और रातमें नींद नहीं आती। मैंने संसारमें खोज डाला लेकिन मुझे इस कुरोगकी दवा नहीं मिलती है॥

मातु कुमति बढ़ई अघमूला ❀ तेहि हमार हित कीन्ह बसूला
कलिकुकाठ कर कीन्ह कुयंत्रू ❀ गाड़ि अवध पढ़ि कठिन कुमंत्रू

हमारी माताकी दुष्ट बुद्धि बढ़ई है और हमारा हित पापरूप बसूला है जिससे बबूल का कुयंत्र मंथराके बचनों द्वारा गढ़ा गया और पापरूप कठिन कुयन्त्र रामके बन-गमनके कुमन्त्रसे पढ़कर गाड़ दिया॥ ६॥

मोहिं लगि यह कुठाट तेहि ठाटा ❀ घालिसि सब जग बारहबाटा
मिटै कुरोग राम फिरि आये ❀ बसै अवध नहिं आन उपाये

मेरे लिए उसने यह सब कुठाट रचा, संसारकी विपत्तिके बारह मार्ग हैं उनमें कर दिया॥ जब श्रीरामजी फिरकर आवें तब यह कुरोग मिटै और तभी अयोध्या बस सकती है॥

भरत बचन सुनि मुनि सुख पाई ❀ सबहि कीन्ह बहुभाँति बड़ाई
तात करहु जनि सोच विसेषी ❀ सब दुख मिटहिं रामपद देखी

भरतजीकी वाणीको सुन सभीने उनकी अनेक प्रकारसे प्रशंसा की। मुनिने कहा हे तात! विशेष शोक न करो, श्रीरामजीके चरणोंको देखते ही सब दुःख दूर हो जायेंगे ॥८॥

दोहा—करि प्रबोध मुनिवर कहेउ, अतिथि प्रानप्रिय होहु।
कंदमूल फल फूल हम, देंहिं लेहु करि छोहु ॥२०५॥

इस प्रकार मुनिने समझाकर कहा कि तुम मेरे प्राण प्रिय अतिथि हो। इस कारण जो हम कन्द मूल फल-फूल देते हैं उसे कृपा करके ग्रहण करो ॥ २०५ ॥

सुनि मुनिवचन भरतहिय सोचू ❀ भयउ कुअवसर कठिन सँकोचू
जानि गरुअ गुरुगिरा बहोरी ❀ चरन बन्दि बोले करजोरी

मुनिका वचन सुनकर भरतजीको बडा सोच हुआ कि कुअवसर पड़ा और कठिन संकोच यह हुआ कि मुनिका कहना कैसे टाला जाएगा। फिर भरद्वाजजीकी वाणीको सुनकर भरतजी बोले ॥

सिरधरिआयसुकरिय तुम्हारा ❀ परमधर्म यह नाथ हमारा
भरत बचन मुनिवर मन भाये ❀ सुचि सेवक सब निकट बुलाये

हे नाथ! आपकी आज्ञा शिरोधार्य करके मानना यह हमारा परम धर्म है। भरतजीका वचन मुनिराजको अत्यन्त प्रिय लगा, तब उन्होंने सब पवित्र सेवकोंको निकट बुलाया ॥ ४ ॥

चाहिय कीन्ह भरत पहुनाई ❀ कंदमूलफल आनहु जाई
भले नाथ कहि तिन्ह सिर नाये ❀ प्रमुदित निज-निज काज सिधाये

और उन लोगोंको आज्ञा दिया कि हे शिष्यों! भरत महाराजका सत्कार होना चाहिए, अतएव कन्दमूल फल जाकर ले आवो। तब सब प्रणाम कर चल दिए ॥ ६ ॥

मुनिहिं सोच पाहुन बड़ नेवता ❀ तस पूजा चाहिय जस देवता
सुनिऋधिसिधिअनिमादिक आईं❀ आयसु होय सो करहिं गुसाईं

उनके जानेके बाद ऋषि भरद्वाजजी विचार किए कि बड़े पाहुनेका निमन्त्रण है अतः देवताके अनुसार ही पूजन भी होना चाहिए। अस्तु, उन्होंने सिद्धियोंका ध्यान किया और वे अणिमादिक सिद्धियाँ आकर बोलीं कि हे स्वामी! जो आज्ञा हो वह करूँ ॥ ८ ॥

दोहा—राम बिरह ब्याकुल भरत, सानुज सकल समाज।
पहुनाई करि हरहु श्रम, कहेउ मुदित मुनिराज ॥२०६॥

तब प्रसन्न हो भरद्वाजजी बोले कि श्रीरामजीके विछोहमें भाई शत्रुघ्न और सब समाज सहित भरतजी व्याकुल हैं, अतः इनका सत्कार कर थकावट दूर करो ॥ २०६ ॥

ऋधिसिधिसिरधरिमुनिवरबानी❀बड़ भागिनि आपुहिं अनुमानी
कहहिं परस्पर सिधि समुदाई ❀ अतुलित अतिथि रामलघु भाई

ऋद्धि और सिद्धि भरद्वाजजीका बचन सिर पर रख अपनेको बहुत सुभागी समझीं। आपसमें वे कह रही हैं कि श्रीरामजीके छोटे भ्राता भरतजी अनुपम पाहुने हैं ॥२॥

मुनिपद बंदि करिय सोइ आजू ❀ होइ सुखी सब राजसमाजू
अस कहि रुचिर रचे गृह नाना ❀ जो बिलोकि बिलखाहिं बिमाना

तब ऋषिके चरणोंकी बंदनाकर वही करना होगा कि जिससे सारा राज-परिवार सुखी हो ऐसा कहकर सुन्दर अनेक भवन तैयार किये जिसे देखकर विमान भी लज्जित हो जाते थे ।।

भोग विभूति भूरि भरि राखे ❀ देखत जिन्हहिं अमर अभिलाषे
दासी दास साज सब लीन्हे ❀ जुगवत रहहिं मनहिं मन दीन्हे

उन घरोंमें भाँति-भाँति के भोग-विलास का सामान भर दिए कि जिन्हें देखकर देवता चाहना रखते हैं और बहुतसे दासी दास रख दिए कि जो मनमें मन लगाये रहें ।।६।।

सब समाज सजि सिधि पल माहीं ❀ जो सुख सपनेहुँ सुरपुर नाहीं
प्रथमहिं बास दिए सबकेही ❀ सुन्दर सुखद जथारुचि जेही

सिद्धियोंने क्षणभरमेंही सारा सामान ठीककर दिया कि जो देवलोकमें स्वप्नमें भी नहीं मिल सकता है। पहले तो सभी लोगों को जिसकी जैसी रुचि थी, मन के अनुकूल सुन्दर सुखकारी बास दिए।

दोहा—बहुरि सपरिजन भरत कहँ, ऋषि आयसु अस कीन्ह।
बिधि बिस्मयदायक विभव, मुनिवर तपबल कीन्ह ।।२०७।।

फिर मुनिने कुटुम्बके सहित भरतजीको एक भवनमें रहनेको कहा कि जिस घरको मुनिने अपने तपोबलसे ऐसा बनाया था कि जिसे देखकर ब्रह्माको भी अचरज होता था ।। २०७ ।।

मुनिप्रभाव जब भरत बिलोका ❀ सब लघु लगे लोकपति लोका
सुख समाज नहिं जात बखानी ❀ देखत बिरति बिसारहिं ज्ञानी

जब भरतजीने ऋषिके प्रभावको देखा तो राजाओंकी सारी सम्पत्ति छोटी प्रतीत हुई। वहाँ जो सुखका सामान था ज्ञानी भी उस सम्पत्तिको देखकर अपना विराग भूल जाते थे ।।

आसन सयन सुबसन बिताना ❀ बन बाटिका बिहँग मृग नाना
सुरभि फूल फल अमियसमाना ❀ विमल जलासयविविधि विधाना

जिसमें आसन, शयन, सुन्दर कपड़े, शामियाना, बन, उपवन, पक्षी, अनेक प्रकारके हिरन, सुगन्ध वाले फूल, अमृतके समान फल और अनेक भाँतिके पवित्र तालाब थे ।। ४ ।।

असन पान सुचि अमल अमीसे ❀ देखि लोग सकुचात जमीसे
सुर सुरभी सुरतरु सबहीके ❀ लखि अभिलाष सुरेस सचीके

खाने-पीने की वस्तुएँ विमल अमृतसी थीं जिनको देखकर अयोध्यावासी तृप्त हो गये। प्रत्येक के घर देख इन्द्र और इन्द्राणी भी उसमें रहने की इच्छा करती थीं ।।६।।

ऋतु बसंत बह त्रिविधबयारी ❀ सबकहँ सुलभ पदारथ चारी
स्रक चंदन बनितादिक भोगा ❀ देखि हरष विस्मयबस लोगा

बसन्तऋतु है, शीतल-मन्द सुगन्ध वायु बहता है, सबलोगोंको अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष सुलभ हैं। माला, चन्दन और स्त्री आदिक भोग के पदार्थ देखकर सबलोग आश्चर्यमें पड़ गये ।।८।।

दोहा—संपति चकई भरत चक, मुनि आयसु खेलवार।
तेहि निशि आश्रमपींजरा, राखे भा भिनुसार ।।२०८।।

सारी सम्पत्ति मानों चकई और भरतजी चकवा हैं ऋषिकी आज्ञा बहेलिएकी फाँस है जो उस रातको आश्रम रूपी पिंजरेमें लाकर इकट्ठा कर दिया है ।।२०८।।

कीन्ह निमज्जन तीरथराजू ❁ नाइ मुनिहिं सिर सहितसमाजू
ऋषिआयसु असीससिर राखी ❁ करि दंडवत विनय बहु भाषी

फिर भरतजीने तीर्थराज प्रयागमें स्नान किया और समाज समेत मुनिको शिर नवाया । ऋषिकी अशीष शिरपर चढ़ाई और फिर दण्डवत् करके बहुत विनय की ।।२।।

पथगति कुसल साथ सब लीन्हे ❁ चले चित्रकूटहिं चित दीन्हे
रामसखा कर दीन्हे लागू ❁ चलत देह धरि जनु अनुरागू

इसके पीछे चतुर मार्गदर्शकोंको साथ ले चित्रकूटको चल दिये । श्रीरामचन्द्रजीके मित्र निषादके कंधेपर हाथ रक्खे हुए भरतजी ऐसे जा रहे थे, मानों शरीर धरकर प्रेम जा रहा हो ।।

नहिं पदत्रान सीस नहिं छाया ❁ प्रेम नेम ब्रत धर्म अमाया
लषन राम सिय पंथ कहानी ❁ पूछत सखहिं कहत मृदुबानी

इनका प्रेम, नेम, व्रत तथा धर्म छलहीन है और रास्तेमें निषादसे श्रीरामचन्द्रजी, लक्ष्मण और सीताकी कहानी मीठी वाणी द्वारा पूछते हुए चले जा रहे हैं ।।६।।

रामबासथल बिटप बिलोके ❁ उर अनुराग रहत नहिं रोके
देखि दसा सुर बरसहिं फूला ❁ भइ मृदु भूमि सुमंगल मूला

श्रीरामचन्द्रजीके ठहरनेका स्थान अथवा वृक्ष देखनेपर हृदयकी प्रीति रोकनेसे भी नहीं रुकती ।। भरतजीकी यह दशा देखकर देवता लोग आकाशसे फूल बरसाते हैं ।।८।।

दोहा—किये जाहिं छाया जलद, सुखद बहै बर बात ।
तस मगु भयउ न रामकहँ, जस भा भरतहिं जात ।।२०९।।

बादल छाया किये जाते हैं, सुखदायक पवन चल रहा है, अधिक क्या कहें ऐसा सुखकारी मार्ग श्रीरामचन्द्रजीके गमन कालमें भी नहीं हुआ था कि जैसा भरतजीके जानेमें हुआ ।।२०९।।

जड़ चेतन जग जीव घनेरे ❁ जे चितये प्रभु जिन प्रभु हेरे
ते सब भये परमपदयोगू ❁ भरतदरस मेटा भवरोगू

संसारमें जड़ चेतन जितने भी प्राणी हैं वे सभी परमपद पानेके अधिकारी हो गये और भरतजीका दर्शन करने पर उनके भव रोगका नाश हो गया ।।२।।

यह बड़ि बात भरतकी नाहीं ❁ सुमिरत जिन्हहिं राम मनमाहीं
बारेक राम कहत जग जेऊ ❁ होत तरन तारन नर तेऊ

सो यह भरतजीकी कुछ बड़ी बात नहीं है क्योंकि उनको तो रामचन्द्रजी भी अपने मनमें स्मरण करते हैं । जो केवल एक बार भी राम कहता है उसका तरण तारण हो जाता है ।।४।।

भरत रामप्रिय पुनि लघुभ्राता ❁ कस न होय मगु मंगलदाता
सिद्ध साधु मुनिवर अस कहहीं ❁ भरतहिं निरखि हरष हिय लहहीं

फिर भरतजी श्रीरामचन्द्रजीके प्यारे हैं और छोटे भाई हैं उनको जाते हुए आनन्द मंगल क्यों न होगा। सिद्ध साधुजन और मुनिवर भरतजीको देखकर हृदयमें आनन्द प्राप्त करते हैं।।

देखि प्रभाव सुरेसहिं सोचू ❀ जग भल भलहिं पोचकहँ पोचू
गुरुसन कहेउ करिय प्रभु सोई ❀ रामहिं भरतहिं भेंट न होई

तब भरतजीका प्रभाव देखकर इन्द्रके मनमें बड़ा शोच हुआ, उन्होंने कहा कि हे नाथ ! अब आप वह उपाय कीजिये कि जिसमें राम और भरतकी भेंट न हो ।। ८ ।।

दोहा—राम सकोची प्रेमबस, भरत सप्रेमपयोधि ।
बनी बात बिगरन चहति, करिय जतन छल सोधि ।।२१०।।

क्योंकि श्रीरामचन्द्रजी तो संकोची और प्रेमके वश हैं और भरतजी प्रेमके सागर हैं। बनी हुई बात बिगड़ना चाहती है सो अब विचारकर छलका यत्न करना चाहिये ।। २१० ।।

बचन सुनत सुरगुरु मुसुकाने ❀ सहसनयन बिनु लोचन जाने
कह गुरु बादि लोभ छल छाँड़ू ❀ इहाँ कपट करि होइहि भाँड़ू

तब इन्द्रके ऐसे वचन सुनकर बृहस्पतिजी हँसे और कहे आप व्यर्थ ही लोभ क्यों करते हो, छलका नाम भी मत लो, यहाँ कपटसे कुछ न सरेगा और उपहास होगा ।। २ ।।

मायापति सेवकसन माया ❀ करियत उलट परै सुरराया
तब कछु कीन्ह रामरुचि जानी ❀ अब कुचालिकरि होइहि हानी

हे इन्द्रजी ! जो भक्तसे छल करता है उसकी माया उसी पर उलट पड़ती है। उस समय जो कुछ किया था सो प्रभुकी इच्छा जानकर किया था अब यदि कुचाल करोगे तो हानि होगी।

सुनु सुरेस रघुनाथ सुभाऊ ❀ निजअपराध रिसाहिं न काऊ
जो अपराध भक्तकर करई ❀ रामरोषपावक सो जरई

हे इन्द्र ! सुनो, जो कोई स्वयं प्रभुका अपराध करता है तो वे उस पर क्रोध नहीं करते। परंतु जो उनके भक्तका अपराध करता है तो वह प्रभुकी कोपाग्निसे तुरन्त भस्म हो जाता है ।।६।।

लोकहुँ वेदविदित इतिहासा ❀ यह महिमा जानहिं दुरबासा
भरतसरिस को रामसनेही ❀ जग जपु राम राम जपु जेही

इस विषयमें दुर्वासाका इतिहास लोक और वेदमें प्रसिद्ध है, भरतजीके जैसा भक्त कौन है ? देखो ! जगत् तो रामको जपता है और रामजी भरतका नाम जपते हैं ।। ८ ।।

दोहा—मनहुँ न आनिय अमरपति, रघुबर भक्त अकाज ।
अजस लोक परलोक दुख, दिन दिन सोकसमाज ।।२११।।

हे इन्द्र ! प्रभुके भक्तजनोंका अकाज तो मनमें भी नहीं लाना चाहिये, क्योंकि इससे लोक में अपयश और परलोकमें दुःख होता है और दिन पर दिन शोककी वृद्धि होती है ।।२११।।

सुनु सुरेस उपदेस हमारा ❀ रामहिं सेवक परमपियारा
मानत सुख सेवक सेवकाई ❀ सेवक बैर बैर अधिकाई

बृहस्पतिजी कहते हैं कि हे इन्द्र ! हमारा उपदेश सुनो, प्रभुको अपने भक्त बहुत प्यारे हैं। प्रभु भक्तकी सेवा करनेसे अपनी सेवा मानते हैं और भक्तके बैर करनेसे अधिक बैर मानते हैं ॥

यद्यपि सम नहिं राग न रोषू ❀ गहहिं न पाप पुण्य गुण दोषू
कर्मप्रधान विश्व करि राखा ❀ जो जस करै सो तस फल चाखा

यद्यपि(राम)समान हैं उन प्रभु को राग रोष नहीं है और वे पाप पुण्यके दोषको ग्रहण नहीं करते प्रभु ने इस जगत्को कर्म प्रधान कररखा है, जो जैसा करता है वैसा ही फल भोगता है ॥४॥

तदपि करहिं समविषम विहारा ❀ भक्त अभक्त हृदय अनुसारा
अगुन अलेख अमान एकरस ❀ राम सगुण भए भक्तप्रेमबस

तो भी प्रभु को सम-विषम लीला करनी पड़ती है, यद्यपि प्रभु निर्गुण अलक्ष्य मान रहित और एकरस हैं तो भी भक्तों के वश हो श्रीरामजी सगुण हुए ॥६॥

राम सदा सेवकरुचि राखी ❀ वेद पुरान साधु सुर साखी
अस जिय जानि तजहु कुटिलाई ❀ करहु भरतपदप्रीति सुहाई

श्रीरामचन्द्रजीने सदा अपने भक्तोंकी रुचि को रखा है, वेद पुराण साधु और देवता सब इसके साक्षी हैं, ऐसा समझकर कुटिलता त्याग दो और भरतके चरणोंमें प्रीति करो ॥८॥

दोहा–राम-भक्त परहित निरत, परदुखदुखी दयालु।
भक्तसिरोमनि भरतसे, जनि डरपहु सुरपाल ॥२१२॥

श्रीरामचन्द्रजीके सेवक पराये दुःखसे दुःखी हो जाते हैं और बड़े दयालु होते हैं। भरतजी भक्तोंमें शिरोमणि हैं इसलिए तुम उनसे रंच मात्र भी न डरो ॥२१२॥

सत्यसंधप्रभु सुरहितकारी ❀ भरत राम आयसु अनुसारी
स्वारथविवस विकल तुम होहू ❀ भरतदोष नहिं राउर मोहू

वे प्रभु सत्य के समुद्र और देवताओं के हितकारी हैं और भरतजी प्रभु के आज्ञाकारी हैं ॥ तुम स्वार्थ के वश हो किन्तु भरत का दोष नहीं है, यह मोह तो तुमको वृथा ही हुआ है ॥२॥

सुनि सुरवर सुरगुरुवरबानी ❀ भा प्रबोध मन मिटी गलानी
बर्षि प्रसून हर्षि सुरराऊ ❀ लोग सराहत भरत स्वभाऊ

बृहस्पतिजी के वचन सुन इन्द्रको बोध हो गया और ग्लानि मिट गई ॥ ३ ॥ इन्द्रने प्रसन्न हो फूल वर्षाए और भरतके स्वभावकी सराहना की ॥

यहि बिधि भरत चले मगुजाहीं ❀ दसा देखि मुनि सिद्ध सिहाहीं
जबहिं राम कहि लेहिं उसाँसा ❀ उमँगत प्रेम मनहुँ चहुँपासा

इसी प्रकार भरत जी मार्ग में जाते हैं तो उनकी दशा देखकर मुनि और सिद्ध लोग सिहाते हैं ॥ वे जब 'राम' कह कर उसाँस लेते हैं तो उस समय मानों चारों ओर से प्रेम उमँग आता है ॥ ६ ॥

द्रवहिं बचनसुनिकुलिस पषाना ❀ पुरजनप्रेम न जाइ बखाना
बीच बास करि जमुनहिं आए ❀ निरखि नीर लोचन जल छाए

भरत के प्रेम के वचन सुन बज्र और पत्थर भी पिघल जाते हैं, जब बीच में एक बास करके यमुनाजी पर गये तब यमुना का जल देख कर भरतजी के नेत्रों में जल भर गया ॥८॥

दोहा–रघुबर बरन बिलोकि वर, बारि समेत समाज ।
होत बिरहबारिधि मगन, चढ़े विवेक जहाज ॥२१३॥

श्रीरामचन्द्रजी के समान श्याम वर्ण निर्मल जल देख कर समाज के साथ भरतजी विरहरूपी समुद्रमें मग्न होते ही ज्ञानरूपी जहाजपर चढ़ गये ॥ २१३ ॥

यमुनतीर तेहि दिन करि बासू ❁ भयउ समय सम सबहिं सुपासू
रातिहिं घाटघाटकी तरनी ❁ आईं अगनित जाइ न बरनी

उस दिन सब लोग यमुनाजीके तट परही रहे, समयके अनुसार उस वासमें सबको सुविधा रही । रातोंरात घाटकी नावें आ गईं जिनकी इतनी संख्या थी कि गिनी नहीं जाती ॥२॥

प्रात पार भये एकहिं खेवा ❁ तोषे रामसखा करि सेवा
चले नहाइ नदिहि सिर नाई ❁ साथ निषादनाथ लघुभाई

भोर होते ही सब लोग एकही खेवेमें पार हो गये वहाँ सेवा करके श्रीरामचन्द्रजी के सखा गुह ने सबको प्रसन्न किया । यमुनाजीमें स्नानकर उन्हें शिर नवा गुह और शत्रुघ्नको साथलेभरतजी चले

आगे मुनिवर बाहन आछे ❁ राजसमाज जाइ सब पाछे
तेहि पाछे दोउ बंधु पयादे ❁ भूषन बसन वेष सुठि सादे

आगे तो मुनिवरोंकी सुन्दर सवारी जा रही थी और उसके पीछे सब राजसमाज जा रहा था । उसके पीछे दोनों भाई पैदल थे कि जिनके वस्त्र, आभूषण और वेष अच्छे सुन्दर और सादे थे ॥

सेवक सुहृद सचिव सुत साथा ❁ सुमिरत लषन सीय रघुनाथा
जहँ जहँ रामबास बिस्रामा ❁ तहँ तहँ करहिं सप्रेम प्रनामा

सेवक मित्र और मन्त्रीके पुत्र सब साथ हैं श्रीराम, लक्ष्मण और सीताजी का सब कोई स्मरण करते हैं, जहाँ-जहाँ प्रभु का विश्राम-स्थान है वहाँ-वहाँ प्रेमके साथ प्रणाम करते हैं ॥४॥

दोहा–मगबासी नर नारि सुनि, धामकाम तजि धाइ ।
देखि स्वरूप सनेहबस, मुदित जनमफल पाइ ॥२१४॥

भरतजी आते हैं यह समाचार सुन मार्ग में रहने वाले स्त्री-पुरुष अपने घर का काम छोड़ दौड़ कर आते हैं और भरत के स्वरूप को देख स्नेह के वश हो जन्म का फल पाकर मग्न हो जाते हैं॥

कहहिं सप्रेम एक इकपाहीं ❁ राम लषन सखि होहिं कि नाहीं
बय बपु बरन रूप सोइ आली ❁ सील सनेह सरिस सम चाली

भरत और शत्रुघ्न को देख कर, स्त्रियाँ एक-एक से कहती हैं कि हे सखी ! क्या ये राम-लक्ष्मण तो नहीं हैं ? हे सखी ! इनकी अवस्था, शरीर, रूप-शील और स्नेह तथा ढाल तो वही है ॥

वेष न सो सखि सीय न संगा ❁ आगे अनी चली चतुरंगा
नहिं प्रसन्नमुख मानसखेदा ❁ सखि संदेह होत इहि भेदा

किन्तु वैसा वेष नहीं है और सीता भी साथ में नहीं हैं और चतुरंगिणी सेना आगे २ चलती है। मुख प्रसन्न नहीं है, मन मलिन है, हे सखी ! इस अन्तर को देख मनमें सन्देह होता है ॥

तासु तर्क तियगन मनमानी ❀ कहहिं सकल तोहिसम न सयानी
तेहि सराहि बानी फुर पूजी ❀ बोली मधुर बचन तिय दूजी

उस सखीका यह तर्क सुन सब स्त्रियोंने अपने मनमें यह माना और कहा कि, हे सखी ! तेरी जैसी समझदार इनमें एक भी नहीं है। दूसरी स्त्री बोली कि तेरी वाणी सत्य हो ॥

कहि सप्रेम सब कथा प्रसंगू ❀ जेहिविधि रामराजरसभंगू
भरतहिं बहुरि सराहन लागी ❀ सील सनेह सुभाव सुभागी

उसने प्रेम सहित सब कथाका प्रसङ्ग कहा कि जिस भाँति रामचन्द्रजीके राज्याभिषेकमें रसभंग हुआ था। फिर वह भरतजीकी सराहना करने लगीं कि ऐसा बड़भागी जगत् में दूसरा कोई नहीं है

दोहा—चलत पयादे खात फल, पिता दीन्ह तजि राज।
जात मनावन रघुबरहिं, भरत सरिस को आज ॥२१५॥

देखो यह पैदल ही जाते हैं, फल खाते हैं और पिता ने जो राज्य दिया था वह त्याग दिया है। प्रभु को मनाने जाते हैं इससे मैं कहती हूँ कि भरत जैसा बड़ भागी जगत् में कौन है ॥२१५॥

भायप भक्ति भरतआचरनू ❀ कहत सुनत दुखदूषन हरनू
जो कछु कहिय थोर सखि सोई ❀ रामबंधु अस काहे न होई

भरतजी का भायप, भक्ति और आचरण ऐसा है कि जो कहते सुनते दोष और दु:खको दूर कर देता है। हे सखी ! इस संबंध में जो कुछ कहैं सब थोड़ा है, रामके भाई ऐसे क्यों न हों ? ॥

हम सब सानुज भरतहिं देखे ❀ भये धन्य जुवतीजनलेखे
सुनि गुनि देखि दसा पछिताहीं ❀ केकयिजननि जोग सुत नाहीं

हम लोग जो शत्रुघ्न सहित भरतको देखती हैं तो इससे हम स्त्रियाँ धन्य हुई हैं। इनके गुणको सुन और इनकी दशा को देख हमें पछतावा आता है क्योंकि यह कैकेयीसे होनेके योग्य पुत्र नहीं हैं।४।

कोउ कह दूषन रानिहुँ नाहिन ❀ बिधि सब भाँति हमहिं जो दाहिन
कहँ हम लोकबेदविधिहीनी ❀ लघुतियकुल करतूति मलीनी

किसीने कहा कि रानीका इसमें कुछ दोष नहीं है यह तो हमारा विधाता सब प्रकारसे अनुकूल था कि इन्हें यहीं बुलाकर हमें दर्शन दिया है, कहाँ तो वे और कहाँ हम नीच कुलकी स्त्रियाँ॥

बसहिं कुदेस कुगाँव कुठामा ❀ कहँ यह दरस पुन्य परिनामा
अस अनंद अचरज प्रतिग्रामा ❀ जनु मरुभूमि कलपतरु जामा

जो कुदेश कुग्राम और कुठौर में रहती हैं और यह कहाँ पुण्यका फल-स्वरूप दर्शन। इस प्रकार आनन्द और आश्चर्य होता है मानों मरुभूमिमें कल्पवृक्ष जम गया हो ॥ ८॥

दोहा—भरतदरस देखत खुलेउ, मगलोगन्हकर भाग।
जनु सिंहलवासिन्ह भयउ, विधिबस सुलभ प्रयाग ॥२१६॥

भरतके दर्शन करते ही मार्गके लोगोंका ऐसा भाग्योदय हुआ कि मानों सिंहल द्वीप के रहनेवाले लोगोंको दैव वश प्रयागराज सुलभ हो गया हो ॥ २१६ ॥

निजगुनसहित रामगुनगाथा ❀ सुनत जाहिं सुमिरत रघुनाथा
तीरथ मुनि आश्रम सुरधामा ❀ निरखिनिमज्जहिंकरहिंप्रनामा

भरत अपने गुणोंके साथ प्रभुके गुणोंकी गाथा सुनके रघुनाथजीका स्मरण करते चले जाते हैं और जहाँ-जहाँ मुनियोंका आश्रम तथा देव-मन्दिर देखते हैं वहाँ स्नानकर दण्डवत् करते हैं ॥२॥

मनहीं मन माँगहिं बर येहू ❀ सीयराम पदपद्म सनेहू
मिलहिं किरात कोल बनबासी ❀ बैखानस बटु यती उदासी

और मन ही मन यह वरदान माँगते हैं कि सीताराम के चरण-कमलों में सदा स्नेह बना रहे। मार्ग में जो किरात, कोल, बनवासी, बानप्रस्थ, ब्रह्मचारी, संन्यासी और उदासी मिलते हैं ॥

करि प्रनाम पूछहिं जेहि तेही ❀ केहि बन लषन राम बैदेही
ते प्रभु समाचार सब कहहीं ❀ भरतहिं देखि जनमफल लहहीं

उनको प्रणाम कर पूछते हैं कि राम-लक्ष्मण और सीता किस वन में हैं। वे लोग प्रभु के समाचार कहते हैं और भरतजी का दर्शन कर अपने जन्म का फल पाते हैं ॥ ६ ॥

जे जन कहहिं कुसल हम देखे ❀ ते प्रिय राम लषन सम लेखे
इहि विधि बूझत सबहिं सुबानी ❀ सुनत राम-बनवास कहानी

जो लोग यह समाचार भरत को सुनाते हैं कि हमने प्रभु को कुशल-क्षेम से देखा है तो वे उन्हें राम लक्ष्मण के समान अतिशय प्यारे समझते हैं। भरतजी प्रभु के बनवास की बातें सबसे सुनते हैं ॥

दोहा—तेहि बासर बसि प्रातहीं, चले सुमिरि रघुनाथ।
रामदरसकी लालसा, भरतसरिस सब साथ ॥२१७॥

उस दिन वहीं रहे दूसरे दिन प्रातःकाल होते ही प्रभु का स्मरण कर भरतजी चले। उनके साथ जो थे उनको भी भरत की सी प्रभु के दर्शनों की बड़ी लालसा लग रही थी ॥२१७॥

मंगलशकुन होहिं सबकाहू ❀ फरकहिं सुखद बिलोचन बाहू
भरतहिं सहित समाज उछाहू ❀ मिलिहहि राम मिटिहिं दुखदाहू

सब किसी को मङ्गलकारी शुभ शकुन होते हैं सुखदायी नेत्र और भुजा फड़कती है। जिसमें भरत के साथ सारे समाज को यह उछाह लग रहा है कि प्रभु मिलेंगे और दुख नष्ट हो जायेगा ॥

करत मनोरथ जस जिय जाके ❀ जाहिं सनेह सुरा सब छाके
सिथिल अंग पग डगमग डोलहिं ❀ बिह्वल बचन प्रेममय बोलहिं

जिनका जैसा मन है वे वैसे मनोरथ करते हैं और स्नेहरूपी मदिरासे सब मदमत्त हो रहे हैं और भूमि पर डगमगाते पाँव पड़ते हैं तथा वाणी लड़खड़ाती है ॥ ४ ॥

रामसखा तेहि समय देखावा ❀ सैलसिरोमनि सहज सुहावा
जासु समीप सरितपयतीरा ❀ सीयसमेत बसहिं दोउ बीरा

उसी समय गुहने वह सहज सुन्दर उत्तम पर्वत दिखाया कि, जिसके समीप मन्दाकिनी नदी बहती है और उसके तट पर सीताजी के साथ दोनों भाई निवास करते हैं ।। ५ ।।

देखि करहिं सब दंडप्रनामा ❁ कहि जय जानकिजीवन रामा
प्रेम मगन अस राज समाजू ❁ जनु फिरि अवध चले रघुराजू

पर्वत देख सब लोगो ने दण्डवत् प्रणाम किया और कहा कि हे जानकीजीवन राम ! आपकी जय हो । उससमय राजसमाज ऐसा प्रेममय हुआ कि, मानो श्रीरामचन्द्रजी अवधको फिर लौट चले हैं ।

दोहा—भरत प्रेम तेहि समय जस, तस कहि सके न सेषु ।
कबिहिंअगमजिमिब्रह्मसुख, अहमम मलिन जनेषु ।। २१८ ।।

उस समय भरत का जैसा प्रेम था उसको स्वयं शेषजी भी नहीं कह सकते जैसे कवि ब्रह्मानन्द के सुख को नहीं पा सकता वैसे ही भरतजी के प्रेम को कोई नहीं कह सकता ।।२१८।।

सकल सनेह सिथिल रघुबरके ❁ गये कोस दुइ दिनकर ढरके
जल थल देखि बसे निसि बीते ❁ कीन्ह गवन रघुनाथ पिरीते

प्रभु के स्नेह से शिथिल सब लोग दो कोस गये थे कि इतने में दिन ढरक गया तब जल का स्थान देख, सब टिक गये और भोर होते ही प्रभु की प्रीति से चले ।। २ ।।

उहाँ राम रजनी अवसेखा ❁ जागे सीय सपन अस देखा
सहित समाज भरत जनु आए ❁ नाथ बियोग ताप तन ताए

वहाँ कुछ रात्रि शेष रही, तब प्रभु जागे, तो उस समय सीताजी को रात्रि में जो स्वप्न हुआ था, वह उन्होंने प्रभु से कह सुनाया कि मानों भरत सारे समाज के साथ यहाँ आये हैं ।।४।।

सकल मलिन मन दीन दुखारी ❁ देखी सासु आन अनुहारी
सुनि सियस्वप्न भरे जल लोचन ❁ भये सोचवस सोच बिमोचन

सब लोग मन मलिन, दीन और दुखी हो रहे हैं । और सासुओं का वेष भी दूसरी तरह का देखा है । सीता का स्वप्न सुन अचिन्त्य प्रभु के नेत्रों में जल भर आया ।। ६ ।।

लषन स्वप्न यह नीक न होई ❁ कठिन कुचाह सुनाइहि कोई
अस कहि बंधु समेत अन्हाने ❁ पूजि पुरारि साधु सनमाने

फिर लक्ष्मण से कहते हैं कि, हे लक्ष्मण ! यह स्वप्न अच्छा नहीं है । ऐसे कह कर लक्ष्मण के साथ स्नान किये फिर महादेवजी की पूजा कर साधु पुरुषों का सम्मान किए ।।८।।

छन्द—सनमानि सुर मुनि बन्दि बैठे उतर दिसि देखत भये ।
नभ धूरि खग मृग भूरि भागे निकट प्रभु आश्रम गये ।।
तुलसी उठे अवलोकि कारन काह चित चक्रित रहे ।
सब समाचार किरात कोल्हन आइ तेहि अवसर कहे ।।९।।

देवता और मुनि लोगों का सत्कार तथा उन्हें प्रणाम कर आसन पर बैठ कर प्रभु उत्तर दिशा की ओर देखते हैं तो उन्हें आकाश से धूल उड़ती हुई नजर आयी और पक्षियों के

हिरणोंके झुण्ड विह्वल हो भागते हुए मुनियोंके आश्रममें गये। तुलसीदासजी कहते हैं कि यह उपद्रव देख कर प्रभु उठे तो सोचने लगे कि इसका क्या कारण है ? इस प्रकार श्रीरामजी चित्त में चकित हो रहे थे कि इतने में किरात और कोलों ने आकर सब समाचार कह सुनाया ॥

सोरठा–सुनत सुमंगल मूल, मन प्रमोद तनु पुलक भर।
सरद सरोरुह नैन, तुलसी भरे सनेह जल ॥९॥

भरत के आने के शुभ समाचार सुनते ही प्रभु का शरीर पुलकावली से भर गया। श्रीतुलसीदासजी कहते हैं कि रामजी के शरद् ऋतु के समान कमल जैसे नेत्रों में जल भर आया ॥९॥

बहुरि सोचबस भे सिय रमनू ❀ कारन कवन भरत आगमनू
एक आइ अस कहा बहोरी ❀ सेन संग चतुरंग न थोरी

फिर प्रभु शोच के वश हुए कि किस कारण से भरत बन में आये हैं ? इतने में एक ने आकर यह कहा कि उनके साथ बड़ी भारी चतुरंगिणी सेना आ रही है ॥२॥

सो सुनि रामहिं भा अति सोचू ❀ इत पितुबच उत बंधुसकोचू
भरतस्वभाव समुझि मनमाहीं ❀ प्रभुचित हित थिति पावत नाहीं

यह सुन श्रीरामजी के मन में बड़ा सोच हुआ क्योंकि इधर तो पिता का वचन और उधर भाई का संकोच। भरतजी का स्वभाव समझ कर प्रभुजी अपने हित की दृढ़ता नहीं पाते ॥

समाधान तब भा यह जाने ❀ भरत कहेमहँ साधु सयाने
लषन लखेउ प्रभुहृदय खँभारू ❀ कहत समयसम नीतिविचारू

फिर बात को जानकर प्रभु के मन में धीरज आ गया कि भरत बहुत साधु और समझदार तथा मेरे कहने में हैं। प्रभु के मन में क्षोभ हुआ तब लक्ष्मणजी विचार कर समयानुसार यह बोले कि—

बिन पूछे कछु कहहुँ गुसाईं ❀ सेवक समय न ढीठ ढिठाई
तुम सर्वज्ञशिरोमणि स्वामी ❀ आपन समुझि कहौं अनुगामी

हे प्रभो ! मैं बिना पूछे कुछ कहता हूँ सो क्षमा कीजिएगा, हे स्वामी ! आप सर्वज्ञ शिरोमणि हैं, परन्तु मैं अपनी समझ के अनुसार कहता हूँ कि—

दोहा–नाथ सुहृद सुठि सरलचित, शीलसनेहनिधान।
सबपर प्रीति प्रतीति जिय, जानिय आपु समान ॥२१९॥

हे नाथ ! आप स्वच्छ हृदय, सरल स्वभाव, शील और स्नेह के भण्डार हैं, इससे आप तो यह जानते हैं कि जैसी प्रीति और प्रतीति मेरे मन में है वैसी ही सब के मनमें है ॥२१९॥

विषयी जीव पाइ प्रभुताई ❀ मूढ़ मोहबस होहिं जनाई
भरत नीतिरत साधु सुजाना ❀ प्रभुपदप्रेम सकल जग जाना

परन्तु विषयी जीव प्रभुता को पाकर मोहके वश हो जाते हैं, यद्यपि भरत नीति-परायण साधु और सुजान हैं और यह सारा संसार जानता है, कि उनकी आपके चरणोंमें परम प्रीति है ॥

तेऊ आजु राजपद पाई ❀ चले धरम मरजाद मिटाई
कुटिल कुबंधु कुअवसर ताकी ❀ जानि राम बनवास एकाकी

परन्तु आज वह भी राज्यपद पाने से धर्म की मर्यादा त्याग कर चले आये हैं। कुबुद्धि बन्धु ने कुसमय देख आप को बनवास में अकेला जाना ॥४॥

करि कुमंत्र मन साजि समाजू ❀ आये करन अकंटक राजू
कोटि प्रकार कल्पि कुटिलाई ❀ आये दल बटोरि दोउ भाई

तब मन में बुरी सलाह विचार, अपने समाज को साथ लेकर राज्य को निष्कंटक करने आये हैं। इस प्रकार की कुत्सित कल्पना कर सेना को इकट्ठा कर दोनों भाई चढ़ आये हैं॥

जौं जिय होति न कपट कुचाली ❀ केहि सोहाति रथ बाजि गजाली
भरतहिं दोष देइको जाये ❀ जग बौराइ राजपद पाये

जो इनके मनमें कपट और कुचाल न होती तो इनको वाहन कैसे सुहाते? परन्तु भरतजी को कौन दोष दे? क्योंकि राज्यपद ही ऐसा है कि जिसके पाने से सारा जगत् बावला हो जाता है॥

दोहा—ससि गुरुतियगामी नहुष, चढ़े भूमिसुरयान।
लोकवेदते विमुख भा, अधमको बनुसमान॥२२०॥

देखिये, चन्द्रमा राज्य को पाकर गुरु-स्त्रीगामी और नहुष राजा ब्राह्मणोंको कहार बनाकर पालकी पर चढ़ा और वेणु राजा राज्य को पाकर लोक व वेद से विमुख हुआ जिसके बराबर दूसरा कोई भी अधम और नीच नहीं हुआ है ॥२२०॥

सहसबाहु सुरनाथ त्रिसंकू ❀ केहि न राजपद दीन्ह कलंकू
भरत कीन्ह यह उचित उपाऊ ❀ रिपु ऋण रंच न राखब काऊ

ऐसे ही सहस्रार्जुन, इन्द्र और त्रिशंकु भी राज्य के मद से नष्ट हुए हैं। कहिए, राज्य के मद ने किसको कलंक नहीं लगाया है? भरत ने यह उपाय उचित ही किया है ॥ २ ॥

एक कीन्ह नहिं भरत भलाई ❀ निदरे राम जानि असहाई
समुझि परिहि सो आजु बिसेषी ❀ समर सरोष राममुख देखी

परन्तु भरत ने यह एक कार्य ठीक नहीं किया कि जो आपको असहाय जान कर निरादर किया ॥ ३ ॥ सो अब युद्ध के बीच आपका क्रोधयुक्त मुख देख कर समझ पड़ेगा ॥ ४ ॥

इतना कहत नीतिरस भूला ❀ रणरस बिपट पुलक जिमि फूला
प्रभुपद वंदि सीसरज राखी ❀ बोले सत्य सहज बल भाखी

यह कहते हुए लक्ष्मणजी नीति-रस को भूल गए और ऐसे दीखने लगे कि, मानो वीर रस का वृक्ष ही फूला है। फिर प्रभु के चरणों की वन्दना कर शिर पर चरण-रज चढ़ा कर बोले॥

अनुचित नाथ न मानब मोरा ❀ भरत हमहिं उपचार न थोरा
कहँ लगि सहिय रहिय मन मारे ❀ नाथ साथ धनु हाथ हमारे

हे नाथ! मेरे कहने को अयोग्य न मानिएगा क्योंकि भरत ने हमारे लिये कुछ थोड़ा उपाय नहीं किया है। हम कहाँ तक मन मारे रहें, हे नाथ! जब कि हमारे हाथ में धनुष है॥

दोहा—क्षत्रिजाति रघुकुलजनम, रामअनुज जग जान।
लातहुँ मारे चढ़त सिर, नीचको धूरि समान॥२२१॥

एक तो हम क्षत्रिय, दूसरे रघुकुल में जन्म, तीसरे राम के छोटे भाई, मैं ऐसा अपराध नहीं सह सकता। देखिये नीच धूल भी लात मारने से शिर पर चढ़ जाती है फिर हम तो कुलीन हैं ॥२२१॥

उठि करजोरि रजायसु माँगा ❀ मनहुँ बीररस सोवत जागा
बाँधि जटा सिर कटि कसि भाथा ❀ साजि सरासन सायक हाथा

फिर लक्ष्मण ने हाथ जोड़ आज्ञा माँगी, उस समय ऐसा दीखने लगा कि, मानों वीर रस सोता हुआ जाग उठा है। लक्ष्मण ने शिर की जटा बाँधी, धनुष और बाण चढ़ा लिया॥

आजु रामसेवकजस लेऊँ ❀ भरतहिं समरसिखावन देऊँ
रामनिरादरकर फल पाई ❀ सोवहु समरसेज दोउ भाई

और बोले, आज प्रभु की सेवकाई का यश लूँगा और भरत को युद्ध के बीच सुला कर सिखा दूँगा। आज दोनों भाई प्रभु के अनादर करने का यह फल पावेंगे कि रण-शय्यापर दोनों भाई सोवेंगे॥

आइ बना भल सकल समाजू ❀ प्रगट करों रिसि पाछिल आजू
जिमि करिनिकर दलै मृगराजू ❀ लेइ लपेटि लवा जिमि बाजू

आज सब संयोग बहुत अच्छे बने हैं सो आज पिछली सारी रिस प्रकट करूँगा। जैसे सिंह हाथियों के झुण्ड को छिन्न-भिन्न कर देता है और बाज पक्षी लवा को लपेट लेता है॥

तैसहिं भरतहिं सेनसमेता ❀ सानुज निदरि निपातौं खेता
जो सहाय कर शंकर आई ❀ तौं मारौं रण रामदुहाई

वैसे ही मैं आज सेनाके साथ भरत का निरादर कर खेतके बीच गिराऊँगा। यदि महादेवजी भी सहायता करेंगे तो भी मैं आज इन्हें रणमें मार डालूँगा, यह मैं आपकी शपथ खाकर कहता हूँ॥

दोहा—अति सरोष भाखे लषन, लखि सुनि सपथप्रमान।
सभय बिलोकत लोकपति, चाहत भभरि भगान ॥२२२॥

अत्यन्त क्रोधके मारे लक्ष्मण को कुपित जान और शपथ को सुन, सबलोग भयभीत होकर उनकी ओर देखने लगे और भयभीत होकर भागने का विचार करने लगे॥ २२२॥

जग भय मगन गगन भइ बानी ❀ लषन बाहुबल बिपुल बखानी
तात प्रताप प्रभाव तुम्हारा ❀ को कहि सकै को जाननिहारा

सारा जगत् भयभीत हो गया, तब लक्ष्मणके विपुल बाहुबलकी प्रशंसामें यह आकाशवाणी हुई कि, हे तात! तुम्हारे तेज और प्रताप को कौन कह सकता है और कौन जाननेवाला है?

अनुचित उचित काज कछु होई ❀ समुझि करिय भल कह सब कोई
सहसा करि पाछे पछिताहीं ❀ कहहिं बेद बुध ते बुध नाहीं

परन्तु जो कुछ हो वह समझ कर ही करना चाहिये, उसीको सब भला कहते हैं। जो बिना विचारे काम करते हैं वे पीछे पछताते हैं, उनको वेद और विद्वान् कोई भी बुद्धिमान् नहीं कहता।

सुनि सुरबचन लषन सकुचाने ❀ राम सीय सादर सनमाने
कही तात तुम नीति सुहाई ❀ सबतें कठिन राजमद भाई

देवताओंके ऐसे वचन को सुन, लक्ष्मण सकुचाये तब सीता व रामने लक्ष्मण का आदर करके सत्कार किया और कहा कि हे तात ! सत्य है, राजमदसे बढ़कर और कोई मद नहीं है।।

जो अँचवत नृप मातहिं तेई ❀ नाहिंन साधुसभा जिन सेई
सुनहु लषन भल भरतसरीखा ❀ बिधिप्रपंचमहँ सुना न दीखा

परन्तु इसे पाकर वे ही राजा मत्त होते हैं, कि जिन्होंने सत्यरूपी सभा की सेवा नहीं की है। किन्तु ब्रह्मा की रचनामें भरतके समान भला मनुष्य न तो सुना है न तो देखा है।

दोहा—भरतहिं होइ न राजमद, बिधि-हरि-हर-पद-पाइ।
कबहुँ कि काँजीसीकरन्हि, छीरसिंधु बिनसाइ ।।२२३।।

किन्तु यदि ब्रह्मा, विष्णु और महेश के भी पद मिल जायँ तो भी भरत को राज्य का मद नहीं हो सकता क्या कभी नीबू की बूँद से क्षीर समुद्र फट सकता है ?।। २२३ ।।

तिमिरतरुन तरनिहिंसक गिलई ❀ गगन मगन मकु मेघहिं मिलई
गोपदजल बूड़हिं घटयोनी ❀ सहज छमा बरु छाँड़हि छोनी

चाहे अन्धकार मध्यान्हके सूर्य को ग्रस लेवे; मेघ आकाशमें मग्न होकर सट जाय और चाहे गौ के खुर से अगस्त्यजी डूब जायँ और पृथ्वी भी अपनी स्वाभाविक क्षमता को त्याग देवे।।

मसक फूक बरु मेरु उड़ाई ❀ होइ न नृपमद भरतहिं भाई
लषन तुम्हार सपथ पितु आना ❀ सुचि सुबंधु नहिं भरतसमाना

और मच्छर की फूँक से मेरु पर्वत भी उड़ जाय परन्तु हे भाई, भरत को राज्य का मद नहीं हो सकता। हे लक्ष्मण ! मुझे तुम्हारी शपथ और पिता की सौगन्ध है कि भरत के समान पवित्र गुणवाला सुन्दर भाई संसार में नहीं है ।। ४ ।।

सगुन छीर अवगुन जल ताता ❀ मिलेउ रचेउ परपंच बिधाता
भरतहंस रबिबंस तड़ागा ❀ जनमि कीन्ह गुन दोष बिभागा

जैसे हँस दूध और पानी को अलग-अलग कर देता है ऐसे ही भरत हैं। सूर्य वंश रूपी तालाव में जन्म लेकर भरत ने गुण और दोष का विभाग किया है ।। ६ ।।

गहि गुनपय तजि अवगुनबारी ❀ निजजस जगत कीन्ह उजियारी
कहत भरतगुन सील सुभाऊ ❀ प्रेम-पयोधि मगन रघुराऊ

जैसे हंस दूध को लेता है और जल को त्याग देता है, ऐसे भरत ने अवगुणों को त्याग कर गुण ले संसार को प्रकाशमान किया है; यह कहते हुए प्रभु प्रेमरूपी समुद्रमें मग्न हो गये।।

दोहा—सुनि रघुबर बानी बिबुध, देखि भरतपर हेतु।
लगे सराहन सहसमुख, प्रभुको कृपानिकेतु ।। २२४।।

देवता लोग प्रभु की वाणी सुन, भरत पर प्रेम देख, हजारों प्रकार से प्रभु को सराहने लगे कि प्रभु के जैसा दूसरा कृपानिधि कौन है ?।। २२४।।

जो न होत जग जनम भरत को ❀ सकल धरम धुर धरनि धरतको
कबिकुल अगम भरतगुनगाथा ❀ को जानै तुम बिनु रघुनाथा

यदि जगत् में भरत का जन्म न होता तो सब धर्मों की धुरी को कौन धारण करता ? भरत के गुणों की कथा कविकुल से अगोचर है, विना रामजी के दूसरा कौन जाने ? ॥

लषनराम सिय सुनि सुरबानी ❀ अति सुख लहेउ न जाइ बखानी
इहाँ भरत सब सहित सुहाए ❀ मंदाकिनी पुनीत नहाए

देवताओंकी ऐसी वाणी सुन श्रीराम, लक्ष्मण और सीता ऐसा सुख पाते थे कि कुछ कहा नहीं जाता। भरतजी सब लोगोंके साथ मंदाकिनी नदीके पवित्र और निर्मल जलमें स्नान किये ॥

सरित समीप राखि सब लोगा ❀ माँगि मातु गुरु सचिव नियोगा
चले भरत जहँ सिय रघुराई ❀ साथ निषादनाथ लघुभाई

तब नदी के तट पर सब लोगों को रख कर माता, गुरु और मंत्रियों से आज्ञा माँगकर भरतजी भाई और गुहको साथ ले वहाँ चले कि जहाँ सीता और श्रीरामचन्द्रजी विराजमान थे ॥

समुझि मातु करतब सकुचाहीं ❀ करत कुतर्क कोटि मनमाहीं
रामलषनसिय सुनि मम नाऊँ ❀ उठि जनि अनत जाहिं तजि ठाऊँ

माताका कर्त्तव्य समझकर सकुचाते और मन में करोड़ों प्रकारकी कुतर्कनाएँ करते हुए जाते हैं कि, मेरा नाम सुनकर प्रभु अपने स्थानको छोड़कर कहीं दूसरी जगह न चले जावें ॥

दोहा—मातुमते महँ जानि मोहिं, जो कछु करहिं सो थोर।
अघ अवगुन तजि आदरहिं, समुझि आपनी ओर ॥२२५॥

परंतु मुझको माताकी सम्मतिमें जानकर प्रभुजी जोकुछ करेंगे सो थोड़ा ही है। मैं भरोसा रखता हूँ कि मेरे प्रभु अपराध और अवगुणको त्याग अपनी ओर निहारकर, मेरा आदर ही करेंगे ॥

जो परिहरहिं मलिनमन जानी ❀ जो सनमानहिं सेवक मानी
मोरे सरन रामकी पनहीं ❀ राम सुस्वामि दोष सब जनहीं

यदि मुझे मलिन जान कर त्याग देंगे तो भी मुझे सब प्रकार से श्रीरामजी की पनही अर्थात् जूतियों की ही शरण है, क्योंकि वही अच्छे स्वामी हैं और वे सब दोषों को जानते हैं ॥

जग जसभाजन चातक मीना ❀ नेम प्रेम निज निपुन नवीना
अस मग गुनत चले मगु जाता ❀ सकुचि सनेह सिथिल सब गाता

जैसे चातक और मछली अपने प्रेमसे जगत् में यशके भागी हुए हैं, वैसे मनमें विचार करते हुए भरतजी चले जाते थे, परन्तु संकोच और स्नेह के कारण उनके अंग शिथिल हो रहे थे ॥

फेरति मनहुँ मातुकृतखोरी ❀ चलत भक्तिबल धीरजधोरी
जब समुझहिं रघुनाथ सुभाऊ ❀ तब पथ परत उताइल पाऊ

मानों माताकी करनी भरतको फेरती है परन्तु वह धीर पुरुषों में अग्रणी भक्ति बल से आगे बढ़ते चले जाते हैं। जब वह प्रभुके स्वभावको समझते हैं तब उनके पाँव मार्गमें जल्दी २ पड़ते हैं ॥

भरतदसा तेहि अवसर कैसी ❀ जलप्रवाह बिच अलिगन जैसी
देखि भरतकर सील सनेहू ❀ भा निषाद तेहि समय विदेहू

उस समय भरतकी दशा पीछे हटने और आगे बढ़ने से कैसी हो गई थी कि जैसे जल के भ्रमरों की होती है। यह देखकर निषाद अपने शरीर की सुधि भूल गया ॥ ८ ॥

दोहा—लगे होन मंगल सकुन, सुनि गुनि कहत निषाद।
मिटहिं सोच होइहिं हरष, पुनि परिनाम बिषाद ॥२२६॥

सब मंगलकारी शुभ शकुन होने लगे तब उन्हें सुन गुह ने विचार कर कहा कि हे भरतजी! सुनो, आपका शोच मिट जाएगा, आनन्द होगा, परन्तु परिणाम में विषाद होगा ॥ २२६ ॥

सेवकबचन सत्य सब जाने ❀ आश्रम निकट जाय नियराने
भरत दीख बन सैल समाजू ❀ मुदित छुधित जनु पाइ सुराजू

तब उन सेवकोंके वचन सत्य जानकर बातें करते हुए भरतजी श्रीरामचन्द्रजीके आश्रमके निकट जा पहुँचे ॥ तब उनको ऐसा आनन्द हुआ कि मानों भूखे मनुष्य को स्वराज मिल गया ॥

ईति भीति जनु प्रजा दुखारी ❀ त्रिविधताप पीड़ित ग्रहभारी
पाइ सुराज सुदेस सुखारी ❀ होइ भरत गति तेहि अनुहारी

फिर तो ईति भीति से भयभीत दुखी प्रजा को जैसे सुखारी स्वराज्य मिल जाय, ऐसे ही भरतजी अत्यन्त सुखी हो गये ॥

रामबासबन संपति भ्राजा ❀ सुखी प्रजा जनु पाइ सुराजा
सचिव बिराग बिवेक नरेसू ❀ बिपिन सुहावन पावन देसू

श्रीरामचन्द्रजीके रहनेसे बन, सुख और सम्पत्ति से ऐसा शोभायमान हो रहा है कि मानों अच्छे राजाको पाकर प्रजा सुखी हुई है। वहाँ विवेक ही राजा है और वैराग्य ही मन्त्री है ॥

भट यम नियम सैल रजधानी ❀ सांति सुमति सुचि सुंदरि रानी
सकल अंग संपन्न सुराऊ ❀ रामचरन आस्रित चित चाऊ

यहां संयम नियम रूप सुभट हैं शांति, सुमति और पवित्रता सुंदर रानियाँ हैं ऐसे वह राज्य सब भाँतिसे सम्पन्न है और प्रभुके चरणों के आश्रित रहने से चित्त में सदा चाव लगा है ॥

दोहा—जीति मोहमहिपाल दल, सहित बिवेक भुआल।
करत अकण्टक राज्य पुर, सुख संपदा सुकाल ॥२२७॥

विवेक रूपी राजा काम, क्रोध आदि कंटक सहित मोहरूपी राजा को जीत कर नगर के भीतर निष्कंटक राज्य करता है, जिससे सर्वत्र सम्पदा छाई है ॥ २२७ ॥

बनप्रदेस मुनिबास घनेरे ❀ जनु पुर नगर गाँव गन खेरे
बिपुल बिचित्र बिहँग मृग नाना ❀ प्रजा समाज न जाइ बखाना

बन के प्रदेश में मुनियों का निवास मानो नाना प्रकार के नगर, शहर, गाँव और खेड़े बसे हैं, अनेक प्रकार की प्रजा समूह का वर्णन नहीं हो सकता ॥२॥

खरहा करि हरि बाघ बराहा ❀ देखि महिष वृष साज सराहा
बैर बिहाइ चरहिं इक संगा ❀ जहँ तहँ मनहुँ सेन चतुरंगा

वहाँ हाथी, खरहा, सिंह, बाघ, शूकर, हरिण, भैंसा और भेड़िये भी सराहने के योग्य दीख पड़ते हैं। सब बैर छोड़कर एक साथ बिचरते हैं, मानो चतुरंगिणी सेना सजी हुई है ।।

झरना झरहिं मत्तगज गाजहिं ❀ मनहुँ निसान विविध बिधि बाजहिं
चक चकोर चातक सुक पिकगन ❀ कूँजत मंजु मराल मुदित मन

झरने झरते हैं और मस्त हाथी गरजते हैं, वही मानो नाना प्रकार के बाजे बज रहे हैं ।।५।। चकवा, चकवी, पपीहा, राजहंस शुक और कोकिलोंके गण बनके भीतर प्रसन्नचित्त हो, मधुर स्वर से गूँजते हैं ।।

अलिगन गावत नाचत मोरा ❀ जनु सुराज मंगल चहुँओरा
बेलि विटप तृन सफल सफूला ❀ सब समाज मृदु मंगलमूला

भौंरे गूँजते हैं, मयूर नृत्य करते हैं जो ऐसा दीख पड़ता है मानों सुराज्य के प्रभाव से चारों ओर मंगल छा रहा है, लतायें और वृक्ष फूले ऐसे सोहते हैं मानों मंगल का मूल है ।।

दोहा—रामसैलसोभा निरखि, भरत हृदय अति प्रेम।
तापस तपफल पाइ जिमि, सुखी सिराने नेम ।।२२८।।

श्रीरामजीके विराजनेसे पर्वतकी शोभाको देखकर भरतके हृदयमें ऐसी प्रीति बढ़ रही है मानों नियम समाप्त होने पर कोई तपस्वी तपस्याका फल पाकर सुखी हो गया हो ।। २२८ ।।

तब केवट ऊँचे चढ़ि जाई ❀ कहा भरतसन भुजा उठाई
नाथ देखु यह विटप विसाला ❀ पाकरि जंबु रसाल तमाला

तब केवट ने ऊँचे चढ़ कर भुजा उठा करके भरतसे कहा कि, हे नाथ ! देखिए जो ये बड़े-बड़े पाकर, जामुन, आम और तमालके पेड़ दीख पड़ते हैं ।।२।।

तिह तरुवरन्हमध्य बट सोहा ❀ मंजु बिसाल देखि मन मोहा
नील सघन पल्लव फल लाला ❀ अविचल छाँह सुखद सब काला

इनके बीचमें जो एक बहुत सुन्दर बड़ाभारी बटका वृक्ष है कि जिसे देखकर मन मोहित हो जाता है। जिसके सघन श्याम पत्ते हैं लाल फल हैं और सब कालमें सुख देनेवाली अखण्ड छाया है ।।

मानहुँ तिमिर अरुनमय रासी ❀ विरची विधि सकेलि सुषमासी
तेहि तरु सरित समीप गुसाँई ❀ रघुबर परनकुटी जहँ छाई

यह वृक्ष क्या है मानो विधाताने अंधकार और लालीकी शोभाको इकट्ठा करके एकमें लगा दिया है। उस वृक्षके समीप एक सुन्दर नदी बहती है जिसके तटपर श्रीरामजीकी पर्णकुटी छाई हुई है।

तुलसी तरुवर विविध सुहाये ❀ कहुँ सिय पिय कहुँ लषन लगाये
बटछाया बेदिका बनाई ❀ सिय निजपानि सरोज सुहाई

तुलसीके वृक्ष तथा और भी कई प्रकार के वृक्ष जिन्हें कहीं तो प्रभुने लगाये हैं और कहीं लक्ष्मण ने। बटके वृक्ष की छायामें सुन्दर वेदीको सीताजी ने अपने कर-कमलों से बनाया है ।।

दोहा—जहँ बैठे मुनिगन सहित, नित सिय राम सुजान।
सुनहिं कथा इतिहास सब, आगम निगम पुरान ।।२२९।।

जिसपर बैठकर सुजान श्रीराम और सीता, मुनीश्वरोंके साथ नाना प्रकार के इतिहास वेद, शास्त्र और पुराणों की कथा सुनते हैं और धर्मकी चर्चा करते हैं ।। २२९ ।।

सखा बचन सुनि बिटप निहारी ❀ उमँगेउ भरत बिलोचन बारी
करत प्रनाम चले दोउ भाई ❀ कहत प्रीति सारद सकुचाई

गुहके वचन सुन, बटका वृक्ष देख, भरतके नेत्रोंमें जल भर आया। उस काल भरत और शत्रुघ्न दोनों प्रणाम करते हुए चले जिनकी प्रीति रीतिको कहते हुए शारदा भी सकुचाती हैं ।।

हरषहिं निरखि रामपदअंका ❀ मानहुँ पारस पायउ रंका
रजसिरधरिहियनयनन्हि लावहिं❀रघुबर मिलन सरिस सुख पावहिं

प्रभुके पद-चिन्होंको देखकर वे ऐसे प्रसन्न होते हैं कि मानो दरिद्र मनुष्यने पारस पा लिया है। प्रभुके चरण रजको शिर पर चढ़ाकर मानो श्रीरामजीसे मिलनेके समान ही सुख पाते हैं ।।

देखि भरतगति अकथ अतीवा ❀ प्रेम मगन मृग खग जड़ जीवा
सखहिं सनेह बिबस मग भूला ❀ कहि सुपंथ सुर बरषहिं फूला

भरतकी अलौकिक दशा देखकर मनुष्य तो क्या, पशु, पक्षी और जड़ भी प्रेममें मग्न हो गये। सखा गुह भी स्नेहके वश मार्ग भूल गया, तब देवता मार्ग दिखलाने लगे ।।

निरखि सिद्ध साधक अनुरागे ❀ सहज सनेह सराहन लागे
होत न भूतल भाव भरतको ❀ अचर सचर चर अचर करतको

भरतकी दशा देख, सिद्ध और साधक उनके स्नेहकी प्रशंसा करने लगे और बोले कि यदि पृथ्वीपर भरतकी भक्ति न होती तो जड़को चेतन और चेतनको जड़ कौन करता ? ।।

दोहा—प्रेम अमिय मंदर बिरह, भरत पयोधि गंभीर ।
मथि प्रकटे सुरसाधुहित, कृपासिंधु रघुबीर ।।२३०।।

भरतका जो प्रेम है वह अमृतरूप है, जहां भरत हैं वहीं क्षीरसमुद्र है जिसे कृपा-सिंधुने देवता और साधु पुरुषोंके लिए मथकर प्रकट किया है ।। २३० ।।

सखा समेत मनोहर जोटा ❀ लखेउ न लषन सघन बन ओटा
भरत दीखप्रभु आश्रम पावन ❀ सकल सुमंगल सदन सुहावन

सघन बनकी ओटमें आ जानेसे लक्ष्मणने सखाके साथ आते हुए उस सुन्दर जोड़ीको नहीं देखा। भरतने परम पवित्र आश्रमको देखा कि जो मंगलका धाम और अति सुहावना है ।।

करत प्रवेस मिटा दुखदावा ❀ जनु जोगी परमारथ पावा
देखे भरत लषन प्रभु आगे ❀ पूँछत बचन कहत अनुरागे

आश्रममें जाते ही भरतका दुःख ऐसे ही मिट गया कि जैसे योगीको परमार्थ मिल गया हो, वे देखे कि लक्ष्मणजी प्रभुके आगे बैठे हैं और प्रभुके पूछने पर वे प्रेमसे भरे वचन कहते हैं ।।

सीस जटा कटि मुनिपट बाँधे ❀ तून कसे कर सर धनु काँधे
बेदीपर मुनि साधु समाजू ❀ सीय सहित राजत रघुराजू

शिरपर जटा शोभायमान है, वल्कल पहिने हैं, कमर में तरकस हैं, हाथ में तीर है और धनुष कन्धेपर पड़ा है। वेदीके ऊपर मुनि-समाज सहित सीता-राम विराज रहे हैं ॥

बलकल बसन जटिल तनु स्यामा ❀ जनु मुनिवेष कीन्ह रति कामा
कर कमलन्ह धनु सायक फेरत ❀ जीकी जरनि हरत हँसि हेरत

जिनके वल्कलके वस्त्र हैं, शिरपर जटा है, मानों रति और कामदेव ही मुनिका वेष बनाये बैठे हैं। जो धनुष और बाणको फेर रहे भक्तजनोंके संतापको दूर कर रहे हैं ॥

दोहा—लसत मंजु मुनिमंडली, मध्य सीय रघुचंद।
ज्ञानसभा जनु तनु धरे, भक्ति सच्चिदानंद ॥२३१॥

मुनीश्वरोंकी मनोहर मंडलीके बीच सीता और श्रीरामचन्द्रजी कैसे शोभायमान लगते हैं कि मानो ज्ञानकी सभाके मध्य भक्ति और सच्चिदानन्द स्वरूप श्रीपरब्रह्म ही रूप धर विराज रहे हैं ॥

सानुज सखासमेत मगन मन ❀ बिसरे हरष सोकसुख दुखगन
पाहि नाथ कहि पाहि गुसाँई ❀ भूतल परे लकुटकी नाँई

प्रभुके दर्शनकर भरत शत्रुघ्न और गुहके साथ आनन्दित हो सब दुःख-सुख भूल गये और हे नाथ ! हे स्वामी "पाहि माम्" ऐसे कहकर भरतजी दंड की भाँति पृथ्वीपर गिर पड़े ॥

बचन सप्रेम लषन पहिचाने ❀ करत प्रनाम भरत जिय जाने
बंधुसनेह सरिस इहि ओरा ❀ उत साहिब सेवा बरजोरा

तब प्रेम सहित वचन सुन, लक्ष्मणने भरत को पहचान लिया और मनमें जाना कि भरतजी प्रणाम करते हैं। उस समय इधर तो भाई का प्रेम, और उधर स्वामीकी सेवा ॥

मिलि न जाइ नहिं गुदरत बनई ❀ सुकवि लषनमनकी गति भनई
रहे राखि सेवा पर भारू ❀ चढ़त चंग जनु खैंचि खिलारू

उनसे न तो मिलते बनता है और न छोड़ते, लक्ष्मण मिलने का भार सेवापर रख कर ऐसे ही रह गये जैसे खिलाड़ी चढ़ती हुई पतंगको खींचकर रह जाता है ॥ ६ ॥

कहत सप्रेम नाइ महि माथा ❀ भरत प्रनाम करत रघुनाथा
उठे राम सुनि प्रेम अधीरा ❀ कहुँ पट कहुँ निषंग धनु तीरा

लक्ष्मणने प्रेम सहित निवेदन किया कि हे रघुनाथजी ! भरतजी प्रणाम करते हैं। तब प्रेम से अधीर हो रामजी उठे तो कहीं वस्त्र, कहीं माथा और कहीं धनुषबाण गिर पड़ा ॥

दोहा—बरबस लिए उठाय उर, लाये कृपानिधान।
भरत रामकी मिलन लखि, बिसरे सबहिं अपान ॥२३२॥

कृपासिंधु भगवान्ने बलपूर्वक भरत को उठा छाती से लगाया तब भरत और राम का मिलाप देख कर सब लोग अपनपी (आत्म-स्वरूप) को भूल गये ॥ २३२ ॥

मिलनप्रीति किमि जाइ बखानी ❀ कबिकुल अगम करम मन बानी
परमप्रेमपूरन दोउ भाई ❀ मन बुधि चितअहमिति बिसराई

उनके मिलने की प्रीति कैसे कही जाय, दोनों भाई प्रेम से पूर्ण हो, मन, बुद्धि, चित्त और अहंकारकी सुधि को भूल गये ।। २ ।।

कहहु सो प्रेम प्रकट को करई ❀ केहि छाया कवि मति अनुसरई
कबिहिं अर्थ आखर बल साँचा ❀ अनुहर ताल गतिहिं नट नाँचा

हे पार्वती! कहो, उसप्रेमको कौन प्रगट कर सकता है ? कवि अपनी बुद्धिमें किसकी छाया का अनुसरण करे ! कविको तो केवल अर्थ और शब्दका ही बल है, जैसे नट ताल को पाकर नाचता है ।।

अगम सनेह भरतरघुबरको ❀ जहँ न जाइ मति बिधि हरिहरको
सो मैं कुमति कहौं केहि भाँती ❀ बाजु सुराग कि गाँडर ताँती

भरत और श्रीरामचन्द्रजीका स्नेह अथाह है जहाँ ब्रह्मा, विष्णु और महेशकी भी बुद्धि नहीं जा सकती। उसे मैं कैसे वर्णन करूँ ? क्या गड़ेरियेकी ऊनकी ताँतसे अच्छा राग बज सकता है ?

मिलनि बिलोकि भरतरघुबरकी ❀ सुरगन सभय धुकधुकी धरकी
समुझाये सुरगुरु जड़ जागे ❀ बरषि प्रसून प्रसंसन लागे

भरत और श्रीरामचन्द्रजी का मिलाप देख देवता भयभीत हो डर गये और उनकी धुकधुकी धड़कने लगी तब अज्ञानी देवताओंको बृहस्पतिने समझाया, तो वे सचेत हो फूल वर्षाय प्रभुकी प्रशंसा करने लगे ।

दोहा—मिलि सप्रेम रिपुसूदनहिं, केवट भेंटेउ राम ।
भूरिभाग्य भेंटे भरत, लक्ष्मण करत प्रणाम ।।२३३।।

श्रीरामजी भरतसे मिलकर फिर प्रीतिके साथ शत्रुघ्न से मिले, तदनन्तर गुह निषादसे मिले, फिर भाग्यशाली भरत लक्ष्मणसे मिले तो लक्ष्मणने भरतजीको प्रणाम किया ।।२३३।।

भेंटेउ लषन ललकि लघु भाई ❀ बहुरि निषाद लीन्ह उर लाई
पुनि मुनिगन दोउ भाइन बंदे ❀ अभिमत आसिष पाइ अनन्दे

फिर लक्ष्मण लपटकर छोटे भाई शत्रुघ्नसे मिले, गुह को छातीसे लगाया । फिर भरत और शत्रुघ्न दोनों भाई मुनीश्वरों को नमस्कारकर मन वांछित आशीर्वाद पाकर आनन्दित हुए ।।

सानुज भरत उमँगि अनुरागा ❀ धरि सिर सियपदपद्मपरागा
पुनि पुनि करत प्रनाम उठाये ❀ सिय करकमल परसि बैठाये

फिर प्रेम-मग्न हो भरत और शत्रुघ्नने सीताजीके चरणों की रज को शिरपर धारण की । सीताजीनें दोनों भाइयोंको करकमलोंसे स्पर्शकर उठाया और अपने निकट बैठा लिया ।।

सीय असीस दीन्ह मनमाहीं ❀ मगन सनेह देह सुधि नाहीं
सब बिधि सानुकूल लखि सीता ❀ भे असोच उर अपडर बीता

सीता आशीर्वाद दे, मनमें प्रसन्न हुई और स्नेहसे देह की सुध भूल गयीं, सीताको सब प्रकारसे सानुकूल देखकर भरतके अन्तःकरण का डर मिटा और मिथ्या कलंक की खटक मिट गयी ।।

कोउ कछु कहै न कोउ कछु पूँछा ❀ प्रेम भरा मन निज मति छूँछा
तेहि अवसर केवट धीरज धरि ❀ जोरि पानि बिनवत प्रनाम करि

उस काल सभी प्रेममग्न हो, अपनी-अपनी सुध भूलगए, नतो कोईकिसी सेकुछ पूछताहैऔर न कोई किसीसे कुछ कहता है। उसी समय निषादने धैर्यधर, हाथ जोड़कर दण्डवत् कर विनयकी ॥

दोहा—नाथ साथ मुनिनाथके, मातु सकल पुरलोग।
सेवक सेनप सचिव सब, आये बिकल बियोग ॥२३४॥

हे नाथ ! वशिष्ठजीके साथ माता और सारे नगरके लोग तथा नौकर सेनापति मन्त्री आदि सब आपके बिरहसे विह्वल होकर आए हैं और मन्दाकिनीके तटपर खड़े हैं ॥२३४॥

सीलसिंधु सुनि गुरुआगमनू ❀ सीय समीप राखि रिपुदमनू
चले सबेग राम तेहि काला ❀ धीर धरमधुर दीनदयाला

तब शीलके सागर श्रीरामचन्द्रजी गुरु वसिष्ठका आगमन सुन सीताजीके समीप शत्रुघ्नको रख धर्मकी धुरधारण करनेवाले धीरताके भण्डार दीनदयालु बड़ी तेजीसे चले उसीक्षण गुरुके पास आये

गुरहिं देखि सानुज अनुरागे ❀ दंडप्रनाम करन प्रभु लागे
मुनिवर धाय लिये उर लाई ❀ प्रेम उमँगि भेंटे दोउ भाई

तब लक्ष्मणके साथ गुरुचरणोंके दर्शनकर अति प्रसन्न हो दण्डवत् प्रणाम करने लगे। तब मुनीश्वर वसिष्ठजीने दौड़कर उनको छातीसे लगा लिया, और दोनोंभाई प्रेममग्नहो गुरुसे मिले॥

प्रेमपुलकि केवट कहि नामू ❀ कीन्ह दूरि तेहि दंड प्रनामू
रामसखा ऋषि बरबस भेंटे ❀ जनु महि लुटत सनेह समेटे

इसी बीचमें केवटने प्रेमसे पुलकित शरीरहो, अपना नाम कहकर दूरसे दण्डवत् किया। तब वसिष्ठजी उससे बरबस ऐसे मिले कि मानो पृथ्वीपर पड़े हुए स्नेहको इकट्ठा करके उठा लिया है

रघुपतिभक्ति सुमंगल मूला ❀ नभ सराहि सुर बरषहिं फूला
यहि सम निपट नीच कोउ नाहीं ❀ बड़ वसिष्ठसम को जगमाहीं

देवता मंगलके मूल श्रीरामचन्द्रजीकी भक्तिकी प्रशंसाकर फूल बरसाकर कहते हैं कि इसके जैसा कोई नीच नहीं है और वसिष्ठजीके जैसा श्रेष्ठ जगत्में कोई नहीं है ॥९॥

दोहा—जेहि लखि लषनहुँते अधिक, मिले मुदित मुनिराउ।
सो सीतापति-भजनको, प्रगट प्रताप प्रभाउ ॥२३५॥

सो वे वसिष्ठजी इस नीच जातिको दूरसे देखकर लक्ष्मणसे भी अधिक प्यारपूर्ण हृदयसे मिले और प्रसन्न हुए सो यह प्रभुके चरण-कमलोंकी सेवाका प्रकट प्रभाव है ॥ २३५ ॥

आरत लोग राम सब जाना ❀ करुनाकर सुजान भगवाना
जो जेहि भाँति रहा अभिलाषी ❀ तेहि तेहिकी तैसी रुचि राखी

करुणानिधान, सुजान, भगवान् श्रीरामजीने सबको आर्त बश जाना जिसके मनमें जिस प्रकारकी अभिलाषा थी उसकी उसी प्रकारसे इच्छा पूर्ण की ॥

सानुज मिलि पलमहँ सबकाहू ❀ कीन्ह दूरि दुख दारुन दाहू
यह बड़ि बात रामकी नाहीं ❀ जिमि घट कोटि एक रवि छाँहीं

लक्ष्मण के साथ सबसे मिलकर दुःख और दारुण दाहको शांत कर दिये। रामजीकी यह कुछ बड़ी बात नहीं है, क्योंकि सूर्यका प्रतिविम्ब सब घड़ोंमें एक सा ही रहता है ॥४॥

मिलि केवटहिं उमँगि अनुरागा ❀ पुरजन सकल सराहहिं भागा
देखी राम दुखित महतारी ❀ जनु सुबेलिअवली हिममारी

गुहके मिलनेसे पुरके सबलोगोंके मनमें प्रेम उमँग रहा है जिससे बारम्बार गुहकी सराहना करके उसके भाग्यको प्रशंसा करते हैं फिर प्रभुने माताओंको देखा तो बहुत दुःखी थीं ॥

प्रथम राम भेंटी कैकेयी ❀ सरल सुभाव भक्ति मति भेयी
पग परि कीन्ह प्रबोध बहोरी ❀ काल कर्म विधि सिरधरि खोरी

तब प्रभु पहले कैकेयीसे मिले और उसकी बुद्धिको द्रवीभूत कर दिये। फिर उसके पैरोंमें पड़ कर समझाया और कहा कि हे माता ! यह तुम्हारा दोष विधाताके शिर है ॥

दोहा—भेंटें रघुबर मातु सब, करि प्रबोध परितोष।
अम्ब ईस आधीन जग, काहु न देइय दोष ॥२३६॥

फिर प्रभु सब माताओंसे मिले और समझाकर सबको सन्तोष दिया और कहा कि हे माताओं ! यह सब जगत् परमेश्वरके अधीन है किसीको व्यर्थ कलंक नहीं लगाना चाहिये ॥ २३६ ॥

गुरुतियपद बंदे दोउ भाई ❀ सहित विप्रतिय जे सँग आई
गंगगौरिसम सब सनमानी ❀ देहिं असीस मुदित मृदुबानी

फिर दोनों भाइयोंने अरुन्धतीको प्रणामकर सब विप्र पत्नियोंको प्रणाम किया। प्रभुने गङ्गा और पार्वतीके समान सबका सत्कार किया, तब उन्होंने प्रसन्न हो मधुर वाणीसे आशीर्वाद दिया ॥

गहि पद लगे सुमित्रा अंका ❀ जनु भेंटी संपति अतिरंका
पुनि जननी चरन्हन दोउ भ्राता ❀ परे प्रेमव्याकुल सब गाता

फिर सुमित्राके पाँव लगे, मानों अति दीन दरिद्र पुरुष सम्पदाको जा भेंटा है। फिर दोनों भाई प्रेमसे विह्वल हो माता कौशिल्या चरणोंमें गिरे और उनके सब अङ्ग शिथिल हो गये।

अति अनुराग अंब उर लाये ❀ नयन सनेह सलिल अन्हवाये
तेहि अवसरकर हरख विषादू ❀ किमि कवि कहै मूक जिमि स्वादू

माता कौशिल्याने उनको छातीसे लगा लिया और शीतल नेत्रोंके जलसे नहलाया। उस समयका हर्ष और शोक नहीं कह सकते, जैसे गूँगा मनुष्य स्वादको नहीं कह सकता ॥

मिलि जननिहिं सानुज रघुराऊ ❀ गुरुसन कहेउ कि धारिय पाऊ
पुरजन पाइ मुनीस नियोगू ❀ जल थल तकि तकि उतरे लोगू

माताओंसे मिल प्रभुने लक्ष्मणके साथ गुरुसे प्रार्थना की कि हे महाराज ! आश्रमको पधारिये। तब पुरके लोग वसिष्ठजीकी आज्ञा पाकर जल और स्थलकी सुविधा देख २ उतर गये ॥

दोहा—महिसुर मन्त्री मातु गुरु, घने लोग लिय साथ।
पावन आस्रम गमन किय, भरत लषन रघुनाथ ॥२३७॥

भरत, लक्ष्मण और आनन्दकन्द प्रभु श्रीरामचन्द्रजी ब्राह्मण, मन्त्री, माता, गुरु और बहुतसे लोगोंको साथ ले पवित्र आश्रम को चले ।। २३७ ।।

सीय आइ मुनिवरपद लागी ❀ उचित असीस लही मन मांगी
गुरुपत्निहिं मुनितियन्ह समेता ❀ मिलि सप्रेम कहि जाइ न जेता

और श्रीसीताजी आकर मुनिराज के चरणों में लगीं, तब वसिष्ठजीने उन्हें मनवांछित आशीर्वाद दिया। फिर वे मुनीश्वरों की स्त्रियोंसे मिलीं, ऐसा प्रेम बढ़ा कि कहनेमें नहीं आता।।

बंदि बंदि पद सिय सबहीके ❀ आसिषबचन लहे प्रिय जीके
सासु सकल जब सीय निहारी ❀ मूँदेउ नयन सहमि सुकुमारी

श्रीसीताजीने सबके चरणों की बन्दना कर मनवांछित आशीर्वाद लिया ।। सासुओंने जब सीताजीकी ओर देखा तो उनके नेत्र मुँद गये और वे सहमकर शून्य चित्त हो गयीं ।।

परी बधिकबस मनहुँ मराली ❀ काह कीन्ह करतार कुचाली
तिन्हसियनिरखि निपटदुखपावा❀ सो सब सहिय जो दैव सहावा

और बोलीं कि मानों हंसिनी बहेलिया के वशमें पड़ी है, विधाता ने यह कुचाल क्या किया ? सीताको देखकर उन्होंने जो दारुण दुःख पाया वह कहनेमें नहीं आता, विधाता जो संकट सहावा है, वह सहना ही पड़ता है ।।

जनकसुता तब उर धरि धीरा ❀ नीरनलिनलोचन भरि नीरा
मिली सकल सासुन सिरनाई ❀ तेहि अवसर करुना महि छाई

तब श्रीसीताजी मनमें धीरज धरकर श्याम कमलके समान नेत्रोंमें जल भर कर ।।७।। सब सासुओंको जाकर मिलीं, उस समय सारी पृथ्वी पर करुणा छा गयी ।।८।।

दोहा—लागि लागि पग सबनि सिय, भेंटी अति अनुराग।
हृदय असीसहिं प्रेमबस, रहिहहु भरी सुहाग ।।२३८।।

श्रीसीताजी सबके पाँवोंमें लग-लग कर बड़े प्रेमके साथ भेंटती हैं तो वे सब प्रेमके वश होकर अन्तःकरणसे उन्हें आशीर्वाद देती हैं कि तुम सदा सुहागिन बनी रहोगी ।। २३८ ।।

विकल सनेह सीय सब रानी ❀ बैठन सबहि कहेउ गुरु ज्ञानी
प्रथम कही जगगति मुनिनाथा ❀ कहे कछुक परमारथगाथा

श्रीसीताके स्नेहसे सब रानियां बिकल हो रही हैं, उन्हें ज्ञानी गुरु वसिष्ठने बैठने को कहा। पहले तो वसिष्ठजीने कुछ जगत्की गति कही फिर कुछ परमार्थकी वार्ता वर्णन की ।।

नृपकर सुरपुरगमन सुनावा ❀ सुनि रघुनाथ दुसह दुख पावा
मरनहेतु निजनेह बिचारी ❀ भे अतिविकल धीरधुरधारी

फिर राजा दशरथके स्वर्ग जानेके समाचार कहे जो सुन प्रभुने महा घोर दुःख पाया। फिर पिताके मरण का कारण अपने स्नेह को समझ, मोहसे व्याकुल हो गये ।।४।।

कुलिसकठोर सुनत कटु बानी ❀ विलपत लषन सीय सब रानी
सोक विकल अति सकल समाजू ❀ मानहुँ राज अकाजेउ आजू

तब बज्र को भी मात करने वाला वह कटु वचन सुनते ही लक्ष्मण, सीता और सब रानियाँ विलाप करने लगीं। सारा समाज शोकसे व्याकुल हो गया। मानो दशरथ आज ही मरे हैं॥

मुनिवर बहुरि राम समुझाये ❀ सहित समाज सुसरित नहाये
ब्रत निरंबु तेहि दिनप्रभु कीन्हा ❀ मुनिहुँ कहे जल काहु न लीन्हा

गुरु वसिष्ठने प्रभु को समझाया और समाजके साथ गंगाजीमें नहाये। प्रभुने उस दिन जल भी नहीं लिया। यद्यपि वसिष्ठजीने बहुत कुछ कहा पर उस दिन तो किसीने जल नहीं लिया॥

दोहा—भोर भये रघुनंदनहिं, जो मुनि आयसु दीन्ह।
श्रद्धाभक्तिसमेत प्रभु, सो सब सादर कीन्ह॥२३९॥

दूसरे दिन प्रभात होते ही गुरुने जो कुछ आज्ञा की, प्रभुने उसको श्रद्धा और भक्ति के साथ बड़े आदरपूर्वक किया॥ २३९॥

करि पितुक्रिया वेद जसि बरनी ❀ भे पुनीत पातकतमतरनी
जासु नाम पावक अघतूला ❀ सुमिरत सकल सुमंगलमूला

श्रीरामचन्द्रजी वेद विहित पिता की क्रिया करके पवित्र हुए॥१॥ जिसका नाम पावक रूप तूल (रुई) को भस्म करने के लिए अग्नि रूप है॥२॥

सुद्ध सो भयउ साधुसंमत अस ❀ तीरथआवाहन सुरसरि जस
सुद्ध भयें दुइ बासर बीतें ❀ बोले गुरुसन राम पिरीते

वे प्रभु शुद्ध हुए, ऐसा जो कहता है वह सत्पुरुषों को परम मान्य है जैसे गंगाके भीतर अन्य तीर्थ का आवाहन करना है। शुद्ध हुए दो दिन बीत गये, तब प्रभु ने प्रीतिके साथ गुरु वसिष्ठसे कहा॥

नाथ लोग सब निपट दुखारी ❀ कंदमूल - फल - अंबु - अहारी
सानुज भरत सचिवसब माता ❀ देखि मोहिं पल जिमि युग जाता

हे नाथ! सब लोग महादुःखी हैं, क्योंकि कन्दमूल फल व जलके सिवाय खाने को कुछ नहीं है॥५॥ छोटे भाई शत्रुघ्नके साथ भरत मंत्री और सब माताओंको देखकर मेरा एक क्षण युग के समान बीत रहा है॥ ६॥

सब समेत पुर धारिय पाऊ ❀ आप इहाँ अमरावति राऊ
बहुत कहेउँ सब कियउँ ढिठाई ❀ उचित होइ तस करिय गुसाँई

इसलिए अब आप सब समाज को साथ ले अयोध्या को पधारिए। आप तो यहाँ और राजा स्वर्गलोकमें फिर पुर का क्या हाल होगा। मैं आपसे अधिक क्या कहूँ जैसा उचित हो, वैसा करिये॥

दोहा—धरमसेतु करुनायतन, कस न कहहु अस राम।
लोग दुखित दिन दुइ दरस, देखि लहहिं बिस्राम॥२४०॥

प्रभुके ऐसे करुण वचन सुन, वसिष्ठजीने श्रीरामचन्द्रजीसे कहा कि हे प्रभो! आपका अवतार धर्म की रक्षाके लिए है सो आप ऐसा क्यों न कहोगे, दो दिन यहाँ रह आपके दर्शन कर सभी लोग उस लाभ को ले विश्राम पावेंगे॥२४०॥

रामबचन सुनि सभय समाजू ❀ जनु जलनिधिमहँ बिकल जहाजू
सुनि गुरुगिरा सुमंगलमूला ❀ भयउ मनहुँ मारुत अनुकूला

प्रभुके वचन सुन सब समाज ऐसा भयभीत हुआ, मानों समुद्रके बीच जहाज की दुर्दशा हो गई है। परन्तु मङ्गल की मूल जो मुनि की वाणी है वहो मानो अनुकूल हवा बहने लगी है ।।

पावनपय तिहुँकाल नहाई ❀ जेहि बिलोकि अघओघ नसाई
मंगलमूरति लोचन भरि भरि ❀ निरखहिं हरषि दंडवत करि करि

सब लोग पवित्र मन्दाकिनीके जलमें तीनों काल स्नान करते हैं कि जिस पवित्र जल का दर्शन करते ही पापोंके समूह नष्ट हो जाते हैं। साष्टांग प्रणामकर आनन्दपूर्वक प्रभुकी मङ्गलकारी मूर्तिको देखते हैं।

राम सैलबन देखन जाहीं ❀ जहँ सुख सकल कतहुँ दुख नाहीं
झरना झरहिं सुधासम बारी ❀ त्रिविधतापहर त्रिविध बयारी

रामजी बन और पर्वतों को देखते हैं कि जहाँ सब प्रकारके सुख हैं और दुःख का कहीं नाम भी नहीं है। अमृतसा जल झरनोंसे झरता है और त्रिविध तापनाशक वायु बहता है ।।

बिटप बेलि तृन अगनित जाती ❀ फल प्रसून पल्लव बहु भाँती
सुन्दरसिला सुखद तरु छाहीं ❀ जाइ बरनि बन छबि केहि पाहीं

वहाँ पर्वतोंमें नाना प्रकारके वृक्ष, लतायें और तृण विद्यमान हैं, बैठने की अच्छी चट्टानें हैं और वृक्ष की छाया है, तथा वन की शोभा किसीसे कही नहीं जाती ।।८।।

दोहा—सरित सरोरुह जलबिहँग, कूँजत गुंजत भृंग।
बैर बिगत बिहरत बिपिन, मृग बिहंग बहुरंग ।।२४१।।

नदियाँ और तालाबोंके तटपर जलमें पक्षी कल्लोल करते और कूँजते हैं और भौंरे गूँजते तथा रंग-रंग के पशु और पक्षी बैर को छोड़कर बनके भीतर क्रीड़ा करते हैं ।।२४१।।

कोल किरात भिल्ल बनबासी ❀ मधु सुचि सुन्दर स्वाद सुधासी
भरि भरि परनकुटी रचि रूरी ❀ कंद मूल फल अंकुर जूरी

कोल्ह, किरात व भील आदि बनचर लोग पवित्र सुन्दर व अमृत सा स्वादिष्ट शहद दोनोंमें भर लाते हैं और सुन्दर पत्तोंकी पत्तल बना उसमें कन्द मूल फल अंकुर आदि स्वादिष्ट पदार्थ रखते हैं।

सबहिं देहिं करि बिनय प्रनामा ❀ कहि कहि स्वाद भेद गुन नामा
देहिं लोग बहु मोल न लेहीं ❀ फेरत राम दुहाई देहीं

और उनके अलग-अलग नाम गुण व स्वाद कह कर नम्रताके साथ प्रणाम करके अयोध्यावासियों को देते हैं पर उनका मूल्य नहीं लेते और फेरकर रामजी की दोहाई देते हैं ।।

कहहिं सनेह मगन मृदु बानी ❀ मानत साधु प्रेम पहिचानी
तुम सुकृती हम नीच निषादा ❀ पावा दरसन रामप्रसादा

वे स्नेह-मग्न होकर मधुर वाणीसे कहते हैं कि जो सत्य पुरुष होते हैं वे प्रेम को पहचानते हैं। हम महा नीच निषाद हैं हमारा धन्य भाग्य है कि हमें आपका दर्शन हुआ ।।

हमहिंअगमअतिदरस तुम्हारा ❀ जनु मरु धरनि देवधुनिधारा
राम कृपालु निषाद नेवाजा ❀ परिजनप्रजहिं चहिय जस राजा

हमें आपके दर्शन अति दुर्लभ हैं। जब परम दयालु प्रभुने हम निषादों को अपना लिया है तो आपको भी हमारी भेंट लेनी चाहिये; राजा जिस ढंगसे चले प्रजा को भी वैसे ही चलना चाहिये

दोहा—यह जिय जानि सकोच तजि, करिय छोह लखि नेहु।
हमहिं कृतारथ करनलगि, फल तृन अंकुर लेहु ॥२४२॥

अब आप लोग अपने जी में इस बात को जान संकोच को तज हमारे स्नेह की ओर देख हम पर कृपा करो। हमें कृतार्थ करनेके लिए यह कन्द मूल फल तृण और अङ्कुर आदि पदार्थ लीजिये ॥

तुम प्रिय पाहुन बन पगु धारे ❀ सेवाजोग न भाग हमारे
देब कहा हम तुमहिं गुसाँई ❀ ईंधन पात किरात मिताई

आप बड़े भाग्यशाली प्यारे पाहुने वनमें पधारे हैं। हमारे भाग्य तो आपकी सेवा करने योग्य नहीं है। हम आपको क्या देवें, किरातों की मित्रतामें ईंधन और पत्तोंके सिवा क्या मिलेगा ?

यह हमार अति बड़ि सेवकाई ❀ लेहिं न बासन बसन चुराई
हम जड़ जीव जीवगनघाती ❀ कुटिल कुचाली कुमति कुजाती

हमारी तो यही एक बड़ी भारी सेवा है कि हम आपके बासन और वस्त्र न ले जायँ। हम तो जीव जो सदैव जीवहिंसा करते हैं, कुटिल कुजाति और कुमति जो कुछ कहैं सो महा जड़ सब हम में है ॥

पाप करत निसि बासर जाहीं ❀ नहिं कटि पट नहिं पेट अघाहीं
सपनेहु धरमबुद्धि कस काऊ ❀ यह रघुनंदनदरस प्रभाऊ

हमें रात-दिन पाप करते ही जाते हैं, न पहिरनेको वस्त्र है, और न खाने को पेट भर अन्न, हमसे किसी धर्म का सम्बन्ध ही क्या है ? यह तो प्रभुके दर्शन का ही प्रसाद है ॥

जबतें प्रभुपदपद्म निहारे ❀ मिटे दुसह दुख दोष हमारे
बचन सुनत पुरजन अनुरागे ❀ तिन्हके भाग सराहन लागे

जबसे हमने प्रभुके चरण कमलों का दर्शन किया है तबसे हमारे दुःसह दुःख और दोष निवृत्त हो गये हैं। निषादोंके ऐसे वचन सुन पुरके लोग बहुत प्रसन्न हुए और उनके भाग्य को सराहने लगे ॥

छन्द—लागे सराहन भाग्य सब अनुराग बचन सुनावहीं।
बोलनि मिलनि सियरामचरनसनेह लखि सुख पावहीं ॥
नर नारि निदरहिं नेह निज सुनि कोल्ह भीलनिकी गिरा।
तुलसी कृपा रघुवंसमनि की लोह लै नौका तिरा ॥१०॥

सब लोग निषाद लोगोंके भाग्य की प्रशंसा करते हैं और प्रीतिके वचन सुनाते हैं और उनकी बोलनि मिलनि और श्रीसीतारामजीके चरण कमल सम्बन्धी स्नेह को देख कर सुख पाते हैं और कोल्ह-भीलों की भक्ति, रसभरी मधुर वाणी सुनकर नगरके सब नर-नारी अपने-अपने स्नेह की निन्दा करते हैं। तुलसीदासजी कहते हैं कि श्रीरामचन्द्रजी की कृपा ही ऐसी है कि लोहा भी पानीके भीतर रह कर तैरता है।

सो०—बिहरहिं बन चहुँ ओर, प्रतिदिन प्रमुदित लोग सब।
जल ज्यों दादुर मोर, भये पीन पावस प्रथम ॥१०॥

सब लोग हमेशा प्रसन्न हो बनमें चारों ओर फिरते हैं और ऐसे आनन्दित होते हैं कि जैसे मेढक और मोर पावसके प्रथम जल को पाकर पुष्ट हो हर्ष पाते हैं ॥ १० ॥

पुर-नर-नारि मगन अतिप्रीती ❀ बासर जाहिं पलक सम बीती
सीय सास प्रतिवेष बनाई ❀ सादर करहिं सरिस सेवकाई

नगरके सब नर-नारी अतिशय मग्न हैं, रात-दिन क्षणके समान व्यतीत होते हैं। जितनी सासुयें हैं उतने स्वरूप धारण कर सीताजी आदरके साथ यथायोग्य उनकी सेवा करती हैं ॥

लखा न मरम राम बिनु काहू ❀ माया सब सिय माया नाहू
सीय सास सेवावस कीन्हीं ❀ तिन्हलहिसुख सिष आसिष दीन्हीं

इस भेदको श्रीरामचन्द्रको छोड़ और किसीने नहीं जाना; क्योंकि जगत्‌में जितनी माया है वह सब सीताजी की है और प्रभु श्रीरामचन्द्रजी मायापति हैं ॥

लखि सिय सहितसरल दोउ भाई ❀ कुटिल रानि पछितात अघाई
अब जिय महँ जाँचति कैकेई ❀ महि न बीच बिधि मीचु न देई

सीताके साथ दोनों भाइयों को देख कर कुटिल रानी कैकेयी मनमें अघाके पछताती है और अपने मनमें ऐसा जाँचती है कि पृथ्वी फट क्यों नहीं जाती और मेरी मृत्यु क्यों नहीं हो जाती है ॥

लोकहु बेदबिदित कबि कहहीं ❀ रामबिमुख थल नरक न लहहीं
यह संसय सबके मनमाहीं ❀ रामगमन बिधि अवध कि नाहीं

कवि लोग कहते हैं कि जो जन श्रीरामचन्द्रजीसे विमुख हैं उन दुष्टोंके लिये नरकमें भी स्थान नहीं है। सबके मनमें यह सन्देह है कि श्रीरामचन्द्र अयोध्या पधारेंगे या नहीं ॥

दोहा—निसि न नींद नहिं भूख दिन, भरत बिकल सुठि सोच।
नीच कीच बिच मगन जस, मीनहिं सलिल सँकोच ॥२४३॥

भरतजी को मारे शोचके रातमें नींद नहीं आती और दिनमें भूख नहीं लगती। वे शोकके वश हो ऐसे विकल हो रहे हैं कि मानों जलके संकोचसे मछली की महा विकल दशा हो रही हो ॥२४३॥

कीन्ह मातुमिस काल कुचाली ❀ ईति भीति जस पाकत साली
केहिबिधि होइ रामअभिषेकू ❀ मोकहँ फुरत उपाय न एकू

माताके बहाने नीच कालने कैसी कुचाल की है कि मानो पकते हुए धानको ईतिका भय दे दिया है। श्रीरामचन्द्रजी का अभिषेक किस प्रकार होवे, मुझे तो एक भी उपाय नहीं सुझता ॥

अवसि फिरहिं गुरुआयसु मानी ❀ मुनि पुनि कहब रामरुचि जानी
मातु कहेहु बहुरहिं रघुराऊ ❀ रामजननि हठि करब कि काऊ

गुरु की आज्ञा मान कर प्रभु अवश्य लौट जायँ परन्तु मुनि भी प्रभु का रुख देखकर ही कहेंगे। माताके कहनेसे भी श्रीराम पीछे फिर जायेंगे, पर क्या माता कभी ऐसा हठ करेंगी ? ॥

मोहिं अनुचर कर केतिक बाता ❀ तेहि महँ कुसमय बाम बिधाता
जो हठ करौं तो निपट कुकर्मू ❀ हरगिरिते गुरु सेवकधर्मू

फिर मेरे अनुचर को तो बात ही कितनी, उस पर भी यह खोटा समय और प्रतिकूल दैव। भरत कहते हैं कि जो मैं यह हठ करूँ तो अत्यन्त ही कुकर्म हो जायेगा ॥

एकौ युक्ति न मन ठहरानी ❀ सोचत भरतहिं रैन बिहानी
प्रात अन्हाइ प्रभुहि सिर नाई ❀ बैठत पठये ऋषय बुलाई

एक भी युक्ति मनमें न ठहरी, उनको सोच करते सारी रात्रि बीत गई। प्रातःकाल होते ही मंदाकिनीमें नहाय, प्रभु को प्रणाम कर भरतजी बैठे ही थे कि इतनेमें मुनिवसिष्ठनेउन्हें बुला भेजा।

दोहा—गुरुपदकमल प्रनाम करि, बैठे आयसु पाइ।
विप्र महाजन सचिव सब, जुरे सभासद आइ ॥२४४॥

तब भरतजी गुरुके पास प्रणाम कर आज्ञा पाकर जो आसनपर बैठे तो उस समय ब्राह्मण, मंत्री और महाजन सब सभासद उस सभामें आकर एकत्रित हुए ॥ २४४ ॥

बोले मुनिवर समयसमाना ❀ सुनहु सभासद भरत सुजाना
धरमधुरीन भानु-कुल-भानू ❀ राजा राम स्वबस भगवानू

तब अवसर का विचार कर समयके अनुसार गुरु वसिष्ठजीने कहा कि हे सभासदों! हे सुजान भरत! सुनो, रवि कुल सूर्य श्रीरामचन्द्रजी धर्ममें अग्रणी स्वतन्त्र परम धर्म सम्पन्न भगवान् हैं ॥

सत्यसिंध पालक श्रुतिसेतू ❀ रामजन्म जगमंगलहेतू
गुरु-पितु-मातु-बचन-अनुसारी ❀ खल-दल-दलन देवहितकारी

वे श्रीरामचन्द्र सत्यके सागर और वेद की मर्यादाके पालनेवाले हैं, इनका जन्म जगत् के मंगल का मूल कारण है। ये मात-पिता, गुरु और देवताओं का हित करनेवाले हैं ॥

नीति प्रीति परमारथ स्वारथ ❀ कोउ न रामसम जान जथारथ
बिधिहरिहर ससि रवि दिग्पाला ❀ माया जीव करम सब काला

इनको नीतिमें बड़ी प्रीति है, इनके समान परमार्थ और स्वार्थ कोई नहीं जानता है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, सूर्य, चन्द्रमा, दिग्पाल, माया, जीव, कर्म और सब काल ॥

अहिप महिप जहँ लगि प्रभुताई ❀ जोगसिद्ध निगमागम गाई
करि बिचार जिय देखहु नीके ❀ रामरजाइ सीस सबहीके

शेषनाग, राजा, योगी, सिद्धजन व प्रभुता जिनका वेद, शास्त्र तथा पुराणोंमें जहाँ तक वर्णन है सबको देखो तो सबके शिर पर रामकी ही आज्ञा है।

दोहा—राखे रामरजाइ रुख, हम सबकर हित होइ।
समुझि सयाने करहु अब, सबमिलि संमत सोइ ॥२४५॥

राम की आज्ञा और रुख को रखनेसे ही हम सबका भला है। आप सब लोग मिल कर वही विचार पक्का करो जिससे सबका भला होवे ॥ २४५ ॥

सब कहँ सुखद राम अभिषेकू ❀ मंगल मोद मूल गुन एकू
केहिविधि अवधचलहिं रघुराई ❀ कहहु समुझि सोइ करिय उपाई

रामका अभिषेक ही सबको सुख देनेवाला और मङ्गलका मूल कारण है। परन्तु अब रामजी किस प्रकारसे अवधको चलेंगे, यह समझकर जो कहो हम वही उपाय करें ॥

सब सादर सुनि मुनिवर बानी ❀ नय परमारथ स्वारथसानी
उतर न आव लोग भे भोरे ❀ तब सिर नाइ भरत कर जोरे

मुनिकी आदर सहित वाणी सुनकर सबलोग चकित रह गये। किसी को उत्तर नहीं सूझा, सब लोगोंकी बुद्धि भ्रमित हो गई, तब शिर नवाकर भरतजीने हाथ जोड़कर कहा ॥

भानुवंस भे भूप घनेरे ❀ अधिक एक ते एक बड़ेरे
जन्महेतु सबकहँ पितुमाता ❀ कर्म सुभासुभ देइ विधाता

सूर्यवंशमें कई राजा हुए हैं जो एकसे एक अधिक और बहुत बड़े हुए हैं। माता पिता जन्मके कारण हैं पर विधाता ही कर्मानुसार शुभ-अशुभ फलको देता है ॥

दलि दुख सजइ सकल कल्याना ❀ अस असीस राउर जग जाना
सो गुसाइँ विधिगति जेइ छेंकी ❀ सकै को टारि टेक जो टेकी

जो सब दुःखोंको नाश करके कल्याणको देता है ऐसे आपके आशीषको सब जानते हैं, विधाताकी गतिको आपने छेंक दी। आप जिस टेकको टेक दीजिएगा उसे कौन टाल सकता है?

दोहा—बूझिय मोहिं उपाय अब, सो सब मोर अभाग।
सुनि सनेहमय बचन गुरु, उर उमँगा अनुराग ॥२४६॥

आप जो मुझसे उपाय पूछते हो तो यह सब मेरे भाग्यकी बात है। इस प्रकार भरतजी के स्नेह भरे वचनको सुनकर गुरु वसिष्ठजीके हृदयमें परम प्रीति उत्पन्न हुई ॥ २४६ ॥

तात बात फुर राम कृपाहीं ❀ राम विमुख सुख सपनेहुँ नाहीं
सकुचौं तात कहत इक बाता ❀ अर्ध तजहिं बुध सरबस जाता

हे तात! जो प्रभुसे विमुख हैं उन्हें स्वप्नोंमें भी सुख नहीं है, हे तात! मैं एक बात कहते हुए सकुचता हूँ कि जो विद्वान् लोग हैं वे, सर्वस्वको जाते देखकर आधा त्याग देते हैं ॥

तुम कानन गवनहु दोउ भाई ❀ फेरिय लषन सीय रघुराई
सुनि सुभ बचन हरष दोउ भ्राता ❀ भे प्रमोदपरिपूरन गाता

हे तात! तुम दोनों भाई बनमें चले जाओ, और सीताराम और लक्ष्मणको अयोध्याको लौटा दो। ऐसे शुभ वचन सुन दोनों भाई प्रसन्न हुए, और आनन्दके कारण उनके अंग फूले न समाये ॥

मन प्रसन्न तनु तेज बिराजा ❀ जनु जिय राउ राम भे राजा
बहुत लाभ लोगन्ह लघु हानी ❀ सम दुख सुख सब रोवहिं रानी

उनका मन प्रसन्न हो गया। शरीरसे तेज चमकने लगा। मानो राजा जी उठे हैं और श्रीरामचन्द्रजी राजा हो गये हैं परन्तु उस समय रानियाँ दुःख-सुखको समान जान रोने लगीं ॥

कहहिं भरत मुनि कहा सो कीन्हे ❀ फल जग जीवन अभिमत दीन्हें
कानन करउँ जन्म भरि बासू ❀ यहिते अधिक न मोर सुपासू

भरतजी गुरु वसिष्ठजीसे कहते हैं कि हे स्वामी ! आपने जो कहा है वह मैं अवश्य करूँगा। हे तात ! मैं जन्मभर वनमें रहूँगा इससे बढ़कर मेरे लिएऔर कोई सुविधा नहीं है ॥

दोहा—अन्तर्यामी राम सिय, तुम सर्वज्ञ सुजान।
जो फुर कहहु तो नाथ निज, कीजिय बचन प्रमान ॥२४७॥

हे नाथ ! राम और सीता अन्तर्यामी हैं, आप सर्वज्ञ व सुजान हैं, हे स्वामी ! यदि आप सत्य कहते हैं तो अपने वचनको प्रमाणितकर दिखावें ॥ २४७ ॥

भरतबचन सुनि देखि सनेहू ❀ सभासहित मुनि भयउ विदेहू
भरतमहामहिमा जलरासी ❀ मुनि मति ठाढ़ि तीर अबलासी

भरतजीके वचन सुन और स्नेहको देखकर वशिष्ठजी सभाके साथ अपने शरीरकी सुध भूल गये। भरतजीकी अपारमहिमा अथाहसमुद्र है और मुनिकी बुद्धिनदीके किनारेखड़ीहुई एकस्त्रीकेसमानहै

गा चह पार जतन बहु हेरा ❀ पावनि नाव न बोहित बेरा
और करहि को भरतबड़ाई ❀ सरसिसीप किमि सिंधु समाई

वह उसके पार जाना चाहती है परन्तु नाव और बेड़ेके जैसा कोई उपाय नहीं पाती ।।३।। भरतजीकी बड़ाई दूसरा कौन कर सके?क्या तालाब और नदियोंकी सीपमें समुद्र समा सकता है ॥

भरत मुनिहिं मनभीतर भाये ❀ सहित समाज रामपहँ आये
प्रभु प्रनाम करि दीन्ह सुआसन ❀ बैठे सब सुनि मुनि अनुसासन

मुनिके मानसिक आशयको पाकर भरतजी समाजके साथ श्रीरामचन्द्रजीके पास आये। प्रभु ने गुरुको प्रणामकर सुन्दर आसन दिया। सबलोग मुनिकी आज्ञा पाकर अपने-अपने आसनोंपर बैठे ॥

बोले मुनिवर बचन बिचारी ❀ देसकाल अवसर अनुहारी
सुनहु राम सर्वज्ञ सुजाना ❀ धर्मनीति - गुन - ज्ञान - निधाना

उस समय देशकालको बिचारकर अवसरके अनुसार मुनि वसिष्ठजी यह वचन बोले— हे सर्वज्ञ सुजान श्रीरामचन्द्रजो ! आप धर्म, नीति, गुण और ज्ञानके निधान हैं ॥

दोहा—सबके उर अन्तर बसहु, जानहु भाव कुभाव।
पुरजन जननी भरत हित, होइ सो करिय उपाव ॥२४८॥

आप सबके हृदयके भीतर विराजते हैं, सबके घट-घटके भावको जानते हैं। अब जिस प्रकार पुरके लोग, माता और भरतका भला होवे वैसा ही उपाय करें ॥२४८॥

आरत कहहिं विचारि न काऊ ❀ सूझ जुआरिहिं आपन दाऊ
सुनि मुनि बचन कहत रघुराऊ ❀ नाथ तुम्हारेहिं हाथ उपाऊ

दुःखी मनुष्य विचार कर नहीं कहते, जुआड़ीको अपना ही दाव दीखता है ॥ १ ॥ तब मुनिकी बात सुनकर रामजीने कहा कि हे नाथ ! इसका उपाय तो आपके ही हाथ में है ॥

सबकर हित रुख राउर राखे ❀ आयसु किये मुदित फुर भाखे
प्रथम जो आयसु मोकहँ होई ❀ माथे मानि करौं सिख सोई

हे नाथ ! आपका रुख रखनेमें ही सबका भला है; मैं सत्य कहता हूँ कि आप आज्ञा दीजिये। मुझे जो आज्ञा होवेगी मैं उसी शिक्षाको शिरपर रखकर करूँगा ॥

पुनि जेहिकहँ जस कहब गोसाँई ❀ सो सबभाँति करिहि सेवकाई
कह मुनि राम सत्य तुम भाखा ❀ भरत सनेह विचार न राखा

फिर जिसको जैसी आज्ञा होगी वह उसी प्रकारसे सेवा करेगा। वसिष्ठजीने कहा कि श्रीरामजी ! आपने सत्य कहा है, भरतके स्नेहके कारण अब मुझे भी कुछ विचार नहीं रहा ॥

तेहिते कहौं बहोरि बहोरी ❀ भरत भक्तिवस भे मति भोरी
मोरे जान भरत रुचि राखी ❀ जो कीजिय सो सुभ सिव साखी

इससे मैं बारम्बार कहता हूँ कि भरतकी भक्तिके कारण मेरी बुद्धि भोली हो गई है ॥ मेरी जानमें तो भरतकी रुचि को रखना चाहिए। यह मैं शिवजी को साक्षी देकर कहता हूँ ॥

दोहा—भरत विनय सादर सुनिय, करिय विचार बहोरि।
करब साधुमत लोकमत, नृपनय निगम निचोरि ॥२४९॥

पहले भरतकी विनती सुनिये, फिर उस पर विचार कीजिये। सत्पुरुषोके मतको और लोकके मतको विचार व राजनीति और वेदके सिद्धान्त को निचोड़ कर कहिये ॥ २४९ ॥

गुरुअनुराग भरत पर देखी ❀ राम हृदय आनंद विसेषी
भरतहिं धर्मधुरंधर जानी ❀ निज सेवक तन मानस बानी

भरतके ऊपर गुरु वसिष्ठजीका अत्यन्त प्रेम देख श्रीरामचन्द्रजी के मनमें बड़ा आनन्द हुआ ॥१॥ भरतको धर्ममें धुरन्धर और तन मन वचनसे अपना सेवक जानकर ॥२॥

बोले गुरुआयसु अनुकूला ❀ बचन मंजु मृदु मंगलमूला
नाथ सपथ पितुचरण दुहाई ❀ भयउ न भुवन भरतसम भाई

श्रीरामचन्द्रजी गुरु की आज्ञाके अनुकूल मनोहर वचन बोले कि हे नाथ ! मुझे आप की शपथ है कि भरतके जैसा भाई आज तक जगत्‌में पैदा नहीं हुआ है ॥४॥

जे गुरुपद - अंबुज - अनुरागी ❀ ते लोकहुँ वेदहुँ बड़भागी
राउर जापर अस अनुरागू ❀ को कहि सकहिं भरतकर भागू

जो गुरुके चरण-कमलोंमें प्रीति करते हैं वे वेद और लोक दोनोंमें बड़भागी हैं। जिस पर आपकी ऐसी कृपा है उस भरतके बराबर भाग्यशाली कौन किसको कह सकता है ?

लखि लघु बंधु बुद्धि सकुचाई ❀ करत वदन पर भरत बड़ाई
भरत कहहिं सोइ किये भलाई ❀ अस कहि राम रहे अरगाई

भरतको छोटा भाई समझकर उसके मुंह पर बड़ाई करते हुए मेरी बुद्धि सकुचाती है॥ भरतजी जो कहते हैं उसीमें निःसन्देह भलाई है ऐसा कहकर श्रीरामचन्द्रजी चुप रह गये ॥

दोहा—तब मुनि बोले भरतसन, सब सकोच तजि तात ।
कृपासिंधु प्रियबंधुसन, कहहु हृदय की बात ॥२५०॥

तब वसिष्ठजीने भरतजीसे कहा कि हे तात ! अब आप सब संकोच को त्याग कर अपने प्रिय बन्धु कृपासिन्धु श्रीरामचन्द्रजीसे जो मन की बात हो, सो कहो ॥२५०॥

सुनि मुनि बचन रामरुख पाई ❀ गुरु साहिब अनुकूल अघाई
लखि अपने सिर सब छरभारू ❀ कहि न सकहिं कछु करहिं बिचारू

तब वसिष्ठजी का वचन सुन, प्रभुका रुख पाकर भरतने गुरु महाराज को पूर्ण रीति से अपने अनुकूल समझा । परन्तु व्यवहार का भार अपने सिर समझकर कुछ कह न सके ॥

पुलकि सरीर सभा भे ठाढ़े ❀ नीरजनयन नेहजल बाढ़े
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा ❀ इहिते अधिक कहौं मैं काहा

शरीर पुलकित हो गया और नेत्र कमलोंमें जल भर आया, उस समय वह सबके बीच खड़े होकर बोले, कि मुझको जो कहना था वह तो सब मुनिराज श्रीवसिष्ठजीने कह दिया, मैं क्या कहूँगा?

मैं जानौं निजनाथस्वभाऊ ❀ अपराधिहुँ पर कोह न काऊ
मोपर कृपा सनेह बिसेषी ❀ खेलत खुनस कबहुँ नहिं देखी

मैं अपने स्वामीके स्वभावको जानता हूँ कि वे किसी अपराधी पर भी कभी क्रोध नहीं करते। सो मुझ पर तो प्रभु की कृपा और स्नेह विशेष है, मैंने खेलमें भी कभी क्रोध नहीं देखा ॥

सिसुपनते परिहरेउँ न संगू ❀ कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू
मैं प्रभुकृपा रीति जिय जोहीं ❀ हारहु खेल जितावउ मोहीं

वचपनसे ही मैंने कभी उनका साथ नहीं छोड़ा है और किसी भी समय उन्होंने मेरा मन भंग नहीं किया है। प्रभु की रीति मैं मनमें भली भाँति जानता हूँ, मैं जब खेलमें हार जाता था तो प्रभु मुझे जिता देते थे ॥

दोहा—महूँ सनेह सँकोचबस, सनमुख कहेउँ न बैन ।
दरसनतृप्ति न आजुलगि, प्रेमपियासे नैन ॥२५१॥

और मैंने भी स्नेह और संकोचके कारण कभी उनके सम्मुख होकर बचन नहीं कहा था । प्रेमके कारण प्यासे मेरे नेत्र आज तक प्रभु के दर्शनसे तृप्त नहीं हुए हैं ॥ २५१ ॥

बिधि न सकेउ सहि मोर दुलारा ❀ नीच बीच जननी मिसु पारा
इहउ कहत मोहिं आजु न सोभा ❀ आपनि समुझि साधु सुचिकोभा

मेरा यह प्यार विधातासे भी नहीं सहा गया और उसने माता के बहाने ही ला कर खाईके बीच पटक दिया । परन्तु आजके दिन तो मैं यह कहते शोभा नहीं पाता ॥ २ ॥

मातु मंद मैं साधु सुचाली ❀ उर अस आनत कोटि कुचाली
फरइ कि कोदव बालि सुशाली ❀ मुक्ता प्रसव कि संबुक ताली

परन्तु माता महांमन्द अभागिनी व मूर्ख है और मैं साधु हूँ यदि मैं ऐसा कहूँ तो इसमें करोड़ों कुचालें होती हैं । क्योंकि कोदो की बाल में क्या कभी अच्छे धान के फल लग सकते हैं ? ॥४॥

सपनेहुँ दोष कलेस न काहू ❀ मोर अभाग्य अवधि अवगाहू
बिनु समुझे निज अघ परिपाकू ❀ जारेउँ जाइ जननि कहि काकू

इसमें किसी का कुछ भी दोष व क्लेश स्वप्नमें भी नहीं है, किन्तु यह मेरा ही अभाग्य है। मैं किसीको क्या कहूँ ? यदि मैं इस बातको जानता तो जाकर माता को टेढ़े वचनोंसे क्यों जलाता ?

हृदय हेरि हारेउँ सब ओरा ❀ एकहि भाँति भलहि भल मोरा
गुरु गुसाइँ साहिब सियरामू ❀ लागत मोहिं नीक परिनामू

अब मैं मनमें विचार करके सब ओरसे हार गया हूँ, मेरा भला एक ही प्रकारसे है ॥७॥ आप गुरु और सीता राम जैसे स्वामी हैं तो मुझे परिणाममें भला ही दीखता है ॥८॥

दोहा—साधुसभा प्रभु गुरु निकट, कहौं सुथल सतिभाउ ।
प्रेम प्रपंच कि झूठ फुर, जानहिं मुनि रघुराउ ॥२५२॥

हे महाराज ! यहाँ सत्पुरुषों का समाज है प्रभु और गुरुजी समीप ही में बैठे हैं और पवित्र सुन्दर क्षेत्र है सो सत्य भावसे कहता हूँ या प्रेमसे कहता हूँ या प्रपंच की रचना कर कहता हूँ ॥२५२॥

भूपतिमरन प्रेमप्रन राखी ❀ जननी कुमति जगत सब साखी
देखि न जाइ विकल महतारी ❀ जरहिं दुसह ज्वर पुरनरनारी

राजाने मरकर अपने प्रेमका प्रण निबाहा और कैकेयीने कुचालकी, इस बातको सब संसार जानता है । उससे दुःखी हो मातायें विकल हो रही हैं जो मुझसे देखा नहीं जाता है।

मैंहिं सकल अनरथकर मूला ❀ सो सुनि समुझि सहहिं सब सूला
सुनि बन गमन कीन्ह रघुनाथा ❀ करि मुनिवेष लषन सिय साथा

सब अनर्थों का मूल मैं ही हूँ। सो सुन-समझकर सब दुःख सहता हूँ । जब मैंने यह बज्रपात सा कठोर वचन सुना कि प्रभु मुनि वेष बना कर लक्ष्मण और सीताके साथ बनमें पधारे हैं ।

बिनु पनही अरु प्यादेहि पाये ❀ संकरसाखि रहेउँ यहि घाये
बहुरि निहारि निषादसनेहू ❀ कुलिस कठिन उर भयउ न बेहू

और न तो पाँवोंमें पनही है और न कोई चढ़ने की सवारी, पैदल ही गये हैं तब यह घाव भी मैंने सहा है मैं क्या करूँ, मेरा कठोर हृदय फट नहीं जाता है ॥

अब सब आँखिन देखेउँ आई ❀ जियत जीव जड़ सबै सहाई
जिन्हहिंनिरखिमगुसाँपिनिबिछी❀तजहिं विषम विष तामस तीछी

सो अब सब अपनी आँखोंसे आकर देखता हूँ और यह जीव जीते जी सब कुछ सहता है हा ! जिन रामचन्द्रजी को देख कर साँपिन और बिच्छी भी अपने विषम विष को त्याग देते हैं।

दोहा—ते रघुनंदन लषन सिय, अनहित लागे जाहि ।
तासु तनय तजि दुसह दुख, दैव सहावै काहि ॥२५३॥

वे ही राम-लक्ष्मण और सीता जिसको अप्रिय लगते हैं । उसके पुत्र मुझको छोड़ कर विधाता दूसरे किसको यह दुःख सहावेगा ॥ २५३ ॥

सुनि अति विकल भरतबर बानी ❀ आरत प्रीति विनय नयसानी
सोकमगन सब सभा खँभारू ❀ मनहुँ कमलबन परेउ तुषारू

भरत की आर्त, प्रीति, विनय और नीति भरी ऐसी उत्तम वाणी सुन कर सभाके सभी लोग ऐसे शोकाकुल हो गये मानो कमल वन को पालाने मार दिया हो ॥

कहि अनेकविधि कथा पुरानी ❀ भरत प्रबोध कीन्ह मुनि ज्ञानी
बोलेउ उचित बचन रघुनंदन ❀ दिनकर कुल कैरवबनचंदन

तब वसिष्ठजी ने अनेक प्रकार की प्राचीन कथायें कह कर भरत को समझाया । उसी समय श्रीरामचन्द्रजी यह योग्य वचन बोले ॥

तात जीय जनि करहु गलानी ❀ ईसअधीन जीवगति जानी
तीनिकाल त्रिभुवन मत मोरे ❀ पुन्यसिलोक तात तर तोरे

हे तात ! तुम अपने जी में ग्लानि मत करो, जीव की गति ईश्वरके अधीन है, ऐसा ही जानो । हे भाई ! मेरी रायसे तीनों काल व तीनों लोकों का पुण्य श्लोक तुम्हारे ही हाथोंमें है ॥

उर आनत तुम पर कुटिलाई ❀ जाइ लोक परलोक नसाई
दोष देहिं जननिहि जड़ तेई ❀ जिन गुरु साधुसभा नहिं सेई

तुम पर कुटिल भाव लाते ही लोक व परलोक दोनों ही बिगड़ जायेंगे । माता को दोष तो वे मूर्ख ही लगाते हैं कि जिन्होंने गुरु और सत्य पुरुषों की सभा का सेवन नहीं किया है ॥

दोहा—मेटिहि पाप प्रपंच सब, अखिल अमंगलभार ।
लोकसुजस परलोक सुख, सुमिरत नाम तुम्हार ॥२५४॥

परन्तु तुम्हारे नाम का तो स्मरण करते ही समस्त पाप और प्रपंच मिट जायेगा और सब अमङ्गल का भार उतर जायेगा ! लोकमें बड़ाई मिलेगी और परलोक में भी सुख मिलेगा ॥२५४॥

कहौं स्वभाव सत्य सिव साखी ❀ भरत भूमि रहे राउरि राखी
तात कुतर्क करहु जिय जाये ❀ बैर प्रेम नहिं दुरै दुराये

हे भरत ! मैं यह अपने स्वभाव से सत्य और महादेवजी को साक्षी देकर कहता हूँ कि यह पृथ्वी तुम्हारे ही रखनेसे रहेगी । हे तात ! तुम कुतर्क न करो, बैर और प्रीति छिपानेसे नहीं छिपती ।

मुनि गण निकट विहँग मृगजाहीं ❀ बाधक बधिक बिलोकि पराहीं
हित अनहित पसु पक्षिउ जाना ❀ मानुषतनु गुण-ज्ञान-निधाना

देखो ! पक्षी और हरिण मुनियोंके निकट तो अपने आप चले जाते हैं और वधिकको देखकर भाग जाते हैं। अपनाभला-बुरातो पशुपक्षीभी जानते हैं, फिरमनुष्यशरीरतोगुणऔरज्ञानकाभण्डारही है।

तात तुम्हहिं मैं जानत नीके ❀ करौं काह असमंजस जीके
राखेउ राउ सत्य मोहिं त्यागी ❀ तन परिहरेउ प्रेमप्रणलागी

हे तात ! मैं तुमको भली-भाँति जानता हूँ पर क्या करूँ जी में यह असमंजस है कि जिस सत्य के लिए राजा ने मेरा त्याग किया तथा प्रेम-प्रणके लिये अपना शरीर छोड़ा ॥

तासु बचन मेटत मन सोचू ❀ तेहिते अधिक तुम्हार सँकोचू
तापर गुरु मोहिं आयसु दीन्हा ❀ अवसि जो कहहु चहौं सोइ कीन्हा

उनके वचन को टालनेमें मुझे जितनी चिन्ता है उससे अधिक संकोच मुझे तुम्हारा है। उस पर भी गुरु की आज्ञा है तो तुम जो कहोगे वही मैं अवश्य करना चाहता हूँ ॥

दोहा—मन प्रसन्न करि सकुच तजि, कहहु करौं सो आज।
सत्यसिंधु रघुबरबचन, सुनि भा सुखी समाज ॥२५५॥

तो तुम प्रसन्न चित्तसे संकोचको त्यागकर, आज जो कहोगे उसे मैं अवश्य करूँगा। सत्यसिन्धु श्रीरामचन्द्रजीके वचन सुन सभाके लोग सुखी हो गये ॥ २५५ ॥

सुरगणसहित सभय सुरराजू ❀ सोचहिं चाहत होन अकाजू
करत विचार बनत कछु नाहीं ❀ रामसरण सब गे मनमाहीं

तब देवताओं सहित इन्द्रके मनमें बड़ा भारी भय उत्पन्न हुआ, वे अनेक प्रकारके विचार करते हैं, परन्तु कुछ बनता नहीं है, सब अपने मनमें प्रभु की शरण लेते हैं ॥

बहुरि बिचारि परस्पर कहहीं ❀ रघुबर भक्तभक्तिवस अहहीं
सुधि करि अंबरीष दुर्वासा ❀ भे सुर सुरपति निपट निरासा

फिर आपसमें विचार कर कहते हैं कि प्रभु भक्त जनों की भक्तिके अधीन हैं ॥ परन्तु जब अम्बरीष और दुर्वासाका स्मरण हुआ तब देवता और इन्द्र बिल्कुल ही निराश हो गये ॥

सहे सुरन्ह बहु काल विषादा ❀ नरहरि किए प्रगट प्रहलादा
लगिलगि कान कहहिं धुनिमाथा ❀ अब सुरकाज भरतके हाथा

देखो हिरण्यकशिपुसे देवताओंने कितने काल तक दुःख पाया। अन्तमें नृसिंह भगवान्‌ने भक्त प्रहलादको प्रकट किया। देवता कानोंमें लगके कहते हैं कि अब तो देवकार्य भरतके ही हाथ में है ॥

आन उपाय न देखिय देवा ❀ मानत राम सुसेवकसेवा
हिय सप्रेम सुमिरहु सब भरतहिं ❀ निजगुन सील रामबसकरतहिं

हे देवताओं दूसरा एक भी उपाय नहीं दीखता श्रीरामचन्द्रजी अपने सेवक की सेवा को ही मानते हैं सो अब तो प्रेमपूर्वक भरतकी प्रार्थना करो कि जिन्होंने रामको अपने अधीन कर लिया है ॥

दोहा—सुनि सुरमत सुर गुरु कहेउ, भल तुम्हार बड़भाग।
सकल सुमंगलमूल जग, भरतचरण अनुराग ॥२५६॥

तब देवताओंकी सलाह को सुनकर बृहस्पतिजीने कहा कि हे देवताओं! तुम बड़े भाग्यशाली हो। क्योंकि जगत्‌के सब सुमङ्गलके मूल भरतके चरणोंमें तुम्हारी पूर्ण प्रीति हुई है ॥ २५६ ॥

सीतापति सेवक सेवकाई ❀ कामधेनु सम सरिस सुहाई
भरतभक्ति तुम्हरे मन आई ❀ तजहु सोच विधि बात बनाई

हे देवताओं! श्रीरामचन्द्रजी के सेवक की सेवा भी सैकड़ों कामधेनुके समान है। तुम्हारे मनमें भरतकी भक्ति आ गई है तो अब तुम सोच क्यों करते हो ? विधाता बात बना देगा ॥

देखि देवपति भरतप्रभाऊ ❀ सहज स्वभावविवस रघुराऊ
मन थिर करहु देव डर नाहीं ❀ भरतहिं जानि रामपरछाहीं

हे इन्द्र ! तुम भरत का प्रभाव देखकर मत डरो, श्रीरामचन्द्रजी उनके सहज स्वभावके अधीन हैं। देवों ! तुम अपने मनको स्थिर करो भय नहीं है। भरत को तुम प्रभु का प्रतिबिम्ब ही जानो ॥

सुनि सुरगुरु सुर संमत सोचू ❀ अंतरयामी प्रभुहिं सँकोचू
निजसिर भार भरत जिय जाना ❀ करत कोटि बिधि उर अनुमाना

तब बृहस्पति और देवताओंकी ऐसी चिन्ता और सम्मतिको सुनकर प्रभुके मनमें संकोच है। भरतने सब भार अपने शिर समझ कर मनमें करोड़ों प्रकारसे अनुमान किया ॥

करि विचार मन दीन्हेउ टीका ❀ राम रजायसु आपन नीका
निजप्रण तजि राखेउ प्रण मोरा ❀ छोह सनेह कीन्ह नहिं थोरा

विचार करके मनमें यह निश्चय कर लिया कि प्रभु की आज्ञामें ही अपना भला है। प्रभुने अपना प्रण त्याग कर मेरा प्रण रखा है सो यह कृपा-स्नेह कुछ कम नहीं किये हैं ॥

दोहा—कीन्ह अनुग्रह अमित अति, सबविधि सीतानाथ ।
करि प्रणाम बोले भरत, जोरि जलजयुग हाथ ॥२५७॥

श्रीरामचन्द्रजीने सब प्रकारसे मुझपर अमित अनुग्रह किया है। इसलिए दोनों हस्त कमल जोड़ प्रणाम करके भरतजीने कहा ॥ २५७ ॥

कहउँ कहावउँ का अब स्वामी ❀ कृपाअंबुनिधि अंतरयामी
गुरु प्रसन्न साहिब अनुकूला ❀ मिटा मलिन मनकल्पित शूला

हे कृपासिन्धु ! मैं क्या कहूँ और क्या कहलाऊँ ? आप सबके घट-घट को जानते हो। गुरुजी मुझ पर प्रसन्न हैं और स्वामी अनुकूल हैं इससे मेरे मनको सब मलिन कल्पना और शूल मिट गए हैं ॥

अपडर डरेउँ न सोच समूला ❀ रबिहिं न दोष देव दिसि भूला
मोर अभाग्य मातुकुटिलाई ❀ बिधिगति विषम कालकठिनाई

मैं व्यर्थ ही डरता हूँ मेरी चिन्तायें सर्वथा ही नष्ट हो गई हैं दिशा भूलकर सूर्यको दोष नहीं देना चाहिये। सो यह मेरा अभाग्य, माता की कुटिलता की विषम गति और काल की कठिनता ही है ॥

पाँव रोपिसबमिलिमोहिं घाला ❀ प्रनतपाल प्रन आपन पाला
यह नइ रीति न राउरि होई ❀ लोकहुँ वेद विदित नहिं गोई

इन सबोंनें पैर पकड़ मुझे घायल किया है तथापि हे प्रणतपाल ! आपने अपना प्रण पूरा करके मुझे पाला है। यह आपकी रीति नवीन नहीं है, लोक और वेद सबमें प्रसिद्ध है, छिपी नहीं है ॥

जग अनभल भल एक गुसाँई ❀ कहिय होइ भल कासु भलाई
देव देवतरुसरिस स्वभाऊ ❀ सनमुख विमुख न काहुहि काऊ

हे प्रभु ! सब जगत् बुरा है, भले तो एक आप ही हैं सो अब किस प्रकार सबका भला होवे यह आप ही कहिये हे देव ! आप का स्वभाव कल्पवृक्षहीके समान है कभी किसीके सन्मुख और बिमुख नहीं हैं

दोहा—जाइ निकट पहिचानि तरु, छाँह समन सब सोच।
माँगत अभिमत पाव फल, राउ रंक भल पोच ॥२५८॥

जैसे कल्प वृक्ष की छाया में जाने से सब सोच शान्त हो जाते हैं। मन वांछित फल मिलता वैसे ही जो आपकी शरण में आता है उसे अपने मनवांछित फल अवश्य मिल जाते हैं ॥ २५८ ॥

लखि सबबिधि गुरुस्वामिसनेहू ❁ मिटेउ छोभ नहिं कछु संदेहू
अब करुनाकर कीजिय सोई ❁ जनहित प्रभुचित छोभ न होई

गुरु वसिष्ठजी और आप स्वामी का स्नेह देख कर, मन का क्षोभ मिट गया और संदेह जाता रहा। भरत ने कहा हे प्रभु ! आप अब वही उपाय कीजिये कि जिससे भक्त जनों का भला होवे ॥

जो सेवक साहिबहिं सँकोची ❁ निजहित चहै तासु मति पोची
सेवकहित साहिब सेवकाई ❁ करै सकल सुख लोभ बिहाई

जो सेवक स्वामी से संकोच करा कर अपना भला चाहता है उसकी बुद्धि अत्यन्त नीच है सेवक का भला इसी में है कि वह अपने सब सुखके लोभ को त्याग कर निष्कपट भाव से स्वामी की सेवा करे ॥

स्वारथ नाथ फिरे सबहीका ❁ किये रजाइ कोटिविधि नीका
यह स्वारथ परमारथ सारू ❁ सकल सुकृतफल सुगति सिंगारू

हे नाथ ! आप के लौटने में ही सबका भला है और आपकी आज्ञा मानने में करोड़ों अच्छाइयां हैं ॥ हे तात ! यही स्वार्थ और परमार्थ का सार है और यही समस्त सुकृत का फल व सुगति-शृङ्गार है ॥

देव एक विनती सुनि मोरी ❁ उचित होइ तस करब बहोरी
तिलक समाज साज अस आना ❁ करिय सुफलप्रभु जो मनमाना

हे देव ! मेरी एक प्रार्थना और सुनिये, फिर विचार कर जैसा उचित हो वैसा कीजिये। हम सब राज्याभिषेक की सामग्री सजा कर लाये हैं सो जिस प्रकार आपका मन माने उसे सफल कीजिये ॥

दोहा—सानुज पठइय मोहिं बन, कीजिय सबहिं सनाथ।
नातरु फेरिय बंधु दोउ, नाथ चलौं मैं साथ ॥२५९॥

हे नाथ ! या तो शत्रुघ्नके साथ मुझको बनमें भेजकर सनाथ करिये। नहीं तो शत्रुघ्न और लक्ष्मण को अयोध्यामें भेज दीजिये और हे नाथ ! मैं आपके साथ बनमें चलूं ॥२५६॥

नतरु जाहिं बन तीनिउँ भाई ❁ बहुरिय सीयसहित रघुराई
जेहि विधि प्रभु प्रसन्न मन होई ❁ करुनासागर कीजिय सोई

नहीं तो हम तीनों भाई बनमें जायें और आप सीताजीके साथ अयोध्या को लौटिये। जिस तरह आपका मन प्रसन्न हो, हे दयाके समुद्र ! वैसा ही कीजिये ॥

देव दीन्ह सब मोपर भारू ❁ मोरे नीति न धर्मविचारू
कहौं बचन सब स्वारथ हेतू ❁ रहत न आरतके चित चेतू

हे देव ! आपने तो सब भार मेरे ही शिर पर दे दिया है मुझे नीति और धर्म का लेश भी विचार नहीं है, मैं जो कुछ कहता हूँ अपने स्वार्थवश कहता हूँ, आर्तके चित्तमें ज्ञान नहीं रहता ॥

उत्तर देइ सुनि स्वामिरजाई ❀ सो सेवक लखि लाज लजाई
अस मैं अवगनउदधि अगाधू ❀ स्वामि सनेह सराहत साधू

जो स्वामी की आज्ञा सुन कर उत्तर देता है उस सेवक को लज्जा भी लजा जाती है। ऐसा मैं अवगुणों का समुद्र हूँ, और स्वामी मेरी साधुता और स्नेही की प्रशंसा ही करते हैं ॥

अब कृपालु मोहिं सो मत भावा ❀ सकुच स्वामि मन जाइ न पावा
प्रभुपदसपथ कहौं सतभाऊ ❀ जगमंगलहित एक उपाऊ

अब हमको वही मत अच्छा लगता है कि जिससे स्वामी किसी प्रकार मनमें संकोच न पावें। मुझे आपकी शपथ है, मैं सत्य कहता हूँ, कि जगत्के मंगलके लिए केवल एक यही उपाय है ॥

दोहा--प्रभु प्रसन्न मन सकुच तजि, जो जेहि आयसु देव।
सो सिर धरि धरि करिहिं सब, मिटिहिंअनटअवरेब॥२६०॥

आप प्रसन्न चित्त हो, जिसे जो आज्ञा दें वह उसी को शिर पर चढ़ा कर करेगा। हे प्रभो! इसी से सब क्लेश मिट जायेगा ॥२६०॥

भरत बचन सुचि सुनि सुर हर्षे ❀ साधु सराहि समन बहु वर्षे
असमंजसबस अवधनिवासी ❀ प्रमुदित मन तापस बनबासी

भरत के ऐसे पवित्र वचन सुन देवता साधुवाद दे प्रसन्न हो फूल बरसाने लगे। अयोध्यावासी दुविधा में पड़ गये तथा, तपस्वी और बनवासी मनमें बड़े प्रसन्न हुए ॥

चुप रहिगे रघुनाथ सकोची ❀ प्रभुगति देखि सभा सब सोची
जनकदूत तेहि अवसर आये ❀ मुनि वसिष्ठ सुनि बेगि बुलाये

किन्तु श्रीरामजी संकोचके मारे चुप रह गये, तब मन की गति देख, सभाके लोग चिन्तित हो गये। उसी समय राजा जनकके दूत आये तो वसिष्ठ मुनिने तुरन्त ही उन्हें बुला लिया ॥

करि प्रनाम तिन्ह राम निहारे ❀ वेष देखि भये निपट दुखारे
दूतहिं मुनिवर पूछी बाता ❀ कहहु विदेह भूप कुसलाता

उन्होंने प्रणाम कर रामजी का दर्शन किया, तो वेष देख अत्यन्त दुःखित हुए। तब वसिष्ठजीने दूतोंसे यह पूछा कि राजा जनक की कुशल कहो ॥

सुनि सकुचाइ नाइ महि माथा ❀ बोले चरवर जोरे हाथा
बूझब राउर सादर साँई ❀ कुसलहेतु सो भयउ गुसाँई

तब वे दूत सकुचा कर धरती की ओर शिर झुका, हाथ जोड़कर बोले कि हे नाथ! आपका कुशल पूछना उचित है, पर कुशलका कारण तो समाप्त हो चुका है ॥

दोहा--नाहिं त कोसलनाथ के, साथ कुसल गइ नाथ।
मिथिला अवध विसेषते, जग सब भयउ अनाथ॥२६१॥

नहीं तो हे नाथ! कुशल तो कोशल नरेशके साथ चली गयी। सारा जगत् अनाथ हो गया और अयोध्यासे मिथिला तो और भी अधिक अनाथ हो गयी है ॥ २६१ ॥

कोसलपतिगति सुनि जनकौरा ❀ भे सब लोग सोकबस बौरा
जेहि देखा तेहि समय विदेहू ❀ नाम सत्य अस लाग न केहू

कोशलपतिकी यह दशा सुनकर, जनकजी और उनके साथके लोग शोकवश बावले हो गये। उस समय जिन्होंने राजा विदेहको देखा उन लोगोंको उनका विदेह नाम सत्य न लगा ।।

रानिकुचालि सुनत महिपालहिं ❀ सूझ न कछुजसमनिबिनु व्यालहिं
भरतराज रघुबर बनबासू ❀ भा मिथिलेसहिं हृदय हरासू

रानी कैकेयीकी कुचाल सुनते ही राजा ऐसे विकल हो गये जैसे मणि बिना साँपकी दशा होती हैं, भरतको राज्य और श्रीरामचन्द्रजी को बनवास, यह सुन राजा जनक के मन में बड़ा क्लेश हुआ ।।

नृप बूझे बुध सचिव समाजू ❀ कहहु विचारि उचित का आजू
समुझि अवध असमंजस दोऊ ❀ चलिय कि रहिय न कह कछु कोऊ

राजाने अपने मन्त्रियोंको बुलाकर पूछा कि कहो आज क्या करना उचित है ? राजाके वचन सुन दोनों और असमंजस समझ कोई चलने या रहने के लिये न कह सका ।। ६ ।।

नृपति धीर धरि हृदय बिचारी ❀ पठये अवध चतुर चर चारी
बूझि भरत गति भाउ कुभाऊ ❀ आयहु बेगि न होइ लखाऊ

तब राजा जनकने धीरज धर विचार करके चार दूतोंको भेजा और कहा, कि तुम भरत के भावका निश्चय करके शीघ्र आना; परन्तु लखाई न पड़ना ।।८।।

दोहा—गये अवध चर भरतगति, बूझि देखि करतूति ।
चले चित्रकूटहिं भरत, चार चले तिरहूति ।।२६२।।

तब वे दूत अयोध्या गये और भरतका व्यवहार देखे; जब भरतजी चित्रकूटको चले तो वे दूत तिरहुतको चले आये ।।२६२।।

दूतन आइ भरतकी करनी ❀ जनकसमाज यथामति बरनी
सुनि गुरु पुरजन सचिव महीपति ❀ भे सब सोच सनेह बिकलमति

तो फिर दूतों ने आकर जैसा समाचार तथा भरत की सब करनी थी जनकराज से कही। उसे सुनकर राजा सोचकर स्नेहके कारण अत्यन्त विकल हो गये ।।२।।

धरि धीरज करि भरत बड़ाई ❀ लिये सुभट साहनी बुलाई
घर पुर देस राखि रखवारे ❀ हय गज रथ बहुयान सँवारे

तब राजाने मनमें धीरज धर भरतकी बड़ाईकर अपने सेनापतियोंको बुलाया और घर तथा नगरकी रक्षाके लिए रखवारे रख अनेक प्रकारकी सवारियाँ सजवाकर ।।४।।

दुघरी साधि चले ततकाला ❀ किय विश्राम न मगु महिपाला
भोरहिं आजु नहाइ प्रयागा ❀ चले यमुन उतरन सब लागा

तत्काल ही दुघड़िया मुहूर्त साधकर पयानकर चल दिए और मार्ग में कहीं भी विश्राम नहीं किये। आज प्रातःकाल प्रयागमें नहाए और सबलोग यमुनाजीके पार उतर गये ।।६।।

खबरि लेन हम पठयउ नाथा ❀ अस कहि तिन्ह महि नायउ माथा
साथ किरात छ सातक दीन्हे ❀ मुनिवर तुरत बिदा चर कीन्हे

हे नाथ ! हमें आपकी खबर लेनेको भेजा; ऐसा कहकर उन्होंने पृथ्वीकी ओर सिर झुका लिया। तब गुरुवसिष्ठजीने उनके साथ छः-सात किरातोंको दे उन दूतोंको तुरन्त बिदाकर दिया।

दोहा—सुनत जनक आगमन सब, हरषेउ अवधससाज ।
रघुनंदनहिं सकोच बड़, सोचबिबस सुरराज ॥२६३॥

राजा जनक का आगमन सुन अयोध्याके सबलोग अति आनन्दित हुए और प्रभुको बड़ा संकोच हुआ तथा इन्द्र शोचके वश हो गये ॥२६३॥

गरइ गलानि कुटिल कैकेयी ❀ काहि कहै केहि दूषन देई
अस मन आनि मुदित नरनारी ❀ भयउ बहोरि रहब दिनचारी

किन्तु कुटिल कैकेयी ग्लानिके मारे गलने लगी क्या कहे और किसे दोष दे ॥१॥ जिससे नगर के स्त्री-पुरुष मनमें बहुत आनदित हुए, कि अब तो चार दिन हमारा रहना अवश्य होगा॥२॥

इहि प्रकार गत बासर सोऊ ❀ प्रात अन्हान लगे सब कोऊ
करि मज्जन पूजहिं नरनारी ❀ गनपति गौरि पुरारि तमारी

इसी प्रकार से वह दिन भी व्यतीत हुआ, दूसरे दिन प्रातः होते ही सब लोग स्नान करने लगे ॥३॥ इस प्रकार स्नानकर गणेश, गौरी, महादेव और सूर्यको पूजने लगे ॥४॥

रमारमनपद बंदि बहोरी ❀ बिनवहिं अंचल अंजलि जोरी
राजा राम जानकी रानी ❀ आनँदअवधि अवधरजधानी

और विष्णु भगवान् की वन्दना कर हाथ जोड़ अंचल फैलाकर यही विनती करते हैं कि रामजी राजा और सीताजी रानी बनें और अयोध्या फिर आनन्दित राजधानी होवे ॥६॥

सुबस बसै फिर सहित समाजा ❀ भरतहिं राम करैं युवराजा
यहि सुखसुधा सींचि सबकाहू ❀ देव देहु जग जीवनलाहू

फिर सबलोग समाजके साथ नगरमें बसें और भरतको युवराजपद मिले ॥७॥ हे देव ! इस सुखरूप अमृतसे सींचकर हम सबको जगत्में जीने का लाभ दीजिये ॥८॥

दोहा—गुरुसमाज भाइन्ह सहित, रामराज पुर होउ ।
अछत राम राजा अवध, मरिय माँग सब कोउ ॥२६४॥

गुरु समाज और भाइयोंके साथ श्रीरामजी अयोध्यापुरीके राजा होवें और राजा रामके अवधमें विराजमान रहते हम सबका मरण होवे यही प्रार्थना करते हैं ॥२६४॥

सुनि सनेहमय पुरजनबानी ❀ निंदहिं जोग बिरति मुनि ज्ञानी
यहि बिधि नित्य कर्मकरि पुरजनु ❀ रामहिं करहिं प्रनाम पुलकि तनु

पुरवासियोंकी ऐसी स्नेहमयी वाणी सुनकर ज्ञानी मुनि लोग योग और वैराग्य की निन्दा करने लगे, इस प्रकार नित्यकर्मकर प्रभुको प्रणाम करते हुए उनके अंग फूले नहीं समाते ॥

ऊँच नीच मध्यम नर नारी ❀ लहहिं दरस निज निज अनुहारी
सावधान सबही सनमानहिं ❀ सकल सराहत कृपानिधानहिं

ऊँच-नीच पहले दर्जेके पुरुष-स्त्री अपनी-अपनी रुचिके अनुसार दर्शन पाते हैं। सावधानी से प्रभु उनका शिष्टाचार करते हैं। सब लोग हर्षित हो प्रभु की प्रशंसा करते हैं ॥

लरिकाईं ते रघुबरबानी ❀ पालत नीति रीति पहिचानी
सील–सँकोच–सिन्धु–रघुराऊ ❀ सुमुख सुलोचन सरल स्वभाऊ

प्रभु बाल्यकालसे ही नीति को पहचान कर अपनी वाणीसे नीति का पालन करते हैं, श्रीरामचन्द्रजी शील और संकोचके सागर हैं। इनका मुख-नैन सुन्दर तथा स्वभाव सरल है॥

कहत राम–गुन-गन अनुरागे ❀ सब निजभाग्य सराहन लागे
हम सब पुन्यपुंज जग थोरे ❀ जिनहिं राम जानत करि भोरे

श्रीरामजी का गुणानुवाद करते हुए सब अपने-अपने भाग्य को सराहते और कहते हैं कि हमारे जैसे पुण्यपुंज जगत्‌में थोड़े ही हैं कि जिनको श्रीरामजी अपना कर जानते हैं ॥

दोहा– प्रेममगन तेहि समय सब, सुनि आवत मिथिलेस।
सहित सभा संभ्रम उठेउ, रबिकुल कमल दिनेस ॥२६५॥

उस समय राजा जनकके आने का समाचार सुन सब लोग प्रेम-मग्न हुए और श्रीरामचन्द्रजी सभाके साथ अपने आसनसे बड़े संभ्रमके साथ उठ खड़े हुए ॥२६५॥

भाइ सचिव गुरु पुरजन साथा ❀ आगे गमन कीन्ह रघुनाथा
गिरिवर देखि जनक नृप जबहीं ❀ करि प्रनाम रथ त्यागा तबहीं

और भाई, मन्त्री, गुरु और पुरवासियोंके साथ अगवानी करने चले इधर ज्योंही राजा ने गिरिवर चित्रकूट को देखा त्योंही उसे प्रणाम कर रथ को त्याग दिये ॥२॥

राम–दरस–लालसा उछाहू ❀ पथश्रमलेस कलेस न काहू
मन तहँ जहँ रघुबर बैदेही ❀ बिनु मन तनु दुख सुख सुधि केही

उन सबके मनमें श्रीराम दर्शन की लालसा लगी थी जिससे किसीको क्लेशका स्पर्श भी नहीं हुआ ॥३॥ क्योंकि उनका मन तो वहीं था कि जहाँ आनन्दकन्द श्रीसीतारामजी थे ॥४॥

आवत जनक चले यहि भाँती ❀ सहित सनेह प्रेममदमाती
आए निकट देखि अनुरागे ❀ सादर मिलन परस्पर लागे

इस प्रकार सस्नेह प्रेम मदमस्त राजा जनक चले आते थे ॥५॥ जब जनकजी समीप आ गये तब प्रेम का समुद्र उमड़ पड़ा और सब आदरपूर्वक आपस में मिलने लगे ॥

लगे जनक मुनिगनपद बंदन ❀ ऋषिन्ह प्रनाम कीन्ह रघुनंदन
भाइन सहित राम मिलि राजहिं ❀ चले लिवाइ समेत समाजहिं

उधर जनकजीने मुनिवृन्दके चरणों में प्रणाम किया और इधर श्रीरामजीने ऋषियोंको प्रणामकर भाइयोंके साथ राजासे मिल समाज सहित अपने आश्रममें लिवाके चले ॥

दोहा-आश्रम सागर सांतरस, पूरन पावन पाथ।
सेन मनहुँ करुनासरित, लिये जात रघुनाथ ॥२६६॥

वह आश्रम समुद्रके समान शांत रससे भरा है जिसमें प्रभु सेना रूपी करुणा की नदी को ऐसे लिए जाते हैं जैसे भगीरथ गंगाजी को समुद्र में ले गये ॥२६६॥

बोरत ज्ञान बिराग करारे ❀ बचन ससोक मिलत नद नारे
सोच उसाँस समीरतरंगा ❀ धीरज तट तरुवर कर भंगा

जो ज्ञान और वैराग्यरूपी करारोंको बहाती चली जाती है, जिसमें शोक सहित वचन ही मानो नदी और नारे रूप में आ मिले हैं और शोक ही वायु है ॥ २ ॥

विषम विषाद तुरावति धारा ❀ भय भ्रम भँवरावर्त अपारा
केवट बुध विद्या बड़ि नावा ❀ सकहिं न खेइ एक नहिं आवा

जो विकट विषाद है वही मानो वह वेगवाली धारा है कि जो इतराती हुई चली जाती है और वशिष्ठ आदि केवट उनकी बुद्धि बड़ी नौका है पर प्रभु क्या करेंगे इससे उन्हें खेना नहीं आताहै॥

बनचर कोल किरात बिचारे ❀ थके बिलोकि पथिक हिय हारे
आश्रम उदधि मिली जब जाई ❀ मनहुँ उठेउ अंबुधि अकुलाई

तब विचारे बनचर, कोल्ह और किरात तथा पथिक लोग हृदयमें हार मानकर थकित रह गये हैं। ऐसी जलभरी नदी समुद्रमें जाकर मिलती है तब मानो समुद्र क्षोभित हो जाता है ॥

सोकबिकल दोउ राज समाजा ❀ रहा न ज्ञान न धीरज लाजा
भूप रूप गुन सील सराही ❀ सोचहिं सोकसिंधु अवगाही

दोनों राजाओं का समाज शोकसे अत्यन्त विकल हो रहा है किसी को धीरज और ज्ञान की सुधि नहीं। राजा जनक राजा दशरथके गुण, शील और स्वरूपकी सराहना कर सोचते हैं॥

छंद-अवगाहि सोकसमुद्र सोचहिं नारि नर व्याकुल महा।
दै दोष सकल सरोष बोलहिं बामबिधि कीन्हों कहा॥
सुर सिद्ध तापस जोगिजन मुनिदसा देखि बिदेहकी।
तुलसी न समरथ कोउ जो तजि सकै सरित सनेहकी ॥११॥

सब नर-नारी सोच करते हुए अत्यन्त विह्वल हैं और सब विधाता को दोष देकर क्रोध सहित कहते हैं कि उसने यह क्या किया, तुलसीदासजी कहते हैं, कि जितने देवता, सिद्ध, तपस्वी, योगी और मुक्तजन हैं वे सब विदेह को विह्वल देखकर, ऐसे शिथिल हो गये हैं कि उनमेंसे कोई भी यह सामर्थ्य नहीं रखता, कि जो उस स्नेह रूपी नदी को पार करे॥

सोरठा-किये अमित उपदेस, जहँ तहँ लोगन्ह मुनिवरन।
धीरज धरिय नरेस, कहेउ वसिष्ठ बिदेहसन ॥११॥

यद्यपि मुनि लोगोंने बहुत उपदेश दिया, परन्तु कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा, तब राजा जनकसे वशिष्ठजी ने कहा कि आप धैर्य धारण करें॥११॥

जासु ज्ञानरवि भवनिसि नासा ❀ बचनकिरन मन कमलविकासा
ते कि मोह ममता नियराई ❀ यह सियराम सनेह बड़ाई

जिसके जाननेसे संसार लय हो जाता है और जिसके वचनोंसे मनरूपीकमल सदा प्रसन्न रहता। क्या उसके समीप मोह और ममता व्याप सकती है यह श्रीसीतारामजीके स्नेह की बड़ाई है॥

विषयी साधक सिद्ध सयाने ❀ त्रिविध जीव जग वेद बखाने
रामसनेह सरस मन जासू ❀ साधुसभा बड़ आदर तासू

वेदमें जो विषयी, साधक और सिद्ध तीन प्रकारके जीव वर्णित हैं, उनमें भी जीवन्मुक्त सर्वोपरि हैं तो भी उसी का आदर है कि जिससे मनमें प्रीतिपूर्वक प्रभु का स्नेह है॥

सोह न राम-प्रेम बिनु ज्ञाना ❀ कर्णधार बिनु जिमि जलयाना
मुनि बहु विधि विदेह समुझाये ❀ रामघाट सबलोग अन्हाये

प्रभुके प्रेम बिना ज्ञान वैसे ही शोभा नहीं देता जैसे केवटके बिना नाव शोभा नही देती। मुनिने राजा जनक को अनेक प्रकारसे समझाया तब वे सब रामघाट पर स्नान किये॥

सकल सोक संकुल नर नारी ❀ सो बासर बीतेउ बिनु बारी
पसु खग मृगन्ह न कीन्ह अहारा ❀ प्रिय परिजन कर कवन विचारा

सब स्त्री-पुरुष शोकसे व्याकुल थे, उस दिन किसीने जल नहीं पिया, पशु-पक्षी और चौपायोंने भी कुछ आहार नहीं किया। फिर प्रिय बन्धु और परिजनों की तो बात ही क्या है?

दोहा—दोउ समाज मिलि राजरघु, राज नहाने प्रात।
बैठे सब बटविपटतर, मन मलीन कृसगात॥२६७॥

दोनों ओर का समाज जनक व श्रीरामचन्द्रजी साथ ही प्रातःकाल जाकर स्नान करके एक बटके पेड़के नीचे जा बैठे। उस समय सबके मन मलीन और तन क्षीण हो रहे थे॥२६७॥

जे महिसुर दसरथपुरवासी ❀ जे मिथिलापतिनगरनिवासी
हंसबंसगुरु जनकपुरोधा ❀ जिन जग मग परमारथ सोधा

वहाँ जो अयोध्याके और जो मिथिलापुरीके ब्राह्मण थे वे सब, सूर्यवंशके गुरु वसिष्ठकी और जनकके पुरोहित शतानन्द की जिन्होंने जगत्‌में परमार्थ का मार्ग शोध लिया था॥

लगे कहन उपदेस अनेका ❀ सहित धर्म नय विरति विवेका
कौसिक कहि-कहि कथा पुरानी ❀ समुझाये सब सभा सुहानी

वे सब धर्म, न्याय, वैराग्य और विवेकके साथ अनेक प्रकार के उपदेश करने लगे। विश्वामित्रजी ने पुरानी अनेक कथायें कहकर सभाको अपनी मधुर वाणीसे समझाया॥

तब रघुनाथ कौसिकहिं कहेऊ ❀ नाथ कालि बिनु जल सब रहेऊ
मुनि कह उचित कहत रघुराई ❀ गयउ बीति दिन पहर अढ़ाई

तब श्रीरामचन्द्रजीने विश्वामित्रसे कहा कि हे नाथ! कल सब लोग जल भी नहीं पीये थे। विश्वामित्रजीने कहा हे रामजी! तुम उचित ही कह रहे हो॥

ऋषिरुखलखि कहतिरहुतिराजू ❀ इहाँ उचित नहिं असन अनाजू
कहा भूप भल सबहिं सुहाना ❀ पाइ रजायसु चले नहाना

तब विश्वामित्रका रुख देखकर राजा जनकने कहा कि यहाँ अन्न तो खाना नहीं है। फल मूलसे ही निर्वाह कर लेंगे। सब लोगों ने कहा, राजा यह बात बहुत ही अच्छी कहते हैं ॥

दोहा--तेहि अवसर फल फूल दल, मूल अनेक प्रकार।
लइ आये बनचर विपुल, भरि-भरि-काँवरि भार ॥२६८॥

उसी समय बनमें निवास करनेवाले बहँगियोंमें अनेक प्रकारके बड़े-बड़े फल, फूल तथा मूल ले आये ॥२६८॥

कामद भे गिरि रामप्रसादा ❀ अवलोकत अपहरत विषादा
सर सरिता बन भूमि विभागा ❀ जनु उमगत आनँद अनुरागा

श्रीरामजी की कृपासे वह पर्वत मनवांछित कामना पूर्ण करने वाला हो गया जिसे देखते ही मनका विषाद मिट गया। सारा प्रदेश मानों आनन्द और अनुरागसे उमँगने लगा ॥

बेलि विटप सब सफल सफूला ❀ बोलत खग मृग अति अनुकूला
तेहि अवसर बन अधिक उछाहू ❀ त्रिविध समीर सुखद सब काहू

लता-वृक्ष फूल और फलोंसे लद गये, उन पर मनोहर पक्षी अनुकूल मधुर वाणी बोल रहे थे। उस समय बनमें बड़ा उत्साह होने लगा और तीनों प्रकार का सुखकर वायु बहने लगा ॥

जाइ न बरनि मनोहरताई ❀ जनु महि करति जनकपहुनाई
तब सब लोग नहाइ नहाई ❀ राम जनक मुनि आयसु पाई

वह सौन्दर्य कहनेमें नहीं आता, मानो पृथ्वी ही जनक राजा की पहुनाई करने लगी ॥ तब सब लोग स्नानकर श्रीरामचन्द्रजी, जनक और मुनि वसिष्ठजी की आज्ञा पाकर ॥

देखि देखि तरुवर अनुरागे ❀ जहँ तहँ पुरजन उतरन लागे
दल फल मूल कंद विधि नाना ❀ पावन सुन्दर सुधा समाना

सुन्दर वृक्षोंको देखकर सब लोग प्रसन्न होकर जहाँ-तहाँ उतरने लगे। तब अनेक प्रकार के कन्द, मूल, फल और दल की जो देखने में सुन्दर और खाने में अमृतकी भाँति मीठे थे ॥

दोहा--सादर सब कहँ रामगुरु, पठये भरि-भरि भार।
पूजि पितरसुर गुरु अतिथि, लगे करन फलहार ॥२६९॥

उन्हें भारके भार काँवर में भरकर वसिष्ठजीने सबके यहाँ आदरके साथ भेजा। तब सब लोग देवता, अतिथि और गुरुकी पूजाकर फलाहार करने लगे ॥२६९॥

यहि विधि बासर बीते चारी ❀ राम निरखि नर नारि सुखारी
दुहुँ समाज अस रुचि मन माहीं ❀ बिनु सियराम फिरब भल नाहीं

इस प्रकार चार दिन बीते। रामजीको देखकर सब नर-नारी अति सुखी हुए। दोनों ओरके समाज की मानो यही इच्छा है कि सीता-रामके बिना लौटना अच्छा नहीं है ॥

सीता राम संग बनबासू ❀ कोटि अमरपुर सरिस सुपासू
परिहरि लषन राम वैदेही ❀ जेहि घर भाव बाम विधि तेही

श्रीसीतारामकें साथ बन सौ करोड़ों स्वर्गके समान सुखकारी है। श्रीराम, लक्ष्मण और सीता को जो त्यागे, समझो कि उससे विधाता ही प्रतिकूल है ॥

दाहिन दैव होइ जब सबहीं ❀ राम समीप बसिय बन तबहीं
मन्दाकिनि मज्जन तिहुँ काला ❀ रामदरस मुदमंगलमाला

जब सबको विधाता अनुकूल हो तो बनमें श्रीरामके पास रहना हो। इससे उत्तम क्या है कि तीनों काल मन्दाकिनीका स्नान और मंगलके पुंज श्रीरामजी का दर्शन ॥

अटन राम गिरि बन तापस थल ❀ असन अमिय सम कंदमूल फल
सुख समेत संबत दुइ साता ❀ पलसम होहिं न जानिय जाता

चित्रकूटके वनके भीतर तपस्वियोंके साथ वास करना और अमृतके समान कन्द-मूल फल खाते हुए चौदह वर्ष सुखसे बीत जायेंगे और एक क्षणके समान भी न मालूम होगा ॥

दोहा—यहि सुखयोग न लोग सब, कहहिं कहाँ अस भाग।
सहजसुभाव समाज दुहुँ, रामचरनअनुराग ॥२७०॥

सब लोग कहते हैं कि, इस सुखके योग्य हमारे ऐसे भाग्य कहाँ कि, ऐसा सुख मिले। दोनों समाज श्रीरामजीके चरणोंमें स्नेह व प्रेम से अत्यन्त मग्न हैं ॥२७०॥

इहिविधि सकल मनोरथ करहीं ❀ बचन सप्रेम सुनत मन हरहीं
सीयमातु तेहि समय पठाई ❀ दासी देखि सुअवसर आई

सब लोग इसी प्रकारसे मनमें मनोरथ करते हैं, जिनके प्रेम भरे वचनोंसे मन हरण हो जाता है। सीताजी की माताने एक दासी भेजा सो अच्छा अवसर देखकर वहाँ आई और बोली ॥

सावकास सुनि सब सियसासू ❀ आयउ जनकराजरनिवासू
कौशिल्या सादर सनमानी ❀ आसन दीन्ह समय सम जानी

कि अच्छा अवसर है, तब वह समाचार सुनकर जनक रानी कौशिल्याजीके पास आई। कौशिल्याजी ने उनका बड़े आदरके साथ सम्मान किया और समय सदृश आसन दिया।

शील सनेह सरस दुहुँ ओरा ❀ द्रवहिं देखि सुनि कुलिस कठोरा
पुलकसिथिलतनुबारिबिलोचन ❀ महि नख लिखन लगीं सब सोचन

तब दोनों ओरके शील स्नेहसे कठोर बज्र भी द्रवीभूत हो रहा था, अङ्ग शिथिल हो रहे थे, नेत्रोंमें जल भर गया, नखोंसे पृथ्वीको लिखती हैं, सभा दुःखित होकर शोक करती है।

सब सियराम प्रेमकी मूरति ❀ जनु करुना बहु वेष बिसूरति
सीयमातु कह विधिबुधि बाँकी ❀ जिमि पयफेनु फोरि पबिटाँकी

सभी सीता और श्रीरामके प्रेम की मूर्तिरूप दीख पड़ती हैं तब सीताजी की माताने कहा कि विधाताकी बुद्धि कैसी टेढ़ी है कि कोमल दूधके फेन को बज्रकी टाँकीसे फोड़ना चाहता है॥

दोहा—सुनिय सुधा देखिय गरल, सब करतूति कराल ।
जहँ तहँ काक उलूक बक, मानस सुकृत मराल ॥२७१॥

सुननेमें अमृत और देखनेमें विष ऐसी सब करनी बड़ी कठोर है । जगत् में काक, उल्लू और बगुले तो सर्वत्र हैं पर हंस तो मानसरोवर में ही रहते हैं ॥२७१॥

सुनिसकोच कह देवि सुमित्रा ❀ विधिगति अतिविपरीत विचित्रा
जो सृजि पालै हरै बहोरी ❀ बाल केलिसम विधिमति भोरी

सुमित्राने कहा कि हे देवि ! विधाता की गति बड़ी विपरीत और विचित्र है कि जो बालकोंके समान उसको रचता है, फिर पालता है और अन्त में संहार कर देता है ॥

कौशिल्या कह दोष न काहू ❀ करम बिबस दुख सुख क्षतिलाहू
कठिन कर्म गति जान विधाता ❀ जो सुभ असुभ करमफल दाता

कर्मों की इस गति को विधाता ही जाने क्योंकि सुख-दुःख हानि और लाभ ये सब उसी के अधीन हैं ॥

ईस रजाइ सीस सबहीके ❀ उतपति थिति लय विषहु अमीके
देवि मोहवस सोचिय वादी ❀ विधि प्रपंच अस अचल अनादी

ईश्वर की आज्ञा सबके सिर पर है, क्योंकि, विष और अमृत सब उसीने उत्पन्न किये हैं। इसलिए हे देवि ! तुम वृथा शोच मत करो, विधाता का प्रपंच अनादि कालसे ऐसा ही अविचल है ॥

भूपति जियन मरन उर आनी ❀ सोचियसखिलखिनिजहितहानी
सीय मातु कह सत्य सुबानी ❀ सुकृती अवधि अवधपति रानी

राजाके जीने और मरने का शोच तो अपने लाभ व हानि को लखकर है। सीताजी की माता ने कहा कि रानीजी ! क्यों न हो, आपका कहना सत्य ही है क्योंकि आप महाराज दशरथ की पटरानी हैं ।

दोहा—लषन राम सिय जाहिं बन, भल परिनाम न पोच ।
गहवरि हिय कह कौशिला, मोहिं भरतकर शोच ॥२७२॥

तब कौशिल्याजी बोलीं कि, राम लक्ष्मण और सीताके वनमें जानेसे अच्छा होगा, इसका फल कोई बुरा नहीं होगा, किन्तु मुझे भरत की ओर से बड़ी चिन्ता है ॥२७२॥

ईसप्रसाद असीस तुम्हारी ❀ सुत सुत-बधू देवसरि बारी
रामसपथ मैं कीन्ह न काऊ ❀ सो करि सखी कहौं सतिभाऊ

फिर परमेश्वरकी कृपा और तुम्हारे आशीर्वादसे मेरे पुत्र और बहुयें गंगा जलके समान निर्मल हैं। मैंने राम की शपथ कभी नहीं की है, सो आज वह भी करके सत्य भावसे कहती हूँ ॥

भरतसील गुनविनय बड़ाई ❀ भायप भक्ति भरोस भलाई
कहत सारदहु कै मति होचे ❀ सागर सीप कि जाहिं उलीचे

भरतके शील, गुण, नम्रता, बड़प्पन, भायप, भक्ति, भरोसा और भलाईको कहते हुए सरस्वतीजी की भी मति हिचकती है तो और की बात ही क्या है, कहीं समुद्र भी सीपसे उलीचा जाता है ॥

जानौ सदा भरत कुलदीपा ❁ बारबार मोहिं कहेउ महीपा
कसे कनक मनि पारिष पाये ❁ पुरुष परखिये समय सुभाये

महाराजने भी मुझसे कईबार कहा था कि भरत कुलके दीप हैं, मैंने भी परीक्षाकर ली है। जैसे सोना कसौटी पर कसनेसे परखा जाता है ऐसे ही मनुष्य भी अवसर पड़ने से जाना जाता है॥

अनुचित आजु कहब अस मोरा ❁ शोक सनेह सयानप थोरा
सुनि सुरसरि सम पावन बानी ❁ भई सनेहबिकल सब रानी

यद्यपि मेरा आज ऐसा कहना ठीक नहीं है, क्योकि इससे मेरा स्नेहसे सयानप और शोक कम हो जाता है। इस प्रकार की पवित्र वाणी सुनकर सब रानियाँ स्नेहसे विकल हो गईं॥

दोहा—कौशिल्या कह धीर धरि, सुनहु देवि मिथिलेशि।
को विवेक निधि बल्लभहिं, तुमहिं सकै उपदेशि॥२७३॥

कौशिल्याने सुनयनासे कहा कि हे रानी! धीरज धरो और जो मैं कहती हूँ सो सुनो, हे रानी! तुम ज्ञानके भण्डार जनकराज की रानी हो सो तुम्हें उपदेश देनेवाला कौन है॥२७३॥

रानि रायसन अवसर पाई ❁ आपनि भाँति कहब समुझाई
राखिय लषन भरत गवनहिं बन ❁ जो यह मत मानइ महीपमन

हे रानी! तुम अवसर पाकर अपनी ओरसे राजा को समझाकर कहना कि लक्ष्मण तो यहाँ रह जायें अर्थात् अयोध्या को लौट जायें और भरत रामके सङ्ग बन में चले जायें॥

तो भल जतन करब सुविचारी ❁ मोरे सोच भरतकर भारी
गूढ़ सनेह भरत मनमाहीं ❁ रहे नीक मोहिं लागत नाहीं

हे रानीजी! तुम विचार करना क्योंकि मुझे तो भरत का ही बड़ा सोच है। हे रानी! भरत के मनमें रामचन्द्रके विषय में अत्यन्त प्रेम है, रहनेमें मुझे अच्छा नहीं लगता है॥

लखिस्वभावसुनिसरलसुबानी ❁ सब भई मगन करुनरस सानी
नभ प्रसून झरि धन्य धन्य धुनि ❁ शिथिल सनेह सिद्ध जोगी मुनि

कौशिल्या का स्वभाव देख और उनकी सुन्दर वाणी सुनकर सब रानियां करुणरस में मग्न हो गईं। आकाश से फूलों की वृष्टि होने लगी और मुनिजन स्नेहसे शिथिल हो गये॥

सब रनिवास थकित लखि रहेऊ ❁ तब धरि धीर सुमित्रा कहेऊ
देवि दंडयुग यामिनि बीती ❁ राममातु सुनि उठी सप्रीती

सब रनिवास आश्चर्यसे चकित हो देखता रह गया तब सुमित्राने कौशिल्यासे कहा कि देवि! चार घड़ी रात्रि बीत गई है, यह सुनकर कौशिल्या सप्रेम वहाँ से उठीं॥

दोहा—बेगि पाँय धारिय थलहिं, कह सनेह सतिभाय।
हमरे तो अब ईशगति, कै मिथिलेश सहाय॥२७४॥

और बोलीं कि अब आप लोग भी अपने डेरे में जाइये। मैं सत्य भावसे कहती हूँ कि अब या तो हमें परमेश्वर की ही शरण है, या राजा जनक की॥२७४॥

लखि सनेह सुनि बचन बिनीता ॐ जनकप्रिया गहि पाँव पुनीता
देवि उचित अस बिनय तुम्हारी ॐ दशरथघरनि राममहतारी

कौशिल्या का विनीत वचन सुनकर सुनयना बोलीं कि हे देवि ! तुम्हारा ऐसा विनय योग्य ही है । तुम महाराज दशरथजी की रानी और श्रीरामचन्द्रजी की माता हो ।।

प्रभु अपने नीचहुँ आदरहीं ॐ अग्निधूम गिरि शिर तृन धरहीं
सेवक राम कर्म मन बानी ॐ सदा सहाय महेश भवानी

प्रभु अपनेसे नीचे को भी आदर देते हैं, जैसे अग्निदेव धुवें को, पहाड़ तृण को शिर पर धारण करते हैं और आपके सहायक तो सदा शिव-पार्वती ही हैं ।।

रौरे अंग योग जग कोहै ॐ दीप सहाय कि दिनकर सोहै
राम जाहिं बन करि सुरकाजू ॐ अचल अवधपुर करिहहिं राजू

हे रानी ! तुम्हारे अंगके समान जगत् में कौन है ? क्या सूर्य दीपक की सहायतासे शोभा पाता है । श्रीरामचन्द्रजी बनमें जायँ, देवताओं का कार्य करके फिर अयोध्यामें अखण्ड राज्य करेंगे ।।

अमर नाग नर रामबाहुबल ॐ सुख बसिहहिं अपने अपने थल
यह सब यागवल्क्य कहि राखा ॐ देवि न होय मृषा मुनि भाषा

श्रीरामजीके बलसे देवता, नाग और मनुष्य ये सब अपने-अपने स्थलमें सुखपूर्वक रहेंगे। यह सब कथा याज्ञवल्क्य मुनिने मुझसे कह रक्खा है, मुनि का कहा झूठा नहीं होगा ।।

दोहा--अस कहि पद परि प्रेम अति, सिय हित बिनय सुनाइ ।
सिय समेत सिय मातु तब, चली सुआयसु पाय ।।२७५।।

ऐसे कह अतिशय प्रेमसे कौशिल्याके चरण धर सीताके निमित्त विनय सुनाकर सुनयना सीता को संग लें आज्ञा पाय वहाँसे चलीं और अपने डेरे पर आईं ।।२७५।।

प्रिय परिजनहिं मिली बैदेही ॐ जो जेहि जोग भाँति तस तेही
तापस वेष जानकिहिं देखी ॐ भे सब बिकल विषाद विशेखी

सीता अपने सब प्रिय परिवार से मिलीं जो जिस योग्य था ।।१।। जब जनकपुरके लोगों ने सीता को तपस्विनी वेषमें देखा तो वे सब महा घोर विषाद कर विकल हो गये ।।२।।

जनक राम गुरु आयसु पाई ॐ चले थलहिं सिय देखी आई
लीन्ह लाइ उर जनक जानकी ॐ पाहुनि पावनि प्रेम प्रान की

इधर राजा जनक, गुरु वसिष्ठजी और श्रीरामचन्द्रजी की आज्ञा पाय अपने डेरेमें जाकर सीता को देखे । तो उन्हें प्रेम और प्राणों की प्रिय पाहुनी जानकर छाती से लगा लिये ।।

उर उमँगेउ अम्बुधि अनुरागू ॐ भयउ भूप मन मनहुँ प्रयागू
सियसनेह बट बाढ़त जोहा ॐ तापर राम प्रेम शिशु सोहा

तब उनके हृदय के भीतर प्रेमरूपी सागर उमँड़ पड़ा, मन मानो प्रयागराज बन गया ! सीता का भी स्नेह बढ़ने लगा और श्रीरामचन्द्रजी का प्रेम बालक रूपसे शोभा देने लगा ।।

चिरंजीवि मुनिज्ञान बिकलजनु ❁ बूड़त लहेउ बाल अवलंबनु
मोह मगन मति नहिं विदेहकी ❁ महिमा सियरघुबरसनेहकी

वहाँ मारकण्डेय मुनिने डूबते राम प्रेम बालक रूप भगवान्‌का अवलम्बन लिया। राजा जनककी बुद्धि मोहमें मग्न सीतारामके स्नेहसे विकल हो गई ॥

दोहा--सिय पितुमातु सनेहवस, विकल न सकीं सँभारि ।
धरनिसुता धीरज धरेउ, समय सुधर्म विचारि ॥२७६॥

यद्यपि सीताजी माता-पिताके स्नेहवश विकल हो अपनेको सँभाल न सकीं किन्तु सीता जीने स्वधर्म और समयको विचारकर धीरज धारण किया ॥२७६॥

तापसवेष जनक सिय देखी ❁ भयउ प्रेमपरितोष विसेषी
पुत्रि पवित्र किए कुल दोऊ ❁ सुजश धवल जग कह सब कोऊ

सीताको तपस्विनी वेशमें देख राजा जनकके मनमें भारी प्रेम और परितोष पैदा हुआ और बोले कि हे पुत्री ! तू ने पिता और ससुर दोनों कुलोंको परम पवित्र किया ॥ २ ॥

जिमि सुरसरिकीरति सरितोरी ❁ गवन कीन्ह विधिअंड करोरी
गंग अवनि थल तीनि बड़ेरे ❁ यहि किये साधुसमाज घनेरे

हे पुत्री ! जैसे गंगाजी हैं वैसे ही तुम्हारी भी कीर्ति है, परन्तु गंगाजी के तो पृथ्वी पर तीन ही स्थल बड़े हैं और तुम्हारी कीर्तिने तो समाजके साधु पुरुषोंमें भी निवास किया है॥४॥

पितु कह सत्य सनेह सुबानी ❁ सीय सकुच महँ मनहुँ समानी
पुनि पितु मातु लीन्ह उर लाई ❁ सिख अशीष हित दीन्ह सुहाई

पिता ज्यों-ज्यों स्नेह भरी सत्य सुन्दर वाणी कहते हैं त्यों-त्यों सीताजी संकुचित होती हैं। फिर सीताको छातीसे लगाकर माताने हितकारी शिक्षा देकर आशीष दी ॥६॥

कहति न सीय सकुच मनमाहीं ❁ इहाँ बसब रजनी भल नाहीं
लखि रुख रानि जनायउ राऊ ❁ हृदय सराहत शील स्वभाऊ

यद्यपि सीताजी संकोचके मारे कुछ कहती नही हैं तथापि मनमें यह चाहती हैं कि रातको यहां रहना ठीक नहीं। सीताका रुख देख उनकी प्रशंसाकर सुनयनाने यह बात राजाको सूचितकर दी ॥

दोहा--बार बार मिलि भेंटि सिय, बिदा कीन्ह सनमानि ।
कही समय सम भरत गति, रानि सुबानि सयानि ॥२७७॥

तब राजा-रानी ने सीता को बारम्बार भेंट कर वहाँसे विदा कर दिया। फिर चतुर रानीने समयसे सब बातें राजासे ऐसे कह दीं कि कौशिल्याका कहना न जान पड़े ॥२७७॥

सुनि भूपाल भरतव्यवहारू ❁ सोन सुगंध सुधा शशिसारू
मूँदेउ सजलनयन पुलके तन ❁ सुयश सराहन लगे मुदित मन

सोनेमें सुगन्ध और अमृत व चन्द्रमाका-सा भरतका व्यवहार सुनकर आंखोंमें आंसू भर आये, शरीरमें पुलकावली छा गई, फिर प्रसन्न मनसे भरतकी सराहना करने लगे ॥

सावधान सुनु सुमुखि सुलोचनि ❁ भरतकथा भवबंधविमोचनि
धरमराजनय ब्रह्म बिचारू ❁ यहाँ जथामति मोर प्रचारू

राजा जनकने कहा—हे सुमुखि ! हे सुलोचनि ! तू एकाग्रचित होकर सुन, भरतकी कथा मोक्षप्रद है। मेरी बुद्धि तो धर्म, शास्त्र, राजनीति और ब्रह्म-विचारके प्रचारमें ही है ।।

सो मति मोरि भरत महिमाहीं ❁ कहौं काह छल छुअति न छाहीं
विधिगनपतिअहिपतिशिवशारद❁ कवि कोविद बुध बुधि विशारद

अतः मेरी बुद्धि भरतकी महिमाकी छायाको छू भी नहीं पाती है ब्रह्मा, गणपति, शेष, शारदा, महादेव और बड़े विशाल बुद्धिमान् लोग भी उनके विषयमें कुछ कह नहीं सकते ।।

भरतचरित कीरति करतूती ❁ धर्म शील गुन विमल विभूती
समुझत सुनत सुखद सबकाहू ❁सुनि सुरसरि रुचि निदरि सुधाहू

हे प्रिये ! भरतका चरित्र, कीर्ति, करनी, धर्मशीलता, निर्मलता और ऐश्वर्य समझने व सुनने से सुख देनेवाला और गंगाके समान अमृत का भी तिरस्कार करने वाला है ।।

दोहा—निरबधिगुन निरुपम पुरुष, भरत भरत सम जानि ।
कहहिं सुमेरु कि शेरसम, कविकुलमति सकुचानि ।।२७८।।

भरतके गुण असंख्य हैं, भरतकी उपमामें कोई नहीं है, जगत्‌में भरतके समान भरत ही हैं अतएव ऋषियों की बुद्धि भरतकी उपमा देते सकुचाती है ।।२७८।।

अगम सबहिं बरनत बर बरनी ❁ जिमि जलहीन मीनगन धरनी
भरत अमित महिमा सुनु रानी ❁ जानहिं राम न सकहिं बखानी

हे वरवर्णिनी ! जैसे जल बिना मछली जी नहीं सकती ऐसे ही भरतकी करनी सबके लिए वर्णनातीत है, उनकी महिमाको श्रीरामचन्द्रजी ही जान सकते हैं पर कह नहीं सकते ।।

बरनि सप्रेम भरत अनुभाऊ ❁तिय जियकी रुचि लखि कह राऊ
बहुरहिं लषन भरत बन जाहीं ❁ सबकर भल सबके मनमाहीं

भरतके प्रेम भावका वर्णनकर राजा जनकने फिर रानीसे कहा कि हे रानी ! यदि लक्ष्मण अयोध्याको लौटें और भरत बनको जायँ तो इनमें सबका भला है और सबके मनमें भी यही है।।

देवि परंतु भरत रघुबरकी ❁ प्रीति प्रतीति जाइ नहिं तरकी
भरत सनेह अवधि ममताके ❁ यद्यपि राम सीव समताके

परन्तु हे देवि ! भरत और श्रीरामचन्द्रजीके परस्पर प्रीति की प्रतीति अतर्क्य है और श्रीरामचन्द्रजी समताकी मर्यादा हैं किसी में भेदभाव नहीं है तथापि भरतका स्नेह ममताकी अवधि है ।।

परमारथ स्वारथ सुखसारे ❁ भरत न सपनेहुँ मनहुँ निहारे
साधक सिद्ध रामपद नेहू ❁ मोहिं लखिपरत भरतमत येहू

लोक-परलोक में जितने भी सुख हैं, राम की आज्ञा के आगे भरत जी कभी स्वप्न में भी नहीं देखे, उनमें केवल राम के चरणों के प्रेम का सिद्धान्त ही दीख पड़ता है ।।

दोहा—भोरेहुँ भरत न पेलिहहिं, मनसहुँ रामरजाइ।
करिय न सोच सनेहबश, कहेउ भूप बिलखाइ ॥२७९॥

राजा जनक बिलख बदन हो रानी से कहते हैं कि हे भद्रे ! भरतजी रामकी आज्ञाको स्वप्न में भी भूलकर न टालेंगे, इसलिए स्नेहवश होकर शोच न करो ॥ २७९ ॥

राम भरतगुन कहत सप्रीती ❀ निसि दम्पतिहिं पलक सम बीती
राजसमाज प्रात युग जागे ❀ न्हाइ न्हाइ सुर पूजन लागे

इस प्रकार राम और भरतके गुण कहते-कहते रानीकी सारी रात पलककी भाँति बीत गई। प्रातःकाल दोनों ओरसे राजसमाज जगे और नहाकर देवताओंको पूजने लगे ॥

गे नहाइ गुरुपहँ रघुराई ❀ वंदि चरन बोले रुख पाई
नाथ भरत पुरजन महतारी ❀ शोक विकल बनवास दुखारी

फिर रामजी स्नान कर गुरुके निकट गये और उनका रुख पाकर बोले कि, हे नाथ ! भरत, नगरके लोग और मातायें ये सब सोचसे विकल और बनवासके कारण महादुःखी हैं ॥

सहित समाज राउ मिथिलेसू ❀ बहुत दिवस भे सहत कलेसू
उचित होय सो कीजिय नाथा ❀ हित सबही कर रौरे हाथा

और राजा जनक को भी समाजके साथ कष्ट सहते बहुत दिन हो गये हैं। इसलिए हे महाराज ! अब जैसा उचित हो वैसा कीजिये, क्योंकि सबलोगोंका भला आपके हाथ में है ॥

अह कहि अति सकुचे रघुराऊ ❀ मुनि पुलके लखि सील सुभाऊ
तुम बिनु राम सकल सुख साजा ❀ नरक सरिस दुहुँ राज समाजा

ऐसे कहकर प्रभु बहुत सकुचे, तब मुनि प्रभु का शील और स्वभाव देख, पुलकित गात हुए और बोले कि हे राम ! तुम्हारे बिना सुख और दोनों राज समाज नरके समान लगते हैं ॥

दोहा—प्रान प्रान के जीव के, जिय सुख के सुख राम।
तुम तजि तात सोहात गृह, जिन्हहिं तिन्हहिंविधिबाम॥२८०॥

क्योंकि हे राम ! तुम प्राणके प्राण जीवके जीव और सुखके स्वरूप हो ! हे तात, जिनको तुम्हारे बिना घर अच्छा लगता हो उनसे विधाताको प्रतिकूल समझना चाहिये ॥ २८० ॥

सो सुख कर्म धर्म जरि जाऊ ❀ जहँ न राम-पद पंकज भाऊ
योग कुयोग ज्ञान अज्ञानू ❀ जहाँ न राम प्रेम परधानू

वह सुख, कर्म और धर्म जल जाये कि जहाँ श्रीरामचन्द्रजीके चरण-कमलोंमें प्रीति नहीं है, वह योग कुयोग तथा ज्ञान अज्ञान है कि जहाँ प्रभु के चरणों में असाधारण प्रीति नहीं है ॥

तुम बिनु दुखी सुखी तुम तेही ❀ तुम जानहु जिय जो जेहि केही
राउर आयसु सिर सबहीके ❀ विदित कृपालहिं गति सब नीके

हे राम ! तुम्हारे बिना जो दुःखी हैं वे ही आपसे सुखी हैं। हे राम ! जिनके मनमें जो कुछ है वह सब आप जानते हैं। हे तात ! तुम्हारी आज्ञा सबको स्वीकार है ॥

आप आश्रमहिं धारिय पाऊ ❁ भये सनेह सिथिल मुनिराऊ
करि प्रनाम तब राम सिधाये ❁ ऋषि धरि धीर जनक पहँ आये

हे राम ! अब आश्रमको जाओ, ऐसे ही कह मुनिराज वशिष्ठजी स्नेहसे शिथिल हो गये। रामजी मुनिको प्रणामकर आश्रम गये और वसिष्ठजी जनकजीके पास आये ॥

रामबचन गुरु नृपहिं सुनाये ❁ सील सनेह सुभाव सुहाये
महाराज अब कीजिय सोई ❁ सबकर धरम सहित हित होई

मुनिने राजा जनकको श्रीरामचन्द्रजीके वचन कह सुनाये और उनका शील, स्वभाव भी कह सुनाया और कहा कि अब वही करना चाहिए कि जिससे सबका धर्म सहित भला हो ॥

दोहा—ज्ञान निधान सुजान सुचि, धरम धीर नरपाल ।
तुम बिनु असमंजस समन, को समर्थ इहि काल ॥२८१॥

हे नरपाल ! तुम ज्ञानके निधान परम सुजान, शुद्ध स्वरूप और धर्ममें अग्रगी हो, इस दुबिधाको मिटाओगे तो मिट जायेगी नहीं तो समर्थ कोई नहीं है ॥२८१॥

सुनि मुनिबचन राउ अनुरागे ❁ लखि मति ज्ञान बिराग बिरागे
सिथिल सनेह गुनत मनमाहीं ❁ आये इहाँ कीन्ह भल नाहीं

मुनि के बचन सुन राजा जनक बहुत प्रसन्न हुए और उनका ज्ञान वैराग्य जाता रहा। राजा स्नेहसे शिथिल हो मनमें विचार करने लगे कि यहाँ आकर मैंने ठीक नहीं किया ॥

रामहिं राउ कहेउ बन जाना ❁ कीन्ह आपु प्रिय प्रेम प्रमाना
हम अब बनते बनहिं पठाई ❁ प्रमुदित फिरब बिबेक बढ़ाई

राजाने रामको बन जानेको कह तो दिया परन्तु अपने प्रिय प्रेमको प्रमाण करके भी दिखा दिया और हम अब यदि रामको बनसे बनमें ही भेजकर पीछे लौटें तो इसमें अपयश होगा ॥

तापस मुनि महिसुर गति देखी ❁ भये प्रेम बस बिकल बिशेखी
समय समुझि धरि धीरज राजा ❁ चले भरतपहँ सहित समाजा

राजा जनकजीकी यह दशा देख तपस्वी, मुनि और ब्राह्मण प्रेमके वश व्याकुल हो गये। समय समझ मनमें धैर्य रख वहाँ से सीधे समाज के साथ भरत के पास आये ॥

भरत आय आगे ह्वै लीन्हा ❁ अवसरसरिस सुआसन दीन्हा
तात भरत कह तिरहुतिराऊ ❁ तुमहिं बिदित रघुबीर सुभाऊ

भरतने अगवानी किया और समयके अनुसार सुन्दर आसनपर बिठाया। तब राजा जनकने भरतसे कहा कि हे तात भरत ! तुम रामचन्द्रजी के स्वभावको भलीभांति जानते हो ॥

दोहा—राम सत्यब्रत धर्मरत, सबकर शील सनेहु ।
संकट सहत सनेहबस, चहिय सो आयसु देहु ॥२८२॥

हे तात ! श्रीरामचन्द्रजी सत्यसन्ध और धर्मपरायण हैं, अतएव सबके शील व स्नेह के कारण वे कष्ट सहते हैं इससे जो आज्ञा हो सो किया जाय ॥२८२॥

सुनि तनु पुलकि नयन भरि बारी ❁ बोले भरत धीर धरि भारी
प्रभु प्रिय पूज्य पिता सम आपू ❁ कुलगुरुसमहित माय न बापू

राजा जनकके वचन सुन भरतजी नेत्रोंमें जलभरकर कहे—हे तात! आप हमारे प्रिय पूज्य पिताके समान हैं, गुरुजी भी विराजमान हैं जिनके समान मेरा हितैषी कोई नहीं है ।।२।।

कौशिकादि मुनि सहित समाजू ❁ ज्ञान अंबुनिधि आपुन आजू
शिशु सेवक आयसु अनुगामी ❁ जानि मोंहि सिख देइय स्वामी

फिर विश्वामित्र आदि महामुनि समाज के साथ विराजमान हैं, तब आजके दिन आप मुझसे क्या पूछते हैं, मुझे तो अपना सेवक जानकर आज्ञा ही दीजिये ।।४।।

यह समाज थल बूझब राउर ❁ मन मलीन मैं बोलब बाउर
छोटे बदन कहौं बड़ि बाता ❁ छमब तात लखि बाम बिधाता

क्योंकि इस बीचमें जो कुछ बोलूंगा वह खराब ही बोलूंगा क्योंकि मैं इस समाज में मलिन हूँ। हे तात! छोटे मुँहसे जो बड़ी बात कहता हूँ उसे क्षमा कीजियेगा ।।६।।

आगम निगम प्रसिद्ध पुराना ❁ सेवाधर्म कठिन जग जाना
स्वामिधरम स्वारथहिं विरोधू ❁ बधिर अन्ध प्रेमहिं न प्रबोधू

वेद, शास्त्र व पुराणोंमें भी प्रसिद्ध है कि सेवकका धर्म कठिन है, स्वामीके धर्ममें और स्वार्थमें बड़ा विरोध हैं, जैसे बहिरे और अन्धेका प्रेम बिना ज्ञानके विरोध रखता है ।।८।।

दोहा—राखि राम रुख धरमब्रत, पराधीन मोंहिं जानि।
सबके संमत सर्वहित, करिय प्रेम पहिचानि ।।२८३।।

हे महाराज! अब धर्मव्रती श्रीरामचन्द्रजीके रुखको जान और मुझे उनका दास समझ प्रेमको पहचानकर आप सर्वहितकारी आज्ञा देवें ।।२८३।।

भरत बचन सुनि देखि सुभाऊ ❁ सहित समाज सराहत राऊ
सुगम अगम मृदु मंजु कठोरे ❁ अर्थ अमित अति आखर थोरे

भरतकी बातें सुन उनका स्वभाव देख राजाजनक अपने समाज के सहित प्रशंसा करने लगे कि बात कैसी सुगम सुन्दर और अगम्य है, शब्द थोड़े हैं और अर्थ बहुत अधिक हैं ।।२।।

ज्यों मुख मुकुर मुकुर निजपानी ❁ गहि न जाय अस अद्भुत बानी
भूप भरत मुनि साधु समाजू ❁ गे जहँ विबुधकुमुद द्विजराजू

जैसे अपने हाथमें लिये दर्पणमें मुंह दीखता है परन्तु पकड़ा नहीं जाता। ऐसे ही भरत की अद्भुत वाणी है, इतने में जनक जी और भरत जी मुनियों को साथ लेकर वहाँ गये कि जहाँ देवतारूपी कुमुद वनके चन्द्रमा रामजी बैठे हुए थे ।।४।।

सुनि सुधि सोचविकल सब लोगा ❁ मनहुँ मीनगन नवजल जोगा
देव प्रथम कुलगुरुगति देखी ❁ निरखि बिदेह सनेह बिशेखी

बिदा होनेकी खबर सुन, सब लोग सोचसे बिकल हो गये जैसे मछलियोंको नये जलका संयोग बन गया हो। देवताओंने वसिष्ठजी और राजा जनकके विशेष प्रेमको देखा ।।६।।

रामभक्तिमय भरत निहारे ❀ सुरस्वारथी हहरि हिय हारे
सब कहँ राम प्रेममय पेखा ❀ भये अलेख सोचबश लेखा

तथा भरतको राम-भक्तिमय देख अपने स्वार्थके कारण हाय-हायकर हृदयमें हार मान ली। तब सबको रामजीके प्रेममें मग्न देख देवता शोचवश हुए कि, जो लिखते नहीं बनता।

दोहा–राम सनेह सकोचबश, कह सकोच सुरराज।
रचहु प्रपंचहिं पंचमिलि, नाहिंत भयउ अकाज ॥२८४॥

तब इन्द्रने चिन्ता सहित अपने पञ्चोंसे कहा कि श्रीरामचन्द्रजी स्नेह और संकोचके वश हो गये हैं सो आप लोग मिलकर कुछ प्रपंच रचें, नहीं तो अकाज हो जाएगा ॥ २८४ ॥

सुरन्ह सुमिरि शारदा सराही ❀ देवि देव शरनागत पाही
फेरि भरतमति करि निज माया ❀ पाल बिबुधकुल करि छल छाया

तब देवताओंने प्रशंसाकर सरस्वती का स्मरण किया कि हे देवि! हमें शरण दो और अपनी माया फैलाकर भरतकी बुद्धिको पलट दो और छल करके देवकुलका पालन करो ॥

बिबुध बिनय सुनि देवि सयानी ❀ बोली सुरस्वारथ जड़ जानी
मोसन कहहु भरतमति फेरू ❀ लोचन सहस न सूझ सुमेरू

चतुर देवी देवताओंकी विनती सुन और देवताओंको स्वार्थमें जान इन्द्रसे बोली कि, तुम मुझसे यह कहते हो कि भरतकी बुद्धिको फेरो सो तुम्हारे नेत्र तो हजारों हैं पर सुमेरु भी नहीं दीखता ॥४॥

बिधि हरि हर माया बड़ि भारी ❀ सो न भरतमति सकै निहारी
सो मति मोहिं कहत करु भोरी ❀ चाँदनि करुकि चन्द्रकर चोरी

तुम जानते हो कि ब्रह्मा, विष्णु, महेशकी माया अति प्रबल है सो वह तो भरतकी बुद्धि की ओर देख हो नहीं सकते; फिर मैं क्या हूँ? क्या चाँदनी चन्द्रमाकी चोरी कर सकती है?॥

भरत हृदय सियराम निवासू ❀ तहँ कि तिमिर जहँ तरनिप्रकासू
अस कहि शारद गइ बिधिलोका ❀ बिबुध बिकल निशि मानहुँ कोका

भरतके हृदयमें सीताराम बसते हैं ऐसा कहकर शारदा ब्रह्मलोक को चली गई तब देवगण ऐसे व्याकुल हो गये कि, जैसे रात को चक्रवाक की दशा हो जाती है ॥८॥

दोहा–सुर स्वारथी मलीन मन, कीन्ह कुमन्त्र कुठाट।
रचि प्रपंच माया प्रबल, भय भ्रम अरति उचाट ॥२८५॥

स्वार्थी और मलिन चित्त देवताओंने कई प्रकारके कुत्सित सहालकर कष्टका ठाठ ठाटा और प्रबल छल-बल रचकर भय और भ्रमका अत्यन्त उच्चाटन मन्त्र सिद्ध किया ॥२८५॥

करि कुचाल सोचत सुरराजू ❀ भरत हाथ सब काज अकाजू
गये जनक रघुनाथ समीपा ❀ सनमाने तब रघुकुलदीपा

ऐसे कुचाल करके इन्द्र अपने मनमें सोचने लगे कि, अब तो अपना काज और अकाज सब भरतके हाथ है, इतन में जनकजी प्रभुके पास पहुँचे तो प्रभुने उनका सम्मान किया ॥२॥

समय समाज धर्म अविरोधा ❁ बोले तब रघुवंशपुरोधा
जनक भरतसंवाद सुनाई ❁ भरत कहाउति कही सुहाई

तब उस कालको सोच समाज व धर्ममें विरोध न आवे ऐसे वचन वसिष्ठजीने कहा और जनक तथा भरतका सारा सम्वाद प्रभुको सुनाया। भरतजीकी कही हुई सुन्दर बातें सब कह सुनाई ॥

तात राम जस आयसु देहू ❁ सो सब करै मोर मत एहू
सुनि रघुनाथ जोरि जुग पानी ❁ बोले सत्य सरल मृदु बानी

हे तात ! हे राम ! ये सब लोग वैसा ही करेंगे कि जैसी आप आज्ञा देवेंगे; गुरुके वचन सुन, हाथ जोड़ प्रभु सत्य, सरल व कोमल वाणीसे बोले कि, ॥६॥

विद्यमान आपुन मिथिलेशू ❁ मोर कहा सब भाँति भदेशू
राउर राय रजायसु जोई ❁ राउरि शपथ करौं शिर सोई

अब आप और राजा जनकके विद्यमान रहते मेरा कहना शोभा नहीं देगा। आपकी शपथ खाकर कहता हूँ कि आपकी और जनकजीकी जो आज्ञा होगी वह मुझे शिरोधार्य है ॥८॥

दोहा–राम सपथ सुनि मुनि जनक, सकुचे सभासमेत।
सकल बिलोकहिं भरतमुख, बनै न उत्तर देत ॥२८६॥

श्रीरामजीके ऐसे शपथको सुनकर बशिष्ठजी और राजा जनक सभाके साथ संकुचित हो गये। तब सबलोग भरतके मुखकी ओर देखने लगे और कुछ उत्तर देते नहीं बना ॥२८६॥

सभा सकुचबश भरत निहारी ❁ रामबंधु धरि धीरज भारी
कुसमय देखि सनेह सँभारा ❁ बढ़त विंध्य जिमि घटज निवारा

तब सब सभाको संकुचित देख भरतने धैर्य धारण किया और समय विचारकर स्नेहको ऐसे ही रोका कि जैसे अगस्त्य मुनिने बढ़ते हुए विन्ध्याचल पर्वत को रोक दिया था ॥

शोक कनकलोचन मति छोनी ❁ हरी विमल गुनगन जगजोनी
भरत विवेक बराह बिशाला ❁ अनायास उघरे तेहि काला

फिर तो जैसे पृथ्वीके उद्धारके हेतु बाराह-अवतार हुआ था, वैसे ही सब की बुद्धि के उद्धार हेतु भरतजी का विवेकरूपी विशाल बाराह अनायास ही प्रकट हुआ ॥४॥

करि प्रनाम सब कहँ कर जोरी ❁ राम राउ गुरु साधु निहोरी
छमब आजु अति अनुचित मोरा ❁ कहउँ बदन मृदु बचन कठोरा

हाथ जोड़ सबको प्रणामकर सबकी ओर देखकर बोले। कोमल मुखसे जो कठोर वचन कहता हूँ, बहुत अयोग्य है, परन्तु यह आज के लिये आप लोग क्षमा करेंगे ॥६॥

हृदय सुमिरि शारदा सुहाई ❁ मानसते मुखपंकज आई
विमल विवेक धर्म नय शाली ❁ भरत भारती मंजु मराली

जब भरतने हृदयसे सरस्वतीका स्मरण किया तो वह मनका स्थान छोड़ मुख पर आ बैठी तो भरतको वह सुन्दर सरस्वती परम पवित्र ज्ञान और धर्ममय सुन्दर हंसिनी की भाँति लगी ॥

दोहा—निरखि विवेक विलोचनन्हि, शिथिल सनेह समाज।
करि प्रनाम बोले भरत, सुमिरि सीय रघुराज ॥२८७॥

तब ज्ञान-दृष्टिसे सब समाजको स्नेहसे शिथिल देख, प्रणाम करते हुए सीता और रामजी का स्मरण कर भरतजी बोले कि—॥२८७॥

प्रभु पितु मातु सुहृद गुरु स्वामी ❀ पूज्य परम हित अंतरयामी
सरल सुसाहिब शीलनिधानू ❀ प्रनतपाल सर्वज्ञ सुजानू

हे प्रभु ! मेरे तो माता, पिता, सुहृद्, गुरु, स्वामी, पूज्य और परम हितकारी जो कुछ कहूँ सब आपही हैं सो आप जानते भी हैं क्योंकि आप अन्तर्यामी हैं और आपका सरल स्वभाव है ॥

समरथ शरनागत हितकारी ❀ गुनग्राहक अवगुन अघ हारी
स्वामि गुसाँईहिं सरिश गुसाँई ❀ मुहिं समान मैं स्वामि दुहाई

आप समर्थ और शरण आये हुए का हित करने वाले हैं। आपके समान आपही हैं, परन्तु मैं भी आपकी दुहाई देकर कहता हूँ कि स्वामिद्रोहियोंमें मैं अपने समान एक ही हूँ ॥

प्रभु पितुबचन मोहबश पेली ❀ आयउँ इहाँ समाज सकेली
जग भल पोच ऊँच अरु नीचू ❀ अमिय अमरपद माहुर मीचू

अन्यथा मैं आपके और पिताके वचनोंका मोह टालकर यहाँ समाज बटोरकर न आता। अच्छा-बुरा, ऊँचा-नीचा, अमृत-विष और जन्म-मृत्यु सब संसार में विद्यमान है ॥६॥

रामरजाय मेटि मनमाहीं ❀ देखा सुना कतहुँ कोउ नाहीं
सो मैं सबविधि कीन्ह ढिठाई ❀ प्रभु मानी सनेह सेवकाई

सो रामजी की आज्ञा को मनसे टालने वाला मैंने कहीं नहीं देखा है और न सुना है। मैंने सब प्रकारसे ढिठाई की है किन्तु प्रभुने उसे भी अपनी सेवा ही मान ली है ॥८॥

दोहा—कृपा भलाई आपनी, नाथ कीन्ह भल मोर।
दूषन भे भूषन सरिस, सुजश चारु चहुँ ओर ॥२८८॥

सो हे नाथ ! आपने अपनी कृपा भलाई से मेरा सब प्रकार भला ही किया है कि मेरे दूषण भी भूषण हो गये, चारों दिशाओंमें मेरा सुन्दर सुयश फैल गया ॥२८८॥

राउरि नीति सुबानि बड़ाई ❀ जगतबिदित निगमागम गाई
कूर कुटिल खल कुमति कलंकी ❀ नीच निशील निरीश निशंकी

आपकी रीति सुन्दर वाणी तथा बड़ाई सारे संसार पर प्रकट है, वेद-शास्त्रोंने भी गान किया है कि जो क्रूर, कुबुद्धि, खल, कुमति, कलङ्की, नीच, शीलहीन और निर्भय हैं ॥

तेउ सुनि चरन सामुहें आये ❀ सुकृत प्रनाम किये अपनाये
देखि दोष कबहुँन उर आने ❀ सुनि गुनि साधु समाज बखाने

उसे भी आपने सम्मुख होते सुना तो उसे भी प्रणाम करते देख तत्काल ही अपना लिया। उसके दोषको देखकर भी मनमें कभी नहीं लाए और गुन सुनकर साधु-समाज में बखान किये ॥

को साहिब सेवकहिं निवाजी ❁ आपु समान साज सब साजी
निज करतूति न समुझिय सपने ❁ सेवक सकुच शोच उर अपने

ऐसा स्वामी दूसरा कौन है ? जो अपने ही समान सबका साज-सजा देवे और आप जैसा अपनी इस करनी को तो स्वप्न में भी न समझे और हृदयमें सेवक के संकोचको विचारे ।।

सो गुसाँइ नहिं दूसर कोपी ❁ भुजा उठाइ कहौं प्रन रोपी
पसु नाचत सुक पाठ प्रवीना ❁ गुणगति नट पाठक आधीना

ऐसे स्वामी आप ही हैं, अन्य कोई नहीं; इस बात को मैं भुजा उठाकर कहता हूँ । क्योंकि पशुओंका नाचना और तोतेके पढ़ने की प्रवीणता शिक्षक और नटके ऊपर ही है ।।

दोहा—सो सुधारि सनमानि जिय, किए साधु सिरमोर ।
को कृपालु बिनु पालिहै, विरुदावलि बरजोर ।।२८९।।

सो आपने सुधार और सम्मान करके सन्तजनोंका भी शिरमौर कर दिया । अतः आप कृपासागरके बिना हठसे भलाई करनेके बानेका, दूसरा कौन पालन करेगा ।।२८९।।

शोक सनेह कि बाल सुभाये ❁ आयउँ लाइ रजायसु वायें
तबहुँ कृपालु हेरि निज ओरा ❁ सबहि भाँति भल मानेहु मोरा

परन्तु शोक, स्नेह या अपने बाल-स्वभावके कारण पाई हुई राजाज्ञाको बाँधकर यहाँ चला आया तब भी आप कृपालुने अपनी ओर देखकर मेरा सब प्रकारसे हित ही किया है ।।

देखेउँ आइ सुमंगल मूला ❁ जानेउँ स्वामि सहज अनुकूला
बड़े समाज विलोकेउँ भागू ❁ बड़ी चूक साहिब अनुरागू

अब यहाँ आकर अपने सुमंगल मूल चरणों का दर्शन किया और यह जाना कि स्वामी सहज ही अनुकूल हैं । मेरी बड़ी भाग्य है कि इस समाज का दर्शन किया ।।

कृपा अनुग्रह अंग अघाई ❁ कीन्ह कृपानिधि सब अधिकाई
राखा मोर दुलार गुसाँई ❁ अपने शील सुभाव भलाई

आपकी कृपादृष्टिने मुझे सन्तुष्ट कर दिया, सो यह कृपानिधानने अधिक ही किया । स्वामीने अपने ही शील-स्वभाव और भलाई से मेरा दुलार रखा ।।

नाथ निपट मैं कीन्ह ढिठाई ❁ स्वामि समाज सकोच बिहाई
अबिनय बिनय यथारुचि बानी ❁ छमिय देव अति आरत जानी

परन्तु हे नाथ ! मैंने आप जैसे स्वामी और समाज का संकोच त्यागकर धृष्टता की है सो हे देव ! अब मुझ अति दुःखीके इस अविनय को आप क्षमा करिये ।।

दोहा—सुहृद सुजान सुसाहिबहिं, बहुत कहब बड़ि खोरि ।
आयसु देइय देव अब, सबहिं सुधारिय मोरि ।।२९०।।

सुहृद् चतुर श्रेष्ठ स्वामीके आगें बहुत कहने में बड़ा दोष है, हे देव ! अब मुझे आज्ञा देकर मेरा सब कुछ सुधार कीजिये ।।२९०।।

प्रभुपदपद्मपराग दुहाई ❀ सत्य सुकृति सुखसींम सुहाई
सो करि कहौं हिये अपनेकी ❀ रुचि जागत सोवत सपनेकी

मुझे प्रभुके चरणारविन्दके उस धूलकी दुहाई है कि जो सत्य-सुकृत रूपी सुख की सुन्दर सीमा है। उसे स्मरण कर मैं अपने हृदय की उस इच्छा को प्रकट करता हूँ ।।

सहज सनेह स्वामि सेवकाई ❀ स्वारथ छल फल चारि बिहाई
आज्ञा सम न सुसाहिब सेवा ❀ सो प्रसाद जन पावै देवा

सहज स्नेहसे स्वामीकी सेवा करे, स्वार्थ, छल और फल त्याग देवे, आज्ञा पालन करनेके समान स्वामीकी दूसरी सेवा नहीं है सो हे देव ! भक्तों को ही यह प्रसाद प्राप्त होता है ।।

अस कहि प्रेम विवश भे भारी ❀ पुलक शरीर विलोचन बारी
प्रभुपदकमल गहे अकुलाई ❀ समय सनेह न सो कहि जाई

ऐसा कहकर भरतजी बड़े भारी प्रेमके वश हो गये, शरीर पुलकित और नेत्रोंमें जल भर आया तब वे व्याकुल होकर प्रभुके चरणकमलोंको पकड़ लिए उस समय का स्नेह कहा नहीं जाता ।।

कृपासिंधु सनमानि सुबानी ❀ बैठाए समीप गहि पानी
भरत विनय सनि दीख सुभाऊ ❀ शिथिल सनेह सभा रघुराऊ

तब कृपासागर रामजीने सुन्दर वाणी से भरत का सम्मान कर हाथ पकड़ कर उन्हें अपने निकट बैठा लिये। भरतजीके उस विनम्रस्वभावको देखकर रामजी स्नेहसे शिथिल हो गये ।।

छन्द—रघुराउ शिथिल सनेह साधु समाज मुनि मिथिलाधनी ।
मनमहँ सराहत भरत भायपभक्ति महिमा अति घनी ।।
भरतहिं प्रसंसत विबुध बरषत सुमन मानस मलिनस ।
तुलसी विकल सबलोग सुनि सकुचे निशागम नलिनसे ।।१२।।

तब स्नेहकी उस शिथिलता में रामजी और सन्त समाज सहित राजा जनक आदि सब अपने मनसे भरतका भ्रातृ प्रेम और उनकी प्रशंसा करने लगे। फिर तो उस समय उनको मलिन देवता भरतकी प्रशंसा करते हुए फूलोंकी वर्षा करने लगे। तुलसीदासजी कहते हैं कि भरतके उस विचार को सुनकर सब लोग विकल होकर वैसे ही सकुच गये कि जैसे दिन का अवसान होने पर कमल संकुचित हो जाते हैं ।।

सोरठा—देखि दुखारी दीन, दुहुँ समाज नर नारि सब ।
मघवा महा मलीन, मुये मारि मंगल चहत ।।१२।।

तब स्त्री-पुरुषों सहित दोनों समाजको ऐसे दुःखी देखकर महामलिन इन्द्रको बड़ी प्रसन्नता हुई, मानों उन मृतकों को भी मार कर वह अपना मङ्गल चाहता था ।। १२ ।।

कपट कुचालि सीम सुरराजू ❀ परअकाज प्रिय आपन काजू
काक समान पाकरिपु रीती ❀ छली मलीन कतहुँ न प्रतीती

इन्द्र कपट कुचालकी सीमा हैं, उन्हें पराये का अकाज और अपना काज प्रिय है। कौवे के समान ही उनकी रीति है कि वे छली और मलिन हैं, तथा किसी पर विश्वास नहीं करते ।।

प्रथम कुमति करि कपट सकेला ❀ सो उचाट सबके शिर मेला
सुरमाया सब लोग विमोहे ❀ राम प्रेम अतिशय न बिछोहे

पहले तो कुबुद्धि देकर कपट इकट्ठा किया और फिर उच्चाटनकर वही सबके शिरपर दिया। देव माया ने तो सबको मोहित किया जिससे राम का प्रेमी होनेके कारण वियोग नहीं चाहते ॥

भय उचाटबस मन थिर नाहीं ❀ छन बनरुचि छन सदन सुहाहीं
दुविध मनोगति प्रजा दुखारी ❀ सरित सिंधु संगम जिमि बारी

उच्चाटन से किसी का मन स्थिर न रहा, क्षण में घर अच्छा लगता था, क्षण में बन, प्रजाके मनकी गति वैसी ही द्विविधा में पड़ गई, जैसे नदी और समुद्र का संगमके समय जल ॥

दुचित कतहुँ परितोष न लहहीं ❀ एक एकसन मर्म न कहहीं
लखि हिय हँसि कह कृपानिधानू ❀ सरिस स्वान मघवाकर बानू

यह तो प्रकट ही है कि द्विचिताईमें कहीं भी संतुष्टि नहीं मिलती और एकसे दूसरा अपना भेद नहीं कहता। तब यह देख कृपानिधान रामजी बोले, देखो! इन्द्र कुत्तेके समान हो रहा है ॥

दोहा—भरत जनक मुनिगन सचिव, साधु समेत विहाइ।
लगी देव माया सबहिं, जथाजोग जन पाइ ॥२९१॥

फिर भरत, जनक, मुनिजन और सुमन्तको छोड़कर इन्द्रकी माया सभीको व्याप्त हो गई ॥

कृपासिंधु लखि लोग दुखारे ❀ निज सनेह सुरपति छल भारे
सभा राउ गुरु महिसुर मंत्री ❀ भरत भक्ति सबकी मति यंत्री

तब श्रीरामचन्द्रजीने देखा कि सभोलोग दुःखी हैं और इन्द्रने बड़ा छल किया साथ ही भरत जीकी भक्तिने गुरु वसिष्ठ और राजा जनक सहित समस्त समाजकी मतिको यन्त्रित कर दिया है॥

रामहिं चितवत चित्र लिखेसे ❀ सकुचत बोलत बचन सिखेसे
भरतप्रीति नति बिनय बड़ाई ❀ सुनत सुखद बरनत कठिनाई

सब लोग रामजी को लिखित चित्र के समान देखते। कोई किसी को सिखाता तो वह बोलता॥ भरतकी नीति, प्रीति, विनय और बड़ाई सुनने में ही सुखद है वर्णन करना कठिन है॥

जासु बिलोकि भक्ति लवलेसू ❀ प्रेम मगन मुनिगन मिथिलेसू
महिमा तासु कहै किमि तुलसी ❀ भक्ति प्रभाव सुमति हिय हुलसी

क्योंकि जिसकी लेशमात्र भी भक्ति देखकर मुनिगण और राजा प्रेम-मग्न हो गये। तब भला तुलसीदासजी उनकी महिमा को कैसे कहें क्योंकि उनको भक्तिसे ही तो सुमतिका विकास हुआ॥

आप छोट महिमा बड़ि जानी ❀ कविकुल कानि मानि सकुचानी
कहि न सकति गुन रुचि अधिकाई ❀ मतिगति बालबचनकी नाई

अपने को छोटी और उनकी महिमा को बड़ी जानकर कविकी लाज सकुचाती है। वह भरतजी के गुणों की अधिक प्रशंसा करने में बच्चे की मति की गति के समान हो गई ॥

दोहा—भरत विमलजस विमलविधु, सुमति चकोर कुमारि।
उदित विमलजन हृदय नभ, इकटक रही निहारि ॥२९२॥

भरतजी का यश निर्मल चन्द्रमा है और भक्तों का स्वच्छ हृदय निर्मल आकाश है, जहां कवियोंकी बुद्धि चकोर कुमारीकी तरह एकटक देख रही है कि कहनेकी सामर्थ्य नहीं है ।।२९२।।

भरतसुभाव न सुगम निगमहू ❀ लघुमति चापलता कवि छमहू
कहत सुनत सतिभाव भरतको ❀ सीयरामपद होइ न रत को

भरतजीका स्वभाव वेद भी नहीं जान सकते, तब मैं तो तुच्छ बुद्धिका हूँ किस प्रकारसे कह सकता हूँ। भरतजी का सतिभाव कहने-सुननेमें राम जानकी के चरणों में कौन प्रेम न करेगा ?

सुमिरत भरतहिं प्रेम रामको ❀ जेहि न सुलभ तेहिसरिस बामको
देखि दयालु दसा सबहीकी ❀ राम सुजान जानि जन जीकी

भरतजी और रामजीके प्रेमका स्मरण करते हुए जो रामजीके चरणों का अनुरागी न हो उसके समान अभागा कौन है ? तब उनकी दशा देख और सबके मन की बात जान कर ।।

धरमधुरीन धीर नय नागर ❀ सत्य सनेह सीलसुखसागर
देसकाल अरु समय समाजू ❀ नीति प्रीतिपालक रघुराजू

तब धर्म धुरन्धारी, राजनीतिमें कुशल, सत्य, स्नेह, शील और सुखके सागर ।।५।। नीति और प्रीति के पालक राम देश, काल, समय और समाज को देखकर ।।६।।

बोले बचन बानि सरबससे ❀ हित परिनाम सुनत ससिरससे
तात भरत तुम धरमधुरीना ❀ लोक वेद विधि परम प्रबीना

सरस्वतीके समान वाणी बोले कि जो अन्तमें हितकर सुननेमें चन्द्रमाके अमृत समान थी ।। ७ ।। हे प्यारे भरतजी ! आप धर्म धुरी को धारण करने वाले और लोक तथा वेद की विधि में परम प्रवीण हैं ।।८।।

दोहा—कर्म बचन मानस विमल, तुम समान तुम तात ।
गुरुसमाज लघ बंधुगुन, कुसमय किमि कहिजात ।।२९३।।

हे प्यारे,! कर्म वचनसे विमल तुम्हारे समान तुम्हीं हो, गुरुजनोंका समाज और खोटा समय, ऐसी स्थिति में छोटे भाई के गुणों का कैसे वर्णन किया जाय ।।२९३।।

जानहु तात तरनिकुलरीती ❀ सत्यसंध पितु कीरति प्रीती
समय समाज लाज गुरुजनकी ❀ उदासीन हित अनहित मनकी

हे तात ! तुम सूर्यकुलकी रीतिको जानते हो, पिताकी कीर्ति और प्रीति देख ही चुके हो । तुम समय, समाज, गुरुजनोंकी लाज और उदासीन, मित्र, शत्रु सबके मनकी बात जानते हो ।।

तुम्हहिं विदित सबही कर मरमू ❀ आपन मोर परमहित धरमू
मोहिं सबभाँति भरोस तुम्हारा ❀ तदपि कहौं अवसर अनुसारा

तुमको सभीका मर्म और अपना तथा मेरा परम हितकारी धर्म भी ज्ञात है, मुझे सब प्रकार तुम्हारा ही भरोसा है तो भी समयानुसार कहता हूँ ।।४।।

तात तात बिनु बात हमारी ❀ केवल कुलगुरु कृपा सुधारी
नतरु प्रजा परिजन परिवारू ❀ हमहिं सहित सब होत दुखारू

हे तात ! पिताजी के सिवा हमारी बातको केवल कुलगुरु वसिष्ठजीकी कृपाने ही सुधारी है। नहीं तो प्रजा, पुरवासी, कुटुम्ब और हमारे सहित सभी महान् कष्ट पाते ॥६॥

जो बिनु अवसर अथव दिनेसू ❀ जग कहँ काहे न होय कलेसू
तस उतपात तात बिधि कीन्हा ❀ मुनि मिथिलेस राखि सब लीन्हा

क्योंकि यदि बिना समयके ही सूर्य अस्त हो जावें तो बतलाइये संसारमें किसको क्लेश नहीं होगा ? विधाता नें वैसा ही उत्पात किया किन्तु मुनि और जनकजीने सब बात रख ली ॥

दोहा—राजकाज सब लाज पति, धरम धरनि धन धाम।
गुरुप्रभाव पालिहि सबहि, भल होइहि परिनाम ॥२९४॥

राजकाज, सब लाज-प्रतिष्ठा और धर्म, पृथ्वी, धन, धाम और गुरुका प्रभाव इन सबको जो पालता है, उसका परिणाम अच्छा होता है ॥२९४॥

सहित समाज तुम्हार हमारा ❀ घर बन गुरुप्रसाद रखवारा
मातु पिता गुरु स्वामि निदेसू ❀ सकल धरम धरनीधर सेसू

श्री गुरुजीका प्रभाव ही हमारा घर और बनमें समाज समेत सबका रखवाला है। माता, पिता, गुरु और स्वामीकी आज्ञाका पालन करना ही सबका धर्मरूप भूमिके धारणकर्ता शेषनाग है।

सो तुम करहु करावहु मोहू ❀ तात तरनिकुलपालक होहू
साधन एक सकल सिधि देनी ❀ कीरति सुगति भूतिमय बेनी

सो वह तुम स्वयं पालन करो और मुझसे भी पालन कराओ। हे तात ! सूर्यकुलके पालक बनो, यह एक ही साधना कीर्ति, विभूति और सुगति तथा सब सिद्धियों को देनेवाली है ॥ ४ ॥

सो बिचारि सहि संकट भारी ❀ करहु प्रजा परिवार सुखारी
बाँटि बिपति सबही मिलि भाई ❀ तुम्हहिं अवधि भरि अतिकठिनाई

सो इसका विचार करके भारी संकट सहकर भी प्रजा और परिवारको सुखी कीजिए। सब लोग मिलकर विपत्तिको बाँट लो तो भी तुमको अवधि भर (१४वर्षतक) अत्यन्त कठिनता है ॥६॥

जानि तुम्हहि मृदु कहौं कठोरा ❀ कुसमय तात न अनुचित मोरा
होंहि कुठाँव सुबंधु सुहाये ❀ ओड़िय हाथ असनि के घाये

मैं तुम्हें कोमल जानकर भी कठोर बात कहता हूँ। यह कुसमय की ही बात है मेरा दोष नहीं है। जैसे तलवार प्रहार करे तो हाथ ही उस घावको रोकता है ऐसे ही हमारी सहायता करो ॥

दोहा—सेवक कर पद नयनसे, मुख सों साहिब होइ।
तुलसी प्रीतिकी रीति सुनि, सुकवि सराहहिं सोइ ॥२९५॥

सेवक तो हाथ, पाँव तथा नेत्रके समान होना चाहिए और स्वामी मुख-सा होना चाहिये। सुकवि प्रीतिकी रीतिको सुनकर प्रशंसा करते हैं ॥ २९५ ॥

सभा सकल सुनि रघुबर बानी ❀ प्रेमपयोधि अमिय जनु सानी
सिथिल समाज सनेह समाधी ❀ देखि दसा चुप सारद साधी

सभी सभा श्रीरामजीकी अमृतमें सनी हुई वाणी सुनकर स्नेहकी समाधिसे दोनों समाज शिथिल हो गये उनकी वह दशा देखकर सरस्वती चुप साध गई ।।२।।

भरतहिं भयउ परम संतोषू ❀ सन्मुख स्वामि बिमुख दुख दोषू
मुख प्रसन्न मन मिटा विषादू ❀ भा जनु गूँगहि गिरा प्रसादू

भरतजीको इस बातसे परम सन्तोष हुआ कि स्वामीके सामने होने पर दुःख दोष नष्ट हो गये। मुख प्रसन्न हो गया—उनका शोक-सन्ताप वैसे ही मिट गया जैसे गूँगे पर सरस्वतीकी कृपा हो गई।।

कीन्ह सप्रेम प्रनाम बहोरी ❀ बोले पानि पंकरुह जोरी
नाथ भये सुख साथ गये को ❀ लहेउँ लाभ जग जनम भयेको

फिर श्रीरामचन्द्रजीको प्रणाम किए और अपने कमल समान हाथ जोड़कर बोले—हे स्वामिन्! मुझे आपके साथ जानेका सुख मिल गया और संसारमें जन्म ग्रहण करनेका फल भी मिला ।।

अब कृपालु जस आयसु होई ❀ करौं सीस धरि सादर सोई
सो अवलंब देव मोहिं देई ❀ अवधि पार पावउँ जेहि सेई

अब जो कुछ आज्ञा हो उसको शिरपर धर पालन करूँ। हे देव! अब मुझको कोई ऐसा सहारा दीजिये जिसका पालन करता हुआ मैं (१४वर्षकी) अवधि से पार पाऊँ ।।८।।

दोहा—देव देव अभिषेकहित, गुरुअनुसासन पाइ।
आनेउँ सब तीरथ सलिल, तेहि कहँ काह रजाइ ।।२९६।।

हे देव! मैं गुरुजीकी आज्ञासे आपका अभिषेक करने के लिए सब तीर्थों का जल लाया हूँ। उसके लिये आपकी क्या आज्ञा है? ।। २९६ ।।

एक मनोरथ बड़ मनमाहीं ❀ समय सकोच जात कहि नाहीं
कहहु तात प्रभुआयसु पाई ❀ बोले वानि सनेह सुहाई

हे नाथ! मेरे मनमें एक और भी मनोरथ है जो कि संकोचके मारे कहा नहीं जाता। श्रीरामचन्द्रजी ने कहा, हे भाई! सो भी कहो। तब प्रभुकी आज्ञा मिलनेपर भरतजी स्नेहभरी सुन्दरवाणी बोले।२।

चित्रकूट मुनिथल तीरथ बन ❀ खग मृग सुरसरि निर्झरगिरिगन
प्रभुपदअंकित अवनि विसेषी ❀ आयसु होय तो आवउँ देखी

चित्रकूट में मुनिजनों के पवित्र आश्रम हैं जहाँ तीर्थ, खग, मृग, सरोवर, नदी, बन, झरनें तथा पहाड़ोंके समूह हैं। वह भूमि प्रभुके चरण कमलोंसे अंकित है यदि आज्ञा हो तो मैं देख आऊँ।।४।।

अवसि अत्रिआयसु सिर धरहू ❀ तात विगतभय कानन चरहू
मुनिप्रसाद बन मंगलदाता ❀ पावन परम सोहावन भ्राता

श्रीरामचन्द्रजीने कहा—अवश्य! आप अत्रिजीकी आज्ञाको मस्तकपर चढ़ाकर निःसन्देह बनमें विचरण करो ।।५।। हे भाई! मुनिके प्रसादसे यह बन पावन और परम सुहावन है ।।

ऋषिनायक जहँ आयसु देहीं ❀ राखेहु तीरथजल थल तेहीं
सुनि प्रभुबचन भरतसुख पावा ❀ मुनिपदकमल मुदित सिरनावा

वे राजर्षि जिस स्थानमें आज्ञा देवें इन तीर्थोंके जलको वहीं स्थापित कर देना। श्रीरामचन्द्रजीके इस वचनसे भरतजीने परमसुख पाया और वे चरणकमलोंमें शिर झुका दिये ॥

दोहा—भरत रामसंवाद सुनि, सकल सुमंगलमूल।
सुर स्वारथी सराहि कुल, हर्षित वर्षहिं फूल ॥२९७॥

इस प्रकार श्रीरामचन्द्रजी और भरतजी का सर्वसुमंगल मूल संवाद सुनकर स्वार्थी देवता इनके कुल की बड़ाई करते हुए फूलों की वर्षा करने लगे ॥ २९७ ॥

धन्य भरत जय रामगुसाईं ❀ कहत देव हरषित बरिआईं
मुनि मिथिलेस सभा सबकाहू ❀ भरतबचन सुनि भयउ उछाहू

देवता लोग बारम्बार भरतजी को धन्य और श्रीरामचन्द्रजी की जय ऐसा कहते हुए हर्षित होते हैं। यह सुनकर वशिष्ठजी, जनकजी और सभाके सबलोग परमानन्द को प्राप्त हुए ॥

भरत रामगुनग्राम सनेहू ❀ पुलकि प्रसंसत राउ बिदेहू
सेवक स्वामि सुभाव सुहावन ❀ नेम प्रेम अतिपावन पावन

राजा जनक जीं भरत और श्रीरामजी के गुणों की प्रशंसा करने लगे कि सेवक और स्वामीका स्नेह और स्वभाव परम सुन्दर है तथा इनके परस्पर प्रेम का नियम पवित्र ही पवित्र है ॥

मतिअनुसार सराहन लागे ❀ सचिव सभासद सब अनुरागे
सुनि मुनि रामभरतसंवादू ❀ दुहुँ समाज हिय हरष बिषादू

सब अपनी बुद्धिके अनुसार बड़ाई करने लगे और मन्त्री, सभासद हर्षित हुए। श्रीरामजी और भरत का सम्वाद सुन कर दोनों समाज के मनमें हर्ष-विषाद दोनों हुआ ॥ परन्तु—

राममातु दुख सुख सम जानी ❀ कहि गन दोष प्रबोधी रानी
एक करहिं रघुबीरबड़ाई ❀ एक सराहत भरतभलाई

श्रीरामजी की माताने दुःख-सुख को एक सा समझा और उन्होंने ही अन्य रानियों को भी समझाया। तब उनमेंसे कोई रामकी बड़ाई करती हैं और कोई भरतकी भलाई की प्रशंसा करती हैं ॥

दोहा—अत्रि कहेउ तब भरतसन, सैलसमीप सुकूप।
राखिय तीरथतोय तहँ, पावन अमल अनूप ॥२९८॥

तब अत्रि मुनिने भरतजी से कहा कि उस पर्वतके समीप एक कुँआ है, वहाँ यह पवित्र, निर्मल और अनुपम तीर्थों का जल रख दीजिए ॥ २९८ ॥

भरत अत्रि-अनुसासन पाई ❀ जलभाजन सब दिये चलाई
सानुज आपु अत्रिमुनि साधू ❀ सहित गये जहँ कूप अगाधू

तब अत्रिजी की आज्ञा पाकर भरतजी सब जलके पात्र वहाँ लिवा चले ॥ १ ॥ फिर स्वयं शत्रुघ्नजी और मुनि, साधु तथा अत्रिजी के सहित उस अगाध कुएँ के पास गये ॥२॥

पावन पाथ पुन्यथल राखा ❀ प्रमुदित प्रेम अत्रि अस भाखा
तात अनादि सिद्ध थल येहू ❀ लोपेउ काल बिदित नहिं केहू

जब भरतजीने उस पवित्र जलको पवित्र स्थान में स्थापित कर दिया तब अत्रिने प्रेमसे ऐसे कहा। हे तात! यह सिद्ध स्थान अनादिकालसे चला आता है, किन्तु यह किसी को मालूम नहीं है ॥

तब सेवकन्ह सरस थल देखा ❁ कीन्ह सुजल हित कूप बिसेषा
विधिवस भयउ विस्व उपकारू ❁ सुगम अगम अति धर्म बिचारू

तब उस स्थान को देखकर सेवकोंने उसे जल पीनेके योग्य बना दिया। फिर उस कुएँके द्वारा सारे जगत् का उपकार हुआ जिसके धर्मका विचार अत्यन्त ही सुगम तथा अगम है ॥

भरतकूप अब कहिहहिं लोगा ❁ अतिपावन तीरथजलजोगा
प्रेम सनेम निमज्जत प्रानी ❁ होइहहिं विमल करम मन बानी

अब इसे लोग भरतकूप कहेंगे जो अनेक तीर्थोंके मिलनेसे परम पावन तीर्थ हो गया है ॥ जो प्राणी इसमें प्रेम सहित स्नान करेंगे, वे कर्म, मन तथा वाणीसे विमल हो जाएँगे ॥८॥

दोहा–कहत कूपमहिमा सकल, गये जहाँ रघुराउ।
अत्रि सुनायउ रघुबरहिं, तीरथ पुन्य प्रभाउ ॥२९९॥

ऐसा सब कोई उस कूप की महिमा कहते हुए रामजी के पास गये। तब अत्रिजी ने श्रीरामचन्द्रजी को उस तीर्थ का पुण्य प्रभाव सुनाया ॥ २९९ ॥

कहत धर्म इतिहास सप्रीती ❁ भयउ भोर निसि सो सुख बीती
नित्य निबाहि भरत दोउ भाई ❁ राम अत्रि गुरु आयसु पाई

ऐसे प्रीतिपूर्वक धर्म इतिहास कहते हुए भोर हो गया और सारी रात सुख से बीत गई। तब भरत-शत्रुघ्न दोनों भाई नित्यकर्म करके श्रीरामचन्द्र, अत्रिजी और वसिष्ठजीकी आज्ञा पाय॥

सहित समाज साज सब सादे ❁ चले राम-बन अटन पयादे
कोमल चरन चलत बिनु पनहीं ❁ भे मृदु भूमि सकुचि मन मनहीं

समाज सहित साज सजाय पैदल ही श्रीरामचन्द्रजी के बन में घूमने को चले। कोमल चरणोंसे बिना जूतेके ही चलते हैं, इस कारण पृथ्वी भी संकुचित हो अत्यन्त कोमल हो गई॥

कुस कंटक काँकरी कुराई ❁ कटु कठोर कुबस्तु दुराई
महि मंजुल मृदु मारग कीन्हें ❁ बहत समीर त्रिविध सुख लीन्हें

और उसने कुश, काँटे, कंकड़ी और कठिन कड़वी कुवस्तुको छिपा लिया। इस प्रकार पृथ्वीने कोमल तथा सुखद मार्ग बना दिया, उस समय शीतल, मन्द और सुगन्ध वायु चलने लगा॥

सुमन वर्षि सुर घनकरि छाहीं ❁ विटप फूलि फलि तृन मृदुलाहीं
मृग बिलोकि खग बोलि सुबानी ❁ सेवहिं सकल रामप्रिय जानी

देवता फूल बरसाते, बादल छाया करते, वृक्ष फूल–फल गए और घास कोमल हो गये ॥७॥ पक्षी, मृग मनभावनी बोलियाँ बोलते और श्रीरामजी को प्रिय जान कर सेवा करते थे ॥८॥

दोहा–सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहुँ, राम कहत जमुहात।
राम प्रानप्रिय भरतकहँ, यह न होइ बड़ि बात ॥३००॥

जो श्रीरामचन्द्रजी का नाम लेकर स्वभावसे ही जँभाई लेते हैं उनको सारी सिद्धि प्राप्त हो जाती है। भरतजी तो रामजी को प्राणोंसे भी प्रिय हैं, उनके लिये यह बड़ी बातें नहीं हैं॥३००॥

इहिविधि भरत फिरत बनमाहीं ❀ नेम प्रेम लखि मुनि सकुचाहीं
पुन्यजलासय भूमिविभागा ❀ खग मृग तरु तृन गिरि बन बागा

इस प्रकार भरतजी वनमें फिर रहे हैं जिनके नेम धर्म को देखकर मुनि भी सकुचाते हैं, पवित्र सरोवर भूमिके विभाग को देखकर खग, मृग, वृक्ष, तृण, वन, बाग और—

चारु विचित्र पवित्र विसेखी ❀ बूझत भरत दिव्य सब देखी
सुनि मन मुदित कहत ऋषिराऊ ❀ हेतु नाम गुनपुन्यप्रभाऊ

उन सुन्दर विचित्र और दिव्य तीर्थों को देखकर उनके विषयमें पूछते हैं कि यह कैसा तीर्थ है? भरतजीकी यह बात सुनकर अत्रिजी प्रसन्न मनसे उनकी उत्पत्ति, नाम, पुण्य तथा प्रभावको कहते हैं

कतहुँ निमज्जन कतहुँ प्रनामा ❀ कतहुँ विलोकत बन अभिरामा
कतहुँ बैठि मुनि आयसु पाई ❀ सुमिरत सीयसहित दोउ भाई

तब भरतजी कहीं स्नान करते, कहीं प्रणाम करते और कहीं केवल दर्शन ही करते हैं, कहीं मुनि की आज्ञा पाकर बैठ जाते और सीताजी सहित श्रीरामचन्द्रजी को स्मरण करते हैं॥

देखि सुभाउ सनेह सुसेवा ❀ देहिं असीस मुदित बनदेवा
फिरहिं गये दिन पहर अढ़ाई ❀ प्रभुपदकमल विलोकहिं आई

भरतजीका स्वभाव, स्नेह और सेवा देखकर बन-देवता प्रसन्न होकर आशीर्वाद देते हैं। ढाई पहर बीत जानेपर भरतजी लौटते हैं और आकर श्रीरामजीके चरण-कमलों का दर्शन किये॥

दोहा—देखे थल तीरथ सकल, भरत पाँच दिन माँझ।
कहत सुनत हरिहरसुजस, गयउ दिवस भइ साँझ॥३०१॥

भरतजीने पाँच दिनमें सम्पूर्ण स्थल और तीर्थ देख लिए। विष्णु और महेश का सुन्दर यश कहते-सुनते वह दिन बीत गया और सन्ध्या हुई॥३०१॥

भोर न्हाइ सब जुरा समाजू ❀ भरत भूमिसुर तिरहुति राजू
भल दिन आजु जानि मनमाहीं ❀ रामकृपालु कहत सकुचाहीं

प्रात:काल स्नान करके सब समाज एकत्रित हुआ। भरतजी, ब्राह्मण मंडली और राजाजनक आये, आज उत्तम दिन है। यह मनमें जानते हुए भो कृपालु श्रीरामजी कहते सकुचाते हैं॥

गुरु नृप भरत सभा अवलोकी ❀ सकुचि राम फिरि अवनिविलोकी
सील सराहि सभा सब सोची ❀ कहुँ न रामसम स्वामि सकोची

वसिष्ठजी, राजा जनक, भरत और सम्पूर्ण सभा को देख और सकुचकर श्रीरामजी पृथ्वी की ओर देखने लगे। सभा सोचने लगी कि श्रीरामजीके समान संकोची स्वामी कहीं नहीं है॥

भरत सुजान राम रुख देखी ❀ उठि सप्रेम धरि धीर विशेखी
करि दंडवत कहत कर जोरी ❀ राखी नाथ सकल रुचि मोरी

सुजान भरतजी श्रीरामजी का रुख देखकर प्रेमपूर्वक उठे और विशेष धैर्य धारण कर प्रणाम किए। तब हाथ जोड़कर कहने लगें—हे नाथ! आपने मेरी सम्पूर्ण अभिलाषायें पूर्ण कीं ॥६॥

मोहिं लगि सबहि सहेउ संतापू ❁ बहुत भाँति दुख पावा आपू
अब गुसाँइ मोहि देहु रजाई ❁ सेवौं अवध अवधि लगि जाई

मेरे लिए सबने दुःख सहा, आपने भी बहुत तरहसे दुःख पाया। हे स्वामी! अब मुझे आज्ञा दीजिये कि अवधि भर जाकर अयोध्या की सेवा करूँ ॥८॥

दोहा—जेहि उपाय पुनि पाय जन, देखै दीनदयालु।
सो सिख देइय अवधिलगि, कोसलपाल कृपालु ॥३०२॥

हे दयानिधान! अब वह उपाय बतलाइए जिससे यह दास अवधि तक जीवित रह कर आपके चरणों को पुनः देखे। हे कोशलपाल कृपालु! मुझे ऐसी ही शिक्षा दीजिये ॥३०२॥

पुरजन परिजन प्रजा गुसाँई ❁ सब सुचि सरस सनेह सनाई
राउर बदि बल भवदुखदाहू ❁ प्रभु बिनु बादि परमपदलाहू

हे स्वामी! नगर-निवासी और कुटुम्बके लोग सब आपके सुन्दर प्रेम और नातेसे पवित्र हैं। आपके लिये संसार का दुःख-दाह भी अच्छा है पर आपके बिना परम पद का लाभ भी अच्छा नहीं है॥

स्वामि सुजान जानि सबहीकी ❁ रुचिलालसा रहनि जन जीकी
प्रनतपाल पालहिं सबकाहू ❁ देव दुहूँदिसि ओर निबाहू

हे स्वामी! आप सुजान हैं सभी दासोंके हृदय की रुचि, लालसा और स्थिति को जानते हैं। आप प्रणतपाल हैं सबका पालन करते हैं। हे देव! दोनों ओर अन्त तक निर्वाह होना आपके हाथ है॥

अस मोहिं सबविधि भूरिभरोसो ❁ किये विचार न सोच खरोसो
आरति मोरि नाथकर छोहू ❁ दुहुँ मिलि कीन्ह ढीठ हठि मोहू

मुझे इस प्रकार का सब तरहसे बड़ा भरोसा है, विचार करने पर थोड़ा सा भी सोच नहीं है। मेरे दुःख और आपके प्रेम दोनों ने मिलकर मुझे हठ करके धृष्ट बना दिया॥

यह बड़ दोष दूरिकरि स्वामी ❁ तजिसँकोच सिखइय अनुगामी
भरतबिनय सुनि सबहिं प्रसंसा ❁ छीर नीर विवरन गति हंसा

हे स्वामी! यह बड़ा भारी दोष दूर करके संकोचको त्यागकर इस अनुगामी दास को शिक्षा दीजिये। भरत की विनय को सुनकर सबने उनकी प्रशंसा की ॥८॥

दोहा—दीनबंधु सुनि बंधुके, बचन दीन छलहीन।
देसकाल अवसर सरिस, बोले राम प्रवीन ॥३०३॥

तब भाई भरतके ऐसे दीन एवं छलहीन वचनको सुनकर दीनबन्धु प्रवीण श्रीरामचन्द्रजी देश, काल और समयके अनुसार यह वचन बोले ॥३०३॥

तात तुम्हारि मोरि परिजनकी ❁ चिंता गुरहिं नृपहिं घर बनकी
माथेपर गुरु मुनि मिथिलेसू ❁ हमहिं तुमहिं सपनेहु न कलेसू

हे तात ! तुम्हारी, मेरी, कुटुम्ब, घर तथा बन की चिन्ता तो गुरुजी और राजा जनक को है। गुरुजी और जनकजी के होते हुए तुम्हें स्वप्नमें भी क्लेश नहीं है ।।२।।

मोर तुम्हार परम पुरुषारथ ❁ स्वारथ सुजस धरम परमारथ
पितु आयसु पालिय दोउ भाई ❁ लोक वेद भल भूप भलाई

मेरा और तुम्हारा परम पुरुषार्थ, स्वार्थ, सुयश, धर्म और परमार्थ इसीमें है कि दोनों भाई पिताकी आज्ञाका पालन करें। यह लोकमें भी भला, वेदमें भी भला और इसीमें राजा की भी भलाई है ।।

गुरु पितु मातु स्वामि सिख पाले ❁ चलत सुगम पग परत न खाले
अस विचारि सब सोच विहाई ❁ पालहु अवध अवधि भरि जाई

गुरु, पिता, माता और स्वामी की शिक्षा का पालन करने से पैर नीचे नहीं पड़ता। ऐसा विचार कर सब सोच को त्यागकर अवधि भर जाकर अयोध्या का पालन करो ।।

देस कोस पुरजन परिवारू ❁ गुरुपदरजहिं लाग छरुभारू
तुम मुनि मातु सचिव सिखमानी ❁ पालेहु पुहुमि प्रजा रजधानी

देश, खजाना, नगर-निवासियों और कुटुम्ब का दायित्व गुरुके चरणों पर है। मुनिजी माता और मन्त्रियों की शिक्षाको मानकर पृथ्वी, प्रजा और राजधानी का पालन करना ।।

दोहा—मुखिया मुखसो चाहिये, खान पान कहँ एक।
पालै पोषै सकल अँग, तुलसी सहित विवेक ।।३०४।।

मुखिया मुखके समान होना चाहिये जो खाने-पीनेके लिए एक ही हो और विवेकपूर्वक सम्पूर्ण अङ्गों का पालन-पोषण करे ।।३०४।।

राजधर्म सरबस इतनोई ❁ जिमि मनमाँह मनोरथ गोई
बंधु प्रबोध कीन्ह बहु भाँती ❁ बिनु अधार मनतोष न शाँती

सम्पूर्ण राजधर्म इतना ही है कि जैसे मनमें मनोरथ छिपे रहते हैं। श्रीरामचन्द्रजी भरतको बहुत तरहसे समझाते हैं पर बिना किसी आधारके उनके मन को सन्तोष और शान्ति नहीं हुई ।।

भरतशील गुरु सचिव समाजू ❁ सकुच सनेहविवस रघुराजू
प्रभु करि कृपा पाँवरी दीन्हीं ❁ सादर भरत सीस धरि लीन्हीं

भरतजीके शीलसे गुरु और मन्त्रियोंके समाजमें श्रीरामजी स्नेह और संकोचके वश हो गये। उन्होंने अपनी खड़ाऊँ दी। भरतजीने आदरपूर्वक उसे शिर पर धारण करके ले लिया ।।

चरनपीठ करुनानिधानके ❁ जनु जुग जामिका प्रजा प्रानके
संपुट भरत सनेहरतनके ❁ आखर जुग जनु जीवयजनके

करुणानिधान की ये दोनों पादुका मानो प्रजाओंके प्राणोंके पहरेदार रक्षक हैं तथा भरतजीके प्रेमरूपी रत्नके रखनेके सम्पुट और मुक्ति देनेके निमित्त राम ऐसे दो अक्षर हैं।

कुल कपाट कर कुसलकर्मके ❁ विमल नयन सेवा सुधर्मके
भरत मुदित अवलंब लहेते ❁ अस सख जस सिय राम रहेते

कुशल कर्मके दो हाथ हैं और सेवा तथा सुधर्मके मानो पवित्र नेत्र हैं ऐसे अवलम्बके मिल जानेसे भरतजी ऐसे प्रसन्न हुए मानों सीता और श्रीरामजी अयोध्यामें ही रह गये ।।८।।

दोहा—माँगेउ बिदा प्रनाम करि, राम लिए उर लाइ ।
लोग उचाटे अमरपति, कुटिल कुअवसर पाइ ।।३०५।।

जब भरतजी प्रणाम करके चलने को बिदा माँगे तब तो श्रीरामजीने उनको छातीसे लगा लिया। उसी समय कुटिल इन्द्रने कुअवसर पाकर लोगोंके मनमें उच्चाटन कर दिया ।।३०५।।

सो कुचालि सब कहँ भइ नीकी ❁ अवधिआस सब जीवन जीकी
नतरु लषनसियराम वियोगा ❁ हहरि मरत सब लोग कुरोगा

यह उचाट सब किसीके लिए अच्छी हुई क्योंकि सबके जीने की आशा चौदह वर्ष की अवधि है। नहीं तो लक्ष्मण, सीता और श्रीरामजीके वियोग रूपी कुरोगसे सब लोग घबड़ा कर मर जाते ।।

रामकृपा अवरेब सुधारी ❁ बिबुध धारि भइ गुनद गुहारी
भेंटत भुजभरि भाइ भरतसो ❁ राम प्रेमरस कहि न परत सो

श्रीरामचन्द्रजीकी कृपासे वह टेढ़ी चाल भी सीधी हो गई कि देवताओंकी उलटी धारणा उस ओर सहायकहो गई। श्रीरामजी भुजाभरकर भरतको भेंटते हैं उसप्रेमरसकावर्णन नहीं किया जासकता।

तन मन बचन उमगि अनुरागा ❁ धीर धुरंधर धीरज त्यागा
बारिजलोचन मोचत बारी ❁ देखि दसा सुरसभा दुखारी

तन, मन, वचनसे प्रेम उमड़ आया, उस पर श्रीरामचन्द्रजी भी धीरज को छोड़ दिये और उनके नेत्रोंसे आँसू गिरने लगे, यह देख कर देवता लोग दुःखी हो गये ।।

मुनिगन गुरुजन धीर जनकसे ❁ ज्ञान अनल मन कसे कनकसे
जे विरंचि निरलेप उपाये ❁ पद्मपत्र जिमि जग जलजाये

और मुनिजन, वसिष्ठ तथा जनकजी जैसे धीरवान् भी जो अपने कनक रूपी मन को ज्ञान रूपी आगमें कसे थे और जो लोग मायासे वैसे ही अलग थे जैसे जलसे कमलका पत्ता अलग रहता है ।।

दोहा—तेउ बिलोकि रघुबर भरत, प्रीति अनूप अपार ।
भये मगन मन तनु बचन, सहित विराग विचार ।।३०६।।

वे भी महात्मा भरत और श्रीरामजी की सुन्दर अनुपम विचार युक्त अपार प्रीति को देखकर तन, मन तथा वचनसे विरागके विचार समेत मग्न हो गये ।। ३०६ ।।

जहाँ जनक गुरुगति मति भोरी ❁ प्राकृत प्रीति कहत बड़ि खोरी
बरनत रघुबर भरत वियोगू ❁ सुनि कठोर कबि जानहिं लोगू

जहाँ जनक और वसिष्ठजी की मति भोली हो जाती है वहाँ सांसारिक प्रीति का कहना तो बड़े दोष की बात है। रामजी व भरतजी का वियोग वर्णन करनेसे लोग मुझको कठोर कवि जानेंगे ।

सो सकोच बस अकथ कहानी ❁ समय सनेह सुमिरि सकुचानी
भेंटि भरत रघुबर समुझाये ❁ पुनि रिपुदमन हरषि हिय लाये

किन्तु वह बात प्रीति और संकोचके कारण अकथनीय है और मेरी वाणी उस समय के स्नेहको स्मरण करके थक गई है, श्रीरामजीने भरतजीसे मिलकर उनको समझाया ।।

सेवक सचिव भरत-रुख पाई ❀ निज-निज काज लगे सब जाई
सुनि दारुन दुख दुहूँ समाजा ❀ लगे चलन के साजन साजा

फिर भरतजी का रुख पाकर सेवक और मन्त्री अपने-अपने कामोंमें जा लगे। अयोध्या लौट चलना सुनकर दोनों समाजमें बड़ा ही दुःख हुआ और सब चलनेकी व्यवस्था करने लगे ।।

प्रभुपद पद्म बंदि दोउ भाई ❀ चले सीस धरि रामरजाई
मुनि तापस बनदेव निहोरी ❀ सब सनमानि बहोरि बहोरी

दोनों भाई श्रीरामचन्द्रजीके चरणों की वन्दना कर उनकी आज्ञा शिर पर धारण कर चले । मुनियों, तपस्वियों और वनके देवताओंसे विनय कर बारम्वार सबका सम्मान किये ।।

दोहा—लषनहिं भेंटि प्रनाम करि, सिर धरि सियपदधूरि ।
चले सप्रेम असीस सुनि, सकल सुमंगलमूरि ।।३०७।।

फिर लक्ष्मणजीसे मिल कर सीताजीके चरणों की धूलि शिर पर रख और फिर सर्व सुमंगलमूल आशीर्वाद सुनकर चल दिये ।। ३०७ ।।

सानुज राम नृपहिं सिर नाई ❀ कीन्हीं बहु बिधि बिनय बड़ाई
देव दयावस बड़ दुख पायउ ❀ सहित समाज काननहिं आयउ

उस समय श्रीरामचन्द्रजीने लक्ष्मण सहित राजा जनक को शिर नवाया और वहुत विनय करके कहा । हे देव ! आपने दया करके समाज समेत इस बनमें आकर बड़ा कष्ट पाया ।।

पुर पगु धारिय देहु असीसा ❀ कीन्ह धीर धरि गमन महीसा
मुनि महिदेव साधु सनमाने ❀ बिदा किये हरिहर सम जाने

अब हमें आशीर्वाद देकर नगरको जाइए, तब राजा जनकने घर प्रस्थान किया । तब मुनीश्वरों, ब्राह्मणों और साधुओंका सत्कारकर श्रीरामचन्द्रजीने सबको बिदा किया ।। ४ ।।

सासु समीप गये दोउ भाई ❀ फिरे बंदि पद आसिष पाई
कौसिक वामदेव जाबाली ❀ परिजन पुरजन सचिव सुचाली

फिर दोनों भाई अपने सासके पास गये और उनके चरणोंमें प्रणाम किये और आशिष पाकर वहाँ से लौटें। विश्वामित्र, वामदेव, मुनिवर जाबालि, नगर निवासी, कुटुम्बी और पवित्र मंत्री ।।

जथाजोग्य करि विनय प्रनामा ❀ बिदा किये सब सानुज रामा
नारि पुरुष लघु मध्य बड़ेरे ❀ सब सनमानि कृपानिधि फेरे

इस प्रकार यथायोग्य प्रणाम करके श्रीरामचन्द्रजो ने सबको बिदा किया और छोटे-बड़े और मध्य आयुवाले सब लोगोंको आदरपूर्वक कृपानिधान श्रीरामचन्द्रजीने लौटा दिया ।।

दोहा—भरत मातुपद बंदि प्रभु, सुचि सनेह मिलि भेंटि ।
बिदा कीन्ह सजि पालकी, सकुच सोच सब मेटि ।।३०८।।

फिर भरतजी की माता कैकेयीके चरणोंकी बन्दना करके स्नेह और पवित्र हृदयसे उनसे भेंट कर सजी-सजाई पालकीमें बिठाकर उनके संकोच और सोच को मिटा दिये ॥३०८॥

परिजन मातुपितुहिं मिलि सीता ❀ फिरी प्रानप्रिय प्रेम पुनीता
करि प्रनाम भेंटी सब सासू ❀ प्रीति कहत कवि हिय न हुलासू

तब सीताजी भी कुटुम्बियों सहित माता-पिता से मिलकर लौटीं और सब सासुओं से जो मिलीं तो वह प्रीति कहते हुए मुझ कविके मन में हुलास नहीं होता ॥

सुनि सिख अभिमत आशिष पाई ❀ रही सीय दुहुँ प्रीति समाई
रघुपति पटु पालकी मँगाई ❀ करि प्रबोध सब मातु चढ़ाई

तब दोनों ओर की प्रीति और आशीर्वाद पाकर सीताजी उसमें समा गयीं। फिर श्रीरामचन्द्रजीने ओहार युक्त पालकीको मँगाकर सब माताओंको समझाकर उनमें चढ़ा दिया ॥

बारबार हिलमिलि दोउ भाई ❀ सम सनेह जननी पहुँचाई
साजि बाजि गज बाहन नाना ❀ भूप भरतदल कीन्ह पयाना

फिर श्रीराम-लक्ष्मण दोनों भाई भरत से मिले और माताओं को पहुँचाकर विदा किया। इस प्रकार घोड़े, हाथी और रथोंको सजाकर भरतजीके दलने प्रस्थान किया ॥

हृदय राम सिय लषन समेता ❀ चले जाहिं सब लोक अचेता
बसह बाजि गज पसु हिय हारे ❀ चले जाहिं परबस मन मारे

सब लोग सीताजी और श्रीरामचन्द्रजी को हृदयमें धारण कर अचेतावस्थामें चले जाते थे। बैल, हाथी, घोड़े और सभी पशु हारे हृदय परवश हो मन मारे हुए चले जाते थे ॥

दोहा—गुरुगुरुतियपद बंदि प्रभु, सीता लषन समेत।
फिरे हरष बिसमय सहित, आए परननिकेत ॥३०९॥

गुरु और गुरु की स्त्रीके चरणोंमें प्रणाम कर सीता और लक्ष्मणके सहित श्रीरामचन्द्रजी हर्ष और सोच सहित लौट कर अपनी कुटिया में आये ॥ ३०९ ॥

बिदा कीन्ह सनमानि निषादू ❀ चलेउ हृदय बड़ बिरह बिषादू
कोल किरात भिल्ल बनचारी ❀ फेरे फिरे जुहारि जुहारी

श्रीरामचन्द्रजीने निषाद को सम्मानपूर्वक बिदा किया और कोल, किरातों और भिल्लों आदि को श्रीरामचन्द्रजीने लौटाया, जो जोहार कर लौट गये ॥ २ ॥

प्रभु सिय लषन बैठि बटछाँहीं ❀ प्रिय परिजन वियोग बिलखाहीं
भरत सनेह सुभाव सुबानी ❀ प्रिया अनुजसन कहत बखानी

प्रभु, सीताजी और लक्ष्मणजी बट छायामें बैठे हुए विलख रहे थे, उस समय श्रीरामचन्द्रजीने बारम्बार भरतजीके प्रेम-स्वभाव को सीताजी और लक्ष्मणसे कहते थे ॥ ४ ॥

प्रीति प्रतीति बचन मन करनी ❀ श्रीमुख राम प्रेमबस बरनी
तेहि अवसर खग मृग जल मीना ❀ चित्रकूट चर अचर मलीना

इस प्रकार श्रीरामचन्द्रजी प्रेम के वश हो भरतजी की प्रीति विश्वास को मन, वचन और कर्मसे वर्णन करते थे। उस समय चित्रकूट के सब चराचर जीव दुःखी हो गये ॥

बिबुध बिलोकि दसा रघुबरकी ❀ बर्षि सुमन कहि गति घरघरकी
प्रभु प्रनाम करि दीन्ह भरोसो ❀ चले मुदित मन उर न खरोसो

जब देवताओं ने रामजी की दशाको देखा तो उन्होंने फूलोंकी वर्षा कर अपने-अपने घर की दशा को कहा। तब उन्हें प्रणाम कर श्रीरामजीने उनको भरोसा दे विदा किया ॥

दोहा–सानुज सीय समेत प्रभु, राजत परनकुटीर।
भक्ति ज्ञान वैराग्य जनु, सोहत धरे सरीर ॥३१०॥

इस प्रकार छोटे भाई लक्ष्मण और सीता सहित श्रीरामचन्द्र जी अपनी पर्णशाला में ऐसे विराजमान थे मानो भक्ति, ज्ञान और वैराग्य ही साक्षात् शरीर धारण किए विद्यमान है ॥३१०॥

मुनि महिसुर गुरु भरत भुआलू ❀ राम बिरह सब साज बिहालू
प्रभु गुनग्राम गुनत मनमाहीं ❀ सब चुपचाप चले मगु जाहीं

इधर मुनिजन और ब्राह्मणों एवं वसिष्ठजी सहित राजा एवं भरतजी श्रीरामचन्द्रजीके विरहमें अपने समाज सहित व्याकुल हुए। प्रभुके गुणोंको समझते हुए सब लोग चले जाते थे।

जमुना उतरि पार सब भयऊ ❀ सो बासर बिनु भोजन गयऊ
उतरि देवसरि दूसर बासू ❀ रामसखा सब कीन्ह सुपासू

और यमुना उतर कर सब लोग आगे चले, वह दिन बिना भोजन केही व्यतीत हुआ। दूसरे दिन गंगा उतर कर वास हुआ और फिर केवट ने सब का सत्कार किया ॥४॥

सई उतरि गोमती नहाये ❀ चौथे दिवस अवधपुर आये
जनक रहे पुर बासर चारी ❀ राजकाज सब साज सँभारी

तीसरे दिन सई उतर कर गोमती में स्नान किये और चौथे दिन अयोध्या में आये। जनकजी अयोध्या में चार दिन रह कर राजकाज सब सँभाले ॥६॥

सौंपि सचिव गुरु भरतहिं राजू ❀ तिरहुति चले साजि सब साजू
नगर नारिनर गुरुसिख मानी ❀ बसे सुखेन रामरजधानी

फिर मन्त्रियों और गुरु तथा भरतजीको राजकाज सौंपकर जनकजी अपने समाज सहित जनकपुर को चले। अयोध्या नगरके स्त्री और पुरुष सुखसे रामकी राजधानीमें रहने लगे ॥

दोहा–रामदरस लगि लोग सब, करत नेम उपवास।
तजि तजि भूषन भोग सुख, जियत अवधिकी आस ॥३११॥

श्रीरामचन्द्रजी के दर्शनों के लिये सब लोग नित्य व्रत करते और भूषण तथा भोगों के सुखों को त्याग कर केवल अवधि की आशा से ही जीवन धारण करते थे ॥ ३११ ॥

सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे ❀ निज निज काज पाइ सिख ओधे
पुनि सिख दीन्ह बोलि लघु भाई ❀ सौंपी सकल मातु सेवकाई

तब मन्त्री और सेवकों को भरतजी ने समझाया और सब ने अपना कार्य सँभाला। फिर छोटे भाई शत्रुघ्नको बुलाकर उन्होंने शिक्षा दी और उनपर सब माताओंकी सेवाका भार सौंप दिया।।

भूसुर बोलि भरत कर जोरे ❁ करि प्रनाम बर बिनय निहोरे
ऊँच नीच कारज भल पोचू ❁ आयसु देब न करब सकोचू

पश्चात् भरतजीने ब्राह्मणों को बुलाया और हाथ जोड़ प्रणाम कर विनयपूर्वक कहा, हे विप्रदेव ! जैसा भी अच्छा या बुरा कार्य क्यों न हो आप आज्ञा देते हुए संकोच न कीजिएगा ।।

परिजन पुरजन प्रजा बुलाये ❁ समाधान करि सुबस बसाये
सानुज गे गरुगेह बहोरी ❁ करि दंडवत कहत कर जोरी

फिर परिजनों और प्रजाको बुलाया और समाधान करके फिर सबको अच्छी तरहसे बसाया। और स्वयं शत्रुघ्न सहित वसिष्ठजीके घर पर जा उन्हें प्रणामकर हाथ जोड़कर बोले।।६।।

आयसु होइ तौ रहौं सनेमा ❁ बोले मुनि सुनि पुलकि सप्रेमा
समुझब कहब करब तुम जोई ❁ धर्मसार जग होइहि जोई

यदि आप की आज्ञा हो तो मैं नियमसे रहूँ, तब मुनि पुलकित हो स्नेह सहित बोले—हे भरतजी ! संसारमें जो कुछ भी सार है, आप उसको समझ कर ही करते हैं ।।८।।

दोहा—मुनिसिखपाइअसीषबड़ि, गनक बोलि दिन साधि ।
सिंहासन प्रभुपादुका, बैठारी निरुपाधि ।।३१२।।

फिर भरतजी मुनि की शिक्षा और आशीर्वाद लेकर ज्योतिषियों को बुला कर शुभ समय में श्रीरामजी की खड़ाऊँ को सिंहासन पर स्थापित किये ।।३१२।।

राममातुगुरुपद सिर नाई ❁ प्रभुपद पीठ रजायसु पाई
नंदिग्राम करि परनकुटीरा ❁ कीन्ह निवास धर्मधुर धीरा

फिर श्रीरामचन्द्र और माता कौशिल्या और वसिष्ठजी को शिर झुका तथा प्रभु की पादुका की आज्ञा लेकर भरतजी नन्दिग्राममें पर्णकुटी बनाकर बास करने लगे ।।२।।

जटाजूट सिर मुनिपद धारी ❁ महि खनि कुशसाथरी सँवारी
असन बसन आसन दृढ़ नेमा ❁ करत कठिन ब्रत धर्म सप्रेमा

शिर पर जटा-जूट और मुनियों के वस्त्र धारण किए पृथ्वी खोदकर कुशाओंका बिछौना बनाकर और व्रतके नेमसे ऋषियोंका सा कठिन व्रत तथा प्रेमसे धर्म करने लगे ।।४।।

भूषन बसन भोग सुख भूरी ❁ मन तनु बचन तजे तृन तूरी
अवधराज सुरराज सिहाहीं ❁ दसरथ धन लखि धनद लजाहीं

उन्होंने आभूषणों, वस्त्रों, भोगों और सब सुखों को तिनकेके समान त्याग दिया। अवधराज की उस बड़ाई को इन्द्र भी सराहते और दशरथका धन देखकर कुबेर भी लज्जित होने लगे ।।

तेहि पुर बसत भरत बिनु रागा ❀ चंचरीक जिमि चंपकबागा
रमाबिलास राम अनुरागी ❀ तजत बमन जिमि जन बड़भागी

भरतजी उसी नगरीमें वैराग्ययुक्त हो ऐसे बास करते थे जैसे चम्पाके बागमें भौंरा। हे पार्वतीजी! वे ही मनुष्य बड़भागी हैं कि जो संसारके ऐश्वर्यका वमनके समान त्याग देते हैं।।

दोहा—रामप्रेमभाजन भरत, बड़ी न यह करतूति।
चातक हंस सराहियत, टेक बिबेक बिभूति।।३१३।।

भरतजी श्रीरामचन्द्रजीके प्रेमपात्र हैं, उनके लिए यह करनी कुछ बड़ी बात नहीं है क्योंकि चातककी स्वाती बूंदकी टेक और हंसको क्षीर नीरका विवेक स्वभावसे ही होता है।।३१३।।

देह दिनहि दिन दूबरि होई ❀ घट न तेज बल मुखछबि सोई
नित नव रामप्रेमप्रन पीना ❀ बढ़त धर्मदल मन न मलीना

उनका शरीर दिन-दिन दुबला होता, परन्तु तेज और बल बढ़ता जाता था, मुखकी कान्ति वही थी। श्रीरामचन्द्रके चरणोंमें नित्य नवीन प्रेम और भी दृढ़ होता जाता था।।

जिमि जल निघटत सरद प्रकासे ❀ बिलसत बेत सुबनज बिकासे
सम दम संजम नेम उपासा ❀ नखत भरत हिय बिमल अकासा

जैसे शरद् ऋतुका प्रकाश होनेपर जल घटता एवं शोभायमान होता है, कमल खिल जाता है वैसे ही भरतजी के निर्मल हृदयमें संयम, नियम और व्रत तारागणोंके समान प्रकाशमान होते थे।।

ध्रुव बिस्वास अवधि राकासी ❀ स्वामिसुरति सुरबीथि बिकासी
रामप्रेम बिधु अचल अदोषा ❀ सहित समाज मोह नित चोषा

रामजीके फिर आनेका विश्वास ही मानों ध्रुवतारा है और चौदह वर्षकी अवधि तथा श्रीरामजीका प्रेम ही अचल अदोष चन्द्रमा है जो अपने समाज सहित चिरकाल तक शोभा देगा।।

भरत रहनि समुझनि करतूती ❀ भक्ति बिरति गुन बिमल बिभूती
बरनत सकल सुकबि सकुचाहीं ❀ सेष गनेस गिरागम नाहीं

भरतकी रहन-सहन, करतूति, भक्ति वैराग्य गुण और पवित्रता वर्णन करनेमें श्रेष्ठ कवि भी सकुचाते हैं और शेष तथा सरस्वतीको भी मन में हार माननी पड़ती है।।

दोहा—नित पूजत प्रभुपाँवरी, प्रीति न हृदय समाति।
माँगि माँगि आयसु करत, राजकाज बहुभाँति।।३१४।।

नित्यप्रति प्रभुकी पाँवरीको पूजते हुए भी प्रीति हृदयमें नहीं समाती और उनसे (खड़ाउँओं से) ही आज्ञा माँगकर राज्यका सब कार्य करते हैं।।३१४।।

पुलकि गात हिय सिय रघुबीरू ❀ जीह नाम जप लोचन नीरू
लषन राम सिय कानन बसहीं ❀ भरत भवन बसि तप तनु कसहीं

प्रसन्न शरीरसे मनमें सीता रामजीके प्रति आँखोंमें आँसू भरे रहते थे ।।१।। श्रीरामचन्द्र बनमें बसते थे और भरतजी घरमें ही रहकर अपने शरीरको तपस्या से कसते थे ।।२।।

दुहूँ दिसि समुझि कहत सब लोगू ❀ सब बिधि भरत सराहन जोगू
सुनि ब्रत नेम साधु सकुचाहीं ❀ देखि दसा मुनिराज लजाहीं

दोनों ओर समझ करके लोग कहते थे कि भरतजी ही सब प्रकारसे बड़ाई के योग्य हैं ।।३।। उनका व्रत, नियम और भरतजीकी दशा देखकर बड़े-बड़े मुनि भी लज्जित हो जाते थे ।।४।।

परम पुनीत भरत आचरनू ❀ मधुर मंजु मृदु मंगलकरनू
हरन कठिन कलि कलुष कलेसू ❀ महामोह निसि दलन दिनेसू

भरतजीका आचरण सुन्दर और आनन्द मंगल करनेवाला तथा कलियुगके कठिन कलुष और महामोह रूपी रात्रिको दलन करने वाला है ।।६।।

पापपुंज कुंजर मृगराजू ❀ समन सकल संताप समाजू
जनरंजन भंजन भवभारू ❀ रामसनेह सुधाकर सारू

पापों के पुंजरूपी हाथियों के लिए सिंह रूप है। भक्तोंके मनको आनन्द देने वाला तथा श्रीरामचन्द्रजीके स्नेहरूपी चन्द्रमा का सार है ।।८।।

छन्द—सियरामप्रेम पियूष पूरन होत जन्म न भरत को।
मुनिमन अगम यम नियम समदम विषम ब्रत आचरत को।।
दुख दाह दारिद दंभ दूषन सुजस मिसु अपहरत को।
कलिकाल तुलसी से सठहिं हठि रामसनमुख करत को।।१३।।

सीता और श्रीरामचन्द्रजी के स्नेहरूपी अमृतसे परिपूर्ण, ऐसे भरत का यदि जन्म न होता तो मुनीश्वरोंके मनमें भी अगम संयम, दम और कठोर व्रतको कौन करता? अपने सुयशके बहाने दुःख की ज्वाला, दरिद्रता, अहंकार आदि दोषों को कौन हरता? तुलसीदासजी कहते हैं कि इस कलिकाल में मुझ जैसे तुलसी मूर्ख को हठ से श्रीरामजी के सम्मुख कौन करता?।।

सोरठा—भरत चरित करि नेम, तुलसी जे सादर सुनहिं।
सीयराम पदप्रेम, अवसि होइ भवरस विरति।।१३।।

तुलसीदासजी कहते हैं कि जो नियमपूर्वक आदरसे भरतजीके चरित्रको सुनेंगे, उन्हें श्रीसीतारामके चरणोंमें अवश्य प्रेम होगा और संसार संबंधी विषयोके आनन्दसे विरक्ति होगी ।।

।। इति श्री अयोध्याकाण्डं समाप्तम् ।।

श्रीगणेशाय नमः

श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजी कृत–



अरण्यकाण्ड

(सर्व-सञ्जीवनी टीका-सहित)

।। मङ्गलाचरण ।।

श्लोक–मूलं धर्मतरोर्विवेकजलधेः पूर्णेन्दुमानन्ददं
वैराग्याम्बुजभास्करं त्वघहरं ध्वान्तापहं तापहम् ।
मोहाम्भोधरपुञ्जपाटनविधौ स्वःसम्भवं शङ्करं
वन्दे ब्रह्मकुलं कलङ्कशमनं श्रीरामभूपप्रियम् ।। १ ।।

धर्म वृक्षके मूल और विवेकरूपी ज्ञान-समुद्र को पूर्ण चन्द्रमा के समान, आनन्द देने वाले वैराग्यरूपी कमलके लिए सूर्य के समान, पापरूपी घोर अन्धकार को नष्ट करने वाले, तापों को हरने वाले, अज्ञानरूपी बादलों की घटा को नाश करने के लिए वायुरूप और ब्रह्मकुल के कलंक को शमन करने वाले श्रीरामजी के प्रिय शिवजी को मैं प्रणाम करता हूँ ।। १ ।।

सान्द्रानन्दपयोदसौभगतनुं पीताम्बरं सुन्दरं
पाणौ बाणशरासनं कटिलसत्तूणीरभारं वरम् ।
राजीवायतलोचनं धृतजटाजूटेन संशोभितं
सीतालक्ष्मणसंयुतं पथिगतं रामाभिरामं भजे ।। २ ।।

आनन्ददायक और मेघके समान सुन्दर शरीरवाले, पीताम्बर पहने हुए, हाथोंमें श्रेष्ठ धनुष बाण धारण किए, जिनको कमर में बाणों से भरा हुआ उत्तम तरकस शोभा पा रहा है, जिनके विशाल नेत्र हैं और शिर पर जटा-जूट शोभायमान है, जो सीताजी और लक्ष्मणजी को साथ लिए बन के मार्गमें विचरते हैं, उन आनन्द देनेवाले श्रीरामजी का मैं भजन करता हूँ ।।२।।

सोरठा–उमा राम गुन गूढ़, पंडित मुनि पावहिं बिरति ।
पावहिं मोह विमूढ़, जे हरिविमुख न धर्म रति ।। १ ।।

शिवजी बोले हे पार्वती ! श्रीरामजीके गुण गूढ़ हैं जिनसे पण्डित और मुनीश्वर भी वैराग्य को पाते हैं। और जिसका धर्ममें कुछ प्रेम नहीं है, ऐसे मूर्ख मोह को प्राप्त होते हैं ।। १ ।।

पुरजन भरत प्रीति मैं गाई ❀ मतिअनुरूप अनूप सुहाई
अब प्रभु चरित सुनहु अतिपावन ❀ करत जु बन सुरनरमुनि भावन

मैं अपनी बुद्धिके अनुसार अयोध्या निवासियों की और भरतकी अनुपम सुहावनी प्रीति का वर्णन कर चुका । अब श्रीरामजीके पवित्र चरित्रोंको सुनो जो वे बनमें सबके हेतु करते थे ।।

एकबार चुनि कुसुम सुहाये ❀ निज कर भूषन राम बनाये
सीतहिं पहिराये प्रभु सादर ❀ बैठे फटिकसिला परमादर

एक दिन श्रीरामजीने कुछ सुन्दर फूलोंको चुनकर उनके गहने बनाये, और आदर के साथ सीताजी को पहनाए, फिर वे स्वच्छ श्वेत पत्थर की शिला पर बड़े आदर के साथ बैठे ।।

सुरपतिसुत धरि वायस वेषा ❀ सठ चाहत रघुपतिबल देखा
जिमि पिपीलिका सागर थाहा ❀ महामंदमति पावन चाहा

देवराज इन्द्र के पुत्र जयन्त ने कौवे का वेश धारण किया, वह दुष्ट श्रीरामजी का बल देखना चाहता था । जैसे चींटी समुद्र का थाह लेना चाहती हो, वैसे ही उस महामन्द बुद्धि जयन्त ने रामकी थाह पाना चाहा ।।६।।

सीता चरन चोंच हति भागा ❀ मूढ़ मंदमति कारन कागा
चला रुधिर रघुनायक जाना ❀ सींक धनुष सायक संधाना

वह कौवा मूढ़ और मन्द बुद्धि होनेके कारण सीताजी के चरणों में चोंच मारकर भागा । जब रक्त बहने लगा तब रघुनाथजीको मालूम हुआ, तो उन्होंने धनुषपर सीकका बाण चढ़ाया ।।

दोहा—अति कृपाल रघुनायक, सदा दीन पर नेह ।
तासन आइ सो कीन्ह छल, मूरख अवगुनगेह ।। १ ।।

श्रीरघनाथजी तो अति कृपालु और दीनों पर सदा प्रेम करने वाले हैं । परन्तु उस मूर्ख और अवगुण के घर जयन्त ने उनसे भी छल किया ।। १ ।।

प्रेरितमंत्र ब्रह्मसर धावा ❀ चला भाजि बायस भय पावा
धरि निजरूप गयउ पितु पाहीं ❀ रामविमुख राखा तेहि नाहीं

वह ब्रह्मबाण मन्त्र से अभिमन्त्रित होकर तेजी से चला जिससे कौआ भयभीत होकर भाग चला ।।१।। वह अपना रूप धारण कर पिता इन्द्रके पास गया, परन्तु रामजी से विमुख होने के कारण इन्द्रने भी उसे नहीं रखा ।।२।।

भा निरास उपजी मन त्रासा ❀ यथा चक्रभय ऋषि दुर्वासा
ब्रह्मधाम सिवपुर सब लोका ❀ फिरा अमित व्याकुल भय सोका

वह निराश हो गया और मनमें बड़ा भय उत्पन्न हुआ जैसे चक्र के भय से दुर्वासा ऋषि भयभीत हुए थे। वह ब्रह्मपुरी, शिवपुरी सब लोकोंमें बड़े भय, शोक से व्याकुल घूमता रहा ।।४।।

काहू बैठन कहा न ओही ❀ राखि को सकै राम कर द्रोही
मातु मृत्यु पितु समन समाना ❀ सुधा होइ विष सुनु हरियाना

परन्तु किसी ने भी उसे बैठनेको न कहा क्योंकि श्रीरामजी से द्रोह करनेवाले को कौन रख सकता है ? कागभुशुंडिजी कहते हैं-हे गरुड़जी ! सुनिए, उसको माता मृत्यु और पिता यमराजके समान हो जाते हैं, और अमृत विष के समान हो जाता है ।।६।।

मित्र करै सतरिपु की करनी ❀ ताकहँ बिबुध नदी बैतरनी
सब जग ताहि अनल ते ताता ❀ जो रघुबीर बिमुख सुनु भ्राता

उसके मित्र सैकड़ों शत्रुओंके समान काम करते हैं और उसके लिए गङ्गाजी वैतरणी नदी के समान हो जाती हैं ।।७।। हे भाई ! जो श्रीरामचन्द्रजी से विमुख हैं, उनके लिये सब संसार अग्निसे भी अधिक तप्त हो जाता है ।।८।।

दोहा--जिमि जिमि भाजत सक्रसुत, व्याकुल अति दुख दीन ।
तिमि तिमि धावत रामसर, पीछे परम प्रवीन ।। २ ।।

इन्द्रका पुत्र जयन्त दीन-दुखी और व्याकुल होकर ज्यों-ज्यों भागता था, त्यों-त्यों श्रीरामचन्द्रजी का बाण भी चतुरता से पीछे-पीछे दौड़ता जाता था ।। २ ।।

बचहि उरग बरु ग्रसे खगेसा ❀ रघुपतिसर छुटि बचन अँदेसा
नारद देखा बिकल जयंता ❀ लागि दया कोमल चित संता

चाहे सर्प डसे हुएसे बच जाय, परन्तु श्रीरामजीके छोड़े हुए बाणसे बचना असंभव है । जब नारदजीने जयंत को व्याकुल देखा तो उन्हें दया लगी, सन्तजन कोमल चित्तके होते हैं ।

दूरहिंते कहि प्रभु प्रभुताई ❀ भजे जात बहुविधि समुझाई
पठवा तुरत रामपहँ ताही ❀ कहसि पुकारि प्रनतहित पाही

उन्होंने दूर ही से प्रभु श्रीरामजी की प्रभुताको कहकर भागते हुए जयंतको बहुत तरहसे समझाया ।।३।। और तुरंत श्रीरामजीके पास भेजा और कहा कि पुकार कर कहना कि हे दीनों पर दया करने वाले ! मेरी रक्षा करो ।।४।।

आतुर सभय गहेसि पद जाई ❀ त्राहि त्राहि दयालु रघुराई
अतुलित बल अतुलित प्रभुताई ❀ मैं मतिमंद जानि नहिं पाई

दुःखी और भयभीत जयतने जाकर श्रीरामजीका चरण पकड़ लिया और कहने लगा कि हे दयालु रामजी ! त्राहि माम् २आपके अनंत बल और अपार महिमाको मैं नीच बुद्धि नहीं जानसका ।।६।।

निजकृतकर्मजनित फल पायउँ ❀अब प्रभु पाहि सरन तकि आयउँ
सुनि कृपालु अतिआरत बानी ❀ एकनयन करि तजा भवानी

अपने किये हुए कर्मका फल पा गया और मैं आपकी शरण में आया हूँ, हे प्रभो ! रक्षा कीजिये।।७।। तब उसकी अत्यन्त दीन वाणी को सुनकर हे भवानी ! श्रीरामजी ने एक आँख करके उसे छोड़ दिया ।।८।।

सोरठा--कीन्ह मोहबस द्रोह, जद्यपि तेहिकर बध उचित ।
प्रभु छाँड़ेउ करि छोह, को कृपालु रघुबीरसम ।। २ ।।

उसने मोहके वश होकर द्रोह किया था, यद्यपि उसका बध करना ही उचित था तो भी प्रभुने दया करके उसे छोड़ दिया; क्योंकि श्रीरामजीके समान कृपालु और कौन है ? ।।२।।

रघुपति चित्रकूट बसि नाना ❁ चरित करत श्रुतिसुधा समाना
बहुरि राम अस मन अनुमाना ❁ होइहि भीर सबहिं मोहिं जाना

श्रीरामजीने चित्रकूटमें रहकर अनेक प्रकारके चरित्र किए, जो सुननेमें कानोंको अमृत के समान है। फिर श्रीरामजीने अपने मनमें अनुमान किया कि सबने मुझको जान लिया।

सकल मुनिन्हसन बिदा कराई ❁ सीता सहित चले दोउ भाई
अत्रीके जब आश्रम प्रभु गयऊ ❁ सुनत महामुनि हर्षित भयऊ

इसलिए सब मुनियोंसे बिदा होकर सीता सहित दोनों भाई वहाँसे चल दिये। जब प्रभु श्रीरामजी अत्रि मुनिके आश्रमपर गए, तब उनका आगमन सुनकर अत्रि मुनि बहुत प्रसन्न हुए ॥४॥

पुलकित गात अत्रि उठि धाये ❁ देखि राम आतुर चलि आये
करत दंडवत मुनि उर लाये ❁ प्रेमबारि दोउ जन अन्हवाये

महामुनि अत्रिका शरीर पुलकित हो गया और वे उठकर दौड़े, मुनिको इस प्रकार आते देखकर श्रीरामजी शीघ्रतासे आगे बढ़ गये ॥५॥ दण्डवत् करते देख मुनिने दोनों भाइयोंको हृदय से लगा लिया और प्रेमके अश्रु जलसे दोनोंको नहवा दिया ॥६॥

देखि रामछबि नयन जुड़ाने ❁ सादर निज आश्रम तब आने
करि पूजा कहि बचन सुहाये ❁ दिये मूल फल प्रभु मन भाये

श्रीरामजीकी शोभा देखकर मुनिके नेत्र शीतल हो गए तब वे उन्हें आदर सहित आश्रम में ले गये। उनकी पूजाकर सुहावने बचन कहकर मूल, फल दिए जो प्रभुके मनको अच्छे लगे।

सोरठा—प्रभु आसन आसीन, भरि लोचन सोभा निरखि।
मुनिवर परम प्रवीन, जोरि पानि अस्तुति करत ॥३॥

आसन पर विराजमान प्रभु श्रीरामजी की शोभा को नेत्रभर देखकर परम प्रवीण मुनिवर अत्रिजी हाथ जोड़कर स्तुति करने लगे ॥३॥

छन्द—नमामि भक्तवत्सलं कृपालु-शीलकोमलं
भजामि ते पदाम्बुजं अकामिनां स्वधामदम्।
निकाम-श्याम-सुन्दरं भवाम्बुनाथ-मन्दरं
प्रफुल्ल-कञ्ज-लोचनं मदादि-दोषमोचनम् ॥ १ ॥

हे भक्तवत्सल! हे कृपालु! हे कोमल शील वाले! मैं आपको नमस्कार करता हूँ! मैं आप के उन चरण-कमलों का भजन करता हूँ, जो निष्काम मनुष्यों को अपना धाम देनेवाले हैं। आप कामनाओंसे रहित और सुन्दर सांवले शरीरवाले हैं। हे नाथ! आप संसार रूपी समुद्र को मथनेवाले मन्दराचल पर्वतके समान और अहंकार आदि दोषों को छुड़ानेवाले हैं ॥१॥

प्रलम्ब-बाहु-विक्रमं प्रभोऽप्रमेयवैभवं
निषङ्ग-चाप-सायकं धरं त्रिलोक-नायकम्।
दिनेश-वंश-मण्डनं महेश-चाप-खण्डनं
मुनीन्द्र-सन्त-रञ्जनं सुरारि-वृन्द-भञ्जनम् ॥ २ ॥

हे प्रभो ! आपकी लम्बी भुजाओं का पराक्रम और वैभव असीम है ! हे तीनों लोकोंके स्वामी ! आप तरकस और धनुष बांण धारण किए हुए हैं । आप सूर्यवंशके शिरोमणि, सन्तों और मुनीश्वरोंको आनन्द देनेवाले तथा दैत्योंके समूहको नाश करनेवाले हैं ।।२।।

मनोज–वैरि–वन्दितं अजादि–देव–सेवितं
विशुद्ध-बोध-विग्रहं समस्तदूषणापहम् ।
नमामि इन्दिरापतिं सुखाकरं सतां गतिं
भजे सशक्तिसानुजं शचीपति-प्रियानुजम् ।। ३ ।।

कामदेवके वैरी महादेवजी आप की वन्दना और ब्रह्मा आदि देवगण आपकी सेवा करते हैं । आप विशुद्ध बोधके स्वरूप और सर्व दोषों को हरने वाले हैं । हे लक्ष्मीपति ! सुखके निधान और सज्जनों को गति-स्वरूप ! मैं आपको प्रणाम करता हूँ, सीताजी और छोटे भाई लक्ष्मणजीके साथ मैं आपका भजन करता हूँ, आप इन्द्रके लघु भ्राता हैं ।।३।।

त्वदंघ्रिमूल ये नराः भजन्ति हीनमत्सराः
पतन्ति नो भवार्णवे वितर्क–वीचि–संकुले ।
विविक्तवासिनः सदा भजन्ति मुक्तये मुदा
निरस्य इन्द्रियादिकं प्रयान्ति ते गतिं स्वकम् ।। ४ ।।

जो मनुष्य ईर्ष्या और द्वेष रहित हो कर आपके चरण कमलों को भजते हैं, वे इस कुतर्क रूपी लहरोंसे परिपूर्ण संसार-रूपी समुद्रमें नहीं गिरते । एकान्तवासी साधु जन मुक्तिके लिए सानन्द नित्य आपको भजते हैं और इन्द्रियादिकोंको सुख रहित करके सद्-गति को प्राप्त करते हैं ।। ४ ।।

त्वमेकमद्भुतं प्रभुं निरीहमीश्वरं विभुं
जगद्गुरुं च शाश्वतं तुरीयमेव केवलम् ।
भजामि भाववल्लभं कुयोगिनां सुदुर्लभं
स्वभक्तकल्पपादपं समस्त-सेव्यमन्वहम् ।। ५ ।।

आप ही एक अद्भुत आश्चर्यरूप प्रभु, इच्छाओंसे रहित, ईश्वर, सर्वव्यापी, जगत् के गुरु, सनातनपुरुष, तीनों अवस्थाओंसे परे, केवल तुरीयरूप हैं । हे भक्तिभावके प्यारे स्वामी ! मैं आपका भजन करता हूँ, आप कुयोगियोंके लिए अत्यन्त दुर्लभ और अपने भक्तोंके लिए कल्पवृक्षके समान प्रति दिन सेवा करने योग्य हैं ।। ५ ।।

अनूपरूपभूपतिं नतोऽहमुर्विजापतिं
प्रसीद मे नमामि ते पदाब्जभक्ति देहि मे ।
पठन्ति ये स्तवं इदं नरादरेण ते पदं
व्रजन्ति नाऽत्र संशयस्त्वदीयभक्तिसंयुतम् ।। ६ ।।

हे मनुष्यों और पृथ्वीके स्वामी और पृथ्वी की कन्या सीताजीके स्वामी श्रीरामजी ! मैं आप को प्रणाम करता हूँ । आप मुझ पर प्रसन्न हों, मुझे अपने चरण-कमलों की भक्ति

दीजिये। जो मनुष्य इस स्तुतिको आदरके साथ पढ़ते हैं, वे आपकी भक्तिसे निःसन्देह आपके परमपदको पाते हैं ॥ ६ ॥

दोहा—बिनती करि मुनि नाइ सिर, कह कर जोरि बहोरि।
चरन सरोरुह नाथ जनि, कबहुँ तजै मति मोरि ॥३॥

मुनीश्वरने विनती करके सिर नवाया और फिर हाथ जोड़ कर कहने लगे—हे नाथ! आपके चरण कमलों का हमारी भोली बुद्धि कभी त्याग न करे ॥ ३ ॥

जनम जनम तव पद सुखकंदा ❀ बढ़ौ प्रेम चकोर जिमि चंदा
देखि राम मुनि विनय प्रनामा ❀ विविधभाँति पायउ विश्रामा

आपके सुखद चरणोंमें मेरा जन्म-जन्म प्रेम ऐसा ही बढ़ता रहे जैसे चकोरका चन्द्रमासे। श्रीरामचन्द्रजीने मुनीश्वर की विनती और प्रणाम देखकर बहुत सुख पाया ॥२॥

अनुसूयाके पद गहि सीता ❀ मिली बहोरि सुसील विनीता
जो सिय सकल लोक सुखदाता ❀ अखिल लोक ब्रह्माण्ड कि माता

फिर सीताजी अनसूयाजीके पैर पकड़ कर सुशीलता और नम्रताके साथ मिलीं ॥३॥ जो सीताजी सब लोगोंको सुख देने वाली तथा संपूर्ण लोक और ब्रह्मांडकी माता हैं ॥४॥

तेउ पाइ सिय मुनिवरभामिनि ❀ सुखी भईं कुमुदिनिजिमिजामिनि
ऋषिपत्नीमन सुख अधिकाई ❀ आसिष देइ निकट बैठाई

ऐसा होकर भी सीताजी श्रेष्ठ मुनीश्वरकी स्त्रीसे मिलीं और ऐसी सुखी हुईं जैसी रात में चन्द्रमाको देखकर कमलिनी खिलती है ॥५॥ जिससे अनुसूयाजीके मनमें अधिक सुख हुआ और आशीर्वाद देकर सीताजीको अपने पास बैठा लिया ॥ ६ ॥

दिव्य बसन भूषन पहिराए ❀ जे नित नूतन अमल सुहाए
जिन्हिं निरखि दुख दूरि पराहीं ❀ गरुड़ जानि जिमि पन्नग जाहीं

उन्होंने ऐसे दिव्य कपड़े और गहने पहनाए, जो नित्य स्वच्छ और सुन्दर रहने वाले थे ॥७॥ और जिन्हें देख दुःख ऐसे ही दूर भागते हैं जैसे गरुड़को जानकर सर्प भाग जाते हैं ॥ ८ ॥

दोहा—ऐसे बसन बिचित्र सुठि, दिये सीयकहँ आनि।
सनमानी प्रियबचन कहि, प्रीति न जाइ बखानि ॥ ४ ॥

इस प्रकार सुन्दर विचित्र वस्त्र लाकर सीताजीको दिए और प्यारे वचन कहकर सत्कार किया जिस प्रेमका वर्णन नहीं किया जा सकता ॥ ४ ॥

कह ऋषिबधू सरल मृदुबानी ❀ नारिधरम कछु ब्याज बखानी
मातु पिता भ्राता हितकारी ❀ मित सुखप्रद सुनु राजकुमारी

फिर अनुसूयाजी सरल और मीठी वाणीसे स्त्रियोंके कुछ धर्म संक्षपमें कहने लगीं कि हे राजकुमारी! सुनो, माता-पिता और भाई हितकारी तो होते हैं परंतु ये सब थोड़े ही काल तक ॥२॥

अमित दानि भर्त्ता वैदेही ❀ अधम सो नारि जो सेव न तेही
धीरज धर्म मित्र अरु नारी ❀ आपतकाल परिखियहि चारी

हे वैदेही ! अपार दान देने वाला तो पति है, वह स्त्री महा नीच है जो पति की सेवा नहीं करती है ।।३।। धीरज, धर्म, मित्र और स्त्री इन चारोंकी विपत्तिके समयमें परीक्षा होती है ।।४।।

वृद्ध रोगवस जड़ धनहीना ❀ अन्ध बधिर क्रोधी अतिदीना
ऐसेहु पतिकर किय अपमाना ❀ नारि पाव जमपुर दुख नाना

बूढ़ा, रोगी, दरिद्री, अन्धा, बहिरा, क्रोधी और अत्यन्त दुःखी ऐसे पति का भी अपमान करनेसे स्त्री यमलोक में अत्यन्त दुःख पाती है ।। ६ ।।

एकै धर्म एक व्रत नेमा ❀ काय बचन मन पतिपद प्रेमा
जग पतिव्रता चारि विधि अहहीं ❀ वेद पुरान संत अस कहहीं

स्त्रीके लिये एक ही धर्म, एक ही व्रत और एक ही नियम है कि कर्म, वचन और मनसे पतिके चरणोमें प्रेम करे ।। ७ ।। वेद, पुराण और सन्त ऐसा कहते हैं कि संसारमें चार तरहकी स्त्रियाँ होती हैं ।। ८ ।।

दोहा-उत्तम मध्यम नीच लघु, सकल कहउँ समुझाइ ।
आगे सुनहिं ते भव तरहिं, सुनहु सीय चित लाइ ।।५।।

हे सीता ! चित्त लगाकर सुनो । उत्तम, मध्य, नीच, लघु सब समझाकर कहती हूँ और जो आगे सुनेंगी वे भी संसारसे तर जायँगी ।। ५ ।।

उत्तमके अस बस मनमाहीं ❀ सपनेहुँ आन पुरुष जग नाहीं
मध्यम परपति देखहिं कैसे ❀ भ्राता पिता पुत्र निज जैसे

उत्तम स्त्रीके मनमें ऐसी बात रहती है कि पति के सिवा संसारमें दूसरे पुरुष स्वप्नमें भी नहीं हैं । मध्यम श्रेणीकी स्त्री पराये पतिको ऐसे देखती है जैसे अपने भाई पिता पुत्रको ।। २ ।।

धर्म बिचारि समुझि कुल रहहीं ❀ सो निकृष्ट तिय श्रुति अस कहहीं
बिनु अवसर भयते रह जोई ❀ जानेहु अधम नारि जग सोई

वेद ऐसा कहते हैं कि जो स्त्री अपने धर्मको बिचारकर और कुलकी प्रतिष्ठाको समझकर कुमार्गमें पैर रखनेसे रह जाती है वह नीच है और जो अवसर न मिलने या भयके कारण कुमार्गमें जानेसे रह जाती है संसारमें उन स्त्रियोंको अधम जानना चाहिये ।। ४ ।।

पतिबंचक परपतिरति करई ❀ रौरव नरक कल्पसत परई
छिनसुख लागि जनम सतकोटी ❀ दुख न समुझ तेहि सम को खोटी

जो स्त्री अपने पतिसे छल करके दूसरे पतिसे प्रेम करती है वह सौ कल्प तक घोर नरकमें पड़ती है ।। जो क्षणिक सुखके लिये सौ करोड़ जन्मोंके दुःखको नहीं जानती उसके समान खोटी कौन है ? ।। ६ ।।

बिनु श्रम नारि परमगति लहई ❀ पतिब्रतधरम छाँड़ि छल गहई
पति प्रतिकूल जनमि जहँ जाई ❀ विधवा होय पाइ तरुनाई

वह स्त्री बिना परिश्रम ही परमगतिको पाती है जो छल छोड़कर पातिव्रत धर्मको ग्रहण करती है ।।७।। परन्तु जो पतिके प्रतिकूल रहती है वह जहां जन्म लेती है वहां युवावस्था में ही विधवा हो जाती है ।। ८ ।।

सोरठा--सहज अपावनि नारि, पति सेवत सुभगति लहहिं ।
जस गावत श्रुति चारि, अजहुँ तुलसिका हरि प्रिया ।।४।।

स्त्रियाँ स्वभावसे ही अपवित्र हैं परन्तु पतिकी सेवा करनेसे शुभ गतिको प्राप्त कर लेतीं हैं । चारों वेद उनका यश गाते हैं, इसीसे आज भी तुलसीजी भगवान्‌को प्यारी हैं ।।४।।

सोरठा--सुनु सीता तव नाम, सुमिरि नारि पतिब्रत करहिं ।
तुम्हहिं प्रानप्रिय राम, कहेउँ कथा संसार-हित ।।५।।

हे सीता ! सुनो, तुम्हारा स्मरणकर स्त्रियाँ पातिव्रत धर्मको धारण करेंगी । तुम्हें श्रीरामचन्द्र प्राणोंके समान प्रिय हैं, मैंने तो यह कथा संसारके हितके लिए कही है ।।५।।

सुनि जानकी परम सुख पावा ❀ सादर तासु चरन सिर नावा
तब मुनिसन कह कृपानिधाना ❀ आयसु होइ जाउँ बन आना

यह सुनकर सीताजीने अत्यन्त सुख पाया और आदरके साथ उनके चरणोंमें शिर नवाया । तब कृपानिधान श्रीरामचन्द्रजीने मुनिसे कहा कि अब आज्ञा हो तो दूसरे बनमें जाऊँ ।।२।।

संतत मोपर कृपा करेहू ❀ सेवक जानि तजेहु जनि नेहू
धर्मधुरन्धर प्रभुकै बानी ❀ सुनि सप्रेम बोले मुनि ज्ञानी

मेरे ऊपर सदैव कृपा करते रहिएगा और अपना सेवक जानकर प्रेम न छोड़िएगा ।। ३ ।। तब धर्मधुरंधर प्रभु श्रीरामचन्द्रजीकी वाणी सुनकर ज्ञानी मुनि प्रेमसे बोले कि ।।४।।

जासु कृपा अज सिव सनकादी ❀ चहत सकल परमारथबादी
ते तुम राम अकाम पियारे ❀ दीनबंधु मृदु बचन उचारे

जिसकी कृपा ब्रह्माजी, महादेवजी और सनकादिक भी चाहते हैं वे राम आप ही हैं, जो कामना रहित पुरुषोंको प्यारे और दीनोंके बन्धु हैं, इन कोमल वचनोंका उच्चारण किया है ।।

अब जानी मैं श्रीचतुराई ❀ भजिय तुम्हहिं सब देव बिहाई
जेहि समान अतिसय नहिं कोई ❀ ताकर सील कस न अस होई

अब मैंने लक्ष्मीजीकी चतुराईको समझ लिया इसलिए तो वे सब देवताओंको त्यागकर आपका ही भजन करती हैं कि जिनके समान कोई नहीं है उसका स्वभाव ऐसा क्यों न होगा ।।

केहि विधि कहौं जाहु अब स्वामी❀ कहहु नाथ तुम अन्तर्यामी
अस कहि प्रभु बिलोकि मुनिधीरा❀ लोचन जल बह पुलक सरीरा

हे स्वामी ! मैं किस प्रकार कहूँ कि जाओ, हे नाथ ! आप ही कहिए, आप तो अन्तर्यामी हैं । ऐसा कहकर अत्रिजीने रामजीकी ओर देखा तो आंखोंमें जल बहने लगा, शरीर पुलकित हो गया ।

छन्द--तन पुलक निर्भरप्रेमपूरन नयन मुखपंकज दिये ।
मन ज्ञान गुन गोतीत प्रभु मैं दीख जप तप का किये ।।
जप जोग धरमसमूह ते नर भक्त अनुपम पावई ।
रघुबीर चरित पुनीत निसि दिन दास तुलसी गावई ।।७।।

मुनिश्रेष्ठ अत्रि ऋषिका देह रोमांचित होकर परम प्रीतिसे भर गया और आँखें भगवान् के कमल सरीखे मुखकी ओर लग गईं, मुनि अपने हृदयमें चिंता करने लगे कि ऐसा मुझसे कौन-सा जप-तप बन गया कि जिससे इन्द्रियोसे अगोचर प्रभुका प्रत्यक्ष दर्शन मिला, तुलसीदासजी कहते हैं, जिस जप-योगसे मनुष्य श्रीरामचन्द्रजीको भक्तिको पाते हैं, मैं दास बनकर भगवान् श्रीरामचन्द्रजीके चरित्रका यथाशक्ति निरन्तर गान करता हूँ ।।७।।

दोहा—कलिमल समन दमन मन, रामसुजस सुखमूल ।
सादर सुनहिं जे ताहिपर, राम रहहिं अनुकूल ।। ६ ।।

जो मनुष्य कलियुगके पापोंके नाश करने वाले और मनके सारे विकारोंको दमन करने वाले सुखके मूल श्रीरामचन्द्रजीके सुयशको आदर पूर्वक सुनेंगे उन पर रामजी अनुकूल रहेंगे ।।६।।

सोरठा—कठिनकाल मलकोष, धर्म न ज्ञान न जोग जप ।
परिहरि सकल भरोस, राम भजहिं ते चतुर नर ।। ६ ।।

यह कठोर कलिकाल सारे पापोंका खजाना है, इसमें धर्म, ज्ञान, योग और जप नहीं है । अतएव सब आशाओंको छोड़ जो श्रीरामचन्द्रजीका भजन करते हैं वही श्रेष्ठ गिने जाते हैं ।६।

दोहा—मुनिहुँकि अस्तुति कीन्ह प्रभु, दीन्ह सुभग वरदान ।
सुमनवृष्टि नभसंकुल, जय जय कृपानिधान ।। ७ ।।

ईश्वर श्रीरामचन्द्रजी ने मुनि की स्तुतिकर उन्हें सुन्दर वरदान दिए तो पुष्टवृष्टि से आकाश आच्छादित हो गया और ऐसे सुन्दर शब्द होने लगे कि, हे दयानिधान ! आपकी जय हो, जय हो ।।७।।

मुनिपदकमल नाइ करि सीसा ❁ चले बनहिं सुर नर मुनि ईसा
आगे राम अनुज पुनि पाछे ❁ मुनिवरवेष बने अति आछे

तब देवताओं, मुनीश्वरों और मनुष्यों के स्वामी उन ईश्वर एवं भगवान् रामने मुनिराजके चरणोंको प्रणामकर दंडक बनको प्रस्थान किया ।।१।। आगे रामचन्द्रजी पीछे लक्ष्मण मुनियोंका-सा सुन्दर वेश धारण किये थे ।।२।।

उभय बीच सिय सोहति कैसी ❁ ब्रह्मजीव बिच माया जैसी
सरिता बन गिरि अवघट घाटा ❁ पति पहिचानि देहिं बर बाटा

उन दोनों के मध्यमें सीता वैसी ही शोभायमान हो रही हैं जैसी ब्रह्म और जीवके मध्यके माया शोभा देती है ।।३।। नदी, वन, पर्वत तथा ऊँचे मार्ग ईश्वर रामचन्द्रको पहचानकर सुन्दर बना देते हैं ।।४।।

जहँ जहँ जाहिं देव रघुराया ❁ करहिं मेघ नभ तहँ तहँ छाया
आस्रम विपुल दीख बनमाहीं ❁ देवसदन तेहि बटतर नाहीं

ईश्वर राम जहां-जहां जाते हैं बादल आकाशमें छाया कर देते ।।५।। श्रीरामचन्द्रजीने बनमें बहुत-से ऐसे भी स्थान देखे कि जिनके समान देवताओंके स्थान एवं घर नहीं थे ।।६।।

बहु तड़ाग सुंदर अमराई ❁ भाँति भाँति सब मुनिन्ह लगाई
दिव्य विटप फल चहुँ दिसि सोहैं ❁ देखत सकल सुरन मन मोहैं

तेहि दिन प्रभु तहँ कीन निवासा ❁ सकल मुनिन मिलि कीन्ह सुपासा

ऐसे भी बहुतसे तालाब थे कि जिनपर मुनियोंने तरह-तरहसे सुन्दर आमके बगीचे लगा रखे थे ।।७।। सब ओर वृक्षोंपर सुन्दर फल लटक रहे थे जिन्हें देख सब देवताओंके भी मन मोहित हो जाते थे ।। ८ ।। इससे ईश्वर राम उस दिन वहाँ ही ठहर गए और समस्त मुनीश्वरोंने मिलकर उनको व्यवस्था की ।।९।।

दोहा–निज निज आस्रम वेदिका, तेहिपर तुलसि विराज ।
अनुजजानकी सहित तहँ, राजत भे रघुराज ।।८।।

सबने अपने-अपने आश्रममें बेदियाँ बनाईं तथा बनपर तुलसीके वृक्ष लगाकर शोभित कर दिये । छोटे भ्राता लक्ष्मण और सीता-सहित श्रीरामचन्द्रजी वहाँ शोभित हुये ।।८।।

आनि सुआसन मुदित मन, पूजि पहुनई कीन्ह ।
कंद मूल फल अमियसम, आनि रामकहँ दीन्ह ।। ९ ।।

मुनियोने सुन्दर आसन पर बिठाकर उनको पूजा की कौर सत्कार किया तथा अमृतके समान कन्दमूल फल लाकर रामचन्द्रजीको दिये ।।९।।

अनुजसीय सह भोजन कीन्हा ❁ जो जेहि भाव सुभग वर दीन्हा
होत प्रभात मुनिन्ह सिर नावा ❁ आसीर्वाद सबहिसन पावा

तब छोटे भाई लक्ष्मण और सीता सहित श्रीरामचन्द्रजीने भोजन किया और जिसे जो अच्छा लगा उसे वैसा सुन्दर वर दिया ।।१।। प्रातःकाल होते ही मुनियों को शिर नवाकर सब से आशीर्वाद प्राप्त किये ।।२।।

सुमिरि उमापति सिद्धि गनेसा ❁ पुनि प्रभु चले सुनहु विहगसा
बन अनेक सुन्दर गिरि नाना ❁ लाँघत चले जाइँ भगवाना

कागभुशुण्डीजी कहते हैं–हे गरुड़ ! सुनो, फिर सिद्धिदाता गनेश और श्रीशिवजी का स्मरणकर भगवान् चले ।।३।। और अनेकों वन और सुन्दर पर्वतोंको पार करने लगे ।।४।।

मिला असुर बिराध मगु जाता ❁ गर्जत घोर कठोर रिसाता
रूप भयंकर मानहु काला ❁ बेगवंत धायउ जिमि ब्याला

उस मार्गके चलनेमें उनको राक्षस विराध आ मिला जिसने क्रुद्ध होकर बड़ी भयंकर गर्जना की ।।५।। ऐसा भयंकर कि मानों साक्षात् काल ही है, और सर्पके समान शीघ्रता से उनकी ओर दौड़ा ।।६।।

गगन देव मुनि किन्नर नाना ❁ तेहि छिन हृदय हारि भय माना
तुरतहिं सो सीतहिं लै गयऊ ❁ रामहृदय कछु विस्मय भयऊ

यह देख आकाशवासी देवता, मुनि और किन्नर उस समय हृदयसे हारकर भयभीत हो गये ।।७।। और वह तत्क्षण ही सीता को हर ले गया जिससे श्रीरामचन्द्रजी के मनमें कुछ आश्चर्य हुआ ।।८।।

समुझि हृदय कैकेयि कुकरनी ❁ कही अनुजसन बहुबिधि बरनी
बहुरि लषन रघुवरहिं प्रबोधा ❁ पाँच बान छाँड़े करि क्रोधा

उस समय रामजी ने मनमें केकेयीकी दुष्ट करनी को समझकर लक्ष्मण से बहुत प्रकार वर्णन किए ।।९।। जिसपर लक्ष्मणजी ने अनेक प्रकार का उन्हें सम्बोधन देते हुए उस दुष्ट पर क्रुद्ध हो पाँच बाणों को चलाये ।।१०।।

छन्द–भए क्रुद्ध लषन सँधानि धनु सर मारि तेहि ब्याकुल कियो।
पुनि उठि निसाचर राखि सीतहिं सूल लै छाँड़त भयो ।।
जनु कालदंड कराल धावा विकल सब खग मृग भये।
धनु तानि श्रीरघुबंसमनि पुनि मारि तन जर्जर किये ।।८।।

इस प्रकार श्रीलक्ष्मणजीने क्रुद्ध हो धनुष का संधान किया तो बाणोसे मारकर उस विराधको व्यथित कर दिया, जिससे उस राक्षसने सीताजी को पृथ्वी पर रखकर त्रिशूल लेकर उसे फेंकते हुए ऐसा ज्ञान हुआ कि साक्षात् यमराज ही दौड़ा हुआ आता हो जिसे देख समस्त पशु-पक्षी व्याकुल हो गए। तब श्रीरामचन्द्रजीने धनुष उठाकर बाणों से मारते हुए उसके शरीर को जर्जर कर दिये ।।८।।

दोहा--बहुरि एक सर मारेऊ, परा धरनि धुनि माथ।
उठा प्रबल सो गर्जेऊ, चलउ जहाँ रघुनाथ ।। १० ।।

साथ ही एक बाणसे उसके सिर को काट गिराये जो पृथ्वी पर धराशायी हो गया। परन्तु वह फिर उठा और घोर गजन करता हुआ श्रीरामचन्द्रजी पर टूट पड़ा ।।१०।।

ऐसे कहत निसाचर धावा ❁ अब नहिं बचहु तुमहिं मैं खावा
आव प्रबल जेहि विधि जनु भूधर❁ होइहि कहा कहहि व्याकुल सुर

वह निशाचर ऐसा कहतां हुआ दौड़ा कि, अब तुम नही बच सकते और मैं तुम्हें खा जाऊँगा ।।१।। वह पर्वताकार और ऐसा बलवान् था कि उसे देख देवताओंको दुःख हुआ और वे कहने लगे कि नहीं ज्ञात कि यह क्या होने वाला है ! ।।२।।

तासु तेज सतमरुत समाना ❁ टूटहिं तरु बहु उड़हिं पषाना
जीव जंतु जहँ लगि रहे जेते ❁ व्याकुल भाग चले सब तेते

सैकड़ों आंधीके समान उसका वेग था जिससे पत्थर टूटने और वृक्ष गिरने लगे ।।३।। उससे भयभीत सभी जीव-जन्तु भाग चले ।।४।।

उरगसमान जोरि सर साता ❁ आवत ही रघुबीर निपाता
तुरतहि रुचिर रूप तेहि पावा ❁ देखि दुखी निजधाम पठावा

तब तो श्रीरामचन्द्रजीने अपने सात सर्पाकार बाण चलाकर उसे आते ही मृत्यु के हवाले कर दिए ।।४।। जिसने मरते ही फिर सुन्दर रूप धारण कर लिया और बड़ा दुःखी हुआ। तब तो श्रीरामचन्द्रजीने उसे अपने धामको भेज दिया ।।६।।

तासु अस्थि गाड़ेउ प्रभु धरनी ❁ देव मुदित लखि प्रभु की करनी
साता आइ चरन लपटानी ❁ अनुज सहित तब चले भवानी

उसकी अस्थियोंको (हड्डियों को) भगवान् ने पृथ्वीमें गाड़ दिया। ईश्वर की उस कीर्ति को देखकर देवताओं को प्रसन्नता हुई ।।७।। शिवजी ने कहा–हे पार्वती ! तब सीताजी आकर श्रीरामजीके चरणोंमें लिपट गयी और लक्ष्मणको साथ लेकर आये चले ।।८।।

इहाँ शक्र जहँ मुनि सरभंगा ❁ आये सकल देव मुनि संगा
गए कहन प्रभु देन सिखावन ❁ दिसि बल भेद बसत जहँ रावन

यहाँ इन्द्र सब देवताओं और मुनियोंको साथ लेकर शरभंग मुनि जहाँ रहते थे वहाँ आये ॥९॥ वे उन ईश्वर श्रीरामचन्द्रजीको "रावण किधर रहता है और उसका क्या पराक्रम है"-यह भेदकी बातें बताने गए थे ॥१०॥

दोहा--सुरपति संसय तिमिरसम, रघुपति तेज दिनेस।
रावनजीवन निसासम, बीते छुटहि कलेस ॥ ११ ॥

यद्यपि इन्द्रका यह अन्धकारवत् भ्रम था; क्योंकि श्रीरामचन्द्रजी तो स्वयं ही सूर्यवत् तेजस्वी थे। और रावण का जीवन तो रात्रिके समान था कि जिसके व्यतीत होते ही देवताओं का कष्ट दूर हो जाता ॥११॥

सुनासीर प्रभु तेहि छिन वेषा ❁ तेज निधान सुभ्र अति वेषा
तुरग चारि बल मरुत समाना ❁ रथ रबिसम नहिं जाइ बखाना

तब इन्द्रको स्वामी रामने देखा कि, वह विशाल शरीर कोई तेज पुंजधारी श्वेत वेश वाले हैं ॥१॥ सूर्यवत् उनका रथ कि, जिसमें वायुके समान बलवान् और तीव्रतर चार घोड़े जुते हुए थे जिनका यहाँ वर्णन नहीं हो सकता ॥२॥

छिति न परत अंतरहित रहई ❁ स्वेत छत्र चामर सिर ढरई
अनुजहिं प्रियहिं कहा समझाई ❁ सुरपतिमहिमा गुन प्रभुताई

उनका रथ पृथ्वी को स्पर्श किये बिना ही अधर में चला आ रहा था जिस पर श्वेत छत्र लगे हुए थे और शिर पर चँमर (चवँर) हो रही थी ॥३॥ यह देख श्रीरामचन्द्रजी इन्द्रकी प्रभुता और गुणोंको लक्ष्मण तथा सीताजीसे समझाकर कहने लगे ॥४॥

जेहि कारन बासव तहँ आए ❁ सो कछु बचन कहै नहिं पाए
बीचहि सुनि आउब प्रभु केरा ❁ कहि सारथिहिं तुरत रथ फेरा

परन्तु जिस कारण इन्द्र वहाँ आए थे उस बातको रामजी कुछ कह भी नहीं सके थे कि इतने ही में ॥५॥ प्रभु रामके आगमन की बातको सुनकर इन्द्रने सारथीसे रथ को लौटा देने की आज्ञा दी और उसने रथ को लौटा दिया ॥६॥

दूरहिते करि प्रभुहिं प्रनामा ❁ हर्षि सुरेस गयउ निजधामा
पुनि आये जहँ मुनि सरभंगा ❁ सुन्दर अनुज जानकी संगा

तब दूर ही से उन ईश्वरको दण्डवत् एवं प्रणाम करते हुए इन्द्र स्वस्थानको चले गए ॥७॥ फिर सीता और सुन्दर भाई लक्ष्मणको साथ लिए शरभंग मुनि के आश्रम पर आये ॥८॥

दोहा--देखि राम मुख पंकज, मुनिवर लोचन भृंग।
सादर पान करत अति, धन्य जन्म शरभंग ॥ १२ ॥

तब भगवान् श्रीरामचन्द्रजीके मुखारविंदका दर्शन करके शरभङ्ग मुनिके नेत्ररूपी भौंरे छविरूपी मकरन्दका आदर सहित पान करने लगे। ऐसे शरभङ्गके जन्मको धन्यवाद है ॥१२॥

कह मुनि सुनु रघुबीर कृपाला ❁ शंकर मानस राज मराला

जात रहेउ बिरंचि के धामा ❋ सुनेउँ श्रवण बन आवत रामा

मुनिवर बोले कि हे कृपालु श्रीरामचन्द्रजी ! सुनिये ! मैं ब्रह्माजीके स्थानको जा रहा था तो मैंने यह बात अपने कानोंसे सुना कि श्रीरामचन्द्रजी बनमें आ रहे हैं ।।२।।

चितवत पंथ रहेउँ दिनराती ❋ अब प्रभु देखि जुड़ानी छाती
नाथ सकल साधन मैं हीना ❋ कीन्हीं कृपा जानि जन दीना

हे प्रभो ! मैं दिन-रात आपकी बाट देखता रहा, अब आपका दर्शन करके मेरी छाती ठंडी हुई ।।३।। मैं सब साधनोंसे हीन हूँ, मुझको आपने केवल दीन सेवक जानकर ही कृपा की है ।।४।।

सो कछु देव न मोर निहोरा ❋ निजप्रन राखेउ जन मन चोरा
तब लगि रहहु दीनहित लागी ❋ जब लगि मिलौं तुम्हहि तनु त्यागी

सो हे देव ! इसमें कुछ मेरा निहोरा नहीं है, हे भक्तोंके चितचोर ! यह आपने अपना ही प्रण रखा है ।।५।। हे नाथ ! आप मुझ गरीबकी भलाईके लिए तब तक यहाँ रहिए कि जब-तक मैं देह छोड़कर आपमें मिल जाऊँ ।।६।।

जोग जज्ञ जप तप ब्रत कीन्हा ❋ प्रभु कहँ देइ भक्ति वर लीन्हा
इहिविधि सर रचि मुनिसरभंगा ❋ बैठे हृदय छाँड़ि सब संगा

मुनिराजने शरीरसे जो कुछ योग, यज्ञ, तप और व्रत इत्यादि किए थे, वे सब प्रभुकी श्रीरामचन्द्रजीको समर्पण करके उनसे भक्तिका वर लिया ।। ७ ।। और सब वासनाओं को त्यागकर शरभङ्गमुनि सर चितापर हृदयसे सब बासना छोड़ उस पर बैठ गये ।। ८ ।।

दोहा—सीता अनुज समेत प्रभु, नील जलज तनु श्याम ।
मम हिय बसहु निरंतर, सगुनरूप श्रीराम ।। १२ ।।

श्रीजानकीजी और लक्ष्मण सहित नीले बादल के समान श्याम शरीर वाले सगुण रूप भगवान् श्रीरामचन्द्रजी ! आप मेरे हृदय में निवास करिये ।। १३ ।।

अस कहि योग अगिनि तनु जारा ❋ रामकृपा बैकुंठ सिधारा
ताते मुनि हरिलीन न भयऊ ❋ प्रथमहिं भेद भक्ति वर लयऊ

ऐसा कह मुनिवर शरभंगजी अपने शरीर को योगाग्नि द्वारा भस्म कर राम-कृपासे बैंकुण्ठ सिधारे ।।१।। श्रीहरिमें इस कारण लीन नहीं हुए कि उन्होंने पहले ही भेद-भक्ति का वर मांग लिया था ।।२।।

ऋषिनिकाय मुनिवर गति देखी ❋ सुखी भयें निज हृदय विशेषी
अस्तुति करहिं सकल मुनि वृन्दा ❋ जयति प्रनतहित करुना कंदा

समस्त ऋषि-मुनि शरभंगजीकी यह गति देखकर अपने हृदय में बहुत सुखी हुए । मुनियों के समूह स्तुति करने लगे कि हे प्रणतपाल, हे करुणाकन्द ! आपकी जय हो ।। ४ ।।

पुनि रघुनाथ चले बन आगे ❋ मुनिवरवृंद पुलकि सँग लागे
अस्थि समूह देखि रघुराया ❋ पूछा मुनिन्ह लागि अति दाया

फिर श्रीरामजी वन को चल दिये और मुनियोंके समूह पुलकित होकर उनके साथ चले। तब आगे जाने पर हड्डियोंके ढेर पड़े हुए देखकर श्रीरामचन्द्रजीको बड़ी दया आई तो मुनियोंसे जो पूछा तो

जानतहू का पूछहु स्वामी ❋ समदरसी उर अन्तरजामी
निसिचर सकल मुनिन कहँ खाए ❋ सुनि रघुनाथ नयन जल छाए

मुनियोंने कहा, हे स्वामी! हे समदर्शी ! आप सारी बात जानते हैं फिर क्या पूछते हैं। हे नाथ ! राक्षसोंने सब मुनियों को खा डाला, यह सुनकर रामजीके नेत्रोंमें जल भर आया ।।

दोहा—निसिचरहीन करौं महि, भुज उठाइ प्रन कीन्ह ।
सकल मुनिन्हके आश्रम, जाइ जाइ सुख दीन्ह ।। १४ ।।

तब भगवान् श्रीरामचन्द्रजीने "इस पृथ्वी को राक्षसोंसे हीन करूँगा" भुजा उठाकर ऐसा प्रण किए और सब मुनियोंके आश्रम पर जा-जाकर उन्हें सुख दिये ।। १४ ।।

मुनि अगस्त्यकर शिष्य सुजाना ❋ नाम सुतीछन रत भगवाना
मन क्रम बचन रामपदसेवक ❋ सपनेहुँ आन भरोस न देवक

अगस्त्य मुनिके शिष्य सुतीक्ष्ण थे, जिनको भगवान्‌के विषयमें अनन्य भक्ति थी। यह मन क्रम वचनसे श्रीरामचन्द्रजीके सेवक थे, जो अन्य देवता का भरोसा स्वप्नमें भी नहीं करते थे ।।

प्रभु आगमन श्रवन सुनि पावा ❋ करत मनोरथ आतुर धावा
हे विधि दीनबंधु रघुराया ❋ मोसे सठपर करिहहिं दाया

उन्होंने ज्योंही श्रीरामचन्द्रजी का आना सुना कि अनेक प्रकार के मनोरथ करते हुए दौड़े और मनमें सोचने लगे कि श्रीरामचन्द्रजी क्या मुझ सरीखे शठ पर दया करेंगे ? ।। ४ ।।

सहित अनुज मोहिं राम गुसाईं ❋ मिलिहहिं निज सेवककी नाईं
मोर जिय भरोस दृढ़ नाहीं ❋ भक्ति न बिरतिज्ञान मनमाहीं

क्या छोटे भाई लक्ष्मण सहित श्रीरामचन्द्रजी मुझसे अपने सेवकके सप्रान मिलेंगे ? मेरे जी को पक्का भरोसा नहीं होता कारण कि मेरे हृदयमें भक्ति, वैराग्य, ज्ञान कुछ भी साधन नहीं है ।।

नहिं सतसंग जोग जप जागा ❋ नहिं दृढ़ चरण कमल अनुरागा
एक बानि करुनानिधानकी ❋ सो प्रिय जाके गति न आनकी

न सत्सङ्ग है, न योग है, न जप है, न प्रभुके चरणारविन्दों की पक्की प्रीति है। परन्तु करुणानिधानकी एक टेक है कि जिसको दूसरे का सहारा नहीं है, वह उनको प्रिय होता है।।८।।

छन्द—सोउ परमप्रिय अतिपातकी जिन्ह कबहुँ प्रभु सुमिरन कर्‌यो ।
ते आजु मैं निजनयन देखौं पूरि पुलकित हिय भर्‌यो ।।
जे पदसरोज अनेक मुनि करि ध्यान कबहुँक आवहीं ।
ते राम श्रीरघुवंशमनि प्रभु प्रेमते सुख पावहीं ।।९।।

श्रीरामचन्द्र को वह पातकी भी प्रिय है जिसने कभी भी प्रभ का स्मरण न किया हो

सो आज मैं उन्हें अपनी आँखोंसे देखूंगा यह कहते-कहते हृदय पूर्ण पुलकित हो गया। जिनके चरणारविन्द को अनेक भाँति ध्यान करने भी मुनियों के हृदय में कभी ही आते वे रघुवंश-मणि श्रीरामचन्द्रजी प्रेम से ही सुख पाते अर्थात् प्रसन्न होते हैं ॥ ६ ॥

दोहा—पन्नगारि सुनु प्रेम सम, भजन न दूसर आन।
यह विचारि मुनि पुनि पुनि, करत रामगुनगान ॥१५॥

(काकभुशुण्डिजी कहते हैं) हे गरुड़जी ! प्रेमके समान दूसरा और कोई भजन नहीं है, यह विचार कर मुनि लोग बारम्बार श्रीरामजी के गुण गाया करते हैं ॥ १५ ॥

होइहिं सफल आजु मम लोचन ❀ देखि वदनपंकज भवमोचन
निभर प्रेम-मगन मुनि ज्ञानी ❀ कहि न जाइ सो दसा भवानी

सुतीक्ष्ण अपने हृदयमें सोचते हैं कि आज श्रीरघुनाथजी का दर्शन करके मेरे नेत्र सफल होंगे। महादेवजीने कहा, हे पार्वती ! प्रेममें निमग्न ज्ञानी मुनि सुतीक्ष्ण की दशा कही नहीं जाती ॥

दिसि अरु विदिसि पंथ नहिं सूझा ❀ को मैं चलेउँ कहाँ नहिं बूझा
कबहुँक फिरि पीछे पुनि जाई ❀ कबहुँक नृत्य करै गुन गाई

दिशा-विदिशामें मार्ग नहीं सूझता, वे नहीं समझते कि मैं कौन हूँ और कहाँ जा रहा हूँ। कभी लौट कर पिछाड़ी को चले जाते और कभी गुणानुवाद कर नृत्य करते हैं ॥

अविरल प्रेम भक्ति मुनि पाई ❀ प्रभु देखहिं तरु ओट लुकाई
अतिसय प्रीति देखि रघुबीरा ❀ प्रगटे हृदय हरन भवपीरा

मुनिवर सुतीक्षणने अविरल भक्ति पाई और प्रभु श्रीरामचन्द्रजी वृक्ष के ओट में खड़े हो कर देख रहे थे ॥ ५ ॥ मुनि को परम प्रीति देख भव पीरके हर्त्ता श्रीरामजी उनके हृदय में प्रकट हो गये ॥ ६ ॥

मुनि मगु माँझ अचल होइ बैसा ❀ पुलकि सरीर पनस फल जैसा
तब रघुनाथ निकट चलि आये ❀ देखि दशा निजजन मन भाये

श्रीरामजीके प्रकट होते ही मुनि मार्गमें निश्चल होकर बैठ गये, शरीर पुलकित हो गया। तब श्रीरामचन्द्रजी उनके समीप चले आये और अपने दास की दशा देख कर मनमें प्रसन्न हुए ॥

सोरठा—राम सुसहज सुभाव, सेवक दुख दारिद दमन।
मुनिसन प्रभु कह आव, उठ उठ द्विज मम प्रानसम ॥७॥

श्रीरामचन्द्रजी तो सहज स्वभाव ही से दासोंके दुःख दरिद्रको नाश करने वाले हैं। वे भगवान् मुनीश्वरसे कहने लगे कि हे ब्राह्मण ! आओ, उठो, उठो तुम मेरे प्राणोंके समान प्रिय हो ॥७॥

मुनिहिं राम बहु भाँति जगावा ❀ जाग न ध्यानजनित सुख पावा
भूप रूप तब राम दुरावा ❀ हृदय चतुर्भुज रूप दिखावा

मुनि को श्रीरामचन्द्रजी ने अनेक तरह से जगाया पर मुनि ध्यानके सुखमें मगन होनेसे नहीं जागे। तब श्रीरामचन्द्रजीने मुनिके हृदयमें राजा का रूप छिपा कर चतुर्भुज रूप दिखाया ॥ २ ॥

मुनि अकुलाइ उठा तब कैसे ❀ विकल होत फनि मनि बिनु जैसे
आगे देखि रामतनु स्यामा ❀ सीताअनुजसहित सुखधामा

तब तो मुनि अकुलाकर ऐसे उठे कि जैसे सर्प मणि के बिना विकल हो उठता है। तब सीता और लक्ष्मण सहित सुखधाम श्याम शरीर श्रीरामचन्द्रजीको आगे देखकर ॥४॥

परेउ लकुट इव चरनन्ह लागी ❀ प्रेममगन मुनिवर बड़भागी
भुजविसाल गहि लिए उठाई ❀ परम प्रीति राखे उर लाई

दण्डके समान चरणोंमें गिर पड़े और बड़ भागी मुनि सुतीक्ष्ण प्रेममें मग्न हो गये। तब श्रीरामजीने अपने विशाल भुजाओंसे मुनिको पकड़कर उठाया और प्रेमपूर्वक छातीसे लगाया ॥

मुनिहिं मिलत अस सोह कृपाला ❀ कनकतरुहिं जनु भेंट तमाला
रामबदन विलोकि मुनि ठाढ़ा ❀ मानहुँ चित्र माँझ लिखि काढ़ा

मुनिसे मिलते हुए कृपालु श्रीरामचन्द्रजी ऐसे शोभा देने लगे जैसे स्वर्णके वृक्षको तमाल का वृक्ष भेंटता हो। श्रीरामचन्द्रजीको देखकर मुनि ऐसे खड़े हुए कि जैसे चित्र लिखा हो ॥

दोहा—तब मुनि हृदय धीर धरि, गहि पद बारहिं बार।
निज आश्रम प्रभु आनि करि, पूजा विविध प्रकार ॥१६॥

फिर मुनि धीरजधर कर बारम्बार चरणोंमें गिरे और प्रभुको अपने आश्रम में ले आकर विविध भाँतिसे पूजा किये ॥ १६ ॥

कह मुनि सुनु प्रभु विनती मोरी ❀ अस्तुति करौं कवन विधि तोरी
महिमा अमित मोरि मति थोरी ❀ रविसन्मुख खद्योत उँजोरी

सुतीक्ष्ण मुनि बोले कि हे प्रभो! मेरी विनती सुनिए, मैं आपको स्तुति कैसे करूँ क्योंकि आपकी महिमा अपार है और मेरी बुद्धि अल्प है जैसे सूर्यके सामने खद्योतका प्रकाश हो ॥

स्याम तामरस दाम सरीरं ❀ जटा मुकुट परिधन मुनिचीरं
पाणिचापशर कटितूणीरं ❀ नौमि निरंतर श्रीरघुबीरं

श्याम कमलोंकी मालाके समान सुन्दर शरीरपर जटाओंका मुकुट बनाये, बलकल वस्त्र धारण किये, हाथमें धनुष और कमरमें बाणोंका भाथा लगाये ऐसे आपको मैं निरन्तर नमस्कार करता हूँ ॥४॥

मोह विपिनघनदहन कृसानुं ❀ सन्त सरोरुहकाननभानुं
निसिचरकरि बरूथ मृगराजः ❀ त्रातु सदानो भवखगबाजः

मोहरूपी घने बनको दहन करने में अग्नि के समान, संतरूपी कमल बनको प्रफुल्लित करनेमें सूर्यके समान, राक्षसोंके नाशक, संसाररूप पक्षीके लिये बाजरूप आप मेरी रक्षा करो ॥

अरुणनयन राजीव सुवेषं ❀ सीता नयन चकोर निशेषं
हरहृदि मानसराजमरालं ❀ नौमि राम उरबाहुविसालं

कमलके समान नेत्र वाले, सुन्दर वेश धारण किए, सीताजीके नेत्र रूप चकोरको आनन्द देने वाले, चन्द्रमाके समान और महादेवजीके मनरूप सरोवर के राजहंस—ऐसे विशालबाहु आपको नमस्कार है ।।८।।

संशय—सर्प—ग्रसनउरगादं ❀ समन सकलसंतापविषादं
भवभंजन रंजनसुरयूथं ❀ त्रातु सदा नो कृपाबरूथं

संशयरूप सर्पको ग्रसन करनेमें गरुड़के समान, भव-क्लेशके दुःखसे शान्त करनेवाले, भय को तोड़ने वाले, देवताओंका रंजन करनेवाले, ऐसे कृपानिधान आप मेरा पालन करो ।। १० ।।

निर्गुन सगुन विषम सम रूपं ❀ ज्ञानगिरागोतीत अनूपं
अमलमखिलमनवद्यमपारं ❀ नौमि राम भंजन महिभारं

हे कृपानाथ ! आप सत्, रज, तम सबसे अतीत निर्गुण और गुण सम्पन्न हो, इसलिए सत्, असत् जीवोंका अधिकार भेदसे सम त्रिपमरूप हो, जीवोके मनवाणी और इन्द्रियोंके अगोचर निर्मलरूप, निर्दोष और पृथ्वीके भारको तोड़नेवाले हो, ऐसे आपको मैं नमस्कार करता हूँ ।।

भक्तकल्पपादप आरामं ❀ तर्जनक्रोधलोभमदकामं
अतिनागर भवसागरसेतुं ❀ त्रातु सदा दिनकरकुलकेतुं

भक्तोंको कल्पवृक्षका बगीचा, क्रोध, अहङ्कारके नाश करने वाले, चतुर शिरोमणि संसार सागरके सेतु (पार उतारनेवाले) सूर्य वंशकी ध्वजारूप ऐसे आप सदा हमारा पालन करें ।।

अतुलित भुजप्रतापबलधामं ❀ कलिमलबिपुलबिभंजन नामं
धर्म वर्म सर्मद गुनग्रामं ❀ संतत संतनोतु अभिरामं

हे भगवान् ! आपकी भुजाओंका प्रताप अतुल है और आप बलके धाम, कलियुगके अनेक अपराधोंका नाश करने वाले हैं और जिनके गुण-समूह सुखके देने वाले हैं ऐसे हे राम ! आप मेरा सम्यक् प्रकार से सदा कल्याण करें ।।१६।।

यदपि बिरज व्यापक अविनासी ❀ सबके हृदय निरंतर बासी
तदपि अनुज सियसहित खरारी ❀ बसहु मनसि मम काननचारी

हे भगवन् ! यद्यपि आप निर्मल, व्यापक, अविनाशी और सबके अन्तर्यामी हैं । तो भी लक्ष्मण और सीताके साथ विराजमान हैं और बनमें विचरते हैं, इसलिए मेरे मनमें निवास करो ।। १८ ।।

जे जानहिं ते जानहु स्वामी ❀ सगुन अगुन उर अंतर्यामी
जे कोसलपति राजिवनयना ❀ करहु सो राम हृदय मम अयना

हे स्वामी ! जो आपको सगुण निर्गुण और अन्तर्यामी जानते हैं वे वैसा जानें । मेरे हृदय में तो कोशल देश के राजा कमलनयन श्रीरामजी आपही निवास करो ।।२०।।

सोरठा—मायावस जिमि जीव, रहहिं सदा संतत मगन ।
तिमि लागहु मोहि पीय, करुनाकर सुंदर सुखद ।।८।।

आप कृपासागर और सुन्दर सुखदाता हैं, सो जैसे मायाका बशवर्ती जीव लिप्त रहता है ऐसे ही आप मुझे प्रिय होवें ।। ८ ।।

मुनि अकुलाइ उठा तब कैसे ❀ विकल होत फनि मनि बिनु जैसे
आगे देखि रामतनु स्यामा ❀ सीताअनुजसहित सुखधामा

तब तो मुनि अकुलाकर ऐसे उठे कि जैसे सर्प मणि के बिना विकल हो उठता है। तब सीता और लक्ष्मण सहित सुखधाम श्याम शरीर श्रीरामचन्द्रजीको आगे देखकर ॥४॥

परेउ लकुट इव चरनन्ह लागी ❀ प्रेममगन मुनिवर बड़भागी
भुजविसाल गहि लिए उठाई ❀ परम प्रीति राखे उर लाई

दण्डके समान चरणोंमें गिर पड़े और बड़ भागी मुनि सुतीक्ष्ण प्रेममें मग्न हो गये। तब श्रीरामजीने अपने विशाल भुजाओंसे मुनिको पकड़कर उठाया और प्रेमपूर्वक छातीसे लगाया॥

मुनिहिं मिलत अस सोह कृपाला ❀ कनकतरुहिं जनु भेंट तमाला
रामबदन विलोकि मुनि ठाढ़ा ❀ मानहुँ चित्र माँझ लिखि काढ़ा

मुनिसे मिलते हुए कृपालु श्रीरामचन्द्रजी ऐसे शोभा देने लगे जैसे स्वर्णके वृक्षको तमाल का वृक्ष भेंटता हो। श्रीरामचन्द्रजीको देखकर मुनि ऐसे खड़े हुए कि जैसे चित्र लिखा हो॥

दोहा—तब मुनि हृदय धीर धरि, गहि पद बारहिं बार।
निज आश्रम प्रभु आनि करि, पूजा विविध प्रकार ॥१६॥

फिर मुनि धीरजधर कर बारम्बार चरणोंमें गिरे और प्रभुको अपने आश्रम में ले आकर विविध भाँतिसे पूजा किये ॥ १६ ॥

कह मुनि सुनु प्रभु विनती मोरी ❀ अस्तुति करौं कवन विधि तोरी
महिमा अमित मोरि मति थोरी ❀ रविसन्मुख खद्योत उँजोरी

सुतीक्ष्ण मुनि बोले कि हे प्रभो! मेरी विनती सुनिए, मैं आपकी स्तुति कैसे करूँ क्योंकि आपकी महिमा अपार है और मेरी बुद्धि अल्प है जैसे सूर्यके सामने खद्योतका प्रकाश हो॥

स्याम तामरस दाम सरीरं ❀ जटा मुकुट परिधन मुनिचीरं
पाणिचापशर कटितूणीरं ❀ नौमि निरंतर श्रीरघुबीरं

श्याम कमलोंकी मालाके समान सुन्दर शरीरपर जटाओंका मुकुट बनाये, बलकल वस्त्र धारण किये, हाथमें धनुष और कमरमें बाणोंका भाथा लगाये ऐसे आपको मैं निरन्तर नमस्कार करता हूँ ॥४॥

मोह विपिनघनदहन कृसानुं ❀ सन्त सरोरुहकाननभानुं
निसिचरकरि बरूथ मृगराजः ❀ त्रातु सदानो भवखगबाजः

मोहरूपी घने बनको दहन करने में अग्नि के समान, संतरूपी कमल बनको प्रफुल्लित करनेमें सूर्यके समान, राक्षसोंके नाशक, संसाररूप पक्षीके लिये बाजरूप आप मेरी रक्षा करो॥

अरुणनयन राजीव सुवेषं ❀ सीता नयन चकोर निशेषं
हरहृदि मानसराजमरालं ❀ नौमि राम उरबाहुविसालं

कमलके समान नेत्र वाले, सुन्दर वेश धारण किए, सीताजीके नेत्र रूप चकोरको आनन्द देने वाले, चन्द्रमाके समान और महादेवजीके मनरूप सरोवर के राजहंस—ऐसे विशालबाहु आपको नमस्कार है ॥८॥

संशय——सर्प——ग्रसनउरगादं ❁ समन सकलसंतापविषादं
भवभंजन रंजनसुरयूथं ❁ त्रातु सदा नो कृपाबरूथं

संशयरूप सर्पको ग्रसन करनेमें गरुड़के समान, भव-क्लेशके दुःखसे शान्त करनेवाले, भय को तोड़ने वाले, देवताओंका रंजन करनेवाले, ऐसे कृपानिधान आप मेरा पालन करो ॥ १० ॥

निर्गुन सगुन विषम सम रूपं ❁ ज्ञानगिरागोतीत अनूपं
अमलमखिलमनवद्यमपारं ❁ नौमि राम भंजन महिभारं

हे कृपानाथ! आप सत्, रज, तम सबसे अतीत निर्गुण और गुण सम्पन्न हो, इसलिए सत्, असत् जीवोंका अधिकार भेदसे सम त्रिषमरूप हो, जीवोके मनवाणी और इन्द्रियोंके अगोचर निर्मलरूप, निर्दोष और पृथ्वीके भारको तोड़नेवाले हो, ऐसे आपको मैं नमस्कार करता हूँ ॥

भक्तकल्पपादप आरामं ❁ तर्जनक्रोधलोभमदकामं
अतिनागर भवसागरसेतुं ❁ त्रातु सदा दिनकरकुलकेतुं

भक्तोंको कल्पवृक्षका बगीचा, क्रोध, अहङ्कारके नाश करने वाले, चतुर शिरोमणि संसार सागरके सेतु (पार उतारनेवाले) सूर्य वंशकी ध्वजारूप ऐसे आप सदा हमारा पालन करें ॥

अतुलित भुजप्रतापबलधामं ❁ कलिमलबिपुलविभंजन नामं
धर्म वर्म सर्मद गुनग्रामं ❁ संतत संतनोतु अभिरामं

हे भगवान्! आपकी भुजाओंका प्रताप अतुल है और आप बलके धाम, कलियुगके अनेक अपराधोंका नाश करने वाले हैं और जिनके गुण-समूह सुखके देने वाले हैं ऐसे हे राम! आप मेरा सम्यक् प्रकार से सदा कल्याण करें ॥१६॥

यदपि बिरज व्यापक अविनासी ❁ सबके हृदय निरंतर बासी
तदपि अनुज सियसहित खरारी ❁ बसहु मनसि मम काननचारी

हे भगवन्! यद्यपि आप निर्मल, व्यापक, अविनाशी और सबके अन्तर्यामी हैं। तो भी लक्ष्मण और सीताके साथ विराजमान हैं और बनमें विचरते हैं, इसलिए मेरे मनमें निवास करो॥ १८ ॥

जे जानहिं ते जानहु स्वामी ❁ सगुन अगुन उर अंतर्यामी
जे कोसलपति राजिवनयना ❁ करहु सो राम हृदय मम अयना

हे स्वामी! जो आपको सगुण निर्गुण और अन्तर्यामी जानते हैं वे वैसा जानें। मेरे हृदय में तो कोशल देश के राजा कमलनयन श्रीरामजी आपही निवास करो ॥२०॥

सोरठा—मायावस जिमि जीव, रहहिं सदा संतत मगन।
तिमि लागहु मोहि पीय, करुनाकर सुंदर सुखद ॥८॥

आप कृपासागर और सुन्दर सुखदाता हैं, सो जैसे मायाका वशवर्ती जीव लिप्त रहता है ऐसे ही आप मुझे प्रिय होवें ॥ ८ ॥

अस अभिमान जाइ जनि भोरे ❀ मैं सेवक रघुपति पति मोरे
रामभक्ति तजि चह कल्याना ❀ सो नर अधम सृगाल समाना

मैं आपका सेवक हूँ और श्रीरामचन्द्रजी मेरे स्वामी हैं यह मेरा अभिमान भूलकर भी नहीं जाय ।। जो श्रीरामचन्द्रजीकी भक्तिको त्यागकर कल्याण चाहे वह नीच मनुष्य गीदड़के समान है ।।२।।

सुनि मुनिबचन राम मन भाये ❀ बहुरि हरषि मुनिवर उर लाये
परमप्रसन्न जानि मुनि मोहीं ❀ जो बर माँगु देउँ मैं तोहीं

मुनि सुतीक्ष्णके वचनको सुनकर श्रीरामचन्द्रजीने अति हर्षसे मुनिको हृदयसे लगा लिया और बोले कि–हे मुनि ! तुम मुझे प्रसन्न जान जो वरदान माँगों सो मैं तुम्हें दूँगा ।। ४ ।।

मुनि कह मैं बर कबहुँ न जाँचा ❀ समुझि न परै झूठ का साँचा
तुम्हहिं नीक लागै रघुराई ❀ सो मोहिं देहु दाससुखदाई

मुनिने कहा कि हे भगवन् ! मैंने कभी बर नहीं माँगा, मेरी समझ में नहीं आता कि क्या झूठ है और क्या साँच है । हे रघुराई ! जो आपको अच्छा लगे वही दासके लिए सुखदाई वर देवें ।।

अविरल भक्ति विरति विज्ञाना ❀ होउ सकलगुनज्ञाननिधाना
प्रभु जु दीन्ह वर सो मैं पावा ❀ अब सो देहु मोहिं जो भावा

तब श्रीरामचन्द्रजी सुतीक्ष्णको निरन्तर भक्तिका वर देकर बोले कि–हे मुनि ! तुम सब गुण और ज्ञानकी निधि होओ । तब मुनि बोले कि–हे प्रभो ! आपने जो वर दिया वह तो मैंने पाया । परन्तु अब जो मुझे अच्छा लगता है वह वर दो ।।८।।

दोहा–अनुज जानकी सहित प्रभु, चाप बान धर राम ।
मम हिय गगन इंदु इव, बसहु सदा निःकाम ।।१७।।

हे प्रभो ! लक्ष्मण और सीताके साथ धनुषबाण लेकर हर्षपूर्वक सदा मेरे हृदयमें ऐसे बसो जैसे कि आकाश में चन्द्रमा निष्काम विराजमान रहता है ।।१७।।

एवमस्तु कहि रमानिवासा ❀ हर्षि चले कुंभजऋषि पासा
मुनि प्रनाम करि युग कर जोरी ❀ सुनहु नाथ कछु विनती मोरी

तब लक्ष्मीपति श्रीरामचन्द्रजीने कहा–एवमस्तु, ऐसा ही होगा, यह कह प्रसन्न हो श्रीरामचन्द्रजी अगस्त्य मुनिके पास चले ।। १ ।। फिर सुतीक्ष्ण मुनि प्रणाम कर दोनों हाथ जोड़ बोले, हे स्वामी ! मेरी कुछ प्रार्थना और सुनिये ।।२।।

बहुत दिवस गुरुदरसन पाये ❀ भये मोहिं यहि आश्रम आये
अब प्रभुसंग जाउँ गुरुपाहीं ❀ तुम कहँ नाथ निहोरा नाहीं

मुझको गुरुका दर्शन किए और इस आश्रम में आए आज बहुत दिन हुए । अब मैं प्रभु के संग ही गुरुका दर्शन करने चलूँगा, हे नाथ ! इसमें आप पर कोई अहसान नहीं है ।। ४ ।।

चले जात मग तव पदकंजा ❀ देखिहौं जो विराध मदगंजा

मार्ग चलते हुए विराध के मद (अभिमान) को नाश करने वाले ऐसे आपके चरण-कमलों का दर्शन करता चलूँगा ।। ५ ।।

देखि कृपानिधि मुनि चतुराई ❀ लिए संग बिहँसे दोउ भाई
पंथ कहत निजभक्ति अनूपा ❀ मुनिआश्रम पहुँचे सुरभूपा

तब प्रभुने मुनिकी चतुराई देख भाई सहित प्रसन्न होकर उन्हें संगमें ले लिये ।। ६ ।। तब मार्गमें श्रीरामचन्द्रजी अनुपम भक्ति का वर्णन करते हुए मुनिके आश्रममें जा पहुँचे ।।७।।

आश्रम देखि महासुचि सुंदर ❀ सरित सरोवर कानन भूधर
बनचर जलचर जीव जहींते ❀ बैर न करहिं प्रीति सबही ते

(वहाँ पहुँचकर) श्रीरामचन्द्रजीने देखा कि वह आश्रम बड़ा पवित्र और सुन्दर है, जहां नदी, सरोवर और पर्वत भी हैं जिन्हें देखा ।। ८ ।। वहाँ बनके निवासी और जलचर जितने जीव हैं परस्पर बैर नहीं करते तथा सभी से प्रेम करते हैं ।। ६ ।।

दोहा—तरु बहु बिबिध विहंगमृग, बोलत बिबिध प्रकार ।
बसहिं सिद्ध मुनि तप करहिं, महिमागुन आगार ।। १८।।

जहाँ अनेक वृक्षोंपर अनेक पक्षी अनेक प्रकार से बोलते हैं, और जहाँ महिमा और गुणों के धाम सिद्ध और मुनीश्वर तप करते हुए निवास कर रहे हैं ।। १८ ।।

तुरत सुतीक्षण गुरु पहँ गयऊ ❀ करि दंडवत कहत अस भयऊ
नाथ कोसलाधीसकुमारा ❀ आये मिलन जगत आधारा

सुतीक्षण मुनिने तुरन्त अगस्त्य मुनिके पास जा, दण्डवत् कर ऐसा कहा कि हे नाथ ! कोशलराज दशरथकुमार (राम-लक्ष्मण) जो जगत्के आधार हैं, वे आपसे मिलने आये हैं ।।

राम अनुज समेत वैदेही ❀ निसि दिन देव जपत हहु जेही
सुनत अगस्त्य तुरत उठि धाये ❀ हरिहिं बिलोकि नयन जल छाये

हे नाथ! आप रात-दिन जिनका जप करते हो, वे राम लक्ष्मण सीताजीके साथ पधारे हैं। यह सुनते ही अगस्त्यजी तुरंत उठकर दौड़े, प्रभुके दर्शन करते ही नेत्रोंमें जल भर आया ।।४।।

मुनिपदकमल परे दोउ भाई ❀ ऋषि अतिप्रीति लिये उरलाई
सादर कुसल पूछ मुनि ज्ञानी ❀ आसनपर बैठारे आनी

जब दोनों भाई मुनिजीके चरण-कमलोंमें जा पड़े तो अगस्त्यजी उन्हें प्रेम सहित हृदयसे लगा लिए । फिर ज्ञानी मुनिने आदर सहित कुशल पूछकर आसनपर लाकर बिठाया ।।६।।

पुनि करि बहुप्रकार प्रभुपूजा ❀ मोहिसम भाग्यवंत नहिं दूजा
जहँ लगि रहे अपर मुनिवृंदा ❀ हरषे सब विलोकि सुखकंदा

फिर अनेक प्रकारसे प्रभुकी पूजा करके कहा कि मेरे समान भाग्यवान् दूसरा कोई नहीं है। वहाँ जितने मुनिवृन्द थे वे सब आनन्दकन्द दोनों भाइयोंको देखकर आनंदित हो गये ।।

दोहा—मुनिसमूह महँ बैठ प्रभु, संमुख सबकी ओर ।
सरदइंदु जनु चितवत, मानहु निकरचकोर ।।१९।।

मुनि-समूहमें प्रभु सबकी ओर सन्मुख बैठे हैं, उन्हें मुनिलोग कैसे देख रहे हैं जैसे शरद् ऋतुके पूर्ण चन्द्रमा को चकोर का समूह देखता है ।। १६ ।।

पाइ सुथल जल हरषित मीना ❀ पारस पाइ सुखी जिमि दीना
प्रभुहिं निरखि सुख भा इहि भाँती ❀ चातक जथा पाइ जल स्वाती

तब जैसे सुन्दर जल के स्थान को पाकर मछली प्रसन्न हो, और जैसे कंगाल मनुष्य पारसको पाकर सुखी हो ॥१॥ उसी प्रकार प्रभु रामको देख मुनि ऐसे खुशी हुए जैसे पपीहे का समूह स्वाती जलको पाकर सुखी हो ॥ २ ॥

तब रघुबीर कहा मुनिपाहीं ❀ तुमसन प्रभु दुराव कछु नाहीं
तुम जानहु जेहि कारन आयउँ ❀ ताते तात न कहि समुझायउँ

तब प्रभुने अगस्त्यजीसे कहा कि हे प्रभो ! आपसे कुछ छिपा नहीं है । हे प्रभो ! जिस कारण मैं यहाँ आया हूँ सो आप जानते हो, अतएव मैंने यह समझा कर नहीं कहा है ॥४॥

अब सो मंत्र देहु प्रभु मोहीं ❀ जेहि प्रकार मारौं सुरद्रोहीं
निसिचर अब न बचहिं मुनिराई ❀ जिमि पंकजबन हिमऋतु पाई

हे प्रभो ! अब आप मुझे वह मंत्र दें कि जिस प्रकार मैं देवताओंके द्रोही राक्षसोंको मारूँ॥५॥ हे मुनिराज! अब राक्षस ऐसे ही नहीं बचेंगे कि जैसे हिमऋतुके आने पर कमलोंका बन नाश हो जाता है ॥ ६ ॥

मुनि मुसुकाने सुनि प्रभुबानी ❀ पूछत नाथ मोहिं का जानी
तुम्हरे भजनप्रभाव अघारी ❀ जानौं महिमा कछुक तुम्हारी

प्रभुकी ऐसी वाणी सुनकर मुनि मुसुकाये और बोले कि हे नाथ! आपने मुझको क्या समझ कर पूछा है ? आपके भजन-प्रभाव से ही मैं कुछ थोड़ी-बहुत आपकी महिमा जानता हूँ ॥८॥

सोरठा—भृगुटी निरखत नाथ, रहत सदा पदकमलतर ।
जिन्ह डारे निज़गात, बिबुध बिधाता सिद्ध हर ॥ ९ ॥

हे नाथ ! जो माया आपकी भृकुटी को देखा करती है तथा आपके चरण-कमलों के नीचे ही रहती है, जिसने अनेक ब्रह्मा सिद्धों और शिवजीको भी अपनी देहमें ले रखा है॥९॥

अति कराल सबपर जगजाना ❀ औरों कहौं सुनिय भगवाना
ऊमरि तरु विशाल तव माया ❀ फल ब्रह्मांड अनेक निकाया

संसार जानता है कि आपकी भृकुटी सबको अति भयावनी है और जो कहता हूँ हे भगवन्! सुनिए ॥ १ ॥ हे नाथ ! आप की माया एक बड़ा विशाल गूलर का वृक्ष है और जो अनेक ब्रह्माण्ड समूह है, वही मानो उसका फल है ॥ २ ॥

जीव चराचर जंतुसमाना ❀ भीतर बसहिं न जानहिं आना
ते फलभक्षक कठिन कराला ❀ तव भय डरत सदा सो काला

और जो चराचर जीव हैं, वही मानों उस फल के भीतर जन्तु हैं, वे उसके भीतर रहते हुए भी उसके दृश्यों को नहीं जानते ॥३॥ हे प्रभो ! उन फलों को खाने वाला जो कराल काल है वह भी आप से डरता रहता है ॥ ४ ॥

ते तुम सकल लोकपति साँईं ❀ पूछेहु मोहिं मनुजकी नाँईं
यह बर माँगौं कृपानिकेता ❀ बसहु हृदय सियअनुजसमेता

सो वही आप सब लोकोंके स्वामी होकर मुझसे मनुष्य की नाईं पूछते हो। हे कृपानिधे ! मैं यह वर माँगता हूँ कि आप मेरे हृदयमें लक्ष्मण और सीता सहित निवास करें ॥ १० ॥

अविरलभक्ति विरति सतसंगा ❀ चरनसरोरुहप्रीति अभंगा
यद्यपि ब्रह्म अखंड अनंता ❀ अनुभवगम्य भजहिं जे संता

मुझे अविरल भक्ति, वैराग्य, सत्सङ्ग सहित आपके चरणकमलों में अटल प्रीति बनी रहे। यद्यपि ब्रह्म अखण्ड और अनन्त है तथापि आप ज्ञान और अनुभव द्वारा जाने जाते हैं ॥८॥

अस तव रूप बखानौं जानौं ❀ फिरिफिरि सगुन ब्रह्मरति मानौं

इस प्रकार आपके निर्गुण स्वरूप का वर्णन भी करता हूँ और बुद्धिके अनुसार जानता भी हूँ तथापि बार-बार सगुण ब्रह्ममें ही प्रीति मानता हूँ ॥९॥

दोहा–जाहि जीव पर तव कृपा, संतत रहत हुलास।
तिनकी महिमा को कहै, जे अनन्य प्रियदास ॥ २० ॥

जिस जीवपर आपकी कृपा हो वह सदा प्रसन्न रहता है। फिर उनकी महिमाको कौन कहे जो आपका अनन्य प्रिय सेवक हो ॥ २० ॥

संतत दासन्ह देहु बड़ाई ❀ ताते मोहिं पूछेहु रघुराई
है प्रभु परम मनोहर ठाऊँ ❀ पावन पंचवटी तेहि नाऊँ

हे श्रीरामचन्द्रजी ! आप सर्वदा ही दासों को बड़ाई दिया करते हैं, इसी कारण आपने मुझसे पूछा है। सो हे प्रभो ! एक परम मनोहर पवित्र स्थान है, जिसका नाम पंचवटी है॥

गोदावरी नदी तहँ बहई ❀ चारिहु जग प्रसिद्ध सो अहई
दंडकबन पुनीत प्रभु करहू ❀ उग्रशाप मुनिवरकर हरहू

वहाँ गोदावरी नदी बहती है जो चारों युगोंसे प्रसिद्ध है। हे प्रभो ! आप उसी दण्डक बन को पवित्र कीजिए और मुनि श्रेष्ठके उग्र शाप को नष्ट कीजिए।

बास करहु तहँ रघुकुलराया ❀ कीजै सकल मुनिन्हपर दाया
चले राम मुनिआयसु पाई ❀ तुरतहिं पंचबटी नियराई

हे रघुकुलके राजा ! आप वहाँ निवास करके सब मुनियों पर दया कीजिए। तब श्रीरामचन्द्रजी उनकी आज्ञा पाकर चले और तुरंत ही पंचवटीके निकट जा पहुँचे ॥६॥

दिव्य लता द्रुम प्रभुमन भाए ❀ निरखि राम ते भयउ सोहाए
लखन राम सिय चरन निहारी ❀ कानन अघ गा भा सुखकारी

सुन्दर लतायें और वृक्ष ईश्वरके मनको अच्छे लगे और वे भी श्रीरामको देखकर सुहावने लगने लगे। लक्ष्मण, राम और सीताके चरणोंको देख उस बनका शाप दूर हो गया और बन-सुखदाई हो गया ॥ ८ ॥

दोहा—गीधराजसों भेंट भइ, बहुविध प्रीति दृढ़ाइ।
गोदावरी समीप प्रभु, रहे परनगृह छाइ ॥ २१ ॥

वहाँ ही गीधराज जटायुसे भेंट हुई और तरह-तरह की प्रीति बढ़ा कर प्रभु श्रीरामचन्द्रजी गोदावरी नदीके समीप पत्तों की कुटी बना कर रहने लगे ॥ २१ ॥

जब ते राम कीन्ह तहँ बासा ❀ सुखी भये मुनि बीती त्रासा
गिरि बन नदी ताल छबि छाये ❀ दिन दिन प्रति अति होत सुहाये

जबसे श्रीरामजीने बास किया तबसे वहांके सब मुनि सुखी हो गए और उनका भय जाता रहा। पर्वत, बन, नदी, तालाब सब पर शोभा छा गई और वे दिन-दिन अत्यन्त शोभा देने लगे ॥

खगमृग बृंद अनंदित रहहीं ❀ मधुर मधुर गुंजत छबि लहहीं
सो बन बरनि न सक अहिराजा ❀ जहाँ प्रगट रघुबीर बिराजा

पक्षी तथा मृगोंके झुण्ड आनन्दित रहने लगे और मधुर गुंजार करते हुए शोभा को प्राप्त हुए। उस वनकी शोभा शेष नाग भी वर्णन नहीं कर सकते जहाँ श्रीरामजी जा विराजे ॥

एक बार प्रभु सुख आसीना ❀ लक्ष्मण बचन कहे छलहीना
सुर नर मुनि सचराचर साईं ❀ मैं पूछौं निजप्रभुकी नाईं

एक समय प्रभु सुखपूर्वक बैठे थे, उसी समय लक्ष्मणजीने यह छलहीन वचन कहा कि हे देवं! मनुष्य, मुनि और चराचरके स्वामी! मैं आपसे अपने स्वामी की भाँति पूछता हूँ ॥

मोहि समुझाइ कहहु सोइ देवा ❀ सब तजि करौं चरनरजसेवा
कहहु ज्ञान बिराग अरु माया ❀ कहहु सो भक्ति करहु जेहि दाया

मुझको आप वही समझाकर कहिए जिससे मैं सब त्याग आपकी सेवा करूँ। आप ज्ञान, वैराग्य और मायाका स्वरूप तथा भक्ति क्या है सो कहिए जिसके द्वारा आप दया किया करते हैं

दोहा—ईश्वर जीवहिं भेद प्रभु, सकल कहहु समुझाइ।
जाते होइ चरनरति, सोक मोह भ्रम जाइ ॥२२॥

हे प्रभो! ईश्वर और जीव सबका भेद मुझको समझाकर कहिये, जिससे आपके चरणों में प्रीति उत्पन्न हो और सब शोक तथा भ्रम दूर हो जावे ॥ २२ ॥

थोरे महँ सब कहौं बुझाई ❀ सुनहु तात मति मन चित लाई
मैं अरु मोर तोर तैं माया ❀ जेहि बस कीन्हें जीवनिकाया

तब श्रीरामजीने कहा, हे तात! सब थोड़ेमें ही तुमसे समझाकर कहता हूँ, मन और बुद्धि लगाकर सुनो। मैं और मेरा, तू और तेरा, इसी मायाने सबको वशीभूत कर रखा है ॥

गोगोचर जहँलगि मन जाई ❀ सो सब माया जानेहु भाई
तेहिकर भेद सुनहु तुम सोऊ ❀ विद्या अपर अविद्या दोऊ ॥३॥

इन्द्रिय और इन्द्रियोंके परे जहाँ तक मनकी पहुँच है, हे भाई! वह सब माया ही जानो तुम उसके भेद सुनो, उसके दो भेद हैं, विद्या और अविद्या ॥ ४ ॥

एक दुष्ट अतिसय दुखरूपा ❀ जाबस जीव परे भवकूपा
एक रचै जग गुन बस जाके ❀ प्रभु प्रेरित नहिं निजबल ताके

एक (अविद्या) दुष्ट और दुख रूप है जिसके वश हो कर जीव संसाररूपी कुएं में गिरता है। और एक विद्या रूपी वह माया है जो प्रभु की प्रेरणासे संसारकी रचना करती है, उसको अपने निज (स्वतः) का बल नहीं है ॥ ६ ॥

ज्ञान मान जहँ एकौ नाहीं ❀ देखत ब्रह्मरूप सब माहीं
कहिये तातसों परम बिरागी ❀ तृन सम सिद्धि तीनिगुन त्यागी

जहाँ ज्ञान मान एक भी नहीं है और जो सबमें समान ब्रह्म रूप देखे। हे तात ! उसी को परम विरागी कहना चाहिए, कि जो सब सिद्धियों को तृण के समान त्याग देते हैं ॥८॥

दोहा—माया ईस न आपु कहँ, जानि कहै सो जीव।
बंधमोक्षप्रद सर्वपर, मायाप्रेरक सीव ॥२३॥

जो माया की प्रबलतासे ईश्वर और अपने को नहीं जानता वही जीव है और जो बन्धन और मुक्तिका देनेवाला, सबसे परे और माया का प्रेरक है, उसी को ईश्वर जानना चाहिये ॥

धर्मते बिरति योगते ज्ञाना ❀ ज्ञान मोक्षप्रद वेद बखाना
जाते वेगि द्रवौं मैं भाई ❀ सो मम भक्ति भक्तसुखदाई

धर्मसे वैराग्य और योग से ज्ञान और ज्ञानसे मुक्ति मिलती है ऐसा वेद वर्णन करते हैं। हे भाई ! जिसके द्वारा मैं शीघ्र ही प्रसन्न होता हूँ वह मेरी भक्ति ही भक्तोंको सुखदायक है ॥२॥

सो स्वतंत्र अवलंब न आना ❀ तेहि आधीन ज्ञान विज्ञाना
भक्ति तात अनुपम सुखमूला ❀ मिलै जो संत होहिं अनुकूला

और वह भक्ति स्वतन्त्र है उसको दूसरे का सहारा नहीं है। ज्ञान-विज्ञान उसके अधीन है ॥३॥ हे तात ! सुखमूल अनुपम भक्ति तभी मिलती है, जब सन्तजन अनुकूल होवें ॥४॥

भक्ति के साधन कहौं बखानी ❀ सुगमपंथ मोहिं पावहिं प्रानी
प्रथमहिं विप्रचरन अतिप्रीती ❀ निजनिज धर्म निरत श्रुतिरीती

अब मैं भक्तिके साधन कहता हूँ, जिसके द्वारा मुझे प्राणी सरल मार्गसे प्राप्त होते हैं। पहले तो ब्राह्मणोंके चरणोंमें अत्यन्त प्रीति करे और वेदानुसार अपने धर्ममें सावधान रहे ॥

तेहिकर फल पुनि विषय विरागा ❀ तब मम चरन उपज अनुरागा
श्रवनादिक नव भक्ति दृढ़ाहीं ❀ मम लीला अति रति मनमाहीं

इनका फल विषयों में विराग होना है ऐसा होने पर मेरे चरणोंमें प्रेम उत्पन्न होता है। श्रवणादिक नौ प्रकारकी भक्तिको धारण करे और मेरी लीलाओंकी मनमें बड़ी प्रीति होवे।

संतचरनपंकज अति प्रेमा ❀ मन क्रम बचन भजन दृढ़नेमा
गुरु पितु मातु बंधु पतिदेवा ❀ सब मोहिंकहँ जानै दृढ़सेवा

फिर सन्तजनोंके चरणोंमें अत्यन्त प्रेम करे और मन, क्रम, वचन द्वारा नियमसे मेरा भजन करे। गुरु, पिता, माता, भ्राता, पति, देवता सबमें मुझको ही समझकर दृढ़ सेवा करे ॥

मम गुन गावत पुलक सरीरा ❁ गद्‌गद गिरा नयन बह नीरा
काम आदि मद दंभ न जाके ❁ तात निरंतर बस मैं ताके

मेरा गुणानुवाद गाते हुए देह रोमांचित हो जाय, वाणी गद्‌गद हो जाय और आँखोंसे आँसू बहने लगे। हे तात ! जिस व्यक्तिमें कामादिक मद तथा दम्भ नहीं है मैं उसके वशीभूत हूँ ।।

दोहा—बचन कर्म मन मोरि गति, भजन करहिं निष्काम ।
तिनके हृदय-कमल महुँ, करौं सदा विश्राम ।।२४।।

जिसको मन, वंचन और कर्मसे एकमात्र मेरी ही गति है और निष्काम भजन करता है। मैं उसके हृदय में सदा विश्राम करता हूँ ।। २४ ।।

भक्तियोग सुनि अति सुख पावा ❁ लछिमन प्रभुचरनन्ह सिर नावा
नाथ सुने गत मम संदेहा ❁ भयउ ज्ञान उपजेउ नव नेहा
अनुजबचन सुनि प्रभु मन भाये ❁ हरषि राम निज हृदय लगाये
इहि विधि गये कछुक दिन बीती ❁ कहत विराग ज्ञान गुन नीती

यह भक्ति-योग सुनकर लक्ष्मणजीने अत्यन्त सुख पाया और प्रभुके चरणों में सिर नवाया ।। और कहा कि हे स्वामी ! इसके सुननेसे मेरा सन्देह दूर हुआ और ज्ञान होकर नया प्रेम उत्पन्न हुआ ।। २।। लक्ष्मणजीके वचन सुन भगवान्‌के मनको प्यारे लगें तो रामचन्द्रने प्रसन्न हो उन्हें अपनी छातीसे लगा लिया ।। ३ ।। इस प्रकार ज्ञान, वैराग्य, गुण और नीति कहते हुए बहुत दिन बीत गये ।। ४ ।।

सूपनखा रावनकी बहिनी ❁ दुष्टहृदय दारुन जसि अहिनी
पंचवटी सो गइ इक बारा ❁ देखि विकल भइ जुगल कुमारा

तब सूर्पणखा नामक रावणकी बहन जो अत्यन्त दुष्ट हृदयवाली दारुण सर्पिणीके समान थी, वह एक समय पंचवटीमें गई तो राम लक्ष्मण दोनों कुमारोंको देखकर कामसे व्याकुल हो गयी ।।

भ्राता पिता पुत्र उरगारी ❁ पुरुष मनोहर निरखत नारी
होइ बिकल सक मन नहिं रोकी ❁ जिमि रविमनि द्रव रविहि बिलोकी

हे गरुड़जी ! भाई, बाप, बेटा, कोई क्यों न हो, मनोहर पुरुषको देखकर स्त्रियाँ विकल हो जाती हैं। मनको वैसे ही नहीं रोक सकतीं जैसे सूर्यके देखनेपर सूर्यकान्त मणि द्रवने लगती है ।।

दोहा—अधम निसाचरि कुटिल अति, चली करन उपहास ।
सुनु खगेस भावी प्रबल, भा चह निसिचरनास ।।२५।।

वह नीच राक्षसी अत्यन्त ही कुटिल थी जो भगवान्‌से हँसी करने चली। कागभुशुण्डिजी कहते हैं कि हे गरुड़ ! होनहार बड़ी प्रबल है, राक्षसोंका नाश हुआ चाहता है ।।२५।।

रुचिर रूप धरि प्रभुपहँ जाई ❁ बोली बचन मधुर मुसुकाई
तुम सम पुरुष न मो सम नारी ❁ यह सँजोग बिधि रचा बिचारी

वह परम सुन्दर रूप धारणकर श्रीरामजीके पास गई और हँसकर बोली कि तुम्हारे समान सुन्दर पुरुष और मेरे समान सुन्दर स्त्री संसारमें नहीं हैं, यह संयोग विधाताने विचारकर ही रचा है।

मम अनुरूप पुरुष जग नाहीं ❀ देखेउँ खोजि लोक तिहु माहीं
ताते अब लगि रहेउँ कुमारी ❀ मन माना कछु तुम्हहिं निहारी

संसारमें मेरे अनुरूप वर नहीं है, मैं तीनों लोकमें ढूंढ़ कर देख ली। इसीलिए मैं अब तक क्वाँरी ही रही किन्तु अब आपको देख कर कुछ मन माना है, मेरे साथ विवाह कर लीजिये ॥

सीतहिं चितइ कही प्रभु बाता ❀ अहै कुमार मोर लघु भ्राता
गइ लछिमन रिपु भगिनी जानी ❀ प्रभु बिलोकि बोले मृदुबानी

तब सीता को देखकर प्रभु ने कहा कि मेरा छोटा भाई क्वाँरा है, तो वह लक्ष्मणजी के पास पहुँची तो शत्रु की बहन जानकर लक्ष्मणजी उससे यह वाणी बोले ॥ ६ ॥

सुंदरि सुनु मैं उन्हकर दासा ❀ पराधीन नहिं तोर सुपासा
प्रभु समर्थ कोसलपुरराजा ❀ जो कछु करहिं उनहिं सब छाजा

हे सुन्दरि ! सुनो, मैं उनका दास हूँ अतएव उनके अधीन होनेसे तेरा मेरे पास गुजारा नहीं है। वे अयोध्यापति समर्थ हैं, जो कुछ करें उन्हें सब शोभा देता है ॥८॥

दोहा–केहरिसम नहिं करिवर, लवा कि बाजसमान।
प्रभु सेवक इमि जानहु, मानहु बचन प्रमान ॥२६॥

जैसे बड़ा सुन्दर हाथी भी सिंहके समान नहीं होता और लवा पक्षी क्या बाजकी बराबर हो सकता है ?ऐसे ही स्वामी और सेवकको भी जानो और मेरे वचनको सत्य जानो ॥२६॥

सेवक सुख चह मान भिखारी ❀ व्यसनी धन सुभगति व्यभिचारी
लोभी जस चह चारु गुमानी ❀ नभ दुहि दूध चहत ए प्रानी

सेवक सुख, भिखारी मान; व्यसनी धन, व्यभिचारी उत्तम गति और लोभी यश चाहे, अभिमानी पवित्रताकी इच्छा करे तो यह सब प्राणी आकाशका दोहनकर मानों दूध निकालना चाहते हैं।

पुनि फिरि रामनिकट सो आई ❀ प्रभु लछमनपहँ बहुरि पठाई
लछमन कहा तोहि सो बरई ❀ जो तृन तोरि लाज परिहरई

वह लक्ष्मणजी की बात सुनकर श्रीराम के निकट लौट आई। प्रभुने फिर लक्ष्मणके पास भेज दिया, तब लक्ष्मणने कहा कि तुझको तो वही बरेगा जो लज्जाको तिनकेके समान तोड़ देवेगा ॥

तब खिसियानि रामपहँ जाई ❀ रूप भयंकर प्रगटि दिखाई
बिथुरे केस बदन बिकराला ❀ भृकुटी कुटिल करन लगि गाला

तब वह खिसियाकर श्रीरामचन्द्रजी के पास फिर गई और अपना भयंकर रूप प्रकट किया। उसके बाल बिखरे हुए थे और भयंकर मुख, टेढ़ी भौहें, गाल तक लम्बे बड़े कान थे ॥६॥

सीतहिं सभय देखि रघुराई ❀ कहा अनुजसन सैन बुझाई
अनुज राम मनकी गति जानी ❀ उठे रिसाइ सो सुनहु भवानी

तब सीताजीको भयभीत देखकर श्रीरामजीने लक्ष्मणजीसे संकेतमें कुछ समझाकर कहा सो हे पार्वती ! सुनो, लक्ष्मणजी श्रीरामजीके मनकी गति देखकर क्रोधित हो उठे ॥ ८ ॥

दोहा—लछमन अति लाघव तिहिं, नाककानबिनु कीन्ह ।
ताके कर रावन कहँ, मनहुँ चुनौती दीन्ह ।।२७।।

लक्ष्मणजीने शीघ्र ही उसको बिना नाक कान का कर दिया, मानो उसके हाथ उन्होंने रावण को चुनौती दी ।। २७ ।।

नाककानबिनु भइ बिकरारा ❋ जनु स्रव सैल गेरुकै धारा
खरदूषरण पहँ गइ बिलखाता ❋ धिक धिक तव पौरुष बल भ्राता

वह नाक कानके बिना विकराल हो गई। मानो पहाड़से गेरूकी धारा बह रही थी। वह बिलखती हुई खरदूषणके पास गई और बोली कि हे भाई! तेरे बल और पौरुषको धिक्कार है।।२।।

तेहि पूछा सब कहेसि बुझाई ❋ जातुधान सुनि सैन बुलाई
चौदह सहस सुभट सँग लीन्हे ❋ जिन सपनेहुँ रन पीठि न दीन्हे

तब खरदूषणादिके पूछनेपर उसने सारा हाल कह दिया, फिर तो उसने चौदह हजार ऐसे योद्धाओंको अपने साथ लिया जिन्होंने स्वप्नमें भी युद्धमें पीठ नहीं दिखाई थी ।।४।।

धाये निसिचरनिकर बरूथा ❋ जनु सपक्ष कज्जलगिरि जूथा
नाना बाहन नाना कारा ❋ नाना आयुध धरे अपारा

तब राक्षसों के समूह दौड़ पड़े मानो पंखों समेत झुण्ड के झुण्ड कज्जल के पहाड़ हों। वे तरह-तरह के वेश और तरह-तरह के अपार हथियार धारण किये थे ।।६।।

स्यामघटा देखत नभ केरी ❋ तहँ बासव धनु मनहुँ उँजेरी
सूर्पनखहिं आगे कर लीन्ही ❋ असुभ रूप श्रुति नासाहीनी

उन निशाचरोंके आनेसे आकाशमें श्याम घटा-सी घिर आई, अनेक तरहके अस्त्र-शस्त्र मानो इन्द्रधनुष प्रकट हो गया। आगे-आगे अमङ्गल रूप नाकहीन सूर्पणखा को कर लिया ।।

दोहा—निजनिजबलसबमिलिकर्हाहं, एर्काह एक सुनाइ ।
बाजन बाज जुझाऊ, हर्ष न हृदय समाइ ।।२८।।

अपना-अपना बल सब राक्षस मिलकर एक दूसरे को कह कर सुनाते हैं। जुझाऊ बाजे बजने लगे, हृदय प्रसन्नता (हर्ष) से भर गया ।। २८ ।।

असकुन अमित होहिं भयकारी ❋ गनहिं न मृत्युबिबस सब झारी
गर्जहिं तर्जहिं गगन उड़ाहीं ❋ देखि कटकभट अति हरषाहीं

अनेक प्रकारके भयानक अशकुन होते किन्तु मृत्युके विवश होनेसे राक्षस उनकी परवाह न करते थे। वे गर्जते, चिल्लाते और आकाशमें उड़कर सैनिक वीरोंको देखकर प्रसन्न होते थे।।

कोउ कह जियत धरहु दोउ भाई ❋ धरि मारहु तिय लेहु छुड़ाई
कोउ कह सुनहु सत्य हम कहहीं ❋ कानन फिरहिं वीर कोउ अहहीं

कोई कहता कि जिन्दा ही दोनों भाइयोंको पकड़ लो और मारो तथा स्त्रीको छीन लो। कोई कहता कि—सुनो, हम सत्य कहते हैं, ये बनमें घूम रहे हैं, अतः अवश्य कोई वीर हैं ।।

एकहि कहा मष्ट होइ रहहू ❀ खरके आगे अस जनि कहहू
बहुविधि बचन कहत रणधीरा ❀ आये सकल जहाँ रघुबीरा

एकने कहा—अरे, चुप हो रहो, खरके समक्ष ऐसा न कहना ।।५।। ऐसे बहुत प्रकारके वाक्य कहते हुए रणबाँकुरे वहाँ आए जहाँ श्रीरामचन्द्रजी थे ।।६।।

धूरि पूरि नभ मंडल रहेऊ ❀ राम बुलाइ अनुजसन कहेऊ
लै जानकिहि जाहु गिरिकंदर ❀ आवा निसिचरकटक भयंकर

आकाशमंडल धूम्राच्छन्न हो गया तब श्रीरामचन्द्रजीने लक्ष्मणको बुलाकर कहा कि हे लक्ष्मण ! तुम जानकीको लेकर पहाड़की कन्दरामें चलेजाओ, क्योंकि अब राक्षसोंकी भयानकसेना आ पहुँची।।

रहेहु सजग सुनि प्रभुकर बानी ❀ चले सहित सिय सरधनु पानी
देखि राम रिपुदल चढ़ि आवा ❀ बिहँसि कठिन कोदंड चढ़ावा

तब प्रभुकी वाणी सुनकर लक्ष्मणजी सीता सहित चल दिये । इधर जब रामजीने देखा कि शत्रुओंकी सेना आ पहुँची तो उन्होंने मुस्कराकर अपना कठोर धनुष चढ़ा लिया ।।

छन्द–कोदंड कठिन चढ़ाय प्रभु सिरजटा बाँधत सोह क्यों ।
मरकत कुधर पर लसत दामिनि कोटि संयुग भुजग ज्यों ।।
कटि कसि निषंग बिसाल भुज गहि चाप बिसिख सुधारिकै ।
चितवत मनहुँ मृगराज प्रभु गजराजघटा निहारिकै ।।१०।।

तब उस कठिन धनुष को चढ़ाते और शिर पर जटा-जूट बाँधते हुए प्रभु कैसे शोभायमान हुए मानों नीलमणि पर्वत पर करोड़ों दामिनियाँ दमक रही हैं और उस पर उनकी भुजा रूपी दो सर्प सुन्दर शोभा पा रहे हैं । तब कमर में तरकस कसे और लम्बी भुजा से कठोर धनुषको ग्रहण किये तथा बाणों को सुधारते हुए प्रभु राक्षसों की सेना को इस प्रकार देखने लगे मानो एक सिंह हाथियों के झुण्ड को देख रहा हो ।। ६ ।।

सोरठा–आइगये बगमेल, धरहु धरहु धावहिं सुभट ।
यथा बिलोकि अकेल, बालरबिहिं घेरत दनुज ।।१०।।

उसी समय राक्षसों की सेना अपने वाहनोंकी बागें छोड़कर टूट पड़ीं और धरो-धरो चिल्लाते हुए सब ऐसे दौड़े जैसे प्रातःकाल के सूर्य को देख कर उन्हें राक्षस घेर लेते हैं ।। १० ।।

घेरि रहे निसिचर समुदाई ❀ दंडकखगमृग चले पराई
प्रभु बिलोकि सर सकहिं न डारी ❀ थकित भये रजनीचर झारी

जब राक्षसों ने घेर लिया तब दण्डक बन के सब मृग पक्षी भाग चले । किन्तु श्रीरामचन्द्रजी को देखकर राक्षसगण ऐसे थकित रह गये जैसे कोई अपना बाण न चला सके ।। २ ।।

सचिव बोलि बोले खर दूषन ❀ यह कोउ नृप बालक नर भूषन
सुर नर नाग असुर मुनि जेते ❀ देखे सुने हते हम केते

अपने मन्त्रियों को बुलाकर खर दूषणने कहा कि यह मनुष्यों में भूषण किसी राजा के पुत्र हैं । हमने बहुत देवता, मनुष्य, नाग, असुर और मुनियों को देखा, सुना और मारा है ।।

हम भरि जनम सुनहु सब भाई ❀ देखी नहिं अस सुंदरताई
यद्यपि भगिनिहिं कीन्ह कुरूपा ❀ बधलायक नहिं पुरुष अनूपा

परन्तु हे सब भाइयों! सुनो, हमने जन्म भर ऐसी सुन्दरता कहीं नहीं देखी। यद्यपि इन्होंने हमारी बहन को कुरूप कर दिया है तो भी यह अनुपम पुरुष बध करने योग्य नहीं हैं ॥६॥

देहु तुरत निजनारि दुराई ❀ जीवत भवन जाहु दोउ भाई
मोर कहा तुम ताहि सुनावहु ❀ तासु बचन सुनि आतुर आवहु

यदि यह अपनी छिपाई स्त्रीको दे दें तो अवश्य ये दोनों भाई जीते जागते घरको जायें। मेरा यह कहना तुम उन्हें सुना दो और उनका जैसा उत्तर हो, सुनकर शीघ्र लौट आओ ॥८॥

दोहा—भये कालबस मूढ़ सब, जानहिं नहिं रघुबीर।
मसक फूँक किमि मेरु उड़, सुनहु गरुड़ मतिधीर ॥२९॥

हे मतिधीर गरुड़! सुनो, ये सब मूढ़ राक्षस कालके वशीभूत हो गए थे। इसीसे श्रीरामजी को नहीं जानते थे। भला कहीं मच्छड़की फूंक से सुमेरु पर्वत उड़ सकता है? ॥२६॥

दूतन कहा रामसन जाई ❀ सुनत राम बोले मुसुकाई
आजु भयउ बड़भाग्य हमारा ❀ तुम्हरे प्रभु अस कीन्ह बिचारा

जब दूतोंने जाकर श्रीरामजीसे ऐसे कहा तब उसे सुनकर श्रीरामजीने मुस्कुराकर कहा कि—आज हमारा बड़ा भाग्य है जो तुम्हारे स्वामी ने ऐसा विचार किया ॥ २ ॥

हम क्षत्रिय मृगया बन करहीं ❀ तुमसे खल मृग खोजत फिरहीं
रिपु बलवंत देखि नहिं डरहीं ❀ एकबार कालहुसन लरहीं

हम क्षत्रिय तो बनमें आकर शिकार करते हैं और तुम्हारे जैसे दुष्ट मृगोंको खोजते फिरते हैं। हम बलवान् शत्रुको देखकर नहीं डरते और एक बार कालसे भी लड़ जाते हैं॥

यद्यपि मनुज दनुजकुलघालक ❀ मुनिपालक खलसालक बालक
जो न होइ बल घर फिरि जाहू ❀ समर बिमुख मैं हतौं न काहू

यद्यपि हम मनुष्य हैं तथापि राक्षसोंके कुलघालक और मुनिजनों के पालक तथा दुष्टोंके बध करने वाले हैं। यदि तुममें शक्ति न हो तो घर लौट जाओ। युद्ध से विमुख होनेवालेको मैं नहीं मारता॥

रन चढ़ि करिय कपटचतुराई ❀ रिपुपर कृपा परमकदराई
दूतन जाय तुरत अस कहेऊ ❀ सुनि खर दूषन उर अति दहेऊ

युद्धमें चढ़कर कपट और चतुरता करनी चाहिए, किन्तु शत्रुपर दया करनी परम कायरता है। जब दूतोंने जाकर कहा तो उसे सुनकर खरदूषण का हृदय अत्यन्त दग्ध हो गया ॥८॥

छन्द--उर दहेउ कहेउ कि धरहु धावहु बिकट भट रजनीचरा।
शर चाप तोमर शक्ति शूल कृपाण परिघ परशु धरा।
प्रभु कीन्ह धनुटंकोर प्रथम कठोर घोर भयावहा।
भये बधिर ब्याकुल यातुधान न ज्ञान तेहि अवसर रहा ॥११॥

हृदय दग्ध होना था कि खर-दूषण महाक्रोधित होकर बोला कि हे विकट राक्षस योद्धाओं! इन दोनोंको पकड़ लो, तब सारे राक्षस तरह-तरहके शस्त्रोंको लेकर दौड़ पड़े। प्रभुने पहले अपने धनुषका टंकोर किया, जिसके घोर शब्दको सुनकर राक्षसोंकी सारी सेना बधिर हो गई, उस समय राक्षसोंको कुछ भी ज्ञान न रहा ॥११॥

दोहा—सावधान होइ धायउ, जानि सबल आराति।
लागे वर्षण रामपर, अस्त्र शस्त्र बहुभाँति ॥३०॥

फिर तो शत्रुको बलवान् जानकर राक्षस सावधान होकर दौड़े और श्रीरामचन्द्रजी पर अनेक भाँतिसे अस्त्र-शस्त्रोंकी वर्षा करने लगे ॥३०॥

दोहा—तिनके आयुध तृनसम, करि काटे रघुबीर।
तानि सरासन श्रवनलगि, पुनि छाँड़े निजतीर ॥३१॥

उनके शस्त्रों को श्रीरामचन्द्रजीनें तृणके समान करके काट डाला और फिर कानों तक धनुषको तानकर अपने बाण छोड़ने लगे ॥ ३१ ॥

छंद—तब चले बान कराल। फुङ्करत जानु बहु ब्याल।
कोपेउ समर श्रीराम। चले विसिख निसित निकाम ॥
अवलोकि खरतर तीर। मुरि चले निसिचर वीर।
इक एककहँ न सँभार। करैं तात मात पुकार ॥१२॥

फिर तो वह बिकराल बाण ऐसे चले मानों फुङ्कार करते बहुतसे सर्प जाते हों, जब युद्धमें श्रीरामजी कुपित हुए तो बड़े पैंने बाण चले, तब अति वेगवान् बाण देखकर समस्त वीर राक्षस मुंह मोड़कर लौट चले, किसीको कोई न संभाला और हे तात-मात! पुकारने लगे ॥

कोउ कहे खर का कीन्ह। जो युद्ध इन सन लीन्ह।
ये बान अतिहिं कराल। ग्रसे आजु मानहुँ काल ॥१३॥
भे क्रुद्ध तीनों भाइ। जो भागि रण ते जाइ।
तेहि बधब हम निज पानि। फिरे मरन मनमहँ ठानि ॥१४॥

कोई कहता—खरने यह क्या किया जो इनसे युद्ध लिया, जिसका बाण अत्यन्त कराल है यह कालके समान आकर ग्रसता है। फिर तो खर, दूषण और त्रिशिराने क्रोधित होकर कहा, जो युद्धसे भाग जायेगा वह मारा जायेगा। तब राक्षसगण अपना मरना निश्चिंत कर लौटे ॥१४॥

दोहा—उमा एक प्रभु दनुज बहु, पुनि इनके बड़ भाग।
तरन चहहिं प्रभुशर लगे, बिना जोग जप जाग ॥३२॥

(शिवजी कहते हैं) हे पार्वती! ईश्वर राम अकेले और राक्षस बहुत थे और पुनः इनके बड़े भाग्य थे जो प्रभुके बाणोंसे बिना योग, जप और यज्ञ के ही तरना चाहते थे ॥३२॥

छंद—आयुध अनेक प्रकार ❋ सन्मुख ते करहिं प्रहार।
रिपु परम कोपेउ जानि ❋ प्रभु धनुष सर संधान ॥१५॥

छाँड़े बिपुल नाराच ❀ लगे कटन बिकटपिसाच ।
उर सीस कर भुज चरन ❀ जहँ तहँ लगे महि परन ॥१६॥

राक्षस अनेक प्रकारके आयुधोंको सन्मुखसे चलाते किन्तु जब श्रीरामचन्द्रने शत्रुओंको क्रुद्ध जानकर अपना धनुष सँभाला ॥१५॥ फिर तो ऐसे अनेक बाण छोड़े जिससे भयानक राक्षस कटने लगें, जहाँ-तहाँ हृदय, शिर, भुजा और पैर कटकर पृथ्वीपर गिरने लगे ॥१६॥

चिक्करत लागत बान ❀ धर परत कुधर समान ।
भट कटत तन सतखंड ❀ पुनि उठत करि पाखंड ॥१७॥
नभ उड़त बहु भुज मुंड ❀ बिनु मौलि धावत रुण्ड ।
खग कंक काक शृगाल ❀ कटकटहिं कठिन कराल ॥१८॥

बाणोंके लगते ही चिल्लाते हुए पर्वतके समान पृथ्वीपर गिर पड़ते। उनके शरीर सैकड़ों टुकड़ोंमें हो कट जाते किन्तु वे फिर भी पाखंड करके उठ जाते। फिर भी आकाशमें बहुत सी भुजायें और मुण्ड उड़ने लगे, पक्षी, काक, गीध, गीदड़ आदि कटकटाय कर मांस भक्षण करने लगे ॥

छन्द—कटकटहिं जंबुक भूत प्रेत पिसाच खप्पर साजहीं ।
बैताल बीर कपाल ताल बजाय योगिनि नाचहीं ॥
रघुबीर बाण प्रचंड खंडहिं भटन्ह के उर भुज सिरा ।
जहँ तहँ परहिं उठि लरहिं धरु धरु करहिं भयकारि निगिरा ॥१९॥

स्यार कटकटा रहे और भूत, प्रेत, पिशाच अपना-अपना खप्पर सजा रहे। बैताल गण वीरों की खोपड़ियों पर ताल बजा रहे, योगिनियाँ नाच रहीं, श्रीरामचन्द्रजी के पैने बाण राक्षसों को काट कर गिरा रहे थे। राक्षसगण इधर-उधर गिरते और उठकर लड़ते हुए पकड़ो-पकड़ो कहकर भयंकर शब्द कर रहे थे ॥१९॥

अंतावरी लै उड़हिं गीध पिसाच कर गहि धावहीं ।
संग्राम पुरवासी मनहु बहु बाल गुड़ी उड़ावहीं ॥
मारे पछारे उर बिदारे बिपुल भट घूर्णित परे ।
अवलोकि निज दल बिकट भट त्रिसिरादि खरदूषण फिरे ॥२०॥

गीध आँतोंको लेकर आकाशमें उड़ते हुए मँडला रहे थे, पिशाच उन्हीं आँतोंको हाथोंमें पकड़कर दौड़ रहे थे, उस समय संग्राममें ऐसा जान पड़ता था मानों संग्राम नगरके रहनेवाले बहुतसे बालक पतंगे उड़ा रहे हैं। श्रीरामचन्द्रजीके बाणोंने अनेक योद्धाओं को मारे, बिदारे और बहुतसे वीर पृथ्वी पर गिरने लगे। तब दलके योद्धाओंको इस प्रकार व्याकुल देखकर खर-दूषण त्रिशिरादिक योद्धा रणभूमिकी ओर विशेषरूपसे झुके ॥२०॥

छन्द—सर सक्ति तोमर परसु शूल कृपान एकहि बारहीं ।
करि कोप श्रीरघुबीर पर अगनित निशाचर डारहीं ॥

प्रभु निमिष महँ रिपुसर निवारि प्रचारि डारे सायका ।
दसदस बिसिष उरमाँझमारे सकल निसिचरनायका ॥२१॥

फिर तो त्रिशिरादिक अगणित राक्षस प्रचण्ड कोप करके बाण, शक्ति, तोमर, फरसे, शूल और तलवार लेकर एक बार ही श्रीरामचन्द्रजी पर चलाने लगे। किन्तु श्रीरामचन्द्रजीने पल मात्र में ही अपने प्रचंड बाणों द्वारा राक्षसोंके बड़े-बड़े सेनापतियों को छातीमें दश-दश बाण मारे ॥

महि परत पुनि उठि लरत मरत न करत मायाग्रतिघनी।
सुर डरत चौदह सहस निसिचर एक श्रीरघुकुलमनी ॥
सुर मुनि सभय प्रभु देखि मायानाथ ग्रति कौतुककर्यो ।
देखहि परस्पर राम करि संग्राम रिपुदल लरि मर्यो ॥२२॥

तब बाणोंसे विध कर योद्धा पृथ्वीमें गिरते, वे तत्काल ही उठ कर फिर युद्ध करने लगते, परन्तु मरते न थे। देवता लोग चौदह हजार राक्षसोंमें श्रीरामचन्द्रजीको अकेला देखकर डरते थे। मुनियों को डरा हुआ देखकर श्रीरामचन्द्रजीने ऐसा कौतुक किया कि वे सब राक्षस आपस में ही लड़ मरे ॥

दोहा–राम राम कहि तनु तजहिं, पावहिं पद निर्वान।
करि उपाय रिपु मारेउ, छिनमहँ कृपानिधान ॥३३॥

वे सब राम-राम कहते हुए शरीर छोड़ते और सब निर्वाण पद पाते थे। इसी प्रकार शक्तिपूर्वक कृपानिधानने क्षण भर में ही शत्रुओंका नाश कर दिया ॥ ३३ ॥

दोहा–हर्षित वर्षहिं सुमन सुर, बाजहिं गगन निसान ।
अस्तुति करि करि सब चले, सोभित विविध विमान ॥३४॥

देवता प्रसन्न होकर फूल बरसाकर आकाशमें नगाड़े बजाते थे, रामजी की स्तुति करके सब देवता विविध भांतिके विमानोंमें सुशोभित होकर अपने लोक को चले गये ॥३४॥

जब रघुनाथ समर रिपु जीते ❁ सुर नर मुनि सबके दुख बीते
तब लछमन सीतहि लै आए ❁ प्रभुपद परत हरषि उर लाए

जब श्रीरामजी युद्धमें विजयी हुए तो देवता, मनुष्य और मुनि सबका भय जाता रहा। तब लक्ष्मण सीता को ले आये, प्रभुके चरणोंमें गिरे तो रामजीने प्रसन्न होकर छातीसे लगा लिया ॥

सीता निरखि स्याम मृदु गाता ❁ परम प्रेम लोचन न अघाता
पंचवटी बसि श्रीरघुनायक ❁करत चरित सुरमुनि सुखदायक

सीताजी उन साँवले रामको देखकर अत्यन्त प्रेमसे परिपूर्ण हो गयीं। नेत्र अघाते नहीं थे। इस प्रकार श्रीरामजीनें पंचबटीमें निवास करके देवता और मुनियोंको सुख देनेवाली परम पवित्र लीला की ॥

धुँआ देखि खरदूषन केरा ❁ सूर्पनखा तब रावन प्रेरा
बोली बचन क्रोध करि भारी ❁ देस कोस की सुरति बिसारी

तब खरदूषण का अन्त अर्थात् चिताग्निके धुएँ को देख सूर्पणखाने रावण को प्रेरणा दी। वह महान् क्रोधमें बोली कि तूने देश-कोष सबका स्मरण भुला दिया है ॥६॥

करसि पान सोवसि दिन राती ❀ सुधि तोहिं नहिं सिरपर आराती
राजनीति बिनु धन बिनु धर्मा ❀ हरिहिं समर्पे बिनु सतकर्मा

तू शराब पीकर दिन-रात सोता है, क्या स्मरण नहीं है कि तेरे शिर पर शत्रु खड़ा है। बिना नीतिके राज्य, बिना धर्मके धन और भगवान्‌को अर्पण किए बिना सत्कर्म ॥८॥

विद्या बिनु विवेक उपजाये ❀ श्रम फल पढ़े किये अरु पाये
संग ते यती कुमंत्रतें राजा ❀ मानतें ज्ञान पानतें लाजा

और ज्ञानोत्पत्तिके बिना विद्या व्यर्थ तथा परिश्रम मात्र है। संग से संन्यासी, कुमंत्रसे राजा, मानसे ज्ञान और शराब पीनेसे लज्जा ॥१०॥

प्रीति प्रणय बिनु मदतें गुनी ❀ नासहिं बेगि नेति अस सुनी

और नम्रता रहित प्रीति तथा अहंकारसे गुणोंका शीघ्र ही नाश हो जाता है मैंने ऐसी नीति सुनी है।

सोरठा--रिपु रुज पावकु पाप, प्रभु अहि गनिय न छोट करि।
अस कहि बिबिध बिलाप, पुनि लागी रोदन करन॥११॥

शत्रु, रोग, अग्नि, पाप, स्वामी और सर्प इन्हें छोटा न गिनें। ऐसा कह कर वह फिर अनेक प्रकारके बिलाप कर रोने लगी ॥ ११ ॥

दोहा--सभामाँझ व्याकुल परी, बहु प्रकार कह रोइ।
तोहिं जियत दसकंधर, मोरि कि अस गति होइ॥३५॥

फिर व्याकुल होकर सभामें गिर पड़ी और बहुत प्रकारसे रोती हुई कहने लगी, हे दशकन्धर ! तेरे जीते ही मेरी ऐसी दुर्दशा हो ? ॥ ३५ ॥

सुनत सभासद उठि अकुलाई ❀ समुझाई गहि बाहु उठाई
कह लंकेस कहसि निज बाता ❀ केहि तव नासा कान निपाता,

यह सुनते ही सभासद क्रोधित हो गए और समझाकर बाँह पकड़कर उठाया ॥१॥ तब रावण ने कहा कि क्या है, अपनी बात कह, किसने तेरा नाक कान काटा है ? ॥२॥

अवधनृपति दसरथ के जाए ❀ पुरुषसिंह बन खेलन आए
समुझि परी मोहिं इन्हकै करनी ❀ रहित निशाचर करिहहिं धरनी

तब सूर्पनखा बोली कि अयोध्याके राजादशरथके पुत्र जो मनुष्योंमें सिंह समान हैं, वह दंडकबनमें शिकार खेलने आये हैं। उनकी करनीसे मुझे ज्ञात होता है कि वे पृथ्वीको राक्षसों से रहित कर देंगे ॥४॥

जिनकर भुजबल पाइ दसानन ❀ अभय भये मुनि विचरहिं कानन
देखत बालक कालसमाना ❀ परम धीर धन्वी गुननाना

हे रावण ! जिनकी भुजाओंका बल पाकर मुनिजन निर्भय होकर बनमें विचरते हैं। देखनेमें तो वे बालक हैं पर कालके समान परम वीर धन्वी और अनेक गुणोंसे युक्त हैं ॥६॥

अतुलित बल प्रताप दोउ भ्राता ❀ खलबधरत सुरमुनिसुखदाता
सोभाधाम राम अस नामा ❀ जिन्हके सँग इक नारि ललामा

दोनों भाई अमितबली और प्रतापशाली हैं, दुष्टोंको मारने में रत और देवता-मुनियों को सुख देने वाले हैं। वे शोभाके धाम हैं और उनका नाम राम है जिनके साथ एक सुन्दर स्त्री है।

सोरठा—अति सुकुमारि पियारि, पटतरजोग न आहि कोउ।
मैं मन दीख बिचारि, जहँ रह तेहि सम आन नहिं ॥१२॥

वह अत्यन्त सुकुमारी और प्यारी है जिसकी उपमा देने के योग्य नहीं है। मैंने अपने मनमें विचार कर देखा कि वह जिसके पास रहे उसके समान दूसरा कोई नहीं है ॥ १२ ॥

रूपरासि बिधि नारि सँवारी ❀ रति सतकोटि तासु बलिहारी
अजहुँ जाइ देखहु तुम जबहीं ❀ हुइहौ विकल तासु लखि तबहीं

उस रूपकी राशिको ब्रह्माने ऐसा सँवारकर बनाया है कि सौ करोड़ रति भी उस पर न्यौछावर होती हैं। अब भी तुम जाकर जब उसे देखोगे तो विकल हो उसके वश हो जाओगे ॥

जीवनमुक्त लोक बस ताके ❀ दसमुख सुन सुन्दरि अस जाके
तासु अनुज काटे श्रुति नासा ❀ सुनि तव भगिनी करि परिहासा

हे दशानन ! सुन, वही जीवन मुक्त है, और उसीके वश में सब लोक हैं जिसके पास वैसी सुन्दरी है। उसके छोटे भाईनें मेरी नाक, कान काटी है और तेरी बहन सुनकर हँसी उड़ाई है ॥

बिना चूक अस दसा हमारी ❀ अपराधी किमि बचहिं सुरारी
खर दूषन सुनि लगे पुकारा ❀ छिनमहँ सकल कटक उन मारा

हे देवताओंके शत्रु ! बिना अपराध तो हमारी ऐसी दशा हुई हैं, अपराधी उसके हाथ से कैसे बच सकते हैं। खर-दूषण ने मेरी गौहारी की तो उन्होंने क्षण भरमें ही सब सेना मार गिरायी।

खर दूषन त्रिसिराकर घाता ❀ सुनि दससीस जरे सब गाता
भयेउ सोचबस नहिं विश्रामा ❀ बीतहिं पल मानहुँ सत जामा

खर, दूषण और त्रिशिराकी मृत्यु सुन रावणके सब अंग जलने लगे। वह शोचके वश हो गया, विश्राम न रहा और एक पल मानों सौ पहरके समान बीतने लगे ॥ ८ ॥

दोहा—सूपनखहिं समुझाइ करि, बल बोलेसि बहु भाँति।
भवन गयउ अति सोचबस, नींद परी नहिं राति ॥३६॥

शूर्पनखा को समझा, बहुत प्रकारसे अपने बल का वृत्तान्त कह रावण घर में चला तो गया; परन्तु शोकवस होनेसे उसको रातमें नींद नहीं आई ॥ ३६ ॥

सुर नर असुर नाग जगमाहीं ❀ मोरे अनुचरसम कोउ नाहीं
खर दूषन मोसम बलवंता ❀ तिन्है को मारै बिनु भगवंता

देवता, दैत्य, मनुष्य और नाग जो जगत् में हैं उनमें से कोई भी मेरे नौकरों के बराबर नहीं हैं और खर तथा दूषण तो मेरेही समान बलवान् थे, उनको भगवान्के बिना कौन मार सकता है ?

सुररंजन भंजन महिभारा ❀ जो जगदीश लीन्ह अवतारा
तौ मैं जाइ बैर हठि करिहौं ❀ प्रभु कर मरि भवसागर तरिहौं

यदि देवताओं को आनन्द देनेवाले, भूमिका भार उतारने वाले, परमेश्वरने ही अवतार लिया है तो मैं जाकर उनसे हठात् बैर करूँगा और प्रभुके हाथसे मरकर भवसागरसे तर जाऊँगा ।।

होय भजन नहिं तामसदेहा ❀ मन क्रम-बचन मंत्र दृढ़ एहा
जो नररूप भूपसुत कोऊ ❀ हरिहौं नारि जीति रन दोऊ

इस तामसी शरीरसे भजन तो बन नहीं सकता इसलिये मन, कर्म और वचन से यही दृढ़ निश्चय है कि, यदि वे कोई राजकुमार हैं तो युद्धमें जीतकर उनकी स्त्रीको हर लूँगा ।।६।।

चला अकेला यान चढ़ि तहवाँ ❀ बस मारीच सिंधुतट जहवाँ
रथ अनूप जोरे खर चारी ❀ वेगवंत इमि जिमि उरगारी

ऐसा विचारकर रावण अकेला रथ पर चढ़ समुद्रके तटपर गया, जहाँ, मारीच रहता था । रावणने रथमें अत्युत्तम चार गधे जोते, जिनका वेग गरुड़के समान था ।।८।।

छंद—उरगारिसम अतिवेग बरनत जाइ नहिं उपमा कही ।
सिरछत्र सोभित स्यामघन जनु चमर स्वेत विराजही ।।
यहि भाँति लाँघत सरित सैल अनेक वापी सोहहीं ।
बन बाग उपवन बाटिका सुचि नगर मुनिमन मोहहीं ।।२३।।

हे पार्वती ! गरुड़के ऐसा उन गदहोंका अति तीव्र बेग था, जिसकी उपमा कहनेमें नहीं आती । रावणका श्याम घटा-सा काला क्षत्र, और शिर पर श्वेत चँवर शोभायमान था । इस प्रकार अनेक नदी, पर्वत, बावलियाँ, बन, बाग, बगीचे, फुलवाड़ी और पवित्र मार्गों को लाँघता रावण जाता हुआ शोभा देता था कि जिन स्थलोंको देखकर मुनि लोगोंके मन मोहित होते थे ।।

दोहा—बहु तड़ाग सुचि बिहँग मृग, बोलत विविध प्रकार ।
यहि बिधि आयो सिंधुतट, सत जोजन विस्तार ।।३७।।

तालाबों पर अनेक पवित्र पक्षी और मृग विविध प्रकारसे बोल रहे थे, ऐसे आकाश-मार्ग से सब पदार्थोंको देखता वह राक्षस सौ योजन विस्तारवाले समुद्रके इस तटपर आया ।। ३७ ।।

सुंदर जीव विविध विधि जाती ❀ करहिं कुलाहल दिन अरु राती
कूदहिं ते गर्जहिं घननाई ❀ महाबली बल बरनि न जाई

जहाँ जात-जाति के मनोहर जीव-जन्तु रात-दिन कोलाहल कर रहे थे ।।१।। वे कूदते, गरजते और घनघनाते हैं, जिनका बल वर्णन करने में नहीं आता ।।२।।

कनकबालु सुंदर सुखदाई ❀ बैठहिं सकल जंतु तहँ जाई
तेहिपर दिव्य लता द्रुम लागे ❀ जेहि देखत मुनिमन अनुरागे

तटपर सोनेकी सुन्दर सुखदाई बालू बिछी है, उसपर आकर सब जीव-जन्तु बैठते हैं वहाँ अच्छे-अच्छे दिव्य वृक्ष और लतायें लगी हुई हैं जिन्हें देख मुनिजनोंके मन मोहित हो जाते ।।४।।

गुहा बिबिध बिधि रहहिं बनाई ❀ बरनत सादरमति सकुचाई
चाहिय जहाँ ऋषिनकर बासा ❀ तहाँ निसाचर करहिं निवासा

अनेक प्रकार की गुफायें बन रही हैं जिनका वर्णन करते शारदा भी मन में सकुचाती हैं। हे पार्वती ! जहाँ मुनि लोगों का निवास होना चाहिये था वहाँ राक्षस लोग रहने लगे ।।

दसमुख देखि सकल सकुचाने ❀ जे जड़ जीव सजीव पराने
इहाँ राम जस जुक्ति बनाई ❀ सुनहु उमा सो कथा सुहाई

रावण को देखते ही सब लोग सकुचा गये और जितने जड़-चेतन जीव थे वह सब भाग गये। हे पार्वती ! यहाँ श्रीरामचन्द्रजीनें जो सुन्दर युक्ति बनाई, मैं कहता हूँ उस सुहावनी कथा को सुनो ।।

दोहा—लछमन गये बनहिं जब, लेन मूल फल कंद।
जनकसुतासन बोलेउ, बिहँसि कृपासुखकंद ।।३८।।

जब लक्ष्मण बन में कन्द मूल फल लेने गये, तब कृपा के सागर आनन्दकन्द श्रीरामचन्द्रजी हँसकर सीताजीसे बोले कि ।। ३८ ।।

सुनहु प्रियाब्रत रुचिर सुसीला ❀ मैं कछु करब ललित नरलीला
तुम पावकमहँ करहु निवासा ❀ जौं लगि करौं निसाचर नासा

हे सुन्दर व्रतवाली सुशील प्रिये ! सुनो, मैं कुछ मनोहर मनुष्य-लीला करूँगा ।।१।। इसलिए जब-तक मैं राक्षस (रावण) का नाश न करूँ, तब-तक तुम अग्निमें निवास करो ।। २ ।।

जबहिं राम सब कहेउ बखानी ❀ प्रभुपद धरि हिय अनल समानी
निजप्रतिबिंब राखि तहँ सीता ❀ तैसेइ सील स्वरूप बिनीता

जब प्रभुनें सारी कथा बखान कर कही तो सीता प्रभुके चरण-कमलको हृदय में धारण कर अग्नि में समा गई और अपना प्रतिबिम्ब वहाँ रख छोड़ा, वह स्वरूप, वैसे ही शीलवान् और विनीत था ।।

लछमनहू यह मरम न जाना ❀ जो कछु चरित रचा भगवाना
दससुख गयउ जहाँ मारीचा ❀ नाइ माथ स्वारथरत नीचा

हे पार्वती ! प्रभुने जो कुछ चरित्र किया उसका भेद लक्ष्मणने भी नहीं जाना ।। ५ ।। फिर तो महानीच और स्वार्थपरायण रावणने मारीचके पास आकर प्रणाम किया ।। ६ ।।

नवनि नीचकी अति दुखदाई ❀ जिमि अंकुस धनु उरग बिलाई
भयदायक खलकी प्रियबानी ❀ जिमि अकालके कुसुम भवानी

नीचकी नम्रता बड़ी दुखदाई होती है देखिए, जैसे अंकुश, धनुष, सर्प और बिल्ली। हे पार्वती ! खल पुरुषकी प्रिय वाणी वैसे ही भयदायक होती है, जैसे आकाश का फूल ।।

दोहा—करि पूजा मारीच तब, सादर पूछी बात।
कवन हेतु मन ब्यग्र अति, अकसर आयहु तात ।।३९।।

तब मारीचने आदरके साथ सत्कार व पूजा कर यह बात पूछा कि हे तात ! आपका मन व्यग्र क्यों है ? कहो आप अकेले क्यों आये हो ? ।। ३९ ।।

दसमुख सकल कथा तेहि आगे ❁ कही सहित अभिमान अभागे
होहु कपटमृग तुम छलकारी ❁ जेहिविधि हरि आनौं नृपनारी

तब हतभाग्य रावणने अभिमान के साथ सब कथा मारीच के आगे कही। और बोला, हे मारीच! तुम माया-मृग बनो कि, जिस प्रकार मैं राजा की स्त्री को हर ले आऊँ ॥

तेइ पुनि कहा सुनहु दससीसा ❁ ते नर रूप चराचरईसा
तासों तात बैर नहिं कीजै ❁ मारे मरिय जिआये जीजै

यह सुन मारीचने रावणसे कहा कि हे रावण! वह साक्षात् चराचरके स्वामी हैं। हे तात! तुम उनसे वैर मत करो, उनके मारने से संसार मरता और जिलानेसे जीता है ॥

मुनि-मख राखन गये कुमारा ❁ बिन फर सर रघुपति मोहिं मारा
सत योजन आयउँ छिनमाहीं ❁ तिन्हसन बैर किए भल नाहीं

हे तात! जब राम, कुमार अवस्था के थे तब उन्होंने मुझको बिना फलका बाण मारा था। जिसके लगते ही मैं एक क्षणमें सौ योजन पर आ पड़ा, उनसे बैर करने पर अच्छा नहीं होगा ॥

भइ मति कीट भृंग की नाई ❁ जहँ तहँ मैं देखौं दोउ भाई
जौं नर तात तदपि अति सूरा ❁ तिनहिं बिरोध न पाइय पूरा

तबसे मेरी बुद्धि कीट भृङ्ग-सी हो गई है, जहाँ-तहाँ मुझे वे दोनों भाई ही दीखते हैं ॥ हे तात! वे मनुष्यरूपमें भी बड़े शूर वीर हैं, इनसे विरोध करके पार पाना कठिन है ॥

दोहा—जेहि ताड़का सुबाहु हति, खंडेउ हरकोदंड।
खर दूषन त्रिनसिरा बधेउ, मनुज कि अस बरिबंड ॥४०॥

क्योंकि जिन्होंने ताड़का और सुबाहुको मार महादेवजी का धनुष तोड़ खर-दूषण और त्रिशिराको मारा है; क्या ऐसा बरिवण्ड (जबरदस्त) कोई मनुष्य हो सकता है? ॥४०॥

रा अस नाम सुनत दसकंधर ❁ रहत प्रान नहिं मम उरअंतर
जाहु भवन कुल कुसल बिचारी ❁ सुनत जरा दीन्हेसि बहु गारी

हे रावण! 'राम' ऐसा नाम सुनते ही मेरे हृदयमें प्राण नहीं रहता। इसलिए तुम अपने कुलकी कुशल विचारकर, घर जाओ! मारीचके ये वचन सुन रावण जल उठा और बहुत सी गालियाँ दीं।

गुरुजिमि मूढ़ करसि मम बोधा ❁ कहु जग मोहिं समान को जोधा
तब मारीच हृदय अनुमाना ❁ नवहि बिरोधे नहिं कल्याना

और बोला कि तू मुझे गुरु की भाँति उपदेश करता है? बता जगत् में मेरे समान योद्धा कौन है? तब मारीचने अपने मनमें विचार किया कि इन नौ से विरोध करनेमें कल्याण नहीं होता ॥

सस्त्री मर्मी प्रभु सठ धनी ❁ बैद बंदि कबि भानस गुनी
उभय भाँति देखा निज मरना ❁ तब ताकेउ रघुनायक सरना

शस्त्रधारी, भेदियां, स्वामी, शठ, धनवान्, वैद्य, वन्दी, कवि और गुणी मनुष्य ॥५॥ जब मारीचने दोनों ओरसे अपना मरण जान लिया तब प्रभु की शरण ली ॥ ६ ॥

उतर देत मोहि बधहि अभागे ❀ कस न मरौं रघुपतिसर लागे
अस जिय जानि दसानन संगा ❀ चला रामपद प्रेम अभगा
मन अतिहर्ष जनाव न तेही ❀ आजु देखिहौं परम सनेही

मारीचने विचार किया कि, यदि मैं इसे उत्तर दूंगा तो यह अभागा मुझे मार डालेगा, तो फिर प्रभुके बाणसे ही क्यों न मरूँ ? हे पार्वती ! ऐसा जी में जान प्रभुके चरणोंमें अखंड प्रीति रखता रावणके साथ चला । यद्यपि मारीचके मनमें बड़ा हर्ष है, पर उसे वह प्रकट नहीं जनाता । उसके मनमें हर्ष इस बात का है कि आज परमस्नेही रामका दर्शन करूँगा ।।

छंद—निजपरम प्रीतम देखि लोचन सफल करि सुख पाइहौं ।
श्रीसहित अनुजसमेत कृपानिकेतपद मन लाइहौं ।।
निर्वाणदायक क्रोध जाकर भक्ति अवसहि वसकरी ।
निज पाणि शर संधानि सो मोहि बधहि सुख-सागर हरी।।२४।।

आज मैं अपने परम प्रियतम को देख कर अपने नेत्र सफल कर परमानन्द को प्राप्त होऊँगा और सीता लक्ष्मण सहित कृपानिधान प्रभुमें मन लगाऊँगा । मारीच कहता है कि जिन प्रभु का क्रोध मोक्ष को देनेवाला है तथा भक्त लोग जिन्हें भक्तिसे ऐसे ही वशमें कर लेते हैं, वे सुख-सिन्धु अपने हाथसे बाण संधान करके मुझे मारेंगे ।।२४।।

दोहा--मम पाछे धर धावत, धरे सरासन बान ।
फिरि फिरि प्रभुहि बिलोकिहौं, धन्य न मोसम आन ।।४१।।

प्रभु धनुष-बाण लिए मेरे पीछे-पीछे पृथ्वी पर दौड़ेंगे और मैं फिर-फिर कर प्रभु को देखूंगा, अहो ! मुझसे धन्य कौन है ! कोई नहीं ।। ४१ ।।

सीतालषन सहित रघुराई ❀ जेहि बन बसहि मुनिन्ह सुखदाई
तेहि बननिकट दसानन गयऊ ❀ तब मारीच कपट मृग भयऊ ।।

सीता और लक्ष्मण के साथ मुनियों को सुख देने वाले प्रभु जिस बन में रहते थे । जब उस बनके निकट रावण गया तब मारीच कपटसे मृग रूप बन गया ।। २ ।।

अतिबिचित्र कछु बरनि न जाई ❀ कनकदेह मनिरचित बनाई
सीता परमरुचिर मृग देखा ❀ अंग अंग सुमनोहर वेखा

जो अत्यन्त विचित्र है कि कुछ कहा नहीं जाता । सुवर्णके शरीरमें रत्न जड़े हुए थे । तब सीताने परम सुन्दर उस मृगको देखा कि, जिसके एक-एक अंगकी बनावट बड़ी ही सुन्दर थी ।।

सुनहु देव रघुबीर कृपाला ❀ यहि मृगकर अतिसुंदर छाला
सत्यसंध प्रभु बध करि एही ❀ आनहु चर्म कहा बैदेही

तब सीताजी बोलीं कि हे मेरे देव कृपालु श्रीरामजी ! सुनिए, इस मृग की छाल बड़ी ही सुन्दर है । अस्तु, हे सत्यसन्ध प्रभो ! इसे बध कर इसका चर्म ले आइये ।। ६ ।।

तब रघुपति जाना सब कारन ❀ उठे हर्षि सुरकाज सँवारन
मृग बिलोकि कटि परिकर बाँधा ❀ करतल चाप रुचिर सर साधा

तब श्रीरामजीने सब कारणों को जान लिया तो देवताओं का कार्य संभालने के लिए प्रसन्न होकर उठे और मृग को देखकर कटि में तर्कस बाँध, हाथमें धनुष ले सुन्दर बाण, संधान कर ॥

प्रभु लछमनहिं कहा समुझाई ❀ फिरत विपिन निसिचर समुदाई
सीताकेरि करेहु रखवारी ❀ बुधि विवेक बल समय बिचारी

प्रभुने लक्ष्मणसे समझाकर कहा–हे भाई ! बनमें अनेक राक्षस फिरते हैं ॥९॥ सो तुम बुद्धि, विवेक, बल और समय विचार कर, सीता की रखवाली करना ॥ १० ॥

दोहा–अस कहि चलेउ तहाँ प्रभु, जहाँ कपटमृग नीच ।
देव हर्षविस्मय विवस, चातक वर्षा बीच ॥४२॥

ऐसा कहकर ईश्वर राम वहाँ चले जहाँ वह नीच कपट-मृग था । उस समय उन्हें देखकर देवता आनन्द और खेद वश ऐसे हो गए जैसे वर्षाके मध्यमें पपीहा होता है ॥४२॥

प्रभुहिं. विलोकि चला मृग भाजी ❀ धाए राम सरासन साजी
निगम नेति सिव ध्यान न पावा ❀ मायामृग पाछे सो धावा

फिर तो प्रभु को देख कर मृग भाग चला और श्रीरामजी धनुषको ले उसके पीछे-पीछे दौड़े जिन्हें वेदोंने नेति कहा और जिन्हें शिवजीने भी ध्यानमें न पाया वे ही मृगके पीछे दौड़े ॥

कबहुँ निकट पुनि दूरि पराई ❀ कबहुँक प्रगटै कबहुँ दुराई
प्रगटत दुरत करत छल भूरी ❀ इहि विधि प्रभुहिं गये लै दूरी

वह कभी निकट आता है फिर दूर भाग जाता और कभी प्रकट होता तो कभी छिप जाता था इस प्रकार प्रकट और छिपते हुए अनेक छल करता हुआ श्रीरामजी को बहुत दूर ले गया ॥

तब तकि राम कठिन सर मारा ❀ धरनि परेउ करि घोर चिकारा
लछमनकर प्रथमहिं लै नामा ❀ पाछे सुमिरेसि मनमहँ रामा

तब श्रीरामजीने लक्ष्य कर एक कठिन बाण मारा तो वह घोर चिग्घाड़ करता हुआ पृथ्वी पर गिर पड़ा ॥ गिरते ही उसने पहले लक्ष्मणका नाम लिया, पीछे मनमें श्रीरामजीका स्मरण किया॥

प्रान तजत प्रकटेसि निजदेही ❀ सुमिरेसि रामसहित बैदेही
अंतरप्रेम तासु पहिचाना ❀ मुनिदुर्लभ गति दीन्ह सुजाना

प्राण त्यागते समय उसने अपना शरीर प्रकट कर दिया और स्नेह सहित रामका स्मरण किया, सुजान प्रभुने उसके अंतरङ्ग को पहिचान कर ऐसी गति दी कि जो मुनियोंको भी दुर्लभ है ॥

दोहा–विपुल सुमन सुर बर्षहिं, गावहिं प्रभुगुनगाथ ।
निजपद दीन्ह असुरकहँ, दीनबन्धु रघुनाथ ॥४३॥

देवता घने फल बरसाते और प्रभु की गुण-गाथा गाते कि, रामजी बड़े दीन बन्धु हैं जो उस राक्षस को भी मोक्ष पद दिया ॥४३॥

खल बधि तुरत फिरे रघुबीरा ❀ सोह चाप कर कटि तूणीरा
आरत गिरा सुनी जब सीता ❀ कह लछिमन सन परम सभीता

हे पार्वती! दुष्टको मारकर राम तुरत लौटे। हाथमें धनुष और कमरमें तरकस शोभित था। हे गरुड़! जब सीताने वह आर्त्तवाणी सुनी तो उन्होंने भयभीत हो लक्ष्मणसे कहा कि ॥

जाहु बेगि संकट तव भ्राता ❀ लछमन बिहँसि कहा सुनु माता
भृकुटि बिलास सृष्टि लय होई ❀ सपनेहु संकट परै कि सोई

हे लक्ष्मण! जल्दी जाओ-तुम्हारे भाई संकटमें पड़े हैं यह सुन हँसकर लक्ष्मणने कहा—हे माता सुनो, जिनके भृकुटि विलाससे सृष्टिका प्रलय होता है क्या वह स्वप्नमें भी संकटमें पड़ सकते हैं।।

सौंपि गए मोहिं रघुपति थाती ❀ जो तजि जाउँ तोष नहिं छाती
यह जिय जानि सुनहु मम माता ❀ पूछत कहब कवन मैं बाता

मुझे श्रीरामचन्द्र धरोहर सौंप गए हैं इसे छोड़ कर जाता हूँ तो मन में सन्तोष नहीं होता है ॥ ५ ॥ हे माता! यह मन में जान कर मेरी बात सुनो कि जब पूछेंगे तो मैं क्या उत्तर दूंगा? ॥ ६ ॥

मर्मबचन सीता जब बोली ❀ हरिप्रेरित लछमन मति डोली
चहुँदिसि रेख खिचाइ अहीसा ❀ बारबार नायउ पद सीसा
बन दिसि देव सौंपि सब काहू ❀ चले जहाँ रावन ससि राहू

तब सीताजीने ऐसा मर्म-भेदी शब्द कहा कि जिससे प्रभुकी प्रेरणा से लक्ष्मण की बुद्धि चलायमान हो गई। लक्ष्मणजीने चारों ओर रेखा खींच बारम्बार सीताजी के चरणों में शिर नवाया ॥ ८ ॥ और बन तथा दिशाओंके देवताओं को सौंप जहाँ श्रीरामचन्द्र थे, वहाँ चले ॥

चितवहिं लषन सियहिं फिरि कैसे❀ तजत बच्छ निज मातहिं जैसे

लक्ष्मणजी फिर-फिर कर सीता को कैसे देखते हैं जैसे अपनी माता को छोड़ते समय बछड़ा देखता हो ॥ १० ॥

दोहा--एक डरत डर रामके, दूजे सीय अकेलि।
लखन तेज तनुहत भयो, जिमि डाढ़ी दव बेलि ॥४४॥

एक तो रामचन्द्रजीके डरसे डरते हैं दूसरे सीताजी अकेली हैं। इससे लक्ष्मणका शरीर ऐसा शोभाहीन हो गया जैसे दावाग्निसे जली लता हो जाती है ॥ ४४ ॥

सून्य बीच दसकंधर देखा ❀ आवा निकट जतीके भेषा
जाके डर सुर असुर डेराहीं ❀ निसि न नींद दिन अन्न न खाहीं

जब रावण ने इस बीचमें सूना देखा तब सन्यासी का वेष बना सीताजीके समीप आया। हे गरुड़! जिसके डरसे देवता, दैत्य ऐसे डरते हैं कि न रात को नींद लेते और न दिनमें अन्न खाते ॥

सो दससीस स्वान की नाईं ❀ इत उत चितइ चला भँड़िआईं
जिमि कुपंथ पग देत खगेसा ❀ रह न तेज बल बुधि लवलेसा

वह रावण कुत्तेकी तरह इधर-उधर देखता भड़ियाई करता चला जाता है, हे गरुड़! जैसे कुमार्ग में पैर रखते ही तेज बुद्धि और बलका लवलेश नहीं रहता वही दशा रावण की हो गई ॥

करि अनेक विधि छल चतुराई ❀ माँगेउ भिक्षा दसमुख जाई
अतिथि जानि सिय कंद मूल फल ❀ देन लगी तेहिं कीन्ह बहुरि छल

रावण ने अनेक प्रकारका कपट और चतुराई कर जाकर भीख माँगी ।। ५ ।। सीताजी अतिथि जान कर उसे कन्द मूल और फल देने लगीं परन्तु उसने फिर कपट किया ।। ६ ।।

कह दसमुख सुनु सुन्दरि बानी ❀ बाँधी भीख न लेउँ सयानी
बिधिगति बाम काल कठिनाई ❀ रेख लाँघि सिय बाहर आई

रावण ने कहा—हे सुन्दरि ! तू चतुर है, मेरी बात सुन, मैं (संन्यासी) हूँ, बँधी हुई भिक्षा नहीं लेता ।।७।। (यह सुन) विधाताकी बाम गति और समय की कठिनाईसे सीताजी रेखा लाँघकर बाहर आ गईं ।।८।।

दोहा--विस्वभरनि अघदलदलनि, करनि सकल सुरकाज ।
जाना नहिं तेहि समयमहँ, दससिरकपटके साज ।।४५।।

संसारका पालन करने वाली, पापोंके समूहका नाश करने वाली और सब देवताओ के कार्य सिद्ध करनेवाली होकर भी (सीताजी) उस समय रावण के कपटका सामान न जाना ।।४५।।

नानाविध कहि कथा सुनाई ❀ राजनीति भय प्रीति दिखाई
कह सीता सुनु जती गुसांई ❀ बोलेहु बचन दुष्टकी नांई

तब रावणने अनेक प्रकारकी सुहावनी कथा कही और राजनीति के अनुसार भय और प्रीति दिखाई। सीताने कहा—हे यतिराज ! सुनो, तुम दीखते तो संन्यासी हो और वचन दुष्टोंके से बोलते हो ।।

तब रावन निजरूप देखावा ❀ भइ सभीत जब नाम सुनावा
कह सीता धरि धीरज गाढ़ा ❀ आवत प्रभु रे रहु खल ठाढ़ा

सीताके वचन सुनकर रावण ने अपना स्वरूप दिखाया और जब नाम सुनाया तब सीताजी भयभीत हुईं। तब प्रगाढ़ धीरज धरकर, उन्होंने कहा कि रे दुष्ट ! प्रभु आते ही हैं, तू खड़ा रह ।।

जिमि हरि बधुहिं छुद्र सस चाहा ❀ भयसि कालबस निसिचरनाहा
बायस करि चह खगपतिसमता ❀ सिंधुसमान होइ किमि सरिता

जैसे सिंहनीको (कालके वश होकर) छोटा सा खरगोस चाहे, इसी प्रकार हे राक्षस-राज ! (रावण) तू कालके वश हुआ है ।।५।। और जैसे कौवा गरुड़ की समता करे और नदी समुद्रकी बराबरी किया चाहे, तो कहीं हो सकता है ? ।। ६ ।।

खर कि होइ सुरधेनुसमाना ❀ जाहु भवन निज सुनु अज्ञाना
सुनत बचन दससीस लजाना ❀ मनमहँ चरन बँदि सुख माना

और गधैया क्या कामधेनुके बराबर हो सकती है ? इसलिए हे मूर्ख ! सुन (यदि खैर चाहे तो) अपने घर लौट जा ।।७।। यह वचन सुनते ही रावण लजाया और मनमें उनके चरणों को दंडवत कर सुख पाया ।। ८ ।।

दोहा—क्रोधवंत तब रावन, लीन्हेसि रथ बैठाइ ।
चलेउ गगन पथ आतुर, भय रथ हाँकि न जाइ ।।४६।।

तब रावण ने क्रोध कर सीता को रथमें बैठा लिया और आतुर हो आकाश मार्गसे चला, परन्तु डरके मारे रथ हांका नहीं जाता ॥ ४६ ॥

हा जगदीस देव रघुराया ❋ केहि अपराध बिसारेहु दाया
आरति हरन सरनसुखदायक ❋ हा रघुकुलसरोज दिननायक

उस समय सीताजी पुकारने लगीं कि हा जगदीश, हा देव, हा रघुराज, आप मेरे किस अपराध से दया को भूल गये । हे शरणागतोंके सुखदायक ! हा रघुकुल कमलके लिए सूर्य-रूप ॥

हा लछमन तुम्हार नहिं दोषा ❋ पायउँ फल जो कीन्हेउँ रोषा
कैकेयीमन जो कछु रहेऊ ❋ सो विधि आजु मोहिं दुख दयऊ

हा लक्ष्मण ! तुम्हारा दोष नहीं है, जैसा मैंने क्रोध किया, वैसा फल पाया ॥ २ ॥ कैकयीके मनमें जो कुछ था वह दुःख आज विधाताने मुझे दिया ॥ ४ ॥

पंचवटीके खग मृग जाती ❋ दुखी भए बनचर बहुभाँती
बिबिध बिलाप करति बैदेही ❋ भूरिकृपा प्रभु दूरि सनेही

पंचबटीके पशु-पक्षी और बनचर सीताका विलाप सुनकर बहुत प्रकारसे दूःखी हुये ॥ ५॥ सीताजी अनेक प्रकारसे विलाप करती जाती हैं कि प्रभुकी तो मुझपर बड़ी कृपा और प्रेम है, वे मुझसे दूर क्यों हुये ? ॥६॥

बिपति मोरि को प्रभुहिं सुनावा ❋ पुरोडास चह रासभ खावा
सीताकर विलाप सुनि भारी ❋ भये चराचर जीव दुखारी

मेरी विपत्ति भगवान्‌को कौन सुनावे (देखो) हवनकी खीरको गधा खाया चाहता है । सीताजीका भारी विलाप सुनकर चराचर जीव दुखी हो गये ॥८॥

दोहा—बहुबिध करति बिलाप नभ, लिए जात दससीस ।
डरत न खल बर पाइ भल, जो दीन्हों अज ईस ॥४७॥

सीताजी आकाशमें अनेक प्रकार विलाप करती जाती हैं और रावण लिए जाता है और ब्रह्मा और शंकरके दिए हुए सुन्दर वरको पाकर दुष्ट डरता नहीं ॥४७॥

गृध्रराज सुनि आरतबानी ❋ रघुकुलतिलकनारि पहिचानी
अधम निसाचर लीन्हें जाई ❋ जिमि मलेच्छबस कपिला गाई

तब गृद्ध राज जटायुने आर्त वाणी सुन, सीताजी को पहिचाना । हे पार्वती ! यह तो राक्षस है जो सीता को लिए जाता है कैसी घटना बनी है कि मानों कपिला गौ म्लेच्छके वशमें पड़ी हो ॥

अहह प्रथम बल मम तनु नाहीं ❋ तदपि जाइ देखौं बल ताहीं
सीता पुत्रि करसि जनि त्रासा ❋ करिहौं जातुधानकर नासा
धावा क्रोधवंत खग कैसे ❋ छूटै पवि पर्वतकहँ जैसे

हा ! मेरे शरीरमें पहला सा बल नहीं है तथापि जाकर उसके बलको देखूंगा । (उसने दूरसे पुकारकर कहा) हे पुत्रि ! सीता भय न कर मैं अभी इस राक्षस का नाश करता हूँ। हे गरुड़ ! ऐसे कह, वह पक्षी क्रोध कर ऐसे दौड़ा कि मानों पर्वत पर इन्द्रके हाथसे वज्र छूटे ॥५॥

रे रे दुष्ट ठाढ़ किन होही ❀ निर्भय चलेसि न जानेसि मोही
आवत देखि कृतांत समाना ❀ फिर दसकंधर कर अनुमाना

जटायुने रावणसे कहा कि अरे दुष्ट ! खड़ा क्यों नहीं रहता, क्या मुझे जानता नहीं ? तब काल के समान जटायु को आता देख रावणने पीछे फिर कर विचार किया कि—।।७।।

की मैनाक कि खगपति होई ❀ मम बल जान सहित पति सोई
जाना जरठ जटायू येहा ❀ मम करतीरथ छाँड़िहि देहा

क्या यह मैनाक पर्वत है, या गरुड़ है ? मेरे बल को तो वह भी अपने स्वामीके साथ जानता है। फिर जाना कि यह तो जरठ जटायु है जो मेरे हाथरूपी तीर्थमें अपना शरीर त्यागेंगा।

दोहा–मम भुज बल नहिं जानत, आवत तपिन्ह सहाइ।
समर चढ़ै तो यहि हतौं, जियत न निजथल जाइ ।। ४८ ।।

मेरी भुजाओंके बलको नहीं जानता, इसलिए तपस्वियोंकी सहायतार्थ आ रहा है, यदि युद्धपर चढ़े तो इसे ऐसा मारूँ कि जीता हुआ अपने घरको न जायेगा ।।४८।।

सुनत गृध्र क्रोधातुर धावा ❀ कह सुन रावन मोर सिखावा
तजि जानकिहि कुसल गृह जाहू ❀ नाहि त अस होइहि बहु बाहू

यह सुनते ही जटायु क्रोधातुर हो, रावण की ओर दौड़ा और बोला कि हे रावण ! मेरी शिक्षा को सुन। तू सीता को तज कर अपने घर कुशलसे जा नहीं तो मैं सत्य कहता हूँ, सुन ।।

रामरोषपावक अतिघोरा ❀ होइहि सकल सलभ कुल तोरा
उतर न देत दसाननजोधा ❀ तबहिं गीध धावा करि क्रोधा

रे सठ ! प्रभु का क्रोध महा प्रचण्ड अग्निके समान है, तेरा सब कुल उसमें पतंगके समान पड़कर भस्म हो जायेगा। पर रावणने उत्तर नहीं दिया, तब जटायु क्रोध कर चला ।।

धरि कच बिरथ कीन्ह महि गिरा ❀ सीतहि राखि गीध पुनि फिरा
दसमुख उठि कृतसरसंधाना ❀ गृध्र जाइ काटेउ धनु बाना
चोचन्ह मारि बिदारेसि देही ❀ दंड एक भइ मूर्छा तेही

और रावण का केश पकड़ कर विरथ कर उसे भूमि पर गिरा दिया और सीता को रख जटायु लौट कर चोचोंसे मार उसका शरीर विदीर्ण किया जिससे रावण घड़ी भर मूर्छित पड़ा रहा ।।

दोहा–जेहि रावन निज बस किए, मनिगन सिद्ध सुरेस।
तेहि रावनसन समर कर, धीर बीर गृध्रेस ।। ४९ ।।

जिस रावणने मुनीश्वरोंके गणों, सिद्धों और इन्द्रको भी अपने वशमें कर लिया, उसी रावणसे धीर वीर गृध्रेस जटायु ने घोर युद्ध किया ।।४९।।

स्वस्थ भए पुनि उठि सो धावा ❀ मारे गृध्र न सनमुख आवा
कीन्हेसि बहुबिध जुद्ध खगेसा ❀ थकित भयो तब जरठ गृध्रेसा

जब रावणको चेतना आई तब वह उठकर दौड़ा, परन्तु जटायुने ऐसा मारा कि सामने

न आ सका ।। १ ।। कागभुशुंडि जी कहते हैं—हे गरुड़ ! जब रावणने अनेक प्रकारसे युद्ध किया तब वृद्ध जटायु थक गया ।। २ ।।

तब सक्रोध निसिचर खिसियाना ❀ काढ़ेसि परम कराल कृपाना
काटेंसि पंख परा खग धरनी ❀ सुमिरि राम की अद्भुत करनी

तब रावणने क्रोध कर अति कराल तलवार निकाली और उसके पंखों को काट डाला जिससे पंख हीन हो वह पक्षी प्रभुकी अद्भुत कीर्ति स्मरण कर पृथ्वी पर गिर पड़ा ।।४।।

मनमहँ गृध्र परम सुख माना ❀ रामकाज मम लागेंउ प्राना

गृधनें मनमें बड़ा सुख पाया कि मेरे प्राण रामजीके काममें आये ।। ५ ।।

सीतहिं यान चढ़ाय बहोरी ❀ चला उतावल त्रास न थोरी
करति बिलाप जाति नभ सीता ❀ व्याधविवस जनु मृगी सभीता

फिर वह रावण सीताजीको रथ पर चढ़ा मनमें राम का भारी भय मानता हुआ जल्दी से चला ।।६।। रावणके वशमें पड़ी आकाश-मार्गसे जाती हुई सीता ऐसा विलाप करती थीं कि मानों भयभीत हरिणी व्याधके वशमें जा पड़ी हो ।।७।।

गिरिपर बैठे कपिन निहारी ❀ कहि हरिनाम दीन्ह पट डारी
यहि विधि सीतहिं सो लै गयऊ ❀ बन असोक महँ राखत भयऊ

आकाश-मार्गसे जाती हुई सीताने पर्वत पर बैठे बानरों को देख, प्रभु का नाम ले वस्त्र डाल दिया ।।८।। रावण सीताको हर ले गया और लंकामें अशोक बनके भीतर रख दिया ।।९।।

दोहा—हारिपरा खल बहुत विधि, भय अरु प्रीति दिखाइ ।
तब असोकपादपतल, राखेसि जतन कराइ ।। ५० ।।

जब विश्वासके लिए अनेक उपाय कर भय और प्रीति दिखा कर रावण थक गया, तब सीताजीको ले जाकर अशोक वृक्षके नीचे यत्नपूर्वक रख दिया ।। ५० ।।

वहाँ विधाता मन अनुमाना ❀ सुरपति बोलि मंत्र अस ठाना
तात जनकतनयापहँ जाहू ❀ सुधि न पाव जेहि निसिचरनाहू

वहाँ ब्रह्माने मनमें विचार किया और इन्द्रको बुलाकर यह सलाह दी कि ।। १ ।। हे प्यारे ! सीताजीके पास ऐसे जाओ जिसमें राक्षसराजको न ज्ञान हो ।।२।।

अस कहि विधि सुंदर हवि आनी ❀ सौंपि बहुरि बोले मृदुबानी
इहि भच्छन कृत क्षुधा न प्यासा ❀ वर्षसहस दस संसय नासा

ऐसा कहकर ब्रह्माने सुन्दर खीर लाकर दी और पुनः मृदु शब्दोंमें कहा कि ।। ३ ।। इसके भक्षणसे भूख-प्यास न लगेगी और दशहजार वर्षों तक दुःखका नाश होगा ।।४।।

सो प्रसाद लै आयसु पाई ❀ चले हिये सुमिरत रघुराई
कछु बासव माया निज सोई ❀ रच्छक रहे गये तहँ सोई

इन्द्र इस प्रसादको लेकर और आज्ञा पाकर मन में श्रीरामचन्द्रजीका स्मरण करते हुए चले ।।५।। और इन्द्रने अपनी कुछ ऐसी माया फैलाई कि वहाँ जितने रखवाले थे, वे सो गये ।।६।।

तदपि डरत सीतापहँ आएउ ❀ करि प्रनाम निज नाम सुनायउ
निश्चय जानि सुरेस सुजाना ❀ पिताजनक दसरथसम माना
करि परितोष दूरि करि सोका ❀ हव्य खवाइ गयो निजलोका

तथापि इन्द्र डरते हुए सीताके पास आए और दंडवत करके अपना नाम बताया ।।७।। सीताजीने इन्द्रको निश्चय ही सज्जन जान पिता जनक और दसरथके समान माना ।। ८ ।। इन्द्र सीताजीको संतोष देकर, उनका शोक दूरकर सीताको खीर भक्षण कराकर स्वर्गलोकको लौट गये ।। ६ ।।

दोहा–जेहि विधि कपटकुरंग सँग, धाइ चले श्रीराम ।
सो छबि सीता राखि उर, रटति रहति हरिनाम ।।५१।।

हे पार्वती ! उधर प्रभु कपट मृगके पीछे जिस भाँति दौड़े चले जाते थे, उसी छबि को हृदयमें रखे कर राम नाम रटती हुई सीता वहाँ रहने लगीं ।। ५१ ।।

रघुपति अनुजहिं आवत देषा ❀ मनमहँ चिंता कीन्ह बिसेषा
जनकसुता परिहरेउ अकेली ❀ आयहु तात बचन मम पेली

तब वहाँ लक्ष्मण को आते देख कर रामको बड़ी चिंता हुई और कहा कि हे तात ! सीता को अकेली छोड़ मेरे वचन का उल्लंघन कर तुम चले आये यह अच्छा नहीं किये ।।

निसिचरनिकर फिरहिं बनमाहीं ❀ मम मन सीता आश्रम नाहीं
अहह तात भल कीन्हेउ नाहीं ❀ सीय बिना मम जीवन काहीं
यहितें कवन बिपति बड़ भाई ❀ खोयहु सीय काननहिं आई
गहि पद कमल अनुज कर जोरी ❀ कहेउ नाथ कछु मोरि न खोरी

बनमें राक्षसोंके झुंड फिरते हैं, मेरे मनमें आता है कि सीता आश्रममें नहीं है ।।३।। हे तात ! अच्छा नहीं किया, सीताके बिना मेरा जीना कहाँ होगा ।।४।। हे भाई ! इससे भी बड़ा और कौनसा कष्ट होगा जो वनमें आकर सीताको भी गवाँ दिया ।।५।। तब प्रभुके चरणकमलोंको पकड़ हाथ जोड़कर लक्ष्मणने कहा—हे नाथ ! मेरा कुछ दोष नहीं है ।।६।।

अनुज समेत गए प्रभु तहवाँ ❀ गोदावरितट आश्रम जहवाँ
आश्रम देखि जानकीहीना ❀ भये बिकल जस प्राकृत दीना

तब लक्ष्मणके साथ प्रभु गोदावरीके तटपर जहाँ आश्रम था, वहाँ गये। आश्रमको सीता-रहित देखते हो प्रभु ऐसे व्याकुल हो गए, जैसे साधारण मनुष्य दीन हो जाते हैं ।।८।।

दोहा–कानन रहेउ तड़ाग इव, चक चकई सियराम ।
रावन निसि बिछुरन भये, दुख बीते चहुँ याम ।। ५२ ।।

बन तो सरोवरकी भाँति था और रामचन्द्रजी चकवा-चकवीके समान बिहार कर रहे थे तो रावणरूपी रात्रिसे वियोग हो गया, इस कारण चारों प्रहर दुःखहीमें बीत गये ।।५२।।

पर दुखहरन सोक दुख नाहीं ❀ भा विषाद तिन्हके मनमाहीं
हा गुनखानि जानकी सीता ❀ रूप शील ब्रत नेम पुनीता

जो भगवान् पराये दुःखके नाश करनेवाले और जिन्हें कभी शोक और दुःख नहीं था, उन्हें मनमें विषाद हुआ ॥१॥ (वे पुकारते कि) हा रूप, शील, व्रत और गुणोंकी खानि पवित्र सीता ! तू कहाँ गई ! ॥२॥

लक्षमन समुझाये बहुभाँती ❀ पूछत चले लता-तरुपाँती
हे खग मृग हे मधुकरस्रेनी ❀ तुम देखी सीतामृगनैनी

लक्ष्मणने बहुत तरहसे समझाया, फिर भी प्रभु वृक्ष तथा लताओं और पत्तियोंसे पूछते चले जाते हैं कि हे पक्षि ! हे भ्रमरोंकी पंक्ति ! तुमने कहीं मृगलोचनी सीताको देखा है ? ॥४॥

खंजन सुक कपोत मृग मीना ❀ मधुपनिकर कोकिला प्रवीना
कुंदकली दाड़िम सुदामिनी ❀ सरद कमल ससि अहिभामिनी

हे खंजन नैनी, तोतेके समान नाकवाली, हे कबूतरकीसी गरदनवाली ! हे मीनके समान चंचल नयन, बिजलीके समान दाँतवाली, हे शरद्कालकी चंद्रमाके समान शीतल बदनवाली भामिनी, ॥

बरुनपास मनोजधनु हंसा ❀ गज केहरि निज सुनत प्रसंसा
श्रीफल कनक कदलि हरषाहीं ❀ नेकु न संक सकुच मनमाहीं

हे कमलवत् नाभिवाली, हंसगामिनी, गज गामिनी, केलेके खम्भेके समान सुन्दर जंघों वाली ! ये सब तुम्हारे जानेसे प्रसन्न होते हैं, इन्हें थोड़ी भी शंका और संकोच नहीं है ॥८॥

सुनु जानकी तोहि बिनु आजू ❀ हरषे सकल पाइ जनु राजू
किमि सहि जात अनख तोहिं पाहीं ❀ प्रिया बेगि प्रगटसि कस नाहीं

हे जानकी ! सुन, तेरे बिना आज सब ऐसे प्रसन्न हो रहे हैं मानो राज्य मिल गया । अतः हे प्रिये ! इनकी यह ईर्ष्या तुम कैसे सहन कर रही हो । शीघ्र ही प्रकट क्यों नहीं होती हो कि इनका मान भंग हो ॥ १० ॥

दोहा—मनिबिहीन फनि दीन जिमि, मीन हीन जिमि बारि ।
तिमि व्याकुल भए लषन तहँ, रघुबरदसा निहारि ॥५३॥

जैसे मणिके बिना सर्प और जलके बिना मीन दुःखी हो, ऐसे ही वहाँ श्रीलक्ष्मणजी श्रीरामचन्द्रजीकी दशा देखकर दुःखी हुये ॥ ५३ ॥

धरि उर धीर बुझावहिं रामहिं ❀ तजहिं न सोक अधिक सुखधामहिं
यहिविधि बिलपत खोजत स्वामी ❀ मनहुँ महाबिरही अतिकामी

हे सीता ! सुनो, आज तुम्हारे बिना ये सब ऐसे प्रसन्न हुए हैं कि मानों राज्य ही पा लिया । लक्ष्मण धैर्य धारणकर रामको समझाते हैं परन्तु शोक छूटता नहीं, अधिकाधिक बढता ही जाता है । हे प्रिये ! शीघ्र प्रकट क्यों नहीं होती ! इस प्रकार विलाप करते सीताको खोजते हुए प्रभु ऐसे ज्ञात होते हैं कि जैसे कोई कामी पुरुष महान् विरहमें मग्न हो रहा है ॥२॥

पूरनकाम राम सुखरासी ❀ मनुजचरित कर अज अविनासी
सरबर अमित नदी गिरि खोहा ❀ बहुबिध राम लषन तहँ जोहा

कामनाओंसे पूर्ण आनन्दकन्द जन्ममरणरहित रामचन्द्र मनुष्यकी-सी लीला करते हैं । बहुतसे सरोवर, नदी, पर्वत और कन्दराओंको रामचन्द्र तथा लक्ष्मणने बहुत प्रकारसे खोजा ॥

सोच हृदय कछु कहि नहिं आवा ❀ टूट धनुष सर आगे पावा
कहुँ कहुँ सोनित देखिय कैसे ❀ सावनजल भा डाबर जैसे

मनमें ऐसी बड़ी चिन्ता है कि कुछ कहा नहीं जाता। फिर आगे टूटा हुआ धनुष बाण मिला ॥५॥ कहीं-कहीं लोहू एवं रक्त भी ऐसा दृष्टि आया जैसे सावनका जल गँदला होता है ॥

कहत राम लछमनहिं बुझाई ❀ काहू कीन्ह जुद्ध यहि ठाई
आगे परा गृध्रपति देखा ❀ सुमिरत रामचरनकी रेखा

तब श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मणसे समझाकर कहने लगे कि इस स्थानमें किसीने युद्ध किया है ॥७॥ फिर आगे उन्होंने जटायुको पड़ा हुआ देखा जो रामके चरणोंकी रेखाको स्मरण कर रहा था ॥८॥

दोहा—कर सरोज सिर परसेउ, कृपासिंधु रघुबीर।
निरखि राम छबिधाम मुख, बिगत भई सब पीर ॥ ५४ ॥

तब कृपासिन्धुने अपने कर-कमलोंसे उनका शिर स्पर्श किया। ज्योंही गीधने आँखें खोलकर श्रीरामजीके मुख-छविको देखा, त्योंही उसकी सब पीड़ा शान्त हो गई ॥५४॥

तब कह गृध्र बचन धरि धीरा ❀ सुनहु राम भंजन भवभीरा
नाथ दसानन यह गति कीन्हीं ❀ तेहि खल जनकसुता हरि लीन्हीं

तब जटायुने धीरज धरकर कहा कि हे संसारके दुखभंजन राम ! सुनिये। हे नाथ ! रावणने मेरी यह गति की है, वही खल जनकसुताको हरकर ले गया ॥२॥

लै दच्छिनदिसि गयउ गुसाँई ❀ बिलपति अति कुररीकी नाँई
दरस लागि प्रभु राखेउ प्राना ❀ चलन चहत अब कृपानिधाना

हे स्वामी ! कुररी (चील्ह) की भाँति विलाप करती सीताको लेकर दक्षिण दिशाको गया है। मैंने प्रभु-दर्शनके लिए प्राण रख छोड़ा था, हे कृपानिधान ! अब चलना चाहता है ॥

राम कहा तनु राखहु ताता ❀ मुख मुसुकाइ कही तेइँ बाता
जाकर नाम मरत मुख आवा ❀ अधमउ मुक्त होइ स्रुति गावा

श्रीरामजीने कहा कि हे तात ! शरीर रक्खो ! तब जटायुने मुस्कुराकर कहा कि हे नाथ ! जिसका नाम मरते समय मुखपर आ जानेसे अधम भी मुक्त हो जाता है, ऐसा वेद कहते हैं ॥

सो मम लोचनगोचर आगे ❀ राखौं देह नाथ केहि लागे
जल भरि नयन कहा रघुराई ❀ तात कर्म निजते गति पाई

वह मेरे नेत्रोंके आगे प्रत्यक्ष है सो अब मैं अपने शरीरको किसलिए रक्खूँ ? तब नेत्रों में जल भरकर श्रीरामजीने कहा हे तात ! तुमने अपने कर्मोंसे उत्तम गति प्राप्त की ॥८॥

परहित बस जिन्हके मनमाहीं ❀ तिन्ह कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं
तनु तजि तात जाहु मम धामा ❀ देउँ कहा तुम पूरनकामा

जिसके मनमें परोपकारका विचार है, उसको संसारमें कुछ भी दुर्लभ नही है। हे तात ! तुम शरीरको त्यागकर मेरे धामको जाओ, तुम पूर्णकाम हो, तुम्हें क्या दूँ ? ॥१०॥

दोहा—सीताहरन तात जनि, कहहु पितासन जाइ।
जो मैं राम तौ कुलसहित, कहहि दसानन आइ ॥ ५५ ॥

हे तात ! तुम पिताजीसे जाकर सीता-हरणकी बात मत कहना । यदि मैं राम हूँ तो रावण ही कुल सहित आकर यह समाचार कहेगा ।।५५।।

गृध्र देह तजि धरि हरिरूपा ❀ भूषन बहु पट पीत अनूपा
स्याम गात बिसाल भुज चारी ❀ अस्तुति करत नयन भरि बारी

फिर तो जटायु शरीर त्यागकर भगवान्‌का-सा पीताम्बर धारणकर उस प्रभुकी स्तुति करने लगा जो कि अनेक अमूल्य आभूषणोंसे शोभित पीतपट ओढे हुए उपमा रहित हैं ।

छन्द—जय राम रूप अनूप निर्गुन सगुन गुनप्रेरक सही ।
दससीसबाहु प्रचंडखंडन चाप सर मंडन मही ।।
पाथोदगात सरोजमुख राजीवआयतलोचनं ।
नित नौमि राम कृपालु बाहु बिसाल भवभयमोचनं ।।२५।।

हे श्रीरामजी ! आपका स्वरूप अनुपम है और आप निर्गुण और सगुण तथा सत्य-प्रेरक हैं, आपकी जय हो ! आप दशशीश (रावण) की भुजाओंको अपने प्रचण्ड बाणोंसे खण्ड-खण्ड कर देनेवाले और पृथ्वीको शोभा देनेवाले हैं । आपका शरीर श्याम घनके समान है, कमलके समान आपके बड़े-बड़े नेत्र हैं, मैं ऐसे कृपालु और संसारके भयसे छुड़ाने-वाले विशालबाहु श्रीरामचन्द्रजीको निरन्तर प्रणाम करता हूँ ।। २५ ।।

बलमप्रमेयमनादिमजमव्यक्तमेकमगोचरं ।
गोविंद गोपर द्वंद्वहर विज्ञानघन धरनीधरं ।।
जय राम मंत्र जपंत संत अनंत जनमनरंजनं ।
नित नौमि राम अकामप्रिय कामादिखलदलगंजनं ।।२६।।

आपकी शक्तियाँ अप्रमेय हैं, आप आवागमनसे रहित अव्यक्त और इन्द्रियों की शक्तिसे परे हैं । आप गोविन्द, इन्द्रियजन्य भोगोंसे परे और जरा, मरण, राग, द्वेष, सुख, दुःख, द्वन्द्व और मोहके हरणकर्त्ता, विज्ञान की वर्षा करनेवाले तथा भूभार को धारण करनेवाले हैं, जो सन्त आपके 'राम' ऐसे अनन्त नाम को जपते रहते हैं, आप उनके मन को आनन्द देने वाले तथा कामादि खलोंके नाशकर्त्ता अकाम हैं, हे रामजी ! ऐसे मैं आपको नमस्कार करता हूँ ।।

जेहि श्रुतिनिरंतर ब्रह्म व्यापक बिरज अज कहि गावहीं ।
करि ध्यान ज्ञान बिराग योग अनेक मुनि जेहि पावहीं ।।
करि ध्यान करुनाकंद सोभावृंद अग जग मोहई ।
मम हृदयपंकजभृंग अंग अनंगबहुछबि सोहई ।।२७।।

जिसे वेद निरंजन ब्रह्म, व्यापक, विरज और अज कह कर गाते हैं और जिसे मुनिजन ज्ञान, ध्यान, वैराग्य, योग आदि अनेकों यत्न करके पाते हैं । वही शोभाके धाम संसार को मोहित करनेवाले करुणाकन्द प्रकट हुए हैं । सो अनेकों कामदेवसे बढ़कर शोभा वाले ! आप मेरे हृदय कमलमें भ्रमरके समान शोभायमान होवें ।। २७ ।।

जो अगम सुगम सुभाव निर्मल असम सम सीतल सदा।
पस्यंति यं योगी यतन करि करत मन गोबस सदा॥
सो राम रमानिवास संतत दासबस त्रिभुवनधनी।
मम उर बसहु सो समन संसृति जासु कीरति पावनी॥२८॥

जो अपने भक्तोंके लिए अगम, सुगम, निर्मल और असम, सम तथा सर्वदा ही शीतल बने रहते हैं। और जिसे योगी जन यत्न करके जब इन्द्रियों-सहित मन को वशमें कर लेते हैं तब देख पाते हैं। वही लक्ष्मीपति श्रीरामजी निरन्तर भक्तोंके वशमें रहनेवाले, त्रिभुवनके स्वामी आप हैं। वह संसारके ताप को हरनेवाले परम पवित्र कीर्तिमान् आप मेरे हृदयमें वास करें॥

दोहा–अबिरलभक्ति माँगि वर, गृध्र गयउ हरिधाम।
तेहिकी क्रिया यथोचित, निजकर कीन्ही राम॥५६॥

इस प्रकार अविरल भक्ति माँग कर गृध्र (जटायु) हरिधाम अर्थात् बैकुंठ को चला गया, तब श्रीरामचन्द्रजीने अपने हाथसे उसकी यथोचित क्रिया की॥ ५६॥

कोमल चित अति दीनदयाला ❁ कारन बिनु रघुनाथ कृपाला
गृध्र अधम खग आमिष भोगी ❁ गति दीन्हीं जो याँचत जोगी

श्रीरामचन्द्रजी कोमल चित्त और अत्यन्त दीनदयालु हैं, बिना कारण ही कृपालु रहते हैं। गीध अधम पक्षी और मांस भोगी था, किन्तु उसे भी योगियों जैसी गति दी॥

सुनहु उमा ते लोक अभागी ❁ हरि तजि होहिं विषय अनुरागी
पुनि सीतहिं खोजत दोउ भाई ❁ चले बिलोकत बन बहुताई

हे पार्वती! सुनो, वे लोग बड़े अभागी हैं कि जो ऐसे भगवान् को छोड़कर विषयोंसे प्रीति करते हैं, फिर सीताजी को खोजते हुए दोनों भाई बन की शोभा को देखते हुए चले॥

संकुल लता बिटप घन कानन ❁ बहु खग मृग तहँ गज पंचानन
आवत पंथ कबंध निपाता ❁ तेहि सब कही सापकी बाता

जो बहुतसे वृक्ष और लताओंसे युक्त था, जहाँ बहुतसे पक्षी, मृग और सिंह थे। तब मार्गमें आते हुए श्रीरामजीने जो कबन्ध को मारा तो उसने अपनी सारी कथा कह सुनाई कि॥

दुर्बासा मोहिं दीनेउ सापा ❁ प्रभुपद देखि मिटा सो पापा
सुनु गंधर्व कहौं मैं तोही ❁ मोहिं न सुहाइ ब्रह्मकुलद्रोही

हे प्रभो! दुर्वासाने मुझको जो शाप दिया था, वह आज प्रभु-चरणोंके दर्शनसे मिट गया। श्रीरामचन्द्रजीने कहा, हे गन्धर्व! सुन, मैं तुझसे कहता हूँ कि ब्रह्मकुल का द्रोही मुझे अच्छा नहीं लगता॥

दोहा–मन क्रम बचन कपट तजि, जो कर भूसुर सेव।
मोहिं समेत बिरंचि सिव, बस ताके सब देव॥५७॥

जो मन, कर्म और वचनसे कपट त्याग कर ब्राह्मणों की सेवा करता है, मेरे सहित समस्त देवता उसके वशमें हो जाते हैं॥ ५७॥

सापत ताड़त परुष कहंता ❀ विप्र पूज्य अस गावहिं संता
पूजिय विप्र सील गुन हीना ❀ सूद्र न गुन गन ज्ञान प्रवीना

शाप देता हुआ, ताड़न करता हुआ और परुष वचन कहता हुआ भी ब्राह्मण पूजनीय है ऐसा सन्तजन गान करते हैं ।।१।। ब्राह्मण गुण और शीलहीन होनेपर भी पूजनीय है, किन्तु शूद्र गुण और ज्ञानमें चतुर होने पर भी नहीं पूजा जाता ।।२।।

कहि निज धर्म ताहि समुझावा ❀ निजपदप्रीति देखि मनभावा
रघुपति चरन कमल सिर नाई ❀ गयउ गगन आपनि गति पाई

श्रीरामचन्द्रजीने उसे अपना धर्म कह कर समझाया और अपने चरणोंमें प्रीति देख कर वह उनके मन को अच्छा लगा। फिर वह रामजीको प्रणाम कर आकाश को चला गया ।।

ताहि देइ गति राम उदारा ❀ सबरीके आश्रम पगु धारा
सबरी देखि राम गृह आये ❀ मुनिके बचन समुझि जिय भाए

श्रीरामजी उसे सुगति देकर शबरीके आश्रम पर गये ।।५।। जब शबरीने श्रीरामजीको देखा तो वह अपने जीमें मुनिवर मतंगजीके वाक्योंको स्मरणकर परमानन्दित हुई ।।६।।

सरसिज लोचन बाहु बिसाला ❀ जटा मुकुट सिर उर बनमाला
स्याम गौर सुंदर दोउ भाई ❀ सबरी परी चरन लपटाई

श्रीरामजीके कमल सदृश नेत्र, विशाल भुजाएँ, मस्तक पर जटाओंका मुकुट और हृदय पर बनमाला विराजमान है। सांवरे और गोरे दोनों भाइयोंका दर्शनकर शबरी चरणोंमें लिपट गई।।

प्रेममगन मुख बचन न आवा ❀ पुनि पुनि पदसरोज सिर नावा
सादर जल लै चरन पखारे ❀ पुनि सुन्दर आसन बैठारे

ऐसी प्रेममग्न हो गई कि मुख से बात नहीं निकलती, बारम्बार रामजीके चरणकमलमें सिर झुकाने लगी। फिर आदरपूर्वक जल लेकर उनके पाँव पखारे और सुन्दर आसन पर बिठाया ।।

दोहा—कन्द मूल फल सुरस अति, दिए रामकहँ आनि।
प्रेम सहित प्रभु खायउ, बारंहि बार बखानि ।।५८।।

फिर अत्यन्त रससे भरे हुए कन्द मूल फल लाकर श्रीरामचन्द्रजी को अर्पण किए तो प्रभु प्रेमसहित बारम्बार उन फलोंके स्वाद की सराहना कर उसे खाये ।। ५८ ।।

पानि जोरि आगे भइ ठाढ़ी ❀ प्रभुहिं बिलोकि प्रीति अति बाढ़ी
केहि बिधि अस्तुति करौं तुम्हारी ❀ अधम जाति मैं जड़मति भारी

फिर हाथ जोड़ कर आगे खड़ी हो गई और प्रभु को देखकर अत्यन्त प्रीति बढ़ी। तब बोली, हे नाथ! मैं किस तरह आपकी स्तुति करूँ क्योंकि मैं नीच जाति की गँवारी महा जड़मति हूँ।।

अधम ते अधम अधम अति नारी ❀ तिनमहँ मैं मतिमन्द गँवारी
कह रघुपति सुनु भामिनि बाता ❀ मानौं एक भक्तिकर नाता

मैं नीचसे नीच और अत्यन्त नीच और उनमें भी मन्दबुद्धि और गँवारी स्त्री हूँ। तब श्रीरामजीने कहा--हे भामिनी ! सुनो, मैं एकमात्र भक्तिका ही नाता मानता हूँ ॥ और

जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई ❀ धन बल परिजन गन चतुराई
भक्तिहीन नर सोहै कैसे ❀ बिनु जल बारिद देखिय जैसे

जाति, पाँति, कुल-धर्म, बड़ाई, धन, कुटुम्ब, गुण और चतुराई सब कुछ हो ॥५॥ किन्तु भक्तिके बिना वह ऐसे ही नहीं शोभता कि जैसे बिना जल का बादल नहीं शोभता ॥६॥

नवधा भक्ति कहौं तोहिं पाहीं ❀ सावधान सुन धरु मनमाहीं
प्रथम भक्ति सन्तनकर संगा ❀ दूसरि रति मम कथाप्रसंगा

देखो, मैं तुमसे नौ प्रकारकी भक्ति कहता हूँ, इसको सावधानीसे सुनकर अपने मनमें रखो। पहली भक्ति सन्तोंका सङ्ग है और दूसरी भक्ति मेरी कथा प्रसङ्गमें प्रेम रखना है ॥

दोहा--गुरुपदपंकजसेवा, तीसरि भक्ति अमान।
चौथि भक्ति मम गुनगन, करइ कपट तजि गान ॥५९॥

तीसरी भक्ति अभिमानको त्यागकर श्रीगुरुजीके चरणारविन्दोंकी सेवा करना और चौथी भक्ति मेरे गुणानुवादोंको कपट त्यागकर गान करना है ॥ ५६ ॥

मंत्र जाप मम दृढ़ बिस्वासा ❀ पंचम भजन सो वेदप्रकासा
षट दम सील बिरति बहुकर्मा ❀ निरत निरंतर सज्जनधर्मा

फिर मेरे मन्त्रका जप करनेमें दृढ़ विश्वास और भजन तथा वेदों की चर्चा पाँचवीं भक्ति है, छठीं इन्द्रियों का दमन करना, अनेक कर्मोंसे वैराग्य और सदा सज्जनोंके धर्ममें तत्पर रहना है ॥

सप्तम सब मोहिमय जग देखै ❀ मोते संत अधिककरि लेखै
अष्टम जथालाभ सन्तोषा ❀ सपनेहुँ नहिं देखै परदोषा

सातवीं भक्तिमें संसार को एक मुझमें ही रमा हुआ देखे और मुझसे भी सन्तों को अधिक समझे। आठवीं जो कुछ मिल जावे उसीमें सन्तोष करे और पराये दोषों को नहीं देखे ॥

नवम सरल सबसौं छलहीना ❀ मम भरोस हिय हरष न दीना
नवमहँ जिनके एकौ होई ❀ नारि पुरुष सचराचर कोई

नवीं भक्तिमें सबसे छलहीन रहे और मेरा ही भरोसा रक्खे और हर्ष तथा शोक से रहित होवे। इन नौ भक्तिमें जिनके एक भी होती है वह चराचरमें पुरुष, स्त्री कोई क्यों न हो ॥

सो अतिसय प्रिय भामिनि मोरे ❀ सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरे
योगिबृंद दुर्लभ गति जोई ❀ तोकहँ आजु सुलभ भइ सोई

हे भामिनी ! वही मुझको अत्यन्त प्यारा है और फिर तुममें तो सब प्रकार की भक्ति दृढ़ है ॥ इसलिए जो गति योगियों को दुर्लभ है, वही आज तुमको सुलभ हुई है ॥८॥

मम दरसन फल परम अनूपा ❀ जीव पाव निज सहजस्वरूपा

मेरे दर्शन का फल परम अनुपम है जिसके द्वारा जीव सहज ही में स्वरूप को पा जाता है ॥

दोहा—सब प्रकार तव भाग बड़, मम चरनन अनुराग।
तव महिमा जेहि उर बसहिं, तासु परम बड़भाग ॥६०॥

सब प्रकारसे तुम्हारा बड़ा भाग्य है जो मेरे चरणोंमें प्रेम है और जिसके हृदयमें तेरी महिमा बसेगी उसका भी बहुत बड़ा भाग्य होगा ॥ ६० ॥

सुनि सुभबचन हरषकहँ पाई ❀ पुनि बोले प्रभु गिरा सुहाई
जनकसुताकै सुधि कहु भामिनि ❀ जानहि कछु जो करिवर गामिनि

श्रीरामचन्द्रजीके इन शुभ वाक्योंको सुनकर शबरी हर्षको प्राप्त हुई। फिर ईश्वर राम यह सुन्दर वाक्य बोले—॥१॥ हे शबरी ! सुन्दर हाथीके समान मन्द-मन्द चलनेवाली सीता की कुछ खबर जानती हो तो कहो ॥ २ ॥

पंपासरहिं जाहु रघुराई ❀ मुनिवर विपुल रहे जहँ छाई
ऋषिमतंग महिमा गुन भारी ❀ जीव चराचर रहत सुखारी

शबरीने कहा—हे रामजी ! पंपासरोवरको जाइए जहां बहुतसे बड़े-बड़े मुनि रहते हैं। वहांके निवासी मतंग ऋषिकी यह बड़ी महिमा और गुण है कि वहांके चर-अचर सभी जीव सुख से रहते हैं ॥ ४ ॥

बैर न कर काहूसन कोई ❀ जासन बैर प्रीति करु सोई
सिखर सुहावन कानन फूले ❀ खग मृग जीव जंतु अनुकूले

वहां कोई किसीसे बैर नहीं करता। जिससे बैर है वह भी प्रीति करता है ॥५॥ वहां पर्वतोंके सुहावने शिखर हैं, पुष्पित वन है तथा पक्षी, हरिण और जीवजन्तु परस्पर मिलेजुले रहते हैं ॥

करहु सफल स्रम सबकर जाई ❀ तहँ होइहि सुग्रीवमिताई
सो सब कहहि देव रघुबीरा ❀ जानतहू पूछत मतिधीरा
बार-बार प्रभुपद सिर नाई ❀ प्रेम सहित सब कथा सुनाई

(हे प्रभो) वहां जाकर उन सबके परिश्रमको सफल कीजिए, वहां सुग्रीवसे तुम्हारी मित्रता होगी ॥७॥ हे देव ! वह सब (समाचार) कहेगा। तुम तो धीर बुद्धिवाले हो, जानकर भी पूछते हो ? शबरी बारम्बार ईश्वर रामके चरणोंमें शिर नवाकर सप्रेम सब कथा कह सुनाई ॥९॥

छन्द—कहि कथा सकल विलोकि हरिमुख हृदय पदपंकज धरे।
तजि योगपावक देह धरि पदलीन भइ जहँ नहिं फिरे ॥
नर विविध कर्म अधर्म बहु मत शोकप्रद सब त्यागहू।
विस्वास करि कह दास तुलसी रामपद अनुरागहू ॥२८॥

इस प्रकार सारी कथा कहकर भगवान्‌के मुखारविन्दकी ओर देखते और उनके चरणों को हृदयमें धारणकर योगाग्निसे शरीरको त्यागकर हरि पदमें लीन हो गई कि जहांसे फिर कोई वापस नहीं आता। जिसके लिए मनुष्य अनेक प्रकारके कर्म और अधर्म को करते हुए सब मतों को त्याग देते हैं। तुलसीदासजी कहते हैं कि विश्वास करके ऐसे श्रीरामचन्द्रजीके चरण-कमलोंमें प्रेम करो ॥२८॥

दोहा—जातिहीन अघजन्म महि, मुक्त कीन्ह अस नारि ।
महामंद मन सुख चहसि, ऐसे प्रभुहिं बिसारि ।।६१।।

जो जातिसे हीन पृथ्वीपर पापरूप है ऐसी स्त्रीको भी श्रीरामजीने मुक्ति दी । ऐसे प्रभुको भूलकर हे महामन्द मन ! तू सुख चाहता है ? ।। ६१ ।।

चलेउ राम त्यागा बन सोऊ ❀ अतुलित बल नरकेहरि दोऊ
बिरही इव प्रभु करत बिषादा ❀ कहत कथा अनेक संबादा

तब श्रीरामजी उस वन को भी त्याग कर आगे चले जो दोनों भाई बहुत बलशाली और मनुष्यों में सिंहस्वरूप हैं । प्रभु बिरहीके समान विषाद करते और अनेक कथायें और संवाद कहते हैं ।।

लछमन देखु बिपिन कै सोभा ❀ देखत केहिकर मन नहिं छोभा
नारिसहित सब खगमृगबृंदा ❀ मानहुँ मोर करतहहिं निंदा

हे लक्ष्मण ! वनकी शोभाको देखो कि जिसको देखकर किसके मनमें क्षोभ नहीं होता । अपनी स्त्रियोंके सहित सब खग-मृगोंके समूह मानों मेरी निन्दा करते हैं ।। ४ ।।

हमहिं देखि मृगनिकर पराहीं ❀ मृगी कहहिं तुमकहँ भय नाहीं
तुम आनंद करहु मृग जाये ❀ कंचनमृग खोजन यह आये

हमें देखकर मृगोंके झुण्ड भाग जाते हैं किन्तु मृगियाँ उनसे कहती हैं कि तुमको तो कुछ भय नहीं है । हे मृग ! जाओ तुम आनन्द करो क्योंकि यह तो सुवर्णके मृगको ढूँढ़ने आये हैं ।।

संग लाइ करिनी करि लेहीं ❀ मानहु मोहिं सिखावन देहीं
सास्त्रसुचिंतित पुनि पुनि देखिय ❀ भूप सुसेवित बस नहिं लेखिय

हाथी अपने हथिनियोंको लेकर मानों मुझे शिक्षा देते हैं । पढ़े हुए शास्त्रको बारम्बार देखना चाहिये और राजाकी अच्छी तरह सेवा करनेपर भी उसको अपने वशमें नहीं समझे ।

राखिय नारि जदपि उर माहीं ❀ जुवती सास्त्र नृपति बस नाहीं
देखहु तात बसंत सुहावा ❀ प्रियाहीन मोहिं भय उपजावा

स्त्रीको यदि हृदयमें ही लगातार रखे तो भी युवती स्त्री, शास्त्र और राजा वशमें नहीं होते ।। हे तात ! शोभायमान वसन्त भी मुझे प्रियाहीन होनेके कारण भय उत्पन्न करता है ।।

दोहा—बिरह बिकल बलहीन मोहिं, जानेसि निपट अकेल ।
सहित बिपिनमधुकर खगन्ह, मदन कीन्ह बगमेल ।।६२।।

मुझे विरहसे व्याकुल, बलहीन और निपट अकेला जानकर पक्षियों सहित बनके भौंरे इकट्ठे होकर और कामदेवने मुझको आ दबाया है ।। ६२ ।।

देखि गयउ भ्रातासहित, तासु दूत सुनि बात ।
डेरा कीन्हेउ मनहुँ तिन्ह, कटक हटकि मनजात ।।६३।।

परन्तु उसका दूत आकर देख गया कि मैं भाई सहित हूँ और अकेला नहीं, तब उसकी बात सुनकर उस कामदेवने अपनी सेनाको रोककर मानों छावनी डाल दी है ।। ६३ ।।

बिटप बिसाल लता अरुझानी ❀ बिबिध बितान दिये जनु तानी
कदलि तालबर ध्वजा पताका ❀ देखि न मोह धीर मन जाका

विशाल वृक्षोंपर जो लतायें उलझ रही हैं वही मानों तरह-तरहके वितान तान दिये हैं। केलेके वृक्ष ध्वजा-पताका हैं, इनको देखकर जिसका मन मोहित नहीं होता वे ही धीर हैं ॥२॥

बिबिध भाँति फूले तरु नाना ❀ जनु बानैत बने बहु बाना
कहुँ कहुँ सुन्दर बिटप सुहाये ❀ जनु भट बिलग बिलग होइ छाये

ये विविध प्रकारके वृक्ष ऐसे फूल रहे हैं, मानों बहुतसे धनुषधारी खड़े हैं ॥३॥ कहीं-कहीं सुन्दर वृक्ष शोभा पा रहे हैं, मानो वे ही अलग-अलग डेरा किये हैं ॥४॥

कूजत पिक मानहुँ गज माते ❀ ढेक महोख ऊँट बिसराते
मोर चकोर कीरबर बाजी ❀ पारावत मराल सब ताजी

कोकिला ऐसे कूज रही है मानों मतवाले हाथी शब्द कर रहे हैं और सारस, महोख मानों ऊँट तथा खच्चर बोलते हैं। मोर, चकोर, तोते, कबूतर और हंस मानों ताजी जातिके घोड़े हैं ॥

तीतर लावक पदचर जूथा ❀ बरनि न जाय मनोज बरूथा
रथ गिरि सिली दुन्दुभी झरना ❀ चातक बंदीगुनगन बरना

तीतर और लवा मानों पैदलोंके समूह हैं ऐसी (कामदेव की) सेना बखानी नहीं जाती। पत्थरोंके झरने ही मानों दुन्दुभी बजा रहे हैं और चातक की बोलियाँ मानों बंदीगण हैं ॥

मधुकर मुखर भेरि सहनाई ❀ त्रिविध बयारि बसीठी आई
चतुरंगिनी सेन संग लीन्हें ❀ बिचरत सबहिं चुनौती दीन्हें

भौरों का गुंजार ही मानों भेरी और शहनाई बज रही है। शीतल, मन्द, सुगन्ध वायु मानों दूत बन कर आया है। इस प्रकार चतुरङ्गिणी सेना लेकर मानों चुनौती दे रहा है ॥

लछमन देखहु काम अनीका ❀ रहहिं धीर तिन्हकै जग लीका
यहिके एक परम बल नारी ❀ तेहिते उबर सुभट सो भारी

हे लक्ष्मण! संसारके बीच बीरोंमें उन्हीं की गिनती है जो इस कामदेव की ऐसी सेना को देख धैर्यवान् बने रहें। क्योंकि इसको एक अधिक बल स्त्री का है, जो इससे बचे वही भारी योद्धा है ॥

दोहा--तात तीनि अति प्रबल खल, काम क्रोध अरु लोभ।
मुनि बिज्ञान धाम कहँ, करहिं निमिषमहँ छोभ ॥६४॥

हे तात! काम, क्रोध और लोभ यह तीन प्रबल दुष्ट हैं जो बड़े-बड़े मुनिवरोंके मन को भी जो कि विज्ञानके धाम हैं, उनको भी पल भरमें डिगा देते हैं ॥ ६४ ॥

लोभ के इच्छा दंभ बल, काम के केवल नारि।
क्रोधके परुषबचन बल, मुनिवर कहहिं बिचारि ॥६५॥

लोभ का बल भांति-भांति की इच्छा और पाखंड है और काम का बल केवल स्त्री है। क्रोध को केवल कटु वचन, यह मुनिवरोंने विचार कर वर्णन किया है ॥ ६५ ॥

गुनातीत सचराचरस्वामी ❀ राम उमा सब अंतरजामी
कामिन्हकी दीनता दिखाई ❀ धीरन्हके मन बिरति दृढ़ाई

तब जो श्रीरामजी चराचरके स्वामी हैं उन्हें कामादिक विकार नहीं हो सकते। उन्होंने तो कामी पुरुषों की दीनता दिखा कर धीर पुरुषोंके मनमें वैराग्य को ही पक्का किया है ॥

क्रोध मनोज लोभ मद माया ❀ छूटहिं सकल रामकी दाया
सो नर इन्द्रजाल नहिं भूला ❀ जापर होइ सो नट अनुकूला

क्रोध, काम, लोभ, मद और माया यह सारे विकार श्रीरामजी की दयासे ही छूटते हैं ॥३॥ वही इस इन्द्रजालमें नहीं भूलता कि जिस पर वह नट अनुकूल रहता है ॥४॥

उमा कहौं मैं अनुभव अपना ❀ सत हरिभजन जगत सब सपना
पुनि प्रभु गए सरोवरतीरा ❀ पम्पा नाम सुभग गंभीरा

हे पार्वती ! मैं अपना अनुभव कहता हूँ कि एक भगवान् का भजन ही सत्य है और सारा संसार स्वप्नवत् है । फिर रामजी पम्पा नामक सरोवरके तट पर गए जो सुन्दर और गहरा था ॥

संतहृदय जस निर्मल बारी ❀ बाँधे घाट मनोहर चारी
जहँ तहँ पियहिं बिबिध मृग नीरा ❀ जनु उदारगृह जाचकभीरा

उस सरोवरका जल सन्तोंके हृदयके समान निर्मल था और चार मनोहर घाट बँधे हुए थे । पक्षी और मृग जहाँ-तहाँ ऐसे जल पीते हैं मानों उदार पुरुषके घर याचकों की भीड़ लगी हो ॥

दोहा—पुरइनि सघनि ओट जल, बेगि न पाइय मर्म ।
मायाछन्न न देखिए, जैसे निर्गुन ब्रह्म ॥ ६६ ॥

पुरइन (कमलिनी) के सघनपत्तों की आड़ में जल वैसे ही झलक रहा है जैसे सहसा किसी का मर्म नहीं मिलता और जैसे कि माया द्वारा ढँका होनेसे निर्गुण ब्रह्म दिखाई नहीं देता ॥६६॥

सुखी मीन सब एकरस, अति अगाध जलमाहिं ।
जथा धर्मसीलन्हि के, दिन सुखसंजुत जाहिं ॥ ६७ ॥

बहुत अधिक गहरे जलमें सारी मछलियाँ एक रस सुखसे वैसे ही वास करती हैं कि जैसे धर्मशील मनुष्यके सब दिन एकसा सुखसे व्यतीत होते हैं ॥ ६७ ॥

बिकसे सरसिज नानारंगा ❀ मधुर मुखर गुंजत बहु भृंगा
बोलत जलकुक्कुट कलहंसा ❀ प्रभु बिलोकि जनु करत प्रसंसा

उनमें अनेक रङ्गके कमल खिल रहे हैं जिसपर बहुतसे भौंरे मधुर गुंजार कर रहे हैं । जलमुर्गा और कलहंस बोलते हैं, मानों श्रीरामजीको देखकर प्रशंसा कर रहे हैं ॥२॥

चक्रवाक बक खगसमदाई ❀ देखत बनइ बरनि नहिं जाई
सुन्दर खगगनगिरा सुहाई ❀ जात पथिक जनु लेत बुलाई

चकवा बगुलोंके झुंड देखते ही बनते थे, वर्णन नहीं किया जाता है ॥३॥ सुन्दर पक्षियोंके समूह ऐसी मनभावनी बोलियाँ बोलते थे, मानों जाते हुए पथिकोंको बुलाये लेते हैं ॥४॥

तालसमीप मुनिन्ह गृह छाए ❀ चहुँ दिसि कानन विटप सुहाए
चंपक बकुल कदंब तमाला ❀ पाटल पनस पलास रसाला

उस तालाबके पास ही मुनियों के आश्रम हैं जिनके चौतरफा सुहावने वृक्ष शोभायमान हैं। चम्पा, बकुल, कदम्ब, तमाल, कटहल, ढाक इत्यादिके वृक्ष लगे हुये हैं ॥६॥

नवपल्लव कुसुमित तरु नाना ❀ चंचरीक पटली कर गाना
सीतल मंद सुगन्ध सुभाऊ ❀ संतत बहै मनोहर बाऊ
कुहू कुहू कोकिल ध्वनि करहीं ❀ सुनि रव सरस ध्यान मुनि टरहीं

अनेकों वृक्ष नये पत्तों और फूलोंसे सुहावने हो रहे हैं, उनके ऊपर भौरों की कतार गुंजार करती हुई गान कर रही है। शीतल, मन्द, सुगन्ध, सुन्दर मनोहर वायु सर्वदा चलती रहती है। कोकिला कुहू-कुहू बोल रही है, उस रसीले शब्द को सुन कर मुनियोंके भी ध्यान छट जाते हैं॥

दोहा—फलभर नम्र विटप सब, रहे भूमि नियराइ।
परउपकारी पुरुष जिमि, नवहिं सुसंपति पाइ ॥६८॥

सारे वृक्ष फूलों के भार से भूमि पर ऐसे झुक गये हैं कि, जिस तरह परोपकारी पुरुष उत्तम सम्पत्ति पाने पर झुक जाते हैं ॥६८॥

देखि राम अतिरुचिर तलावा ❀ मज्जन कीन्ह परम सुख पावा
देखेउ सुन्दर तरुवरछाया ❀ बैठे अनुजसहित रघुराया

श्रीरामचन्द्रजीने मनोहर तालाबको देखकर उसमें स्नान किया और परम सुख पाया॥ फिर एक उत्तम वृक्षकी सुन्दर छायाको देखकर भाई लक्ष्मण सहित श्रीरामजी वहाँ जा बैठे॥

तहँ पुनि सकल देव मुनि आये ❀ अस्तुति करि निज धाम सिधाये
बैठे परम प्रसन्न कृपाला ❀ कहत अनुजसन कथा रसाला

फिर वहाँ समस्त देवता और मुनि आये और स्तुति करके अपने स्थान को चले गये। तब श्रीरामजी परम प्रसन्नतासे बैठे हुए छोटे भाई लक्ष्मणजीसे अनेक रसीली कथायें कहने लगे॥

बिरहवंत भगवंतहिं देखी ❀ नारद मुनि भा सोच विसेषी
मोर साप करि अंगीकारा ❀ सहत राम नाना दुखभारा

तब भगवान् को विरहवन्त देख कर देवर्षि नारद को बड़ा शोच हुआ। वे चिन्ता करने लगे कि मेरा शाप अंगीकार कर श्रीरामजी नाना प्रकारके दुःखों का भार सह रहे हैं॥

ऐसे प्रभुहिं बिलोकौं जाई ❀ पुनि न बनिहि अस अवसर आई
यह विचारि नारद कर बीना ❀ गए जहाँ प्रभु सुख आसीना

अब मैं जा कर ऐसे प्रभु का दर्शन करूँ क्योंकि फिर ऐसा अवसर नहीं बनेगा। यह विचार कर श्रीनारदजी हाथमें वीणा लिए हुए वहाँ गए कि जहाँ प्रभु सुखपूर्वक विराजमान थे ॥८॥

गावत रामचरित मृदु बानी ❀ प्रेमसहित बहु भाँति बखानी
करत दंडवत लिये उठाई ❀ राखे बहुत बार उर लाई

स्वागत पूछि निकट बैठारे ❀ लछमन सादर चरन पखारे

श्रीरामजीके पवित्र चरित्र को कोमल वाणी से गाते और प्रेमयुक्त उनके गुणों को बहुत भांति से बखानते थे। तब नारदजीके दण्डवत् करते ही प्रभुने उठा लिया और बहुत देर तक हृदय से लगाये रहे। कुशल पूछकर समीप बैठाया और लक्ष्मणजीने सादर उनके चरण धोये ॥

दोहा–नानाविधि बिनती करि, प्रभु प्रसन्न जिय जानि।
नारद बोले बचन तब, जोरि सरोरुहपानि ॥६९॥

फिर अनेक प्रकारसे प्रभुकी प्रार्थनाकर उनको हृदयसे प्रसन्न समझकर नारदजी अपने कमल सरीखे हाथ जोड़ कर बोले ॥६९॥

सुनहु उदार परम रघुनायक ❀ सुन्दर अगम सुगम बरदायक
देहु एक बर माँगौं स्वामी ❀ जद्यपि जानत अंतरजामी

हे उदार श्रीरामजी! सुनिए, आप अगम और सुगम वरके देने वाले हैं। हे स्वामी! मैं एक वर माँगता हूँ दीजिए, यद्यपि आप अन्तर्यामी हैं और उसे जानते भी हैं ॥२॥

जानहु मुनि तुम मोर स्वभाऊ ❀ जनसन कबहुँक कि करौं दुराऊ
कौन वस्तु अस प्रिय मोहिं लागी ❀ जो मुनिवर न सकहु तुम माँगी

तब श्रीरामजीने कहा, हे मुने! तुम मेरे स्वभावको जानते हो, क्या मैं अपने भक्तसे कभी छिपाव करता हूँ? भला ऐसी कौन सी वस्तु मुझे प्रिय है जो तुम नहीं माँग सकते हो ॥

जनकहँ कछु अदेय नहिं मोरे ❀ अस विस्वास तजहु जनि भोरे
तब नारद बोले हरषाई ❀ अस बर माँगौं करौं ढिठाई

अपने भक्त के लिए मुझे ऐसी कोई वस्तु अदेय नहीं है जो न दे सकूं यह विश्वास आप भूल कर भी न त्यागें। तब नारद ने कहा कि अच्छा तो ढिठाई से ऐसा वर माँगता हूँ ॥

जद्यपि प्रभु के नाम अनेका ❀ स्रुति कह अधिक एक ते एका
राम सकल नामन ते अधिका ❀ होउ नाथ अघखगगनबधिका

यद्यपि प्रभुके नाम अनेक हैं और जिन सबको वेद विशेष रूपसे प्रशंसा करते हैं किन्तु उनमें राम नाम सब नामोंसे अधिक तथा पाप रूपी पक्षियों को बधिक रूपसे बध करनेवाला होवे ॥

दोहा–राकारजनी भगति तव, राम नाम सोइ सोम।
अपर नाम उड़ुगन विमल, बसहु भक्तउरव्योम ॥७०॥

वही आपकी भक्ति क्वारकी पूर्णिमाकी रात्री है तथा राम नाम ही चन्द्रमा रूप है और जो आपके अगणित नाम हैं यही तारागणोके समान प्रकाश करते हृदय रूपी गगनमें बास करें ॥७०॥

एवमस्तु मुनिसन कहेउ, कृपासिंधु रघुनाथ।
तब नारद मन हर्ष अति, प्रभुपद नायउ माथ ॥७१॥

तब कृपासिंधु श्रीरामजी ने कहा, एवमस्तु अर्थात् ऐसा ही हो, तब नारदजी ने मन में परम प्रसन्न होकर प्रभुके चरणोंमें मस्तक नवाया ॥७१॥

अति प्रसन्न रघुनाथहिं जानी ❀ पुनि नारद बोले मृदुबानी
राम जबहिं प्रेरेहु निजमाया ❀ मोहेहु मोहिं सुनहु रघुराया

तब श्रीरामजी को परम प्रसन्न जानकर नारदजी कोमल वाणीसे बोले—हे श्रीरामजी ! जब आपने अपनी मायाको प्रेरितकर मुझे मोह लिया था ॥२॥

तब बिवाह मैं चाहौं कीन्हा ❀ प्रभु केहि कारन करै न दीन्हा
सुनु मुनि तोहिं कहौं सहरोषा ❀ भजहिं जे मोहिं तजि सकल भरोषा

तब मैं विवाह करना चाहता था किंतु आपने किस कारण नहीं करने दिया। श्रीरामजीने कहा हे मुनि ! सुनिए, मैं आपसे सहर्ष कहता हूँ कि जो सारा भरोसा छोड़ कर मुझे भजते हैं ॥

करौं सदा तिन्हकी रखवारी ❀ जिमि बालकहिं राखु महतारी
गहि सिसु बच्छ अनल अहि धाई ❀ तहँ राखै जननी अरगाई

मैं उनकी सदा ऐसी ही रखवाली करता हूँ, जैसे बालक को माता रखती है। जब बालक आग तथा सर्प को पकड़ने दौड़ता है, तब माता रोककर उसकी रक्षा करती है।

प्रौढ़ भये तेहिं सुतपर माता ❀ प्रीति करै नहिं पछिलि बाता
मोरे प्रौढ़ तनयसम ज्ञानी ❀ बालक सुतसम दास अमानी

किन्तु वही माता प्रौढ़ होने पर उससे पहली सी प्रीति नहीं करती। ऐसे ही ज्ञानीजन मेरे प्रौढ़ पुत्रके समान हैं। वे मान रहित दास मुझे छोटे बालक पुत्रके समान पालन करने योग्य हैं ॥

जिनहिं मोर बल निजबल ताहीं ❀ दुहुँकहँ काम क्रोध रिपु आहीं
यह बिचारि पंडित मोहिं भजहीं ❀ पायहु ज्ञान भक्ति नहिं तजहीं

मेरे भक्तों को तो एक मात्र मेरा ही सहारा है और ज्ञानी तो बड़े पुत्र हैं। उन्हें अपना ही बल है किन्तु काम, क्रोध रूपी शत्रु दोनों को है। ऐसा विचार कर पण्डितजन मुझे ही भजते हैं ॥

दोहा—काम क्रोध लोभादि मद, प्रबल मोहकी धार।
तिनमहँ अति दारुन दुखद, मायारूपी नारि ॥७२॥

हे मुने ! काम, क्रोध, लोभ और मद आदि तो प्रबल इच्छा मोह की धार हैं, किन्तु इससे भी अधिक महा दारुण दुःख देनें वाली मायारूपी स्त्री है ॥७२॥

सुनु मुनि कह पुरान श्रुतिसंता ❀ मोहविपिनकहँ नारि बसंता
जप तप नेम जलाश्रयझारी ❀ होइ ग्रीष्म सोषै सब बारी

हे मुने ! सुनिये, पुराण, वेद और सन्त ऐसा कहते हैं कि मोह रूपी वन के लिये नारी वसन्त ऋतु है। जप, तप, नियम रूपी सरोवरों को ग्रीष्म ऋतु होकर स्त्री सोख लेती है ॥

काम क्रोध मद मतसर भेका ❀ इन्हहिं हर्षप्रद वर्षा एका
दुर्बासना कुमुदसमुदाई ❀ तिन्हकहँ सरद सदा सुखदाई

काम, क्रोध, अभिमान, मत्सर रूपी मेढ़कों को आनन्द देने की एक मात्र स्त्री वर्षा रूप है। दुर्वासनारूपी कुमुदिनियोंके समुदाय को स्त्री शरद् ऋतुके तुल्य सुखदाई है। ४ ॥

धर्म सकल सरसीरुह वृंदा ❀ होइ हिम तिन्हहि दहइ दुख मंदा
पुनि ममता जवास बहुताई ❀ पलुहै नारि सिसिरऋतु पाई

सब धर्मरूप कमलों के समूह को मूर्ख स्त्री हिमऋतु होकर दुःख देती है। फिर ममता रूपी जवास के बन को बढ़ाने के लिए स्त्री शिशिर ऋतु है जिससे मोह बढ़ता है ॥६॥

पाप उलूक निकरसुखकारी ❀ नारि निविड़ रजनी अँधियारी
बुधिबल सील सत्य सब मीना ❀ बंसी सम त्रिय कहहिं प्रबीना

फिर यही स्त्री पाप रूपी उलूकों को सुख प्रदान करनेके लिए अँधेरी रातके समान है। जब पुरुष स्त्री के वश में हो जाता है तो उसमें बुद्धि, बल, शील और सत्य नहीं रहता ॥

दोहा—अवगुनमूल सूलप्रद, प्रमदा सब दुख-खानि।
ताते कीन्ह निवारन, मुनि मैं यह जिय जानि ॥७३॥

हे मुनीश्वर नारदजी ! अवगुणों की जड़ और शूलको देने वाली स्त्री सारे दुःखोंकी खानि हैं। यही जी में समझ कर मैंने आपको निवारण किया था ॥७३॥

सुनि रघुपति के बचन सुहाये ❀ मुनि तनु पुलक नयन भरि आये
कहहु कवन प्रभुकी अस रीती ❀ सेवकपर ममता अति प्रीती

रामजीके सुन्दर वचन सुन नारदजीका शरीर पुलकित हो गया, नेत्र जलसे भर आये। विचारने लगे कि प्रभु की सेवक पर ममता की यह कैसी सुन्दर रीति है ॥२॥

जे न भजहिं अस प्रभु भ्रम त्यागी ❀ ज्ञानरंक नर मंद अभागी
पुनि सादर बोले मुनि नारद ❀ सुनहु राम विज्ञानविसारद

जो ऐसे प्रभुको भ्रम त्यागकर नहीं भजते वे ज्ञानहीन, मतिमन्द और अभागे हैं। फिर नारदजी आदरपूर्वक बोले कि हे विज्ञान-विशारद रामजी ! सुनिये ॥

संतन के लक्षण रघुबीरा ❀ कहहु राम भंजनभवभीरा
सुनु मुनि संतनके गुन कहऊँ ❀ जिन्हते मैं उन्हके बस रहऊँ

हे आवागमन का दुःख हरने वाले रामजी ! अब आप संतोंके लक्षण कहिये। तब रामजी बोले, हे मुनिराज ! सुनिए अब मैं संतोंके गुण कहता हूँ कि जिससे मैं उनके वश में रहता हूँ ॥

षट विकार तजि अनघ अकामा ❀ अचल अकिंचन सुचि सुखधामा
अमितबोध अनीहमितभोगी ❀ सत्यसार कबि कोबिद जोगी
सावधान मानस मदहीना ❀ धीर धर्मगति परमप्रवीना

जो छहों विकार छोड़ पाप और वासनाहीन स्वधर्ममें रहनेवाले अकिञ्चन धनकी कामना रहित पवित्र और सुखके धाम हैं। जो ज्ञानवान् परमार्थ ज्ञाता सत्य सारके कवि विद्वान् और योगी हैं, सदा धर्ममें सावधान, मान, मद रहित, धैर्यवान् और भक्ति मार्गमें परम प्रवीण हैं ॥

दोहा—गुनागार संसारदुख, रहित विगतसंदेह।
तजि मम चरनसरोज प्रिय, जिन्हकहँ देह न गेह ॥७४॥

जो गुणोंके स्थान सांसारिक दुःखसे अलग और संदेहसे शून्य हैं, जिन्हें मेरे चरणारविन्दों के अतिरिक्त न उन्हें शरीर प्रिय है और न घर ही प्यारा है ॥७४॥

निजगुन सुनत श्रवण सकुचाहीं ❁ परगुन सुनत अधिक हरषाहीं
सम सीतल नहिं त्यागहिं नीती ❁ सरल सुभाव सबहिं सन प्रीती

जो अपने गुण कानोंसे सुनते ही सकुचा जाते हैं तथा जो पराये गुणोंको सुनकर प्रसन्न होते हैं, जो सम शीतल रहकर नीतिको नहीं त्यागते, जो सरल स्वभाव और सबके प्रीति करने वाले हैं ।।

जप तप ब्रत दम संयम नेमा ❁ गुरु गोविंद विप्रपदप्रेमा
श्रद्धा क्षमा मयत्री दाया ❁ मुदिता मम पद प्रीति अमाया

जो जप, तप, व्रत, संयम और नियमोंमें रहते हैं जिनकी गुरु, गोविन्द और ब्राह्मणोंके चरणोंमें प्रीति है तथा जो श्रद्धा सहित मेरे चरणोंमें निःस्वार्थ प्रेम करते हैं ।।४।।

विरति विवेक विनय विज्ञाना ❁ बोध जथारथ बेद पुराना
दंभ मान मद करहिं न काऊ ❁ भूलि न देहिं कुमारग पाऊ

और जो वैराग्य, विवेक, नम्रता और विज्ञान युक्त हैं, जिनको वेद पुराणों का यथार्थ बोध है, जो दम्भ, मान, मद कभी नहीं करते और कभी भूलकर भी कुमार्गमें पाँव नहीं रखते ।।

गावहिं सुनहिं सदा मम लीला ❁ हेतुरहित परहितरतसीला
सुनु मुनि साधुन्हके गुन जेते ❁ कहि न सकहिं सारद श्रुति तेते

जो मेरी लीलाको निरन्तर गाते हैं और सुनते हैं और अकारण ही दूसरेकी भलाईमें रत रहते हैं। हे मुनि ! सुनिए साधुओंके जितने गुण हैं उन सबको सरस्वतीभी वर्णन नहीं कर सकतीं ।।

छन्द–कहि सक न सारद सेस नारद सुनत पदपंकज गहे।
अस दीनबंधु कृपालु अपने भक्तगुन निजमुख कहे ।।
सिर नाइ बारहिं बार चरनन्ह ब्रह्मपुर नारद गये।
ते धन्य तुलसीदास आस बिहाइ जे हरिरँग रये ।।२९।।

तब जिन्हें शारदा और शेषजी भी नहीं कह सकते उन गुणोंको श्रीरामचन्द्रजीके मुखसे सुनकर नारदजीने उनके चरणोंको पकड़ लिया। ऐसे दीनबन्धु रामजीने अपने मुखारविन्दसे भक्तोंके गुण वर्णन किये। फिर भगवान्को मस्तक नवाकर नारदजी ब्रह्मलोकको चले गये। वे लोग धन्य हैं जो सारी आशाओं को छोड़कर श्री हरि के रंग में रँगे रहे हैं ।।२९।।

दोहा–रावनारि जस पावन, गावहिं सुनहिं जे लोग।
रामभक्ति दृढ़ पावहिं, बिनु बिराग जप जोग ।। ७५ ।।

रावण के शत्रु श्रीरामचन्द्रजीके इस पवित्र यशको जो मनुष्य गाते हैं, वे वैराग्य जप तथा योग के बिना ही दृढ़ भक्ति को निःसन्देह पा जाते हैं ।।७५।।

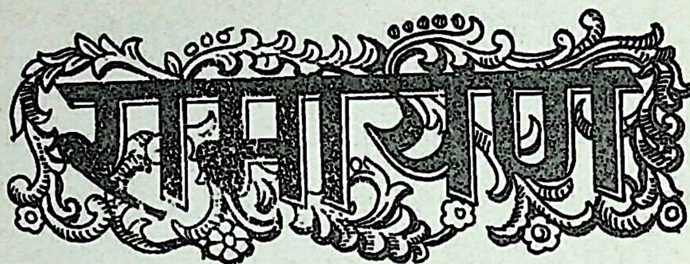
दीपसिखासम जुवतिजन, मन जनि होसि पतंग।
भजहिं राम तजि काम मद, करहिं सदा सतसंग ।।७६।।

हे मन ! स्त्रियाँ दीपककी शिखाके समान हैं, उनमें तू पतंग बन मत जल, काम और मद को त्याग कर निरन्तर सतसंग करते हुए श्रीरामजी का भजन कर ।।७६।।

।। तीसरा अरण्यकाण्ड समाप्त ।।

श्रीगणेशाय नम.

श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजी कृत—



किष्किन्धाकाण्ड

(सर्व-सञ्जीवनी टीका-सहित)

।। मङ्गलाचरण ।।

श्लोक—कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौ विज्ञानधामावुभौ
शोभाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ।
मायामानुषरूपिणौ रघुवरौ सद्धर्मवन्तौ हि तौ
सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौ हि नः ।।१।।

कुन्द नामक पुष्प तथा नील कमल के समान सुन्दर और अति बली विज्ञान के धाम, शोभा से सम्पन्न, धनुर्विद्या के उत्तम ज्ञाता, वेद में स्तुति किए हुए, गो और ब्राह्मणोंके प्रिय, लीला करने के लिए मनुष्य का रूप धारण किए, रघुवंशमें श्रेष्ठ, सत्य धर्मका कवच धारण किए, सबका हित करने वाले, सीता जी की खोज में तत्पर, मार्गमें विचरते हुए दोनों भाई (राम-लक्ष्मण) मुझे भक्ति देने वाले हों ।।१।।

ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमलं प्रध्वंसनं चाव्ययं
श्रीमच्छम्भुमुखेन्दु-सुन्दरवरं संशोभितं सर्वदा।
संसारामयभेषजं सुखकरं श्रीजानकी-जीवनं
धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम् ।।

वे पुण्यात्मा धन्य हैं जो ब्रह्मरूपी समुद्र में प्रकट हुए श्रीरामचन्द्रजी के नाम रूपी अमृत को सर्वदा पीते हैं, कलियुग के पापों के नाशक, आवागमन से रहित तथा जो महादेवजीके चन्द्र-मुख के समान श्रेष्ठ और सुन्दर शोभा से सम्पन्न रहते हैं और जो संसार रूपी रोग की औषधि हैं तथा जो सीताजी के जीवन-प्राण हैं ।।२।।

सोरठा--मुक्ति जन्म-महि जानि, ज्ञानखानि अघहानिकर ।
जहँ बस संभु भवानि, सो कासी सेइय कस न ॥१॥

मुक्ति की जन्म-भूमि, ज्ञान की खानि, पापों को नष्ट करने वाली जान कर, जहाँ शिवजी तथा पार्वती जी वास करते हैं उस काशीपुरीका सेवन क्यों नहीं करते हो ? ॥१॥

जरत सकल सुरवृंद, विषम गरल जेहि पान किय ।
तेहि न भजसि मतिमन्द, को कृपालु संकर सरिस ॥२॥

वह भयंकर विष जिससे समस्त देवता गण जल जाते थे, उसको शिवजी ने पान किया था । रे मतिमन्द ! उन शिवजीके समान कृपालु और कौन है कि जो तू उन्हें नहीं भजता ॥२॥

आगे चले बहुरि रघुराई ❀ ऋष्यमूक पर्वत नियराई
तहँ रह सचिव सहितसुग्रीवा ❀ आवत देखि अतुल बलसीवा

फिर रामजी आगे चले और ऋष्यमूक पर्वतके निकट पहुँचे ॥१॥ वहां मन्त्रियों सहित सुग्रीव रहता था, उसने अतुलित बल की सीमावाले रामजी को आते हुए देखा ॥ २ ॥

अतिसभीत कह सुनु हनुमाना ❀ पुरुषजुगल बलरूप निधाना
धरि बटुरूप देखु तैं जाई ❀ कहेसि मोहिं निजसैन बुझाई

सुग्रीवने कहा--हे हनुमान् ! सुनो, ये दोनों पुरुष बल और शोभा की खानि हैं। तुम ब्रह्मचारी रूप से जाकर देखो और वैसा ही मन में जान कर मुझसे संकेत द्वारा समझा कर कहना ॥

पठवा बालि होइ मन मैला ❀ भागों तुरत तजौं यह सैला
विप्ररूप धरि कपि तहँ गयऊ ❀ माथ नाइ पूछत अस भयऊ

यदि बालिनें इन्हें भेजा हो तो इनका मन मैला होगा, मैं तुरन्त भागूँ और इस पर्वत को छोड़ दूं। तब ब्राह्मण का वेश धारण किए हनुमान्‌जी वहाँ गए और सिर झुका कर ऐसे पूछे ॥

को तुम स्यामल गौर सरीरा ❀ क्षत्रियरूप फिरहु बन बीरा
कठिन भूमि कोमलपदगामी ❀ कवन हेतु बन बिचरहु स्वामी

तुम सांवले और गोरे वर्णके कौन हो जो क्षत्रिय वेशसे इस बनमें फिर रहे हो ? यह पृथ्वी कठोर है, तुम्हारा चरण कोमल है। हे स्वामी ! तुम किस कारण से इस बनमें विचर रहे हो ?॥

मृदुलमनोहर सुन्दर गाता ❀ सहत दुसह बन आतप बाता
की तुम तीनि देवमहँ कोऊ ❀ नर नारायन कै तुम दोऊ

मृदुल, मनोहर और सुन्दर शरीरसे तुम इस वनमें दुस्सह वायु को सह रहे हो तो ब्रह्मा, विष्णु और महादेवमें तुम कौन हो अथवा क्या तुम दोनों नर और नारायण रूप हो ॥१०॥

दोहा--जगकारन तारन भवहिं, भंजन धरनीभार ।
की तुम अखिलभुवनपति, लीन्ह मनुजअवतार ॥ १ ॥

तुम जगत्‌के कारण और आवागमन से मुक्ति देने वाले अथवा पृथ्वी का भार उतारने वाले या अखिल ब्रह्माण्डके स्वामी कौन हो, जो मनुष्य रूपमें अवतार लिए हो ॥१॥

हँसि बोले रघुवंसकुमारा ❀ विधिकर लिखा को मेटन हारा
कोसलेस दसरथ के जाये ❀ हम पितु बचन मानि बन आये

श्रीरामचन्द्रजी हँस कर बोले—ब्रह्मा का लेख कौन मेट सकता है ? ॥१॥ हम अयोध्या-नरेश दशरथ के पुत्र हैं और पिता की आज्ञा मान कर वन में आए हैं ॥२॥

नाम राम लछिमन दोउ भाई ❀ संग नारि सुकुमारि सुहाई
इहाँ हरी निसिचर वैदेही ❀ विप्र फिरहिं हम खोजत तेही

हम दोनों भाइयों का नाम राम और लक्ष्मण है, हमारे साथ एक सुन्दर सुकुमारी सुहावनी स्त्री थी, उस वैदेही को यहाँ राक्षस हर ले गया है, हे विप्र ! हम उसी को खोज रहे हैं ॥

आपन चरित कहा हम गाई ❀ कहहु विप्र निजकथा बुझाई
प्रभु पहिचानि परे गहि चरना ❀ सो सुख उमा जाइ नहिं बरना

हे विप्र ! अपना चरित्र तो हमने कहा, अब तुम अपनी कथा समझा कर कहो । तब हनुमान्‌जी प्रभु को पहचानकर उनके चरणों पर गिर पड़े । हे पार्वती ! वह सुख वर्णन नहीं किया जाता ॥

पुलकित तनु मुख आव न बचना ❀ देखत रुचिर वेषकी रचना
पुनि धीरज धरि अस्तुति कीन्हा ❀ हरषि हृदय निज नाथहिं चीन्हा

श्रीरामचन्द्रजी के उस वेश की रचना को देख कर शरीर ऐसा पुलकित हो गया कि मुखसे वचन न निकला । फिर हृदयमें धीरज धर कर अपने प्रभु को पहचान बड़ी स्तुति किये ॥

मोर न्याउ मैं पूछा सांई ❀ तुम पूछहु कस नर की नाईं
तव मायाबस फिरउँ भुलाना ❀ ताते मैं नहिं प्रभु पहिचाना

हे स्वामी ! मैं तो अनजान होकर पूछता हूँ किन्तु आप भी मनुष्यके ही समान अनजान होकर कैसे पूछते हैं ? अब तक तो आपकी माया के वश भूला था जिससे प्रभु को न पहचान सका ॥

दोहा—एक मंद मैं मोहबस, कुटिलहृदय अज्ञान ।
पुनि प्रभु मोहिं बिसारेउ, दीनबंधु भगवान ॥ २ ॥

एक तो मैं जाति का बन्दर हूँ, दूसरे मोह और अज्ञानके वश हूँ, उस पर भी हे दीन-बन्धु भगवान् ! आपने भी मुझे बिसार दिया है ॥२॥

यदपि नाथ बहु अवगुन मोरे ❀ सेवक प्रभुहि परइ जनि भोरे
नाथ जीव तव माया मोहा ❀ सो निस्तरइ तुम्हारिहि छोहा

हे नाथ ! यद्यपि मुझमें बहुत से अवगुण हैं तथापि प्रभु अपने सेवक को नहीं भूलते । हे नाथ ! यह सभी जीव जो आपकी माया-मोहमें ग्रसित हैं वह आप ही के प्रेमसे निस्तार पाते हैं ॥

तापर मैं रघुबीरदोहाई ❀ जानउँ नहिं कछु भजन उपाई
सेवक सुत पितु मातु भरोसे ❀ रहइ असोच बनइ प्रभु पोसे

उस पर हे रामचन्द्रजी ! मैं आप की दोहाई देता हूँ कि मैं कुछ भी भजन और यत्न नहीं जानता । सेवक और पुत्र माता-पिताके ही भरोसे हैं, सो हे प्रभो ! उनका पोषण करना ही पड़ता है ।।

अस कहि परेउ चरन अकुलाई ❀ निज तनु प्रगट प्रीति उर छाई
तब रघुपति उठाइ उर लावा ❀ निजलोचन जल सींचि जुड़ावा

ऐसा कहकर व्याकुल हो चरणोंमें गिर पड़े और उनके शरीरमें प्रेम छा गया ।।५।। तब श्रीरामचन्द्रजीनें उठाकर अपने नेत्रोंके जलसे सींच कर उन्हें शीतल किया ।।६।।

सुनु कपि जनि मानेसि जिय ऊना ❀ तै मम प्रिय लछिमन ते दूना
समदर्सी मोहिं कह सब कोऊ ❀ सेवक प्रिय अनन्यगति होऊ

फिर बोले, हे हनुमान् ! सुनो तुम दूसरा कुछ भाव न समझो, तुम मुझे लक्ष्मणसे दूने प्रिय हो । मैं समदर्शी हूँ किन्तु सेवकके प्रेमसे अनन्य गति को भी धारण करता हूँ ।।

दोहा—सो अनन्य असि जाके, मति न टरै हनुमंत ।
मैं सेवक सचराचर, रूपरासि भगवंत ।। ३ ।।

सो हे हनुमान् ! वह अनन्य सेवक है कि जिसकी बुद्धि कभी चलायमान न होवे और जो यह समझता हो कि मैं चराचर का सेवक हूँ और इन समस्त रूप-राशियोंमें भगवान् का ही वास है ।।

देखि पवनसुत पति अनुकूला ❀ हृदय हर्ष बीते सब सूला
नाथ शैल पर कपिपति रहई ❀ सो सुग्रीव दास तव अहई

जब हनुमान् को ज्ञात हो गया कि प्रभु मेरे बिलकुल ही अनुकूल हैं तब, वे बोले, हे नाथ! इसी पर्वतपर वानरोंका राजा सुग्रीव रहता है जो आपका सेवक है ।।२।।

तेहिसन नाथ मयत्री कीजै ❀ दीन जानि तेहि अभय करीजै
सो सीताकर खोज कराइहि ❀ जहँ तहँ मर्कट कोटि पठाइहि

हे नाथ ! आप उससे मित्रता करके उसे दीन जानकर निर्भय कर दीजिए । तब वह अपनी सेनाके करोड़ों बन्दरोंको भेजकर जहाँ-तहाँसे वह सीता की खोज कराएगा ।।४।।

इहि बिधि सकल कथा समुझाई ❀ लिए दोउ जन पीठ चढ़ाई
जब सुग्रीव रामकहँ देखा ❀ अतिसय जनम धन्य करि लेखा

इस प्रकार सारी कथा समझाकर हनुमान्, राम लक्ष्मण दोनों भाइयों को अपनी पीठपर चढ़ा कर ले गए ।। जब सुग्रीवने श्रीरामचन्द्रजीको देखा तो अपने जन्मको धन्य माना ।।

सादर मिले नाइ पद माथा ❀ भेंटे अनुजसहित रघुनाथा
कपिके मन बिचार यह रीती ❀ करिहहिं बिधि मोसन ये प्रीती

तब दौड़कर सादर दण्डवत् किया और लक्ष्मण सहित श्रीरामजीनें उसे गले लगाया । सुग्रीव विचार करने लगा कि क्या ये मुझ बानरसे मित्रता करेंगे ? ।।

दोहा—तब हनुमंत उभय दिसि, कहि सब कथा सुनाइ ।
पावक साखी देइ करि, जोरी प्रीति दृढ़ाइ ।। ४ ।।

तब श्रीहनुमान्‌ने दोनों ओरकी कथा कह सुनाई और उन्होंने अग्नि को साक्षी देकर सुदृढ़ मित्रता स्थापित की ।। ४ ।।

कीन्ह प्रीति कछु बीच न राखा ❀ लछमन रामचरित सब भाखा
कह सुग्रीव नयन भरि बारी ❀ मिलहिं नाथ मिथिलेसकुमारी

जब ऐसी अभेद प्रीति हो गई तब लक्ष्मणने श्रीरामचन्द्रजीका सब चरित्र सुग्रीवसे कहा। उसपर सुग्रीवने अपने नेत्रोंमें जल भरकर कहा कि हे नाथ ! मिथिलेश कुमारी मिलेंगी ।।

मंत्रिन सहित इहाँ इकबारा ❀ बैठ रहेउँ मैं करत बिचारा
गगनपंथ देखी मैं जाता ❀ परबस परी बहुत बिलखाता
राम राम हा राम पुकारी ❀ ममहिं देखि दीन्ह पट डारी
माँगा राम तुरत सो दीन्हा ❀ पट उर लाइ सोच अति कीन्हा

एक समय मैं अपने मंत्रियों सहित यहाँ बैठा था तो आकाश-मार्गसे जाते हुए, जो परवश बहुत व्याकुल थी, देखा कि कोई स्त्री हा राम ! कहकर बहुत विलाप करती जा रही थी, उसने हमारी ओर देख अपना वस्त्र डाल दिया था।। उस वस्त्र को श्री रामचन्द्रजी ने सुग्रीव से माँगकर हृदय से लगाकर बड़ा सोच किया ।

कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा ❀ तजहु सोच उर आनहु धीरा
सब प्रकार करिहौं सेवकाई ❀ जेहि बिधि मिलहि जानकी आई

तब सुग्रीवने कहा—हे रामजी ! सुनिए, सोचको त्यागकर हृदयमें धैर्य लाइये । मैं सब प्रकारसे आपकी वही सेवा करूँगा कि जिस प्रकारसे जानकीजी आकर आपको मिल जायँ ।।

दोहा—सखाबचन सुनि हर्षे, कृपासिंधु बलसींव ।
कारन कवन बसहु बन, मोसन कहु सुग्रीव ।। ५ ।।

मित्र सुग्रीवकी ऐसी बात सुनकर शक्तिके धाम कृपासिन्धु राम बहुत प्रसन्न हुये और पूछे कि हे सुग्रीव ! अब तुम मुझसे कहो कि किस कारणसे इस बनमें बास करते हो ? ।।५।।

नाथ बालि अरु मैं दोउ भाई ❀ प्रीति रही कछु बरनि न जाई
मयसुत मायावी तेहि नाऊँ ❀ आवा सो प्रभु हमरे गाऊँ

सुग्रीवने कहा—हे नाथ ! बालि और मैं दो भाई हूँ, पहले हम दोनोंमें जैसी प्रीति थी वह कुछ कही नहीं जाती है । एक समय मयसुत मायावी नामक राक्षस हमारे गाँवमें आया ।।

अर्धराति पुरद्वार पुकारा ❀ बालिहु रिपुबल सहै न पारा
धावा बालि देखि सो भागा ❀ मैं पुनि गयउँ बंधुसँग लागा

तब अर्ध रात्रिके समय नगरके द्वार पर पुकारने लगा, बालि शत्रुकी ललकारको न सह सका । बालि दौड़ा और वह भागा तो मैं भी पीछे लगा हुआ भाईके साथ गया ।।४।।

गिरिवर गुहा पैठि सो जाई ❀ बाली मोहिं तब कहा बुझाई
परखेहु मोहिं एक पखवारा ❀ नहिं आवहुँ तौ जानेहु मारा

किन्तु वह राक्षस पहाड़की एक गुफामें जा बैठा तब बालिने मुझसे कहा कि तुम यहीं

ठहर जाय एक पक्षतक प्रतीक्षा करना यदि मैं न आऊँ तो जानना कि बालि मार दिया गया ॥

मास दिवस तहँ रहेउँ खरारी ❀ निसरी रुधिरधार तहँ भारी
तब मैं निजमन कीन्ह बिचारा ❀ जाना असुर बंधुकहँ मारा
बालि हतेसि मोहिं मारिय आई ❀ सिला द्वार दै चलेउँ पराई

हे रामचन्द्र ! एक मास तक मैं वहाँ रहा, जब बहुत भारी रक्तकी धारा निकली तब मैंने अपने मनमें विचार किया और जाना कि राक्षसने मेरे भाईको मार डाला होगा ॥१३॥ और बालिको मारकर वह मुझे भी आकर मारेगा ॥१४॥ तब भयवश मैंने उसके द्वार पर एक पत्थरकी शिला रख दी और स्वयं भाग चला ॥१५॥

मंत्रिन्ह पुर देखा बिनु साँईं ❀ दीन्हेउ मोहिं राज बरिआई
बाली ताहि मारि गृह आवा ❀ देखि मोहिं जिय भेद बढ़ावा

मन्त्रियोंने देखा कि नगर बिना स्वामीका है तो उन्होंने मुझे जबरदस्ती राज्य दे दिया ॥१६॥ राक्षसको मारकर बालि भी घर आ गया और मुझे देख कर अपने मनमें भेद बढ़ा लिया ॥१७॥

रिपु समान मोहिं मारेसि भारी ❀ हरि लीन्हेसि सर्बस अरु नारी
ताके भय रघुबीर कृपाला ❀ सकल भुवन मैं फिरेउँ बिहाला

फिर तो उसने मुझे अपना बड़ा शत्रु जानकर मारा और स्त्री सहित मेरा सर्वस्व हरण कर लिया । हे रामजी ! मैं उसीके भयसे समस्त भूमण्डलमें व्याकुल होकर घूमता हूँ ॥१९॥

इहाँ सापबस आवत नाहीं ❀ तदपि सभीत रहेउँ मनमाहीं
सुनि सेवकदुख दीनदयाला ❀ फरकि उठे दोउ भुजा विसाला

यहाँ आनेमें उसे शापका भय है इससे नहीं आता तो भी अपने मनमें डरता रहता हूँ ॥२०॥ जब श्रीरामचन्द्रजी सेवकके यह दुःख सुने तो उनकी दोनों भुजायें फड़क उठीं ॥२१॥

दोहा–सुनु सुग्रीव मैं मारिहौं, बालिहिं एकहि बान ।
ब्रह्म रुद्र सरणागतहुँ, गये न उबरहिं प्रान ॥ ६ ॥

(भगवान् बोले)—हे सुग्रीव ! सुनो, मैं एक ही बाणसे बालिको मार डालूँगा । और ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी इसकी रक्षा नहीं कर सकते ॥६॥

जे न मित्रदुख होहिं दुखारी ❀ तिन्हहिं बिलोकत पातक भारी
निज दुखगिरिसमरजकरिजाना ❀ मित्रके दुख रज मेरुसमाना

जो मित्रके दुःखसे दुःखी नहीं होता उसे देखनेमें पाप लगता है ॥१॥ जो मित्रके दुःखको पहाड़के समान और अपने दुःखको धूलिके समान समझे वही मित्र है ॥२॥

जिनके अस मति सहज न आई ❀ ते सठ हठ कत करत मिताई
कुपथ निवारि सुपंथ चलावा ❀ गुन प्रगटे अवगुनहिं दुरावा

जिनके बुद्धिमें सहज ही ऐसा न आवे वह मूर्ख व्यर्थ ही मित्रता क्यों करते हैं ? जो बुरे मार्गसे हटाकर सुपंथ पर चलावे और गुणोंको प्रकटकर अवगुणोंको छिपावे, वही मित्र है ॥

देत लेत मन संक न धरहीं ❀ बल अनुमान सदा हित करहीं
बिपतिकाल कर सतगुननेहा ❀ श्रुति कह संत मित्रगुन एहा

जो देते-लेते कभी मनमें शंका न धरे और शक्ति भर मित्रकी सर्वदा ही भलाई करे। और विपत्ति के समय में प्रेम करे, वेद, शास्त्र और सन्त जन मित्रों के यही गुण कहे हैं ॥

आगे कह मृदुबचन बनाई ❀ पाछे अनहित मन कुटिलाई
जाकर चित अहिगतिसम भाई ❀ अस कुमित्र परिहरे भलाई

और जो सामने तो मीठी बात कहे और मनमें कुटिलता रखकर पीठ पीछे अनहित करे। हे भाई ! जिसका चित्त सर्पके समान होवे तो वैसे कुटिल मित्रको छोड़ देनेमें ही भलाई है।

सेवक सठ नृप कृपिण कुनारी ❀ कपटी मित्र शूलसम चारी
सखा सोच त्यागहु बल मोरे ❀ सबबिधि करब काज मैं तोरे

क्योंकि मूर्ख सेवक, कृपिण राजा, दुष्ट स्त्री, कपटी मित्र ये चारोंही शूलके समान हैं। सो हे मित्र ! तुम मेरे बल से चिन्ता त्याग दो, मैं सब प्रकार से तुम्हारा कार्य करूँगा ॥

कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा ❀ बालि महाबल अति रनधीरा
दुंदुभि अस्थिताल दिखराये ❀ बिनु प्रयास रघुनाथ ढहाये

सुग्रीवने कहा--हे रामजी ! बालि बड़ा बीर और रण में धैर्यवान् है। देखिए, यह उस दुन्दुभी राक्षस की हड्डियाँ और यह ताड़ वृक्ष है, रामचन्द्रजीने उन्हें एक ही बाणमें ढहा दिया ॥

देखि अमित बल बाढ़ी प्रीती ❀ बालिबधनकर भइ परतीती
बार बार नावइ पद सीसा ❀ प्रभुहिं जानि मन हर्ष कपीसा

तव प्रभुके अमित बल को देखकर सुग्रीव को बालिके मारे जाने का विश्वास हुआ, वह वारम्वार प्रभुके चरणोंमें शिर झुकाने लगा और हनुमान्‌जी मन ही मन प्रसन्न होने लगे ॥

उपजा ज्ञान बचन तब बोला ❀ नाथ कृपा मन भयउ अडोला
सुख संपति परिवार बड़ाई ❀ सब परिहरि करिहौं सेवकाई

इस प्रकार जब सुग्रीव को ज्ञान हुआ, तब वह बोला कि हे नाथ ! अब मेरा मन स्थिर हुआ ॥ मैं अपना सुख, धन, कुटुम्ब और सब बड़प्पन त्याग कर आपकी सेवा करूँगा ॥

ये सब रामभक्तिके बाधक ❀ कहहिं संत तव पद अवराधक
शत्रु मित्र सुख दुख जगमाहीं ❀ मायाकृत परमारथ नाहीं ॥

क्योंकि ये सभी राम-भक्तिके बाधक हैं; किन्तु सन्तजन ऐसा कहते हैं कि आपका चरण बाधारहित है। शत्रु, मित्र, दुःख, सब माया से बना है और इसमें परमार्थ नहीं है ॥

बालि परमहित जासु प्रसादा ❀ मिलेहु राम तुम समनविषादा
सपने जेहिसन होइ लराई ❀ जागे समुझत मन सकुचाई

हे रामजी ! बालि मेरा परम हितू है जो आप मेरे लिए मिल गये ॥ इससे सपने की लड़ाई की तरह ही हमारी और बालिकी लड़ाई ज्ञात होती है ॥

अब प्रभु कृपा करहु यहि भाँती ❁ सब तजि भजन करौं दिन राती
सुनि बिरागसंयुत कपिबानी ❁ बोले बिहँसि राम धनुपानी

सो हे प्रभो ! अब इसीप्रकारसे कृपा कीजिए कि जिस प्रकार मैं सब कुछ त्यागकर रात दिन आपका ही भजन किया करूँ। तब बन्दर की ऐसी वैराग्य-वाणी सुन श्रीरामजीने मुस्कराकर कहा ॥

जो कछु कहेउँ सत्य सब सोई ❁ सखा बचन मम मृषा न होई
नट मर्कट इव सबहिं नचावत ❁ राम खगेस बेद अस गावत

रामचन्द्र ने कहा कि मैंने जो कुछ कहा है वह सब सत्य है, हे मित्र ! मेरा वचन व्यर्थ न होगा। कागभुशुंडि जी कहते हैं कि हे गरुड़ ! नट मर्कट के समान राम जी ही सबको नचा रहे हैं और वेदों ने भी ऐसा ही गान किया है ॥

लै सुग्रीव संग रघुनाथा ❁ चले चापसायक गहि हाथा
तब रघुपति सुग्रीव पठावा ❁ गर्जेसि जाइ निकट बल पावा

तब श्रीरामचन्द्र सुग्रीव को साथ लेकर हाथ में धनुष-बाण धारण करके वालि की ओर चले। जब रामचन्द्रजी सुग्रीव को भेजे तो बल पाकर निकट जाकर उसने गर्जना की ॥

सुनत बालि क्रोधातुर धावा ❁ गहिकर चरन नारि समुझावा
सुनु पति जिन्हहिं मिलउ सुग्रीवा ❁ ते दोउ बंधु तेजबलसींवा
कोसलेससुत लछिमन रामा ❁ कालहु जीति सकहिं संग्रामा

वह गर्जन सुनकर बालि क्रोधित होकर दौड़ा तो स्त्री ने पाँव पकड़कर समझाया--हे पति ! सुनो ! सुग्रीव जिससे मिला है वे दोनों भाई तेज और बल की सीमा हैं। अयोध्या-नरेश के पुत्र हैं और उनका नाम राम और लक्ष्मण है, जो संग्राम में काल को भी जीत सकते हैं ॥

सोइ रघुबीर हृदयमहँ आनहु ❁ छाँड़हु मोह कहा मम मानहु

उन्हीं रामजी को मनमें धारण कर अज्ञान छोड़ दो, मेरा कहना मानो ॥

दोहा–कहा बालि सुनु भीरुप्रिय, समदरसी रघुनाथ।
जो कदापि मोहि मारिहैं, तौ पुनि होब सनाथ ॥ ७ ॥

उसपर बालिने कहा–हे भीरु प्रिये ! सुनो, रामचन्द्र समदर्शी हैं, कदाचित् वे मुझे मार ही देंगे तो मेरा उद्धार हो जायेगा ॥७॥

अस कहि चला महाअभिमानी ❁ तृन समान सुग्रीवहि जानी
बालि देखि सुग्रीवहिं ठाढ़ा ❁ हृदय क्रोध पुनि बहुबिध बाढ़ा
भिरेउ उभय बाली अति तर्जा ❁ मुष्टिक मारि महाधुनि गर्जा

ऐसा कहकर वह महा अभिमानी सुग्रीव को तृणके समान जानकर चला। बालिने सुग्रीव को खड़ा देखा तो हृदय में बहुत-सा क्रोध बढ़ा ॥ फिर तो दोनों भिड़ गए और बालि ने अत्यन्त गर्जन कर सुग्रीव को एक मुष्टिका मारी तथा फिर घोर गर्जन किया ॥

तब सुग्रीव बिकल होइ भागा ❁ मुष्टिप्रहार बज्रसम लागा
मैं जो कह रघुबीर कृपाला ❁ बंधु न होइ मोर यह काला

तब मुष्टिकाके उस वज्र प्रहार से व्याकुल होकर सुग्रीव भागा और बोला—हे कृपालु रामचन्द्रजी ! मैंने पहले ही कहा था कि यह भाई नहीं, बल्कि मेरा काल है ॥

एकरूप तुम भ्राता दोऊ ❀ तेहि भ्रम ते नहिं मारेउँ सोऊ
कर परसा सुग्रीव सरीरा ❀ तन भा कुलिस गई सब पीरा

रामजी नें कहा--तुम दोनों भाई एक ही रूप रङ्ग के हो, इसी भ्रम से मैंने नहीं मारा। रामजीने सुग्रोव का शरीर स्पर्श कर दिया तो सब पीड़ा चली गई, शरीर वज्र के समान हो गया।

मेली कंठ सुमनकी माला ❀ पठवा पुनि बल देइ बिसाला
पुनि नाना बिधि भई लराई ❀ बिटपओट देखहिं रघुराई

फिर अपनी पहचानके लिए उसके गलेमें एक फूलकी माला पहना दी और अपना विशाल बल देकर भेजा ॥ फिर तो अनेक प्रकार से युद्ध हुआ और श्रीरामचन्द्रजी वृक्ष की आड़ से देखते रहे ॥

दोहा—बहु छल बल सुग्रीव करि, हिय हारा भय मानि ।
मारा बालिहिं राम तब, हृदय माँझ सर तानि ॥ ८ ॥

जब अनेक प्रकार से छल-बल करके सुग्रीव हारकर हृदय में बालि से डरने लगा, तब श्रीरामचन्द्रजी ने एक बाण तान कर बालि के हृदय में मार दिया ॥ ८ ॥

परा विकल महि सरके लागे ❀ पुनि उठि बैठ देखि प्रभु आगे
स्यामगात सिर जटा बनाए ❀ अरुन नयन सर चाप चढ़ाये

उस बाण के लगते ही बालि व्याकुल होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा फिर उठकर बैठा तो प्रभु श्याम-शरीर पर जटा बनाए लाल नेत्र और धनुष-बाण धारण किए आगे ही खड़े थे ॥

पुनि-पुनि चितइ चरण चितदीन्हे ❀ सुफल जनम माना प्रभु चीन्हे
हृदय प्रीति मुख बचन कठोरा ❀ बोला चितै रामकी ओरा

तब इस प्रकार प्रभु को पहचान कर अपना जन्म लेना सुफल माना। उसके मनमें तो प्रभु के प्रति प्रेम था ही, किन्तु मुखसे कठोर वचन बोलता हुआ रामजीकी ओर देख कर वह बोला ॥

धरमहेतु अवतरेहु गुसाँई ❀ मारेहु मोहिं ब्याधकी नाँई
मैं बैरी सुग्रीव पियारा ❀ कारन कवन नाथ मोहिं मारा

हे गुसाईं ! आपने धर्म के कारण अवतार लिया है फिर मुझे व्याध के समान कैसे मारा ? ॥ क्या मैं आपका शत्रु था और सुग्रीव मित्र है, हे नाथ ! आपने मुझे किस कारण से मारा ? ।

अनुजबधू भगिनी सुतनारी ❀ सुनु सठ ये कन्या सम चारी
इन्हहिं कुदृष्टि विलोकै जोई ❀ ताहि बधे कछु पाप न होई

रामजीने कहा—रे मूर्ख ! सुन, छोटे भाई की स्त्री, बहन, पुत्र की स्त्री और कन्या ये चारों एक समान हैं, जो इन्हें कुदृष्टिसे देखे उसको मारने में कुछ पाप नहीं है ॥

मूढ़ तोहिं अतिसय अभिमाना ❀ नारि सिखावन करेसि न काना
मम भुजबल आश्रित तेहि जानी ❀ मारा चहसि अधम अभिमानी

रे मूर्ख ! तुझको बड़ा अभिमान था, तूने अपनी स्त्री का कहना नहीं माना । रे अभिमानी ! जिसे केवल मेरी भुजाओं का बल था, उसे ही जान-बूझकर तूने मारना चाहा ।।

दोहा—सुनहु राम स्वामी सुभग, चल न चातुरी मोरि ।
प्रभु अजहूँ मैं पातकी, अंतकाल गति तोरि ।। ९ ।।

हे स्वामी ! सुनो, आपके आगे अब मेरी चतुराई क्या चल सकती है ? किन्तु हे प्रभो ! अब अन्तकाल में भी मेरी गति आप ही हैं, तब क्या मैं अब भी पापी ही रहा ? ।। ९।।

सुनत राम अतिकोमल बानी ❀ बालिसीस परसेउ निजपानी
अचल करउँ तन राखहु प्राना ❀ बालि कहा सुनु कृपा निधाना

श्रीरामचन्द्रजी ने ऐसी कोमल वाणी सुनकर बालि के सिर पर अपना हाथ फेर दिया और बोले कि इच्छा हो तो शरीर रखो, तब बालिने कहा—हे कृपानिधान ! सुनिये—

जनम जनम मुनि जतन कराहीं ❀ अंत राम कहि आवत नाहीं
जासु नामबल शंकर काशी ❀ देत सबहिं समगति अविनाशी
मम लोचनगोचर सोइ आवा ❀ बहुरि कि प्रभु अस बनहि बनावा

जिसके लिए योगिजन जन्म-जन्मान्तर यत्न करते हैं और अन्त में मुखसे 'राम' नहीं निकलता और जिस नामके बलसे महादेवजी काशी में बैठ कर सबको अच्छी गति देते हैं । वही जब आप मेरी आँखोंके सामने खड़े हैं, तब हे प्रभो ! क्या ऐसा बनाव फिर बनेगा ? ।।

छंद—सो नयनगोचर जासु गुन नित नेति कहि श्रुति गावहीं ।
जिति पवन मन गो निरसकरि मुनि ध्यान कबहुँक पावहीं ।।
मोहिं जानि अति अभिमानबस प्रभु कहेहु राखु सरीरही ।
अस कवन सठ हठि काटि सुरतरु बारि करिहि बबूरही ।।१।।

जब वही स्वरूप कि जिसके गुणों का वेद नित्य ही नेति-नेति कह कर गान करते हैं और जिस प्रभु को मुनि लोग प्राण, मन और इन्द्रियों को जीतकर कभी ही कभी अपने ध्यानमें पाते हैं।। हे प्रभो ! आप मुझे अब भी अभिमानी ही जानते हैं क्या; इसीसे शरीर रखने को कहते हैं; किन्तु ऐसा मूर्ख कौन है जो कल्प वृक्ष को काट कर बबूलका बाग लगावेगा ।।१।।

अब नाथ करि करुना बिलोकहु देहु यह बर माँगऊँ ।
जेहि जोनि जन्मौं करमबस तहँ रामपद अनुरागऊँ ।।
यह तनय मम सम बिनय बल कल्यानप्रद प्रभु लीजिये ।
गहि बाँह सुरनरनाह अंगद दास आपन कीजिये ।।२।।

हे नाथ ! अब कृपा करके इस ओर देखिए और जो वर माँगता हूं वही दीजिये । मैं कर्मवश जिन योगियोंमें जन्म पाऊँ, वहाँ आप (श्रीरामचन्द्र) का ही अनुराग करूँ और हे प्रभो ! मेरा पुत्र मेरे ही समान नम्र और बली है इसे अपने कल्याणप्रद चरणोंमें लीजिये । इसका नाम अङ्गद है, इसकी बाँह पकड़ कर अपना दास बना लीजिये ।। २ ।।

दोहा—रामचरन दृढ़ प्रीति करि, बालि कीन्ह तनु त्याग ।
सुमनमाल जिमि कंठतें, गिरत न जानै नाग ॥१०॥

श्रीरामचन्द्रजी के चरणों में दृढ़ प्रीति करके वालि ने वैसे ही शरीर त्याग दिया कि जैसे हाथी अपने कण्ठ से पुष्प की मालाको गिरते हुए नहीं जानता ॥ १० ॥

राम बालि निजधाम पठावा ❁ नगरलोग सब ब्याकुल धावा
नानाविधि बिलाप कर तारा ❁ छूटे केस न देह सँभारा

जब श्रीरामचन्द्रजीने बालिको अपने धाम भेज दिया तब उसके नगर के लोग व्याकुल होकर दौड़े। तारा अनेक प्रकारसे विलाप करने लगी, जिसके बाल छूटे हुए थे और शरीरकी सँभाल न थी।

पुनि पुनि तासु सीस उर धरई ❁ बदन बिलोकि हृदयमहँ हतई
मैं पति तुम्हहिं बहुत समझावा ❁ कालबिबस कछु मनहिं न आवा

वह वारम्बार पतिके शिरको अपने हृदयसे लगाती और छाती पीटती तथा कहती थी कि हे पतिदेव ! मैंने तुम्हें बहुत समझाया; परन्तु नहीं माने, तुम कालके वशीभूत थे ॥

अंगदकहँ कछु कहन न पाये ❁ बीचहिं सुरपुर प्रान पठाये
तारा बिकल देखि रघुराया ❁ दीन्ह ज्ञान हर लीन्ही माया

हा ! तुम अङ्गद को भी कुछ कहने न पाए और बीच ही में अपने प्राणों को बैकुण्ठ भेज दिये। जब रामजीने ताराको व्याकुल देखा तो ज्ञान देकर अपनी मोहिनी सब माया हर ली।

क्षिति जल पावक गगन समीरा ❁ पंचरचित यह अधम सरीरा
प्रगट सो तनु तव आगे सोवा ❁ जीव नित्य तुम केहि लगि रोवा

ज्ञान यह दिया कि हे तारे ! यह पञ्चभौतिक शरीर नाशवान् है, पञ्चतत्त्वसे बना है। सो शरीर तेरे समक्ष ही पड़ा है, परन्तु जीव नित्य है, सो तू किसलिए रोती है ?

उपजा ज्ञान चरन तब लागी ❁ लीन्हेसि परम भक्ति वर माँगी
उमा दारुयोषितकी नाईं ❁ सबहिं नचावत राम गुसाँईं

जब इस प्रकार तारा को ज्ञान हुआ तब वह श्रीरामजीके चरणों पर जा गिरी और परम पवित्र भक्तिको माँग लिया। हे पार्वती ! श्रीरामचन्द्रजी पुतलीके ही समान सबको नचाते हैं ॥

तब सुग्रीवहिं आयसु दीन्हा ❁ मृतक कर्म विधिवत सब कीन्हा
राम कहा अनुजहिं समुझाई ❁ राज देहु सुग्रीवहिं जाई

फिर श्रीरामचन्द्रजीने सुग्रीवको आज्ञा दी तो उसने बालिका मृतक संस्कार विधिपूर्वक किया। तब रामजीने लक्ष्मणसे समझाकर कहा कि जाकर सुग्रीव को राज्य दे दो ॥

रघुपति चरन नाइ करि माथा ❁ चले सकल प्रेरित रघुनाथा

तब श्रीरघुनाथजीके चरणों में शिर नवा कर, उनकी प्रेरणा से हनुमान् आदि सब चले ॥

दोहा—लछमन तुरत बुलाए, पुरजन विप्रसमाज ।
राज दीन्ह सुग्रीवकहँ, अंगदकहँ युवराज ॥११॥

फिर तो लक्ष्मणजीने तुरन्त ही पुरवासियों और ब्राह्मणोंको उनके समाज सहित बुलाकर सुग्रीवको राज्य देकर अङ्गदको युवराजकी पदवी प्रदान की ॥ ११ ॥

उमा रामसम हित जगमाहीं ❀ गुरु पितु मातु बंधु कोउ नाहीं
सुर नर मुनि सबकै यह रीती ❀ स्वारथ लागि करैं सब प्रीती

हे पार्वती ! श्रीरामचन्द्रजीके समान हितू इस संसारमें कोई नहीं है ॥१॥ देवता, मनुष्य और मुनीश्वर सबकी यही रीति है कि अपने स्वार्थके लिए ही एक दूसरेसे प्रीति करते हैं ॥२॥

बालि त्रास व्याकुल दिन राती ❀ तन बहु ब्रण चिंता जर छाती
सोइ सुग्रीव कीन्ह कपिराऊ ❀ अति कोमल रघुबीर सुभाऊ

जो बालिके भयसे दिन-रात व्याकुल रहता था और चिन्तासे हृदय जला करता था ॥३॥ ऐसे सुग्रीवको कोमल हृदयवाले श्रीरामचन्द्रजीने समस्त बानरोंका राजा बना दिया ॥ ४ ॥

जानत हूँ अस प्रभु परिहरहीं ❀ काहे न विपतिजाल नर परहीं
पुनि सुग्रीवहिं लीन्ह बुलाई ❀ बहु प्रकार नृपनीति सिखाई

जो ऐसे प्रभुको जानकर भी त्याग देते हैं भला वे विपत्तिके जालमें क्यों न पड़ें ? ॥५॥ फिर श्रीरामजीने सुग्रीवको बुलाकर बहुत प्रकारसे राजनीति-धर्मको सिखलाया ॥६॥

कह प्रभु सुनु सुग्रीव हरीसा ❀ पुर न जाउँ दसचारि बरीसा
गत ग्रीष्म बर्षाऋतु आई ❀ रहिहौं निकट सैलपर छाई

फिर प्रभुने कहा—हे सुग्रीव ! सुनो, मैं चौदह वर्ष नगर, गाँवमें न जाऊँगा, देखो अब ग्रीष्म ऋतु चली गई और वर्षा ऋतु आई है इससे मैं यहाँके निकटवर्ती पहाड़ पर ही कुटी बनाकर रहूँगा ॥

अंगद सहित करहु तुम राजू ❀ संतत हृदय राखि मम काजू
तब सुग्रीव भवन फिरि आये ❀ राम प्रवर्षण गिरिपर छाये

और तुम मेरे कार्यको हृदयमें धारण करके अंगदके सहित राज्य करो ॥९॥ तब सुग्रीव अपने घर आए और श्रीरामचन्द्रजी प्रवर्षण पर्वतपर निवास करने लगे ॥ १० ॥

दोहा—प्रथमहिं देवन गिरि गुहा, राखी रुचिर बनाय ।
राम कृपानिधि कछुक दिन, बास करिहिंगे आय ॥ १२ ॥

वहाँ पहले हीसे देवताओंने एक पहाड़ी गुफाको सुन्दर बनाकर इसलिए तैयार रखा था कि इसमें कृपाके धाम श्रीरामचन्द्रजी कुछ दिनके लिए आकर निवास करेंगे ॥ १२ ॥

सुंदर बन कसुमित तरु सोभा ❀ गुंजत चंचरीक मधुलोभा
कंदमूल फल पत्र सुहाये ❀ भये बहुत जबते प्रभु आये

वह सुन्दर बन-पुष्पोंसे लदा हुआ वृक्षोंसे शोभायमान था, भौंरे गूंज रहे थे ॥१॥ जब प्रभु उस वनमें जाकर बसे, तबसे उसमें कंद-मूल फल और बहुत ही शोभायमान पत्ते उत्पन्न हो गये ॥२॥

देखि मनोहर सैल अनूपा ❀ रहे तहँ अनुजसहित सुरभूपा
मंगलरूप भए बन तबते ❀ कीन्ह निवास रमापति जबते

तब उस मनोहर और अनुपम पर्वतको देखकर देवताओंके राजा रामजी वहाँ जा बसे और जबसे श्रीरामजी उस वनमें वास किए, तबसे वह वन मंगलस्वरूप हो गया ॥४॥

मधुकर खग मृग तन धरि देवा ❀ करहिं सिद्ध मुनि प्रभु की सेवा
फटिकसिला अतिसुभ्र सुहाई ❀ सुखआसीन तहाँ दोउ भाई

देवता लोग पक्षी, मृग तथा भौंरोंके शरीर धारण कर प्रभुकी सेवा करने लगे। वहाँ एक अत्यन्त ही, स्वच्छ स्फटिक मणि की शिला थी, जिस पर सुखपूर्वक दोनों भाई जा बैठे ॥

कहत अनुजसन कथा अनेका ❀ भक्ति विरति नृपनीति विवेका
वर्षाकाल मेघ नभ छाये ❀ गरजत लागत परम सुहाये

वहाँ श्रीरामचन्द्रजी छोटे भाई लक्ष्मणसे ज्ञानकी अनेक कथायें कहने लगे कि–वर्षाकालका समय आ गया और आकाशमण्डल बादलोंसे छा गया जिसकी गर्जन बहुत ही सुहावनी लगती है ॥

दोहा–लछमन देखहु मोरगन, नाचत बारिद पेखि।
गृही विरतिरत हर्ष जस, विष्णुभक्तकहँ देखि ॥ १३ ॥

तब रामजीने कहा–हे लक्ष्मण! देखो, बादलों को देखकर मोरगण ऐसे ही नाच रहे हैं कि जैसे वैराग्यवान् गृहस्थ विष्णुभक्तको देखकर प्रसन्न होते हैं ॥ १३ ॥

घन घमंड नभ गरजत घोरा ❀ प्रियाहीन डरपत मन मोरा
दामिनि दमकि रहै घनमाहीं ❀ खलकी प्रीति जथा थिर नाहीं

किन्तु आकाशमें बादलोंकी घोर गर्जनको सुनकर प्रिया जानकीके बिना मेरा मन डरता है ॥ बादलोंमें बिजली ऐसे ही चमक जाती है जैसे दुष्ट जनोंकी प्रीति स्थिर नहीं रहती ॥

वर्षहिं जलद भूमि नियराये ❀ यथा नवहिं बुध विद्या पाये
बुंदअघात सहैं गिरि कैसे ❀ खलके बचन संत सह जैसे

बादल भूमिके निकट आकर ऐसे ही बरसते हैं जैसे विचारवान् विद्या पाकर झुक जाते हैं। पर्वत बूँदोंके आघातको कैसे सहन करते हैं, जैसे दुष्टोंके वचनको संत लोग सहते हैं ॥

क्षुद्र नदी भरि चलि उतराई ❀ जस थोरे धन खल बौराई
भूमि परत भा डाबर पानी ❀ जिमि जीवहिं माया लपटानी

छोटी नदियाँ भरकर वैसे ही उतरा चली हैं कि जैसे थोड़े धनको पाकर दुष्ट बौरा जाते हैं। पृथ्वीपर पड़ते ही जल ऐसे ही मैला हो जाता है जैसे जीवको माया लिपट जाती है ॥

सिमिटसिमिटजलभरहिंतलावा❀जिमि सद्गुण सज्जन पहँ आवा
सरिताजल जलनिधिमहँ जाई ❀ होइ अचल जिमि जन हरि पाई

सिमिट-सिमिट कर जलसे तालाब भर जाते हैं जैसे सद्गुण सज्जनोंके पास आ जाते हैं। नदियाँ समुद्रमें जाकर ऐसी ही अचल हो जा रही हैं जैसे, ईश्वरको पाकर जीव ॥

दोहा–हरित भूमि तृनसंकुल, समुझि परै नहिं पंथ।
जिमि पाखंड विवादते, लुप्त होहिं सदग्रंथ ॥ १४ ॥

पृथ्वी हरी घासोंसे ऐसे ही भर गई है कि उसमें मार्ग नहीं दिखलाई पड़ता, जैसे पाखण्ड और विवादके कारण सच्चे ग्रन्थोंका लोप हो जाता है ॥ १४ ॥

दादुरधुनि चहुँ ओर सुहाई ❀ बेद पढ़हिं जनु बटुसमुदाई
नव पल्लव भये बिटप अनेका ❀ साधक मन जस होइ बिवेका

चारों ओरसे मेढकोंकी बोली ऐसी ही सुहावनी लगती है मानों ब्रह्मचारियों का समूह वेद पढ़ता हो, वृक्षोंमें अनेक नवीन पल्लव ऐसे ही निकल आए हैं कि जैसे साधक के मनमें ज्ञान उत्पन्न हो जावे।

अर्क जवास पात बिनु भयऊ ❀ जिमि सुराज्य खलउद्यम गयऊ
खोजत पंथ मिलै नहिं धूरी ❀ करै क्रोध जिमि धर्महिं दूरी

आक और जवास पत्तोंसे ऐसे ही रहित हो रहे हैं कि जैसे स्वराज्यमें दुष्टों की चाल नहीं चलती। मार्गमें धूलि ऐसे नष्ट हो गई है कि जैसे क्रोध धर्म को नष्ट कर देता है।।

ससिसंपन्न सोह महि कैसी ❀ उपकारीकी संपति जैसी
निसि तमघन खद्योत बिराजा ❀ जनु दंभिनकर जुरा समाजा

खेतीसे पृथ्वी ऐसे ही शोभायमान है कि जैसे उपकारी जनों की सम्पत्ति शोभायमान होती है। अँधेरी रातमें जुगनू ऐसे ही शोभायमान होते हैं मानो दंभियों का समाज एकत्र हुआ हो।।

महावृष्टि चलि फूटि कियारी ❀ जिमि स्वतंत्र होइ बिगरहिं नारी
कृषी निरावहिं चतुर किसाना ❀ जिमि बुध तजहिं मोह मद माना

महावृष्टि होनेसे क्यारियाँ फूट कर ऐसे ही बह चली हैं कि जैसे स्वतंत्र होनेसे स्त्रियाँ बिगड़ जाती हैं। खेतोंमें चतुर किसान ऐसे ही निरा रहे हैं कि जैसे बुद्धिमान् मोह को त्याग देते हैं।।

देखिय चक्रवाक खग नाहीं ❀ कलिहिं पाइ जिमि धर्म पराहीं
ऊसर बरषै तृन नहिं जामा ❀ संतहृदय जस उपज न कामा

और चकई-चकवा पक्षी ऐसे ही नहीं दिखलाई पड़ते हैं कि जैसे कलिकाल को पाकर धर्म भाग जाता है। ऊसर भूमिपर तृण ऐसे ही नहीं जमा कि जैसे संतोंके मनमें कामदेव नहीं उत्पन्न होता।।

बिबिधजंतुसंकुल महि भ्राजा ❀ प्रजा बढ़ै जिमि पाइ सुराजा
जहँ तहँ रहे पथिक थकि नाना ❀ जिमि इंद्रियगन उपजै ज्ञाना

विविध जन्तुओंसे पृथ्वी ऐसे ही भरी है कि जैसे स्वराज्य को पाकर प्रजा बढ़ती है। जहाँ-तहाँ मार्गमें पथिक-जन ऐसे थक गये हैं कि जैसे ज्ञानको पाकर इन्द्रियाँ शिथिल हो जाती हैं।।

दोहा–कबहुँ प्रबल बह मारुत, जहँ तहँ मेघ बिलाहिं।
जिमि कुपूत के ऊपजे, संपति धरम नसाहिं।। १५।।

कभी वायु तेज चलता है कि जिसमें बादल ऐसे ही नष्ट हो जाते हैं कि जैसे कुपुत्रके उत्पन्न होनेसे धन (द्रव्य) और धर्म नष्ट हो जाते हैं।। १५।।

कबहुँ दिवसमहँ निविड़ तम, कबहुँक प्रगट पतंग।
उपजै बिनसै ज्ञान जिमि, पाइ सुसंग कुसंग।। १६।।

कभी दिनमें अन्धकार छा जाता है, कभी सूर्य निकल आते हैं। सो ऐसा ही है कि जैसे सुसंग और कुसंग को पाकर ज्ञान उत्पन्न होता और नष्ट हो जाता है।। १६।।

वर्षा विगत सरद ऋतु आई ❀ देखहु लछमन परम सुहाई
फूले कास सकल महि छाई ❀ जनु वर्षा कृत प्रगट बुढ़ाई

हे लक्ष्मण ! देखो, वर्षा-काल चला गया और परम सुहावन शरद् ऋतुका आगमन हो गया। कास फूलकर पृथ्वी पर ऐसी ही छा गई मानों वर्षा ऋतु बुढ़ापाको सूचित कर रही है ॥

उदित अगस्त पंथ जल सोखा ❀ जिमि लोभहिं सोखै संतोषा
सरिता सर निर्मल जल सोहा ❀ संतहृदय जस गत मद मोहा

अगस्त्यके उदय होते ही मार्गका जल सूख गया, जैसे लोभको सन्तोष सोख लेता है और नदियों, तालाबोंका जल वैसे ही निर्मल हो गया है कि जैसे सन्तोंका हृदय निर्मल होता है।

रस-रस सोख सरित सर पानी ❀ ममतात्याग करहिं जिमि ज्ञानी
जानि सरदऋतु खंजन आये ❀ पाइ समय जिमि सुकृत सुहाये

नदियों और तालाबोंके जल क्रमशः ऐसे ही सूख रहे हैं जैसे ज्ञानी मोहको त्याग कर देते हैं। शरद् ऋतुको जानकर खंजन पक्षी ऐसे प्रकट हो गए हैं जैसे समयको पाकर पुण्य शोभायमान होता है ॥

पंक न रेनु सोह अस धरनी ❀ नीतिनिपुन नृपकी जस करनी
जलसंकोच विकल भे मीना ❀ अबुध कुटुम्बी जिमि धन हीना

पृथ्वीपर कीचड़ ऐसे ही नहीं कि जैसे नीति-निपुण राजाकी कीर्ति शोभती है। जलके घट जानेसे मछलियाँ वैसे ही व्याकुल हो गई हैं कि जैसे अज्ञानी कुटुम्बी व्याकुल हो जाते हैं ॥

बिनु घन निर्मल सोह अकासा ❀ जिमि हरिजन परिहरिसब आसा
कहुँ कहुँ बृष्टि सारदी थोरी ❀ कोउ इक पाव भक्ति जिमि मोरी

बादलोंसे रहित आकाश ऐसा निर्मल हो गया है जैसे आशाओंको त्यागकर भक्त निर्मल हो जाते हैं। कहीं-कहीं थोड़ी वर्षा हो जाती है जैसे कोई विरला ही मेरी भक्तिको पाता है ॥

दोहा—चले हर्ष तजि नगर नृप, तापस बनिक भिखारि।
जिमि हरि भक्ती पाइ जन, तजहिं आश्रमी चारि ॥१७॥

अब शरद् ऋतुके आगमनको देखकर राजा, तपस्वी, बनिये और भिक्षुक अपने-अपने कार्यको ऐसे ही चल दिए कि जैसे भक्त भगवान्‌की भक्तिको पाकर चारों आश्रमोंको त्याग देते हैं ॥१७॥

सुखी मीन जहँ नीर अगाधा ❀ जिमि हरिशरन न एकौ बाधा
फूले कमल सोह सर कैसे ❀ निर्गुन ब्रह्म सगुन भये जैसे

जहाँ अगाध जल है वहाँकी मछलियाँ ऐसी ही सुखी हैं कि जैसे भगवान् की शरणमें कोई बाधा नहीं होती। तालाबोंमें कमल फूलकर ऐसे शोभायमान हैं जैसे निर्गुण ब्रह्म सगुण हो जाता है।

गुंजत मधुकर निकर अनूपा ❀ सुन्दर खगरव नानारूपा
चक्रवाकमन दुख निसि पेखी ❀ जिमि दुर्जन परसंपति देखी

भौरोंके समूह गूंज रहे हैं, सुन्दरपक्षी भांति-भांतिकी बोलियाँ बोल रहे हैं। रात्रिको आते देख चकवा-चकवीका मन दुःखी हो गया है, जैसे दुष्ट जन पराई सम्पत्ति को देख दुःखी होते हैं।

चातक रटत तृषा अति ओही ❀ जिमि सुख लहै न शंकरद्रोही
सरदातप निसि ससि अपहरई ❀ संत दरस जिमि पातक टरई

पपीहे को अपनी प्यासकी बड़ी रटन है, जैसे शिवका द्रोही सुख नहीं पाता। शरद्की गर्मीको चन्द्रमा रात्रिमें हरण कर लेता है, जैसे सन्तोंके दर्शनसे पाप नष्ट हो जाता है ॥

देखहिं बिधु चकोरसमुदाई ❀ चितवहिं जिमि हरिजन हरिपाई
मसक दंस बीते हिमत्रासा ❀ जिमि द्विजद्रोह किये कुलनासा

चकोरोंका झुण्ड चन्द्रमाको ऐसे ही देख रहा है कि जैसे भगवान्को पाकर भगवान्के भक्त देखते हैं ॥ ७ ॥ शरद्कालको पाकर मच्छरोंका काटना ऐसे ही नष्ट हो गया है जैसे ब्राह्मणों के द्रोहसे कुलका नाश हो जाता है ॥८॥

दोहा–भूमि जीव संकुल रहे, गये सरदऋतु पाइ ।
सत्‌गुरु मिले जाहिं जिमि, संसय भ्रम समुदाइ ॥ १८ ॥

पृथ्वीपर जो अनेक जीव भर रहे थे वे शरद् ऋतुको पाकर ऐसे ही नष्ट हो गए हैं कि जैसे किसी सद्‌गुरुके मिल जानेसे संशय और भ्रमका समुदाय नहीं रहता ॥ १८ ॥

वर्षागत निर्मल ऋतु आई ❀ सुधि न तात सीताकी पाई
एक बार कैसहुँ सुधि पावौं ❀ कालहुँ जीति निमिषमहँ लावौं

हे भाई! वर्षा भी चली गई और शरद् ऋतुका आगमन भी हो गया किन्तु अबतक भी सीता की कुछ सुध न मिली। एक बार कैसे भी समाचार पाता तो कालको भी जीतकर ले आता ॥

कतहुँ रही जो जीवत होई ❀ तात जतन करि आनौं सोई
सुग्रीवहुँ सुधि मोरि बिसारी ❀ पावा राज्य कोष पुर नारी

कहीं भी रहे, यदि जीवित होगी तो हे तात! उसे उपाय करके ले आऊँगा। देखो सुग्रीवने भी राज्य, कोष, नगर और स्त्रीको पाकर मेरी सुधि भुला दी ॥४॥

जेहि सायक मारा मैं बाली ❀ तेहि सर हतौं मूढ़कहँ काली
जासु कृपा छूटै मद मोहा ❀ ता कहँ उमा कि सपनेहुँ कोहा

जिस बाणसे मैंने बालि को मारा है, उसी बाणसे अब इस मूर्खको भी कल मारूँगा ॥ हे पार्वती! जिसकी कृपासे मद-मोह छूट जाते हैं, क्या स्वप्नमें भी उसको क्रोध हो सकता है? ॥

जानहिं यह चरित्र मुनि ज्ञानी ❀ जिन्ह रघुबीरचरनरति मानी
लछमन क्रोधवंत प्रभु जाना ❀ धनुष चढ़ाइ गहे कर बाना

ऐसे चरित्रको ज्ञानी मुनीश्वर ही जानते हैं, कि जो श्रीरामचन्द्रजीके चरणोंमें प्रेम करते हैं। जब लक्ष्मणने जाना कि प्रभु क्रोधित हैं तो धनुष चढ़ाकर बाण हाथमें ग्रहण किया ॥

दोहा–तब अनुजहिं समुझावा, रघुपति करुनासीव ।
भय दिखाइ लै आवहु, तात सखा सुग्रीव ॥ १९ ॥

तब करुणासागर श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मणको समझाकर बोले कि हे भाई! जाओ, सुग्रीव को भय दिखला कर ले आओ ॥ १९ ॥

इहाँ पवनसुत हृदय बिचारा ❀ रामकाज सुग्रीव बिसारा
निकट जाइ चरनन सिर नावा ❀ चारिहु विधि तेहि कहि समुझावा

वहाँ हनुमान्‌जीने अपने मनमें यह विचार किया कि, सुग्रीवने श्रीरामचन्द्रजीके कार्य को भुला दिया। तब वे सुग्रीवके निकट जाकर प्रणाम किए और चारों प्रकारसे समझाया ।।

सुनि सुग्रीव परम भय माना ❀ विषय मोर हरि लीन्हेसि ज्ञाना
अब मारुतसुत दूतसमूहा ❀ पठवहु जहँ तहँ बानरयूहा

उसे सुनकर सुग्रीव बड़ा भयभीत हुआ और बोला कि हा, विषयने मेरे ज्ञान को हर लिया। हे पवनसुत ! अबसे भी अपने दूतोंके समूह और बन्दरोंके यूथ जहाँ-तहाँ भेजो ।।४।।

कहेहु पाखमहँ आव न जोई ❀ मोरे कर ताकर बध होई
तब हनुमंत बुलाये दूता ❀ सबकर करि सनमान बहूता

और कह दो कि जो पन्द्रह दिनमें न लौट आवेगा, उसका मेरे हाथसे वध होगा ।। तब हनुमान्‌जीने दूतोंको बुलाकर सबका बहुत प्रकारसे सम्मान किया ।।६।।

भय अरु प्रीति नीति दिखराई ❀ चले सकल चरनन सिर नाई
तेहि अवसर लछमन पुर आये ❀ क्रोध देखि जहँ तहँ कपि धाये

और सबको भय और प्रीति तथा नीति दिखलाई, तब सब चरणोंमें शिर नवाकर चले। उसी समयमें लक्ष्मणजी नगरमें आ गए तो जिन्हें क्रोधित देख कर जहाँ-तहाँ बानर दौड़ पड़े ।।

दोहा–धनुष चढ़ाइ कहा तब, जारि करौं पुर छार।
व्याकुल नगर देखि तब, आवा बालिकुमार ।। २० ।।

तब लक्ष्मणजीने धनुष चढ़ाकर कहा ठहरो, नहीं तो अभी तुम्हारे नगरको भस्म कर दूँगा। तब नगरको व्याकुल देखकर अङ्गदजी वहाँ आ गये ।। २० ।।

चरन नाय सिर बिनती कीन्हीं ❀ लछमन अभयबाँह तेहि दीन्हीं
क्रोधवंत लछमन सुनि काना ❀ कह कपीस अतिसय अकुलाना

और लक्ष्मणजीके चरणोंमें सिर झुकाकर विनती किया, लक्ष्मणजीने उसे बाँह दे दिया। तब लक्ष्मणजी क्रोधित हैं, ऐसा अपने कानोंसे सुनकर सुग्रीव अत्यंत ही व्याकुल हुआ ।।

तुम हनुमंत संग लै तारा ❀ करि बिनती समुझाउ कुमारा
तारा सहित जाइ हनुमाना ❀ चरन बंदि प्रभुसुजस बखाना

हे हनुमान् ! तुम तारा को साथ लेकर जाओ तथा लक्ष्मण को समझाओ। तब तारासहित हनुमान् रामके चरणोंमें सिर नवा उन प्रभुका गुणानुवाद कहने लगे ।।४।।

करि विनती मंदिर लै आये ❀ चरन पखारि पलँग बैठाये
तब कपीस चरनन्ह सिर नावा ❀ गहि भुज लछमन कंठ लगावा

फिर प्रार्थनापूर्वक उन्हें राजमन्दिर में ले आये और पाँव धोकर पलँगपर बैठा दिए। तब सुग्रीवने चरणोंमें शिर नवाया तो लक्ष्मणने बाँह पकड़कर उसे गलेसे लगा लिया ।।६।।

नाथ विषयसम मद कछु नाहीं ❁ मुनिमन मोह करै क्षणमाहीं
सुनत बिनति बचन सुख पावा ❁ लछमन तेहि बहुबिध समुझावा
पवनतनय सब कथा सुनाई ❁ जेहि विधि गये दूतसमुदाई

हे नाथ ! विषयसे बढ़कर दूसरा कोई मद नहीं है जो मुनियोंके भी मनको क्षण भरमें मोहित कर लेता है। यह सुनकर लक्ष्मणजीने सुख पाया और सुग्रीव को बहुत समझाया ॥

दोहा—हर्षि चले सुग्रीव तब, अंगदादि कपि साथ।
रामअनुज आगे किय, आये जहँ रघुनाथ ॥२१॥

तब सुग्रीव प्रसन्न होकर अङ्गद आदि बानरों को साथ लेकर लक्ष्मणजी को आगे किए हुए वहाँ आए कि जहाँ श्रीरामचन्द्रजी थे ॥ २१ ॥

नाथ चरन सिर कह कर जोरी ❁ नाथ मोहिं कछु नाहिंन खोरी
अतिसय प्रबल देव तव माया ❁ छूटै जबहिं करहु तुम दाया

और चरणों में शिर नवाकर हाथ जोड़कर बोले कि हे नाथ ! मेरा कुछ दोष नहीं है। हे देव ! आपकी माया बड़ी प्रबल है, जब आप दयादृष्टि करें तभी छूटती है ॥ २ ॥

विषय विवस सुरनरमुनिस्वामी ❁ मैं पामर पसु कपि अति कामी
नारि नयनसर जाहि न लागा ❁ घोर क्रोध तम निसि सो जागा

हे स्वामी ! देवता मनुष्य और मुनिजन भी विषयके वश हो जाते हैं, मैं तो बन्दर हूँ। जिसे स्त्रीके नेत्र रूपी बाण न लगे और जो घोर क्रोध रूपी अँधेरी रातमें जागता है ॥

लोभपास जेहि गर न बँधाया ❁ सो नर तुम समान रघुराया
यह गुन साधनते नहिं होई ❁ तुम्हरी कृपा पाव कोइ कोई

हे श्रीरामचन्द्रजी ! लोभरूपी रस्सीसे जिसने गला नहीं बँधाया हो, वह मनुष्य आप ही के समान है। यह गुण साधनाओंसे नहीं होता किन्तु आपकी कृपासे ही कोई-कोई पाते हैं ॥

तब रघुपति बोले मुसुकाई ❁ तुम प्रिय मोहिं भरत जिमि भाई
अब सोइ यतन करहु मन लाई ❁ जेहि विधि सीता की सुधि पाई

तब श्रीरामचन्द्रजीने मुसकुराकर कहा—तुम मुझे भाई भरतके समान प्रिय हो। अब मन लगाकर वह उपाय करो कि जिससे सीता का पता लगे ॥

दोहा—इहिबिध होत बतकही, आए बानरजूथ।
नानावरन अतुल बल, देखिय कोसबरूथ ॥ २२ ॥

इस प्रकार वार्ता होती रही कि बन्दरोंका समूह आ पहुँचा। देखा तो उसमें अनेक प्रकारके सुन्दर अतुल बलवाले बन्दर मौजूद थे ॥ २२ ॥

बानरकटक उमा मैं देखा ❁ सो मूरख जो करिचह लेखा
आइ रामपद नावहिं माथा ❁ निरखि बदन सबहोंहि सनाथा

हे पार्वती ! बानरों को सेना मैंने देखी, वह मूर्ख है जो उसकी गणना करना चाहे। वे सब आकर श्रीरामचन्द्रजीके चरणोंमें शिर नवा और उनका मुख देखकर अपने को सनाथ मानते थे ॥

अस कपि एक न सेनामाहीं ❋ राम कुशल पूछा जेहि नाहीं
यह नहिं कछु प्रभुकी अधिकाई ❋ बिस्वरूप ब्यापक रघुराई

उस सेनामें ऐसा एक भी बन्दर न था जिससे श्रीरामजीने कुशल न पूछी हो। यह प्रभु की कुछ अधिकता नहीं है, क्योंकि रामजी तो संसारके चराचररूपमें व्याप्त हैं ॥४॥

ठाढ़े जहँ तहँ आयसु पाई ❋ कह सुग्रीव सबहिं समुझाई
रामकाज अरु मोर निहोरा ❋ बानरजूथ जाहु चहुँ ओरा

सब आज्ञा पाकर जहाँ-तहाँ खड़े हो गये। तब सुग्रीवने समझाकर कहा। हे बन्दरोंके यूथ। एक तो रामजीका कार्य है, दूसरे मेरा निहोरा है, इससे अब तुम लोग चारों ओर दौड़ कर जाओ।

जनकसुताकहँ खोजहु जाई ❋ मास दिवस महँ आयहु भाई
अवधि मेटि जो बिनु सुधि पाये ❋ अवसि मरिहिं सो मम कर आये

और जाकर जनकनन्दिनी सीताजीको ढूँढ़ो और हे भाई ! महीने भरमें आ जाना। यदि महीने भरकी अवधिको न बिताकर बिना खबर पाये कोई आवेगा, तो वह आनेपर अवश्य मेरे हाथसे मारा जायेगा ॥ ८ ॥

दोहा–बचन सुनत सब बानर, जहँ-तहँ चले तुरंत।
तब सुग्रीव बुलायउ, अंगदादि हनुमंत ॥ २३ ॥

सुग्रीव का यह वचन सुनते ही सब बन्दर तुरत जहाँ-तहाँ चल पड़े। तब सुग्रीवने अङ्गद और हनुमान् को बुलाया ॥ २३ ॥

सुनहु नील अंगद हनुमाना ❋ जांबवंत मतिधीर सुजाना
सकल सुभट मिलि दक्षिण जाहू ❋ सीतासुधि पूछहु सबकाहू

हे अङ्गद, नील और हनुमान् ! और हे मतिधीर सुजान जामवन्त ! तुम सब योद्धा एक साथ मिल कर दक्षिण दिशाको जाओ और सबसे सीताकी सुधि पूछना ॥२॥

मनक्रम बचन सो जतन बिचारेहु ❋ रामचन्द्रके काज सँवारेहु
भानु पीठ सेइय उर आगी ❋ स्वामी सेइय सब छल त्यागी

मन, वचन और शरीरसे वही करो कि जैसे रामजीका कार्य बने। क्योंकि सूर्य का सेवन पीठसे और अग्निका हृदयसे होता है, किन्तु स्वामीकी सेवा सब छल त्यागकर करे ॥

तजि माया सेइय परलोका ❋ मिटहिं सकल भव सम्भव सोका
देह धरे कर यह फल भाई ❋ भजिय राम सब काम बिहाई

मायाको छोड़ परलोकका सेवन करे जिससे आवागमनके शोक दूर हो जावें ॥५॥ हे भाई ! शरीर पानेका यही फल है कि निष्काम भावसे श्रीरामजीका भजन करे ॥६॥

सोइ गुणज्ञ सोई बड़भागी ❋ जो रघुबीर चरन अनुरागी
आयसु माँगि चरन सिर नाई ❋ चले हरषि सुमिरत रघुराई

वही गुणज्ञ है, वही बड़ा भाग्यवान् है कि जो श्रीरामचन्द्रजीके चरणोंमें प्रेम रखे। तब आज्ञा माँगकर चरणोंमें शिर नवाकर मनमें श्रीरामचन्द्रजीका स्मरण करते हुए चले॥

पाछे पवनतनय सिर नावा ❀ जानि काज प्रभु निकट बुलावा
परसा सीस सरोरुहपानी ❀ करमुद्रिका दीन्ह जन जानी

फिर हनुमान्‌जीने प्रभुको प्रणाम किया तो प्रभुने कार्य संभव जान निकट बुला उनके सिरपर हाथ फेरकर अपने हाथकी अँगूठी उतारकर दी और कहा कि इसको लो और—

बहु प्रकार सीतहिं समुझायहु ❀ कहि बल बिरह बेगि तुम आयहु
हनुमत जनम सफल करि माना ❀ चले हृदय धरि कृपानिधाना

बहुत प्रकार सीता को समझाकर हमारे बल और विरहको कह तुम शीघ्र ही आओ। तब हनुमान्‌जीने अपने जन्मको सफल मानकर कृपानिधान प्रभुका मनमें स्मरण करते हुए चले॥

यद्यपि प्रभु जानत सब बाता ❀ राजनीति राखत सुरत्राता

यद्यपि वे प्रभु सारी बातों को जानते थे तथापि देवताओंके स्वामी राजनीति की रक्षा करते थे॥

दोहा—चले सकल बन खोजत, सरिता सर गिरि खोह।
रामकाज लवलीन मन, बिसरा तनकर छोह॥ २४॥

वे लोग वन, नदी, तालाब और पहाड़ोंकी गुफाओंमें खोजते हुए चले। श्रीरामचन्द्रजी के कार्यमें लवलीन वे अपने शरीर का मोह छोड़ दिये थे॥ २४॥

कतहुँ होइ निसिचरसन भेंटा ❀ प्राण लेहिं इक एक चपेटा
बहु प्रकार गिरि कानन हेरहिं ❀ कोउ मुनि मिलहिं ताहि सबघेरहिं

कहीं राक्षसोंसे भेंट हो जाती तो एक ही चपेटमें उनका प्राण हर लेते। बहुत प्रकारसे पहाड़ों तथा बनोंमें खोजते और जो कोई मुनि मिल जाता तो उनको सब घेर लेते थे॥

लागि तृषा अतिसय अकुलाने ❀ मिलै न जल बनगहन भुलाने
मन अनुमान कीन्ह हनुमाना ❀ मरन चहत सब बिनु जलपाना

प्यास लगने पर सब व्याकुल हो गए, जल नहीं मिलता और उस गम्भीर वनमें रास्ता भूल गये। मनमें हनुमान्‌जीने सोचा कि अब तो सब बिना पानीके मरना चाहते हैं॥४॥

चढ़िगिरिसिखर चहूँ दिसि देखा ❀ भूमिबिवर इक कौतुक पेखा
चक्रवाक बक हंस उड़ाहीं ❀ बहुतक खग प्रविसहिं तिहि माहीं

उन्होंने पहाड़की चोटियोंपर चढ़कर चारों ओर देखा तो भूमिके विवरमें एक दृश्य दिखाई पड़ा॥ जहां, चकवा, बगुले और हँस आदि उड़ते और उसमें बहुतसे पक्षी घुस रहे थे॥

गिरिते उतरि पवनसुत आवा ❀ सबकहँ लै सो बिवर दिखावा
आगे करि हनुमंतहिं लीन्हा ❀ पैठे बिवर बिलंब न कीन्हा

यह देख हनुमान्‌जी पहाड़से उतर आए और सबको साथ लेकर उस विवर को दिखाये। तब वे सब हनुमान्‌जीको आगे कर लिए और उस विवर(बिल)में घुस गये॥

दोहा—देखि जाइ उपवन सुभग, सर बिकसे बहु कंज ।
मंदिर एक रुचिर तहँ, बैठि नारि तप पुंज ।।२५।।

वहाँ जाकर सबने एक सुन्दर बगीचा और सरोवर देखा जिसमें भाँति-भाँति के बहुत से कमल खिल रहे थे । वहींपर एक सुन्दर मन्दिरमें बड़ी तपस्विनी स्त्री बैठी थी ।।२५।।

दूरहिते तेहिं सब सिर नावा ❀ पूछेसि निजवृत्तांत सुनावा
तब तेहि कहा करहु जलपाना ❀ खाहु सरस सुन्दर फल नाना

उसे सबोंने दूरसे ही शिर नवाकर प्रणाम किया और पूछनेसे अपना सारा हाल कह सुनाया । उसने कहा—आप लोग कुछ जल पीकर अनेक प्रकारके मीठे फल खाइये ।।२।।

मज्जन कीन्ह मधुर फल खाये ❀ तासु निकट पुनि सब चलि आये
तेइँ सब आपनि कथा सुनाई ❀ मैं अब जाउँ जहाँ रघुराई

तब इन सबने स्नान करके मीठे फल खाए और फिर सब उसके पास चले आये । तब उसने भी अपनी कथा कह सुनाई और बोली कि अब मैं वहाँ जाऊँगी, जहाँ श्रीरामचन्द्र हैं।।

मूँदहु नयन बिबर तजि जाहू ❀ पैहहु सीतहिं जनि पछिताहू
नयन मूँदि पुनि देखहिं बीरा ❀ ठाढ़े सकल सिंधुके तीरा

किन्तु अब आँखें बन्द करो तो गुफाके बाहर हो जाओगे और सीताजी को पाओगे, पछताओ नहीं ।। जब बीरोने आँखें बन्द कीं तो देखा कि, सब समुद्रके किनारे खड़े हैं ।।

सो पुनि गई जहाँ रघुनाथा ❀ जाय कमलपद नायसि माथा
नानाभाँति विनय तेहि कीन्हीं ❀ अनपायिनी भक्ति प्रभु दीन्हीं

उधर वह भी श्रीरामचन्द्रजीके पास पहुँची और जाकर उनके चरणकमलोंमें शिर नवाया। अनेक भाँतिसे विनय किया तो श्रीरामचन्द्रजीने उसको अपनी दुर्लभ भक्ति प्रदान की ।।

दोहा—बदरी बनकहँ सो गई, प्रभु आज्ञा धरि सीस ।
उर धरि रामचरनजुग, जे बंदत अज ईस ।। २६ ।।

वह रामजीकी आज्ञा शिरोधार्य कर बदरीबनको चली गयी। और अपने हृदयमें रामजीके दोनों चरणों को जिनकी इन्द्रादिक देवता बन्दना करते हैं, धारणकर लिए ।।२६।।

इहाँ बिचारहिं कपि मनमाहीं ❀ बीती अवधि काज कछु नाहीं
सब मिलि कहहिं परस्पर बाता ❀ बिनु सुधि लिये करब का भ्राता

यहाँ सब बंदर मनमें विचार करने लगे कि समय बीत गया, काम कुछ नहीं हुआ ।। सब आपसमें मिलकर बातें करने लगे कि हे भाइयो ! सुधि लिए बिना हम सब चलकर क्या करेंगे ।।

कह अंगद लोचन भरि बारी ❀ दुहुँ प्रकार भइ मृत्यु हमारी
इहाँ न सुधि सीताकर पाई ❀ वहाँ गये मारिहिं कपिराई

तब अंगदने नेत्रोंमें जल भरकर कहा कि हमारी दोनों ही प्रकारसे मृत्यु हुई। यहां तो सीताजी का पता नहीं लगा और वहां जाने पर कपिराज सुग्रीव हमें मार डालेंगे ॥ ४ ॥

पिता बधे पर मारत मोहीं ❀ राखा राम निहोर न ओहीं
पुनि पुनि अंगद कह सब पाहीं ❀ मरन भयो अब संसय नाहीं

वह तो मुझे पिताके मरने पर ही मार डालता; किन्तु श्रीरामचन्द्रजी ने मेरी रक्षा की। अंगद बारम्बार सबसे यही कहते थे कि मरण निश्चित है और हमारे मरने में कुछ भी शंका नहीं है ॥

अंगदबचन सुनत कपि बीरा ❀ बोलि न सकहिं नयन बह नीरा
छिन इक सोक मगन ह्वै गयऊ ❀ पुनि अस बचन कहत सब भयऊ

अङ्गद की बात सुनकर वे वीर बानर कुछ बोल न सके और आँखोंसे आँसू बहाने लगे। क्षण भर शोक में डूब गए और फिर सब ऐसा बचन कहने लगे ॥ ८ ॥

हम सीताकी बिनु सुधि लीने ❀ फिरब न सुनु युवराज प्रबीने
अस कहि लवनसिंधुतट जाई ❀ बैठे कपि सब दर्भ डसाई

हे प्रवीण युवराज! सुनो, सीताजीकी सुधि लिए बिना हम नहीं लौटेंगे, ऐसा कहकर सब समुद्र के किनारे जाकर कुशा बिछा कर बैठ गये ॥ १० ॥

जांबवंत अंगद दुख देखी ❀ कही कथा उपदेस बिसेषी
तात राम कहुँ नर जनि मानहु ❀ निर्गुन ब्रह्म अजित अज जानहु

तब जांबवन्त अङ्गदको दुःखी देखकर विशेष उपदेशपूर्ण कथा कहने लगा ॥ ११ ॥ हे तात! रामजी को मनुष्य न जानो, वे अजय, निर्गुण, ब्रह्म और अजन्मा हैं ॥ १२ ॥

हम सब सेवक अति बड़भागी ❀ संतत सगुन ब्रह्म अनुरागी

और हम सब बड़े भाग्यसे उनके सेवक हैं जो कि निरंतर उन सगुण ब्रह्म का अनुराग करते हैं ॥

दोहा–निज इच्छा अवतरेउ प्रभु, सुर द्विज गो महि लागि।
सगुन उपासन करहिं सब, मोक्ष सकल सुख त्यागि ॥ २७ ॥

वे प्रभु अपनी इच्छा से ही देवता, गौ, ब्राह्मण तथा पृथ्वी के हितार्थ अवतार लिए हैं। जो ऐसे सगुण ब्रह्म की उपासना करते रहते हैं वे सब चारों पदार्थ मोक्ष तकको त्याग देते हैं ॥२७॥

यहि बिधि कहत कथा बहुभाँती ❀ गिरि कंदरा सुना संपाती
बाहिर होइ देखे सब कीसा ❀ मोहिं अहार दीन्ह जगदीसा

इस प्रकार सब बंदर बहुत कथायें कह रहे थे कि पहाड़ की एक गुफा से सम्पाती ने सुना। तब वह बाहर आकर सब बंदरों को देखा तो सोचा कि आज जगदीश ने मुझे आहार दिया है ॥

आजु सबन्हकहुँ भक्षण करऊँ ❀ दिन बहु गे अहार बिनु मरऊँ
कबहुँ न मिलि भरि उदर अहारा❀ आज दीन्ह बिधि एकहिं बारा

मैं आज ही इन सबको भक्षण कर लूंगा, बहुत दिन बीते कि भोजन बिना प्राण निकल रहे हैं। परन्तु आज बिधाता ने एक ही बार में बहुत सा भोजन दे दिया ॥ ४ ॥

डरपे गृध्रबचन सुनि काना ❀ अब भा मरन सत्य हम जाना
कपि सब उठे गृध्रकहँ देखी ❀ जांबवंत मन सोच बिसेखी

उस गिद्धकी बातको सुनकर सब बन्दर डर गए कि, अब हमने जाना कि निश्चय ही मौत हुई। उस गिद्धको देखकर सब बन्दर उठ खड़े हुए और जाम्बवन्त बड़े चिन्तित हुए ॥

कह विचार अंगद मनमाहीं ❀ धन्य जटायु सरिस कोउ नाहीं
रामकाज कारन तनु त्यागी ❀ हरिपुर गयउ परम बड़भागी

तब अंगद ने मन में विचारकर कहा कि जटायु के समान धन्य कोई नहीं है कि जो श्रीरामजी के कार्य में अपना शरीर छोड़कर वह बड़भागी बैंकुण्ठ को चला गया ॥ ८ ॥

जो रघुबीर चरनचित लावै ❀ तिहिं सम धन्य न आन कहावै

जो रामचन्द्रजीके चरणोंमें चित्तको लगावे उसके समान धन्य और कोई नहीं कहलाता ॥९॥

सुनि खग हर्षसोकयुत बानी ❀ आवा निकट कपिन्ह भय मानी
ताहि देखि सब चले पराई ❀ ठाढ़ कीन्ह तेहि सपथ दिवाई
तिन्हहिं अभय करि पूछेसि जाई ❀ कथा सकल तिन्ह ताहि सुनाई

अङ्गदकी यह हर्ष और शोकसे भरी बात सुन सम्पाती निकट आया तो सब बन्दर डर गए। तब उनको निर्भय करके जाकर पूछा तो उन्होंने सब कथा कह सुनाई ॥ ११ ॥
उन्हें अभयकर जाकर पूछा कि कौन जटायु ? तब बन्दरोंने उसकी सारी कथा सुनाई ॥१२॥

सुनि सम्पाति बन्धुकी करनी ❀ रघुपति महिमा बहुबिधि बरनी

जब सम्पातीने भाई की वह करनी सुनी तो अनेक प्रकारसे श्रीरामचन्द्रजीका यशोगान किया ॥

दोहा–मोहिं लै चलहु सिंधु तट, देउँ तिलांजलि ताहि।
बचन सहाय करब मैं, पैहहु खोजत जाहि ॥ २८ ॥

फिर कहा कि मुझे समुद्रके किनारे ले चलो, मैं अपने भाई जटायुको तिलांजलि दूंगा। पश्चात् बाणी द्वारा तुम्हारी ऐसी सहायता करूँगा कि जिससे सीताको पा जाओगे ॥ २८ ॥

अनुजक्रिया करि सागरतीरा ❀ कह निजकथा सुनहु कपि बीरा
हम दोउ बंधु प्रथम तरुनाई ❀ गगन गये रबिनिकट उड़ाई

सम्पाती अपने छोटे भाई जटायुकी क्रिया समुद्र तटपर कर कहने लगा कि हे मतिधीर ! सुनो, हम दोनों भाई पहले युवावस्था में उड़कर सूर्य के पास तक चले गये ॥ २ ॥

तेज न सहिसक सो फिरि आवा ❀ मैं अभिमानि रबिहिं नियरावा
जरे पंख रवितेज अपारा ❀ परेउँ भूमि करि घोरचिकारा

परन्तु सूर्यका तेज न सह सका इससे जटायु तो लौट आया किन्तु मैं अभिमानी सूर्य के निकट तक चला गया जिससे मेरे पंख जल गए और मैं घोर चिक्कार कर पृथ्वी पर गिर पड़ा ॥

मुनि इक नाम चन्द्रमा ओही ❀ लागी दया देखि करि मोही
बहुप्रकार तिन्ह ज्ञान सिखावा ❀ देहजनित अभिमान छुड़ावा

एक चन्द्रमा—नामक मुनि थे जिन्होंने मुझको देखकर दया की और बहुत प्रकार से ज्ञान सिखाया जिससे मेरा शरीराभिमान दूर हुआ ।। ६ ।।

त्रेता ब्रह्म मनुजतनु धरिहैं ❀ तासु नारि निसिचरपति हरिहैं
तासु खोज पठउब प्रभु दूता ❀ तिन्हहिं मिले तुम होब पुनीता

उन्होंने कहा था कि त्रेता में परमात्मा मनुष्य का रूप धारण करेंगे और उनकी स्त्रीको रावण हरेगा ।। तब उसको खोजने के लिए भगवान् दूत भेजेंगे जिनसे मिलकर तुम पवित्र होओगे ।।

जमिहहिं पंख करसि जनि चिन्ता ❀ तिन्हहिं दिखाइ देव तैं सीता
यह कहि मुनि निज आस्रम गयऊ ❀ तिहि दिन हृदय ज्ञान कछु भयऊ

तुम्हारे पंख जमेंगे चिन्ता न करो, तुम उन्हें सीताको दिखा देना ।। ९ ।। यह कहकर मुनीश्वर अपने आश्रमको गए और उसी समय मेरे मनमें कुछ ज्ञान हुआ ।। १० ।।

निशिदिन मग जोवत दिन भरऊँ ❀ सदा रामको सुमिरन करऊँ

रात दिन रास्ता देखते ही दिन बीता और सर्वदा रामचन्द्रजीका ही स्मरण करता रहा ।।११।।

मुनिकी गिरा सत्य भइ आजू ❀ सुनि मम बचन करहु प्रभुकाजू
गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका ❀ तहँ रह रावन सहज असंका

मुनिकी वाणी आज सत्य हुई, मेरी बात सुनकर प्रभुका कार्य करो ।।१२।। त्रिकूट पर्वत पर लंका नगरी बसी हुई है, जहाँ सहज ही निःशंक भावसे रावण रहता है ।। १३ ।।

तहाँ असोक वाटिका अहई ❀ सीता बैठि सोचरत अहई

वहाँ एक अशोक उपवन है, जिसमें सीताजी बैठी हुई चिन्ता कर रही हैं ।। १४ ।।

दोहा—मैं देखौं तुव नाहिंन, गीधहिं दृष्टि अपार ।
बूढ़ भयउँ नतु करतेउँ, कछुक सहाय तुम्हार ।। २९ ।।

मैं तो देख रहा हूँ, पर तुम नहीं देखते हो क्योंकि गिद्धकी दृष्टि अपार होती है । अब मैं बुड्ढा हो गया हूँ, नहीं तो तुम्हारी कुछ और सहायता करता ।। २९ ।।

जो लाँघइ सतयोजन सागर ❀ करै सो रामकाज मतिआगर
जो कोइ करै रामकर काजू ❀ तेहि सम धन्य आन नहिं आजू

जो कोई सौ योजन अर्थात् चार सौ कोस समुद्रको लाँघ जावे वही बुद्धिमान् रामजीका कार्य करेगा और जो करेगा उसके समान धन्य आज कोई दूसरा न होगा ।। २ ।।

मोहिं बिलोकि धरहु मन धीरा ❀ रामकृपा कस भयउ सरीरा
पापिउ जाकर नाम सुमिरहीं ❀ अतिअपार भवसागर तरहीं

मुझे देखो कि श्रीरामजीकी कृपासे अब मेरा शरीर कैसा हो गया, सो धैर्य धरो ।।३।। भला जिनका नाम लेनें से पापी अति अपार भवसागर को पार कर जाते हैं ।। ४ ।।

तासु दूत तुम तजि कदराई ❀ राम हृदय धरि करहु उपाई
अस कहि उमा गृध्र जब गयऊ ❀ सबके मन अति बिस्मय भयऊ

श्रीरामचन्द्रजी को हृदय में धारण कर भला उसके दूत होकर तुम मन में कायरता करते हो अरे, उपाय करो। ऐसा कहकर सम्पाती चला गया, तब सबके मनमें अत्यन्त ही बिस्मय हुआ ॥

निज निज बल सब काहू भाखा ❀ पार जानकर संसय राखा
जरठ भयउँ अब कहइ ऋछेसा ❀ नहिं तनु रहा प्रथम बललेसा

अपना-अपना बल तो सबने कहा; किन्तु पार जानेमें संशय ही रहा। जाम्बवन्तने कहा कि मैं बूढ़ा हो गया, जिससे शरीर में प्रथम बलका लेश भी न रहा ॥ ८ ॥

जबहिं त्रिविक्रम भयउ खरारी ❀ तब मैं तरुण रहा बलभारी

जब भगवानने त्रिविक्रम रूप धारण किया अर्थात् वामन रूप धारण किया था तब मैं युवा रहा और मुझमें बड़ा बल था ॥ ९ ॥

दोहा—बलि बाँधत प्रभु बाढ़ेउ, सो तनु बरनि न जाय।
उभय घरीमहँ दीन्ह मैं, सात प्रदक्षिण धाय ॥ ३० ॥

जब प्रभु राजा बलि को बाँधने लगे तो ऐसे बढ़े कि उनके उस शरीर का वर्णन नहीं किया जाता है, दो ही घड़ी में मैंने उनकी सात प्रदक्षिणा दौड़कर की थी ॥ ३० ॥

अंगद कहइ जाउँ मैं पारा ❀ जिय संसय कछु फिरती बारा
जांबवंत कह तुम सब लायक ❀ किमि पठवउँ सबहीकर नायक

अङ्गदने कहा, मैं जानेको तो जा सकता हूँ; किन्तु लौटने में कुछ संशय है ॥ जाम्बवन्तने कहा—हाँ! तुम अवश्य ही सब योग्य हो; किन्तु अपने सेनापतिको किस प्रकार भेजूँ? ॥

कहा ऋच्छपति सुनु हनुमाना ❀ का चुप साधि रहा बलवाना
पवनतनय बल पवन समाना ❀ बुधिविवेक विज्ञान निधाना

जाम्बवन्तने कहा—हे हनुमान्! सुनो। हे वीर! तुम चुप साधकर क्यों बैठे हो? वायु-पुत्र का बल वायु के ही समान है और तुम बुद्धि तथा ज्ञान-विज्ञान के भी निधान हो ॥४॥

कौन सो काज कठिन जगमाहीं ❀ जो नहिं तात होय तुम पाहीं
रामकाज लगि तव अवतारा ❀ सुनि कपि भयउ पर्वताकारा

हे तात! ऐसा कौन सा कठिन कार्य है कि जो तुमसे न हो सके, फिर रामचन्द्र के कार्य के लिए ही तो तुम्हारा अवतार हुआ है, यह सुनते ही हनुमान्‌जी पर्वतके समान बढ़ गए ॥

कनक बरन तनु तेज बिराजा ❀ मानहुँ अपर गिरिन्ह कर राजा
सिंहनाद करि बारहिं बारा ❀ लीलहि लाँघौं जलनिधि खारा

उस स्वर्ण शरीरमें ऐसो तेज उत्पन्न हो गया कि मानो समस्त पहाड़के राजा यही हैं। उन्होंने बारम्बार सिंहनाद करके कहा-कहो तो मैं इस खारे समुद्र को लीला से ही लाँघ जाऊँ।

सहित सहाय रावनहिं मारी ❀ आनौं इहाँ त्रिकूट उपारी
जांबवंत मैं पूछौं तोहीं ❀ उचित सिखावन दीजै मोहीं

और रावण को उसके सहायकों सहित मार कर त्रिकूट पर्वत को यहां ले आऊँ। हे जाम्बवन्त ! मैं तुमसे पूछता हूँ, जो उचित हो वह शिक्षा मुझे देना ॥ १० ॥

इतना करहु तात तुम जाई ❁ सीतहिं देखि कहौ सुधि आई
तब निजभुजबल्ल राजिवनैना ❁ कौतुक लागि संग कपिसैना

जम्बवन्त ने कहा—हे तात ! तुम जाकर इतना ही करो कि सीता को देख उनकी सुधि आकर कहो ॥ रघुनाथजी अपने भुजबलसे कौतुक ही सब बानरी सेना को लेकर जा चढ़ेंगे ॥

छंद—कपिसेन संग सँहारि निसिचर राम सीतहिं आनिहैं।
त्रयलोक्यपावन सुजस सुर मुनि नारदादि बखानिहैं ॥
जो सुनत गावत कहत समुझत परमपद नर पावहीं।
रघुबीरपद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावहीं ॥ ३ ॥

बानरोंकी सेना साथ लेकर श्रीरामचन्द्रजी राक्षसोंको मारकर सीताजी को ले आवेंगे और देवता लोग उनके इस त्रैलोक्य-पावन सुन्दर यशका बखान करेंगे। जिसे सुन समझ और गाकर मनुष्य मोक्ष के भागी होवेंगे। तुलसीदासजी कहते हैं कि आगे चलकर हम इसीका गान करेंगे ॥

दोहा—भवभेषज रघुनाथ जस, सुनैं जो नर अरु नारि।
तिनकर सकल मनोरथ, सिद्ध करहिं त्रिपुरारि ॥३१॥

श्रीरामचन्द्रजीका यह यश भवबन्धनसे छुड़ानेकी एक औषधि है, जो नर-नारी इसको सुनेंगे उनके सम्पूर्ण मनोरथों को श्रीमहादेवजी पूर्ण करेंगे ॥ ३१ ॥

सो०—नीलोत्पलतनु स्याम, कामकोटि सोभा अधिक।
सुनिय तासु गुनग्राम, जासु नाम अघखगबधिक ॥ ३ ॥

उन भगवान्का शरीर नीले कमलके समान है और करोड़ों कामदेवकी शोभासे अधिक शोभायमान है, जिनका नाम पापरूपी पक्षीको मारनेके लिए बधिक रूप है, उनके गुणानुवादको अवश्य सुनिये ॥ ३ ॥

॥ इति किष्किन्धाकाण्ड समाप्त ॥

श्रीगणेशाय नमः

श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजी कृत–



सुन्दरकाण्ड

(सर्व–सञ्जीवनी टीका सहित)

।। मङ्गलाचरण ।।

श्लोक–शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम् ।
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं
वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ।।१।।

जो सर्वदा शान्त, शुद्ध, नित्य, सनातन और प्रत्यक्षादिक प्रमाणोंसे रहित, पापरहित मुक्ति और शान्तिके देनेवाले हैं तथा जो ब्रह्मा, शिव और शेषजीके द्वारा सेवित और वेदान्त आदिक ग्रन्थोंके जानने-योग्य, सर्वव्यापी एवं महा सामर्थ्यवान् और देवताओंके गुरु, मायासे मनुष्य रूप धारण किए, कृपाके निधान, रघुकुलमें श्रेष्ठ, समस्त संसारके ईश्वर और जो राजाओंमें शिरोमणि तथा जिनका 'राम' ऐसा नाम है उन भगवान्को मैं प्रणाम करता हूँ ।। १ ।।

नान्यास्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये सत्यं वदामि च भवानखिलांतरात्मा
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुंगव निर्भरां मे कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च

हे रामजी ! यह मैं सत्य कहता हूँ, कि मेरे मनमें और कोई इच्छा नहीं अर्थात् यह मैं निष्काम भावसे कह रहा हूँ कि आप घट-घटके बासी और सारे संसारकी अन्तरात्मा हैं। हे रघुपुंगव ! मुझे अपनी पूर्ण भक्ति प्रदान कीजिए और ऐसा वर दीजिए कि मेरा मन काम-क्रोध आदि दोषोंसे सर्वदा रहित हो जावे ।। २ ।।

अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि

अब मैं उन अतुलित बलके धाम, जिनका शरीर सुवर्णके समान देदीप्यमान है तथा जो राक्षसरूपी बनको अग्निके समान नाश करने वाले तथा जो ज्ञानियोंमें प्रथम गिने जाते हैं। जो समस्त गुणोंकी खानि, बानरो के अधीश्वर (सेनापति) तथा श्रीरामचन्द्रजीके श्रेष्ठ दूत, वायुके पुत्र हनुमान्‌जी हैं उनको नमस्कार करता हूँ ।।३।।

जांबवंत के बचन सुहाये ❁ सुनि हनुमान हृदय अति भाये
तब लगि मोहिं परेखउ भाई ❁ सहि दुख कंद मूल फल खाई

तब जाम्बवन्तजीके सुहावने वचन सुनकर हनुमान्‌जीके मनको बहुत अच्छा लगा ।। उन्होंने कहा, हे भाइयों ! तब तक दुःख सहकर और कन्द मूल फल खाकर मेरी प्रतीक्षा करना ।।

जब लगि आवौं सीतहिं देखी ❁ होइ काज मन हर्ष बिसेषी
अस कहि नाइ सबनकहँ माथा ❁ चलेउ हर्षि हिय धरि रघुनाथा

जबतक कि सीताजीको देखकर आऊं, यह कार्य हो जाय तो मन प्रसन्न हो, ऐसे कहकर सबको शिर नवा हृदयमें रामजीका स्मरण करते हुए प्रसन्नता से चले ।।४।।

सिंधुतीर इक सुंदर भूधर ❁ कौतुक कूदि चढ़े तेहि ऊपर
बार-बार रघुबीर सँभारी ❁ तरकेउ पवनतनय बलभारी

समुद्र के किनारे एक सुन्दर पर्वत था उसपर कौतुकसे ही कूदके चढ़ गये ।।५।। और बारम्बार रामजीका ध्यान करके महाबली हनुमान्‌जी बड़े वेगसे उछले ।।६।।

जेहि गिरि चरन देइ हनुमंता ❁ सो चलि गयउ पताल तुरंता
जिमि अमोघ रघुपतिके बाना ❁ ताही भाँति चला हनुमाना

जिस पर्वतपर हनुमान्‌जी चरण धरकर कूदे थे, वह तुरन्त ही पातालको चला गया ।।७।। फिर तो जैसे रामजीका अमोघ बाण जाता है, उसी भांतिसे हनुमान्‌जी चले ।।८।।

जलनिधि रघुपति दूत बिचारी ❁ कह मैनाक होउ श्रमहारी

तब समुद्रने रामजीका दूत विचारकर कहा-हे मैनाक! तुम इनके श्रमको हरण करो ।।९।।

सो०—सिंधुबचन सुनि कान, तुरत उठेउ मैनाक तब ।
कपिकहँ कीन्ह प्रनाम, पुलकित तनु कर जोरि करि ।। १ ।।

फिर तो समुद्र का वह वचन कानसे सुनकर मैनाक पर्वत तुरंत समुद्र से ऊपर उठा और बारम्बार हाथ जोड़कर हनुमान्‌जी की जुहार करने लगा अर्थात् प्रणाम किया ।। १ ।।

दो०—हनूमान तेहिं परसिकर, पुनि तेहिं कीन्ह प्रनाम ।
रामकाज कीन्हें बिना, मोहिं कहाँ बिश्राम ।। १ ।।

उसके उत्तर में हनुमान् जी भी उसपर हाथ फेरकर बारम्बार प्रणाम करने लगे और बोले कि श्रीरामचन्द्रजी का कार्य किए बिना मुझे विश्राम कहां है ।। १ ।।

जात पवनसुत देवन देखा ❁ जानाचह बल बुद्धि बिसेषा
सुरसा नाम अहिनकी माता ❁ पठयहु आइ कही तेहिं बाता

उधर जब हनुमान्जी को जाते हुये देवताओं ने देखा तो वे उनके बलबुद्धि की विशेषता जानने की इच्छा की ।।१।। और सुरसा नाम सर्पोंकी माताको भेजा जिसने आकर यह बात कही ।।२।।

आजु सुरन मोहिं दीन्ह अहारा ❀ सुनि हँसि बोले पवनकुमारा
रामकाज करि फिरि मैं आवौं ❀ सीताकर सुधि प्रभुहिं सुनावौं

आज देवताओंने मुझे भोजन दिया, यह सुनकर हनुमान् जी हँसकर बोले ।।३।। अभी नहीं, जब मैं रामजी का कार्य करके लौटूं और सीताजी की सुधि प्रभु को सुना आऊँ ।।४।।

तब तव बदन पैठिहौं आई ❀ सत्य कहौं मोहिं जान दे माई
कवनिहुँ जतन देइ नहिं जाना ❀ ग्रससि न मोहिं कहा हनुमाना

हे माता ! तब तेरे मुखमें आकर प्रवेश करूँगा, यह मैं सत्य कहता हूँ, मुझे जाने दे। परन्तु वह किसी भी उपाय से जाने नहीं देती, तब हनुमानजी ने कहा, मुझे ग्रस क्यों नहीं लेती ।।

जोजनभरि तेहिं बदन पसारा ❀ कपि तनु कीन्ह दुगुन विस्तारा
सोरह जोजन मुख तेहि ठयऊ ❀ तुरत पवनसुत बत्तिस भयऊ

तब उसने एक योजन पर्यन्त अपना मुख फैलाया तो हनुमान्जीने उससे दूना शरीरकर दिया तब उसने सोलह योजन मुख फैलाया तो हनुमान्जी तुरन्त ही बत्तीस योजन के हो गए ।।

जस जस सुरसा बदन बढ़ावा ❀ तासु दुगुन कपिरूप दिखावा
सतजोजन तेइ आनन कीन्हा ❀ अतिलघु रूप पवनसुत लीन्हा

जैसा-जैसा सुरसा ने मुख बढ़ाया उससे दूना रूप हनुमान्जी ने दिखा दिया । जब उसने सौ योजनका मुख किया तब हनुमान्जीने बहुत छोटा रूप धारण कर लिया ।। १० ।।

बदन पैठि पुनि बाहर आवा ❀ माँगी बिदा ताहि सिर नावा
मोहिं सुरन्ह जेहि लागि पठावा ❀ बुधि बल मर्म तोर मैं पावा

सुरसा के मुख में घुस फिर बाहर आये और बिदा माँगी, तब सुरसा बोली कि देवताओं ने मुझे जिसलिए भेजा था सो तुम्हारी बुद्धि और बल-पराक्रमका भेद मैंने पा लिया ।।१२।।

दोहा–रामकाज सब करिहहु, तुम बलबुद्धिनिधान ।
आसिष दै सुरसा चली, हर्षि चले हनुमान ।। २ ।।

रामजी का सब कार्य करोगे, तुम बलवान् और बुद्धि-निधान हो, यह आशीर्वाद देकर सुरसा चली गई, तब हनुमान्जी भी प्रसन्न होकर चले ।। २ ।।

निसिचर एक सिंधुमहँ रहई ❀ करि माया नभ के खग गहई
जीव जंतु जे गगन उड़ाहीं ❀ जल बिलोकि तिनकी परिछाहीं

एक राक्षसी समुद्र में रहती थी, वह छल करके आकाश के पक्षियों को पकड़ लेती थी । जीव जन्तु जो आकाश में उड़ते थे जल-में उनकी छाया देखकर ।।

गहै छाँह सक सो न उड़ाई ❀ इहिविधि सदा गगनचर खाई
सोइ छल हनूमानतें कीन्हा ❀ तासु कपट कपि तुरतहिं चीन्हा

जब वह छाया पकड़ ले तो वह उड़ न सके, इस प्रकार वह सर्वदा ही पक्षियों को खाती थी। उसी ने हनुमान्‌जी से छल किया जिसका कपट हनुमान्‌जी ने तुरन्त पहचान लिया ॥४॥

ताहि मारि मारुतसुत बीरा ❋ बारिधि पार गयउ मतिधीरा
तहाँ जाय देखी बनसोभा ❋ गुंजत चंचरीक मधुलोभा

उसको चरण-प्रहारों से मारकर पवन-पुत्र बीर मतिधीर हनुमान्‌जी समुद्र के पार पहुँचे। वहाँ जाकर वन की शोभा देखे कि जिसमें मधु के लोभ से भ्रमर गुंजार कर रहे थे ॥६॥

नाना तरु फल फूल सुहाये ❋ खगमृग वृन्द देखि मन भाये
सैल बिसाल देखि इक आगे ❋ तापर कूदि चढ़ेउ भय त्यागे

वहाँ अनेक वृक्ष फल-फूलों से शोभायमान थे और पक्षी, मृग आदि पशुओं के झुण्ड देख प्यारे लगते थे। वहाँ एक बड़ा पर्वत था। जिसपर हनुमान्‌जी कूदकर निर्भय हो चढ़ गये॥

उमा न कछु कपिकी अधिकाई ❋ प्रभु प्रताप जो कालहिं खाई

शिवजी कहते हैं कि हे पार्वती ! यह कुछ कपि की बड़ाई नहीं है, किन्तु यह भगवान् श्रीरामचन्द्रजी का प्रताप है जो काल को भी भक्षण कर सकता है ॥ १० ॥

गिरि पर चढ़ि लंका तेहि देखी ❋ कहि न जाय अति दुर्ग विसेषी
अति उतंग जलनिधि चहुँ पासा ❋ कनककोटकर परम प्रकासा

पर्वत पर चढ़कर हनुमान्‌जी ने लंकापुरी देखी कि बहुत ऊँचा दुर्ग बना हुआ था। उसके चारों ओर समुद्र था, जिसपर सोने के किले और कँगूरे अत्यन्त प्रकाशमान थे ॥

छन्द–कनककोट विचित्रमनिकृत सुन्दरायत अतिघना।
चौहट्ट हाट सुघट्ट बीथी चारुपुर बहुविधि बना ॥
गजबाजिखच्चर निकर पदचर रथबरूथनि को गनै।
बहुरूप निसिचरजूथ अतिबल सेन बरनत नहिं बनै ॥१॥

सुवर्ण का कोट अनेक रंग की मणियों से जड़ा हुआ बहुत ही लम्बा-चौड़ा शोभायमान था। चौराहा, बाजार, सुन्दर मार्ग और गलियों से नगर बहुत भाँति सुन्दर बना हुआ था। हाथी, घोड़े और खच्चरो का समूह तथा रथोंके समूह कौन गिन सकता है ? अनेक रूपवाले महाबली राक्षसों के झुण्ड और सोना का वर्णन नहीं किया जाता ॥ १ ॥

बन बाग उपवन बाटिका सर कूप वापी सोहहीं।
नर नाग सुर गंधर्वकन्यारूप मुनिमन मोहहीं ॥
कहुँ मल्ल देहबिसाल सैल समान अतिबल गर्जहीं।
नाना अखारन्ह भिरहिं बहुविधि एक एकन्हि तर्जहीं ॥२॥

जहाँ वन, बाग, बगीचा, फुलवारी, सरोवर, कुआँ, बावली शोभायमान हैं और मनुष्य, नाग, देवता, गंधर्व इनकी कन्यायें अपने रूपसे मुनियोके मन को भी मोहित करती हैं तथा जहाँ अत्यन्त बलवान् पर्वतके समान बड़ी देहवाले मल्ल गरजते और अखाड़ोंमें अनेक भाँति से लड़ते हुए एक दूसरे को ललकारते अर्थात् डपटते हैं ॥

करि जतन भट कोटिन्ह विकटतनु नगर चहुँ दिसि रक्षहीं।
कहुँ महिष मानुष धेनु खर अज खल निसाचर भक्षहीं ॥
यहि लागि तुलसीदास इनकी कथा संक्षेपहिं कही।
रघुबीरसरतीरथ सरीरन्हि त्यागि गति पैहैं सही ॥३॥

भयङ्कर शरीरवाले अनेक योद्धा यत्नपूर्वक नगर की चारों तरफ से रक्षा करते हैं, कहीं पर भैंसे, मनुष्य, गौ, गधे और बकरों को, दुष्ट राक्षस भक्षण करते हैं, इसी कारण तुलसीदासजी ने संक्षेपमें ही इनकी कथा कही है कि अब ये राक्षस श्रीरामचन्द्रजीके बाणरूपी तीर्थमें शरीर त्यागकर अवश्य ही उत्तम गतिको प्राप्त होंगे ॥३॥

दोहा—पुर रखवारे देखि बहु, कपि मन कीन्ह बिचार।
अतिलघु रूप धरौं निसि, नगर करौं पैसार ॥ ३ ॥

लंकापुरीके रखवाले बहुत हैं, यह देखकर हनुमान्‌जीने मनमें विचार किया कि बहुत छोटा-सा रूप धरूँ और रात्रिके समय नगरमें प्रवेश करूँ ॥ ३ ॥

मसकसमान रूप कपि धरी ❀ लंका चले सुमिर नरहरी
नाम लंकिनी एक निसिचरी ❀ सो कह चलेसि मोहिं निन्दरी

मच्छरके समान रूप धरकर हनुमान्‌जीने नरहरि का स्मरण कर लंकामें प्रवेश किया ॥१॥ तब लंकिनी नामक एक राक्षसीने कहा कि, मेरा निरादर करके कहाँ जा रहा है ? ॥२॥

जानेसि नाहिं मरम सठ मोरा ❀ मोर अहार लंककर चोरा
मुष्टिक एक ताहि कपि हनी ❀ रुधिर बमत धरनी ठनमनी

रे शठ ! तू मेरा भेद नहीं जानता है कि लंका का चोर ही मेरा आहार है ॥ ३ ॥ हनुमान्‌जी ने उसको एक घूसा मारा तो वह रक्त बमन करती हुई पृथ्वी पर गिर पड़ी ॥

पुनि संभारि उठी सो लंका ❀ जोरि पानिकर विनय ससंका
जब रावनहिं ब्रह्म वर दीन्हा ❀ चलत विरंचि कहा मोहिं चीन्हा

परन्तु फिर वह लंकिनी सँभलकर उठी और हाथ जोड़ डरके मारे प्रार्थना करने लगी कि जब ब्रह्मा ने रावण को वर दिया था, तब चलते समय मुझे यह पहचान बतला दी थी कि ॥

विकल होसि जब कपिके मारे ❀ तब जानेसि निसिचर संहारे
तात मोर अतिपुन्य बहूता ❀ देखेउँ नयन रामकर दूता

जब बानर की मार से तू व्याकुल होगी तब जान लेना कि अब राक्षस मारे जायेंगे। हे तात ! मेरा बड़ा भारी पुण्य है, जो मैंने अपने नेत्रों से श्रीरामचन्द्रजी के दूत को देखा ॥

दोहा—तात स्वर्ग अपवर्गसुख, धरिय तुला इक अंग।
तुलै न ताहि सकल मिलि, जो सुख लव सत्संग ॥ ४ ॥

हे तात ! स्वर्ग और मोक्ष के सुख को जो तराजू के एक पलड़े पर रक्खे और दूसरे में सत्संग का सुख रक्खे तो सब मिलकर भी सत्संग के सुख के समान नहीं हो सकता ॥ ४ ॥

प्रविसि नगर कीजै सब काजा ❋ हृदय राखि कोसलपुर राजा
गरल सुधा रिपु करै मिताई ❋ गोपद सिंधु अनल सितलाई

नगरमें प्रवेश कर श्रीरामचन्द्रजी का हृदयमें स्मरण कर सब कार्य करो। ऐसा करने से विष अमृतके समान, शत्रु मित्रके समान, समुद्र गौ के खुरके समान और अग्नि शीतल हो जाती है ।।

गरुअ सुमेरु रेनुसम ताही ❋ राम कृपा करि चितवहिं जाहीं
अतिलघु रूप धरेउ हनुमाना ❋ पैठेउ नगर सुमिरि भगवाना

भारी सुमेरु पर्वत उसको रेणुके समान हो जाता है जिसको श्रीरामचन्द्रजी कृपा-दृष्टिसे देखते हैं। तब बहुत छोटा सा रूप धर और भगवान्‌का स्मरण करके हनुमान्‌जी नगरमें घुसे ।।

मंदिर मंदिर प्रति कर सोधा ❋ देखे जहँ तहँ अगनित जोधा
गयउ दसानन मंदिरमाहीं ❋ अति विचित्र कहि जात सो नाहीं

एक-एक घर को ढूंढ़ डाला, जहाँ-तहाँ अगणित योद्धाओं को देखा। रावणके मन्दिर में गए तो वह राजमन्दिर बहुत ही रमणीय था जिसका वर्णन नहीं हो सकता ।। ६ ।।

सयन किये देखा कपि तेही ❋ मंदिर महँ न दीख बैदेही

वहाँ हनुमान्‌जीने रावणको तो सोते हुए देखा परन्तु उस मन्दिरमें सीताको नहीं देखा ।।

भवन एक पुनि दीख सुहावा ❋ हरिमंदिर तहँ भिन्न बनावा
रामनाम अंकित गृह सोहा ❋ बरनि न जाय देखि मन मोहा

फिर एक भवन देखा जहाँ हरिमन्दिर अलग ही बना हुआ था। उस मन्दिर पर रामजीके नाम लिखे थे जिससे उसकी शोभा कही नहीं जाती, जिसे देख कर मन मोहित हो जाता था ।।

दोहा—राम नाम अंकित गृह, सोभा बरनि न जाइ।
नव तुलसीके बृंद बहु, देखि हर्ष कपिराइ ।। ५ ।।

वह राम नामसे अंकित घर ऐसा शोभायमान था, जिसकी शोभा वर्णन नहीं की जा सकती ।। वहाँ नवीन तुलसी वृक्षके बहुतसे झुण्ड देखकर कपिराज हनुमान्‌जी बहुत प्रसन्न हुए ।। ५ ।।

लंका निसिचरनिकर निवासा ❋ इहाँ कहाँ सज्जनकर बासा
मनमहँ तर्क करन कपि लागे ❋ ताही समय बिभीषन जागे

लंका में निशाचर ही रहते हैं; यहाँ सज्जन का वास कहाँ? हनुमान्‌जी मन में ऐसा तर्क कर ही रहे थे कि उसी समय में विभीषण जाग उठे ।। २ ।।

राम नाम तेहि सुमिरन कीन्हा ❋ हृदय हर्ष कपि सज्जन चीन्हा
येहि सन हठि करिहौं पहिचानी ❋ साधुते होइ न कारजहानी

विभीषणने जागते ही राम नाम का स्मरण किया, तब सज्जन जान कर हनुमान्‌जी बहुत प्रसन्न हुए। तब इससे तो अवश्य ही पहचान करूँगा, क्योंकि सज्जन पुरुष से कार्य की हानि नहीं होती ।।

बिप्ररूप धरि बचन सुनावा ❋ सुनत बिभीषण उठि तहँ आवा
करि प्रनाम पूछी कुशलाई ❋ कहहु बिप्र निजकथा बुझाई

ब्राह्मण का रूप धर के वचन सुनाया तो सुनते ही विभीषण उठ कर वहाँ आए और प्रणाम करके कुशल पूछी और बोले कि हे विप्र ! अपनी कथा समझाकर कहो ॥ ६ ॥

की तुम हरिदासनमहँ कोई ❀ मोरे हृदय प्रीति अति होई
की तुम राम दीनअनुरागी ❀ आये मोहिं करन बड़भागी

क्या तुम भगवान्‌के दासोंमें से कोई हो ? तुम्हारे दर्शनसे मेरे मन में प्रेम उत्पन्न हो गया है। अथवा तुम दीन भक्तों पर प्रेम करनेवाले रामजी ही हो, जो मुझको कृतार्थ करने आये हो ॥

दोहा—तब हनुमंत कही सब, रामकथा निजनाम ।
सुनत जुगल तन पुलकि अति, मगन सुमिरि गुनग्राम ॥६॥

तब हनुमान्‌जीने सब राम-कथा कही और अपना नाम बताया । इस प्रकार कहते-सुनते दोनोंके शरीर अत्यन्त पुलकित हो गए और रामजी के गुण स्मरण करके प्रेममें मग्न हो गए ॥६॥

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी ❀ जिमि दसनन महँ जीभ बिचारी
तात कबहुँ मोहिं जानि अनाथा ❀ करिहहिं कृपा भानुकुलनाथा

विभीषण बोले—हे हनुमान्‌जी ! सुनो, हमारा यहाँ रहना ऐसा ही है, जैसे दाँतोंके बीचमें बिचारी जीभ रहती है । हे तात ! क्या मुझे अनाथ जान कर श्रीरामचन्द्रजी कभी दया भी करेंगे ॥

तामस तन कछु साधन नाहीं ❀ प्रीति न पदसरोज मनमाहीं
अब मोहिं भा भरोस हनुमंता ❀ बिनु हरिकृपा मिलहिं नहिं संता

तामसी शरीरसे कुछ साधन तो होता नहीं और न रामजीके चरण-कमलोंमें प्रीति ही है । परन्तु हे हनुमान् ! अब मुझको भरोसा हुआ, क्योंकि भगवान् की कृपाके बिना सन्त नहीं मिलते ॥

जो रघुबीर अनुग्रह कीन्हा ❀ तो तुम मोहिं दरस हठि दीन्हा
सुनहु विभीषन प्रभुकै रीती ❀ करहिं सदा सेवकपर प्रीती

यदि रघुनाथजीने कृपा की तभी तो आपने मुझको हठ करके दर्शन दिया है । यह सुनकर हनुमान्‌जी बोले-सुनो विभीषण ! प्रभु की यही रीति है कि वे सेवक पर सर्वदा ही प्रीति करते हैं ॥

कहहु कवन मैं परमकुलीना ❀ कपि चंचल सबही विधि हीना
प्रात लेइ जो नाम हमारा ❀ ता दिन ताहि न मिलै अहारा

कहो मैं कौन बड़ा कुलीन हूँ, मैं तो बानर चंचल और सभी से नीच हूँ ! प्रातःकालके समय जो हमारा नाम लेता है, उसको उस दिन भोजन नहीं मिलता ॥ ८ ॥

दोहा—अस मैं अधम सखा सुनु, मोहूँ पर रघुबीर ।
कीन्ही कृपा सुमिरि गुन, भरे विलोचन नीर ॥ ७ ॥

हे सखा ! मैं ऐसा नीच हूँ तो भी रघुनाथजी ने मुझपर कृपा की है । इस प्रकार रामजी के चरणों को स्मरण करके विभीषण के नेत्रों में जल भर आया ॥ ७ ॥

जानतहूँ अस स्वामि बिसारी ❀ ते नर काहे न होहिं दुखारी
इहिविधि कहत रामगुनग्रामा ❀ पावन श्रवन सुखद विश्रामा

यदि जान करके भी ऐसे स्वामी को भूल जायँ तो वे मनुष्य क्यों न दुखी हों ? इस प्रकार रामजी का गुण-समूह कहते हुए दोनोंने सन्त-समागम का श्रवणानन्दक विश्राम पाया ।।

पुनि सब कथा विभीषन कही ❀ जेहि विधि जनकसुता तहँ रही
तब हनुमंत कहा सुनु भ्राता ❀ देखा चहौं जानकीमाता

फिर सब कथा विभीषणने कही कि जिस प्रकार जानकी वहाँ रहीं । तब हनुमान्‌जीने कहा—सुनो भाई ! मैं जानकी माता को देखना चाहता हूँ ।।४।।

युक्ति विभीषण सकल सुनाई ❀ चलेउ पवनसुत बिदा कराई
धरि सोइ रूप गयउ पुनि तहवाँ ❀ बन असोक सीता रहि जहवाँ

तब जानकीजीसे मिलने की सब युक्ति विभीषणने सुना दी तो हनुमान्‌जी विदा माँग कर चले । वहाँ लंका प्रवेशके समय का रूप धारण करके गए जहाँ अशोक वनमें सीताजी रहती थीं ।।

देखि मनहिं मन कीन्ह प्रनामा ❀ बैठे बीति गई निसि जामा
कृस तनु सीस जटा इक बेनी ❀ जपति हृदय रघुपतिगुनश्रेनी

देखकर मन ही मनमें प्रणाम किया फिर अशोक वृक्ष पर बैठे । पहरभर रात्रि व्यतीत हो गई ।। सीताजीका शरीर दुबला हो रहा है, शिरके केशोंकी जटा सी हो गई है और राम-राम जप रही हैं ।।

दोहा—निजपद नयन दिये मन, रामचरणमहँ लीन ।
परम दुखी भा पवनसुत, निरखि जानकी दीन ।। ८ ।।

वे अपने चरणोंकी ओर नेत्र किए थीं और उनका मन रामजीके चरणोंमें लीन हो रहा था । इस प्रकार जानकीजी की दीन दशा को देखकर हनुमान्‌जी बहुत दुःखी हुए ।।८।।

तरुपल्लव महँ रहा लुकाई ❀ करै बिचार करौं का भाई
तेहि अवसर रावन तहँ आवा ❀ संग नारि बहु किये बनावा

तब हनुमान्‌जी वृक्षके पत्तोंमें छिप रहे और मनमें विचारने लगे कि हे भाई ! अब क्या करूँ ? उसी समय साथमें बहुत सी स्त्रियों को लिये और अपना बहुत शृंगार किये हुए रावण वहाँ आया ।।

बहुबिध खल सीतहिं समुझावा ❀ साम दाम भय भेद दिखावा
कह रावन सुनु सुमुखि सयानी ❀ मंदोदरी आदि सब रानी

दुष्ट रावणने अनेक भाँतिसे सीता को समझाया तथा साम, दाम, भय, भेद दिखाया और कहने लगा—हे सुन्दर मुखवाली सयानी ! सुन, मन्दोदरी आदिक सब रानियों को ।।

तव अनुचरी करउँ प्रन मोरा ❀ एकबार बिलोकु मम ओरा
तृन धरि ओट कहत बैदेही ❀ सुमिरि अवधपति परमसनेही

तेरी दासी बनाऊँगा, यह मेरा प्रण है परंतु एक बार प्रसन्न होकर मेरी ओर देख । तब यह सुनकर वैदेही अपने और रावणके बीचमें तृण रखकर और रामजीका स्मरण कर बोलीं ।।

सुनु दसमुख खद्योतप्रकासा ❀ कबहुँ कि नलिनी करहिं बिकासा
अस मन समुझति कहति जानकी ❀ खल सुधि नहिं रघुबीर बानकी

हे रावण ! सुन, जुगनूके प्रकाशसे क्या कभी कमलिनी खिल सकती है ? ऐसा मनमें समझती हुई जानकीजी कहती हैं रे दुष्ट ! क्या तुझको रघुनाथजीके बाणों की सुध नहीं है ? ।।

सठ सूने हरि आनेसि मोहीं ❀ अधम निलज्ज लाज नहिं तोहीं

रे मूर्ख ! मुझको सूनेमें हर लाया ? नीच, निर्लज्ज ! तुझको लज्जा नहीं आती ।।

दोहा–आपुहिं सुनि खद्योतसम, रामहिं भानुसमान ।
परुष बचन सुनि काढ़ि असि, बोला अति खिसिआन ।। ९ ।।

रावण अपने को खद्योत के समान और श्रीरामचन्द्रजी को सूर्यके समान ऐसे कठोर वचन सुनकर बहुत क्रुद्ध हो गया और अपना चन्द्रहास खड्ग (तलवार) निकाल कर सीताजीसे बोला ।

सीता तैं मम कृत अपमाना ❀ काटौं तव सिर कठिन कृपाना
नाहित सपदि मानु मम बानी ❀ सुमुखि होत न त जीवनहानी

रे सीता ! तैंने मेरा अपमान किया, अतः तेरा शिर इस कठिन तलवारसे काटूंगा ।।१।। नहीं तो शीघ्र ही मेरी बात मान ले, रे सुमुखि ! न माननेसे तेरे जीवन की हानि है ।।२।।

स्यामसरोजदामसम सुंदर ❀ प्रभुभुज करिकर सम दसकंधर
सो भज कंठ कि तव असि घोरा ❀ सुनु सठ अस प्रमान प्रन मोरा

यह सुनकर सीताजी बोली–रे दशकन्धर ! हाथीके शुण्डके समान सुन्दर जो प्रभुकी भुजा हैं वह भुजा मेरे कंठ पर होगी या तेरी घोर तलवार । सुन मूर्ख ! मेरा भी प्रण पक्का है ।।

चंद्रहास हरु मम परितापा ❀ रघुपति बिरह अनल संतापा
सीतल निसि तव असिवर धारा ❀ कह सीता हरु मम दुख भारा

हे चंद्रहास ! मेरे इस दुःख को हर लो, रामजी का वियोग अग्निके समान है और तुम्हारी उत्तम धार शीतल रात्रिके समान है । सो सीताजीने कहा कि तुम मेरे महान् दुःख को हरो ।।

सुनत बचन पुनि मारन धावा ❀ मयतनया कहि नीति बुझावा
कहेसि सकलनिसिचरिन बुलाई ❀ सीतहिं त्रास दिखावहु जाई

यह सुनते ही रावण फिर मारने दौड़ा तो मन्दोदरीने समझाया कि स्त्री का वध करना अनुचित है ।। तब रावणने राक्षसियों को बुलाकर कहा कि तुम सब जाकर सीता को डराओ ।।

मास दिवसमहँ कहा न माना ❀ तौ मैं मारब कठिन कृपाना

यदि एक मासमें कहा न मानेगी तो मैं कठिन तलवारसे मार डालूंगा ।।

दोहा–भवन गयेउ दसकंध तब, इहाँ निसाचरिबृंद ।
सीतहिं त्रास दिखावहीं, धरहिं रूप बहुमंद ।।१०।।

यह कहकर रावण घर को गया, यहां राक्षसियां सीताजी को बहुत भयंकर रूप दिखाने लगीं ।

त्रिजटा नाम राक्षसी एका ❀ रामचरनरति निपुन विवेका
सबहिं बुलाय सुनायसि सपना ❀ सीतहिं सेइ करौ हित अपना

एक त्रिजटा नाम की राक्षसी थी जो राम की भक्त और ज्ञान में निपुण थी। उसने राक्षसियों को बुलाकर अपना सपना सुनाया और कहा कि सीताजी की सेवा करके अपना भला करो ॥

सपने बानर लंका जारी ❁ जातुधानसेना सब मारी
खर आरूढ़ नगन दससीसा ❁ मुण्डितसिर खंडित भुजबीसा

सपने में बानर लंका को जला गया है और राक्षसोंकी सारी सेनाको मार दिया है ॥ रावण गधे पर चढ़ा है तथा नंगे सिर और बीसों भुजाएँ जिसकी कटी हैं ॥ ४ ॥

यहि विधि सो दक्षिण दिसि जाई ❁ लंका मनहुँ विभीषण पाई
नगर फिरी रघुबीर दोहाई ❁ तब प्रभु सीतहिं बोलि पठाई

इस प्रकार वह दक्षिण दिशा को जा रहा है और मानो लंका विभीषणने पाई है ॥५॥ नगर में रामचन्द्रजी की दुहाई फिरी है तथा प्रभुने सीता को बुला भेजा है ॥

यह सपना मैं कहौं बिचारी ❁ होइहै सत्य गये दिन चारी
तासु बचन सुनि ते सब डरीं ❁ जनकसुताके चरनन परीं

यह सपना मैं विचार कर कहती हूँ कि चार दिन बीत जाने पर सत्य प्रतीत होगा। उसके वचन सुनकर सब राक्षसियां डर गईं और जानकी जी के चरणों में गिरने लगीं ॥

दोहा—जहँ तहँ गईं सकल मिलि, सीताके मन सोच।
मास दिवस बीते मोहिं, मारिहि निसिचर पोच ॥११॥

सब राक्षसियाँ जहाँ-तहाँ चली गईं और सीताजी के मन में बड़ा सोच हुआ कि एक महीना बीत जाने पर यह नीच राक्षस मुझे मार डालेगा ॥ ११ ॥

त्रिजटासन बोली कर जोरी ❁ मातु बिपति संगिनि तैं मोरी
तजौं देह करु बेगि उपाई ❁ दुसह बिरह अब सहा न जाई

त्रिजटा से हाथ जोड़ सीताजी बोलीं कि हे माता ! तू ही विपत्ति में मेरा सङ्ग देनेवाली है। शरीर छोड़ दूं ऐसा उपाय तुम जल्दी करो, क्योंकि अब यह कठिन वियोग सहा नहीं जाता ॥

आनु काठ रचु चिता बनाई ❁ मातु अनल तुम देहु लगाई
सत्य करहु मम प्रीति सयानी ❁ सुनै को श्रवण शूलसम बानी

काठ को लाकर चिता बना दो और हे माता, फिर तुम उसमें आग लगा दो। हे सयानी ! मेरी इस प्रीति को सत्य करो, यह कानोंमें शूल के समान लगनेवाली वाणी कौन सुने ? ॥

सुनत बचन गहि पद समुझायसि ❁ प्रभु प्रतापबल सुयस सुनायसि
निसि न अनल मिलु राजकुमारी ❁ अस कहि सो निज भवन सिधारी

सीताजी के वचन को सुनते ही चरण पकड़कर प्रभु के प्रताप को समझाया और कहा कि हे राजकुमारी ! रात्रिमें अग्नि नहीं मिलेगी, ऐसे कहकर त्रिजटा अपने घर को चली गई ॥

कह सीता बिधि भा प्रतिकूला ❁ मिलै न पावक मिटै न सूला
देखियत प्रगट गगन अंगारा ❁ अवनि न आवत एकौ तारा

सीताजीने कहा, विधाता ही प्रतिकूल है, न तो अग्नि मिलती है और न दुख दूर होता है। आकाशमें अंगारे जैसे तारे तो दीख पड़ते हैं परन्तु पृथ्वी पर एक भी तारा नहीं गिरता है।।

पावकमय ससि स्रवत न आगी ❀ मानहु मोहिं जानि हतभागी
सुनहु विनय मम विटप असोका ❀ सत्य नाम करु हरु मम सोका

चन्द्रमा भी मुझको अग्निमय प्रतीत होता है और वह भी मुझको अभागिनी जानकर अग्नि नहीं देता। हे अशोक वृक्ष ! अपने नाम को सत्य करो और मेरे शोक को हर लो।।

नूतन किसलय अनलसमाना ❀ देहु अगिनि तरु करहु निदाना
देखि परम बिरहाकुल सीता ❀ सो छिन कपिहिं कल्पसम बीता

तुम्हारे नवीन पत्ते अग्निके समान हैं सो अग्नि देकर शरीरका निदान अर्थात् अन्त करो। सीताजी को अत्यन्त विरह में व्याकुल देख वह क्षण हनुमान्‌जी को कल्प के समान व्यतीत हुआ।।

सो०—कपि करि हृदय विचार, दीन्ह मुद्रिका डारि तब।
जनु अशोक अंगार, दीन्ह हर्षि उठि कर गहेउ ॥ २ ॥

तब हनुमान्‌जीने अपने हृदयमें विचारकर रामचन्द्रजीकी अँगूठी डाल दी, मानो अशोक वृक्ष ने अंगार डाल दिया हो। उसको देख उठाकर सीताजी ने हाथ में लिया ।। २ ।।

तब देखी मुद्रिका मनोहर ❀ रामनाम अंकित अति सुन्दर
चकित चितै मुँदरी पहिचानी ❀ हर्ष विषाद हृदय अकुलानी

तब मनोहर अँगूठी देखी जिस पर राम नाम लिखा था और वह बहुत सुन्दर थी। तब मनमें आश्चर्य उत्पन्न हुआ और जब पहचान लिया तब आनन्द और शोकसे मनमें घबरा गयीं।।

जीति को सकै अजय रघुराई ❀ माया ते अस रची न जाई
सीता मन विचार कर नाना ❀ मधुर बचन बोले हनुमाना

फिर विचारने लगीं कि रघुनाथजी तो अजेय हैं, उनको कौन जीत सकता है, मायासे लो ऐसी बनाई नहीं जा सकती। सीताजी अनेक विचार करने लगीं तो हमुमान्‌जी वृक्ष पर से बोले।।

रामचंद्रगुन बरनन लागे ❀ सुनतहिं सीताकर दुख भागे
लागी सुनै स्रवन मन लाई ❀ आदिहिंते सब कथा सुनाई

हनुमान्‌जी रामचन्द्रजी का गुण वर्णन करने लगे जिसे सुनते ही सीताजी के दुःख दूर हो गये।। उन्होंने आदि से सब कथा कह सुनाई और सीताजी मन लगाकर सुनने लगीं।।

स्रवनामृत जेहि कथा सुनाई ❀ काहे न प्रगट होत सो आई

उसे सुनकर सीताजी बोलीं कि जिसने कानों को अमृत के समान यह कथा सुनाई है, वह आकर प्रकट क्यों नहीं हो जाता ?।।

तब हनुमंत निकट चलि गयऊ ❀ फिरि बैठी मन बिस्मय भयऊ
रामदूत मैं मातु जानकी ❀ सत्य शपथ करुना निधानकी

तब हनुमान्जी समीप चले गए तो सीताजी फिर कर बैठ गईं और मन में संदेह हुआ। हनुमान्जी बोले—हे माता ! मैं शपथ खाकर कहता हूँ कि मैं रामचन्द्रजी का दूत हूँ ॥

यह मुद्रिका मातु मैं आनी ❁ दीन्ह राम तुम कहँ सहिदानी
नर बानरहिं संग कहु कैसे ❁ कही कथा संगति भइ जैसे

हे माता ! यह अँगूठी रामचन्द्रजी की है, रामचन्द्रजी नें तुमको पहचान के लिए दी है। यह सुनकर जानकीजीने कहा—कहो, नर-बानरका साथ कैसा, तब हनुमान्जीने सब कथा कही ॥

दोहा—कपिके बचन सप्रेम सुनि, उपजा मन बिस्वास।
जाना मन क्रम बचन यह, कृपासिंधुकर दास ॥ १२ ॥

हनुमान्जी के यह प्रेम सहित वचन सुनकर सीताजी के मनमें विश्वास हो गया और जान लिया कि यह मन, कर्म, वचन से कृपा-सिन्धु रामजी का सेवक है ॥ १२ ॥

हरिजन जानि प्रीति अति बाढ़ी ❁ सजलनयन पुलकावलि ठाढ़ी
बूड़त बिरहजलधि हनुमाना ❁ भयउ तात मोकहँ जलयाना

भगवान् रामजी का सेवक जानकर बहुत प्रीति बढ़ी, नेत्रोंमें जल भर आया, रोमावली खड़ी हो गई। हे हनुमान् ! विरहरूपी समुद्र में डूबते हुए मुझको तुम नौका-रूप हो गये ॥

अब कहु कुसल जाउँ बलिहारी ❁ अनुज सहित सुखभवन खरारी
कोमलचित कृपालु रघुराई ❁ कपि केहि हेतु धरी निठुराई

तुम्हारी बलि जाऊँ यह कहो कि सुखनिधान रामचन्द्र अपने छोटे भाई लक्ष्मण समेत कुशलसे तो हैं, रामजी तो कोमलचित्त दयालु हैं, तब किस कारण इतनी निष्ठुरता धारण किए हैं ॥

सहजबानि सेवक सुखदायक ❁ कबहुँकि सुरति करत रघुनायक
कबहुँ नयन मम सीतल ताता ❁ होइहिं निरखि स्याममृदुगाता

जो स्वामी सेवकों के सुखदाता हैं वे रघुनाथ जी क्या कभी मेरी भी याद करते हैं, हे तात ! क्या कभी ऐसा भी होगा कि स्वामी का कोमल शरीर देखकर मेरे नेत्र शीतल होंगे ॥

बचन न आव नयन भरि बारी ❁ अहो नाथ मोहिं निपट बिसारी
देखि बिरहब्याकुल अति सीता ❁ बोलेउ कपि मृदुबचन विनीता

सीताजी के मुख से वचन नहीं आया और नेत्रों में जल भर आया, वह बोलीं, आह नाथ ! आपने मुझको भुला दिया ? तब सीताजी को व्याकुल देख हनुमान् जी यह मधुर वचन बोले ॥

मातु कुसल प्रभु अनुजसमेता ❁ तव दुख दुखी सो कृपानिकेता
जननी जनि मानहु मन ऊना ❁ तुमते प्रेम रामकहँ दूना

हे माता ! रामचन्द्रजी लक्ष्मण सहित कुशल से हैं परन्तु कृपानिधान रामजी केवल तुम्हारे दुःखसे दुःखी हैं। हे माता ! खिन्नता मत करो, तुमसे रामजी का दूना प्रेम है ॥ १० ॥

दोहा—रघुपतिके संदेस अब, सुनु जननी धरि धीर।
अस कहि कपि गद्गद भयउ, भरे बिलोचन नीर ॥ १३ ॥

हे माता ! अब धीरज धरकर रघुनाथजी के सन्देश को सुनो। ऐसा कहकर हनुमान्‌जी गद्गद कण्ठ हो गये और नेत्रों में जल भर आया ।। १३ ।।

रामवियोग कहा सुनु सीता ❀ मोकहँ सकल भयउ विपरीता
नूतन किसलय मनहुँ कृसानू ❀ कालनिसा सम निसि ससि भानू

रामजीने वियोग कहा है, सुनो सीता ! सारी वस्तुएँ तेरे वियोग में विपरीत हो गई हैं। नये लाल कोमल पत्ते अग्नि के अंगारे हो गये हैं, रात्रि काल रात्रि के समान तथा चन्द्रमा सूर्य के समान है ।।

कुबलय बिपिन कुंतबन सरिसा ❀ बारिद तप्ततेल जनु बरिसा
जेहि तरु रहौं करत सोइ पीरा ❀ उरगश्वाससम त्रिविधि समीरा

कमल-वन भालों के वन के समान है, बादलों से जल मानों गरम तेल बरसता है ।। जिस वृक्ष के नीचे रहता हूँ वही दुःख देता है और तीनों प्रकार की वायु सर्प के श्वास के समान लगती है ।।

कहेहुँते कछ दुख घटि होई ❀ काहि कहौं यह जान न कोई
तत्व प्रेमकर मम अरु तोरा ❀ जानत प्रिया एक मन मोरा

कहने से भी कुछ दुख घट जाता है, पर किससे कहूँ, यह कोई जानता नहीं है ।। हे प्यारी ! मेरे और तुम्हारे प्रेम का तत्त्व एक मेरा ही मन जानता है ।।

सो मन रहत सदा तोहिं पाहीं ❀ जानु प्रीति रस इतनेहि माहीं
प्रभुसंदेस सुनत बैदेही ❀ मगनप्रेम तनुसुधि नहिं तेही

यह मेरा मन सदा तुम्हारे पास रहता है, इतने ही में प्रीति-रस को जान लो ।। प्रभु रामचन्द्रजी का संदेश सुनते ही सीताजी प्रेममें ऐसा मग्न हो गईं कि उनको अपने देह की भी सुधि न रही ।।

कह कपि हृदय धीर धरु माता ❀ सुमिरु राम सेवकसुखदाता
उर आनहु रघुपति प्रभुताई ❀ सुनि मम बचन तजहु बिकलाई

तब हनुमान्‌जी कहने लगें, हे माता ! सेवकों के सुखदाता श्रीरामजी का स्मरण कर हृदय में धीरज धरो और मेरे वचन को सुनकर व्याकुलता छोड़ दो ।।

दोहा–निसिचर निकर पतंगसम, रघुपति बान कृसानु ।
जननी उर धीरज धरहु, जरे निसाचर जानु ।। १४ ।।

राक्षस पतंगके समान हैं और रघुनाथजीके बाण अग्निके समान हैं । हे माता ! हृदयमें धीरज धरो और राक्षसों को भस्म हुआ जानो ।। १४ ।।

जो रघुबीर होत सुधि पाई ❀ करते नहिं बिलंब रघुराई
रामबान रबिउदय जानकी ❀ तमबरूथ कहँ यातुधान की

श्रीरघुनाथजीने तुम्हारी सुधि पाई होती तो देर नहीं करते, हे माता ! रामचन्द्रजीके बाण रूपी सूर्य का उदय इस अन्धकार रूपी राक्षसों के समूह को नाश करनेवाला है ।।

अबहिं मातु मैं जाउँ लिवाई ❀ प्रभुआयसु नहिं रामदुहाई
कछुक दिवस जननी धरु धीरा ❀ कपिन्ह सहित ऐहैं रघुबीरा

हे माता! मैं तुमको अभी ले चलता, परन्तु क्या करूँ, रामजी की आज्ञा नहीं है। रामजी की सौगंध से सत्य कहता हूँ, कुछ दिन और धीरज धरो फिर बानरों समेत रामचन्द्रजी आवेंगे ।।

निसिचर मारि तोहिं लै जैहैं ❀ तिहुँपर नारदादि जस गैहैं
कहु सुत कपि सब तुम्हहि समाना ❀ यातुधान भट अति बलवाना

वे राक्षसों को मार कर तुमको ले जायेंगे और नारद आदिक प्रभु का यश गायेंगे। तब जानकीजी ने कहा, क्या सब बानर तुम्हारे ही समान हैं? यहांके राक्षस तो बड़े बलवान् और योद्धा हैं ।।

मोरे हृदय परम संदेहा ❀ सुनि कपि प्रगट कीन्ह निजदेहा
कनक भूधराकार सरीरा ❀ समर भयंकर अतिरणधीरा

मेरे मनमें बड़ा सन्देह है, यह सुन कर हनुमान्‌जी ने अपने शरीर को प्रकट किया जो सुवर्ण के पर्वत के समान विशाल पराक्रम से भरा अत्यन्त भयंकर और रणधीर था ।।

सीता मन भरोस तब भयऊ ❀ पुनि लघुरूप पवनसुत लयऊ

तब सीताजी के मन में भरोसा हुआ, तब हनुमान् जी ने छोटा रूप धर लिया ।।

दोहा—सुनु माता साखामृगहिं, नहिं बलबुद्धि बिसाल ।
प्रभुप्रतापते गरुड़हिं, खाइ परम लघु ब्याल ।। १५ ।।

हे माता! सुनो, यद्यपि बानरों के बल और बुद्धि की बड़ाई कुछ नहीं है परन्तु प्रभु के प्रताप से छोटा-सा सर्प गरुण को खा जाता हैं ।। १५ ।।

मन संतोष सुनत कपिबानी ❀ भक्ति प्रताप तेज बल सानी
आसिष दीन्ह रामप्रिय जाना ❀ होहु तात बलबुद्धि निधाना

हनुमान्‌जी की भक्ति, प्रताप, तेज और बल से युक्त वाणी सुनते ही जानकीजी के मन में संतोष हो गया। तब उन्होंने आशीर्वाद दिया कि हे तात! तुम बल और बुद्धि के निधान हो जाओ ।।

अजर अमर गुननिधि सुत होहू ❀ करहिं सदा रघुनायक छोहू
करहिं कृपा प्रभु अस सुनि काना ❀ निर्भर प्रेममगन हनुमाना

हे पुत्र! तुम अजर-अमर और गुणों के समुद्र हो जाओ तथा तुमपर रामजी सदा कृपा करते रहें! ऐसा वचन कानों से सुनकर हनुमान् जी पूर्ण प्रेम से मग्न हो गये ।।

बार बार नायउ पद सीसा ❀ बोले बचन जोरि कर कीसा
अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता ❀ आसिष तव अमोघ विख्याता

बारम्बार सीताजीके चरणों में सिर झुकाकर हनुमान्‌जी हाथ जोड़ कर यह बचन बोले-हे माता! अब मैं कृतार्थ हो गया, क्योंकि आपका आशीर्वाद कभी निष्फल नहीं होता, यह बात प्रसिद्ध है ।।

सुनिय मातु मोहिं अतिसय भूखा ❀ लागि देखि सुंदर फल रूखा
सुनु सुत करहिं विपिन रखवारी ❀ परम सुभट रजनीचर भारी

हे माता! सुनो, वृक्षों में सुन्दर फल लगा देखकर मेरी भूख बढ़ गई है ।।७।। सीताजी ने कहा—हे पुत्र! इस वन की रखवाली बड़े-बड़े राक्षस योद्धा करते हैं ।। ८ ।।

तिनकर भय माता मोहिं नाहीं ❁ जो तुम सुख मानहु मनमाहीं

यह सुनकर हनुमान्जी बोले—हे माता ! हमें उन राक्षसों की डर नहीं है, यदि आप मनमें सुख मानें, तो मैं जाकर फल खाऊँ ॥ ९ ॥

दोहा—देखि बुद्धिबल निपुन कपि, कहा जानकी जाहु ।
रघुपतिचरन हृदय धरि, तात मधुर फल खाहु ॥ १६ ॥

तब हनुमान्जी को बुद्धि और बल मैं निपुण देखकर जानकीजी ने कहा—हे तात ! जाओ और रामजी का चरण हृदय में धारण करके मीठे-मीठे फल खाओ ॥ १६ ॥

चलेउ नाइ सिर पैठेउ बागा ❁ फल खाये तरु तोरन लागा
रहे तहाँ बहु भट रखवारे ❁ कछु मारे कछु जाय पुकारे

मस्तक नवा हनुमान्जी चले और बागमें प्रवेश कर फल खाने तथा वृक्ष तोड़ने लगे। वहाँ बहुत से रक्षक थे, हनुमान्ने उन रखवालोंमें कुछको मार डाले और कुछ भागकर रावणके पास जाकर पुकारे

नाथ एक आवा कपि भारी ❁ तेहि असोकबाटिका उजारी
खायसि फल अरु विटप उपारे ❁ रक्षक मर्दि मर्दि महि डारे

हे नाथ ! एक बड़ा बन्दर आया है जिसने अशोक वाटिका उजाड़ दी और फलों को खाकर वृक्षों को उखाड़ डाला एवं रखवालों को मार-मारकर पृथ्वी पर डाल दिया है ॥

सुनि रावन पठये भट नाना ❁ तिन्हहिं देखि गरजेउ हनुमाना
सब रजनीचर कपि संहारे ❁ गए पुकारत कछु अधमारे

यह सुनकर रावणने अनेक योद्धाओं को भेजा जिनको देखकर हनुमान्जी गरजने लगे। तब सब राक्षसोंको हनुमान्जीने मार डाला उनमें से कुछ अधमरे पुकारते हुए रावण के पास गये ॥

पुनि पठवा तेहि अक्ष कुमारा ❁ चला संग लै सुभट अपारा
आवत देखि विटप गहि तर्जा ❁ ताहि निपाति महाधुनि गर्जा

फिर रावणने अक्षयकुमार को भेजा, जो अपरम्पार योद्धाओं को साथ में लेकर चला। उसको आते देखकर हनुमान् जी वृक्ष पकड़कर उछले और उसको मारकर बड़े शब्दसे गरजे ॥

दोहा—कछु मारेसि कछु मर्देसि, कछुक मिलायसि धूरि ।
कछु पुनि जाय पुकारे, प्रभु मर्कट बलभूरि ॥ १७ ॥

कुछ मार डाले, कुछ कुचल डाले, कुछ धूल में मिला दिये। कुछ फिर रावण के पास जाकर पुकारे कि हे स्वामी ! बन्दर बड़ा बलवान् है ॥ १७ ॥

सुनि सुतबध लंकेस रिसाना ❁ पठवा मेघनाद बलवाना
मारेसि जनि सुत बाँधेसि ताही ❁ देखौं कीस कहाँकर आही

पुत्र अक्षयकुमार का मरना सुनकर रावण क्रोध से भर गया और बलवान् मेघनाद को भेजा और कह दिया कि—हे पुत्र ! उसको मारना मत, बांधकर लाना, देखूं कहा का बन्दर है ॥

चला इन्द्रजित अतुलित जोधा ❀ बंधुबधन सुनि उपजा क्रोधा
कपि देखा दारुणभट आवा ❀ कटकटाइ गर्जा अरु धावा

मेघनाद महाबली योद्धा चला, भाई का मरना सुनकर उसको बड़ा क्रोध उत्पन्न हुआ। जब हनुमान्‌जी ने देखा कि यह कोई विकट योद्धा है, तब कटकटाकर गरजे और दौड़े ॥४॥

अति बिसाल तरु एक उपारा ❀ बिरथ कीन्ह लंकेसकुमारा

और एक बड़ा वृक्ष उखाड़ कर ऐसा मारा कि मेघनाद रथहीन हो गया ॥५॥

रहे महा भट ताके संगा ❀ गहिगहिकपि मर्देसि निजअंगा
तिन्हैं निपाति ताहिसन बाजा ❀ भिरे जुगल मानहुँ गजराजा

मेघनाद के साथ बड़े-बड़े योद्धा थे, उनको पकड़-पकड़कर हनुमान्‌जीने मार डाला, उन्हें गिराकर फिर हनुमान् जी मेघनाद से लड़ने के लिए ऐसे जा भिड़े मानों दो गजराज लड़ रहे हों ॥७॥

मुष्टिक मारि चढ़ा तरु जाई ❀ ताहि एक छिन मूर्च्छा आई
उठि बहोरि कीन्हेसि बहु माया ❀ जीति न जाय प्रभंजनजाया

फिर तो हनुमान् जी मेघनाद के हृदय में एक घूसा मारकर वृक्ष पर चढ़ गये जिससे उसे क्षण भर के लिए मूर्छा आ गई। तब मेघनाद ने उठकर बड़ी माया की; परन्तु हनुमान्‌जीको जीत न सका ॥

दोहा—ब्रह्मअस्त्र तेहि साधेउ, कपिमन कीन्ह बिचार।
जौं न ब्रह्मसर मानिहौं, महिमा मिटै अपार ॥१८॥

तब मेघनाद ने ब्रह्मास्त्र हाथ में लिया तो हनुमान्‌जी ने मनमें विचार किया कि यदि मैं इस ब्रह्म बाण को न मानूँगा तो इसकी अपार महिमा मिट जायेगी ॥१८॥

ब्रह्मबान तेहि कपिकहँ मारा ❀ परतिहुँ बान कटक संहारा
तेहि जाना कपि मुरुछित भयऊ ❀ नागपास बाँधेसि लै गयऊ

मेघनादने हनुमान्‌जीको ब्रह्मबाण मारा तब गिरते समय भी हनुमान्‌जीने सेनाका संहार किया। जब मेघनादने जाना कि बानर मूर्छित हो गया है तो उन्हें नागफाँससे बांधकर ले गया ॥

जासु नाम जपि सुनहु भवानी ❀ भवबंधन काटहिं नर ज्ञानी
तासु दूत बंधनतर आवा ❀ प्रभु कारज लगि आपु बँधावा

हे पार्वती ! सुनो, जिसका नाम जपकर ज्ञानी मुक्त हो जाते हैं उस प्रभुका दूत कहो कैसे किसी के बंधन में आ सकता है ? उसने तो अपने स्वामी के कार्य के निमित्त अपने आपको बँधाया ॥

कपि बन्धन सुनि निसिचर धाए ❀ कौतुक लागि सभा लै आए
दसमुखसभा दीख कपि जाई ❀ कहि न जाइ कछु अति प्रभुताई

बानर को बँधा जानकर राक्षस दौड़ आए और तमाशा देखने और खेलने के लिए सभा में ले आये ॥ रावण की सभा हनुमान्‌जी ने देखी जिसकी प्रभुता कही नहीं जाती ॥

कर जोरे सुर दिसिप बिनीता ❀ भृकुटि बिलोकहिं सकल सभीता
देखि प्रताप न कपि मन संका ❀ जिमि अहिगन महँ गरुड़ असंका

देवता और दिक्पाल विनयपूर्वक रावणकी भृकुटिको देख रहे हैं, परन्तु उसके ऐसे प्रतापको देख करके भी हनुमान्जीके मनमें ऐसे ही शंका नहीं हुई कि जैसे सर्पोंसे गरुड़ निःशंक रहता है ।।

दोहा—कपिहिं बिलोकि दसानन, बिहँसि कहा दुर्वाद ।
सुत बध सुरति कीन्ह पुनि, उपजा हृदय बिषाद ।।१९।।

तब हनुमान्जी की ओर देखकर रावण हँसा और कुछ दुर्वचन कहा, परन्तु पुत्र का मरण स्मरण आ जाने से उसके हृदय में संताप पैदा हो गया ।।१६।।

कह लंकेस कवन तैं कीसा ❀ केहिके बल घालेसि बन खीसा
कीधौं श्रवण सुनेसि नहिं मोहीं ❀ देखौं अति असंक सठ तोहीं

रावण कहने लगा—ऐ बानर! तू कौन है, किसके बल से मेरे बनका विनाश कर दिया । रे शठ! तुझको बिल्कुल निडर देखता हूँ, सो क्या तूने मेरा नाम कभी नहीं सुना है ।।

मारेसि निसिचर केहि अपराधा ❀ कहु सठ तोहिं न प्राण की बाधा
सुनु रावण ब्रह्माण्ड निकाया ❀ पाइ जासु बल विरचति माया

तूने किस अपराधसे राक्षसोंको मार डाला है ! रे मूर्ख ! क्या तुझे प्राणोंका भय नहीं है ? तब हनुमान्जी ने कहा—हे रावण ! सुन, जिस ब्रह्मके बल से माया रचना करती है ।।

जाके बल बिरंचि हरि ईसा ❀ पालत सृजत हरत दससीसा
जा बल सीस धरत सहसानन ❀ अण्डकोस समेत गिरि कानन

और जिसके बलसे ब्रह्मा, विष्णु, महेश ये जगत् को रचते, पालते और संहार करते हैं ।। जिसके बल से शेषजी अपने शिरपर बन और पर्वतों सहित ब्रह्माण्ड को धारण किये हैं ।।

धरै जो विविध देह सुरत्राता ❀ तुमसे सठन सिखावन दाता
हर कोदंड कठिन जेहि भंजा ❀ तोहि समेत नृपदल मदगंजा
खर दूषन त्रिसिरा अरु बाली ❀ बधे सकल अतुलित बलशाली

तथा जो देवताओं की रक्षा करने को और तुम्हारे समान शठों को सिखाने के लिए अनेक शरीर धारण करते हैं ।। जिन्होंने शिवजीके कठिन धनुष को तोड़कर तेरे सहित राजाओं के दलका मद चूर्ण किया ।। और जिन्होंने खरदूषण, त्रिशिरा और बालि आदिक अनेक शक्तिशालियोंका वध कर डाला है ।।

दोहा—जाके बल लवलेस ते, जितेउ चराचर झारि ।
तासु दूत मैं जाहि की, हरि आनेउ प्रिय नारि ।।२०।।

और जिनके लवलेश बलसे तूने समस्त चराचर जगत्को जीता है, उसी परमात्मा का मैं दूत हूँ कि जिसकी प्यारी स्त्री सीता को तू हर लाया है ।।२०।।

जाना मैं तुम्हारि प्रभुताई ❀ सहसबाहु सन परी लराई
समर बालि सन करि यस पावा ❀ सुनि कपि बचन बिहँसि बहलावा

मैं तेरी प्रभुता को जानता हूँ कि जब सहस्रबाहु के साथ तुझे युद्ध करना पड़ा था ॥ बालि से भी लड़कर तूने यश पाया था, यह सुनकर रावण ने उसे हँसी में उड़ा दिया ॥

खायउँ फल मोंहि लागी भूखा ❀ कपि स्वभाव ते तोरेउँ रूखा
सबके देह परम प्रिय स्वामी ❀ मारेहु मोंहि कुमारग गामी

मुझको भूख लगी थी इस कारण फलों को खाया और बानर स्वभाव से वृक्षों को तोड़ा। हे स्वामी ! देह सबको प्यारी है, परन्तु कुमार्गगामी राक्षस मुझे मारने लगे ॥

जिन्ह मोंहि मारा ते मैं मारा ❀ तापर बाँधेउ तनय तुम्हारा
मोंहि न कछु बाँधेकर लाजा ❀ कीन्ह चहौं निज प्रभुकर काजा

जिन्होंने मुझे मारा उनको मैंने भी मारा, इसपर तुम्हारे पुत्र ने मुझे बाँधा है। परन्तु मुझे अपने बाँध जाने की कुछ भी लाज नहीं है, मैं अपने स्वामी का कार्य करना चाहता हूँ ॥

बिनती करौं जोरि कर रावन ❀ सुनहु मान तजि मोर सिखावन
देखहु तुम निज हृदय विचारी ❀ भ्रम तजि भजहु भक्त भय हारी

हे रावण ! मैं हाथ जोड़कर विनती करता हूँ, अभिमान छोड़कर मेरी शिक्षा सुनो ! अपने मन में विचार करके देख लो और भक्त जनोंके भय को मिटानेवाले प्रभु का भजन करो ॥

जाके डर अति काल डेराई ❀ जो सुर असुर चराचर खाई
तासों बैर कबहुँ नहिं कीजै ❀ मोरे कहे जानकी दीजै

जिनके भयसे काल भी डर जाता है, और जो देवता, दैत्य एवं सारे चराचर को खा जाता है, उससे कभी बैर न करो तथा मेरे कहनें से सीताजी को दे दो ॥

दोहा–प्रणतपाल रघुबंस मनि, करुणासिंधु खरारि ।
गये शरण प्रभु राखिहैं, सब अपराध बिसारि ॥२१॥

हे रावण ! खर के मारनेवाले रघुवंशमणि रामचन्द्रजी भक्तपालक और करुणा के सागर हैं। यदि तू उनकी शरण में चला जायेगा तो तेरे सब अपराध को क्षमा कर तेरी रक्षा करेंगे ॥ २१ ॥

रामचरण पंकज उर धरहू ❀ लंका अचल राज्य तुम करहू
ऋषि पुलस्त्य यश विमल मयंका ❀ तेहि कुल महँ जनि होसि कलंका

रामजी के चरण-कमलों को हृदय में धारण कर लंका में अचल राज्य करो। महामुनि पुलस्त्यका यश निर्मल चन्द्रमा के समान है, उस कुलमें तुम कलंक के समान न बनो ॥

राम नाम बिनु गिरा न सोहा ❀ देखु बिचारि त्यागि मद-मोहा
बसन हीन नहिं सोह सुरारी ❀ सब भूषण भूषित बर नारी

मद और मोह को त्याग कर देख लो कि राम-नाम के बिना वाणी शोभा नहीं देती ॥ हे रावण ! जैसे स्त्री सब अलंकारोंसे अलंकृत हो, परन्तु वस्त्रोंके बिना शोभा नहीं पाती ॥

राम विमुख सम्पति प्रभुताई ❀ जाइ रही पाई बिनु पाई
सजलमूल जिन्ह सरितन नाहीं ❀ बरिष गये पुनि तबहिं सुखाहीं

जो रामजीसे विमुख है उसको सम्पदा और प्रभुता पाने पर भी न पानेके बराबर है। जहाँ सजल सोते वाली नदी है, वहाँ वर्षा हो जाने के बाद जल सूख जाता है ।।

सुनु दसकंध कहौं प्रण रोपी ❀ राम विमुख त्राता नहिं कोपी
संकर सहस विष्णु अज तोही ❀ राखि न सकहिं रामकर द्रोही

हे रावण ! सुन, रामजी से विमुख रहनेवालों की कोई भी रक्षा नहीं कर सकता। हजार शिवजी, ब्रह्मा, विष्णु भी तुझे नहीं रख सकेंगे, यदि रघुनाथजीसे तेरा बैर होगा तो ।।

दोहा—मोह मूल बहु सूलप्रद, त्यागहु तुम अभिमान।
भजहु राम रघुनाथहिं, कृपासिंधु भगवान ।।२२।।

हे रावण ! मोहके मूल कारण और अत्यन्त दुःख देने वाले अभिमान को तुम छोड़ कर कृपा के सागर भगवान् रामजी का भजन करो ।। २२ ।।

यदपि कही कपि अतिहित बानी ❀ भक्ति विवेक धर्म नयसानी
बोला बिहँसि अधम अभिमानी ❀ मिला हमहिं कपि गुरु बड़ ज्ञानी

यद्यपि हनुमान्‌जीने रावण को अति हितकारी और भक्ति, ज्ञान, धर्म, नीतिसे मिली हुई वाणी कही परन्तु वह अभिमानी अधम हँसकर बोला कि आज तो हमको तू बड़ा ज्ञानी गुरु मिला है।

मृत्यु निकट आई खल तोहीं ❀ लागेसि अधम सिखावन मोहीं
उलटा होइ कहा हनुमाना ❀ मति भ्रम तोरि प्रगट मैं जाना

रे नीच ! तू मुझको शिक्षा देने लगा, तेरी मौत निकट आ गई है। हनुमान् जी ने कहा कि उलटा होगा, अब मैंने जान लिया कि तेरी बुद्धि भ्रम में है ।।

सुनि कपि बचन बहुत रिसियाना ❀ बेगि न हरहु मूढ़कर प्राना
सुनत निसाचर मारन धाये ❀ सचिवन सहित बिभीषण आये

हनुमान् जी का वचन सुनकर रावण को बड़ा क्रोध आया और कहा कि हे राक्षसों ! इसको मार डालो। रावणके वचन को सुनते ही राक्षस मारने दौड़े तो मन्त्रियों के साथ विभीषण वहाँ आ गए ।।

नाइ सीस करि विनय बहूता ❀ नीति विरोध न मारिय दूता
आन दण्ड कछु करिय गोसाईं ❀ सबहीं कहा मन्त्र भल भाई
सुनत बिहँसि बोला दसकंधर ❀ अंग भंग करि पठवहु बन्दर

बड़े विनयके साथ रावण को प्रणाम करके विभीषणने कहा—यह दूत है. इसे मारना न चाहिए, मारना नीतिके विरुद्ध है। हे स्वामी ! इसे अन्य दण्ड दीजिये, तब रावणने मुस्करा-कर कहा कि हे भाइयों ! इस बन्दर का अंग-भंग करके भेज दो ।।

दोहा—कपि कर ममता पूँछ पर, सबहिं कहा समुझाइ।
तेल बोरि पट बाँधि पुनि, पावक देहु लगाइ ।।२३।।

तब रावणने सबको समझाकर कहा कि बानर की ममता पूँछ पर होती है, इस कारण इसकी पूँछ को तेल में भिगोकर वस्त्र लपेट कर आग लगा दो ॥ २३ ॥

पूँछ हीन बन्दर जब जाइहि ❀ तब सठ निज नार्थाहि लै आइहि
जिनकी कीन्हेसि अमित बड़ाई ❀ देखौं मैं तिन्हकी प्रभुताई

जब यह पुच्छहीन बन्दर वहाँ जायेगा, तब अपने स्वामी को ले आवेगा। जिसकी इसने अतुलित बड़ाई की है, उसकी प्रभुताई को देखूँगा ॥

बचन सुनत कपि मन मुसुकाना ❀ भइ सहाय सारद मैं जाना
यातुधान सुनि रावन बचना ❀ लागे रचन मूढ़ सोइ रचना

रावणके वचन सुनकर हनुमान जी मनमें मुसकाये और सोचने लगे कि मैंने जान लिया कि इस समय सरस्वती सहायक हुई हैं तब वे मूर्ख राक्षस रावण के वचन सुनकर वही रचना करने लगे ॥

रहा न नगर बसन घृत तेला ❀ बाढ़ी पूँछ कीन्ह कपि खेला
कौतुक कहँ आये पुरबासी ❀ मारहिं चरन करहिं बहु हाँसी

इधर हनुमान् जी ने अपनी पूँछ इतनी बढ़ा दी कि नगर में वस्त्र, घी और तेल कुछ भी न रहा। नगर के लोग तमाशा देखने को आए तो वे सब लात मारकर हँसते थे ॥

बाजहिं ढोल देहिं सब तारी ❀ नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी
पावक जरत देखि हनुमन्ता ❀ भयउ परम लघु रूप तुरन्ता
निबुकि चढ़ेउ कपि कनक अटारी ❀ भईं सभीत निसाचर नारी

ढोल बजाकर सब ताली देकर हनुमान् जी को नगर में घुमाकर फिर उनकी पूँछमें आग लगा दी, तब आग जलती देखकर हनुमान् जी ने तुरन्त बहुत छोटा रूप धारण कर लिया और छलांग मारकर सुवर्णकी अटारियोंपर चढ़ गए। यह सब देखकर राक्षसों की स्त्रियां भयभीत हो गईं ॥

दोहा—हरि प्रेरित तेहि अवसर, चलेउ पवन उनचास।
अट्टहास करि गर्जेउ, कपि बढ़ि लाग अकास ॥२४॥

हरि की प्रेरणासे उस समय उनचासों पवन चलने लगें तब अट्टहास करके हनुमान् जी गर्जे और बढ़कर आकाश में जा लगे ॥ २४ ॥

देह बिसाल परम हरुआई ❀ मन्दिर ते मन्दिर चढ़ि धाई
जरै नगर भे लोग बिहाला ❀ लपट झपट बहु कोटि कराला

यद्यपि हनुमान्‌जीका शरीर बहुत बड़ा था; परन्तु शरीरमें बड़ी फुरती थी, इससे वे एक घरसे दूसरे घर पर चढ़ गये, सारा नगर जलने लगा, सब बेहाल हो गए ॥

तात मातु सब करहिं पुकारा ❀ यहि अवसर को हमहिं उबारा
हम जो कहा यह कपि नहिं होई ❀ बानर रूप धरे सुर कोई

सब लोग पुकारनें लगें कि अब इस समय में कौन बचावेगा, हमने जो कहा था कि यह बानर नहीं है, कोई देवता बानर का रूप धरकर आया है, सो ठीक है ॥

साधु अवज्ञा कर फल ऐसा ❀ जरै नगर अनाथ कर जैसा
जारा नगर निमिष एक माहीं ❀ एक विभीषण कर गृह नाहीं

लंका अनाथके नगरके समान जलने लगी सो साधु-अवज्ञा का ऐसा फल था। हनुमान् ने एक क्षणमें समस्त नगर को जला दिया, केवल एक विभीषण का घर नहीं जला ॥

ताकर भक्त अनल जेहि सिरजा ❀ जरा न सो तेहि कारण गिरिजा
उलटि पलटि लंका कपि जारी ❀ कूदि परा पुनि सिन्धु मँझारी

हे पार्वती ! जिसने अग्नि को उत्पन्न किया है उस परमेश्वर का विभीषण भक्त था, इस कारण हे उमा ! उसका घर नहीं जला, हनुमान्जी उलट-पलट कर लंका को जला समुद्र में कूद पड़े ॥

दोहा—पूँछ बुझाइ खोइ श्रम, धरि लघुरूप बहोरि ।
जनकसुता के आगे, ठाढ़ भयउ कर जोरि ॥२५॥

अपनी पूंछ को बुझा श्रम को मिटा फिर छोटा-सा रूप धारण करके हनुमान्जी हाथ जोड़ सीताजी के आगे आ खड़े हुए ॥ २५ ॥

मातु मोहिं दीजै कछु चीन्हा ❀ जैसे रघुनायक मोहिं दीन्हा
चूड़ामणि उतारि तब दयऊ ❀ हर्ष समेत पवनसुत लयऊ

हे माता ! जैसे रामजी ने मुझे अँगूठी दी थी, वैसे ही आप भी मुझे कुछ चिन्ह दीजिये ॥ तब सीताजीने अपने शिरसे उतारकर चूड़ामणि दे दी जिसे हनुमान्जी बड़े हर्ष से ले लिये ॥

कहेउ तात अस मोर प्रणामा ❀ सब प्रकार प्रभु पूरण कामा
दीन दयाल विरद संभारी ❀ हरहु नाथ मम संकट भारी

हे तात ! प्रभु से मेरा प्रणाम कहना कि हे नाथ ! आप दीनदयालु हैं, इसलिए अपने विरद को सँभालकर मेरे इस महासंकट को दूर कीजिये ॥

तात शक्रसुत कथा सुनायहु ❀ बाण प्रताप प्रभुहिं समुझायहु
मास दिवस महँ नाथ न आवहिं ❀ तौ पुनि मोहिं जियत नहिं पावहिं

हे तात ! फिर इन्द्र के पुत्र जयन्त की कथा सुनाकर प्रभुके बाणों का प्रताप समझाकर स्मरण दिलाना, यदि नाथ एक महीने में न आवेंगे तो मुझे जीवित न पावेंगे ॥

कहु कपि केहि विधि राखौं प्राना ❀ तुमहूँ तात कहत अब जाना
तुमहिं देखि शीतल भइ छाती ❀ पुनि मोकहँ सोइ दिन सोइ राती

हे कपि ! कहो—मैं अपने प्राण को कैसे रक्खूं, अब तुम भी जाने को कहते हो। तुमको देख कर हृदय शीतल हुआ था, परन्तु अब फिर मेरे लिए वही दिन और वही रात हो गई ॥

दोहा—जनक सुतहिं समुझाइ करि, बहुविधि धीरज दीन्ह ।
चरणकमल शिरनाइ कपि, गमन राम पहँ कीन्ह ॥२६॥

हनुमान्जी सीताजी को अनेक प्रकार से समझाकर धैर्य दिये और फिर उनके चरण-कमलों में शीश नवाकर रामचन्द्रजीके पास चल दिये ।। २६ ।।

चलत महाधुनि गरजेसि भारी ❀ गर्भ श्रवैं सुनि निशिचर नारी
लाँघि सिन्धु यहि पारहिं आवा ❀ शब्द किलकिला कपिन सुनावा

चलते समय हनुमान्जी ने घोर गर्जन किया कि जिसे सुन कर राक्षसियों के गर्भ गिर गए । समुद्र को लांघकर इस पार आए और किल-किला शब्द बन्दरों को सुनाया ।।

हर्षे सब बिलोकि हनुमाना ❀ नूतन जन्म कपिन तब जाना

हनुमान्जी का मुख प्रसन्न और शरीर पर तेज देखकर जान लिया कि यह कार्य करके आये हैं ।।

मुख प्रसन्न तनु तेज बिराजा ❀ कीन्हेसि रामचन्द्र कर काजा
मिले सकल अति भये सुखारी ❀ तलफत मीन पाव जनु बारी

हनुमान्जी को देखकर सब बानर बहुत प्रसन्न हुए और अपना नया जन्म समझा ।। सब प्रेम के साथ उनसे मिल सुखी हुए, जैसे तड़पती हुई मछली जल पाकर सुखी होती है ।।

चले हर्षि रघुनायक पासा ❀ पूछत कहत नवल इतिहासा
तब मधुबन भीतर सब आये ❀ अंगद सहित मधुर फल खाये

फिर वे सब बन्दर नवीन इतिहास पूछते और कहते हुए आनन्द के साथ रामचन्द्र के पास चले । फिर वे सब मधुबन के भीतर आकर अंगद के साथ वहाँ मीठे फल खाये ।।

रखवारे जब बरजन लागे ❀ मुष्टि-प्रहार करत सब भागे

जब रखवालों ने मना किया तो उन्हें मुक्कोंसे मारा तो वे सब वहाँ से भागे ।।

दोहा—जाइ पुकारे सकल ते, बन उजारि युवराज ।
सुनि सुग्रीव हर्ष कपि, करि आये प्रभुकाज ।। २७ ।।

वह सब रखवारे भाग कर सुग्रीव के पास जा पुकार कर कहने लगे कि अंगद ने बन को उजाड़ दिया है । यह सुनकर सुग्रीव को बड़ा आनन्द हुआ कि हनुमान् प्रभु का कार्य करके आये हैं ।।२७।।

जौं न होत सीता सुधि पाई ❀ मधुबन के फल सकत कि खाई
इहि विधि मन विचार कर राजा ❀ आइ गये कपि सहित समाजा

यदि सीताजी की सुधि न पाई होती तो मधुबन के फल न खा सकते थे । इस प्रकार मनमें सुग्रीव विचार कर ही रहे थे कि समाज सहित सब बानर आ गए ।।

आइ सबहिं नावा पद सीसा ❀ मिले सबन्हि अति प्रेम कपीसा
पूछउ कुसल कुसल पद देखी ❀ राम कृपा भा काज विसेषी

सबने आकर नमस्कार किया तब बड़े प्यार के साथ सुग्रीव सबसे मिले और कुशल पूछी । तब सबों ने कहा कि हे नाथ ! आपके चरण देख कर कुशल है, यह कार्य रामजी की कृपासे बना है ।।

नाथ काज कीन्हेउ हनुमाना ❀ राखे सकल कपिन्ह कर प्राना
सुनि सुग्रीव बहुरि उठि मिलेऊ ❀ कपिन सहित रघुपति पहँ चलेऊ

हे नाथ ! यह कार्य हनुमान्जीने किया है, इन्होंने ही सबके प्राणों की रक्षा की है। यह सुन सुग्रीव फिर हनुमान्जीसे मिले और उन्हें लेकर रामचन्द्रजीके पास आये ।।

राम कपिन्ह कहँ आवत देखा ❀ किये काज उर हर्ष विसेषा
फटिक सिला बैठे दोउ भाई ❀ परे सकल कपि चरनन्हि जाई

बानरों को आते देख रामजीके मनमें बड़ा हर्ष हुआ कि ये लोग कार्य सिद्ध करके आये हैं। दोनों भाई स्फटिक शिला पर जहाँ बैठे थे वहाँ जाकर सबने उनके चरणों में शिर नवाया ।।

दोहा—प्रीति सहित भेंटे सकल, रघुपति करुणापुंज ।
पूछेउ कुसल नाथ अब, कुसल देखि पद कंज ।। २८ ।।

करुणानिधान श्रीरामचन्द्रजी प्रीतिपूर्वक सबसे मिले और कुशल पूछा। तब सबने कहा—हे नाथ ! आपके चरण कमलों को देखकर सब कुशल है ।। २८ ।।

जामवन्त कह सुनु रघुराया ❀ जापर नाथ करहु तुम दाया
ताहि सदा सुभ कुसल निरन्तर ❀ सुर नर मुनि प्रसन्न तेहि ऊपर

जामवन्तने कहा—हे नाथ ! सुनिए—आप जिसपर दया करते हैं उसकी सर्वदा ही शुभ और कुशल रहता है, उसपर देवता और मुनि सर्वदा प्रसन्न रहते हैं ।।

सो विजयी बिनयी गुण सागर ❀ तासु सुयस तिहुँलोक उजागर
प्रभुकी कृपा भयउ सब काजू ❀ जन्म हमार सफल भा आजू

वह विजयी, विनयी, गुणों का सागर होता है तथा उसीका यश तीनों लोकोंमें प्रसिद्ध होता है ।। सब कार्य आपकी कृपासे सिद्ध हुआ और हमारा जन्म भी आज सफल हुआ ।।

नाथ पवनसुत कीन्ह जो करणी ❀ सहसहु मुख न जाय सो बरणी
पवन तनयके चरित सुहाये ❀ जामवन्त रघुपतिहिं सुनाये

हे नाथ ! हनुमान्जीने जो काम किया है वह हजारों मुखसे भी नहीं कहा जा सकता ।। हनुमान्के सुहावने चरित जामवन्तने रामचन्द्रजी को सुनाये ।।

सुनत कृपानिधि मन अति भाये ❀ पुनि हनुमान हर्षि उर लाये
कहहु तात केहि भाँति जानकी ❀ रहति करति रक्षा स्वप्रानकी

उसे सुनकर कृपालु रामजीने प्रसन्न हो हनुमान्जी को हृदयसे लगाया ।। और रामजीने पूछा कि हे तात ! कहो सीता कैसे हैं और अपने प्राण की रक्षा किस तरह करती हैं ? ।।

दोहा—नाम पाहरू दिवस निशि, ध्यान तुम्हार कपाट ।
लोचन निजपद यन्त्रिका, प्राण जाहिं केहि बाट ।। २९ ।।

हनुमान्जीने कहा—हे प्रभो ! जानकीजी को आपका नाम ही पहरेदार है और आपका ध्यान ही किवाड़ है। नेत्र चरणों की ओर लगाये हैं, फिर प्राण किस मार्गसे जा सकता है ?

चलत मोहिं चूड़ामणि दीन्हीं ❀ रघुपति हृदय लाय सो लीन्हीं

नाथ युगल लोचन भरि बारी ❀ बचन कहेउ कछु जनक कुमारी

उन्होंने चलते समय मुझे यह चूड़ामणि दिया है। उसे लेकर रामजीने हृदयसे लगा लिया। हे नाथ! दोनों नेत्रोंमें आँसू भरकर जनक-पुत्रीने कुछ कहा है ॥

अनुज समेत गहेउ प्रभु चरना ❀ दीनबन्धु प्रनतारति हरना
मन क्रम बचन चरन अनुरागी ❀ केहि अपराध नाथ मोहिं त्यागी

लक्ष्मण सहित प्रभुके चरण पकड़ कर कहना कि हे दीनबंधो! भक्तोंके दुख नाश करनेवाले! मैं मन क्रम वचनसे आपके चरणोंमें प्रीति करने वाली हूँ, फिर आपने किस अपराधसे मुझे त्याग दिया है?

अवगुन एक मोर मैं जाना ❀ बिछुरत प्रान न कीन्ह पयाना
नाथ सो नयनन कर अपराधा ❀ निसरत प्रान करहिं हठिबाधा

हाँ! मैं अपने एक अवगुण को जानती हूँ कि आपसे पृथक् होते मेरे प्राणोंने पयान नहीं किया॥ सो हे नाथ! ये नेत्र अपराधी हैं, प्राण निकलते समय हठसे बाधा करते हैं॥

बिरह अगिनि तन तूल समीरा ❀ श्वास जरे छन माहिं सरीरा
नयन स्रवहिं जल निज हित लागी ❀ जरै न पाव देह बिरहागी

आपका विरह-अग्नि और मेरा शरीर रुईके समान है जिसे विरह-युक्त श्वास की वायु लेकर क्षण भरमें जला देता परन्तु नेत्र अपने हितके लिये जल बहाते हैं, इससे जलने नहीं पाती॥

सीताकी अति बिपति बिसाला ❀ बिनहिं कहे भल दीनदयाला

हे दीनदयालु! सीता की विपत्ति अत्यन्त विशाल है जिसे न कहना ही अच्छा है॥

दोहा—निमिष निमिष करुनायतन, जाहिं कलप सम बीति।
बेगि चलिय प्रभु आनिय, भुजबल खलदल जीति॥३०॥

हे दयानिधान! सीताजी का एक-एक पल कल्पके समान व्यतीत होता है। हे प्रभो! शीघ्र चलिये और अपनी भुजाओंके बलसे दुष्टोंके दल को जीत कर उन्हें ले आइये॥३०॥

बचन काय मन मम गति जाही ❀ सपनेहुँ बूझिय बिपति कि ताही
सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना ❀ भरि आये जल राजिव नयना

सीताजी का दुःख सुनकर सुखके धाम प्रभुके कमलवत् नेत्रोंमें जल भर आया, वे विचारने लगे कि जो वचन शरीर और मनसे मेरी ही शरण हो, क्या उसे स्वप्नमें भी विपत्ति होनी चाहिये?

कह हनुमन्त बिपति प्रभु सोई ❀ जब तव सुमिरन भजन न होई
केतिक बात प्रभु यातुधानकी ❀ रिपुहि जीति आनिये जानकी

तब हनुमान्जीने कहा—हे प्रभो! विपत्ति तो वही है जब आप का स्मरण भजन न हो। हे प्रभो! राक्षसों की कितनी बात है? शत्रु को जीतकर जानकीजी को ले आइये॥

सुनु कपि तोहिं समान उपकारी ❀ नहिं कोउ सुर नर मुनि तनु धारी
प्रति उपकार करौं का तोरा ❀ सन्मुख होइ न सकत मन मोरा

सुनो हनुमान् ! तुम्हारे समान हितकारी देवता, मनुष्य, मुनि आदि कोई शरीरधारी नहीं है ।। मैं तुम्हारा क्या प्रति उपकार करूँ ? मेरा मन सम्मुख नहीं होता है ।

सुनु कपि तोहिं उरिन मैं नाहीं ❀ देखेउँ करि बिचार मन माहीं
पुनि पुनि कपिहिं चितव सुरत्राता ❀ नयन नीर पुलकित अति गाता

हे कपि ! सुनो, मैं तुमसे उऋण नहीं हूँ, यह मनमें विचारकर देख लिया ।। देवताओंके रक्षक रामजी बारम्बार हनुमान्जीको देखते रहे, नेत्रोंमें जलभर आया, शरीरअत्यन्त पुलकित हो गया ।।

दोहा—सुनि प्रभु वचन बिलोकि मुख, अति हरषित हनुमन्त ।
चरन परेउ प्रेमाकुल, त्राहि त्राहि भगवन्त ।। ३१ ।।

प्रभुके वचन सुनकर और उनके मुखकी ओर देखकर हनुमान्जी बड़े हर्षित हुए ।। प्रेमाकुल चरणोंमें पड़ गए और बोले, हे ईश्वर ! रक्षा करो, रक्षा करो ।। ३१ ।।

बार बार प्रभु चहत उठावा ❀ प्रेम मगन तेहि उठब न भावा
प्रभु कर पंकज कपिके सीसा ❀ सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा

प्रभुने बारम्बार उठाया, किन्तु प्रेममें मग्न हनुमान्जी उठना नहीं चाहते । तब प्रभुने अपना अभय हाथ उनके सिरपर रख दिया, उस दशाको स्मरणकर शिवजी मग्न हो गए ।।

सावधान मन करि पुनि शंकर ❀ लागे कहन कथा अति सुन्दर

शंकरजी फिर अपने मनको सावधान करके अति सुन्दर कथा कहने लगे ।।

कपि उठाइ प्रभु हृदय लगावा ❀ कर गहि परम निकट बैठावा
कहु कपि रावण पालित लंका ❀ केहि बिधि दहेउ दुर्ग अति बंका

श्रीरामचन्द्रजीने हनुमान्जीको उठा हृदयसे लगाकर और हाथ पकड़कर अपने निकट बैठा लिया । फिर पूछा कि हे हनुमान् ! रावणकी पाली हुई दुर्गम लंका को तुमने किस प्रकार जलाया ?

प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना ❀ बोला बचन बिगत अभिमाना
साखामृगकी बड़ि मनुसाई ❀ साखा ते साखा पर जाई

तब प्रभुको प्रसन्न जान हनुमान् अभिमान रहित यह वाणी बोले कि बानरोंकी बड़ी वीरता यही है कि वे एक शाखासे दूसरी शाखा पर कूद जाते हैं ।।

लाँघि सिन्धु हाटक पुर जारा ❀ निसिचरगन बधि बिपिन उजारा
सो सब तव प्रताप रघुराई ❀ नाथ न कछुक मोरि प्रभुताई

समुद्र लाँघकर सोनेका नगर जलाया और राक्षसोंको मारकर बागको उजाड़ दिया ।। हे रामजी ! यह सब आपका प्रताप है । हे नाथ ! इसमें कुछ मेरी प्रभुता नहीं है ।।

दोहा—ता कहँ प्रभु कछु अगम नहिं, जापर तुम अनुकूल ।
तव प्रताप बड़वानलहिं, जारि सकै खलु तूल ।। ३२ ।।

हे प्रभो ! उनको कुछ भी अगम नहीं है, जिनपर आप अनुकूल हैं ।। आपके प्रतापसे बड़वानलको तुच्छ रुई भी जला सकती है ।। ३२ ।।

नाथ भक्ति तव अतिसुखदायिनि ❀ देहु कृपा करि सो अनपायिनि
सुनि प्रभु परम सरल कपि बानी ❀ एवमस्तु तब कहेउ भवानी

हे नाथ ! आपकी भक्ति सब सुखको देनेवाली और परम पवित्र है, कृपाकर वही मुझे दीजिए । हे पार्वती ! तब हनुमान्‌जीकी बहुत सीधी वाणी सुनकर प्रभुने कहा—एवमस्तु ।।

उमा राम सुभाव जेहि जाना ❀ ताहि भजन तजि भाव न आना
यह संवाद जासु उर आवा ❀ रघुपतिचरण भगति सोइ पावा

हे पार्वती ! जिसने रामजीका स्वभाव जाना, उसे उनका भजन छोड़ और कुछ अच्छा नहीं लगता । यह संवाद जिसके हृदयमें आ जावे, मानो उसने रामजीकी भक्तिको पा लिया है ।।

सुनि प्रभु बचन कहहिं कपि वृन्दा ❀ जय जय जय कृपालु सुखकन्दा
तव रघुपति कपिपतिहिं बुलावा ❀ कहा चलै कर करहु बनावा

प्रभुके वचन सुनकर बानरगण बोले—हे सुखके समुद्र कृपालु ! आपकी जय हो, जय हो ।। तब रामजीने सुग्रीवको बुलाया और कहा कि अब चलनेकी व्यवस्था करो ।

अब विलम्ब केहि कारण कीजै ❀ तुरत कपिन्ह कहँ आयसु दीजै
कौतक देखि सुमन बहु बरषे ❀ नभते भवन चले सुर हरषे

अब किस कारणसे विलम्ब करते हो, तुरत बानरोंको आज्ञा दो । तब यह कौतुक देख कर देवतागण आकाशसे बहुत फूल बरसाकर प्रसन्न हो अपने-अपने स्थानको चले गये ।।

दोहा—कपिपति बेगि बुलायउ, आये यूथप यूथ ।
नाना बरण अतुल बल, बानर भालु बरूथ ।।३३।।

सुग्रीवने शीघ्रतासे यूथपतियोंके यूथोंको बुलाया । फिर अनेक रंगके और अपार बलवाले बन्दर तथा रीछोंके झुण्ड आ गये ।। ३३ ।।

प्रभु पद पंकज नावहिं सीसा ❀ गर्जहिं भालु महाबल कीसा
देखी राम सकल कपि सैना ❀ चितइ कृपाकरि राजिव नैना

प्रभुके कमलवत् चरणोंमें मस्तक झुकाकर वे महाबली रीछ बन्दर गरजने लगे ।। रामजीने सब बानरोंकी सेना देखी तो कृपा-दृष्टिसे उन्हें देखा ।।

रामकृपा बल पाय कपिन्दा ❀ भये पक्ष युत मनहुँ गिरिन्दा
हर्षि राम तब कीन्ह पयाना ❀ सगुन भये सुन्दर शुभ नाना

फिर तो रामजीके कृपा-बलको पाकर सब बानर ऐसे हो गये मानो पंख सहित पर्वत हैं ।। तब रामजीने प्रसन्न होकर गमन किया और अनेक प्रकारके सुन्दर शुभ शकुन हुए ।।

जासु सकल मंगलमय कीती ❀ तासु पयान सकुन यह नीती
प्रभु पयान जाना बैदेही ❀ फरकेउ बाम अंग कहि देही

जिनका यश कहना मङ्गलमय है उनके पयानमें शकुन होना यह एक नीति है। प्रभुजी का गमन करना सीताजीने जान लिया, तब उनके बायें अङ्ग फड़कने लगे ॥

जोइ जोइ सगुन जानकिहि होई ❀ असगुन भयउ रावणहिं सोई
चला कटक को बरणै पारा ❀ गर्जहिं बानर भालु अपारा

जो-जो शकुन जानकीजीको हुए वही अशकुन रावणको हुए ॥ सेना चली, उसका वर्णन कर कौन पार पा सकता है ? अपार बानर और रीछ गर्जने लगे ॥

नख आयुध गिरि पादप धारी ❀ चले गगन महि इच्छाचारी
केहरि नाद भालु कपि करहीं ❀ डगमगाहिं दिग्गज चिक्करहीं

नख ही जिनके आयुध हैं वे पर्वत और वृक्ष धारण करने वाले आकाश और पृथ्वीपर इच्छानुसार चलने लगे ॥ भालु और बंदर सिंहनाद करने तथा दिग्गज डगमगाने और चिग्घाड़ने लगे ।

छंद–चिक्करहिं दिग्गज डोल महि गिरि लोल सागर खरभरे ।
मन हरष दिनकर सोम सुर मुनि नाग किन्नर दुख टरे ॥
कटकटहिं मर्कट विकट भट बहु कोटि कोटिन्ह धावहीं ।
जय राम प्रबल प्रताप कोसलनाथ गुनगन गावहीं ॥४॥

दिशाओंके हाथी चिग्घाड़ने लगे, पृथ्वी डोलने लगी, पर्वत काँपने लगे, समुद्रमें खलबली पड़ गई। सूर्य चन्द्रमाके मनमें प्रसन्नता हुई, देवता, मुनि, नाग और किन्नरोंके दुःख दूर हुए, करोड़ों विकट बानर योधा कटकटाते और दौड़ते हैं, महा प्रतापी श्रीरामचन्द्रकी जय बोलते और गुणगान करते हैं ॥ ४ ॥

सहि सक न भार अपार अहिपति बार बार विमोहई ।
गहि दसन पुनि पुनि कमठ पृष्ठ कठोर सो किमि सोहई ॥
रघुबीर रुचिर पयान प्रस्थिति जानि परम सुहावनी ।
जनु कमठ खप्पर सर्पराज सो लिखत अविचल पावनी ॥५॥

उस बानरी सेनाके बड़े भारी बोझको शेषजी भी नहीं सह सकनेके कारण बारम्बार मूर्छित हुए और बारम्बार दाँतोंसे कछुएकी कठोर पीठको पकड़ते परन्तु उसपर दाँत नहीं गड़ते, रेखा बन जाती, वह रेखा कैसी शोभायमान लगती है, मानों शेषजी कछुएकी पीठको अचल जानकर उसपर श्रीरघुनाथजीके सुन्दर यशकी प्रशस्ति लिख रहे हैं ॥ ५ ॥

दोहा–यहि बिधि जाइ कृपानिधि, उतरे सागर तीर ।
जहँ तहँ लागे खान फल, विपुल भालु कपि बीर ॥ ३४ ॥

इस प्रकार कृपासिंधु श्रीरामजी समुद्रके किनारे जाकर उतरे और जहाँ-तहाँ बहुतसे रीछ और बीर बानर फल खाने लगे ॥३४॥

उहाँ निसाचर रहहिं ससंका ❀ जबते जारि गयउ कपि लंका
निज निज गृह सब करहिंबिचारा❀ नहिं निसिचर कुल कर उबारा

वहाँ लंकामें तबसे राक्षस डरते रहते थे जबसे हनुमान्‌जी लंका भस्म कर गये ।। अपने-अपने घरोंमें विचार करने लगे कि अब राक्षसोंके वंशज उबर नहीं सकते ।।

जासु दूत बल बरनि न जाई ❁ तेहि आये पुर कवनि भलाई
दूतिन्ह सन सुनि पुरजन बानी ❁ मन्दोदरी अधिक अकुलानी

जिसके दूतका बल कहा नहीं जाता फिर उसके आनेपर नगरकी कौन भलाई होगी ? जब यह बात दूतियों के मुखसे मन्दोदरी को ज्ञात हुई तो वह बहुत व्याकुल हो गई ।।

रहसि जोर करि पति पद लागी ❁ बोली बचन नीति रस पागी
कन्त कर्ष हरिसन परिहरहू ❁ मोर कहा अति हित हिय धरहू

वह हाथ जोड़कर पतिके चरणोंमें गिर पड़ी और नीति-रससे पगी हुई वाणीमें बोली, हे कन्त ! भगवान्‌से बैर त्याग दीजिए और मेरा यह अत्यन्त हितकारी कथन हृदयमें धारण कीजिए ।।

समुझत जासु दूत की करणी ❁ श्रवहिं गर्भ रजनीचर घरणी
तासु नारि निज सचिव बुलाई ❁ पठवहू कन्त जो चहहु भलाई

भला, जिसके दूतकी करनी सुनकर राक्षसियोंके गर्भ गिर जाते हैं, यदि आप अपनी भलाई चाहते हैं तो उसकी स्त्रीको अपने मत्री द्वारा बुलाकर भेज दीजिए ।।

तव कुल कमल विपिन दुखदाई ❁ सीता सीत निसा सम आई
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हे ❁ हित न तुम्हार सम्भु अज कीन्हे

क्योंकि तुम्हारे कुल-कमलको दुखदाई सीता शीत कालकी रात्रिके समान आई है ।। हे नाथ ! सुनो, सीताको बिना दिए शिव और ब्रह्माजीसे भी तुम्हारा भला नहीं होगा ।।

दोहा—राम बाण अहिगण सरिस, निकर निसाचर भेक ।
जब लगि ग्रसत न तबहिं लगि, जतन करहु तजि टेक ।।३५।।

श्रीरामजीके बाण विषधर सर्पोंके समान और सब राक्षस मेढकके समान हैं । जब तक न ग्रसें तबतक हठ छोड़कर इनसे बचनेका उपाय कर लो अर्थात् जानकीजीको देकर रामजीसे मिलो ।।३५।।

श्रवन सुनत सठ ताकी बानी ❁ बिहँसा जगत बिदित अभिमानी
सभय स्वभाव नारि कर साँचा ❁ मंगल माँहि अमंगल राँचा
जो आवै मर्कट कटकाई ❁ जियहिं बिचारे निसिचर खाई

मन्दोदरीकी वाणी कानोंसे सुनते ही जगद्विख्यात अभिमानी रावण हँसा तथा बोला, सच है, स्त्रीका स्वभाव डरपोंक होता है, वे मंगलमें अमङ्गल रचती हैं । यदि बन्दरोंकी सेना आवेगी तो बिचारे राक्षस उन्हें खा-खाकर जियेंगे ।।

कम्पहिं लोकप जाकी त्रासा ❁ तासु नारि भय कर बड़ि हाँसा
अस कहि बिहँसि ताहि उर लाई ❁ चलेउ सभा ममता अधिकाई

जिसके भयसे लोकपाल काँपते हैं, उसकी स्त्री होकर भी भय करे तो बड़ी हँसी की बात है । ऐसे कहकर रावण उसको हृदयसे लगाकर बड़े अहंकारके साथ सभाको चला गया ।।

मन्दोदरी हृदय करि चिन्ता ❁ भयउ कन्त पर विधि विपरीता
बैठेउ सभा खबरि अस पाई ❁ सिन्धु पार सेना सब आई

तब मन्दोदरीने अपने हृदयमें विचार किया कि पति पर विधाता ही उलटा हो गया है। सभामें बैठते ही रावणने यह खबर पाई कि सब सेना समुद्रके पार आ गई ॥

बूझेसि सचिव उचित मत कहहू ❁ ते सब हँसे मष्ट करि रहहू
जितेहु सुरासुर तब श्रम नाहीं ❁ नर बानर केहि लेखे माहीं

तब रावण मन्त्रियोंसे विचार पूछा कि जो उचित हो सो कहो। यह सुनकर वे हँसे और बोले कि चुप रहो, जब देवता और असुर जीत लिए तब ये नर और बानर किस गिनतीमें हैं ?

दोहा—सचिव वैद्य गुरु तीनि जौं, प्रिय बोलहिं भय आस ।
राज धर्म तन तीनि कर, होइ बेग ही नास ॥३६॥

मन्त्री, वैद्य और गुरु ये तीनों यदि भयके मारे ठकुरसुहाती कहें तो राज्य, शरीर और धर्म, इन तीनोंका शीघ्र ही नाश हो जाता है ॥ ३६ ॥

सोइ रावण कहँ बनी सहाई ❁ अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई
अवसर जानि विभीषण आवा ❁ भ्राता चरण सीस तेहि नावा

वही सहाय रावणको आकर बनी है कि मारे भयके मंत्रीगण सुना-सुनाकर स्तुति करते हैं ॥ तब उचित समय जानकर विभीषण भी वहाँ आए और भाईके चरणोंमें मस्तक नवाये ॥

पुनि सिर नाइ बैठि निज आसन ❁ बोला बचन पाइ अनुसासन
जौं कृपालु पूछहु मोहिं बाता ❁ मति अनुरूप कहौं हित ताता

फिर सिर नवाकर अपने आसन पर बैठ और आज्ञा पाकर यह बोले—हे कृपालु ! जो मुझसे बात पूछते हो तो हे तात ! मतिके अनुसार हितकी बात कहता हूँ ॥

जौं आपन चाहहु कल्याना ❁ सुजस सुमति सुभगति सुख नाना
तौ पर नारि लिलार गोसाईं ❁ तजौ चौथि चन्दा की नाईं

जो अपना कल्याण, संसारमें सुन्दर कीर्ति, अच्छी गति और अनेक प्रकारसे सुख चाहते हो तो हे गुसाइं ! पराई स्त्रीके मस्तकका दर्शन चौथकी चन्द्रमाकी तरह त्याग दो ॥

चौदह भुवन एक पति होई ❁ भूत द्रोह तिष्ठै नहिं सोई
गुण सागर नागर नर जोऊ ❁ अल्प लोभ भल कहै न कोऊ

चाहे कोई चौदहों भुवनका एकमात्र स्वामी ही क्यों न हो, पर प्राणियोंका द्रोही बनकर नहीं रह सकता ॥ चाहे वह गुणोंका सागर हो, यदि उसमें अल्पमात्र भी लोभ आ जाय तो कोई भला नहीं कहता ॥

दोहा—काम क्रोध मद लोभ सब, नाथ नरक कर पन्थ ।
सब तजि श्रीरघुबीर पद, भजहु कहहिं सदग्रन्थ ॥ ३७ ॥

हे नाथ ! काम, क्रोध, मद और लोभ ये सब नरकके मार्ग हैं, इन सबको त्यागकर श्रीरामचन्द्रजीके चरणोंका भजन करना चाहिए, ऐसा ही सच्चे ग्रन्थोंका मत है ।। ३७ ।।

तात राम नहिं नर भूपाला ❀ भुवनेश्वर कालहुँ कर काला
ब्रह्म अनामय अज भगवन्ता ❀ व्यापक अजित अनादि अनन्ता

हे तात ! श्रीरामचन्द्रजी राजा नहीं हैं, वे समस्त भूमण्डलके ईश्वर और कालके भी काल हैं ।। वे ब्रह्म, अनामय, अज, भगवान व्यापक अनादि और अनन्त हैं ।।

गो द्विज धेनु देव हितकारी ❀ कृपासिंधु मानुष तन धारी
जन रंजन भंजन खल ब्राता ❀ वेद धर्म रक्षक सुर-त्राता

उन कृपासिन्धुने गौ, ब्राह्मण और देवताओंका हित करनेके लिए ही मानव-शरीर धारण किया है ।। वे दुष्टोंका हनन करनेवाले तथा वेद व देवताओंके और धर्मके रक्षक हैं ।।

ताहि बैर तजि नाइय माथा ❀ प्रणतारति भंजन रघुनाथा
देहु नाथ प्रभु कहँ बैदेही ❀ भजहु राम बिनु हेतु सनेही

उनसे वैर त्यागकर शिर नवाइये, वे श्रीरामचन्द्रजी अपने भक्तोंका दुःख दूर करनेवाले हैं ।। हे नाथ ! उन प्रभुकी स्त्री सीताको देकर परम स्नेही श्रीरामचन्द्रजीका भजन कीजिये ।।

सरण गये प्रभु ताहु न त्यागा ❀ विश्व द्रोहकृत अघ जेहि लागा
जासु नाम त्रय ताप नसावन ❀ सोइ प्रभु प्रगट समुझु जिय रावन

वे प्रभु ऐसे दयालु हैं कि जिसे विश्व-द्रोहका भी पाप लगा हो उसे भी शरणागत होनेपर नहीं त्यागते हैं ।। हे रावण ! जिनका नाम तीनों तापोंका हरण करनेवाला है, वे ही प्रकट हुए हैं ।।

दोहा—बार बार पद लागहूँ, विनय करौं दससीस ।
परिहरि मान मोह मद, भजहु कोसलाधीस ।।३८।।

हे रावण ! मैं बार-बार तुम्हारे पाँव पड़ता हूँ कि मान, मोह व मदको छोड़कर उन कोशलाधीश श्रीरामचन्द्रजीका भजन करो ।। ३८ ।।

मुनि पुलस्त्य निज सिष्य सन, कहि पठई यह बात ।
तुरत सो मैं तुम सन कही, पाइ सुअवसर तात ।।३९।।

पुलस्त्य मुनिने अपने एक शिष्यसे यह बात कहला भेजी है । सो हे तात ! उसे अवसर पाकर मैंने तुमसे कही है ।। ३९ ।।

माल्यवन्त अति सचिव सयाना ❀ तासु बचन सुनि अति सुखमाना
तात अनुज तव नीति विभूषण ❀ सोइ उर धरहु जो कहत विभीषण

जब माल्यवन्त मन्त्रीने यह बात सुनी तो उसने अत्यन्त सुख माना और कहा—हे तात ! तुम्हारा अनुज नीतिका विभूषण है, अतः विभीषण जो कहता है वह हृदयमें धारण करो ।।

रिपु उतकर्ष कहत सठ दोऊ ❀ दूरि न करहु इहाँ ते कोऊ

माल्यवन्त गृह गयउ बहोरी ❀ कहत बिभीषरग पुनि कर जोरी

तब रावण रिसाकर बोला--ये दोनों ही मूर्ख हैं, जो शत्रुकी प्रशंसा करते हैं, कोई इन्हें यहाँसे दूर हटाओ ।। माल्यवन्त तो घर चला गया और विभीषण हाथ जोड़कर पुनः कहने लगे ।।

सुमति कुमति सबके उर रहहीं ❀ नाथ पुराण निगम अस कहहीं
जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना ❀ जहाँ कुमति तहँ बिपति निधाना

हे नाथ! सुमति और कुमति तो सबके हृदयमें होता है परन्तु जहाँ सुमति है वहाँपर ही सम्पत्ति होती है और जहाँ कुमति होती है वहाँ विपत्ति है, यही वेद और पुराण भी कहते हैं ।।

तव उर कुमति बसी बिपरीती ❀ हित अनहित जानहु रिपु प्रीती
कालरात्रि निसिचर कुल केरी ❀ तेहि सीता पर प्रीति घनेरी

सो तुम्हारे हृदयमें कुमति बसी है इसीसे तुम अपने हितको भी शत्रु जान रहे हो ।। तभी तो निशाचरोंके लिए जो सीता कालरात्रिके समान है, उस सीतापर इतनी घनी प्रीति है ।।

दोहा–तात चरण गहि मागउँ, राखहु मोर दुलार ।
सीता देहु राम कहँ, अति हित होय तुम्हार ।।४०।।

हे तात ! मैं चरण पकड़कर आपसे माँगता हूँ, मेरा यह प्रेम रखो कि सीताको श्रीरामचन्द्रजीके हवाले करो--इसीमें तुम्हारा कल्याण होगा ।। ४० ।।

बुध पुराग श्रुति सम्मत बानी ❀ कही बिभीषण नीति बखानी
सुनत दसानन उठा रिसाई ❀ फल तोहिं निकट मृत्यु अब आई

विभीषणने वही बात कही जो कि वेद और पुराणोंकी सम्मति है । परन्तु उसे सुनकर रावण जल उठा और बोला—रे दुष्ट ! अब तेरी मृत्यु निकट आ गई है ।।

जियसि सदा सठ मोर जियावा ❀ रिपुकर पक्ष मूढ़ तोहिं भावा
कहसि न खल अस को जगमाहीं ❀ भुजबल जाहि जिता मैं नाहीं

मूर्ख कहींका, मेरा जिलाया तू जीता है और शत्रु का पक्ष करता है। रे दुष्ट ! भला यह तो बतला कि संसारमें ऐसा कौन है कि जिसे मैंने अपनी भुजाओंसे न जीता हो ।।

मम पुर बसि तपिसन सन प्रीती ❀ सठ मिलु जाय ताहि कहु नीती
अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा ❀ अनुज गहे पद बारहिं बारा

मेरे पुरमें तो बसता है और तपस्वियोंसे प्रेम करता है, रे शठ, उन्हींसे मिलकर ऐसी नीति कहो । ऐसा कहकर लात मारा तो विभीषण बारम्बार उसके चरण पकड़ने लगा ।।

उमा संत की यही बड़ाई ❀ मंद करत जो करै भलाई
तुम पितु सरिस भले मोहिं मारा ❀ राम भजे हित होय तुम्हारा

हे पार्वती ! सन्तोंकी यही महिमा है कि वे दुष्टकी भलाई ही करें ।। आप तो पिताके ही समान हैं, मुझे भले ही मारें–परन्तु श्रीरामचन्द्रजीका भजन करनेमें ही आपकी भलाई है ।।

सचिव संग लै नभ पथ गयऊ ❀ सबहिं सुनाय कहत अस भयऊ

यह कह विभीषण अपने मंत्री को साथ ले आकाश-मार्ग से चले और सबको सुनाकर यह कहते गये कि— ।।

दोहा—राम सत्य संकल्प प्रभु, सभा काल बस तोरि।
मैं रघुनायक सरण अब, जाउँ देहु जनि खोरि ।।४१।।

रामजी का राक्षसोंके मारने का संकल्प सत्य है—तेरी सभा कालके वश है। अब मुझे दोष न देना, क्योंकि अब मैं रामजी की शरण में जा रहा हूँ ।। ४१ ।।

अस कहि चला विभीषण जबहीं ❁ आयुहीन भये निसिचर तबहीं
साधु अवज्ञा तुरत भवानी ❁ कर कल्यान अखिल कर हानी

ऐसा कहकर विभीषण ज्योंही चला कि उसी क्षण वे राक्षस आयुहीन हो गये। हे पार्वती! सज्जनोंकी अवज्ञाका यह फल है कि वह उसी क्षण समस्त कल्याणोंकी हानि कर देता है ।।

रावन जबहिं विभीषन त्यागा ❁ भयउ विभव बिनु तबहिं अभागा
चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं ❁ करत मनोरथ बहु मन माहीं

रावणने ज्योंही विभीषणका त्याग किया, त्योंही वह अभागा ऐश्वर्यहीन हो गया। इधर विभीषण प्रसन्न मनसे अनेक मनोरथों को विचारते हुए रामजी के पास चले ।।

देखिहउँ जाइ चरन जल जाता ❁ अरुन मृदुल सेवक सुख दाता
जे पद परसि तरी ऋषि नारी ❁ दण्डक कानन पावन कारी

आज चलकर कमल के समान उन कोमल चरणोंको देखूँगा कि जिन चरणों का स्पर्श कर अहिल्या तर गई और जो चरण दण्डक वनको पवित्र करने वाले हैं ।।

जे पद जनक सुता उर लाये ❁ कपट-कुरंग संग धरि धाये
हर उर-सर-सरोज-पद जोई ❁ अहो भाग्य मैं देखिहैं सोई

जिन चरणोंको सीताजी अपने हृदयमें लगाये रहती हैं, जो कपट-मृगके साथ दौड़े थे ।। और जिन चरणों को महादेव जी धारण किए हैं—बड़े भाग्य से आज मैं उन्हें देखूँगा ।।

दोहा—जिन पायन की पादुका, भरत रह मन लाय।
ते पद आजु विलोकिहौं, इन नयनन अब जाय ।।४२।।

जिन चरणों की पादुका को भरतजी मनमें लगाये रहते हैं। आज मैं जाकर उन्हीं चरणों को अपनी इन आँखों से अब देखूँगा ।। ४२ ।।

इहि विधि करत सप्रेम विचारा ❁ आयउ सपदि सिंधु एहि पारा
कपिन विभीषन आवत देखा ❁ जाना कोउ रिपु दूत विसेषा

इस प्रकार प्रेमयुक्त विचार करते हुए विभीषण समुद्र के पार आये ।। इधर जब बानरोंने विभीषण को आते देखा तो समझे कि कोई शत्रु पक्षका दूत आ रहा है ।।

ताहि राखि कपिपति पहँ आये ❁ समाचार सब ताहि सुनाये

कह सुग्रीव सुनहु रघुराई ❀ आवा मिलन दसानन भाई

तब उसे रोककर सुग्रीवके पास आए तो सुग्रीव ने कहा—हे रामजी ! रावणका भाई विभीषण आपसे मिलने आया है ।।

कह प्रभु सखा बूझिये काहा ❀ कहेउ कपीस सुनिय नर नाहा
जानि न जाइ निसाचर माया ❀ कामरूप केहि कारन आया

तब प्रभुने कहा--हे मित्र सुनो ! यह पूछो क्यों आया है ? तब सुग्रीवने कहा--हे रामचन्द्रजी ! निशाचरोंकी माया जानी नहीं जाती, पता नहीं यह काम रूप किस कारण से आया है ।।

भेद हमार लेन सठ आवा ❀ राखिय बाँधि मोहिं अस भावा
सखा नीति तुम नीकि बिचारी ❀ मम प्रण सरनागत भय हारी

यह मूर्ख हमारा भेद लेने के लिए आया है अतः इसे बाँध लिया जाय, यही अच्छा है । रामचन्द्रजीने कहा, हे मित्र ! यह तो अच्छा है किन्तु मेरा यह प्रण है कि शरणागतको अभय करें ।।

सुनि प्रभु बचन हर्ष हनुमाना ❀ सरनागत बत्सल भगवाना

प्रभुके इस वचनको सुन हनुमान्‌जी हर्षित हो गए कि, भगवान् शरणागत-वत्सल हैं ।।

दोहा—सरनागत कहँ जे तजहिं, निज अनहित अनुमानि ।
ते नर पामर पाप मय, तिन्हहिं बिलोकत हानि ।।४३।।

जो अपने अनभलका अनुमान करके शरणागत का त्याग कर देते हैं, वे पामर मनुष्य पापमय हैं, उन्हें देखने में हानि होती है ।। ४३ ।।

कोटि बिप्र बध लागहिं जाहू ❀ आये सरन तजौं नहिं ताहू
सन्मुख होय जीव मोहिं जबहीं ❀ जन्म कोटि अघ नासौं तबहीं

चाहे किसीको करोड़ों ब्रह्महत्या क्यों न लगी हो, तो भी शरणमें आने पर मैं उसे नहीं त्यागता । यह जीव ज्योंही मेरे सम्मुख होता है, त्योंही मैं उसके करोड़ों जन्मोंके पापका नाश कर देता हूँ ।।

पापवन्त कर सहज सुभाऊ ❀ भजन मोर तेहि भाव न काऊ
जो पै दुष्ट हृदय सो होई ❀ मोरे सनमुख आव कि सोई

किन्तु पापियों का तो यह सहज स्वभाव है कि, उन्हें मेरा भजन अच्छा नहीं लगता, जो दुष्ट हृदय का होगा, वह क्या मेरे सम्मुख आ सकता है ? ।।

निर्मल मन जन सो मोहिं पावा ❀ मोहिं कपट छल छिद्र न भावा
भेद लेन पठवा दससीसा ❀ तदपि न कछु भय हानि कपीसा

किन्तु जिसका मन निर्मल है, वह मुझे पाता है, मुझे छल, छिद्र और कपट नहीं भाता । यदि रावणने इसे भेद लेनेको ही भेजा होगा तो भी कोई हानि नहीं है ।।

जग महँ सखा निसाचर जेते ❀ लछमन हनहिं निमिष महँ तेते
जो सभीत आवा सरनाई ❀ रखिहौं ताहि प्राण की नाईं

हे मित्र! संसारमें जितने राक्षस हैं, उन सबको यह लक्ष्मण एक घड़ीमें मार सकते हैं और यदि यह भयभीत होकर शरणमें आ गया है तो मैं इसे प्राण के समान रखूंगा ।।

दोहा–उभय भाँति लै आवहु, हँसि कह कृपानिधान।
जय कृपाल कहि कपि चले, अंगदादि हनुमान ।।४४।।

उभय भाँतिसे उसको मेरे पास लाओ—ऐसा हँस के कृपानिधानने कहा। तब कृपालु रामचन्द्रजीकी जय हो, ऐसा कहकर अंगद और हनुमान् चले ।। ४४ ।।

सादर तेहि आगे करि बानर ❀ चले जहाँ रघुपति करुनाकर
दूरहिं ते देखे दोउ भ्राता ❀ नयनानन्द दान के दाता

तब उसको सप्रेम आगे करके बन्दर चले कि, जहाँ सुखके सागर रामजी विद्यमान थे।। तब दूर ही से विभीषण ने आनन्द के देनेवाले राम-लक्ष्मण दोनों भाइयों को देखा ।।

बहुरि राम छविधाम विलोकी ❀ रह्यो ठिठकि इक टक पल रोकी
भुज प्रलम्ब कंजारुण लोचन ❀ श्यामल गात प्रणत भय मोचन

फिर शोभाके धाम रामजीको देखकर एकटक पाँव रोककर खड़ा हो गया, देखा तो लम्बी भुजायें, कमलवत् नेत्र और श्याम शरीर भयके नाश करनेवाले विराजमान हैं ।।

सिंहकन्ध आयत उर सोहा ❀ आनन अमित मदन मन मोहा
नयन नीर पुलकित अति गाता ❀ मन धरि धीर कही मृदु बाता

कहरि-कंध चौड़ी छाती शोभायमान है, मुखकी शोभा कामदेवके मनको मोहित करती है।। तब नेत्रोंमें जलभरकर पुलकित शरीर हो, मनमें धीरज रखकर विभीषणने मृदु शब्दोंमें कहा ।।

नाथ दसानन कर मैं भ्राता ❀ निसिचर बंस जनम सुरत्राता
सहज पाप प्रिय तामस देहा ❀ यथा उलूकहिं तम पर नेहा

हे नाथ! मैं निशाचर वंशमें जन्म लेनेवाले रावण का भाई हूँ। जो सहज ही पाप-प्रिय तामसी शरीरवाला वैसा ही पापप्रिय हूँ कि, जैसे उल्लूको अँधेरा प्रिय होता है।।

दोहा–श्रवण सुयस सुनि आयउँ, प्रभु भंजन भव भीर।
त्राहि त्राहि आरति हरन, सरन सुखद रघुबीर ।।४५।।

सो अपने कानोंसे आपका सुयश सुनकर हे भवभंजन प्रभो! मैं आपके समीप आया हूँ। हे शरणागत रक्षक रामजी! त्राहि माम्, त्राहि माम् ।। ४५ ।।

अस कहि करत दंडवत देखा ❀ तुरत उठे प्रभु हर्ष विसेषा
दीन बचन सुनि प्रभु मनभावा ❀ भुज विसाल गहि हृदय लगावा

जब विभीषणको ऐसा कहते और दण्डवत् करते हुए प्रभुने देखा तो तुरन्त ही विशेष हर्षित हो उठे। दीन वचन सुन प्रभुको अच्छे लगे, उन्होंने उसे उठाकर हृदयसे लगा लिया ।।

अनुज सहित मिलि ढिग बैठारी ❀ बोले बचन भगत भय हारी

कहु लंकेस सहित परिवारा ❀ कुसल कुठाहर बास तुम्हारा

तब लक्ष्मण सहित विभीषणसे मिलकर उसे अपने निकट बैठा लिए और फिर भक्त-भयहारी प्रभु बोले--हे लंकेश ! कहो परिवार सहित अच्छे तो हो, तुम्हारा बास तो कुठाँव में है ।।

खल मंडली बसहु दिन राती ❀ सखा धर्म निबहै केहि भाँती
मैं जानौं तुम्हारि सब रीती ❀ अतिनय निपुण न भाव अनीती

खलमण्डलीमें दिनरात बसते हो, हे सखा ! तुम्हारा धर्म किस प्रकार निभता है ? तुम्हारी सब रीतियोंको मैं जानता हूँ कि, अत्यन्त नीति-निपुण हो और तुम्हें अनीति नहीं भाती ।।

बरु भल बास नरक कर ताता ❀ दुष्ट संग जनि देइ विधाता
अब पद देखि कुसल रघुराया ❀ जो तुम्ह कीन्हि जानि जनदाया

हे तात ! नरकका बास भले ही मिले, परन्तु विधाता दुष्टकी संगति न देवे ।। हे रामजी ! अब आपके चरणोंको देखकर कुशल है कि जो आपने मुझे अपना जन जानकर दया की है ।

दोहा—तब लगि कुसल न जीव कहँ, सपनेहुँ मन विश्राम ।
जब लगि भजत न रामको, सोकधाम तजि काम ।।४६।।

हे प्रभो ! इस जीवकी तबतक कुशल नहीं है और मनमें विश्राम भी तबतक नहीं है कि, जबतक वह शोकके हर्त्ता आप (रामजी) का भजन नहीं करता ।।४६।।

तब लगि बसत हृदय खल नाना ❀ लोभ मोह मत्सर मद माना
जब लगि उर न बसत रघुनाथा ❀ धरे चाप सायक कटि भाथा

तभी तक हृदयमें लोभ, मोह, मत्सर और मद अनेक दुष्ट बसते हैं कि जब तक धनुष-बाण लिये आप श्रीरामचन्द्रजी हृदयमें नहीं बसते ।।

ममता तिमिर तरुण अँधियारी ❀ राग द्वेष उलूक सुखकारी
तब लगि बसत जीव उर माहीं ❀ जब लगि प्रभु प्रताप रवि नाहीं

ममतारूपी रात्रिका घोर अंधकार और राग-द्वेष उलूकों का बास इस जीव के हृदयमें तभी तक रहता है कि जब तक प्रभुरूपी प्रताप सूर्य नहीं उगता ।।

अब मैं कुसल मिटे भय भारे ❀ देखि राम पद कमल तुम्हारे
तुम कृपालु जापर अनुकूला ❀ ताहि न व्याप त्रिविध भवसूला

किन्तु हे रामजी ! अब तो आपके चरणोंको देखकर सकुशल हूँ और मेरा भारी भय मिट गया ।। हे कृपालु ! आप जिसपर अनुकूल होते हैं उसे त्रिविध ताप नहीं व्यापते ।।

मैं निसिचर अति अधम सुभाऊ ❀ सुभ आचरण कीन्ह नहिं काऊ
जासु रूप मुनि ध्यान न आवा ❀ सो प्रभु हर्षि हृदय मोहिं लावा

मैं अत्यन्त अधम स्वभावका राक्षस हूँ और मैंने कभी कोई शुभ आचरण नहीं किया है ।। जिस प्रभुके रूपको मुनि लोग ध्यानमें भी नहीं पाते, उन्होंने हर्षित होकर मुझे हृदयसे लगाया ।।

दोहा—अहोभाग्य मम अमित अति, रामकृपा सुखपुञ्ज ।
देखेउँ नयन बिरंचि सिव, सेव्य युगल पदकञ्ज ॥४७॥

मेरा अत्यन्त अहोभाग्य है कि, उन कृपाके सागर सुखके पुंज रामजीके कमल चरणों को जो ब्रह्मा, विष्णु और महेशसे सर्वदा सेवित हैं—आज मैंने इन नेत्रोंसे देखा है ॥४७॥

सुनहु सखा निज कहौं सुभाऊ ❀ जान भुसुण्डि सम्भु गिरिजाऊ
जो नर होय चराचर द्रोही ❀ आवै सभय सरण तकि मोहीं

हे विभीषण ! सुनो, मैं अपना स्वभाव कहता हूँ जिसको काकभुशुण्डि, महादेव और पार्वती जानती हैं, यदि वह मनुष्य चराचरका भी द्रोही हो और मुझे देखकर शरणमें आवे ॥

तजि मद मोह कपट छल नाना ❀ करौं सद्य तेहि साधु समाना
जननी जनक बन्धु सुत दारा ❀ तन धन भवन सुहृद परिवारा

तो उसके मद, मोह छल-कपट रहित हो आनेपर मैं उसका आदर साधुके ही समान करता हूँ ॥ माता, पिता, भाई, पुत्र, स्त्री, धन, घर, मित्र और परिवार ॥

सबकी ममता ताग बटोरी ❀ मम पद मनहिं बाँधि बटि डोरी
समदर्सी इच्छा कछु नाहीं ❀ हर्ष सोक भय नहिं मन माहीं

इन सबकी प्रीतिका तागा बटोर, मनमें उसकी डोरी बटकर मेरे चरणोंमें बाँध समदर्शी हो और जिसे कुछ इच्छा न हो, जो हर्ष, शोक और भयको मनमें न रखता हो ॥

अस सज्जन मम उर बस कैसे ❀ लोभी हृदय बसत धन जैसे
तुम सारिखे संत प्रिय मोरे ❀ धरौं देह नहिं आन निहोरे

ऐसे सज्जन मेरे हृदयमें कैसे बसते हैं कि जैसे लोभीके हृदयमें धन बसता है ॥ और तुम्हारे जैसे संतके लिए ही तो मैं शरीर धारण करता हूँ, नहीं तो मुझे दूसरा निहोरा ही क्या है ॥

दोहा—सगुण उपासक परम हित, निरत नीति दृढ़ नेम ।
ते नर प्राण समान मोहिं, जिनके द्विज पद प्रेम ॥४८॥

सज्जनोंके पक्षमें सगुण उपासना ही हितकारी है जो अपने पक्के नियममें दृढ़ तत्पर हैं, और जो सर्वदा ब्राह्मणोंके चरणोंमें प्रेम करते हैं वे प्राणोंके समान ही मुझे प्रिय हैं ॥४८॥

सुनु लंकेस सकल गुन तोरे ❀ ताते तुम अतिसय प्रिय मोरे
राम बचन सुनि बानर यूथा ❀ सकल कहहिं जय कृपा बरूथा

हे लंकेश ! सुनो, वे सब गुण तुममें विद्यमान हैं, इससे तुम मुझको अत्यन्त ही प्रिय हो ॥ तब बानरोंके समूह एक साथ मिलकर कहने लगे कि कृपाके समूह रामजीकी जय हो ! ॥

सुनत विभीषण प्रभु की बानी ❀ नहिं अघात श्रवणामृत सानी
पद अम्बुज गहि बारहिं बारा ❀ हृदय समात न प्रेम अपारा

प्रभुके ऐसे वचन विभीषणके कानोंमें अमृतके समान लगे, वे प्रेमसे नहीं अघाते। इससे वारम्बार प्रभुके चरणोंको पकड़कर हृदयमें लगाते, वह अधिक प्रेम हृदयमें नहीं समाता ॥

सुनहु देव सचराचर स्वामी ❀ प्रणतपाल उर अन्तर्यामी
उर कछु प्रथम बासना रहेऊ ❀ प्रभु पद प्रीति सरित सो बहेऊ

विभीषण बोले--हे अन्तर्यामी! आप चराचर जगत्के स्वामी हैं सुनिए, मेरे हृदयमें कुछ पूर्वकी बासना थी जो अब प्रभु के चरणोंकी प्रीतिरूपी सरिता (नदी) में बह गई ॥

अबकृपालुनिजभगतिजो पावनि❀ देहु दया करि सिव मन भावनि
एवमस्तु कहि प्रभु रणधीरा ❀ माँगा तुरत सिन्धु कर नीरा

सो हे कृपालु! अब कृपा करके अपनी वही पवित्र भक्तिजो शिव-पार्वतीके मनको अच्छी लगती है, मुझे दीजिये। तब संग्राममें धीर प्रभुने एवमस्तु कहकर समुद्रका जल माँगा ॥

यदपि सखा तोहिं इच्छा नाहीं ❀ मम दर्शन अमोघ जग माहीं
अस कहि राम तिलक तेहि सारा❀ सुमन वृष्टि नभ भई अपारा

हे सखा! यद्यपि तुमको कुछ इच्छा नहीं है फिर भी संसारमें मेरा दर्शन अमोघ है ॥ ऐसा कहकर श्रीरामजीने विभीपणको तिलक किया, देवताओंने आकाशसे फूलोंकी वर्षा की ॥

दोहा—रावन क्रोध अनल जनु, श्वास समीर प्रचण्ड।
जरत विभीषण राखेउ, दीन्हेउ राज अखण्ड ॥ ४९ ॥

रावणका क्रोध मानो अग्निके समान है और श्वास प्रचण्ड वायु है, उससे जलते हुए विभीपणकी रक्षा की और अखण्ड राज्य दिया ॥ ४९ ॥

जो सम्पति सिव रावनहिं, दीन्ह दिये दसमाथ।
सोइ संपदा विभीषनहिं, सकुच दीन्ह रघुनाथ ॥ ५० ॥

जो संपदा महादेवजीने रावणको दी जब कि रावणने अपने दसों शिर काटकर शिवजीको अर्पित कर दिए थे॥ वही सम्पदा आज रामजीने विभीषणको संकोचके साथ दी ॥५०॥

अस प्रभु छाँड़ि भजहिं जे आना ❀ ते नर पशु बिनु पूँछ विषाना
निजजन जानि ताहि अपनावा ❀ प्रभु स्वभाव कपि कल मन भावा

तब ऐसे प्रभुको छोड़कर जो दूसरोंको भजते हैं वे मनुष्य बिना पूंछ और बिना सींगके पशु हैं। अपना जानकर प्रभुने उसे अपना लिया, उनका स्वभाव समस्त बानरोंको अच्छा लगा ॥

पुनि सर्वज्ञ सर्व उर बासी ❀ सर्व रूप सब रहित उदासी
बोले बचन नीति प्रतिपालक ❀ कारण मनुज दनुज कुल घालक

फिर सर्वज्ञ, सबके मनमें वास करनेवाले और चराचरमें व्याप्त सबसे परे और उदासीन रहनेवाले, नीतिके पालक और राक्षसोंके संहारकर्ता प्रभु यह वचन बोले—॥

सुनु कपीस लंकापति बीरा ❀ केहि बिधि तरिय जलधि गंभीरा

संकुल उरग मकर झष जाती ❀ अति अगाध दुस्तर सब भाँती

हे सुग्रीव! और हे लंका के राजा वीर विभीषण! सुनो, किस प्रकारसे समुद्र को पार किया जाय। इसमें तो सर्प, मगर और अनेक जातिकी मछलियां हैं तथा यह बड़ा ही दुस्तर और अगाध है।।

कह लंकेस सुनहु रघुनायक ❀ कोटि सिन्धु सोषक तव सायक
यद्यपि तदपि नीति अस गाई ❀ विनय करिय सागर सन जाई

तब विभीषणने कहा--हे रघुकुलके स्वामी! आप के बाण करोड़ों समुद्रको सोख सकते हैं।। तथापि यह नीति कह रही है कि आप जाकर समुद्र से प्रार्थना कीजिये।।

दोहा—प्रभु तुम्हार कुलगुरु जलधि, कहहिं उपाय बिचारि।
बिनु प्रयास सागर तरहिं, सकल भालु कपि धारि।।५१।।

हे प्रभो! समुद्र आपके कुलकी कीर्ति है, विचारकर उपाय कहेगा। तब बिना परिश्रम ही यह सब रीक्ष और बानरों की सेना पार उतर जायेगी।।५१।।

सखा कही तुम नीकि उपाई ❀ करब दैव जो होइ सहाई
मन्त्र न यह लछमन मन भावा ❀ राम बचन सुनि अति दुख पावा

हे सखा! तुमने अच्छी युक्ति बताई, यही करूँगा, यदि दैवने सहायता की।। यह सलाह लक्ष्मणजीको अच्छी न लगी, वह रामजीके वचन सुनकर अत्यन्त दुःख पाये (और कहने लगे)

नाथ दैव कर कवन भरोसा ❀ सोखिय सिन्धु करिय मन रोसा
कादर मन कहँ एक अधारा ❀ दैव दैव आलसी पुकारा

हे नाथ! दैवका क्या भरोसा है, मनको उत्तेजित कर समुद्रको सोख लीजिए। यह तो कायरोंके मनका एक आधार मात्र है कि वे आलसी दैव-दैव पुकारते हैं।।

सुनत बिहँसि बोले रघुबीरा ❀ ऐसहि करब धरहु मन धीरा
अस कहि प्रभु अनजहिं समुझाई ❀ सिंधु समीप गये रघुराई

यह सुनकर श्रीरामचन्द्रजी मुस्कुराकर बोले--अच्छा धैर्य धारण करो, ऐसा ही करेंगे।। इस प्रकार लक्ष्मणजी को समझाकर श्रीरामचन्द्रजी समुद्र के समीप गये।।

प्रथम प्रणाम कीन्ह सिर नाई ❀ बैठें पुनि तट दर्भ डसाई
जबहिं विभीषण प्रभु पहँ आये ❀ पाछे रावन दूत पठाये

तब वहाँ जाकर प्रभुने पहले ही समुद्रको शिर नवाकर प्रणाम किया और कुशासन बिछाकर किनारे बैठ गये।। जब विभीषण प्रभुके पास आये तो पीछे रावण ने दूत भेजा।।

दोहा—सकल चरित तिन्ह देखे, धरे कपट कपि देह।
प्रभु गुन हृदय सराहहिं, सरनागत पर नेह।। ५२।।

वे सब आकर यहांका सारा भेद कपट रूपसे देख लिए और प्रभुके गुणको अपने मनमें सराहने लगे कि, शरणागत पर इनका कैसा प्रेम है।।५२।।

प्रगट बखानत राम सुभाऊ ❁ अति सप्रेम गा बिसरि दुराऊ
रिपु के दूत कपिन जब जाने ❁ तिन्हैं बाँधि कपिपति पहँ आने

तब प्रेमवश उन्हें अपना कपट रूप भूल गया और वे प्रकट रूपसे रामजी का स्वभाव बखानने लगे ।। जब बन्दरों ने शत्रु का दूत जाना, तब उन्हें बांधकर सुग्रीवके पास लाये ।।

कह सुग्रीव सुनहु सब बनचर ❁ अंग भंग करि पठवहु निशिचर
सुनि सुग्रीव बचन कपि धाये ❁ बाँधि कटक चहुँ पास फिराये

सुग्रीवने कहा--हे वन्दरों ! सुनो, अब इन सब राक्षसोंका अंग-भंग करके ही भेजो ।। यह वचन सुनकर वन्दर दौड़ पड़े और उन्हें बांधकर अपनी सेना के चारों तरफ घुमाने लगे ।।

बहु प्रकार कपि मारन लागे ❁ दीन पुकारत तदपि न त्यागे
जो हमार हर नासा काना ❁ तेहि कोशलाधीश कर आना

वन्दर उन्हें वहुत प्रकारसे मारने लगे, वे दीन होकर चिल्लाते तो भी न छोड़ते थे ।। तव वे राक्षस वोले--जो हमारा नाक कान काटें उसे श्रीरामचन्द्रजीकी सौगन्ध है ।।

सुनि लक्ष्मण तेहि निकट बुलाये ❁ दया लागि हँसि दीन्ह छुड़ाये
रावण कर दीन्हेउ यह पाती ❁ लक्ष्मण बचन बाँचु कुलघाती

यह सुनकर लक्ष्मणजी उन्हें निकट बुलाये और दयाके वश छुड़ा दिये ।। फिर लिखकर एक पत्र दे दिया और कह दिया कि कुलघाती रावणके हाथ में दे देना ।।

दोहा--कहेउ मुखागर मूढ़ सन, मम संदेस उदार ।
सीता देइ मिलहु नतु, आवा काल तुम्हार ।। ५३ ।।

और उस मूर्ख रावण से मेरा यह उदार संदेश कह देना कि सीता को देकर मिलो । नहीं तो अब तुम्हारा काल आ गया है ।।५३।।

तुरत नाय लक्ष्मण पद माथा ❁ चले दूत वर्णत गुण गाथा
कहत राम यश लंका आये ❁ रावण चरन शीश तिन्ह नाये

तब वे दूत तुरन्त ही लक्ष्मणजी के चरणों में शिर नवाकर उनका यशोगान करते हुए चल पड़े ।। रामजी का यश कहते वे लंका में आए और रावण को शिर नवाये ।

बिहँसि दशानन पूछी बाता ❁ कहसि न शुक आपनि कुशलाता
पुनि कहु कुशल विभीषण केरी ❁ जासु मृत्यु आई अति नेरी

तब रावणने हँसकर यह बात पूछी कि कहो शुक ! कुशल तो है न ? फिर विभीषण की कुशल कहो, जिसकी मृत्यु बहुत निकट आ गई है ।।

करत राज्य लंका शठ त्यागा ❁ होइहि यवकर कीट अभागा
पुनि कहु भालु कीश कटकाई ❁ कठिन काल प्रेरित चलि आई

लंका का राज्य उस मूर्खने त्याग दिया, अब वह अभागा जौ का कीड़ा होगा ।। फिर भालु और बन्दरोंकी सेना का हाल कहो जो कठिन कालसे प्रेरित हो यहाँ तक चली आई ।।

जिन के जीवन कर रखवारा ❁ भयउ मृदुल चित सिंधु बिचारा
कहु तपसिन की बात बहोरी ❁ जिनके हृदय त्रास नहिं थोरी

जिनके जीवनकी रक्षा तो विचारे इस कोमल चित्तवाले बेचारे समुद्रने किया ।। फिर उन तपस्वियोंका बात कहो कि जिनके हृदयमें मेरा बड़ा भय है ।।

दोहा–भई भेंट कि फिरि गये, स्रवन सुयस सुनि मोर ।
कहसि न रिपुदल तेजबल, बहुत चकित चित तोर ।।५४।।

उनसे भेंट हुई कि नहीं; अथवा मेरा सुयश सुनकर लौट गये । अरे ! शत्रु-सेना का तेज और बल कहता क्यों नहीं; तेरा चित्त चकित क्यों हो रहा है ? ।। ५४ ।।

नाथ कृपा करि पूछहु जैसे ❁ मानहु बचन क्रोध तजि तैसे
मिला जाय जब अनुज तुम्हारा ❁ जातहिं राम तिलक तेहि सारा

हे नाथ ! कृपा करके आप जैसे पूछते हैं वैसे ही अब क्रोध त्यागकर मेरी बात को सत्य मानिये ।। जब आपका छोटा भाई गया तब जाते ही उसे श्रीरामचन्द्रजी ने तिलक किया ।।

रावण दूत हमहिं सुनि काना ❁ कपिन बाँधि दीन्हे दुख नाना
श्रवन नासिका काटन लागे ❁ राम सपथ दीन्हें तब त्यागे

और मुझे आप (रावण) का दूत सुनकर सब बांधकर अनेक प्रकारसे दुःख देने लगे ।। जब नाक कान काटने लगे तब श्रीरामचन्द्रजीकी शपथ देनेपर मुझे छोड़ा ।।

पूछहु नाथ कीस कटकाई ❁ बदन कोटि सत बरणि न जाई
नाना वरण भालु कपि धारी ❁ बिकटानन विसाल भयकारी

हे नाथ ! जो आपने बन्दरोंकी सेना पूछी तो वह सौ करोड़ मुखसे भी बखानी नहीं जाती ।। रीछ, बन्दर अनेक प्रकार के विशाल रूप धरनेवाले, विकटानन और भय देनेवाले हैं ।।

जेहि पुर दहेउ बधेउ सुत तोरा ❁ सकल कपिन महँ तेहि बल थोरा
अमित नाम भट कठिन कराला ❁ विपुल नाग बल तेज विसाला

जिसने लंका जलाई और तेरे पुत्र को मारा उसका बल सब बन्दरोंसे थोड़ा है ।। और बड़े-बड़े नामी योद्धा हैं, जिनके अनेक नाम रूप हैं और अनेक हाथियों का बल तथा तेज है ।।

दोहा–द्विबिद मयन्द नील नल, अंगदादि बिकटासि ।
दधिमुख केहरि कुमुद गव, जामवन्त बल रासि ।। ५५ ।।

उनके नाम–द्विबिद, मयन्द, नील, विकटास्य, दधिमुख, केहरि, कुमुद, गव और जामवन्त ये सब बल की राशि हैं ।। ५५ ।।

ये सब कपि सुग्रीव समाना ❁ इन सन कोटिन गनै को आना
राम कृपा अतुलित बल तिनहीं ❁ तृण समान त्रयलोकहिं गिनहीं

ये सभी बन्दर सुग्रीव के ही समान तथा इनके समान और जो करोड़ों हैं उनकी गिनती कौन करे ? रामजी की कृपा से इनमें अतुलित बल है और वे त्रैलोक्यको भी तृणके समान गिनते हैं ।।

अस मैं श्रवण सुना दसकन्धर ❀ पदुम अठारह यूथप बन्दर
नाथ कटक महँ सो कपि नाहीं ❀ जो न तुमहिं जीतै रण माहीं

हे रावण ! मैंने सुना है कि अठारह पदम बन्दरोंकी सेना है । हे नाथ ! सेना में ऐसा कोई भी बन्दर नहीं है कि जो तुम्हें लड़ाई में जीत न सके ॥

परम क्रोध मीजहिं सब हाथा ❀ आयसु पै न देहिं रघुनाथा
सोखहिं सिन्धु सहित झष व्याला ❀ पुरहिं न तु भरि कुधर बिसाला

सब परम क्रोध करके हाथ मीजते हैं परन्तु रामजी आज्ञा नहीं देते ॥ सर्पों और मछलियों सहित समुद्र को भी शोष सकते हैं, इससे भी काम न चलेगा तो वे विशाल पर्वतोंसे पाट देंगे ॥

मर्दि गर्दि मिलवहिं दससीसा ❀ ऐसे बचन कहहिं सब कीसा
गर्जहिं तर्जहिं सहज असंका ❀ मानहुँ ग्रसन चहत हहिं लंका

और कहते हैं कि रावण को मर्दन कर धूलमें मिला देंगे ॥ बहुत गर्जते और चिल्लाते हैं, सहज ही अशंक हैं, मानो लंका को ग्रस लेना चाहते हैं ॥

दोहा—सहज सूर कपि भालु सब, पुनि सिर पर प्रभु राम ।
रावण कोटिन्ह काल कहँ, जीति सकहिं संग्राम ॥५६॥

इस प्रकार वे सब बन्दर भालु स्वाभाविक शूर वीर हैं, फिर शिरपर प्रभु रामजी हैं । इससे रावण ऐसे करोड़ों कालको भी वे संग्राम-भूमिमें जीत सकते हैं ॥ ५६ ॥

राम तेज बल बुधि बिपुलाई ❀ सेष सहस सत सकहिं न गाई
सक सर एक सोषि सत सागर ❀ तव भ्रातहिं पूछेउ नयनागर

रामजीके अटूट तेज, बल और बुद्धिको सैकड़ों शेषनाग भी वर्णन नहीं कर सकते ॥ उनका एक ही बाण सैकड़ों समुद्र को सोख सकता है, परन्तु उन्होंने तुम्हारे भाई से नीति पूछी है ॥

तासु बचन सुनि सागर पाहीं ❀ माँगत पन्थ कृपा मन माहीं
सुनत बचन बिहँसा दससीसा ❀ जौं अस मति सहाय कृत कीसा

उसकी बातको सुनकर रामजी मनमें कृपा धारणकर समुद्रसे रास्ता माँगते हैं ॥ उसकी यह बात सुनकर रावण हँसा कि जो ऐसी मति है तभी तो बन्दर और भालु सहायतामें हैं ॥

सहज भीरु कर बचन दृढ़ाई ❀ सागर सन ठानी मचलाई
मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई ❀ रिपु बल बुद्धि थाह मैं पाई

स्वाभाविक भीरुके शब्दोंको दृढ़कर, भला जिसने समुद्रसे लड़कपन किया ॥ ऐसे मूढ़ की तू प्रशंसा करता है ? परन्तु शत्रुके बल-बुद्धिका थाह मैंने पा लिया ॥

सचिव सभीत विभीषन जाके ❀ विजय विभूति कहाँ लगि ताके
सुनि खल बचन दूत रिस बाढ़ी ❀ समय बिचार पत्रिका काढ़ी

जिसका विभीषण जैसा डरपोक मंत्री है उसे विजयकी विभूति कहां लग सकती है ? दुष्ट रावणकी बात सुन दूतको बड़ा क्रोध बढ़ा उसने उपयुक्त समय विचार लक्ष्मणका पत्र निकाला ॥

राम अनुज दीन्हीं यह पाती ❀ नाथ बँचाइ जुड़ावहु छाती
बिहँसि बामकर लीन्हेसि रावन ❀ सचिव बोलि सठ लाग बँचावन

कहा, रामके भाईने यह पत्र दिया है, हे नाथ ! इसे बँचवाकर छाती ठण्डी कीजिये ॥ तब हँसीके साथ बायें हाथसे पत्र ले मन्त्रीको बुलाकर मूर्ख रावण उसे बँचवाने लगा ॥

दोहा—बातन मनहिं रिझाय सठ, जनि घालसि कुल खीस ।
राम बिरोध न उबरेसि, सरन बिष्णु अज ईस ॥५७॥

उस पत्रमें लिखा था कि रे शठ, बातोंसे मनको प्रसन्नकर कुलका नाश न कर। रामजीके विरोध से बच नहीं सकता, चाहे ब्रह्मा, विष्णु और महेशकी ही शरणमें क्यों न चला जाय ॥५७॥

की तजि मान अनुज इव, प्रभुपद पंकज भृंग ।
होसि रामसर अनल खल, जनि कुल सहित पतंग ॥५८॥

अरे मूर्ख ! अभिमान त्यागकर विभीषणकी तरह प्रभुके चरण-कमलका भौंरा बन जा । श्रीरामजीके अग्निवत् बाणोंमें पड़कर अपने कुल-सहित पतंग क्यों बन रहा है ॥५८॥

सुनत सभय मन मुख मुसुकाई ❀ कहत दसानन सबहिं सुनाई
भूमि परा कर गहत अकासा ❀ लघु तापस कर बाग बिलासा

ऐसा सुनकर रावण भयभीत तो हुआ किन्तु मुसकुराकर कहने लगा कि छोटे तपसी के बचन का बिलास तो देखो कि भूमि पर पड़े-पड़े हाथ से आकाश को पकड़ रहा है ॥

कह सुक नाथ सत्य सब बानी ❀ समुझहु छाँड़ि प्रकृति अभिमानी
सुनहु बचन मम परिहरि क्रोधा ❀ नाथ राम सन तजहु बिरोधा

शुकने कहा—हे नाथ ! सब सत्य है, हे प्राकृतिक अभिमानी ! समझो और क्रोध त्याग-कर मेरा वचन सुनो, हे नाथ ! राम से बैर करना छोड़ दो ॥

अति कोमल रघुबीर सुभाऊ ❀ यद्यपि अखिल लोक कर राऊ
मिलत कृपा प्रभु तुमपर करिहैं ❀ उर अपराध न एकौ धरिहैं

श्रीरामचन्द्रजी यद्यपि अखिल ब्रह्माण्डके राजा हैं तथापि अत्यन्त कोमल स्वभावके हैं ॥ मिलते ही तुमपर कृपा करेंगे और तुम्हारे एक भी अपराध को हृदय में न रखेंगे ॥

जनक सुता रघुनाथहिं दीजै ❀ इतना कहा मोर प्रभु कीजै
जब तेहि देन कहा बैदेही ❀ चरण प्रहार कीन्ह सठ तेही

हे प्रभो ! सीताको श्रीरामचन्द्रजीको दे दीजिए और मेरा इतना कहना मानिए ॥ जब उसने सीता को देने को कहा तो उस पर रावणने चरण-प्रहार किया अर्थात् लात मारा ॥

नाइ चरण सिर चला सो तहाँ ❀ कृपासिन्धु रघुनायक जहाँ
करि प्रणाम निज कथा सुनाई ❀ राम कृपा आपनि गति पाई ।

तब वह रावणके चरणोंमें सिर नवाकर वहाँ चला, जहाँ कृपाके समुद्र श्रीरामजी विद्यमान थे।। तब प्रणाम कर अपनी कथा सुनाई तो रामजी की कृपासे उसने अपनी गति प्राप्त की ।।

ऋषि अगस्त्य कर साप भवानी ❀ राक्षस भयउ रहा मुनि ज्ञानी
बन्दि रामपद बारहिं बारा ❀ पुनि निज आश्रम कहँ पगु धारा

हे पार्वती ! वह पहले ही बड़ा ज्ञानी मुनि था । जो अगस्त्य ऋषिके शापसे राक्षस हो गया था ।। वह श्रीरामचन्द्रजीकी बारंबार बन्दना करके फिर अपने आश्रमको चला गया ।।

दोहा—बिनय न मानत जलधि जड़, गये तीन दिन बीति ।
बोले राम सकोप तब, भय बिनु होय न प्रीति ।।५९।।

उधर जब तीन दिन व्यतीत हो जाने पर भी समुद्रने प्रार्थना न स्वीकार की तब श्रीरामचन्द्रजी कोपयुक्त होकर बोले—भयके बिना प्रीति नहीं होती ।। ५९ ।।

लक्ष्मण बाण सरासन आनू ❀ सोखौं बारिधि बिसिष कृसानू
सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती ❀ सहज कृपण सन सुन्दर नीती

हे लक्ष्मण ! धनुष-बाण लाओ, मैं अग्निबाण से इस समुद को शोख लूँ ।। मूर्ख से प्रार्थना करना और कुटिल से प्रेम तथा स्वाभाविक कृपण से सुन्दर नीति ।।

ममता रत सन ज्ञान कहानी ❀ अति लोभी सन बिरति बखानी।
क्रोधिहिं सम कामिहिं हरि कथा ❀ ऊसर बीज बुये फल यथा

और जो मोहमाया में पड़ा हुआ है उससे ज्ञान की कथा तथा लोभी से वैराग्य कहना और क्रोधाभिमानी से भगवान्‌की कथा कहनी वैसे ही व्यर्थ है जैसे ऊसरमें बीज बोनेसे व्यर्थ होता है ।।

अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा ❀ यह मत लक्ष्मण के मन भावा
संधानेउ प्रभु बिसिष कराला ❀ उठी उदधि उर अन्तर ज्वाला

ऐसा कहकर रामजी ने धनुष चढ़ाया, तो उनकी यह सम्मति लक्ष्मण के मनको अच्छी लगी ।। फिर तो प्रभुने अत्यन्त ही कराल अग्निबाणको चढ़ाया तो समुद्र के हृदय में ज्वाला उठी ।।

मकर उरग झष गन अकुलाने ❀ जरत जन्तु जलनिधि जब जाने
कनक थार भरि मनि गन नाना ❀ बिप्र रूप आये तजि माना

घड़ियाल, सर्प और मछलियाँ आदिक व्याकुल हो गईं और समुद्रने जाना कि सब जल रहे हैं तो सुवर्णके थालमें अनेक प्रकारकी मणियोंको भर ब्राह्मण रूप किए मान रहित हो आया ।।

दोहा—काटे पै कदली फरै, कोटि यतन कोउ सींच ।
बिनय न मान खगेस सुनु, डाटेंहि पै नव नीच ।।६०।।

हे गरुड़जी ! केलेका वृक्ष काटने पर ही फलता है, चाहे कोई उसे कितना ही यत्नसे क्यों न सींचे ।। वैसे ही जो नीच होते हैं वे प्रार्थना से नहीं मानते, डाँटने पर मानते हैं ।।६०।।

सभय सिन्धु गहि पद प्रभु केरे ❀ क्षमहु नाथ सब अवगुण मेरे

गगन समीर अनल जल धरनी ❀ इनकी नाथ सहज जड़ करनी

तब भययुक्त समुद्रने आकर रामजीके पांव पकड़ लिए और कहा—हे नाथ! मेरे अपराधों को क्षमा करो ।। क्योंकि आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी इनकी करनी स्वाभाविक जड़ होती है ।।

तब प्रेरित माया उपजाये ❀ सृष्टि हेतु सब ग्रन्थन गाये
प्रभु आयसु जेहि कहँ जस अहही ❀ सो तेहि भाँति रहे सुख लहही

सब ग्रन्थ कहते हैं कि, सृष्टिके लिए ही तो आपकी प्रेरित मायाने यह रचना की है ।। सो आप प्रभुकी जैसी आज्ञा जिसके लिए है, वह उसी प्रकार रहनेमें सुखको प्राप्त होता है ।।

प्रभु भल कीन्ह मोहिं सिख दीन्हीं ❀ मर्यादा सब तुम्हरी कीन्हीं
ढोल गँवार सूद्र पसु नारी ❀ यह सब ताड़न के अधिकारी

प्रभुने अच्छा किया जो मुझे शिक्षा दी, सारी मर्यादा तो आप ही ने स्थापित की है ।। ढोल, गँवार, शूद्र, पशु और स्त्री यह सब ताड़ना ही देने योग्य हैं ।।

प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई ❀ उतरिहि कटक न मोरि बड़ाई
प्रभु आज्ञा अपेल श्रुति गाई ❀ सोइ करहु जो तुमहिं सुहाई

यदि मैं आपके प्रताप से सूख जाऊँ तो, सेना उतरे इसमें मेरी कोई प्रतिष्ठा नहीं है। फिर वेद कहता है कि प्रभुकी आज्ञा अपेल (अनिवार्य) है तो वही कीजिए जो आपको अच्छा लगे ।।

दोहा—सुनत विनीत बचन अति, कह कृपालु मुसुकाय।
जेहि विधि उतरै कपि कटक, तात सो करहु उपाय ।।६१।।

समुद्र की ऐसी वाणी सुनकर कृपालु रामजीने मुस्कराकर कहा कि जिस प्रकारसे बन्दरोंकी सेना उतरे हे तात! तुम वही उपाय करो ।।६१।।

नाथ नील नल कपि दोउ भाई ❀ लरिकाई ऋषि आशिष पाई
जिनके परस किये गिरि भारे ❀ तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे

हे नाथ! यह जो नील नल दोनों भाई हैं इन्हें बचपनमें एक ऋषीश्वरका ऐसा आशीर्वाद है कि ।। इनके स्पर्श किए हुए बड़े-बड़े पत्थर आपके प्रतापसे समुद्रपर तरेंगे ।।

मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई ❀ करिहौं बल अनुमान सहाई
इहि बिधि नाथ पयोधि बँधाइय ❀ जेहि यह सुयश लोक तिहुँ गाइय

फिर मैं भी प्रभु के प्रतापको हृदयमें धारणकर अपने शक्तिभर सहायता करूंगा। हे नाथ! इस प्रकार समुद्रमें पुल बंधवा दीजिए कि जो सुयश तीनों लोकों में गाया जावेगा ।।

यहि शर मम उत्तर तट बासी ❀ हतहु नाथ खल गन अघ रासी
सुनि कृपालु सागर मन पीरा ❀ तुरतहिं हरी राम रण धीरा

हे नाथ! अब इस बाणसे जो मेरे उत्तर तटके वासी हैं उन पापमूलक दुष्टों को मारिए ।। तब समुद्रके मनकी पीड़ा सुनकर संग्राममें धीर रामजीने तुरन्त ही उसकी व्यथा हर ली ।।

देखि राम बल अतुलित भारी ❀ हर्षि पयोनिधि भयउ सुखारी
सकल चरित कहि प्रभुहिं सुनावा ❀ चरन बन्दि पाथोधि सिधावा

रामजीके बड़े अतुलित बल को देखकर समुद्र हर्षित हो सुखी हो गया ।। तब समुद्र अपना सब चरित्र कह सुनाया और उनके चरणोंकी बन्दना करके चला गया ।।

छन्द—निज भवन गवनेउ सिन्धु श्रीरघुपतिहिं यह मत भायऊ ।
यह चरित कलिमल-हर यथामति दास तुलसी गायऊ ।।
सुख भवन संशय दमन शमन विषाद रघुपति गुनगना ।
तजि सकल आस भरोस गावहिं सुनहिं सज्जन सुठि मना ।।६।।

तब समुद्र अपने घरको गया, उसको यह सम्मति श्रीरामचन्द्रजीको अच्छी लगी । श्री तुलसीदासजी कलिकालके पापोंके नाशक इस चरित्रका गान करते हैं । जो सब सुखोंका घर, दुःखोंका शमन करनेवाला और रामजीके गुणोंसे भरा है । इससे पवित्र मनवाले सज्जन संसारकी सब आशा और भरोसा त्यागकर इसे गाते हैं ।।६।।

दोहा—सकल सुमंगल दायक, रघुनायक गुणगान ।
सादर सुनहिं ते तरहिं भव, सिन्धु बिना जलयान ।।६२।।

श्रीरामचन्द्रजीका यह गुणगान सब सुमङ्गलोंको देनेवाला है । जो आदर सहित इसे सुनते हैं, वे इस संसार सागरसे बिना नौकाके ही पार हो जाते हैं ।। ६२ ।।

❀ इति सुन्दरकाण्ड—समाप्त ❀

श्रीगणेशाय नमः

श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजी कृत-



लंकाकाण्ड

(सर्व-सञ्जीवनी टीका सहित)

।। मङ्गलाचरण ।।

श्लोक—रामं कामारिसेव्यं भवभयहरणं कालमत्तेभसिंहं
योगीन्द्रं ज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणं निर्विकारम् ।
मायातीतं सुरेशं खलबधनिरतं ब्रह्मवृन्दैकदेवं
वन्दे कुन्दावदातं सरसिजनयनं देवमुर्वीशरूपम् ।।१।।

जो कामदेवके शत्रु हैं, जिन्हें महादेवजी सेवते हैं, जो आवागमनसे मुक्ति देनेवाले, कामरूप हस्तीके लिये सिंहरूप हैं और जो योगीश्वरोंको ज्ञानदेहसे प्राप्त होते हैं, जो ज्ञानगम्य और गुणोंके धाम, मायासे उत्पन्न होनेवाले, गुणोंसे रहित निर्विकारी, मायासे परे, देवताओंके ईश्वर, दुष्टोंका संहार करनेवाले, ब्राह्मणोंके पूज्य देवता, श्यामलवर्ण, नीले सुन्दर जिनके कमल जैसे नेत्र और जो दिव्यरूप हैं, उस पृथ्वीपति देवरूप रामजीकी मैं बन्दना करता हूँ ।।

शङ्खेन्द्वाभमतीव सुन्दरतनुं शार्दूलचर्माम्बरं
कालव्यालकपालभूषणधरं गङ्गाशशाङ्कप्रियम् ।
काशीशं कलिकल्मषौघशमनं कल्याणकल्पद्रुमं
नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं श्रीशङ्करं कामदम् ।।२।।

जो शंख और चन्द्रमाके समान दीप्तिमान, परम सुन्दर शरीरवाले, व्याघ्र-चर्मधारी, काले सर्पों और कपालोंका भूषण धारण करनेवाले हैं, जिनकी गंगा और चन्द्रमासे प्रीति है, उन काशीके स्वामी कलिकलुष समूहके नष्ट करनेवाले, जो कल्याणरूपी कल्पवृक्षके समान हैं, उन स्तुति करने-योग्य, पार्वतीके स्वामी, गुणोंके धाम, कामदेवके शत्रु महादेवजीको मैं प्रणाम करता हूँ ।।२।।

यो ददाति सतां शम्भुः कैवल्यमपि दुर्लभम् ।
खलानां दण्डकृद्योऽस्ति शङ्करः शं तनोतु माम् ॥३॥

जो दुर्लभ मोक्षके दाता और दुष्टोंको दण्ड देनेवाले हैं, वे शिवजी मेरा कल्याण करें ॥३॥

दोहा—लवनिमेष परिमान युग, वर्ष कल्प सर चण्ड ।
भजसि नमन तेहि रामकहँ, काल जासु कोदण्ड ॥ १ ॥

जिन श्रीरामचन्द्रजीका धनुष कालके समान है, लव, निमेष, परमाणु, वर्ष, युग और कल्प प्रचण्ड बाण हैं, हे मन ! तू उन श्रीरामचन्द्रजीको क्यों नहीं भजता ॥१॥

सो०—सिंधु बचन सुनि कान, सचिव बोलि प्रभु अस कहेउ ।
अब बिलम्ब केहि काम, रचहु सेतु उतरइ कटक ॥ १ ॥

समुद्रका वचन सुनकर प्रभु श्रीरामचन्द्रजीनें अपने मन्त्रियोंको बुलाकर ऐसे कहा कि अब विलम्बका क्या काम है, पुल बनाओ और सेना उतरे ॥१॥

सुनहु भानुकुल केतु, जामवन्त कर जोरि कह ।
नाथ नाम तव सेतु, नर चढ़ि भवसागर तरहिं ॥ २ ॥

तब जामवन्तने हाथ जोड़कर कहा—हे सूर्यकुलके केतु श्रीरामचन्द्रजी ! सुनिये, हे नाथ ! आपका नाम ही ऐसा सेतु है कि जिसपर चढ़कर मनुष्य भवसागर पार हो जाते हैं ॥२॥

यह लघु जलधि तरत कत बारा ❀ अस सुनि पुनि कह पवन कुमारा
प्रभु प्रताप बड़वानल भारी ❀ सोखेउ प्रथम पयोनिधि बारी

फिर इस छोटे समुद्रको पार करते कितनी देर लगेगी—तब ऐसा सुनकर हनुमान्जीनें कहा—हे प्रभो ! आपके प्रतापरूपी बड़वानलने तो पहले ही क्षीरसागरको सोख लिया था ॥

तव रिपु नारि रुदन जलधारा ❀ भरेउ बहोरि भयउ तेहि खारा
सुनि अति उक्ति पवनसुत केरी ❀ हरषे कपि रघुपति तन हेरी

आपके शत्रुओंकी स्त्रियोंकी अश्रुधाराने इसे फिर भर दिया, जिससे यह खारा हो गया है। हनुमान्जीकी इस अतिशयोक्तिको सुनकर सब बन्दर रामजीकी ओर देखकर हँसने लगे ॥

जामवन्त बोले दोउ भाई ❀ नल नीलहिं सब कथा सुनाई
राम प्रताप सुमिरि मनमाहीं ❀ रचहु सेतु प्रयास कछु नाहीं

तब जामवन्तने नल-नील दोनों भाइयोंको बुलाकर सब कथा कह सुनाई ॥ और कहा कि श्रीरामचन्द्रजीके प्रतापको मनमें स्मरण करते हुए पुल बनाओ, कुछ श्रम नहीं है ॥

बोलि लिये कपि निकर बहोरी ❀ सकल सुनहु बिनती कछु मोरी
राम चरण पंकज उर धरहू ❀ कौतुक एक भालु कपि करहू

फिर तो उन्होंने बानरोंको बुलाकर कहा कि तुम मेरी कुछ प्रार्थना सुनो ॥ श्रीरामचन्द्रजीके चरणोंको हृदय में धारण करके तुम सब भालु-बन्दर एक खेल करो ॥

धावहु मरकट विकट बरूथा ❀ आनहु विटप गिरिन्ह के यूथा
सुनि कपि भालु चले करि हूहा ❀ जय रघुबीर प्रताप समूहा

तुम सब बन्दरोंके विराट यूथ दौड़ जाओ और वृक्ष तथा पर्वतोंके समूह ले आओ ।। यह सुनकर बन्दर और भालु हुंकारते हुए चले और रामजीके प्रताप की जय-जयकार करने लगे ।।

दोहा—अति उतंग तरु शैल गण, लीलहिं लेहिं उठाय।
आनि देहिं नल नील कहँ, रचहिं ते सेतु बनाय ।। २ ।।

तब बन्दरगण बहुत ऊँचे-ऊँचे वृक्षों और पर्वतों को लीलावत् ही उठाकर ले आते और नल तथा नील को लाकर देते जिससे वे पुल बनाने लगे ।। २ ।।

शैल विशाल आनि कपि देहीं ❀ कंदुक इव नल नील सो लेहीं
देखि सेतु अति सुन्दर रचना ❀ बिहँसि कृपानिधि बोले बचना

तब बन्दर जो बड़े-बड़े पर्वत लाकर देते उसे नल-नील गेंदके समान ले लेते थे । तब सेतु की सुन्दर रचना होते देखकर कृपालु श्रीरामचन्द्रजी हँसकर बोले ।।

परम रम्य सुन्दर यह धरणी ❀ महिमा अमित जाय नहिं बरणी
करिहौं यहाँ शम्भु थापना ❀ मोरे हृदय परम कल्पना

यहाँ की पृथ्वी तो बड़ी सुन्दर है जिसकी अमित महिमा कही नहीं जाती ।। इससे मेरे मनमें यह एक परम कल्पना हो रही है कि मैं यहां शिवजी की स्थापना करूँ ।।

सुनि कपीश दुइ दूत पठाये ❀ मुनिवर निकर बोलि लै आये
लिंग थापि विधिवत करि पूजा ❀ शिव समान प्रिय मोहिं न दूजा

तब उसे सुनकर सुग्रीवने दो दूतोंको भेजा जो मुनियोंके समूह बुला लाये ।। तब शिव-लिंगकी स्थापना करके श्रीरामचन्द्रजीने कहा कि मुझे शिवजी के समान कोई दूसरा प्रिय नहीं है ।।

शिव द्रोही मम दास कहावा ❀ सो नर सपनेहुँ मोहिं न भावा
शंकर विमुख भक्ति चह मोरी ❀ सो नर मूढ़ मंद मति थोरी

मेरा सेवक कहलाकर भी जो शिवजीका द्रोही होगा वह मनुष्य मुझे स्वप्नमें भी नहीं पा सकता ।। जो शंकरजीसे विमुख रहकर मेरी भक्ति चाहेगा, वह मूर्ख थोड़ी बुद्धिका है ।।

दोहा—शंकर प्रिय मम द्रोही, शिव द्रोही मम दास ।
ते नर करहिं कल्प भरि, घोर नरक महँ बास ।। ३ ।।

यदि कोई शिवजीका प्रेमी हो और मेरा शत्रु हो अथवा शिवजीका शत्रु हो और मेरा दास हो तो वे मनुष्य कल्प-पर्यन्त नरक में वास करते हैं ।। ३ ।।

जो रामेश्वर दर्शन करिहैं ❀ सो तनु तजि मम लोक सिधरिहैं
जो गंगा ज़ल आनि चढ़ाइहि ❀ सो सायुज्य मुक्ति कर पाइहि

जो रामेश्वरजोका दर्शन करेगा, वह शरीर छोड़ने पर मेरे लोकको प्राप्त होगा और जो यहां गंगाजल लाकर चढ़ावेगा वह मनुष्य साक्षात् मुक्ति पावेगा ॥

होइ अकाम जो छल तजि सेइहिं ❀ भक्ति मोर तेहि शंकर देइहिं
मम कृत सेतु जो दर्शन करिहैं ❀ जो बिनु श्रम भवसागर तरिहैं

जो निष्कपट भाव से इनकी सेवा करेगा उसे शिवजी मेरी भक्ति प्रदान करेंगे ॥ मेरे बनाये हुए इस पुल का जो दर्शन करेंगे वे बिना परिश्रम ही भवसागर से पार हो जायगे ॥

राम बचन सबके मन भाये ❀ मुनिवर निज निज आश्रम आये
गिरिजा रघुपति की यह रीती ❀ संतत करहिं प्रनत पर प्रीती

श्रीरामचन्द्रजीका यह वचन सबके मनको अच्छा लगा और सब मुनि लोग अपने-अपने आश्रम को चले गये ॥ हे पार्वती ! रामजीकी यह रीति है कि वे अपने भक्तों पर प्रगाढ़ प्रेम करते हैं ॥

बाँधेउ सेतु नील नल नागर ❀ राम कृपा यश भयउ उजागर
बूड़हिं आनहिं बोरहिं जेई ❀ भये उपल बोहित सम तेई

इस प्रकार बुद्धिमान् नल और नीलने सेतुकी रचना की, रामजीकी कृपासे उनका यश उज्ज्वल हुआ । जो डूबते और दूसरोंको भी डुबा देते हैं वे ही पत्थर नौकाके समान हो गये ॥

महिमा यह न जलधि की बरनी ❀ पाहन गुण न कपिन की करनी

यह मैं समुद्र की महिमा नहीं वर्णन करता हूँ और न तो पत्थर और न बन्दरों का इसमें कुछ कर्तव्य है ॥

दोहा--श्री रघुबीर प्रताप ते, सिंधु तरे पाषान ।
ते मतिमन्द जे रामतजि, भजहिं जाय प्रभु आन ॥ ४ ॥

श्रीरामचन्द्रजीके प्रतापसे पत्थर समुद्रमें तैरने लगे, वे मूर्ख हैं, जो रामजीको त्यागकर अन्य स्वामियों को जाकर भजते हैं ॥ ४ ॥

बाँधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा ❀ देखि कृपानिधि के मन भावा
चली सेन कछु बरनि न जाई ❀ गर्जहिं मर्कट भट समुदाई

सेतु बांधकर उसे सुदृढ़ बना दिया कि जो देखकर रामजीके मनको अच्छा लगा । उस पर ऐसी सेना चली कि जो बखानी नहीं जाती, वीर भालु और बन्दर गर्जन कर रहे थे ॥

सेतबन्धु ढिग चढ़ि रघुराई ❀ चितव कृपालु सिन्धु बहुताई
देखन कहँ प्रभु करुनाकन्दा ❀ प्रगट भये सब जलचर वृन्दा

जब सेतु बनने के निकट था तब उस पर चढ़कर रामचन्द्रजी समुद्र को बहुत तरहसे देखने लगे ॥ तब उन करुणा के धाम प्रभुको देखने के लिए सब जलचर वृन्द जल के ऊपर प्रकट हो गये ॥

नाना मकर नक्र झष व्याला ❀ शत योजन तनु परम विशाला
ऐसे एक तिनहिं धरि खाहीं ❀ एकन के डर एक डराहीं

नाना प्रकारके मगर, घड़ियाल, मछलियां और सर्प जो बड़े ही विशाल थे और उनमें ऐसे भी थे कि जो उनको पकड़कर खा जाते, पर एकके डरसे एक भाग जाते थे ।।

प्रभुहिं बिलोकहिं टरहिं न टारे ❀ मन हर्षित सब भये सुखारे
तिनकी ओट न देखिय बारी ❀ मगन भये हरि रूप निहारी

परन्तु सभी मनसे ऐसे हर्षित थे कि प्रभुको देखते हुए हटानेसे भी नहीं हटते थे ।। उनके ओट से जल नहीं दिखाई पड़ता था, सभी भगवान् का स्वरूप देखकर मग्न हो रहे थे ।।

चली कटक कछु बरणि न जाई ❀ को कहि सक कपिदल विपुलाई

उस समय चलती हुई सेना का कुछ वर्णन नहीं करते बनता, फिर बन्दरों की बहुत अधिक सेना का बखान कौन करे ? ।।

दोहा—सेतुबन्ध भइ भीर अति, कपि नभ पन्थ उड़ाहिं ।
अपर जलचरन ऊपर, चढ़ि चढ़ि पारहिं जाहिं ।। ५ ।।

सेतु-बन्ध पर महान् भीड़ हुई । बन्दर आकाश-मार्ग से उड़ने लगे और अन्य बन्दर जलचर जीवों के ऊपर भी चढ़कर बिना परिश्रम ही पार जाने लगे ।। ५ ।।

यह कौतुक बिलोकि दोउ भाई ❀ बिहँसि चले कृपालु रघुराई
सेन सहित उतरेउ रघुबीरा ❀ कहि न जाइ कछु यूथप भीरा

तब ऐसी लीला देखकर दोनों भाई हँसकर चले और सैनिकों सहित रामजी उस पार जाकर उतरे, तब बन्दरों के सेनापतियों की ऐसी दशा हुई कि कहीं नहीं जाती ।।

सिन्धु पार प्रभु डेरा कीन्हा ❀ सकल कपिन कहँ आयसु दीन्हा
खाहु जाइ फल मूल सुहाये ❀ सुनत भालु कपि जहँ तहँ धाये

इस प्रकार जब समुद्र के पार जाकर प्रभुने डेरा किया तब बन्दरोंको आज्ञा दे दी कि अब तुम लोग जाकर सुहावने फलफूल खाओ, यह सुनते ही भालू-बन्दर यत्र-तत्र दौड़ गये—

सब तरु फरे रामहित लागी ❀ ऋतु अनऋतु हि काल गति त्यागी
खाहिं मधुरफल विटप हिलावहिं ❀ लंका सनमुख सिखर चलावहिं

उधर रामजी के हितार्थ सभी वृक्ष ऋतु-अनऋतु का विचार त्याग कर फल गये थे ।। बन्दर मीठे फलों को खाकर वृक्ष हिलाते और लंका के सम्मुख पत्थर फेंकते थे ।।

जहँ कहुँ फिरत निसाचर पावहिं ❀ घेरि सकल मिलि नाच नचावहिं
दशनन काटि नासिका काना ❀ कहि प्रभु सुयश देहिं तब जाना

जहां-कहीं फिरते हुए राक्षस पाते उन्हें घेरकर सब मिलकर नाच नचाते और दांतोंसे उनकी नाक कान काटते, जब वे प्रभु रामजी का यशोगान करते तब उन्हें जाने देते थे ।।

जिनकर नासा कान निपाता ❀ ते रावणहिं कही सब बाता
सुनत श्रवण बारिधि बंधाना ❀ दशमुख बोलि उठा अकुलाना

तब जिनके नाक कान बानरों ने काट लिए थे, उन्होंने जाकर रावणसे सब बातें कहीं तो समुद्र में सेतु-बन्धन हुआ सुनकर रावण व्याकुल होकर बोला ॥

दोहा—बाँधेउ जलनिधि नीर निधि, जलधि सिन्धु बारीस ।
सत्य तोयनिधि कंपती, उदधि पयोधि नदीस ॥ ६ ॥

तो क्या सचमुच जल-निधि, नीरनिधि, जलधि, सिन्धु, वारीश, तोयनिधि, जलपति उदधि, पयोनिधि और नदीश को बांध दिया ? ॥ ६ ॥

निज व्याकुलता समुझि बहोरी ❀ बिहँसि चला गृह करि भय भोरी
मन्दोदरी सुना प्रभु आये ❀ कौतुक ही पयोधि बँधाये

अपनी व्याकुलताको समझ फिर मनमें थोड़ा भयभीत होकर वह मुसकाता हुआ रनिवास को चला ॥ जब मन्दोदरी ने सुना कि कौतुक ही समुद्र को बँधवाकर प्रभु आ गये हैं ॥

करिगहिपतिहिंभवननिजआनी ❀ बोली परम मनोहर बानी
चरन नाइ शिर अंचल रोपा ❀ सुनहु बचन पिय परिहर कोपा

तो रावण का हाथ पकड़कर अन्तःपुरमें ले जाकर परम मनोहर वाणीसे उसके चरणों पर शिर नवाकर अंचल पसारकर बोली कि हे स्वामी ! क्रोध छोड़कर मेरी बात सुनिए ॥

नाथ बैर कीजै ताही सों ❀ बुधि बल जीति सकिय जाही सों
तुमहिं रघुपतिहिं अंतर कैसा ❀ खलु खद्योत दिवाकर जैसा

हे नाथ ! उसीसे बैर कीजिए कि जिसे बुद्धि और बल में जीत सकें, आप में और श्रीरामचन्द्रजी में तो ऐसा ही अन्तर है जैसा जुगनू और सूर्य में होता है ॥

अति बल मधुकैटभ जिन मारा ❀ महाबीर दिति सुत संहारा
जेहि बल बाँधि सहसभुज मारा ❀ सोइ अवतरेउ हरण महि भारा

जिन्होंने अत्यन्त बलवान् मधु-कैटभको मारा, महाबली दितिके पुत्रोंका संहार कर राजा बलि को बांध सहस्रबाहु को मारा, वही पृथ्वी का भार-हरणकर्त्ता अवतार लिए हैं ॥

तासु विरोध न कीजिय नाथा ❀ काल कर्म गुन जिनके हाथा

हे नाथ ! उनसे शत्रुता न कीजिए कि जिनके हाथ में काल, कर्म और गुण हैं ॥

दोहा—रामहिं सौंपहु जानकी, नाइ कमल पद माथ ।
सुत कहँ राज्य देइ बन, जाय भजहु रघुनाथ ॥ ७ ॥

रामजी को जानकी सौंप उनके कमलवत् चरणों से शिर नवाइये । फिर पुत्रको राज्य देकर बनमें जाकर रामजी का भजन कीजिये ॥ ७ ॥

नाथ दीन दयाल रघुराई ❀ बाघौ सन्मुख गये न खाई
चहिय करन सो सब करि बीते ❀ तुम सुर असुर चराचर जीते

हे नाथ ! वे दीनदयालु, जिनकी दयासे व्याघ्र भी सामने आकर नहीं खा सकता ॥ आपको जो करना था वह तो कर चुके, आपने सुर-असुर सब चराचर जीवों को जीत लिया है ॥

बेद कहहिं अस नीति दसानन ❀ चौथे पनहिं जायँ नृप कानन
तासु भजन कीजै तहँ भर्ता ❀ जो कर्ता पालक संहर्ता

हे रावण ! वेद ऐसी नीति कहते हैं कि राजाको चौथेपनमें बनको जाना चाहिए । सो हे पतिदेव ! वहाँ जाकर आप उनका भजन कीजिए जो सबके पालक और संहारकर्त्ता हैं ।।

सोइ रघुबीर प्रनत अनुरागी ❀ भजहु नाथ ममता मद त्यागी
मुनिवर यतन करहिं जेहि लागी ❀ भूप राज तजि होहिं बिरागी

वही रामजी अपने भक्तोंपर दयालु, अनुरागवान् रहते हैं, हे नाथ ! मोह, मद छोड़कर उन्हें ही भजिये कि जिसके लिए मुनिलोग यत्न करते और राजा राज्य त्यागकर विरागी हो रहते हैं;

सोइ कोसलाधीस रघुराया ❀ आये करन तोहिं पर दाया
जौं पिय मानहु मोर सिखावन ❀ होइ सुयश तिहुँपुर अति पावन

वही अवधपति रामजी आपपर दया करनेके लिये यहाँ आए हैं, हे प्रियतम ! यदि आप मेरी यह शिक्षा मान लेंगे तो तीनों लोकों में आपका पवित्र यश फैलेगा ।।

दोहा—अस कहि लोचन बारि भरि, गहि पद कंपति गात ।
नाथ भजहु रघुबीर पद, मम अहिवात न जात ।। ८ ।।

ऐसा कह नेत्रोंमें जल भरकर कंपित शरीर हो मन्दोदरी ने चरण पकड़कर कहा—हे नाथ ! रामजी के चरणों का भजन करें, इससे मेरा सुहाग बना रहेगा ।। ८ ।।

तब रावन मयसुता उठाई ❀ कहै लाग खल निज प्रभुताई
सुनु तै प्रिया मृषा भय माना ❀ जग जोधा को मोहिं समाना

तब वह दुष्ट रावण मन्दोदरी को उठाकर अपनी बड़ाई करने लगा कि हे प्रिये ! सुन, तू व्यर्थ ही भय मानती है, मेरे समान संसार में कौन योद्धा है ? ।।

बरुन कुबर पवन यम काला ❀ भुजबल जितेउँ सकल दिगपाला
देव दनुज नर सब बस मोरे ❀ कवन हेतु उपजा भय तोरे

वरुण, कुबेर, वायुदेव, यम और काल इन सबको मैंनें अपनी भुजाओंके बलसे जीत लिया है ।। राक्षस और मनुष्य सभी मेरे वश में हैं फिर तेरे हृदय में भय क्यों उत्पन्न हुआ है ? ।।

नाना विधि तेहि कहि समुझाई ❀ सभा बहोरि बैठ सो जाई
मंदोदरी हृदय अस जाना ❀ काल विवस उपजा अभिमाना

रावण ने उसे अनेक प्रकार से कहकर समझाया और फिर सभा में जा बैठा ।। तब मन्दोदरी ने मनमें ऐसा जाना कि इन्हें कालके वश अभिमान उत्पन्न हो गया है ।।

सभा जाय मंत्रिन सन बूझा ❀ करिय कवन विधि रिपु सन जूझा
कहहिं सचिव सुनु निसिचर नाहा ❀ बार बार प्रभु बूझहु काहा

तब सभा में जाकर रावण ने मन्त्रियों से पूछा कि किस प्रकार शत्रु से युद्ध किया जाय ? तब मन्त्रियों ने कहा—हे राक्षसराज ! सुनिए, हे प्रभो ! बारम्बार क्या पूछते हैं ?

कहहु कवन भय करिय विचारा ❀ नर कपि भालु अहार हमारा

कहिए किस भय से विचार करें, मनुष्य, बन्दर और भालू ही तो हमारे आहार हैं ॥

दोहा—बचन सबनि के श्रवन सुनि, कह प्रहस्त कर जोरि ।
नीति विरोध न करिय प्रभु, मंत्रिन मति अति थोरि ॥९॥

तब सबकी बातें अपने कान से सुनकर प्रहस्त ने हाथ जोड़कर कहा—हे प्रभो ! नीतिका विरोध न कीजिये, आपके मन्त्रियों की बुद्धि बहुत थोड़ी है ॥ ९ ॥

सचिव कहहिं सब ठकुरसुहाती ❀ नाथ न पूर आव इहि भाँती
बारिधि लाँघि एक कपि आवा ❀ तासु चरित मन महँ सब गावा

क्योंकि ये सब मन्त्रिगण मुँह-देखी बात करते हैं, हे नाथ ! पूरा नहीं पड़ेगा ॥ समुद्र लाँघकर एक बन्दर आया था, जिसको देखकर सब मन ही मन प्रशंसा करते हैं ॥

क्षुधा न रही तुम्हहिं सब काहू ❀ जारत नगर न कस धरि खाहू
सुनत नीक आगे दुख पावा ❀ मंत्रिन अस मति प्रभुहिं सुनावा

जब उसने नगर जलाया तब तुम सब उसे पकड़कर खा क्यों नहीं गये ॥ मन्त्रियों ने जो यह सम्मति प्रभु को सुनाई है तो वह सुनने में अच्छी है, पर आगें दुःखदायक है ॥

जेहि बारीस बँधायउ हेला ❀ उतरे कपिदल सहित सुबेला
जो भनु मनुज खाब हम भाई ❀ बचन कहहिं सब गाल फुलाये

जो समुद्र में पुल बँधवा बन्दरों की सेना सहित उतरकर सुवेल पर्वत आये । हे भाई ! क्या वे मनुष्य हैं कि जिनको हमलोग खायेंगे ? यह बातें सब गाल फुलाकर कह रहे हैं ॥

तात बचन सुनु मम अति आदर ❀ जनि मन गुनहु मोहिं करि कादर
प्रिय वाणी जे सुनहिं जे कहहीं ❀ ऐसे नर निकाय जग अहहीं

हे तात ! मेरी यह वाणी अत्यन्त आदरसहित सुनिये और मनमें मुझे कायर न जानियेगा ॥ प्रिय बात कहने और सुनने वाले मनुष्य संसार में बहुत होते हैं ॥

बचन परम हित सुनत कठोरे ❀ कहहिं जे सुनहिं ते नर प्रभु थोरे
प्रथम बसीठि पठव सुनु नीती ❀ सीतहिं देइ करिय पुनि प्रीती

हे प्रभो ! परम हितकारी बात जो सुनने में कड़ी हो ऐसे कहने और सुननेवाले थोड़े ही होते हैं ॥ यह नीति है कि पहले दूत भेजिए, फिर सीता को देकर उनसे प्रेम कीजिए ॥

दोहा—नारि पाय फिरि जाहिं जौं, तौ न बढाइय रारि ।
नाहित सन्मुख समर महँ, तात करिय हठि मारि ॥१०॥

यदि स्त्री को पाकर लौट जायँ तो शत्रुता न बढ़ाइये और नहीं तो हे तात ! सामने समर के बीच संग्राम कीजिये ॥ १० ॥

यह मत जो मानहु प्रभु मोरा ❀ उभय प्रकार सुजस जग तोरा

सुन सन दशकंठ रिसाई ❀ अस मति शठ तोहिं कवन सिखाई

हे प्रभो ! यदि आप यह मेरी सलाह मानो तो दोनों प्रकार से आपकी जगत् में भलाई है, तब रावण ने क्रोध करके पुत्र से कहा कि, शठ ! ऐसी बुद्धि तुझे किसने सिखाई है ।।

अबहीं ते उर संशय होई ❀ वेणुवंस सुत भयसि घमोई
सुनि पितु गिरा परुष अति घोरा ❀ चला भवन कहि बचन कठोरा

तेरे मनमें अभी से शंका हो रही है ? हे पुत्र ! तू वेणु के वंश में घमोई हो गया तब पिता की अत्यन्त कठोर वाणी सुन प्रहस्त कड़ी बात कहकर घर को चला गया ।।

हित मत तोहिं न लागत कैसे ❀ काल विवश कहँ भेषज जैसे
संध्या समय जानि दससीसा ❀ भवन चला निरखत भुज बीसा

तुम्हें हितकारी बातें ऐसे ही अच्छी नहीं लगतीं जैसे कालके वशवर्ती पुरुष को औषधि अच्छी नहीं लगती ।। संध्याका समय जानकर रावण बीसों भुजाओं को देखता हुआ घरको चला ।।

लंका शिखर रुचिर आगारा ❀ अति विचित्र तहँ होय अखारा
बैठ जाय तेहि मन्दिर रावन ❀ लागे किन्नर गुणगण गावन

लंकाके शिखर पर रावणका सुन्दर घर था, वहां एक विचित्र अखाड़े में नाच हो रहा था ।। उस मन्दिर में जाकर रावण बैठा और किन्नर उसके गुणों का गान करने लगे ।।

बाजहिं ताल पखाउज बीना ❀ नृत्य करहिं अप्सरा प्रवीना

ताल पखाउज, और वीणा आदि बाजे बजने लगे, नृत्यकलामें प्रवीण अप्सरायें नाचने लगीं ।।

दोहा—सुनासीर शत सरिस सो, सन्तत करै विलास ।
परम प्रबल रिपु सीस पर, तदपि न कछु मन त्रास ।।११।।

रावण सर्वदा सौ इन्द्रोंके समान भोग-बिलास किया करता, यद्यपि उसके सिरपर महा-प्रबल शत्रु चढ़ आया था, तो भी उसके मनमें कुछ भय नहीं था ।। ११ ।।

इहाँ सुबेल शैल रघुबीरा ❀ उतरे सेन सहित अति भीरा
शैल श्रृंग इक सुन्दर देखी ❀ अति उतंग सम सुभग विशेखी

यहां श्रीरामजी सुबेल पर्वतपर उतरकर सेना सहित उसपर बैठे, जहां बड़ी भीड़ थी ।। पर्वत के शिखर पर जो ऊँचा और परम रमणीय था, जिसकी भूमि बराबर थी ।।

तहँ तरु किसलय सुमन सुहाये ❀ लछमन रचि निज हाथ डसाये
तापर रुचिर मृदुल मृगछाला ❀ तेहि आसन आसीन कृपाला

वहां लक्ष्मणजी ने वृक्षों के कोमल पत्ते और फूल बिछा अपने हाथों से शय्या तैयार कर मृगछाला बिछाई, उसी आसन पर दयालु रामजी जाकर बैठे ।।

प्रभुकृत सीस कपीस उछंगा ❀ बाम दहिन दिसि चाप निषंगा
दुहुँ कर कमल सुधारत बाना ❀ तह लंकेश मंत्र लगि काना

प्रभुका शिर सुग्रीवकी गोदमें था, और बाईं-दाहिनी ओर धनुष-बाण रखे हुए थे, कमल-के समान दोनों हाथों से बाण सुधारते हैं और विभीषण कान लगकर मंत्र कह रहे थे ।।

बड़ भागी अंगद हनुमाना ❀ चरण कमल चापत विधि नाना
प्रभु पीछे लक्ष्मण बीरासन ❀ कटि निषंग कर बान सरासन

अंगद और हनुमान् बड़े भाग्यशाली हैं कि जो अनेक प्रकारसे प्रभुके पाँव दबा रहे हैं ।। प्रभु के पीछे बीरासन से लक्ष्मणजी कमर में तरकस और हाथ में धनुषबाण लिये बैठे हैं ।।

दोहा—यहि विधि करुणा सील गुण, धाम राम आसीन ।
धन्य ते नर यहि ध्यान जे, रहत सदा लवलीन ।।१२।।

इस प्रकार से करुणा, शील और गुणोंके धाम, श्रीरामचन्द्रजी आसीन हैं, वे नर धन्य हैं कि जो इस ध्यान में सर्वदा लवलीन रहते हैं ।। १२ ।।

पूरब दिसा बिलोकि प्रभु, देखा उदित मयंक ।
कहेउ सबहिं देखहु ससिहिं, मृगपति सरिस असंक ।।१३।।

तब पूर्व दिशाकी ओर देखकर प्रभुने देखा तो चन्द्रमा उदय हुआ है । तब उन्होंने सबसे कहा कि मृगपति अर्थात् सिंह के समान निःशंक चन्द्रमा को आप लोग देखें ।। १३ ।।

पूरब दिसि गिरि गुहा निवासी ❀ परम प्रताप तेज बल रासी
मत्त नाग तम कुम्भ बिदारी ❀ ससि केसरी गगन बन चारी

पूर्व दिशारूपी पहाड़की गुफामें बास करनेवाला सिंह बड़ा प्रतापी बल और तेज की राशि है ।। जो अन्धकार रूपी मत्तहस्तीके गण्डस्थलको विदीर्ण कर आकाशरूपी वनमें विचरण करता है ।

बिथुरे नभ मुकुताहल तारा ❀ निसि सुन्दरी केर श्रृंगारा
कह प्रभु ससि महँ मेचकताई ❀ कहहु काह निज निज मति भाई

तारागण रूपी मोती बिखरे आते हैं जो रात्रि रूपी स्त्री का श्रृंगार है ।। प्रभुने कहा—हे भाई ! चन्द्रमा में जो यह कालिमा है सो क्या है ? अपनी-अपनी संमति से कहो ।।

कह सुग्रीव सुनहु रघुराया ❀ ससि महँ प्रगट भूमि की छाया
मारेहु राहु ससिहिं कह कोई ❀ उर महँ परी श्यामता सोई

तब सुग्रीव ने कहा—हे रामजी ! सुनिए, इसमें भूमिकी छाया प्रकट है ।। किसीने कहा नहीं, जब राहुने चन्द्रमाको मारा था, तब उसकी यह कालिमा उसके हृदयमें पड़ गई है ।।

कोउ कह बिधि जब रति मुख कीन्हा ❀ सार भाग ससि कर हरि लीन्हा
छिद्र सो प्रगट इन्दु उर माहीं ❀ तेहि मगु देखिय नभ परिछाहीं

किसीने कहा कि जब विधाताने रतिका मुख बनाया तो चन्द्रमाका सार अंश हर लिया ।। वही छिद्र चन्द्रमाके हृदय में पड़ गया, उसी मार्ग से आकाशकी परछाहीं दीख पड़ती है ।।

कह प्रभु गरल बंधु ससि केरा ❀ अति प्रिय तेही उर दीन्ह बसेरा
विष संयुत कर निकर पसारी ❀ जारत बिरहवन्त नर नारी

प्रभुने कहा—चन्द्रमाका विष भाई है, वह अतिप्रिय होने से उसके हृदय में आ बसा है ॥ इसीसे चन्द्रमा विषयुक्त किरणों को फैलाकर वियोगी स्त्री-पुरुषों को जलाता है ॥

दोहा—कह मारुत सुत सुनहु प्रभु, शशि तुम्हार प्रिय दास ।
तव मूरति तेहि उर बसति, सोइ श्यामता भास ॥१४॥

हनुमान्‌जीने कहा—हे प्रभो ! सुनिये, चन्द्रमा आपका प्रिय दास है । इससे आपकी साँवली मूर्ति उसके हृदय में बसती है, वही यह श्यामता है ॥१४॥

पवनतनय के बचन सुनि, बिहँसे राम सुजान ।
दक्षिण दिशा बिलोकि प्रभु, बोले कृपानिधान ॥१५॥

तब हनुमानजीकी बात सुनकर सुजान श्रीरामचन्द्रजी हँसे और फिर दक्षिण दिशा को देखकर बोले ॥१५॥

देख विभीषण दक्षिण आसा ❁ घन घमंड दामिनी बिलासा
मधुर मधुर गर्जत घन घोरा ❁ होइ वृष्टि जनु उपल कठोरा

हे विभीषण ! दक्षिण दिशा की ओर तो देखो कि बादल कैसे उमड़ रहे हैं और बिजली कैसी चमक रही है ?॥ बादल मधुर-मधुर गर्जन करते हैं मानों कठिन ओलोंकी वर्षा होगी ॥

कहहिं विभीषण सुनहु कृपाला ❁ होइ न तड़ित न बारिद माला
लंका शिखर रुचिर आगारा ❁ तहँ दशकन्धर केर अखारा

तब विभीषण ने कहा—हे कृपालु ! सुनिए, यह बिजली और घनमाला नहीं है ॥ यह लंका के ऊपर एक सुन्दर मकान है जहाँ रावण का अखाड़ा है ॥

छत्र मेघ डम्बर शिर धारी ❁ सो प्रभु जलद घटा अति कारी
मन्दोदरी श्रवन ताटंका ❁ सोइ प्रभु जनु दामिनी दमंका

हे रामजी ! रावणके शिरपर जो मेघ-सदृश छत्र शोभित है वही मानो बादलों की काली घटा है॥ और जो मन्दोदरी के कर्णफूल चमकते हैं, वही मानो बिजली की चमक हो रही है ॥

बाजहिं ताल मृदंग अनूपा ❁ सोइ रव सरिस सुनहु सुर भूपा
प्रभु मुसुकाय समुझि अभिमाना ❁ चाप चढ़ाय बान संधाना

और जो अनुपम ताल-मृदङ्गकी ध्वनि है, हे देवताओं के राजा ! सुनिए, वही मानो मेघकी सी गर्जन है, तब रावणका यह अभिमान समझकर रामजी मुस्कराये और तुरन्त बाण चढ़ाकर छोड़े ॥

दोहा—छत्र मुकुट ताटंक सब, हने एक ही बान ।
सबके देखत महि गिरे, मर्म न काहू जान ॥१६॥

तब एक ही बाण से रावण का छत्र, मुकुट और मन्दोदरी के कर्णफूल काट दिए जो सबके देखते ही पृथ्वी पर गिर पड़े, किन्तु इस भेद को किसी ने नहीं जाना ॥१६॥

दोहा—यह कौतुक करि रामशर, प्रविशे आय निषंग।
रावन सभा सशंक सब, देखि महा रस भंग ॥१७॥

श्रीरामचन्द्रजी का वह बाण यह कौतुक कर फिर तरकस में आ घुसा। इस रस-भंग से रावण की सभा शंकित हो गई और सब सोचने लगे कि यह क्या हो गया ?॥१७॥

कम्प न भूमि न मरुत विशेखा ❁ अस्त्र-शस्त्र कोउ नैन न देखा
सोचहिं सब निज हृदय बिचारी ❁ असकुन भयउ रावनहिं भारी

न तो भूचाल आया और न आँधी आई, अस्त्र-शस्त्र भी आँखों से दिखाई नहीं पड़ा॥ सब ऐसे ही मन में सोचते-विचारते हैं कि यह रावण को बड़ा असगुन हुआ॥

रावन देखि सभा भय पाई ❁ बिहँसि बचन कह युक्ति बनाई
शिरौ गिरे सन्तत शुभ जाही ❁ मुकुट गिरें कस असगुन ताही

जब रावण ने देखा कि लोग डर गये हैं, तब वह हँसता हुआ बोला—जिसका शिर कटकर गिरने पर भी शुभ ही होता है तो मुकुट गिरने से उसका असगुन कैसे हो सकता है?

शयन करहु निज निज गृह जाई ❁ गवने भवन सकल सिर नाई
मन्दोदरी शोच उर बसेऊ ❁ जब ते कर्णफूल महि खसेऊ

जाओ अपने-अपने घर सो रहो, फिर तो वे सब शिर नवाकर अपने घर चले गए॥ किन्तु जबसे कर्णफूल जमीन पर गिरा तबसे मन्दोदरी के हृदय में चिन्ता बस गई॥

सजल नयन कह दुहुँ कर जोरी ❁ सुनहु प्राणपति बिनती मोरी
कन्त राम बिरोध परिहरहू ❁ जानि मनुज जनि हठ उर धरहू

वह नेत्रों में जल भरकर दोनों हाथ जोड़कर बोली कि हे स्वामी! मेरी एक प्रार्थना सुनो॥ हे कन्त! श्रीरामजीसे बैर छोड़ दो और उनको मनुष्य न जानो॥

दोहा—विश्वरूप रघुवंश मणि, करहु बचन विश्वासु।
लोक कल्पना वेद कर, अंग अंग प्रति जासु ॥१८॥

वे रघुवंशमणि विश्वरूप हैं, मेरी इस बात का विश्वास करो। लोक में तथा वेदों में कहा है कि उनके अंग-प्रत्यंग में सब लोकों की कल्पना है॥१८॥

पग पाताल शीश अज धामा ❁ अपर लोक अंगन्ह विश्रामा
भृकुटि बिलास भयंकर काला ❁ नयन दिवाकर कच घनमाला

उनका पग पाताल, ब्रह्मलोक मस्तक और सब लोक अङ्गों के विश्राम हैं॥ उनकी भृकुटी मात्र से ही भयदायक काल उत्पन्न हो जाता है, सूर्य आँखें हैं, और मेघमाला ही केश हैं॥

जासु घ्राण अश्विनी कुमारा ❁ निशि अरु दिवस निमेष अपारा
श्रवण दिशा दश वेद बखानी ❁ मारुत श्वास निगम निज बानी

भला, जिसकी नाक अश्विनीकुमार है, रात और दिन अपार पलक लगते हैं। दशों दिशायें ही कान हैं, वायु ही जिनकी श्वाँस है, ओर वेद ही जिसकी वाणी हैं॥

अधर लोभ यम दशन कराला ❀ माया हास बाहु दिगपाला
आनन अनल अम्बुपति जीहा ❀ उतपति पालन प्रलय समीहा

जिनके अधर ही लोभ हैं जिनके कराल दाँत ही यमराज हैं, हास्य माया और भुजाय ही दिक्पाल हैं ।। मुख अग्नि, जीभ वरुण और उत्पत्ति प्रलय ही जिनका कार्य है ।।

रोमावलि अष्टादश भारा ❀ अस्थि शैल सरिता नस जारा
उदर उदधि अध गो यातना ❀ जग महँ प्रभु की बहुत कल्पना

इनके रोम ही बनस्पतिं हैं । पहाड़ उनकी अस्थियाँ हैं, नदियां ही नसों की जड़े हैं। उनका पेट समुद्र और दिशा-स्थान नरक है, ऐसे विश्व-रूप प्रभु की संसार में अनेक कल्पनायें हैं ।।

दोहा—अहंकार शिव बुद्धि अज, मन शशि चित्त महान ।
मनुज बास चर अचर सब, रूपराशि भगवान ।।१९।।

अहंकार शिवजी, बुद्धि ब्रह्माजी, मन चन्द्रमा और चित्त महत्तत्त्व है ऐसे रूपकी राशि भगवान् का मनुष्य और चराचर प्राणियों में वास है ।। १९ ।।

अस बिचारि सुनु प्राणपति, प्रभु सन बैर बिहाइ ।
प्रीति करहु रघुबीर पद, मम अहिवात न जाइ ।।२०।।

हे प्राणपति ! सुनिए, ऐसा विचारकर प्रभुसे वैर छोड़ उनके चरणों में प्रीति कीजिए कि जिससे मेरा सुहाग बना रहे ।। २० ।।

बिहँसा नारि बचन सुनि काना ❀ अहो मोह—महिमा बलवाना
नारि सुभाव सत्य कवि कहहीं ❀ अवगुण आठ सदा उर रहहीं

स्त्रीकी बात कानोंसे सुनकर रावण हँसा और कहने लगा, अहो ! मोहकी महिमा बलवान् है ।। कवियों का कहना सत्य है कि स्त्रियोंके हृदयमें आठ अवगुण सर्वदा ही बने रहते हैं ।।

साहस अनृत चपलता माया ❀ भय अविवेक अशौच अदाया
रिपुकर रूप सकल तैं गावा ❀ अति विशाल भय मोहिं सुनावा

साहस, असत्य बोलना, चंचलता, माया, भय, अज्ञानता, अपवित्रता और निर्दयता ।। तूने शत्रु का रूप सब प्रकार से कहा और उससे मुझे बड़ा भय सुनाया ।।

सो सब प्रिया सहज बस मोरे ❀ समुझि परा प्रभाव अब तोरे
जानेउँ प्रिया तोरि चतुराई ❀ यहि मिस कहेउ मोरि प्रभुताई

किन्तु हे प्रिये ! यह सब मेरे सहज ही वश में हैं । अब मुझे तेरा प्रभाव समझ पड़ा ।। हे प्रिये ! मैं तेरी चतुरता जान गया कि इसी बहाने तूने मेरी प्रभुता कही है ।।

तव बतकही गूढ़ मृगलोचनि ❀ समुझत सुखद सुनत भय मोचनि
मन्दोदरि मनमहँ यह ठयऊ ❀ पियहिं काल बस मतिभ्रम भयऊ

हे मृगनयनी ! तेरी गूढ़ बातें समझनेमें सुखदायक और सुननेमें भयको दूर करनेवाली हैं ।। तब मन्दोदरीने अपने मनमें निश्चय जाना कि मृत्युके वशमें होनेसे पतिकी बुद्धि भ्रमित है ।।

दोहा—बहु विधि जल्पेसि सकल निसि, प्रात भये दसकंध ।
सहज अशंक सो लंकपति, सभा गयउ मति अन्ध ॥ २१ ॥

रावण बहुत प्रकार से सारी रात बकवाद करता रहा। प्रातः होते ही वह स्वभाव से निडर और बुद्धि का अन्धा लंकापति अपनी सभा में गया ॥२१॥

सो०—फूलै फलै न बेत, यदपि सुधा वर्षहिं जलद ।
मूरख हृदय न चेत, जौं गुरु मिलहिं बिरंचि सम ॥ ३ ॥

यदि बादल अमृत की ही वर्षा करे तो भी बेत फूलता-फलता नहीं ॥ इसी प्रकार ब्रह्मा ही गुरु क्यों न मिल जायँ परन्तु मूर्ख के हृदय में ज्ञान उत्पन्न नहीं होता ॥३॥

इहाँ प्रात जागे रघुराई ❁ पूछा मत सब सचिव बुलाई
कहहु बेगि का करिय उपाई ❁ जामवन्त कह पद सिर नाई

इधर प्रातःकाल होते ही श्रीरामचन्द्रजी जागे तो मन्त्रियों को बुलाकर पूछा कि, ॥ कहो अब क्या उपाय किया जाय ? तब जामवन्त ने चरणों में शिर नवाकर कहा ॥

सुन सर्वज्ञ सकल उर बासी ❁ सर्वरूप सब रहित उदासी
मन्त्र कहहु निज मति अनुसारा ❁ दूत पठाइय बालि कुमारा

हे सर्वज्ञ ! सबके हृदय में बसनेवाले, सर्वरूप, हितकारी, हे सबसे उदासीन रहनेवाले—मैं अपनी बुद्धि के अनुसार यह उपाय कहता हूँ कि पहले अंगदजी को दूत बनाकर भेजा जाय ॥

नीक मन्त्र सबके मन माना ❁ अंगद सन कह कृपानिधाना
बालि तनय बुधि बल गुण धामा ❁ लंका जाहु तात मम कामा

तब यह मन्त्र सबके मन को अच्छा लगा, कृपानिधान श्रीरामचन्द्रजी ने अंगद से कहा कि हे बालिपुत्र ! तुम सब गुणों के धाम हो, इससे तुम्हीं लंका को जाओ ॥

बहुत बुझाय तुमहिं का कहेऊँ ❁ परम चतुर मैं जानत अहऊँ
काज हमार तासु हित होई ❁ रिपुसन करेहु बतकही सोई

मैं तुम्हें बहुत समझाकर क्या कहूँ, जानता हूँ कि तुम बड़े चतुर हो ॥ जिससे कि हमारा कार्य हो और उसका भी कल्याण होवे. शत्रु से वैसो ही बातें करना ।

सो०—प्रभु आज्ञा धरि शीश, चरण बन्दि अंगद उठेउ ।
सोइ गुण सागर ईश, राम कृपा जापर करेउ ॥ ४ ॥

तब प्रभु की आज्ञा को शिर पर धारण कर उनके चरणों की बन्दना कर अंगद उठे ॥ और बोले कि हे ईश्वर रामचन्द्रजी ! गुणों का समुद्र वही है जिसपर आप कृपा करें ॥४॥

स्वयं सिद्ध सब काज, नाथ मोहिं आदर दयउ ।
अस बिचारि युवराज, तनु पुलकित हर्षित भयउ ॥ ५ ॥

हे नाथ! आपका स्वयं ही सब कार्य सिद्ध है, परन्तु यह आपने मुझे आदर दिया है ।। ऐसा विचार करते हुए अंगद मारे प्रसन्नता के पुलकित हो गये ।। ५ ।।

बन्दि चरण उर धरि प्रभुताई ❁ अंगद चलेउ सबहिं शिर नाई
प्रभु प्रताप उर सहज अशंका ❁ रण बाँकुरा बालि सुत बंका

फिर रामचन्द्रजी के चरणों की प्रभुता को हृदय में धारण कर सबको सिर नवाकर अंगद चल दिये ।। प्रभु के प्रताप से बलवान् बालि-पुत्र अंगद निडर और रण में वीर हो गये ।।

पुर पैठत रावण कर बेटा ❁ खेलत रहा सो हो गइ भेटा
बातहिं बात कर्ष बढ़ि आई ❁ युगल अतुल बल पुनि तरुणाई

लंकामें प्रवेश करते ही रावणका बेटा जो वहाँ खेल रहा था, उससे भेंट हो गई ।। बातों ही बातों में क्रोध बढ़ आया, दोनों ही अतुल बलशाली और जवान थे ।।

तेहि अंगद कहँ लात उठाई ❁ गहि गद पटकेउ भूमि भ्रमाई
निशिचर निकर देखि भट भारी ❁ जहँ तहँ चले न सकहिं पुकारी

उसने अंगद को लात उठाया तो अंगद ने उसकी टाँग पकड़ कर घुमाया और पृथ्वी पर दे पटका ।। राक्षसों का समूह अंगद को भारी योद्धा देख जहाँ-तहाँ भाग चला ।।

एक एक सन मर्म न कहहीं ❁ समुझि तासु बल चुप होइ रहहीं
भयउ कोलाहल नगर मँझारी ❁ आवा कपि लंका जेहि जारी

एक दूसरे से मर्म नहीं कहते, उसका बल समझकर चुपचाप रहते हैं ।। नगर में बड़ा कोलाहल हो गया, सब कहते कि वही बन्दर फिर आया है कि जिसने लंका जलाया था ।।

अबधौं काह करिहि करतारा ❁ अति सभीत सब करहिं विचारा
बिनु पूछे मगु देहि बताई ❁ जेहि बिलोकि सोइ जाय सुखाई

अब नहीं पता कि ईश्वर क्या करेंगे, सब अत्यन्त डरे हुए विचार कर रहे थे ।। बिना पूछे ही मार्ग बता देते हैं, अंगद जिसको देखते थे, वह सूख जाता था ।।

दोहा–गयउ सभा दरबार रिपु, सुमिरि राम पद कञ्ज ।
सिंह ठवनि इत उत चितव, धीर बीर बल पुञ्ज ।।२२।।

तब अंगद श्रीरामचन्द्रजी के चरणों का स्मरण कर शत्रु की सभा में गये और वे धीर वीर तथा बल के समूह सिंह की भाँति इधर-उधर देखने लगे ।। २२ ।।

तुरत निशाचर एक पठावा ❁ समाचार रावणहिं सुनावा
सुनत बचन बोलेउ दशशीशा ❁ आनउ बोलि कहाँ कर कीशा

उसी समय एक राक्षस गया जिसने रावण को जाकर सारा हाल सुना दिया कि ।। अब एक दूसरा बन्दर और आया है, यह सुनते ही रावण ने कहा-बुलाओ, कहाँ का बन्दर है ।।

आयसु पाइ दूत बहु धाये ❁ कपि कुञ्जरहिं बोलि लै आये
अंगद दीख दशानन बैसा ❁ सहित प्राण कज्जल गिरि जैसा

आज्ञा पाते ही बहुत से दूत दौड़ पड़े और बानरों में सिंह के समान अंगद को बुला लाये ॥ अंगद ने आकर रावण को ऐसा देखा कि मानो प्राण समेत कज्जल का पहाड़ हो ॥

भुजा विटप शिर श्रृंग समाना ❁ रोमावली लता जनु नाना
मुख नासिका नयन अरु काना ❁ गिरि कन्दरा खोह अनुमाना

जिसकी भुजायें वृक्षके समान हैं, शिर पहाड़की चोटी-सा है, रोमावली (रोयें) मानों लताके समान हैं ॥ मुख, नासिका, आँखें और कान पहाड़ की खोह (कन्दरा) के समान हैं ॥

गयउ सभा मन नेकु न मुरा ❁ बालि तनय अतिबल बाँकुरा
उठी सभा सब कपि कहँ देखी ❁ रावण उर भा क्षोभ विशेषी

युद्ध में वीर अंगद अपने मनमें तनिक भी नहीं दहले और सभा में गये ॥ सारी सभा अंगदजी को देखकर उठ खड़ी हुई और रावण के मनमें बड़ा क्षोभ हुआ ॥

दोहा—यथा मत्तगज यूथ महँ, पंचानन चलि जाय ।
राम प्रताप सँभारि उर, बैठ सभहिं शिर नाय ॥२३॥

जैसे मतवाले हाथियोंके झुण्डमें सिंह चला जावे, ऐसे ही रामजी के प्रताप का स्मरण कर अंगद रावण की सभा में शिर झुकाकर जा बैठे ॥ २३ ॥

कह दशकन्ध कवन तैं बन्दर ❁ मैं रघुबीर दूत दशकन्धर
मम जनकहिं तोहिं रही मिताई ❁ तव हित कारण आयउँ भाई

तब रावण ने कहा—हे बन्दर ! तू कौन है ? अंगद बोले, हे दशकन्धर ! मैं श्रीरामचन्द्रजीका दूत हूँ, मेरे पिता से तेरी मित्रता थी, इसी कारण मैं तेरा हित करने आया हूँ ॥

उत्तम कुल पुलस्त्य कर नाती ❁ शिव बिरंचि पूजेउ बहु भाँती
बर पायउ कीन्हेउ सब काजा ❁ जीतेहु लोकपाल सुर राजा

तुम्हारा उत्तम कुल है, तुम पुलस्त्य ऋषिके नाती हो और तूने बहुत भाँतिसे शिव और ब्रह्माजीकी पूजा की है, वर पाकर सब काम किया है और इन्द्र तथा लोकपालोंको भी जीता है ॥

नृप अभिमान मोह वश किम्बा ❁ हरि आनेहु सीता जगदम्बा
अब शुभ कहा करहु तुम मोरा ❁ सब अपराध क्षमहिं प्रभु तोरा

उसी मोहाभिमान से तूने जगत्-माता सीताजी का हरण किया है ॥ अब तू मेरी शुभ बात को मानो, श्रीरामचन्द्रजी तेरे सारे अपराधों को क्षमा कर देंगे ॥

दशन गहहु तृण कंठ कुठारी ❁ पुरजन सहित संग निज नारी
सादर जनकसुतहिं करि आगे ❁ इहि विधि चलहु सकलभय त्यागे

दाँतों में तिनका दबाये और कण्ठ में कुल्हाड़ी बांधे हुए, पुरवासियों और अपनी स्त्री सहित सीताजी को आगे किये चलो ॥

दोहा—प्रणतपाल रघुवंशमणि, त्राहि त्राहि अब मोहिं ।
सुनतहिं आरत बचन प्रभु, अभय करहिंगे तोहिं ॥२४॥

और चलकर कहो कि हे प्रणतपाल रघुवंशमणि ! आप मेरी रक्षा कीजिये । तब तेरे इस आर्त वचन को सुनते ही वे प्रभु तुझे अभय कर देंगे ।। २४ ।।

रे कपि पोच न बोलु सँभारी ❀ मूढ़ न जानेसि मोहिं सुरारी
कहु निज नाम जनक कर भाई ❀ केहि नाते मानिये मिताई

रावण ने कहा कि रे पोच बन्दर! सँभलकर बोल, रे मूढ़! क्या जानता नहीं कि मैं देवताओं का शत्रु हूँ ।। हे भाई ! अपने बापका नाम तो कह किस नातेसे उसकी मित्रता थी ।।

अंगद नाम बालि कर बेटा ❀ तासों कबहुँ भई होइ भेंटा
अंगद बचन सनत सकुचाना ❀ रहा बालि बानर मैं जाना

तब अंगदने कहा—मैं बालिका बेटा अंगद हूँ, तुझसे उनसे कभी भेंट हुई होगी ।। तब अंगद की बात सुनकर रावण ने सकुचाकर कहा कि जानता हूँ, बालि एक बन्दर था ।।

अंगद तुही बालि कर बालक ❀ उपजेउ वंश अनल कुल घालक
गर्भ न खसेहु वृथा तुम जाये ❀ निज मुख तापस दूत कहाये

रे अंगद ! क्या तू ही बालिका बालक है ? हा ! तू अपने वंशको भस्म करने के लिए अग्निरूप ही उत्पन्न हुआ है ।। गर्भ हो में क्यों न खसा, वृथा ही उत्पन्न हुआ, अपने ही मुखसे तपस्वी का दूत बनता है ।।

अब कहु कुशल बालि कहँ अहई ❀ बिहँहि बचन अंगद अस कहई
दिन दश गये बालि पहँ जाई ❀ पूछेउ कुशल सखा उर लाई

अब तो कुशल कह कि बालि कहाँ है ? अंगद ने हँसकर कहा कि दस दिन बाद बालि के पास जाना और मित्र को छाती से लगाकर कुशल पूछ लेना ।।

राम बिरोध कुशल जस होई ❀ सो सब तुमहिं सुनाइहि सोई
सुनु शठ भेद होइ मन ताके ❀ श्रीरघुबीर हृदय नहिं जाके

श्रीरामचन्द्रजी से विरोध करने पर जैसी कुशल होती है वह सब तुझे ही सुनावेंगे ।। रे मूर्ख ! सुन, भेद तो उसके मनमें होता है कि जिसके हृदयमें रामजी न होवें ।।

दोहा—हम कुल घालक सत्य तुम, कुल पालक दशसीस ।
अन्धउ बधिर न कहहिं अस, श्रवण नयन तव बीस ।।२५।।

अच्छा तो मैं कुल का नाशक हूँ और तू कुल का पालक है ? ऐसी बात तो अन्धे और बहरे भी नहीं कह सकते, तेरे तो बीस कान और आँखें हैं ।। २५ ।।

शिव बिरंचि सुर मुनि समुदाई ❀ चाहत जासु चरण सेवकाई
तासु दूत होइ हम कुल बोरा ❀ ऐसिउ मति उर बिहरु न तोरा

श्रीमहादेवजी, ब्रह्माजी, देवता और समस्त मुनिजन जिनके चरणोंकी सेवा करना चाहते हैं ।। उनका दूत होकर तो हमने कुलको डुबो दिया, ऐसी बुद्धिसे भी तेरी छाती नहीं फटी?।।

सुनि कठोर बानी कपि केरी ❀ कहत दशानन नयन तरेरी
खल तव कठिन बचन मैं सहऊँ ❀ नीति धर्म सब जानत अहऊँ

बन्दर की ऐसी कठोर बात सुनकर रावण उसे नेत्रों से तरेरकर बोला, रे दुष्ट! तेरी कठिन बातें मैं सह रहा हूँ, क्योंकि सब नीति-धर्म को जानता हूँ ॥

कह कपि धर्म शीलता तोरी ❀ हमहुँ सुनी कृत परतिय चोरी
देखेउँ नयन दूत रखवारी ❀ बूड़ि न मरहु धर्म ब्रतधारी

हमने तेरी धर्मशीलता को सुना है कि तू पराई स्त्री की चोरी करता है॥ तेरी दूत रखवाली को भी आँखों से देखा है, रे धर्म व्रतधारी! तू डूब क्यों नहीं मरता?॥

नाक कान बिनु भगिनि निहारी ❀ क्षमा कीन्ह तुम धर्म बिचारी
धर्म शीलता तव जग जागी ❀ पावा दरस हमहुँ बड़ भागी

तूने अपनी बहन को नाक कान रहित देखकर भी धर्म विचार कर ही क्षमा कर दिया॥ तेरी इस धर्मशीलताको सारा संसार जानता है, हम भी बड़े भाग्यशाली हैं जो दर्शन पाये॥

दोहा—जनि जल्पसि जड़ जन्तु कपि, शठ बिलोकु मम बाहु।
लोकपाल बल बिपुल शशि, ग्रसन हेतु जिमि राहु ॥२६॥

तब रावण ने कहा—रे जड़ जन्तु! बहुत बकवाद मत कर, रे मूर्ख! मेरी भुजाओं को तो देख, यह लोकपालों के विपुल बल को भी ग्रसने के लिये मानो राहु हैं॥ २६॥

पुनि नभ सर मम कर निकर, कमलन्ह पर करि बास।
सोभित भयउ मराल इव, शंभु सहित कैलास ॥२७॥

यह तो देख कि आकाश सरोवर में मेरे हाथ रूपी कमलोंके ऊपर कैलाश पर्वत सहित श्रीमहादेवजी हंस की तरह सुशोभित हुए थे॥ २७॥

तुम्हरे कटक माहिं सुनु अंगद ❀ मोसन भिरहिं कवन योधा बद
तव प्रभु नारि बिरह बल हीना ❀ अनुज तासु दुख दुखित मलीना

रे अंगद! तू मुझे यह बता दे कि तेरे दलमें ऐसा कौन योद्धा है कि जो मुझसे लड़ सके। तेरा मालिक तो स्त्री के बिछोह में निर्बल हो गया और लक्ष्मण उसके दुःख से मलिन है॥

तुम सुग्रीव कूल द्रुम दोऊ ❀ बन्धु हमार भीरु अति सोऊ
जामवन्त मन्त्री अति बूढ़ा ❀ सो किमि होइ समर आरूढ़ा

अब रहे तुम और सुग्रीव, सो ऐसे ही हो जैसे करारेके वृक्ष और हमारा भाई विभीषण बड़ा डरपोक है। मन्त्री जामवन्त बूढ़ा ही है, वह वृद्ध मुझसे कैसे लड़ सकता है?॥

सिल्प कर्म जानत नल नीला ❀ है कपि एक महाबल सीला
आवा प्रथम नगर जेहि जारा ❀ सुनि हँसि बोलेउ बालि कुमारा

नल-नील शिल्पी हैं, हाँ, एक बन्दर महा बलशाली है जिसने पहले नगर को जलाया था, यह सुनकर अंगद ने हँसकर कहा॥

सत्य बचन कह निसिचर नाहा ❀ साँचेहु कीस कीन्ह पुर दाहा
रावण नगर अल्प कपि दहई ❀ सुनि अस बचन सत्य को कहई

हे रावण ! क्या यह सच्ची बात कह रहे हो कि उस बन्दरने तेरी नगरी को जला दिया था? रावण की नगरी को एक छोटा सा बन्दर जलावे ! यह कौन मूढ़ कहेगा और कौन सुनेगा ॥

जेहि अति सुभट सराहेउ रावन ❀ सो सुग्रीव केर लघु धावन
चलै बहुत सो बीर न होई ❀ पठवा खबर लेन हम सोई

हे रावण ! जिसे तू योधा कहकर सराहता है, वह सुग्रीव का छोटा सा दूत है ॥ बहुत चलने वाला वीर नहीं होता, उसको तो हमने केवल समाचार लेने को भेजा था ॥

दोहा—अब जाना पुर दहेउ कपि, बिनु प्रभु आयसु पाय ।
गयउ न फिरि रघुनाथ पहँ, तेहि भय रहेउ लुकाय ॥२८॥

किन्तु अब ज्ञात हुआ कि उसने बिना प्रभु की आज्ञाके ही नगर को जला दिया। शायद इसी डर से वह कहीं दुबक रहा है और लौटकर अपने मालिक के पास नहीं गया ॥२८॥

सत्य कहसि दसकंठ सब, मोहिं न सुनि कछु कोह ।
कोउ न हमरे कटक अस, तुम सन लरत जो सोह ॥२९॥

हे रावण ! तू ने यह सत्य ही कहा है जो सुनकर मुझे कुछ भी क्रोध नहीं है । क्योंकि मेरी सेनामें ऐसा कोई नहीं है जो तुझसे लड़ता हुआ शोभा पावे ॥२९॥

प्रीति विरोध समान सन, करिय नीति अस आहि ।
जौं मृगपति बध मेढुकन्हि, भल न कहै कोउ ताहि ॥३०॥

क्योंकि ऐसी नीति है कि प्रीति और बैर अपने समान से ही करनी चाहिये। यदि सिंह मेढकों को मारे तो उसे कौन सिंह कहेगा ? ॥३०॥

यद्यपि लघुता राम कहँ, तोहिं बधे बड़ दोष ।
तदपि कठिन दसकंठ सुनु, क्षत्रि जाति कर रोष ॥३१॥

यद्यपि श्रीरामचन्द्रजी महाराज की इसमें बड़ी तुच्छता है और तेरा बध करने में बड़ा दोष है । परन्तु तो भी हे रावण ! सुन क्षत्रिय जाति का कोप परम दारुण होता है ॥३१॥

बक्र उक्ति धनु बचन शर, हृदय दहेउ रिपु कीश ।
प्रतिउत्तर सँड़सिन मनहुँ, काढ़त भट दशशीश ॥३२॥

अङ्गद की ऐसी वक्रोक्ति रूपी धनुष के वचन रूपी बाण जो रावण की छाती में छेदे हैं उनको योद्धा रावण अपने प्रति-उत्तर रूपी सँड़सी के द्वारा निकालता है ॥३२॥

हँसि बोलेउ दसमौलि तब, कपिकर बड़ गुन एक ।
जो प्रतिपालै तासु हित, करइ उपाय अनेक ॥३३॥

तब दशमौलि रावणने हँसकर कहा कि बन्दर में एक बड़ा भारी गुण यह होता है कि जो इसको पालता है, उसकी भलाई के लिये यह अनेक तरह के उपाय करता है ॥३३॥

धन्य कास जो निज प्रभु काजा ❀ जहँ तहँ नाचहि परिहरि लाजा
नाच कूद कर लोक रिझाई ❀ पति हित करइ धर्म निपुणाई

वह बन्दर धन्य है जो अपने स्वामी के कार्य के लिए जहाँ-तहाँ लाज छोड़कर नाचता है ।। नाच-कूदकर लोगों को रिझाने तथा अपने स्वामी के लिए अनेक निपुणता के धर्म करते हैं ।।

अंगद स्वामि भक्त तव जाती ❀ प्रभु गुण कस न कहसि यहि भाँती
मैं गुण गाहक परम सुजाना ❀ तव कटु बचन करौं नहिं काना

हे अंगद ! तेरी तो जाति ही स्वामी-भक्त है, फिर अपने मालिक के गुण इस तरह क्यों न कहेगा ? मैं गुण-ग्राहक और परम चतुर हूँ इसलिए तेरे कड़ुवे वचनों पर कान नहीं करता हूँ ।।

कह कपि तव गुण गाहकताई ❀ सत्य पवनसुत मोहिं सुनाई
बन बिधंसि सुत बधिपुर जारा ❀ तदपि न तेहि कृत कछु अपकारा

कपि बोले, तुम्हारी गुण-ग्राहकता मुझे हनुमान् ने सुनाई है ।। उन्होंने बन उजारा तथा तेरे पुत्र को मारा, पुर को जलाया उस पर भी तुमने उनका कुछ अपकार नहीं किया ।।

सोइ विचारि तव प्रकृति सुहाई ❀ दशकन्धर मैं कीन्ह ढिठाई
देखेउँ आय जो कछु कपि भाषा ❀ तुम्हरे लाज न रोष न माषा

तेरी उसी सुन्दर प्रकृति को समझकर हे रावण ! मैंने यह धृष्टता की है ।। हनुमान् ने जो कहा था, वह मैंने अपनी आँखों से देखा, सच है तुझे लाज और क्रोध कुछ नहीं है ।।

जौं अस मति पितु खायसु कीसा ❀ कहि अस बचन हँसा दससीसा
पितहिं खाइ खातेउँ पुनि तोहीं ❀ अबहीं समुझि परा कछु मोहीं

तेरी ऐसी बुद्धि थी तभी तो पिता को खा लिया ऐसे कह कर रावण हँसा। तब अङ्गद ने कहा, पिता को खा लिया, फिर तुझे भी खाता, पर इसी समय मुझे एक बात समझमें आ गई है ।।

बालि बिमल यश भाजन जानी ❀ हतौं न तोहिं अधम अभिमानी
कहु रावण रावण जग केते ❀ मैं निज श्रवण सुने सुनु जेते

मैं तुझे अपने पिता के निर्मल यश का पात्र समझकर छोड़ देता हूँ, परन्तु हे रावण ! तू यह वता कि संसार में कितने रावण हैं, मैंने कानों से जितने सुने हैं उतने सुनो ।।

बलि जीतन एक गयउ पताला ❀ राखा बाँधि शिशुन हय शाला
खेलहिं बालक मारहिं जाई ❀ दया लागि बलि दीन्ह छुड़ाई

एक रावण तो बलि को जीतने पाताल में गया था जिसको बालक घुड़साल में बाँधकर खेलते थे और मारते थे तब राजा बलि को दया आ गई तो उन्होंने छुड़ा दिया ।।

एक बहोरि सहस भुज देखा ❀ धरा धाय जनु जन्तु विशेखा
कौतुक लागि भवन लै आवा ❀ सो पुलस्त्य मुनि जाय छुड़ावा

फिर एक रावण को सहस्रबाहु ने देखकर विशेष जन्तु के समान दौड़कर पकड़ लिया था ।। फिर खेल के लिए उसे अपने घर ले आया, जिसे पुलस्त्य मुनिने जाकर छुड़ा दिया ।।

दोहा—एक कहत मोहिं सकुच अति, रहा बालि की काँख।
तिन्ह महँ रावण कवन तुम, सत्य कहहु तजि माँख ॥३४॥

और एक रावण को कहते हुए मुझे संकोच लगता है कि जो बालि की काँखमें छः मास तक पड़ा रहा, हे रावण ! उसमें तू कौन है, अमर्ष छोड़कर सत्य कह ?॥ ३४ ॥

सुनु शठ सोइ रावण बल शीला ❋ हर गिरि जानु जासु भुज लीला
जान उमापति जासु सुराई ❋ पूजे जेहि सिर सुमन चढ़ाई

तब रावणने कहा, रे मूर्ख ! सुन, यह वही रावण है कि जिसकी भुजाओं का बल कैलास पर्वत जानता है, जिसकी वीरताको महादेवजी जानते हैं जिनको मैंने मस्तक रूपी फूल चढ़ाकर पूजा है।

सिर सरोज निज करन उतारी ❋ पूजेउँ अमित बार त्रिपुरारी
भुज विक्रम जानहिं दिगपाला ❋ शठ अजहूँ जिनके उर साला

मैंने अपने ही हाथोंसे अपने शिर रूपी कमल उतारकर अनेक बार महादेवजी की पूजा की है। रे मूर्ख ! मेरी भुजाओंके पराक्रम को दिक्पाल जानते हैं जिनके हृदयमें अब तक मेरा भय है ॥

जानहिं दिग्गज उर कठिनाई ❋ जब जब भिरेउँ जाइ बरिआई
तिन्हके दशन करालन फूटे ❋ उर लागत मूलक इव टूटे

मेरे हृदय की कठोरता को दिशाओंके हाथी जानते हैं कि जब-जब मैं बरिआई से उनसे जाकर भिड़ा तो उनके दांत मेरा वक्षस्थल लगते ही मूली की तरह टूट गये ॥

जासु चलत डोलत इमि धरणी ❋ चढ़त मत्तगज जिमि लघु तरणी
सोइ रावण जग विदित प्रतापी ❋ सुनै न श्रवण अलोक प्रलापी

जिसके चलने से पृथ्वी ऐसे डगमगाती है कि जैसे मतवाले हाथीके चढ़नेसे छोटी नौका डगमगा जाती है। वही यह प्रतापी रावण संसारमें प्रसिद्ध है, क्या मेरे उस प्रताप को कानोंसे नहीं सुना है ॥

दोहा—तेहि रावन कहँ लघु कहसि, नर कर करसि बखान।
रे कपि बर्बर खर्ब खल, अब जाना तव ज्ञान ॥३५॥

उसी रावण को तुच्छ कहता और मनुष्य की बड़ाई करता है। रे कपिके छोटे दुष्ट बालक ! अब मैंने तेरा ज्ञान जान लिया ॥ ३५ ॥

सुनि अंगद सकोप कह बानी ❋ बोलु सँभारि अधम अभिमानी
सहसबाहु भुज गहन अपारा ❋ दहन अनल सम जासु कुठारा

यह सुनकर अंगदने क्रोधसे कहा—रे अधम अभिमानी ! सँभाल कर बोल। सहस्रबाहु की अनेक भुजा रूपी बन को दग्ध करने के लिए जिसका कुल्हाड़ा अग्निके समान है ॥

जासु परशु सागर खर धारा ❋ बूड़े नृप अगणित बहु बारा
तासु गर्व जेहि देखत भागा ❋ सो नर किमि दशकंठ अभागा

जिसके परशुरूपी समुद्र की प्रबल धारामें अनेक राजा बहुत बार डूब चुके हैं ॥ उसका (परशुरामजी का) घमण्ड भी जिनको देखते ही भाग गया, रे अभागे रावण ! क्या वे मनुष्य हैं ॥

राम मनुज कस रे शठ बंगा ❀ धन्वी काम नदी पुनि गंगा
पशु सुरधेनु कल्प तरु रूखा ❀ अन्न दान अरु रस पीयूखा

रे मूर्ख रावण! क्या कामदेव कोई साधारण धनुषधारी है, गंगा कोई साधारण नदी है, क्या कामधेनु पशु और कल्पवृक्ष पेड़ है और क्या अन्नदान साधारण दान और क्या अमृत रस है।

बैनतेय खग अहि सहसानन ❀ चिन्तामणि किमि उपल दशानन
सुनु मतिमंद लोक बैकुण्ठा ❀ लाभ कि रघुपति भक्ति अकुण्ठा

क्या गरुड़ कोई साधारण पक्षी है और हजार मुखवाले शेष क्या साधारण सर्प और चिन्तामणि क्या कोई साधारण पत्थर है ? रे मूर्ख रावण ! सुन, क्या वैकुण्ठ कोई साधारण लोक है ? और क्या श्रीरामचन्द्रजीकी भक्ति कोई साधारण लाभ है ? ।।

दोहा—सेन सहित तव मान मथि, बन उजारि पुर जारि ।
कस रे शठ हनुमान कपि, गयउ जो तव सुत मारि ।।३६।।

और जो सेना समेत तेरे घमण्डको मथकर बागको उजाड़ लंका जलाया और अन्तमें तेरे बेटेको मारकर चला गया । रे शठ ! वह हनुमान् एक साधारण बानर हैं ? ।। ३६ ।।

सुनु रावण परिहरि चतुराई ❀ भजेसि न कृपासिंधु रघुराई
जो खल भयेसि रामकर द्रोही ❀ ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोहीं

रे रावण ! सुन, तू सारी चतुरता छोड़कर कृपासिंधु श्रीरामचन्द्रजीका भजन क्यों नही करता रे मूर्ख ! जो तू श्रीरामचन्द्रजीका द्रोही हुआ तो तुझे ब्रह्म और रुद्र भी नहीं रख सकेंगे ।।

मूढ़ मृषा जनि मारेसि गाला ❀ राम द्रोह होइहि अस हाला
तव शिर निकर कपिन के आगे ❀ परिहहिं धरणि राम शर लागे

रे मूढ़ ! वृथा गाल मत बजा, श्रीरामचन्द्रजीसे द्रोह करने पर तेरा ऐसा हाल होगा रामजीके बाण लगनेसे तेरे शिर बानरोंके आगे धरतीपर गिरेंगे ।।

ते तव शिर कंदुक सम नाना ❀ खेलहिं भालु कीस चौगना
जबहिं समर कोपहिं रघुनायक ❀ छूटहिं अति कराल बहु सायक

तब उन शिरोंको गेंदके समान बन्दर चौगान खेलेंगे । रामजी समर-भूमिमें कोप करेंगे, तब बहुत विकराल बाण छूटने लगेंगे ।।

तब कि चलहि अस गाल तुम्हारा ❀ अस बिचारि भजु राम उदारा
सुनत बचन रावन पर जरी ❀ बरत अनल महँ जनु घृत परा

क्या तब तेरा ऐसा गाल चलेगा ! यह विचार तू श्रीरामचन्द्रजी का भजन कर । यह वचन सुनते ही रावण ऐसे जल गया, मानो जलती हुई अग्निमें घी पड़ गया हो ।।

दोहा—कुम्भकर्ण सम बन्धु मम, सुत प्रसिद्ध शक्रारि ।
मोर पराक्रम सुनेसि नहिं, जितेउँ चराचर झारि ।।३७।।

तब रावणने कहा—रे मूर्ख ! कुम्भकर्ण सरीखे तो मेरे भाई और इन्द्रको जीतनेवाला मेर बेटा है । तूने मेरे पराक्रमको सुना नहीं, मैंने समस्त चराचर को जीत लिया है ।। ३७ ।।

शठ शाखामृग जोरि सहाई ❀ बाँधेसि सिन्धु इहै प्रभुताई
लाँघहिं खग अनेक बारीशा ❀ शूर न होहिं सुनहु जड़ कीशा

परन्तु तुझ मूर्खका यही पराक्रम है कि बन्दरोंको जोड़कर उनकी सहायतासे समुद्रमें पुल बांध लिया । ऐसे तो बहुतसे पक्षी भी समुद्रको लांघ जाते हैं, परन्तु वे शूर नहीं हो सकते ।।

मम भुज सागर बल जल पूरा ❀ जहँ बूड़े बहु सुर नर शूरा
बीस पयोधि अगाध अपारा ❀ को अस बीर जो पाइहि पारा

मेरी बीस भुजाओंमें बलरूपी जल भर रहा है, जिसमें बहुतसे देवता, मनुष्य और योद्धा डूब चुके हैं ।। यह अथाह अपार बीस समुद्र हैं ऐसा कौन वीर है जो इसका पार पा सके ?

दिगपालन मैं नीर भरावा ❀ भूप सुयस खल मोहिं सुनावा
जो पै समर सुभट तव नावा ❀ पुनि पुनि कहसि जासु गुण गाथा

मैंने तो दिक्पालों से पानी भरा लिया है और तू मुझे साधारण राजाओंका यश सुना रहा है ।। यदि तेरा मालिक समरमें योद्धा है तू जिसका गुणानुवाद कर रहा है ।।

तौ बसीठि पठवा केहि काजा ❀ रिपुसन प्रीति करत नहिं लाजा
हरगिरिमथन निरखि मम बाहू ❀ पुनि शठ कपि निज स्वामि सराहू

तो उसने दूत क्यों भेजा है ? क्या बैरीसे प्रीति करते उसे लज्जा नहीं आती ? रे मूर्ख ! कैलाश पर्वतको मथनेवाली तू मेरी भुजाओंको देख, फिर अपने स्वामीकी बड़ाई करना ।।

दोहा—शूर कवन रावण सरिस, निज कर काटे शीश ।
हुने अनल महँ बार बहु, हर्षित साखि गिरीश ।।३८।।

भला रावणके समान शूर कौन है कि जिसने अपने ही हाथसे अपने शिर काट अनेक बार अग्निमें हवन किए, इस बातके श्रीमहादेवजी साक्षी हैं ।। ३८ ।।

जरत बिलोकेउँ जबहिं कपाला ❀ बिधि के लिखे अंक निज भाला
नर के कर आपन बध बाँचो ❀ हँसेउ जानि बिधि गिरा असाँची

जब मैंने अपने कपालको जलता हुआ देखा तो मेरे माथेपर जो विधाताके अंक लिखे थे मैंने देखा ।। तब मनुष्यके हाथसे अपना मरना बांचकर मुझे हँसी आ गई, क्योंकि मैंने जान लिया कि ब्रह्माजीकी यह बात असत्य है ।।

सो मन समुझि त्रास नहिं मोरे ❀ लिखा बिरंचि जरठ मति भोरे
आन बीर बल शठ मम आगे ❀ पुनि पुनि कहसि लाज परित्यागे

सो वह समझकर भी मेरे मनमें कुछ त्रास नहीं है । वृद्ध ब्रह्मा बुद्धिकी शठतासे लिख गया है, अब तू आकर मेरे सामने दूसरे वीरका बल लाज छोड़कर कहता है ।।

कह अंगद सलज्ज जग माहीं ❀ रावण तोहि समान कोउ नाहीं

लाजवन्त कर सहज स्वभाऊ ❀ निजमुख निजगुण कहसि न काऊ

अंगदने कहा—सत्य है, तेरे समान संसारमें सलज्ज कोई नहीं है। लाजवन्तका स्वभाव ऐसा सहज है कि वह अपने मुखसे अपना गुण कभी नहीं कहता ॥

शिर अरु शैल कथा चित रही ❀ ताते बार बीस तैं कही
सो भुज बल राखेउ उर घाली ❀ जीतेउ सहसबार बलि बाली

सिर और पर्वतकी कथा तेरे चित्त चढ़ रही है जिसे तूने बीसों बार कही ॥ किन्तु उसे तुमने कहां रख दिया कि जिस बलसे सहस्रबाहु और बालिको जीता ॥

सुनु मति मन्द देहि अब पूरा ❀ काटे शीश न होइहिं शूरा
बाजीगर कहँ कहिय न बीरा ❀ काटै निज कर सकल शरीरा

रे मतिमन्द ! अब तू यह बतला कि क्या शिर काटनेवाले भी वीर होते हैं ? ॥ बाजीगर तो अपने हाथसे अपना सारा शरीर काट डालता है; किन्तु उसे कोई भी वीर नहीं कहता ॥

दोहा—जरहिं पतंग बिमोह वश, भार बहहिं खरवृन्द।
ते नहिं शूर कहावहीं, समुझि देखु मतिमन्द ॥ ३९ ॥

मोहके वश होकर फतिंगे जल जाते हैं और गधे भी बहुतसा भार ढोते हैं, पर वे वीर नहीं कहलाते, रे मूर्ख ! तू इसे भी समझ ॥ ३९ ॥

अब जनि बत बढ़ाव खल करही ❀ सुनि मम वचन मान परिहरही
दशमुख मैं न बसीठी आयउँ ❀ अस बिचारि रघुबीर पठायउ

रे दुष्ट ! अब बातें मत बढ़ा और मान छोड़ कर मेरे वचन सुन ॥ रे रावण ! मैं दूत बनकर नहीं आया हूँ, किन्तु यह विचारकर रघुनाथजीने मुझे भेजा है ॥

बार बार इमि कहेउ कृपाला ❀ नहिं गजारि जस बधे श्रृगाला
मन महँ समुझि बचन प्रभु केरे ❀ सहेउँ कठोर बचन सठ तेरे

बारम्बार उन कृपालुने ऐसा ही कहा है कि गीदड़के मारनेमें सिंहकी बड़ाई नहीं होती ॥ रे मूर्ख ! रामजीकी इस बातको समझकर मैंने तेरे कठोर वचन सहे हैं ॥

नाहित करि मुख भंजन तोरा ❀ लै जातेउँ सीतहिं बरजोरा
जानेउँ तव बल अधम सुरारी ❀ सूने हरि आनेसि पर नारी

नहीं तो तेरा मुँह तोड़कर सीताजीको जबर्दस्ती ले जाता ॥ रे नीच ! मैं तेरे बलको जान चुका कि तू सूनेमें पराई स्त्रीको हरकर ले आया है ॥

तैं निशिचर पति गर्व बहूता ❀ मैं रघुपति सेवक कर दूता
जौं न राम अपमानहिं डरऊँ ❀ तोहिं देखत अस कौतुक करऊँ

रे राक्षसराज ! तुझे बड़ा गर्व है, परन्तु मैं श्रीरामजीके सेवकका दूत हूँ, ॥ यदि मुझे रामजीका भय न होता तो तेरे देखते-देखते मैं ऐसा कौतुक करता कि—॥

दोहा—तोहिं पटकि महि सेन हति, चौपट करि तब गाउँ।
मन्दोदरी समेत शठ, जनक सुतहिं लै जाउँ ॥४०॥

तुझे जमीनपर पटक तेरी फौज का नाशकर, तेरे गांवको उजाड़, मन्दोदरी सहित जनक-कन्या सीताको ले जाता ॥ ४० ॥

जो अस करउँ न तदपि बड़ाई ❀ मर्येहि बधे कछु नहिं मनुसाई
कौल काम बश कृपिन विमूढ़ा ❀ अति दरिद्र अयशी अति बूढ़ा

किन्तु ऐसा करनेपर कुछ बड़ाई नहीं है। जो स्वयं मरा है उसे मारने में वीरता नहीं होती ॥ शराबी, कामी, कंजूस, मूर्ख, अतिदरिद्र, अपयशी, बहुत वृद्ध ॥

सदा रोगवश सन्तत क्रोधी ❀ राम बिमुख श्रुति संत विरोधी
तनु पोषक निंदक अघ खानी ❀ जीवत शव सम चौदह प्रानी

क्रोधी, रोगी, श्रीरामजीसे विमुख, वेद-विरोधी, अपना शरीर पोषण करनेवाला, निंदक और पापों की खानि, ये चौदह प्रकार के प्रानी मुरदे के समान जीते हैं ॥

अस बिचारि खल बधौं न तोहीं ❀ अब जनि रिस उपजावसि मोहीं
पुनि सकोप कह निशिचर नाथा ❀ अधर दशन गहि मीजत हाथा

रे दुष्ट ! ऐसा विचारकर ही तुझको नहीं मारता हूँ। किन्तु अब मुझको क्रोध न उत्पन्न करा ॥ तब रावण महा क्रोध सहित दांतों से ओठ पकड़ता हुआ बोला ॥

रे कपि पोच मरन अब चहसी ❀ छोटे बदन बात बड़ कहसी
कटु जल्पसि जड़ कपि बल जाके ❀ बुधि बल तेज प्रताप न ताके

रे नीच बानर ! अब तू मरना चाहता है, छोटे मुँह बड़ी बात कहता है। जिसके बलसे तू कड़वी बातें बक रहा है उसमें तो बुद्धि, बल, तेज और प्रताप कुछ नहीं है ॥

दोहा—अगुण अमान बिचारि तेहि, दीन्ह पिता बनवास।
सो दुख अरु युवती विरह, पुनि निशि दिन मम त्रास॥४१॥

प्रथम तो उसको निर्गुणी तथा मानरहित विचारकर पिताने बनवास दिया ॥ वह दुःख तो रहा ही, फिर स्त्रीका बिछोह, फिर दिन-रात मेरा भय लगा रहता है ॥ ४१ ॥

जिनके बल कर गर्व तोहिं, ऐसे मनुज अनेक।
खाहिं निशाचर दिवसनिशि, मूढ़ समुझु तजि टेक ॥४२॥

जिसके बलका तुझे घमण्ड है, ऐसे मनुष्य अनेक हैं, जिनको राक्षस रात-दिन खाया करते हैं। रे मूढ़ ! समझ जा और अपनी टेक छोड़ दे ॥ ४२ ॥

जब तेहि कीन्ह राम कर निन्दा ❀ क्रोधवन्त तब भयउ कपिन्दा
हरिहर निन्दा सुनहिं जे काना ❀ होइ पाप गो घात समाना

जब रावण ने श्रीरामचन्द्रजी की ऐसी निन्दा की, तब अङ्गद गुस्सेमें भर गये ।। क्योंकि जो अपने कानोंसे विष्णु और महादेवजी की निन्दा सुने तो वह उसे गौ-बधके समान होता है ।।

कटकटाय कपि कुंजर भारी ❁ दोउ भुजदंड पटकि महि मारी
डोलत धरणि सभासद खसे ❁ चले भाजि भय मारुत ग्रसे

तब अंगदने कटकटाकर अपनी दोनों भुजायें पृथ्वी पर पटक दीं ।। पृथ्वी डोल गई तो सभासद घबड़ा कर ऐसे गिरे मानों भय-रूपी वायुने ग्रस लिया है, वे भाग चले ।।

गिरत दशानन उठी सँभारी ❁ भूतल परे मुकुट षटचारी
कछु निज कर ले शिरन सँवारे ❁ कछु अंगद प्रभु पास पँवारे

रावण भी गिरते-गिरते सँभल कर उठ गया, उसके दशों मुकुट पृथ्वी पर गिर पड़े।। जिनमें कुछ को तो रावणने शिर पर धारण कर लिया और कुछ अंगदने रामजीके पास फेंक दिये ।।

आवत मुकुट देखि कपि भागे ❁ दिनहीं लूक परन विधि लागे
की रावण करि कोप चलाये ❁ कुलिस चारि आवत अति धाये

उन मुकुटों को आते देखकर बन्दर भागे कि हे विधाता ! क्या दिन ही में लूक पड़ने लगे ।। क्या रावणने क्रोध कर यह भारी वज्र तो नहीं चलाये जो दौड़े हुए आ रहे हैं ।।

कह प्रभु हँसि जनि हृदय डेराहू ❁ लूक न अशनि केतु नहिं राहू
ये किरीट दशकन्धर केरे ❁ आवत बालि तनय के प्रेरे

तब श्री रामचन्द्रजीने हँसकर कहा कि हे बानरों ! तुम लोग मनमें मत डरो, यह न लूक है, न वज्र, न केतु है, न राहु।। यह रावणके मुकुट हैं जो अंगदके भेजे हुए आ रहे हैं ।।

दोहा—तरकि पवनसुत कर गहे, आनि धरे प्रभु पास ।
कौतुक देखहिं भालु कपि, दिनकर सरिस प्रकाश ।।४३।।

तब पवन-कुमार हनुमान्‌जीने कूद कर उन मुकुटों को हाथ से पकड़ लिया और प्रभुके पास ला धरे। तब सूर्यके समान प्रकाशमान उन मुकुटोंको रीछ-बानर खेल की तरह देखने लगे ।।४३।।

उहाँ सकोपि दशानन, सब सन कहत रिसाइ ।
धरहु कपिहिं धरि मारहू, सुनि अंगद मुसुकाइ ।।४४।।

वहाँ रावण क्रोध कर सबसे कहने लगा कि पकड़ो बन्दर को पकड़ लो और पकड़ कर मारो । यह सुन अंगद मुसकाने लगे ।। ४४ ।।

यहि विधि वेगि सुभटि सब धावहु ❁ खाहु भालु कपि जहँ तहँ पावहु

ऐसे ही सब योद्धा दौड़ पड़ो और जहाँ-तहाँ रीक्ष-बानर जो मिलें खा जाओ ।।

मर्कट हीन करहु महि जाई ❁ जियत धरहु तपसी दोउ भाई
पुनि सकोप बोले युवराजा ❁ गाल बजावत तोहि न लाजा

पृथ्वीको बन्दरोंसे रहित कर दो और दोनों तपस्वी भाइयों को जीते जी पकड़ लो ।। तब अंगदने क्रोध कर कहा कि, क्या गाल बजाते हुए तुझे लज्जा नहीं आती ।।

मरु गर काटि निलज कुलघाती ❀ बल बिलोकि बिहरत नहिं छाती

रे कुलघाती ! गला काट कर मर जा, हम दूत का बल देखकर तेरी छाती क्यों नहीं फट जाती ? ॥

रे तिय चोर कुमारग गामी ❀ खल मल राशि मंद मति कामी

रे स्त्री-चोर, कुमार्गी, दुष्ट, पापों की राशि, मन्द बुद्धि और कामी ! ॥

सन्निपात जल्पसि दुर्बादा ❀ भयसि कालवश शठ मनुजादा
यहि कर फल पावहुगे आगे ❀ बानर भालु चपेटन लागे

रे मूर्ख ! क्या तुझे सन्निपात हो गया है कि दुर्वचन कह रहा है, इससे अब तू कालके वश हो गया । इसका फल तुझे आगे मिलेगा, जब रीछ-बंदर चपेटने लगेंगे ॥

राम मनुज बोलत अस बानी ❀ गिरहिं न रसना तव अभिमानी
गिरिहैं रसना संशय नाहीं ❀ शिरन समेत समर महि माहीं

श्रीरामचन्द्रजी मनुष्य हैं, रे घमंडी ! क्या ऐसी बात कहते तेरी जीभ नहीं गिरती है ॥ परन्तु सन्देह नहीं है कि युद्ध-स्थलमें शिर सहित तेरी यह जिह्वा गिरेगी ॥

सो०—सो नर क्यों दशकन्ध, बालि बधेउ जेहि एक सर ।
बीसहु लोचन अंध, धिक तव जन्म कुजाति जड़ ॥ ६ ॥

रे रावण ! वह मनुष्य कैसे हैं जिन्होंने बालि को एक ही बाणसे मार डाला । रे कुजाति मूर्ख ! तेरी बीसों आँखें अन्धी हैं, तेरे जन्म को धिक्कार है ॥ ६ ॥

तव शोणित की प्यास, तृषित राम सायक निकर ।
तजउँ तोहिं तेहि आस, कटु जल्पसि निशिचर अधम ॥ ७ ॥

रे नीच राक्षस ! श्रीरामजीके बाणोंके समूह तेरे खूनके प्यासे हैं । इसी वास्ते मैं तुमको छोड़ रहा हूँ, अब तू क्यों कटु बकवाद कर रहा है ॥ ७ ॥

मैं तव दशन तोरिबे लायक ❀ आयसु पै न दीन्ह रघुनायक
अस रिस होत दसौ मुख तोरौं ❀ लंका गहि समुद्र महँ बोरौं

तेरे दांतों को तो मैं ही तोड़ देता, परन्तु रामजीने आज्ञा नहीं दी हैं ॥ ऐसा क्रोध आ रहा है कि तेरे दसों मुख तोड़ दूं और लंका को पकड़कर समुद्र में डूबो दूं ॥

गूलर फल समान तव लंका ❀ बसहिं मध्य जनु जन्तु अशंका
मैं बानर फल खात न बारा ❀ आयसु दीन्ह न राम उदारा

यह तेरी लंका गूलर के फलके समान है कि जिसमें भुनगेके समान निशाचर बसते हैं ॥ मैं बंदर हूँ, फल खानेमें कुछ देर नहीं लगती, पर श्रीरामचन्द्रजीने आज्ञा नहीं दी है ॥

युक्ति सुनत रावण मुसुकाई ❀ मूढ़ सिखेसि कहँ बहुत झुठाई
बालि कबहुँ अस गाल न मारा ❀ मिलि तपसिन तैं भयेसि लबारा

यह युक्ति सुनकर रावण हँसा कि रे मूर्ख ! इतना झूठ बोलना तैंने कहां सीखा है ! बालि ने तो कभी ऐसा गाल नहीं मारा था, तू तपस्वियोंके संगमें मिलकर लबार हो गया है ॥

साँचेहुँ मैं लबार भुज बीहा ❀ जो न उपारौं तव दश जीहा
राम प्रताप सुमिरि कपि कोपा ❀ सभा माँझ प्रण करि पग रोपा

हे रावण ! मैं सत्य ही लबार हूँ यदि तेरी दसों जीभें न उखाड़ लूं। रामजीके प्रतापको स्मरण करके अंगदको क्रोध चढ़ आया तो उन्होंने सभामें अपना पैर अड़ा दिया ।।

जो मम चरण सकसि शठ टारी ❀ फिरहिं राम सीता मैं हारी
सुनहु सुभट सब कह दशशीशा ❀ पद गहि धरणि पछारहु कीशा

और बोले—जो मूर्ख हमारा पाँव हटा देगा तो श्रीरामचन्द्रजी लौट जायँगे और सीताको मैं हार जाऊँगा ।। तब रावणने कहा—हे सब वीरों ! इस बंदरका पैर पकड़कर पृथ्वीपर पछाड़ दो।

इन्द्रजीत आदिक बलवाना ❀ हर्षि उठे जहँ तहँ भट नाना
झपटहिं करि बल विपुल उपाई ❀ पग न टरै बैठहिं सिर नाई

तब इंद्रजीत आदिक बीर जहाँ-तहाँसे उठ खड़े हुए और सब अनेक प्रकारसे बल और बहुत उपाय करके झपटते किंतु पाँवके न टलनेसे लज्जित हो सिर झुकाकर बैठ जाते ।।

पुनि उठि झपटहिं सुर आराती ❀ टरै न कीश चरण यहि भाँती
पुरुष कुयोगी जिमि उरगारी ❀ मोह बिटप नहिं सकहिं उपारी

फिर देवताओं के शत्रु उठकर झपटते किन्तु अंगदका पाँव ऐसे ही नहीं हिलता था ।। जैसे हे गरुड़जी ! कुयोगी पुरुष मोहरूपी वृक्ष को नहीं उखाड़ सकता ।।

दोहा—कोटिन मेघनाद सम, सुभट उठे हरषाइ ।
झपटहिं टरै न कपि चरन, ते बैठहिं सिर नाइ ।। ४५ ।।

तब मेघनादके समान करोड़ों योद्धा प्रसन्न होकर उठे और झपटकर अंगदके पैरको टाबना चाहा, पर न टला, तब वे शिर झुकाकर बैठ गये ।। ४५ ।।

भूमि न छोड़त कपि चरन, देखत रिपु मद भाग ।
कोटि विघ्न जिमि संत कहँ, तदपि नीति नहिं त्याग ।। ४६ ।।

अंगदका पाँव पृथ्वी नहीं छोड़ता था, यह देखकर शत्रु राक्षसोंका मद दूर हो गया। जैसे सन्तोंको करोड़ों ही विघ्न होते हैं, परन्तु वह नीति नहीं छोड़ते ।। ४६ ।।

कपि बल देखि सकल हिय हारे ❀ उठा आपु कपि के परचारे
गहत चरण कह बालि कुमारा ❀ मम पद गहे न तोर उबारा

बंदर का बल देखकर सब मनमें हार गये, तब अंगदकी ललकार पर रावण स्वयं उठा ।। तब अंगदजी अपना पाँव हटा लिये और बोले—मेरा पाँव पकड़नेसे तेरा उबार न होगा।

गहेसि न राम चरण शठ जाई ❀ सुनत फिरा मन अति सकुचाई
भयेउ तेज हत श्री सब गई ❀ मध्य दिवस जिमि शशि सोहई

रे मूर्ख ! तू श्रीरामचन्द्रजीके चरण क्यों नहीं पकड़ता, यह सुनते ही रावण अपने मनमे संकोच मानकर लौट गया ।। उस समय तेज नष्ट हो जानेसे उसकी सारी शोभा जाती रही ।।

सिंहासन बैठा शिर नाई ❁ मानहुँ संपति सकल गँवाई
जगदाधार प्राणपति रामा ❁ तासु विमुख किमि लहविश्रामा

वह सिंहासनपर सिर नवाकर ऐसे बैठ गया कि मानों सारी सम्पत्ति खोकर बैठा हो ।। रामजी जगत्के आधार और सबके प्राणपति हैं उनसे विमुख होकर विश्राम कैसे मिल सकता है ।।

उमा राम कर भृकुटि बिलासा ❁ होय विश्व पुनि पावै नासा
तृणते कुलिश कुलिश तृण करही ❁ तासु दूत पद कहु किमि टरही

हे पार्वती ! रामजी की त्रिशाल भृकुटि है, संसार उत्पन्न होता और नाश हो जाता है । वह तिनकेसे वज्र और वज्र से तिनका कर देते हैं तब भला उनके दूतका पांव कैसे टल सकता है ।

पुनि कपि कही नीति विधि नाना ❁ मानत नाहिं काल नियराना
रिपु मद मथि प्रभु सुजस सुनायो ❁ अस कहि चले बालि नृपजायो

फिर अंगदने अनेक प्रकारकी नीति कही, किन्तु काल के निकट आनेसे उसे भाती नहीं ।। तब शत्रुके मदको मथ और श्रीरामचन्द्रजी का सुयश कहते हुए अंगदजी चल दिये ।।

अबहीं मुख का करौं बड़ाई ❁ हतिहौं तोहिं खेलाइ खेलाई
प्रथमहिं तासु तनय कपि मारी ❁ सो सुनि रावण भयो दुखारी
यातुधान अंगद बल देखी ❁ भये दुखी निज हृदय विशेखी

अभी मुखसे क्या बड़ाई करूँ, तुझे खेला-खेलाकर मारूँगा ।। सारे राक्षस अंगदके बलको देखकर मनमें बहुत ही दुःखी हुए ।। कपिश्रेष्ठ अङ्गदजीने लंकामें प्रवेशके समय प्रथम ही उसके बेटे को मार डाला था । सो अब उसका हाल सुनकर रावण दुखी हो गया ।।

दोहा–रिपु बल धर्षि हर्षि हिय, बालि तनय बल पुञ्ज ।
सजल नयन तन पुलक अति, गहे राम पद कंज ।।४७।।

ऐसे अंगदजी शत्रु के बलको मंथन कर प्रसन्नतासे चल दिये । नेत्रोंमें प्रेमका जल भर आया, शरीरमें रोमांच हो गया और आकर रामजीके चरण पकड़ लिये ।। ४७ ।।

साँझ जानि दशकंध तब, भवन गयउ बिलखाय ।
मन्दोदरी अनेक विधि, बहुरि कहा समुझाय ।।४८।।

इधर संध्या समय रावण बिलखता हुआ घर गया, तो मन्दोदरीने उसे अनेक प्रकारसे समझाकर कहा ।। ४८ ।।

कंत समुझि मन तजहु कुमतिहीं ❁ सोह न समर तुमहिं रघुपतिहीं
राम अनुज धनु रेख खिचाई ❁ सो नहिं लाँघेउ अस मनुसाई

आप अपने कुबुद्धिको छोड़ दीजिये, आपको रामजीसे युद्ध करना शोभा नहीं देता ।। यदि ऐसी मंशा थी तो जो लक्ष्मणने धनुषसे एक लकीर खींच दी थी, उसे भी तो आप नहीं लाँघ सके ।।

पिय तुम ताहि जितब संग्रामा ❁ जाके दूतन केर अस कामा
कौतुक सिंधु लाँघि तब लंका ❁ आयउ कपि केहरी अशंका

तब हे स्वामी, उनसे आप कैसे जीतेंगे कि जिनके दूतोंने ऐसे-ऐसे काम किए हैं ।। वह कपिकेहरी खिलवाड़में ही समुद्र लांघ निःशंक होकर लंकामें चला आया था ।।

रखवारे हति बिपिन उजारा ❁ देखत तुमहिं अच्छ जेहि मारा
जारि नगर सब कीन्हेसि छारा ❁ कहाँ रहा बल गर्ब तुम्हारा

रखवालों को मार कर वन को उजाड़, आपके देखते ही अक्षयकुमार को मार डाला ।। सारे नगर को जला कर राख कर दिया, तब आपका बल और अभिमान कहाँ रहा ? ।।

अब पति मृषा गाल जनि मारहु ❁ मोर कहा कछु हृदय बिचारहु
पति रघुपतिहि मनुज जनि जानहु ❁ अग जग नाथ अतुल बल मानहु

सो हे पतिदेव ! अब व्यर्थमें अपनी बड़ाई न करें और मेरा कहना मनमें विचारें ।। हे पतिदेव ! आप रामजी को मनुष्य न जानिये वे, जगत् के, देवतादि के स्वामी और अतुलित बलशाली हैं ।।

बाण प्रताप जान मारीचा ❁ तासु कहा नहिं मानेहु नीचा
जनक सभा अगणित महिपाला ❁ रहेउ तहाँ बल बिपुल विशाला

उनके बाण का प्रताप मारीच जानता था, किन्तु उसे नीच कह उसका भी कहना नहीं माना ।। जनक की सभामें अगणित भूपाल थे, पर आपने कुछ भी बहादुरी नहीं दिखाई ।।

भंजि धनुष जानकी विवाही ❁ सक संग्राम जीत को ताही
सुरपति सुत जानेउ बल थोरा ❁ राखा जियत आँख इक फोरा

जिसने धनुषको तोड़ जानकीको विवाहा उनको युद्धमें ऐसे कौन जीत सकता है ? जयन्तने उनके बल को थोड़ा जाना तो उन्होंने उसकी एक आँख फोड़ कर मारा नहीं ।।

सूर्पणखा की गति तुम देखी ❁ तदपि हृदय नहिं लाज विशेखी

फिर सूर्पणखा की गति तो आपने देखी ही है, तथापि आपके मनमें लज्जा नहीं आई ।।

दोहा—बधि बिराध खरदूषणहिं, लीलहि हतेउ कबन्ध ।
बालि एक शर मारेउ, तेहि जानहु दशकन्ध ।।४९।।

जिसने बिराधको मार कर खरदूषण को भी मारा और कबन्ध को भी मार डाला ।। बालि को तो एक ही बाणमें मार डाला, हे दशकन्धर ! जिसे तुम जानते हो ।। ४६ ।।

जेहि जल नाथ बँधायउ हेला ❁ उतरे कपि दल सहित सुबेला
कारुणीक दिनकर कुल केतू ❁ सचिव पठाये तव हित हेतू

हे नाथ ! जिसने समुद्र को भी बँधवा लिया और कपियों सहित सुबेल पर्वत पर उतरे हैं ।। जो कारुणीक सूर्यकुलके केतु हैं, उन्होंने ही तुम्हारी भलाईके लिए अपने मन्त्री को भेजा था ।।

सभा माँझ जेइ तव बल मथा ❁ करि बरूथ महँ मृगपति यथा
अंगद हनुमत अनुचर जाके ❁ रण बाँकुरे बीर अति बाँके

जिसने सभामें तुम्हारे बल को ऐसे मथा कि जैसे सिंह हाथियोंके झुण्डमें उनके बल को मथ डाले और जिनके सेवक अङ्गद और हनुमान् जैसे रण बाँकुरे वीर हैं ॥

तेहि कहँ पिय पुनि पुनि नर कहहू ❁ वृथा मान ममता मद बहहू
अहह कंत कृत राम बिरोधा ❁ काल विवश मन उपज न बोधा

हे स्वामी ! उसीको तुम बारम्बार मनुष्य कहकर व्यर्थ ही मान, मोह और मदमें बहे जाते हो ॥ हे कन्त ! तुम रामजीसे वैर कर कालके वश हो, इसीसे मनमें ज्ञान नहीं उत्पन्न होता ॥

काल दंड गहि काहु न मारा ❁ हरै धर्म बल बुद्धि बिचारा
निकट काल जेहि आव गुसाईं ❁ तेहि भ्रम होय तुम्हारी नाईं

काल हाथमें दण्ड लेकर किसी को नहीं मारता, वरन् उसके धर्म, बल और विचार को हर लेता है ॥ वह जिसके निकट आ जाता है, उसको तुम्हारी ही तरह भ्रम हो जाता है ॥

दोहा—दुइ सुत मारेउ दहेउ पुर, अजहूँ प्रिय सिय देहु ।
कृपासिन्धु रघुबीर भजि, नाथ विमल यश लेहु ॥५०॥

दो बेटे मारे गये, नगर जला दिया गया । हे स्वामी ! अब भी तो सीता को दे दो और कृपा-सिन्धु श्री रामजी का भजन कर पवित्र यशके भागी बनो ॥ ५० ॥

नारि बचन सुनि बिशिष समाना ❁ सभा गयउ उठि होत बिहाना
बैठि जाय सिंहासन फूली ❁ अति अभिमान त्रास सब भूली

तब बाणोंके समान स्त्रीके वचन सुन कर सबेरा होते ही रावण सभामें गया और फूल-कर सिंहासन पर जा बैठा, मारे अभिमानके उसे कुछ भी भय न रहा ॥

यहाँ राम अगंदहिं बुलावा ❁ आय चरण पंकज शिर नावा
अति आदर समीप बैठारी ❁ बोले बिहँसि कृपालु खरारी

इधर श्रीरामचन्द्रजीने अंगद को बुलाया तो वह आकर चरणोंमें शिर नवाये ॥ तब उनको आदरपूर्वक बैठा कर कृपालु श्रीरामचन्द्रजी हँसकर बोले—॥

बालि तनय अति कौतुक मोहीं ❁ तात सत्य कहु पूछौं तोहीं
रावण यातुधान कुल टीका ❁ भुज बल अतुल जासु जग लीका

हे अङ्गद ! मुझे अत्यन्त ही आश्चर्य है इससे पूछता हूँ, सत्य कहो कि, यह रावण संसारमें जिसकी भुजाओं का बल अतुलनीय है और जिसका लोहा संसार मानता है ॥

तासु मुकुट तुम चारि चलाये ❁ कहहु तात कवनी विधि पाये
सुनु सर्वज्ञ प्रणत सुखकारी ❁ मुकुट न होय भूप गुण चारी

तुमने उसके चार मुकुटों को चलाया, हे तात ! तुमने कैसे पाया, यह कहो ॥ अङ्गदने कहा—हे सर्वज्ञ प्रणत सुखकारी ! ये मुकुट नहीं हैं, वरन् ये राजाके चार गुण हैं ॥

साम दाम अरु दंड विभेदा ❁ नृप उर बसहिं नाथ कह वेदा
नीति धर्म के चरन सुहाये ❁ अस जिय जानि नाथ पहँ आये

हे स्वामी ! साम, दाम, दण्ड और भेद यह राजाके हृदयमें वास करते हैं, वेद ऐसा ही कहते हैं ॥ नीति और धर्मके ये सुन्दर चरण हैं, ऐसा जानकर प्रभुके निकट चले आये ॥

दोहा–धर्महीन प्रभुपद विमुख, काल विवश दशशीश ।
आये गुण तजि रावणहिं, सुनो कोशलाधीश ॥५१॥

अब यह धर्महीन दशानन प्रभुके चरणोंसे विमुख कालके वश हो रहा है, हे कोशलाधीश ! इसी कारण वे गुण रावणको त्यागकर यहां चले आये हैं ॥ ५१ ॥

परम चतुरता श्रवणहि सुनि, विहँसे राम उदार ।
समाचार तब सब कहे, गढ़ के बालि कुमार ॥५२॥

अङ्गदकी ऐसी चतुरताको सुनकर श्रीरामचन्द्रजी हँसे, तब फिर बालिकुमारने लंकाके सारे समाचारको कहा ॥ ५२ ॥

रिपु के समाचार जब पाये ❀ राम सचिव तब निकट बुलाये
लंका बांके चारि दुआरा ❀ केहि विधि लांघिय करहु विचारा

जब शत्रुका समाचार ज्ञात हो गया तब रामजीने मन्त्रियोंको बुलाकर पूछा कि ॥ लंकाके चारों दरवाजोंका किस प्रकार उल्लंघन किया जायेगा, इसपर विचार करो ॥

तब कपीस ऋक्षेश विभीषण ❀ सुमिरि हृदय दिनकर कूलभूषण
करि विचार तिन मन्त्र दृढ़ावा ❀ चारि अनी कपि कटक बनावा

तब सुग्रीव, जामवन्त और विभीषणने मनमें सूर्यकुल भूषण श्रीरामचन्द्रजीको स्मरण कर और विचार करके राय पक्की की अर्थात् वानरों की फौजको चार भागोंमें बाँटा ॥

यथा योग्य सेनापति कीन्हे ❀ यूथप सकल बोलि तब लीन्हे
प्रभु प्रताप सब कहि समुझाये ❀ सुनि कपि सिंहनाद करि धाये

फिर यथायोग्य सेनापति नियतकर उन्होंने सब यूथपतियोंको बुलाया और सबको श्रीरामचन्द्रजीका प्रताप समझाया, तब वे सारे बन्दर सिंहनाद करके दौड़ पड़े ॥

हर्षित रामचरण शिर नावहिं ❀ गहि गिरि शिखर वीर सब धावहिं
गर्जहिं तर्जहिं भालु कपीशा ❀ जै रघुबीर कोसलाधीशा

सब प्रसन्न होकर रामजीके चरणोंमें शिर नवाते और पर्वतोंका शिखर ले-लेकर दौड़ते ॥ सब रीछ, बन्दर घोर गर्जना करके श्रीरामचन्द्रजी की जय-जयकार करते थे ॥

जानत परम दुर्ग गढ़ लंका ❀ प्रभु प्रताप कपि चले अशंका
घटा टोप करि चहुँ दिशि घेरी ❀ मुखहिं निशान बजावहिं भेरी

सब जानते थे कि लंकाका किला बड़ा ही दुर्गम है किन्तु प्रभुके प्रतापसे बन्दर निर्भय होकर चल पड़े ॥ घटाटोपकर चारों ओरसे घेर लिया और मुखसे भेरी और डंका बजाने लगे ॥

दोहा—जयति राम भ्राता सहित, जय कपीश सुग्रीव।
गर्जे केहरि नाद कपि, भालु महाबल सींव ॥ ५३ ॥

लक्ष्मण सहित श्रीरामचन्द्रजीकी जय हो, बानरोंके राजा सुग्रीवकी जय हो, ऐसा कहते हुए महाबलशाली रीछ और बानर सिंहके समान गर्जन करने लगे ॥५३॥

लंका भयउ कोलाहल भारी, सुनेउ दशानन अति हंकारी
देखहु बनरन्ह केरि ढिठाई ❀ बिहँसि निशाचर सेन बुलाई

लंकामें घोर कोलाहल मच गया, जब वह हुंकार रावणने सुनी तो वह बोला ॥ इन बन्दरों की ढिठाई तो देखो, फिर उसने हँसकर निशाचरों की सेना बुला लिया ॥

आये कीश काल के प्रेरे ❀ क्षुधावंत रजनीचर मेरे
अस कहि अट्टहास शठ कीन्हा ❀ घर बैठे अहार बिधि दीन्हा

फिर बोला—सब बन्दर कालके भेजे हुए आ गये हैं, तुम मेरे रजनीचर भी भूखे हो ॥ ऐसे उस मूर्खने अट्टहास किया और बोला कि विधाताने घर बैठे ही भोजन भेज दिया है ॥

सुभट सकल चारिहु दिशि जाहू ❀ धरि धरि भालु कीश सब खाहू
उमा रावणहिं अस अभिमाना ❀ जिमि टिट्टिभ खग सूत उताना

सब सुभट चारों तरफको जाओ और जितने भी रीछ-बन्दर मिलें सबको पकड़कर खा जाओ ॥ हे पार्वती! रावणको ऐसा अभिमान था जैसे टिटिहरी पक्षी ऊपर पैर उठाकर सोता है ॥

चले निशाचर आयसु माँगी ❀ गहि कर भिन्दिपाल वर साँगी
तोमर मुद्गर परिघ प्रचंडा ❀ शूल कृपाण परशु गिरि खंडा

अब राक्षस आज्ञा माँग हाथ में भिंदिपाल आदिक शस्त्र, तोमर, मुद्गर, परिघ, तीक्ष्ण कृपाण, फरसा और पत्थरों के टुकड़े लेकर चल दिये ॥

जिमि अरुणोपल निकर निहारी ❀ धाये खग शठ मांस अहारी
चोंच भंग दुख तिन्हहिं न सूझा ❀ तिमि धाये मनुजाद अबूझा

जैसे लाल पत्थरोंके टुकड़ोंको मांस समझकर गिद्ध पक्षी दौड़ पड़े, वैसे ही निशाचर भी दौड़े, चोंच भंगका दुःख उनको नहीं सूझा और बिना सोचे-समझे ही वे दौड़ पड़े ॥

दोहा—नानायुध शर चाप धर, यातुधान बलबीर।
कोट कँगूरन चढ़ि गय, कोटि कोटि रनधीर ॥५४॥

नाना प्रकारके शस्त्र तथा धनुष-बाण धारण किये महाबलवान् करोड़ों राक्षस किले के कंगूरों पर इसलिए चढ़ गये कि जिसमें कहीं बन्दर ऊपर न पहुँच जांय ॥ ५४ ॥

कोट कँगूरन सोहहिं कैसे ❀ मेरुके शृंगन पर घन जैसे
बाजहिं ढोल निशान जुझाऊ ❀ सुनि सुनि सुभटन के मन चाऊ

वे किलेके कंगूरों पर कैसे शोभा पा रहे थे, जैसे मेरु पर्वतके शिखर पर काले बादल शोभते हैं। वे ढोल और जुझाऊ डंके बजा रहे थे जिसे सुनकर वीरोंका मन फड़क उठता था ॥

बाजहिं भेरि नफीरि अपारा ❀ सुनि कादर मन होत दरारा
देखिन जाय कपिन के ठट्टा ❀ अति विशाल तनु भालु सुभट्टा

अनगिनती भेरी और नफीरी बज रही थी जिनकी आवाज सुनकर डरपोक पुरुषों को दरार हो जाती थी ।। बानरों के ठट्ट देखे नहीं जाते, अत्यन्त बड़ी देह वाले योद्धा थे ।।

धावहिं गनहिं न औघट घाटा ❀ पर्वत फोरि करहिं सब बाटा
कट कटाय कोटिन्ह भट गर्जहिं ❀ दशनन ओठ काटि अति तर्जहिं

रीछ और बानर दौड़ते और घाट-कुघाट कुछ नहीं गिनते थे, वे पहाड़ोंको फोड़कर रास्ता बना लेते तथा करोड़ों योधा कटकटायकर गर्जते और दाँतोंसे होंठ चबाते हुए बहुत गर्जते थे ।।

उत रावण इत राम दुहाई ❀ जयति जयति करि परी लराई
निशिचर शिखर समूह ढहावहिं ❀ कूदि धरहिं कपि फेरि चलावहिं

उधर रावण और इधर श्रीरामचन्द्रजी की दुहाई मच गई। निशिचर पहाड़ के शिखर नीचे को ढहाते किन्तु बानर उनको कूदकर उठा लेते और फिर उन्हीं को उनके ऊपर चला देते थे ।।

छन्द–धरि कुधर खण्ड प्रचण्ड मर्कट भालु गढ़ पर डारहीं ।
झपटहिं चरण गहि पटकि महि महँ बार बार प्रचारहीं ।।
अति तरुण तरल प्रताप तर्जहिं तमकि गढ़ पर चढ़ि गये ।
कपि भालु चढ़ि मन्दिरन जहँ तहँ राम यश गावत भये ।।१।।

बानर और रीछ पत्थरोंके प्रचण्ड टुकड़े लेकर गढ़पर फेंकते, पैर पकड़कर झपटते हैं और धरती पर पटककर बार-बार प्रचारते हैं, बड़े नौजवान प्रबल प्रतापवाले बन्दर गर्जते व छलांग मारकर गढ़पर जा चढ़े और रीछ बानर मकानोंपर चढ़कर,जहाँ-तहाँ राम का यश गाने लगे।।१।।

दोहा–एक एक गहि रजनिचर, पुनि कपि चले पराय ।
ऊपर आपुन हेंठ भट, गिरहिं धरणि पर आय ।।५५।।

फिर एक-एक राक्षसको पकड़कर बानर भाग चले अर्थात् गढ़के शिखरसे, ऊपर बानर उनके नीचे निशाचर भूमि पर आकर गिरते हैं ।।५५।।

राम प्रताप प्रबल कपि यूथा ❀ मर्दहिं निशिचर निकर बरूथा
चढ़े दुर्ग पनि जहँ तहँ बानर ❀ जै रघुबीर प्रताप दिवाकर

रामजी के प्रताप से बन्दरों का झुण्ड राक्षसोंके झुण्ड का संहार करने लगा फिर किलेपर बन्दर जहाँ-तहाँ चढ़कर सब श्रीरामचन्द्रजी की जय-जयकार करने लगे ।।

चले तमीचर निकर पराई ❀ प्रबल पवन जिमि घन समुदाई
हाहाकार भयो पुर भारी ❀ रोवहिं आरत बालक नारी

तब प्रबल पवन से जिस तरह बादल उड़ जाते हैं ऐसे हो राक्षसों के समूह भागने लगे ।। उस समय लंकापुरीमें बड़ी भारी हाय-हाय मची तथा दुःखके मारे बालक और स्त्रियाँ आर्त्त-स्वरमें रोने लगीं।

सब मिलि देहिं रावणहिं गारी ❁ राज्य करत जेहि मृत्यु हँकारी
निज दल बिचल सुना जब काना ❁ फेरि सुभट लंकेश रिसाना

सब मिल कर रावण को गालियाँ देते थे कि इसने राज्य करते हुए मृत्युको बुला लिया ।। जब रावण ने सुना कि मेरी सेना बिचल गई, तब उसने महान् क्रोध करके कहा ।।

जो रण विमुख फिरा मैं जाना ❁ तेहि मारिहौं कराल कृपाना
सर्वस खाय भोग करि नाना ❁ समर भूमि भा दुर्लभ प्राना

जो युद्ध से विमुख होगा मैं उसको अपनी तलवार से मार डालूंगा ।। क्योंकि सर्वस्व खाकर अब समर में प्राण प्रिय हो गया है ।।

उग्र बचन सुनि सकल डराने ❁ फिरे क्रोध करि सुभट लजाने
सन्मुख मरण वीर की शोभा ❁ तब तिन तजा प्राणकर लोभा

उसके यह वचन सुनकर सब डर गये और लज्जित होकर वे सभी फिर क्रोधकर लौटे और कहा, बीर की शोभा इसी में है कि सन्मुख युद्ध में प्राण त्याग करे ।।

दोहा—बहु आयुध धर सुभट तब, भिड़हिं प्रचारि प्रचारि ।
कीन्हे व्याकुल भालु कपि, परिघ प्रचंडन मारि ।।५६।।

तब वे सारे योद्धा बहुत से हथियार धारणकर ललकारकर भिड़ने लगे और उन्होंने अपने परिघांकी मारसे रीछ और बानरों को व्याकुल कर दिया ।।५६।।

भय आतुर कपि भागन लागे ❁ यद्यपि उमा जीतिहहिं आगे
कोउ कह कहँ अंगद हनुमंता ❁ कहँ नल नील द्विविद बलवंता

भयातुर होकर बानर भागने लगे। यद्यपि हे पार्वती ! आगे यही जीतेंगे ।। कोई कहने लगे कि अंगद हनुमान् कहाँ हैं तथा नल, नील और बलवान् द्विविद कहाँ हैं ।।

निज दल बिचल सुना हनुमाना ❁ पश्चिम द्वार रहा बलवाना
मेघनाद तहँ करइ लराई ❁ टूट न द्वार परम कठिनाई

इधर हनुमान्‌जी ने सुना कि मेरा दल विचल गया तब वे पश्चिमी दरवाजे पर मेघनाद से लड़ रहे थे और दरवाजा नहीं टूटता था, बड़ी कठिनाई थी ।।

पवन तनय मन भा अति क्रोधा ❁ गर्जेउ प्रलय काल सम योधा
कूदि लंक गढ़ ऊपर आये ❁ गहि गिरि मेघनाद पर धाये

तब हनुमान्‌जी के मन में बड़ा क्रोध हो गया और वे घोर गर्जना किये ।। छलांग मारकर लंका के ऊपर चढ़ आये और एक पहाड़ उठा कर मेघनाद पर दौड़े ।।

भंजेउ रथ सारथी निपाता ❁ तासु हृदय महँ मारेहु लाता
दूसर सूत विकल तेहि जाना ❁ स्यंदन घालि तुरत घर आना

उसके रथ तोड़कर सारथीको मार डाला फिर मेघनादकी छातीमें भी एक लात मारा तब मेघनादको विकल देखकर एक दूसरा सारथी उसे नये रथ पर चढ़ाकर घर ले आया ।

दोहा—अंगद सुनेउ कि पवनसुत, गढ़पर गयेउ अकेल।
समर बाँकुरा बालिसुत, तकि चढ़ेउ कपि खेल ॥५७॥

इधर अंगदने सुना कि पवन कुमार हनुमान्‌जी अकेले ही किले पर गये हैं तब यह समर-बाँकुरे बालि कुमार खेलते-ही-खेलते तड़क कर चढ़ गये ॥५७॥

युद्ध बिरुद्ध क्रुद्ध दोउ बन्दर ❁ रामप्रताप सुमिरि उर अंदर
रावण भवन चढ़े दोउ भाई ❁ करहिं कोशलाधीश दुहाई

दोनों बानरों का विरुद्ध युद्ध चलने लगा। दोनों भाई रावण के घर पर दौड़ कर चढ़ गये और कोशलाधीश रामजी की दुहाई करने लगे ॥

कलश सहित सब भवन ढहावहिं ❁ देखि निशाचर अति भय पावहिं
नारि वृन्द कर पीटहिं छाती ❁ अब दोउ कपि आये उतपाती

जब कलशों समेत सब किले को ढहाने लगे तब यह देखकर राक्षस बहुत डरे॥ स्त्रियों का समूह हाथोंसे छाती पीटने लगा कि बड़े उपद्रवी ये दोनों बानर आये हैं ॥

कपि लीला करि तिन्हहिं डरावहिं ❁ रामचन्द्र कर सुयस सुनावहिं
पुनि कर गहि कंचन के खंभा ❁ करन लगे उतपात अरम्भा

दोनों कपि लीला करके उन्हें डराते और रामजी का सुयश बखानते ॥ फिर सोने के खम्भों को हाथ में पकड़ कर उत्पात आरम्भ करने लगे ॥

कूदि परे रिपु कटक मँझारी ❁ लागे मर्दन रिपुदल भारी
काहू लात चपेटन केहू ❁ भजेहु न रामहिं सो फल लेहू

फिर शत्रुओं की सेनामें कूद पड़े और मर्दन कर डाले ॥ किसी को लात, किसी को चपेटोंसे मार कर कहते कि तुमने रामजी का भजन नहीं किया यह उसी का फल लो ॥

दोहा—एक एक सन मर्दिकर, तारि चलावहिं मुण्ड।
रावण आगे परहिं ते, जनु फूटहिं दधि कुण्ड ॥५८॥

एक-दूसरेसे मसल कर मुण्ड तोड़ कर फेंक देते हैं, वे रावणके सामने जा पड़ते हैं तथा दही के कुण्ड की तरह फूट जाते हैं, उनकी चरबी छितरा जाती है ॥ ५८ ॥

महा महा मुखिया जो पावहिं ❁ ते पद गहि प्रभु पास चलावहिं
कहहिं विभीषण तिनके नामा ❁ देहिं राम तिनकहँ निज धामा

जो बड़े-बड़े मुखिया मिलते तो पाँव पकड़ कर प्रभुके पास फेंक देते हैं। तब विभीषण उनका नाम बताते तो श्रीरामचन्द्रजी उनको अपना ही धाम दे देते थे ॥

खल मनुजाद द्विजामिष भोगी ❁ पावहिं गति जो याँचत योगी
उमा राम मृदुचित करुनाकर ❁ बैरभाव मोहिं सुमिरत निशिचर

दुष्ट राक्षस जो ब्राह्मणों के मांस-भक्षी थे, वे उत्तम गति पाते जिसकी योगिजन याचना करते हैं। हे पार्वती ! दयासागर रामजी समझते कि ये बैर भावसे ही सही मुझको स्मरण तो करते हैं ॥

देहिं परम गति अस जिय जानी ❀ को कृपालु अस सुनहु भवानी
जो अस प्रभु न भजहिं भ्रम त्यागी ❀ नर मतिमन्द ते परम अभागी

ऐसा जी में जानकर परम गति देते हैं, हे भवानी ! ऐसा कृपालु कौन है ? जो मनुष्य प्रभु को भ्रम त्यागकर नहीं भजते, वे परम मन्द बुद्धि और अभागे हैं ।।

अंगद अरु हनुमन्त प्रवेशा ❀ कीन्ह दुर्ग अस कह अवधेशा
लंका महँ कपि सोहहिं कैसे ❀ मथत सिन्धु दुइ मन्दर जैसे

अंगद और हनुमान्‌जी उस दुर्ग में घुसकर श्रीरामजी का नाम लेते ।। लंका में दोनों बन्दर कैसे शोभते हैं, जैसे दो मन्दराचल पर्वत समुद्र का मन्थन कर रहे हों ।।

दोहा—भुजबल रिपुदल दलि मलेउ, देखि दिवसकर अन्त ।
कूदे युगल प्रयास बिनु, आये जहँ भगवन्त ।।५९।।

इस प्रकार उन्होंने अपनी भुजाओं के बल से शत्रु-सेना को मसल डाला, फिर सूर्य को अस्त होते देख बिना प्रयास ही दोनों कूदकर वहाँ आये जहाँ भगवान् थे ।।५९।।

प्रभुपद कमल शीश तिन्ह नाये ❀ देखि सुभट रघुपति मन भाये
राम कृपा करि युगल निहारे ❀ भये विगत श्रम परम सुखारे

उन्होंने आकर रामजीके चरणोंमें सिर नवाया जिसे देखकर श्रीरामजी प्रसन्न हुए ।। तब रामजी ने जैसे ही उन दोनों को कृपा कर देखा कि उनका सारा श्रम दूर हो गया और बहुत सुखी हुए ।।

गये जानि अंगद हनुमाना ❀ फिरे भालु मर्कट भट नाना
यातुधान प्रदोष बल पाई ❀ धाये करि दशशीश दुहाई

तब अंगद हनुमान् को गया जानकर अनेक योद्धा रीक्ष और बानर भी लौट पड़े ।। इधर राक्षस रात्रि का बल पाकर रावण की दुहाई करते हुए लड़ने को दौड़े ।।

निशिचर अनी देखि कपि फिरे ❀ कटकटाय जहँ तहँ पुनि भिरे
दोउ दल भिरहिं प्रचारि प्रचारी ❀ लरहिं सुभट नहिं मानहिं हारी

राक्षसों की सेना को देखकर योधा लौटे तो कटकटाकर जहाँ-तहाँ फिर भिड़ गये ।। दोनों पक्ष ललकार कर लड़ते और कोई हार नहीं मानता था ।।

महाबीर निशिचर सब कारे ❀ नाना वर्ण बली मुख भारे
सबल युगल दल सम अति योधा ❀ विविध प्रकार लरहिं करि क्रोधा

वीर राक्षस अत्यन्त काले और बानर वीर अनेक वर्ण के थे, किन्तु दोनों, दल के वीर एक ही समान थे जो तरह-तरह से क्रोध करके लड़ने लगें ।।

प्राविट शरद पयोद घनेरे ❀ लरत मनहुँ मारुत के प्रेरे
अनिय अकंपन अरु अतिकाया ❀ बिचलित सेन करी तिन माया

मानों वर्षा और शरदके घने बादल प्रेरित होकर आपस में लड़ रहे हों ।। फिर जब अनिय, अकंपन और अतिकायने अपनी सेना को विचलित होते देखा तो उन्होंने माया की ।।

भयउ निमिषमहँ अतिअँधियारा ❁ वृष्टि होय रुधिरोपल छारा

तब पल भर में अन्धकार हो गया तथा रक्त, पत्थर और धूलि की वर्षा होने लगी ॥

दोहा—देखि निबिड़ तम दशहुँ दिशि, कपिदल भयेउ खँभार ।
एकहि एक न देखत, जहँ तहँ करहिं पुकार ॥६०॥

इस तरह दशों दिशाओं में घना अन्धकार देखकर बानरों के दल में खलबली मच गई और एक-एक को नहीं देखते जिससे जहाँ-तहाँ पुकारने लगें ॥६०॥

सकल मर्म रघुनायक जाना ❁ लिये बोलि अंगद हनुमाना
समाचार सब कहि समुझाये ❁ सुनत कोपि कपि कुञ्जर धाये

तब श्रीरामजी ने सारा मर्म जानकर अंगद तथा हनुमान्‌जी को बुलाया और सारा हाल समझाकर कह दिया, वे सुनकर दोनों कपिकुञ्जर क्रोध करके दौड़ पड़े ॥

पुनि कृपालु हँसि चाँप चढ़ावा ❁ पावक सायक सपदि चलावा
भयउ प्रकाश कतहुँ तम नाहीं ❁ ज्ञान उदय संशय जिमि जाहीं

फिर कृपालु रामचन्द्रजी ने हँसकर धनुष चढ़ाकर तुरन्त अग्निबाण चला दिया ॥ फिर तो अन्धकार का नाश होकर वैसे ही प्रकाश हो गया कि जैसे ज्ञानोदय होने पर संशय मिट जाता है ॥

भालु बली मुख पाय प्रकाशा ❁ धाये हर्षि विगत श्रम त्रासा
हनूमान अंगद रण गाजे ❁ हाँक सुनत रजनीचर भाजे

रीक्ष और बन्दर प्रकाश पाने से अत्यन्त ही हर्षित हुये और सब थकावट तथा भय मिट गया ॥ तब अंगद और हनुमान् की उस रण-घोषणा को सुनते ही निशाचर भागने लगे ॥

भागत भट पटकहिं गहि धरणी ❁ करहिं भालु कपि अद्भुत करणी
गहि पद डारहिं सागर माहीं ❁ मगर उरग झष धरि धरि खाहीं

तब भागते हुए वीरोंको पकड़कर पृथ्वीमें पटककर रीक्ष-बानर अद्भुत करनी करते थे। इनके पाँव पकड़कर समुद्र में डाल देते ओर उन्हें मगर तथा मछलियाँ पकड़कर खा जाती थीं ॥

दोहा—कछु घायल कछु रण परे, कछु गढ़ चले पराय ।
गर्जहिं मर्कट भालु भट, रिपुदल बल बिचलाय ॥६१॥

कितने ही राक्षस घायल हुए, कितने ही खेत रहे और कितने ही भाग गये । इस प्रकार शत्रुओं के दल को विचलित करके रीछ बन्दर गर्जने लगे ॥६१॥

निशा जानि कपि चारिउ अनी ❁ आए सब जहँ कोशल धनी
राम कृपा करि चितवा जबहीं ❁ भये विगत श्रम बानर तबहीं

रात्रिकाल उपस्थित होने से बानरों की सेना श्रीरामचन्द्रजी के पास आई । जब श्रीरामचन्द्रची ने कृपा करके उनको देखा तो सब बन्दर श्रम-रहित हो गये ॥

वहाँ दशानन सचिव हंकारे ❁ सब सन कहेसि सुभट जे मारे
आधा कटक कपिन संहारा ❁ कहहु बेगि का करिय बिचारा

वहां रावण ने मन्त्रियों को बुलाया तो जितने योधा मारे गये थे उनका हाल कहा कि मेरी आधी फौज बन्दरों ने नाशकर दिया अब शीघ्र कहो कि क्या उपाय करें ? ।।

माल्यवन्त इक जरठ निशाचर ❁ रावण मातु पिता मंत्रीवर
बोला बचन नीति अति पावन ❁ तात सुनहु कछु मोर सिखावन

उनमें एक माल्यवन्त नामका बहुत बूढ़ा राक्षस था जो कि रावण के माता-पिताके समय का श्रेष्ठ मन्त्री था ।। उसने नीति भरे शब्दों में कहा—हे तात ! कुछ मेरी शिक्षा सुनो ।।

जबसे तुम सीता हरि आनी ❁ अशकुन होंहि न जात बखानी
वेद पुराण जासु गुन गावा ❁ तासु विमुख सुख काहु न पावा

जबसे तुम सीता को हर लाए हो तब से ऐसे अशकुन हो रहे हैं कि जो कहते नहीं बनता। जिनके यश को वेद और पुराण गाते हैं उनके विमुख होने पर किसी ने सुख नहीं पाया है ।।

दोहा—हिरण्याक्ष भ्राता सहित, मधु कैटभ बलवान।
जेहि मारे सो अवतरेउ, कृपासिन्धु भगवान ।।६२।।

जिन्होंने हिरण्यकशिपु को तथा हिरण्यक्षको मारा और जिन्होंने महाबलवान् मधु-कैटभ का बध किया उन्होंने ही श्रीरामरूप से अवतार लिया है ।।६२।।

कालरूप खल बन दहन, गुणसागर घन बोध।
सिव बिरंचि जेहि सेवहिं, तासों कवन बिरोध ।।६३।।

जो कामरूप राक्षसोंके बनको भस्म करनेवाले हैं, जो गुणनिधान और अमित बोध सम्पन्न हैं। जिनकी महादेव और पद्मयोनि ब्रह्माजी सेवा करते हैं उससे विरोध कैसा ? ।।६३।।

परिहरि बैर देहु बैदेही ❁ भजहु कृपानिधि परम सनेही
ताके बचन बाण सम लागे ❁ करिया मुख करि जाहु अभागे

तुम बैर छोड़कर उन्हें सीताको दे दो और परम स्नेही कृपासागर रामजीका भजन करो।। उसकी बातें रावणको बाणकी तरह लगीं, उसने कहा, अभागे ! तू काला मुँह करके चला जा ।।

बूढ़ भयसि नतु मरतेउँ तोहीं ❁ अब जनि बदन दिखावसि मोहीं
तेइ अपने मन अस अनुमाना ❁ बधे चहत यहि कृपानिधाना

बुड्ढा हो गया है नहीं तो तुझे इसी समय यमलोक भेज देता, अब मुझे मुँह मत दिखाना ।। तब माल्यवन्तने बिचार किया कि अब कृपानिधान रामजी इसको मारना चाहते हैं ।।

सो उठि गयउ कहत दुर्बादा ❁ तब सकोप बोलेउ घननादा
कौतुक प्रात देखिहहु मोरा ❁ करिहौं बहुत कहत हौं थोरा

वह दुर्वचन कहता हुआ उठ गया, तब क्रोध सहित मेघनाद बोला ।। अब आप प्रातःकाल मेरा कौतुक देखिएगा, कहता तो थोड़ा हूँ, पर करूँगा ज्यादा ।।

सुनि सुत बचन भरोसा आवा ❀ प्रीति समेत निकट बैठावा
करत बिचारि भयउ भिनुसारा ❀ लगे भालु कपि चारिहुँ द्वारा

तब बेटेकी बात सुनकर रावणको भरोसा आया, उसने प्रीतिसे उसको निकट बैठा लिया ।। विचार करते-करते सबेरा हो गया, तब-तक रीक्ष और बन्दर चारों दरवाजों पर आ लगे ।।

कोपि कपिन दुर्गम गढ़ घेरा ❀ नगर कोलाहल भयउ घनेरा
विविध अस्त्र गहि निशिचर धाये ❀ गढ़ ते पर्वत शिखर ढहाये

बानरोंने दुर्गम गढ़को घेर लिया, नगरमें कोलाहल मच गया। उधर भाँति-भाँतिके अस्त्र लेकर राक्षस दौड़ पड़े और लंका गढ़से पर्वतोंके शिखर ढहाने लगे ।।

छंद—ढाहे महीधर शिखर कोटिन्ह विविध विधि गोला चले ।
घहरात जिमि पविपात गर्जत जिमि प्रलय के बादले ।।
मर्कट विकट भट जुटत कटत न लटत तनु जर्जर भये ।
गहि शैल ते गढ़ पर चलावहिं जहँ सो तहँ निशिचर हये ।।२।।

करोड़ों पहाड़के शिखर ढाह दिए और विविध भाँतिके गोला चले कि जो ऐसे घहराते मानों प्रलयके बादल गरज रहे हों, वन्दरोंके महा विकट-विकट योद्धा सन्मुख समरमें लड़ते हैं, कटते नहीं, न लटते (हार मानते) हैं, शरीर जर्जर हो जाता है, तो भी वे वीर बन्दर पहाड़ से शिलाओंको उठाकर ऐसे चलाते कि निसाचर जहाँके तहाँ मर जाते थे ।।२।।

दोहा—मेघनाद सुनि श्रवण अस, गढ़ पुनि छेंका आय ।
उतरि दुर्गते बीर वर, सन्मुख चला बजाय ।।६४।।

फिर जब मेघनादने अपने कानोंसे सुना कि वानरोंने आकर फिर गढ़को घेर लिया तो वह वीर-श्रेष्ठ किलेसे उतर आया और सामने बाजा बजाता हुआ चला ।।६४।।

कहँ कोशलाधीश दोउ भ्राता ❀ धन्वी सकल लोक विख्याता
कहँ नल नील द्विविद सुग्रीवाँ ❀ कहँ अंगद हनुमत बल सींवाँ

और बोला—कोशलाधीश दोनों भाई कहां हैं जो कि सम्पूर्ण लोकोंके धनुषधारी मशहूर हो रहे हैं ।। नल नील द्विविद सुग्रीव कहां हैं तथा असीम बलशाली अंगद हनुमान् कहां हैं ।।

कहाँ विभीषण भ्राता द्रोही ❀ आजु सबहि हठि मरिहौं ओही
अस कहि कठिन बाण संधाने ❀ अतिशय कोपि श्रवण लगि ताने

और भाईसे द्रोह करनेवाला विभीषण कहाँ है ! आज निश्चय ही उस दुष्टको मार डालूंगा। ऐसा कह बड़े गुस्सेमें भर कानों तक धनुष खींचकर मेघनादने कठिन बाण छोड़ा ।।

शर समूह सो छाड़न लागा ❀ जन सपक्ष धाये बहु नागा
जहँ तहँ परत देखिये बानर ❀ सन्मुख होइ न सकत तेहि अवसर

उसने बाणोंकी झड़ी लगा दी और ऐसे बाण चले, मानो पंखों समेत बहुतसे नाग दौड़ रहे हों ।। जहाँ-तहाँ बन्दर गिरते-पड़ते दिखाई पड़े और कोई सामना न कर सका ।।

भागे भय व्याकुल कपि रिच्छा ❁ बिसरी सबहि युद्ध की इच्छा
सो कपि भालु न रण महँ देखा ❁ कीन्हेसि जेहि न प्राण अवशेषा

रीक्ष और बन्दर व्याकुल होकर भाग चले, युद्ध की इच्छा जाती रही ।। रण में ऐसा रीक्ष और बन्दर दिखाई न पड़ा कि जिसका युद्ध में केवल प्राण ही बाकी न रह गया हो ।।

दोहा–मारेसि दश दश बिशिख उर, परे भूमि सब वीर ।
सिंहनाद करि गर्ज तब, मेघनाद रणधीर ।।६५।।

उसने सब वीरोंकी छातीमें दस-दस बाण मारे जिनके लगनेसे सबके सब वीर पृथ्वीपर गिर गये । तब तो रणधीर मेघनाद सिंह की तरह गर्जने लगा ।।६५।।

देखि पवनसुत कटक बिहाला ❁ क्रोधवन्त धावा जनु काला
महा महीधर तमकि उपारा ❁ अति रिस मेघनाद पर डारा

जब हनुमान्‌जी ने अपनी सेना को व्याकुल देखा तो वे क्रोध में भरकर कालके समान दौड़े और तमक कर एक पहाड़ उखाड़ कर मेघनाद पर चला दिया ।।

आवत देखि गयउ नभ सोई ❁ रथ सारथी तुरँग सब खोई
बार बार प्रचार हनुमाना ❁ निकट न आव मरम सो जाना

तब पहाड़ोंको आता देखकर मेघनाद रथको त्याग आकाश में चला गया । हनुमान्‌जी ललकारने लगे किन्तु वह खब जानता था कि हनुमान् में अधिक बल है इससे निकट नहीं आया ।

राम समीप गयउ घननादा ❁ नाना भाँति कहत दुर्वादा
अस्त्र शस्त्र बहु आयुध डारे ❁ तिल समान प्रभु काटि निवारे

मेघनाद तरह-तरह की गालियाँ देता हुआ श्रीरामचन्द्र जी के पास जा उनपर भाँति-भाँति के अस्त्र-शस्त्र चलाया किन्तु प्रभुने उनको तिल के समान खंड-खंड काट डाला ।।

देखि प्रभाव मूढ़ खिसियाना ❁ करै लाग माया विधि नाना
जिमि कोउ करै गरुड़ सन खेला ❁ डरपावै गहि स्वलप सपेला

उनका यह प्रभाव देखकर वह मूर्ख खिसिया गया और अनेक प्रकार की ऐसी राक्षसी माया करने लगा ।। जैसे कोई गरुड़ से खेल करे और छोटा सर्प पकड़ कर डरावे ।।

दोहा–जासु प्रबल माया विवश, शिव विरंचि बड़ छोट ।
ताहि दिखावै रजनिचर, निज माया मति खोट ।।६६।।

जिनकी प्रबल मायाके वश होकर शिव और ब्रह्माजी भी बड़े-छोटे हो जाते हैं । उन्हीं को खोटी बुद्धि वाला राक्षस अपनी माया दिखाता है ।।६६।।

नभ चढ़ि वर्षहि विपुल अंगारा ❁ महिते प्रगट होय जलधारा
नाना भाँति पिशाच पिशाची ❁ मारु मारु धुनि बोलहिं नाची

वह आकाशमें चढ़कर बहुतसे अंगारे बरसाने लगा, इधर पृथ्वीसे जलकी धारा प्रकट हो गई ।। पिशाच-पिशाचनी माया युद्ध करने लगे और 'मारो-काटो' ऐसा शब्द बोलने लगे ।।

कीन्हेसि बृष्टि रुधिर कच हाड़ा ❀ बर्षे कबहुँ उपल बहु छाड़ा
बर्षि धूरि कीन्हेसि अँधियारा ❀ सूझ न आपन हाथ पसारा

उसने रुधिर, बाल और हाड़ बरसाये और वह कभी बहुत सा पत्थर बरसाने लगा ।। फिर धूलि बरसा कर ऐसा अन्धकार कर दिया कि अपना हाथ भी पसारनेसे नहीं सूझ पड़ता ।।

अकुलाने कपि माया देखे ❀ सब कर मरण बना इहि लेखे
कौतुक देखि राम मुसुकाने ❀ भये सभीत सकल कपि जाने

उस माया को देख कर बन्दर व्याकुल हो गए और जाने कि इसी बहाने सबकी मौत आ गई ।। वह कौतुक देखकर रामजी मुसुकाये और उन्होने जाना कि सब बन्दर डर गए हैं ।।

एकहि बाण काटि सब माया ❀ जिमि दिनकर हर तिमिर निकाया
कृपादृष्टि कपि भालु विलोके ❀ भये प्रबल रण रहहिं न रोके

तब एक ही बाणसे सारी मायाको काट ऐसे ही नष्ट कर डाले जैसे सूर्य अन्धकारको नाशकर डालते हैं । फिर तो रीछ, बन्दर प्रबल हो गए और रोकनेसे भी युद्धमें नहीं रुकते ।।

दोहा--आयसु माँगेउ रामपहँ, अंगदादि कपि साथ ।
लछिमन चले सकोप तब, बान सरासन हाथ ।।६७।।

तब लक्ष्मणजी श्रीरामचन्द्रजीसे आज्ञा माँग धनुष-बाण हाथमें ले अंगदादि बानरों को साथ लेकर क्रोध पूर्वक चल दिए ।।६७।।

क्षतज नयन उर बाहु विशाला ❀ हिमगिरि निभ तनु कछु इक लाला
वहाँ दशानन सुभट पठाये ❀ नाना अस्त्र शस्त्र गहि धाये

उनके नेत्र लाल, वक्षस्थल और बाहुएँ विशाल तथा श्वेत हिमालय के समान देह कुछ गुस्सेके मारे लाल हो आया ।। वहाँ रावण ने भी अपने वीरों को भेजा जो अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र ले कर दौड़े ।।

भूधर नख विटपायुध धारी ❀ धाये कपि जय राम पुकारी
भिरे सकल जोरी सन जोरी ❀ इत उत जय इच्छा नहिं थोरी

इधर बन्दर पहाड़, नाखून और वृक्षों के हथियार धारण किये, रामजी की जय बोलने लगे ।। तब सब जोड़ से जोड़ बाँध कर विजय की प्रबल इच्छा से यहाँ-वहाँ भिड़ गए ।।

मुठिकन लातन दाँतन काटहिं ❀ कपि जय शील मारि रिपु डाटहिं
मारु मारु धरु धरु धरि मारू ❀ शीश तोरि गहि भुजा उपारू

मुक्कों और लातोंसे मार कर दाँतोंसे काटते और जयशील बन्दर बैरियों को मार कर डाँटते कि मारो-मारो, पकड़ लो और मार डालो, सिर तोड़ कर भुजायें उखाड़ लो ।।

अस धुनि पूरि रही नव खंडा ❀ धावहिं जहँ तहँ रुंड प्रचंडा
देखहिं कौतुक नभ सुर वृन्दा ❀ कबहुँक विस्मय कबहुँ अनन्दा

ऐसी ध्वनि नवों खण्डमें भर गई, जहाँ-तहाँ प्रचण्ड रुण्ड दौड़ने लगे ।। आकाशमें देवता वह कौतुक देख कर कभी विस्मयमें पड़ जाते और कभी आनन्द-मग्न हो जाते थे ।।

दोहा—जमेउ गाड़ भरि भरि रुधिर, ऊपर धूरि उड़ाय।
जिमि अंगारन राशि पर, मृतक धूम रहि छाय ॥६८॥

गड्ढों में खून भर कर जम गया, उसके ऊपर धूलि उड़ रही थी, जिसकी ऐसी शोभा हुई कि, मानों अंगारों की राशि पर मुरदों की राख छाई हुई है ॥६८॥

घायल बीर बिराजहिं कैसे ❁ कुसुमित किंशुक के तरु जैसे
लक्ष्मण मेघनाद दोउ योधा ❁ भिरहिं परस्पर करि अति क्रोधा

घायल वीर कैसे विराजे हैं जैसे पलासके वृक्ष, फूल कर शोभित हों ॥ लक्ष्मण और मेघनाद दोनों योद्धा आपस में महान् क्रोध करके भिड़ते हैं ॥

एकहि एक सकैं नहिं जीती ❁ निश्चर छल बल करै अनीती
क्रोधवन्त तब भयउ अनंता ❁ भंजेउ रथ सारथी तुरंता

एक को एक नहीं जीत सकता और राक्षस छल-बलसे अनीति करने लगा ॥ तब तो लक्ष्मणजी क्रोधित हो कर उसके रथ और सारथो को चकना चूर कर दिए ॥

नानायुध प्रहार कर शेषा ❁ राक्षस भयउ प्राण अवशेषा
रावण सुत निज मन अनुमाना ❁ संकट भये हरहि यह प्राना

लक्ष्मणजी अनेक प्रकारसे अस्त्र-शस्त्र चलाते जिससे राक्षस मृतक तुल्य हो गया। मेघनाद संकटमें पड़ गया और मनमें अनुमान किया कि यह प्राण हरण कर लेगा ॥

बीर घातिनी छाँड़ेसि साँगी ❁ तेज पुंज लक्ष्मण उर लागी
मूर्छा भई शक्ति के लागे ❁ तब चलि गयउ निकट भय त्यागे

तब उसने वीरोंको हनन करनेवाली साँगी छोड़ी, जो तेज समूह युक्त लक्ष्मणके हृदयमें आ लगी॥ उस शक्तिके लगनेसे वे मूर्छित हो गए, तब भय छोड़कर मेघनाद उनके निकट चला गया॥

दोहा—मेघनाद सम कोटि शत, योधा रहे उठाइ।
जगदाधार अनन्त सो, उठहिं न चला लजाइ ॥६९॥

मेघनाद जैसे हजारों वीर लक्ष्मण को उठाते, किन्तु वे अनन्त जगदाधार नहीं उठते। तब राक्षस लज्जित हो कर चले गए ॥ ६९ ॥

सुनु गिरिजा क्रोधानल जासू ❁ जारै भुवन चारि दश आसू
सक संग्राम जीति को ताही ❁ सेवहिं सुर नर अग जग जाही

हे पार्वती ! सुनो, जिसके क्रोध रूपी अग्निमें पड़ कर चौदहों भुवन भस्म हो जाते हैं॥ उसे संग्राममें कौन जीत सकता है कि, जिसे देव-दानव सहित सारा संसार सेता है ॥

यह कौतुक जानै जन सोई ❁ जापर कृपा राम की होई
संध्या भई फिरी दोउ अयनी ❁ लगे सँभारन निज निज सैनी

इस कौतुकको तो वे ही जानते हैं कि जिनपर रामजी की कृपा होती है ॥ सन्ध्या समय दोनों सेनाएँ लौटीं और सब अपनी-अपनी सेना को सँभालने लगें ॥

ब्यापक ब्रह्म अजित भुवनेश्वर ❀ लक्ष्मण कहाँ पूछा करुणाकर
तब लगि लै आये हनुमाना ❀ अनुज देखि प्रभु अति दुख माना

तब श्रीरामचन्द्रजी सबसे पूछे कि लक्ष्मण कहां हे ? उसी समय हनुमान्‌जी उन्हें ले आये, तब भाईकी दशा देखकर प्रभुने बड़ा दुःख माना ॥

जामवन्त कह बैद सुखेना ❀ लंका रह पठइय कोउ लेना
धरि लघुरूप गयउ हनुमन्ता ❀ आनेउ भवन समेत तुरन्ता

जामवन्तने कहा कि एक सुखेन नामक वैद्य लंकामें रहता है, भेजिए उसे कोई जाकर लावे ॥ तब हनुमान्‌जी छोटा रूप धरकर गए और उसे घर समेत तुरन्त ही उठा लाए ॥

दोहा—रघुपति चरण सरोज सिर, नायउ आइ सुखेन ।
कहा नाम गिरि औषधी, जाहु पवनसुत लेन ॥७०॥

सुखेनने आकर श्रीरामचन्द्रजीके चरण-कमलोंमें सिर नवाया और पहाड़ तथा औषधिका नाम बताकर कहा कि हे पवनकुमार ! आप लेनेको जाइए ॥ ७० ॥

राम चरण सरसिज उर राखी ❀ चलेउ प्रभंजन सुत बल भाखी
उहाँ दूत इक मर्म जनावा ❀ रावण कालनेमि गृह आवा

तब श्रीरामचन्द्रजीके चरणोंका ध्यान हृदयमें रखकर हनुमान्‌जी चले ॥ जिसे सुनकर वहां एक दूत सारा मर्म रावणको जना दिया, तब रावण कालनेमिके घर गया ॥

दशमुख कहा मर्म तेहि सुना ❀ पुनि पुनि कालनेमि सिर धुना
देखत तुमहिं नगर जेहि जारा ❀ तासु पंथ को रोकनहारा

रावणने उससे सारा मर्म कहा, जिसे कालनेमिने सुनकर बारम्बार अपना सिर पीटा ॥ फिर कहा कि तुम्हारे देखते-देखते जिसने लंकाको जला दिया उसका मार्ग कौन रोक सकता है ? ॥

भजि रघुपतिहिं करौ हित अपना ❀ तजहु नाथ अब वृथा कल्पना
नीलकंज तनु सुन्दर श्यामा ❀ हृदय राखु लोचन अभिरामा

तुम श्रीरामचन्द्रजीका भजन करके अपना हित करो और व्यर्थकी कल्पनाओंको त्याग सुन्दर सांवले शरीर और कमलसे नेत्रोंवाले रामजीको हृदयमें धारण करो ॥

अहंकार ममता मद त्यागू ❀ महा मोह निशि सोवत जागू
काल ब्याल कर भक्षक जोई ❀ सपनेहुँ समर कि जीतै सोई

अहंकार, मोह और अभिमानको त्याग दो तथा इस महामोहरूपी रातमें सोतेसे जग जाओ ॥ वे रामजी कालरूपी सर्पके भक्षक हैं, उनको स्वप्नमें भी तुम जीत सकते हो ? ॥

दोहा—सुनि दशकंध रिसान तब, तेइ मन कीन्ह बिचार ।
रामदूत कर मरण भल, यह खल नतु मोहि मार ॥७१॥

यह सुनकर रावण क्रोधित हुआ तब कालनेमिने अपने मनमें विचारा कि श्रीरामचन्द्र-जी के दूतके हाथसे मरना अच्छा है, नहीं तो यह मुझको मार डालेगा ।।७१।।

अस कहि चला रचिसि मगु माया ❀ सर मन्दिर वर बाग बनाया
मारुतसुत देखा शुभ आश्रम ❀ मुनिहिं बूझि जल पियौं जाइ श्रम

ऐसा कहकर वह चला और मार्गमें उसने अपनी मायासे एक सुन्दर बाग, मंदिर तथा सरोवर बनाया।। उस सुंदर आश्रमको देख हनुमान्ने सोचा कि इस मुनिसे पूछकर जल पिऊँ तो श्रम दूर हो

राक्षस कपट वेष तहँ सोहा ❀ मायापति दूतहिं चह मोहा
तुरत पवनसुत नायउ माथा ❀ लाग सो कहै राम गुन गाथा

किन्तु वहाँ तो मुनिके वेषमें राक्षस था उसने चाहा कि इस दूतको मोह लूँ ।। जब हनुमान्जी उसको माथा नवाए तो वह रामजीका यशोगान करने लगा ।।

होत महा रन रावण रामहिं ❀ जीतहिं राम न संशय यामहिं
इहाँ भये मैं देखौं भाई ❀ ज्ञान दृष्टि बल मोहिं अधिकाई

उसने कहा कि यह जो राम-रावणमें युद्ध हो रहा है उसमें रामजी निःसंदेह जीतेंगे ।। मैं यहाँ रहते हुए भी देख रहा हूँ, मुझे ज्ञानदृष्टि बहुत अधिक है ।।

माँगा जल तेइ दीन्ह कमण्डल ❀ कह कपि नहिं अघाउँ थोरे जल
सर मज्जन करि आतुर आवहु ❀ दीक्षा देउँ ज्ञान जेहि पावहु

हनुमान्जीने जल माँगा तो उसने कमण्डल दे दिया, तब हनुमान्जीने कहा कि मैं थोड़े जलसे तृप्त न होऊँगा ।। तब कालनेमिने कहा कि सरोवरमें नहाकर आओ तो ज्ञान पानेको कुछ शिक्षा दूँ

दोहा—सर पैठत कपि पद गहउ, मकरी अति अकुलान ।
मरि सो गइ धरि दिव्य तनु, चली गगन चढ़ि यान ।।७२।।

तब जैसे हनुमान्जी उस तालाबमें घुसे कि एक मकड़ीने अकुलाकर उनका पाँव पकड़ लिया, वह मरकर स्वर्ग चली गई और कह गई ।।७२।।

कपि तव दरस भयउँ निष्पापा ❀ मिटा तात मुनिवर कर सापा
मुनि न होय यह निशिचर घोरा ❀ मानहु सत्य बचन कपि मोरा

हे कपि ! तुम्हारे दर्शनसे मैं पाप-रहित हो गई, हे तात ! मुनिवरका शाप मिट गया। पूर्व जन्ममें मैंने गंधर्व कुलमें जन्म लिया था, सत्य कहती हूँ यह मुनि नहीं, भयानक राक्षस है ।।

अस कहि गई अप्सरा जबहीं ❀ निशिचर निकट गयउ कपि तबहीं
कह कपि मुनि गुरु दक्षिणा लेहू ❀ पाछे हमहिं मन्त्र तुम देहू

ऐसा कहकर जब वह अप्सरा चली गई तब हनुमान्जी कालनेमिके पास गए और बोले, हे मुनिजी ! पहले आप गुरु-दक्षिणा ले लीजिए, पीछे हमें मन्त्र देना ।।

शिर लंगूर लपेटि पछारा ❀ निज तनु प्रगटउ मरती बारा
राम राम कहि छाँड़ेसि प्राना ❀ सुनि मन हर्ष चले हनुमाना

ऐसा कह उसे अपनी पूंछसे लपेटकर पछाड़ दिया, तब उसने मरती बार अपना रूप प्रकट किया ।। राम ! राम ! कहकर प्राण छोड़ दिया, हनुमान्‌जी प्रसन्न होकर चल पड़े ।।

देखा शैल न औषधि चीन्हा ❁ सहसा कपि उपारि गिरि लीन्हा
गहि गिरि निसि नभ धावत भयऊ ❁ अवधपुरी ऊपर कपि गयऊ

वे पहाड़को देखे और औषधिको न पहचाने और सहसा ही हनुमान्‌जीने उस पहाड़को ही उखाड़ लिया और उसे लेकर आकाशमार्गसे दौड़ते हुए चले तो अयोध्याके ऊपर जा पहुँचे ।।

दोहा–देखा भरत विसाल अति, निशिचर मन अनुमानि ।
बिनु फर शर तकि मारेउ, चाप श्रवन लगि तानि ॥७३॥

भरतजीने इनका अत्यन्त विशाल शरीर देखकर मनमें अनुमान किया यह कोई राक्षस है, इस कारण उन्होंने धनुषको कानों तक खींचकर बिना फरका एक बाण चलाया ।।७३।।

परेउ मूर्छि महि लागत सायक ❁ सुमिरत राम राम रघुनायक
सुनि प्रिय बचन भरत उठि धाये ❁ कपि समीप अति आतुर आये

बाणके लगते ही हा ! राम हे रघुनाथ ! कहते हुए हनुमान् मूर्छित हो पृथ्वीपर गिर पड़े ।। तब राम-राम ऐसे प्रिय वचनको सुनकर भरतजी हनुमान्‌जीके निकट आये ।।

विकल विलोकि कीश उर लावा ❁ जागत नहिं बहु भाँति जगावा
मुख मलीन मन भये दुखारी ❁ कहत बचन भरि लोचन बारी

हनुमान्‌जीको विकल देख छातीसे लगाया और अनेक प्रकारसे जगाया पर हनुमान्‌जी सचेत नहीं हुए।। तब भरतजी दुःखी हो गये और नेत्रोंमें जल भरकर बोले ।।

जेहिबिधिरामविमुखमोहिंकीन्हा ❁ तेहि पुनि यह दारुण दुख दीन्हा
जो मोरे मन बच अरु काया ❁ प्रीति राम पद कमल अमाया

जिस विधाताने रामजी से विमुख किया उसीने फिर यह दुस्सह दुःख दिया ।। यदि मेरी मन, वचन और शरीरसे श्रीरामचन्द्रजीके चरणोंमें निष्कपट प्रीति हो, फिर बोले—।।

तो कपि होउ विगत श्रम शूला ❁ जो मोपर रघुपति अनुकूला
सुनत बचन उठि बैठ कपीशा ❁ कहि जय जयति कोशलाधीशा

यदि प्रभु मेरे ऊपर अनुकूल हों तो बानरका श्रम और दुःख दूर हो जावे।। भरतके वचन सुनते ही कोशलाधीशकी जय हो ! जय हो ! ऐसे कहकर हनुमान्‌जी तुरन्त उठकर बैठ गये ।।

सो०–लीन्ह कपिहिं उर लाय, पुलकि गात लोचन सजल ।
प्रीति न हृदय समाय, सुमिरि राम रघुकुल तिलक ॥८॥

तब श्रीरामचन्द्रजीका स्मरण कर भरतने हनुमान्‌जीको छातीसे लगा लिया, नेत्रोंमें जल भर आया और ऐसा प्रेम बढ़ा कि हृदयमें समा न सका ।।८।।

तात कुशल कहु सुख निधानकी ❁ सहित अनुज अरु मातु जानकी

कपि सब चरित समास बखाने ❀ भये दुखित मन महँ पछिताने

फिर भरतने हनुमान्‌जीसे राम लक्ष्मण और माता सीताजीका कुशल पूछा ।। हनुमान्‌जी ने सब हाल संक्षेपसे कहा, उसे सुन भरतजी मनमें दुखी हो पछताने लगे ।।

अहह दैव मैं कस जग जायउँ ❀ प्रभु के एकहु काज न आयउँ
जानि कुअवसर मन धरि धीरा ❀ पुनि कपि सन बोले बलबीरा

अहह ! हा दैव ! मैं जगत् में कैसा पैदा हुआ जो प्रभुके एक भी काम न आया ।। हे पार्वती ! उस समय कुअवसर जान मनमें धीरज धर महाबली भरतजीने हनुमान्‌जी से कहा कि ।।

तात गहरु होइहि तोहिं जाता ❀ काज नशाइहिं होत प्रभाता
चढ़ु मम शायक शैल समेता ❀ पठवौं तोहिं जहँ कृपानिकेता

हे तात ! तुम्हें जानेमें देर होगी और प्रभात होनेपर काम बिगड़ जायेगा । इसलिए तुम पर्वत समेत मेरे बाणपर चढ़कर चले जाओ जहाँ कृपानिधान प्रभु हैं वहाँ मैं तुमको भेज देता हूँ ।

सुनि कपि मन उपजा अभिमाना ❀ मोरे भार चलहि किमि बाना
राम प्रताप बिचारि बहोरी ❀ बंदि चरण बोलेउ कर जोरी

यह सुन हनुमान्‌जीके मनमें अभिमान आया कि मेरे भारसे बाण किस प्रकार चल सकेगा ? ।। फिर प्रभुकी महिमाको विचार चरणोंमें दण्डवत् कर हनुमान्‌जी हाथ जोड़ बोले कि—।।

दोहा—तव प्रताप उर राखि प्रभु, जैहौं नाथ तुरन्त ।
अस कहि आयसु पाय पद, बन्दि चले हनुमन्त ।।७४।।

हे नाथ ! आपके प्रतापको हृदयमें रखकर तुरन्त चला जाऊँगा । फिर तो आज्ञा पाय भरतजीके चरणोंकी वन्दना कर हनुमान्‌जी चल दिए ।।७४।।

भरत बाहु बल शील गुण, प्रभु पद प्रीति अपार ।
जात सराहत मनहिं मन, पुनि पुनि पवन कुमार ।।७५।।

हनुमान्‌जी बारम्बार मनमें भरतके भुजबल, शील तथा प्रभुके चरण-कमल सम्बन्धी अपार प्रीतिको सराहते हुए चले जाते हैं ।। ७५ ।।

उहाँ राम लक्ष्मणहिं निहारी ❀ बोले बचन मनुज अनुसारी
अर्द्ध रात्रि गइ कपि नहिं आवा ❀ राम उठाय अनुज उर लावा

वहाँ रामचन्द्रजी लक्ष्मणको देखकर, यह वचन बोले कि आधी रात बीत गई है, अब तक हनुमान् नहीं आए यह क्या बात है, ऐसे कह लक्ष्मणको उठा छातीसे लगा लिए, और बोले ।।

सकहु न दुखित देखि मोहिं काऊ ❀ बंधु सदा तव मृदुल स्वभाऊ
मम हित लागि तजेउ पितु माता ❀ सहेउ विपिन हिम आतप बाता

हे भाई ! तुम मुझे कभी दुखी नहीं देख सकते थे । तुम्हारा स्वभाव सदासे कोमल है । मेरे हितके लिए माता-पिताको त्याग तुम वनमें सर्वदा सर्दी, घाम तथा वायु सहन किए ।।

सो अनुराग कहाँ अब भाई ❀ उठहु न सुनि मम बच बिकलाई
जो जनतेउँ बन बंधु बिछोहू ❀ पिता बचन मनतेउँ नहिं ओहू

हे भाई ! वह तुम्हारा प्रेम कहाँ है, मेरी विकलताको देखकर उठो ।। जो मैं यह जानता कि वनमें मेरे भाईका विछोह हो जायेगा तो मैं पिताका वह वचन नहीं मानता ।।

सुत बित नारि भवन परिवारा ❀ होहिं जाहिं जग बारहिं बारा
अस बिचारि जिय जागहु ताता ❀ मिलहिं न जगत सहोदर भ्राता

हे भाई ! जगत्में पुत्र, धन, स्त्री और परिवार ये तो बारम्बार होते हैं, परन्तु सहोदर भाई जगत्में नहीं मिल सकता, हे भाई ! मनमें ऐसे जानकर जाग जाओ ।।

यथा पंख बिनु खग अति दीना ❀ मनि बिनु फनि करिवर करहीना
अस मम जिवन बधु बिन तोहीं ❀ जो जग दैव जिआवै मोहीं

हे भाई ! जैसे पंखके बिना पक्षी, मणि बिना सर्प, शुण्ड बिना हाथी दीन और दुखी हो जाते हैं ।। ऐसे ही हे भाई ! तुम्हारे बिना मेरा जीना दुःखरूप और वृथा है ।।

जैहौं अवध कवन मुँह लाई ❀ नारि हेतु प्रिय बंधु गँवाई
बरु अपयश सहतेउँ जग माहीं ❀ नारि हानि विशेष छति नाहीं

अब क्या मुँह लेकर अयोध्याको जाऊँगा ? स्त्रीके लिए प्यारा भाई गँवा दिया ।। संसारमें अपयश भले ही सह लेता; क्योंकि स्त्री न होनेसे कुछ विशेष हानि नहीं थी ।।

अब अवलोकि शोक यह तोरा ❀ सहै कठोर निठुर मन मोरा
निज जननी के एक कुमारा ❀ तात तासु तुम प्रान अधारा

किन्तु हे भाई ! अब मेरा कठोर हृदय तुम्हारा यह शोक देखकर सह रहा है ।। तुम अपनी माताके एक ही (प्रधान तथा अद्वितीय) पुत्र हो, हे तात ! तुम उसके प्राणाधार हो ।।

सौंपेउ मोहिं तुमहिं गहि पानी ❀ सब बिधि सुखद परमहित जानी
उतर ताहि दैहौं का जाई ❀ उठि किन मोहिं सिखावहु भाई

उन्होंने तुम्हारा हाथ पकड़कर मुझे सौंपा था, वह जानती थी कि मैं सब प्रकारसे तुम्हारा हितकारी हूँ ।। अब घर जाकर उन्हें क्या उत्तर दूँगा, उठकर मुझे समझाते क्यों नहीं ?

बहु बिधि सोचत सोच बिमोचन ❀ श्रवण सलिल राजिव दल मोचन
उमा अखंड एक रघुराई ❀ नर गति भक्ति कृपालु दिखाई

इस प्रकार बहुत भाँति श्रीरामचन्द्रजी सोचकर नेत्रोंसे जल बहाने लगे । हे पार्वती ! रामजी यद्यपि अखण्ड हैं तथापि अपने भक्तोंको नर-लीला दिखा रहे थे ।।

सो०—प्रभु बिलाप सुनि कान, बिकल भये बानर निकर ।
आइ गये हनुमान, जिमि करुणामहँ बीर रस ॥ ९ ॥

रामजीके ऐसे विलापको सुनकर बानरोंका समूह विकल हो गया, उसी समय हनुमान्जी संजीवनी बूटी लिए आ गए, मानो करुणामें वीररस आ गया हो ।। ९ ।।

हरषि राम भेंटेउ हनुमाना ❀ अति कृतज्ञ प्रभु परम सुजाना
तुरत वैद्य तब कीन्ह उपाई ❀ उठि बैठे लक्ष्मण हरषाई

तब अत्यन्त कृतज्ञ परम सुजान प्रभु श्रीरामचन्द्रजी प्रसन्न होकर हनुमान्‌से मिले ।। फिर वैद्य ने तुरन्त ही उपाय किया जिससे लक्ष्मणजी प्रसन्न होकर उठ बैठे ।।

हृदय लाय भेंटे प्रभु भ्राता ❀ हर्षे सकल भालु–कपि–ब्राता
पुनि कपि वैद्य तहाँ पहुँचावा ❀ जेहि विधि तबहिं ताहि लै आवा

तब भाई को हृदय से लगाकर प्रभु मिले और सब रीछ, बन्दर हर्षित हो गए ।। फिर हनुमान्‌जीने वैद्यको वहाँ पहुँचा दिया, जहाँ से उसे पहले ले आए थे ।।

यह वृत्तान्त दसानन सुनेऊ ❀ अति विषाद पुनि पुनि शिर धुनेऊ
व्याकुल कुम्भकरण पहँ गयऊ ❀ करि बहु यत्न जगावत भयऊ

यह वृत्तान्त सुन रावण दुखी हो लम्बी सांस लेने और बारम्बार अपना शिर पटकने लगा ।। फिर व्याकुल हो कुम्भकरण के पास गया और अनेकों उपाय कर उसको जगाने लगा ।।

जागा निशिचर देखिय कैसा ❀ मानहु काल देह धरि वैसा
कुम्भकरण पूछा कहु भाई ❀ काहे तव मुँह रहा सुखाई

जब वह राक्षस जागा तो ऐसा मालूम पड़ा कि मानों कालने वैसा शरीर धारण कियां है ।। तब कुम्भकर्णने पूछा कि हे भाई ! कहो तुम्हारा मुंह क्यों सूखा है ? ।।

कथा कही सब तेहि अभिमानी ❀ जेहि प्रकार सीता हरि आनी
तात कपिन निसिचर संहारे ❀ महा महा योधा सब मारे

तब रावणने सारी कथा कही कि जैसे जानकीजीको हर लाया था ।। फिर कहा कि हे तात ! बन्दरोंने राक्षसोंका संहार कर दिया और बड़े-बड़े सभी योद्धाओंको मार दिया ।।

दुर्मुख सुररिपु मनुज अहारी ❀ भट अतिकाय अकंपन भारी
अपर महोदर आदिक वीरा ❀ परे समर महँ सब रणधीरा

दुर्मुख, देवशत्रु मनुष्य-भक्षक, अतिकाय, अकम्पन और महोदर आदि जितने रणधीर वीर थे, सभी समर में गिरा दिए गए अर्थात् मार डाले गए ।।

दोहा–दशकन्धरके बचन सुनि, कुम्भकरण बिलखान ।
जगदम्बा हरि आनि के, शठ चाहत कल्यान ।।७६।।

रावणकी ऐसीं बात सुन कुम्भकरणने बिलखाकर कहा–रे मूर्ख ! जगदम्बा जानकी को हर लाने पर तू भलाई चाहता है ? ।।७६।।

भल न कीन्ह तैं निशिचर नाहा ❀ अब मोहिं आनि जगायउ काहा
अजहूँ तुम त्यागहु अभिमाना ❀ भजहु राम होइहि कल्याना

हे राक्षसराज ! तूने यह अच्छा नहीं किया और अब मुझे आकर क्यों जगाया है ? हे तात ! अब तू अभिमान छोड़कर रामजी का भजन कर, इससे तेरा कल्याण होगा ।।

हैं दशशीश मनुज रघुनायक ❋ जाके हनूमान से पायक
अहह बंधु तैं कीन्ह खोटाई ❋ प्रथमहिं मोहिं न जगायहु आई

हे रावण ! क्या वे रामचन्द्रजी मनुष्य हैं कि जिनके हनुमान् जैसे पायक हैं ? ।। हे भाई ! तू ने बड़ी खोटाई की जो मुझे पहले नहीं जगाया ।।

कीन्हेउ प्रभु विरोध तेहि देवक ❋ शिव बिरंचि सुर जाके सेवक
नारद मुनि मोहिं ज्ञान जो कहेऊ ❋ कहतेउँ तोहिं समय नहिं रहेऊ

और तू ने उसी देवता से वैर किया कि जिसकी ब्रह्मा और शिवादि देवता सेवा किया करते हैं ।। नारदजीने मुझसे जो ज्ञान कहा था वह मैं तुमसे कहता किन्तु अब समय नहीं रहा ।।

अब भरि अंक भेंटु मोहिं भाई ❋ लोचन सुफल करौं मैं जाई
श्यामगात सरसीरुह लोचन ❋ देखौं जाय ताप त्रय-मोचन

हे भाई ! अबसे मुझे अंक भर भेंट ले ताकि मैं भी जाकर श्रीरामचन्द्रजीका दर्शन कर अपने नेत्रोंको सफल करूँ, श्याम शरीर, कमल लोचन रामजी तीनों तापों को हरनेवाले हैं, जाकर देखूं ।

दोहा—रामरूप गुण सुमिरि मन, मगन भयउ क्षण एक ।
रावण माँगेउ कोटि घट, मद अरु महिष अनेक ।।७७।।

इस प्रकार कुम्भकर्ण रामजी के रूप और गुणों का स्मरण कर क्षण भर के लिए मग्न हो गया ।। तब रावण करोड़ों घड़े शराब और भैंसे उसके लिए मँगाए ।।७७।।

महिष खाय करि मदिरा पाना ❋ गर्जेउ बज्राघात समाना
कुम्भकर्ण दुर्मद रण रंगा ❋ चलेउ दुर्ग तजि सेन न संगा

तब वह भैंसा खाकर और शराब पी कर वज्रपातके समान गर्जा ।। वह दुर्मद कुम्भकर्ण किले को छोड़कर अकेले ही रण रंगमें जा लगा तथा सेना भी साथ न लिया ।।

देखि बिभीषण आगे आयउ ❋ पुनि पद गहि निज नाम सुनायउ
अनुज उठाइ हृदय तेहि लावा ❋ रघुपति भक्त जानि मन भावा

उसको देखकर विभीषण आगे आया और चरण पकड़ कर अपना नाम सुनाया ।। तब कुम्भकर्ण ने भाई को उठाकर छाती से लगा लिया और रामजी का भक्त जानकर प्यार किया ।।

तात लात रावण मोहिं मारा ❋ कहत परम हित मन्त्र विचारा
तेहि गलानि रघुपति पहँ आयउँ ❋ दीन जानि प्रभु के मन भायउँ

हे तात ! रावणने मुझे इसलिए लात मारा कि मैंने उसे हितकारी परामर्श दिया था, इसी ग्लानिके मारे मैं रामजीके पास चला आया तो मुझे दीन जानकर प्रभुने अपनी शरण दी ।।

सुनु सुत भयउ कालवश रावण ❋ सो किमि मानइ परम सिखावन
धन्य धन्य तैं धन्य विभीषण ❋ भयउ तात निशिचर कुल भूषण

हे पुत्र ! सुनो, रावण कालके वश हो गया है, फिर वह परम सीख कैसे माने ? ।। हे विभीषण ! तू धन्य है, हे भाई तू राक्षस-कुल का भूषण पैदा हुआ है ।।

बंधु वंश तैं कीन्ह उजागर ❀ भजेउ राम शोभा सुखसागर

क्योंकि हे भाई ! तू ने शोभा और सुख के सागर श्रीरामचन्द्रजी को भजकर वंश को प्रकाशमान कर दिया है ॥

दोहा—कर्म बचन मन कपट तजि, भजहु तात रघुबीर।
जाहु न निज पर सूझ मोहिं, भयउँ कालबश वीर ॥७८॥

हे तात ! अब तू मन, वचन और कर्मसे छल-कपट छोड़ कर श्रीरामजी का भजन करो और यहां से जाओ ॥ अब कालके वश होनेसे मुझे भी अपना पराया नहीं सूझता है ॥७८॥

बंधुबचन सुनि फिरा विभीषण ❀ आयउ जहँ त्रैलोक विभूषण
नाथ भूधराकार शरीरा ❀ कुम्भकरण आवत रणधीरा

तब भाई की बात सुनकर विभीषण लौट कर वहाँ आया जहाँ श्रीरामचन्द्रजी थे ॥ वहाँ आकर उसने रामसे कहा—हे नाथ ! पहाड़ जैसा शरीर लिए रणधीर कुम्भकर्ण आ रहा है ॥

इतना कपिन सुना जब काना ❀ किलकिलाय धाये हनुमाना
लिये उपारि विटप अरु भूधर ❀ कटकटाय डारहिं ता ऊपर

इतनी बात बन्दरोंने ज्यों ही कानोंसे सुनी कि हनुमान्जी किलकिला कर दौड़ पड़े ॥ और बड़े-बड़े वृक्ष और पहाड़ उखाड़कर कटकटा कर उसके ऊपर डालने लगे ॥

कोटि कोटि गिरि शिखर प्रहारा ❀ करहिं भालु कपि एकहिं बारा
मुरै न भट तनु टरै न टारे ❀ जिमि गज श्राक फलनि के मारे

रीछ और बन्दर एक ही साथ करोड़ों पहाड़ों के शिखर लेकर उस पर प्रहार करने लगे ॥ किन्तु कुम्भकर्ण वैसे ही नहीं मुड़ता जैसे मंदारके फलकी मारसे हाथी नहीं मुड़ते ॥

तब मारुत सुत मुष्टिक हनेऊ ❀ परेउ धरणि व्याकुल शिर धुनेऊ
पुनि उठि तेहि मारेउ हनुमंतहि ❀ घूमित भूतल परेउ तुरंतहि

तब पवनकुमार ने उसको एक ऐसा घूसा मारा कि वह व्याकुल होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा ॥ फिर उसने उठकर हनुमान् को ऐसा मारा कि वह चक्कर काटते हुए तुरन्त ही पृथ्वीपर गिर पड़े ॥

पुनि नलनीलहिं श्रानि पछारेसि ❀ जहँतहँ पटकि पटकि भट मारेसि
चली बली मख सेन पराई ❀ अतिभय त्रसित न कोउ समुदाई

फिर नल और नील को भी आ पछाड़ा और जहाँ-तहाँ कितने ही वीरों को पटक कर मार डाला ॥ बन्दर, डरके मारे भाग चले, अत्यन्त भयसे त्रस्त किसी को सामने आने का साहस नहीं हुआ ॥

दोहा—श्रंगदादि कपि मूर्छित, कपि समेत सुग्रीव।
काँख दाबि कपिराज कहँ, चला श्रमित बलसीव ॥७९॥

इस प्रकार कुम्भकर्ण सुग्रीव सहित अंगद आदि को मूर्छित कर अमित बल की सीमा वाला सुग्रीव को कांख में दबाकर ले चला ॥७९॥

उमा करत रघुपति नर लीला ❀ खेल गरुड़ जिमि अहि गण मीला
भृकुटि भंग जेहि कालहि खाई ❀ ताहि कि ऐसी सोह लराई

हे पार्वती ! श्रीरामचन्द्रजी नर-लीला कर रहे थे, जैसे गरुड़ साँपोंसे मिलकर खेले ।। नहीं तो जो कि भृकुटि-मात्रसे काल को खा जायें क्या उनको ऐसी लड़ाई शोभा देती है ।।

जग पावनि कीरति बिस्तरहीं ❀ गाय गाय नर भवनिधि तरहीं
मुर्छा गइ मारुत सुत जागे ❀ सुग्रीवहिं तब खोजन लागे

वह संसार को पवित्र करनेके लिए ही अपनी कीर्ति फैलाते हैं जिसे गाकर मनुष्य संसार-समुद्रसे तर जाये ।। इधर जब हनुमान् जागे तो कपिराज सुग्रीवको खोजने लगे ।।

कपिराजहु की मूर्छा बीती ❀ निबुकि गयेउ तेहि मृतक प्रतीती
काटे दशन नासिका काना ❀ गर्जि अकाश चला तेहि जाना

उधर जब सुग्रीवकी मूर्छा टूटी तो उन्हें मुर्दा समझकर छोड़ दिया ।। तब सुग्रीव उसकी नाक-कान काट और गर्जन कर आकाशमार्गसे चल दिये और जब उसने यह जाना ।।

गहेसि चरण धरि धरणि पछारा ❀ अति लाघव पुनि उठि तेहि मारा
पुनि आयहु प्रभु पहँ बलवाना ❀ जयति जयति जय कृपानिधाना

तब उसका पाँव पकड़ कर पृथ्वी पर पटक दिया, किन्तु सुग्रीवने भी शीघ्र उठकर फिर उसको मारा ।। पश्चात् वीर सुग्रीव प्रभुके पास आए और रामचन्द्र की जय-जयकार बोलने लगे ।।

नाक कान काटे तेहि जानी ❀ फिरा क्रोध करि मानि गलानी
सहज भीम पुनि बिनु श्रुति नासा ❀ देखत कपिदल उपजी त्रासा

उधर जब कुम्भकर्ण को अपना नाक-कान कटा जान पड़ा तब वह ग्लानि मानकर लौटा । तब एक तो वह यों ही भीमकाय था दूसरे नाक-कान कट जाने पर और भी भय देने लगा ।।

दोहा—जय जय जय रघुवंश मणि, धाये कपि करि हूह ।
एकहिं बार जो ताहि पर, डारे गिरि तरु जूह ।।८०।।

तब रघुवंशमणि श्रीरामचन्द्रजीकी जय हो ! जय हो ! ऐसा हल्ला करते हुए बन्दर दौड़ पड़े और एक ही बारमें अनेकों वृक्ष उसपर फेंकने लगे ।। ८० ।।

कुम्भकर्ण रण रंग बिरुद्धा ❀ सन्मुख चला काल जनु क्रुद्धा
कोटि कोटि कपि धरि धरि खाई ❀ जनु टिड्डी गिरि-गुहा समाई

किन्तु कुम्भकर्ण कालके समान क्रोधित हो सन्मुख चला और करोड़ों बन्दरोंको पकड़ कर खाने लगा !! वह करोड़-करोड़ोंको पकड़कर खाने लगा मानों टिड्डी गुफामें समा रही हैं ।।

कोटिन गहि शरीर सन मर्दा ❀ कोटिन मींजि मिलायसि गर्दा
मुख नासिका श्रवण की बाटा ❀ निकसि परांहि भालु कपि ठाटा

करोड़ोंको पकड़कर अपने शरीरसे मर्दन कर डाला और करोड़ोंको मसल कर धूलिमें मिला दिया ।। उसके मुख-नाक और कानोंके छिद्रसे झुण्डके झुण्ड रीक्ष-बन्दर निकलकर भाग चले ।

रण मदमत्त निशाचर दर्पा ❀ मानहुँ विश्व ग्रसन कहुँ अर्पा
मुरे सुभट रण फिरहिं न फेरे ❀ सूझ न नयन सुनै नहिं टेरे

वह रण-मद-मत्त ऐसा चला मानो सारे संसार को खा जायेगा। समस्त वीर युद्धसे भागने लगे, फेरनेसे भी नहीं फिरते, आँखोंसे कुछ दिखाई न देता और न कानसे सुनाई पड़ता ॥

कुम्भकर्ण कपि फौज बिडारी ❀ सुनि धाए रजनीचर झारी
देखी राम बिकल कटकाई ❀ रिपु अनीक नाना बिधि आई

इस प्रकार कुम्भकर्णने सारी फौजको विडार दिया, यह सुनकर झुण्डके झुण्ड राक्षस दौड़ पड़े॥ तब श्रीरामचन्द्रजीने अपनी सेना को व्याकुल और शत्रुकी अनेक प्रकार की सेनाको आया देख ॥

दोहा—सुनु सौमित्र बिभीषण, सकल सँभारहु सैन।
मैं देखहुँ खल दल बलहिं, बोले राजिव नैन ॥८१॥

श्रीरामचन्द्रजी बोले—हे लक्ष्मण और विभीषण! सुनो, तुमलोग सारी सेनाको सँभालो, अब मैं इस दुष्टके दलोंके बलको देखूंगा ॥ ८१ ॥

कर सारंग विशिष कटि भाथा ❀ मृगपति ठवनि चले रघुनाथा
प्रथम कीन्ह प्रभु धनुष टँकोरा ❀ रिपु दल बधिर भयउ सुनि सोरा

ऐसा कहकर वह हाथमें शार्ङ्ग धनुष-बाण और कमरमें तरकस धारण कर सिंह की चालसे चले। तब पहले तो प्रभुके धनुषकी टंकोरको सुनकर शत्रुदल बहरा हो गया ॥

धनु संधान छाँड़ि शर लक्षा ❀ काल सर्प जनु चले सपक्षा
अति बल चले निकर नाराचा ❀ लगे कटन भट बिकट पिशाचा

फिर धनुष खेंचकर लाख बाण छोड़े, जो मानों पंखों सहित काल सर्पके समान चले ॥ तर्कससे अति बली बाण कालके समान चले जिससे बड़े विकट योद्धा कटने लगे ॥

कटहिं चरण सिर उर भुज दंडा ❀ बहुतक बीर होहिं शत खंडा
घुर्मि घुर्मि घायल महि परहीं ❀ उठहिं सँभारि सुभट फिर लरहीं

उनके पैर, शिर, छाती और भुजदण्ड कटने लगे और कितने ही के सौ टुकड़े हो गये ॥ सब घायल हो घूमकर पृथ्वी पर गिरते और सँभालकर वे वीर फिर युद्ध करते थे ॥

लागत बाण जलद जिमि गाजे ❀ बहुतक देखि कठिन शर भाजे
रुंड प्रचंड मुण्ड बिनु धावहिं ❀ धरु धरु मारु मारु गोहरावहिं

कितने राक्षस बाणों की चोटोंसे बादलके समान गर्जते और कितने ही भाग जाते थे ॥ वीरोंके धड़ सिरके बिना ही दौड़ते और पकड़ो तथा मारो-मारो पुकारते थे ॥

दोहा—क्षण महँ प्रभु के सायकन्हि, काटे बिकट पिचाश।
पुनि रघुपति के त्रान महँ, प्रविशे सब नाराच ॥८२॥

इस तरह क्षण भरमें ही प्रभुके बाणोंने विकट राक्षसोंको काट डाला। और फिर वे सब बाण श्रीरामचन्द्रजीके तरकसमें आकर प्रवेश किए ॥८२॥

कुम्भकरण मन दीख बिचारी ❁ छन महँ हते निशाचर झारी
भयउ क्रोध दारुन बल बीरा ❁ करि मृग नायक नाद गँभीरा

कुम्भकर्णने मनमें सोचकर देखा कि श्रीरामचन्द्रजीने क्षणभरमें ही अनेक राक्षसोंको मार डाला ।। तब उसे दारुण क्रोध हुआ और सिंहके समान उसने घोर गर्जन किया ।।

कोपि महीधर लिये उपारी ❁ डारेसि जहँ मर्कट भट भारी
आवत देखि शैल प्रभु भारे ❁ शरन काटि रज सम करि डारे

और कोप करके पहाड़ ही उखाड़ लिया फिर उसे बन्दरोंपर फेंका ।। भारी पर्वत आते देख श्रीरामचन्द्रजी अपने बाणोंसे काटकर उसको धूलिके समान कर दिये ।।

पुनि धनु तानि कोपि रघुनायक ❁ छाँड़े अति कराल बहु सायक
तनु महँ प्रविशि निकरि शर जाहीं ❁ जिमि दामिनि घन माहिं समाहीं

फिर रघुनाथजीने धनुष तानकर बहुतसे महाकराल बाण छोड़े जो कुम्भकर्णके शरीरमें घुसकर ऐसे निकल गए जैसे बिजली बादलमें समा जाती है ।।

शोणित स्रवत सोह तनु कारे ❁ जिमि कज्जल गिरि गेरु पनारे
विकल विलोकि भालु कपि धाये ❁ बिहँसा जबहिं निकट चलि आये

काले शरीरसे खून बहता हुआ वह ऐसा लगा मानो काजलके पहाड़से गेरुके पनाले निकल रहे हों। उसको व्याकुल देख रीक्ष-बन्दर दौड़ पड़े जब समीप गये तब कुम्भकर्ण हँसने लगा ।।

दोहा—गर्जत धायउ वेग अति, कोटि कोटि गहि कीश ।
महि पटकै गजराज इव, शपथ करै दशशीश ।।८३।।

फिर गर्जता हुआ वह महावेगसे दौड़ा तथा रावणकी दुहाई देता हुआ करोड़ों बन्दरोंको पकड़कर गजराज के समान पृथ्वी पर पटकने लगा ।।८३।।

भागे भालु कपिन के यूथा ❁ बृक बिलोकि जिमि मेष बरूथा
चले भागि कपि भालु भवानी ❁ बिकल पुकारत आरत बानी

फिर तो रीछ-बन्दर ऐसे भागें कि जैसे भेड़िये को देखकर भेड़ें भाग जाती हैं ।। हे पार्वती ! तब रीछ और बन्दर व्याकुल हो आर्त्त-स्वर से पुकारते हुए चले कि—

यह निशिचर दुकाल सम अहई ❁ कपि कुल देश परन अब चहई
कृपा बारिधर राम खरारी ❁ पाहि पाहि प्रणतारत हारी

यह राक्षस तो दुकालके समान है जो अब बन्दरोंके देशमें पहुँचना चाहता है ।। हे कृपा-रूपी बादल ! हे दीनों के दुःख हरनेवाले रघुनाथजी हमारी रक्षा कीजिए ।।

करुना बचन सुनत भगवाना ❁ चले सुधारि सरासन बाना
राम सैन निज पीछे घाली ❁ चले सकोप महाबल शाली

तब उनके करुण वचन को सुनकर रामजी ने अपने धनुष-बाणको सुधारा और चले ।। सब सेना को उन्होंने पीछे छोड़ दिया और अकेले ही क्रोध कर चल दिये ।।

खैंचे धनु शत शर संधाने ❀ छूटे तीर शरीर समाने
लागत शर सँभारि सो फिरा ❀ कुधर डगमगेउ डोली धरा

फिर धनुष-बाणको खेंचकर सौ बाण छोड़े जो छूटकर उसके शरीरमें समा गए ।। बाणोंके लगने पर वह लौटा, उसके चलने पर पहाड़ डगमगा गए और पृथ्वी हिल गई ।।

लीन्हेउ तइ इक शैल उपाटी ❀ रघुकुल तिलक भुजा सोइ काटी
धावा बाम बाहु गिरिधारी ❀ प्रभु सोउ भुजा काटि महि डारी

उसने एक पहाड़ लिया किन्तु श्रीरामजीने उसकी वह भुजा काट दी ।। तब बायें हाथमें पहाड़ लेकर दौड़ा, किन्तु प्रभुने वह भुजा भी पृथ्वी पर काट गिराई ।।

काटें भुज सोहै खल कैसे ❀ पक्ष हीन मन्दर गिरि जैसे
उग्र विलोकनि प्रभुहिं बिलोका ❀ मानहुँ ग्रसन चहत त्रैलोका

भुजाओंके काटे जानेसे वह दुष्ट कैसा शोभायमान हुआ मानों पंख-हीन मंदराचल पर्वत हो । फिर उसने उग्र दृष्टिसे रामचन्द्रजीको कैसा देखा कि मानों भक्षण कर लेना चाहता है ।।

दोहा—करि चिकार मुख घोर अति, धावा बदन पसारि ।
गगन सिद्ध सुर त्रास अति, हाहाकार पुकारि ।।८४।।

फिर वह कुम्भकर्ण घोर चिक्कार कर मुख फैलाकर दौड़ा । उस समय आकाशसे सिद्ध देवता अत्यन्त घबराहट से हाय-हाय पुकारने लगे ।।८४।।

सभय देव करुणानिधि जाने ❀ श्रवण प्रयन्त शरासन ताने
विशिखनिकरनिशिचरमुखभरेऊ ❀ तदपि महाबल भूमि न परेऊ

तब करुणाके निधि रामजी ने देवताओं को भययुक्त देखकर कानों तक धनुष को खेंचा और बाणों से मार राक्षस का मुँह भर दिया, फिर भी वह राक्षस भूमि पर न गिरा ।।

शरनि भरा मुख सनमुख धावा ❀ काल त्रोण सजीव जनु आवा
तब प्रभु कोपि तीव्र शर लीन्हा ❀ धड़ से भिन्न तासु शिर कीन्हा

और बाण भरे मुखसे दौड़ा मानो मूर्तिमान काल आता हो ।। तब प्रभु श्रीरामचन्द्रजीने महाकोप करके बाण लिया और उसका सिर धड़से अलग कर दिया ।।

सो शिर परा दशानन आगे ❀ विकलभयउजिमिफणिमणित्यागे
धरनि धसे धर धाव प्रचंडा ❀ तब प्रभु काटि कीन्ह दुइ खडा

वह सिर जाकर रावण के आगे पड़ा जिससे रावण व्याकुल हो गया ।। अब कुम्भकर्ण का प्रचण्ड रुण्ड दौड़ने लगा, तब प्रभुने बाण मारकर उसके भी दो टुकड़े कर दिए ।।

परेउ भूमि जिमि नभ तें भूधर ❀ हेठ दाबि कपि भालु निशाचर
तासु तेज प्रभु बदन समाना ❀ सुर मुनि सबहिं अचम्भा माना

वे टुकड़े भूमि पर ऐसे गिरे जैसे आकाश से पहाड़ गिरा हो जिसके नीचे सैकड़ों रीछ बन्दर दब गए ।। उसका तेज प्रभुके मुखमें समा गया जिसे देखकर देवताओंने अचंभा माना ।।

नभ दुन्दुभी बजावहिं हर्षहिं ❀ जय जय कहि प्रसून सुर वर्षहिं
करि विनती सुर सकल सिधाये ❀ तब तेहि समय देवऋषि आये

देवता आकाश में हर्षित हो नगाड़े बजाते और जय-जयकार कहते हुए फूलों की वर्षा करते ।। जब स्तुति करके देवतागण चले गए तो उसी समय नारदजो आए ।।

गगनोपरि हरि गुण गण गाये ❀ रुचिर बीर रस प्रभु मन भाये
बेगि हतहु खल मुनि कहि गये ❀ राम समर महँ शोभित भये

वे आकाश से ही भगवान् का गुणानुवाद गाते हुए यह कह गए कि इस दुष्ट को शीघ्र मारिए, फिर तो श्रीरामचन्द्रजी युद्ध-स्थल में शोभायमान हुए ।।

छन्द—संग्राम भूमि बिराज रघुपति अतुलबल शोभा धनी ।
श्रम बिन्दु मुख राजीव लोचन रुचिर तनु शोणित कनी ।।
भुज युगल फेरत शर शरासन भालु कपि चहुँदिशि बने ।
कह दास तुलसी कहि न सक छबि शेष जेहि आनन घने ।।३।।

जब संग्राम भूमि में अतुल बलवाले शोभा के खानि रामजी विराजमान हुए तो उनके मुख-पर पसीनेकी बूंदें, कमल सी आँखें, सुन्दर शरीर पर रक्तकी बूंदें शोभती थीं। वे अपने दोनों हाथोंसे धनुष-बाण फेर रहे थे, चारों ओरसे रीछ, बन्दरोंकी शोभा बनी थी । तुलसीदासजी कहते हैं कि उनको शोभाको शेषजी भी नहीं कह सकते कि जिन्हें बहुत मुख हैं ।। ३ ।।

दोहा—निशिचर अधम मलायतनु, ताहि दीन्ह निज धाम ।
गिरिजा ते नर मंद मति, जे न भजहिं श्रीराम ।।८५।।

हे पार्वती ! राक्षस अधम थे, फिर भी उन नीचों को श्रीरामचन्द्रजी ने बैकुण्ठ दिया । तब वे मनुष्य कैसे मन्द-बुद्धि के हैं जो श्रीरामचन्द्रजी को नहीं भजते ।।८५।।

दिनके अन्त फिरी दोउ अनी ❀ समर भयो सुभटन सन घनी
रामकृपा कपिदल बल बाढ़ा ❀ जिमि तृण पाय आगि अति दाढ़ा

संध्या समय दोनों सेनायें फिर गयीं । इस प्रकार संग्राममें योद्धाओंसे घोर युद्ध हुआ ।। रामजीकी कृपासे बन्दरोंकी शक्ति बढ़ गई जैसे तृणको पाकर आगकी ज्वाला बढ़ती है ।।

छीजहिं निसिचर दिन अरु राती ❀ निज मुख कहे सुकृत जेहि भाँती
बहु बिलाप दशकंधर करई ❀ पुनि पुनि बन्धु शीश उर धरई

राक्षस दिन-रात ऐसे ही नष्ट होते जैसे मुखसे कहने पर पुण्य नष्ट हो जाता है ।। रावण बहुत विलाप करने लगा और बारम्बार भाई कुम्भकर्ण के शिर को छाती से लगाता ।।

रोवहिं नारि हृदय हति पानी ❀ तासु तेज बल बिपुल बखानी
मेघनाद तेहि अवसर आवा ❀ कहि बहु कथा पितहिं समझावा

स्त्रियाँ छाती पीट-पीटकर उसके विपुल तेजको बखानती हुई रो रही थीं, उस समय मेघनाद आया और अनेक कथायें कहकर पिताको समझाया ॥

देखहु कालिह मोरि मनुसाई ❁ अबहिं बहुत का करौं बड़ाई
इष्ट देव सों बल रथ पायउँ ❁ सो मैं तात न तुमहिं सुनायउँ

फिर कहा, कल मेरी वीरता देखिएगा, मैं बहुत बड़ाई क्या करूँ मैंने अपने इष्टदेवसे जो शक्तिरूप रथ पाया है, हे तात ! अभी उसका हाल आपको नहीं सुनाया है ॥

इहि विधि जल्पत भयउ बिहाना ❁ लगे भालु कपि चहुँ दिशि नाना
इत कपि भालु काल सम धीरा ❁ उत रजनीचर अति रनधीरा

इस प्रकारके वार्तालापसे प्रात:काल हुआ और अनेकों रीछ-बन्दर चारों द्वारपर आए। सब वीर अपनी-अपनी विजयके लिए लड़ते, हे गरुड़जी ! वह युद्ध बखाना नहीं जाता ॥

दोहा—मेघनाद माया बिरचि, रथ चढ़ि गयउ अकाश।
गर्जत प्रलय पयोद जिमि, भा कपिदल अति त्रास ॥८६॥

फिर मेघनाद माया रचकर रथपर सवार हो आकाशमें चढ़ गया और वहाँसे प्रलयके समान गर्जने लगा, जिसे सुनकर बन्दरोंकी सेना बहुत त्रसित हो गई ॥८६॥

शक्ति शूल गहि परिघ कृपाना ❁ अस्त्र शस्त्र कुलिशायुध नाना
डारै परशु प्रचंड पषाना ❁ लागा वृष्टि करन विधि नाना

वहाँसे शक्ति, शूल, बाण, परिघ, तलवार और बज्र आदि अनेक प्रकारके अस्त्र-शस्त्र, प्रचण्ड फरसे और पत्थरोंकी वर्षा करने लगा ॥

रहे दशहुँ दिशि सायक छाई ❁ मानहुँ मघा मेघ झरि लाई
धरु धरु मारु सुनहि कपि काना ❁ जो मारे तेहि काहु न जाना

दशों दिशायें बाणों से भर गईं मानों मघा नक्षत्रने वर्षाकी झड़ी लगा दी है ॥ पकड़ो-पकड़ो मारो-मारो का शब्द कानोंसे सुनाई पड़ता, किन्तु कौन मारता, यह कोई न जाना ॥

गहिगिरितरु अकाशकपिधावहिं ❁ देखहिं तेहि न दुखित फिर आवहिं
औघट घाट बाट गिरि कंदर ❁ माया बस कीन्हेसि शर पञ्जर

बन्दर वृक्ष और पहाड़ लेकर आकाशको दौड़ते, वहाँ किसीको न देखकर फिर हताश हो लौट आते ॥ उसने घाट-बाट और पर्वतका कन्दरा आदि सभी स्थानोंको बाणोंसे भर दिया ॥

जाहिं कहाँ भय व्याकुल बन्दर ❁ सुरपति बन्द परे जनु मन्दर
मारुत सुत अंगद नल नीला ❁ कीन्हेसि विकल सकलबलसीला

तब विचारे भयभीत बन्दर अब कहाँ जायँ, वे ऐसे ही रुक गए जैसे इन्द्रकी कैदमें मंदराचल पर्वत पड़ा हो ॥ हनुमान्, अङ्गद, नील सभी व्याकुल हो गए, उसने सभी बलवानोंको व्याकुल कर दिया ॥

पुनि लक्ष्मण सुग्रीव विभीषण ❁ शरन मारि कीन्हेसि जर्जर तन
पुनि रघुपति सन जूझन लागा ❁ शर छाँड़त होइ लागहिं नागा

फिर उसने लक्ष्मण, सुग्रीव और विभीषणको भी मारे बाणोंसे छेद कर उनका शरीर जर्जर कर डाला ।। तब श्रीरामचन्द्रजीसे जा भिड़ा, उसके छूटे हुए बाण सर्पके समान जा लगते ।।

नाग फाँस वश भयउ खरारी ❁ स्वबश अनन्त एक अधिकारी
नट इव कपट चरित कर नाना ❁ सदा स्वतन्त्र राम भगवाना

श्रीरामचन्द्रजी जो स्ववश, अनन्त और एक ही अधिकारी हैं, उसके छोड़े हुए नागफांस से बंध गए तब वह नरों जैसा अनेक कपट-चरित्र करने लगे जो राम ईश्वर और सर्वदा स्वतंत्र हैं ।।

रन सोभा हित आपु बँधावा ❁ देखि दशा देवन दुख पावा

युद्ध-शोभाके लिए वह अपने को बँधवा लिए, देवताओंने यह देखकर बड़ा दुःख पाया ।।

दोहा—गिरिजा जाकर नाम जपि, मुनि काटहिं भव फाँस ।
सो प्रभु आव कि बंधतर, व्यापक विश्व निवास ।।८७।।

हे पार्वती ! जिसका नाम जपकर मनुष्य भवसागरसे पार हो जाते हैं, वे व्यापक सर्व विश्वमें बास करने वाले प्रभु क्या बन्धनके नीचे आ सकते हैं ? ।।८७।।

चरित रामके सगुण भवानी ❁ तर्कि न जाय बुद्धि बल बानी
अस बिचारि जो परम बिरागी ❁ रामहिं भजहिं तर्क सब त्यागी

हे पार्वती ! श्रीरामजीके सगुण चरित्रकी बुद्धि, बल, वाणीसे तर्कना नहीं हो सकती ।। ऐसा विचार कर जो परम विरागी हैं वह सब तर्कोंको त्यागकर रामजी का भजन करते हैं ।।

व्याकुल कटक कीन्ह घननादा ❁ पुनि भा प्रकट कहत दुर्वादा
जामवन्त कह खल रहु ठाढ़ा ❁ सुनकर ताहि क्रोध अति बाढ़ा

मेघनादने समस्त सेनाको व्याकुल कर दिया फिर दुर्वचन कहता हुआ प्रगट हुआ । यह देखकर जामवन्तने कहा, रे दुष्ट ! खड़ा रह, जिसे सुनकर मेघनाद को बड़ा क्रोध चढ़ गया ।।

बूढ़ जानि शठ छाँड़ेउ तोहीं ❁ लागेसि अधम प्रचारन मोहीं
अस कहि तरल त्रिशूल चलावा ❁ जामवन्त सो कर गहि धावा

और कहा—रे मूर्ख ! तुझे बुड्ढा जानकर छोड़ दिया था, अब मुझे ही प्रचार रहा है ।। ऐसा कह कर उसने जामवन्त को त्रिशूल मारा परन्तु उसको पकड़ कर जामवन्त उसीपर दौड़े ।।

मारेउ मेघनाद की छाती ❁ परा धरणि घुरमित सुरघाती
पुनि रिसाय गहि चरण फिरावा ❁ महि पछारि निज बल दिखरावा

और उसको मेघनादकी छातीमें ऐसा मारा कि वह पृथ्वी पर गिर पड़ा ।। फिर जामवन्तने महान् क्रोधसे उसकी टाँग पकड़ कर घुमा दी और पछाड़कर अपना बल दिखाया ।।

वर प्रसाद सो मरै न मारा ❁ तब पद गहि लंका पर डारा
इहाँ देवऋषि गरुड़ पठावा ❁ राम समीप सपदि चलि आवा

जब वह वरदानके कारण नहीं मरा तब उसका पैर पकडकर लंकामें फेंक दिया ॥ इधर नारदजीने गरुड़ को भेजा तो वह रामजीके निकट बहुत शीघ्र चले गये ॥

दोहा—पन्नगारि खाये सकल, क्षण महँ व्याल बरूथ।
भई विगत माया तुरत, हरषे बानर यूथ ॥८८॥

और गरुड़जीने क्षण भरमें ही सब सर्पोंको खा डाला, फिर तो सारी माया जाती रही तथा बन्दरोंका समूह हर्षित हुआ ॥ ८८ ॥

गहि गिरि पादप उपल बहु, धाये कीश रिसाय।
चले तमीर विकल अति, गढ़पर चढ़े पराय ॥८९॥

फिर बन्दर पहाड़, वृक्ष और पत्थर उठाकर क्रोधपूर्वक दौड़े, तब राक्षस मारे भयके भाग चले और बन्दर लंकामें प्रवेश कर किले पर जा चढ़े ॥ ८९ ॥

मेघनाद की मुर्छा जागी ❀ पितहिं बिलोकि लाज अतिलागी
तुरत गयउ सो गिरि कन्दरा ❀ करै अजय मख अस मन धरा

जब मेघनादकी मूर्छा व्यतीत हुई, तब वह पिता रावण को देखकर लज्जित हुआ ॥ फिर अजेय यज्ञ करनेके अभिप्रायसे एक पहाड़ की कन्दरामें चला गया ॥

सो सुधि पाय बिभीषण कहई ❀ सुनु प्रभु समाचार अस अहई
मेघनाद मख करै अपावन ❀ खल मायावी देव सतावन

इसका समाचार पाकर विभीषणने श्रीरामचन्द्रजीसे कहा कि हे प्रभो ! सुनिए, ऐसा समाचार है कि देवताओंको सतानेवाला मायावी दुष्ट मेघनाद एक अपवित्र यज्ञ कर रहा है ॥

जो प्रभु सिद्ध होइ सो पाइहि ❀ नाथ बेगि रिपु जीति न जाइहि
सुनि रघुपति अतिशय सुखमाना ❀ बोलि लिये अंगद हनुमाना

हे प्रभो ! यदि वह यज्ञ सिद्ध हो गया तो उस शत्रुको जल्दी जीत न सकेंगे ॥ विभीषण की बातसे रामजीको अत्यन्त सुख मिला, उन्होंने अङ्गद और हनुमान्‌को बुलाकर कहा ॥

लक्ष्मण संग जाहु सब भाई ❀ करहु विध्वंस यज्ञ कर जाई
तुम लक्ष्मण रन मारहु ओही ❀ देखि सभय सुर दुख अति मोही

हे भाई ! तुम सब लक्ष्मणके साथ जाकर उसका यज्ञ विध्वंस कर युद्धमें उसे मार डालो क्योंकि देवताओंको भयभीत देख मुझे बहुत दुःख हो रहा है ॥

जामवन्त कपिराज विभीषन ❀ सेन समेत रहौ तीनों जन
जब रघुबीर दीन्ह अनुशासन ❀ कटि निषंग कर बान सरासन

हे जामवन्त, हे सुग्रीव और विभीषण ! तुम तीनों व्यक्ति सेना सहित इनके साथ रहना जब रामचन्द्रजीने ऐसी आज्ञा दी, तब लक्ष्मण कमर पर तरकस और धनुष-बाणको ले लिए ॥

प्रभु प्रताप उर धरि रनधीरा ❀ बोले घन इव गिरा गँभीरा
जो तेहि आजु बध बिनु आवौं ❀ तो रघुपति सेवक न कहावौं

तब प्रभु-प्रतापको हृदयमें धारणकर युद्धमें धीर लक्ष्मण तथा उन वीरोंने कहा कि आज उसे मारकर विजय किये बिना यदि हमलोग आयें तो श्रीरामचन्द्रजीका दास न कहायेंगे ।।

जौं शत शंकर करइ सहाई ❁ तदपि हतौं रघुबीर दुहाई

यदि सैकड़ों शंकर उसकी सहायता करें तो भी श्रीरामचन्द्रजीकी दोहाई देता हूँ कि आज उसे (मेघनादको) अवश्य मारूँगा ।।

दोहा—बन्दि रामपद कमल युग, चले तुरन्त अनन्त ।
अंगद नील मयन्द नल, संग सुभट हनुमन्त ।।९०।।

इस प्रकार अंगद, नील, मयन्द, नल और श्रेष्ठ योद्धा हनुमान्‌जीके साथ लक्ष्मण रामजीके युगल चरणोंकी वन्दना करके तुरन्त चल दिये ।। ९० ।।

जाय कपिन देखा सो वैसा ❁ आहुति देत रुधिर अरु भैंसा
तब कीशन कृत यज्ञ विध्वंसा ❁ जब न उठै तब करैं प्रशंसा

वहाँ जाकर बन्दरोंने ऐसा देखा कि वह भैंसेके रक्तको आहुति दे रहा है, तब बन्दरोंने उसके यज्ञको विध्वंस किया और जब वह न उठा तब सब उसकी व्यंगयुक्त प्रशंसा करने लगे ।।

तदपि न उठै धरे कच जाई ❁ लातन हति हति चले पराई
लै त्रिशूल धावा कपि भागे ❁ आवा राम अनुज के आगे

जब इसपर भी नहीं उठा, तब उसके बाल पकड़कर खींचे और लातोंसे मारकर चल दिये। तब वह त्रिशूल लेकर जो दौड़ा तो बन्दर भाग चले और वह लक्ष्मणजीके आगे आया ।।

आवत परम क्रोध करि मारा ❁ गर्जि घोर रव बारहि बारा
कोपि मरुत सुत अंगद धाये ❁ हनि त्रिशूल उर धरणि गिराये

आते ही उसने परम क्रोधयुक्त हो बारम्बार कठोर गर्जनकर लक्ष्मणजीको मारा ।। तब हनुमान् और अंगद दौड़े, क्रोधित होकर त्रिशूलसे उसकी छातीमें मारा ।।

प्रभु पर छाड़ेसि शूल प्रचण्डा ❁ शर हति कृत अनन्त दुइ खंडा
उठि बहोरि मारुत युवराजा ❁ हतेउ कोपि तेहि घाव न बाजा

तब उसने एक प्रचंड त्रिशूल रामजीपर छोड़ा किन्तु उसे लक्ष्मणने अपने बाणोंसे काटकर दो खण्ड कर दिया।। हनुमान् और अंगदने उठकर उसे क्रोधयुक्त मारा किन्तु चोट नहीं लगा।।

फिरे बीर रिपु मरै न मारा ❁ पुनि धावा करि घोर चिकारा
आवत देखि क्रोध जनु काला ❁ लक्ष्मण छाँड़े बाण कराला

तब शत्रु मारनेसे नहीं मरता यह जानकर वे वीर लौट गये और वह फिर घोर चिक्कार करता हुआ दौड़ा। तब उसे कालके समान आते हुए देख लक्ष्मणने एक कराल बाण छोड़ा ।।

आवत देखि बज्र सम बाना ❁ तुरत भयउ खल अन्तरध्याना
बिबिध बेष धरि करै लड़ाई ❁ कबहुँक प्रगट कबहुँ दुरि जाई

तब वज्रके समान बाणको आते देख मेघनाद तुरन्त ही अन्तर्ध्यान हो गया ।। फिर अनेक वेष धारणकर कभी प्रकट होकर और कभी छिपकर युद्ध करने लगा ।।

देखि अजय रिपु डरपे कीशा ❀ परम क्रोध तब भयें अहीशा
लक्ष्मण मन अस मंत्र दृढ़ावा ❀ इहि पापिहिं मैं बहुत खेलावा

शत्रु को अजय देख बानर डर गये, तब लक्ष्मणजी परम क्रोधित हो गये ।। उन्होंने अपने मनमें ऐसी मंत्रणा दृढ़ की कि इस पापीको मैंने बहुत खेलाया ।।

सुमिरि कोशलाधीश प्रतापा ❀ शर संधानि कीन्ह अति दापा
छाँड़ा बाण तासु उर लागा ❀ मरती बार कपट सब त्यागा

, फिर तो लक्ष्मण रामजीके प्रतापका स्मरणकर उसे डांटते हुये बाणका लक्ष्य निश्चित कर छोड़ दिये जो उसकी छातीमें जा लगा, मरते समय उसने सारा कपट छोड़ दिया ।।

दोहा—राम अनुज कहि राम कहि, अस कहि छाँड़ेसि प्रान ।
धन्य शक्रजित मातु तव, कह अंगद हनुमान ।।९१।।

और हा लक्ष्मण ! हा राम ! ऐसा कहता हुआ उसने प्राण त्याग दिया । तब अंगद और हनुमान्ने कहा—रे इंद्रजीत ! तेरी माताको धन्यवाद है ।। ९१ ।।

बिनु प्रयास हनुमान उठाये ❀ लंका द्वार राखि तेहि आये
तासु मरन सुनि सुर गन्धर्वा ❀ चढ़ि विमान आये नभ सर्वा

फिर तो हनुमान्जीने बिना प्रयास ही उसे उठा लिया और लंकाके द्वारपर रख आये ।। उसे मरा हुआ सुनकर सब देवता और गन्धर्व विमानमें बैठकर आकाशमें आये ।।

बरषि सुमन दुन्दुभी बजावहिं ❀ श्रीरघुबीर विपुल यश गावहिं
जय अनन्त जै जगदाधारा ❀ तुम प्रभु सब देवन्ह निस्तारा

वे फूलोंकी वर्षा करके दुन्दुभी बजाते और रामजीका पवित्र यश गाते थे ।। हे अनन्त ! हे जगदाधार ! आपकी जय हो, हे प्रभो ! आपने सब देवताओंका निस्तार किया ।।

अस्तुति करि सुर सकल सिधाये ❀ लक्ष्मण कृपासिंधु पहँ आये

ऐसी स्तुति कर सब देवता चले गये और प्रभुको देख लक्ष्मणजी रामजीके पास आये ।

❀ अथ क्षेपक—सती सुलोचनाकी कथा ❀

प्रभुहिं बिलोकि शीश तब नाये ❀ उठि प्रभु-हर्षि अनुज उर लाये
मुख प्रसन्नता देखि पूछि जब ❀ रिपु बध कहा विभीषणहु तब

लक्ष्मणने प्रभुको देखकर चरणोंमें सिर नवाया, तब प्रभुने उठकर भाईको हृदयसे लगा लिया ।। मुखपर प्रसन्नता देखकर जब रामजीने पूछा तो विभीषणने शत्रुका मारा जाना कहा ।।

कृपा-दृष्टि करि अनुजहिं हेरा ❀ विगत भयो श्रम जब कर फेरा
बाण बेधि तनु देखिय कैसे ❀ कनक त्रोन शर पूरित जैसे

रामजीने भाईको कृपा-दृष्टिसे देखा और जब हाथ फेरा तो सब थकावट दूर हो गई ॥ लक्ष्मणका बाणसे बेधा शरीर ऐसा दिखाई पड़ता था मानों तरकसमें बाण भरा हुआ हो ॥

धारेउ सीस आनि प्रभु आगे ❀ बानर भालु विलोकन लागे
प्रभु कौतुकी विलोकेउ शीशा ❀ राखन कहेउ कोशलाधीशा

फिर लक्ष्मणने मेघनाद का सिर आगे लाकर रख दिया जिसे बन्दर और भालु देखने लगे ॥ कौतुकी प्रभु रामजीने सिर को देखकर उसे सुरक्षित रखनेके लिए कहा ॥

दोहा--प्रभु आयसु सुनि कोशपति, राखेउ जतन कराइ ।
कटक सहित रघुबंशमणि, शोभित अति दोउ भाइ ॥९२॥

स्वामीकी आज्ञा सुनकर बानरोंके राजा सुग्रीवने उसे यत्नपूर्वक रखवाया । सेना सहित रघुवंशमणि और दोनों भाई अत्यन्त शोभित हुए ॥ ९२ ॥

कृपा दृष्टि कपि भालु निहारें ❀ भे श्रम रहित राम बैठारे
सुनहु उमा एहि विधि रिपु मारे ❀ सुर नर मुनि सब भये सुखारें

श्रीरामजीके देखते ही बानर और भालुओंका श्रम दूर हो गया और रामजीने बैठाया ॥ हे पार्वती ! सुनो, इस प्रकार शत्रु मारे गए जिसे देखकर देवता और मुनि लोग सुखी हुए ॥

अब सो सुनहु भुजा तेहि केरी ❀ खग जिमि गई लंक शर प्रेरी
मेघनाद आँगन महँ परी ❀ बाण विद्ध शोणित सों भरी

अब यह कथा सुनो, जिस प्रकार बाण की प्रेरणासे पक्षी की तरह वह भुजा उड़ती हुई लंकामें गई ॥ बाणसे विधी और रक्तसे भरी हुई मेघनादकी वह भुजा आँगनमें जा गिरी ॥

राजति तहाँ सुलोचना वैसी ❀ रतिते रुचिर रूप गुन जैसी
नाग-सुता दशकंठ-पतोहू ❀ बासव रिपुतिय छबिमय जोहू

वहाँ पर रतिसे सुन्दर और गुणवती नाग-कन्या, रावण की पतोहू, मेघनाद की स्त्री अत्यन्त सुन्दरी सुलोचना विराजमान थी ॥

हेम सिंहासन सोहति बाला ❀ सेवहिं विद्याधरि त्रय काला
पूजहिं विविध विनय करि ताही ❀ सुख प्रमोद को सकहि सराही

वह बाला स्वर्णके सिंहासनपर सुशोभित हो रही थी, तीनों कालमें विद्याधरोंकी स्त्रियाँ उसकी सेवा करती थीं ॥ बड़ी विनयसे पूजतीं, उसका सुख और आनन्द कौन सराह सकता है ? ॥

तहँ पति भुजा परी यहि भाँती ❀ मनहुँ सकल सुख तरु की काँती

वहाँ मेघनादकी भुजा ऐसी पड़ी है, मानों सब सुखके वृक्ष की कान्ति हो ॥

दोहा—तिहि दिशि दासी देखि कह, शोणित श्रवभुज दंड ।
भयउ समर आश्चर्य मय, सुनहु अखंडन खंड ॥९३॥

तब उस तरफ दासियोंने रुधिर निकलते हुए उस भुजदण्डको देखकर कहा—आश्चर्यमय युद्ध हुआ है । जिससे अखण्ड का खण्डन हुआ जान पड़ता है ॥९३॥

सुनिके सकल सखी मुख बैना ❀ तजि सिंहासन उठी सुनैना
नारि स्वभाव धुकधुकी धरकी ❀ सूचक अशुभ दहिन भुज फरकी

तब उन सब सखियोंके मुखसे ऐसी बात सुनकर सिंहासन छोड़कर सुनैना उठी ॥ स्त्री-स्वभावसे उसकी धुकधुकी धड़कने लगी तथा अशुभसूचक दाहिनी भुजा फड़कने लगी ॥

होत महा रन रावन रामहिं ❀ वीर धुरीण मोर पिय तामहिं
सकल सुरासुर सकहिं न जूझी ❀ बिधि की मती परै नहिं बूझी

वह मनमें सोचने लगी कि राम और रावणमें घोर युद्ध हो रहा है जिसमें वीर धुरीण मेरे पतिदेव भी थे ॥ उनसे कोई युद्ध नहीं कर सकता, परन्तु विधाताकी गति जानी नहीं जाती ॥

इतना कहति गई चलि आप ❀ पति भुज लखिकर कोटि बिलाप
कंकण मणिगण भूषण सोई ❀ महा विटप सम आन न होई

इतना कहते हुए आप ही चली गई और पतिकी भुजा देखकर करोड़ों प्रकारसे विलाप करने लगी ॥ यह कंकण तथा मणियोंसे जटित मेरे पतिकी ही भुजा है, दूसरेकी नहीं ॥

देखत मनहिं न आवत तेही ❀ तासु प्रभाव सुनत पहिलेही
नींद नारि भोजन परिहरई ❀ बारह बरस तासु कर मरई

देखती है, पर विश्वास नहीं होता क्योंकि उसके प्रभावको पहले ही से जानती थी, कि बारह वर्ष तक जो नींद, स्त्री और भोजनका त्याग करेगा, उसीके हाथसे मेरे पतिकी मृत्यु होगी ॥

दोहा—करि विचार मन टेक दै, मैं पतिवरता नारि।
भुज लिखि मेटहु दुचितई, सुनि कर दीन्ह पसारि ॥९४॥

यह विचार कर मनमें दृढ़तासे बोली कि मैं पतिव्रता स्त्री हूँ, अतएव तुम अपने हाथसे लिखकर मेरी दुविधाको दूर करो, यह सुन भुजाने हाथ फैला दिया ॥ ९४ ॥

लखि रुख तासु सखी उठि धाई ❀ तुरतहिं खोजि खरी लै आई
दीन्ह हाथ पर मणि अँगनाई ❀ लिखत लखन कीरति रुचिराई

उसके रुखको समझकर एक सखी उठ दौड़ी और तुरन्त ही खड़िया खोजकर ले आई तथा हाथपर रख दी ॥ तब वह हाथ मणिरचित आँगनमें लक्ष्मणकी सुन्दर कीर्ति लिखने लगा ॥

नींद नारि भोजन शत कोटी ❀ तजत तासु महिमा अति छोटी
अक्षय अव्यय अज अविनासी ❀ अतुल अमित घट घट के बासी

यदि सौ करोड़ वर्ष तक भी निद्रा, नारि और भोजन त्याग करे तो भी उसकी महिमा छोटी ही है ॥ वे नाश न होनेवाले, अखण्ड और सबके अन्तर में बास करने वाले हैं ॥

प्रगटहिं पालहिं पुनि जग हरहीं ❀ त्रिगुण रूप त्रय मूरति धरहीं
जो कालहु कर काल भयंकर ❀ बरणत सुयश शारदा शंकर

जो उत्पत्ति, पालन और संहार करनेके लिये त्रिगुण रूप धारण करते हैं ॥ जो काल के भी काल हैं और जिनका सुयश सरस्वती और शंकर भी वर्णन करते हैं।

धरहिं विविध तनु सेवक हेतू ❁ जासु नाम भवसागर सेतू
मुनि मन पुण्डरीक जाके घर ❁ बचन विवेक विकार बुद्धिवर

जो सेवकोंके लिए नाना प्रकारके शरीर धारण करते हैं और जिनका नाम भवसागर पार करनेके लिए पुलके समान है ।। ज्ञान ही जिनका वचन और विचार ही श्रेष्ठ बुद्धि है ।।

दोहा–कोटि कल्प वरणत निगम, अगम जासु गुन गाथ ।
तम शरीर जड़ जीव बिनु, किमि बरणै लिखि हाथ ।।९५।।

जिनके गुणों की कथा शास्त्र करोड़ों वर्ष तक वर्णन करके पार नहीं पा सकते, उनके गुणों को यह जड़ शरीर बिना प्राण के केवल हाथ द्वारा कैसे वर्णन कर सकता है ? ।।९५।।

मम शिर गयउ जहाँ रघुराई ❁ तव प्रतीति लगि भुजा पठाई
एहिविधि लिखीसकलभुजबाता❁ परी भूमि तब अति बिकलाता

मेरा शिर श्रीरामचन्द्रके पास गया है, तुम्हारे विश्वासके लिए भुजा यहाँ भेजी है ।। जब सारी बातें भुजाने लिख दी, तब अत्यन्त व्याकुल होकर सुलोचना पृथ्वीपर गिर पड़ी ।।

बाँचिसकलभुजलिखितयथारथ❁लक्ष्मण राम जानि परमारथ
नारि सुभाव तदपि बहु भाँती ❁बिलपति मिलि सखियनकी पाँती

भुजाकी लिखी सत्य बात बाँच कर तथा राम और लक्ष्मणके परमार्थ को जानकर भी ।। स्त्री-स्वभावसे सखियोंकी पंक्तिमें मिलकर सुलोचना विलाप करने लगी ।।

गुन गन साहस शील नाहके ❁ कहि रोवहिं बल बिजय बाँहके
जेहि भुजबल सुर नाथ बिगोवा ❁ सो भुज आजु समर महि सोवा

सुलोचना अपने पतिके गुण, पराक्रम, शील और बाहु-बलको कह-कह कर रोने लगी ।। जिस भुजाके बलसे इन्द्र भाग गया था, वह भुजा आज समर-भूमिमें सोयी है ।।

मणिगण भूषन बसन बिसारति ❁महि लोटति करतल सिर मारति
मगन शोकसरि तनु सुधि नाहीं ❁ दारुण बिपति कहौं केहि पाहीं

मणिगण, आभूषण और वस्त्र त्याग पृथ्वी पर लोटती हुई हाथोंसे सिर पीटने लगी ।। वह शोक-रूपी नदीमें डूब गई, इस महान् विपत्तिको किसके पास कहूँ ।।

क्षणिक प्रबोध सखी कोउ करई❁ बहुरि शोक दावानल जरई
क्षणक्षणउठतिपरतिधरणीतल❁ पुनि रोवहि सराहि पतिकर बल

क्षण भरके लिए किसी सखी द्वारा प्रबोध होता था पुनः शोकरूपी प्रचण्ड अग्निमें जलने लगती ।। बार-बार उठती और गिर पड़ती तथा पतिके बलको सराहते हुए रोने लगती थी ।।

दोहा–तिन्ह महँ सखी सयानि इक, कहि समुझाई बैन ।
शोक छाँड़ि पति देवता, सुगति करिय पति ऐन ।।९६।।

उसमेंसे एक चतुर सखीने समझाकर कहा, हे पतिव्रते ! शोकको त्याग कर उचित कार्य करो, तुम तो बुद्धिमती हो ।।९६।।

सुनि कह सहसानन ततु जाता ❀ सत्य कहत तुम्ह सखी सुबाता
बिधि निर्मित मोकहँ दुखलाहू ❀ सुख परिपूर भवन सब काहू

यह सुनकर सुलोचना बोली—हे सखी ! तुम सत्य कहती हो । यद्यपि सभी सुखोंसे मेरा घर परिपूर्ण है तथापि विधाताने मेरे प्रारब्धमें दुःख ही बनाया है ॥

विजय राम लक्ष्मण कहँ आयउ ❀ सुयश सकल मर्कट कल पायउ
कुल कलंक बड़ लहेउ विभीषण ❀ कुल कुठार अस सुनेउ न दीखण

अब विजय राम और लक्ष्मणकी हुई और सुयश सब बानरोंने पाया ॥ विभीषणने कुलका कलंक लिया, ऐसा कोई भी कुलके लिए कुठार रूप न देखा और न सुना ही गया ॥

छूटि बन्दि सब सुरगण केरी ❀ निज निज पुरन दुहाई फेरी
मुनि पुलस्त्य कर भा कुलनाशा ❀ अब रवि शशि सुखकरहिं प्रकाशा

अब देवताओंके बन्धन छूट गए, उन्होंने अपने-अपने पुरमें दुहाई फिरवा दी ॥ पुलस्त्य मुनिका कुल नष्ट हो गया, अब सूर्य तथा चन्द्रमा सुखपूर्वक प्रकाश करेंगे ॥

तेजवन्त पावक परिहरि दुख ❀ बहहिं समीर आजु अपने सुख
सलिल गगन भू निर्मल आजू ❀ सुबस बसहिं सुरनायक राजू

अग्नि भी दुःख छोड़ तेजवन्त हो गया, आज पवन भी अपने सुखसे चलेंगे ॥ आज पृथ्वी, आकाश, समुद्र निर्मल हो जायेंगे और इन्द्र अपने राज्यमें स्वच्छन्द बिहार करेंगे ॥

दोहा—यम कुबेर दिग्पाल सब, प्रमुदित सुर नर नाग ।
खाय अघाय विहाय दुख, पाय सुयज्ञ विभाग ॥९७॥

अब यमराज, कुबेर, दिग्पाल, देवता, मनुष्य और सर्प सभी प्रसन्न होंगे तथा दुःख छोड़कर सुन्दर यज्ञ-भाग को खूब पेट भर खायेंगे ॥ ९७ ॥

इतना कहि मन्दिर कहँ आई ❀ देखत मणिगण धन बहुताई
सुरपति भवन सुपटतर नाहीं ❀ जहँ ऋधि सिधि तनु धरे कमाहीं

इतना कहकर वह अपने मन्दिरमें आयी जहांपर मणिगण और बहुत सा धन भरा हुआ था ॥ जिसकी तुलना इन्द्र-भवन भी नहीं कर सकता, जहांपर ऋद्धि-सिद्धि कार्य करती थीं ॥

देखत विभव न मन अनुरागेउ ❀ पतिपद नेह निपुण मन लागेउ
दीन्हें मणिगण भूषण चीरा ❀ धेनु धरणि गज हाटक हीरा

उस सम्पत्तिको देखकर भी उसे प्रेम न हुआ, केवल पतिके ही चरणोंमें मन लगा था। वह मणि-गण, आभूषण, वस्त्र, गऊ, पृथ्वी, हाथी, सोना और हीरे सब प्रकारके दान देने लगी ॥

मणिगण शिविका रचेउ बनाई ❀ भुज चढ़ाइ पहिराव बनाई
आपुन चढ़ति भई तहँ आई ❀ सुर दुर्लभ सुखसदन विहाई

मणियोंसे जटित सुन्दर पालकी बना, उसपर भुजा को उसकी पोशाक बनाकर चढ़ाया और देवताओं को भी दुर्लभ सुख वाले घरको त्याग कर आप भी उस पालकी पर आकर चढ़ गयी ॥

बीतराग जिमि तजहिं विषयगन ❀ तेहि तस भाँति दियो पतिपदमन
शुक सारिका सुलोचनि ज्याये ❀ कनक पींजरन्हि राखि पढ़ाये

जैसे विरागी विषयोंको त्याग देते हैं, वैसे ही उसने सब त्यागकर पतिके चरणोंमें मन लगा दिया। जो तोता और मैना सुलोचनाने सोनेके पिजड़ोंमें रखकर पाला और पढ़ाया था ॥

ब्याकुल कहहिं ते कहाँ सुनयना ❀ सुनि धीरज परिहरिय सुबयना
भये विकल खगमृग यहि भाँती ❀ अपर दशा कैसे कहि जाती

वे व्याकुल होकर कहते--सुलोचना कहाँ है ? पक्षियोंके ये मधुर वचन सुनकर धैर्य छूट जाता था। जब इस प्रकार पशु-पक्षी व्याकुल हो उठे तो औरोंकी दशा कैसे वर्णन करूँ ?

प्रजा लोग आतुर सँग लागे ❀ प्रेम उँमगि लोचन जल पागे

प्रजागण आतुर होकर साथ जा लगे, उनके प्रेमसे उमड़े नेत्र आँसुओंसे भर गये ॥

दोहा--बाजन लगे निशान गण, ढोल दुन्दुभी भेरि।
पुरजन परिजन संग सब, चले पालकी घेरि ॥९८॥

नगाड़े, ढोल, तुरई और भेरी आदि बाजे बजने लगे। लंकाके रहनेवाले तथा रावणके कुटुम्बी पालकीको घेरकर साथ चलने लगें ॥ ९८ ॥

देखि भीर दशकन्धर द्वारे ❀ सजग होउ सब बीर प्रचारे
जाना कटक रिपुन्ह कर आई ❀ अस्त्र शस्त्र कर धरहु बनाई

तब रावणने द्वारपर भीड़ हुई देखकर सब वीरोंको सजग होनेके लिये प्रचारा और शत्रुकी सेनाको आते हुए जानकर सबको हाथोंमें अस्त्र-शस्त्र सँभालनेके लिए कहा ॥

धनुष चढ़ाइ तूण कटि बाँधहिं ❀ गहि असि चर्म बीरवर साजहिं
तोमर परशु प्रचंड गदा गहि ❀ राखन तीखे शूल शक्ति लहि

श्रेष्ठ वीर धनुष चढ़ाकर, कमरमें तरकस बाँधते, हाथमें ढाल, तलवार लेकर सजते थे। कोई-कोई तोमर, फरसा, प्रचण्ड गदा, तीक्ष्ण शूल और शक्ति लेकर क्रोधमें भरे खड़े हो गये ॥

मारु मारु धरु धरु कहि धावहिं ❀ प्रगट दशानन विजय सुनावहिं
गर्जि गर्जि कहि गिरा गँभीरा ❀ समर भयंकर निशिचर वीरा

मारो-मारो, पकड़ो-पकड़ो, कहकर दौड़ते। वे भयंकर वीर राक्षस रावणकी विजय सुनाते और गर्जते तथा ललकारते हुये चले ॥

निपटहिं निकट पालकी आई ❀ चीन्हि सकल भट रहे लजाई
देखि जुहार नागपति कन्या ❀ सती शिरोमणि त्रिभुवन धन्या

जब बहुत ही निकट पालकी आ गई, तब उसे पहचानकर सब योद्धा लज्जित हो गये ॥ तब तीनों लोकमें धन्य सतियोंमें शेषनागकी कन्याको देखकर सबने जुहार-प्रणाम किया ॥

दोहा—द्वारपाल दशकन्ध कहँ, खबरि सुनायउ जाय।
भई रजायसु वेगहिं, लेहु सुतहिं बुलवाय ॥९९॥

जब द्वारपाल ने सुलोचना के आने का समाचार रावणको सुनाया। तब आज्ञा हुई कि पुत्री को यहाँ बुला लाओ ॥ ९९ ॥

तेहि अवसरहिं सुलोचना, गहे चरन शिर नाय।
राखि भुजा घननाद की, करुना बचन सुनाय ॥१००॥

उसी समय सुलोचना ने आकर रावणके चरण पकड़कर शिर नवाया और मेघनाद की भुजा सामने रखकर वह करुणा-युक्त वचन सुनाई ॥१००॥

तुमहिं अछत अस दशा हमारी ❁ सुख तजि भइउँ शोक अधिकारी
नभ मारग भुज मम गृह परी ❁ बानबिद्ध शोणित तनु भरी

तुम्हारे रहते ही हमारी यह दशा हो गई कि सब सुख त्यागकर मैं शोककी अधिकारिणी हुई ॥ यह बाणसे विद्ध तथा खूनसे लिप्त भुजा आकाश-मार्ग से आकर मेरे घर में गिरी ॥

देखि भुजा मनमें अति डरी ❁ संशय जानि दीन्ह कर खरी
लिखी राम लक्ष्मन महिमा इन्ह ❁ क्रम क्रमसो सब कथा कही तिन्ह

भुजा देखकर मैं बहुत डर गई फिर, सन्देह जानकर हाथोंमें खड़िया दी ॥ इसने राम और लक्ष्मण की सारी कथा क्रम-क्रम से कह सुनाई ॥

ठगिसी रही बाँचि गुन गाथा ❁ जरउँ संग जो पावउँ माथा
रन कबन्ध भुज मम गृह आई ❁ सिर तहँ गयउ जहाँ रघुराई

उनके गुणोंकी कथा सुनकर मैं ठगी-सी रह गई। यदि पतिका सिर मिल जाय तो उसी के संगमें जल जाऊँ। धड़ संग्राम-भूमिमें, भुजा मेरे घर और शिर रामजीके पास गया है ॥

करिये जतन मिले मोहिं शीशा ❁ तुम्ह समर्थ निशिचर कुल ईशा
सुनत कुलिश सम गिरा बधूकी ❁ जीवन आश दशानन मूकी
तदपि धीर धरि करत प्रबोधा ❁ कहु जग मो समान को योधा

हे राक्षस-कुल के स्वामी ! आप ऐसा यत्न करिये कि जिसमें मुझे शिर मिल जाय। पुत्र-बधूकी यह वाणी सुनकर रावणने जीनेकी आशा त्याग दी, तथापि धैर्य धर समझाता है कि भला कहो तो मेरे समान संसार में योद्धा कौन है ?

दोहा—राम लखन सुग्रीव नल, नील द्विविद हनुमन्त।
साथ विभीषण ऋषभ को, आनौं मारि तुरन्त ॥१०१॥

कह तो राम, लक्ष्मण, सुग्रीव, नल, नील, द्विविद, हनुमान्, विभीषण और जामवन्त सबको मारकर अति शीघ्र ही उनके शिर को ले आऊँ ॥१०१॥

अब लगि रहेउ भरोसा भारी ❁ कुम्भकरन घननाद सुरारी
महूँ आजु लगि कीन्ह न जूझा ❁ इन्ह सबकर पुरुषारथ बूझा

अभी तक तो कुम्भकर्ण और मेघनादका बड़ा भरोसा रहा, इसी कारण आज तक मैंने संग्राम नहीं किया, परन्तु इन सबका पुरुषार्थ देख लिया ॥

मरे ते नर बानर के मारे ❀ बात सुनत बड़ लाज हमारे
गणना कवन बीर महँ तिनकी ❀ अति दुर्दशा कीन्ह कपि जिन्हकी

सो वे तो मनुष्य और बानरोंकी मारसे मर गए जिसे सुनते हुए मुझे लज्जा आ जाती है ॥ उनकी वीरों में कौन-सी गिनती है जिनकी बड़ी दुर्दशा बन्दरों ने कर डाली ॥

छाँड़ि शोच कुलबधू पतोहू ❀ उन्ह समान जनि जानेसि मोहू
पुत्रि बिलम्ब करहु घटि चारी ❀ देखहु मोरि भयंकर मारी

रे कुलवधू ! पतोहू ! शोक छोड़ दे, मुझे उनके समान न समझो । हे पुत्री ! चार घड़ी विलम्ब और करो और मेरा भी पराक्रम देख लो ॥

आनि शीश तव शत्रुन्ह केरा ❀ बिनु प्रयास नहिं लागहि बेरा
भोगत जन्तु पुराकृत भोगा ❀ नतु कत निशिचर बनचर योगा

बिना प्रयास और बिना विलम्ब के तेरे शत्रुओं का सिर काट ले आऊँगा । जीव अपने पूर्व जन्म के भोगों को भोगता है, नहीं तो क्या राक्षसों को बानर मारते ? ॥

दोहा—मेरु उपारनहार जे, धरा धरहिं कर बीच ।
ते भट खाय मसक शिशु, काल कुटिलता नीच ॥१०२॥

जो सुमेरु पर्वतको उखाड़ने वाले और पृथ्वीको मुट्ठियोंमें धारण करनेवाले थे, उन राक्षस वीरों को मच्छरोंके बच्चोंकी तरह बानरोंने खाया । नीच कालकी टेढ़ी गति जानी नहीं जाती ॥१०२।

क्रोधावेश घोर रव बोलहिं ❀ हृदय शोक तरु अचल न डोलहिं
समाधान नहिं मानत सोई ❀ सुनि प्रलाप परितोष न होई

यह सुनते ही क्रोधसे भरी सुलोचना बोली, क्योंकि हृदयमें शोकरूपी वृक्ष जम गया था । वह रावणके समाधानको नहीं मानती, उसे व्यर्थका प्रलाप सुनकर संतोष नहीं हुआ ॥

नर बानर पुरुषारथ देखत ❀ बड़ा प्रताप छोट करि लेखत
कूदि सिंधु कपि लंका जारी ❀ लघु करि मानत ताहि सुरारी

(वह बोली) आप मनुष्य और बानरोंका पुरुषार्थ देखकर भी उन बड़े प्रभाववालों को छोटा करके मानते हैं । हे सुरारी ! जिसने समुद्र लाँघकर लंकाको जलाया, उसे तुम छोटा मानते हो?॥

कुम्भकरन अतिकाय महोदर ❀ मम पति गिरेउ समेत सहोदर
तेहि रिपु चहहिं दशानन जीती ❀ देखिय महा मोह की रीती

कुम्भकर्ण, अतिकाय, महोदर और मेरा पति भी भाइयों सहित जूझ गया ॥ ऐसे शत्रु को तुम जीतना चाहते हो, तुममें महान् मोह की रीति दिखाई दे रही है ॥

उतर देउँ तो पातक होई ❀ करि विषाद अब सर्वसु खोई
फिरइ राज्य कछु मोहिं न काजू ❀ बिनु पिय सकल नरक कर साजू

अब यदि उत्तर दूं तो पातक होगा, विषाद करने से सर्वस्व जाता रहेगा। यदि राज्य फिर आ भी जाय तो मुझे कार्य नहीं; क्योंकि बिना पति के सर्वसुख नरक के साज हैं ॥

दोहा—तुरतहिं उठी सुलोचना, गइ मयतनया पास।
पद गहि रोवति सकल कहि, प्रगटि शोक इतिहास ॥१०३॥

रावण से ऐसा कहकर सुलोचना उठकर मन्दोदरी के पास चली गई और चरण पकड़ रो-रोकर अपनी सारी शोक-कथा कह सुनाई ॥१०३॥

आदिहिते सब कथा बखानी ❀ सुनि सुनि रोवहि रावन रानी
कहि सो पति भुज लिखनि बहोरी ❀ राम लषन महिमा नहि थोरी

आदि से ही सब कथा कही, जिसे सुन-सुनकर रावण की रानी मन्दोदरी रोने लगी। फिर पति के हाथ की लिखी बात सुनाई, जिसमें राम-लक्ष्मण की बड़ी महिमा थी ॥

कहेउ बहुरि दशकन्धर क्रोधा ❀ मुये बिडंबन कीन्ह जो बोधा
सुनि सोइ पुत्रबधू की बानी ❀ बोली दुखित मँदोदरि रानी

फिर रावण के क्रोध को सुनाया, मरने के बाद जो समझाया सब विडम्बनामात्र है। तब पुत्र-वधू सुलोचना की उस वाणी को सुनकर रानी मन्दोदरी दुःखी हो बोली ॥

कहा सो मानहु सत्य सयानी ❀ सुनी जो नारद मुनिकी बानी
पाछिल बात भई सब साँची ❀ अनुभव कीन्ह न एक हु बाँची

हे सयानी ! नारदजी की कही हुई बात मैं कहती हूँ इसे सत्य मानो। क्योंकि मैंने अनुभव करके देख लिया है कि पिछली बातें सब सत्य हुई है ॥

देवि न होहि मृषा ऋषि भाषित ❀ अपने महा मोह मन माषित
आगिल कथा समास समेता ❀ सुनहु पुत्रि ऋषि वर्णेउ जेता

हे देवि ! ऋषिवाणी झूठी नहीं हो सकती, चाहे मनमें कितना ही महामोह धारण करो ॥ हे पुत्री ! अगली कथा, जिसे नारदजी ने कही है, मैं कहती हूँ, मन लगाकर सुनो ॥

बैर भाव दशकन्धर जूझहिं ❀ प्राणहु गये नीति नहिं बूझहिं
बन्धु भेद लंका गढ़ टूटहिं ❀ सुर नर नाग बंदि ते छूटहिं

उन्होंने कहा था कि अपने बैर-भाव से दसकन्धर जूझ जायेगा, और प्राण जाने पर भी नीति नहीं बूझेगा। भाईकी बुराई से लंका-गढ़ टूट जायेगा, देवता, मनुष्य और नाग बन्धनसे छूटेंगे ॥

सिया शोक संकट ते छूटहिं ❀ बानर भालु राजगृह लूटहिं
धन मणि भूषण बसन बिमाना ❀ भोग करहिं मर्कट कुल नाना

सीताजी शोक-संकटसे छूट जायेंगी, बानर और भालू राज्य-घरको लूटेंगे। धन, मणि, गहने, वस्त्र, विमान इन सबका बानर भोग करेंगे ॥

दोहा—राज विभीषण पाइहै, अमर कल्प निर्बाहि।
भावीवश सुख दुख जगत, उपदेशिय कहु काहि ॥१०४॥

विभीषण एक कल्प तक अमर राज्य करेंगे। होनहारवश जगत् में सुख और दुःख होता है, कहो किसको उपदेश दिया जाय ? ।।१०४।।

मुनि बचनन की मोहिं प्रतीती ❀ अनुभव दोउ हार अरु जीता
तैं पुत्री परिहरि अब शोका ❀ पति सँग तुरत साध परलोका

मुनिके वचन पर मुझे विश्वास है, हार-जीत दोनों में अनुभव होता है। अब हे पुत्री ! सब शोक छोड़कर तू शीघ्र ही पति के साथ परलोक का साधन कर ।।

जाहु राम पहँ पति सिर लागी ❀ तजि सँकोच आनहु सिर माँगी
आजु न होय लाज तव भूषन ❀ समय हीन मन गनिय न दूषन

पतिके सिरके लिए रामजी के पास जाओ, संकोच छोड़कर सिर माँग लाओ। आज की लज्जा तुम्हारा आभूषण नहीं, समय हीन होनेपर मनमें दोष नहीं होता ।।

एक नारि व्रत रघुपति केरा ❀ लषन सुयश तैं सुना घनेरा
हैं पुनि ससुर बिभीषन तोरा ❀ बालि सुवन बालक सम मोरा

श्रीरामजीका एक ही नारि-व्रत है और लक्ष्मणके सुयश को तुम बहुत सुन चुकी हो ।। फिर विभीषण तेरा श्वसुर है और अङ्गद मेरे पुत्र के समान है।

मन्त्री जामवन्त सुग्रीवाँ ❀ द्विविद मयन्द महाबल सीवाँ
जानहु ब्रह्मचर्य हनुमन्ता ❀ शिव स्वरूप भयहर भगवन्ता

महाबल की सीमा जामवन्त, सुग्रीव, द्विविद, मयन्द ये मन्त्री हैं ।। हनुमान् को ब्रह्मचारी जानो और शिव-रूप दुःख के हरनेवाले वहाँ भगवान् हैं ।।

सदा नीतिरस राम नरेशू ❀ तहाँ जात तोहि कवन कलेशू

श्रीरामजी सदा नीति-युक्त कार्य करते हैं, तो वहाँ जाने में तुम्हें क्या क्लेश है ।।

दोहा–विदित तोहिं पतिभुज लिखित, लक्ष्मन राम प्रभाउ।
मैं हूँ ऋषि भाषित कहेउँ, अब बिलम्ब नहिं जाउ ।।१०५।।

तुम्हें तो राम और लक्ष्मणके प्रभावको तुम्हारे पति की भुजाने ही विदित करा दिया है। मैंने भी ऋषि की कही हुई बात कह दी, अब देर मत करो, जाओ ।।१०५।।

सुनत सासु मुखते हित बानी ❀ जाहुँ रामपहिं यह उर आनी
बार बार चरनन शिर नाई ❀ चली जहाँ लक्ष्मण रघुराई

तब सासुके मुखसे अपनी भलाईकी बात सुनकर उसने रामजीके पास जाने को मनमें लाई ।। वार-वार उनके चरणों में सिर नवाती हुई सुलोचना लक्ष्मण और रामजी के पास चली ।।

देखा कटक भालु कपि केरा ❀ सिन्धु सुबेल महीधर घेरा
उमँगेउ मनहुँ महोदधि दूसर ❀ हरित पिंग कपि धूमर धूसर

भालु और बन्दरों की सेना समुद्र के किनारे सुबेल पर्वत को घेरे हुए ऐसी दीख पड़ी मानों दूसरा समुद्र उमड़ पड़ा है। बन्दर हरे, पीले, धूसर तथा धूमर रङ्ग के हैं ।।

भासित ब्योम लाल अनुहेरी ❋ मनहुँ बसत बड़वानल केरी
गिरि तरुधर भुज सहस भयंकर ❋ जहँ तहँ प्रकट होत जनु जलधर

उनके रङ्गसे आकाश बड़वानल अग्निके समान लगता है, वह मानों चारों ओरसे घेर रहा है। पर्वत और वृक्ष धारण किये हजारों भुजायें भयंकर बादलके समान प्रगट हो रही हैं॥

लक्ष्मण शेष सुअंक शीश धरि ❋ कटक जलधि सोवत राघवहरि
अक्षयवट तहँ बैठ विभीषन ❋ अस सुकृती जग सुना न दीषन

शेष रूपी लक्ष्मण की गोदमें सिर रखे रघुनाथजी सेना रूपी सागरमें सोते हैं। वहां अक्षयवटके समान विभीषण बैठे हैं, ऐसी अच्छी कीर्ति वाले कहीं न देखे और न सुने गए॥

दोहा—देखत डरी सुलोचना, धीरज धरति बहोरि।
महाराज रघुबीर कहँ, बिनय सुनावहु मोरि॥१०६॥

देखते ही सुलोचना डर गई, फिर धैर्य धारण कर बोली कि महाराज श्रीरामचन्द्र को मेरी विनती सुनाओ॥ १०६॥

बानर सकल उठे अस बोली ❋ रिपु पुरते आवत एक डोली
जानि परत रावन अब बूझा ❋ भई मति मेघनाद जब जूझा

उस समय सारे बन्दर बोल उठे कि शत्रु के यहांसे एक डोली आ रही है॥ मालूम होता है कि रावण को अब कुछ समझ आ गई, जब मेघनाद मर गया, तब सुमति हुई है॥

हठ तजि सीतहि दीन्ह पठाई ❋ तजहु सोच अब मिटी लराई
जेहि लगि प्रगट कीन्ह पुर आगी ❋ बाँधेउ सेतु हेतु जेहि लागी

मालूम होता है कि रावणने हठ छोड़ कर सीताजी को भेज दिया, अब शोक छोड़ दो, लड़ाई बन्द हो गई। जिनके लिये लंका जलाई और समुद्र पर पुल बांधा॥

सो सीता अब बिनु श्रम पाई ❋ जानहु विधि अनुकूल सहाई
बिजय राम सुग्रीवहि आयउ ❋ सुयश बीर बानर कुल पायउ

सो जानकी बिना परिश्रमके मिल गई। मालूम होता है विधाता मेरी सहायताके अनुकूल हैं। राम और सुग्रीव की विजय रही और बीर बानर कुल को सुयश मिला॥

बिरह राम लछिमन कर छूटेउ ❋ बिनु प्रयास लंका गढ़ टूटेउ
युग युग कीरति रहहिं हमारी ❋ कहँ राक्षस कहँ लघु बनचारी

राम और लक्ष्मण का दुःख छूट गया, बिना क्लेशके ही लंका का गढ़ टूट गया। युग-युगमें हमारी यह कीर्ति चलेगी कि कहां राक्षस और कहां छोटे बानर॥

दोहा—यहि विधि चारु बिचारि करि, ठीक कीन्ह मनमाँहि।
भयउ काज रघुराज कर, बात दूसरी नाहिं॥१०७॥

इस तरह सुन्दर बिचार मनमें दृढ़ कर सबने अपना निश्चय किया कि अब रघुनाथजी का कार्य हो गया, दूसरी कोई बात नहीं है॥ १०७॥

पैठत कटक अतिहि सकुचाई ❀ अनचिन्हारि जनु पर घर आई
आगे जाइ देखि रघुबीरहिं ❀ छबिमय श्यामल गौर शरीरहि

सुलोचना सेनाके बीचमें जाते समय बड़ी सकुचाती है, मानों अनचिन्ही स्त्री दूसरेके घर आई हो ।। आगे जाकर अत्यन्त सुन्दर श्यामल और गौर शरीर रघुनाथजी तथा लक्ष्मणजी को देखा ।।

मरकत कनकछबिहिंजनु निन्दत ❀ सो जनु धन्य उमा ते बन्दत
मत्त गयन्द शुण्ड भुजदंडा ❀ धनुष बाण असि धरे प्रचण्डा

जिनका शरीर मरक मणि और स्वर्ण की शोभा को भी मानो लज्जित कर देता है । हे पार्वती ! वे धन्य हैं जो उनकी बन्दना करते हैं ।। मतवाले हाथीके सूँड़के समान जिनके भुजदण्ड हैं और धनुष-बाण तथा प्रचण्ड तलवारं लिए हुए हैं ।।

उर विशाल अति उन्नत कन्धर ❀ कंबु कंठ रेखा त्रय सुन्दर
मुख छबि को उपमा कवि जोहहिं❀ शशि सरोज सम काहे न सोहहिं
दशन पाँति को कांति कहै को ❀ ललकत मन पटतरहिं लहै को

विशाल छाती, बड़े ऊँच कन्धे, शंख सी गर्दन और सुन्दर तीन रेखायें ।। जिनके मुख की शोभा का वर्णन करते हुए कविजन चन्द्र-कमल-सी उपमा कहते हुए क्यों न शोभित हों ।। दाँतों की पंक्ति और उसकी चमक को कौन कहे, मन ललचा जाता है फिर उपमा कौन पावे ?

देखत अधरन की अरुनाई ❀ बिम्बा फल बंधूक लजाई
शुक तुण्डक नासिका लजावहिं ❀ थके सुकवि नहिं पटतर पावहिं

होठों की लाली देखकर कुन्दरू और दोपहरिया का फूल लज्जित हो जाता । नासिका तोते की नासिका को लज्जित करती है, जिसमें अच्छे कवि थक गये, कोई उपमा नहीं पाते ।

दोहा—छबिमय गुनमय तेजमय, राम उदधि अवगाह ।
जहाँ न पावत पार सुर, को बरनै कवि थाह ।।१०८।।

शोभा मय, गुणमय और तेज मय रामजी इनमें अथाह समुद्र हैं, जिनका पार देवता भी नहीं पा सकते । उनका वर्णन कर कोई कवि कैसे थाह पावेगा ? ।।१०८।।

भृकुटी कुटिल कपोल सुहाये ❀ शीश जटा शचि मुकुट बनाये
भाल विशाल तिलक जत सोहै ❀ ध्यान समय मुनि मानस मोहै

सुन्दर भृकुटि और कपोल तथा सिर पर जटासे पवित्र मुकुट बनाये हुए हैं ।। विशाल माथे पर तिलक सुशोभित है, जिसका ध्यान करते समय मुनियों का मन मोहित हो जाता है ।।

बलकल बसन तूण कटि बाँधे ❀ कर शर सुभग सरासन काँधे
वीरासन आसीन कृपाला ❀ नव पल्लव प्रसून की माला

बल्कल (केले की छाल) का वस्त्र, कमर में तरकस बाँधे, हाथ में सुन्दर बाण, कन्धे पर धनुष धरे, बीरासन से बैठे हुए कृपालु राम नवीन पत्ते और फूलों की माला पहने हुए थे ।।

चरन सरोज बरनि नहिं जाई ❀ मुनि मन मधुकर रहे लुभाई
प्रगट भई जेहि थल ते गंगा ❀ श्रुति पुरान कह कथा प्रसंग।

चरण-कमल की शोभा वर्णन नहीं हो सकती, जहाँ भौंरे की तरह मुनियोंके मन लुभाये रहते हैं। जिस स्थान से श्रीगंगाजी प्रकट हुई हैं, यह कथा वेद और पुराण कहते हैं ॥

नवहिं महेश विरंचि जाहि को ❁ लोचन गोचर होत काहि को
भव भंजन जन रंजन जोहित ❁ भव सागर तारन कहँ बोहित

जिनको शिव और ब्रह्मा नमस्कार करते हैं, वह भला किसको दृष्टिगोचर हो सकता है ? जो आवागमन का नाश कर भक्तों को सुख देनेवाले हैं, जो भवसागर से पार करने को नौका-रूप हैं ॥

दोहा—प्रनतपाल विरुदावली, जिन्ह चरनन्हि की बानि।
शोक हरन संशय दलन, सकल सुमंगल खानि ॥१०९॥

जिन चरणों का यह यश और स्वभाव है कि सर्वदा दीनों को पालते हैं, जो शोक-हरण तथा संशयों को नष्ट करनेवाले और सब सुमङ्गलों की खानि हैं ॥१०६॥

कर जोरे अंगद हनुमाना ❁ द्विविद मयन्द कुमुद बलवाना
जामवन्त कपिपति बल शीला ❁ ऋषभ सुषेन सहित नल नीला

उनको अंगद और हनुमान् तथा बलवान् द्विविद, मयन्द, कुमुद, जाम्बवन्त, सुग्रीव, ऋषभ और सुषेण सहित नल और नील हाथ जोड़े हैं ॥

महाबीर बानर सब राजहिं ❁ लषन विभीषन दुहुँ दिशि भ्राजहिं
मितभाषी प्रभु चरन सुसेवक ❁ चितवहिं रुख रघुनन्दन देवक

जहाँ महाबीर आदि सब बानर विराजमान हैं। लक्ष्मण और विभीषण दोनों तरफ बैठे हुए रामजी के रुख को देखते तथा थोड़ा बोलनेवाले और उत्तम सेवक रामजी को देख रहे हैं ॥

सभा मध्य सोहत रघुनन्दन ❁ कीन्हेसि सफल निरखि निज लोचन
करति प्रनाम माथ धरि धरनी ❁ तब सब कथा विभीषन बरनी

सभा के बीच में श्रीरामचन्द्रजी को सुशोभित देख सुलोचना ने अपने नेत्रों को सफल किया। उसने पृथ्वी पर शिर रखकर प्रणाम किया, तब विभीषण ने सारी कथा कही ॥

पुत्रबधू दशकन्धर वारी ❁ पति देवता सुलोचनि नारी
मेघनाद की नारि सुशीला ❁ यह गति तव विरोध प्रनशीला
करत प्रनाम प्रेम नहिं थोरे ❁ करुना बचन कहति कर जोरे

यह पतिव्रता सुलोचना रावण की पतोहू है, हे प्रणशाली रामजी ! यह मेघनाद की सुशीला स्त्री है, इसकी यह दशा आपसे विरोध करने के कारण हुई है। तब प्रेमपूर्वक प्रणाम करते हुए करुणा वचन से सुलोचना रामजी से बोली ॥

दोहा—मुये जानि पति भुज लिखित, सब समुझाई मोहिं।
महाराज रघुवंश मणि, याचन आई तोहिं ॥११०॥

हे रघुवंशमणि ! मेरे पति की मृतक भुजाने आपकी सब महिमा को लिखकर मुझे समझा दिया है। हे महाराज ! रघुकुल में मणि-स्वरूप ! मैं आपसे याचना करने आई हूँ ॥११०॥

अति अस्तुति कीन्हीं बहु भाँती ❀ हृदय शोच चिन्ता दिन राती
अस्तुति कीन्ह अहो प्रभु देवा ❀ कृपा अनुग्रह अद्भुत सेवा

फिर तो उसने अनेक प्रकार से बहुत स्तुति की कि दिन-रात मेरे हृदय में चिन्ता रहती थी ।। उसने स्तुति की कि हे नाथ ! हे देव ! आप कृपा और अनुग्रह करने योग्य और अद्भुत सेवा के योग्य हैं ।।

नित सुमिरौं मैं तुमहिं गुसाईं ❀ जेहि विधि मोहिं होहु सुखदाईं
दया करहु देवन के देवा ❀ रामनाम होइय एक खेवा

हे स्वामी ! मैं आपका नित्य स्मरण करती हूँ, जिसमें आप मुझे सुख देनेंवाले हों ।। हे देवों के देव ! दया करिये, आपका रामनाम एक ही खेवा में मुझे पार कर देगा ।।

दीन दयाल अनुग्रह कारी ❀ मोहिं पतित प्रभु लेहु उबारी
पतितहुँ महँ जे पतित कहाई ❀ ताहू गति दीन्हीं रघुराई

हे दीनदयाल ! हे अनुग्रहकारी ! प्रभो ! मुझ पतितको उबार लीजिए । हे रघुकुल के राजा ! जो पतितों में भी पतित कहे जाते हैं, उन्हें भी आपने गति दी है ।।

तुम त्रिभुवनपति सकलविश्रामी ❀ करौ दया प्रभु गरुड़ागामी
तुम अन्तरयामी भगवाना ❀ नहिं तव आदि मध्य अवसाना

हे त्रिभुवनपति ! आप सबको आराम देने वाले हैं ! हे गरुड़गामी ! हे प्रभो ! मुझ पर दया करिये।। आप ईश्वर, अन्तर्यामी हैं तथा आपका आदि, मध्य और अन्त नहीं है ।।

दोहा—अस प्रभु दीनबन्धु हरि, कारन रहित कृपाल ।
तुलसिदास शठ ताहि भजु, छाँड़ि कपट जञ्जाल ।।१११।।

तुलसीदासजी कहते हैं कि ऐसे प्रभु, दीनबन्धु श्रीरामचन्द्रजी बिना कारण के ही कृपा करनेवाले हैं । रे शठ ! तू कपट-जंजाल को छोड़कर उनका भजन कर ।।१११।।

दोहा—तुम्ह त्रिभुवन त्रैलोकके, अरु अपसर नहिं कोइ ।
काहि पुकारौं छाँड़ि तोहिं, नाम सत्य प्रभु होइ ।।११२।।

हे नाथ ! आप तीनों लोकके स्वामी हैं और दूसरा कोई नहीं । अतः आपको छोड़कर किसको पुकारूँ ? हे प्रभो ! आपका नाम सत्य होवे ।।११२।।

मन की जानन हार सुदेवा ❀ भव सागर तारहु इहि खेवा
करुना बचन सुनत रघुबीरा ❀ पुलक राम भे सिथिल शरीरा

हे सुदेव ! आप मनकी जानने वाले हैं, इसी खेवे में भवसागर से मुझे पार करिये ।। इस करुणा वचनको सुनकर रघुकुलके वीर पुलकित हो गए तथा वे राम शरीर से शिथिल हो गए ।।

देहुँ जियाय तोर पति आजू ❀ भोगहु लंक कल्पशत राजू
छाँड़ि शोच अब मन हर्षाहू ❀ तुरत भवन अपने फिरि जाहू

रामजी बोले-तुम्हारे पतिको मैं अभी जिला देता हूँ, तुम सौ कल्प तक लंका का राज्य भोग करो ।। तुम सोच छोड़कर प्रसन्न हो तुरन्त अपने घर लौट जाओ ।।

सुनि अस सत्यसिंधु की बानी ❁ मन महँ बानर चमू डेरानी
कहि न सकहिं कछु प्रभु मुख देखी ❁ कहा करब करतार विशेषी

सत्यसिंधु श्रीरामजी की ऐसी वाणी सुनकर बानरी सेना मन में डर गई ।। कुछ कह नहीं सकते थे, प्रभु के मुख को देखते और सोचते हैं कि विशेषत: ब्रह्मा अब क्या करेंगे ।।

सीय सोच कर फल नहिं होइहि ❁ जो करि कृपा राम यह जोइहि
सब देवन कर सोच न जाई ❁ जो अस कृपा करैं रघुराई

यदि रामजी इस पर ऐसी कृपा कर देंगें तो सीताकी चिन्ताका भी फल न होगा और देवताओं का भी सोच नहीं दूर होगा ।।

दोहा-राज विभीषण लंकक्कर, केहि विधि करिहहिं जाइ ।
समुझि बैर घननाद जब, गहहि शरासन धाइ ।।११३।।

विभीषण भी जाकर लंका का किस तरह राज्य करेंगे, जब मेघनाद शत्रुता को समझकर दौड़कर धनुष-बाणको पकड़ेगा ।।११३।।

मुख रुख लखि कपीश सब जाना ❁ प्रनतपाल भगवान समाना
देखि बहुत रघुपति कर छोहू ❁ बिनय करत दशकंठ पतोहू

भगवान् के मुख की भाव-भंगिमा (रुख) को देखकर सब बन्दरों ने जाना कि ये दीन जनों के पालन करने वाले भगवान् समान भाव हैं (इस प्रकार) रघुनाथजी के अधिक प्रेमको देखकर दशानन (रावण) की पतोहू (पुत्र-बधू सुलोचना) विनती करने लगी ।।

आपु उदार देव सब लायक ❁ करुनामय देखेउँ रघुनायक
हमहुँ विचार कीन्ह मन माहीं ❁ जीवन ते अस मरन सराहीं

हे श्रीरामचन्द्रजी ! आप सबके योग्य उदार देवता हैं, मैंने आप करुणा मय का दर्शन किया ।। मैंने भी अपने मनमें विचार किया कि इस प्रकार के जीवन से तो मृत्यु की ही प्रशंसा है ।।

भुजबल जीति लोक वश कीन्हे ❁ चौदह भुवन भोग करि लीन्हे
रण तीरथ याचक भल चीन्हा ❁ प्रान सुधन लक्ष्मन कहँ दीन्हा

क्योंकि जिसने अपनी भुजाओं के बल से चौदहों लोकों की विजय कर उनका भोग भी कर लिया ।। और जिसने अपने प्राण जैसे उत्तम धन को श्रीलक्ष्मणजी के हाथ में दे दिया ।।

अब न उचित पति लै उपहारा ❁ धन्य धन्य भा दर्श तुम्हारा
हमहूँ जाइ मरब सत साधी ❁ मिलब तुमहिं जस मिलत समाधी

अब यह उचित न होगा कि मेरा पति कुछ उपहार लेवे। धन्य हैं ! धन्य हैं ! आपका दर्शन हुआ। मैं भी जाकर सत्यकी साधना कर मरूँगी और जैसे कोई समाधिस्थ तुमसे मिलता है वैसे ही मिलूँगी ।

दोहा-निर्मल गति अवसर भयउ, सुनिय सत्य रघुबीर ।
तुमहिं मिलत नहिं होहिं भव, यथा सिन्धुगत नीर ।।११४।।

हे रामचन्द्रजी ! सुनिये, यह सत्य है कि वैसे ही पवित्र गति का अवसर उपस्थित है । क्योंकि आपके मिलनेसे आवागमन नहीं होता, जैसे समुद्रमें जानेसे जल की गति हो जाती है ।। ११४।।

मन की जाननहार सदेवा ❋ भवसागर तारहु यहि खेवा
लीन्हेउ राम कपीश बोलाई ❋ मेघनाद सिर दीन्ह मँगाई

हे अच्छे देवता श्रीरामचन्द्रजी ! आप मन की बात को जानते हैं । अतः अब इसी खेवेमें मुझे भी भव-सागरसे पार कीजिये ।। तब सुलोचना की इस बात को सुनकर श्रीरामचन्द्रजीने जामवन्त और सुग्रीव को बुला कर मेघनाद का सिर मँगवा दिया ।।

पाइ कृतारथ मानेउ आपू ❋ मिटा विरह सम्भव परितापू
अंचल पोंछति मुख की धूरी ❋ कहि मम प्रान सजीवन मूरी

उसे पाकर सुलोचनाने अपने को कृतार्थ माना, उसका वियोग-जनित शोक नष्ट हो गया ।। तब "हा ! मेरे प्राणोंके सजीवन मूल" ऐसा कहती हुई अपने अंचलसे पतिके मुखकी धूलिको पोंछने लगी।

देखि करत संशय सुग्रीवा ❋ भुजमहि लिखा सो मोहिं क सीवा
हँसै बदन तौ तिय यह साँची ❋ नहिं तौ निशिचर माया काँची

उसे देख सुग्रीव सन्देह करने लगे कि खण्डित भुजाने पृथ्वी पर कैसे लिखा ? यह विश्वास की सीमासे परे है ।। यदि मुख हँसे तो इस स्त्री की बात सच्ची है अन्यथा यह राक्षसों की कच्ची माया है ।।

कहँ यह ज्ञान मृतक भुज गावै ❋ जो मुनिवर साधन नहिं पावै
प्रभु अस कहेउ हँसब यह शीशा ❋ किये कुतर्क न उचित कपीशा

भला, जिस ज्ञानको श्रेष्ठ-मुनि साधनोंसे भी नहीं पाते उसे मृतक भुजा कहाँ गा सकती है ।। प्रभुने कहा—यह सिर तो हँस देगा, परन्तु हे सुग्रीव ! इसमें कुतर्क करना उचित नहीं है ।।

दोहा—सिर सों कहति सुलोचना, हँसहु बेगि मम नाथ ।
नातरु सत्य न मानि है, लिखा जो तुम्हरे हाथ ।।११५।।

इसपर सुलोचनाने सिरसे कहा—हे मेरे नाथ ! शीघ्र ही हँसो, नहीं तो जो आपके हाथ का लिखा है उसे ये विश्वास नहीं मानेंगे ।।११५।।

क्षणक बिलम्ब कीन्ह नहिं बोला ❋ मृतक बदन मूँदित नहिं खोला
पुनिपुनि कहति सो नागकुमारी ❋ श्रमित भयउ रण महँ करि मारी

तब वह मृतक मुँह उस क्षण नहीं खुला और मुर्दा ही बना रहा ।। सुलोचना बार-बार कहती कि, क्या युद्धमें भयानक संग्राम अर्थात् मार करके थक गये हो जो नहीं बोलते हो ? ।।

लगेउ लखन शर क्षोभ बढ़ावत ❋ प्रभु समीप कत मोहिं लजावत
जो मन बचन कर्म यह देही ❋ पति देवता न आन सनेही

(क्या) लक्ष्मणके लगे हुए बाण संताप बढ़ाते हैं ? परन्तु भगवान्के समीप मुझे लज्जित क्यों कर रहे हो ? । यदि मेरा मन, वचन और कर्मसे इस शरीरका पति ही देवता हों और अन्य स्नेही न हो ।।

तौ प्रभु सभा बीच सिर बोलै ❀ रहहि छाइ जग सुयश अमोलै
जौं जानति तव यह गति साईं ❀ बोलि पठावति पितहिं सहाईं

तो हे स्वामी! यदि सभाके मध्यमें शिर बोल दे तो संसारमें कीर्ति रह जायेगी। हे स्वामी! यदि मैं जानती कि आपकी ऐसी दशा होगी तो सहायताके लिये पिताको बुलवा लेती ॥

सुनि तिय बचन हँसेउ तब शीशा ❀ चौंकि उठे सब भाल कपीशा
हँसेउ ठठाई बदन सब देखत ❀ विस्मय भयउ सकल जिन्ह पेखत

तब स्त्रीके ये वाक्य सुनते ही वह सिर हँसा, जिसे सुनकर सब रीक्ष-बन्दर चौंक उठे। सब देखते हैं कि वह मुँह ठठाकर हँस रहा है, यह जिसने देखा सभीको आश्चर्य हुआ ॥

कोटि मेघसम सुनि नहिं जाई ❀ रहेउ सो बदन बहुरि अरगाई
सकुचि कपीशहिं तोषेउ नारी ❀ बड़ आश्चर्य भयउ बनचारी

करोड़ों मेघके समान उसकी गर्जन सुनी नहीं जाती, फिर चुप हो गया ॥ सुग्रीव संकुचित हो गये, सुलोचना को संतोष देने लगे और बनचारियों को बड़ा आश्चर्य हुआ ॥

कह सुग्रीव चरन सिर नाई ❀ कारन कवन हँसा सिर साईं
यह सुनि विहँसि कहा रघुराई ❀ सुनु सुग्रीव कुतर्क बिहाई

तब सुग्रीवने श्रीरामचन्द्रजीके चरणोंमें शिर नवा कर कहा—हे स्वामी! सिरके हँसने का क्या कारण है? यह सुनकर श्रीरामचन्द्रजीने हँसकर कहा—सुग्रीव! तुम कुतर्क त्याग कर सुनो ॥

पतिव्रत तिय जिनके गृह माहीं ❀ यहि बड़ि बात तिनहिं कछु नाहीं
पुनि तव संशय भयउ कपीशा ❀ तेहि कारणहिं हँसा यह सीसा

जिनके घर पतिव्रता स्त्री होती है, उनके यहां यह कुछ बड़े महत्त्व की बात नहीं है॥ हे बानरराज! तुम्हें फिर शंका हुई, जिसके कारण से यह सिर हँसा है ॥

दोहा—सीस पाइ प्रभु चरण गहि, बहुबिधि बिनय सुनाय।
आजु के दिन रण परिहरहु, मम हित कोशलराय ॥११६॥

सिरको पाकर सुलोचनाने श्रीरामचन्द्रजी का चरण पकड़ लिया और बहुत प्रकारसे बिनती सुनाती हुई बोली। हे अवध-नरेश! मेरे लिए आजके दिन आप युद्ध को त्याग दीजिये ॥११६॥

बहुरि विभीषण पदहिं नमित सो ❀ रघुबरगुण गण हृदय भणित सो
तुम पितु सम दसकन्धर भाई ❀ यहि कुल की तोहिं लाज बड़ाई

फिर वह विभीषणके चरणोंको नमस्कारकर श्रीरामजीको स्मरण कर कहने लगी कि ॥ हे रावणके भाई! तुम मेरे पिताके समान हो, इस कुल की लज्जा और प्रशंसा तुम्हें है।

मुनि पुलस्त्य परिवार क दीपक ❀ पायउ फल रघुबीर समीपक
प्रथम मोहवश अनहित मानेउँ ❀ ज्ञान भये तव गुन पहिचानेउँ

तुम पुलस्त्य मुनिके परिवारके दीपक हो, इसीसे रामकी समीपता पाये हो ॥ पहले तुमसे मोहके वश मैंने अनहित माना, परन्तु अब ज्ञान होने पर तुम्हारे गुण को पहचान सकी हूँ ॥

युग युग करब अकंटक राजू ❀ सहित सुकीरति सुकृत समाजू
सुमिरत तुमहिं सुयश जन पैहैं ❀ रघुबर चरित संग करि गैहैं

अब तुम सुन्दर कीर्ति और पुण्यशाली समाज सहित युग-युग तक निष्कंटक राज्य करो ॥ तुम्हारे स्मरणसे लोग सुन्दर यशको प्राप्त करेंगे और श्रीरामचन्द्रजीके चरित्रोंके साथ गान करेंगे।

सुनत विभीषण करुणा भारी ❀ प्रगट न करत समय अनुहारी
काल कर्म गति कह समुझाई ❀ चली तुरत प्रभु आयसु पाई

इस महान् करुणा को सुनकर विभीषण दुःखी तो हुए किन्तु समयको देखते हुए प्रगट न कर सके और उसे कालके कर्मकी गतिको समझाने लगे, उसे सुन सुलोचना तुरन्त ही वहांसे चलपड़ी ॥

दोहा—बाहर करि कपि कटक ते, फिरे विभीषण आपु।
बिसरेउ कुशकन्धर बयर, हृदय अधिक सन्तापु ॥११७॥

विभीषण पहुँचाने चले बानरी सेनासे बाहर कर स्वयं लौट पड़े। अब उन्हें रावण की शत्रुता भूल गई और हृदयमें अधिक शोक छा गया ॥११७॥

सिर चढ़ाइ पालकी चढ़ी सो ❀ रघुपति कृपा प्रभाव बढ़ी सो
हृदय राखि मूरति घनश्यामहिं ❀ रसना रटति निरन्तर नामहिं

वह उस सिरको पालकीमें चढ़ाकर स्वयं भी चढ़ गई और रामजीकी कृपासे विशेष प्रभाव आ गया। वह श्रीरामचन्द्रजीकी मूर्तिको हृदयमें धारणकर जिह्वासे उनके नामको रटती हुई चली

सरित सिंधु संगम जहँ पावन ❀ यह सुधि पाय गयउ तहँ रावन
संग मँदोदरि सब रनिवासू ❀ मनहुँ शोक रवि कीन्ह प्रकासू

जिस पवित्र स्थान पर नदी और समुद्रका संगम था, जब सुलोचना वहाँ पर गई, तब सब रानियोंको साथ लेकर वहाँ रावण आया, उस समय मानो शोकके सूर्यने प्रकाश किया हो ॥

पाइ रजाय सुसेवक धाये ❀ चन्दन अगर भार बहु लाये
रची दारुमय चिता बनाई ❀ जनु सुरलोक निसेनी लाई

तब रावण की आज्ञा पाते ही सेवक लोग दौड़े और चन्दन तथा अगरके बहुतसे बोझ ले आये। चन्दन काष्ठकी चिता रचकर बनाई गई, मानों स्वर्गलोक तक सीढ़ी लगाई हो ॥

करि प्रनाम सब जन परितोषी ❀ धीरज धरेसि तासु मति तोषी
सिर भुज धरि बैठी करि आसन ❀ भइ जनु योग सिद्धिको बासन

सुलोचनाने सबको प्रणाम किया और सब स्त्रियोंने धैर्य बँधाया ॥ फिर पति की भुजा और सिरको गोदीमें लेकर आसन मारकर बैठ गई, मानों योग-सिद्धिका पात्र बन गई ॥

दोहा—सत की प्रगटी अनल तब, लपट गगन लगि जाय।
लखी न काहू जात सो, सुरपुर पहुँची धाय ॥११८॥

उसी समय सतीत्व की अग्नि प्रकट हुई, जिसकी लपट आकाश तक जा पहुँची। उसे जाते समय किसीने देखा नहीं, वह दौड़ कर सुरपुर अर्थात् बैकुण्ठ पहुँच गई ॥११८॥

सुत बध सुनेउ दशानन जबहीं ❀ संभ्रम मुरुछि परा महि तबहीं
मन्दोदरी रुदन करि भारी ❀ उर ताड़ित बहु भाँति पुकारी
नगर लोग सब व्याकुल सोचा ❀ सकल कहहिं दशकन्धर पोचा

रावण पुत्र-बध का समाचार सुनते ही पृथ्वी पर गिर पड़ा। मन्दोदरी बहुत रुदन करती और छाती पीटती है। नगरके सब लोग व्याकुल होकर सोचने और कहने लगे कि रावण नीच है ॥

दोहा—तब दशकन्ध अनेक विधि, समुझाई सब नारि।
नस्वररूप प्रपंच सब, देखहु हृदय विचारि ॥११९॥

तब रावणने अनेकों तरहसे सब स्त्रियों को समझाया और कहा कि यदि हृदय में विचार कर देखो तो यह सारा स्वरूप प्रपंचमय और नाशवान् है ॥ ११९ ॥

तिनहिं ज्ञान उपदेशेउ रावन ❀ आपुन मन्द कथा अति पावन
पर उपदेश कुशल बहुतेरे ❀ जे आचरहिं ते नर न घनेरे

उन्हें तो रावणने इस प्रकार उपदेश दिया किन्तु अपने लिए (निन्दित कर्म) को ही रक्खा। दूसरों को उपदेश देनेवाले बहुत हैं किन्तु जो स्वयं आचारण करे ऐसे मनुष्य बहुत नहीं हैं ॥

तासु क्रिया करि निसिचर नाहा ❀ भयउ सोच वश अतिउरदाहा
सचिव आइ सब लगे बुझावन ❀ बादि विषाद करिय जनि रावन

उसकी क्रिया करके रावण शोकके वश हो गया और हृदयमें बड़ी जलन होने लगी ॥ सब मन्त्री आकर समझाने लगें कि हे रावण ! व्यर्थके लिए दुःख न कीजिये ॥

सुत बित नारि विविध सुख कैसे ❀ उपजहिं घटा जाहिं उड़ि जैसे
तड़ित दमक देखिय घनमाहीं ❀ रहइ न थिर तहँ बहुरि छिपाहीं

पुत्र, धन, स्त्री अनेक प्रकारके सुख कैसे हैं, जैसे बादलों की घटा उठती है और फिर उड़ जाती है ॥ जैसे बिजली की चमक बादलोंमें दिखाई देती है और फिर वहीं छिप जाती है ॥

अस जिय जानि सुनियदशभाला ❀ बचहिं न कोउ जग आये काला
अब प्रभु बचन बिचारहु सोई ❀ रिपुकर नाश कवन बिधि होई
बचन सुनत तेहि कछु सुख माना ❀ काल विवश जिमि तीरथ ज्ञाना

हे रावण ! ऐसा ही हृदयमें जानकर सुनिये कि संसारमें काल आने पर कोई नहीं बचता ॥ हे स्वामी ! अब वही उपाय कीजिये कि शत्रु का नाश जिस उपायसे हो। यह वचन सुनते ही उसने थोड़ा सुख ऐसे ही माना जैसे कालके विवश होने पर तीर्थ का ज्ञान होता है ॥

❀ अहिरावण-बधकी कथा ❀

दोहा—लागेउ करन बिचार पुनि, बहु प्रकार दशशीश।
समुझि हृदय अहिरावणहिं, आयउ जहाँ गिरीश ॥१२०॥

फिर रावण अनेक प्रकार से विचार करने लगा। वह अपने हृदयमें अहिरावण को समझ कर वहाँ आया, जहाँ महादेवजी थे ॥ १२० ॥

दण्ड चारि तब तहँ निशि बीती ❀ सन्ध्या बन्दन कीन्ह सप्रीती
लागेउ करन ध्यान दशशीशा ❀ बहुरि हर्षि जोरेउ कर बीसा

वहाँ चार घड़ी रात व्यतीत हुई थी, जहाँ उसने प्रेमसे संध्या-वन्दन किया ॥ रावण ध्यान करने लगा, फिर हर्षित होकर बीसों हाथ जोड़ा ॥

शिव सेवक मन क्रम अनुरागी ❀ सुनु खगेश तेहि ते बड़ भागी
मन्त्राकर्षण जप दश भाला ❀ अहिरावण चित डोल पताला

हे गरुड़! सुनो, रावण श्रीमहादेवजी का दास और मन-कर्मसे अनुरागी था ॥ जिससे वह बड़ा भाग्यशाली था। रावणने आकर्षण मन्त्र जपा तो पातालमें अहिरावणका चित्त चलायमान हुआ ॥

लागेउ करन सो मन अनुमाना ❀ केहि कारण दशमुख अकुलाना
निशिचर नाहु भुवन वश जाके ❀ जीतन कहँ न वीर कोउ ताके

वह मनमें अनुमान करने लगा कि क्या कारण है जो रावण अकुलाया है। जो राक्षसों का राजा तीनों लोक जिसके वशमें है तथा जिसको जीतनेवाला कोई योद्धा नहीं है ॥

मन क्रम बचन आन नहिं सेवी ❀ धरेउ ध्यान उर कामद देवी
चलेउ बहुरि आयउ सो तहँवाँ ❀ शिव मंडप दशमुख रह जहँवा
निशिचरपतिकहँतेहि शिरनायउ❀ करगहि निज आसन बैठायउ

जो मन, कर्म, वचन से दुर्गाजी को छोड़कर अन्य का सेवक नहीं, ऐसे अहिरावणने कामदा देवी का ध्यान किया। वह चल कर वहाँ आया, जहाँ शिव-मण्डपमें रावण था उसने रावण को सिर झुकाया, तो रावणने उसे अपने आसन पर बैठाया ॥

दोहा—अहिरावण तब रावणहिं, पूछा कुशल सप्रीति।
प्रथम कही तेहि सो कथा, भगिनी कीन्ह अनीति ॥१२१॥

तब अहिरावणने रावणसे प्रेम सहित कुशल पूछा तो पहले उसने वह कथा कही जो बहिनने अर्थात् सूर्पणखाने अनीति की थी ॥१२१॥

बध खरदूषण जिमि सुधि पाई ❀ पुनि मारीचहि कथा सुनाई
कहेसि बहुरि सीताकर हरना ❀ पवनतनय बल लंका दहना

फिर जैसे खरदूषणके मारने की खबर मिली थी वह कही और फिर मारीच की कथा सुनाई। फिर सीता का हरण, हनुमान् का बल और लंका-दहन को कहा ॥

सेतुबाँधि जिमि प्रभु चलि आयउ ❀ बालि तनय संवाद सुनायउ
श्रवनि अकम्पन अरु अतिकाया ❀ परे समर महँ सुनु अहिराया

जिस प्रकार सेतु बांधकर प्रभु चले आये और अङ्गद का संवाद सुनाया। हे नागलोक के राजा अहिरावण ! सुनो, अकम्पन, अतिकाय, आदि योद्धा समरमें मारे गये ।।

तात कुशल अब सबइ सिरानी * कटक निशाचर सकल नशानी
कुम्भकर्ण घननादहु मारे * राम लषन दुइ मनुज विचारे

हे तात ! अब संपूर्ण कुशल तो समाप्त हो गया, राक्षसों की सारी सेना नाश को प्राप्त हुई। उन बेचारे दो मनुष्य रामचन्द्र और लक्ष्मणने कुम्भकर्ण और मेघनाद को भी मार डाला ।।

आनेहुँ बोलि तोहिं निज पासा * कहु सो जतन होइ रिपु नाशा
सुनत बचन कह केतिक बाता * हरि लै जैहौं दोनों भ्राता

इसलिए अब तुम्हें अपने पास बुलाया हूँ कि, तुम वह उपाय करो, जिससे शत्रु का नाश हो । अहिरावणने कहा, यह कितनी बात है, मैं दोनों भाइयों को हर ले जाऊँगा ।।

लै पताल देविहि बलि दैहौं * यश पूरण निशिचर कुल लैहौं
लै जाऊँ जानेउ तुम तबहीं * रवि सम तेज होय निशि जबहीं

और पातालमें ले जाकर देवी को बलि दूंगा जिससे राक्षसों को यश प्राप्त होगा । जब मैं ले जाऊँगा तब तुम जान जाओगे, उस समय रात्रिमें सूर्यके समान प्रकाश हो जायेगा ।।

दोहा—कहि अस बचन प्रबोध करि, शीश नाइ बल भाखि ।
आयउ रघुपति कटक महँ, निज देविहिं उर राखि ।।१२२।।

ऐसे वचन कहकर उसे समझाया और शिर नवाकर बल कहकर अपनी देवी को हृदयमें धारण करके श्रीरामचन्द्रजी की सेनामें चला आया ।।१२२।।

सूझ न पर निशिचर अँधियारी * मर्कट भट जागहिं तहँ भारी
कहहिं जयति जय जयति कृपाला * अतिहि अगम गम नाहिन काला

रात्रिमें कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा था, जो विशाल योद्धा बन्दर थे वहाँ जाग रहे थे । वे कृपालु रामचन्द्रजी की जय-जयकार बोलते थे, जिससे वहाँ काल भी नहीं पहुँच सकता था ।।

तहँ मारुत सुत रचा उपाई * निज लंगूरकर कोट बनाई
सो शोभा कछु बरणि न जाई * जनु भुजंगपति रह तहँ छाई

वहाँ हनुमान्‌जीने एक उपाय रचा, अपनी पूँछ का परकोट बना रखा था ।। वह शोभा कुछ बखानी नहीं जाती, ऐसा दिखाई पड़ता था कि मानों वहाँ शेष नाग छाये हैं ।।

देखिय उन्नत शैल समाना * द्वार विराजत मुख हनुमाना
देखि हृदय अहिरावण हारा * जिमि रवि उदय न तिमिर पसारा

वह ऊँचे पर्वतके समान दिखाई देता था, उसके मुख्य द्वार पर हनुमान् बैठे हुए थे ।। उन्हें देख अहिरावण ऐसे हार गया, जैसे सूर्य के उदय होनेसे अन्धकार हार जाता है ।।

एकौ युक्ति न मन ठहरानी * कपट वेष तब कीन्ह भवानी
वेष विभीषण कर अनहारी * पवन तनय पहँ गा छलकारी

अहिरावणके मनमें कोई युक्ति ठीक न हुई, तब उसने कपट वेष धारण किया। ठीक विभीषणके समान वेष बनाकर वह हनुमान्‌के पास गया॥

दोहा–सहज प्रताप पवन सुत, पुनि सुरपति पति दास।
तिन्हहि निदरि चलि राम पहँ, मूढ़ हृदय नाहिं त्रास॥१२३॥

हनुमान् तो स्वाभाविक ही प्रतापी हैं, उसपर भी इन्द्रपति रामजीके दास हैं। वह मूर्ख (अहिरावण) उनका तिरस्कारकर रामजीके पास चला जिसके हृदयमें कुछ डर नहीं हुआ॥१२३॥

मरम न जानेउ कछु सुत पवना ❁ वेष विभीषण खल धरि गवना
ठाढ़ होउ बोलेउ सुनि भ्राता ❁ चलेउ जहाँ कृपालु जनत्राता

हनुमान्‌जीने उस भेदको कुछ भी नहीं जाना, वह दुष्ट विभीषणका वेष धारणकर गया। हनुमान्‌जीने खड़ा होनेके लिए कहा तो वह रामजीके पास चला गया॥

मैं रघुपतिसन आयसु पाई ❁ सन्ध्या करन गयउँ सुनु भाई
तेहित तुरत चलेउँ प्रभुपाहीं ❁ भा बिलम्ब जनि राम रिसाहीं

हे भाई सुनो, मैं रामजीसे आज्ञा लेकर सन्ध्या करने गया था॥ देर हो गई है, इससे शीघ्रता पूर्वक जा रहा हूँ, जिसमें रामजी क्रोध न करें॥

सत्य बचन कपि निज मन माना ❁ सुनु खगेश भावी बलवाना
कपट चतूर गति जानि न जाई ❁ पर मन हरै हरै धन भाई

हे गरुड़! भावी बलवान् होती है, इससे हनुमान्‌जीने इसकी बातको सत्य समझ लिया॥ चतुर कपटीकी गति जानी नहीं जाती, वह दूसरेके मनको हर करें हे भाई! उसके धनको भी हर लेते हैं॥

आयसु पाइ गयउ सो तहवाँ ❁ फणिपति प्रभु दोनों रह जहवाँ
कपिपति जामवन्त नल नीला ❁ बालि तनय सुषेण बलशीला

इसप्रकार वह हनुमान्‌जीकी आज्ञ पाकर वहाँ गया, जहाँ लक्ष्मण और रामजी दोनों विराजमान थे॥ बानरोंके राजा सुग्रीव, जामवन्त, नल, नील, बालि-पुत्र बलवान् अंगद और सुषेण॥

दोहा–द्विविद मयंद कपीशगण, गय गवाक्ष कपि वीर।
सहित विभीषण अपर भट, सोये सब रणधीर॥१२४॥

वहाँ द्विविद, मयंद, बानरोंके सेनापति गये, गवाक्ष आदि वीर योद्धा विभीषणके सहित सभी रणधीर सोये हुए थे॥१२४॥

तिन्हिं मध्य रावण शशिराहू ❁ एक संग सोवत फणिनाहू
दक्षिण दिशि सोवत रघुनाथा ❁ अनुज वामदिशि तेहि पर हाथा

उन सबके बीचमें रावणरूपी चन्द्रमाके लिए राहुरूपी राम-लक्ष्मण एक साथ सो रहे थे॥ रघुनाथजीकी बाईं ओर लक्ष्मणजीके ऊपर रामजीका हाथ था॥

प्रभुकर उर पर राजत कैसे ❁ जातरूप पंकज फणि जैसे
कपि समूह जनु सागर क्षीरा ❁ तहँ सोये मानहुँ दोउ बीरा

लक्ष्मणजीके हृदय पर रामजी का हाथ ऐसे शोभायमान हो रहा था, जैसे स्वर्ण-कमल पर सर्प शोभित हो। बानर-समूह मानों क्षीरसागरके समान थे, मानों वहाँ ये दोनों वीर सो रहे थे ॥

सुगम बाण धनु धरे बनाई ❀ लक्ष्मण सहित नियर रघुराई
अहिरावण मन कीन्ह प्रणामा ❀ दीख राम सुन्दर घनश्यामा

रामजी और लक्ष्मण के समीप सुन्दर धनुष-बाण सजावट के साथ रखा था ॥ अहि-रावण ने घनश्याम रामजी का सुन्दर स्वरूप देखकर मनमें ही प्रणाम किया ॥

ब्रह्मादिक जेहि ध्यान न पावहिं ❀ मुनि महेश पूजा मन लावहिं
करहिं विविध जप योग विरागी ❀ रटहिं निरन्तर निशिदिन जागी

ब्रह्मादिक जिन्हें ध्यान में नहीं पाते, मुनि तथा शंकरजी जिनकी पूजा में मन लगाये रहते हैं ॥ विरागी लोग रात-दिन जागकर अनेक प्रकार जप-योगकर निरन्तर रटते हैं ॥

सो प्रभु तेहि देखा भरि लोचन ❀ कृपासिंधु सेवक भवमोचन
बहुरि हृदय तेहि कीन्ह बिचारा ❀ करैं कार्य रावण अनुसारा

उन्हीं कृपासिन्धु, सेवकों के भवमोचन प्रभुको अहिरावण ने नेत्र भरकर देखा ॥ फिर उसने हृदय में विचार किया कि रावण के अनुसार कार्य करूँ ॥

दोहा—मोहन ते मोहे सबहिं, मन्त्रन्ह ते मुख मूँदि।
भयउ अदृश्य उठाय कर, प्रभुहिं चलेउ लै कूदि ॥१२५॥

तब उसने मोहन मन्त्रसे सबको मोहितकर मन्त्रो से मुख बन्द कर दिया ॥ फिर राम और लक्ष्मण को उठा लिया और कूदकर अदृश्य हो गया ॥१२५॥

यहि विधि गयो प्रभुहिं लै सोई ❀ नभ मारग प्रकाश अति होई
सो प्रकाश जब रावण देखी ❀ किय प्रमाण तेहि बचन विशेषी

इस प्रकार वह रामजी को उठा ले गया जिससे आकाश मार्ग में बड़ा प्रकाश हो गया ॥ उस प्रकाशको जब रावण ने देखा तो उसके वचन की विशेषता को समझा ॥

मन महँ हर्ष करै अति भारी ❀ अहिरावण लै गा असुरारी
लै निज लोक गयो क्षणमाहीं ❀ भयो शोर तब कपिदल माहीं

रावण मनमें अत्यन्त प्रसन्न हुआ कि अहिरावण तो राक्षसों के शत्रु को उठा ले गया ॥ अहिरावण क्षणभरमें उन्हें अपने लोक को ले गया, तब बानर दल में बड़ा शोर हुआ ॥

जागे बानर श्रीहत भारी ❀ देखिय जिमि सरिता बिन बारी
पुनि देखिय जिमि निशि बिनु इन्दू ❀ भे बानर जिमि उडु बिनु चंदू

बानर लोग जागे और श्रीहत हो गये, जैसे जल के बिना नदी दिखाई पड़ती है ॥ पुनः ऐसे जान पड़े जैसे दिन में चन्द्रमा और तारागण रहित दिवा चन्द्र उदास दिखाई पड़ता है ॥

रबि बिनु दिवस जीव बिनु देहा ❀ जिमि देखिय दीपक बिनु गेहा
एकहि एक लगे तब पूछन ❀ कहाँ गये त्रैलोक्य विभूषन

जैसे बिना सूर्य के दिन, प्राणके बिना शरीर दिखलाई पड़ता है, और जैसे बिना दीपक के घर दिखाई पड़े वैसे ही वे सब बन्दर दिखलाई पड़ने लगे ॥ तब सब एक दूसरे से पूछते हैं कि त्रैलोक्यभूषण रामजी कहाँ गये ? ॥

दोहा–शोधेउ सब मिलि कटक तिन्ह, नहिं पाये दोउ बीर ।
भे व्याकुल सब भालु कपि, जिमि जलचर बिनु नीर ॥१२६॥

सबों ने मिलकर सारी सेना खोज डाली, पर राम-लक्ष्मण दोनों वीरों को कहीं न पाये । सभी भालु और बन्दर ऐसे व्याकुल हो गये जैसे बिना जल के जलचर हों ॥१२६॥

सकल कहहिं बिधि का यह कीन्हा ❁ रघुपति बिना प्राण यह लीन्हा
शोक ग्रसित धरि सकै न धीरा ❁ कहाँ राम लक्ष्मण दोउ बीरा

सभी कहते हैं कि विधाताने यह क्या किया, यह तो बिना रामजीके प्राण जाना चाहता है । शोकसे ग्रसित, धैर्य नहीं रख सकते थे, राम और लक्ष्मण कहाँ गये, सब पुकारने लगे ॥

करुणा करै कपीश अपारा ❁ बनी बात बिधि कहा बिगारा
कटक निशाचर सकल सँहारी ❁ रहा एक रिपु रावण भारी

सुग्रीव बड़े दुःखसे कहने लगे कि विधाता ने बनी बात क्यों बिगाड़ दी ? ॥ सभी राक्षस-सेना तो मारी जा चुकी थी, केवल एक बड़ा शत्रु रावण ही रह गया था ॥

सोउ न रहत रामशर लागे ❁ भयउ न हमसन कोउ अभागे
कबहुँ जो दससिर अरि रण जीतहिं ❁ उत्तर कवन देब हम सीतहिं

सो भी, रामजी का बाण लगने से न रह जाता, हमारे समान कोई भी अभागा नहीं हुआ ॥ यदि हमलोग कदाचित् युद्धमें रावण को जीत भी लें तो हम सीताजी को क्या उत्तर देंगे ? ॥

अस कहि विकल मूर्छि महि परे ❁ लागे वज्र शैल जिमि गिरे
कहि न विभीषण की गति जाई ❁ फिरै वत्स बिनु धेनु लवाई

ऐसा जानकर सुग्रीव व्याकुल होकर पृथ्वी पर गिर पड़े, मानों वज्र के लगने से पर्वत गिर जाय ॥ विभीषणकी गति कही नहीं जाती, मानों पेन्हाई हुई गाय बछड़े के बिना फिरती हो ॥

दोहा–सहित पवनसुत ऋक्षपति, दुख मन भा बहु भाँति ।
खगपति सूझ न कतहुँ कछु, तम अपार तेहि राति ॥१२७॥

हनुमान्‌जी तथा जामवन्त के मनमें बड़ा भारी दुःख हुआ । काकभुशुण्डीजी गरुड़जी से कहते हैं कि हे गरुड़ ! उस रात्रिमें अपार अन्धकार था कि कहीं पर कुछ सूझ नहीं पड़ता था ॥१२७॥

पवनतनय पुनि कह सब पाहीं ❁ विस्मय एक होत मन माहीं
कोउ इक आव विभीषण भेषा ❁ प्रभु के निकट जात हम देखा

फिर हनुमान्‌जी ने सबसे कहा–मेरे मन में आश्चर्य होता है, कोई एक विभीषण के वेषमें आया था । मैंने उसे स्वामी के पास जाते हुए देखा था ।

पूछत बचन कहत अति नीका ❀ कपट न जाना निशिचर जीका
बचन सुनत बोलेउ लंकेशा ❀ अहिरावण लेइगा अवधेशा

उसने पूछने पर बहुत अच्छे वचन कहे पर मैं राक्षसके मनके कपटको न जान सका ।। इस बातको सुनते ही विभीषणने कहा, अवधनाथको अहिरावण पातालमें ले गया है ।।

पन्नग लोक बसत है जोई ❀ मम तनु वेश अपर नहिं कोई
महाबली जानहि बहु माया ❀ निश्चय तेहि दशशीश पठाया

वह नाग लोकमें रहता है, मेरे शरीरके भेषमें दूसरा नहीं हो सकता । वह महाबली अनेक मायाको जानता है; निश्चय ही उसे रावणने भेजा होगा ।

कहेउ भालुपति सुनु हनुमाना ❀ तव बल तात सकल जग जाना
वेगि सो जतन विचारहु ताता ❀ कृपासिंधु आनहु दोउ भ्राता

तब जामवन्तने कहा—हे हनुमान् ! सुनो, तुम्हारे बलको संसार जानता है । शीघ्रतासे उपाय करो और कृपा-सागर दोनों भाइयोंको ले आओ ।।

दोहा—बिलखि कहेउ कपिपति बहुरि, सुनु मारुतसुत तात ।
बिनु रघुपति धिक धिक जनम, पल युग सरिस बिहात ।।१२८।।

फिर व्याकुल होकर (बिलखाकर) सुग्रीव बोले—हे तात हनुमान् ! सुनो, बिना रामजी के इस जीवनको धिक्कार है, धिक्कार है, एक पल युगके समान बीत रहा है ।।१२८।।

तृषित होय बिनु बारि दुखारी ❀ तैसे हम सब बिना खरारी
रवि बिनु पंकज होय मलीना ❀ तैसे हम सब हैं अति दीना

जैसे बिना जलके प्यासा दुःखित होता है, वैसे ही हम सब विना रामजीके दुःखित हैं । जैसे बिना सूर्यके कमल मलिन हो जाता है, वैसे ही हम सब बहुत दीन हो रहे हैं ।।

जिमि सीता सुधि औषधि आनी ❀ तेहि प्रकार आनहु गुण खानी
यह सुनि बहुरि पवनसुत बोला ❀ चित राखेहु थिर सेन न डोला

जैसे तुम सीताकी सुधि और संजीवनबूटी लाये थे, वैसे ही दोनों भाइयोंको ले आओ । यह सुनकर हनुमान्‌जीने कहा—अच्छा, चित्तको स्थिर रखना और सेना विचलित न होने पावे ।।

भुवन चारिदश तीनउ लोका ❀ आनहुँ प्रभुहिं तजहु तुम शोका
अब तुम सजग रहहु सब भाई ❀ लरहु काल सन जो चढ़ि आई

अब तीनों लोक और चौदहों भुवनमें जहाँ कहीं भी प्रभु होंगे उन्हें ले आऊँगा । आप शोचको त्याग दीजिये ।। अब आप सब लोग सजग रहियेगा, यदि काल भी चढ़ आवे तो उससे भी लड़ियेगा ।।

अस कहि गर्जि चलेउ हनुमाना ❀ प्रलय काल के मेघ समाना
चले जात इक तरु तर गयऊ ❀ गृद्धनि गृद्ध कहत अस भयऊ

ऐसा कह प्रलयकालके मेघके समान गर्जना कर हनुमान्‌जी चले । जाते हुए एक वृक्ष के नीचे पहुँचे तो वहाँ एक गृद्धनी गृद्धसे ऐसा कह रही थी ॥

दोहा—गृद्ध नारि रहि गर्भिणी, बोली पति सों बैन ।
आनहु आमिष मनुजकर, खाइ होइ जिय चैन ॥१२९॥

वह गृद्धनी गर्भिणी थी, जो अपने पतिसे कह रही थी कि, तुम मनुष्य का मांस ले आओ मैं उसे खाऊँगी तो मेरे जी को चैन मिलेगा ॥१२९॥

तासु बचन सुनि खग अस कहेऊ ❀ अहिरावन रामहिं लै गयऊ
देइहि बलि देबिहिं सो जाई ❀ आमिष बड़भागी जो पाई

उसकी बात सुनकर गृद्धने कहा—अहिरावण रामजी को ले गया है । वह जाकर देवी को बलिदान देगा, वह मांस वही पावेगा, जिसका बड़ा भाग्य होगा ॥

कवनेहु जतन देब मैं आनी ❀ अस कहि गृद्ध नारि सनमानी
जबहिं पवनसुत यह सुधि पाई ❀ चले हृदय सुमिरत रघुराई

किसी उपायसे मैं उसे ला दूँगा, ऐसा कहकर गृद्धने अपनी स्त्री को बोध दिया । जब हनुमान्‌जीने यह समाचार सुन लिया तब हृदयमें रघुनाथजी को सुमिरते हुए चले ॥

तुरत पतालहिं तेहि क्षण गयऊ ❀ अहिरावन पुरप्रविशत भयऊ
द्वारपाल मकरध्वज कीशा ❀ कपिसन डाँटि कहत बहु रीसा

हनुमान् शीघ्र ही पाताल जा पहुँचे और अहिरावणके नगरमें प्रवेश किये । वहाँ पर द्वारपाल मकरध्वज नामका बन्दर था जो बड़े क्रोधसे डाँटता हुआ हनुमान्‌जीसे बोला—

निदरहिं मोहिं तोहिं डर नाहीं ❀ जिमि दीपक न पतंग डेराहीं
मारुत सुत कर हौं मैं बालक ❀ स्वामिभक्त भंजन मख कालक

तुझे डर नहीं लगता है, मेरा तिरस्कार कर रहा है, जैसे दीपकसे फतिङ्गे नहीं डरते, क्या मुझे नहीं जानता ? मैं पवनसुतका बालक हूँ जो स्वामिभक्त तथा कालके मुखको भी तोड़नेवाला हूँ ॥

सो०—सुनत बचन हनुमान, विस्मय ह्वै बोलत भयउ ।
अरे मूढ़ अज्ञान, मोरे सुत सपनेहुँ नहीं ॥१०॥

इस बातको सुनते ही हनुमान्‌जी को बड़ा आश्चर्य हो गया और बोले—अरे मूर्ख ! अज्ञानी ! मेरे तो स्वप्न में भी पुत्र नहीं है ॥१०॥

कहत बचन शठ तोहिं न खोरी ❀ काम विवस कब भइ मति मोरी
मम सुत बनसि मूढ़ केहि काजा ❀ इतना कहत तोहिं नहिं लाजा

अरे शठ ! क्या तुझे ऐसी बात कहते पाप नहीं होता, मेरी बुद्धि कामके वश कब हुई थी ? रे मूर्ख ! तू मेरा पुत्र किस कारण बनता है, यह कहते हुए तुझे लज्जा नहीं लगती ? ॥

केहि प्रकार तैं मम सुत भयसी ❀ निज उतपति मोसन किन कहसी
सुनत कहत मकरध्वज बचना ❀ कीन्ह तात जब लंका दहना

तू मेरा पुत्र कैसे हुआ ? अपनी उत्पत्ति मुझसे क्यों नहीं कहता ? इसे सुनते ही मकरध्वज बोला—हे तात ! जब आपने लंका दहन किया था ।।

तब आयउ चलि उदधि समीपा ❁ भयउ प्रस्वेद तुमहिं कपि दीपा
छुटि प्रस्वेद सागर महँ गयऊँ ❁ पियउ मीन तेहिते मैं भयऊँ

तब चलकर समुद्रके किनारे आये, उस समय आपके शरीरसे पसीना निकल रहा था। वह पसीना समुद्र में गिर गया, जिसे एक मछली पी गई, उसी से मैं पैदा हुआ हूँ ।।

इहि प्रकार मैं तव सुत ताता ❁ गोपहुँ नहिं निज पिता न माता
अहिरावण सेवा मैं करऊँ ❁ प्रभु आयसु इहि द्वारे रहऊँ

हे तात ! मैं इस प्रकार आपका पुत्र हुआ, मैं अपने माता-पिता को नहीं छिपाता हूँ। अब मैं अहिरावण की सेवा करता हूँ तथा स्वामी की आज्ञा से द्वार पर रहता हूँ ।।

दोहा—सत्य बचन हनुमान कहि, पुनि पूछा सब बात।
लायो लक्ष्मण रामकहँ, कहा करत सो तात ।।१३०।।

हनुमान्‌जीने फिर सब बात पूछी कि हे तात ! तुमने सत्य कहा है। अब यह कहो कि अहिरावण राम और लक्ष्मण को हर कर ले आया है सो वह क्या करता है ? ।। १३० ।।

कहहु तात तिहि थल को जाऊँ ❁ जान चहौं मैं तव प्रभु ठाऊँ
यह वृत्तान्त न जानहुँ ताता ❁ अस मैं श्रवण सुना कह बाता

हे प्यारे ! उस स्थान का नाम बताओ, मैं तुम्हारे स्वामी के पास जाना चाहता हूँ। मकरध्वजने कहा—हे पिताजी ! मैं यह वृत्तान्त तो नहीं जानता, किन्तु मैंने कुछ सुना है ।।

सीतापति अरु फणिपति साथा ❁ सो लै आयउ निशिचर नाथा
करत सो अहै होम धौं आजू ❁ देबिहिं बलि देइहि अहिराजू

रामचन्द्र और लक्ष्मण को राक्षसों का स्वामी अहिरावण साथ लाया है। सो आज वह होम कर रहा है, नागराज शायद वह उन्हें देवी को बलि देगा ।।

जो कछु निज श्रवणन सुनि पायउँ ❁ तात सकल मैं तुमहिं सुनायउँ
निज प्रभु काज लागि दुख सहऊँ ❁ तुम सन सत्य बचन मैं कहऊँ

हे पिता ! जो कुछ मैंने अपने कानों से सुना है, वह सब तुमको सुना दिया। अपने स्वामी के कार्य के लिए दुख सहता हूँ, सो तुमसे ठीक कह दिया ।।

जान कहहु पै जान न देऊँ ❁ प्रभु आज्ञा तजि अयश न लेऊँ
सुनि अस पेलि चले हनुमाना ❁ भयउ क्रोध मकरध्वज जाना

किन्तु आप जो जाने को कहते हैं सो मैं जाने न दूंगा, क्योंकि स्वामी की आज्ञा का अपयश न लूंगा। तब हनुमान् जी उसे ढकेल कर चले तो मकरध्वज ने जाना यह क्रोधित हैं ।।

दोहा—तेहि मुष्टिक कपिकहँ हनेउ, पुनि मारेउ कपि ताहि।
हनहिं परस्पर एक एक, बल समान घटि नाहि।।१३१।।

तब उसने हनुमान्जी को घूसा मारा, फिर हनुमान्जी ने भी उसे मारा । इस प्रकार एक-एक को मारने लगे, दोनों समान बली थे, कोई कम नहीं था ॥१३१॥

एकहि एक सकहिं नहिं टारी ❁ पिता पुत्र दोऊ भट भारी
सुतहिं लूम सन बाँधि भवानी ❁ चलेउ बात सुत विलँब न आनी

एक को एक नहीं हटा सकता था, और हनुमान्जी तथा मकरध्वज दोनों ही बड़े वीर थे ॥ हे पार्वती ! हनुमान्जी अपने पुत्र को पूंछ से बाँध, विलम्ब न कर शीघ्रता से चले ॥

धरि लघु रूप होम गृह देखा ❁ जीव सजीव परे नहिं लेखा
तहँ देवी कर मण्डप रहई ❁ शोणित घट बहुको कहि सकई

और छोटा रूप धारण कर हवन घर देखा तो जीते हुए जीव गिने नहीं जाते ॥ वहाँ देवी का मण्डप था और रक्त के बहुत से घड़े रखे थे जिन्हें कौन कह सकता है ?

विविध भाँति मेवा पकवाना ❁ धरे आनि दवी अस्थाना
मालिनि तहँ प्रसून लै आई ❁ सुमन मध्य प्रविशेउ कपिराई

अनेक प्रकारके मेवा और पक्वान्न लाकर देवीके स्थान में रखे हैं ॥ वहाँ मालिन फूल लेकर आई तो पुष्प के मध्य में हनुमान्जी घुस गये ॥

सुमनहु ते करि अति हलकाई ❁ लेत पाणि जेहि जान न जाई
जब देविहिं सो पुष्प चढ़ायउ ❁ विकट रूप तब कपि दिखरायउ

हनुमान्जी पुष्पसे भी हलके हो गये, मालिन उन्हीं पुष्पों को लेकर मंडपमें आई जब वे सब पुष्प देवी पर चढ़े, तब हनुमान्जी विकट रूप धारण कर आगे खड़े हो गये ॥

दोहा—छुवत चरन देवी तुरत, धरती रही समाइ ।
मुख पसारि ठाढ़े भये, कपि छबि लखत डराइ ॥ १३२ ॥

तब चरण-स्पर्श करते ही देवी तो पृथ्वी में समा गई और हनुमान्जी मुँह फैला कर खड़े हो गये तो उनकी शोभा देखकर भय लगने लगा ॥१३२॥

देबी प्रकट समुझि खल झारी ❁ करहिं विचार हृदय अति भारी
कहहिं कि देवि प्रकट भइ आजू ❁ बड़भागी भा निशिचर राजू

दुष्ट राक्षस देवी को प्रकट हुआ देखकर मनमें बहुत बड़े-बड़े विचार करने लगे ॥ वे कहने लगे कि आज देवी साक्षात् प्रगट हुई और अहिरावण बड़ा भाग्यशाली हुआ ॥

करि प्रणाम पुनि पूजा करहीं ❁ जो चढ़ाय सो कपि मुख परहीं
जो तहँ रही बस्तु समुदाई ❁ बचो न कछुक सकल कपि खाई

प्रणाम करके फिर पूजा करते हैं और जो कुछ चढ़ाते हैं, वह हनुमान्जीके मुखमें जाता है ॥ वहाँ कुछ भी सामग्री न बची, हनुमान्जी ने सब खा डाला ॥

कपि खिलारि कौतुक बिस्तारा ❁ भा चह निशिचर कुल संहारा
अहिरावण उर भा सुख कैसे ❁ चढ़ै काँध पर बलि पशु जैसे

खिलाड़ी हनुमान्‌ने खेल किया, क्योंकि राक्षस-कुल का नाश होना चाहता है ।। अहि-रावणके हृदयमें वैसा ही सुख हुआ कि जैसे बलि-पशुके कन्धे पर चढ़नेसे होता है ।

जबहीं होम सिद्ध तेहि जाना ❀ लक्ष्मण राम तुरत तेहि आना
ठाढ़ कीन्ह प्रभुकहँ तहँ आनी ❀ निशिचर बहु आयुध धरि पानी
कोऊ गदा कोउ धनु बाणा ❀ शक्ति शूल धरि कोउ कृपाणा

जब उसने होम को सिद्ध हुआ जाना तो शीघ्र ही राम-लक्ष्मण को वहाँ ले जाकर खड़ा कर दिया । राक्षसोंने हाथमें बहुतसे हथियार लिए, कोई गदा और कोई धनुष-बाण धारण किए हैं, कोई शक्ति, त्रिशूल और तलवार धारण किये हैं ।।

दोहा—तोमर मुग्दर परशु असि, पाश परिघ अरु बेत ।
शूल भुशुण्डी पटु गदा, देखत बिसरत चेत ।।१३३।।

तोमर, मुग्दर, फरसा, तलवार, पाश, बेत, खड्ग और धनुष-बाण हाथोंमें लिए हैं जिन्हें देखते ही चेतना शून्य हो जाती है ।।१३३।।

माया बल ते सकल विलक्षण ❀ अति विकराल मूढ़ दुरभक्षण
यहि विधि सकल वीर तहँ रहहीं ❀ अहिरावण आज्ञा दृढ़ गहहीं

वे सब मायाके बलमें बड़े चतुर, बड़े भयंकर, मूर्ख और मांसाहारी थे ।। इस प्रकार सब योद्धा वहाँ रहते हुए अहिरावण को आज्ञा पालन करते थे ।।

आयसु पाइ खड्ग तिन काढ़े ❀ मारन कहँ प्रभु पर भये ठाढ़े
कोउ कह राजनीति अनुसरहू ❀ भरित्रय दण्ड बिलंब अब करहू

फिर आज्ञा पाकर (उन्होंने) तलवार निकाली और प्रभु को मारने खड़े हुए ।। उस समय कोई कहता है कि राजनीतिके अनुसार तीन घड़ी की देर और करो ।।

पुनि अस बचन मूढ़ मति कहहीं ❀ सुमिरहु जो तुम्हरे हित अहहीं
नाहित काल आइ नियराना ❀ निशास्वप्न सम दोउ जन प्राना
बोलहिं मूढ़ असम्भव बानी ❀ सकुच लगै सो कहत भवानी

फिर ऐसा वचन सुनकर वे मूढ़ बुद्धि वाले कहने लगे, तुम्हारे जो कोई हो, उसका स्मरण कर लो नहीं तो तुम्हारा काल निकट आ गया है. अब तुम दोनों भाई रातके स्वप्नके समान हो । शिवजी कहते हैं—हे पार्वती ! वे मूर्ख ऐसे शब्द भगवान्‌से कहते थे जिसे कहनेमें मुझे संकोच लगता है ।।

दोहा—फणिपति चितवत रामतन, राम चितव अहिराज ।
प्रभुकर कौतुक कहिय किमि, सुनो दशा खगराज ।।१३४।।

लक्ष्मणजी रामजी का मुख देखते और रामजी लक्ष्मणजी का मुख देखते । हे गरुड़ ! रामजी का कौतुक कैसे कहूँ ? वह दशा आगे श्रवण करो ।। १३४ ।।

बिहँसि कीन्ह प्रभु हृदय बिचारा ❀ जपे सकल जग नाम हमारा
जाना देवि रूप हनुमाना ❀ बिहँसि कहा तब राम सुजाना

तब भगवान्‌ने हँसकर मनमे विचार किया कि सारा संसार तो मेरा नाम जपता है और यहाँ तो देवी-रूप हनुमान् विद्यमान हैं, तब ज्ञानवान् श्रीरामजीने हँसकर कहा—॥

कालकौर तुम सुमिरहु रक्षक ❀ भई तुम्हारि देवि तव भक्षक
सुनत गिरा तिन मारन ठयऊ ❀ घन समान कपि गर्जत भयऊ

हे राक्षसों! तुम सभी कालके ग्रास हो रहे हो, अतः अपने रक्षकका स्मरण करो, अब तुम्हारी देवी ही तुम्हारी भक्षक हैं। प्रभु की ऐसी बात सुनकर वे राक्षस दौड़े तो हनुमान्‌जी गर्जने लगे॥

निशिचर सकल त्रसित भे भारी ❀ कहहिं बचन भय हृदय विचारी
अहिरावण भल कीन्ह न काजू ❀ आने कपट वेष सुरराजू

सारे राक्षस अत्यन्त दुःखित हो गए और अपने मनमें विचार करने लगे कि अहिरावण ने अच्छा काम नहीं किया जो कपट वेष से भगवान् को हर लाया॥

तेहिते देवि क्रुद्ध भइ आजू ❀ अब भा सबकर मरन समाजू
संभ्रम वश सब निशिचर झारी ❀ बहुरि कीश गर्जेउ अति भारी

इसीसे आज देवी क्रुद्ध हो गई हैं, अब आज सबका मरण हुआ। सारे राक्षस भयभीत हो गये और हनुमान्‌जी दूसरी बार घोर गर्जना करने लगे॥

दोहा—प्रकट रूप करि पवनसुत, अट्टहास गम्भीर।
अतिभय त्रसित निशाचर, सुनहु उमा मतिधीर॥१३५॥

हनुमान्‌जी अपने रूपसे प्रगट होकर बड़े जोरसे गर्जे। हे पार्वती! बुद्धिमें धीरज धारण करके सुनो, वह गर्जना सुनकर राक्षस बहुत डर गये॥ १३५॥

डगमग भे निशिचर अभिमानी ❀ मारुत बेग यथा नदि पानी
तेहि क्षण कपि लीन्हे दोउ भाई ❀ धुनत तूल निशिचर समुदाई

(उस समय) अभिमानी राक्षस विचलित हो गये, उसी समय दोनों भाइयों को लेकर हनुमान्‌जी राक्षसों के समूह को उसी प्रकार मारने लगे जैसे रुई धुनी जाय॥

छीनि कृपाण लीन्ह हनुमाना ❀ काटत भुज सिर कृषी समाना
खण्ड खण्ड तब खल दल कीन्हा ❀ गहि पद डारि अनल महँ दीन्हा

हनुमान्‌जीने तलवार छीन ली और उनकी भुजाओं और शिर को खेतके समान काटने लगे॥ उन्होंने दुष्टके दलको खण्ड-खण्ड काटकर और पैर पकड़कर अग्निमें डाल दिया॥

करि लंगूर कोटि कपिराई ❀ तेहि महँ घिरि कोउ भागि न जाई
यहि विधि सब निशिचर संहारे ❀ अहिरावण लखि बचन उचारे

फिर हनुमान्‌जीने अपने लंगूर की कोट बना ली जिसमें सब घिर जायँ, कोई भाग न जाये ।। इस प्रकारसे उन्होंने सब राक्षसों को मार डाला, यह देख अहिरावणने कहा—।।

रे कपि ढीठ त्रास नहिं तोहीं ❀ अहिरावण ते जान न मोहीं
जंबुमालि कहँ जिमि तैं मारा ❀ अरु रावनसत हतेउ बिचारा

रे धृष्ट बन्दर! तुझे भय नहीं है, मुझ अहिरावण को नहीं जानता ।। जैसे तूने जम्बुमाली और रावण के पुत्र बेचारे अक्षय कुमारको मार डाला है ।।

दोहा—कालनेमि सम नाहिं मैं, करु कपि बचन प्रमान ।
अस कहि अंग प्रहार किय, कपि तनु बज्र समान ।।१३६।।

हे हनुमान्! मेरे वचनों का विश्वास कर, मैं कालनेमिके समान नहीं हूँ। ऐसा कहकर उसने हनुमान्‌के बज्रवत् शरीर पर तलवार का वार किया ।। १३६ ।।

लै असि ताहि पवनसुत मारा ❀ काटि शीश पावक महँ डारा
आहुति पूर्ण दीन्ह तब कीशा ❀ लै पुनि चलेउ लषन जगदीशा

तब उसी की तलवार लेकर हनुमान्‌ने उसे मारा और सिर काट कर अग्निमें डाल दिया ।। तब हनुमान् उस मस्तकसे उसके यज्ञकी पूर्णाहुति कर लक्ष्मण सहित भगवान् को लेकर चले ।।

मकरध्वज बिनती तब कीन्हीं ❀ बंधन छोरि राज्य तेहि दीन्हीं
इहाँ राज्य भोगहु तुम ताता ❀ भजहु सदा मम प्रभु दोउ भ्राता

तब मकरध्वजने प्रार्थना की तो हनुमान्‌जीने उसका बन्धन खोल कर उसे राज्य दे दिया और कहा—हे प्यारे! तुम यहां का राज्य करो और मेरे स्वामी का सर्वदा भजन करो ।।

अस कहि कपि निज दल सो आवा ❀ हर्षेउ कटक सबनि सुख पावा
मृतक शरीर प्रान जिमि आवहि ❀ गइ मणि पाइ फणिक सुख पावहि

ऐसा कह कर हनुमान् अपनी सेनामें आए जिन्हें देखकर सबने वैसे ही सुख पाया ।। जैसे मृतक शरीरमें प्राण आ गया हो या खोई हुई मणि पाकर सर्प सुखी हो गया हो ।।

बिछुर अलभ्य मिले जनु आई ❀ तिमि हर्षे सब लखि दोउ भाई
मिलेउ कपीश चरन धरि माथा ❀ पुनि पद गहे निशाचर नाथा

अथवा जैसे खोया हुआ फिर आकर मिल जावे वैसे ही दोनों भाइयोंको देखकर सब प्रसन्न हो गये ।। सुग्रीव चरणोंमें सिर रखकर मिले, फिर विभीषणने चरण-स्पर्श किया ।।

दोहा—जामवन्त अंगद सहित, मिले भालु अरु कीश ।
सनमाने प्रिय बचन कहि, लषन कोशलाधीश ।।१३७।।

फिर जामवन्त, अंगद सहित रीछ और बन्दर मिले, तब श्रीरामचन्द्रजी और श्रीलक्ष्मणजी ने प्रिय वचन कहकर सबका सम्मान किया ।। १३७ ।।

बहुरि सबहिं भेंटे हनमाना ❀ कहहिं तात तुम राखे प्राना
देवन सुमन वृष्टि तब कीन्हीं ❀ प्रमुदित हृदय दुन्दुभी दीन्हीं

फिर वे सब हनुमान्से मिले और कहने लगें—हे तात! आपने सबके प्राण रख लिए। तब देवताओंने मनमें प्रसन्न होकर फूलों की वर्षा की और दुन्दुभी बजाने लगें ॥

यश तुम्हार त्रिभुवन महँ भयऊ ❀ सुनि प्रभु बचन चरन कपि नयऊ
नाथ कीन्ह सब मैं केहि लेखे ❀ तरणी चलत अगम जल देखे

हे हनुमान्! तुम्हारा यश तीनों लोकोंमें छा गया, प्रभु का यह वचन सुनकर हनुमान्ने चरणोंमें शिर नवाया और कहा—हे स्वामी! सब आप ही ने किया है, मैं किस गिनतीमें हूँ ॥

तैसे सब प्रताप तव नाथा ❀ सुनि अस मिले कपिहिं रघुनाथा
कटक सहित हर्षे दोउ भाई ❀ तेहि अवसर सुख किमि कहि जाई

ऐसा सुनकर श्रीरामचन्द्रजीने हनुमान्जी को हृदयसे लगा लिया, उस समय सैनिकों सहित राम-लक्ष्मण दोनों भाई बड़े प्रसन्न हुए और जो सुख हुआ उसे कैसे कहा जाय ॥

छंद—कहि जाइ सुख किमि तेहि समय कर सुनहु गिरजा चित धरे।
रघुबीर रुख अवलोकि हर्षित आरती सुरगन करे॥
अति प्रेमसों मारुत सुवन यश बरणि बुधगन अस कही।
नर नारि यह कीरति सुनत गावत लहत मंगल मही॥४॥

हे पार्वती! उस समय का सुख कैसे कहा जाय, मन लगाकर सुनो। श्रीरामचन्द्रजी का भाव देखकर देवगण आरती करने लगे। तब हनुमान्जी का यशोगान कर कहने लगें—जो नर-नारी इस कीर्तिको सुनेंगे और गान करेंगे वे परम यशके भागी हो महान् मंगलको पावेंगे ॥४॥

दोहा—करि बहु बिधि हरि आरती, वाणी सत्य सुनाय॥
राम चरण अनुरागेउ, अमर सुमन झरि लाय॥१३८॥

अनेक प्रकार प्रभु की आरती कर और सत्य वचन सुनकर देवगण फूलों की वर्षा करके श्रीरामजी के चरणोंमें अनुरक्त हुए ॥१३८॥

देव निडर प्रभु गुण गण गावहिं ❀ आरति करि कहि बिनय सुनावहिं
विबुध विनय रघुपति सुनि काना ❀ कह प्रभु सत्यसन्ध भगवाना

देवतागण निर्भय हो प्रभुके गुणानुवाद गाते हुए उनकी आरती करके विनती सुनाने लगें॥ तब देवताओं की विनती अपने कानोंसे सुनकर श्रीरामचन्द्रजी बोले—॥

चतुरानन बर दीन्ह अपेला ❀ तेहि कारण यह बाढ़्यो खेला
नाहित लषन एक पल माहीं ❀ राखत यातुधान कुल नाहीं

(हे देवगण!) इसे ब्रह्माने अटल वर दे दिया था, इसी कारणसे यह खेल बढ़ गया है॥ अन्यथा लक्ष्मण एक पलमें समस्त राक्षसोंके कुल का नाश कर देते ॥

अजहुँ होय रण कौतुक भारी ❀ निरखहु तुम सब सोच बिसारी
अब जो रहे निशाचर शेषा ❀ भट महँ जासु भुजा कर रेखा

परन्तु अब भी युद्ध में बड़ा खेल होगा, तुम सब चिन्ता त्याग कर उसे देखो । अब जो राक्षस शेष रह गए हैं और वीरों में जिनकी भुजाओं की महानता है ॥

तेहि रण महँ मैं हतउँ प्रचारी ❀ बिनु श्रम सबसों कहत खरारी
शम्भु कृपा अब संशय नाहीं ❀ सुनि सुर अति हर्षे मन माहीं

उनको मैं बिना परिश्रम ही युद्ध में मार डालूँगा, ऐसा श्रीरामचन्द्रजी ने सबसे कहा। शिवजी की कृपा से अब सन्देह नहीं है, यह सुनकर देवता मन में बहुत प्रसन्न हुये ॥

दोहा—सत्य बचन सुनि रामके, आनन्दित सुर व्यूह ।
चले कहत जय जयति प्रभु, बरसे सुमन समूह ॥१३९॥

तब श्रीरामचन्द्रजी के सत्य वचनों को सुनकर देवताओं का व्यूह आनन्दित हुआ और भगवान् की जय हो ! जय हो ! ऐसा कहते हुए उनपर फूलों का ढेर बरसाने लगे ॥१३९॥

यह चरित्र शुचि सुभग सुहावा ❀ खगपति रामकृपा मैं गावा
जिय हिय हर्षि सुनहु द्विजराई ❀ मानस कहहुँ सुमिरि रघुराई

हे गरुड़ ! यह पवित्र और सुन्दर चरित्र मैंने रामजी की कृपासे गान किया है ॥ अब उन्हीं का स्मरण करके उनके चरित्र को फिर कहता हूँ, सुनो ॥

याज्ञवल्क्य पद बन्दि सप्रीती ❀ भरद्वाज बोले शुचि नीती
यह चरित्र अति रुचिर सुहावा ❀ सुनि मैं नाथ परम सुख पावा

याज्ञवल्क्यजीके चरणों की सप्रेम बन्दना करके भरद्वाज जी यह पवित्र नीति बोले—॥ हे नाथ ! इस अत्यन्त सुहावने चरित्र को सुनकर मुझे बड़ा सुख प्राप्त हुआ ॥

अहिरावण बधान्त भगवाना ❀ चरित किये सो कहहु बखाना
सुनि मुनि बिनय ऋषय पुलकाई ❀ बोले हृदय सुमिरि गिरिराई

अहिरावण-वधके अन्तमें भगवान्ने जो चरित्र किये उसे वर्णन कीजिये ॥ यह विनती सुनकर याज्ञवल्क्यजी मनमें पुलकित हो महादेवजी का स्मरण करके बोले-॥

प्रश्न तुम्हार तात अति पावन ❀ सहज सुभग सज्जन मन भावन
मानस हरि चरित्र सुठि नीका ❀ सुनत करत जो कोउ मन फीका

हे तात ! तुम्हारा यह प्रश्न बड़ा ही पवित्र, सहज, सरल और सज्जनोंके मनको अच्छा लगनेवाला है ॥ यह रामचरित मानस उत्तम है, इसे सुनकर जो मनको उदास करते हैं-॥

दोहा—सोइ जग बंधक सुनहु मुनि, जेहि मानस न सुहाइ ।
भवसागर महँ भ्रमत सो, अमित कल्प लगि जाइ ॥१४०॥

हे मुनि ! सुनो, वे संसार में ठग हैं, जिन्हें यह मानस अच्छा नहीं लगता । वे अनेकों कल्प तक संसार में भ्रमते रहते हैं ॥१४०॥

मानस सुनत न मनहिं अघाहीं ❁ तिन सम धन्य और कोउ नाहीं
धन्य धन्य तुम सम को आना ❁ ललित चरित अति सुनहु सुजाना

और जो इस मानसको सुनते हुए तृप्त नहीं होते, उनके समान कोई धन्य नहीं ॥ तुम्हारे समान भी धन्य दूसरा नहीं है हे सुजान ! अब उस अति सुहावने चरित्र को सुनो ॥

राम लषन दल सहित बिराजे ❁ जयति राम कहि कपि गन गाजे
राम सेन सुखमा अधिकाई ❁ निगमागम जानहिं बुध भाई

जब श्रीरामचन्द्रजी और लक्ष्मणजी अपने दल के साथ बैठे तो बन्दरों का समूह गर्जन करने लगा ॥ उस समय रामकी सेनामें अधिक सुख छा गया जिसे देवता और वेद जानते हैं॥

उहाँ दशानन सब सुधि पाई ❁ दूत सँदेश दीन्ह सब जाई
अहिरावन कर बध सुनि काना ❁ भयउ तेजहत अति दुख माना

उधर जब रावणने सब समाचार पाया जिस सन्देश को दूतोंने जाकर उसे दिया । तब अहिरावणका मारा जाना अपने कानोंसे सुनकर वह कान्तिहीन होकर बड़ा दुःखी हुआ ॥

❁ नारान्तक-वध की कथा ❁

बचन बज्र सम लागेउ ताही ❁ संभ्रम मूर्छि परा महि माहीं
मुख सुखान लोचन जल बहई ❁ बचन न आव शीश धुनि रहई

दूतोंके ये वचन सुनकर रावण निश्चेष्ट होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा ॥ उसका मुख सूख गया, नेत्रोंसे आंसू बहने लगे, मुखसे बात नहीं निकली तथा वह शिर पटकने लगा ॥

दोहा—मय तनया तब आइ पुनि, बहु प्रकार समुझाइ ।
मान न मूरख कालवश, परम क्रोध कहँ पाइ ॥१४१॥

तब फिर मन्दोदरीने आकर उसे अनेक प्रकारसे समझाया, परन्तु वह मूर्ख कालके वश था, जिससे उसका कहना न मानकर अत्यन्त क्रोध को प्राप्त हुआ ॥१४१॥

नारि बचन सुनि तेहि रिस बाढ़ी ❁ उठि बैठेउ धरि धीरज गाढ़ी
तेहि अवसर मन्त्री इक आवा ❁ करि आदर दश मुख बैठावा

स्त्रीकी बात सुनकर उसका क्रोध बढ़ गया परन्तु धैर्य धारण कर बैठा ॥ उसी समय वहां एक मन्त्री आया जिसको रावण आदर से बैठाया ॥

सिंधुरनाद नाम बलवाना ❁ बृद्ध ज्ञानमय परम सुजाना
सदा विभीषण कर सँग ठयऊ ❁ कबहूँ दशमुख सभा न गयऊ

उस बलवान् का नाम सिंधुरनाद था, वह बड़ा चतुर और वृद्ध था तथा जो सदैव विभीषणके साथ रहता था और रावण की सभा में कभी नहीं गया था ॥

आवा सो भल अवसर पाई ❁ कहेसि नीति रावणहिं बुझाई
ज्ञान कथा दशमुख न सुहानी ❁ तब बहिराइ बात कह आनी

वह सुअवसर पाकर आया और रावणको समझाकर नीति कहने लगा ।। परन्तु उसकी बात रावणको प्रिय न लगी । वह उसे बहलाकर दूसरी बात कहने लगा ।।

करिवरनाद हृदय अस गुनेऊ ❀ प्रभु दुइ ताग हृदयपट बुनऊ
अब यहि कहौं सो सरल उपाई ❀ जेहि यह मूढ़ समूल नसाई

तब सिन्धुरनादने हृदयमें ऐसा विचार किया कि स्वामीके हृदयमें अज्ञानका आवरण पड़ा है ।। सो अब इसे वह सरल उपाय बतलाऊँ कि जिससे यह मूर्ख मूल सहित नष्ट हो जाय ।।

दोहा—अस बिचारि बोलेउ सचिव, सुनहु दनुजकुल-राय ।
धीर धरहु संशय विगत, कहहुँ सो करहु उपाय ।।१४२।।

यह विचारकर मन्त्री बोला—हे राक्षसकुलके राजा ! सुनो, सन्देहको छोड़कर धीरज धरो और जो मैं कहता हूँ उस उपायको करो ।। १४२ ।।

अक्षादिकन सुतन बल दूना ❀ कस सुरारि मन मानहु ऊना
सचिव बचन सुनि दशमुख कहई ❀ अब हमरे कुल को भट अहई

अभी तो अक्ष आदिक पुत्रोसे भी दूने बली पुत्र आपके पास विद्यमान हैं, हे राक्षसराज ! मनमें ग्लानि क्यों मानते हैं ? तब उसकी बात सुनकर रावणने पूछा कि, अब हमारे कुलमें कौन योद्धा बचा है ? ।।

अपन मन महँ करहु विचारा ❀ है नारान्तक तनय तुम्हारा
मूल अभुक्त माँहि भा जोई ❀ दियो बहाय मरा नहिं सोई

मन्त्री बोला—अपने मनमें विचार करिये, आपका नारान्तक पुत्र विद्यमान है ।। जो अभुक्त मूल घड़ीमें उत्पन्न हुआ था, जिसे आपने बहवा दिया था, सो अभी मरा नहीं है ।।

शम्भु प्रसाद ताहि कछु भयऊ ❀ पुनि बिहबावल नृपती दयऊ
कोटि बहत्तर एक प्रभाऊ ❀ राजा प्रजा भेद नहिं काऊ

उसके ऊपर शिवजीने कुछ दया की, फिर बिहबाबलपुरका राज्य दिया ।। जहाँ बहत्तर करोड़ राक्षस एक प्रभावके रहते हैं और उसमें राजा और प्रजाका भेद किसीमें नहीं है ।।

दूत पठाइ बुलावहु ताहीं ❀ जीतहि सो रिपु रनके माहीं
दनुजअधीश चतुर चर पठवौ ❀ धरहु धीर चित चिन्ता घटवौ

दूत भेजकर उसको बुलवाइये, वह निश्चय ही रणक्षेत्रमें शत्रुको जीत लेगा ।। हे रावण ! वहाँ चतुर दूत भेजिये, चिन्ता छोड़ दीजिये और धैर्य धारण कीजिए ।।

दोहा—तासु मन्त्र सुनि दसबदन, हृदय प्रमोद अमान ।
धूम्रकेतु कहँ बोलि ढिग, समुझायेहु सनमान ।।१४३।।

उसकी बात सुनकर रावण बहुत प्रसन्न हुआ और धूम्रकेतुको अपने पास बुलाकर आदरपूर्वक बहुत समझाकर बोला ।। १४३ ।।

धूम्रकेतु तुम परम सयाना ❀ लै मम पाती करहु पयाना
बसत जहाँ नारान्तक राजा ❀ तहाँ न तात अपर कर काजा

हे धूम्रकेतु ! तुम बड़े चतुर हो, मेरा पत्र लेकर जहाँ जाओ वहाँ नारान्तक राजा रहता है, वहाँ किसी अन्य को जाने का काम नहीं है ।।

अवसर पाइ हेतु समझाई ❀ सपदि ताहि लै आनौ भाई
आयसु पाइ चार तहँ गवना ❀ यह सुनि बिहँसि कह्यो अहिदवना

अवसर पाकर कारण समझाना तथा हे भाई ! शीघ्रतासे उसे लेकर आना ।। आज्ञा पाते ही दूत वहाँ को चला गया, यह सुनकर गरुड़जी काकभुशुण्डिजीसे हँसकर बोले—।।

काक नाथ यह गाथ सुहाई ❀ मोसन तात कहहु समुझाई
नारान्तक उत्पत्ति यथा बिधि ❀ पुर बिहबावल गा कवनी बिधि

हे काक नाथ ! यह सुन्दर कथा मुझसे समझाकर कहिये ।। हे तात ! नारान्तक का जन्म कैसे हुआ और वह बिहबावलपुर कैसे गया ? ।।

सुमिरि काकपति उर अवधेशहिं ❀ मन प्रसन्न करि कह बिहँगेशहिं
अति सुन्दर शुचि यह सम्बादू ❀ चित थिर करि सुनिये उरगादू

काकभुशुण्डिजीने हृदयमें रामजीको स्मरण कर प्रसन्न चित्तसे गरुड़जीसे कहा कि ।। यह कथा अत्यन्त सुन्दर और पवित्र है, इसे चित्त स्थिर करके सुनिए ।।

दोहा—नख चौगुन बसु ऊन तहँ, सप्त अकाश मिलाइ ।
इतने निशिचर एक दिन, भे रावण पुर आइ ।।१४४।।

नख (बीस) का चौगुना अस्सी, आठ घटाये तो बचा बहत्तर, सात शून्य मिलायें तो हुआ बहत्तर करोड़, इतने राक्षस रावणके यहाँ एक ही दिन उत्पन्न हुए ।। १४४ ।।

पुर महँ उपजे खल इक साथा ❀ तब सुनि हर्षेउ निशिचर नाथा
निज गुरु बोलि चरण शिर नाई ❀ बूझा मुदित सो कलश धराई

जब वे दुष्ट लंकापुरीमें एक ही साथ उत्पन्न हुए, तब यह सुनकर रावण बहुत प्रसन्न हुआ ।। उसने प्रसन्न हो कलश स्थापित कर अपने गुरु शुक्राचार्य को बुलाकर प्रणाम किया और उन सबकी लग्न-मूहूर्त्त पूछा ।।

भृगुनन्दन तब तेहि सन कहेऊ ❀ आजु बाल सब मूलहिं भयेऊ
सत्य कहत दशमुख तुम पाहीं ❀ भये आजु जे तव पुर माहीं

तब शुक्राचार्यने उससे कहा—हे रावण ! मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि आजके उत्पन्न सभी बालक मुल नक्षत्रमें पैदा हुए हैं ।।

ये सुत सब निज निज पितु घाती ❀ मुख देखउ सुनु सुर आराती
घर राखे धन सहित विनाशा ❀ होइ अवशि नहिं उबरन आशा

हे देवशत्रु ! ये सभी बालक अपने-अपने पिताके घातक हैं, हे राक्षसराज ! सुनो, इनका मुख-मात्र देख लो ।। परन्तु घरमें रखोगे तो धन सहित सर्वस्व नाश हो जायगा और तुम्हारा भी विनाश हो जायेगा ।।

शुक्र वचन सुनि डरे निशाचर ❀ कहा करिय अतिबाद परस्पर
निश्चय कीन्ह प्रसव शिशु आजू ❀ सौंपिय सिन्धुहिं और न काजू

आचार्यके इस वचनको सुनकर सभी राक्षस डर गये और आपसमें सलाह करने लगे कि क्या करें, तब सबने निश्चय किया कि सभी बालकोंको समुद्रमें डुबा दिया जाय और कार्य नहीं है ॥

दोहा—सपदि करहु सब काज यह, लावहु बाल बटोरि ।
राखे होइहि हानि अति, कह दशबदन बहोरि ॥१४५॥

रावणने कहा—शीघ्र ही सभी बालकोंको बटोर लाओ, इनको रखनेसे बड़ी हानि होगी ॥१४५॥

सेवक दशमुख आयसु पाई ❀ धाये तुरत चरण सिर नाई
रावण आयसु नगर पुकारी ❀ सुनहु सकल पुर नर अरु नारी

रावण की आज्ञा पाकर सेवक चरणोंमें शिर झुकाकर तुरन्त दौड़ पड़े और सारे नगरमें सभी नर-नारियोंसे पुकारकर कह दिया ॥

आजु अभुक्त मूल भये बालक ❀ डारहु सागर सब कुल घालक
बोरे सबनि बोलि इक ठाईं ❀ भावी वश मधु माखी नाईं

आजके उत्पन्न बालक अभुक्त मूलमें पैदा हुए हैं, इसलिए उन सबको समुद्रमें फेंक दो, होनहार वश सबने सभी बालकों को एक ही स्थानमें लाकर शहद की मक्खीके समान डुबो दिया ॥

पाय अधार वृक्ष बट बोरा ❀ पीवन लगे क्षीर चहुँ ओरा
पीवत क्षीर अब्द भरि साती ❀ पुष्ट भये भल निशिचर जाती

डुबाये हुए बालक वट-वृक्ष का आधार पाकर चारों ओरसे उस वट का दूध पीने लगे ॥ सात वर्ष तक वट का दूध पीकर वे सभी राक्षस बड़े पुष्ट हो गये ॥

पुनि सब एक संग तहँ जाई ❀ सुरसरि संगम भा तेहि ठाईं
तहँ शिव मन्दिर परम सुहावा ❀ सबनिबिलोकिमुदित शिरनावा

फिर वे सब एक साथ ही गङ्गाजीके संगम पर गये, वहाँ पर शिवजी का परम सुहावना मन्दिर था, जिसे देखकर सभीने प्रसन्न होकर शिर नवाया ॥

छन्द—शिर नाइ मुदित विलोकि शिव मन्दिर सुहावन पावनं ।
कछु दिन रहे तहँ सकल पुनि उठि चले सुनु अहिरावनं ॥
रावनपुरी ते दिशा प्राची कोश शत रस चलि गये ।
बैठे जलधि महँ पाइ थल वर शंभु-चरनन चित दिये ॥५॥

परम पवित्र और सुन्दर शिवजी का मन्दिर देखकर शिर नवाया और कुछ दिन तक रहनेके बाद फिर सब उठकर चल दिए । हे गरुड़ ! वे लंकाके पूर्व की ओर छः सो कोश चले गए। वहाँ समुद्रके तटपर सुन्दर स्थान पाकर शिवजीके चरणों को स्मरण करने लगे ॥५॥

दोहा—जानत नहिं उत्पत्ति निज, मन महँ करत विचार ।
गे तेहि ढिग जाकर बिदित, रवि ते छठवीं बार ॥१४६॥

वे अपनी उत्पत्तिको नहीं जानते थे, इससे मनमें विचार करते हुए शुक्राचार्यके निकट गए।१४६।

हरि अरि गुरु निज शिष्यन चीन्हा ❁ करत प्रणाम सुआशिष दीन्हा
कहि निज नाम सबनि समुझावा ❁ कुल गुरु जानि सुबिनय सुनावा

तब विष्णु-शत्रु दैत्योंके गुरु शुक्राचार्यने अपने शिष्योंको पहचानकर उनके प्रणाम करते ही उन्हें आशीर्वाद दिया ।। फिर सबको अपना नाम बतलाकर समझाया तो उन्होंने शुक्रको कुल-गुरु जानकर सुन्दर विनती सुनाई ।।

निज उत्पत्ति बूझि शिर नाई ❁ भृगुनन्दन तिन्ह सकल सुनाई
सुनि आपन वृत्तान्त लजाने ❁ लखि रुख भृगुनायक सन्माने

और प्रणामकर अपनी उत्पत्ति पूछी, तब शुक्राचार्यने सब कह सुनाया । तब अपने वृत्तान्त को सुनते ही सब लजा गये, इस रुखको देखकर शुक्राचार्यजी ने उनका बहुत सम्मान किया ।।

करि परितोष मन्त्र गुरु दीन्हा ❁ शिक्षा पाइ गमन तिन कीन्हा
ज्ञान लहेउ सब संशय त्यागी ❁ भये बिरंचि पद तब अनुरागी

गुरुने उन्हें सन्तोष देकर मन्त्र दिया और सभी राक्षस उनसे शिक्षा पाकर वहाँसे चल दिए। तब इस प्रकार ज्ञान पाकर सन्देहको त्यागकर वे सब ब्रह्माके चरण की आराधना करने लगे ।।

निराहार बैठे इक आसन ❁ वर्ष सहस तप किय उरगासन
श्वास धारि कृत वर्ष हजारा ❁ रहे उर्ध्व मुख बिना अहारा

हे गरुड़जी ! बिना आहारके ही एक आसनसे बैठकर सबोंने एक हजार वर्ष तक तप किया ।। फिर श्वास धारण कर एक हजार वर्षतक ऊपर मुँह किये बिना भोजनके खड़े रहे ।।

दोहा—एक पाद पुहुमी दिये, अपर अंग अनयास ।
सकल पुष्ट तन मन हरष, सपनेहु भूख न प्यास ।।१४७।।

एक पैर पृथ्वी पर रखा और सब अंग आधार रहित किये, सभी शरीरसे पुष्ट और मनमें प्रसन्न थे, उन्हें स्वप्नमें भी भूख-प्यास नहीं लगती थी ।।१४७।।

तप अति उग्र बिचार बिधाता ❁ तिन ढिग गमने मन मुसुकाता
हंसारूढ़ कमण्डलु हाथे ❁ श्वेत मुकुट शुचि चारिउ माथे

तब ब्रह्माजी बड़ी उग्र तपस्या विचार मनमें मुसकुराते हुये हंस पर चढ़े ।। हाथमें कमण्डलु लिए और चारों शिरोंपर सफेद मुकुट धारण किये उनके समीप गये ।।

आनन चारि नयन बसु नीके ❁ चारिउ भाल भस्म शुभ टीके
उपमा किमि प्रभु सब जग अयना ❁ भाष्यो दयासदन तब बयना

चार मुख, सुन्दर आठ आँखें, चारों मस्तकों पर भस्मकी सुन्दर टीका लगी हुई थी ।। समस्त जगत्के निवास-स्थान प्रभुकी क्या उपमा दी जाय, तब दयासागर यह वचन बोले—।।

माँगहु वर जो सब मन भावा ❁ सुनेउ सबनि बिधि पद शिर नावा
नाथ चहत हम यह बरदाना ❁ हमहिं न कोउ जीतै मैदाना

वर माँगों, जो सबके मनको अच्छा लगे। यह सुनकर सबोंने ब्रह्माजीके चरणोंमें नमस्कार किया और कहा हे नाथ ! हम यही वरदान चाहते हैं कि हमें कोई युद्धमें न जीत सके ।।

एवमस्तु बिधि कहेउ बिचारी ❀ आन प्राणि नहिं मृत्यु तुम्हारी
हरि सुत है तुम्हार गुरु भाई ❀ तेहिसन करेउ न कबहुँ लराई

तब ब्रह्माजीने विचार कर एवमस्तु कहा और कहा कि तुम्हारी अन्य किसीके हाथ मृत्यु न होगी ।। सुग्रीवका पुत्र तुम्हारा गुरु भाई है, उससे कभी युद्ध न करना ।।

दोहा—जो तेहि सन करिहौ समर, मरिहौ बचन प्रमान ।
एकहि कहँ बरदान यह, दै कह कृपानिधान ।।१४८।।

यदि उससे युद्ध करोगे तो मारे जाओगे, मेरे वचनको सत्य मानो । एक नारान्तकको ही यह वरदान देकर ब्रह्माजीने कहा ।। १४८ ।।

दियउ नारान्तक कहँ बरदाना ❀ रहे अपर जे धरि उर ध्याना
तिनसन वर ब्रूहि बिधि कहेऊ ❀ सुनत प्रमोद सबनि उर लहेऊ

नारान्तकको यह वरदान दिया, परन्तु जो दूसरे हृदय में ध्यान कर रहे थे, उनसे ब्रह्माजीने कहा—वर माँगो ! तो ऐसा सुनकर वे प्रसन्न हुए ।।

सुनिबिधिगिरासबनिकहस्वामी ❀ देहु एक वर अन्तर्यामी
देवासुर संग्रामहिं माहाँ ❀ जीतहिं हम यह वर सुरनाहाँ

अन्तर्यामी ब्रह्माकी वाणी सुनकर वे सब बोले कि हे स्वामी ! एक यह वर दो कि देवासुर संग्राममें हमारी जीत होवे ।।

अस कहि रहे दनुज सिर नाई ❀ तिनसन कहेउ बिरंचि बुझाई
तुम अजीत सबसे सब भाँती ❀ बानर भालु त्याग दुइ जाती

ऐसा कह वे राक्षस नमस्कार कर खड़े हो गए, तब ब्रह्माजीने समझाकर कहा—तुम केवल बन्दर और भालुको छोड़कर सबसे अजीत रहोगे ।।

यहि बिधिसबकहँ दै बरदाना ❀ ब्रह्मलोक गे ब्रह्म सुजाना
बिधि ते लहि बर तिन सुख बाढ़ा ❀ लागे करन बहुरि तप गाढ़ा

इस तरह सबको वरदान दे सुजान ब्रह्माजी ब्रह्मलोकको चले गये ।। तब ब्रह्माजीसे वर पाकर वे सब बड़े सुखी हुए और पुनः कठिन तपस्या करने लगे ।।

दोहा—गिरा गिरीश समेत सब, जपहिं निरन्तर नाम ।
जोरि युगल कर एकपद, निशि दिन आठो याम ।।१४९।।

सभी राक्षस दोनों हाथ जोड़कर एक पैरसे खड़े होकर रात-दिन आठो पहर निरन्तर शिव-पार्वतीका नाम जपने लगे ।। १४९ ।।

बिनु प्रयास ठाढ़े सब भाई ❀ क्षुधा तृषा निद्रा बिसराई
गुण सहस्र संवत सब ऐसे ❀ गये बीति प्रथमहिं तप जैसे

बिना प्रयास के ही सब भाई भूख, प्यास और नींद त्यागकर तीन हजार वर्षतक पहले की तरह तपस्या किए ।।

सबनि शीश पुनि अवनी दीन्हा ❀ उभय चरण ऊपर कहँ कीन्हा
जोरे कर निरोध करि श्वासा ❀ जपहिं मन्त्र शंकर वर आशा

तब फिर सबोंने नीचे सिर और ऊपर पैर करके हाथ जोड़ और श्वांस रोककर श्रेष्ठ वरकी इच्छासे शिवजीका मन्त्र जपकर तप करने लगे ॥

मुनि जन तिन कर साधन देखी ❀ मन महँ मानत सकुच विशेषी
हरि इच्छा बल हृदय बिचारी ❀ निरखि चले मुनि जपत पुरारी

मुनिजन उनके साधनको देखकर मनमें बहुत सकुचाने लगे । तब भगवान्की इच्छासे बलको जानकर मुनिजन शिवजीको जपते हुए चले ॥

अयुत अब्द बीते खगनायक ❀ भे प्रसन्न शिव जन सुख दायक
चढ़े बरद हिमसुता समेता ❀ आये तिन तट कृपा निकेता

हे गरुड़ ! जब दश हजार वर्ष बीत गये, तब कृपाके धाम शिवजी प्रसन्न होकर पार्वती सहित बैल पर चढ़कर उनके समीप आये ॥

दोहा—बोले तिनहिं प्रशंसि शिव, माँगहु बर मन भाव ।
नारान्तक करि दंडवत, बोला सुनु सुर राव ॥१५०॥

उनकी प्रशंसा करके शिवजी बोले—जो इच्छा हो वर माँग लो, तब नारान्तकने प्रणाम करके कहा—हे देवताओंके स्वामी ! सुनिये ॥१५०॥

मैं तप कियहुँ दरश तव लागी ❀ नाथ दीन जन चित अनुरागी
अब माँगत आवत मोहिं लाजा ❀ ठाढ़ रहा कहि निशिचर राजा

मैंने केवल आपके दर्शनार्थ तपस्या की थी, हे प्रभो ! आप तो भक्तवत्सल हैं ॥ इससे आपसे कुछ माँगते हुए लज्जा आती है ऐसा कहकर निशिचर नायक खड़ा ही रह गया ॥

माँगु सकुच तजि पुनि हर कहेऊ ❀ नारान्तक तब माँगत भयऊ
मोहिं विभव अस देहु गुसाईं ❀ भूप प्रजा नहिं परहिं लखाईं

फिर महादेवजी बोले—तुम संकोच छोड़कर माँगो, तब नारान्तक माँगने लगा ॥ हे सदाशिव ! मुझको ऐसा ऐश्वर्य दें ताकि राजा और प्रजाजनोंमें भेद-भाव न हो ॥

पुर अनयास बसहिं मम नाथा ❀ यह कहि रहा जोरि जुग हाथा
एवमस्तु कहि हर सुर ईशा ❀ गवने भवन सहित बागीशा

और हे प्रभो ! मेरा नगर बिना परिश्रमके ही बस जाय। ऐसा कह वे दोनों हाथ जोड़े खड़ा रह गया ॥ तब "एवमस्तु" कहकर शिवजी पार्वती सहित अपने स्थानको चल दिये ॥

शिव प्रसाद नारान्तक पावा ❀ अन्तरिक्ष पुर सपदि बसावा
पुर बिहबावल की रुचिराई ❀ कहत कछुक अब तुम सन गाई

तब शिवजीका वरदान पाकर नारान्तकने अन्तरिक्ष (आकाश) में शीघ्र ही अपना नगर बसाया जिसका नाम "बिहबावलपुर" रक्खा, जिसका कुछ वर्णन तुमसे गाकर कहता हूँ ।

दोहा—ऋतु रविगुनें कोटि सो, भवन बसे इक ठौर।
जातरूप मय नग जटित, अति शोभित चहुँ ओर ॥१५१॥

ऋतु (६) रवि (१२) गुने अर्थात् बहत्तर करोड़ गृह सबके एक ही साथ बसे, जिसमें नग-जटित फर्श सुवर्णके बने हुए चारों ओरसे अत्यन्त सुशोभित हो रहे थे ॥१५१॥

योजन ढाई शत चकलाई ❁ चौंसठ कोश उतंग सुहाई
दुर्गम दुर्ग जलधि चहुँ फेरा ❁ विस्मय विश्वकर्म मन घेरा

और ढाई सौ योजनका चौड़ा तथा चौंसठ कोसका ऊँचा बड़ा सुदृढ़ भव्य दुर्ग बना॥ जिसके चारों ओर समुद्र था और जिसे देख विश्वकर्माके भी मनको आश्चर्य होता था ॥

चारि दुआर कुलिश पट रूरे ❁ गढ़ भीतर चौहट निधि पूरे
बणिक पद्म धन तुच्छ बखाना ❁ बन उपवन सरिता सर नाना

चारों द्वारोंमें वज्रके किवाड़े थे और गढ़के भीतरी चौक धनसे परिपूर्ण थे। जिस बनियेके पास एक पद्म धन था वह छोटा वैश्य था और अनेक प्रकारके वन, बगीचे, तालाब-सरोवर थे ॥

बसत प्रजा पुर सघन अपारा ❁ नारान्तक गढ़ मध्य सँवारा
षोडश कोश कोट तहुँ ओरा ❁ मणि माणिक लागे नहिं थोरा

उस नगरमें अपार धनी प्रजा बसने लगी और नारान्तक उनका अधिनायक हुआ ॥ सोलह कोसमें किलेके चारों ओर कोट था जिसमें बहुतसी मणियाँ लगी हुई थीं ॥

हय गज रथ खच्चर समुदाई ❁ कहि न जाइ खग मृग विपुलाई
कोटि बहत्तर एकै साथा ❁ विद्या पढ़न लगे खग नाथा

हाथी, घोड़े, रथ, खच्चर आदिकी अधिकता वर्णन नहीं की जाती ॥ हे गरुड़जी ! फिर वे सब बहत्तर करोड़ एक ही साथ विद्या भी पढ़ने लगे ॥

दोहा—हरि प्रेरित तेहि काल महँ, दधिबल पहुँचा आय।
पुर बिहबावल निरखि सो, कछु दिन रहा लुभाय ॥१५२॥

हरि-इच्छासे उस समय वहाँ पर "दधिबल" नामक बानर आ पहुँचा और बिहबावल-पुरकी शोभाको निरख कुछ दिन वहाँ मोहित हो रहा ॥१५२॥

भावी वश निशिचर सँग कीशा ❁ वर्ष एक पढ़ सुनहु मुनीशा
गुरु इक बार कहेउ रिसियाई ❁ हतिहसि तैं आपन गुरु भाई

हे मुनिराज ! सुनो, भावीवश वह बानर राक्षसोंके साथ एक वर्ष तक वहाँ विद्या पढ़ता रहा॥ एक दिन इसके गुरुने कहा—रे मूर्ख ! तू तो अपने गुरुभाई का बध करनेवाला होगा ॥

बिनु अघ सुनि दधिबल गुरु शापा ❁ बिदा माँगि गवना करि दापा
मारग मिले देव ऋषि तेही ❁ गयउ सुकंठ-सुवन पग नेही

तब दधिबल बिना अपराधके ही गुरुका शाप सुनकर वहाँसे चल दिया और उसे मार्गमें देवर्षि नारदजी मिले, सुग्रीवका पुत्र दधिबल नारदजीका चरण पकड़कर दण्डवत् करने लगा।

लखि आशिष दै पूछा तेही ❀ दधिबल कवन काज गे जेही
तब नारान्तक पुर प्रभुताई ❀ दधिबल नारद मुनिहिं सुनाई

उसे देख कर नारदजीने आशीर्वाद दे उससे पूछा कि हे दधिबल! तुम किस कार्यसे वहां पर गये थे।। तब दधिबलने नारान्तकपुरी की महिमा नारदजीसे कह सुनायी ।।

सुनी निशाचर सम्पति भारी ❀ रहे ब्रह्मसुत हृदय बिचारी
क्षणक देवऋषि किय अनुमाना ❀ बार बार सुमिरे भगवाना

ब्रह्माजीके पुत्र नारदजी राक्षसों की बड़ी सम्पत्ति सुनकर मनमें विचार करने लगे ।। क्षण भरमें ही उन्होंने विचार कर बारम्बार भगवान्‌का स्मरण किया ।।

दोहा—दधिबल ते नारद कहेउ, सुनहु तात चित लाइ ।
तनु धरि जे हरिभक्त नहिं, जन्म बादि जग जाइ ।।१५३।।

फिर दधिबलसे नारदजी कहे कि हे पुत्र! मन लगाकर सुनो। जो शरीर धारण कर भगवान्‌के भक्त नहीं हुए उनके जन्म जगत्‌में अकारथ ही हो गये अर्थात् वे किसी कामके न हुए।।१५३।।

यह बिचारि भजु रामहिं ताता ❀ उपजा सुनत ज्ञान मुनि बाता
ऋषि पद परसि आशिषा पाई ❀ कपिपति सुत गवने हर्षाई

हे तात! यह विचार कर रघुनाथजी का भजन करो, मुनि की यह बात सुनकर उसे ज्ञान उत्पन्न हो गया ।। वह ऋषिका चरण स्पर्श कर आशीर्वाद पाकर प्रसन्न हो चल दिया ।।

सपदि कोश तब पहुँचा तहवाँ ❀ पयनिधि मध्य रुचिर गिरि जहवाँ
धवलागिरि तेहि नाम सुनावा ❀ सुभग देखि कपिवर मन भावा

तब दधिबल शीघ्रतासे वहां पर आया, जहाँ कि समुद्रके मध्यमें एक सुन्दर पर्वत था ।। उस धवलागिरि पर्वत को देखकर कपिराज मनमें बड़ा प्रसन्न हुआ ।।

गौरि गिरीश सुमिरि रघुराई ❀ कीन्ह निवास मनहिं हर्षाई
नारद ताहि देइ उपदेशा ❀ गये बिरञ्चि धाम खग ईशा

और शिव-पार्वती तथा गणेशजीको मनमें स्मरण कर प्रसन्न चित्तसे वहां वास करने लगा ।। हे गरुड़जी! तब महर्षि नारदजी उसे उपदेश देकर ब्रह्मलोक को चले गये ।।

उत दशमुख सुत विद्या पाई ❀ जहाँ तहाँ की विविध लराई
विन्दु नाम इक निशिचर आहा ❀ सो खल रहा वितल थल माहा

उधर नारान्तक विद्या की प्रबलता पाकर जहां-तहां अनेक प्रकारके युद्ध करने लगा ।। "विन्दु" नामक एक राक्षस था जो दुष्ट वितल नामक स्थानमें रहता था ।।

सो०—अति रणधीर जुझार, चढ़े शक्रपर वहि बिपुल ।
कीन्हेउ समर अपार, अब्द एक श्रुति संत कह ।।११।।

वह बड़ा युद्ध-कुशल योद्धा था, एक समय बहुत सेना लेकर इन्द्रपर चढ़ गया और एक वर्ष पर्यन्त अपार युद्ध होता रहा, ऐसा श्रुति और संत लोग कहते हैं ।।११।।

सप्त कोटि निशिचर सँग ताके ❀ असित मेरु सम अति भट बाँके
सुनासीर कोपेउ इक बारा ❀ सब कहँ समर मध्य संहारा

सात करोड़ निशिचर अति रणधीर काले पर्वतके समान बड़े ही सुन्दर योद्धा थे ।। जिन सबका इन्द्रने महा कोप करके एक ही बार युद्धमें संहार कर दिया ।।

भाजि विन्दु केवल गृह गयऊ ❀ सुता नारि निशिचर सुख दयऊ
सब निशि भोग किया खलपापी ❀ उपजे बहु बालक परितापी

केवल विन्दु भाग कर घर चला गया, उसकी स्त्रीने राक्षस को बहुत आनन्द दिया ।। उस दुष्टात्माने उसके साथ रात्रि भर भोग किया, जिससे बहुत दुश्चरित्र पुत्र उत्पन्न हुए ।।

सप्त कोटि सुत नाना नामा ❀ सुन्दर वक्त्र सकल बलधामा
कोटि बहत्तर तनया जाके ❀ लाजहिं मृगलोचनि लखि ताके

वे सात करोड़ पुत्र अनेक नामके बलवान् थे और जिसके बहत्तर करोड़ कन्यायें थीं जिनके नेत्र देखकर मृगियोंके नेत्र लजाते थे । वह सबका पालन-पोषण अपने पुत्रोंके समान करता था ।।

तिन महँ विन्दुमती इक सुन्दर ❀ नभ चारिणि रतिरूप निरन्तर
निरखि विन्दु निज मन अनुमाना ❀ नहिं नारान्तक सम कोउ आना

उनके मध्य एक विन्दुमती नाम की आकाश-चारिणी कन्या थी, जो रति का ही रूप अर्थात् बड़ी सुन्दरी थी ।। विन्दुने नारान्तक को देखकर विचार किया कि नारान्तकके समान इसके लिए दूसरा नहीं है ।।

दोहा—यह विचारि चित विन्दु तब, नारान्तकहिं बुलाय ।
विन्दुमती आदिक सुता, सुन्दर साज सजाय ।।१५४।।

तब विन्दुने नारान्तक को बुलाकर विन्दुमती आदिक कन्याओंका सुन्दर साज सजाकर।१५४।

सकल सुता इक संग विवाही ❀ यथायोग जेहि कहँ जस चाही
नारान्तक सब सेन समेता ❀ करि विवाह फिरि गयउ निकेता

उन सब कन्याओं को एक ही साथ नारान्तकके सब साथियों को यथा योग्य विवाह दिया ।। फिर नारान्तक विवाह करके अपनी सेनाके साथ घर चला गया ।।

पुर बिहबावल कीन्ह बसेरा ❀ प्रजा सहित सुख करत घनेरा
जो तिय चहिय बिबुध गृह भाई ❀ सो भावीवश निशिचर पाई

और बिहबावलपुरमें जाकर प्रजा समेत आनन्दसे राज्य करने लगा ।। हे भाई ! जो स्त्री देवताओंके यहां उचित थीं, वे भावीवश राक्षसोंके यहां आयीं ।।

नारि पतिव्रत जेहि घर माहीं ❀ तेहि प्रताप नित अमर डराहीं
विन्दुमती विद्या सम ताता ❀ बुधजन सभा चरित विख्याता

जिसके घरमें पतिव्रता स्त्री होती है उसके सतीत्वके प्रभावसे देवता भी नित्य डरा करते हैं ।। विन्दुमती सरस्वतीके समान थी, जिसकी विद्वानोंकी सभामें प्रशंसा होती थी ।।

नारान्तक उतपति मैं गावा ❀ सुनु खगेश पुनि चरित सुहावा
पुनि पुनि हरिहर पद शिरनाई ❀ गुरुसन सुनेउ सो कहेउँ बुझाई

हे गरुड़जो ! नारान्तककी उत्पत्ति मैंने कही, अब आगे का सुहावना चरित्र सुनिये ।। फिर-फिर विष्णुजी और शिवजीके चरणोंमें शिर नवा गुरुजीसे जो सुना था, उसे समझाकर कहा ।।

दोहा—चारण दशमुखको तुरत, मग चलि पहुँचा जाय ।
ग्रामान्तर योजन युगल, ठाढ़ भयउ हरषाय ।।१५५।।

इधर रावणका दूत तुरन्त मार्गसे चलकर शीघ्र बिहबावलपुरमें जा पहुँचा । जब आठ कोस नगरका अन्तर रह गया, तब प्रसन्न चित्त हो वहाँ खड़ा हो गया ।।१५५।।

तेहि मारुत दिशि कानन भारी ❀ पर्ण लेत देखेउ तहँ बारी
सकुचि समीप जाइ भा ठाढ़ा ❀ बूझे ताहि धीर धरि गाढ़ा

वहाँसे उत्तर दिशामें एक बड़ा वन था जिसमें एक वारीको पत्ते तोड़ते हुये देखा ।।१।। तब वह उसके समीप जाकर सकुचकर खड़ा हो गया और बड़े धैर्यके साथ उससे पूछा ।।२।।

कवन रीति यहि पुर महँ भाई ❀ तरुपर चढ़त भूप सुत आई
चार बचन सुनि सो मुसुकाना ❀ कवन नगर तुम बसत अजाना

हे भाई ! इस नगरकी कैसी रीति है, जो राजकुमार भी आकर वृक्षपर चढ़ते और पत्ते तोड़ते हैं ।।३।। इस प्रकार दूतका वचन सुनकर वह मुसकुराया और बोला—रे अजान ! तुम किस नगरमें रहता है ।।४।।

नारान्तक नृप कर जो बारी ❀ तेहि कर सेवक से लघु चारी
धूम्रकेतु तेहि उतर न दीन्हा ❀ कछु डरि निज पुनि मारग लीन्हा

तुझे मालूम नहीं, जो यहाँका राजा नारान्तक है, उसके बारीका मैं छोटा सेवक हूँ ।।५।। धूम्रकेतु उसके वचनको सुनकर कुछ उत्तर नहीं दिया और कुछ डरकर अपना मार्ग लिया ।।६।।

लिये कनक घट सुखमा पूरी ❀ बारि लेन आई तिय रूरी
देखि भयउ तेहि संशय भारी ❀ बूझा सत्य कहहु सुकुमारी

उस समय सोनेका घड़ा हाथमें लिये एक सौभाग्यवती सुन्दरी स्त्री जल भरनेको आयी ।।७।। उसे देखकर धूम्रकेतुको बड़ा संशय हुआ, उसके समीप जाकर पूछा कि सुकुमारी तुम सत्य कहो ।।८।।

दोहा—तुम्हरे पुर महँ चेरि नहिं, रानी कहहु स्वभाव ।
आइउ तुम जल भरन कहँ, बोलहु त्यागि डराव ।।१५६।।

हे रानी ! तुम अपने यहाँके स्वभावको तो कहो । क्या तुम्हारे नगरमें दासियाँ नहीं हैं, जो तुम जल लेनेको आयी हो ? निर्भय हो कहो ।।१५६।।

दूत बचन सुनि निशिचर चेरी ❀ बोली हँसकर एकहि बेरी
नारान्तक दासिन की दासी ❀ हम ताकी दासी विश्वासी

दूतकी बात सुनकर राक्षसकी चेरी तत्काल हँसकर बोली—मैं नारान्तकके दासियोंकी दासी विश्वासी दासी हूँ ।।२।।

सदा भरौं यहि सागर पानी ❀ इहँ आवहिं केहि कारण रानी
कहिहउ और काहु अस बाता ❀ पैहहु मार मुष्टिका लाता

मैं सदैव इस सागर में पानी भरनेके लिये आती हूँ, भला रानी किस कारणसे यहाँ आवेंगी ? यदि अन्य किसीसे ऐसी बात कहोगे तो घूँसे-लातोंकी मार खाओगे ॥ ४ ॥

अस कहि गमनी लै जल झारी ❀ तेहि सँग धूम्रकेतु पगु धारी
गढ़ भीतर कीन्हेसि पैसारी ❀ निरखे विपुल कूप सर बारी

ऐसा कहकर वह जलकी झारी लेकर चल दी; उसके साथ ही धूम्रकेतु भी चला ॥५॥ जब गढ़के भीतर गया तो वहाँ पर अनेक कुएँ, तालाब और बाग देखें ॥ ६ ॥

नाना गज रथ खच्चर घोरा ❀ फिरत बिलोकत पुर चहुँ ओरा
अन्तर गढ़ तेहि चारि दुवारा ❀ तहाँ न चर पावत पैसारा

अनेक हाथी, रथ, घोड़े नगरके चारों तरफ फिरते हुये देखा ॥७॥ उस राजभवनके भीतर चार द्वार थे, वहाँ दूत प्रवेश नहीं पा रहा था ॥ ८ ॥

छन्द—पावत नहीं पैसार चर गति द्वार लगि फिरि आयऊ।
यहि भाँति रावण-दूत घटिका युगल दिवस गँवायऊ ॥
मनमहँ बिसूरत ठाढ़ चौहट मध्य लों वह रहि गयो।
निशिचर निकन्दन होन लगि बिधि ताहि इक अवसर दयो।६॥

तब वह दूत भी भीतर नहीं जा सका और लौट आया। इस तरह रावणका दूत धूम्रकेतु खड़े दो घड़ी दिन व्यतीत कर दिया ॥ चौराहे पर खड़ा होकर वह मनमें विचार करने लगा और दोपहर तक वहाँ ही खड़ा रह गया। उसी समयमें राक्षसोंका नाश होनेके लिये ब्रह्माने उसे एक अवसर दिया ॥ ६ ॥

सो०—गवनेउ भूपति द्वार, नृत्य करन इक कौतुकी।
लीन्हें धरि तेहि सार, गढ़ इमि कीन्ह प्रवेश चर॥१२॥

एक खेलाड़ी नारान्तकके यहाँ नृत्य करनेको चला तो उसने उसीका साथ पकड़ लिया और इस प्रकार उस दूतने किलेमें प्रवेश किया ॥ १२ ॥

बैठेउ सभा नारान्तक जाई ❀ कोटि बहत्तर संयुत भाई
व्योम तीन रसगुण बसु एका ❀ अंक रीति लिखि गुणी विवेका

जाकर देखता है कि सभामें नारान्तक बहत्तर करोड़ भाइयोंके साथ बैठा है ॥ १ ॥ वहाँ अट्ठारह लाख छत्तीस हजार विवेकी गुणवान् बैठे थे ॥ २ ॥

बन्दी जन नट कौतुक करहीं ❀ प्रति दिन कवि कोविद उच्चरहीं
रावण-दूत सभा को देखी ❀ मन महँ चकित भयउ विशेषी

बन्दीजन और नट उसकी सभामें खेल करने लगें, नित्य प्रति कवि पण्डित नारान्तकका यश बखानते थे ॥३॥ रावणका दूत उसकी अद्भुत सभाको देख मनमें बहुत चकित हो गया ॥४॥

तब चारण मन अस अनुमाना * कोटि बहत्तर रूप न आना
भूषन बसन सुआसन जोहा * देखि तिनहिं चारण मन मोहा

तब दूतने मनमें अनुमान किया कि बहत्तर करोड़ एक ही समान हैं ॥५॥ उनके सुन्दर गहने, वस्त्र और आसन देखकर दूत का मन मोहित हो गया ॥ ६ ॥

याम दिवस गत अवसर पावा * नारान्तक कहँ शीश नवावा
दीन्ह पत्रिका पद शिर नाई * कुशल तासु बूझेउ हर्षाई

जब एक पहर दिन चढ़ आया तब अवसर पाकर उसने नारान्तकके चरणोंमें शीश नवाया ॥७॥ और उसके चरणोंमें सिर नवाकर रावणकी पत्रिका दी तथा उसने प्रसन्न होकर कुशल पूछा ॥८॥

दोहा—नारान्तक निज कुशल कहि, बूझा दशमुख हेत ।
समाचार गढ़ लंककर, बरणेउ दूत सचेत ॥१५७॥

नारान्तकने अपने कुल का कुशल कह कर, रावण की कुशल पूछी । तब सचेत हो कर दूतने गढ़ लंकाका समाचार कह सुनाया ॥ १५७ ॥

चर भाषित नारान्तक सुनेऊ * क्षणक माहिं सब कारण गुनेऊ
पुनि पत्री निशिचर-पति बाँची * मानो बार बार सब साँची

नारान्तक दूत की बात सुनकर क्षण भरमें सब कारण को समझ लिया ॥१॥ राक्षस-राज नारान्तकने फिर उस पत्र को पढ़ा तो बारम्बार मानो सब सच्ची बातें थीं ॥ २ ॥

उठेउ सभा ते हृदय रिसाई * गा निज भवन सोच सरसाई
बिन्दुमती कहँ बाँचि सुनाई * पितु पर भीर पत्रिका आई

मनमें क्रोध करके सभासे उठा और तुरन्त ही विचार करते हुए अपने महलमें गया ॥३॥ पत्रिका पढ़कर विन्दुमतीको सुनाया और कहा कि पिता पर संकट है, इससे बुलाया है ॥४॥

समाचार सुनि कह तेइ नारी * तुम जनि करहु राम सन रारी
गहहु चरण पिय अकसर जाई * रसन सफल करु बिनय सुनाई

तब उस समाचार को सुनकर स्त्रीने कहा—आप रामजीसे बैर मत करिये ॥५॥ हे प्रिय ! आप अकेले जाकर उनके चरण पकड़िए और विनय सुनाकर जिह्वा सफल करिये ॥६॥

माँगि भक्ति वर प्रेम दृढ़ाई * निर्भय राज्य करहु घर आई
नारि बचन तेहि मनहिं न भावा * तब उठि कोट द्वार खुलवावा

उनसे भक्तिका वरदान मांग और प्रेमको दृढ़कर घर आइये तथा निर्भय होकर राज्य करिये ॥७॥ तब स्त्री की बात उसे अच्छी न लगी, उसने वहाँसे उठ कर किले का द्वार खुलवाया ॥८॥

दोहा—कहेउ बजाय निशान घन, साजहु सब चतुरंग ।
जन्मभूमि जावा चहहुँ, पितु चारनके संग ॥१५८॥

उसने सब चतुरंगिणी सेना सजाने और डंका बजाने की आज्ञा देते हुए कहा कि मैं पिताजीके दूतके साथ अपनी जन्म-भूमि को जाना चाहता हूँ ॥ १५८ ॥

आयसु दीन्ह नारान्तक राजा ❀ लागे निशिचर सजन समाजा
अमित बाजि गज उष्टर नाना ❀ रथ खच्चर खेचर बहु याना

राजा नारान्तक की आज्ञा पाते ही राक्षस अपना समाज सजाने लगे ।।१।। अनेक सुन्दर घोड़े, हाथी, ऊँट, रथ, खच्चर, छकड़े तथा और बहुतसे विमान ।। २ ।।

नाना अस्त्र शस्त्र गहि पानी ❀ निशिचर अनी न जाइ बखानी
ते सब संयुग साज सजाई ❀ विविध निसान हने हर्षाई

अपने अनेक अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित राक्षसी सेना, जिसका वर्णन नहीं हो सकता ।।३।। युद्धके समस्त साजों को सजाकर प्रसन्नतापूर्वक निशान (डंके) बजाये ।।४।।

कंत जात निश्चय जिय जानी ❀ बिन्दुमती निज चित अनुमानी
राम बिरोध न यहि कल्याना ❀ महूँ संग अब करहुँ पयाना

तब विन्दुमतीने अपने स्वामी (नारान्तक) को जाते हुए निश्चय जानकर मनमें अनुमान किया कि ।।५।। रामजीके विरोधसे इनका कल्याण नहीं होगा, अतः मैं भी साथ चलूँ ।।६।।

भूषन बसन सुअंग बनाई ❀ कन्त चरण गहि विनय सुनाई
सास ससुर दर्शन हित नाथा ❀ हमहूँ चलब प्राणपति साथा

आभूषण और वस्त्रसे अपने अंगको सुन्दर सजाकर पतिके चरणोंको पकड़ कर विनय सुनाने लगी कि ।।७।। हे प्राणपति ! सास और ससुरके दर्शन निमित्त मैं भी आपके साथ चलूंगी ।।८।।

दोहा—दशमुख सुत सुनि तिय बचन, हृदय परम सुख मानि ।
कहेउ चलहु सब सखिन सह, प्रमुदित छाँड़ि गलानि।।१५९।।

तब नारान्तकने अपनी स्त्री की बात सुनकर हृदयमें बहुत सुख माना और कहा—तुम अपने सब सखियोंके साथ प्रसन्नतापूर्वक ग्लानि छोड़कर चलो ।। १५९ ।।

सुनि पति बचन रानि हर्षानी ❀ चली संग लै सखी सयानी
लै दल नारान्तक पग धारा ❀ अमित सेन को कहि सक पारा

पति की बात सुन रानी विन्दुमती प्रसन्न हो अपनी श्रेष्ठ सखियोंको साथ लेकर चली ।।१।। अपार सेना, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता, साथमें लेकर नारान्तक चला ।। २ ।।

बुधजन कहत सुनहु खगराजा ❀ अयुत सतावन बाजत बाजा
धूम्रकेतु कहँ ढिग सँग लीन्हे ❀ अति आतुर गमना रिस कीन्हे

काकभुशुण्डिजी गरुड़जीसे कहते हैं-हे गरुड़! सुनो, बुद्धिमान् लोग कहते हैं कि उस सेनामें दश हजार सैनिक सत्तावन प्रकारके बाजे बजा रहे थे, धूम्रकेतुको साथ लेकर बड़ी शीघ्रतासे क्रोधकर चला ।।

चलतशकुन मग ताहि न होई ❀ गनइ न मृत्यु-विवश शठ सोई
तासु पयान जानि दिगपाला ❀ जिय महँ संशय करत विशाला

चलते समय मार्गमें उसे अपशकुन हो रहे थे पर मूर्ख मृत्युवश होनेसे कुछ नहीं गिनता था ।।५।। तब दिक्पाल उसके पयान को जानकर मनमें बड़ा सन्देह करने लगे ।। ६ ।।

कोल कर्म अहिपति अति डरहीं ❀ पुनि पुनि राम चरण चित धरहीं
समुझि रामबल संशय त्यागा ❀ सुर बिशेष प्रभु-पद अनुरागा

बाराह, कच्छप, शेषजी अत्यन्त भय पाए तथा फिर-फिर रामजीके चरणोंमें मनको लगाये ।।७।। फिर देवताओंने रामजीका बल समझ, संशय त्याग प्रभुके चरणोंमें विशेष प्रीति की ।।८।।

दोहा—नारान्तक लंका तुरत, दल समेत नियरान ।
दिग योजन दल रहउ जब, सुनु मुनीश सज्ञान ।।१६०।।

नारान्तक अपने दल सहित लंकाके निकट शीघ्र आया. जब चालीस कोस जाना बाकी रह गया, तब क्या हुआ, हे ज्ञानी मुनिराज ! सुनो ।। १६० ।।

इहाँ कृपालु रमेश खरारी ❀ असित जलद सम सेन निहारी
प्रभु सर्वज्ञ नीति हित सेतू ❀ सचिव बोलि कह रघुकुल केतू

यहाँ कृपालु लक्ष्मीपति रामजीने काले बादलके समान सेना आते हुए देखकर ।।१।। मंत्रियोंको बुलाकर पूछा, यद्यपि प्रभु सर्वज्ञ हैं, तथापि नीति मर्यादाके निमित्त ऐसा न किया ।।२।।

सखा बिलोकहु दक्षिण ओरा ❀ गर्जत घन आवत नहिं थोरा
उमा राम सब अन्तर्यामी ❀ चरित हेतु बूझा अस स्वामी

हे सखा ! दक्षिणकी तरफ देखो तो बादल गर्जता हुआ आता है ।।३।। शंकरजी कहते हैं--हे पार्वती ! यद्यपि रघुनाथजी अन्तर्यामी हैं, तथापि कौतुक करनेके निमित्त ऐसा पूछा ।।४।।

राम बचन सुनि दशमुख भ्राता ❀ कह हँसि गहि सो पद जल जाता
देव देव नहिं दल जलबाहा ❀ अहइ नारान्तक निशिचर नाहा

तब रामजीके वचन सुन, रावणका भाई विभीषण हँसकर उनका चरण-कमल पकड़कर बोला ।।५।। हे देव ! देव ! यह बादलोंका दल नहीं, किन्तु यह राक्षस नारान्तक आ रहा है ।।६।।

बिहबावलपुर बसत गुसाईं ❀ पठवा तेहि दशकन्ध बुलाईं
आवत धूम्रकेतु चर संगा ❀ करत कुलाहल नाद उतंगा

हे स्वामी ! यह बिहबावलपुरमें रहता है, इसे रावणने बुला भेजा है ।।७।। धूम्रकेतु दूतके साथ वही अनेक कुलाहल और चिग्घाड़ करता हुआ आ रहा है ।।८।।

दोहा—तेहि सँग गुणी अनेक प्रभु, गावत हनत निशान ।
सेन संग चतुरंग खल, डोलत विविध बितान ।।१६१।।

हे प्रभो ! उसके संगमें अनेक गुणी भी गाते और बजाते हैं, वह दुष्ट अपने साथ चतुरंगिणी सेना लिये विविध विस्तारसे घूमते हैं ।।१६१।।

यह प्रभाव तेहि सुनि हनुमाना ❀ बिहँसे प्रभु बल बुद्धि निधाना
पाइ राम रुख पवन कुमारा ❀ उठे हरषि हिय गरजि प्रचारा

उसका यह प्रभाव सुनकर, हनुमान् और साहस, बल तथा बुद्धिके सागर रामजी हँसे ।।१।। पुनः रामजीका रुख पाकर हनुमान्जी हृदयमें प्रसन्न हो गर्जन कर ललकारकर उठे ।।२।।

सहित लषन प्रभु पद शिरनाई ॐ धाये कहि जय जय रघुराई
बातचीत निशिचर समुदाई ॐ देखि सपदि ढिग पहुँचे जाई

लक्ष्मण सहित रघुनाथजीके चरणोंमें शिर नवाकर हनुमान्‌जी श्रीरामचन्द्रजीकी जय-जयकार बोलते हुए दौड़े ॥ हनुमान् राक्षसी सेनाके समुदायको देख शीघ्र निकट पहुँचे ॥४॥

कटकटाइ गरजे अति भारी ॐ देखेउ इमि आवत बनचारी
बुझेउ दूतहिं निशिचर त्राता ॐ यह आवत धावत को भ्राता

कटकटाकर बड़े वेगसे हनुमान्‌जी गर्जे, तब इस प्रकार बानरको वेगसे आते देख ॥५॥ राक्षसराजने दूतसे पूछा—हे भाई! यह कौन दौड़ा चला आता है ? ॥६॥

स्वर्ण शैल विकराल शरीरा ॐ गर्जत प्रलय जलद सम बीरा
तब नारान्तक सन कह दूता ॐ अहै पवन सुत बली अकूता

स्वर्ण पर्वतके समान भयङ्कर शरीर तथा प्रलय कालके बादलके समान गर्जता हुआ यह कौन वीर है ? ॥७॥ तब दूतने नारान्तकसे कहा—यही महाबली हनुमान् है ॥८॥

दोहा—सिन्धु लाँघि लंका दहेसि, पुनि हति अक्षय कुमार ।
कालनेमि कहँ मारि मग, लावा शैल उपार ॥१६२॥

इसीने समुद्र लाँघकर लंका जलाई, फिर अक्षयकुमारको मारा और कालनेमिको मार्गमें मारकर द्रोणचल पर्वतको उखाड़ लाया ॥१६२॥

पुनि अहिरावण सह परिवारा ॐ पैठि पताल सदन संहारा
लै आवा पताल दोउ भाई ॐ आवत अब तव ढिग सोइ धाई

फिर पातालमें जाकर राज-सदनका संहारकर अहिरावणका कुल सहित नाश कर दिया ॥१॥ वहाँसे तपस्वी दोनों भाइयोंको ले आया, अब वही दौड़ता हुआ आपके पास आ रहा है ॥२॥

यहि कर भुजबल अहै अपारा ॐ सुनि रिसान दशकंठ कुमारा
चाप चढ़ाय सुधारेसि बाना ॐ तजै न पाव गहेउ हनुमाना

हनुमान्‌की भुजाओंके अपार बलको सुनकर रावण-पुत्र नारान्तक बड़ा क्रुद्ध हुआ और ॥३॥ धनुष चढ़ाकर उसपर बाण चढ़ाया, परन्तु छोड़नेके पहले ही हनुमान्‌ने आकर पकड़ लिया ॥४॥

सो शर धनुष तोरि कपि डारा ॐ पुनि रिसाय उर मुष्टिक मारा
परा दशानन सुत महि कैसे ॐ मिश्र रसातल गा गिरि जैसे

बानर हनुमान्‌ने उस धनुष और बाणको तोड़ डाला और क्रोधकर उसकी छातीपर ऐसा मारा कि नारान्तक पृथ्वीपर ऐसा गिरा जैसे मिश्रनाम पर्वत आकाशसे गिरकर रसातलमें चला गया हो ॥

पवन पूत बलि लूम पसारा ॐ कोटिन रथ गहि तापर डारा
रथ सारथी चूर्ण सब भयऊ ॐ बिधि बस तेहिकर प्राण न गयऊ

तब पवनपुत्र हनुमान् अपनी पूँछको लम्बीकर करोड़ों रथ पकड़कर उसके ऊपर डाल दिए, उसका सारथी सहित सब रथ चूर्ण हो गया, परन्तु ब्रह्माके वरदानके कारण उसका प्राण नहीं निकला ॥८॥

दोहा—एक दण्ड अति विकल खल, रह भूतल धुनि माथ ।
पुनि शठ उठा संभारि तनु, धायहु धनु धरि हाथ ॥१६३॥

वह दुष्ट राक्षस एक घड़ी तक बहुत व्याकुल होकर माथा धुनता हुआ पृथ्वीपर पड़ा रहा। फिर वह मूर्ख शरीरसे सँभलकर उठा और धनुष हाथमें लेकर दौड़ा ॥१६३॥

छाँड़ेसि अगणित शायक कोपी ❀ क्षण इक कीश कटक गा तोपी
राम प्रताप प्रभंजन-जाया ❀ करगहि अरि शर तोरि बहाया

उसने अनेक बाण क्रोधकर छोड़े, जिससे क्षणभरके लिए बानरोंकी सेना छिप गई ॥१॥ रामजीके प्रतापसे हनुमान्‌ने हाथसे पकड़कर शत्रुके बाण तोड़कर फेंक दिये ॥२॥

देखि पवनसुत की प्रभुताई ❀ वर्षत सुमन बिबुध झरि लाई
जय जय पिंगअक्ष सुर भाखा ❀ सुनि दशकन्ध तनय मन माखा

हनुमान्‌जीकी यह प्रभुता देख देवता फूलोंकी वर्षा करने लगे ॥३॥ हे पिंगाक्ष ! (पीली आँख वाले !) "आपकी जय हो" यह देवताओंने कहा, इसे सुन नारान्तक मनमें बड़ा क्रोधित हुआ ॥३॥

नारान्तक अति हृदय रिसाई ❀ कपि तट पहुँचा आतुर धाई
यह भल कीश जो कछु बल धरहू ❀ मोसन मल्ल-युद्ध तुम करहू

नारान्तक हृदयमें अत्यन्त क्रोधित हो हनुमान्‌जीके निकट दौड़कर शीघ्रतासे पहुँचा ॥४॥ और बोला—यह अच्छा बानर है, यदि तुझमें कुछ बल है तो तुम मुझसे मल्ल-युद्ध करो ॥५॥

दोहा—सघन बाहिनी जलज बन, जिमि करि कृत उत्पात ।
रिपुन हनत तिमि वायुसुत, बिनु श्रम प्रमुदित गात ॥१६४॥

जैसे कमल-बनमें हाथी उत्पात करे, वैसे ही उस घनी सेनाके बीचमें हनुमान् बिना परिश्रम ही प्रसन्न होकर शत्रुओंका संहार करने लगे ॥१६४॥

करत समर आयउ तेहि ठामा ❀ जहँ नित होत रहा संग्रामा
लरत अकेल तहाँ हनुमाना ❀ धायउ बालि तनय बलवाना

लड़ते-लड़ते हनुमान् वहाँ आए जहाँ नित्य युद्ध होता रहा ॥१॥ तब उन्हें वहाँ अकेला लड़ते देख बलवान् अंगदजी भी दौड़े ॥२॥

ता पीछे कपि चमू अपारा ❀ चली कहत जय कृपा अगारा
लीन्हें गिरिवर तरु पाषाना ❀ जहँ तहँ करन लगे मैदाना

उनके पीछे बानरोंकी अपार सेना कृपाके धाम रामजीकी जय बोलती हुई चली ॥३॥ वह हाथमें बड़े-बडे पर्वत-पत्थर लिए जहाँ-तहाँ शत्रुओंको मार-मार कर मैदान करने लगे ॥४॥

अंगद आइ पवनसुत पाहाँ ❀ कहि जय जय रघुबर द्विज नाहाँ
दोऊ भट इक सँग करि हूहा ❀ हतन लगे अरि सेन समूहा

उसी समय अङ्गदजी हनुमान्‌के पास आकर ब्राह्मणोंके भक्त रघुनाथकी जय हो, ऐसा बोलने लगे ॥५॥ और दोनों वीर एक साथ ही शत्रुओंके समूहको मारने लगे ॥६॥

देखत भालु कीश कृत भारी ❋ भागि चले निशिचर भय भारी
देखि अनी निज त्रसित बहूता ❋ भा अति कुपित दशानन पूता

भालू और बन्दरों की भयंकर करनी देखकर राक्षस बड़े भय से भाग चले ।।७।। तब अपनी सेना को बहुत डरा हुआ देखकर रावण-पुत्र नारान्तक बहुत क्रुद्ध हुआ ।।८।।

छन्द—अति कुपित भा दशमुख-सुवन निज भटन शपथ दिवाइकै ।
फेरेउ सबनि करि कोप बोला जात कहाँ पराइकै ।।
बिधि दीन बिबिध अहार कपिदल खात कस न अघाइकै ।
बिनु भालु कपि महि करहु पुनि अरु धरहु तापस धाइकै ।७।।

तब रावण-पुत्र क्रोधकर अपने योद्धाओं को सौगन्ध धराकर फेरा और क्रोध से कहने लगा कि भागकर कहां जाते हो ? ।। ब्रह्माने यह बानर-समूह तुम्हारे भोजन के निमित्त दिया है, हे राक्षसों ! तुम लोग पेट भरकर इन्हें क्यों नहीं खाते हो ? । पृथ्वी बिना बानर और रीछकी कर दोनों तपस्वियों को दौड़कर पकड़ लो ।। ७ ।।

दोहा—सुनि नारान्तक परुष वच, रजनीचर समुदाय ।
लागे करन सकोप सब, माया कपट कुभाय ।।१६५।।

सब नारान्तकके क्रोधयुक्त वचन सुन राक्षस क्रोध से लड़ने और भयंकर माया फैलाने लगे ।। १६५।।

माया तिमिर पसार अपारा ❋ अस्त्र शस्त्र बहु भाँति प्रहारा
शक्ति शूल बर विशिख कराला ❋ डारहिं रज तरु शैल विशाला

राक्षस मायाका अपार अन्धेरा कर, अस्त्र-शस्त्रोंका बहुत प्रकारसे प्रहार करने लगे ।। तथा शक्ति, त्रिशूल, बड़े तीक्ष्ण बाण, बड़े-बड़े पत्थरों तथा धूल और वृक्षोंको उखाड़कर फेंकने लगे ।।२।।

गिरत ऋक्ष कपि लागत सायक ❋ उठहिं बहुरि कहि जय रघुनायक
निजदलबिकल बिलोकि खरारी ❋ सत्यसन्ध इक शर संचारी

बाण लगते ही भालू और बन्दर गिर जाते हैं परन्तु फिर रामजीकी जय बोलते उठ जाते हैं ।।३।। जब सत्यसंकल्प रामजी ने अपने दल को व्याकुल देखा तब एक बाण छोड़ा ।।४।।

रिपु शर काटि तिमिर करि दूरी ❋ प्रभु शर हते निशाचर भूरी
हरि निषंग महँ पुनि सो तीरा ❋ प्रविशेउ आइ सुनहु मुनि धीरा

प्रभु रामजी अपने बाणोंसे शत्रुके सब बाणोंको काट और अन्धकारको दूर कर दिये ।।५।। हे धीर मुनि ! फिर वह बाण रामजीके तरकसमें आकर प्रवेश कर गया ।।६।।

निरखि प्रकाश भालु अरु कीशा ❋ गहि गिरि तरु कहि जय जगदीशा
निशिचर अनी मध्य गे जबहीं ❋ दिये डारि गिरि रज तरु तबहीं

प्रकाश को देखकर भालू-बन्दर पर्वत और वृक्ष लेकर रामजी की जय बोलते हुए दौड़े ।।७।। और जब राक्षसोंकी सेनाके बीचमें पहुँचे तो उन पर वह पहाड़, धूलि और वृक्ष डाल दिए ।।८।।

दोहा—मरे तमीचर कोटि षट, जानि निशा परवेश ।
दलयुत अंगद पवनसुत, चले जहाँ अवधेश ॥१६६॥

जब छः करोड़ राक्षस मर चुके और जब रात्रि का प्रवेश जान लिया। तब अपने दल के सहित अंगद और हनुमान् जहाँ रामजी थे, वहाँ को चले ॥ १६६ ॥

अंगद हनुमदादि कपि भालू ❀ आये जहँ रघुबीर कृपालू
प्रभुहिं बिलोकि चरण शिर धारे ❀ भे श्रम रहित सकल सुख भारे

अंगद और हनुमान् आदि भालु और बन्दर कृपासागर रामजीके पास आए ॥१॥ प्रभु को देख चरणोमें शिर नवाया और दर्शन कर श्रम रहित हो सब सुखसे पूर्ण हो गये ॥२॥

अति आदर प्रभु किय सनमाना ❀ सब कहँ बैठन कह भगवाना
पुनि रजाइ लै थलहिं सिधाये ❀ छबि वारिधि प्रभु-पद शिर नाये

रामजी अत्यन्त आदर से सबका सम्मान किए। उन ईश्वर ने सबको बैठने को कहा ॥३॥ फिर प्रभुसे आज्ञा ले शोभाके समुद्र रामजी के चरणों में शिर नवाकर अपने-अपने स्थान को चले ॥४॥

अंगद हनुमत निकट निवासी ❀ रामचरण सुखमा सुखरासी
दोउ मरकट परसत प्रभु पाऊ ❀ देखि सुरन मन अतिही चाऊ

अंगद और हनुमान् निकटवर्ती होनेके कारण सुख और गुणकी राशि रामजीके चरणों को ग्रहण करने लगे ॥ ५ ॥ दोनों बंदर प्रभु राम जी का चरण स्पर्श करते हैं, जिसे देख देवताओं के मनमें बड़ा ही चाव होने लगा ॥६॥

हमहुँ होत जग कीश स्वरूपा ❀ पद गहि नित्य रहत नर भूपा
हरिहिं सिहाइ सुमन झरि लाये ❀ निज-निज आश्रम अमर सिधाये

कहने लगे कि यदि हम भी संसारमें बानर स्वरूप होते तो नित्य मनुष्योंके राजा रामजीके चरणों को दबाते ॥ ७ ॥ देवता इस प्रकार भगवान् की लालच करते हुए बानरों की बड़ाई कर फूल बरसाकर अपने-अपने आश्रम को चले गए ॥ ८ ॥

दोहा—बन्धु सचिव सेना सहित, शोभित श्रीभगवान ।
तुलसिदास ते धन्य नर, जे यह ध्यान लुभान ॥१६७॥

भाई लक्ष्मण और मन्त्री सुग्रीव सहित श्रीरामजी शोभित हैं। तुलसीदास जी कहते हैं कि वे नर धन्य हैं, जो इस ध्यान में लुभाये रहते हैं ॥१६७॥

उत नारान्तक सेन समेता ❀ गयउ जहाँ दशकन्ध निकेता
सुतहिं सुरारि मिला पुलकाई ❀ कुशल पूछि बैठेउ हर्षाई

इधर नारान्तक सेना सहित रावण के महल के पास गया ॥ १ ॥ रावण अपने पुत्रसे प्रसन्न होकर मिला और कुशल पूछ हर्षित होकर बैठा ॥ २ ॥

देखि नरान्तक की समुदाई ❀ दशमुख शठ सब सोच दुराई
जेहि विधि हर लावा जगमाता ❀ ताहि आदिकृत कृत विख्याता

नारान्तककी सेना देखकर मूर्ख रावणका सारा सोच दूर हो गया ॥३॥ तब जिस तरह वह जगत्-जननी सीताको हर लाया था, वह सब कथा आदिसे अन्त तक कह सुनाया ॥४॥

कुम्भकर्ण घननाद निपाता ❁ कहि बिलखत अहिरावण घाता
पितुमुख मलिन नरान्तक देखा ❁ बोला खल तब गर्व विशेखा

फिर कुम्भकर्ण और मेघनाद का तथा अहिरावण का मारा जाना कहकर रोने लगा ॥ ५ ॥ तब पिता को उदास देख कर दुष्ट नारान्तक बड़े गर्व से बोला ॥ ६ ॥

तजहु सकल संशय बिबुधारी ❁ करिहहुँ तात समर अति भारी
चमू कीश बिनु क्षिति करि ताता ❁ धरिहौं तापस होत प्रभाता

हे देव-शत्रु ! अब सारे सन्देहको त्याग दीजिए। हे पिताजी ! मैं प्रातःकाल बड़ा भारी संग्राम करूँगा। हे तात ! सबेरा होते ही पृथ्वीको बानर सेनासे रहित कर तपस्वियोंको पकड़ लाऊँगा ॥८॥

दोहा—ऋक्ष कीश जगदीश पद, शीश नाइ रुख पाइ।
धरि गिरि तरु धावत भयउ, कहि जय जय रघुराइ ॥१६८॥

भालू और बन्दर, रामजीके चरणोंमें शिर नवाय, उनका रुख पाकर, पत्थरों तथा वृक्षों को लेकर श्रीरामचन्द्रजी की जय-जयकार करते हुए दौड़े ॥ १६८ ॥

कपि घेरा गढ़ यह सुनि काना ❁ रावणसुत तब निपट रिसाना
साजि विपुल दल हनत निशाना ❁ गढ़ ते चला निकरि बलवाना

बन्दरोंने गढ़ घेर लिया, यह कानसे सुनकर नारान्तक बड़ा क्रोधित हुआ ॥१॥ बहुत बड़ी सेना लेकर नगाड़ा बजाते हुए वह बलवान् गढ़ से निकल पड़ा ॥ २ ॥

चारि द्वार करि कठिन लराई ❁ बिशिख बरषि कपिदल बिचलाई
निकरे निशिचर गढ़ते कैसे ❁ शलभ समूह शैलते जैसे

चारों द्वारों पर विकट युद्ध करके तथा बाणोंकी वर्षा कर बानर दल को विचलित कर दिया ॥३॥ वह राक्षस किलेसे ऐसा निकला, जैसे पर्वतसे टिड्डी दल निकले ॥४॥

मारुत सुत देखा कपि भाजे ❁ कटकटाइ अति विक्रम गाजे
कपि लंगूर चहुँ ओर जमाई ❁ रोके खल निशिचर समुदाई

तब हनुमान् बानरोंको भागते हुये देख बड़े जोरसे गर्जन किये ॥५॥ उन्होंने कटकटा कर चारों तरफ पूँछ बढ़ाकर दुष्ट राक्षसोंके समुदायको भागनेसे रोका ॥ ६ ॥

पटकत महि निशिचर फल बेलू ❁ केतिक देत विदिश दिशि मेलू
इक दिशि इमि हरि कृत संग्रामा ❁ दिग दूजो अंगद बल धामा

बेलके फलके समान राक्षसोंको पटकने लगे, अनेकोंको दिशाओंमें फेंकने लगे ॥७॥ एक ओर तो हनुमान् युद्ध करते थे और दूसरी दिशा की ओर बलके धाम अंगदजी लड़ते थे ॥८॥

दोहा—निशिचर सेना उदधि सम, मन्दर इव दोउ कीश।
मथत देखि जय रतन लगि, हँसे सकल सुर ईश ॥१६९॥

सागरके समान राक्षसोंकी सेना को हनुमान् और अङ्गद दोनों बन्दर मन्दराचल पर्वत की तरह जय-स्वरूप रत्नके निमित्त मथते हैं, यह देखकर सब देवताओंके ईश्वर रामजी हँसे ॥१६९

छं०-इमि निरखि पराक्रम करत कीश, भा क्रोध परम रजनीचरीश ।
करि प्रलय काल सम घोर शोर, धरि कुधर शस्त्र धाये कठोर ॥

बानरोंको इस प्रकार युद्ध करते देख दुष्ट नारान्तकको बड़ा क्रोध हुआ । उसने प्रलयकाल के समान बड़ा घोर शब्द किया, तब राक्षस कठोर शिला और शस्त्र लेकर दौड़े ॥

इक बार मार कर शर समूह, किय विकल अस्त्रहनि कीश जूह ।
कोउ टेरतकपिपतिचितवचोट, कोउ सुरति करत निज धाम ओट ॥

एक ही बार अनेक बाण तथा अस्त्र प्रहार करके बानरोंको भयभीत कर दिया । बन्दर पुकारने लगे कि हे सुग्रीव ! मेरी चोटको देखो और कोई घर की याद करने लगे ॥

यहि बीच नरान्तक कर-प्रधान, तेहि धाय गहेउ युवराज पान ।
बहु भट लपटाने अंग-अंग, सब संग उठेउ अंगद उतंग ॥

उसी समय नारान्तकके मंत्रीने अंगदका हाथ पकड़ा और बहुत राक्षस योद्धा भी लपट गए, तब अंगदजी सबके साथ ही आकाश-मण्डलमें उछल गये ॥

नभ कीश कीन्ह कौतुक अभूत, रविमण्डल पहुँचेउ बालि पूत ।
निशिचर जारे सब तपन-आँच, पुनि आयउ जहाँ संग्राम राँच ॥

आकाशमें अंगदजी अनेक प्रकार की क्रीड़ा कर, सूर्य-मण्डलके निकट चले गये । राक्षसोंको जलती हुई अग्निमें जला दिये और वे अंगदको छोड़ गिर पड़े । फिर संग्राममें आये ॥

यह निरखि अपर यूथप पिशाच, तुर आइ गयउ सेना सनाथ ।
लै विषम शूल मारेसि प्रचण्ड, उरलाग आनि अति कठिन दण्ड ॥

यह देखकर राक्षसों का दूसरा सेनापति तुरन्त पिशाचोंकी सेना साथ ले आया और बड़ा ही तीक्ष्ण त्रिशूल लेकर जोरसे अंगदको मारा, वह अत्यन्त कठिन दण्ड इनकी छातीमें आ लगा ॥

महि परेउ तनय तारा तुरन्त, लखि दौरि परेउ हनुमन्त संत ।
सोउ शूल खैंचि मारेउ प्रचंड, उर लाग यूथपति सहस खण्ड ॥

हनुमान्‌ने जब अंगदको पृथ्वी पर मूर्छित होकर गिरते देखा, तब वे तुरन्त दौड़ पड़े और वही तीक्ष्ण त्रिशूल खींच उसकी छाती पर मारा जिसके लगते ही यूथपतिके हजारों टुकड़े हो गए ॥

सब चरित सुनि रविकुल दिनेश, कह जाहु बेगि अहिराज शेष ।
चले नाइ माथ शंकर मनाइ, धनु बाण बाँधि विकराल लाइ ॥

यह समाचार सुनकर श्रीरामचन्द्रजी बोले—हे लक्ष्मण ! तुम शीघ्र जाओ । इस प्रकार श्रीरामचन्द्रका वचन सुन शिर नवा शिवजीका स्मरण कर तीक्ष्ण धनुष-बाण लेकर चल दिये ॥

अंगद उर कर धरि सुमिरि राम, श्रमविगत भय उबल अतुल धाम

अंगदजीने रघुनाथजी का स्मरण करके हृदय पर हाथ धरा, जिससे कि महाबली अंगदजी श्रमरहित हो गये ॥ ८ ॥

दोहा—विगत भई मूर्छा तुरत, बहुरि चलेउ युवराज।
लक्ष्मण चाप टँकोर सुनि, फिरा कीश दल गाज ॥१७०॥

जैसे ही मूर्छा हटी कि अंगदजी फिर शीघ्र ही युद्ध करनेके लिए चल पड़े और लक्ष्मणजीके धनुषके शब्दोंको सुनकर बानर समूह उत्साहसे भरकर फिर लौट पड़ा ॥१७०॥

सुनि टंकोर शरासन निशिचर ❋ बधिर भये नहिं सुनत शब्द वर
वर्षा बिसिख कीन्ह अहिनाथा ❋ काटे पाणि पाँव बहु माथा

धनुषकी आवाज सुनते ही राक्षसगण बहरे हो गये, वह दूसरेकी आवाज नहीं सुनते थे ॥१॥ तब लक्ष्मणजीने बाणों की वर्षा कर बहुतोंके पैर और शिर काट डाले ॥२॥

बढ़हिं अकाश शीश भुज कैसे ❋ धुनकत तूल रोमगण जैसे
रुण्ड असीस फिरहिं रण धरणी ❋ यथा अकाल क्षुधारत करणी

वह काटे हुए शिर और बाहु आकाशमें कैसे उड़ते, जैसे रुई धुनते समय उसके रोएँ उड़ते हैं ॥३॥ बिना शिरके रुण्ड युद्ध भूमिपर फिरते हैं, जैसे अकालमें भूखे फिरते हैं ॥४॥

इत कपि भालु विजय अभिलाषे ❋ उतहिं निशाचर जय हित राखे
मारुत-सुत अंगद बलबीरा ❋ समर बाँकुरे अति रणधीरा

इधर तो रीछ, बानर जीतकी अभिलाषामें, उधर राक्षस अपनी जीतके निमित्त उड़ते हैं ॥५॥ बलवान् योद्धा अंगद और हनुमान् रणमें बहुत धैर्य करनेवाले थे ॥६॥

दोहा—अति अद्भुत करनी करहिं, ऋक्ष कीश बल भूरि।
कर पद बिनु करि रजनिचर, तिन मुख डारहिं धूरि ॥१७१॥

महाबली भालू और बन्दर अद्भुत कार्य करते हैं, वे राक्षसोंको बिना पैरके कर उनके मुँहमें धूल डाल देते हैं ॥१७१॥

बहुतन के शिर तोरि चलावहिं ❋ निज भुजबल रावणहिं जनावहिं
गये याम युग दिवस भवानी ❋ नारान्तक अधसेन सिरानी

बहुतों के शिर तोड़ रावण के पास अपना बल दिखलानेके लिए फेंक देते हैं ॥१॥ शंकरजी कहते हैं कि हे पार्वती ! दोपहर दिन होते-होते नारान्तककी आधी सेना मार डाली गई ॥२॥

मरे निशाचर अमित निहारी ❋ रावण सुवन कोप करि भारी
रथ समेत ऊपर नभ धाई ❋ भयउ अदृश्य अस्त्र झरि लाई

तब अपने अनेक राक्षसोंको मरा देख रावणका पुत्र नारान्तक बड़ा क्रुद्ध हुआ ॥३॥ वह रथ सहित आकाशमें जाकर छिप गया तथा अस्त्रोंकी वर्षा करने लगा ॥४॥

क्षण महँ करि मूर्छित कपि सैना ❋ पुनि शठ गा जहँ राजिव नैना
गर्जा मनहुँ मेघ समुदाई ❋ कहन लागि कटु बचन रिसाई

क्षण भरमें बानरी सेनाको मूर्छित कर, वह नीच रामजीके पास गया ॥ ५ ॥ और बड़ा क्रोध कर मेघके समान गर्जन करता हुआ, उन्हें कटु वचन कहने लगा ॥६॥

दोहा—शूल एक तेहि छाँड़ेउ, सो कर गहि ऋक्षेश ।
धाय तास उर मारेउ, भाखि जयति अवधेश ॥१७२॥

तब नारान्तकने एक त्रिशूल छोड़ा, उसे जामवन्तने बीचमें ही हाथमें पकड़ अवधेश रामजीकी जय पुकारते हुए नारान्तककी छातीमें मारा ॥१७२॥

लागत शूल सो मूर्छित भयऊ ❀ जामवन्त तब कर गहि लयऊ
बार अमित महि माँह पछारा ❀ बाँधि गाड़ि बालू महँ डारा

शूल लगते ही वह मूर्छित हो गया, तब जामवन्तने उसे हाथसे पकड़ लिया ॥१॥ तथा अनेकों बार पृथ्वीपर पटका और बाँधकर बालूमें गाड़ दिया ॥२॥

जागे सकल बलीमुख ऋच्छा ❀ लगे करन रण निज-निज इच्छा
जामवन्त यह हृदय बिचारा ❀ मरै नहीं यह खल मम मारा

इतनेही में सब बलवान् बानर और भालू उठकर युद्ध करनेकी अपनी-अपनी इच्छा करने लगे ॥३॥ तब जामवन्तने अपने हृदयमें विचार किया कि यह दुष्ट हमसे नहीं मरेगा ॥४॥

बिधि इच्छा पुनि ताहि उखारी ❀ मुष्टि चारि उर माँहि प्रचारी
गहि पद संचारा गढ़ माँहा ❀ सपदि परा जहँ निशिचर नाहा

हरि इच्छासे उसे उखाड़कर हृदयमें चार मुष्टिका मारी ॥५॥ फिर पैर पकड़कर लंकामें फेंक दिया, जो तुरन्त ही रावण के पास जाकर गिरा ॥६॥

दशमुख तब हाहा करि धावा ❀ नारान्तकहिं हृदय निज लावा
निरखि निशाचर नहिं समुदाई ❀ गढ़ कहँ सब ब्याकुल ह्वै धाई

तब रावण हाहाकार करता हुआ दौड़ा और नारान्तकको अपने हृदयसे लगा लिया ॥ नारान्तकको देख व्याकुल हो सब राक्षस लकाको चले गये ॥८॥

दोहा—कपिगण समय प्रदोष लखि, रामचरण धरि माथ ।
ठाढ़ भये तब तन चितय, दया दृष्टि रघुनाथ ॥१७३॥

इधर बानरगण भी सायंकाल देख रघुनाथजीके पास आये और चरणोंमें शिर नवाकर खड़े हुये, तब रघुनाथजीने कृपा-दृष्टिसे सबकी देहकी ओर देखा ॥१७३॥

बिनु श्रम कीन्ह सबनि जगदीशा ❀ गये सुवास भालु अरु कीशा
रुचिरासन आसीन रमेशा ❀ ढिग बीरासन उरग नरेशा

श्रीरामजीने सबको बिना श्रमके कर दिया, तब सभी भालू और बानर अपने स्थानोंको गये ॥ रामजी सुन्दर आसनपर विराजमान हैं तथा निकट ही में वीर आसनसे लक्ष्मणजी बैठे हैं ॥२॥

वहाँ सुरारि सुतहिं पौढ़ाई ❀ बिलखहिं तासु नारि समुदाई
होत प्रभात नरान्तक जागा ❀ पितु बिलोकि अति लज्जा लागा

वहाँ रावणने पुत्रको लिटा दिया, उसकी स्त्रियाँ व्याकुल हो रोने लगीं ॥ पुनः प्रातः-काल होते ही नारान्तक जागा और पिता को देखकर बड़ा लज्जित हुआ ॥४॥

रथ चढ़ि तुरत इकाकी धावा ❀ नभ रथ समर भूमि महँ आवा
कीस कपट यह मर्म न जाना ❀ होइ अलोप कीन्हेसि झरि बाना

वह तुरन्त अकेला ही रथपर चढ़ दौड़ा और आकाश-मार्गसे होकर रणभूमिमें आया ॥५॥ इस मर्मको बानरी सेना नहीं जानी, उसने छिपकर बाणोंकी झड़ी लगा दी ॥६॥

दोहा—धावहिं ब्योमहिं भालुकपि, ताहि न देखहिं नैन ।
घायल होइ गिरहिं महि, भाषत आरत बैन ॥१७४॥

बन्दर और भालु आकाशको जाते हैं, पर उसे नहीं देखते जिससे वे घायल होकर पृथ्वीपर गिरते तथा आर्तनाद करते हैं ॥१७४॥

देखि लंगूर सकल हरषाने ❀ मधु माखी सम सब लपटाने
कपि उर सुमिरि रमेश प्रतापा ❀ डारे सबनि पटकि करि दापा

बानरोंके समूह देख सब प्रसन्न हो शहदकी मक्खीके समान लपट गये ॥ तब बानरोंने हृदयमें रामके प्रतापको स्मरण कर सभी राक्षसोंको पटक दिया ॥२॥

काँचे घट सम दनुज बिदारी ❀ जयति राम जय लषन खरारी
सुभट छुअहिं पुनि फेरि लँगूरा ❀ भूमि गिरावहिं कोटि कँगूरा

कच्चे घड़ेके समान सभी राक्षसोंको चूर्ण करके राम और लक्ष्मणकी जय पुकारने लगे ॥३॥ जब राक्षस पूँछ छूते तो हनुमान् तुरन्त ही उन्हें लपेट कर पृथ्वीपर गिरा देते थे ॥

अति विशाल गहि कंचन खम्भा ❀ जिमि प्रयास बिनु कर आरम्भा
जनु ढाहत अपक्व घट जूहा ❀ कपि तिमि तोरत दनुज समूहा

फिर बिना परिश्रम के ही बड़े विशाल स्वर्णके खम्भेको तोड़ने लगे ॥५॥ जैसे कोई कच्चे घड़ोंके यूथको ढहा देवे, वैसे ही बन्दर राक्षसोंके समूहको तोड़ते हैं ॥६॥

दोहा—भयउ कोलाहल लंक अति, नारान्तक सुनि कान ।
नभते स्यंदन सहित शठ, प्रगटि परम रिसियान ॥१७५॥

लंकापुरीमें इस तरहसे अत्यन्त कोलाहल अपने कानोंसे सुनकर नारान्तक रथ सहित आकाशसे उतरा और बड़ा क्रुद्ध होकर प्रकट हुआ ॥१७५॥

निरखि दशा निज नारिन केरा ❀ कहन लाग कटु गिरा घनेरा
शठ आयउ संग्राम बिहाई ❀ लरत तियन सँग लाज न आई

तब अपनी स्त्रियोंकी यह दशा देखकर वह कटु शब्दोंमें कहने लगा कि ॥ हे मूर्खो ! संग्राम छोड़कर यहाँ आये, स्त्रियोंके साथ लड़ते तुम्हें लज्जा नहीं आती ॥२॥

अबलन पै बल भट न कराहीं ❀ छाँड़हु तियन लरहु मम पाहीं
सुनि मरकटन भयउ सुख भारी ❀ तजी निशाचरि दीन पुकारी

वीरलोग अबलाओंपर बल नहीं करते इसलिये स्त्रियोंको छोड़कर मुझसे लड़ो ॥३॥ यह सुनकर बन्दर बड़े प्रसन्न हुए और उन दीन पुकारती हुई स्त्रियोंको छोड़ दिये ॥४॥

भाजि भवन भययुत गइँ नारी ❀ लीन्ह कपिन्हकर सिला उपारी
सिल प्रहार हय स्यंदन भंजा ❀ ग्रायध तोरि सारथी गंजा

तब स्त्रियाँ डरके मारे घरमें भाग गईं। बानरोंने हाथसे शिला उखाड़ ली ॥५॥ तथा प्रहार कर नारान्तकके घोड़े और रथ चूर्ण कर उसके आयुध तोड़, सारथीको मार डाला ॥६॥

धरि पछारि रावण दृग देखा ❀ ब्याकुल कीसन कीन्ह विशेषा
लागे पद गहि खलन फिरावन ❀ नाचहिं गाय रमायन पावन

रावणकी आँखोंके देखते ही बन्दरोंने बड़ा व्याकुल कर दिया ॥७॥ फिर पैर पकड़कर उन दुष्ट राक्षसोंको फिराने लगे और नाच कर रघुनाथजीका पवित्र गुणगान आरम्भ कर दिया ॥८॥

दोहा–तोरत तिन तनु पटकि महि, कहत जयति रघुबीर।
करत युद्ध गत याम युग, कीश छहौं रणधीर ॥१७६॥

बन्दर राक्षसों को पृथ्वी पर पटककर उनके शरीर तोड़ डालते तथा रामजी की जय उच्चारण करते हैं। इस प्रकार छहों वीर बन्दरोंको लड़ते-लड़ते दो पहर बीत गया ॥१७६॥

अस्ताचल रवि कीन्ह प्रवेशा ❀ बंदेउ चरण जाइ अवधेशा
श्याम सरोरुह प्रभु तनु देखी ❀ पद धरि सिर सुख लहेउ विशेषी

इधर सूर्यने अस्ताचलमें प्रवेश किया, तब बानरोंने भी जाकर रामजीका चरण छुआ ॥१॥ वे प्रभुके श्यामल शरीरको देख चरणोंमें शिर नवा बहुत सुख पाये ॥२॥

राम सबनि सादर सनमाना ❀ को दयालु रघुबीर समाना
रघुबर कहा तिनहिं जब जाना ❀ आयसु पाइ गये निज थाना

रामचन्द्रजीने सबका आदरपूर्वक सम्मान किया, रामजी के समान और दयालु कौन है ? ॥३॥ तब श्रीरामचन्द्रजीने उनसे जाने को कहा, तो वे आज्ञा पाकर अपने स्थान को गये ॥४॥

भये बिगत श्रम बानर भालू ❀ अनुज सहित मन मुदित कपालू
सुनहु उमा ता निशि रघुनायक ❀ गावत जनगुण सब गुणग्राहक

तब रीछ-बानर श्रम रहित हो गये, लक्ष्मण सहित श्रीरामचन्द्रजी मनमें बहुत प्रसन्न हुए ॥५॥ हे पार्वती ! सुनो, उसी रात्रिमें श्रीरामचन्द्रजी, जो सबके गुणोंके ग्राहक हैं अपने भक्तों की बड़ाई करनें लगें ॥६॥

याम तीनि यामिनि गत जबहीं ❀ उत नारान्तक जागेउ तबहीं
शोक विवश मींजत दोउ हाथा ❀ लज्जित हृदय निशाचर नाथा

वहाँ तीन प्रहर रात्रि बीत गई तब नारान्तककी मूर्छा जागी ॥७॥ वह दुःखसे बेबस अपना दोनों हाथ मलने लगा और इस प्रकार वह राक्षस-राज मनमें बहुत लज्जित हुआ ॥८॥

छन्द–लाजि कै रथै सँभारि, बाजि साजि हृष्ट पुष्ट।
शंक छाँड़ि शस्त्र माँड़ि, गाड़ वीर संग दुष्ट ॥
भेरि दुन्दुभी निशान, गान बाड़ खेत कर्त।
धीर बीर अग्र दान, गाजि गाजि शब्द भर्त ॥ ९ ॥

तब इस प्रकार लज्जित हो उस दुष्टने रथको सँभाल कर हृष्ट-पुष्ट घोड़ोंको सजाया और शंका त्याग शस्त्रोंको संभाल प्रगाढ़ वीरोंको अपने साथमें लिया। भेरी, दुन्दुभी और डंके बजने लगे तथा युद्धके गाने गाये जाने लगे और वीर योद्धा घोर गर्जन करते हुए चले ॥९॥

छन्द—जीव आस त्रास नाश, बाजि माहु छंड दंड।
बंक शूर शंक दूर, बीरता सुपूर चण्ड॥
बाजि नाग शोर ओर, पूरिगे दसौ दिशान।
धूरि पूरि मेघ ओघ, शोध ना परा अपान॥१०॥

सबने जीवनकी आशा व भय त्याग दिया, माया-मोहको त्याग घोड़ोंको नचाते हुए निःशंक भावसे प्रचण्ड हो परिपूर्ण हो गए। घोड़े और हाथियोंके चिग्घाड़से दशों दिशायें भर गईं। धूम्राच्छन्न आकाश मानों बादल सा घिर गया, किसी को अपने-पराये का ज्ञान न रहा ॥१०॥

कूदि कूदि ब्योम पंथ, जाय आय धाइ भूमि।
अस्त्र शस्त्र काढ़ि काढ़ि, क्रुद्ध क्रुद्ध झूमि झूमि॥११॥

वीर उछल कर आकाश मार्ग को जाते और पुनः पृथ्वी पर आ जाते। तथा अस्त्र-शस्त्रों को निकाल कर क्रोध कर-करके झूम-झूम पड़ते ॥११॥

दोहा—प्रलय मनहु चाहत करन, अतिहि तमीचर चण्ड।
सुनु खगेश मर्कट विकट, जिमि धाये बरिबण्ड॥१७७॥

हे गरुड़जी ! राक्षसों की वह प्रचण्ड सेना तो मानों प्रलय करना चाहती थी। परन्तु दूसरी ओर बड़े-बड़े बानर जैसे दौड़े उसे भी सुनो ॥१७७॥

छन्द—निहारि हर्ष कीश ऋक्ष, फूलि फूलि शैल भे।
बजाइ कटकटाइ हूह, एक बार कै अभे॥
उपारि भूधरे अपार, वृक्ष अश्म श्रृंगहू।
मरे निसाचरारि रुण्ड, झुण्ड मुण्ड भङ्गहू॥१२॥

राक्षसों को देखकर बन्दर और भालू प्रसन्नतासे प्रफुल्लित हो पर्वताकार हो गए तथा वे भी निःशंक हो एक स्वरसे कटकटाते हुए हू-हू करने लगे। वे सब पर्वत श्रृंगों और बड़ी-बड़ी शिलाओं तथा वृक्षोंको उखाड़ कर प्रहार करने लगे। राक्षसोंका समूह बिना शिरके हो गया ॥

दोहा—कोटि बयालिस तमीचर, नारान्तक कर घात।
रामकृपा बल हति लखन, कपिन बिताई रात॥१७८॥

इस प्रकार नारान्तकके ४२ करोड़ राक्षसोंको बन्दरोंने मार डाला और रामजी की कृपासे दुष्टोंको मारकर बन्दरोंने वह रात्रि लक्ष्मण सहित व्यतीत कर दी ॥१७८॥

प्रभु तुणीर महँ हरि शर तबहीं ❋ प्रविशे कीन्ह उदय रबि जबहीं
देखि कटक निज परम बिहाला ❋ नारान्तक भट कोटि कराला

प्रातःकाल हुआ, रामजी का बाण आकर उनके तरकसमें घुस गया ।। तब अपने दल को अत्यन्त व्याकुल देख नारान्तकने एक करोड़ विकट योद्धाओंको फिर साथमें ले लिया ।।

करि बहु शपथ लियो सँग वीरा ❀ वर्षत शक्ति उपलगण तीरा
शर अस्तम्भन विपुल पँवारे ❀ भये अचल कपि टरहिं न टारे

फिर बहुत प्रतिज्ञा कर उन वीरोंको साथमें लेकर युद्धमें बढ़ते ही शक्तियों, पत्थरों और बाणोंकी वर्षा करने लगा ।। उसमें बहुतसे तो स्तंभन बाण चलाये, जिनके लगनेसे बन्दर जहांके तहां खड़े रह गये

लै लै पाश निशाचर धाई ❀ बाँधत जिमि चुंगल्नि शुक पाई
व्याध पींजरा सम बहु जाना ❀ भरे जान प्रति अयुत प्रमाना

तब राक्षसोंने पाश नामक हथियार ले-लेकर दौड़ कर उन सबको ऐसे बाँध लिया जैसे बहेलिया पक्षी को पाकर बांध लेता है ।। फिर ले जाकर जेलखानेमें बन्द कर दिया जिनमें दश-दश हजार बन्दर भर गये ।।

जो कपि लखे विपुल बल बंका ❀ ते मूर्छित फेंके गढ़ लंका
रावण देखि तनय की करणी ❀ बंदीजन जिमि भुजबल बरणी

जिन बड़े बलवान् बन्दरों को देखा उन बहुतों को तो मूर्छित कर उसने लंकाके किलेमें फेंक दिया ।। रावण अपने पुत्र की यह करनी देखकर भांटोंके समान पुत्र की प्रशंसा करने और उसके भुजबल को बखानने लगा ।।

दोहा—हरि इच्छा जान नहीं, सुतहिं सराहत मूढ़ ।
काल विवश मति संभ्रमित, सुनहु ऋषय बुधिगूढ़ ।।१७९।।

हे बुद्धिसागर मुनि ! सुनो, वह मूर्ख पुत्र की बड़ाई करता है, परन्तु प्रभुकी इच्छा को नहीं जानता । कारण की कालके वश होनेसे उसकी बुद्धि भ्रममें पड़ गई थी ।।१७९।।

अंगद हनूमान जब जागे ❀ नारान्तक सन जूझन लागे
क्षण इक कोश न पायउ लरई ❀ पुनि शर हति मूर्छा बश करई

इधर जब अङ्गद और हनुमान सचेत हुए तब नारान्तकसे लड़ने लगे ।। वे बानर एक क्षण भी न लड़ सके कि उसने फिर बाण मार कर उन्हें मूर्छित कर दिया ।। २ ।।

याम युगल तेहि कर बरदाना ❀ राखेउ तेहि कारण भगवाना
रिपुहिं खिलावत रघुकुल केतू ❀ बुध पताल बाणी श्रुति सेतू

दिनके मध्याह्न काल तक उसके विजय का वरदान था जिससे भगवान् उसे नहीं मारते थे ।। ३ ।। श्रीरामचन्द्रजी शत्रु को खेलाते थे जिसमें देवताओंके दिये हुए वचन की मर्यादा का पालन हो जावे ।। ४ ।।

सो युग याम गये जब बीती ❀ तब रघुबीर सजी जय रीती
हाँक देइ कपि भालु जगाये ❀ भये विगत मूर्छा सब धाये

जब दो पहर दिन बीत गया तब श्रीरामजीने विजयके साज सजाये ।। और बन्दरों तथा भालुओंको पुकार कर जगाया तो वे सब मूर्छासे जागृत होकर दौड़े ।। ६ ।।

हनूमान अंगद सब जागे ❀ राम लषन चरणन अनुरागे

प्रभु पद शीश रहे धरि कोशा ❀ तब हँसि बोले श्रीजगदीशा

जब हनुमान् और अंगद सब जाग गए, तब आकर राम-लक्ष्मणके चरणोंमें गिरे ॥ और बन्दरोंने प्रेम सहित प्रणाम किया, तब श्रीरामचन्द्रजीने हँसकर कहा—॥ ८ ॥

सो०—बिधि बाचा लगि आज, तात तुर्महि मूर्छा भई।
पुनि कह प्रभु रघुराज, अब भ्रम सपनेहुँ अनत नहिं ॥१३॥

हे वत्स ! यह ब्रह्माजी का वरदान था जिससे आजतक तुम लोगोंको मूर्छा आई। फिर प्रभु रामजीने कहा, अब अन्यत्र और स्वप्नमें भी तुम्हें भ्रम न होगा ॥१३॥

तुर्महि सुमिरि अंगद हनुमाना ❀ जितिहैं जगत मनुज रण नाना
अस वर जबहिं रमापति भाषा ❀ सुनत गिरा हर्षे मृगशाखा

हे अंगद ! और हे हनुमान् ! तुम्हारे स्मरण-मात्रसे अनेकों मनुष्य संग्राममें विजयी होंगे ॥ जब लक्ष्मीनाथने ऐसा वरदान कहा, तब उस वाणीको सुनकर बन्दर प्रसन्न हो गये ॥

कहेउ बहोरि बचन रघुबीरा ❀ सुनु अंगद हनुमत रणधीरा
तात तुरत तुम उभय सिधावहु ❀ लंक गये कपि तिनहिं छुड़ावहु

रामजीने फिर कहा—हे रणधीर अगद और हनुमान् ! सुनो, हे तात ! तुम दोनों शीघ्र ही जाओ और जो बन्दर लंकामें गये हैं, उनको छुड़ाओ ॥ ४ ॥

सुनि दोउ भट गहि शैल बिसाला ❀ सुमिरि कोसलाधीस कृपाला
सपदि कीश गढ़ पर चढ़ि गये ❀ देखि लंक महँ खर भर भये

कृपालु रामजी की यह आज्ञा सुनकर और उनका ध्यान करके बड़ी-बड़ी शिलाओंको लेकर सब बन्दर शीघ्रतापूर्वक लंका पर चढ़ गये जिन्हें देखकर लंकामें खलबली मच गई ॥६॥

सकल कपिन कै मूर्छा बीती ❀ तोरि पास भजि राम सप्रीती
वायुसूनु युवराज निहारी ❀ हर्षे कहि जय जयति खरारी

उधर मूर्छासे जागृत सब बन्दरोंने रामजीके प्रेमावेशमें आ उनको भजते हुये राक्षसोंके बन्ध को तोड़ डाला ॥ तब हनुमान् तथा अंगदको देखते ही सब प्रसन्न हो रामजीकी जय कहने लगे ॥

माया करि निज गात बचावहिं ❀ जहँ तहँ खल रावण यश गावहिं
अदिति नन्द लखि तिनकर माया ❀ सभय भये जाने रघुराया

उधर मायावी राक्षस अपने शरीरकी रक्षा करते हुए यत्र-तत्र रावणका यशोगान करते ॥ जिनकी राक्षसी माया को देखकर देवता भयभीत हो गये, तब उन्हें भयभीत जानकर ॥१०॥

दीन्ह नाथ अनुजहिं अनुशासन ❀ उठे तुरत गहि बिशिख शरासन
अहिपति कहेउ तिष्ठ क्षणएका ❀ तैं कीन्हें रण खेल अनेका

रामजीने भाई लक्ष्मण को युद्ध करने की आज्ञा दी तो वे शीघ्र ही धनुष-बाण उठाकर दौड़े ॥ और नारान्तकसे कहा—रे दुष्ट ! ठहर, मुझसे युद्ध कर ॥ १२ ॥

छन्द—तैं कीन्ह खेल अनेक बिधि अब तिष्ठ खल रण धूधला
इमि कहि अहीस चढ़ाइ धनु शर करण निशिचर दल मला ॥

निज अनी निरखि निदान हरि-अरि-सुवन धावा रिसिभरा।
डारत अनेक नराच प्रभु पर शिला तरुवर भूधरा ।।१३।।

ऐसा कहकर लक्ष्मणजी ने धनुष उठाय बाणों की वर्षा करने लगे। उस वर्षासे राक्षसों की सेना मसल उठी, तब अपने सैनिकोंको नष्ट होते देख नारान्तक क्रोधमें भरकर दौड़ा और वह दुष्ट श्रीलक्ष्मणजी पर अनेकों बाण, पत्थर, बड़े-बड़े वृक्ष और पर्वतोंको चलाने लगा ।।

दोहा—मायापति के अनुज सन, माया करत अजान।
लगत न एकौ जानि जिय, तब खल निकट तुलान ।।१८०।।

मूर्ख नारान्तक व्यर्थ ही राम-बन्धु लक्ष्मणसे माया करता। परन्तु जब उसने जान लिया कि इनपर एक भी युक्ति नहीं चलेगी, तब वह दुष्ट उनके अत्यन्त निकट आ गया ।।१८०।।

हना लषन उर पविसम शायक ❋ लगत गिरे रणमहि अहिनायक
पुनि खल दल भा प्रबल अपारा ❋ भक्षण लाग भालु कपि धारा

और उसने वज्रके समान एक बाण लक्ष्मणजीकी छातीमें मारा जिसके लगते ही वे गिर पड़े ।। फिर दुष्ट राक्षसकी प्रबल सेनाका पार नहीं रहा और वह रीछों तथा बन्दरोंकी सेना का भक्षण करने लगी ।।

चले पराय कीश भयभीता ❋ अब न बचब करि काल प्रतीता
निशिचर धारि भालु कपि वेषा ❋ लागे खान कपिन अस देखा

भयभीत बन्दर भाग चले और उन्हें विश्वास होने लगा कि अब नहीं बचेंगे और काल आ गया ।। उस समय राक्षस रीछों और बन्दरोंका वेष धारणकर उनको खाने लगे ऐसा बन्दरोंने देखा ।।

दोहा—तेहि अवसर जागे लषण, देखा सेन विनाश।
नारान्तक छल पवनसुत, समुझत उठा अकाश ।।१८१।।

उसी क्षण लक्ष्मणजी की मूर्छा टूटी तो देखा कि सेना नाश हो रही है। इतने ही में हनुमान् नारान्तकके छलको समझ गए तो वे तत्क्षण आकाशको उछल गये ।।१८१।।

गर्जेउ जाय भयंकर भारी ❋ फटेउ हृदय सुनि निशिचर झारी
माया हति शर लषन पँवारा ❋ उघरे कपट कपाट अपारा

आकाशमें जाकर उन्होंने घोर गर्जन किया तो उसे सुनकर सब राक्षसोंका हृदय विदीर्ण हो गया ।। तब उनकी मायाको नष्ट करनेके लिए लक्ष्मणजीने बाण छोड़ा तो अपार कपटके किवाड़ खुल गये।

नारान्तक कै माया बीती ❋ गयउ यज्ञशाला अति प्रीती
खोजिसि सब सामग्री बाकी ❋ कीन्ह अरम्भ विजय निज ताकी

नारान्तककी माया दूर हो गई तो वह बड़े प्रेमसे यज्ञशालामें गया और अपनी विजयके लिये उस यज्ञकी सब सामग्री ढूँढ़ने लगा ।।

यज्ञ आसुरी तब तहि ठाना ❋ पशु समूह बलि कारण आना
भये निशामुख श्रमवश सैना ❋ फिरे सुमिरि सब राजिव नैना

तब उसने आसुरी यज्ञ प्रारम्भ किया और बलिदानके लिये बहुतसे पशुए कत्र किये । इतनेमें संध्या हो गई और थके सैनिक रामजीका स्मरण करते हुये लौट पड़े ।।

तुरत अहीश राम पहँ आये ❀ सहित अनी प्रभु पद शिर नाये
कृपा अयन देखे मृगशाखा ❀ प्रभु श्रम छीन दीन अभिलाषा

उन सैनिकोंके साथ लक्ष्मणजी तुरन्त रामजीके चरणोंमें आकर शिर नवाये । तब परिश्रमसे शक्ति-क्षीण बन्दरोंको रामजीने जो अपनी कृपा-दृष्टिसे देखा तो उनके कष्ट दूर हो गये ।।

दोहा—टिकहु थलनि सब सन कहा, सुखसागर रघुनाथ ।
पाय सुआयसु भालु कपि, चले सुमिरि श्रीनाथ ।।१८२।।

उस समय सुखके सागर रामजीने उन सबसे कहा—अब तुम सब अपने स्थानपर जाकर ठहरो ।। तब उनका स्मरण करते हुए बन्दर और भालु अपने स्थानपर चले गये ।। १८२ ।।

तब रघुनाथ अनुज उर लावा ❀ निज आसन समीप बैठावा
मघवासुत सुत अरु हनुमाना ❀ इन सम भाग्यवन्त नहिं आना

रामजीने लक्ष्मणको हृदयसे लगा अपने समीप आसनपर बिठाया और कहा कि अंगद तथा हनुमान्‌के समान भाग्यशाली कोई नहीं है ।।

दोहा—कहत सुनत इतिहास शुचि, निशि बीती युग याम ।
खगपति आये देवऋषि, जित शोभित श्रीराम ।।१८३।।

इस प्रकार पवित्र इतिहास कहते-सुनते दो घड़ी रात्रि व्यतीत हो गई । हे गरुड़जी ! इतनेमें वहाँ नारदजी आ पहुँचे, जहाँ रामजी शोभित हो रहे थे ।।१८३।।

राम लषन सुखसींव बिराजे ❀ मार अपार निहारत लाजे
निरखि मान मुनि हृदय सनाथा ❀ उठे हर्षि प्रभु रघुकुल नाथा

वे सुखकी सीमा राम-लक्ष्मण वहाँ ऐसे शोभित हो रहे थे, जिनको देख कामदेव लज्जित होता था ।। उन्हें देख मुनिने अपनेको सनाथ माना और ईश्वर रामजी उठ खड़े हुए ।।२।।

शीश नाइ प्रभु आसन दीन्हा ❀ आशिष पाइ हर्षि हित कीन्हा
सुनि नीके हरिरूप बिलोका ❀ यथा इन्दु लखि सुख लह कोका

और प्रभुने नारदजीको प्रणामकर बैठाया आशीर्वाद पाकर प्रसन्न हुए।। नारदजी भगवान्‌के स्वरूपका दर्शन करऐसे सुखी हुए जैसे चंद्रमाको देखकर चकोर सुखी होता है ।।४।।

पुलकि गात तब कह ऋषिराजा ❀ सुनहु नाथ आयहुँ जेहि काजा
चतुरानन पठवा मोहिं स्वामी ❀ यदपि कृपानिधि अन्तर्यामी

नारदजी प्रसन्न होकर बोले—हे नाथ ! मैं जिस कार्यसे आया हूँ, उसे सुनिये ।। हे कृपानिधान स्वामी ! आप अंतर्यामी हैं तथापि मैं कहता हूँ कि मुझे ब्रह्माजीने भेजा है ।। ६ ।।

सदा अनाथ नाथ भगवाना ❀ विनय विरंचि करिय परिमाना
जब लगि होन प्रभात न पावहिं ❀तब लगि हरि-हरिसुतलै आवहिं

हे ईश्वर ! ब्रह्माजीकी यह प्रार्थना है कि जबतक प्रातःकाल न होने पावे ।। तब तक हनुमान्जी कपिराज सुग्रीवके पुत्रको यहां बुला लावें ।।८।।

दोहा—जपत निरन्तर नाम तव, सो जानहु भगवान ।
बिधि बिरहित इत आनिये, तेहि कहँ कृपानिधान ।।१८४।।

हे भगवान् ! यह जानिये कि वह सर्वदा आपके नामको जप रहा है । हे कृपानिधान ! आप ब्रह्माजीके वरदानकी पूर्तिके लिए उसको यहां लाइये ।।१८४।।

नारान्तक बध है तेहि हाथा ❁ दधिबल नाम भक्त तव नाथा
नाथ बहुत यहि खलहिं खेलावा ❁ रण बिलोकि देवन दुख पावा

हे नाथ ! दधिबल नामका एक आपका भक्त है कि जिसके हाथसे नारान्तक मारा जायेगा ।। हे नाथ ! इस दुष्टको आपने बहुत खेलाया जिससे युद्धको देख देवताओंने बड़ा दुःख पाया ।।

अब रघुबीर करहु सोइ बाता ❁ बिनु प्रयास रिपु मरे प्रभाता
तेहि सन तुमहिं न सोह लराई ❁ दधिबल सनमुख करहु बुलाई

अतः हे रामचन्द्रजी ! अब वही बात कीजिए कि जिसमें प्रातःकाल होते ही बिना परिश्रमके ही शत्रु मर जावे । इसलिए दधिबलको बुलाकर आप उसका शीघ्र सामना कीजिये ।।

सबिनय नाइ शीश वर भाखी ❁ गवने मुनि प्रभु छबि उर राखी
नारद गये जबहिं बिधि लोका ❁ वायु तनय तन राम बिलोका

ऐसी श्रेष्ठ वाणी बोलकर, विनयपूर्वक प्रभुको शिर नवा और उनकी शोभाको हृदयमें धारणकर नारदजी चले गए जब नारदजी ब्रह्मलोकको चले गए तब रामजीने हनुमान्जीकेशरीरकीओरदेखा

तात तुरत तुम गवनहु तहवाँ ❁ बारिधि महँ धौलागिरि जहवाँ
तहँ दधिबल रह ध्यान लगाये ❁ बहुत दिवस चलि गये सुभाये

और कहा—हे तात ! समुद्रके मध्यमें जो धौलागिरि पर्वत है, तत्क्षण तुम वहां जाओ । दधिबल वहां ध्यान लगाकर बहुत दिनोंसे तपस्या कर रहा है ।।

दोहा—अहै तपोबल तेजसी, तात तासु ढिग जाइ ।
मन प्रसन्न करि चतुरई, आवहु बेगि बुलाइ ।।१८५।।

वह तपके प्रभावसे बड़ा तेजस्वी हो गया है, अतः हे तात ! तुम उसके निकट जाओ । और अपनी बुद्धिमत्तासे उसके मनको प्रसन्न करके उसे शीघ्र यहां बुला लाओ ।।१८५।।

पवनकुमार पाइ अनुशासन ❁ चले बन्दि पद हर्षि उदासन
बेगवन्त धावा कपि कैसे ❁ वर नाराच धनुष तें जैसे

तब रामजीकी यह आज्ञा पाकर हनुमान्जी प्रसन्न हो उनके चरणोंमें प्रणाम करके चले । उस समय हनुमान्जी उस तीव्र गतिसे चले कि जिस वेगसे श्रेष्ठ बाण छूटकर जाता है ।।

लोक अर्द्ध घटिका तेहि ठामा ❁ पहुँचे वायु पुत्र बल धामा
देखि तरनि सम तास प्रकाशा ❁ ठाढ़ भयउ कपि मन्दिर पासा

फिर तो बलके धाम वायुपुत्र हनुमान् साढ़े तीन घड़ीमें उस स्थानमें पहुँच गये ।। देखा तो वहाँ एक मन्दिर है । वह उस मन्दिरके पास ही खड़े हो गये ।।४।।

दण्ड युगल कपि स्थित रहेऊ * हिय महँ राम राम अस कहेऊ
उत रण होइहि होत प्रभाता * इत इनकर मन हरिपद राता

और दो घड़ी तक वैसे ही खड़े-खड़े राम-राम कहते रहे । फिर सोचने लगे कि, प्रातःकाल होते ही उधर युद्ध होने लगेगा, इधर इनका मन भगवान्‌के चरणोंमें रत है ।।६।।

क्षण इक कपि मन कीन्ह बिचारा * प्रभु पहँ चलिये कवन प्रकारा
जो गृह सहित चलहुँ लै एही * नहिं अस आयसु भक्त सनेही

तब एक क्षणभरमें हनुमान्‌ने मनमें विचार किया कि रामजीके पास किस प्रकार ले चलूं । यदि मैं इसे घर सहित उठा ले चलूं तो भक्तस्नेही भगवान्‌की ऐसी आज्ञा नहीं है ।।८।।

दोहा--बुधि जन शीश सिरोरतन, अति लजात मुनिराय ।
ताहि जगावन हेतु तब, कीन्हे अमित उपाय ।।१८६।।

हे मुनिराज ! विद्वज्जनोंके मुकुटमणि हनुमान्‌जी अत्यन्त लज्जित हो दधिबलको जगानेका अनेक यत्न करते रहे ।।१८६।।

अचल ध्यान कपि तासु प्रमाना * तजि प्रवीणता भजि भगवाना
राम चरण चित कपि तब दयऊ * दण्ड एक औरो चलि गयऊ

क्योंकि दधिबलका ध्यान अचल था, यह मानकर हनुमान्‌जी अपनी चतुरताको त्याग कर भगवान्‌का भजन करने लगे । हनुमान्‌जीको वहाँ एक घड़ी और व्यतीत हो गया ।।

बिधि प्रेरित दधिबल लघुशंका * करन उठेउ देखा भट बंका
जय श्रीराम वायुसुत बोला *सुनि दधिबल निज लोचन खोला

इतनेमें भगवान्‌की प्रेरणासे दधिबल लघुशंका करने उठा तो एक बड़े योद्धाको देखा ।। तब हनुमान्‌जीने कहा—"जय श्रीराम" यह सुनकर दधिबलने अपनी आँखें खोल दीं ।।४।।

बूझि हरिहिं कीशहिं उर लाई * कही परस्पर दोउ कुशलाई
पुनि हनुमान कहेउ सुनु भ्राता * चलहु विलोकन त्रिभुवन त्राता

हनुमान्‌ने दधिबलको हृदयसे लगा लिया और दोनोंने अपनी कुशलता कही ।। हनुमान्‌ने कहा—हे भाई ! सुनो, क्या तुम त्रिलोक रक्षक भगवान्‌का दर्शन करने चलोगे ? ।। ६ ।।

सुनि शुभ बचन सुकंठ कुमारा * हरि पहँ हरि संग तुरत सिधारा
आये नाथ विकट मृगशाखा * देखे पद जे हर हिय राखा

हनुमान्‌जीके इस शुभ वचनको सुनकर दधिबल तुरन्त ही उनके साथ भगवान्‌के पास चल पड़ा ।। वहाँ पहुँच उनके चरणोंको देखा कि जो महादेवजीको बड़ा प्रिय है ।। ८ ।।

रहेउ चरन गहि प्रीति समेता * दधिबल निरखेउ कृपानिकेता
सानुज हर्षि मिले सुखपुंजा * तासु पाणि गहि निज करकुंजा

वहाँ पहुँच दधिबलनें प्रेम सहित चरण पकड़कर कृपाके धाम भगवान्‌का दर्शन किया ॥ फिर तो लक्ष्मण सहित सुखके धाम रामजीने प्रसन्न होकर उसे हृदयसे लगा लिया ॥१०॥

बैठे ताहि निकट बैठावा ❀ तेहि अवसर सुकण्ठ तहँ आवा
निरखि तनय कपिपति हर्षाना ❀ मिलन प्रेम नहिं जाय बखाना

फिर श्रीरामचन्द्रजी स्वयं बैठे और उसे भी बिठा लिये, उसी समय सुग्रीव वहाँ आये ॥ तो अपने पुत्रको देखकर बहुत प्रसन्न हुए और उस प्रेम-मिलनका वर्णन नहीं हो सकता ॥

गइ मणि पन्नग जनु पुनि पाई ❀ देही देह मीन जल पाई
सुख सुग्रीव लहेहु प्रभु भेटे ❀ अवगुन तीनि ताहि छन मेटे

जैसे खोई हुई मणि सर्प पा जावे और जलको पाकर मछलीके शरीरमें प्राण आ जावे ॥ प्रभुसे मिलते देख सुग्रीवको ऐसा हुआ कि जिससे उनके तीनों ताप नष्ट हो गये ॥१४॥

सो०—दधिबल बालिकुमार, मिले परस्पर हर्षि हिय ।
भयउ आइ भिनुसार, न्हाइ सबनि प्रभु पद गहे ॥१४॥

फिर अंगदजी दधिबलसे मिले, तो हृदयमें बड़ी प्रसन्नता हुई । प्रातःकाल सबने स्नानकर प्रभु रामचन्द्रजीके चरणोंका स्पर्श किया ॥१४॥

जहँ तहँ समर करहिं बनचारी ❀ कहत चले जय लखन खरारी
उहाँ नरान्तक प्रात प्रबोधा ❀ रथ चढ़ि चला भयंकर योधा

और बन्दर लोग राम-लक्ष्मणकी जय बोलते हुए युद्ध करनेके लिये यत्र-तत्र चले ॥ उधर प्रातःकाल हुआ देखकर भयंकर योद्धा नारान्तक भी रथपरबैठकर युद्ध करने चला ॥

निशिचर अनी सुभट सँग ताके ❀ आयुध अमित भयानक बाँके
महि संग्राम निशाचर ठाढ़े ❀ असित मेघ सम अति रिस बाढ़े

राक्षसोंकी बीर सेना उसके साथ थी जो बड़े ही भयंकर अस्त्र-शस्त्रोंको लिए थी ॥ वे मेघके समान काले राक्षस बड़े क्रोधसे संग्राम-भूमिमें आकर डट गये ॥४॥

करि माया तेहि गात छिपावा ❀ भयउ प्रगट जब प्रभु ढिग आवा
दधिबल लखासखाचलि आयउ ❀ भुजा पसारि हर्षि उठि धायउ

तब मायावी नारान्तकनें अपने शरीरको छिपा लिया और जब रामजीके पास पहुँचा तब प्रकट हो गया । जब दधिबलने देखा कि यह तो मित्र ही चला आया तब हर्षित हो भुजा फैलाकर मिलनेंदौड़ा

नारान्तकहु दीख गुरु भाई ❀ मुदित मिले उर अभय अघाई
भेटि सप्रेम बूझि कुशलाता ❀ निज निज दशा कीन्ह विख्याता

नारान्तकनें अपने गुरुभाईको देखा, तो प्रसन्न होकर दोनों एक दूसरेसे पूर्ण प्रेमसे आकर मिले और परस्पर कुशल पूछा तो दोनोंने अपनी-अपनी दशा वर्णन की ॥८॥

दोहा—हरिपति पत प्रवीण अति, सुनि तेहि मुख विख्यात ।
लगी बुझावन मित्र कहँ, सुनहु वियपति बात ॥१८७॥

सुग्रीव पुत्र अत्यन्त चतुर था । नारान्तकका उसीके मुखसे विख्यात वृतान्त सुनकर उसके मित्र जान समझाने लगा । हे वियपति गरुड़जी ! यह बात सुनो ॥१८७॥

सुनत बचन गुरुभ्राता केरा ❀ नारान्तक भा क्रुद्ध घनेरा
कहन लाग खल ताहि कभाँती ❀ सहज सभीत कीश दिन राती

तब गुरुभाई दधिबलके इन वचनोंको सुनकर नारान्तक बड़ा क्रोधित हुआ ॥१॥ और वह दुष्ट उसे कुवाच्य कहने लगा। बन्दर स्वभावतः दिन-रात डरा करते हैं ॥२॥

बालिहि हतेउ जौन तपधारी ❀ भा अंगद तिन्ह आज्ञाकारी
दधिबल यह बानर कुल रीती ❀ हमरे करहिं न अरि सन प्रीती

जिन तपस्वियोंने बालिको मार डाला, अंगद उन्हींका आज्ञाकारी बन गया॥ हे दधिबल! बानर कुलकी यह रीति है। हमारे कुलमें शत्रुसे प्रीति नहीं की जाती ॥४॥

यह कहि प्रभु सन्मुख सो धावा ❀ दधिबल लूम लपेटि टिकावा
नारान्तक कह रे शठ बानर ❀ तव तनु नहीं मोर डर कादर

यह कहकर नारान्तक प्रभुके सामने दौड़ा तो दधिबलने पूंछसे लपेटकर उसे रोक दिया॥ नारान्तकने कहा—रे दुष्ट बन्दर! रे कायर! क्या तुझे मेरा भय नहीं है? ॥६॥

छाँड़उँ मूढ़ समुझि गुरुभाई ❀ कहि अस पेलि चला कठिनाई
तब सुकण्ठ-सुत क्रोधित भयऊ ❀ सपदि जाय आगे गहि लयऊ

रे मूर्ख! तुझे गुरुभाई समझकर छोड़ता हूँ, यह कहकर बड़े वेगसे धक्का देकर चला॥ तब सुग्रीवके पुत्रको क्रोध आ गया, इससे दधिबलने तुरन्त ही आगे आकर उसे पकड़ लिया॥

दोहा—नारान्तक दधिबल भिरे, निरखि भालु अरु कीस।
लगे लरन सँग निसिचरन, कहि जय श्री जगदीश ॥१८८॥

जब दधिबल और नारान्तक भिड़ गये तो यह देखकर बानर, भालू श्रीरामचन्द्रजीकी जय बोलकर राक्षसोंके साथ युद्ध करने लगे ॥१८८॥

छं०—युग घटिका ऊपर एक याम, दोउ भिरे समर बल योग धाम।
पुनि भा अदृश्य सो करत युद्ध, बलवन्त भयउ श्रमगत सक्रुद्ध॥
कह षट प्रकार श्रुति युद्ध रीति, सुख मानेउ सुर देखत सप्रीति।
लखि पुत्र एकाकी पुलकि गात, कह बालि अनुज अति हर्षि बात।१४।

दो घड़ी तक दोनों घोर युद्ध करते रहे। फिर नारान्तक अदृश्य हो गया, इस प्रकार दोनों वीर श्रमित नहीं हुए और बड़े ही क्रुद्ध हो रहे थे। जो वेद में युद्धकी छः रीतियां कही हैं, उसी प्रकार युद्धको सप्रेमसे देखते हुये देवताओंने सुख माना। उधर अपने पुत्रको अकेले युद्ध करते देख सुग्रीवने पुलकित शरीर हो बड़ी प्रसन्नतासे कहा—

दोहा—जामवन्त सुनु बचन मृदु, कहेउ सुकंठ पुकारि।
कहहु तात दधिबल कबहिं, दनुजहिं डारिहि मारि ॥१८९॥

सुग्रीवने जामवन्तको पुकारकर कोमल वचनोंसे कहा—हे तात! कहो दधिबल उस राक्षसको कब मार डालेगा? ॥१८९॥

समर करत लागी अति बारा ❁ यह सुनि बोले ऋक्ष-भुवारा
क्षणक हृदय धरु धीर कपीसा ❁ दधिबल गुरु सन लही असीसा

युद्ध करते बहुत देर लगी, यह सुनकर जामवन्त बोले—हृदयमें क्षण भर और धैर्य धारण करो, दधिबलको गुरुका आशीर्वाद प्राप्त है ।।२।।

सो अवसर अब आनि तुलाना ❁ एक पलक महँ मरहि अजाना
सुनि हरीस मन महँ अति हर्षे ❁ तबहीं बिबुध सुमन बहु वर्षे

अब वह समय आ गया है जब एक पल भरमें ही वह मूर्ख राक्षस मृत्युको प्राप्त होगा। यह सुनकर सुग्रीवके मनमें बड़ी प्रसन्नता हुई और देवताओंने फूलोंकी बहुत वर्षा की ।।४।।

दधिबल धन्य भुजाबल तोरा ❁ रन कौतहल कीन्ह न थोरा
हरिअस्तुतिसुनिअरि-हरिकोपा ❁ कपिहिं संग खल भया अलोपा

और कहा--हे दधिबल! तुम्हारी भुजाओं का बल धन्य है कि तुमने कुशल-युद्ध किया। दधिबलकी इस प्रशंसाको सुनकर नारान्तक क्रुद्ध हो दधिबलको उठाकर आकाशमें ले उड़ा ।।

योजन अयुत अष्ट नभ जाई ❁ दधिबल सुमिरि हृदय रघुराई
गहि मनुजाद भूमि पर डारा ❁ कर चिकार तेहि मरती बारा

वह तीन लाख बीस हजार कोश ऊपर उड़ गया, तब दधिबलने मनमें रामजीका ध्यान किया और उसको पकड़कर पृथ्वीपर पटक दिया तो वह मरते समय चिल्लाने लगा ।।८।।

छंद—मरती समय अति शब्द करि दशमुख तनय हरि हरि कही।
तजि अधम तनु धरि सुगम वपु द्विजनाथ मुनि गति सो लही ।।
जेहि हेतु सुर मुनि सिद्ध नाना भाँति जप तप मख किये।
श्रीराम करुनासिन्धु सो फल सहज ही दनुजहिं दिये ।।१५।।

उस रावण-पुत्र नारान्तकने मरते समय बड़े जोरका शब्द करते हुये हरि-हरि ऐसा शब्द कहा। जिससे वह अपने अधम शरीर को त्याग सुन्दर शरीर पाकर मुनि-दुर्लभ गतिको प्राप्त किया, जिसके लिए देवता और सिद्ध लोग अनेक प्रकारके जप, यज्ञ आदि करते हैं, वही फल करुणानिधान श्रीरामचन्द्रजीने उस राक्षसको सहज ही में दे दिया ।।१५।।

दोहा—देखि तासु गति बिबुधगण, अभय भये खगराइ।
प्रमुदित बरषे पुहुप झरि, राम चरण चित लाइ ।।१९०।।

काकभुशुण्डिजी कहते हैं--हे गरुड़! उसकी गतिको देखकर देवता निर्भय हो गये। वे लोग श्रीरामचन्द्रजीके चरणोंमें मनको लगाकर फूलोंकी वर्षा करने लगे ।।१९०।।

मरा नरान्तक दधिबल जानी ❁ तोरि तास सिर गहि निज पानी
रुण्ड तासु गहि लंक संचारी ❁ आपु चले जहँ नाथ खरारी

उधर जब दधिबलने यह जाना कि नारान्तक मर गया, तब उसका सिर तोड़कर अपने हाथमें लिया और उसके धड़को लंका में फेंक दिया तथा स्वयं रामचन्द्रजीके पास चले गये ।।

दोहा—राम बिरोधहिं जस उचित, तस दिन पहुँचा आइ ।
सो बिचारि करि लंकगढ़, उतरी बिपत बजाइ ॥१९१॥

श्रीरामचन्द्रजीसे विरोध करने पर जो उचित परिणाम था वह दिन आकर पहुँच गया। ऐसा विचार कर विपत्ति डंका बजाकर लंकामें उतर पड़ी ॥ १९१ ॥

इहाँ देवतन देव सुजाना ❀ बर आसन शोभित भगवाना
यथा योग्य बैठे मृगशाखा ❀ सब कीन्हे प्रभुपद अभिलाषा

इधर देवाधिदेव श्रीरामचन्द्रजी जब अपने श्रेष्ठ आसन पर विराजमान एवं शोभित हुए। तो प्रभुके चरणोंके अभिलाषी समस्त बानर लोग भी यथा स्थान आकर बैठ गये ॥२॥

रिपु बड़ मरेउ हर्ष सबके मन ❀ पुनि-पुनि हेरत सुभग श्यामघन
तिनकी रुचि लखि दीनदयाला ❀ शिव यश गावहु कह्यो कृपाला

तब बड़ा भारी शत्रु मरा, इसकी प्रसन्नता देखकर दीनोंपर दया करने वाले कृपालु श्रीरामचन्द्रजीने कहा—शिवजीका यश गाओ ॥ ४ ॥

भरद्वाज प्रभु आज्ञा पाई ❀ गावहिं कपि दल कण्ठ लगाई
डमरू भृंगि श्रृंगि करतारी ❀ घ्राण पाणि मुख ते बनचारी

हे भरद्वाज ! प्रभुकी आज्ञा पाकर वानर शिवजीका यश गान करने लगें ॥५॥ तब डमरू, भृङ्गी, श्रृङ्गी हाथकी ताली, नाक मुँह हाथ से पकड़कर बजाने लगें ॥ ६ ॥

गाँडर तन्तु वेणु मंजीरा ❀ शंख मृदंग नाद गंभीरा
नृत्यत कीश भाव दिखरावत ❀ शिवासहित शिव कीरति गावत

गाँडर, तन्तु, बाँसुरी, शंख और मृदंगको जोर-ज़ोरसे बजाने लगे ॥ बानर गण नाचते और भाव बतलाते हुए पार्वती सहित शिवजीका यशोगान करने लगे ॥ ८ ॥

छंद—शिव शिवा कीरति विमल गावत भालु बानर सुख भरे ।
अहिनाथयुत रघुनाथ छबि निरखत सकल चित पद धरे ॥
प्रभु देखि कौतुक अनुज सहित सखन बखानत श्रीमुखम् ।
तुलसी पगे यहि ध्यान जे जन पाइहैं नित यश सुखम् ॥१६॥

इस प्रकार समस्त बन्दर-भालु सुखकी उमंगमें शिव-पार्वतीकी विमल कीर्तिको गाते और क्षण भरमें श्रीरामचन्द्रजीके चरणोंमें मन लगा उनकी शोभाको देखते रहते । लक्ष्मण सहित भगवान् भी उनके कौतुक को देखकर प्रसन्न होते, तुलसीदासजी कहते हैं कि जो लोग इस ध्यानमें रंग गये हैं वे सर्वदा ही सुख और यशके भागी होंगे ॥१६॥

सोरठा—गत रजनी युग याम, तब कीशन करुणा अयन ।
करि पूरण मन काम, सबनि कहेउ राजहु थलन ॥१५॥

इस प्रकारके आनन्दसे वह अर्द्ध रात्रि व्यतीत हो गई, दयासागर श्रीरामचन्द्रजीने बानरोंकी मनोकामनाको पूर्ण करते हुए उनको यथा स्थान जानेकी आज्ञा दी ॥१५॥

बैठें निज निज थल रणधीरा ❀ अनुज सहित राजत रघुबीरा
सुखमा सीवँ सैन युत राजैं ❀ जय जय ध्वनि कपि भालु समाजैं

सब वीर अपने स्थानपर जा बैठे। इधर लक्ष्मण सहित श्रीरामचन्द्रजी सुखसे बैठे ।।९।। उसी समय बानर और भालुओंने जोरसे रामजीकी जय-जयकार की ।।१०।।

उमा चरित यह सुभग सुहावा ❀ नाथ कृपा मैं तुमहिं सुनावा
अपर चरित गिरिराज कुमारी ❀ सुनहु कहत तव प्रीति निहारी

हे पार्वती ! यह पवित्र और सुहावना चरित्र प्रभुकी कृपासे मैंने तुमको सुनाया ।। हे पार्वती ! तुम्हारी प्रीति देखकर अव मैं तुमसे दूसरा चरित्र कहता हूँ, सुनो ।।

वहाँ मध्य निशि रावण जागा ❀ कोउ कोउ सचिव सिखावन लागा
उग्र सिखावन कहि बुधि ताके ❀ थके न कछु मन मान न वाके

उधर जब अर्द्ध रात्रिके समय रावण जागा तो उसे कोई-कोई मन्त्री कुछ अच्छी शिक्षा देने लगे ।। किन्तु वह शिक्षा उस उग्र बुद्धिवालेको अच्छी न लगी और सारे मन्त्री थक गये ।।

रावण मन औरो कछु लसई ❀ मेटि को सकै जो बिधि उर बसई
प्रभु बिरोध करि यह कल्याना ❀ मोह विवश सो शठ अज्ञाना

रावणके मनमें तो कुछ और ही बैठा था, उसे कौन मिटा सकता है, जो उसके हृदयमें ब्रह्माने बसा दिया था ।। वह प्रभुके विरोधसे ही कल्याण चाहता था; क्योंकि अज्ञानी हो गया था।

दोहा—यहाँ दशानन दूत मुख, सुनि नारान्तक नाश।
एकम दिन निज सेन लखि, चढ़ा समर बिनु त्रास ।।१९२।।

यहाँ जब दूतके मुखसे रावणने नारान्तकके नाशको सुना तो एकमके दिन अपनी विशाल सेनाको ले, निःशंक होकर श्रीरामचन्द्रजीसे युद्ध करनेकी चढ़ाई कर दी ।।१९२।।

।। इति नारातन्तक-वध समाप्त ।।

निशा सिरानि भयउ भिनुसारा ❀ लगे भालु-कपि चारिउ द्वारा
सुभट बोलाय दशानन बोला ❀ रण सन्मुख मन जाकर डोला

जब रात्रि व्यतीत हुई तो प्रातःकाल होनेपर रीछ और बानर चारों द्वारोंपर आ लगें ।। रावणने राक्षसोंको बुलाकर कहा—युद्धमें सामने जानेपर जिसका मन डोलता हो ।।२।।

सो अबहीं बरु जाइ पराई ❀ रण सन्मुख भागे न भलाई
निज भुजबल मैं बैर बढ़ावा ❀ दैहौं उतर जो रिपु चढ़ि आवा

वह अभीसे भाग जावे, नहीं तो युद्धके समय भागनेपर भलाई न होगी ।।३।। मैंने अपने भुजबलसे बैर बढ़ाया है, जो शत्रु चढ़कर आया है उसे मैं उत्तर दूंगा ।।४।।

अस कहि मरुत बेग रथ साजा ❀ बाजहिं सकल जुझाऊ बाजा
चले वीर सब अतुलित बली ❀ जनु कज्जल गिरि आँधी चली

ऐसा कहकर रावणने हवाकी भाँति चलनेवाला रथ सजाया और युद्धके सब बाजे बजने लगें । साथमें अतुलित बलवीर सैनिक इस प्रकार चले जैसे कज्जलगिरिसे आँधी चलती हो ।।

असकुनअमित होहिं तेहि काला ❀ गनै न भुजबल गर्व विशाला

उस समय नानाप्रकारके अशकुन हुए, परन्तु भुजाओं के विशाल गर्वसे रावण कुछ न गिनता था ॥

छन्द—अति गर्व गनइ न शकुन अशकुन स्रवहिं आयुध हाथ ते।
भट गिरहिं रथते बाजि गज चिक्करहिं भाजहिं साथ ते॥
गोमायु गीध कराल खर रव श्वान बोलहिं अति घने।
जनु काल दूत उलूक बोलहिं बचन परम भयावने॥१७॥

वह घमण्डके मारे शकुन-अशकुन नहीं गिनता था, हाथसे हथियार गिरते थे, योद्धा रथसे गिरते थे, हाथी चिल्ला-चिल्लाकर भागने लगे। सियार, गिद्ध, गधे, कुत्ते बड़ी आवाज करने लगे, उल्लू काल दूतकी भाँति परम भयानक बोली बोलने लगे ॥१७॥

दोहा—ताहि कि सम्पति शकुन शुभ, सपनेहुँ मन विश्राम।
भूत द्रोह रत मोह बश, राम बिमुख रत काम॥१९३॥

जो जीव-द्रोही हैं, मोहके वश हैं, प्रभुसे परे हैं, तथा कामदेव जिनको सताये है, ऐसे मनुष्यको स्वप्नमें भी सम्पत्ति, शुभ शकुन और मनको विश्राम नहीं मिल सकता ॥ १९३ ॥

चलेउ निशाचर कटक अपारा ❀ चतुरंगिनी अनी बहु धारा
बिबिध भाँति बाहन रथ याना ❀ विपुल बरण पताकध्वज नाना

राक्षसोंकी अपार चतुरंगिणी सेना चारों ओरसे चली। अनेक भाँतिसे वाहन, रथ, योद्धा चलने लगे और उसमें रंग-बिरंगके पताके और ध्वजा लगाये गये थे ॥ २ ॥

चले मत्त गज यूथ घनेरे ❀ प्राविट जलद मरुत जनु प्रेरे
वर्ण वर्ण वर दैत्य निकाया ❀ समर शूर जानहिं बहु माया

मदमत्ताहाथियों का समूह ऐसे चला जैसे हवाके झोंकेसे बादलों की घटा चलती है ॥ वर्ण-वर्णके श्रेष्ठ और सुन्दर दैत्य लड़ाईके मैदानमें गये जो सम्पूर्ण माया को जानते थे ॥ ४ ॥

अति विचित्र बाहिनी बिराजी ❀ बीर बसंत सेन जनु साजी
चलत कटक दिग सिन्धुर डगहीं ❀ क्षुभित पयोधि कुधर डगमगहीं

वह सेना अति विचित्र शोभायमान थी मानों बसन्त ऋतुने अपनी सेनाको सजाया हो ॥ सेनाके चलते ही दिग्गज डोलने लगे समुद्र क्षुभित हो गया और पहाड़ डगमगाने लगे ॥६॥

उठी रेणु रवि गयउ छिपाई ❀ पवन थकित बसुधा अकुलाई
पणव निशान घोर रव बाजहिं ❀ महा प्रलय के जनु घन गाजहिं

इतनी धूल उठी कि उससे सूर्य छिप गये, हवा जोर करते थक गई, पृथ्वी अकुला गई ॥ ढोल आदि अनेकों बाजे ऐसे घोर शब्द से बजे जैसे प्रलयकालके बादल गरजते हों ॥ ८ ॥

भेरि नफीरि बाज सहनाई ❀ मारू राग सुभट सुखदाई
केहरि नाद बीर सब करहीं ❀ निज-निज बल पौरुष उच्चरहीं

भेरी, नफीरी, सहनाई और मारू बाजे बजने लगें जिनकी आवाज सुनकर योद्धा सुखी होते थे ॥ वे वीर अपने बल और पौरुषका उच्चारण करते हुए सिंहनाद कर रहे थे ॥

कहा दशानन सुनहु सुभट्टा ❀ मर्दहु भालु कपिन के ठट्टा
हौं मारिहौं भूप दोउ भाई ❀ अस कहि सन्मुख सेन चलाई

दशाननने योद्धाओंसे कहा कि तुमलोग भालुओं और कपियोंके समूह का नाश करो और मैं दोनों भाई राम-लक्ष्मणका सँहार करूँगा, ऐसे कह अपनी सेनाको सामने चलाया ॥

यह सुधि सकल कपिन जब पाई ❀ धाये कर रघुबीर दुहाई

जब यह समाचार सब बानरोंने पाया तो श्रीरामचन्द्रजीकी दुहाई दे राक्षसोंकी ओर दौड़े।

छन्द—धाये विशाल कराल मर्कट भालु काल समान ते।
मानहुँ सपच्छ उड़ाहिं भूधर वृन्द नाना बाण ते॥
नख दशन शैल महाद्रुमायुध सबल शंक न मानहीं।
जय राम रावन मत्त गज मृगराज सुजस बखानहीं॥१८॥

श्रेष्ठ भालु और बन्दर कालकी भांति राक्षसोंको मारने दौड़े, मानो बाणसे बिना पंखवाले पहाड़ आकाशमें उड़ रहे हों, वे बानर अपने नख और दाँतोंसे ही पर्वत और पेड़ोंको लिये थे, वे बली और शंकाहीन हैं, श्रीरामजीके यशका गान करते हुए रावण मद्‌मद गजराजके लिए सिंहरूप श्रीरामचन्द्रजीकी जय हो, ऐसा कहने लगे ॥१८॥

दोहा—दुहुँ दिशि जय जयकार करि, निज निज जोरी जानि।
भिरे वीर इत रामहिं, उत रावनहिं बखानि॥१९४॥

दोनों ओरसे सैनिक जय-जयकार करके अपनी-अपनी जोड़ीसे भिड़ गए। बानर-भालु रामजीका बखान करते हैं और उधर राक्षस रावणकी बड़ाई करते हैं ॥१९४॥

रावन रथी विरथ रघुबीरा ❀ देखि विभीषण भयउ अधीरा
अधिक प्रीति मन भा सन्देहा ❀ बंदि चरण कह सहित सनेहा

भक्त विभीषण रावणको रथपर और रामजीको जमीनपर देखकर अधीर हो गये। उनके हृदयमें संदेह हुआ, फिर रामचन्द्रजीके चरणोंकी वन्दनाकर स्नेह पूर्वक कहे ॥२॥

नाथ न रथ नहिं तव पदत्राना ❀ केहि विधि जितब बीर बलवाना
सुनहु सखा कह कृपानिधाना ❀ जेहि जय होय सो स्यंदन आना

हे नाथ! न तो आपके पास रथ है, न पैरमें जूता है, फिर आप बलवान् शत्रुको कैसे परास्त करेंगे ?॥ रामजीने कहा—हे सखा! सुनो, जिस रथसे जीत होती है वह रथ और ही है॥

सौरज धीरज तेहि रथ चाका ❀ सत्य शील दृढ़ ध्वजा पताका
बल विवेक दम परहित घोरे ❀ क्षमा दया समता रजु जोरे

उस रथमें शूरता और धीरताके पहिये हैं, सत्य तथा शीलताकी दृढ़ ध्वजा और पताका है। बल, ज्ञान, दम, परोपकार चार घोड़े हैं, जो क्षमा, दया, समताकी रस्सीसे जुते हुए हैं॥

ईश भजन सारथी सुजाना ❀ विरति चर्म संतोष कृपाना
दान परशु बुधि शक्ति प्रचंडा ❀ वर विज्ञान कठिन कोदंडा

और भगवान् का भजन ही सुजान सारथी है, वैराग्य ढाल है, संतोष तलवारकी जगह पर है, दान परशु है, बुद्धि शक्ति है और उत्तम ज्ञान कठिन धनुष है ॥

अमल अचल मन त्रोण समाना ❀ संयम नियम शिलीमुख नाना
कवच अभेद विप्र गुरु पूजा ❀ यहि सम विजय उपाय न दूजा

संयम और नियम ही नाना प्रकारके बाण हैं, निर्मल और अचल मन तरकस है, ब्राह्मण और गुरुकी पूजा करना अभेद कवच है, इसके समान विजयकी दूसरी युक्ति नहीं है ॥

सखा धर्ममय अस रथ जाके ❀ जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके

हे सखा ! ऐसा धर्ममय रथ जिसके पास हो वह कहीं भी शत्रु से हार नहीं सकता है ॥

दोहा—महा अजय संसार रिपु, जीति सकइ सो बीर ।
जाके अस रथ होय दृढ़, सुनहु सखा मति धीर ॥१९५॥

हे सखा ! हृदयमें धैर्य रखकर सुनो, ऐसा धर्ममय रथ जिसके पास हो, वह महाघोर संसाररूपी शत्रुको परास्त कर सकता है ॥१६५॥

सुनि प्रभु बचन विभीषण, हरषि गहे पद कंज ।
यहि मिस मोहिं उपदेश किय, राम कृपा सुखपुंज ॥१९६॥

प्रभुकी ऐसी वाणी सुनकर विभीषण प्रेमपूर्वक भगवान् के कमलवत् चरणोंको पकड़ लिए और समझा कि सुखके समूह रामजीने मुझे इसी बहानेसे उपदेश दिया है ॥१६६॥

उत प्रचार दशकन्धर, इत अंगद हनुमान ।
लरत निशाचर भालु कपि, करि निज निज प्रभु आन ।१९७॥

उधर रावण प्रचारता है और इधर अंगद-हनुमान् प्रचारते हैं, राक्षस और बानर-रीछ अपने-अपने स्वामीकी दुहाई देकर लड़ने लगे ॥१९७॥

सुनि ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना ❀ देखहिं रण नभ चढ़े विमाना
हमहूँ उमा रहेउँ तेहि संगा ❀ देखत राम चरित रण रंगा

उसें सुन अनेकों देवता और ब्रह्मादिक सिद्ध मुनि विमानमें चढ़कर आकाशसे उस युद्धको देख रहे थे ॥ हे पार्वती ! मैं भी उनके साथ गया था और रणभूमिमें प्रभुके चरित्रको देख रहा था ॥२॥

सुभट समर-रस दुहुँ दिसि माते ❀ कपि जयशील राम बल ताते
एक एक सन भिरहिं प्रचारहिं ❀ एकन एक मर्दि महि डारहिं

दोनों ओरके योद्धा लड़ाईके रसमें डूबे हुए थे, लेकिन बन्दर तो रामजीके बलसे और भी मदमत्त थे ॥ एकसे एक भिड़ते, ललकारते और एक-एक राक्षसोंको मारकर पृथ्वीपर पटकते हैं ॥

मारहिं काटहिं धरणि प्रचारहिं ❀ शीश तोरि शीशन सन मारहिं
उदर बिदारहिं भुजा उपारहिं ❀ गहि पद अवनि पटकि भट डारहिं

मारते, काटते, धरतीपर पटकते और शिरको तोड़कर शिरसे ही मारते हैं ॥५॥ पेटको फाड़ते और भुजाको उखाड़ते तथा पृथ्वीपर पटककर नीचे गिरा देते हैं ॥६॥

निशिचर भट महि गाड़हिं भालू ❀ ऊपर डारि देहिं बहु बालू
बीर बलीमुख युद्ध विरुद्धा ❀ देखिय विपुल काल जनु क्रुद्धा

भालुगण निशाचरोंको मारकर पृथ्वीमें गाड़ देते और ऊपरसे बहुत बालूसे ढँक देते थे ।। बानर बड़ा विकट युद्ध कर रहे थे, मालूम पड़ता था कि कालदेव क्रुद्ध हो रहे हैं ।।

छन्द—क्रुद्धे कृतान्त समान कपि तन श्रवत श्रोणित राजहीं ।
मर्दहिं निशाचर कटक भट बलवन्त जिमि घन गाजहीं ।।
मारहिं चपेटन्हि डाँटि दाँतन्ह काटि लातन मीजहीं ।
चिक्करहिं मर्कट भालु छल बल करहिं जेहि खल छीजहीं ।१९।

बानर कालके समान क्रोधित थे और उनके शरीरसे झरनेके समान खून झर रहा था । निशाचरोंका मर्दन करके बली बानर बादलके समान गरज रहे थे, चपेटकर डाँटते हैं, दाँतों से काटते हैं और पैरोंसे मीजते हैं । बानर और भालु चिग्घाड़ करके छलबल के साथ राक्षसोंको मारते जिससे राक्षसोंका दल नष्ट हो जाता था ।।१९।।

छन्द—धरि गाल फारहिं उर बिदारहिं गल अँतावरि मेलहीं ।
प्रहलाद पति जनु विविध तनु धरि समर अंगन खेलहीं ।।
धरु मारु काटि पछारु घोर गिरा गगन महि भरि रही ।
जय राम जो तृणते कुलिस कर कुलिससे तृण कर सही ।२०।।

राक्षसोंका गाल फाड़ डालते हैं और गलेमें उनकी आँतें पहने हुए ऐसे दीख पड़ते थे मानों नृसिंह भगवान् ही युद्धक्षेत्रमें खेल रहे हैं, मारो, पकड़ो, काटो, पछाड़ोकी कठोर ध्वनि आकाश और पृथ्वीपर गूँज रही थी और सब रामजीकी जय मनाते थे कि जो तृणको पर्वत और पर्वतको तृण बना देते हैं ।।२०।।

दोहा—निज दल बिचल बिलोकि तब, बीस भुजा दस चाप ।
चला दशानन कोप करि, फिरहु फिरहु करि दाप ।।१९८।।

रावण अपने दलको विचलित देखकर बीसों हाथमें दस धनुष लेकर क्रोधित होकर रामकी सेनाकी ओर चला और राक्षसोंको ललकारके कहा कि तुमलोग मेरे युद्धको देखो ।।१९८।।

धावा परम क्रोध दसकन्धर ❀ सनमुख चले हूह करि बन्दर
गहि कर पादप उपल पहारा ❀ डारहिं तापर एकहिं बारा

अत्यन्त क्रोधित रावण बानरी सेनापर टूट पड़ा, तो उसके सामने बानर भी हू-हू करके चले ।। हाथोंमें पहाड़ और वृक्ष लेकर उसपर एक साथ ही डालने लगे ।।२।।

लागहिं शैल बज्र तनु तासू ❀ खंड खंड होइ फूटहिं आसू
चला न अचल रहा रथ रोपी ❀ रण दुर्मद रावण अति कोपी

रावणके वज्रवत् शरीरपर पहाड़ और वृक्ष पड़कर टूक-टूक हो जाते थे ।। परन्तु रावण रथ रोककर एक ही जगह अड़ा रहा, क्योंकि रण-दुर्मद रावण बड़े क्रोधसे भरा था ।।४।।

इत उत झपटि डपटि कर जोधा ❀ मर्दइ लाग भयउ अति क्रोधा
चले पराइ भालु कपि नाना ❀ त्राहि त्राहि अंगद हनुमाना

रावण बानर योद्धाओंको झपटकर डपटकर क्रोधवन्त होकर मर्दन करने लगा ॥ बहुतसे भालु और बानर भाग गए और हे हनुमान् अङ्गद ! बचाओकी ध्वनि उच्चारण करने लगे।

पाहि पाहि रघुबीर गुसाईं ❀ यह खल खाइ काल की नाईं
तेहि देखे कपि सकल पराने ❀ दसहु चाप सायक संधाने

श्रीरामचन्द्रजीकी बानरी-सेना त्राहि-त्राहि कर कहने लगी कि, यह दुष्ट कालकी भाँति खा रहा है ॥ जब उसने देखा कि सब बन्दर भाग गए तो रावणने दसों धनुष पर बाण चढ़ाये ॥

छन्द—संधानि धनु सर निकर छाँड़ेसि उरग जिमि उड़ि लागहीं ।
रहे पूरिसर धरणी गगन दिसि बिदिसि कहँ कपि भागहीं ॥
भयो अति कोलाहल बिकल कपिदल भालु बोलहिं आतुरे ।
रघुबीर करुणासिन्धु आरत बन्धु जन रक्षक हरे ॥२१॥

रावण धनुषपर बाण चढ़ाकर छोड़ना शुरू किया, वह तीर बानरी सेनाको ऐसे लगते मानों सर्प उड़-उड़कर लग रहे हैं, पृथ्वी, आकाश, दिशायें और कोण सब जगह बाण ही बाण दृष्टिमें आता था। बानर भागने लगे, बानरी सेनामें कोलाहल मच गया, भालु आतुर होकर कहते हैं, हे करुणासिन्धु, आरतबन्धु श्रीरामचन्द्रजी ! सेवकोंकी रक्षा कीजिये ॥ २१ ॥

दोहा—बिचलत देखा कपि कटक, कटि निषंग धनु हाथ ।
लछिमन चले सकोप तब, नाइ राम पद माथ ॥१९९॥

तब लक्ष्मणजी बानरी सेनाको विचलित देखकर हाथमें धनुष और कमरमें तरकस लेकर श्रीरामचन्द्रजीके चरणोंमें नमस्कार कर कुपित हो चले ॥१९९॥

रे खल का मारेसि कपि भालू ❀ मोहिं बिलोकु तोर मैं कालू
खोजत रहेहुँ तोहिं सुत घाती ❀ आजु निपाति जुड़ावउ छाती

अरे दुष्ट ! बानर और भालुओंको क्या मारता है। तेरा दुश्मन मैं हूँ मेरी तरफ देख। रावणने कहा रे मेरे पुत्रको मारनेवाला ! मैं तेरी ही खोजमें था, आज तुझको मारकर छाती शीतल करूँगा ॥

अस कहि छाँड़ेसि बान प्रचंडा ❀ लछिमन किये सकल सत खंडा
कोटिन आयुध रावन डारे ❀ तिल समान करि काटि निवारे

ऐसा कहकर प्रचण्ड बाण छोड़ा परन्तु लक्ष्मणजीने एक ही बाणसे सैकड़ों टुकड़े कर डाले ॥ रावणने करोड़ों बाण चलाये जिन्हें श्रीलक्ष्मणजीने तिलके समान काट-काटकर गिरा दिये ॥

पुनि निज बाणन्ह कीन्ह प्रहारा ❀ स्यन्दन भंजि सारथी मारा
शत शत शर मारे दशभाला ❀ गिरि शृंगन्ह जनु प्रविशहिं व्याला

फिर लक्ष्मणजीने बाण छोड़ना आरम्भ किया तो रावणका रथ तोड़कर सारथीको मार डाला। थोड़ी ही देरमें रावणके शिरमें बाण ऐसे मारे मानों पहाड़के खण्डमें साँप घुस रहे हो ॥

पुनि सत सर मारा उर माहीं ❀ परेउ अवनि तनु सुधि कछु नाहीं
उठा प्रबल पुनि मूर्छा जागी ❀ छाँड़ेसि ब्रह्म-दत्त जो साँगी

फिर सैकड़ों बाण हृदयमें मारा, इसपर रावणको मूर्छा आ गई और वह बेखबर हो गया ।। थोड़ी देरके बाद उसकी मूर्छा छूटी तो ब्रह्माकी दी हुई साँगीको चला दिया ।।

छन्द–सो ब्रह्मदत्त प्रचण्ड शक्ति अनन्त उर लागी सही ।
पर्‌यो बीर बिकल उठाव दशमुख अतुलबल महिमा रही ।।
ब्रह्माण्ड भुवन विराज जाके एक सिर जिमि रजकनी ।
तेहि चह उठावन मूढ़ रावन जान नहिं त्रिभुवन धनी ।।२२।।

ब्रह्माजीकी प्रचण्ड शक्ति लक्ष्मणजीके हृदयमें लग गई और लगते ही लक्ष्मणजीको मूर्छा आ गई । इसपर अतुलित बलवान् महारथी रावण लक्ष्मणजीको उठाने आया । परन्तु वे उससे नहीं उठे । मूर्ख रावणको यह ज्ञान नहीं था कि जिसके एक शिरपर ब्रह्माण्ड और त्रिभुवन धूलके कणके समान जान पड़ता है, मैं इनको क्यों उठाता हूँ ? ।। २२ ।।

दोहा–देखत धायउ पवनसुत, बोलत बचन कठोर ।
आवत तेहिं उर महँ हनेउ, मुष्टि प्रहार प्रघोर ।।२००।।

ऐसी दशा देखकर हनुमान्‌जी दौड़े और कठोर वाणी बोले । रावण उनको देखकर क्रोधित होकर उनकी छातीमें एक बड़ा ही भयानक मुक्का मारा ।।२००।।

जानु टेकि कपि भूमि न परेऊ ❀ उठा सँभारि बहुरि रिस भरेऊ
मुठिका एक ताहि कपि मारा ❀ परेउ शैल जिमि बज्र प्रहारा

हनुमान्‌जी घुटने टेककर बैठ गये, पृथ्वीपर नहीं गिरे और सँभलकर उठे तथा क्रोधित होकर रावणको एक मुष्टिका जो हनी तो रावण ऐसे गिरा कि जैसे वज्रके लगनेसे पहाड़ गिरता है ।।

मुर्छा गई बहोरि सो जागा ❀ कपि बल बिपुल सराहन लागा
धिक धिक बल पौरुष धिक मोही ❀ जो तैं जियत उठा सुर द्रोही

मूर्छा दूर होनेपर रावण उठा और हनुमान्‌जीके बलकी बड़ी प्रशंसा करने लगा ।।३।। तब हनुमान्‌ने कहा–रे देवताओंका द्रोही ! यदि तू जीवित उठ गया तब तो मुझे धिक्कार है और मेरे बल तथा पुरुषार्थको भी धिक्कार है ! धिक्कार है ।।४।।

अस कहि कपि लक्ष्मण कहँ ल्याये ❀ देखि दसानन विस्मय पाये
कह रघुबीर समुझु जिय भ्राता ❀ तुम कृतान्त भक्षक सुर त्राता

ऐसा कहकर हनुमान् लक्ष्मणजीको ले आये जिन्हें देखकर रावण आश्चर्यको प्राप्त हुआ ।।५।। श्रीरामजी लक्ष्मणको मूर्छित देख कहने लगे कि हे भाई ! तुम्हारी ऐसी दशा क्यों हुई ?।।६।।

सुनत बचन उठि बैठ कृपाला ❀ गगन गई सो शक्ति कराला
पुनि कोदण्ड बाण गहि धाये ❀ रिपु सन्मुख आतुर चलि आये

श्रीरामचन्द्रजीका ऐसा वचन सुनते ही लक्ष्मणजी उठकर बैठ गये और वह कराल शक्ति आकाशमें चली गई ।। फिर धनुष और बाण लेकर शत्रु के सन्मुख जल्दीसे चले आये ।।८।।

छन्द—आतुर बहोरि विभंजि स्यन्दन मारि तेहि व्याकुल कियो।
गिर्‍यो धरणि दशकन्धर विकल तनु बाण शत बेध्यो हियो॥
सारथी रथ घालि दूसर ताहि लंका लै गयो।
रघुबीर बन्धु प्रताप पुञ्ज बहोरि प्रभु चरनन नयो॥२३॥

लक्ष्मणजी अति आतुर होकर रावणके रथको तोड़कर और उसको मारकर व्याकुल कर दिये। लक्ष्मणने सैकड़ों बाण रावणके शरीरपर मारकर उसके हृदयको बेध दिया तो व्याकुल रावण पृथ्वीपर गिर पड़ा॥ तब तुरन्त सारथी दूसरा रथ ले आकर रावणको सुलाकर लंकामें ले गया। इधर प्रतापी राम-बन्धु लक्ष्मण फिर प्रभुके चरणोंमें प्रणाम किये॥

दोहा—उहाँ दसानन जाय कर, करै लाग कछु यज्ञ।
बिजय चहत रघुपति विमुख, शठ हठ वश अति अज्ञ॥२०१॥

वहाँ रावण घर जाकर कुछ यज्ञ करने लगा। वह मूर्ख श्रीरामचन्द्रजीसे विमुख होकर हठके वश अपनी विजय चाहता था, क्योंकि बड़ा ही मूर्ख था॥ २०१॥

इहाँ विभीषण सब सुधि पाई ❀ सपदि जाय रघुपतिहिं सुनाई
नाथ करै रावण इक यागा ❀ सिद्ध भये नहिं मरहि अभागा

यह हाल जब विभीषणको मिला तो उन्होंने जाकर शीघ्र ही श्रीरामजीको सुनाया कि हे नाथ! रावण एक ऐसा यज्ञ कर रहा है, कि जिसके सिद्ध होनेपर वह मन्दभागी नहीं मरेगा॥२॥

पठवहु नाथ बेगि भट बन्दर ❀ करहिं विध्वंस यज्ञ दशकन्धर
प्रात होत प्रभु सुभट पठाये ❀ हनुमदादि बन्दर सब धाये

हे नाथ! जल्दी वीर बन्दरोंको भेजिये जिससे वह रावणके यज्ञको विध्वंस कर दें॥३॥ प्रातःकाल होने ही वाला था कि स्वामी रामचन्द्रने वीरों को भेज दिया। हनुमान् आदिक सब बानर दौड़ पड़े॥ ४॥

कौतुक कूदि चढ़े कपि लंका ❀ पैठे रावण भवन अशंका
यज्ञ करत जबहीं सो देखा ❀ सकल कपिन भा क्रोध विशेषा

बानर खेल करते हुए लंकामें रावणके घरपर निःशंक हो कूदकर चढ़ गये॥५॥ जब रावणको यज्ञ करते हुए बानरोंने देखा तो उन सब बानरोंको बड़ा क्रोध हुआ॥६॥

रणते भाग निलज गृह आवा ❀ इहाँ आइ बक ध्यान लगावा
अस कहि अंगद मारेहु लाता ❀ चितव न शठ स्वारथ मन राता

रे निर्लज्ज! तू रणसे भागकर घर आया और यहाँ आकर बकध्यान लगा रहा है? ऐसा कहकर अंगदने एक लात मारा, पर रावणने आँखें न खोली क्योंकि उसका मन स्वार्थमें लीन था॥

छन्द—नहिं चितव तब करि कोप कपि गहि दशन लातन मारहीं।
धरि केश नारि निकारि बाहर जब सो दीन पुकारहीं॥
तब उठा कोपि कृतान्त सम गहि चरण बानर डारहीं।
इहि भाँति यज्ञ विध्वंस करि कपि नेकु मनहिं न हारहीं॥२४॥

जब रावण मारनेपर भी बानरोंकी तरफ नहीं देखा तो बानर दांत और लातसे काटने और मारने लगे। स्त्रियोंके केश पकड़कर बाहर निकालने लगे, वह स्त्रियां दीन भावसे पुकारने लगीं! तब रावण अति ही कोपकर कालकी भांति उठा और बानरोंका पैर पकड़कर पछाड़ने लगा, इस प्रकार यज्ञविध्वस करके बानर भागने लगे और मनमें कुछ भी हार न माने ॥२४॥

दोहा—मख विध्वंसकरिकपिसकल, आये रघुपति पास।
चला दशानन क्रोध करि, छाँड़ि विजय की आस॥२०२॥

इस प्रकार सब बानर रावणका यज्ञ विध्वंस करके श्रीरामजीके पास आये। तब रावण क्रोधकर विजयकी आशा छोड़कर चला॥ २०२॥

चलत होंहि तेहि अशुभ भयंकर ❀ बैठहिं गीध उड़ाहिं शिरन पर
भयउ काल वश काहु न माना ❀ कहेसि बजावहु युद्ध निशाना

उसके चलते ही भयङ्कर अशकुन होने लगे गृद्ध शिरोंपर उड़ने और बैठने लगे॥१॥ परन्तु उसने कालके वश हो कुछ न मानकर युद्धका धौंसा (नगाड़ा) बजानेको कहा॥२॥

चली तमीचर अनी अपारा ❀ बहु गज रथ पदाति असवारा
प्रभु सन्मुख खल धावहिं कैसे ❀ शलभ समूह अनल कहँ जैसे

राक्षसोंकी अपार सेना चली जिसमें बहुत हाथी, घोड़े, पैदल और सवार थे॥ वे दुष्ट ईश्वर श्रीरामचन्द्रजीके सन्मुख ऐसे दौड़ने लगे कि जैसे फतिङ्गे मृत्युके वश चिरागपर गिरते हैं॥४॥

इहाँ देव सब बिनती कीन्हीं ❀ दारुण बिपति हमहिं इन दीन्हीं
अब जनि नाथ खेलावहु एही ❀ अतिसय दुखित होइ बैदेही

यहां सब देवताओंने विनय की कि इस रावणने हमलोगोंको भयकर दुःख दिया है॥५॥ हे नाथ! अब इसको मत खेलाइये, सीता अत्यन्त दुःखी हो रही हैं॥६॥

देव बचन सुनि प्रभु मुसुकाना ❀ उठि रघुबीर सुधारेउ बाना
जटा जूट दृढ़ बाँधे माथे ❀ सोहहिं सुमन बीच बिच गाथे

देवताओंके वचन सुनकर प्रभु मुसुकाये, फिर रामजीने बाणोंको सुधारा॥७॥ और शिरपर जटाओंका कसकर जूड़ा बांधा, जिसके बीच-बीच में गुँथे हुए फूल शोभित हो रहे थे॥८॥

अरुण नयन बारिद तनु श्यामा ❀ अखिल लोक लोचन अभिरामा
कटि तट परिकर कसे निषंगा ❀ कर कोदण्ड कठिन सारंगा

लालनेत्र और मेघके समान शरीरवाले जो सम्पूर्ण लोकोंके नेत्रोंको आनन्द देनेवाले थे॥ उन रामने कमरमें दुपट्टा और तरकस बांध हाथमें कठिन शार्ङ्ग धनुष को लिया॥ १०॥

छन्द—सारंग कर सुन्दर निषंग शिलीमुखागर कटि कस्यो।
भुजदण्ड पीन मनोहरायत उर धरासुर पद लस्यो॥
कह दास तुलसी जबहिं प्रभु शर चाप कर फेरन लगे।
ब्रह्माण्ड दिग्गज कमठ अहि महि सिन्धु भूधर डगमगे॥२५॥

हाथमें शार्ङ्ग नामक धनुषको ले कमरमें बाणोंका खजाना तरकसको ले लिए जिनके भुजदंड बड़े ही पुष्ट हैं, जिनकी मनोहर तथा चौड़ी छातीपर ब्राह्मणके चरणका चिन्ह सुशोभित है। तुलसीदासजी कहते हैं कि जब प्रभु धनुष बाणको हाथमें लेकर उसे फिराने लगे, तब ब्रह्माण्ड दिशाओंके हाथी, कच्छप, शेषनाग, पृथ्वी, समुद्र और पर्वत सभी डगमगाने लगे ॥ २५ ॥

दोहा—हर्षे देव बिलोकि छबि, बरषहिं सुमन अगार।
जय जय जय करुणानिधि, छबि बल गुण आगार ॥२०३॥

इस शोभाको देखकर देवता प्रसन्न हो फूलोंकी अपार वर्षा करने लगे। शोभा, शक्ति और अपार गुणवाले करुणानिधानकी जय हो, जय हो, जय हो, कहने लगे ॥२०३॥

इहि के बीच निशाचर अनी ❀ कसमसात आई अति घनी
देखि चले सन्मुख कपि भट्टा ❀ प्रलय काल के जनु घन घट्टा

इसी बीचमें राक्षसोंकी अत्यन्त बड़ी सेना आपसमें रगड़ खाती हुई आई ॥१॥ उसे देखकर बानर-योद्धा ऐसे ही सामने चले, मानों प्रलय-कालके बादलोंकी घटा चली हो ॥२॥

शक्ति शूल तलवार छमक्कहिं ❀ जनु दश दिशि दामिनी दमक्कहिं
गज रव तुरँग चिकार कठोरा ❀ गर्जत मनहुँ बलाहक मोरा

शक्ति, शूल, तलवार इस भाँति चमकने लगे जैसे दशों दिशाओंमें दामिनी दमकती है॥ हाथी, घोड़े ऐसी कठोरचिग्घाड़ करने लगे जैसे मोर और बादलोंकी कठोर गर्जन होती है॥

कपि लंगूर बिपुल नभ छाये ❀ मनहुँ इन्द्र धनु लगेउ सुहाये
उठि रेणु मानहुँ जल धारा ❀ बाण बुंद भइ बृष्टि अपारा

बानरोंकी बहुतसी लम्बी पूँछें आकाशमें ऐसी छा गईं मानों इन्द्र-धनुष शोभित हो॥ बड़े वेगसे उठी धूलि मानों जलधारा है और बाणरूपी बूंदोंकी अपार वृष्टि होने लगी ॥६॥

दुहुँ दिशि पर्वत करहिं प्रहारा ❀ बज्रपात जनु बारहिं बारा
रघुपति कोपि बाण झरि लाई ❀ घायल भे निशिचर समुदाई

दोनों दिशाओंसे पर्वतोंका ऐसा प्रहार करते हैं, जैसे बारम्बार वज्रपात हो रहा हो॥ जब रामजीने कुपित होकर बाणोंकी झड़ी लगा दी तब निशिचर समूह घायल होकर गिर पड़ा॥

लागत बाण बीर चिक्करहीं ❀ घुर्मि घुर्मि अगणित महि परहीं
स्रवहिं शैल जनु निर्झर बारी ❀ शोणित सर कादर भयकारी

बाणके लगते ही वीर चिल्लाने लगे और घूम-घूमकर अगणित वीर पृथ्वीपर गिरने लगे॥ राक्षसोंके शरीरसे जो खून गिरता है वह ऐसा लगता है कि मानों पहाड़के झरनेसे पानी गिरता हो, उस रक्तके तालाबको देखकर कायरोंको भय होने लगा ॥१०॥

छन्द—कादर भयंकर रुधिर सरिता बाढ़ि परम अपावनी।
दोउ कूल दल रथ रेत चक्र अवर्त बहत भयावनी॥

जल जंत गज पदचर तुरँग रथ विविध बाहन को गने ।
शर शक्ति तोमर परशु चाप तुरंग चर्म कमठ बने ।।२६।।

कायरोंको भय देनेवाली अपवित्र रुधिरकी नदी बह चली । दोनों ओरके दल उसके दोनों किनारे हैं, रथ रेत हैं और पहिये भँवर हैं ।। हाथी, घोड़े, पैदल उस जलके जीवधारी जीव हैं, बाण और शक्ति तोमर, परशु और धनुष लहरें तथा ढाल कछुए की तरह दृष्टि आती हैं ।।

दोहा—वीर परे जनु तीर तरु, मज्जा जनु बह फेन ।
कादर देखत डरहिं जिय, सुभटन के मन चैन ।।२०४।।

वीर तट पर गिरे वृक्षकी भाँति जान पड़ते हैं और मज्जा फेनके समान हैं । जिसे देखकर कादर मनमें डर जाते, पर योद्धाओंको उससे आनन्द मिलता था ।।२०४।।

मज्जहिं भूत पिशाच बेताला ❀ केलि करहिं योगिनी कराला
काक कंक लै भुजा उड़ाहीं ❀ एक ते एक छीनि धरि खाहीं

भयंकर भूत, पिशाच, बैताल और योगिनी गण उसमें केलि करते हैं ।। और कौवे तथा गीध भुजाओं को लेकर धरतीसे उड़ते तो उनमें एकसे छीनकर दूसरे पकड़कर खाते हैं ।।२।।

एक कहहिं ऐसेउ प्रभुताई ❀ शठ तुम्हारि दारिद्र न जाई
कहँरत भट घायल तट गिरे ❀ जहँ तहँ मनहुँ अर्द्ध जल परे

एक अपनेमें कहते हैं कि अरे मूर्खो ! ऐसी भी प्रभुताके प्राप्त होनेपर तुम्हारी दरिद्रता नहीं गई ? तटपर गिरे हुए घायल वीर ऐसे कँहर रहे थे मानों अधजलमें जहाँ-तहाँ पड़े हैं ।।

खैंचहिं आँत गीध तट भये ❀ जनु बंशी खेलत चित दये
बहु भट बहहिं चढ़े खग जाहीं ❀ जिमि नावरि खेलहिं सर माहीं

गृद्ध तटपर आँतोंको इस तरह खींचते हैं मानों चित्त देकर वंशीका खेल कर रहे हैं ।। बहुतसे वीर बहते चले जा रहे थे जिनपर पक्षी बैठे हुए जैसे नाव-नेवारा खेलते हैं ।।६।।

योगिनि भरि भरि खप्पर सँचहिं ❀ भूत पिशाच विविध विधि नाचहिं
भट कपाल करताल बजावहिं ❀ चामुन्डा नाना विधि गावहिं

योगिनियाँ खप्पर भर-भरकर संचय करती हैं, भूत-पिशाच नाना प्रकारसे नाचते ।। और वीरोंके शिरको लेकर करताल बजाते हैं और चामुण्डा नाना प्रकारसे गीत गाती हैं ।।

जम्बुक निकर तहाँ कट कटहीं ❀ खाहिं अघाहिं हुआहिं दपटहीं
कोटिन रुंड मुंड बिनु डोलहिं ❀ शीश परे महि जय जय बोलहिं

वहाँ गीदड़ोंके झुण्ड आपसमें कटकटाते हैं । खाते, अघाते और हुआँ-हुआँ करके डपटते हैं ।। करोड़ों रुण्ड बिना मुण्डके घूमते और उनका शिर पृथ्वीपर जयकी ध्वनि उच्चारण कर रहा था ।।

छन्द—बोलहिं जो जय जय रुंड मुंड प्रचंड सिर बिनु धावहीं ।
खप्परन्हि खग्ग अलूझि जूझहिं सुभट सुरपुर पावहीं ।।

निशिचर बरूथ बिमर्दि गरजहिं भालु कपि दर्पित भये।
संग्राम अंगन सुभट सोवहिं राम शर निकरन्हि हये॥२७॥

मुंड पृथ्वीपर जयकी ध्वनि बोलते और प्रचंड रुंड बिना शरीरके इधर-उधर दौड़ते हैं, शूर-वीर लड़ाईके मैदानमें जूझकर स्वर्गको जाते हैं॥ बानर और रीछ राक्षसोंका संहार कर चिग्घाड़ने लगे। श्रीरामचन्द्रके बाण-समूहोंसे निकलते बाणों द्वारा मारे गए योद्धागण युद्ध-भूमिके आंगनमें सो गये॥ २७॥

दोहा—हृदय बिचारेसि दस बदन, भा निशिचर संहार।
मैं अकल कपि भालु बहु, माया करौं अपार॥२०५॥

तब रावणने अपने हृदयमें ऐसा विचार किया कि अरे! निशाचरोंका तो संहार हो गया॥ मैं अकेला हूँ, बानर भालु अधिक हैं, इससे अब माया करने से ही काम चलेगा॥२०५॥

देवन प्रभुहिं पयादे देखा ❀ उर उपजा अति क्षोभ विशेषा
सुरपति निज रथ तुरत पठावा ❀ हर्ष सहित मातलि लै आवा

जब देवता प्रभुको पैदल चलते देखे तो उनके हृदयमें बड़ा दुःख उत्पन्न हुआ॥ १॥ इन्द्रने तुरन्त ही अपना रथ भेजा जिसे हर्षपूर्वक मातलि ले आया॥२॥

तेजपुंज रथ दिव्य अनूपा ❀ बिहँसि चढ़े कोशलपुर भूपा
चंचल तुरँग मनोहर चारी ❀ अजर अमर मानस गति भारी

उस अनोखे और तेजपुंज रथपर कोशलाधीश श्रीरामचन्द्रजी मुसकुराकर चढ़े कि॥ जिस रथमें चार मनोहर और चंचल तथा अजर-अमर और मनकी गतिको जाननेवाले चार घोड़े जुते थे॥

रथारूढ़ रघुनाथहिं देखी ❀ धाये कपि बल पाय बिशेखी
सही न जाय कपिन की मारी ❀ तब रावण माया बिस्तारी

श्रीरामचन्द्रजीको रथपर चढ़े देखकर बानर दलमें विशेष शक्ति आई तो वे दौड़े॥५॥ अब बानरोंकी मार रावणसे सही न गई। तब उसनें अपनी मायाका विस्तार किया॥६॥

सो माया रघुबीरहिं बाँची ❀ सब काहू मानी करि साँची
देखी कपिन्ह निशाचर अनी ❀ अनुज सहित बहु कोसल धनी

वह माया रामजीको छोड़कर बानर दलको सच्ची ज्ञात हुई॥ और बानर निशाचरोंकी सेनाको देखकर यह समझने लगे कि बहुतसे रामचन्द्र अपने अनुज सहित यहाँ विद्यमान हैं॥

छन्द—बहु राम लक्ष्मण देखि मर्कट भालु मन अतिशय डरे।
जनु चित्र लिखित समेत लक्ष्मण जहँ सो तहँ चितवत खरे॥
निजसैन चकित बिलोकि हँसि शरचाप सजि कोशल धनी
माया हरी हरि निमिष महँ हरषी सकल मर्कट अनी॥२८॥

तब अनेक राम-लक्ष्मणको देखकर बन्दर और रीछ मनमें अति भयभीत हुए। मानों चित्र लिखित लक्ष्मण सहित वे वहाँ देखते हुए खड़े हैं॥ तब रामजीने अपनी सेनाको चकित देखकर ऐसा बाण मारा कि रावणकी सारी माया पलभरमें दूर हो गई और बानर-भालु अत्यन्त हर्षित हुए॥

दोहा--बहुरि राम सब तन चितै, बोले बचन गँभीर।
द्वन्द युद्ध देखहु सकल, श्रमित भये अति बीर॥२०६॥

फिर श्रीरामचन्द्रजी सब बानरी सेनाकी ओर देखकर गम्भीरस्वरसे बोले। जो मैं द्वन्द्व युद्ध करता हूँ, उसे तुम सब देखो, क्योंकि हे वीरों! तुम लोग बहुत थक गए हो ॥२०६॥

अस कहि रथ रघुनाथ चलावा ❁ विप्र चरण पंकज सिर नावा
तब लंकेश क्रोध उर छावा ❁ गर्जत तर्जत सन्मुख आवा

ऐसा कह श्रीरामचन्द्रजी रथ बढ़ाये और ब्रह्मणोंके कमलवत् चरणोंमें शिर नवाये॥ इसपर उसके हृदयमें और क्रोध छा गया तब तो वह रावण गरजता हुआ रामजीके सामने आया॥

जीतेउ जे भट संयुग माहीं ❁ सुनु तापस मैं तिन सम नाहीं
रावण नाम जगत यश जाना ❁ लोकपाल जेहि बन्दी खाना

उसने कहा–रे तपस्वी! तूने जो सब भटोंको जीता है उनके समान मैं नहीं हूँ ॥३॥ मेरा नाम रावण है, मेरे यशको संसार जानता है कि जिसके जेलखानेमें लोकपाल गण पड़े हैं ॥४॥

खरदूषण बिराध तुम मारा ❁ हतेउ व्याध इव बालि बिचारा
निशिचर सुभट सकल संहारे ❁ कुम्भकर्ण घननादहिं मारे

तूने ही खरदूषण और विराधको मारा और चिड़ीमारकी भाँति विचारे बालिको मारा॥ सब बोर राक्षसोंका संहारकर कुम्भकर्ण और इन्द्रजीतको भी तुम्हीने मारा है ॥६॥

आजु बैर सब लेहुँ निबाही ❁ जौं रणभूमि भागि नहिं जाही
आज करौं खल काल हवाले ❁ परेउ कठिन रावण के पाले

आज मैं सम्पूर्ण वैर तुझसे लूंगा, यदि रणसे नहीं भागोगें तो ॥७॥ हे दुष्ट! आज मैं तुझे कालके हवाले कर दूँगा, तू जानता नहीं कि, कठिन रावणके पाले पड़े हो ॥८॥

सुनि दुर्बचन काल बस जाना ❁ बिहँसि बचन कह कृपानिधाना
सत्य सत्य तव सब प्रभुताई ❁ जनि जल्पसि देखाव मनुसाई

श्रीरामजी उसकी बुरीबातोंको सुनकर तथा कालके वश जानकर उन कृपानिधानसे यह वाक्यकहा कि—तेरी प्रभुताई सब सत्य होगी, अब ज्यादा बकवाद मत कर, अपना मनसूबा दिखा॥१०॥

छन्द--जनि जल्पना करि सुजस नाशहि नीति सुनु सठ करु छमा।
संसार महँ पूरुष त्रिबिध पाटल रसाल पनस समा॥
इक सुमन प्रद इक सुमन फल इक फलइ केवल लागहीं।
इक कहहिं करहिं अपर इक करहिं कहत न बागहीं॥२९॥

ऐ मूर्ख! बकवाद करनेसे सुयश नाश होता है, नीतिको सुनकर क्षमा करना। ससारमें मनुष्य तीन तरहके होते हैं, उनमेंसे पहला गुलाब का फूल सिर्फ फूल ही देता है ऐसे मनुष्य बकवाद करते हैं, दूसरे आमके वृक्ष जैसे होते हैं, वह कहते और करते भी हैं, तीसरे कटहल की तरह होते हैं जो केवल फलता है, फूलता नहीं, ऐसे लोग कर दिखाते हैं, कहते नहीं॥

दोहा—राम बचन सुनि बिहँसि कह, मोहिं सिखावहु ज्ञान ।
बैर करत तब नहिं डरे, अब लागत प्रिय प्रान ॥२०७॥

रावण रामजीकी बातोंको सुनकर हँसा और बोला कि मुझको ज्ञानकी शिक्षा देते हो। तब बैर करते डर नहीं लगा, अब युद्धस्थलमें प्राणका मोह लग रहा है ? ॥ २०७ ॥

कहि दुर्बचन क्रोध दशकन्धर ❀ कुलिस समान लाग छाँड़न शर
नानाकार शिलीमुख धाए ❀ दिसि अरु बिदिस जगत महि छाये

रावणने ऐसे दुर्वचन कह क्रोधित हो, वज्रके समान बाण छोड़ने लगा॥ वे अनेक प्रकारके शिलीमुखनामक बाण ऐसे छोड़े कि उनसे दिशा-विदिशाओं सहित संसारकी समस्त भूमि ढँक गई

अनल बाण छाँड़े रघुबीरा ❀ क्षण महँ जरे निशाचर बीरा
छाँड़ेसि तीव्र शक्ति खिसिआई ❀ बाण संग प्रभु फेरि पठाई

ऐसी दशामें श्रीरामचन्द्रजीने अग्निबाण छोड़कर रावणके बाणको क्षणभरमें नाश कर दिया ॥ इसपर रावणने क्रुद्ध हो तीव्र शक्ति चलाया तो प्रभुने उसे वापस भेज दिया ॥४॥

कोटिन चक्र त्रिशूल पँवारे ❀ तिल समान प्रभु काटि निवारे
विफल होहिं रावण शर कैसे ❀ खल के सकल मनोरथ जैसे

रावणने करोड़ों चक्र और त्रिशूल छोड़ा परन्तु भगवान्‌ने उसे तिलके समान काटकर गिरा दिया। सब बाण ऐसे निष्फल हुए, जैसे दुष्टोंके सम्पूर्ण मनोरथ निष्फल हो जाते हैं ॥

तब शत बाण सारथिहिं मारेसि ❀ परेउ भूमि जय राम पुकारेसि
राम कृपा करि सूत उठावा ❀ तब प्रभु परम क्रोध उर छावा

तब रावण क्रोधित होकर सारथी मातलिको सैकड़ों बाण मार पृथ्वीपर गिरा दिया। वह "जय राम" पुकारने लगा, तब कृपाकर रामने उसे उठाया और प्रभुके हृदयमें बड़ा क्रोध छा गया॥

छन्द—भये क्रुद्ध युद्ध विरुद्ध रघुपति त्रोण सायक कसमसे ।
कोदण्ड धुनि सुनि चण्ड अति मनुजाद भय मारुत ग्रसे ॥
मन्दोदरी उर कंप कंपित कमठ भूधर अति त्रसे ।
चिक्करहिं दिग्गज दशन गहि महि देख कौतुक सुर हँसे॥३०॥

जब प्रभु युद्ध करते हुए अधिक क्रुद्ध हुए तो तीर तरकसमें न समा सके, धनुष प्रचंड ध्वनि करने लगा और इस कठोर आवाजको सुनकर रावण डर गया। मन्दोदरी मारे डरके काँप उठी, कमठ और पर्वत डगमगाने लगे, हाथी अपने दाँतोंको पकड़कर चिग्घाड़ने लगे, यह कौतुक देखकर देवता हँसने लगे ॥३०॥

दोहा—तान्यो चाप जो श्रवण लगि, छाँड़े विसिख कराल ।
रघुनायक सायक चले, लहलहात जनु ब्याल॥२०८॥

फिर तो श्रीरामचन्द्रजीने धनुषको कान तक खींचा तो उनके छोड़े हुये कराल बाण आकाशमें ऐसे चले जैसे सर्प लहलहाते हुए जाते हैं ॥२०८॥

चले बाण सपक्ष जनु उरगा ❁ प्रथमहिं हते सारथी तुरगा
रथ विभंजि हति केतु पताका ❁ गर्जा अति अन्तर बल थाका

श्रीरामचन्द्रजीके पंखोंवाले बाण सर्पके सदृश चले जिन्होंने पहले रावणके सारथी और घोड़ोंको मार डाला ।। फिर रथको तोड़ ध्वजा और पताकोंका भी नाशकर दिया, तब रावण जो भीतरके बलसे बिल्कुल थक गया था, फिर बड़े जोरकी गर्जना किया ।। २ ।।

तुरत आनि रथचढ़ि खिसियाना ❁ छाँड़ेसि अस्त्र-शस्त्र विधि नाना
विकल होहिं सब उद्यम ताके ❁ जिमि परद्रोह निरत मनसा के

तब वह क्रोधित होकर तुरन्त दूसरा रथ मँगाकर उसपर चढ़ा और नाना भाँतिके अस्त्र-शस्त्र छोड़ा।। किन्तु उसके सब उद्यम ऐसे विफल होते थे कि जैसे परद्रोहीकी मनोकामनायें व्यर्थ होतीहैं।।

तब रावण दश शूल चलाये ❁ बाजि चारि महि मारि गिराये
तुरँग उठाय कोपि रघुनायक ❁ छाँड़े अति कराल बहु सायक

तब रावणने दश शूल और चलाया जिससे श्रीरामचन्द्रजीके रथके चारों घोड़े पृथ्वीपर गिर पड़े ।। तब घोडोंको उठाकर श्रीरामचन्द्रजी अति कुपितहो बहुतसे कठिन बाण छोड़े ।।६।।

रावण शिर सरोज बनचारी ❁ चलि रघुनाथ शिलीमुख धारी
दस दस बाण भाल दस मारे ❁ निसरि गये चलि रुधिर पनारे

वे बाण रावणके शिरमें कैसे जाते हैं जैसे भौंरे कमल पर मुग्ध हो जाते हैं ।। रामजी रावणके दशों शिरमें दश-दश बाण मारे जो पार हो गए और उसके शिरसे खूनके पनारे चलने लगे ।।८।।

स्रवत रुधिर धावा बलवाना ❁ प्रभु पुनि कृत धनु शर संधाना
तीस तीर रघुबीर पँवारे ❁ भुजन समेत सीस महि डारे

रावणके शरीरसे खून बह रहा था, उसपर भी वह प्रभुकी ओर दौड़ा ।।६।। इसपर प्रभुने धनुष तानकर तीस बाण मारा जिससे भुजाओं सहित उसका शिर कटकर पृथ्वीपर गिर पड़ा।।

काटत ही पुनि भये नवीने ❁ राम बहोरि भुजा शिर छीने
कटत झटिति पुनि नूतन भये ❁ प्रभु बहु बार बाहु शिर हये

रामजी द्वारा शिर और भुजाओंके कटते ही रावण फिर तैयारहो गया किन्तु प्रभुने फिर उसकी, भुजायें और शिरको काटकर गिराया ऐसेहो प्रभुने बहुतबार काटा परन्तु वह फिर नया हो जाताथा

पुनि पुनि प्रभु काटहिं भुज शीशा ❁ अति कौतुकी कोशलाधीशा
रहे छाइ नभ शिर अरु बाहू ❁ मानहु अमित केतु अरु राहू

अत्यन्त कौतुकी प्रभु रामजी बार-बार रावणकी भुजा और शीशको काटते। किन्तु उसकी भुजाओं और शिरोंसे आकाश छा गया, जैसे असंख्य राहु और केतु इधर-उधर दौड़ते हों ।।१४ ।।

छन्द—जनु राहु केतु अनेक नभ पथ स्रवत शोणित धावहीं ।
रघुबीर तीर प्रचण्ड लागहिं भूमि गिरन न पावहीं ।।
एक एक शर शिर निकर छेदत नभ उड़त इमि सोहहीं ।
जनु कोपि दिनकर कर निकर जहँ तहँ विधुन्तुद पोहहीं।। ३१।।

जिस प्रकार से रक्त बह रहे राहु और केतु आकाश में इधर-उधर दौड़ते हैं। रामजी के प्रचण्ड बाण लगने से वे आकाश में ही उड़ते हैं। और इस प्रकार उड़ते हुए दीख पड़ते, जैसे सूर्य कुपित होकर, अपनी किरणों से राहु-केतु को पोह (गुह) रहा है ॥३१॥

दोहा—जिमि जिमि प्रभु हत तासु शिर, तिमि तिमि होहिं अपार।
सेवत विषय विवर्ध जिमि, नित नित नूतन मार ॥२०९॥

जैसे-जैसे प्रभु उसके सिर को काटते वैसे ही वैसे वह अपार इतने बढ़ते जाते थे॥ जैसे नित्य के विषय सेवन करने से नित्य नवीन कामदेव बढ़ता है ॥२०९॥

दशमुख देखि शिरन कै बाढ़ी ❀ बिसरा मरन भई रिस गाढ़ी
गरजेउ मूढ़ महा अभिमानी ❀ धायउ दशहु शरासन तानी

वह मूर्ख रावण शिर की बाढ़ को देखकर अपनी मृत्यु को भूल गया और उसे बड़ा क्रोध आया॥ अभिमान युक्त गरजा और प्रभु की ओर दशों धनुष तानकर दौड़ा ॥२॥

समर भूमि दशकन्धर कोपा ❀ बरषि बाण रघुपति रथ तोपा
दण्ड एक रथ देखि न परेऊ ❀ जनु निहार महँ दिनकर दुरेऊ

युद्धस्थल में रावण इतना कुपित हुआ कि बाणों की वर्षा से श्रीरामचन्द्र के रथ को ढक दिया॥ वह रथ एक घण्टे तक ऐसे ही दृष्टिगोचर न हुआ जैसे कुहरे में सूर्य नहीं दीख पड़ता ॥४॥

हाहाकार सुरन्ह सब कीन्हा ❀ तब प्रभु कोपि धनुष कर लीन्हा
शर निवारि रिपु के शिर काटे ❀ ते दिशि विदिश गगन महि पाटे

जब देवताओं ने हाहाकार किया तो प्रभु ने कुपित होकर हाथों से धनुष को उठाया॥ और उसके बाणों को रोक कर शत्रु के शिर को काट दिया, उन बाणों से उन्होंने दिशा-विदिशाओं सहित आकाश और पृथ्वी को पाट दिया ॥६॥

काटे शिर नभ मारग धावहिं ❀ जयजय धुनि कहि भय उपजावहिं
कहँ लक्ष्मण हनुमन्त कपीशा ❀ कहँ रघुबीर कोशलाधीशा

रावण के कटे हुये शिर आकाश में दौड़-दौड़कर जय की ध्वनि उच्चारण कर सबके मन में भय उत्पन्न करते और कहते कि लक्ष्मण, हनुमान् आदि बानर और कोशलाधीश राम कहाँ गये॥

छन्द—कहँ राम कहि शिर निकर धावहिं देखि मर्कट भजि चले।
सन्धानि शर रघुवंश मणि तब सरनि सिर बेधे भले॥
शिर मालिका गहि कालिका कर बृन्द बृन्दनि बहु मिलीं।
करि रुधिर सर मज्जन मनहुँ संग्राम बट पूजन चलीं ॥३२॥

कटे हुये शिर मुख से उच्चारण करते कि राम कहाँ हैं, ऐसे शब्द सुनकर बन्दर भागने लगे तब भगवान्‌ने अपने बाणों से राक्षसों को नाश कर दिया। कालिका अपने वृन्दों समेत मुंडमाला लेकर रुधिर के तालाब में नहाती हुई ऐसी लगती हैं मानों युद्धरूपी बटको पूजने चली हैं॥

दोहा—पुनि रावण अति क्रोध करि, छाँड़ी शक्ति प्रचंड।
सन्मुख चली बिभीषनहिं, मनहुँ काल कोदंड ॥२१०॥

फिर रावण ने अति कुपित हो प्रचण्ड शक्ति छोड़ी जो विभीषण के सामने ऐसे चली मानों काल ने धनुष से बाण छोड़ा है ।।२१०।।

आवत देखि शक्ति वर धारा ❀ प्रणतारति हर विरद सँभारा
तुरत विभीषण पाछे मेला ❀ सन्मुख सहेउ राम सोइ शैला

उस श्रेष्ठ शक्तिरूपी बाण की धारा को आते हुए देखकर प्रभु अपने प्राणप्रिय भक्त विभीषण को सँभाले ।। आप सामने उस शक्ति के प्रहार को सहन किए और विभीषण को पीछे कर लिये।।

लगी शक्ति मूर्छा कछु भई ❀ प्रभु कृत खेल सुरन्ह बिकलई
देखि विभीषण प्रभु श्रम पायउ ❀ गहि कर गदा क्रोध कर धायउ

रावण के उस बाण के लगने से भगवान् राम को कुछ मूर्छा आ गई, ईश्वर राम के उस कियें हुए खेल से देवताओं में व्याकुलता हुई ।।३।। विभीषण ने देखा कि इससे स्वामी को श्रम प्राप्त हुआ तो वह हाथ में गदा पकड़कर क्रोध से दौड़े ।।४।। और बोले—

रे अभाग्य शठ मंद कुबुद्धे ❀ तैं सुर नर मुनि नाग विरुद्धे
सादर शिव कहँ शीश चढ़ाये ❀ एक-एक के कोटिन पाये

रे अभागें और कुबुद्धिवाला ! तूने देवता मुनि सबसे बैर किया है, तूने शिव को नमस्कार कर आदर सहित अपने शिर को चढ़ाया इससे तेरे एक शीश के कटने से करोडों शीश होते हैं ।।६।।

तेहि कारन खल अब लगि बाँचा ❀ अब तव काल शीश पर नाचा
राम विमुख शठ चहसि संपदा ❀ अस कहि हनेसि माँझ उर गदा

रे दुष्ट ! उसी कारण तू अब तक बचा है किन्तु अब तेरे शिर पर काल नाच रहा है । ऐ शठ ! तू राम से विमुख होकर धन चाहता है । ऐसे कह रावण के हृदय पर गदासे मारा ।।

छन्द—उर माँझ गदा प्रहार घोर कठोर लागत महि पर्यो ।
दशबदन शोणित श्रवत पुनि सम्भारि धायो रिस भर्यो ।।
दोउ भिरे अति बल मल्ल युद्ध बिरुद्ध एकहि इक हने ।
रघुबीर बल गर्वित विभीषन घात नहिं ताकहँ गने ।।३३।।

हृदय पर कठोर गदा की चोट लगने से रावण पृथ्वी पर गिर गया । उसके मुखसे खून बहने लगा फिर सँभलकर अति कुपित हो दौड़ा । महाबली रावण और विभीषण युद्ध करते और एक को एक दाँव मारते हैं परन्तु विभीषण प्रभु के बल से अति गर्वित हो रावण के घात को कुछ नहीं समझते थे ।।३३।।

दोहा—उमा विभीषण रावणहिं, सन्मुख चितव कि काउ ।
भिरत सो काल समान अब, श्रीरघुबीर प्रभाउ ।।२११।।

हे पार्वती ! जो विभीषण रावण के सामने नहीं देखता था, वही विभीषण अब रावण से काल की भाँति लड़ रहा है, यह सब श्रीरामचन्द्रजी का प्रभाव था ।।२११।।

देखा श्रमित विभीषन भारी ❀ धाये हनूमान गिरिधारी
रथ तुरंग सारथी निपाता ❀ हृदय माँझ मारेउ तेहि लाता

तब हनुमान्जी विभीषण को थका देखे तो पर्वत लेकर दौड़े तथा उनके पास जाते ही रावण के रथ, घोड़े और सारथी को मारकर उसकी छाती में एक लात मारा ।। ३ ।।

ठाढ़ रहा अति कंपित गाता ❀ गयउ विभीषण जहँ जनत्राता
पुनि रावण तेहि हतेउ प्रचारी ❀ चलेउ गगन कपि पूँछ पसारी

फिर भी वह अति कुपित शरीर खड़ा रहा और विभीषण रामजीके पास गये ।। फिर रावणने हनुमान् को ललकार कर मारा तो वह पूँछ पसारकर आकाश में उड़ गये ।। ४ ।।

गहेसि पूँछ कपि सहित उड़ाना ❀ पुनिफिरिभिरेउ प्रबल हनुमाना
लरत अकास युगल सम योधा ❀ हनत एक एकहि करि क्रोधा

जब रावणने हनुमान् की पूँछ पकड़ा तो हनुमान्जी उसको लेकर आकाश में उड़ गये और फिर वे प्रबल वीर हनुमान् उसके साथ भिड़े ।।५।। दोनों समान योद्धा एक दूसरे को मारते हुए आकाश में लड़ने लगे ।। ६ ।।

शोभित नभ छल बल बहु करहीं ❀ कज्जलगिरि सुमेरु जनु लरहीं
बुधिबल निशिचर मरै न मारा ❀ तब मारुत सुत प्रभुहिं सँभारा

छल-बल करते हुए दोनों आकाश में ऐसे सुशोभित होते हैं जैसे कज्जल पर्वत और सुमेरु पहाड़।। हनुमान्जी नाना भाँतिसे रावणको वशमें करना चाहते, पर रावण वशमें नहीं होता ।।८।।

छन्द—संभारि श्रीरघुबीर धीर प्रचारि कपि रावन हन्यो।
महि परत पुनि उठि लरत देवन युगल कहँ जय जय भन्यो।।
हनुमन्त संकट देखि मरकट भालु क्रोधातुर चले।
रणमत्त रावण सकल सुभट प्रचण्ड भुजबल दल मले ।।३४।।

तब हनुमान्ने रामका स्मरण कर धीरज धर रावणको ललकारा, उसपर शस्त्र छोड़ने लगे दोनों वीर पृथ्वी पर गिरते हैं, फिर सँभलकर उठते हैं, देवगण दोनोंकी जय मनाते हैं, बानर और भालू हनुमान्जी को संकट में देख अति क्रोधित हो चले, परन्तु रणबावला रावण ने अपनी प्रचंड बलशाली भुजाओं से सब बानर वीरों का मर्दन कर दिया ।। ३४ ।।

दोहा—राम प्रचारे वीर सब, धाये कीश प्रचंड।
कपिदल विपुल विलोकि तेहि, कीन्ह प्रगट पाखंड ।।२१२।।

जब रामजीने देखा कि हमारे सब वीर हार रहे हैं तो सबको ललकारा, तब उत्साहित होकर बानर दौड़े। तब उनकी अखंड सेनाको देखकर रावणने अपना पाखंड फैलाया ।।२१२।।

अन्तर्द्धान भयउ क्षण एका ❀ पुनि प्रगटेसि खल रूप अनेका
रघुपति कटक भालु कपि जेते ❀ जहँ तहँ प्रगट दशानन तेते

रावण क्षणभरमें अन्तर्ध्यान हो गया फिर वह दुष्ट नाना प्रकारसे भयानक रूप दिखाने लगा ।। रामजीकी सेनामें जितने भालू और बन्दर थे उतने ही रावण दृष्टि आने लगे ।।२।।

देखे कपिन अमित दशशीशा ❀ भागे भालु विकट भट कीशा
चले बली मुख धरहिं न धीरा ❀ त्राहि त्राहि लक्ष्मण रघुबीरा

जब बानरोंने बहुतसे रावण देखे तो वे वीर विकट भालु बन्दर धैर्य छोड़ भाग चले ॥ और वे बलवान् राम-लक्ष्मण कहकर त्राहि त्राहि करने लगे ॥ ४ ॥

दस दिसि कोटिन धावहिं रावन ❁ गर्जहिं घोर कठोर भयावन
डरे सकल सुर चले पराई ❁ जय की आश तजहु रे भाई

दशों दिशाओंमें करोड़ों रावण दौड़ते जो भयानक तथा कठोर गर्जन करते थे। जितने देवता थे, सब डर कर इधर-उधर भाग चले और कहने लगे, हे भाई! विजय की आशा छोड़ दो ॥

सब सुर जितेउ एक दशकंधर ❁ अब बहु भये तकहु गिरि कंदर
रहे विरंचि शंभु मुनि ज्ञानी ❁ जिन जिन प्रभुकी महिमा जानी

एक रावणने तो सब देवताओंको जीत लिया, अब तो बहुत हैं चलो पहाड़ोंकी कन्दरोंमें छिप चलें। किन्तु शंकरजी और ब्रह्माजी मुनि और ज्ञानी जो प्रभुकी महिमाको जानते थे ॥८॥

छन्द—जानेउ प्रताप ते रहे निर्भय कपिन रिपु मानेउ फुरे।
चले विकट मर्कट भालु सकल कृपालु पाहि भयातुरे ॥
हनुमन्त अंगद नील नल बलवन्त अति रण बाँकुरे।
मर्दहिं दशानन कोटि कोटिन्ह कपट भट के आँकुरे ॥३५॥

तब जो लोग प्रभुके प्रतापको जानते थे वे तो निर्भय थे, किन्तु बानर और रीछ शत्रुकी मायाको ही प्रबल मानते थे और वे लोग डरके मारे विचलित होकर भागे हुए प्रभुके पास आये। हनुमान्, नील, नल बाँकुरे बीर सैकड़ों बानरोंने दशानन को मारे परन्तु वे माया के रावण फिर नये होते जाते थे ॥ ३५ ॥

दोहा—सुर बानर देखे विकल, हँसे कोशलाधीश।
साजि शरासन निमिष महँ, हरे सकल दशशीश ॥२१३॥

देवता तथा बानरोंको विकल देख रामजी हँसे और क्षण भर में धनुष बाण साज कर सारे रावणों का संहार कर दिया ॥ २१३ ॥

प्रभु क्षण महँ माया सब काटी ❁ जिमि रवि उदय जाय तम फाटी
रावण एक देखि सुर हर्षे ❁ विपुल सुमन पुनि प्रभु पर बर्षे

प्रभुने क्षण भरमें सब मायाको काट दिया जैसे सूर्यके उदय होते ही अँधेरा नाश हो जाता है ॥ जब देवता अकेले रावण को देखे तो प्रभुके ऊपर बहुत से फूलों की वर्षा करने लगे ॥

भुज उठाय रघुपति कपि फेरे ❁ फिरे एक एकनि के टेरे
प्रभु बल पाय भालु कपि धाये ❁ तरल तमकि संयुग महि आये

श्रीरामजीने भुजा उठाकर सब कपियोंको बुलाया तब एक-एकके पुकारनेपर सब लौट आये ॥ फिर उनके बलको पाकर बानर-भालु दौड़ और कूदकर रणके बीच आ डटे ॥४॥

करत प्रशंसा देवन देखे ❁ भयउ एक मैं इनके लेखे
शठहु सदा तुम मोर मरायल ❁ अस कहि कोपि गगन-पथ धायल

रावण ने जब देवताओं को प्रशंसा करते हुए देखा तो मन में कहने लगा कि इनके लिये तो मैं अकेले काफ़ी हूँ, ऐसे कह वह कुपित हो आकाश मार्ग से (उड़कर) दौड़ा ॥६॥

हाहाकार करत सुर भागे ❋ शठहु जाहु कहँ मारुत आगे
देखि विकल सुर अंगद धाये ❋ कूदि चरण गहि भूमि गिराये

देवता हाहाकार करते हुए भागे, तब रावण बोला—मूर्खों! वायु के आगे कहाँ जाते हो? देवताओं को विकल देखकर अङ्गद रावण का पैर पकड़कर भूमिपर गिरा दिये ॥८॥

छन्द—गहि भूमि पार्यो लात मार्यो बालिसुत प्रभु पहँ गयो।
संभारि उठि दशकन्ध घोर कठोर रव गर्जत भयो॥
करि दाप धनुष चढ़ाय दश संधानि शर बहु वर्षई।
किये सकल भट घायल भयाकुल देखि निज बल हर्षई॥३६॥

रावण का पैर पकड़ जमीन पर पटक लात मारा। अङ्गदजी खुशी-खुशी राम के पास पहुँचे। फिर रावण सँभलकर उठा और क्रोधित हो अति कठोर गर्जना की और उस मूर्ख ने घमण्डकर दसों धनुष चढ़ाकर असंख्य बाणों की वर्षा की। फिर सब वीरों को घायलकर अपने बल को देख रावण अति हर्षित हुआ ॥ ३६ ॥

दोहा—तब रघुपति लंकेश के, शीश भुजा शर चाप।
काटे भये बहोरि तेइ, जिमि तीरथ के पाप ॥२१४॥

तब श्रीरामचन्द्रजी ने रावण के शिर, भुजा और धनुष-वाण काट गिराये। परन्तु वे फिर ऐसे ही उत्पन्न हो गये, जैसे तीर्थ में किये पाप नए हो जाते हैं ॥२१४॥

शिर भुज बाढ़ि देखि रिपु केरी ❋ धाये कपि रिस भई घनेरी
मरत न मूढ़ कटे भुज शीशा ❋ धाये कोपि भालु अरु कीशा

शत्रु के शिर और भुजा को बढ़ते हुए देखकर बानर और भालुओं को बड़ा क्रोध आया तो वे दौड़े और कहने लगे कि यह मूढ़ भुजा और शीश काटने पर भी नहीं मरता है ॥२॥

बालि तनय मारुति नल नीला ❋ द्विविद मयन्द महाबल शीला
विटप महीधर करहिं प्रहारा ❋ सोइगिरितरुगहिकपिनसोमारा

अङ्गद, नल, नील और हनुमान् और महाबलशाली मयन्द वृक्ष और पहाड़ों को रावण पर प्रहार करने लगे तो रावण उन्हीं पहाड़ों और वृक्षों को लेकर बानरों को मारने लगा ॥४॥

एक नखन रिपु बिपुल बिदारी ❋ भागि चलहिं इक लातन मारी
तब नलनील शिरनि चढ़ि गयऊ ❋ नखनि लिलाट बिदारत भयऊ

वहाँ पर तो कोई बानर रावण को नख से निकोटता और कोई लात मारता ॥५॥ तब नल-नील उसके शिरों पर चढ़ नखों से उसके ललाट को चीरने, फाड़ने लगे ॥ ६ ॥

रुधिर बिलोकि सकोप सुरारी ❋ तिनहिं गहन को भुजा पसारी
गहे न जाहिं शिरन पर फिरहीं ❋ जनु युग मधुप कमल बन चरहीं

रावण अपने शिर से रक्त बहते देख, अति क्रोधित हो बानरों को पकड़ने के लिए हाथ फैलाया ।। परन्तु उन सबों को पकड़ न सका, दोनों बानर उसके शिर पर भौंरे के समान थे ।।

कोपि कूदि दोउ धरेसि बहोरी ❀ महि पटकत गहि भुजा मरोरी
पुनि सकोप दश धनु कर लीन्हा ❀ शरनि मारि घायल कपि कीन्हा

ऐसी दशा में रावण अति कुपित हो कूदकर नल और नील की भुजा को मरोड़ पृथ्वी पर पटक दिया ।। फिर अति कुपित हो दशों धनुषबाण हाथ में ले दोनों को घायलकर दिया ।।

हनुमदादि मूर्छित सब बन्दर ❀ पाय प्रदोष हर्ष दशकन्धर
मूर्छित देखि सकल कपि बीरा ❀ जामवन्त धावा रनधीरा

रावण हनुमान् आदि सब बन्दरों को मूर्छित देख अति खुश हुआ ।। जामवन्त ने जब देखा कि बन्दर मूर्छित हो सोये हैं तो शीघ्रतापूर्वक वह वीर लड़ाई के क्षेत्र में आ डटा ।।१२।।

संग भालु भूधर तरु धारी ❀ मारन लगे प्रचारि प्रचारी
भयो क्रोध रावन बलवाना ❀ गहि पद महि पटके भट नाना

जामवन्त और बन्दर गण पहाड़ और वृक्ष ले रावण को ललकार-ललकार कर मारने लगे ।। इस पर रावण फिर अति क्रोधित हो अनेक वीरों को पृथ्वी पर पटकने लगा ।।१४।।

देखि भालुपति निज दल घाता ❀ कोपि माँझ उर मारेउ लाता

जब जामवन्त ने अपनी सेना का संहार होते देखा तो कुपित हो रावण की छाती में एक लात मारा ।।

छन्द—उर लात घात प्रचण्ड लागत विकल रथ ते महि गिरा ।
गहि भालु बीसहु करन्हि मानहु कमल निसि बस मधुकरा ।।
मूर्छित बहोरि बिलोकि पद हति भालुपति प्रभु पहँ गयो ।
निशि जानि स्यंदन घालि तेहि तब सूत यत्न सुगृह लयो ।३७।

रावण के हृदय में लात मारते ही वह भूमि पर गिर पड़ा परन्तु भालु रावण के बीसों हाथमें ऐसे पड़े हैं जैसे रात्रिमें कमल के बीच में भौंरे बन्द हो जाने पर पड़े रहते हैं, उसी मूर्छा में जामवन्त फिर एक लात मारकर प्रभु के पास गये और सारथी रात होते देख रावण को रथ में उठा ले गया ।।३७।।

दोहा—गइ मुरछा तब भालु कपि, सब आये प्रभु पास ।
सकल निशाचर रावनहिं, घेरि रहे अति त्रास ।।२१५।।

इधर बन्दर और भालुओं की मूर्छा समाप्त हुई तो वे रामजी के पास आये । उधर सम्पूर्ण निशाचर मारे डर के रावण के चारों तरफ खड़े थे ।।२१५।।

तेहि निशि महँ सीता पहँ जाई ❀ त्रिजटा कहि सब कथा बुझाई
सिर भुज बाढ़ि सुनत रिपु केरी ❀ सीता उर भइ त्रास घनेरी

उसी रात में त्रिजटा सीताजी के पास जाकर सब कथा कह सुनाई ।।१।। तब शत्रु रावण के शिर और भुजाओं के बढ़ने का हाल सुनकर सीताजी के हृदय में बहुत भय पैदा हुआ ।।२।।

मुख मलीन उपजी मन चीता ❀ त्रिजटा सन बोली तब सीता
होइहि काह कहसि किन माता ❀ केहिं विधिमरिहि विश्वदुखदाता

सीताजी का मुख उदास और अति चिन्तित हुआ तब ऐसी दशा में त्रिजटा से सीताजी बोलीं ।। कि हे माता ! क्यों नहीं कहती कि क्या होगा, यह जगत् को दुखदाई रावण कैसे मारा जायेगा ? ।।

रघुपति सर सिर कटे न मरई ❀ बिधि विपरीत चरित सब करई
मोर अभाग्य जियावत ओही ❀ जेहि हौं हरि-पद कमल बिछोही

जब वह रामजी के बाण से नहीं मरता, तब ब्रह्मा न मालूम क्या लिखे हैं ।।५।। मेरा अभाग्य ही रावणको जिला रहा है नहीं तो मैं हरि के कमल-चरण से अलग नहीं होती ।।

जेहि कृत कनक कपट मृग झूठा ❀ अजहुँ सो देव मोहि पर रूठा
जेहि बिधि मोहि दुख दुसह सहावा ❀ लक्ष्मण कहँ कटु बचन कहावा

हाय ! जो सुवर्ण का कपटी और झूठा मृग बनाया वही दैव आज भी मुझ पर रूठा है जो नाना प्रकार के दुःख मुझको सहाया और लक्ष्मण को कटु वचन कहलवाया ।।८।।

रघुपति बिरह विषम सर भारी ❀ तकि तकि बार बार मोहि मारी
ऐसेहु दुख जो राखु मम प्राना ❀ सो बिधि ताहि जियाव न आना

जिस विधाताने प्रभुके विरहरूपी बाणोंसे देख-देखकर मुझे बार-बार मारा और ऐसा दुःख पड़नेपर भी जिसने मुझे जीवित रक्खा, वही ब्रह्मा उसको अब जिला रक्खे हैं ।।१०।।

बहु विधि करत विलाप जानकी ❀ करि करि सुरति कृपानिधानकी
कह त्रिजटा सुनु राजकुमारी ❀ उर सर लागत मरहि सुरारी

श्रीरामजीको याद करके सीताजी बहुत विलाप कर रही हैं ।।११।। जब त्रिजटाने कहा—हे राजकुमारी ! सुनो, रावणके हृदयमें जब तीर लगेगा, तभी वह देवताओंका शत्रु मरेगा ।।

ताते प्रभु उर हतहि न तेही ❀ इहि के हृदय बसति वैदेही

इसलिये भगवान् राम उसके हृदयपर नहीं मारते कि उसके हृदयमें सीताका वास है ।।

छन्द—एहि के हृदय बस जानकी मम जानकी उर बास है ।
मम उदर भुवन अनेक लागत बान सबको नाश है ।।
अस सुनत हर्ष विषाद उर अति देखि पुनि त्रिजटा कहा ।
अब मरिहि रिपु इहि भाँति सुन्दरि तजहु तुम संशय महा ।२८।

वे सोचते हैं कि रावणके हृदय में सीता बसी हैं और सीताके हृदयमें मैं वास करता हूँ और मेरे हृदयमें अनेक ब्रह्माण्ड हैं । यदि मैं उसके हृदयमें बाण मारूँ तो सब ब्रह्मांड नाश हो जायेगा । त्रिजटाके ऐसे वाक्य सुनकर सीताजी हर्ष और विषादसे विभ्रम हुईं, इसपर त्रिजटा बोली कि आप अपने हृदयके संशयको दूर कीजिए, रावणकी मृत्यु इसी प्रकार होगी ।। ३८ ।।

दोहा—काटत शिर हुइहै बिकल, छूटि जाय तव ध्यान ।
तब रावण के हृदय शर, मारहिं कृपानिधान ।।२१६।।

त्रिजटा कहती है-हे सीते! रावणकी मृत्यु इसी प्रकार होगी जब रामजीके धनुषसे उसका शिर कट जायेगा तब उसका ध्यान आपसे उतर जायेगा। तब भगवान् उसके हृदयमें बाण मारेंगे ।२१६।

अस कहि बहु प्रकार समुझाई ❀ पुनि त्रिजटा निज भवन सिधाई
राम प्रभाव सुमिरि बैदेही ❀ उपजी बिरह ब्यथा अति तेही

ऐसा कहकर त्रिजटाने सीताको बहुत प्रकारसे समझाया और पुनः त्रिजटा अपने घरको चली गई, तब सीताजीने जो रामके प्रभावका स्मरणकिया तो उनको विरहकी बड़ी व्यथा उत्पन्न हुई

निशिहिं शशिहिं निंदतिबहु भाँती❀ भइ युग सरिसविहाति न राती
करत विलाप मनहिं मन भारी ❀ राम बिरह जानकी दुखारी

वह रातमें चन्द्रमाकी अनेक प्रकार निन्दा करती रहीं। वह रात्रि उन्हें युगके समान समाप्त नहीं होती। वह मनही मन बड़ा विलाप करतीं क्योंकि श्रीरामचन्द्रजीके वियोगसे सीताजी दुखित थीं।

जब अति भयो बिरह उर दाहू ❀ फरकेउ बाम नयन उर बाहू
शकुन बिचारि धरी उर धीरा ❀ अब मिलिहहिं कृपालु रघुबीरा

जब सीताजीके हृदयमें अति विरह पैदा हुआ तब उसी समय उनका बायाँ नेत्र, हृदय और भुजा फड़कने लगी ।। तब उसे शुभ शकुन विचारकर उन्होंने धैर्य धारण किया कि अब कृपालु रघुकुल के वीर श्रीरामचन्द्रजी मिलेंगे ।।

इहाँ अर्धनिशि रावण जागा ❀ निज सारथि सन खीझन लागा
शठ रण भूमि छुड़ायहु मोहीं ❀ धिक धिक अधम मंदमति तोहीं

इधर आधी रातको रावण जागा तो अपने सारथीपर क्रोधित हो कहने लगा कि, रे मूर्ख! तुझको धिक्कार है कि जो मुझे रणभूमिसे उठा लाया, रे अधम! तेरी बड़ी मन्दबुद्धि है ।।

तेहि पद गहि बहु विधि समुझावा❀ भोर भये रथ चढ़ि पुनि आवा
सुनि आगमन दशानन केरा ❀ कपि दल खरभर भयउ घनेरा

सारथी रावण का पैर पकड़कर बारम्बार समझाया तब सबेरा होनेपर रावण रथपर चढ़कर फिर आया। रावणका आना सुनकर बानरी सेनामें बड़ी खलबली हो गई ।।

जहँ तहँ भूधर विटप उपारी ❀ धाये कटकटाय भट भारी

फिर तो यत्र-तत्र बानरवीर और रीछ पहाड़ और वृक्षको उखाड़कर बहुत कटकटाकर दौड़े ।।

छन्द—धाये जो मर्कट विकट भालु कराल कर भूधर धरा।
अति कपि करहिं प्रहार मारत भजि चले रजनीचरा।।
विचलाय दल बलवन्त कीशन घेरि पुनि रावन लियो।
दुहुँ दिशि चपेटन्ह मारि नखन विदारि तेंहि व्याकुल कियो।३९

तब जो विकट भालू और रीछ अपने कठोर हाथोंमें पहाड़ और पेड़ लिए थे वे अति क्रोधित होकर मारने लगे। मार पड़नेपर निशिचरोंका दल भागना शुरू किया ।। दल विचलित करके बलवान् बानर रावणको घेर लिए और दोनों ओरसे चपेटकर मारने और नखोंसे फाड़ने लगे जिससे रावण अति व्याकुल हो गया ।। ३९ ।।

दोहा—देखि महा मर्कट प्रबल, रावण कीन्ह विचार।
अंतर हित होइ निमिष महँ, करि माया विस्तार ॥२१७॥

तब बानरी सेनाको अति प्रबल देख रावणने यह विचार किया कि, निमिषमें अंतर्ध्यान हो जाऊँ और मायाका विस्तार करूँ ॥११७॥

छन्द—जब कीन्ह तेहि पाखंड, भये प्रगट जंतु प्रचंड।
बैताल भूत पिशाच, कर धरे धनु नाराच ॥ १ ॥

जब उसने यह पाखण्ड किया तो प्रचंड जीवधारी जन्तु प्रकट हो गये, जो बैताल, भूत और पिशाच थे वे सब अपने हाथमें धनुष और नाराच वामक बाण धारण किये थे ॥१॥

योगिनि गहे करवाल, इक हाथ मनुज कपाल।
करि सद्य शोणित पान, नाचत करहिं गुण गान ॥ २ ॥

साथ ही योगिनियाँ भी अपने एक हाथमें तलवार और दूसरे में मनुष्यका शिर लिए थीं। जिनमेंसे खून बह रहा था जिसे पीकर नाचतीं और गुणगान करती थीं ॥ २ ॥

धरु मारु बोलहिं घोर, रहि पूरि धुनि चहुँ ओर।
मुख बाय धावहिं खान, तब लगे कीश परान ॥ ३ ॥

धरो, मारो और पकड़ो की कठोर ध्वनि चारों ओर गूँज रही थी। योगिनियाँ मुख फैलाकर खानेके लिए दौड़तीं, तब बानरी सेना ने भागना प्रारम्भ किया ॥ ३ ॥

जहँ जाहिं मर्कट भागि, तहँ बरत देखहिं आगि।
भये बिकल बानर भालु, पुनि लाग बर्षन बालु ॥ ४ ॥

बन्दरगण जहाँ भी भागकर जाते, वहीं पर जलती हुई आग देखते। इससे ऐसी दशामें बानर और भालु व्याकुल हो गये। रावण पुनः आकाशसे बालूकी वर्षा करने लगा ॥ ४ ॥

जहँ तहँ थकित करि कीस, गर्जेउ बहुरि दशशीस।
लक्ष्मण कपीश समेत, भये सकल बीर अचेत ॥ ५ ॥

तब जहाँ-तहाँ बन्दरोंको थकाकर रावणने फिर गर्जन किया जिससे लक्ष्मण समेत सम्पूर्ण बीर अचेत हो गये ॥ ५ ॥

हा राम हा रघुनाथ, कहि सुभट मीजहिं हाथ।
इहि बिधि सकल बल तोरि, तेहि कीन्ह कपट बहोरि ॥ ६ ॥

इससे सब अच्छे वीर हा राम ! हा रघुनाथ ! कहकर अपने हाथ मलते। इस प्रकार सबके बलको तोड़कर उसने (रावणने) फिर छल किया ॥६॥

प्रगटेसि विपुल हनुमान, धाये गहे पाषान।
तिन घेरि रामहिं जाय, दुहुँ दिशि बरूथ बनाय ॥ ७ ॥

उसने बहुत-से हनुमान् प्रकट कर दिये जो पत्थरोको पकड़कर दौड़े ॥ उन्होंने जाकर दोनों ओरसे झुण्ड बनाकर श्रीरामचन्द्रजीको घेर लिया ॥७॥

छन्द—मारहु धरहु जनि जाय, कट कटहिं पूँछ उठाय ।
दसदिसि लँगूर विराज, तेहि मध्य कोशलराज ।८।४०।।

उसने कहा मारो, पकड़ो, जाने न पावे, इससे वे मायाके बन्दर पूँछ उठाकर कटकटाते दशों दिशाओंमें वे लंगूर फैल गये जिनके मध्यमें श्रीरामचन्द्रजी शोभित हुये ।।८।।४०।।

तेहि मध्य कोशलराज सुन्दर श्याम तन शोभा लही ।
जनु इन्द्र धनुष अनेक किय वर वारि तुंग तमालही ।।
प्रभु देखि हर्ष विषाद उर सुर बन्दि जय जय जय करी ।
रघुबीर एकहि बार कोपि निमेष महँ माया हरी ।।४१।।

उनके बीचमें सुन्दर सांवले शरीरवाले राम ऐसी शोभा पाते हैं मानों ऊँचा तमाल वृक्ष हो और उसको अनेकों इन्द्रधनुष श्रेष्ठ किनारोंसे घेरे हों ।। देवता प्रभुको देखकर हृदयमें खुशीकी बातें करने लगे और ऋषि जय-जयकार मनाने लगे, इसपर श्रीरामजीने कुपित होकर एक ही बार बाण मारकर पलभरमें रावणकी मायाका नाश कर दिया ।।४१।।

माया बिगत कपि भालु हर्षे बिटप गिरि गहि सब फिरे ।
शर निकर छाँड़ेउ राम रावण बाहु शिर पुनि पुनि हरे ।।
श्रीराम रावण समर चरित अनेक कल्प जो गावहीं ।
शत शेष शारद निगम कवि तेउ तदपि पार न पावहीं ।।४२।।

मायाका नाश होते ही बन्दर और भालू आनन्दपूर्वक पहाड़ और वृक्ष ले प्रभुके साथ चले । रामजीने फिर क्रोधकर बाण छोड़े जिससे रावणके शिर और भुजायें फिर कट गयीं ।। श्रीराम और रावणके युद्ध-वर्णनमें सैकड़ों शेष, शारदा और कवि भी पार नहीं पा सकते हैं ।।४२।।

दोहा—कहे तासु गुण गण कछुक, जड़ मति तुलसी दास ।
निज पौरुष अनुसार जिमि, मशक उड़ाहिं अकाश ।।२१८।।

तुलसीदासजी कहते हैं कि मैं मूढ़बुद्धि प्रभुके थोड़े से गुणोंका गान ऐसे ही कर रहा हूँ, जैसे अपने पौरुषके अनुसार ही मच्छड़ आकाशमें उड़ते हैं ।।२१८।।

काटे शिर भुज बार बहु, मरै न भट लंकेश ।
प्रभु क्रीडित सुर सिद्ध मुनि, व्याकुल देखि कलेश ।।२१९।।

श्रीरामजी उसके शिर और भुजाओंको अनेक बार काटे, परन्तु वीर रावण मरता नहीं । प्रभुको ऐसी क्रीड़ाको देख देवता और मुनि व्याकुल हो क्लेशित एवं दुःखित हुये ।।११९।।

काटत बढ़हिं शीश समुदाई ❀ जिमि प्रति लाभ लोभ अधिकाई
मरे न रिपु श्रम भयउ विशेषा ❀ राम विभीषण तन तब देखा

कटते ही रावणके शिरोंका समुदाय कैसे बढ़ता है, जैसे लाभके बाद लोभ बढ़ता है ।।१।। परन्तु बड़ा श्रम करनेपर भी शत्रु रावण मरता नहीं, तब श्रीरामचन्द्रजीने विभीषणके शरीर की ओर देखा ।।२।।

उमा काल मरु जाकी इच्छा ❀ सो प्रभु जन की लेत परीच्छा
सुनु सर्वज्ञ चराचर नायक ❀ प्रणतपाल सुर मुनि सुखदायक

हे पार्वती ! जिसकी इच्छासे काल मरता है, वे प्रभु भक्त विभीषणकी परीक्षा लेते हैं ॥ हे सर्वज्ञ चराचरके स्वामी, देवता और मुनियोंको सुख देनेवाले तथा भक्तोंके रक्षक ! सुनिये ॥

नाभी कुंड सुधा बस जाके ❀ नाथ जियत रावण बल ताके
सुनत विभीषण बचन कृपाला ❀ हर्षि गहे प्रभु बाण कराला

हे प्रभो ! रावणकी नाभिकुंडमें अमृत बसता है, हे नाथ ! उसीके बलसे रावण जीता है ॥ बिभीषणकी ऐसी बात सुनकर कृपा करनेवाले भगवान् हर्षित हो कठिन बाण धारण किये ॥

अशकुन होन लगे विधि नाना ❀ रोवहिं बहु शृगाल खर स्वाना
बोलत खग अति आरत हेतू ❀ प्रगट भये जहँ तहँ नभ केतू

उस समय नाना प्रकारके अपशकुन होने लगे, बहुतसे सियार, कुत्ते और गधे रोने लगे ॥७॥ तथा पक्षी मारे दुःखके बोलने और आकाशमें जहां-तहां केतु ग्रह प्रकट हो गये ॥८॥

दस दिसि दाह होन तब लागा ❀ भयउ पर्व बिनु रवि उपरागा
मन्दोदरि उर कंपित भारी ❀ प्रतिमा स्रवहिं नयन मग बारी

तब दशों दिशाओंमें दाह होने लगा और बिना अमावस्या के ही सूर्यग्रहण होने लगा ॥ मंदोदरीका हृदय बड़े जोरसे कांपने लगा और देव-प्रतिमाओंके नेत्रोंसे आसुओंकी धारा बहने लगी ॥

छन्द—प्रतिमा स्रवहिं पवि पात नभ अति वात बह डोलत मही ।
वर्षहिं बलाहक रुधिर कच रज अशुभ अति सक को कही ॥
उत्पात अमित बिलोकि नभ सुर बिकल बोलहिं जय जये ।
सुर सभय जानि कृपालु रघुपति चाप शर जोरत भये ॥४३॥

देवताओंकी मूर्तियां आंसू बहाने लगीं, आकाशसे वज्रपात होने लगा तथा हवाका तीव्र वेग हुआ और पृथ्वी कांपने लगी ॥ बादल रक्त, हड्डियां और धूलिकी वर्षा करने लगे ऐसे बहुतसे अशुभोंको कौन कह सकता है ? देवता आकाशमें बहुत उत्पात होते देख जयकी ध्वनि करने लगे और दयालु प्रभु देवताओंको भयभीत जान धनुष बाण सन्धानने लगे ॥

दोहा—आकर्षेउ धनु श्रवण लगि, छाँड़ेउ शर इकतीस ।
रघुनायक सायक चले, मानहुँ काल फणीस ॥२२०॥

प्रभुने अपने कानतक धनुष तान इकतीस बाण छोड़े ॥ तब श्रीरामचन्द्रजीके बाण ऐसे चले मानों कालरूपी सर्प हों ॥ २२० ॥

सायक एक नाभि सर शोषा ❀ अपर लगे शिर भुज करि रोषा
लै शिर बाहु चले नाराचा ❀ शिर भुजहीन रुंड महि नाचा

फिर तो एक ही बाणने रावणकी नाभिसरको सोख लिया तथा उसकी अन्य भुजाओं और शिरोंको जो बाण लगे तो उसके शिरों और भुजाओंको लेकर वे उड़ चले तथा शिर और भुजाओंसे रहित उसका धड़ पृथ्वीपर नाचने लगा ॥ २ ॥

धरणि धसै धर धाव प्रचण्डा ❀ तब प्रभु सर हति कृत युग खंडा
गर्जेउ मरत घोर रव भारी ❀ कहाँ राम रण हतौं प्रचारी

उसके नाचनेसे धरती धँसने लगी, तब प्रभुने उसे बाणसे मार दो टुकड़े कर दिये ।। मरते समय बड़े जोरसे रावण गर्जा और कहा कि राम कहाँ हैं जिसको ललकारकर मारूँ ।।४।।

डोली भूमि गिरत दशकंधर ❀ क्षुभित सिन्धु सर दिग्गज भूधर
परेउ भूमि युग खण्ड बढ़ाई ❀ चापि भालु मर्कट समुदाई

रावणके गिरते ही पृथ्वी हिलने लगी, दिग्गज और पर्वत डगमगाने और समुद्र क्षुभित होने लगा ।। दोनों खण्डोंने पृथ्वीपर बहुतसे बानरों और भालुओंको दबाकर मार डाला ।।६।।

मन्दोदरि आगे भुज शीशा ❀ धरि शर चले जहाँ जगदीशा
प्रविशे सब निषंग महँ आई ❀ देखि सुरन दुन्दुभी बजाई

रावणकी भुजा और शिर मन्दोदरीके आगे आये और प्रभुके बाण प्रभुके पास चले ।। और आकर उनके तरकसमें समा गये जिसे देख देवतागण दुन्दुभी बजाने लगे ।।८।।

तासु तेज प्रविशे प्रभु आनन ❀ हर्षे देखि शंभु चतुरानन
जय ध्वनि पूरि रही नव खण्डा ❀ जय रघुबीर प्रबल भुजदण्डा

रावणका तेज प्रभुके मुखमें समा गया, जिसे देख ब्रह्मा और शिवजी प्रसन्न हुये ।।९।। नवों खंडोंमें जयकी ध्वनि गूँज गई और प्रबल भुजदण्डवाले प्रभु श्रीरामचन्द्रकी विजय हो गई ।।१०।।

बर्षहिं सुमन देव मुनि वृन्दा ❀ जय कृपालु जय जयति मुकुन्दा

देवताओं और मुनियोंके समूह फूलों की वर्षा किए और बोले—हे कृपालु ! हे मुकुन्द ! आपकी जय हो ! जय हो ! ।।

छन्द—जय कृपाकन्द मुकुन्द हरि मर्दन निशाचर मद प्रभो ।
खल दल बिदारण परम कारण कारुणीक सदा विभो ।।
सुर सुमन बर्षहिं हर्ष संकुल बाज दुन्दुभि गहगही ।
संग्राम अंगन राम अंग अनंग बहु शोभा लही ।।४४।।

हे निशाचरोंके गर्व मर्दन करनेवाले और सृष्टिके परम कारण प्रभो ! आपकी जय हो, देवता प्रसन्नतापूर्वक फूल की वर्षा करने लगे और गहगह आवाजसे दुन्दुभी बजाने लगे ।। युद्धस्थलमें भगवान्‌का श्यामशरीर करोड़ों कामदेवके समान शोभा पा रहा था ।।४४।।

शिर जटा मुकुट प्रसून बिच बिच अति मनोहर राजहीं ।
जनु नील गिरि पर तड़ित पटल समेत उडुगण भ्राजहीं ।।
भुज दंड शर कोदण्ड फेरत रुधिर कण अति तन बने ।
जनु रायमुनिय तमाल पर बैठीं बिपुल सुख आपने ।।४५।।

शिरपर जटा और मुकुटके बीच फूलोंकी मनोहर कलियाँ ऐसी शोभित थीं, मानों पर्वत पर तारागण समेत बिजली चमकती हुई शोभा पाती हो, भुजाओंसे धनुष बाण फेरते हैं,

शरीरपर खूनकी बूँदें ऐसी दीख पड़ती हैं जैसे तमालके वृक्षपर बहुत-सी रायमुनियाँ पक्षी अपने सुखसे बैठी हों ।।४५।।

दोहा—कृपा दृष्टि करि बृष्टि प्रभु, अभय किये सुरवृन्द ।
हर्षे बानर भालु सब, जय सुखधाम मुकुन्द ।।२२१।।

प्रभुने कृपाकी दृष्टिकी वृष्टि कर देवताओंके समूहको अभय कर दिया । बानर और भालु हर्षित हो रामजीको जय कहने लगे ।। २२१ ।।

पति सिर देखत ही मन्दोदरि ❀ मूर्छित विकल खसी धरणी परि
युवति वृन्द रोवति उठि धाईं ❀ तेहि उठाय रावण पहँ लाईं

पतिके शिरको देखते ही मन्दोदरी मूर्छित हो गई तथा विकल होकर पृथ्वीपर गिर पड़ी ।। स्त्रियोंका समूह रोते हुए उठ दौड़ा और उसे उठाकर रावणके पास ले आईं ।। २ ।।

पति गति देखि सो करति पुकारा ❀ छूटे केश न देह सँभारा
उर ताड़ना करै विधि नाना ❀ रोदन करति प्रताप बखाना

पतिकी दशा देख मन्दोदरी पुकारने लगी, उसके केश बिखरे थे और शरीरकी सँभाल न थी ।। वह नाना प्रकारसे छाती पीटकर रुदन करती और रावणके प्रतापको कहती ।।४।।

तव बल नाथ डोल नित धरणी ❀ तेज हीन पावक ससि तरणी
शेष कमठ सहि सकहिं न भारा ❀ सो तनु आजु परा महि छारा

हे नाथ ! आपके बलसे यह पृथ्वी डगमगाया करती थी और अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य, ये सब तेजहीन रहते थे ।। शेषनाग और कच्छप भी भारको सह न सकते थे, वही आपका शरीर आज पृथ्वी पर पड़ा हुआ है ।। ६ ।।

बरुण कुबेर सुरेश समीरा ❀ रण सन्मुख धर काहु न धीरा
भुजबल जितेउ काल यम साईं ❀ आजु परेउ अनाथ की नाईं

हा ! जिसके सामने वरुण, कुबेर और इन्द्र धैर्य छोड़कर भाग जाते थे और कोई धैर्य न धरता ।। जो अपनी भुजाओंके बलसे काल और यमको भी जीत लिए था, आज वही शरीर अनाथ हो भूमिपर पड़ा हुआ है ।। ८ ।।

जगत विदित तुम्हारि प्रभुताई ❀ सुत परिजन बल बरणि न जाई
राम विमुख अस हाल तुम्हारा ❀ रहा न कुल कोउ रोवनिहारा

आपकी प्रभुता जगत् विदित थी और आपके सुत और परिजनका तो वर्णन नहीं हो सकता ।। परन्तु रामसे विमुख होनेपर तुम्हारा यह हाल हुआ कि कुलमें कोई रोनेवाला भी न रहा ।।

तव वश बिधि प्रपंच सब नाथा ❀ सभय दिशिप नित नावहिं माथा
अब तव शिर भुज जम्बुक खाहीं ❀ राम विमुख यह अनुचित नाहीं

हे नाथ ! ब्रह्माका सारा प्रपंच आपके वशमें था, भयसहित दिग्पाल आपके सामने नित्य शीश झुकाते थे ।।लेकिन अब आपके शिर और भुजाको सियार खावें तो रामके विमुखको यह अनुचित नहीं है ।।

काल विवश पति कहा न माना ❀ अग जग नाथ मनुज करि जाना

कालके वश होकर स्वामीने मेरा कहा नहीं माना और रामजीको आपने मनुष्य समझा।

छन्द—जानेउ मनुज करि दनुज कानन दहन पावन हरि स्वयम्।
जेहि जपत सुर ब्रह्मादि पिय तेहि भजेउ ना करुणामयम्॥
आजन्म ते परद्रोहरत पापौघमय तव तनु अयम्।
तबहूँ दियो निज धाम राम नमामि ब्रह्म निरामयम्॥४६॥

हे नाथ! राक्षसोंके कुलरूपी वनको नाश करनेवाले स्वयं पवित्र भगवान् हैं जिन्हें आपने मनुष्य माना। जिनकी स्तुति शंकर और ब्रह्मा करते हैं, उनकी तुमने भक्ति नहीं की॥ जन्मसे लेकर मरण तक तुमने सबसे वैर ही किया। तुम्हारा यह शरीर पापयुक्त ही था। तब भी भगवान्ने तुमको अपना धाम दिया, ऐसे प्रभुको मैं नमस्कार करती हूँ॥

दोहा—अहह नाथ रघुनाथ सम, कृपासिन्धु को आन।
मुनि दुर्लभ जो परमगति, तुमहिं दीन भगवान॥२२२॥

अहा हा! हे नाथ! प्रभुके समान कृपासिंधु दूसरा कोई नहीं है। जो परम गति मुनियों को भी दुर्लभ है, वह भगवान् तुमको दिये॥ २२२॥

मन्दोदरी रुदन सुनि काना ❀ सुर मुनि सिद्ध सबहिं सुख माना
अज महेश नारद सनकादी ❀ जे मुनिवर परमारथ वादी

मन्दोदरीके रुदनको कानोंसे सुनकर देवता, मुनि सिद्ध सबने सुख माना॥१॥ ब्रह्मा, शंकर, मुनि और सनक आदि जो मुनियोंमें श्रेष्ठ और परमार्थवादी हैं॥ २॥

भरि लोचन रघुपतिहिं निहारी ❀ प्रेम मगन सब भये सुखारी
रुदन करत देखी सब नारी ❀ भयउ विभीषण मन दुख भारी

वे नेत्र भर प्रभुको देखकर प्रेममें मगन और सुखी हो गए॥३॥ सब स्त्रियोंको रुदन करते देख विभीषण मनमें बड़े दुःखी हुए॥

बन्धु दसा देखत दुख भयऊ ❀ तब प्रभु अनुजहिं आयसु दयऊ
लक्ष्मण तेहि बहु विधि समुझाये ❀ सहित विभीषण प्रभु पहँ आये

जब विभीषण भाईकी दशा देखकर दुःखी हुए, तब प्रभुने लक्ष्मणको आज्ञा दिया॥ तब लक्ष्मणने अनेक प्रकारसे विभीषणको समझाया और विभीषणके साथ प्रभुके पास आये॥

कृपा दृष्टि प्रभु ताहि बिलोकी ❀ करहु क्रिया परिहरि सब शोकी
कीन्ह क्रिया प्रभु आयसु मानी ❀ विधिवत देश काल जिय जानी

भगवान्ने कृपाकी दृष्टिसे विभीषणकी ओर देखकर कहा कि शोक छोड़ इसकी क्रिया करो॥ तब विभीषणने प्रभुकी आज्ञा मान विधिपूर्वक देश-कालको जानकर भाईकी क्रिया की॥८॥

दोहा—मय तनयादिक नारि सब, देहिं तिलांजलि ताहि।
भवन गईं रघुबीर गुण, गण वर्णति मन माहिं॥२२३॥

मन्दोदरी आदि स्त्रियां रावणको तिलांजलि दे मनमें श्रीरामचन्द्रजीके गुणसमूहका वर्णन करती हुई घर गईं ॥ २२३ ॥

आय विभीषण पुनि शिर नावा ❀ कृपासिन्धु तब अनुज बुलावा
तब कपीस अंगद नल नीला ❀ जामवन्त मारुति नयशीला

फिर विभीषणने आकर नमस्कार किया तो रामजीने भाई लक्ष्मणको बुलाया ॥ १ ॥ और कहा कि तुम हनुमान्, अंगद, नल, नील और जामवन्तको लेकर ॥ २ ॥

सब मिलि जाहु विभीषण साथा ❀ सारहु तिलक कह्यो रघुनाथा
पिता बचन मैं नगर न जाऊँ ❀ आपु सरिस कपि अनुज पठाऊँ

तुम सब मिलकर विभीषणके साथ जाओ और तिलक करो ऐसा रामजीने कहा ॥ मुझे तो पिताका वचन है जिससे मैं नगरमें नहीं जाऊँगा परन्तु प्रतिनिधिरूप छोटे भैया और बन्दरोंको भेजता हूँ ॥

तुरत चले कपि सुनि प्रभु बचना ❀ कीन्हीं जाय तिलक की रचना
सादर सिंहासन बैठारी ❀ तिलक सारि अस्तुति अनुसारी

प्रभुका वचन सुनकर तुरन्त ही बानरोंके समूहनें विभीषणके तिलककी रचना की ॥५॥ और विभीषणको आदरके साथ सिंहासनपर बिठाये तथा स्तुति करके तिलक दिया ॥६॥

जोरि पाणि सबहीं शिर नाये ❀ सहित विभीषण प्रभु पहँ आये
तब रघुबीर बोलि कपि लीन्हें ❀ कहि प्रिय बचन सुखी सब कीन्हें

सबोंने हाथ जोड़कर विभीषणको सिर नवाया और विभीषण सहित प्रभुके पास आये ॥ तब प्रभुनें बानरोंको बुला प्रिय वचन कह सबको सुखी किया ॥ ८ ॥

छन्द—कीन्हेउ सुखी सब कहि सुवाणी बल तुम्हारे रिपु हन्यो।
पायो विभीषण राज तिहुँपुर यश तुम्हारो नित नयो॥
मोहिं सहित शुभ कीरति तुम्हारी परम प्रीति जो गाइहैं।
संसार सिन्धु अपार पार प्रयास बिनु तरि जाइहैं॥४७॥

रामजी अपनी मीठी वाणीसे सबको सुख दिये और कहते हैं कि, मैंने तुम्हारे ही बलसे शत्रु को मारा है। यह विभीषण तुम्हारे ही बलसे राज्य पाये हैं, तुमलोगोंका यश तीनों लोकमें प्रचलित रहेगा। मुझे सहित जो तुम्हारे यशको गावेंगे वे बिना परिश्रम ही संसाररूपी समुद्रसे तर जायेंगे॥

दोहा—सुनत राम के बचन मृदु, नहिं अघाहिं कपि पुंज।
बार बार शिर नावहिं, गहहिं सकल पदकंज॥२२४॥

प्रभुके कोमल वचनको सुनकर बानरोंका समूह नहीं अघाता था और प्रभुको सब देखते हुए बारम्बार शिरसे प्रभुके चरणोंमें नमस्कार करने लगे ॥ २२४ ॥

पुनि प्रभु बोलि लिये हनुमाना ❀ लंका जाहु कह्यो भगवाना
समाचार जानकिहि सुनावहु ❀ तात कुशल लै तुम चलि आवहु

फिर प्रभुने हनुमान्को बुलाकर लंकामें जानेका आदेश दिया कि, हे हनुमान्! तुम सीताको यह समाचार जाकर सुनाओ और उनका कुशल-समाचार लेकर चले आओ ॥२॥

तब हनुमन्त नगर महँ आये ❀ सुनि निशिचरी निशाचर धाये
पूजा बहु प्रकार तिन कीन्हीं ❀ जनक सुतहिं दिखाय पुनि दीन्हीं

प्रभुकी वाणी सुनकर हनुमान्जी नगरमें आये। यह सुन करके निशाचर-निशाचरियाँ दौड़ीं ।।३।। सबने बहुत भांतिसे उनकी पूजा की और फिर सीताजीको भी दिखाया ।।४।।

दूरहिं ते प्रणाम कपि कीन्हा ❀ रघुपति दूत जानकी चीन्हा
कहहु तात प्रभु कृपानिकेता ❀ कुशल अनुज कपि सेन समेता

हनुमान्जी ने दूर ही से जानकीजी को प्रणाम किया और प्रभु के दूत को जानकीजी ने पहचानकर कहा कि हे तात ! कपियोंकी सेना और लक्ष्मण समेत प्रभु कुशलपूर्वक तो हैं ? ।।

सब बिधि कुशल कोशलाधीशा ❀ मातु समर जीत्यो दशशीशा
अविचल राज्य विभीषण पावा ❀ सुनि कपि बचन हर्ष उर छावा

हनुमान्जीने सब तरहसे रामजीकी कुशल कहते हुए कहा कि हे माता ! प्रभुने युद्धमें रावणको जीत लिया है ।।७।। विभीषण अविचल राज्य पा गये, हनुमान्की ऐसी वाणी को सुनकर सीताजी बहुत प्रसन्न हुईं ।। ८ ।।

छन्द—अतिहर्ष मन तनु पुलक लोचन सजल पुनि पुनि कह रमा।
का देउँ तोहिं त्रैलोक्य महँ कपि किमपि नहिं वाणी समा।।
सुनु मातु मैं पायउँ अखिल जग राज आज न संशयम्।
रणजीति रिपुदल बंधु युत पश्यामि राम निरामयम्।४८।

सीताजीके मनमें अति हर्ष हुआ, शरीर पुलकायमान हो गया और नेत्रोंमें आंसू भर आये, तब सीताजीने कहा कि हे कपि ! तुमको इस समय क्या दूँ ? तुम्हारी ऐसी वाणीपर त्रिलोकमें कोई चीज देने योग्य नहीं, इसपर हनुमान्जीने कहा, हे माता ! मैं सम्पूर्ण जगत्का अटल राज्य तभी पा गया, जब मैं लड़ाईमें दुश्मन और उसकी फौजको हराकर निष्कण्टक दोनों भाइयोंका एक साथ दर्शन किया ।।४८।।

दोहा—सुनु सुत सद्गुण सकल तव, हृदय बसैं हनुमन्त।
सानुकूल रघुवंशमणि, रहहिं समेत अनन्त ।।२२५।।

इसपर सीताजीने कहा—हे पुत्र, हनुमान् ! तुम्हारे हृदयमें सकल सद्गुण निवास करेंगे तथा श्रीरामजी अपने भाई लक्ष्मण सहित तुम्हारे सानुकूल रहेंगे ।। २२५ ।।

अब सोइ यत्न करहु तुम ताता ❀ देखौं नयन श्याम मृदु गाता
तब हनुमन्त राम पहँ आई ❀ जनक सुता की कुशल सुनाई

हे तात ! अब ऐसा उपाय करो जिससे श्रीरामजीके सांवले कोमल शरीरको अपने नेत्रोंसे देखूं ।। ऐसी वाणी सुन हनुमान्जी श्रीरामचन्द्रजीके पास आकर सीताजीकी कुशल सुनाये ।।

सुनि वाणी पतंग कुल भूषण ❀ बोलि लिये युवराज बिभीषण
मारुत सुत के संग सिधावहु ❀ सादर जनक सुता लै आवहु

हनुमान्‌जीकी वाणी सुनकर सूर्यकुलके भूषण रामजीने अंगद और विभीषणको बुलाकर हनुमान्‌के साथ सीताको लानेके लिए भेजा ॥

तुरतहिं सकल गये जहँ सीता ❀ सेवहिं सब निशिचरी विनीता
देखि विभीषण तिन्हहिं सिखावा ❀ सादर तिन्ह सीतहिं अन्हावा

वे लोग तुरन्त ही सीताजीके पास गये, वहाँ सब निशिचरियाँ विनयपूर्वक सीताकी सेवा में लीन थीं ॥५॥ विभीषण वहाँ पहुँचते ही राक्षसियोंसे बोले कि सीताजीको प्रेमपूर्वक स्नान कराओ ॥ ६ ॥

दिव्य वसन भूषन पहिराये ❀ शिविका रुचिर साजि पुनि लाये
तेहि पर हर्षि चढ़ीं बैदेही ❀ सुमिरि राम सुखधाम सनेही

नाना भाँतिके वस्त्र और आभूषण पहिराये और सुन्दर पालकीको सजाकर सीताके पास लाये ॥७॥ उसपर सीताजी सुखधाम-स्नेही रामका स्मरण कर प्रसन्नतापूर्वक जा बैठीं ॥८॥

बेत पाणि रक्षक चहुँ पासा ❀ चले सकल मन परम हुलासा
देखन भालु कीश सब आये ❀ रक्षक कोपि निवारन धाये

रक्षक बेतको हाथमें लेकर रक्षा करनेके वास्ते हुलासपूर्वक पालकीके चारों ओर हुए। सीताजीको बहुतसे भालू-बानर देखने आये, तो वे सब रक्षक उन सबोंको दूर करने लगे ॥

कह रघुबीर कहा मम मानहु ❀ सीतहिं सखा पयादे आनहु
देखहिं कपि जननी की नाईं ❀ बिहँसि कहा रघुबीर गुसाईं

प्रभुने विभीषण से हँसकर कहा कि हमारी आज्ञा मानकर तुम सीताको पैदल ले आओ ॥११॥ जिसमें कि ये बानर और रीछ सीता को माता तुल्य जानकर देखेंगें, स्वामी श्रीरामचन्द्रजीने हँसकर ऐसा कहा ॥ १२ ॥

सुनि प्रभु बचन भालु कपि हरषे ❀ नभ ते सुरन सुमन बहु बरषे
सीतहिं प्रथम अनल महँ राखी ❀ प्रगट कीन्ह चह अन्तर साखी

प्रभुकी वाणी सुनकर भालु और बन्दर हर्षित हुये, देवता आकाशसे फूलोंकी वर्षा करने लगे॥ अब रामजी जिस सीताको पहले अग्निमें रखे थे, उसको एक साक्ष्यके द्वारा प्रकट करना चाहे॥

दोहा—तेहि कारन करुनायतन, कहे कछुक दुर्वाद।
सुनत यातुधानी सकल, लागीं करन विषाद ॥२२६॥

उसी कारण दयाके घर श्रीरामचन्द्रजीने सीताको कुछ न कहने योग्य वचन कहा। तब सब राक्षसियाँ ऐसी वाणी सुनकर मनमें विषाद करने लगीं ॥२२६॥

प्रभु के बचन शीश धरि सीता ❀ बोलीं मन क्रम बचन पुनीता
लक्ष्मण होहु धर्म के नेगी ❀ पावक प्रगट करहु तुम बेगी

सीताजी प्रभुके वचनको शिरोधार्य कर मन कर्म और वचनसे परम पवित्र वाणी बोली कि हे लक्ष्मण! तुम धर्मके नेगी बनो और अग्नि प्रकट करो ॥२॥

सुनत लषन सीता की बानी ❀ बिरह विवेक धर्म नय सानी

लोचन सजल जोरि कर दोऊ ❀ प्रभु सन कछु कहि सकत न ओऊ

सीताकी यह विरह, ज्ञान और धर्मसे सनो हुई वाणी सुनकर ।। लक्ष्मण आँखोंमें आँसू भरे हुए दोनों कर जोड़ प्रभुके सम्मुख उनसे कुछ कह नहीं सकते हैं ।।४।।

देखि राम रुख लछिमन धाये ❀ पावक प्रगटि काठ बहु लाये
प्रबल अनल बिलोकि वैदेही ❀ हृदय हर्ष कछु भय नहिं तेही

तब श्रीरामचन्द्रजीके रुखको देखकर लक्ष्मण दौड़े और बहुतसे काष्ठको लाकर अग्निको प्रकट किये ।। तब सीताजी आगको धधकते देखकर हर्षित हुईं और उन्हें कुछ भय नहीं रहा ।।

जो मन क्रम बच मम उर माहीं ❀ तजि रघुबीर आन गति नाहीं
तौ कृशानु सबकी गति जाना ❀ मो कहँ होउ श्रीखंड समाना

(उन्होंने कहा) यदि मन, कर्म और वचनसे मेरे हृदयमें राम ही का वास है दूसरेका नहीं । तो हे अग्नि! तुम सबकी गतिके साक्षी हो, इससे तुम मेरे लिए चन्दनकी भाँति शीतल हो जाओ ।।

छन्द—श्रीखंड सम पावक प्रविश कियो सुमिरि प्रभु पद मैथिली।
जय कोशलेश महेश बंदित चरन रज अति निर्मली ।।
प्रतिबिंब अरु लौकिक कलंक प्रचण्ड पावक महँ जरै ।
प्रभु चरित काहु न लखेउ नभ सुर सिद्ध मुनि देखहिं खरे ।४९।

जब सीताजी धधकती अग्निमें प्रभुका कमल चरण सुमिरकर प्रवेश कीं और कहीं कि हे प्रभो! आपके कमलवत् चरणोंकी धूलि अति निर्मल है और आपकी बन्दना महादेवजी करते हैं, आपकी जय हो । मेरा प्रतिबिम्ब और कलंक इस धधकती अग्निमें जल जाय, प्रभुके चरित्र का कोई थाह नहीं पा सका और सिद्ध मुनि सब खड़े-खड़े उस चरित्रको देखते रहे ।।

तब अनल भूसुर रूप करि गहि सत्य श्री श्रुति विदित जो ।
जिमि क्षीर सागर इन्दिरा रामहिं समर्पी आनि सो ।।
सोइ राम बाम विभाग राजति रुचिर अति शोभा भली ।
नव नील नीरज निकट मानहुँ कनक पंकज की कली ।५०।

तब अग्नि ब्राह्मणका रूप धरकर साक्षात् सीताको जो वेदमें विदित थीं, ऐसे लेकर उपस्थित हुए, जैसे क्षीर समुद्रने विष्णुको लक्ष्मीका अर्पण किया था वही सीता रामजीके बाँयें अंगमें ऐसी शोभित थीं, जैसे नवीन कमलके सामने सुवर्णके कमलकी कली हो ।। ५० ।।

दोहा—हर्षि सुमन बर्षहिं बिबुध, बाजहिं गगन निशान ।
गावहिं किन्नर सुर बधू, नाचहिं चढ़े विमान ।।२२७।।

देवता आनन्दित होकर फूल बरसाने लगें, आकाशमें बाजे बजने लगे । किन्नर मीठे स्वरसे गाने और विमानपर चढ़कर नाचने लगे ।।२२७।।

श्रीजानकी समेत प्रभु, शोभा अमित अपार ।
देखि भालु कपि हर्षेउ, जय रघुपति सुखसार ।।२२८।।

अपार शोभित प्रभुको सीता सहित देखकर बानर-भालू अति प्रसन्न होते और कहते हैं कि सुखसागर रामचन्द्रजीकी जय हो ॥ २२८ ॥

तब रघुपति अनुशासन पाई ❀ मातलि चले चरन सिर नाई
आये देव सदा स्वारथी ❀ बचन कहहिं सब जनु परमारथी

तब श्रीरामचन्द्रजीकी आज्ञा पाकर मातलि उनके चरणोंमें शिर नवाकर चला ॥१॥ उसी समय सर्वदाके स्वार्थी देवता आए और परमार्थियों जैसी बातें कहने लगे ॥२॥

दीन बन्धु दयालु रघुराया ❀ देव कीन्ह देवन पर दाया
विश्व द्रोहरत यह खल कामी ❀ निज अघ गयो कुमारग गामी

हे दीनबन्धु दयामय रामजी ! हे देव ! यह आपने देवताओंपर दया की है ॥३॥ यह संसारका द्रोही महाकामी और कुकर्मी अपने पाप से ही कुलका नाश कराकर मरा ॥४॥

तुम सर्वज्ञ ब्रह्म अविनासी ❀ सदा एक रस सहज उदासी
अकल अगुण अनवद्य अनामय ❀ अजित अमोह शक्ति करुणामय

हे प्रभो ! तुम सर्वज्ञ, परब्रह्म परमेश्वर सदा एक रस और स्वभावसे उदासीन हो ॥ हे करुणामय ! तुम अकल, अगुण, अनवद्य, अनामय हो तथा तुमको कोई जीत नहीं सकता ॥

मीन कमठ शूकर नरहरी ❀ बामन परशुराम बपु धरी
जब जब नाथ सुरन दुख पावा ❀ नाना तनु धरि तुमहिं नसावा

हे प्रभो ! आपने जीवोंकी रक्षाके लिए मच्छ, कूर्म, वाराह, नृसिंह, वामन और परशुरामका अवतार लिया। हे नाथ ! जब-जब देवताओंपर विपत्ति पड़ी, तब-तब नानारूप धरके दुष्टोंका नाश किये ॥

रावण पाप मूल सुर द्रोही ❀ काम मोह ममता अति कोही
सो कृपालु तव धाम सिधावा ❀ यह हमरे मन अचरज आवा

हे नाथ ! अति पापमूल रावण देवताओंका द्रोही था, कामी, क्रोधी, लोभी तथा स्वार्थी था, ऐसे अधमको आपने स्वर्ग दिया, यह हम लोगोंके मनमें आश्चर्य होता है ॥

हम देवता परम अधिकारी ❀ स्वारथ रत तव भक्ति बिसारी
भव प्रवाह संतत हम परे ❀ अब प्रभु पाहि शरण अनुसरे

हे प्रभो ! देवता परम अधिकार पानेपर स्वारथी बन आपकी भक्तिको बिसार दिये सो हम-लोग संसाररूपी सागरमें गोते खा रहे हैं, अब हम आपकी शरण हैं हमारा उद्धार कीजिये ॥

दोहा—करि बिनती सुर सिद्ध सब, रहे जहँ तहँ करजोरि ।
अतिशय प्रेम सरोज भव, अस्तुति करत बहोरि ॥२२९॥

देवता, सिद्ध, सबलोग स्तुति करके हाथ जोड़ खड़े थे, तब कमलके पुत्र ब्रह्माजी अति प्रेमसे फिर भगवान्‌की स्तुति करने लगे ॥२२९॥

छन्द--जयराम सदा सुखधाम हरे, रघुनायक शायक चाप धरे ।
भव वारन तारन सिंह प्रभो, गुण सागर नागर नाथ विभो ।१।

सुखके धाम और बाणधारी प्रभुको सर्वदा जय हो, जय हो। हे प्रभो ! आप संसार रूपी गजराज को विदारनेके लिये सिंहस्वरूप और परम चतुर एवं संसारके स्वामी हो ॥

छन्द-तनु काम अनेक अनूप छवी, गुन गावत सिद्ध मुनीन्द्र कवी।
जसु पावन रावन नाग महा, खगनाथ यथा करि कोप गहा।२।

हे प्रभो ! आपके सामने सकड़ों कामदेवकी शोभा क्या है ? सिद्ध मुनि आपका गुणगान करते हैं। हे प्रभो ! जैसे गरुड़ सांपको खोजकर मारता है वैसे ही आपने रावणको मारा है ॥

जन रंजन भंजन शोकभयम्, गतक्रोध सदा प्रभु बोधमयम्।
अवतार उदार अपार गुणम्, महि भार विभंजन ज्ञानघनम्।३।

हे प्रभो ! आप मनुष्योंके शोक और डर का नाश करने वाले हैं, आपको क्रोधका भाव नहीं है, आप ज्ञानस्वरूप हैं और पृथ्वीका भार उतारनेके लिए ही अवतार लेते हैं ॥

अज व्यापकमेकमनादि सदा, करुणाकर राम नमामि मुदा।
रघुवंश विभूषण दूषणहा, कृत भूप विभीषण दीन रहा।४।

और अनादि, अज, व्यापक, एक हैं ऐसे करुणाकर भगवान् को नमस्कार करता हूँ। आप दुष्टोंका संहार करनेवाले लंकाका राज्य विभीषणको देनेवाले हैं. आपकी बड़ाई कौन करे ॥

गुण ज्ञान निधान अनाम अजम्, नित रामनमामिविभुं विरजम्।
भुजदंड प्रचण्ड प्रताप बलम्, खल-वृन्द निकन्द महा कुशलम्।५।

हे प्रभो ! आप गुण और ज्ञानके समुद्र और जन्म-रहित हैं ऐसे श्रीराम को मैं नमस्कार करता हूँ। आपकी भुजायें प्रचंड और बड़ी प्रतापी हैं आप दुष्टोंका संहार करनेमें अति चतुर हैं॥

बिनुकारण दीनदयालु हितम्, छविधामनमामि रमासहितम्।
भवतारण कारण काज परम्, मन संभव दारुण दोष हरम्।६।

आप बिना कारण ही दीनों पर दया करते और सीताजी के सहित सुन्दरताके घर हैं। मैं ऐसे प्रभुको नमस्कार करता हूँ, आप संसारका उद्धार करनेवाले और दोषोंको हरनेवाले हैं ॥

शरचाप मनोहर तूणधरम्, जलजारुण लोचन भूपवरम्।
सुख मन्दिर सुन्दर श्रीरमनम्, मदमार महा ममता शमनम्।७।

आपका धनुष बाण और तरकस लेना मनोहर है. कमलके सदृश आपके नेत्र हैं। आप राजाओंमें श्रेष्ठ, सुखके धाम, सुन्दर शरीर वाले, लक्ष्मीरमण और मोहके नाशक हैं ।।७॥

अनवद्य अखंड न गोचरगो, सब रूप सदा सब होइ न सो।
इति वेद वदन्ति न दंत कथा, रवि आतप भिन्न न भिन्न यथा।८।

आप अखण्ड स्वरूप इन्द्रियोंसे अगोचर, सदा ही सर्वस्वरूप और सभीमें विद्यमान हैं और नहीं भी। वेद ऐसा कहते हैं जैसे रविका ताप भिन्न भी है और नहीं भी है ॥८॥

कृत कृत्य विभो सब बानर ये, निरखन्त तवानन सादर जे।
धिक जीवन देव शरीर रहे, तव भक्ति बिना भव भूलि परे ॥९॥

हे प्रभो ! ये बानर अति कृतकृत्य हैं, जो आपके मुखका दर्शन करते हैं, हम देवताओंका जीना धिक्कार है; हम आपकी भक्तिके बिना भूलकर संसार में पड़ गये हैं ॥९॥

अब दीनदयालु दया करिये, मति मोर विभेदकरी हरिये ।
जेहि ते विपरीत क्रिया करिये, दुख सो सुख मानि सुखी चरिये।१०।

हे दीनदयाल ! अब दया करिये और जो मनमें विभेद है उसका हरण करिये और आप कोई ऐसी विपरीत क्रिया कीजिये जिससे हम लोगोंका दुःख दूर होवे और हम लोग सुखी होवें

खल खंडन मंडन रम्य छमा, पद पंकज सेवित शम्भु उमा ।
नृपनायक दे वरदानमिदम्, चरणाम्बुज प्रेम सदा शुभदम्।११।५१।

आप दुष्टोंको नाश करने वाले, सुन्दर क्षमा वाले हैं, आपके कमलवत् चरणोंकी शंकर-पार्वती सेवा करते हैं । आप हमपर ऐसी दया करिये कि चरणोंमें सर्वदा स्नेह बना रहे ॥

दोहा—विनय कीन्ह चतुरानन, प्रेम प्रफुल्लित गात ।
सोभा सिन्धु बिलोकि तन, लोचन नाहिं अघात ॥२३०॥

ब्रह्मादि प्रभुका अनेक प्रकारसे विनय किया, वे प्रेमसे पुलकायमान हो गये और प्रभुका मुख देखकर उनके नेत्रों को संतोष नहीं होता ॥२३०॥

तेहि अवसर दशरथ तहँ आये ❀ तनय बिलोकि नयन जल छाये
अनुज सहित प्रनाम प्रभु कीन्हा ❀ आसिर्वाद पिता तब दीन्हा

उसी समय वहाँपर दशरथजी आय और पुत्रको देखते ही उनके नेत्रोंमें आँसू आ गये ॥ प्रभुने भाई लक्ष्मण सहित उनको प्रणाम किया और पिता ने आशीर्वाद दिया ॥२॥

तात सकल तव पुण्य प्रभाऊ ❀ जीतेउँ अजय निशाचर राऊ
सुनि सुत बचन प्रीति अति बाढ़ी ❀ नयन नीर रोमावलि ठाढ़ी

हे तात ! मैंने समस्त निशाचरोंके राजाको जीत लिया है यह आपहीका पुण्य प्रताप है तब पुत्रकी ऐसी वाणी सुनकर उनके हृदयमें अपार प्रेम बढ़ा, नेत्रोंमें आँसू आ गया तथा रोम खड़े हो गये ॥

रघुपति प्रथम प्रेम अनुमाना ❀ चितै पितहिं दीन्हें दृढ़ ज्ञाना
तात उमा मोक्ष नहिं पावा ❀ दशरथ भेद भक्ति मन लावा

प्रभु पहले प्रेमका अनुमान करके पिताकी ओर देखने लगें फिर उनको दृढ़ ज्ञान दिया। दशरथजीने भेद भक्तिमें मन लगाया था जिसकी वजहसे उनको मोक्ष नहीं मिला ॥६॥

सगुन उपासक मोक्ष न लेहीं ❀ तिन कहँ राम भक्ति निज देहीं
बार बार कर प्रभुहि प्रनामा ❀ दशरथ हर्षि गये निज धामा

जो लोग सगुण उपासक होते हैं मोक्षको नहीं लेते, उनको रामजी अपनी भक्ति देते हैं। जब प्रभुने दशरथजीको ज्ञान दिया तब वे बार-बार प्रभुको प्रणामकर अपने लोक को पधारे ॥

दोहा—अनुज जानकी सहित प्रभु, कुशल कोशलाधीस ।
छबि बिलोकि मनहर्ष अति, अस्तुति कर सुर ईस ॥२३१॥

तब प्रभुको लक्ष्मण और जानकी सहित कुशलपूर्वक विराजमान देख उनकी सुन्दरता से प्रसन्न चित्त हो इन्द्र स्तुति करने लगे ॥२३१॥

छन्द—जय राम सोभाधाम, दायक प्रनत विश्राम।
धृत तूनवर सर चाप, भुजदण्ड प्रबल प्रताप ॥ १ ॥

हे शोभाके धाम श्रीरामजी ! आपको जय हो ! आप शरणागत लोगोंको विश्रामके लिये सुन्दर धनुष बाण और तरकस धारण करते हैं, आपके भुजदण्ड प्रताप अति प्रबल हैं ॥१॥

जय दूषनादि खरारि, मर्दन निशाचर झारि।
यह दुष्ट मारेउ नाथ, भये देव सकल सनाथ ॥ २ ॥

हे दूषण आदिक राक्षसोंके शत्रु और खर आदिक राक्षसोंका संहार करनेवाले ! आपकी जय हो। हे नाथ ! आपने आज इस दुष्टको मारकर हम लोगोंको सनाथ कर दिया ॥ २ ॥

जय हरन धरनी भार, महिमा उदार अपार।
जय रावनारि कृपालु, किये यातुधान बेहाल ॥ ३ ॥

पृथ्वीका भार उतारनेवाले आपकी जय हो, आपकी महिमा अपार और उदार है। राक्षसोंको बेहाल करनेवाले, रावणके शत्रु कृपालु ! आपकी जय हो ॥३॥

लंकेश अति बल गर्व, किये वश्य सुर गन्धर्व।
मुनि सिद्ध नर खग नाग, हठ पन्थ सबके लाग ॥ ४ ॥

हे नाथ ! रावण बड़े बल और गर्वसे गन्धर्व और देवताओंको अपने वशमें किये था। यह पापी सिद्धों, मुनियों, मनुष्यों, पक्षियों और नागों आदिक सबके मार्गमें हठसे जा लगा था ॥

पर द्रोह रत अति दुष्ट, पायो सो फल पापिष्ट।
अब सुनहु दीनदयाल, राजीव नयन विसाल ॥ ५ ॥

हे प्रभो ! यह हर एकसे द्रोह रखता था इससे इस पापीने वैसा ही फल पाया है। हे दीनदयाल ! कमलके समान नेत्रवाले ! मेरी एक प्रार्थना सुनिये ॥५॥

मोहिं रहा अति अभिमान, नहिं कोउ मोहिं समान।
अब देखि प्रभु पद कंज, गत मान मद दुखपुंज ॥ ६ ॥

मुझे इस बातका बड़ा अभिमान था कि मेरे बराबर कोई नहीं है। सो अब प्रभु के कमलवत् चरणोंको देखकर मेरा दुःख और अभिमान मिट गया ॥६॥

कोइ ब्रह्म निर्गुन ध्याव, अव्यक्त जेहि श्रुति गाव।
मोहिं भाव कोशल भूप, श्रीराम सगुण स्वरूप ॥ ७ ॥
वैदेहि अनुज समेत, मम हृदय करहु निकेत।
मोहि जानिये निज दास, दे भक्ति रमा निवास ॥८॥५२॥

हे प्रभो ! कोई आपके निर्गुण स्वरूपका ध्यान करते हैं जिसे वेद अव्यक्त कहकर वर्णन करते हैं; किन्तु मुझे तो आपका सगुण स्वरूप ही अच्छा लगता है, अब आप जानकी और लक्ष्मण सहित मेरे हृदयमें निवास कीजिये और मुझको अपना दास जानकर अपना भक्त बनाइये ॥

छन्द—दे भक्ति रमानिवास त्रासहरण शरण सुखदायकम्।
सुखधाम राम नमामि काम अनेक छबि रघुनायकम्॥
सुरबृंद रंजन द्वन्द्व भंजन मनुज तनु अतुलित बलम्।
ब्रह्मादि शंकर सेव्य राम नमामि करुणा कोमलम्॥५३॥

हे भयको दूर करनेवाले सुखदायी प्रभो ! आप मुझे अपना भक्त बनाइये, हे सुखधाम राम ! आप करोड़ों कामदेवकी सुन्दरतासे बढ़कर हैं। हे देवताओंके रंजन करनेवाले राम ! आप करुणाकर कोमल स्वभाव वाले, दुःख-द्वन्द्व मिटाने वाले, मनुष्य शरीर धारण करनेवाले, जिनकी वन्दना ब्रह्मा और शंकर करते हैं॥५३॥

दोहा—अब करि कृपा बिलोकि मोहिं, आयस देहु कृपाल।
कहा करौं सुनि प्रिय बचन, बोले दीन दयाल॥२३२॥

हे दयालु प्रभो ! मेरी ओर देख मुझे आज्ञा दीजिए कि मैं क्या करूँ। तब इन्द्र के ऐसे वचन सुनकर दीनदयालु भगवान् बोले॥२३२॥

सुनु सुरपति कपि भालु हमारे ❀ परे भूमि जो निशिचर मारे
मम हित लागि तजे इन प्राना ❀ सकल जियाउ सुरेश सुजाना

हे इन्द्र ! सुनो, मेरे जितने भालु और बानरोंको राक्षसोंने मारकर पृथ्वीपर गिरा दिया है। इस प्रकार जो मेरे वास्ते मारे गये हैं, सो अब तुम इन सब लोगोंको शीघ्र ही जिला दो॥

सुनु खगेश प्रभु की यह बानी ❀ अति अगाध जानहिं मुनिज्ञानी
प्रभु यह त्रिभुवन मारि जियाई ❀ केवल शक्रहिं दीन्ह बड़ाई

कागभुशुण्डिजी गरुड़जीसे बोले कि प्रभुका कथन बड़े गहरे ज्ञानी मुनि ही जानते हैं॥ प्रभु चाहें तो तीनों लोकोंको मारकर जिला दें परन्तु प्रभुने यह इन्द्रको बड़ाई दी॥

सुधा वर्षि कपि भालु जियाये ❀ उठे हर्षि सब प्रभु पहँ आये
सुधावृष्टि भइ दुहुँ दल माहीं ❀ जिये भालु कपि निशिचर नाहीं

अमृत-वर्षा कर भालु और बानरोंको जिलाया तब प्रसन्नतापूर्वक सब बन्दर प्रभुके पास आये॥ अमृतकी वर्षा दोनों दलमें हुई परन्तु बानर और भालु ही जीवित हुए, राक्षस नहीं॥

रामाकार भये तिनके मन ❀ गय परमपद तजि शरीर धन
देव अंश सब बानर रिच्छा ❀ जिये सकल रघुपति की इच्छा

राक्षसो की सेना मरते समय रामाकार हो गई थी जो प्राण छोड़ परम गतिको प्राप्त हुए थे॥ श्रीरामचन्द्रजीकी इच्छासे देवरूप बानर-भालू सब जीवित हो गये॥

राम सरिस को दीन हितकारी ❀ कीन्हे मुक्त निशाचर झारी
खल मलधाम कामरत रावन ❀ गति पाई जो मुनिवर पावन

रामके समान दीनों पर दया करने वाला कोई नहीं, जिन्होंने निशाचरोंको मुक्ति दी। रावण जो अति खल और कामरूप था, वह भी उस गतिको प्राप्त हुआ जो श्रेष्ठ मुनि भी नहीं पाते हैं॥

दोहा—सुमन बरषि सब सुर चले, चढ़ि चढ़ि रुचिर विमान।
देखि सुअवसर राम पहँ, आये शंभु सुजान ॥२३३॥

सब देवता फूलोंकी वर्षाकर अपने-अपने सुन्दर विमानों पर चढ़ कर चले। तब अच्छा अवसर देखकर सुजान श्रीमहादेवजी प्रभुके पास आये ॥२३३॥

परम प्रीति कर जोरि युग, नयन नलिन भरि बारि।
पुलकित तनु गदगद गिरा, विनय करत त्रिपुरारि॥२३४॥

वे प्रेमपूर्वक दोनों हाथ जोड़ पुलकायमान और अपने नेत्र-कमलोंमें आँसू भरे बड़े हर्षित शरीर, गद्गद वाणीमें स्तुति करने लगे ॥२३४॥

मामभिरक्षय रघुकुल नायक ❀ धृतवर चाप रुचिर कर शायक
मोह महा घन पटल प्रभंजन ❀ संशय विपिन अनल सुर रंजन

हे हाथमें सुन्दर धनुष-बाण और तरकस धारण करने वाले श्रीरामचन्द्रजी ! मेरी रक्षा करो ॥ आप सन्देहरूपी बनको जलानेके लिए अग्निरूप हो और देवताओंको प्रसन्न करनेवाले हो ॥

अगुण सगुण गुण मन्दिर सुन्दर ❀ भ्रम तम प्रबल प्रताप दिवाकर
काम क्रोध मद गज पंचानन ❀ बसहु निरन्तर जन मन कानन

हे गुणोंके मन्दिर ! आप सगुण और निर्गुण दोनों हैं, आपका प्रबल प्रताप अज्ञानरूपी अन्धकार का नाश करनेवाला है, आप सर्वदा ही अपने भक्तजनोंके मनरूपी वनमें निवास करनेवाले हैं ॥४॥

विषय मनोरथ पुंज कंज बन ❀ प्रबल तुषार उदार पार मन
भव बारिधि मंदर पर मंदर ❀ वारय तारय संसृति दुस्तर

आप विषयोंके वनको नाश करनेमें बर्फके समान और मनसे आप उदार हैं ॥५॥ आप संसाररूपी समुद्रको मंदराचलकी भाँति मर्दन करनेवाले हैं, आप मुझे ससारसे पार कीजिए ॥

श्याम गात राजीव बिलोचन ❀ दीन बन्धु प्रणतारति मोचन
अनुज जानकी सहित निरन्तर ❀ बसहु राम नृप मम उर अन्तर

आप श्यामल शरीर, कमलवत् नेत्रवाले, दीनबन्धु, संकटके मिटानेवाले हैं ॥७॥ आप निरन्तर लक्ष्मण और सीता सहित हे राम ! मेरे हृदयमें निवास करो ॥८॥

मुनिरंजन सज्जन मणि मण्डन ❀ तुलसिदास प्रभु त्रास विखण्डन

तुलसीदासजी कहते हैं कि हे मुनियों और सज्जनों के मनको रंजन करने वाले, पृथ्वी मण्डलके भूषण और भक्तजनोंके दुःखको मिटाने वाले प्रभु ! आप भयको काटने वाले हैं ॥९॥

दोहा—नाथ जबहिं कोशलपुरी, हुइहै तिलक तुम्हार।
तब मैं आउब सुनहु प्रभु, देखन चरित उदार ॥२३५॥

हे नाथ ! जब अयोध्यापुरी में आपका राज-तिलक होगा। तब हे प्रभो ! सुनिए, मैं आपके उदार चरित्रको देखने आऊँगा ॥२३५॥

करि विनती जब शंभु सिधाये * तब प्रभु निकट विभीषन आये
नाइ चरन सिर कह मृदुबाणी * विनय सुनिय मम सारँगपाणी

जब ऐसा विनती कर शंकरजी चले गये तब प्रभुके निकट विभीषणजी आये ॥१॥ तथा चरणोंमें शीश झुका कोमल वचन कहे कि हे शार्ङ्गपाणि ! मेरी बात सुनिये ॥२॥

सकुल सदल प्रभु रावन मारा * पावन यश त्रिभुवन बिस्तारा
दीन मलीन हीन मति जाती * मोपर कृपा कीन्ह बहु भाँती

हे प्रभो ! आपने कुलसहित सेनाका संहारकर रावणको मार तीनों लोकोंमें अपने पवित्र यशका विस्तार किया ॥ और मुझ दीन, मलीन, हीन, मूढ़पर अनेक प्रकारसे कृपा की ॥४॥

अब जन गृह पुनीत प्रभु कीजै * करि स्नान समर श्रम छीजै
देश कोश मन्दिर सम्पदा * देहु कृपालु कपिन्ह कहँ मुदा

अब मुझ दासके घर चलकर इसे पवित्र कीजिये और स्नान कर युद्धकी थकावट दूर कीजिये ॥५॥ प्रसन्न हो बानरोंको खजाना, देश, मन्दिर और मुद्रा दीजिये ॥६॥

सब बिधि नाथ मोहिं अपनाइय * पुनि मोहिं सहित अवधपुर जाइय
सुनत वचन मृदु दीनदयाला * सजल भये हरि नयन विशाला

हे नाथ ! आप मुझे सब प्रकार से अपनाइये, फिर मेरे सहित अयोध्या को जाइये ॥ विभीषणकी ऐसी कोमल वाणी सुन दीनदयाल श्रीराम के विशाल नेत्रोंमें आँसू भर आये ॥

दोहा—तोर कोश गृह मोर सब, सत्य बचन सुनु तात ।
दशा भरत की सुमिरि मोहिं, पलक कल्प सम जात ॥२३६॥

प्रभुने प्रीतिपूर्वक विभीषणसे कहा--यह तुम्हारा जो खजाना और घर है, सब मेरा ही है। यह मैं सत्य कहता हूँ । परन्तु भरतकी दशा सोचकर मेरा एक पलक कल्पके समान जा रहा है ॥

तापस वेष शरीर कृश, जपत निरन्तर मोहिं ।
देखौं बेगि सो यतन करु, सखा निहारौं तोहिं ॥२३७॥

तपस्वियों जैसा वेष, दुर्बल शरीर मुझे निरन्तर जपते रहते हैं । हे सखा ! इससे उनको देखने का प्रयत्न करो, मैं तुम्हारा निहोरा करता हूँ ॥२३७॥

जौं जैहौं बीते अवधि, जियत न पाऊँ बीर ।
प्रीति भरत की समुझि प्रभु, पुनि पुनि पुलक शरीर ॥२३८॥

यदि मैं अवधि बीतनेपर अवधपुरी को जाऊँगा तो उस वीरको जीवित नहीं पाऊँगा । भरतकी प्रीति समझकर श्रीरामचन्द्र बारम्बार शरीरसे हर्षित हो गये ॥२३८॥

करहु कल्प भरि राज्य तुम, मोहिं सुमिरेहु मन माँहि ।
पुनि मम धाम सिधारिहहु, जहाँ सन्त सब जाहि ॥२३९॥

(फिर बोले–) तुम कल्प भर राज्य करो और अपने हृदय में मेरा स्मरण करते रहो, इसके बाद फिर मेरे धाम में आना, जहाँ सब सन्तजन जाते हैं ॥२३९॥

सुनत विभीषण बचन राम के ❁ हर्षि गहे पद कृपा धाम के
बानर भालु सकल हर्षाने ❁ प्रभु पद गहि गुन बिमल बखाने

विभीषण श्रीरामचन्द्रजी की बात सुनकर हर्षित हो उन कृपाधाम के चरण पकड़ लिये॥ बानर, भालू सब खुश हुए और प्रभु के चरण पकड़ कर उनके विमल गुण का गान करने लगे॥

बहुरि विभीषण भवन सिधाये ❁ मनिगन बसन बिमान भराये
लै पुष्पक प्रभु आगे राखे ❁ हँसिकै कृपासिन्धु अस भाखे

फिर विभीषण ने घर आकर मणियो और वस्त्रों से भरकर पुष्पक विमान प्रभुके पास ले आये, तब प्रभुने हँसकर विभीपण से इस प्रकार कहा कि–॥

चढ़ि विमान सुनु सखा विभीषन ❁ गगन जाय बर्षहु पट भूषन
नभ पर जाय विभीषन तबहीं ❁ बरषि दिये पट भूषन सबहीं

हे सखा विभीषण! सुनो, विमानपर चढ़कर आकाशमें जाओ और वहाँसे वस्त्र और आभूषणों की वर्षा करो॥ तब विभीषण आकाश में उड़ गये और वस्त्र-आभूषणकी वर्षा कर दिये॥

जो जेहि मन भावै सो लेहीं ❁ मणि मुख मेलि डारि कपि देहीं
हँसत राम सिय अनुज समेता ❁ परम कौतुकी कृपा निकेता

जिसके मनमें जो अच्छा लगता, वह उसे लेता है और बन्दर तो मणियोंको मुखमें डालकर फेंक देते, उनकी ऐसी दशाको देख परमकौतुकी कृपानिधान रामजी सीता और लक्ष्मण सहित हँसने लगे॥

दोहा–ध्यान न पावहिं जासु मुनि, नेति नेति कह वेद।
कृपासिन्धु सो कपिन सों, करत अनेक विनोद ॥२४०॥

जिसे वेद नेति-नेति कहते हैं, और जिसको मुनिजन ध्यान में नहीं पाते वही कृपासिन्धु बानरों से अनेक विनोद कर रहे हैं ॥२४०॥

उमा योग जप दान तप, नाना ब्रत मख नेम।
राम कृपा नहिं करहिं तसि, जसि निसकेवल प्रेम ॥२४१॥

हे पार्वती! जैसी कृपा प्रभु केवल प्रेमसे करते हैं, वैसी कृपा नाना प्रकार के व्रत, यज्ञ, तप और दान से भी नहीं करते हैं ॥२४१॥

भालु कपिन्ह पट भूषन पाये ❁ पहिरि पहिरि रघुपति पहँ आये
नाना जिनिस देखि प्रभु कीसा ❁ पुनि पुनि हँसत कोसलाधीसा

बानर-भालु वस्त्र और आभूषण पाकर पहन-पहनकर श्रीरामचन्द्रजीके पास आये॥१॥ तब अनेक वस्तुओं सहित बन्दरों को देखकर श्रीरामचन्द्रजी बारम्बार हँसने लगे॥२॥

निज निज गृह अब तुम सब जाहू ❁ सुमिरिहु मोहिं डरहु जनि काहू
बचन सुनत प्रेमाकुल बानर ❁ जोरि पानि बोले सब सादर

फिर बोले—अब तुम सब अपने-अपने घर जाओ, मेरा स्मरण करना और किसीसे डरना मत ॥ तब उनकी ऐसी वाणी सुनकर वे प्रेमाकुल बानर हाथ जोड़कर सादर बोले ॥४॥

प्रभु जो कहेउ तुम्हहिं सब सोहा ❁ हमरे होत बचन सुनि मोहा
दीन जानि कपि किये सनाथा ❁ तुम त्रैलोक्य ईश रघुनाथा

हे प्रभो! जो आपने कहा वह सब सुन्दर है, लेकिन हम लोगोंको यह सुनकर मोह उत्पन्न होता है ॥ आप त्रिलोकीनाथ हैं, आपने हम सबोंको दीन जानकर सनाथ किया है ॥ ६ ॥

सुनि प्रभु बचन लाज हम मरहीं ❁ मसक कहूँ खगपति सम करहीं
देखि राम रुख बानर रीछा ❁ प्रेम मगन नहिं गृह की इच्छा

स्वामीकी बात सुन हम लज्जासे मरे जाते हैं, क्या मच्छड़ भी गरुड़की समता करेंगे ॥ श्रीरामचन्द्रजीका ऐसा रुख देखकर भालु और बन्दर मनमें ऐसे मगन हो गये कि उन्हें घर जानेकी इच्छा न हुई ॥

दोहा—प्रभु प्रेरित कपि भालु सब, रामरूप उर राखि ।
हर्ष बिषाद समेत सब, चले बिनय बहु भाखि ॥२४२॥

प्रभुकी प्रेरणासे सब बानर और भालु अपने हृदयमें रामजीके स्वरूपको रखकर हर्ष-विषाद सहित सब बहुत बिनती करके चले ॥२४२॥

जामवन्त कपिराज नल, अंगदादि हनुमान ।
सहित विभीषण अपर जे, यूथप अति बलवान ॥२४३॥

जामवन्त तथा कपिराज सुग्रीव, नल, अङ्गद और हनुमान् आदि सब लोग तथा और जो-जो अन्य विभीषण आदि बड़े बलवान् सेनानी थे, चुपचाप खड़े हुए ॥२४३॥

कहि न सकहिं कछु प्रेम वश, भरि भरि लोचन बारि ।
सन्मुख चितवहिं राम तनु, नयन निमेष बिसारि ॥२४४॥

वे लोग प्रेमवश नेत्रोंमें आँसू भर-भरकर कुछ कह नहीं सकते थे और रामके सन्मुख निमेष रहित नेत्रोंसे देखते रहे ॥२४४॥

अतिशय प्रीति देखि रघुराई ❁ लीन्हे सकल विमान चढ़ाई
मन महँ विप्र चरण शिर नावा ❁ उत्तर दिशिहिं विमान चलावा

तब उनकी अतिशय प्रीति देखकर श्रीरामजीने सबको विमानपर चढ़ा लिया ॥१॥ और अपने मनमें ब्राह्मणोंके चरणोंमें शिर नवाकर उत्तर दिशाकी ओर विमान चलाये ॥२॥

चलत विमान कोलाहल होई ❁ जय रघुबीर कहहिं सब कोई
सिंहासन अति उच्च मनोहर ❁ सिय समेत बैठे प्रभु तापर

विमानके चलते ही कोलाहल होने लगा और सबलोग रामजीकी जय कहने लगे ॥३॥ प्रभु लक्ष्मण और सीता सहित मनोहर बड़े ऊँचे सिंहासन पर जा बैठे ॥४॥

राजत राम सहित भामिनी ❁ मेरु श्रृंग जनु घन दामिनी
रुचिर विमान चला अति आतुर ❁ कीन्हे सुमन वृष्टि हर्षे सुर

वह शोभा कैसी है जैसे सुमेरुपर श्यामघनके बीच-बीचमें बिजली चमकती हुई शोभा पाती है ।। तब वह सुन्दर विमान बड़े वेगसे चला तो देवताओंने फूलोंकी वर्षा की ।।६।।

परम सुखद चलि त्रिविध बयारी ❀ सागर सर सरि निर्मल बारी
शकुन होहिं सुन्दर चहुँ पासा ❀ मन प्रसन्न निर्मल नभ आसा

अत्यन्त सुख देनेवाला तीन प्रकारका वायु चलने लगा, समुद्र, तालाब और नदियोंके जल निर्मल हो गये ।। चारों ओर सुन्दर शकुन होने लगे, मन प्रसन्न तथा आकाश निर्मल हो गया ।।

कह रघुबीर देखु रन सीता ❀ लक्ष्मण हत्यो यहाँ इन्द्र जीता
अंगद हनूमान के मारे ❀ रण महँ परे निशाचर भारे

श्रीरामचन्द्रजीने कहा—हे सीता ! इस रणस्थलको देखो, यहीं पर लक्ष्मणने इन्द्रजीतको मारा था ।।९।। यहाँ अङ्गद और हनुमान्‌के मारे हुए बहुतसे निशाचर पड़े हुए हैं ।।१०।।

दोहा—इहाँ सेतु बाँधेउँ अरु, थापेउ शिव सुखधाम ।
सीता अनुज समेत प्रभु, शंभुहिं कीन्ह प्रणाम ।।२४५।।

यहाँ मैंने पुल बाँधकर सुखके धाम श्रीमहादेवजीकी स्थापना की । प्रभुने सीता और लक्ष्मण सहित शिवजोको नमस्कार किया ।।२४५।।

जहँ जहँ कृपासिन्धु बन, कीन्ह बास विश्राम ।
सकल दिखाये जानकिहिं, कहि कहि सबके नाम ।।२४६।।

कृपासागर प्रभुने बनमें जहाँ-जहाँ रहकर विश्राम किया था, सभी स्थानोंको नाम सहित बतलाकर सीताजीको दिखलाया ।।२४६।।

सपदि विमान तहाँ चलि आवा ❀ दंडक बन जहँ परम सुहावा
कुम्भजादि मुनि नायक नाना ❀ गये राम सबके अस्थाना

तब शीघ्रतासे वह विमान उस परम सुहावने दंडक वनमें पहुँच गया कि ।। जहाँ मुनियोंके नायक कुम्भज आदिक ऋषि रहते थे, तब श्रीरामचन्द्रजी सब ऋषियोंके आश्रमपर गए ।।२।।

सकल मुनिन सन पाइ अशीशा ❀ आये चित्रकूट जगदीशा
तहँ करि ऋषिन केर संतोषा ❀ चला विमान तहाँ ते चोखा

सब मुनियोंका आशीर्वाद पाकर जगदीश्वर श्रीरामचन्द्रजी चित्रकूट आये ।।३।। वहाँ ऋषियोंको सन्तुष्ट किए और तब चित्रकूटसे विमान और तेजीसे चला ।।४।।

बहुरि राम जानकिहिं दिखाई ❀ यमुना कलिमल हरनि सहाई
पुनि देखा सुरसरी पुनीता ❀ राम कहा प्रणाम करु सीता

फिर श्रीरामचन्द्रजीने यमुनाकी, कलिके पापोंका नाश करने वाली सुहावनी धारा दिखायी ।।५।। फिर पवित्र गंगाजीको दिखाकर सीताको प्रणाम करनेके लिए कहा ।।६।।

तीरथपति पुनि दीख प्रयागा ❀ निरखत जन्म कोटि अघ भागा
दीख राम पावन पुनि बेनी ❀ हरण शोक सुरलोक निशेनी

फिर तीरथोंके स्वामी प्रयागको देखा कि जिसके देखनेसे अनेक जन्मोंका पाप भग जाता है ।। पुनः पवित्र बेनीमाधव को देखा जो शोकको हरनेवाले और स्वर्गलोकके देने वाले हैं ।।८।।

देखी अवधपुरी अति पावनि ❋ त्रिविध ताप भवरोग नशावनि

फिर अति पवित्र अयोध्यापुरीको देखे जो तीनों तापों और संसारके रोगोंका नाश करती है ।।

दोहा—तब रघुनन्दन सिय सहित, अवधहिं कीन्ह प्रणाम ।
सजल विलोचन पुलक तनु, पुनि पुनि हर्षित राम ।।२४७।।

तब रामजीने लक्ष्मण और सीता समेत अवधपुरीको प्रणाम किया । उनका नेत्र आँसुओंसे भर गया, शरीर पुलकायमान हो गया किन्तु रामजी बारम्बार हर्षित हुए ।।२४७।।

बहुरि त्रिवेणी आय प्रभु, हर्षित मज्जन कीन्ह ।
कपिन्ह सहित विप्रन्ह कह, दान बिबिधबिधिदीन्ह ।।२४८।।

फिर रामचन्द्रजी त्रिवेणीमें आकर प्रसन्नतापूर्वक स्नान किये और कपियों सहित ब्राह्मणोंको अनेक प्रकारसे दान दिये ।।२४८।।

प्रभु हनुमन्तहिं कहा बुझाई ❋ धरि द्विज रूप अवधपुर जाई
भरतहिं कुशल हमारि सुनावहु ❋ समाचार लै पुनि चलि आवहु

फिर रामचन्द्रजीने हनुमान्‌को समझाकर कहा कि तुम ब्राह्मणका रूप धरकर अयोध्यापुरी को जाओ और भरतजीको मेरा कुशल सुनाकर, समाचार लेकर फिर वापस चले आओ ।।

तुरत पवनसुत गमनत भयऊ ❋ तब प्रभु भरद्वाज पहँ गयऊ
नाना विधि पूजा मुनि कीन्हीं ❋ अस्तुति करि पुनि आशिष दीन्हीं

तब पवनसुत हनुमान् तुरन्त ही चले गये और श्रीरामचन्द्रजी भरद्वाज मुनि के पास गये ।।३।। मुनिने अनेक प्रकारसे श्रीरामजीकी पूजा की और स्तुतिकर उन्हें आशीर्वाद दिये ।।४।।

मुनिपद बन्दि युगल कर जोरी ❋ चढ़ि विमान प्रभु चले बहोरी
इहाँ निषाद सुना प्रभु आये ❋ नाव नाव कहि लोग बुलाये

मुनिके कमलवत् चरणोंमें नमस्कारकर दोनों हाथ जोड़कर फिर राम विमान पर चढ़े ।।५।। यहाँ निषादने सुना कि रामजी आये हैं, तब नौका-नौका कहकर लोगोंको बुलाया ।।६।।

सुरसरि लाँघि यान जब आवा ❋ उतरा तहँ प्रभु आयसु पावा
तब सीता पूजीं सुरसरी ❋ बहु प्रकार पुनि चरणन परी

जब विमान गंगाके पार आया और प्रभुकी आज्ञासे वहाँ उतरा ।।७।। तब गंगाजीकी सीताजीने पूजा की और अनेक प्रकारसे उनके चरणोंमें पड़ीं ।।८।।

दीन्ह अशीश मुदित मन गंगा ❋ सुन्दरि तव अहिवात अभंगा
सुनतहिं गुह धावा प्रेमाकुल ❋ आया निकट परम सुख संकुल

गंगाजीने प्रसन्नतापूर्वक आशीर्वाद दिया कि तुम्हारा अहिवात अचल रहे ।।९।। सुनते ही निषाद प्रेमाकुल हो दौड़ा हुआ आया और निकट आकर परम आनन्दित हुआ ।।१०।।

प्रभुहिं बिलोकि सहित बैदेही ❀ परेउ अवनि तनु सुधि नहिं तेही
परम प्रीति बिलोकि रघराई ❀ हर्षि उठाइ लीन्ह उर लाई

तब सीता सहित श्रीरामचन्द्रजीको देखकर निषाद पृथ्वीपर गिर पड़ा, उसे अपने शरीरकी सुधि न रही। श्रीरामचन्द्रजी उसकी बड़ी प्रीति देखकर प्रसन्नतापूर्वक हृदयसे लगा लिये।

छन्द—लियो हृदय लाय कृपानिधान सुजान राम रमापती।
बैठारि परम समीप पूछा कुशल सो करि बीनती॥
अब कुशल पदपंकज बिलोकि बिरंचि शंकर सेव्य जे।
सुख धाम पूरण काम राम नमामि राम नमामि ते॥५४॥

कृपासागर रामजी उसको हृदयसे लगा अपने समीप बैठाकर कुशल पूछे तो वह विनयपूर्वक बोला कि जिसकी सेवा शंकर और ब्रह्मा करते हैं, उनके कमलवत् चरणको देखकर अब मैं सकुशल हूँ, सुखके धाम, काम पूरण करनेवाले रामको बारम्बार प्रणाम है॥

सब भाँति अधम निषाद सो हरि भरत ज्यों उर लायऊ।
मतिमन्द तुलसीदास प्रभु तेहि मोहवश बिसरायऊ॥
यहि रावणारि चरित्र पावन राम-पद रतिप्रद सदा।
कामादि हर विज्ञान घर सुर सिद्ध मुनि गावहिं मुदा॥५५॥

अधम निषादको प्रभु छातीसे लगाकर भरतकी ही भाँति भेंटे। तुलसीदासजी कहते हैं कि, हे प्रभो! मैंने मोहके वश हो आपको भुला दिया। यह रावणके शत्रु श्रीरामचन्द्रजीका पवित्र चरित्र उनके चरणोंमें सर्वदा ही प्रेमपद है। यह काम आदिक दोषोंको हरने वाला और विज्ञानका घर एवं आगार है, जिसे देवता, सिद्ध और मुनिजन प्रसन्न होकर गाते हैं॥

दोहा—समर विजय रघुबीर के, चरित जो सनहिं सुजान।
विजय विवेक विभूति नित, तिनहिं देहिं भगवान॥२४९॥

युद्ध-विजेता श्रीरामचन्द्रजीका यह चरित्र जो समझदार मनुष्य सुनते हैं, उन्हें ईश्वर नित्य विजय, विवेक और विभूति (धन, ऐश्वर्य) देते हैं॥२४९॥

यह कलिकाल मलायतन, मन करि देखु विचार।
श्रीरघुनायक नाम तजि, नहिं कछु आन अधार॥२५०॥

हे मन! विचारकर देख ले कि, यह कलिकाल पापोंका घर है—इसमें सिवा श्रीरामचन्द्रजीके नामको छोड़ कोई दूसरा आधार नहीं है॥२५०॥

लंकाकाण्ड समाप्त।



श्रीगणेशाय नमः

श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजी कृत—



उत्तरकाण्ड

(सर्व-सञ्जीवनी टीका सहित)

॥ मङ्गलाचरण ॥

श्लोक—केकीकण्ठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नम् ।
शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम् ॥
पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बन्धुना सेव्यमानम् ।
नौमीड्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामम् ॥१॥

मोरके कण्ठके समान नीले रंगके शरीर वाले, देवताओंमें श्रेष्ठ, भृगु ब्राह्मण के चरण-चिन्ह (भृगुलता) से विभूषित, शोभासे पूर्ण पीताम्बर धारण किए हैं, जो कमलनयन, सर्वदा सुप्रसन्न, हाथमें धनुष बाण लिये हुए, बानर वृन्द सहित, भाई (लक्ष्मणजी) द्वारा सेवित, सीता के पति, पुष्पक विमान पर आरूढ़ हैं, उन रघुकुल-श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रजी को मैं निरन्तर नमस्कार करता हूँ ॥ १ ॥

कोशलेन्द्रपदकंजमंजुलौ कोमलावजमहेशवंदितौ ।
जानकीकरसरोजलालितौ चिन्तकस्य मनभृंगसंगिनौ ॥२॥

जिनकोशलेन्द्र (श्रीरामचन्द्रजी) के सुन्दरचरणकमलोंकीबन्दनाशिवजीऔरब्रह्माजीकरतेहैं, सीताजीके करकमलोंसे जिनकी सेवा होती है, जो ध्यान करनेवालोंके मनरूपी भौंरोंके साथी हैं॥२॥

कुन्दइन्दुदरगौरसुन्दरं अम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदम् ।
कारुणीककलकंजलोचनं नौमि शंकरमनंगमोचनम् ॥३॥

फिर जो कुन्द नामक पुष्प तथा चन्द्रमा और शंखके समान सुन्दर गौर वर्ण, पार्वतीके स्वामी, अभीष्ट सिद्धिके देनेवाले, दयालु, मनोहर कमल के तुल्य नेत्र वाले तथा कामदेव को भस्म करने वाले शंकरजी हैं, मैं उनको नमस्कार करता हूँ ॥३॥

दोहा–रहा एक दिन अवधिकर, अति आरत पुर लोग।
जहँ तहँ सोचहिं नारि नर, कृशतन राम वियोग ॥१॥

अब श्रीरामचन्द्रजीके बनवासकी अवधि का एक दिन और रह गया, नगरके लोग बड़े दुःखी हो रहे थे। जहाँ-तहाँ स्त्री-पुरुष रामके वियोगमें दुर्बल हुए सोचते हैं ॥१॥

शकुन होहिं सुन्दर सकल, मन प्रसन्न सब केर।
प्रभु आगमन जनाव जनु, नगर रम्य चहुँ फेर ॥२॥

परन्तु सब सुन्दर शकुन होते हैं, सबके मन प्रसन्न हो रहे हैं। चारों ओर से नगरकी रमणीयता मानों रामचन्द्रजीके आगमनकी सूचना दे रही है ॥२॥

कौशल्यादि मातु सब, मन अनन्द अस होइ।
आये प्रभु सिय अनुजयुत, कहन चहत अस कोइ ॥३॥

कौशल्या आदिक सब माताओंके मन में ऐसा आनन्द हो रहा है कि, अब कोई ऐसा कहना चाहता है कि, प्रभु रामचन्द्रजी छोटे भाई और सीताजी सहित आ गये ॥३॥

भरत नयन भुज दच्छिन, फरकहिं बारहिं बार।
जानि शकुन मन हर्ष अति, लागे करन विचार ॥४॥

भरतजी की दाहिनी आँख और भुजा बार-बार फड़कती है। तब इस शुभ शकुन को जानकर भरतजी मनमें अत्यन्त हर्षसे विचार करने लगे कि–॥४॥

रहेउ एक दिन अवधि अधारा ❀ समुझत मन दुख भयउ अपारा
कारन कवन नाथ नहिं आये ❀ जानि कुटिल प्रभु मोहिं बिसराये

अब अवधि का एक ही दिन अधार है, यह समझ कर मन में अपार दुःख हुआ ॥१॥ क्या कारण है कि स्वामी नहीं आये ? क्या स्वामी ने मुझे कुटिल जानकर भुला दिया ? ॥

अहह धन्य लछिमन बड़ भागी ❀ राम पदारविन्द अनुरागी
कपटी कुटिल मोहिं प्रभु चीन्हा ❀ ताते नाथ संग नहिं लीन्हा

अहा! लक्ष्मण धन्य और बड़भागी हैं जो रामचन्द्रजीके चरणोंके अनुरागी हैं ॥ अवश्य ही श्रीरामचन्द्रजीने मुझे कुटिल और कपटी समझा, इसीसे तो स्वामीने मुझे अपने साथ नहीं लिया ॥

जौं करनी समुझैं प्रभु मोरी ❀ नहिं निस्तार कल्प सत कोरी
जन अवगुन प्रभु मान न काऊ ❀ दीनबन्धु अति मृदुल सुभाऊ

यदि प्रभु मेरी करनी समझें, तो सौ करोड़ कल्प पर्यन्त उद्धार नहीं हो सकता ॥५॥ परन्तु प्रभु अपने सेवकोंके अवगुणको नहीं मानते; क्योंकि वे दीनबन्धु हैं ॥६॥

मोरे जिय भरोस दृढ़ सोई ❀ मिलिहहिं राम शकुन शुभ होई
बीते अवधि रहे जो प्राना ❀ अधम कवन जग मोहिं समाना

मेरे मनमें इसीका पक्का भरोसा है कि शुभ शकुन हो रहे हैं, रामचन्द्रजी मिलेंगे। परन्तु अवधि बीतने पर यदि शरीरमें प्राण रहा, तो संसारमें मेरे समान अधम और कौन होगा ? ॥

दोहा–राम बिरह सागर महँ, भरत मगन मन होत।
बिप्र रूप धरि पवनसुत, आइ गयउ जिमि पोत ॥ ५ ॥

भरतजी का मन रामचन्द्रजीके विरह रूपी समुद्रमें डूबने लगा, तब उसी समय हनुमान्‌जी ब्राह्मण रूपसे ऐसे आए मानों बिरहरूपी समुद्रसे पार लगानेके लिए जहाज हैं ॥५॥

बैठे देखि कुशासन, जटा मुकुट कृश गात।
राम राम रघुपति जपत, स्रवत नयन जल जात ॥ ६ ॥

भरतजी कुशके आसनपर बैठे हैं, उनके शिरपर जटाको मुकुट है और शरीर दुर्बल हो गया है। भरतजी राम-राम जपते हैं, उनके कमलवत् नेत्रोंसे आंसू बह रहा है ॥६॥

देखत हनूमान अति हर्षेउ ❋ पुलकगात लोचन-जल बर्षेउ
मनमहँ बहुत भाँति सुख मानी ❋ बोलेउ श्रवन सुधासम बानी

उनको देखकर हनुमान् बहुत प्रसन्न हुए. शरीर पुलकित हो गया और नेत्रोंमें आंसू बहने लगा ॥१॥ तब मनमें बहुत भांति सुख मानकर कानोंके लिये अमृत समान वचन बोले—॥२॥

जासु बिरह सोचहु दिन राती ❋ रटहु निरन्तर गुनगन पाँती
रघुकुल तिलक सुजन सुखदाता ❋ आये कुशल देव-मुनि त्राता

जिनके बिरहमें आप रात-दिन सोचते हैं, और जिनको निरन्तर रटते हैं वे रघुकुल-भूषण सज्जनोंके सुखदायक देवता और मुनियोंका परित्राण करनेवाले कुशलपूर्वक आ गये ॥४॥

रिपु रन जीति सुयश सुर गावत ❋ सीता अनुज सहित प्रभु आवत
सुनत बचन बिसरे सब दूखा ❋ तृषावन्त जनु पाव पियूषा

वे प्रभु शत्रुको संग्राममें जीतकर सीता और छोटे भाई सहित आते हैं ॥५॥ हनुमान्‌के ये वाक्य सुनकर भरतजीके सारे दुःख ऐसे भूल गये, मानों प्यासेने अमृत पाया हो ॥६॥

को तुम तात कहाँ ते आये ❋ मोहिं परम प्रिय बचन सुनाये
मारुत सुत मैं कपि हनुमाना ❋ नाम मोर सुन कृपानिधाना

हे प्यारे! तुम कौन हो और कहांसे आये हो जो तुमने मुझे परम प्रिय वचन सुनाये। हनुमान्‌जीने कहा—हे कृपानिधान! सुनिये, मैं पवनपुत्र बन्दर हूँ, मेरा नाम हनुमान् है॥

दीनबन्धु रघुपति कर किंकर ❋ सुनत भरत भेंटे उठि सादर
मिलत प्रेम नहिं हृदय समाता ❋ नयन स्रवत जल पुलकित गाता

मैं दीनबन्धु रामचन्द्रजी का दास हूँ, यह सुनते ही भरतजी आदर से उठकर मिले। मिलते हुए प्रेम हृदय में नहीं समाता, नेत्रों से आंसू बहने लगे, शरीर पूलकित हो गया॥

कपि तव दरश सकल दुख बीते ❋ मिले आजु मोहिं राम सप्रीते
बार बार पूछी कुशलाता ❋ तो कहँ काह देउँ सुनु भ्राता

भरतजीने कहा–हे हनुमान् ! तुम्हारे दर्शनसे मेरे सब दुःख चले गये, आज मुझे रामजी प्रीतिपूर्वक मिले। फिर बार-बार कुशल पूछी और कहा, हे भाई ! सुनो, तुमको क्या दूं ?॥

यहि संदेश सरिस जग माहीं ❁ करि विचार देखेउँ कछु नाहीं
नाहिन उऋन तात मैं तोहीं ❁ अब प्रभु चरित सुनावहु मोहीं

मैंने विचार कर देख लिया कि तुमसे प्राप्त इस संदेशके समान संसारमें कुछ नहीं है ॥ हे तात ! मैं आपसे उऋण नहीं हो सकता, अब मुझे प्रभु रामजी का चरित्र सुनाइये ॥

तब हनुमान नाइ पद माथा ❁ कही सकल रघुपति गुनगाथा
कहु कपि कबहुँ कृपालु गुसाईं ❁ सुमिरत मोहिं दास की नाईं

तब हनुमान्‌जीने चरणोंमें मस्तक नवाकर श्रीरामचन्द्रजीका सम्पूर्ण गुण कहा। हे हनुमान् ! कहो तो सही कि, क्या कृपालु समर्थ स्वामी कभी मुझे दास समझ कर स्मरण करते रहे ? ॥

छन्द–निज दास ज्यौं रघुबंशभूषण कबहुँ मम सुमिरन कर्‌यो ।
सुनि भरत बचन विनीत अति कपि पुलकि तनु चरनन्हि पर्‌यो ॥
रघुबीर निज मुख जासु गुनगन कहत अग जग नाथ सो ।
काहे न होहु विनीत परम पुनीत सद्गुन पाथ सो ॥१॥

क्या अपने दासकी भाँति रघुवंश-भूषणने कभी मुझे भी स्मरण किया है ? हनुमान्‌जी भरतके इन अत्यन्त विनीत वचनोंको सुनकर पुलकित शरीरसे उनके चरणोंमें पड़ गए और कहने लगे कि चराचरके स्वामी रामचन्द्रजी जिसकी गुण-गरिमा को अपने मुख से कहते हैं, तब भला वह इतना नम्र, पवित्र और सद्‌गुणों का सागर क्यों न हो ? ॥ १ ॥

दोहा–राम प्रान प्रिय नाथ तुम, सत्य बचन मम तात ।
पुनि पुनि मिलत भरत सन, प्रेम न हृदय समात ॥७॥

हनुमान्‌जीने कहा–हे स्वामी ! आप रामजी को प्राणों से प्यारे हैं, हे तात ! यह बात सत्य है ॥ हनुमान् बारम्बार भरतजीसे मिलते हैं, परन्तु हृदय में प्रेम नहीं समाता ॥७॥

सोरठा–भरत चरन शिर नाइ, तुरत गयउ कपि राम पहँ ।
कही कुशल सब जाइ, हर्षि चले प्रभु यान चढ़ि ॥१॥

तब भरतजीके चरणोंमें शिर नवाकर हनुमान् तुरन्त ही रामजीके पास चले गये। वहाँ जाकर उन्होंने सब कुशल कही तो प्रभु रामजी प्रसन्न हो विमान पर चढ़कर चले ॥१॥

हर्षि भरत कोशलपुर आये ❁ समाचार सब गुरुहिं सुनाये
पुनि मन्दिर महँ बात जनाई ❁ आवत नगर कुशल रघुराई

इधर भरतजी प्रसन्न हो अयोध्यापुरीमें आए और गुरुजी से सब समाचार कह सुनाये। फिर यह बात महलमें कहे कि रघुनाथजी कुशलपूर्वक नगरमें आ रहे हैं ॥२॥

सुनत सकल जननी उठि धाई ❀ कहि प्रभु कुशल भरत समुझाई
समाचार पुरबासिन्ह पाये ❀ नर अरु नारि हर्षि उठि धाए

यह सुनते ही सब मातायें उठ दौड़ीं तो भरतजीने प्रभु रामजीकी कुशल कहकर सबको समझाया ।। जब यह समाचार नगर-निवासियोंने पाया तो सभी नर-नारी प्रसन्न हो उठ दौड़े ।।

दधि दूर्बा रोचन फल फूला ❀ नव तुलसी दल मंगल मूला
भरि भरि हेमथार वर भामिनि ❀ गावत चलीं सिन्धुरागामिनि

दूध, दही, हल्दी, फल, फूल और नवीन तुलसीके दल मंगलमूल वस्तुयें, ।।५।। सुन्दरी स्त्रियां सुर्वणके थालोंमें भरकर गाती हुई हाथी के समान राजमहल की ओर चलीं ।।६।।

जो जैसेहि तैसेहिं उठि धावहिं ❀ बाल बृद्ध कोउ संग न लावहिं
एक एक सन पूछहिं धाई ❀ तुम देखे दयालु रघुराई

जो जिस दशामें थे, वे वैसे ही दौड़े, बालक और वृद्धोंको नहीं लेते ।।७।। एक दूसरेसे दौड़कर पूछते हैं कि, तुमने दयालु रामजी को देखा है ? ।।८।।

अवधपुरी प्रभु आवत जानी ❀ भई सकल शोभा की खानी
भइ सरयू अति निर्मल नीरा ❀ बहै सुहावन त्रिबिध समीरा

प्रभु रामजीको आते जानकर अयोध्यापुरी सम्पूर्ण शोभाकी खान हो गई ।।९।। सरयू नदीका जल अत्यन्त निर्मल हो गया और तीनों प्रकार की सुन्दर हवा चलने लगी ।।१०।।

दोहा—हर्षित गुरु परिजन अनुज, भूसुर वृन्द समेत ।
चले भरत अति प्रेममन, सन्मुख कृपा निकेत ।। ८ ।।

गुरु, परिवारके लोग, छोटे भाई शत्रुघ्न और ब्राह्मण वृन्द सहित भरतजी प्रसन्नता से मनमें अत्यन्त प्रेमके साथ कृपानिधान रामजीके सन्मुख (स्वागत करने) चले ।।८।।

बहुतक चढ़ीं अटारिन्ह, निरखहिं गगन बिमान ।
देखि मधुर स्वर हर्षित, करहिं सुमंगल गान ।। ९ ।।

बहुतसी स्त्रियां अटारियों पर चढ़कर आकाशमें विमान देख रही हैं । तब विमान को देखकर प्रसन्न हो मधुर स्वर से सुन्दर मंगलगान करती हैं ।।९।।

राका ससि रघुपतिपुरी, सिंधु देखि हर्षान ।
बढ़ेउ कोलाहल करत जनु, नारि तरंग समान ।।१०।।

रामचन्द्रजी पूर्णिमाके चन्द्रमा-स्वरूप हैं और अवधपुर समुद्रका रूप है, वह चन्द्रमाको देखकर उमड़ उठा है । उसके बढ़ने पर स्त्रियां तरंगके समान कोलाहल करने लगीं ।।१०।।

रविकुलकमल दिवाकर आवत ❀ नगर मनोहर कपिन्ह देखावत
सनु कपीश अंगद लंकेसा ❀ पावन पुरी रुचिर यह देसा

सूर्यकुल-कमल-दिवाकर रामचन्द्रजी बानर-भालुओंको मनोहर नगर दिखाते हुए आते हैं और कहते हैं कि सुग्रीव, अंगद और विभीषण! सुनो, यह पवित्र पुरी और सुन्दर देश है ॥

यद्यपि सब बैकुण्ठ बखाना ❀ वेद पुरान विदित जग जाना
अवध सरिस प्रिय मोहिं न सोऊ ❀ यह प्रसंग जानै कोउ कोउ

यद्यपि सब वैकुण्ठका वर्णन करते हैं, वेद-पुराणोंमें विदित हैं तथा संसार जानता है ॥ परन्तु अयोध्यापुरीके समान मुझे वह भी प्रिय नहीं है। इस प्रसंगको कोई-कोई जानते हैं ॥

जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि ❀ उत्तर दिसि सरयू बह पावनि
जे मज्जहिं ते बिनहिं प्रयासा ❀ मम समीप नर पावहिं बासा

यह सुन्दर पुरी मेरी जन्म-भूमि है, इसके उत्तर में पवित्र सरयू नदी बहती है ॥५॥ इसमें जो लोग स्नान करते हैं, वे बिना प्रयास ही मेरे पास रहने को स्थान पाते हैं ॥६॥

अति प्रिय मोहिं इहाँ के बासी ❀ मम धामदा पुरी सुखरासी
हर्षे कपि सुनि प्रभु की बानी ❀ धन्य अवध जेहि राम बखानी

यहांके निवासी मुझे अत्यन्त प्रिय हैं, यह पुरी सुखों की राशि मेरे धाम को देनेवाली है॥ प्रभुके वचन सुनकर सब वानर प्रसन्न हुए। अयोध्या धन्य है जिसकी रामजीने प्रशंसा की है ॥८॥

दोहा—आवत देखि लोग सब, कृपासिन्धु भगवान।
नगर निकट प्रभु आयउ, उतरेउ भूमि बिमान ॥११॥

कृपासागर भगवान् रामचन्द्रजी ने सब लोगोंको आते देखा, तब विमान नगरके समीप धरतीपर उतरवाया ॥११॥

उतरि कहेउ प्रभु पुष्पकहिं, तुम कुबेर पहँ जाहु।
प्रेरित राम चलेउ सोइ, हर्ष बिरह अति दाहु ॥१२॥

पुष्पक विमानसे उतरकर प्रभु रामचन्द्रजीने उससे कहा कि तुम कुबेर के पास जाओ। रामचन्द्रजी को आज्ञा पाकर वह चला परन्तु उसको भी अत्यन्त हर्ष और विरह से दुःख हुआ ॥१२॥

आए भरत संग सब लोगा ❀ कृस तनु श्रीरघुबीर बियोगा
बामदेव बसिष्ठ मुनिनायक ❀ देखे प्रभु महि धरि धनु सायक

भरतजीके साथ सब लोग आये, श्रीरामचन्द्रजीके वियोगसे उनका शरीर दुर्बल हो गया है ॥१॥ वामदेव और वशिष्ठजीको देखकर प्रभुने धनुष-बाण पृथ्वीपर रख दिया और ॥२॥

धाइ धरे गुरु चरन सरोरुह ❀ अनुज सहित अति पुलक तनोरुह
भेंटे कुशल पूछि मुनिराया ❀ हमरे कुशल तुम्हारिहिं दाया

छोटे भाई लक्ष्मणजी सहित अत्यन्त पुलकित शरीर से दौड़कर गुरुजी के चरणों को पकड़ लिये॥ मुनिराज कुशल पूछकर मिले तो रामचन्द्रजीने कहा-हमारी कुशल आप ही की दया में है ॥

सकल द्विजन्ह मिलि नायउ माथा ❀ धर्म धुरन्धर रघुकुल नाथा
गहे भरत पुनि प्रभुपद पंकज ❀ नमहिं जिन्हहिं शंकर सुरमुनिश्रज

धर्म-धुरन्धर रघुकुलके स्वामीने सम्पूर्ण ब्राह्मणोंको मस्तक नवाया ॥ फिर भरतजीने श्रीरामचन्द्रजीके कमलवत् चरण पकड़े, जिन्हें देवता, मुनि, शिव और ब्रह्मा नमस्कार करते हैं ॥

परे भूमि नहिं उठत उठाये ❀ बलकरि कृपासिंधु उर लाये
स्यामल गात रोम भये ठाढ़े ❀ नवराजीव नयन जल बाढ़े

भरतजी भूमिपर पड़े हैं, उठानेसे भी नहीं उठते, तब रामजीने उन्हें बलपूर्वक उठाकर हृदयसे लगा लिया ॥ उनके श्याम शरीरपर रोमांच हो गया और नेत्रोंमें जल बढ़ आया ॥

दोहा--पुनि प्रभु हर्षित शत्रुहन, भेंटे हृदय लगाइ ।
लछिमन भेंट भरत पुनि, प्रेम न हृदय समाइ ॥१३॥

फिर प्रभु रामजी प्रसन्नता से शत्रुघ्न को हृदय से लगाकर मिले । फिर लक्ष्मण और भरतजी मिले । वह प्रेम हृदय में नहीं समाता ॥१३॥

भरतानुज लछिमन पुनि भेंटे ❀ दुसह बिरह सम्भव दुख मेटे
सीता चरन भरत शिर नावा ❀ अनुज समेत परम सुख पावा

फिर लक्ष्मण शत्रुघ्नसे मिले और कठिन विरह से उत्पन्न दुःखको मिटाया ॥ सीताजी के चरणों में भरतजीने मस्तक नवाया और छोटे भाई शत्रुघ्न सहित परम सुख पाया ॥२॥

प्रभु बिलोकि हर्षे पुरबासी ❀ जनित वियोग विपति सब नासी
प्रेमातुर सब लोग निहारी ❀ कौतुक कीन्ह कृपालु खरारी

श्रीरामजीका दर्शन करके नगर-निवासी प्रसन्न हुए । विरह जनित सारी विपत्ति का नाश हुआ ॥ तब सब लोगोंको प्रेमातुर देखकर श्रीरामजीने यह कौतुक किया कि—॥

अमित रूप प्रगटे तेहि काला ❀ यथा योग्य मिलि सबहिं कृपाला
कृपा दृष्टि सब लोग बिलोकी ❀ किये सकल नर नारि बिसोकी

उस समय रघुनाथजी अपने असंख्य रूप प्रगट किए और यथा योग्य वे कृपालु सबसे मिले ॥ उन्हें जो जिस भावना से देखता उससे उसी रूपमें मिले और कृपा-दृष्टि से देखकर सबको शोक-रहित किया

छन महँ सबहिं मिले भगवाना ❀ उमा मर्म यह काहु न जाना
एहिविधिसबहिंसुखीकरिरामा ❀ आगे चले सील गुन धामा
कौशिल्यादि मातु सब धाई ❀ निरखि बत्स जनु धेनु लवाई

क्षणभरमें भगवान् सबसे मिले, शिवजी कहते हैं--हे पार्वती ! इस भेदको किसीने नहीं जाना ॥ इस प्रकारसे सबको सुखी करके शील-गुण-निधान रामजी आगे चले ॥ तब कौशिल्या आदि सब मातायें ऐसे दौड़ें, जैसे तुरन्तकी व्यायी गौयें अपने बछड़े को देखकर दौड़ती हैं ॥

छन्द—जनु धेनु बालक बत्स तजि गृह चरन बन परबस गई ।
दिन अन्त पुररुख स्रवत थन हुंकार करि धावत भई ॥
अति प्रेम प्रभु सब मातु भेंटी बचन मृदु बहुविधि कहे ।
गइ विषम बिपति बियोग भव तिन्ह हर्ष सुख अगनित लहे ॥२॥

मानों छोटे बच्चेको तुरन्तकी ब्याई गौ घरमें छोड़कर पराधीनतावश बनमें चरने गयी हो। सन्ध्याको नगरकी ओर थनोंसे दूध बहाती हुई हुंकार करके दौड़ी हो । प्रभु रामचन्द्रजी सब माताओंसे अत्यन्त प्रीतिके साथ मिले और बहुत तरहके कोमल वचन कहे । माताओंकी विषम-वियोगकी विपत्ति जाती रही, उन्हें अपार हर्ष और सुख मिला ॥२॥

दोहा—भेंटेउ तनय सुमित्रा, रामचरन रति जानि ।
रामहिं मिलति कैकयी, हृदय बहुत सकुचानि ॥१४॥

रामजीके चरणोंमें अनुरक्त जान सुमित्रा अपने पुत्र लक्ष्मणसे मिली । रामजीसे मिलती हुई कैकेयी हृदय में बहुत सकुचा गयी ॥१४॥

लछिमन सब मातन्ह मिले, हर्षे आशिष पाइ ।
कैकयि कहँ पुनि पुनि मिले, मनकर छोभ न जाइ ॥१५॥

लक्ष्मणजी सब माताओं से मिले और आशीर्वाद पाकर प्रसन्न हुए । कैकेयी से बार-बार मिले, पर मनका क्षोभ दूर नहीं होता ॥१५॥

सासुन्ह सबहिं मिली बैदेही ❀ चरनन्हि लागि हर्ष अति तेही
देहिं असीस बूझि कुशलाता ❀ होहु अचल तुम्हार अहिवाता

सीता सब सासुओं से मिलीं और चरणों में लगकर उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई ॥१॥ तब सासुएँ कुशल पूछकर आशीर्वाद देती हैं कि, तुम्हारा सौभाग्य अचल हो ॥२॥

सबरघुपतिमुखकमलबिलोकहिं❀ मंगल जानि नयन जल रोकहिं
कनकथार आरती उतारहिं ❀ बार बार प्रभु गात निहारहिं

सब श्रीरामचन्द्रजीके मुखकमलको देखती हैं, और मंगल समय जानकर नेत्रोंके जलको रोकती हैं ॥ सुवर्णके थालमें आरती उतारती हैं और बारम्बार रामजीके मुखको निहारती हैं ॥४॥

नाना भाँति निछावर करहीं ❀ परमानन्द हर्ष उर भरहीं
कौशल्या पुनि पुनि रघुबीरहिं ❀ चितवति कृपासिन्धु रणधीरहिं

वह नाना प्रकारकी निछावरें करती हैं और परम आनन्द और हर्षसे हृदय भर रहा है ॥५॥ कृपासागर श्रीरामचन्द्रजीको कौशल्या बार-बार देखती हैं ॥६॥

हृदय बिचारति बारहिं बारा ❀ कवन भाँति लंकापति मारा
अति सुकुमार जुगल मम बारे ❀ निशिचर सुभट महाबल भारे

हृदयमें बार-बार बिचार करती हैं कि इन्होंने रावण को कैसे मारा होगा ॥७॥ मेरे दोनों बालक तो अत्यन्त सुकुमार हैं और राक्षस योद्धा तो महाबलवान् थे ॥८॥

दोहा—लछिमन अरु सीता सहित, प्रभुहिं बिलोकहिं मात।
परमानन्द मगन मन, पुनि पुनि पुलकित गात ॥१६॥

फिर लक्ष्मण और सीता सहित प्रभु रामजी को माताएँ देखती हैं। उनका शरीर बार-बार पुलकित हो रहा है और मन परम आनन्द में मग्न हो रहा है ॥१६॥

लंकापति कपीस नलनीला ❁ जामवन्त अंगद शुभ शीला
हनुमदादि बानर सब बीरा ❁ धरे मनोहर मनुज शरीरा

सुन्दर स्वभाव वाले बिभीषण, सुग्रीव, नल, नील, जामवन्त, अङ्गद ॥१॥ और हनुमान् आदि बानरों ने मनुष्य के मनोहर शरीर धारण कर रखे हैं ॥२॥

भरत सनेह शील ब्रत नेमा ❁ सादर सब बरनहिं अति प्रेमा
देखि नगर बासिन्ह कै रीती ❁ सकल सराहहिं प्रभु पद प्रीती

भरतजी के स्नेह, शील, व्रत और नियमको आदर सहित सब अत्यन्त प्रेमपूर्वक वर्णन करते हैं। नगर निवासियोंकी रीति और उनकी प्रभुपद प्रीति देखकर सभी प्रशंसा करते हैं ॥

पुनि रघुपति निज सखा बुलाए ❁ मुनि पद लागहु सबहिं सिखाए
गुरु वसिष्ठ कुल पूज्य हमारे ❁ इनकी कृपा दनुज रन मारे

फिर रामजीने सब मित्रोंको बुलाकर सिखाया कि मुनिके चरणोंमें प्रणाम करो ॥५॥ वसिष्ठजी हमारे पूज्य हैं, इन्हींकी कृपासे हमने युद्धमें राक्षसोंको मारा है ॥६॥

मम हित लागि जन्म इन्ह हारे ❁ भरतहुँ ते मोहिं अधिक पियारे
सुनि प्रभु बचन मगन सब भयऊ ❁ निमिष निमिष उपजत सुख नयऊ
ये सब सखा सुनहु मुनि मेरे ❁ भये समर सागर के बेरे

फिर मुनि वसिष्ठसे कहा—हे मुनि ! सुनिये, ये मेरे सब सखा हैं जो समररूपी सागरके बेड़े हुए। मेरे हितके लिए इन्होंने प्राण तज दिये, इसलिये ये मुझे भरतजीसे भी अधिक प्यारे हैं ॥ प्रभु रामचन्द्रजीके वचन सुन सब मग्न हो गये, पल-पल में नया सुख उत्पन्न हो रहा था ॥

दोहा—कौशिल्याके चरनन्हि, पुनि तिन्ह नायउ माथ।
आशिष दीन्ह हर्ष हिय, तुम प्रिय जिमि रघुनाथ ॥१७॥

फिर उन मित्रोंने कौशिल्या के चरणोंमें शिर नवाया। माताने हृदय में प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया और कहा—तुम सब मुझे रामचन्द्रकी भाँति प्यारे हो ॥१७॥

सुमन वृष्टि नभ संकुल, भवन चले सुखकन्द।
चढ़े अटारिन्ह देखहिं, नगर नारि नर वृन्द ॥१८॥

आकाशसे भरपूर फूलोंकी वर्षा हो रही है, आनन्दकन्द रामजी अपने घरकी ओर चले। तब नगरके स्त्री-पुरुषोंके झुण्ड अटारियों पर चढ़कर देखते हैं ॥१८॥

कंचन कलश बिचित्र सँवारे ❀ सबहिं धरे सजि निज निज द्वारे
बंदनवार पताका केतू ❀ सबन्हि बनायें मंगल हेतू
नाना भाँति सुमंगल साजे ❀ हरषि नगर निशान बहु बाजे

सबने अपने-अपने द्वारोंपर विचित्र ढंगसे सुन्दर बनाये हुए स्वर्ण-कलश रखे ।। सबने सुमंगल हेतु बन्दनवारें तथा झण्डियां और झंडे बनाये ।। अनेक प्रकार के सुमंगल सजे, नगर में हर्ष से बहुत से नगाड़े बजने लगे ।।

जहँ तहँ नारि निछावरि करहीं ❀ देहिं असीस हरष उर भरहीं
कंचन थार आरती नाना ❀ युवती सजे करहिं शुभ गाना

स्त्रियां जहां-तहां निछावर करने लगीं और हृदयमें प्रसन्न होकर आशीर्वाद देने लगीं ।। युवतियां आरती के लिए अनेक सुवर्ण के थाल सजाकर शुभ गान करने लगीं ।।

करहिं आरती आरति हरकी ❀ रघु-कुल-कमल विपिन-दिनकरकी
पुर शोभा संपति कल्याना ❀ निगम शेष शारदा बखाना
तेउ यह चरित देखि ठगि रहहीं ❀ उमा तासु गुन नर किमि कहहीं

वे रघुवंशरूपी कमल-बनके सूर्य तथा दुःखको मिटाने वाले श्रीरामजीकी आरती करने लगी । उस समयके नगरकी शोभा, सम्पत्ति और कल्याणको वेद, शेषजी और सरस्वतीजी वर्णन कर सकती हैं । शिवजी कहते हैं कि हे पार्वती ! जब वे भी इन चरित्रों को देखकर थकित हो गए तब उनके गुणोंको भला मनुष्य कैसे कह सकते हैं ? ।।

दोहा--नारि कुमुदिनी अवध सर, रघुपति बिरह दिनेश ।
अस्त भए बिकसित भईं, निरखि राम राकेश ।।१९।।

अयोध्यापुरी सरोवरके समान है और स्त्रियां मानों कुमुदिनी हैं जो श्रीरामचन्द्रजी के वियोगरूपी सूर्य के अस्त होने पर रामजी रूपी पूर्ण चन्द्रमा को देखकर खिल उठीं ।।१९।।

होहिं शकुन शुभविविध विधि, बाजहिं गगन निशान ।
पुर नर नारि सनाथ करि, भवन चले भगवान ।।२०।।

नाना प्रकार के शुभ शकुन हो रहे हैं और आकाश में नगाड़े बजते हैं । नगर के स्त्री-पुरुषों को सनाथ करके भगवान् रामजी राजमहल को चले ।।२०।।

प्रभु जाना कैकयी लजानी ❀ प्रथम तासु गृह गयउ भवानी
ताहि प्रबोधि बहुत सुख दीन्हा ❀ पुनि निज भवन गमन प्रभु कीन्हा

शिवजी कहते हैं, हे भवानी ! श्रीरामजीने जाना कि कैकेयी लज्जित हैं, इससे पहले उन्हीं के घर में गए ।। १ ।। उनको बहुत समझाकर सुखी किये । फिर रामचन्द्रजी अपने घर को चले ।।२।।

कृपा सिंधु निज मन्दिर गयऊ ❀ पुर नर नारि सुखी सब भयऊ
गुरु वसिष्ठ द्विज लिये बलाई ❀ आजु सुघरी सुदिन सुखदाई

कृपासागर रामजी जब अपने महलमें गये, तब नगरके स्त्री-पुरुष सुखी हुए ॥३॥ गुरु वशिष्ठने ब्राह्मणोंको बुलाकर कहा कि आज शुभ मुहूर्त और अच्छा दिन है ॥४॥

सब द्विज देहु हर्षि अनुशासन ❀ रामचन्द्र बैठहिं सिंहासन
मुनि वसिष्ठ के बचन सुहाये ❀ सुनत सकल बिप्रन्ह अति भाये

अब सब ब्राह्मण प्रसन्न होकर आज्ञा दें, तो श्रीरामचन्द्र राज्य-सिंहासन पर बैठें ॥५॥ मुनि वशिष्ठ के सुहावने बचन सुनते ही सब ब्राह्मणों को बहुत अच्छे लगे ॥६॥

कहहिं बचन मृदु बिप्र अनेका ❀ जग अभिराम राम अभिषेका
अब मुनिवर बिलम्ब नहिं कीजै ❀ महाराज कहुँ तिलक करीजै

सब ब्राह्मण अनेक प्रकार की कोमल वाणी से कहने लगे कि, रामजीका राज्याभिषेक संसारके लिये आनन्दरूप है ॥७॥ हे मुनिवर ! अब विलम्ब न करें, महाराजको तिलक कीजिये ॥७॥

दोहा—तब मुनि कहेउ सुमन्त सन, सुनत चलेउ सिर नाइ ।
रथ अनेक बहु बाजि गज, तुरत सँवारे जाइ ॥२१॥

तब मुनिने जो सुमन्त से कहा, तो वे शिर झुका प्रसन्न होकर चले और जाकर बहुत घोड़े, हाथी और नाना प्रकार के रथ सजाये ॥२१॥

जहँ तहँ धावन पठय पुनि, मंगल द्रव्य मँगाय ।
हर्ष समेत वसिष्ठ पद, पुनि सिर नायहु आय ॥२२॥

फिर जहाँ-तहाँ दूतोंको भेजकर मांगलिक द्रव्य मंगाये । जब वे अपना कार्य करके लौटे तो आकर हर्ष सहित वशिष्ठजीके चरणोमें शिर नवाये ॥२२॥

अवधपुरी अति रुचिर बनाई ❀ देवन सुमन वृष्टि झरि लाई
राम कहा सेवकन बुलाई ❀ प्रथम सखन अन्हवावहु जाई

अयोध्यापुरीको अत्यन्त सजाया गया, देवताओं ने पुष्प-वर्षा की ॥१॥ रामचन्द्रजी ने सेवकों को बुलाकर कहा कि पहले जाकर मित्रों को स्नान कराओ ॥२॥

सुनत बचन जहँ तहँ जन धाये ❀ सुग्रीवादि तुरत अन्हवाये
पुनि करुना निधि भरत हँकारे ❀ निजकर जटा राम निरुवारे

यह वचन सुनते ही सेवक दौड़े और सुग्रीव आदि को तुरन्त स्नान कराया ॥ ३ ॥ फिर रामचन्द्रजी ने भरत को बुलाया और अपने हाथों से उनकी जटा सुलझाई ॥४॥

अन्हवाये पुनि तीनहु भाई ❀ भक्त बछल कृपालु रघुराई
भरत भाग्य प्रभु कोमलताई ❀ शेष कोटि सत सकहिं न गाई

फिर भक्त-वत्सल श्रीरामचन्द्रजी ने तीनों भाइयों को स्नान करवाया ॥ ५ ॥ भरतजी के भाग्य श्रीरामचन्द्रजी की कोमलता को सौ करोड़ शेष भी नहीं गा सकते ॥६॥

पुनि निज जटा राम विवराये ❀ गुरु अनुशासन माँगि नहाये
करि मज्जन भूषण प्रभु साजे ❀ अंग अनंग कोटि छबि लाजे

फिर रामचन्द्रजी ने अपनी जटाके बाल सँवारे और गुरुजी से आज्ञा माँग कर स्नान किया ।। ७ ।। स्नानकर वस्त्र-आभूषण पहने, रामजी के अंगों की छबि देख करोड़ों कामदेव लजाते हैं ।।८।।

दोहा—सासुन्ह सादर जानकिहिं, मज्जन तुरत कराइ ।
दिव्य वसन मनि भूषन, साजे अंग बनाइ ।।२३।।

सासुओंने तुरन्त आदरके साथ सीताजीको स्नान कराया और दिव्य वस्त्र तथा उत्तम गहने अच्छी तरह से अंग-अंग में सजाये ।। २३ ।।

राम वामदिशि शोभित, रमा रूप गुण खानि ।
देखि मातु सब हर्षित, जन्म सफल निज जानि ।।२४।।

रामचन्द्रजी की बायीं ओर लक्ष्मी-रूपिणी गुणोंकी खान सीताजी सुशोभित हैं ! जिन्हें देखकर सब माताएँ अपने जन्म को सफल समझ कर प्रसन्न हुईं ।। २४ ।।

सुनु खगेश तेहि अवसर, ब्रह्मा शिव मुनि वृन्द ।
चढ़ि विमान आये सब, सुर देखन सुखकन्द ।।२५।।

हे गरुड़ ! सुनिये, उस समय ब्रह्मा, शिव, मुनिवृन्द और देवता विमानों पर चढ़कर आनन्दकन्द श्रीरामचन्द्रजी को देखने के लिए आये ।। २५ ।।

प्रभु बिलोकि मुनि मन अनुरागा * तुरत दिव्य सिंहासन माँगा
रवि सम तेज बरनि नहिं जाई * बैठे राम द्विजन सिर नाई

प्रभुको देखकर वसिष्ठजीने तुरन्त दिव्य सिंहासन मँगाया ।।१।। सूर्यके समान जिसके प्रकाश को बखाना नहीं जाता, ब्राह्मणोंको मस्तक नवाकर रामचन्द्रजी उसपर बैठ गये ।। २ ।।

जनकसुता समेत रघुराई * देखि प्रहर्षे मुनि समुदाई
वेदमन्त्र तब द्विजन उचारे * नभसुर मुनि जय जयति पुकारे

सीता सहित रामजीको सिंहासनपर विराजमान देखकर मुनि-मंडली प्रसन्न हुई ।।३।। ब्राह्मणोंने वेदमन्त्रोच्चारण किया और आकाशमें देवता जय-जयकार करने लगे ।। ४ ।।

प्रथम तिलक बसिष्ठ मुनि कीन्हा * पुनि सब विप्रन्ह आयसु दीन्हा
सुत बिलोकि हरषीं महतारी * बार बार आरती उतारी

पहिले वसिष्ठ मुनिने तिलक किया, फिर सब ब्राह्मणोंको आज्ञा दी ।।५।। पुत्रोंको देख-कर माताएँ प्रसन्न हो बार-बार उनकी आरती उतारीं ।। ६ ।।

विप्रन्ह दान विविध विधि दीन्हे * याचक सकल अयाचक कीन्हे
सिंहासन पर त्रिभुवन साईं * देखि सुरन्ह दुन्दुभी बजाईं

ब्राह्मणोंको नाना प्रकारके दान दिये गये, याचकों को अयाच कर संतुष्ट किया ।।७।। तब त्रिभुवनपति श्रीरामचन्द्रजीको सिंहासनपर बैठे देखकर देवताओं ने दुदुभी बजायी ।।८।।

छन्द—नभ दुन्दुभी बाजहिं विपुल गन्धर्व किन्नर गावहीं।
नाचहिं अप्सरावृन्द परमानन्द सुर मुनि पावहीं॥
भरतादि अनुज विभीषणांगद हनुमदादि समेत जे।
गहे छत्र चामर व्यजन धनु असि चर्म शक्ति विराजते॥३॥

आकाशमें असंख्य नगाड़े बजते हैं, गन्धर्व, किन्नर गान गाते हैं। अप्सराएँ नाचती हैं, मुनि और देवता आनन्द प्राप्त करते हैं। छोटे भाई भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न तथा विभीषण, अङ्गद, हनुमान् आदि पार्षद्गण, छत्र, चँवर, पंखा, धनुष, तलवार, ढाल और बरछे सहित विराजमान हैं॥ ३॥

श्रीसहित दिनकर वंश भूषण काम बहु छबि सोहहीं।
नव अम्बुधर वर गात अम्बर पीत मुनिमन मोहहीं॥
मुकुटांगदादि विचित्र भूषण अंग अंगनि प्रति सजे।
अम्भोज नयन विशाल उर भुज धन्य नर निरखन्त जे॥४॥

सूर्यकुल भूषण श्रीरामचन्द्रजी सीताजी सहित अनेक कामदेव की शोभासे बढ़कर हैं॥ नवीन मेघके समान सुन्दर शरीर और पीला वस्त्र मुनियों के मनको मोहित कर रहा है। मुकुट और विजायठ आदि विलक्षण आभूषण प्रत्येक अंगमें सुशोभित हैं। कमलके समान नेत्र, विशाल छाती और भुजाओंको जो लोग देखते हैं, वे धन्य हैं॥ ४॥

दोहा—वह शोभा सुसमाज सुख, कहत न बनै खगेश।
बरनै शारद शेष श्रुति, सो रस जान महेश॥२६॥

हे गरुड़! वह शोभा और समाजका सुख कहते नहीं बनता। सरस्वती, शेष और वेद वर्णन तो करते हैं, पर उस रसको शिवजी ही जानते हैं॥ २६॥

भिन्न-भिन्न अस्तुति करि, गे सुर निज-निज धाम।
बन्दि वेष धरि बेद तब, आये जहँ श्रीराम॥२७॥

भिन्न-भिन्न स्तुति करके देवता अपने-अपने धामको गए। तब वेद बन्दीजनोंके वेषमें जहाँ श्रीरामचन्द्रजी थे, वहाँ आये॥ २७॥

प्रभु सर्वज्ञ कीन्ह अति, आदर कृपानिधान।
लखेउ न काहू मर्म कछु, लगे करन गुनगान॥२८॥

कृपानिधान सर्वज्ञ प्रभु रामजीने उनका अत्यन्त आदर किया। इसका भेद किसीने नहीं जाना, चारों वेद गुणगान करने लगे॥ २८॥

छन्द—जय सगुण निर्गुण रूप राम अनूप भूप शिरोमने।
दशकन्धरादि प्रचण्ड निशिचर प्रबल खलभुजबल हने॥
अवतार नर संसार भार विभंजि दारुन दुख दहे।
जय प्रणतपाल दयालु प्रभु संयुक्त शक्ति नमामहे॥ ५॥

हे राजाओंके शिरोमणि, अनुपम रूपवाले, सगुण और निर्गुणरूप ! आपकी जय हो। रावण आदि महाबली प्रचण्ड राक्षसोंको अपनी भुजाओंके बलसे आपने मारा। मनुष्यका अवतार धारण करके आपने संसारका भार उतारा और दारुण दुख दूर किया। हे शरणागतोंके रक्षक प्रभो ! आपकी जय हो, सीता सहित आपको हमलोग नमस्कार करते हैं।। ५ ।।

छन्द—तव विषम माया बस सुरासुर नाग नर अग जग हरे ।
भवपंथ भ्रमित सुश्रमित निशिदिन कालकर्म गुनन्हि भरे।।
जे नाथ करि करुना बिलोकहु त्रिबिध दुख ते निर्बहे ।
भव खेद छेदन दक्ष हम कहँ रक्ष राम नमामहे ।।६।।

हे हरे ! हे देवता, दैत्य, नाग, मनुष्य, जड़ और चेतन सब आपकी विषम मायाके अधीन हैं। वे काल-कर्म और गुणोंसे भरे हुए दिन-रात असंख्य संसारी मार्गों में भटकते हैं। हे नाथ ! जिनको आप दयाकी दृष्टिसे देखते हैं, वे तीनों प्रकारके दुःख से छुटकारा पा जाते हैं। हे रामजी ! आप संसारके दुःख मिटानेमें प्रवीण हैं, हमारी रक्षा कीजिये, हम आपको नमस्कार करते हैं ।। ६ ।।

जे ज्ञान मान विमत्त तव भव हरणि भक्ति न आदरी।
ते पाइ सुर दुर्लभ पदादपि परत हम देखत हरी ।।
विश्वास करि सब आस परिहरि दास तव जे होइ रहे ।
जपि नाम तव बिनु श्रम तरहिं भव नाथ सो स्मरामहे ।।७।।

जो ज्ञानके अहंकारसे मतवाले होकर संसारको हरनेवाली आपकी भक्तिका आदर नहीं करते, हे हरे ! देवताओंके दुर्लभ पद पाकर भी हम देखते हैं कि वे संसारमें गिर जाते हैं। जो सब आशाओंको त्यागकर विश्वास करके आपके सेवक हो रहे हैं, हे नाथ ! वे आपका नाम जपकर बिना प्रयास ही भवसागरसे पार हो जाते हैं, अतः हम आपका स्मरण करते हैं ।। ७ ।।

जे चरण शिवअज पूज्यरज शुभ परसि मुनि पत्नी तरी।
नख निर्गता मुनिबन्दिता त्रैलोक्य पावनि सुरसरी ।।
ध्वजकुलिश अंकुश कंजयुत बन फिरत कंटक जिन्ह लहे।
पदकंज द्वन्द्व मुकुन्द राम रमेश नित्य भजामहे ।।८।।

जो चरण शिवजी और ब्रह्माके लिए पूज्य हैं और जिनकी पवित्र धूलके छू जानेसे मुनि-पत्नी तर गई। जिन चरणोके नखोंसे तीनों लोकको पावन करनेवाली मुनियों द्वारा बंदित गंगाजी निकलीं। ध्वज, वज्र, अंकुश और कमलके चिन्होंसे युक्त बनमें फिरते हुए जिन चरणोंको कांटोंमें रहनेवाले कोल-भीलोंने पाया। जो चरणकमल मोक्ष देनेवाले हैं, हे रमापति रामचन्द्रजी ! हम उन चरणोंको नित्य भजते हैं ।। ८ ।।

अव्यक्त मूल मनादि तरु त्वच चारि निगमागम भने ।
षटकन्ध शाखा पंचबीस अनेक पर्ण सुमन घने।।

छन्द—फलयुगल विधिकटु मधुर बेलिअकेलि जेहि आश्रित रहे।
पल्लवित फूलत नवल नित संसार विटप नमामहे ॥९॥

संसाररूपी वृक्षकी जड़ अदृश्य और अनादि प्रकृति है। इनकी चार त्वचाएँ अंडज पिंडज, स्वदेज, और जरायुज हैं, यह वेद और शास्त्र कहते हैं। इनके छः स्कन्ध, पचीस शाखाएँ, अनेक पत्ते और बहुतसे फूल हैं। कडुवे और मीठे दो तरहके फल हैं। इसके आश्रित रहनेवाली बेलि अकेली ही है। जो सुन्दर नित्य नई पल्लवित होती और फलती रहती है। ऐसे संसार-वृक्ष रूप आपको हम नमस्कार करते हैं ॥ ९ ॥

जे ब्रह्म अजमद्वैत अनुभव गम्य मन पर ध्यावहीं।
ते कहहु जानहु नाथ हम तव सगुण यश नित गावहीं ॥
करुणायतन प्रभु सद्गुणाकर देव यह बर माँगहीं।
मन कर्म बचन विकार तजि तव चरन हम अनुरागहीं ॥१०॥

जो लोग जन्म रहित अद्वैत, अनुभव गम्य और मनसे परे निर्गुण ब्रह्मका ध्यान करते हैं, वे उसे जानें और उसका वर्णन करें, हे नाथ ! हम तो आपके सगुण स्वरूपके यश को नित्य गाते हैं। हे दयानिधान, हे सद्गुणोंके भण्डार प्रभो ! हम यह वरदान माँगते हैं कि मन, वाणी और कर्मसे विकार छोड़कर आपके चरणोंमें हमारा प्रेम हो ॥ १० ॥

दोहा—सबके देखत वेद तब, बिनती कीन्ह उदार।
अन्तरध्यान भये पुनि, गये ब्रह्म आगार ॥ २९ ॥

तब सबके देखते वेदोंने उदार विनती की। फिर वे अन्तर्ध्यान होकर ब्रह्मलोकको चले गये ।२९।

बैनतेय सुनु शंभु तब, आये जहँ रघुबीर।
बिनय करत गदगद गिरा, पूरित पुलक शरीर ॥ ३० ॥

काकभुशुण्डिजी कहते हैं कि—हे गरुड़जी ! सुनिये, जहाँ श्रीरामचन्द्रजी थे वहाँ शिवजी आये। उनका शरीर पूर्ण पुलकायमान हो गया था। वे अत्यन्त गद्‌गद वाणी से स्तुति करने लगे ॥३०॥

छन्द—जय राम रमारमनं शमनं, भवताप भयाकुल पाहिजनम्।
अवधेश सुरेश रमेश विभो, शरणागत माँगत पाहि प्रभो।१।

हे राम ! आप संसारके सन्ताप-नाशक तथा भयाकुल जनोंके रक्षक हो। आप देवता और लक्ष्मीके पति हो, हे प्रभो ! शरणागतकी रक्षा करो ॥ १ ॥

दशशीश बिनाशन बीसभुजा, कृतदूरि महामहि भूरि रुजा।
रजनीचर वृन्द पतंग रहे, सर पावक तेज प्रचण्ड दहे।२।

दशशिर और बीस भुजा वाले रावणको मारकर आपने पृथ्वीका भारी रोग दूर किया। पतङ्ग रूपी राक्षसोंका समूह आपके बाण रूपी प्रचंड अग्निके तेजमें भस्म हो गया ॥ २ ॥

महि मंडन मंडन चारुतरं, धृतसायक चापनिषंग वरम्।
मदमोह महा ममता रजनी, तमपुञ्ज दिवाकर तेज अनी।३।

आप भूमण्डलके अत्यन्त सुन्दर भूषण हो, धनुषबाण तरकस लिए हुए हो, मद, मोह और ममताकी महा अँधेरी रात्रिके समूहके लिए तेजोंकी सेनाके सूर्य हो ॥ ३ ॥

छन्द—मनुजात किरात निपात किये, मगलोग कुभोग सरेन हिये।
हति नाथ अनाथन्हि पाहि हरे, बिषया बन पामर भूलि परे।४।

कामदेवरूपी व्याघ्रने मृगरूपी लोगोंको कुभोगरूपी बाणोंसे हृदयमें मारकर गिरा दिया इसलिए मैं आपकी शरण हूँ। आप अनाथोंके नाथ हो, रक्षा करो, क्योंकि हम विषयरूपी वनमें भूले हुए हैं ॥ ४॥

बहुरोग बियोगन्हि लोग हये, भवदंघ्रि निरादर के फल ये।
भवसिन्धु अगाध परे नर ते, पदपंकज प्रेम न जे करते।५।

उनमेंसे कोई रोगसे और वियोगसे नष्ट हो गये हैं। आपके चरणोंका निरादर करनेका यह फल है। वे मनुष्य संसाररूपी अथाह समुद्रमें पड़े हैं जो आपके चरण-कमलोंमें प्रेम नहीं करते ॥५॥

अति दीन मलीन दुखी नितही, जिनके पदपंकज प्रीति नहीं।
अवलंब भवंत कथा जिन्हके, प्रियसंत अनंत सदा तिन्हके।६।

वे अत्यन्त दीन, मलिन और नित्य ही दुःखी रहते हैं, जिनकी आपके चरण-कमलोंमें प्रीति नहीं है, जिनको आपकी कथाका अवलम्ब है, उनको संत सदा प्यारे लगते हैं ॥६॥

नहिं राग न रोष न मान मदा, तिन्हके सम वैभव वा बिपदा।
यहि ते तव सेवक होत मुदा, मुनि त्यागहिं योग भरोस सदा।७।

जिनके मनमें राग-द्वेष और मान-मद नहीं है और जिनके लिए सम्पत्ति वा विपत्ति समान है, ऐसे मुनीश्वर आपके सेवक हो प्रसन्न रहते हैं और योगका भरोसा छोड़े रहते हैं ॥७॥

करि प्रेम निरन्तर नेम लिये, पद पंकज सेवत शुद्ध हिये।
सम मान निरादर आदरही, सब संत सुखी बिचरन्त मही।८।

जो निरन्तर प्रेमका नियम करके शुद्ध हृदयसे आपके चरणोंका सेवन करते हैं और आदर-अनादरको समान मानते हैं, वे संतजन समस्त पृथ्वीपर सुखसे विचरते हैं ॥ ८ ॥

मुनिमानस पंकज भृंग भजे, रघुबीर महारणधीर अजे।
तवनामजपामिनमामिहरी, भवरोग महामद मान अरी।९।

हे अजय, महारणधीर रघुबीर! आप मुनियोंके मनरूपी कमलके भ्रमर हैं। हे हरि! मैं आपका नाम जपता हूँ, आपको नमस्कार करता हूँ, जो मद और अहंकार रूपी भवरोगके आप शत्रु हैं ॥९॥

गुनशील कृपा परमायतनं, प्रनमामि निरन्तर श्रीरमनम्।
रघुनंद निकंदन द्वन्द घनं, महिपाल विलोकिय दीनजनम्॥१०।११।

हे गुणशील और कृपाके अत्युत्तम स्थान लक्ष्मीरमण! मैं आपको निरन्तर प्रणाम करता हूँ। हे श्रीरामचन्द्रजी! इस कलहराशिको नष्ट कीजिये। हे राजन्! दीनजनोंकी ओर निहारिये।१०।११

दोहा—बार बार बर माँगउँ, हर्षि देउ श्रीरंग।
पद सरोज अनपायनी, भक्ति सदा सत्संग ॥३१॥

हे श्रीरंग! मैं बार-बार वरदान मांगता हूँ कि आप प्रसन्न हो मुझे अपने चरण कमलों की सुन्दर भक्ति और सर्वदा सत्संग दीजिये ॥३१॥

दोहा—बरनि उमापति रामगुन, हर्षि गये कैलास।
तब प्रभु कपिन्ह दिखायउ, सब विधि सुखप्रद बास ॥३२॥

शंकरजी रामजीके गुणगानकर प्रसन्नतासे कैलाशको गये। तब प्रभु रामजी ने बानरों को रहनेके लिए सुखदायक स्थान दिखाया ॥३२॥

सुनु खगपति यह कथा सुहावनि ❀ त्रिबिध ताप भवदोष नसावनि
महाराज कर शुभ अभिषेका ❀ सुनत लहहिं नर बिरति बिबेका

काकभुशुण्डिजी कहते हैं कि हे गरुड़! यह कथा सुहावनी और त्रिविध ताप युक्त आवागमनके दोषको नाश करने वाली है ॥१॥ महाराज श्रीरामचन्द्रजीके शुभ राज्याभिषेक को सुननेसे मनुष्य वैराग्य और ज्ञानको प्राप्त करते हैं ॥२॥

जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं ❀ सुख सम्पति नाना बिधि पावहिं
सुर दुर्लभ सुख करि जग माहीं ❀ अन्तकाल रघुपति पुर जाहीं

जो मनुष्य इसे सकाम सुनते और गान करते हैं, वे अनेक प्रकार की सुख-सम्पदा को पाते हैं ॥३॥ साथ ही संसारमें सब सुख भोगकर मरने पर वैकुण्ठलोकको जाते हैं ॥४॥

सुनहिं बिमुक्त बिरत अरु बिषई ❀ लहहिं भगति गति सम्पति निंतई
खगपति राम कथा मैं बरनी ❀ स्वमति विलास त्रास दुख हरनी

इसे योगी, वैरागी और विषयीजन भी सुनते हैं और इस प्रकार वे नित्य भक्ति, गति तथा सम्पत्ति को पाते हैं ॥५॥ हे गरुड़जी! इस प्रकार मैंने अपनी बुद्धिके विलास से श्री रामचन्द्रजी की यह कथा वर्णन की है जो भय और दुःख को हरण करनेवाली है ॥६॥

बिरति बिबेक भगति दृढ़ करनी ❀ मोहनदी कहँ सुन्दर तरनी
नित नव मंगल कोशलपुरी ❀ हरषित रहहिं लोग सब कुरी

श्रीरामचन्द्रजीकी यह कथा विषयोंसे वैराग्यकारक तथा मोहनाशक है ॥७॥ अयोध्या में नित्य ही नवीन मंगल होते हैं जिसे देखकर सब कुलों के लोग प्रसन्न रहते हैं ॥८॥

नित नइ प्रीति राम पद पंकज ❀ सबके मनहिं नमत शिव मुनि अज
मंगन बहु प्रकार पहिराये ❀ द्विजन्ह दान नाना विधि पाये

जिनको शिव, ब्रह्मा और मुनि जन नमस्कार करते हैं, उन रामचन्द्रजीके चरण-कमलों में सबको नित्य नवीन प्रीति होती है ॥९॥ याचकों को अनेक पहनावे पहनाये गये तथा ब्राह्मणों ने अनेक प्रकार के दान पाये ॥१०॥

दोहा—ब्रह्मानन्द मगन कपि, सबके प्रभु पद प्रीति।
जात न जानउ दिवस निसि, गये मास षट् बीति ॥३३॥

सब बानरोंके हृदयमें प्रभु रामचन्द्रजीके चरणोंकी प्रीति है। वे ब्रह्मानन्दमें मगन हैं। उन्हें रात-दिन बीतते नहीं जान पड़े और (इसी प्रकारसे) छः मास बीत गये ॥३३॥

बिसरे गृह सपनेहुँ सधि नाहीं ❀ जिमि परद्रोह संत मन माहीं
तब रघुपति सब सखा बलाये ❀ आइ सबन्हि सादर शिर नाये

सबको अपने घर भूल गये स्वप्नमें भी उनकी याद नहीं आती, जैसे सन्तोंके मनमें परद्रोह नहीं रहता ।।१।। तब रामचन्द्रजी ने सब मित्रों को बुलाया और सबने आकर आदर से शिर नवाया ।।२।।

परम प्रीति समीप बैठारे ❀ भक्त सुखद मृदु बचन उचारे
तुम्ह अति कीन्ह मोर सेवकाई ❀ मुख पर केहि बिधि करौं बड़ाई

अत्यन्त प्रीतिके साथ समीप बैठाकर भक्तोंको सुख देनेवाले रामचन्द्रजी कोमल वचन बोले ।।३।। आप लोगोंने मेरी बड़ी सेवा की है, मैं मुँहपर किस प्रकार बड़ाई करूँ ? ।।४।।

ताते मोहिं तुम अति प्रिय लागे ❀ मम हित लागि भवन सुख त्यागे
अनुज राज सम्पति बैदेही ❀ देह गेह परिवार सनेही

आप सब मुझे इसीसे प्रिय लगते हैं कि, आपने मेरे हित के लिए अपने घरोंके सुखको त्याग दिये ।।५।। छोटे भाई, राज्य, सम्पत्ति, जानकी, शरीर, घर, कुटुम्बी और जितने स्नेही हैं–।।६।।

सबमोहिं प्रिय नहिं तुमहिं समाना❀ मृषा न कहौं मोर यह बाना
सब कहँ प्रिय सेवक यह नीती ❀ मोरें अधिक दास पर प्रीती

ये सब मुझे आप लोगोंके समान प्रिय नहीं हैं। मैं मिथ्या नहीं कहता हूँ, मेरा यह स्वभाव है ।।७।। और यह नीति है कि सेवक सबको प्रिय होते हैं। परन्तु मेरे हृदयमें दासपर अधिक प्रीति रहती है।

दोहा–अब गृह जाहु सखा सब, भजेहु मोहिं दृढ़ नेम।
सदा सर्वगत सर्वहित, जानि करहु अति प्रेम ।।३४।।

हे मित्रों ! अब आप सब अपने घर को जाओ और मुझे दृढ़ नियम से भजना। सदा सबमें व्यापक सबका हितकारी जानकर मुझपर अत्यन्त प्रेम रखना ।।३४।।

सुनि प्रभु बचन मगन सब भयऊ ❀ को हम कहाँ बिसरि तनु गयऊ
इकटक रहे जोरि कर आगे ❀ कहि न सकहिं कछु अति अनुरागे

रामजी के वचन सुनकर वे सब ऐसे मगन हो गए कि शरीर को भी भूल गये ।।१।। हाथ जोड़कर टकटकी लगाये खड़े रहे और प्रीतिके कारण कुछ नहीं कह सकते थे ।।२।।

परम प्रेम तिन्हकर प्रभु देखा ❀ कहा बिबिध बिधि ज्ञान बिशेषा
प्रभु संमुख कछु कहन न पारहिं ❀ पुनि पुनि चरण सरोज निहारहिं

प्रभु रामजी ने उनका परम प्रेम देखकर नाना प्रकार का विशेष ज्ञान कहा ।।३।। वे स्वामी श्रीरामचन्द्रजीके सामने कुछ कह नहीं सकते, बार-बार चरण-कमलोंको निहारते हैं ।।

तब प्रभु भूषन बसन मँगाये ❀ नाना रंग अनूप सुहाये
सुग्रीवहिं प्रथमहिं पहिराये ❀ भरत बसन निज हाथ बनाये

तब प्रभु रामजी ने अनेक रंगके अनुपम सुन्दर वस्त्र और आभूषण मँगाये ।।५।। भरत जीने स्वयं अपने हाथोंसे ठीक करके पहले सुग्रीवको वस्त्र पहनाये ।।६।।

प्रभु प्रेरित लछिमन पहिराये ❀ लंकापति रघुपति मन भाये
अंगद बैठि रहे नहिं डोले ❀ प्रीति देखि प्रभु ताहि न बोले

प्रभुकी आज्ञा से लक्ष्मणजी ने विभीषण को पहनाये जो श्रीरामचन्द्रजीके मनको अच्छे लगे ।।७।। अंगद बैठे ही रहे, वे हिले नहीं । उनकी प्रीति देख कर रामजी नहीं बोले ।।८।।

दोहा—जामवन्त नीलादि सब, पहिराए रघुनाथ ।
हिय धरि रामस्वरूप सब, चले नाइ पद माथ ।।३५।।

जामवन्त और नील आदि सबको रघुनाथजी अपने आप वस्त्र पहनाये । सब लोग रामजीके रूपको हृदयमें रखकर चरणोंमें मस्तक नवाकर चले ।।३५।।

तब अंगद उठि नाइ सिर, सजल नयन कर जोरि ।
अति बिनीत बोलेउ बचन, मनहुँ प्रेम रस बोरि ।।३६।।

तब उठकर अंगदने शिर नवाया और सजल नेत्रों से अत्यन्त नम्र बचन बोले मानों वे प्रेम रस में सने हुए थे ।।३६।।

सुनु सर्वज्ञ कृपा सुख सिन्धो ❀ दीन दयाकर आरत बन्धो
मरती बार नाथ मोहिं बाली ❀ गयउ तुम्हारे पगतर घाली

हे सर्वज्ञ ! दया और सुखके सागर ! दीनों पर दया करनेवाले ! आर्तजनों के बन्धु !।।१।। सुनिये, मरती बार बालि मुझे आपके चरणों के ही नीचे डाल गया था ।।२।।

असरन सरन बिरद संभारी ❀ मोहिं जनि तजहु भक्त भयहारी
मोरे प्रभु तुम गुरु पितु माता ❀ जाउँ कहाँ तजि पद जल जाता

आप अशरणके शरण देनेवाले और भक्तोंके हितकारी हैं, मुझे मत त्यागिये ।।३।। मेरे स्वामी, गुरु, पिता और माता आप ही हैं, तब इन चरणोंको मैं छोड़कर कहाँ जाऊँ ?।।४।।

तुम्हहिं बिचारि कहहु नरनाहा ❀ प्रभु तजि भवन काज मम काहा
बालक अबुध ज्ञान बलहीना ❀ राखहु सरन जानि जन दीना

हे नरनाथ ! आप ही विचारकर कहिये कि प्रभुको छोड़कर घरमें मेरा कौन सा काम है? मुझे अज्ञान बालक और बलसे हीन तथा दीन जान कर अपनी ही शरण में रखिए ।।६।।

नीच टहल गृह कै सब करिहौं ❀ पद बिलोकि भवसागर तरिहौं
अस कहि चरन परेउ प्रभु पाहीं ❀ अब जनि नाथ कहहु गृह जाहीं

मैं घरकी नीच टहल कर आपके चरणों का दर्शनकर भवसागरसे तर जाऊँगा ।।७।। यह कहकर अंगद रामजी के चरणोंमें गिर पड़े और बोले—हे नाथ ! अब मुझे घर जाने के लिए न कहिए ।।८।।

दोहा—अंगद बचन बिनीत सुनि, रघुपति करुनासींव ।
प्रभु उठाय उर लायऊ, सजल नयन राजीव ।।३७।।

करुणानिधान श्रीरामचन्द्रजीने अंगदके विनीत वचन सुनकर उन्हें उठा कर हृदय से लगा लिया और रामजीके नेत्रोंमें जल भर आया ॥३७॥

दोहा–निज उर माल बसन मनि, बालि तनय पहिराइ ।
बिदा कीन्ह भगवान तब, बहु प्रकार समुझाइ ॥३८॥

अपने हृदयकी मणिमाला और वस्त्र बालि-कुमार अंगदको पहनाकर तथा बहुत तरहसे समझाकर रामजीने उसे बिदा कर दिया ॥३८॥

भरत अनुज सौमित्र समेता ❁ पठवन चले भक्त कृत चेता
अंगद हृदय प्रेम नहिं थोरा ❁ फिर फिर चितवत प्रभुकी ओरा

भरत, शत्रुघ्न, लक्ष्मण सहित रामजी भक्तों के लिए कार्यों का स्मरणकर उन्हें बिदा करने चले । अंगदके हृदयमें थोड़ा प्रेम नहीं है वे फिर-फिर कर रामजीकी ओर देखते हैं ॥

बार बार करि दण्ड प्रणामा ❁ मनअस रहन कहहिं मोहिं रामा
राम बिलोकनि बोलनि चलनी❁सुमिरिसुमिरिसोचतहँसिमिलनी

बार-बार दंडवत् प्रणाम करके अंगद मनमें ऐसा चाहते हैं कि मुझे रामजी रहने को कहें । रामजीकी बोलचाल, देखना और हँसकर मिलना स्मरण करके अंगद सोचते हैं ॥

प्रभु रुख देखि बिनय बहु भाखी❁ चलेउ हृदय पद पंकज राखी
अति आदर सब कपि पहुँचाये❁ भाइन्ह सहित राम फिरि आये

प्रभु रामजीका रुख देखकर अंगद बहुतसी बिनती करके चरण-कमलों को हृदयमें रखकर चले । अत्यन्त आदरके साथ बानरोंको पहुँचाकर प्रभु रामजी भाइयों समेत लौट आये ॥

तब सुग्रीव चरन गहि नाना ❁ भाँति बिनय कीन्हीं हनुमाना
दिन दश करि रघुपति पद सेवा ❁ तब फिर चरन देखिहौं देवा

तब सुग्रीवके पाँव पकड़कर हनुमान्‌जीने अनेक प्रकार विनती कर कहा–॥७॥ हे देव ! दस दिन रघुनाथजीके चरणोंकी सेवा करके फिर आपके चरणोंके दर्शन करूँगा ॥८॥

पुण्यपुञ्ज तम पवन कुमारा ❁ सेवहु जाइ कृपा आगारा
असकहि कपिपति चलेउ तुरन्ता❁ अंगद कहेहु सुनहु हनुमन्ता

सुग्रीवने कहा–हे पवनकुमार ! तुम धर्मके पुंज हो, जाकर कृपाके भंडार रामजी की सेवा करो । ऐसा कहकर सुग्रीव तुरन्त चल दिये । अंगदने कहा–हे हनुमान्‌जी ! सुनियें ॥

दोहा–कहेहु दण्डवत प्रभुसन, तुमहिं कहौं कर जोरि ।
बार-बार रघुनायकहिं, सुरति करायहु मोरि ॥३९॥

प्रभुसे मेरा दंडवत् कहना और मैं आपसे हाथ जोड़कर कहता हूँ कि मेरी याद श्रीरामचन्द्रजीको बार-बार कराते रहना ॥३९॥

अस कहि चलेउ बालिसुत, फिरि आयहु हनुमन्त ।
तासु प्रीति प्रभुसन कही, मगन भये भगवन्त ॥४०॥

इस तरह कहकर बालिपुत्र अंगद चल दिये और हनुमान्‌जी लौट आये। हनुमान्‌ने उनकी प्रीति प्रभु रामचन्द्रजीसे कही, जिसे सुनकर भगवान् प्रसन्न हुए ॥४०॥

दोहा—कुलिसहु चाहि कठोर अति, कोमल कुसुमहु चाहि।
चित खगेस अस रामकर, समुझि परइ कहु काहि ॥४१॥

हे गरुड़ ! सुनो रामचन्द्रजीका चित्त वज्रसे भी अधिक कठोर है और पुष्पसे भी अधिक कोमल है। कहिये रामचन्द्रजीका इस तरहका चित्त किसकी समझमें आ सकता है ॥४१॥

पुनि कृपालु लिय बोलि निषादा ❁ दीन्हेउ भूषण बसन प्रसादा
जाहु भवन मम सुमिरन करहू ❁ मन क्रम बचन धर्म अनुसरहू

फिर प्रभु रामचन्द्रजीने निषादको बुलाया, उसे वस्त्राभूषणको प्रसाद स्वरूपमें दिया ॥१॥ फिर कहा घर जाओ, मेरा स्मरण करो तथा मन कर्म-वचनसे धर्मके अनुसार चलो ॥२॥

तुम मम सखा भरतसम भ्राता ❁ सदा रहेहु पुर आवत जाता
बचन सुनत उपजा सुख भारी ❁ परेउ चरन लोचन भरि बारी

तुम हमारे मित्र और भरतके समान भाई हो, अयोध्यामें सदा आते-जाते रहना। प्रभु के वचन सुनकर निषादको बड़ा सुख मिला, वह नेत्रोंमें जल भरकर चरणोंमें गिर पड़ा ॥४॥

चरन कमल उर धरि गृह आवा ❁ प्रभु प्रभाव परिजनहिं सुनावा
रघुपति चरित देखि पुरबासी ❁ पुनि पुनि कहहिं धन्य सुखरासी

वह भगवान्‌के चरण-कमलोंको हृदयमें रखकर घर आया और प्रभुका प्रभाव कुटुम्बियोंको सुनाया श्रीरामचन्द्रजीके चरित्र को देखकर अयोध्यावासी बारम्बार सुखकी राशिको सराहते हैं ॥६॥

राम राज बैठें त्रयलोका ❁ हर्षित भयउ गयउ सब सोका
बैर न करहिं काहु सन कोई ❁ राम प्रताप विषमता खोई

श्रीरामचन्द्रजीके सिंहासनारूढ़ होनेसे त्रिलोकके लोग प्रसन्न हुये और सब शोक जाता रहा ॥७॥ कोई किसीसे बैर नहीं करता, रामचन्द्रजीके प्रतापसे विषमता नष्ट हो गई ॥८॥

दोहा—बरनाश्रम निज निज धरम, निरत वेदपथ लोग।
चलहिं सदा पावहिं सुखहिं, नहिं भय शोक न रोग ॥४२॥

वर्णाश्रमोंके लोग अपने-अपने धर्ममें तत्पर वेद मार्गसे चलते और सुख पाते हैं। उनको न किसीका भय था, न रोग और शोक ॥४२॥

दैहिक दैविक भौतिक तापा ❁ रामराज्य नहिं काहुहिं ब्यापा
सब नर करहिं परस्पर प्रीती ❁ चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती

श्रीरामचन्द्रजीके राज्यमें किसीको दैहिक, दैविक और भौतिक ताप नहीं लगे ॥१॥ लोग परस्पर प्रेम करते हुये अपने वेदमार्गकी नीतिमें रत रहते थे ॥२॥

चारिहु चरन धरम जगमाहीं ❁ पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीं
रामभगति रत सब नर-नारी ❁ सकल परम गति के अधिकारी

संसारमें धर्मके चारों चरण भरपूर विद्यमान थे और स्वप्नमें भी पाप नहीं था ॥३॥ सब स्त्री-पुरुष श्रीरामचन्द्रकी भक्तिमें तत्पर थे, इसलिए सभी परमगति अर्थात् मोक्षके अधिकारी थे ॥४॥

अल्प मृत्यु नहिं कवनिहुँ पीरा ❁ सब सुन्दर सब निरुज शरीरा
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना ❁ नहिं कोउ अबुध न लच्छनहीना

न किसी की अल्प मृत्यु होती, न किसीको कुछ दुखदर्द होता। सभी सुन्दर और निरोग रहते थे ॥५॥ न कोई दरिद्री था, न दुखी, न कोई गरीब था, न मूर्ख न लक्षणहीन ॥६॥

सब निर्दम्भ धर्मरत पुनी ❁ नर अरु नारि चतुर सबगुनी
सब गुणज्ञ पण्डित सब ज्ञानी ❁ सब कृतज्ञ नहिं कपट सयानी

सब पाखण्ड-रहित, धर्मिष्ठ एवं पुण्यवान् थे, सभी स्त्री-पुरुष चतुर एवं गुणवान् थे ॥ सब गुणज्ञ, पण्डित, सब ज्ञानी और सब कृतज्ञ थे, किसीमें कपट-चातुर्य नहीं था ॥८॥

दोहा—रामराज्य बिहँगेस सुनु, सचराचर जग माहिं।
काल कर्म स्वभाव गुन, कृत दुख काहुहिं नाहिं ॥४३॥

काकभुशुण्डिजी कहते हैं—हे पक्षिराज ! सुनो संसारमें जितने भी चराचर जीव थे, उन्हें रामके राज्यमें काल, कर्म, स्वभावसे उत्पन्न हुआ दुःख किसी को नहीं था ॥ ४३ ॥

भूमि सप्त सागर मेखला ❁ एक भूप रघुपति कोशला
भुवन अनेक रोम प्रति जासू ❁ यह प्रभुता कछु बहुत न तासू

सातों द्वीपकी भूमि समुद्र जिसकी मेखला है, अकेले श्रीरामचन्द्र राजा थे ॥१॥ जिनके एक-एक रोममें असंख्य ब्रह्माड पड़े हैं, उनके लिए यह कुछ अधिक नहीं है ॥२॥

सो महिमा समुझत प्रभु केरी ❁ यह बरनत हीनता घनेरी
यह महिमा खगेस जिन्ह जानी ❁ फिरि यह चरित तिनहुँ रतिमानी

प्रभु रामचन्द्रजीकी उस महिमाको समझते और कहते हुऐ बड़ी हीनता है ॥ ३ ॥ हे खगेश ! इस महिमाको जिन्होने जाना वे ही इस सगुण चरितमें प्रीति मानते हैं ॥ ४ ॥

सोउ जानेकर फल यह लीला ❁ कहहिं महा मुनिवर दमसीला
राम राज्यकर सुख सम्पदा ❁ बरनि न सकहिं फनीस सारदा

उस महान् महिमाको जाननेका फल, यह चरित्र है, ऐसा बड़े-बड़े जितेन्द्रिय मुनिराज कहते हैं ॥ रामराज्यका सुख और सम्पत्ति, शेषनाग तथा सरस्वती भी वर्णन नहीं कर सकतीं ॥

सब उदार सब पर उपकारी ❁ द्विजसेवक सब नर अरु नारी
एक—नारि—ब्रत नर सब झारी ❁ ते मन बच क्रम पति हितकारी

सब स्त्री और पुरुष उदार, परोपकारी और ब्राह्मणोंके सेवक थे ॥७॥ सब पुरुष एक स्त्री व्रत थे, स्त्रियाँ मन, वचन और कर्मसे (पतिव्रता) पतिकी हितकारिणी थीं ॥८॥

दोहा—दण्ड यतिन कर भेद जहँ, नर्तक नृत्य समाज।
जीते मनहिं सुनिय अस, रामचन्द्र के राज ॥४४॥

रामचन्द्रजीके राज्यमें दंड केवल संन्यासियोंके हाथमें था और भेद नाचनेवालोंमें और नृत्य-मंडलीमें था । जीतनेके लिए केवल मन रह गया था, यही सुनाई देता था ॥४४॥

फूलहिं फलहिं सदा तरु कानन ❀ रहहिं एक सँग गज पंचानन
खग मृग सहज बयरु बिसराई ❀ सबनि परस्पर प्रीति बढ़ाई

जंगलोंमें वृक्ष सदा फूलते थे, हाथी और सिंह एक साथ रहते थे, पक्षी और हिरन आदि पशुओंने भी स्वभावजन्य वैरको छोड़कर आपस में प्रेम बढ़ाया था ॥

कूजहिं खग मृग नाना बृन्दा ❀ अभय चरहिं बन करहिं अनन्दा
शीतल सुरभि पवन बह मन्दा ❀ गुञ्जत अलि लेइ चलि मकरन्दा

पक्षी सुन्दर शब्द करते और मृग झुंडके झुंड निर्भय फिरते तथा आनन्द करते थे । वायु शीतल मन्द सुगन्ध चलता था और भौंरे गूँजत हुए फूलोंके रस लेकर चले जाते थे ॥

लता बिटप माँगे फल चुवहीं ❀ मनभावती धेनु पय स्रवहीं
सस सम्पन्न सदा रह धरनी ❀ त्रेता भइ कृतयुग की करनी

वेलि और वृक्ष माँगनेपर फूल देते थे, गायें मनमाना दूध देती थीं ॥ पृथ्वी सर्वदा अन्नसे भरी रहती थी । त्रेतायुगमें सतयुगका व्यवहार था ॥

प्रगटी गिरिन्ह विविध मनि खानी❀ जगदातमा भूप जग जानी
सरिता सकल बहहिं बर बारी ❀ शीतल अमल स्वाद सुखकारी

जगत्‌के आत्मा श्रीरामचन्द्रजीको राजा जानकर पर्वतोंने तरह-तरहकी मणियोंकी खान प्रकट कर दीं ॥ सब नदियोंमें ठंडा निर्मल स्वादिष्ट सुख देनेवाला श्रेष्ठ जल बहता था ॥

सागर निज मरजादा रहहीं ❀ डारहिं रतन तटन्हि नर लहहीं
सरसिज संकुल सकल तड़ागा ❀ अति प्रसन्न दश दिशा विभागा

समुद्र अपनी मर्यादामें रहते थे । अपने किनारोंपर रत्न डाल देते थे जिन्हें लोग पा जाते थे । सब तालाब कमलोंसे भरे हुये थे और दशों दिशायें अत्यन्त प्रसन्न रहती थीं ॥

दोहा—विधु महिपूर मयूखनन्हि, रवि तप जितनहि काज ।
माँगे बारिद देहिं जल, रामचन्द्र के राज ॥४५॥

रामचन्द्रजीके राज्यमें चन्द्रमा किरणों द्वारा अमृत वर्षा करते थे, सूर्य आवश्यकतानुसार तपते थे और मेघ माँगनेसे जल देते थे ॥४५॥

कोटिन्ह बाजिमेध प्रभु कीन्हे ❀ अमित दान बिप्रन कहँ दीन्हे
श्रुतिपथ पालक धर्म धुरन्धर ❀ गुनातीत अरु भोग पुरन्दर

प्रभु रामचन्द्रजीने करोड़ों अश्वमेध यज्ञ किये और अनगिनती दान ब्राह्मणों को दिये । वे वेदमार्गके पालक धर्मधुरन्धर गुणातीत रामजी भोग-विलासमें इन्द्रके समान थे ॥

पति अनुकूल सदा रह सीता ❀ शोभा खानि सुशील पुनीता
जानत कृपासिन्धु प्रभुताई ❀ सेवति चरन कमल मनलाई

सीताजी सदा पतिके अनुकूल रहती थीं, वे शोभाकी खान, सुशील, विनीत, दयासागर रामचन्द्रजीकी महिमाको जानती थीं, और मन लगाकर उनके चरण-कमलोंकी सेवा करती थीं ।।

यद्यपि गृह सेवक सेवकिनी ❀ सब प्रकार सेवा विधि गुनी
निज कर गृह परिचर्या करहीं ❀ रामचन्द्र आयसु अनुसरहीं

यद्यपि घरमें दास-दासियाँ बहुत थीं और सब सेवा-विधि को जानने वाली थीं तो भी सीता जी अपने हाथसे घरके सब सेवा कार्य करतीं और रामचन्द्रजी की आज्ञानुसार चलती थीं ।

जेहिं बिधि कृपासिंधु सुख मानहिं❀सोइ सिय सेवा बिधि उर आनहिं
कौशिल्यादि सास गृह माहीं ❀ सेवहिं सबनि मान मद नाहीं
उमा रमा ब्रह्मादि बंदिता ❀ जगदम्बा संतत अनिन्दिता

जिस प्रकारसे कृपासिन्धु सुख मानते हैं, सीताजी उसीको हृदयमें सेवा-विधि समझती हैं। घरमें कौशल्या आदि सासुओंकी सेवा मान-अभिमान त्यागकर करती हैं। जो सीताजी पार्वती लक्ष्मी और ब्रह्माणी आदि देवियों द्वारा वन्दनीय जगत्की माता और सदा अविन्द्य हैं ।।

दोहा—जासु कृपा कटाक्ष सुर, चाहत चितवनि सोइ ।
राम पदारबिन्द रति, करति स्वभावहि खोइ ।।४६।।

जिनकी कृपादृष्टिकी चितवन देवता चाहते हैं, वही सीताजी अपना स्वभाव (महिमा) भुलाकर रामचन्द्रजीके चरणकमलोंमें प्रीति करती हैं ।।४६।।

सेवहि सानुकूल सब भाई ❀ रामचरण रति प्रीति सुहाई
प्रभु पद कमल बिलोकत रहहीं ❀ कबहुँ कृपालु हमहिं कुछ कहहीं

सब भाई आज्ञाकारी रहकर सेवा करते हैं, उनकी रामचन्द्रजीके चरणोंमें अत्यन्त अधिक प्रीति थी। प्रभुके पद-कमल देखते थे कि कभी तो कृपालु हमें कुछ कहेंगे ।।

राम करहिं भ्रातन पर प्रीती ❀ नाना भाँति सिखावहिं नीती
हर्षित रहहिं नगर के लोगा ❀ करहिं सकल सुरदुर्लभ भोगा

रामचन्द्रजी भाइयोंपर प्रीति रखते हैं और उनको नाना प्रकारकी नीति सिखाते हैं। नगरके लोग प्रसन्न रहते हैं और संपूर्ण देवताओंको भी जो दुर्लभ है ऐसा भोग-विलास करते हैं ।।

अहनिशि बिधिहिं मनावत रहहीं❀ श्रीरघुबीर चरण रति चहहीं
दुइ सुत सुन्दर सीता जाये ❀ लव कुश वेद पुराननि गाये

दिन-रात ब्रह्माको मनाते हैं और श्रीरामचन्द्रजी के चरणोंमें प्रीति चाहते हैं। जानकी जी ने लव-कुश नाम के दो पुत्रों को जन्म दिया जिनकी कीर्ति को वेद और पुराणों ने गाया है।।

दोउ विजयी विनयी गुन मन्दिर ❀ हरि प्रतिबिम्ब मनहुँ अति सुन्दर
दुइ दुइ सुत सब भाइन केरे ❀ भए रूप गुन सील घनेरे

दोनों पुत्र विजयी, विनयशील और गुणोंके घर हुए, वे ऐसे मालूम होते थे मानो भगवान् रामजी के ही बड़े सुन्दर प्रतिबिम्ब हैं। शोभा और गुणशीलकी राशि दो-दो पुत्र सब भाइयों को हुए ।।

दोहा—ज्ञान गिरा गोतीत अज, मन माया गुन पार।
सोइ सच्चिदानन्द घन, करत चरित्र उदार ॥४७॥

जो ज्ञान, वाणी और इन्द्रियोंसे परे हैं, अजन्मा, मन तथा मायाके गुणोंसे परे हैं, वही सत्-चित्-आनन्दकी राशि परमात्मा श्रेष्ठ मानव-लीला करते हैं ॥४७॥

प्रातकाल सरयू करि मज्जन ❀ बैठहिं सभा संग द्विज सज्जन
वेद पुरान वसिष्ठ बखानहिं ❀ सुनहिं राम यद्यपि सब जानहिं

प्रातःकाल सरयूमें स्नानकर ब्राह्मणोंके साथ सभामें बैठते हैं। वसिष्ठजी वेद और पुराणों की कथा वर्णन करते और रामचन्द्रजी यद्यपि सब जानते हैं, तथापि सुनते हैं ॥

अनुजन्ह संयुत भोजन करहीं ❀ देखि सकल जननी सुख भरहीं
भरत शत्रुहन दोनों भाई ❀ सहित पवनसुत उपवन जाई

छोटे भाइयोंके साथ भोजन करते हैं, जिन्हें देखकर सब माताएँ अत्यन्त सुखी होती हैं। भरत और शत्रुघ्न दोनों भाई पवनकुमार हनुमान्जी के साथ बगीचेमें जाते थे ॥

बूझहिं बैठि राम गुन गाहा ❀ कह हनुमान सुमति अवगाहा
सुनत विमल गुन अति सुख पावहिं ❀ बहुरि बहुरि करि विनय सुनावहिं

वहाँ बैठकर रामचन्द्रजीकी गुणगाथा पूछते हैं, तब परम बुद्धिमान् हनुमान्जी कहते हैं। वे निर्मल गुणोंको सुनकर अत्यन्त सुख पाते हैं और विनती कर-करके सुनाते हैं ॥

सबके गृह-गृह होहिं पुराना ❀ रामचरित पावन बिधि नाना
नर अरु नारि राम गुन गावहिं ❀ करहिं दिवस निसि जात न जानहिं

सबके घरमें पुराणोंकी कथाएं होती हैं, पवित्र रामचरित्रका नाना प्रकारसे स्त्री और पुरुष सब गान करते हैं, दिन-रात बीतते मालूम नहीं होते ॥

दोहा—अवधपुरी बासिन्हकर, सुख सम्पदा समाज।
सहस शेष नहिं कहि सकहिं, जहँ नृप राम विराज ॥४८॥

अयोध्यापुरी निवासियोंकी, सम्पत्ति और समाजकी शोभाको जहाँ श्रीरामचन्द्रजी राजा होकर विराजमान हैं, हजारों शेष भी नहीं कह सकते ॥४८॥

नारदादि सनकादि मुनीशा ❀ दर्शन लागि कोशलाधीशा
दिन प्रति सकल अयोध्या आवहिं ❀ देखि नगर बिराग बिसरावहिं

नारद आदि और सनकादि मुनिगण, कोशलेन्द्र प्रभु रामचन्द्रजीके दर्शनके लिए प्रति दिन अयोध्यापुरीमें आते हैं और नगरको देखकर वैराग्यको भूल जाते हैं ॥

जात-रूप-मनि-रचित अँटारी ❀ नाना रंग रुचिर गच ढारी
पुर चहुँ पास कोट अति सुन्दर ❀ रचे कँगूरा रंग रंग वर

सुवर्ण, रत्न और मणिसे जटित अटारियाँ हैं, जिनके नाना रंगकी सुन्दर गचें ढरी हैं। नगरके चारों ओर सुन्दर परकोट, उसपर रंग-रंगके कंगूरे बनाये गये हैं ॥

नवग्रह निकर अनीक बनाई ❀ जनु घेरि अमरावति आई
महि बहुरंग रचित गच काँचा ❀ जो बिलोकि मुनिवर मन राँचा

मानो नवग्रहोंके समूहने सेना बनाकर इन्द्रपुरीको घेर रक्खा हो। फर्शपर बहुत तरहके रंग-विरंगे शीशोंकी पच्ची कारी थी, जिसे देखकर मुनीश्वरोंके मन मोहित हो जाते थे।

धवल धाम ऊपर नभ चुम्बत ❀ कलश मनहु रवि-शशि-द्युति निन्दत
बहु मनि रचित झरोखा भ्राजहिं ❀ गृह गृह प्रति मनिदीप बिराजहिं

सफ़ेद मकानोंकी चोटियाँ आकाशको चूमती थीं और कलश मानों सूर्य-चंद्रकी कान्तिको मात करते थे। अनेक प्रकारकी मणियोंके झरोखोंपर मणियोंके दीपक शोभायमान हो रहे थे॥

छन्द—मनि दीप राजहिं भवन भ्राजहिं देहरी विद्रुम रची।
मनि खंभ भित्ति बिरंचिचित्रित कनक मनिमरकत खँची॥
सुन्दर मनोहर मंदिरायत अजिर रुचिर फटिकन्हि रचे।
प्रति द्वार द्वार कपाट पुरट बनाइ बहु बज्रन्हि खँचे॥१२॥

महलोंमें मणियोंके दीपक विराजते हैं, द्वारकी चौखट मूगोंकी बनी हैं। मणियोंके खम्भे, सुवर्ण और नीलमणिसे जटित दीवारें, ऐसी बनी हैं, मानों ब्रह्माने बनाई है॥ सुन्दर मनोहर महलके विशाल आँगन स्फटिक पत्थरसे बने हुए शोभित हो रहे हैं। प्रत्येक द्वारके कीवाड़ सुवर्णके बने हैं, जिनपर बहुतसे हीरे जड़े हैं॥ १२॥

दोहा--चारु चित्रशाला अमित, गृह गृह रचे बनाइ।
रामधाम जो निरखत, मुनिमन लेत चोराइ॥४९॥

घर-घरमें बहुतसी सुन्दर चित्रशालायें रचकर बनाई गई हैं। उनमें रामचन्द्रजीका घर देखनेमें ऐसा है, जो मुनियोंके भी मनको चुरा लेता है॥४९॥

सुनत बाटिका सबहिं लगाई ❀ बिबिध भाँति करि जतन बनाई
लता ललित बहु जाति सुहाई ❀ फूलहिं सदा बसंत कि नाई

सब लोगोंने प्रयत्नकर अनेक प्रकारकी फुलवाड़ियाँ लगाई हैं जिन्हें अनेक यत्नसे बनाया है॥१॥ जिनमें कई जातिकी सुहावनी बेलें लगाई हैं, जो सदा बसन्त ऋतुके समान फूलती हैं॥२॥

गुंजत मधुकर मुखर मनोहर ❀ मारुत त्रिविध सदा बहु सुन्दर
नाना खग बालकन्हि जिआये ❀ बोलत मधुर उड़ात सुहाये

उनमें भौंरे सुरीली मनोहर ध्वनिसे गूंजा करते हैं और तीनों प्रकारका सुन्दर वायु सदा चलता है।३। बालकोंने अनेक पक्षियों को पाला है, जो मीठी बोली बोलते और उड़ते हुए सुशोभित होते हैं॥४॥

मोर हंस सारस पारावत ❀ भवनन्हि पर शोभा अति पावत
जहँ तहँ निरखहिं निजपरिछाहीं ❀ बहु बिधि कूजहिं नृत्य कराहीं

घरोंके ऊपर मोर हंस सारस और कबूतर बड़ी ही शोभा पा रहे हैं॥५॥ वे जहां-तहां शीशेकी दीवारोंमें, छतोंमें अपनी परछाईं देखकर बहुत तरहकी बोलियां बोलते और नाचते हैं॥६॥

शुक सारिका पढ़ावहिं बालक ❀ कहहु राम रघुपति जनपालक
राम दुआर सकल विधि चारू ❀ बीथी चौहट रुचिर बजारू

बालक तोते और मैनाओंको पढ़ाते और कहते हैं कि राम कहो, रघुपति कहो, जनपालक कहो ।।७।। राजद्वार सब तरह सुंदर बना हुआ है; गलियां, चौराहे और बाजार सभी सुंदर हैं ।।८।।

छन्द—बाजार रुचिर न बनै बरनत बस्तु बिनु गथ पाइये ।
जहँ भूप रमा-निवास तहँ की सम्पदा किमि गाइये ।।
बैठे बजाज सराफ बनिक अनेक मनहुँ कुबेर ते ।
सब सुखी सब सुचरित सुन्दर नारि नर सिसु जरठ जे ।।१३।।

बाजारकी सुंदरता कहते नहीं बनती जिनमें बिना मोलकी चीजें मिलती थीं। जहांके लक्ष्मीनिवास राजा हैं वहांकी सम्पत्तिका कैसे वर्णन किया जाय ? ।। बजाज, सर्राफ आदि वणिक ऐसे बैठे हैं, मानो कुबेर बैठे हों। जितने स्त्री, पुरुष, बालक, वृद्ध हैं, सब सुखी तथा सुंदर, अच्छे चरित्रवाले हैं ।।१३।।

दोहा—उत्तर दिसि सरयू बहै, निर्मल जल गम्भीर ।
बाँधे घाट मनोहर, स्वल्प पंक नहिं तीर ।।५०।।

उत्तर दिशामें गहरी और निर्मल जलवाली सरयू नदी बहती है, उसके सुंदर घाट बने हैं जिनमें किनारेपर जरा भी कीचड़ नहीं है ।।५०।।

दूर फराक रुचिर सो घाटा ❀ जहँ जल पिवहिं बाजि गज ठाटा
पनिघट परम मनोहर नाना ❀ तहाँ न पुरुष करहिं अस्नाना

कुछ दूरपर वह लम्बा-चौड़ा सुन्दर घाट है, जहां हाथी और घोड़ोंके झुण्ड पानी पीते हैं ।।१।। अत्यंत मनोहर बहुतसे पनघट हैं। वहां पुरुष स्नान नहीं करते थे ।।२।।

राजघाट सबहीं विधि सुन्दर ❀ मज्जहिं तहाँ बरन चारिउ नर
तीर तीर देवन्ह कर मन्दिर ❀ चहुँ दिसि तेहि के उपवन सुन्दर

राजघाट सब प्रकारसे सुन्दर है जहां चारों वर्णके पुरुष स्नान करते हैं ।। ३ ।। नदीके किनारे देवताओंके मंदिर थे, जिनके चारों ओर सुंदर उपवन था ।।४।।

कहुँ कहुँ सरिता तीर उदासी ❀ बसहिं ज्ञानरत मुनि संन्यासी
जहँ तहँ तुलसी बृन्द सुहाये ❀ बहु प्रकार सब मुनिन लगाये

कहीं-कहीं नदीके तटपर विरक्त पुरुष ज्ञानमें तत्पर मुनि और संन्यासी रहते थे ।।५।। और जहां-तहां तुलसीके सुंदर पौधोंके झुण्ड सब मुनियोंने अनेक प्रकारसे लगाये थे ।।६।।

पुर शोभा कछु बरनि न जाई ❀ बाहर नगर परम रुचिराई
देखत पुरी अखिल अघ भागा ❀ बन उपवन बाटिका तड़ागा

नगरकी शोभाका कुछ वर्णन नहीं किया जा सकता, नगरके बाहर परम रमणीयता है ।।७।। अयोध्यापुरीके बन-बगीचे, बावली और सरोवरोंको देखते ही सारा पाप भाग जाता है ।।८।।

छन्द—बापी तड़ाग अनूप कूप मनोहरायत सोहई ।
सोपान सुन्दर नीर निर्मल देखि सुर मुनि मोहई ॥
बहुरंग कंज अनेक खग कूजहिं मधुप गुंजारहीं ।
आराम रम्य पिकादि खगरव मनहुँ पथिक हँकारहीं ॥१४॥

सुन्दर बावलियां, सरोवर और मनोहर कुएं शोभित हैं। उनकी सीढ़ियोंकी और निर्मल जलको देखकर देवता और मुनि मोहित हो जाते हैं ॥ बहुत रंगोंके कमलके फूल खिले हैं जिनपर भौंरे गुंजारते हैं । रमणीक बागोंमें पक्षियोंकी बोली ऐसी मधुर मालूम होती है, मानों पथिकोंको विश्राम करनेके लिये बुला रहे हों ॥१४॥

दोहा—रमानाथ जहँ राजा, सो पुर बरनि कि जाइ ।
अनिमादिक सुख सम्पदा, रही अवधपुर छाइ ॥५१॥

जहां लक्ष्मीपति राजा हैं, भला उस नगरका वर्णन कैसे किया जा सकता है ? । अणिमा आदिक सिद्धियां, सुख और सम्पत्ति सब अयोध्यामें छा रही हैं ॥५१॥

जहँ तहँ नर रघुपति गुन गावहिं ❀ बैठि परस्पर इहै सिखावहिं
भजहु प्रनत प्रतिपालक रामहिं ❀ शोभा शील रूप गुन धामहिं

जहाँ-तहां मनुष्य श्रीरामचन्द्रजीके गुणोंका गान करते हैं और बैठकर परस्पर यही सिखाते हैं कि ॥१॥ दीनजनोंके रक्षक शोभा शील और गुणोंके धाम श्रीरामचन्द्रजी का भजन करो ॥२॥

जलज बिलोचन श्यामल गातहिं ❀ पलक नयन इव सेवक त्रातहिं
धृतसर रुचिर चाप तूनीरहिं ❀ संत कंज बन रवि रनधीरहिं

जो कमलके समान नेत्र वाले, भक्तों की रक्षा करने वाले सुंदर धनुषबाण और तरकस को धारण किये युद्धमें विचक्षण और संतरूपी कमल वनको प्रफुल्लित करनेवाले सूर्य हैं ॥४॥

काल कराल ब्याल खगराजहिं ❀ नमित राम अकाम ममताजहिं
लोभ मोह मृग यूथ किरातहिं ❀ मनसिज करि हरि जन सुखदातहिं

जो कालरूपी भयंकर सर्पके लिए गरुड़ हैं और बिना कारण ही भक्तों पर ममता करनेवाले हैं जो लोभ और मोहमृग नाशके हेतु ब्याधके समान हैं और कामदेवरूपी हाथीके लिए सिंह हैं ॥

संशय शोक निविड़तम भानुहिं ❀ दनुज गहन बन दहन कृशानुहिं
जनक सुता समेत रघुबीरहिं ❀ कस न भजहु भंजन भवभीरहिं

जो संशय और शोकरूपी घोर अन्धकारके लिए सूर्य और राक्षसरूपी घने जंगलको जलानेमें अग्नि हैं । आवागमनके भयका नाश करनेवाले सीता सहित रामजीको क्यों नहीं भजते ?

बहु बासना मसक हिम राशिहिं ❀ सदा एक रस अज अविनाशिहिं
मुनि रंजन भंजन महि भारहिं ❀ तुलसिदास के प्रभुहिं उदारहिं

जो अधिक वासनारूपी मच्छरों के लिए शीत-समूह के समान हैं और जो मुनियों को आनंद देनेवाले, पृथ्वीके भारको उतारनेवाले और उदार हैं, उन रामजीका भजन करो ॥

दोहा—एहि विधि नगर नारि नर, करहिं रामगुन गान।
सानुकूल सब पर रहत, सन्तत कृपानिधान ॥५२॥

इस भाँति नगरके सब स्त्री-पुरुष रामजीका गुणगान करते हैं और कृपानिधान श्रीरामचन्द्रजी सबके ऊपर सदा अनुकूल रहते हैं ॥५२॥

जबते राम प्रताप खगेशा ❀ उदित भयउ अति प्रबल दिनेशा
पूरि प्रकाश रहेउ तिहुँ लोका ❀ बहुतन सुख बहुतन्ह मन शोका

कागभुशुण्डिजी कहते हैं, हे गरुड़! जबसे रामजीका प्रतापरूपी प्रचड सूर्य उदय हुआ ॥१॥ तबसे तीनों लोकमें पूर्ण प्रकाश और बहुतोंके मनमें सुख तथा बहुतोंके मनमें शोक छा गया ॥२॥

जिन्हहिं शोक तेहि कहौं बखानी ❀ प्रथम अविद्या निशा सिरानी
अघ उलूक जहँ तहाँ लुकाने ❀ काम क्रोध कैरव सकुचाने

जिन्हें शोक हुआ उन्हें बखानकर कहता हूँ : पहले अज्ञानरूपी रात्रि नष्ट हो गयी ॥३॥ पापरूपी उलूक पक्षी जहाँ-तहाँ छिप गए और कामरूपी कमल सकुचा गये ॥ ४ ॥

विविध कर्म गुन काल सुभाऊ ❀ ये चकोर सुख लहहिं न काऊ
मत्सर मान मोह मद चोरा ❀ इन्हकर हुनर न कवनिहुँ ओरा

नाना प्रकारके कर्म, गुण, काल और स्वभाव ये चकोररूपी हैं, जिनमें कोई भी सुख नहीं पाता ॥ मत्सर, अभिमान मोह और मद-रूपी चोरोंका हुनर किसी ओर नहीं चलता था ॥ ६ ॥

धरम तड़ाग ज्ञान विज्ञाना ❀ ये पंकज विकसे विधि नाना
सुख संतोष विराग विवेका ❀ विगत शोक ये कोक अनेका

राम प्रतापरूपी सूर्योदयसे धर्मरूपी तालाबमें ज्ञान-विज्ञान अनेक प्रकारसे कमल रूपमें खिल उठे ॥ ७ ॥ सुख, संतोष और विचार-रूपी अनेक चकवे शोक रहित हो गये ॥ ८ ॥

दोहा—यह प्रताप रबि जाहि के, जब उर करै प्रकाश।
पाछिल बाढ़हिं प्रथम जे, कहे ते पावहिं नाश ॥५३॥

यह रामका प्रतापरूपी सूर्य जिसके हृदयमें जब प्रकाश कर दे। तब पहले कहे हुए पाप आदि नाश हो जाते हैं और पीछे कहा हुआ ज्ञान आदि गुण बढ़ जाता है ॥ ५३ ॥

भ्रातन्ह सहित राम इक बारा ❀ संग परम प्रिय पवन कुमारा
सुन्दर उपवन देखन गये ❀ सब तरु कुसुमित पल्लव नये

एक बार भाइयों सहित रामजी परम प्रिय हनुमान्‌जीको साथ लेकर ॥ १ ॥ सुन्दर उपवनको देखने गए तो सब वृक्ष फूले हुए तथा उनमें नवीन पत्ते लगे हुए थे ॥ २ ॥

जानि समय सनकादिक आये ❀ तेजपुंज गुनशील सुहाये
ब्रह्मानन्द सदा लवलीना ❀ देखत बालक बहु कालीना

उपर्युक्त समय जानकर तेजपुंज और गुणशीलयुक्त सनकादि ऋषि आये, जो सदा ब्रह्मानन्दमें लीन रहते थे, वे देखनेमें तो बालक थे पर वास्तवमें बहुत कालके पुराने थे ॥ ४ ॥

धरे देह जनु चारिउ वेदा ❀ समदर्शी मुनि विगत विभेदा
आसा बसन ब्यसन यह तिनहीं ❀ रघुपति चरित होइ तहँ सुनहीं

वे ऐसे मालूम होते, मानों चारों वेद शरीर धारण किये हों। वे समदर्शी भेदभाव रहित जिनके कि दिशा ही वस्त्र और व्यसन यह कि वे जहाँ रामजीका चरित्र होता वहाँ जाकर सुनते हैं ॥

तहाँ रहे सनकादि भवानी ❀ जहँ घटसंभव मुनिवर ज्ञानी
राम कथा मुनि बहु विधि बरनी ❀ ज्ञान योग पावक जिमि अरनी

हे पार्वती ! सनकादि ऋषि वहाँ थे, जहाँ ज्ञानी मुनिश्रेष्ठ अगस्त्यजी रहते थे ॥ ७ ॥ उन्होंने बहुतसी रामजीकी कथा वर्णन की, जो ज्ञान-योगकी अग्निके लिये 'अरणी' के समान थे ॥ ८ ॥

दोहा—देखि राम मुनि आवत, हर्षि दण्डवत कीन्ह ।
स्वागत पूछि पीत पट, प्रभु बैठन कहँ दीन्ह ॥५४॥

मुनिको आते देख प्रसन्न होकर रामचन्द्रजीने दण्डवत् की । और स्वागतमें कुशल पूछकर प्रभु रामजीने उन्हें बैठनेके लिये पीताम्बर दिया ॥ ५४ ॥

कीन्ह दण्डवत तीनिउँ भाई ❀ सहित पवनसुत सुख अधिकाई
मुनिरघुपतिछबिअतुलबिलोकी ❀ भये मगन मन सकत न रोकी

पवनकुमार सहित तीनों भाइयोंने बड़े आनन्दके साथ मुनिको दण्डवत् किया ॥ १ ॥ मुनि श्रीरामचन्द्रजीको अतुल शोभाको देखकर मनको न रोक सके और बहुत प्रसन्न हुये ॥ २ ॥

श्यामलगात सरोरुह लोचन ❀ सुन्दरता मन्दिर भव मोचन
इक टक रहे निमेष न लावहिं ❀ प्रभु कर जोरे सीस नवावहिं

श्यामल शरीर, कमलसे नेत्र, सुन्दरताके स्थान और बंधनसे छुड़ानेवाले, रामचन्द्रजीको एकटक निहारते हैं और प्रभु को हाथ जोड़ मस्तक नवा रहे हैं ॥ ४ ॥

तिन्हकी दशा देखि रघुबीरा ❀ स्रवत नयन जल पुलक शरीरा
कर गहि प्रभु मुनिवर बैठारे ❀ परम मनोहर बचन उचारे

श्रीरामचन्द्रजी उनकी दशा देखकर नेत्रोंसे जल बहाने लगे और शरीर पुलकित हो गया ॥ प्रभु रामचन्द्रजीने मुनीश्वरको हाथ पकड़कर बैठाया और अत्यंत मनोहर वचन बोले ॥ ६ ॥

आजु धन्य मैं सुनहु मुनीसा ❀ तुम्हरे दरस जाहिं अघ खीसा
बड़े भाग्य पाइय सतसंगा ❀ बिनहिं प्रयास होइ भवभंगा

हे मुनीश्वर ! सुनिये, आज मैं धन्य हुआ, आपके दर्शनसे पाप नष्ट हो जाते हैं ॥ ७ ॥ सत्संग बड़े भाग्यसे मिलता है, जिससे बिना प्रयास ही भवबंधन छूट जाता है ॥ ८ ॥

दोहा—संत संग अपवर्ग कर, कामी भव कर पन्थ ।
कहहिं संत कवि कोविद, श्रुति पुरान सद्ग्रन्थ ॥५५॥

हे मुनियों ! सन्त, कवि, पण्डित, वेद, पुराण और सद्ग्रन्थ कहते हैं कि संतोंका संग तो स्वर्गका मार्ग है और कामी पुरुष संसारके मार्ग हैं ।। ५५ ।।

सुनि प्रभु बचन हर्षि मुनिचारी ❁ पुलक गात अस्तुति अनुसारी
जय भगवन्त अनंत अनामय ❁ अनघ अनेक एक करुनामय

प्रभु रामचन्द्रजीके वचन सुनकर चारों मुनीश्वर प्रसन्न होकर पुलकित शरीरसे स्तुति करने लगे । हे भगवन् ! आपकी जय हो, आप अनंत अनामय, अद्वितीय और दयाके रूप हैं ।।

जय निर्गुण जय जय गुन सागर ❁ सुख मन्दिर तिहुँ लोक उजागर
जय इंदिरारमन जय भूधर ❁ अनुपम अज अनादि भीमाकर

हे निर्गुणरूप ! आपकी जय हो, हे गुणसागर ! आपकी जय हो, आप सुखधाम और तीनों लोकमें उजागर हैं, हे रमा-रमण ! पृथ्वीके संरक्षक, उपमा रहित ! आपकी जय हो ।

ज्ञान-निधान अमान मानप्रद ❁ पावन सुजस पुरान वेद वद
तज्ञ कृतज्ञ अज्ञता भंजन ❁ नाम अनेक अनाम निरंजन

ज्ञान-निधान, अभिमान रहित, दूसरों को मान देनेवाले ऐसे अधिक सुयशको पुराण व वेद कहते हैं आप तत्वज्ञ, कृतज्ञ, अज्ञानताके नाशक हैं, आपके अनेक नाम मायासे निरलिप्त हैं ।।

सर्व सर्वगत सर्व उरालय ❁ बसहु सदा हम कहँ परिपालय
द्वन्द्व बिपति भवफंद विभंजय ❁ हृद बसु राम काम मद गंजय

सर्वस्व आपही हैं, सबके हृदयमें बसनेवाले सदा हमारी रक्षा कीजिये । हे रामजी ! आप झगड़े विपत्ति और भवबंधनको नष्ट करनेवाले हैं अतः आप हमारे हृदयमें निवास कीजिये ।।

दोहा—परमानन्द कृपायतन, मन परिपूरन काम ।
प्रेमभक्ति अनपायिनी, देहु हमहिं श्रीराम ।।५६।।

हे कृपानिधान ! परमानन्द-स्वरूप श्रीरामचन्द्रजी ! हमारा मन सब कामनाओं से परिपूर्ण है, हमको अटल प्रेम और भक्ति दीजिये ।। ५६ ।।

देहु भगति रघुपति अति पावनि ❁ त्रिविधताप भवताप नसावनि
प्रनत काम सुरधेनु कलपतरु ❁ होइ प्रसन्न दीजै प्रभु यह बरु

हे रघुपते ! आप हमें अत्यंत पावनी तीनों तापों और संसारके अभिमानको छुड़ानेवाली भक्ति दीजिये । हे प्रणतजनोंके कामधेनु ! कल्पवृक्ष ! आप प्रसन्न होकर यही वर दीजिये ।।२।।

भव बारिधि कुम्भज रघुनायक ❁ सेवत सुलभ सकल सुखदायक
मन संभव दारुन दुख दारय ❁ दीनबन्धु समता बिस्तारय

हे-संसारबंधनरूपी समुद्रके सुखानेवाले रघुकुलके नायक ! सबको सुख देनेवाले ! आप हमारे मानसिक घोर दुःखों को नष्ट कर समताको फैलाइये ।।४।।

आस त्रास इरिषादि निवारक ❁ विनय विवेक विरति बिस्तारक
भूप मौलि मनि मंडन धरनी ❁ देहु भगति संसृति सरि तरनी

आशा, ईर्ष्या, भय आदिके नाश करनेवाले, विनय, विवेक और वैराग्यके विस्तार करने वाले ! राजाओंके मुकुट मणि, पृथ्वीके भूषण ! मुझे अपनी भक्ति दीजिये ॥

मुनि-मन-मानस हंस निरन्तर ❀ चरन कमल बन्दित अज शंकर
रघु-कुल-केतु सेतु श्रुति रक्षक ❀ काल-कर्म सुभाव गुन भक्षक
तारन तरन हरन सब दूषन ❀ तुलसिदास प्रभु त्रिभुवन भूषन

हे मुनिजनोंके मनरूपी मानसरोवरके हंस! आपके चरणकमल सदा ब्रह्मा और शिवजीसे नमस्कृत हैं ॥ आप रघुवंशकी ध्वजा, वेद मर्यादाके रक्षक, काल, कर्म स्वभाव और तीनों गुणोंके भक्षक हैं ॥ जो तारन-तरन अर्थात् उद्धार करनेवाले हैं. उनके भी आप उद्धारक हैं. आप सब दोषोंको हरने वाले हैं। तुलसीदासजी कहते हैं कि आप मेरे प्रभु और त्रिभुवनके भूषण हैं ॥

दोहा—बार बार अस्तुति करि, प्रेम सहित शिर नाइ।
ब्रह्मभवन सनकादि गे, अति अभीष्ट वर पाइ ॥५७॥

बार-बार प्रेम सहित स्तुति करके और मस्तक नवाकर सनकादि मुनि अभीष्ट वर पाकर ब्रह्मलोकको गये ॥५७॥

सनकादिक बिधि लोक सिधाये ❀ भ्रातन्ह रामचरन शिर नाये
पूछत प्रभुहिं सकल सकुचाहीं ❀ चितवहिं सब मारुत सुत पाहीं

सनकादि ऋषीश्वर ब्रह्मलोकको चले गये, भाइयोंने रामजीके चरणोंमें मस्तक नवाया ॥ प्रभुसे पूछते हुए सभी बन्धु सकुचाते हैं, सब पवनकुमार हनुमान्‌की ओर देखते हैं ॥ २ ॥

सुना चहहिं प्रभु मुख कै बानी ❀ जो सुनि होय सकल भ्रमहानी
अन्तरजामी प्रभु सब जाना ❀ बूझत काह कहहु हनुमाना

प्रभुके मुखसे बात सुनना चाहते हैं जिसे सुनकर सब भ्रमोंका नाश हो जाये ॥ अंतर्यामीस्वामी रामचंद्रजी सब जान गये, उन्होंने कहा, हे हनुमान् ! कहो क्या पूछना चाहते हो ? ॥ ४ ॥

जोरि पानि तब कह हनुमन्ता ❀ सुनिये दीनबंधु भगवन्ता
नाथ भरत कछु पूछन चहहीं ❀ प्रश्न करत मन सकुचत अहहीं

तब हाथ जोड़कर हनुमान्‌जीने कहा—हे दीनदयाल भगवान् ! सुनिये ॥ ५ ॥ हे नाथ ! भरतजी कुछ पूछना चाहते हैं परन्तु प्रश्न करते हुए मनमें सकुचाते हैं ॥ ६ ॥

तुम जानहु कपि मोर सुभाऊ ❀ भरतहिं मोहिं न कछुक दुराऊ
सुनि प्रभु बचन भरत गहि चरना ❀ सुनहु नाथ प्रनतारित हरना

हे हनुमान् ! तुम मेरे स्वभावको जानते ही हो कि भरतसे मुझे कुछ छिपाव नहीं है ॥ ७ ॥ प्रभुके वचन सुनकर भरतजी उनके चरण पकड़कर बोले—हे दीनोंके दुःख हरनेवाले ! सुनिये ॥ ८ ॥

दोहा—नाथ मोहि सन्देह कछु, सपनेहुँ शोक न मोह।
केवल कृपा तुम्हारि ही, चिदानन्द सन्दोह ॥५८॥

हे नाथ ! मुझे स्वप्न में भी कुछ सन्देह, शोक और मोह नहीं है, हे सच्चिदानन्द ! यह केवल आपकी ही कृपा है ।।५८।।

करौं कृपानिधि एक ढिठाई ❀ मैं सेवक तुम जन सुखदाई
संतन की महिमा रघुराई ❀ बहुविधि वेद पुरानन गाई

हे नाथ ! एक ढिठाई करता हूँ, मैं सेवक हूँ और आप अपने भक्तोंको सुख देनेवाले स्वामी हैं।। हे श्रीरामचन्द्रजी ! आप मुझे सन्तों की महिमा बतलाइए कि जिसे-वेद पुराणनें गाया है ।।

श्रीमुख तुम पुनि कीन्हि बड़ाई ❀ तिनपर प्रभुहिं प्रीति अधिकाई
सुना चहौं प्रभु तिनकर लक्षण ❀ कृपासिन्धु गुन ज्ञान विचक्षण

फिर श्रीमुखसे आपने भी बड़ाई की और उनपर आप ईश्वरकी बड़ी प्रीति है ।।३।। हे कृपासागर गुण और ज्ञान में प्रवीण प्रभो ! मैं उनका लक्षण सुनना चाहता हूँ ।।४।।

संत असंत भेद बिलगाई ❀ प्रनतपाल मोहिं कहिय बुझाई
संतन के लक्षण सुनु भ्राता ❀ अगनित श्रुति पुरान विख्याता

हे प्रणतपाल ! संत और असंतोंके भेद अलगकर मुझे समझाकर कहिये । रामचन्द्रजीने कहा—हे भाई ! वेद और पुराणोंमें जो सन्तों के अगणित लक्षण विख्यात हैं, वे सुनो ।।६।।

संत असंतन की अस करनी ❀ जिमि कुठार चन्दन आचरनी
काटे परसु मलय सुनु भाई ❀ निज गुन देह सुगन्ध बसाई

सन्त-असन्तों की ऐसी करनी है जैसे कुल्हाणी और चन्दन का आचरण । हे भाई ! सुनो; कुल्हाड़ी चन्दनको काटती है और चन्दन अपने सुगन्ध गुणसे उसे सुगन्धित कर देता है ।।

दोहा—ताते सुर सीसन्ह चढ़त, जगबल्लभ श्रीखंड ।
अनल दाहि पीटत धनहिं, परसु बदन यह दण्ड ।।५९।।

इसीसे चन्दन देवताओंके सिरपर चढ़ता है और संसारको प्रिय लगता है और कुल्हाड़ी के मुखको अग्निमें तपाकर घनसे पीटते हैं, उसको यह दण्ड मिलता है ।।५९।।

विषय अलंपट शील गुनाकर ❀ परदुख दुख सुख सुख देखे पर
सम अभूत रिपु विमद विरागी ❀ लोभामर्ष हर्ष भय त्यागी

सन्तजन विषयी और व्यभिचारी नहीं होते, वे शील एवं गुणों की खान, पर दुःख कातर, दूसरे के सुखको देखकर प्रसन्न होते हैं, वे समदर्शी,शत्रु-रहित,अभिमान वैराग्य और लोभ-भयके त्यागी।।

कोमल चित दीनन पर दाया ❀ मन बच क्रम मम भक्ति अमाया
सबहिं मानप्रद आपु अमानी ❀ भरत प्रानसम मम ते प्रानी

वे कोमल चित्त, दीनों पर दया करनेवाले माया रहित, मन-कर्म-वचनसे मेरे भक्त होते हैं। जो सबको मान देने वाले और आप मानरहित होते हैं. हे भरत ! वे मुझे प्राण के समान हैं।

विगत काम मम नाम परायन ❀ शांत विरक्त नीति मदितायन
सीतलता सरलता मयत्री ❀ द्विजपद प्रेम धर्म जनयत्री

वे कामना रहित मेरे नाम को रटनेवाले शान्त विरक्त नीति और आनन्दके स्थान होते हैं। शीतल सुन्दर मैत्री वाले, ब्राह्मणों के चरणों में प्रेम करने वाले और धर्मके ज्ञाता होते हैं ॥६॥

यह सब लक्षण बसहिं जासु उर ❀ जानहु तात संत संतत फुर
सम दम नियमनीति नहिं डोलहिं ❀ पुरुष बचन कबहूँ नहिं बोलहिं

हे तात ! ये सब लक्षण जिनके हृदयमें बसते हैं, उनको सदा सच्चा संत समझना ॥ वे सम, इन्द्रिय-दमन, नियम और नीति से नहीं हटते और कभी कठोर वचन नहीं बोलते ॥८॥

दोहा—निन्दा अस्तुति उभय सम, ममता मम पद कंज ।
ते सज्जन मम प्रान प्रिय, गुन मन्दिर सुख पुञ्ज ॥६०॥

जो निन्दा-स्तुति दोनों को समान मानते हैं और मेरे कमल समान चरणों में प्रीति करते हैं, वे सज्जन, गुणों के स्थान और सुख के समूह मुझे प्राणों से भी प्यारे हैं ॥६०॥

सुनहु असंतन केर सुभाऊ ❀ भूलेहु संगति करिय न काऊ
तिनकर संग सदा दुखदाई ❀ जिमि कपिलहिं घालै हरहाई

अब असन्तों का स्वभाव सुनो। उनकी संगत कभी भूल कर भी नहीं करनी चाहिये ॥ क्योंकि उनका संग सदा दुःखदायी होता है, जैसे दुष्ट गौ कपिला गौका नाश करती है ॥

खलन हृदय अति ताप बिसेषी ❀ जरहिं सदा पर सम्पति देखी
जहँ कहुँ निन्दा सुनहिं पराई ❀ हर्षहिं मनहुँ परी निधि पाई

दुष्टों के हृदय में भीषण ज्वाला रहती है, वे पराई सम्पत्ति देखकर सदा जलते हैं, और जहाँ कहीं पर निन्दा सुनते हैं—वे ऐसे प्रसन्न होते हैं, मानो पड़ा हुआ खजाना मिल गया ॥४॥

काम क्रोध मद लोभ परायन ❀ निर्दय कपटी कुटिल मलायन
बैर अकारन सब काहू सों ❀ जो करु हित अनहित ताहू सों

वे काम, क्रोध, मद और लोभ में परायण, निर्दयी, कपटी, कुटिल और पाप के घर होते हैं ॥ वे सबसे अकारण बैर करते हैं, जो उनका हित करते हैं वे उन्हीं का अहित करते हैं ॥६॥

झूठै लेना झूठै देना ❀ झूठै भोजन झूठ चबेना
बोलहिं मधुर बचन जिमि मोरा ❀ खाहिं महा अहि हृदय कठोरा

उनका झूठ ही लेना और झूठ ही देना, झूठ ही भोजन और झूठ ही चबेना है। मोर के समान मीठे वचन बोलते हैं जो हृदय में ऐसे कठोर होते हैं कि बड़े साँपों को निगल जाते हैं ॥८॥

दोहा—पर द्रोही परदार रत, परधन पर अपवाद ।
ते नर पामर पापमय, देह धरे मनुजाद ॥६१॥

वे परद्रोही, परायी स्त्री में अनुरक्त, पर-धनहारी और परनिन्दक होते हैं। वे मनुष्य पामर, पापमय, मनुष्य-देहधारी राक्षस हैं ॥६१॥

लोभै ओढ़न लोभै डासन ❀ शिश्नोदर पर यमपुर त्रासन
काहूकी जो सुनहिं बड़ाई ❀ स्वाँस लेंहि जनु जूड़ी आई

जिनको लोभ ही ओढ़ना है, लोभ ही बिछौना है और जो इन्द्रिय और पेट की तृप्तिमें तत्पर रहते हैं, ऐसे दुष्ट कि जिनसे यमराजकी पुरीमें पड़े हुए नरकवासी भी डर जायें ॥१॥ जो वे किसी की बड़ाई सुन लें तो ऐसी साँसें लेंगे मानों शीत-ज्वर चढ़ा हो ॥२॥

जब काहूकी देखैं बिपती ❀ सुखी होहिं मानों जग नपती
स्वारथरत परिवार बिरोधी ❀ लंपट काम लोभ अति क्रोधी

जब वे किसी पर विपत्ति देखते हैं तो ऐसे सुखी होते हैं कि मानों वे ही जगत्‌के राजा हो गये हों ॥ स्वार्थ में तत्पर, कुटुम्ब के विरोधी, ऐसे लम्पटों में काम, लोभ तथा क्रोध अत्यन्त होता है ॥४॥

मातु पिता गुरु विप्र न मानहिं ❀ आपु गये अरु घालहिं आनहिं
करहिं मोहबस द्रोह परावा ❀ संतसंग हरि कथा न भावा

वे माता, पिता, गुरु और ब्राह्मणोंको नहीं मानते, आप तो गए हैं ही, पर औरों को नष्ट कर देते हैं ॥ वे मोहके वश होकर दूसरेसे द्वेष करते और उन्हें रामकथा प्रिय नहीं लगती ॥६॥

अवगुन सिन्धु मंदमति कामी ❀ वेद विदूषक परधन स्वामी
बिप्र द्रोह सुरद्रोह विशेषा ❀ दम्भ कपट जिय धरे सुवेषा

वे अवगुणों के समुद्र, मन-बुद्धि से कामी, वेदोंके द्वेषी और पराये धनके मालिक होते हैं ॥७॥ विशेषकर ब्राह्मणोंसे और देवताओंसे द्वेष करते, जीमें दम्भ और कपट भरे, ऊपर से अच्छा वेष धारण किए रहते हैं ॥८॥

दोहा—ऐसे अधम मनुज खल, कृतयुग त्रेता नाहिं ।
द्वापर कछुक बृन्द बहु, होइहैं कलियुग माहिं ॥६२॥

ऐसे अधम खल मनुष्य सत्ययुग और त्रेतायुगमें नहीं होते और द्वापरमें कुछ समूहों में थोड़े होते हैं, परन्तु कलियुग में बहुत अधिक होंगे ॥६२॥

परहित सरिस धर्म नहिं भाई ❀ परपीड़ा सम नहिं अधमाई
निर्णय सकल पुरान बेदकर ❀ कहहुँ तात जानहिं कोविद नर

हे भाई ! परहितके समान कोई धर्म नहीं और दूसरों को पीड़ा देनेके समान अधमता नहीं ॥१॥ सब वेदों और पुराणों से निर्णय कर पण्डित लोग इसे जानते हैं ॥२॥

नर शरीर धरि जे पर पीरा ❀ करहिं ते सहहिं महा भवभीरा
करहिं मोहवश नर अघ नाना ❀ स्वारथ रत परलोक नसाना

मनुष्य शरीर धारण करके जो दूसरेको दुःख देते हैं, वे बहुत बड़ा सांसारिक भय सहते हैं ॥३॥ अज्ञानवश मनुष्य अनेकों पाप करते तथा स्वारथ में परलोक नशाते हैं ॥४॥

कालरूप तिन कहँ मैं भ्राता ❀ शुभ अरु अशुभ कर्म फलदाता
अस बिचारि जो परम सयाने ❀ भजहिं मोहिं संसृति दुख जाने

हे भाई ! मैं उनके लिए काल रूप होकर शुभाशुभ कर्मों का फल देता हूँ ॥५॥ ऐसा विचार कर जो चतुर हैं वे संसार के कष्टों को समझकर मुझे ही भजते हैं ॥६॥

वे कामना रहित मेरे नाम को रटनेवाले शान्त विरक्त नीति और आनन्दके स्थान होते हैं। शीतल सुन्दर मैत्री वाले, ब्राह्मणों के चरणों में प्रेम करने वाले और धर्मके ज्ञाता होते हैं ॥६॥

यह सब लक्षण बसहिं जासु उर ❀ जानहु तात संत संतत फुर
सम दम नियमनीति नहिं डोलहिं ❀ पुरुष बचन कबहूँ नहिं बोलहिं

हे तात! ये सब लक्षण जिनके हृदयमें बसते हैं, उनको सदा सच्चा संत समझना ॥ वे सम, इन्द्रिय-दमन, नियम और नीति से नहीं हटते और कभी कठोर वचन नहीं बोलते ॥८॥

दोहा—निन्दा अस्तुति उभय सम, ममता मम पद कंज।
ते सज्जन मम प्रान प्रिय, गुन मन्दिर सुख पुञ्ज ॥६०॥

जो निन्दा-स्तुति दोनों को समान मानते हैं और मेरे कमल समान चरणों में प्रीति करते हैं, वे सज्जन, गुणों के स्थान और सुख के समूह मुझे प्राणों से भी प्यारे हैं ॥६०॥

सुनहु असंतन केर सुभाऊ ❀ भूलेहु संगति करिय न काऊ
तिनकर संग सदा दुखदाई ❀ जिमि कपिलहिं घालै हरहाई

अब असन्तों का स्वभाव सुनो। उनकी संगत कभी भूल कर भी नहीं करनी चाहिये ॥ क्योंकि उनका संग सदा दुःखदायी होता है, जैसे दुष्ट गौ कपिला गौका नाश करती है ॥

खलन हृदय अति ताप बिसेषी ❀ जरहिं सदा पर सम्पति देखी
जहँ कहुँ निन्दा सुनहिं पराई ❀ हर्षहिं मनहुँ परी निधि पाई

दुष्टों के हृदय में भीषण ज्वाला रहती है, वे पराई सम्पत्ति देखकर सदा जलते हैं, और जहाँ कहीं पर निन्दा सुनते हैं—वे ऐसे प्रसन्न होते हैं, मानो पड़ा हुआ खजाना मिल गया ॥४॥

काम क्रोध मद लोभ परायन ❀ निर्दय कपटी कुटिल मलायन
बैर अकारन सब काहू सों ❀ जो करु हित अनहित ताहू सों

वे काम, क्रोध, मद और लोभ में परायण, निर्दयी, कपटी, कुटिल और पाप के घर होते हैं ॥ वे सबसे अकारण बैर करते हैं, जो उनका हित करते हैं वे उन्हीं का अहित करते हैं ॥६॥

झूठै लेना झूठै देना ❀ झूठै भोजन झूठ चबेना
बोलहिं मधुर बचन जिमि मोरा ❀ खाहिं महा अहि हृदय कठोरा

उनका झूठ ही लेना और झूठ ही देना, झूठ ही भोजन और झूठ ही चबेना है। मोर के समान मीठे वचन बोलते हैं जो हृदय में ऐसे कठोर होते हैं कि बड़े साँपों को निगल जाते हैं ॥८॥

दोहा—पर द्रोही परदार रत, परधन पर अपवाद।
ते नर पामर पापमय, देह धरे मनुजाद ॥६१॥

वे परद्रोही, परायी स्त्री में अनुरक्त, पर-धनहारी और परनिन्दक होते हैं। वे मनुष्य पामर, पापमय, मनुष्य-देहधारी राक्षस हैं ॥६१॥

लोभै ओढ़न लोभै डासन ❀ शिश्नोदर पर यमपुर त्रासन
काहूकी जो सुनहिं बड़ाई ❀ स्वाँस लेहिं जनु जूड़ी आई

जिनको लोभ ही ओढ़ना है, लोभ ही बिछौना है और जो इन्द्रिय और पेट की तृप्तिमें तत्पर रहते हैं, ऐसे दुष्ट कि जिनसे यमराजकी पुरीमें पड़े हुए नरकवासी भी डर जायँ ॥१॥ जो वे किसी की बड़ाई सुन लें तो ऐसी साँसें लेंगे मानों शीत-ज्वर चढ़ा हो ॥२॥

जब काहूकी देखैं बिपती ❀ सुखी होहिं मानों जग नपती
स्वारथरत परिवार बिरोधी ❀ लंपट काम लोभ अति क्रोधी

जब वे किसी पर विपत्ति देखते हैं तो ऐसे सुखी होते हैं कि मानों वे ही जगत्के राजा हो गये हों॥ स्वार्थ में तत्पर, कुटुम्ब के विरोधी, ऐसे लम्पटों में काम, लोभ तथा क्रोध अत्यन्त होता है ॥४॥

मातु पिता गुरु विप्र न मानहिं ❀ आपु गये अरु घालहिं आनहिं
करहिं मोहबस द्रोह परावा ❀ संतसंग हरि कथा न भावा

वे माता, पिता, गुरु और ब्राह्मणोंको नहीं मानते, आप तो गए हैं ही, पर औरों को नष्ट कर देते हैं ॥ वे मोहके वश होकर दूसरेसे द्वेष करते और उन्हें रामकथा प्रिय नहीं लगती ॥६॥

अवगुन सिन्धु मंदमति कामी ❀ वेद विदूषक परधन स्वामी
बिप्र द्रोह सुरद्रोह विशेषा ❀ दम्भ कपट जिय धरे सुवेषा

वे अवगुणों के समुद्र, मन-बुद्धि से कामी, वेदोंके द्वेषी और पराये धनके मालिक होते हैं ॥७॥ विशेषकर ब्राह्मणोंसे और देवताओंसे द्वेष करते, जीमें दम्भ और कपट भरे, ऊपर से अच्छा वेष धारण किए रहते हैं ॥८॥

दोहा—ऐसे अधम मनुज खल, कृतयुग त्रेता नाहिं।
द्वापर कछुक बृन्द बहु, होइहैं कलियुग माहिं ॥६२॥

ऐसे अधम खल मनुष्य सत्ययुग और त्रेतायुगमें नहीं होते और द्वापरमें कुछ समूहों में थोड़े होते हैं, परन्तु कलियुग में बहुत अधिक होंगे ॥६२॥

परहित सरिस धर्म नहिं भाई ❀ परपीड़ा सम नहिं अधमाई
निर्णय सकल पुरान बेदकर ❀ कहहुँ तात जानहिं कोविद नर

हे भाई ! परहितके समान कोई धर्म नहीं और दूसरों को पीड़ा देनेके समान अधर्म नहीं ॥१॥ सब वेदों और पुराणों से निर्णय कर पण्डित लोग इसे जानते हैं ॥२॥

नर शरीर धरि जे पर पीरा ❀ करहिं ते सहहिं महा भवभीरा
करहिं मोहवश नर अघ नाना ❀ स्वारथ रत परलोक नसाना

मनुष्य शरीर धारण करके जो दूसरेको दुःख देते हैं, वे बहुत बड़ा सांसारिक भय सहते हैं ॥३॥ अज्ञानवश मनुष्य अनेकों पाप करते तथा स्वारथ में परलोक नशाते हैं ॥४॥

कालरूप तिन कहँ मैं भ्राता ❀ शुभ अरु अशुभ कर्म फलदाता
अस बिचारि जो परम सयाने ❀ भजहिं मोहि संसृति दुख जाने

हे भाई ! मैं उनके लिए काल रूप होकर शुभाशुभ कर्मों का फल देता हूँ ॥५॥ ऐसा विचार कर जो चतुर हैं वे संसार के कष्टों को समझकर मुझे ही भजते हैं ॥६॥

त्यागहिं कर्म शुभाशुभ दायक ❀ भजहिं मोहिं सुर नर मुनिनायक
संत असंतन के गुन भाखे ❀ ते न परहिं भव जिन्ह लखि राखे

इससे शुभाशुभफल देनेवाले कर्मोंको त्यागकर देवता, मनुष्य और श्रेष्ठ मुनि मुझे ही भजते हैं।। मैंने सन्तों और असन्तों के गुणों का वर्णन किया, इसे जानकर प्राणी संसारमें नहीं गिरते ।।८।।

दोहा—सुनहु तात मायाकृत, गुन अरु दोष अनेक।
गुन इह उभय न देखियहिं, देखिय सो अविवेक ।।६३।।

हे भाई! सुनिए, माया के किए गुण और दोष अपार हैं। गुण यह है कि इन दोनों को न देखा जाय यदि देखा जाय तो यह अविवेक अर्थात् अज्ञानता है।।६३।।

श्री मुख बचन सुनत सब भाई ❀ हर्ष प्रेम नहिं हृदय समाई
करहिं बिनय अति बारहिं बारा ❀ हनूमान हिय हर्ष अपारा

श्रीरामचन्द्रजीके मुखारविन्दसे वचन सुनते ही सब भाई प्रसन्न हुए, उनके हृदय में प्रेम समाता नहीं, जिससे वे बारम्बार विनय करते हैं। हनुमान्‌जीके हृदयमें अपार हर्ष हुआ।।२।।

पुनि रघुपति निज मंदिर गये ❀ एहि बिधि चरित करत नित नये
बार बार नारद मुनि आवहिं ❀ चरित पुनीत रामकर गावहिं

फिर श्रीरामचन्द्रजी अपने महल में गये, इसी प्रकार से नित्य नये चरित्र करते हैं ।।३।। बारम्बार नारद मुनि आते और रामजी के पवित्र चरित्र को गाते हैं ।।४।।

नित नव चरित देखि मुनि जाहीं ❀ ब्रह्मलोक सब कथा कहाहीं
सुनि बिरंचि अतिसय सुख मानहिं ❀ पुनि पुनि तात करहु गुनगानहिं

वे मुनि नित्य नया चरित्र देखकर ब्रह्मलोकको जाते हैं और वहाँ सब कथा कहते हैं। जिसे सुनकर ब्रह्मा अत्यन्त सुखी होते और कहते कि हे प्यारे! फिर-फिर रामका गुण-गान करो।

सनकादिक नारदहिं सराहहिं ❀ यद्यपि ब्रह्म निरत मुनि आहहिं
सुनि गुनगान समाधि बिसारी ❀ सादर सुनहिं परम अधिकारी

सनकादिक ऋषि नारदजीकी सराहना करते हैं। यद्यपि वे मुनि ब्रह्ममें लीन रहते, तथापि रामजीके गुणगानको सुनकर समाधि भूल जाते और वे अधिकारी आदरके साथ सुनते हैं।।

दोहा—जीवन मुक्त ब्रह्मपर, चरित सुनहिं तजि ध्यान।
जे हरिकथा न करहिं रति, तिनके हृदय पषान ।।६४।।

परब्रह्मके ध्यानको छोड़कर जीवन्मुक्त मुनि इस चरित्रको सुनते हैं। जो भगवत्-कथामें प्रीति नहीं करते, उनका हृदय पत्थर है ।। ६४ ।।

एक बार रघुनाथ बुलाये ❀ गुरु द्विज पुरबासी सब आये
बैठे गुरु द्विजवर मुनि सज्जन ❀ बोले बचन भक्त भय भंजन

एकबार श्रीरामचन्द्रजीने बुलवाया तो गुरु वसिष्ठ, ब्राह्मण और नगर-निवासी सब आये। जब ब्राह्मणों, मुनियों और सज्जनों सहित सभामें आ बैठे, तब श्रीरामचन्द्रजी यह वचन बोले ।।

सुनहु सकल पुरजन मम बानी ❀ कहहुँ न कछु ममता उर आनी
नहिं अनीति नहिं कछु प्रभुताई ❀ सुनहु करहु जो तुम्हहिं सुहाई

हे सम्पूर्ण नगर-निवासियों ! मेरी बात को सुनिये, मैं हृदय में कुछ अभिमान तथा अनीति लाकर नहीं कहता हूँ न अपना ऐश्वर्य । सुनिये, यदि आप लोगों को सुहाये तो करिये ॥४॥

सोइ सेवक प्रियतम मम सोई ❀ मम अनुशासन मानै जोई
जो अनीति कछु भाषौं भाई ❀ तो मोहिं बरजहु भय बिसराई

वही मेरा सेवक और वही मेरा प्यारा है, जो मेरी आज्ञा को मानेगा ॥५॥ हे भाई ! यदि मैं कोई अनीति की बात कहूँ, तो भय त्याग कर मुझे मना कर देना ॥६॥

बड़े भाग मानुष तन पावा ❀ सुर दुर्लभ सद्ग्रन्थन गावा
साधन धाम मोक्ष कर द्वारा ❀ पाइ न जेहि परलोक सँवारा

मनुष्य शरीर बड़े भाग्य से मिला है, सब अच्छे ग्रन्थों ने कहा है कि यह देवताओं के लिए भी दुर्लभ है। यह साधनों का स्थान और मोक्ष का द्वार है, इसे पाकर जिसने परलोक नहीं सुधारा—

दोहा—सो परत्र दुख पावइ, सिर धुनि धुनि पछिताय ।
कालहिं कर्महिं ईश्वरहिं, मिथ्या दोष लगाइ ॥६५॥

वह परलोक और इस लोक में दुःख पाता है और शिर धुन-धुनकर पछताता है, वह झूठे ही काल को, कर्म को और ईश्वर को दोष लगाता है ॥६५॥

एहि तनुकर फल विषय न भाई ❀ स्वर्गहु स्वल्प अन्त दुखदाई
नर तनु पाइ विषय मन देहीं ❀ पलटि सुधा ते सठ विष लेहीं

हे भाइयों ! शरीर के पाने का फल विषय-भोग नहीं है, स्वर्ग थोड़ा है और अन्त में दुःख देने वाला है ॥ मनुष्य का शरीर पाकर जो विषयों में मन लगाते हैं, वे अमृत के बदले विष लेते हैं ॥

ताहि कबहुँ भल कहै न कोई ❀ गुंजा ग्रहै परसमनि खोई
आकर चारि लाख चौरासी ❀ योनि भ्रमत यह जिव अविनासी

उसको कभी कोई अच्छा नहीं कहता, वह पारसमणि को खोकर घुँघुची (चिरमिटी) ग्रहण करता है । चार खानि चौरासी लाख योनियों में वह अविनाशी जीव भ्रमता है ॥

फिरत सदा माया के प्रेरे ❀ काल कर्म सुभाव गुन घेरे
कबहुँक करि करुना नर देही ❀ देत ईश बिनु हेत सनेही

यह जीव माया की प्रेरणा से सदा फिरता है—इसे काल, कर्म, स्वभाव और गुण घेरे रहते हैं । कभी कृपा करके भगवान् जीव को मनुष्य देह देते हैं क्योंकि वे अकारण स्नेही हैं ॥

नरतनु भव बारिधि कहँ बेरो ❀ सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरो
कर्णधार सद्गुरु दृढ़ नावा ❀ दुर्लभ साज सुलभ करि पावा

यह नर-देह भवसागर से पार होने के लिए बेड़ारूप है, मेरी कृपा ही सामने की अनुकूल वायु है—इस मजबूत नाव के सद्गुरु कर्णधार रूप हैं, ऐसा दुर्लभ साज जीव को सहज में प्राप्त है ॥

दोहा—जो न तरै भवसागर, नर समाज अस पाइ।
सो कृत निन्दक मन्दमति, आत्माहन गति जाइ ॥६६॥

जो मनुष्य ऐसा समाज पाकर भी संसाररूपी समुद्र से पार नहीं होता, वह कृतघ्नी मन्द मति और आत्महत्या करनेवालों की गति को पाता है ॥६६॥

जो परलोक इहाँ सुख चहहू ❀ सुनि मम बचन हृदय दृढ़ गहहू
सुलभ सुखद मारग यह भाई ❀ भक्ति मोरि पुरान श्रुति गाई

जो यहाँ और परलोक में सुख चाहते हों तो मेरी बात सुनकर दृढ़ता से उसे हृदय में ग्रहण करो। हे भाई ! यह रास्ता सहज और सुखदायक है, मेरी भक्ति को वेद और पुराणों ने गाया है ॥

ज्ञान अगम प्रत्यूह अनेका ❀ साधन कठिन न मन कहँ टेका
करत कष्ट बहु पावइ कोऊ ❀ भक्तिहीन प्रिय मोहिं न सोऊ

ज्ञान अगम है, उसके साधन में अनेक विघ्न और कठिनाइयाँ हैं, मन को कोई आधार नहीं मिलता। बहुत कष्ट करके यदि कोई पा भी जाय तो भक्ति के बिना मुझे वह प्रिय नहीं है।

भक्ति स्वतंत्र सकल सुखखानी ❀ बिनु सतसंग न पावहिं प्रानी
पन्य पुंज बिनु मिलहिं न सन्ता ❀ सतसंगति संसृति कर अन्ता

भक्ति स्वतन्त्र और समस्त सुखों की खान है, बिना सत्संगके प्राणी उसे नहीं पाते। बिना पुण्य-राशि के सन्तजन नहीं मिलते और सत्संगति ही संसार के दुःखों का अन्त करने वाली है ॥

पुन्य एक जग महँ नहिं दूजा ❀ मन क्रम बचन बिप्र पद पूजा
सानुकूल तेहिपर मुनि देवा ❀ जो तजि कपट कर द्विज सेवा

संसार में एक ही पुण्य है, दूसरा नहीं कि मन, कर्म और वचन से ब्राह्मण के चरणों की सेवा करे। जो कपट त्यागकर ब्राह्मण की सेवा करता है, उसपर मुनि और देवता प्रसन्न रहते हैं ॥

दोहा—औरो एक गुप्त मत, सबहिं कहौं कर जोरि।
शंकर भजन बिना नर, भक्ति न पावै मोरि ॥६७॥

और भी एक गुप्त मत मैं हाथ जोड़कर सबसे कहता हूँ कि शंकर के भजन के बिना मनुष्य मेरी भक्ति नहीं पाता ॥६७॥

कहहु भक्तिपथ कवन प्रयासा ❀ योग न मख जप तप उपवासा
सरल सुभाव न मन कुटिलाई ❀ यथा लाभ सन्तोष सदाई

कहिए भक्ति-मार्ग में कौन-सा प्रयास है ? न योग, न यज्ञ, न जप, न तप और न उपवास करना पड़ता है। सरल स्वभाव मन में कुटिलता न हो और सर्वदा यथा लाभ संतोष हो ॥

मोर दास कहाइ नर आसा ❀ करै तो कहहु कहाँ बिस्वासा
बहुत कहौं का कथा बढ़ाई ❀ यहि आचरन वश्य मैं भाई

मेरा सेवक कहाकर दूसरे की आशा करे, तो कहिए मुझ पर विश्वास कैसा ? इस कथा को बहुत बढ़ाकर मैं क्या कहूँ, हे भाइयों, इसी आचरण से मैं वश में हो जाता हूँ ॥४॥

बैर न बिग्रह आस न त्रासा ❀ सुखमय ताहि सदा सब आसा
अनारम्भ अनिकेत अमानी ❀ अनघ अरोष दक्ष विज्ञानी

जो बैर-भाव, आशा और भय नहीं रखते उनके लिये सभी दिशाएँ सुख से पूर्ण हैं। जो अनुष्ठान-रहित, निर्गुणी, निरभिमान, निष्पाप और विज्ञानी होते हैं ॥६॥

प्रीति सदा सज्जन संसर्गा ❀ तृनसम विषय स्वर्ग अपवर्गा
भक्तिपक्ष हठ नहिं सठताई ❀ दुष्टकर्म सब दूरि बिहाई

जिनकी सदा सज्जनों के साथ प्रीति रहती है, जो विषय, भोग और स्वर्ग तथा मोक्षको तृणके समान समझते हैं। जो भक्तिपक्ष में हठ करते और सब दुष्ट कर्मों को त्याग देते हैं॥८॥

दोहा—मम गुनग्राम नामरत, गत ममता मद मोह।
ताकर सुख सोइ जानै, परानन्द सन्दोह ॥६८॥

जो मेरे गुण-गान और नाम में लगे हुए, ममता मद, और मोह से रहित हैं। उस परम आनन्द के समूह सुख को वे ही जानते हैं ॥६८॥

सुनत सुधा सम बचन राम के ❀ सबनि गहे पद कृपाधामके
जननि जनक गुरु बन्धु हमारे ❀ कृपानिधान प्रानते प्यारे

रामजी के अमृतके समान मधुर वचन सुनते ही सब श्रीरामचन्द्रजीके चरणोंमें गिर पड़े और बोले—हे कृपानिधान! आप हमारे माता, पिता, गुरु, भाई और प्राणों से बढ़कर प्यारे हैं॥

तन धन धाम राम हितकारी ❀ सब विधि तुम प्रनतारतिहारी
अस सिख तुम बिनु देइ न कोऊ ❀ मातु पिता स्वारथरत ओऊ

हे रामजी! आप तन, धन और घर के हितकारी हैं और सब तरहसे शरणागतोंके दुःख को हरनेवाले हैं॥ आपके बिना ऐसी शिक्षा कौन दे; माता-पिता भी स्वार्थ में तत्पर रहते हैं॥

हेतु रहित जुग जुग उपकारी ❀ हम तुम्हार सेवक असुरारी
स्वारथ मित्र सकल जगमाहीं ❀ सपनेहुँ प्रभु परमारथ नाहीं

हे असुरों के शत्रु! आप युग-युग में हितकारी हैं, हम आपके सेवक हैं॥ संसार स्वार्थ का मित्र है, हे प्रभो! यहाँ स्वप्न में भी परमार्थ नहीं है ॥६॥

सबके बचन प्रेमरस साने ❀ सुनि रघुनाथ हृदय हर्षाने
निज निज गृह गे आयसु पाई ❀ बरनत प्रभु बतकही सुहाई

सबके वचन प्रेम रसमें सने हुए सुनकर श्रीरामचन्द्रजी हृदयमें हर्षित हुए॥ आज्ञा पाकर सब लोग प्रभु रामचन्द्रजीके सुन्दर वार्तालापका वर्णन करते हुए अपने-अपने घर को गये ॥८॥

दोहा—उमा अवधबासी नर, नारि कृतारथ रूप।
ब्रह्म सच्चिदानन्द घन, रघुनायक जहँ भूप ॥६९॥

शिवजी कहते हैं—हे पार्वती! अयोध्यावासी स्त्री-पुरुष कृतार्थरूप हैं, जहाँ सच्चिदानन्द आनन्द के समूह परब्रह्म श्रीरामचन्द्रजी राजा हैं ॥६९॥

एक बार बशिष्ठ मुनि आये ❀ जहाँ राम सुखधाम सुहाये
अति आदर रघुनायक कीन्हा ❀ पद पखारि चरणोदक लीन्हा

एक समय जहां सुखधाम सुहावने रामजी थे वहां वसिष्ठ मुनि आये ॥१॥ रघुनाथजी ने उनका बड़ा आदर किया और पांव धोकर चरणोदक लिया ॥२॥

राम सुनहु मुनि कहकरजोरी ❀ कृपासिन्धु बिनती कछु मोरी
देखि देखि आचरन तुम्हारा ❀ होत मोह मम हृदय अपारा

मुनि ने हाथ जोड़कर कहा—हे कृपासागर रामजी ! मेरी कुछ बिनती सुनिये ॥ ३ ॥ आपके आचरण को देख-देखकर मेरे हृदय में अपरम्पार मोह होता है ॥४॥

महिमा अमित बेद नहिं जाना ❀ मैं केहि भाँति कहौं भगवाना
उपरोहिती कर्म अति मन्दा ❀ बेद पुरान स्मृति कर निन्दा

हे भगवन् ! आपकी महिमा अपार है, जिसे वेदोंने भी नहीं जाना, फिर मैं किस भाँति कहूँ ? पुरोहितीका काम बड़ा निन्द्य कर्म है; जिसकी वेद, पुराण और स्मृतियां निन्दा करती हैं ॥

जब न लेउँ मैं तब बिधि मोहीं ❀ कहा लाभ आगे सुत तोहीं
परमातमा ब्रह्म नररूपा ❀ होइहिं रघुकुल भूषन भूपा

परन्तु जब मैं (पुरोहितीको) स्वीकार नहीं करता था तब ब्रह्माने मुझसे कहा—हे पुत्र ! आगे तुझे इससे लाभ होगा । परब्रह्म परमात्मा मनुष्यका रूप धारण करके रघुकुल-भूषण राजा होंगे ॥

दोहा—तब मैं हृदय बिचारेउँ, योग यज्ञ ब्रत दान ।
जा कहँ करिय सो पाइहउँ, धर्म न एहि सम आन ॥७०॥

तब मैंने हृदयमें विचारा कि योग, यज्ञ, व्रत, दान आदि जिसके लिए करता हूँ, उनको पाऊँगा, इसके समान दूसरा धर्म नहीं है ॥ ७० ॥

जप तप नियम जोग ब्रत धर्मा ❀ श्रुति संभव नाना बिधि कर्मा
ज्ञान दया मति तीरथ मज्जन ❀ जहँ लगि धर्म कहै श्रुति सज्जन

जप, तप, नियम, योग, व्रत और धर्म ये वेदमें कथित अनेक प्रकारके कर्म हैं और ज्ञान, दया, बुद्धि, तीर्थ-स्नान आदि भी जो जहां तक वेद और सज्जनोंने धर्म कहा है— ॥२॥

आगम निगम पुरान अनेका ❀ पढ़े सुने कर फल प्रभु एका
तव पदपंकज प्रीति निरन्तर ❀ सब साधन कर फल यह सुन्दर

वेद, शास्त्र अनेक पुराणोंके पढ़ने और सुननेका एक ही फल है । आपके चरण कमलोंमें निरन्तर प्रीति होना, यही सब साधनोंका सुन्दर फल है ॥ ४ ॥

छूटै मल कि मलहि के धोये ❀ घृत कि पाव कोउ बारि बिलाए
प्रेम भक्ति जल बिन रघुराई ❀ अभ्यन्तर मल कबहुँ न जाई

क्या मलके धोनेसे मल छूटता है, क्या पानी के मथने से कोई घी पा सकता है ? हे रामजी ! प्रेम और भक्ति रूपी जलके बिना कभी अन्तःकरणका मल धुल नहीं सकता ॥

सोइ सर्वज्ञ तज्ञ सोइ पण्डित ❋ सोइ गुनज्ञ विज्ञान अखंडित
दक्ष सकल लक्षणयुत सोई ❋ जाके पद सरोज रति होई

वही सर्वज्ञ और तत्त्वज्ञानी है, वही पण्डित, वही गुणमन्दिर और अखण्ड विज्ञानी है, वही चतुर और सम्पूर्ण लक्षणोंसे युक्त है, जिसकी आपके चरण-कमलोंमें प्रीति हो ॥

दोहा—नाथ एक बर माँगौं, राम कृपा करि देहु।
जन्म जन्म प्रभु पद कमल, कबहुँ घटै नहिं नेहु ॥७१॥

हे नाथ रामचन्द्रजी ! मैं आपसे एक वर माँगता हूँ, कृपा करके दीजिये। वह यह कि जन्म-जन्मान्तरमें आपके चरण-कमलोंका स्नेह मुझमें कभी कम न हो ॥ ७१ ॥

अस कहि मुनि बसिष्ठ गृह आये ❋ कृपासिन्धु के मन अति भाये
हनूमान भरतादिक भ्राता ❋ संग लिये सेवक सुखदाता

इस प्रकार कहकर वसिष्ठ मुनि घर आये और कृपासागर रामजीके मनमें बहुत भाये। सेवकोंको सुख देनेवाले महाराज, साथमें भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न तीनों भाइयों और हनुमान्‌जीको लेकर ॥

पुनि कृपालु पुर बाहर गयऊ ❋ गज रथ तुरँग मँगावत भयऊ
देखि कृपा करि सकल सराहे ❋ दिये उचित जिन जिन जो चाहे

फिर कृपालु रामजी नगरके बाहर गए और वहाँ तुरन्त रथ, हाथी और घोड़े मँगवाए ॥३॥ कृपा करके सबको देखा और सराहना की, लोगोंने जो इच्छा प्रकटकी उनको वही मिला ॥४॥

हरन सकलश्रम प्रभु श्रम पाई ❋ गये जहाँ शीतल अमराई
भरत दीन्ह निज बसन डसाई ❋ बैठे प्रभु सेवहिं सब भाई

समस्त लोगोंके श्रम हरनेवाले प्रभु रामजी थककर वहाँ गए, जहाँ आमोंका शीतल बगीचा था ॥ भरतजीने अपना वस्त्र बिछा दिया, प्रभु रामजी उसपर बैठ गए और सब भाई सेवा करने लगे ॥

मारुत सुत तब मारुत करई ❋ पुलकगात लोचन जल भरई
हनूमान सम को बड़ भागी ❋ नहिं कोउ रामचरन अनुरागी
गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई ❋ बार बार प्रभु निज मुख गाई

तब पवनकुमार पंखा झलने लगे, उनका शरीर पुलकित हो गया और आँखोंमें जल भर आया ॥७॥ हनुमान्‌जीके समान बड़ा भाग्यवान् कौन है ?॥८॥ शिवजी कहते हैं—हे पार्वती ! जिसकी सेवकाई और प्रीतिकी प्रभु रामजीने स्वयं श्रीमुखसे बार-बार बड़ाई की है ॥९॥

दोहा—तेहि अवसर मुनि नारद, आये करतल बीन।
गावन लागे राम गुन, कीरति सदा नवीन ॥७२॥

उसी समय नारद मुनि हाथमें बीणा लिये हुए आये और रामजीका गुण और सदा नवीन रहनेवाली कीर्तिको गाने लगे ॥ ७१ ॥

मामवलोकय पंकज लोचन ❋ कृपा बिलोकनि सोच बिमोचन
नील तामरस स्याम काम अरि ❋ हृदय कंज मकरन्द मधप हरि

हे कमलनयन ! मेरी ओर देखिये, वह आपका कृपा पूर्वक देखना सोच से छुड़ानेवाला है। नीलकमलके समान श्याम, शंकरजीके हृदयरूपी कमलके पान करनेवाले भ्रमर, जगदीश्वर ।।

जातुधान बरूथ बल भंजन ❀ मुनि सज्जन रंजन अघ गञ्जन
भूसुर ससि नववृन्द बलाहक ❀ असरन सरन दीनजन गाहक

आप राक्षस-वृन्दके बलका भंजन करनेवाले, मुनियों और सज्जनोंको प्रसन्न करनेवाले और पापके नाशक हो। ब्राह्मणोंको नवीन मेघ-मालारूप, अरक्षकोंके रक्षक, दीनजनोंके खोजी हैं ।।

भुजबल बिपुल भार महि खंडित❀ खरदूषन बिराध बध पंडित
रावनारि सुखरूप भूपवर ❀ जय दशरथकुल कुमुद सुधाकर

हे अपने विशाल भुजबलसे पृथ्वीके भारको छिन्न-भिन्न करनेवाले ! खरदूषण तथा विराध-बधके पण्डित, रावणके शत्रु ! सुखरूप, राजश्रेष्ठ ! दशरथजीके कुलरूपी कुमुदके लिए चन्द्रमारूप ! आपकी जय हो ।। ६ ।।

सुजस पुरान विदित निगमागम ❀ गावत सुर मुनि संत समागम
कारुनीक व्यलीक मद खण्डन ❀ सब बिधि कुशल कोशलामण्डन
कलिमल मथन नाम ममता हन ❀ तुलसिदास प्रभु पाहि प्रनत जन

आपका सुयश पुराणों और वेदों तथा शास्त्रों में प्रसिद्ध है, देवता, मुनि और सन्त मण्डली गान करती है। हे कोशलके भूषण दयालु स्वामी ! मुझ शरणागत दासकी रक्षा कीजिये ।।

दोहा—प्रेम सहित मुनि नारद, बरनि राम गुन ग्राम।
शोभासिंधु हृदय धरि, गए जहाँ बिधि-धाम ।।७३।।

नारदमुनि प्रेमके साथ रामजीकी गुण-गरिमा गानकर और शोभाके समुद्र भगवान्‌को हृदयमें धारणकर ब्रह्मलोकको चले गये ।। ७३ ।।

गिरिजा सुनहु विषद यह कथा ❀ मैं सब कहा मोरि मति जथा
राम चरित शतकोटि अपारा ❀ श्रुति शारदा न बरनै पारा

शिवजी कहते हैं—हे पार्वती ! यह बड़ी लम्बी, कथा जैसी मेरी बुद्धि है, मैंने सब कही, रामजीका चरित्र सौ करोड़ और अपार है, सरस्वती और वेद भी वर्णन करके पार नहीं पा सकते ।।

राम अनन्त अनन्त गुनानी ❀ जन्म कर्म अनन्त नामानी
जल सीकर महि रज गनि जाहीं ❀ रघुपति चरित न बरनि सिराहीं

रामजी अनन्त हैं, उनकी गुणराशि और उनके जन्म-कर्म तथा नामावली अनन्त है। पानीकी बूँदें धरतीकी धूल भले ही गिनें पर रामजीका चरित्र कहकर समाप्त नहीं किया जा सकता।

विमलकथा यह हरिपददायिनी❀भक्ति होइ सुनि अति अनपायिनी
उमा कहेउ सो कथा सुनाई ❀ जो भुशुण्डि खगपतिहिं सुनाई

यह निर्मल कथा हरिपदको देनेवाली है, सुनकर निश्चल भक्ति होती है। हे पार्वती ! मैंने यह सब सुन्दर कथा कही जो कागभुशुण्डिने पक्षिराज गरुड़जीको सुनाई थी ।। ६ ।।

कछुक रामगुण कहेउँ बखानी ❀ अब का कहौं सो कहहु भवानी

सुनि शुभ-कथा उमा हर्षानी ❀ बोली अति बिनीत मृदुबानी
धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी ❀ सुनेउँ रामगुन भव-भय हारी

हे भवानी ! रामजीके कुछ गुणोंको मैंने वर्णन कर कहा, अब क्या कहूँ, वह कहो ? इस शुभ-कथा को सुनकर पार्वतीजी प्रसन्न हुईं और अत्यंत विनीत भावसे मीठी वाणी में बोलीं—।। हे त्रिपुरारि! धन्य है, धन्य है, मैं धन्य हुई जो भयहारी रामजीका गुणानुवाद सुना ।।

दोहा—तुम्हरी कृपा कृपायतन, अब कृतकृत्य न मोह ।
जानेउँ राम प्रताप प्रभु, चिदानन्द सन्दोह ।।७४।।

हे कृपानिधान ! आपकी कृपासे मेरा मनोरथ पूर्ण हो गया, अब मुझे मोह नहीं रहा । हे प्रभो ! अब मैंने चित्तको आनंद देनेवाले श्रीरामचंद्रजीके प्रतापको जाना है ।। ७४।।

नाथ तवानन शशि स्रवत, कथा सुधा रघुबीर ।
श्रवन पुटन्हि मन पान करि, नहिं अघात मतिधीर ।।७५।।

हे नाथ ! आपके चंद्रमारूपी मुखसे श्रीरामचंद्रजीका यशरूपी अमृत बह रहा है । हे मतिधीर ! अपने कानोंसे पान करके मेरा मन तृप्त नहीं होता ।। ७५ ।।

राम चरित जे सुनत अघाहीं ❀ रस विशेष जाना तिन्ह नाहीं
जीवन मुकत महामुनि जेऊ ❀ हरि गुन सुनत निरन्तर तेऊ

श्रीरामचंद्रजीका चरित्र सुनते हुए जो तृप्त हो जाते हैं, उन्होंने इसके विशेष रसको नहीं जाना ।। जो जीवनमुक्त महामुनि हैं, वे भी निरंतर भगवान्‌का गुणगान नहीं सुनते हैं ।।२।।

भवसागर चह पार जो पावा ❀ रामकथा ताकहँ दृढ़ नावा
विषयिन कहँ पुनि हरिगुन ग्रामा ❀ श्रवन सुखद अरु मन विश्रामा

जो भवसागरसे पार होना चाहता है उसके लिए रामजीकी कथा मजबूत नावके समान है । फिर विषयी प्राणियोंको भगवान्‌का यश समूह कानोंको सुख और मनको आराम देनेवाला है ।

श्रवनवन्त अस को जग माहीं ❀ जिन्हहिं न रघुपति कथा सोहाहीं
ते जड़ जीव निजातम घाती ❀ जिन्हहिं न रघुपति कथा सोहाती

संसारमें ऐसा कानवाला कौन है, जिसको रामचंद्रजीकी कथा न सुहाती हो ?।। वे मूर्ख जीव आत्मघाती हैं, जिनको रामचंद्रजीकी कथा अच्छी नहीं लगती ।। ६ ।।

हरि चरित्र मानस तम गावा ❀ सुनि मैं नाथ परम सुख पावा
तुम्ह जो कही यह कथा सुहाई ❀ काकभुशुण्डि गरुड़ प्रति गाई

हे नाथ ! आपने रामचरित मानसका गान किया जिसको सुनकर मैंने बड़ा सुख पाया ।। आपने जो कहा कि यह सुहावनी कथा काकभुशुण्डिने गरुड़जीके प्रति कही—(सो) ।।८।।

दोहा—बिरति ज्ञान बिज्ञान दृढ़, रामचरन अति नेह ।
बायस तनु रघुपति भगति, मोहिं परम सन्देह ।।७६।।

मुझे एक बड़ा भारी सन्देह है कि जिनको वैराग्य और ज्ञान-विज्ञानमें दृढ़ता तथा रामचरित्र पर अत्यन्त प्रेम है, उन कागभुशुंडिजो को कौवेके शरीरसे भक्ति कैसे मिली ? ॥७६॥

नर सहस्र महँ सुनहु पुरारी ❁ कोउ एक होइ धर्म ब्रतधारी
धर्मशील कोटिक महँ कोई ❁ विषय बिमुख बिराग रत होई

हे त्रिपुरारि ! सुनिए, हजारों मनुष्यों में कोई एक धर्म-व्रत का धारण करनेवाला होता है ॥ ऐसे करोड़ों धर्मशीलों में कोई विषयों से विमुख और वैराग्य में तत्पर रहता है ॥ २ ॥

कोटि बिरक्त मध्य श्रुति कहई ❁ सम्यक ज्ञान सुकृत कोउ लहई
ज्ञानवन्त कोटिक महँ कोऊ ❁ जीवनमुक्त सुकृत जग सोऊ

श्रुति (वेद) कहता है कि करोड़ों विरक्तों में कोई ही यथार्थ ज्ञान और पुण्य पाता है ॥ ऐसे करोड़ों ज्ञानवानों में कोई ही पुण्यवान् जीवनमुक्त होवा है ॥ ४ ॥

तिन सहस्र महुँ सब सुखदानी ❁ दुर्लभ ब्रह्मलीन बिज्ञानी
धर्मशील बिरक्त अरु ज्ञानी ❁ जीवन्मुक्त ब्रह्मपर प्रानी

ऐसे हजारों जीवन मुक्तों में भी सब सुखों की खान ब्रह्म में लीन विज्ञानी होता है ॥५॥ पर धर्मशील, विरक्त और ज्ञानी, जीवन मुक्त तथा ब्रह्मनिष्ठ जो प्राणी हैं ॥ ६ ॥

सबतें सो दुर्लभ सुरराया ❁ राम भगतिरस गत मद माया
सो हरि भगति काग किमि पाई ❁ विश्वनाथ मोहिं कहहु बुझाई

हे सुरेश्वर! इन सबसे भी वह दुर्लभ है, जो मद माया से रहित, राम-भक्ति में निरत हो ॥ ऐसी कठिन भगवद्-भक्ति कौवे को कैसे मिली ? हे विश्वनाथ ! यह मुझे समझाकर कहिए ॥८॥

दोहा—राम परायन ज्ञानरत, गुनागार मति धीर ।
नाथ कहहु केहि कारन, पायउ काग शरीर ॥७७॥

जो रामचन्द्रजी का प्रेमी, महाज्ञानी, गुणों का धाम और जिनकी निश्चल मति थी । हे स्वामी ! उसने कौवे का शरीर किस कारण पाया, सो कहिए ॥ ७७ ॥

यह प्रभु चरित पवित्र सुहावा ❁ कहहु कृपालु काक कहँ पावा
तुम्ह केहि भाँति सुना मदनारी ❁ कहहु मोहिं अति कौतुक भारी

हे कृपालु ! प्रभु रामचन्द्रजी का वह सुन्दर पवित्र यश कहिये, उसे कौवे ने कहाँ पाया ? ॥ १ ॥ हे कामदेव के शत्रु ! कहिए, आपने किस तरह सुना ? इसका मुझे बहुत बड़ा कुतूहल है ॥२॥

गरुड़ महाज्ञानी गुनरासी ❁ हरि सेवक अति निकट निवासी
तेहि केहि हेतु काक सन जाई ❁ सुनी कथा मुनि निकट बिहाई

गरुड़ तो महा ज्ञानी, गुणों की राशि, भगवान् के सेवक और उनके बहुत निकट रहने वाले हैं ॥३॥ उन्होंने किस कारण से मुनिमण्डली को छोड़कर कौवे से जाकर कथा सुनी ॥४॥

कहहु कवनि विधि भा संबादा ❁ दोउ हरिभक्त काक उरगादा
गौरि गिरा सुनि सरल सुहाई ❁ बोले शिव सादर सुख पाई

कहिए, काग और गरुड़ दोनों—हरि भक्तों का वह संवाद किस तरह हुआ। दोनों ही भगवान्के भक्त थे ?. ।।५।। पार्वती की सरल और सुहावनी वाणी सुनकर शिवजी प्रसन्न हो सुख पाकर आदर के साथ बोले—।। ६ ।।

धन्य सती पावनि मति तोरी ❀ रघुपति चरन प्रीति नहिं थोरी
सुनहु परम पुनीत इतिहासा ❀ जो सुनि सकल शोक भ्रम नासा
उपजहिं राम चरन विश्वासा ❀ भव निधि तर नर बिनहिं प्रयासा

हे सती ! तू धन्य है, तेरी बुद्धि पवित्र है और रघुनाथजीके चरणोंमें बहुत बड़ी प्रीति है। वह परम पवित्र इतिहास सुनो, जिसको सुन कर शोक नष्ट होता है। इससे रामचन्द्रजीके चरणोंमें विश्वास उत्पन्न होगा और बिना प्रयास ही मनुष्य संसार-रूपी समुद्रसे पार हो जायेंगे ।।६।।

दोहा—ऐइसे प्रश्न बिहंगपति, कीन्ह काक सन जाइ ।
सो सब सादर कहउँ मैं, सुनहु उमा चितलाइ ।।७८।।

ऐसा ही प्रश्न गरुड़ने जाकर कागभुशुण्डिसे किया था। हे पार्वती ! वह सब मैं आदरके साथ कहता हूँ, मन लगाकर सुनो ।। ७८ ।।

मैं जिमि कथा सुना भवमोचनि ❀ सो प्रसंग सुनु सुमुखि सुलोचनि
प्रथम दक्षगृह तव अवतारा ❀ सती नाम तब रहा तुम्हारा

हे सुमुखी, सुलोचनी ! संसारसे मुक्त करनेवाली इस कथा को जिस तरहसे मैंने सुना, वह कथा सुनो । पहले तुम्हारा जन्म दक्ष-प्रजापतिके घरमें हुआ था, तब तुम्हारा नाम सती था ।।२।।

दक्ष यज्ञ जब भा अपमाना ❀ तुम अतिक्रोध तजा तब प्राना
मम अनुचरन्ह कीन्ह मख भंगा ❀ जानहु सो तुम सकल प्रसंगा

दक्षके यज्ञमें जब मेरा अपमान हुआ तब तुमने अत्यन्त क्रुद्ध होकर प्राण त्याग दिया ।।३।। तब मेरे सेवकोंने उस यज्ञ को विध्वंस किया, उस सारी कथा को तुम जानती हो ।। ४ ।।

तब अति सोच भयउ मन मोरे ❀ दुखित भयउँ वियोग प्रिय तोरे
सुन्दर बन गिरि सरित तड़ागा ❀ कौतुक देखत फिरेउँ बिरागा

हे प्रिये ! तब मेरे मनमें बड़ा सोच हुआ और तुम्हारे वियोगमें मैं दुःखी हुआ ।।५।। उस समय मैं विरक्त हो सुन्दर, वन, नदी और तालाबों का कुतूहल देखता फिरता था ।।६।।

गिरि सुमेरु उत्तर दिशि दूरी ❀ नील शैल इक सुन्दर भूरी
तासु कनक मय शिखर सुहाये ❀ चारि चारु मोरे मन भाये

सुमेरु पर्वतसे उत्तर दिशामें दूरी पर एक बड़ा ही सुन्दर नील पर्वत है ।।७।। उसकी स्वर्णमयी सुहावनी चार चोटियाँ हैं, वे सुन्दर शृङ्ग मेरे मन को अच्छे लगे ।। ८ ।।

तिन्ह पर एक एक विटप विशाला ❀ बट पीपर पाकरी रसाला
शैलोपरि सर सुन्दर सोहा ❀ मनि सोपान देखि मन मोहा

उन एक-एक शिखरों पर बड़, पीपल, पाकड़ और आमके विशाल वृक्ष हैं ।। पर्वतके ऊपर सुन्दर सरोवर शोभित है, जिसकी मणिमय सीढ़ियों को देखकर मन मोहित हो जाता है ।।१०।।

दोहा—शीतल अमल मधुर जल, जलज विपुल बहुरंग।
कूजत कलरव हंस गन, गुंजत मंजुल भृंग ॥७९॥

उसका जल मीठा, स्वच्छ और शीतल था, बहुत रंगोंके अपार कमल फूले थे, हंसोंके झुण्ड बोलते थे और भ्रमर सुन्दर गुंजार करते थे ॥७९॥

तेहि गिरि रुचिर बसै खग सोई ❁ तासु नाश कल्पान्त न होई
मायाकृत गुन दोष अनेका ❁ मोह मनोज आदि अविवेका

उसी सुन्दर पर्वतपर वह काग पक्षी (कौवा) रहता है, जिसका प्रलयकालमें भी नाश नहीं होता ॥१॥ मायाकृत गुण, दोष, नाना प्रकारके अज्ञान, मोह काम और क्रोध आदि-॥२॥

रहे व्यापि समस्त जगमाहीं ❁ तेहि गिरि निकट कबहुँ नहिं जाहीं
तहँ बसि हरिहिं भजै जिमि कागा ❁ सो सुनु उमा सहित अनुरागा

समस्त संसार में व्याप्त हो रहे हैं, पर उस पर्वतके समीप वे सब कभी नहीं जाते ॥३॥ हे पार्वती ! वहां रहकर वह काग जिस तरह भगवान्को भजता है, वह अनुरागपूर्वक सुनो ॥४॥

पीपर तरु तर ध्यान सो धरई ❁ जाप यज्ञ पाकर तर करई
आम-छाँह करि मानस पूजा ❁ तजि हरि भजन काज नहिं दूजा

वह पीपल वृक्ष के नीचे ध्यान करता है और पाकर वृक्ष के नीचे जप-यज्ञ करता है। आमकी छाया में मानसिक पूजा करता है और भगवद्भजनको छोड़कर उसके लिए दूसरा काम नहीं है ॥६॥

बटतर कह हरिकथा प्रसंगा ❁ आवहिं सुनहिं अनेक बिहंगा
राम चरित बिचित्र बिधि नाना ❁ प्रेम सहित कर सादर गाना

उस वृक्षके नीचे वह हरि-कथाके प्रसंगको कहता है जिसे असंख्य पक्षी सुनने आते हैं ॥ वह श्रीरामचन्द्रजीके नाना प्रकारके विलक्षण चरित्रको आदरसे प्रेमपूर्वक गान करता है॥८॥

सुनहिं सकल मति विमल मराला ❁ बसहिं निरन्तर जे तेहि काला
जब मैं जाइ सो कौतुक देखा ❁ उर उपजा आनन्द विशेखा

उस समय सम्पूर्ण निर्मल बुद्धिवाले हंस, जो सर्वदा उस सरोवरमें बास करते हैं, और भगवान्की कथा सुनते हैं। जब मैंने जाकर उस कौतुकको देखा तो हृदयमें विशेष आनन्द हुआ ॥

दोहा—तब कुछ काल मराल तन, धरि तहँ कीन्ह निवास।
सादर सुनि रघुपति चरित, पुनि आयेउँ कैलास ॥८०॥

तब मैंने कुछ समय तक हंसका शरीर धारणकर वहाँ निवास किया और आदर सहित श्रीरामचन्द्रके चरित्र को सुनकर फिर कैलाश पर आया ॥ ८० ॥

गिरिजा कहेउँ सो सब इतिहासा ❁ मैं जेहि समय गयउँ खग पासा
अब सो कथा सुनहु जेहि हेतू ❁ गयउ काग पहँ खगकुल केतू

शिवजी कहते हैं—हे पार्वती ! मैं जिस समय उस पक्षीके पास गया था, वह सब इतिहास वर्णन किया ॥१॥ अब जिस कारण गरुण कागभुशुण्डिके पास गए, वह कथा सुनो ॥२॥

जब रघुनाथ कीन्ह रणक्रीड़ा ❀ समझत चरित होति मोहि व्रीड़ा
इन्द्रजीत कर आपु बँधावा ❀ तब नारद मुनि गरुड़ पठावा

जब रघुनाथजीने रण-क्रीड़ा की थी, उस चरित्रको समझकर मुझे लज्जा होती है ॥३॥ जब वे स्वयं मेघनादके हाथसे बँध गये, तब नारदमुनिने गरुड़को भेजा ॥४॥

बन्धन काटि गयउ उरगादा ❀ उपजा हृदय प्रचंड विषादा
प्रभु बंधन समुझत बहु भाँती ❀ करत बिचार उरग आराती

बन्धन काटकर गरुड़ चले गये उनके हृदयमें प्रचंड विषाद उत्पन्न हुआ ॥ ५ ॥ प्रभु रामचन्द्रजीके बन्धनको समझकर गरुड़जी अनेक भाँतिके विचार करने लगे ॥ ६ ॥

ब्यापक ब्रह्म बिरज बागीशा ❀ मायामोह पार परमीशा
सो अवतार सुनेउँ जगमाहीं ❀ देखेउँ सो प्रभाव कछु नाहीं

व्यापक, परब्रह्म, अजन्मा, वाणीके स्वामी, माया और मोहसे परे जो परमेश्वर हैं ॥७॥ उनका संसारमें जन्म लेना सुना तो था; पर वैसा कुछ महत्त्व नहीं देखा ॥ ८ ॥

दोहा—भव बंधन ते छूटहिं, नर जपि जाकर नाम।
खर्ब निशाचर बाँधेउ, नागपास सोइ राम ॥८१॥

जिसका नाम जप कर मनुष्य संसार रूपी बन्धनसे छूट जाते हैं। उन्हीं रामचन्द्रजी को एक छोटे राक्षसने नाग फाँससे बाँध लिया ॥ ८१ ॥

नाना भाँति मनहिं समुझावा ❀ प्रगट न ज्ञान हृदय भ्रम छावा
खेद खिन्न मन तर्क बढ़ाई ❀ भयउ मोहवश तुम्हरिहि नाई

मन को नाना प्रकारसे समझाया, परन्तु ज्ञान नहीं प्रकट हुआ, हृदयमें भ्रम छा गया ॥१॥ खेदसे दुखी होकर मनने तर्क बढ़ाया और गरुड़ भी तुम्हारे ही समान मोहके वशमें हुए ॥२॥

ब्याकुल गयउ देवऋषि पाहीं ❀ कहेसि जो संशय निज मन माहीं
सुनि नारदहिं लागि अति दाया ❀ सुनु खग प्रबल राम की माया

तब व्याकुल होकर देवर्षि नारदजीके पास गए और मनमें जो सन्देह था कहा ॥ वह सुनकर नारदजी को बड़ी दया आई और वे बोले, हे पक्षि राज! सुनिये रामचन्द्रजी की माया प्रबल है ॥

जो ज्ञानिन कर चित अपहरई ❀ बरियाई विमोह मन करई
जेहि बहु बार नचावा मोहीं ❀ सोइ ब्यापेउ बिहंगपति तोहीं

जो ज्ञानियों के चित्त को भी हर लेती है, और बलपूर्वक मन को विमोहित कर देती है ॥५॥ हे गरुड़ ! जिसने मुझे भी बहुत बार नचाया है, वही माया तुम्हें व्यापी है ॥६॥

महा मोह उपजा उर तोरे ❀ मिटहिं न बेगि कहे खग मोरे
चतुरानन पहँ जाहु खगेसा ❀ सोइ करहु जो देहिं निदेशा

हे गरुड़ ! तुम्हारे हृदय में महान् मोह उत्पन्न हुआ है, सो मेरे कहने से जल्द नहीं मिटेगा ॥७॥ हे पक्षिराज! तुम ब्रह्माके पास जाओ और जो उनका निर्देश हो, वही करो ॥

दोहा—अस कहि चले देव ऋषि, करत राम गुन गान ।
हरि माया बल बरनत, पुनि पुनि परम सुजान ॥८२॥

ऐसा कहकर परम सुजान देवर्षि नारद राम गुन-गान करते तथा भगवान्की मायाके बलको बार-बार वर्णन करते हुए चले ॥ ८२ ॥

तब खगपति बिरंचि पहँ गयऊ ❀ निज सन्देह सुनावत भयऊ
सुनि बिरंचि रामहिं सिर नावा ❀ समुझि प्रताप प्रेम उर छावा

तब पक्षिराज गरुड़ ब्रह्माके पास गए और अपना संदेह कह सुनाया ॥१॥ उसे सुनकर ब्रह्माने रामचन्द्रजीको शिर नवाया और प्रभुके प्रभावको समझकर उनके हृदयमें प्रेम छा गया ॥२॥

मन महँ करहिं बिचार बिधाता ❀ मायाबस कबि कोबिद ज्ञाता
हरि माया कर अमित प्रभावा ❀ बिपुल बार जो मोहिं नचावा

ब्रह्मा मनमें विचार करने लगें कि मायाके वशमें कवि, विद्वान् और ज्ञानी सभी हैं ॥३॥ भगवान्को मायाका अमित प्रभाव है, जिसने बहुत बार मुझे भी नचाया है ॥४॥

अग जग मय सब मम उपराजा ❀ नहिं आश्चर्य मोहिं खगराजा
पुनि बोले बिधि गिरा सुहाई ❀ जान महेश राम प्रभुताई

जड़-चेतनमय संसारको मैंने उत्पन्न किया है, हे पक्षिराज ! मोह होना आश्चर्यपूर्ण नहीं है ॥ फिर ब्रह्मा सुन्दर वाणीसे बोले—रामचन्द्रजीकी प्रभुताको शंकरजी जानते हैं ॥६॥

बैनतेय शंकर पहँ जाहू ❀ तात अनत पूछहु जनि काहू
तहँ होइहि तव संशय हानी ❀ चलेउ बिहंग सुनत बिधि बानी

हे तात गरुड़ ! तुम शंकरके पास जाओ और अन्यत्र कहीं किसीसे मत पूछो ॥७॥ वहाँ तुम्हारे सन्देहका नाश होगा, तब ब्रह्माकी वाणी सुनकर गरुड़ वहाँसे चले ॥८॥

दोहा—परमातुर बिहंगपति, तब आयेउ मम पास ।
जात रहेउँ कुबेर गृह, उमा रहिहु कैलास ॥८३॥

तब अत्यन्त आतुर गरुड़जी मेरे पास आये । हे पार्वती ! उस समय मैं कुबेरके स्थान को जा रहा था और तुम कैलाश पर्वतपर थी ॥ ८३ ॥

तेहि मम पद सादर शिर नावा ❀ पुनि आपन सन्देह सुनावा
सुनि ताकर बिनीत मृदुबानी ❀ प्रेम सहित मैं कहेउ भवानी

उन्होंने आदरपूर्वक मेरे चरणोंमें शिर नवाया और फिर अपना संदेह सुनाया ॥१॥ हे पार्वती ! तब उनकी विनीत मधुर वाणीको सुनकर मैंने उनसे प्रेमसे कहा—॥ २ ॥

मिलेहु गरुड़ मारग महँ मोहीं ❀ कवन भाँति समुझावउँ तोहीं
जब बहु काल करिय सतसंगा ❀ तब यह होइ मोह भ्रम भंगा

हे गरुड़ ! तुम मुझे रास्तेमें मिले, मैं किस भाँति तुम्हें समझाऊँ ? ॥३॥ तुम्हारा यह सब संशय तभी दूर होगा, जब बहुत काल तक सत्सङ्ग करोगे ॥४॥

सुनिय तहाँ हरिकथा सुहाई ❀ नाना भाँति मुनिन्ह जो गाई
जेहि महँ आदि मध्य अवसाना ❀ प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना

उस सत्संगमें भगवान्‌की सुन्दर कथा सुननी चाहिए, जो मुनीश्वरोंने अनेक प्रकारसे गायी है। जिसमें आदि मध्य और अन्तमें प्रभु भगवान् रामजीका ही प्रतिपादन हुआ है ॥

नित हरि कथा होति जहँ भाई ❀ पठवउँ तोहिं सुनहु तहँ जाई
जाइहि सुनत सकल सन्देहा ❀ होइहि राम चरन दृढ़ नेहा

हे भाई! जहाँ नित्य ही हरिकथा होती है, मैं तुम्हें वहाँ भेजता हूँ जाकर सुनो। सुनते ही तुम्हारे समस्त सन्देह जाते रहेंगे और रामजीके चरणोंमें अत्यन्त स्नेह उत्पन्न होगा ॥

दोहा—बिनु सतसंग न हरिकथा, तेहि बिनु मोह न भाग।
मोह गये बिनु रामपद, होइ न दृढ़ अनुराग ॥८४॥

बिना सत्संगके हरिकथा सुलभ नहीं है और बिना हरिकथाके अज्ञानता दूर नहीं होती। और बिना अज्ञानताके दूर हुए रामजीके चरणोंमें दृढ़ अनुराग नहीं होता ॥ ८४ ॥

मिलहिं न रघुपति बिनु अनुरागा ❀ किए जोग जप ज्ञान बिरागा
उत्तर दिशि सुन्दर गिरि नीला ❀ तहँ रह कागभुशुण्डि सुशीला

बिना अनुरागके केवल योग, जप, ज्ञान और वैराग्य होनेसे ही रघुनाथजी नहीं मिलते ॥ उत्तर दिशामें सुन्दर नीलगिरि पर्वत है, जहाँ सुशील कागभुशुण्डि निवास करते हैं ॥२॥

राम भक्ति पथ परम प्रवीना ❀ ज्ञानी गुन गृह बहु कालीना
राम कथा सोइ कहै निरन्तर ❀ सादर सुनहिं विविध विहंगवर

वे रामभक्तिके मार्गमें परम प्रवीण, ज्ञानी, गुणोंके स्थान और बहुत वृद्ध हैं ॥३॥ वे निरंतर रामजीका चरित्र कहते हैं और विविध प्रकारसे सुन्दर पक्षी आदरके साथ सुनते हैं ॥४॥

जाइ सुनहु तहँ हरिगुण भूरी ❀ होइहि मोह जनित दुख दूरी
मैं जब सब तेहि कहा बझाई ❀ चलेउ हर्षि मम पद शिर नाई

वहाँ जाकर भगवान्‌का अत्यन्त यश सुनो, इससे मोहवश उत्पन्न हुआ दुःख दूर हो जायेगा ॥५॥ जब मैंने उनको सब समझाकर कहा, तब प्रसन्न हो मेरे चरणोंमें मस्तक नवाकर गरुड़ चले ॥६॥

ताते उमा न मैं समुझावा ❀ रघुपति कृपा मर्म सब पावा
होइहि कीन्ह कबहुँ अभिमाना ❀ सो खोवा चह कृपानिधाना

शिवजीने कहा—हे पार्वती! मैंने इसलिए नहीं समझाया कि सब मर्म मुझे रामकी कृपासे ज्ञात हो गया था कि गरुड़ने कभी गर्व किया होगा, उसको रामजी नष्ट करना चाहते हैं ॥

कछु तेहिते पुनि मैं नहिं राखा ❀ खग जानै खग ही कै भाखा
प्रभु माया बलवन्त भवानी ❀ जाहि न मोह कवन अस ज्ञानी

फिर मैंने इसलिए भी अपने पास कुछ नहीं रखा कि पक्षीकी बोलीको पक्षी ही समझते हैं ॥ हे पार्वती! प्रभुकी माया बड़ी बलवती है ऐसा कौन ज्ञानी है, जिसे मोहित न किया हो ॥

दोहा—ज्ञानी भक्त शिरोमनि, त्रिभुवन पतिकर यान ।
ताहि मोह माया प्रबल, पामर करहिं गुमान ॥८५॥

जो ज्ञानी और भक्त शिरोमणि हैं, जिसपर त्रिभुववपति आरूढ़ होते हैं, उसे भी प्रबल माया ने मोहित कर लिया, फिर पामर मनुष्य तो क्या अभिमान करेंगे ? ॥८५॥

शिव बिरंचि कहँ मोहइ, को है बपुरा आन ।
अस जिय जानि भजहिं मुनि, मायापति भगवान ॥८६॥

जो माया महादेव और ब्रह्माको मोहित कर सकती है तो अन्य विचारे किस गिनती में हैं । हृदय में ऐसा जानकर मुनिजन मायापति भगवान् को भजते हैं ॥८६॥

गयउ गरुड़ जहँ बसै भुशुण्डी ❁ मति अकुण्ठ हरि भक्त अखंडी
देखि शैल प्रसन्न मन भयऊ ❁ माया मोह सोच श्रम गयऊ

जहां अखण्ड और प्रखर बुद्धिवाले कागभुशुण्डिजी रहते हैं, वहां गरुड़जी गये ॥१॥ उस पर्वत को देखकर मनमें प्रसन्न हुए और हृदय से माया, मोह और चिन्ता चली गई ॥२॥

करि तड़ाग मज्जन जल पाना ❁ बटतर गयउ हृदय हर्षाना
बृद्ध बृद्ध बिहंग तब आए ❁ सुनहिं राम के चरित सुहाए

सरोवर में स्नानकर और जलपान करके प्रसन्न हृदय से वट वृक्षके नीचे गये ॥३॥ वहां वृद्ध-वृद्ध पक्षी रामचन्द्रजी का सुन्दर चरित्र सुनने के लिए आए थे ॥४॥

कथा अरम्भ करै सो चाहा ❁ ताही समय गयउ खगनाहा
आवत देखि सकल खगराजा ❁ हर्षेउ बायस सहित समाजा

कागभुशुण्डिजी कथा कहना आरम्भ करना चाहते थे कि, उसी समय गरुड़जी वहां आ गये ॥ तब पक्षिराज को आते देखकर कागभुशुण्डिजी सारे समाज सहित प्रसन्न हुए ॥६॥

अति आदर खगपति कर कीन्हा ❁ स्वागत पूछि सुआसन दीन्हा
करि पूजा समेत अनुरागा ❁ मधुर बचन तब बोलेउ कागा

उन्होंने गरुड़जीका बड़ा आदर किया और कुशल-क्षेम पूछकर सुन्दर आसन दिया ॥७॥ उनका प्रेम के साथ पूजन करके कागभुशुण्डिजी मधुर वचन बोले ॥८॥

दोहा—नाथ कृतारथ भयउँ मैं, तव दर्शन खगराज ।
आयसु देहु सो करौं अब, प्रभु आयहु केहि काज ॥८७॥

हे नाथ खगराज ! तुम्हारे दर्शनसे मैं कृतार्थ हुआ, स्वामी का आगमन किस कार्य के लिये हुआ है । आज्ञा दीजिये अब उसे मैं करूँ ॥८७॥

सदा कृतारथ रूप तुम्ह, कह मृदु बचन खगेश ।
जाकी अस्तुति सादर, निज मुख कीन्ह महेश ॥८८॥

गरुड़जी ने मधुर वाणी से कहा—आप सदा कृतार्थ रूप हैं जिसकी प्रशंसा शिवजीने स्वयं अपने मुख से की है ॥८८॥

सुनहु तात जेहि कारन आयउँ ❀ सो सब भयउ दरस तव पायउँ
देखि परम पावन तव आश्रम ❀ गयउ मोह संशय नाना भ्रम

हे तात! सुनिए, जिस काम के लिए मैं आया हूँ, वह सब तो तुम्हारा दर्शन पाते ही पूरा हुआ। परम पवित्र आश्रम को देखकर नाना प्रकार का भ्रम, सन्देह और अज्ञान चला गया ॥

अब श्रीराम कथा अति पावनि ❀ सदा सुखद दुख पुंज नशावनि
सादर तात सुनावहु मोहीं ❀ बार बार बिनवौं प्रभु तोहीं

अब रामजी की अत्यन्त पवित्र, सदा सुख देनेवाली और दुःख-राशिको नष्ट करनेवाली कथा, हे तात! आदर के साथ मुझे सुनाइये! हे प्रभो! मैं बार-बार आपसे प्रार्थना करता हूँ ॥४॥

सुनत गरुड़ कै गिरा बिनीता ❀ सरल सुप्रेम सखद सुपुनीता
भयउ तासु मन परम उछाहा ❀ कहै लाग रघुपति गुन गाहा

गरुड़जी की सरल प्रेमपूर्वक सुख देनेवाली अत्यन्त पवित्र विनीत वाणी सुनकर ॥ ५ ॥ उनके मनमें परम उत्साह हुआ और रघुनाथजी के गुणों की कथा कहने लगे ॥६॥

प्रथमहिं अति अनुराग भवानी ❀ राम चरित सर कहेसि बखानी
पुनि नारद कर मोह अपारा ❀ कहेसि बहुरि रावन अवतारा
प्रभु अवतार कथा पुनि गाई ❀ तब शिशु चरित कहेसि मन लाई

हे पार्वती! उन्होंने पहले बड़े प्रेम से रामचरित मानस सरोवर का वर्णन किया ॥७॥ फिर नारदजी के अपार मोह का वर्णन कर_रावणका जन्म कहा ॥८॥ फिर श्रीरामचन्द्र जी के अवतार की कथा गाई और बालचरित मन लगाकर वर्णन किये ॥६॥

दोहा—बाल चरित कहि बिबिध बिधि, मन महँ परम उछाह।
ऋषि आगमन कहेसि पुनि, श्रीरघुबीर बिबाह ॥८९॥

नाना प्रकारके बालचरित्र का वर्णन कर, मन में अत्यन्त उत्साह सहित विश्वामित्र मुनि का आगमन कहकर फिर श्रीरामचन्द्रजी के विवाहोत्सव का वर्णन किया ॥८९॥

बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा ❀ पुनि नृप बचन राज रस भंगा
पुरबासिन कर बिरह बिषादा ❀ कहेसि राम लछिमन संवादा

फिर राम राज्याभिषेक का प्रबंध, फिर दशरथजी का प्रतिज्ञा पालन के लिए राज्य-रस का भङ्ग॥ नगरवासियों का वियोग तथा दुःख और फिर श्रीराम-लक्ष्मण का सम्वाद कहा॥

बिपिन गमन केवट अनुरागा ❀ सुरसरि उतरि निवास प्रयागा
बालमीकि प्रभु मिलन बखाना ❀ चित्रकूट जिमि बस भगवाना

फिर श्रीरामचन्द्रजी का बन में जाना, केवट-प्रेम, गंगा उतरकर प्रयाग में निवास॥ वाल्मीकि और रामचन्द्रजी का मिलाप कहा और जैसे भगवान् चित्रकूट में रहे, वह प्रसंग कहा ॥४॥

सचिवागमन नगर नृप मरणा ❀ भरतागमन प्रेम बहु बरणा
करि नृपक्रिया संग पुरबासी ❀ भरत गये जहँ प्रभु सुखरासी

फिर मन्त्री का अयोध्या लौटना, राजा का मरना, भरतजी का आना और उनका अत्यंत प्रेम वर्णन किया ।।५।। फिर भरतजी का दशरथ की क्रिया कर पुरवासियों सहित जहाँ श्रीरामचन्द्रजी थे, वहाँ जाना कहा ।।६।।

पुनि रघुपति बहु बिधि समुझाये ❀ लै पादुका अवधपर आये
भरत रहनि सुरपति-सुत करनी ❀ प्रभु अरु अत्रि भेंट पुनि बरनी

फिर भरतजी को रामचन्द्रजी ने बहुत तरह समझाया, तब वे पादुका लेकर अयोध्या आये ।।७।। भरतजी की स्थिति, इन्द्र के पुत्र की करनी तथा राम और अत्रि की भेंट कही ।।८।।

दोहा—कहि बिराधबध जेहि विधि, देह तजी सरभंग ।
बरनि सुतीछन प्रेम पुनि, मुनि अगस्त्य सतसंग ।।९०।।

जिस प्रकार से विराध का बध हुआ और शरभङ्ग मुनि ने शरीर त्यागा, वह कहकर सुतीक्ष्ण मुनि की प्रीति और रामचन्द्रजी तथा अगस्त्य का सत्संग कहा ।।९०।।

कहि दंडक बन पावनताई ❀ गीध मयत्री पुनि तेहि गाई
पुनि प्रभु पंचवटी कृत बासा ❀ भंजो सकल मुनिन की त्रासा

उन्होंने दण्डकारण्य की पवित्रता फिर जटायु गीध की मित्रता कही ।। १ ।। फिर रामचन्द्रजी का पंचवटी में निवास करना और मुनिजनों का सब भय मिटाना कहा ।।२।।

पुनि लछिमन उपदेश अनूपा ❀ सूर्पनखा जिमि कीन्ह कुरूपा
खरदूषन बध बहुरि बखाना ❀ जिमि सब मरम दशानन जाना

फिर रामचन्द्रजी का लक्ष्मण को अनुपम उपदेश और जैसे सूर्पणखा को कुरूप किया ।।३।। फिर खरदूषण का बध कहा, फिर रावण ने जिस तरह सब मर्म(भेद) जाना, वह कहा ।।४।।

दशकंधर मारीच बतकही ❀ जेहि विधि भई सो सब तेहि कही
पुनि माया सीता कर हरना ❀ श्रीरघुबीर बिरह कछु बरना

जिस प्रकार रावण और मारीच का वार्तालाप हुआ, वह सब उसने कहा ।। फिर माया की सीता का हरण होना तथा श्रीरामचन्द्रजी का विरह-वृत्तान्त कुछ वर्णन किया ।।६।।

पुनिप्रभुगीधक्रियाजिमिकीन्हीं ❀ बधि कबंध शबरिहिं गति दीन्हीं
बहुरि बिरह बरनत रघुबीरा ❀ जेहि बिधि गये सरोवर तीरा

फिर श्रीरामचन्द्रजी ने जिस प्रकार जटायु की क्रिया की, कबंध का बधकर शबरीको गति दी और फिर जैसे श्रीरामचन्द्रजी विरहका वर्णन करते हुए पम्पासरके तटपर गये, उसको कहा।।८।।

दोहा—प्रभु नारद संवाद कहि, मारुति मिलन प्रसंग ।
पुनि सुग्रीव मिताई, बालि प्रानकर भंग ।।९१।।

श्रीरामचन्द्रजी और नारदजी का संवाद कहकर हनुमान्‌जीके मिलने का प्रसंग कहा । फिर सुग्रीव से मित्रता करना और बालि-बध को कहा ।।९१।।

कपिहिं तिलक करि प्रभु कृत, शैल प्रवर्षण बास ।
बर्णत बर्षा शरद अरु, राम रोष कपि त्रास ।।९२।।

फिर सुग्रीव को राजतिलककर रामचन्द्रजीका पर्वत पर बसना, वर्षा और शरद ऋतुओं का वर्णन करते हुए श्रीरामचन्द्रजी का क्रोध करना और सुग्रीव का उनसे डरना कहा ॥९२॥

जेहि विधि कपिपति कीश पठाये ❀ सीता खोजन सकल सिधाये
विवर प्रवेश कीन्ह जेहि भाँती ❀ कपिन बहोरि मिला संपाती

फिर बानराधिपति सुग्रीव ने जिस प्रकार बन्दर भेजा और वे सब सीताजी को ढूंढ़ने गये ॥ बन्दरों ने जैसे विवर में प्रवेश किया और संपाती (जटायु का भाई) मिला था, वह कहा ॥२॥

सुनि सब कथा समीर कुमारा ❀ लाँघत भयेउ पयोधि अपारा
लंका कपि प्रवेश जिमि कीन्हा ❀ पुनि सीतहिं धीरज जिमि दीन्हा

सम्पाती से सब कथा सुनकर जैसे वायुपुत्र हनुमान् अपार समुद्रको लांघ गये। फिर बानर हनुमान्जीने जिस तरह लंकामें प्रवेश किया और सीताजी को जिस तरह धैर्य दिया, वह कहा ॥

बन उजारि रावनहिं प्रबोधी ❀ पुर दहि लाँघेउ बहुरि पयोधी
आये कपि सब जहँ रघुराई ❀ बैदेही कै कुशल सुनाई

हनुमान् का बन उजाड़कर, रावण को समझाना, लङ्कापुरी को जलाना ॥५॥ फिर समुद्र को लांघ आना तथा रघुनाथजी के पास जाकर बन्दरों ने सीताजी की कुशल सुनाया ॥६॥

सेन समेत यथा रघुबीरा ❀ उतरे जाइ बारिनिधि तीरा
मिला विभीषण जेहि विधि आई ❀ सागर निग्रह कथा सुनाई

जैसे श्रीरामचन्द्रजी सेना सहित समुद्र के तट पर जाकर उतरे ॥७॥ वहाँ जिस प्रकार विभीषण आकर मिला और समुद्र को वश कर लेने की कथा सुनाई ॥८॥

दोहा—सेतु बाँधि कपि सेन जिमि, उतरी सागर पार।
गयउ बशीठी बीरवर, जेहि विधि बालिकुमार ॥९३॥

फिर बन्दरों की फौज जिस तरह सेतु बांधकर समुद्र के पार उतरी और शूर वीरों में उत्तम बालिपुत्र जैसे दूत बनकर लंका गये, वह कहा ॥९३॥

निशिचर कीस लराई, बरनेसि विविध प्रकार।
कुम्भकरन घननादकर, बल पौरुष संहार ॥९४॥

फिर राक्षसों और बानरों की लड़ाई नाना प्रकार से वर्णन की और कुम्भकर्ण तथा मेघनाद के बल और पुरुषार्थ का संहार-निरूपण किया ॥९४॥

निशिचरनिकरमरणविधिनाना ❀ रघुपति रावण समर बखाना
रावण बध मन्दोदरि शोका ❀ राज विभीषण देय अशोका

राक्षसों के समूहों का मरण और रामचन्द्रजी तथा रावण का युद्ध अनेक प्रकार से कहा ॥ रावण का बध, मन्दोदरी का शोक और विभीषण को निष्कंटक राज्य देना कहा ॥२॥

सीता रघुपति मिलन बहोरी ❀ सुरन्ह कीन्ह अस्तुति कर जोरी
पुनि पुष्पक चढ़ि सीय समेता ❀ अवध चले प्रभु कृपानिकेता

फिर सीता-रामका मिलन कहा और देवताओं ने हाथ जोड़कर जो स्तुति की थी सो कहा। फिर जो पुष्पक विमानपर कृपानिधान अयोध्यापुरी को चले, वह सब वर्णन किया ॥४॥

जेहि विधि राम नगर निज आये ❀ बायस बिसद चरित सब गाये
कहेसि बहोरि राम अभिषेका ❀ पुर बरनन नृप नीति अनेका

जिस तरह रामचन्द्रजी अपने नगर में आये, वह सब निर्मल चरित्र कागभुशुण्डीजीने कहा। फिर रामचन्द्रजीका राज्याभिषेक, नगर का वर्णन और अनेक प्रकार की राजनीति को कहा ॥

कथा समस्त भुशुण्डि बखानी ❀ जो मैं तुम सन कहा भवानी
सुनि शुभ राम कथा खगनाहा ❀ बिगत मोह मन परम उछाहा

शिवजी कहते हैं--हे पार्वती ! वह सारी कथा कागभुशुण्डिजी नें वर्णन की, जो मैंनें तुमसे कही ॥ तब रामचन्द्रजी की शुभ कथा सुनकर पक्षिराज आनन्दित होकर यह वचन बोले ॥८॥

सोरठा—गयउ मोर संदेह, सुनेउँ सकल रघुपति चरित।
भयउ रामपद नेह, तव प्रसाद बायस तिलक ॥२॥

हे वायसकुल तिलक ! रामचन्द्रजीका सम्पूर्ण चरित्र सुनकर मेरा सन्देह दूर हो गया। और आपकी कृपासे रामचन्द्रजी के चरणोंमें स्नेह हुआ ॥२॥

मोहिं भयउ अति मोह, प्रभु बंधन रनमहँ निरखि।
चिदानन्द सन्दोह, राम विकल कारन कवन ॥३॥

प्रभु रामचन्द्रजी को संग्राम में बँधा देखकर मुझे अत्यन्त मोह हुआ था कि रामजी चैतन्य आनन्द के राशि हैं, वे किस कारण से व्याकुल हैं ॥३॥

देखि चरित अति नर अनुहारी ❀ भयउ हृदय मम संशय भारी
सो भ्रम अब मैं हितकर माना ❀ कीन्ह अनुग्रह कृपानिधाना

मनुष्य के समान अनेक चरित्र देखकर मेरे हृदय में बड़ा संदेह हुआ था ॥१॥ पर वह भ्रम मैंने अब अपना हितकर माना इसी बहाने से कृपानिधान रामजी ने अनुग्रह किया ॥२॥

जो अति आतप व्याकुल होई ❀ तरु छाया सुख जानै सोई
जो नहिं होत मोह अति मोहीं ❀ मिलतेउँ तात कवन विधि तोहीं

जो बहुत धूप से व्याकुल होता है, वही वृक्ष की छाया के सुखको जानता है ॥३॥ हे तात ! यदि मुझे वह महामोह न होता तो मैं तुमसे किस तरह से मिलता ? ॥४॥

सुनतेउँ किमि हरि कथा सुहाई ❀ अति विचित्र बहु बिधि तुम गाई
निगमागम पुरान मत एहा ❀ कहहिं सिद्ध मुनि नहिं संदेहा

मैं भगवान् की वह सुहावनी कथा कैसे सुनता जिसका तुमने अत्यन्त अद्भुत ढंग से गान किया। वेद-पुराण और शास्त्रों का यही मत है और सिद्ध तथा मुनि भी यही कहते हैं, इससे संदेह नहीं ॥

संत विशुद्ध मिलहिं पुनि तेही ❀ चितवहिं रामकृपा करि जेही
रामकृपा तव दर्शन भयऊ ❀ तव प्रसाद मम संशय गयऊ

फिर विशुद्ध संत उसी को मिलते हैं जिनको रामजी कृपादृष्टि से देखते हैं ।।७।। रामजीको कृपा से आप के दर्शन हुए और आप की कृपा से मेरा सन्देह दूर हुआ ।।८।।

दोहा—सुनि बिहंगपति बानी, सहित विनय अनुराग ।
पुलकगात लोचन सजल, मन हर्षेउ अति काग ।।९५।।

पक्षिराजकी विनती और अनुरागपूर्ण वाणी सुनकर कागभुशुण्डिजी मन में बहुत प्रसन्न हुए । उनका शरीर पुलकित हो गया और आँखों में जल भर आया ।।९५।।

श्रोता—सुमति सुशील सचि, कथा रसिक हरिदास ।
पाइ उमा यह गोप्य मत, सज्जन करहिं प्रकाश ।।९६।।

सुन्दर बुद्धिवाले, सुशील, पवित्र कथा के प्रेमी और हरिभक्त श्रोता मिलने पर हे पार्वती! सज्जन लोग अत्यन्त गोप्य बात भी प्रगट कर देते हैं ।।९६।।

बोलेउ कागभुशुण्डि बहोरी ❁ नभगनाथ पर प्रीति न थोरी
सब बिधि नाथ पूज्य तुम मेरे ❁ कृपापात्र रघुनायक केरे

फिर कागभुशुण्डिजी बोले—उनकी गरुड़जी पर थोड़ी प्रीति नहीं है अर्थात् बहुत है ।।१।। हे नाथ ! आप हमारे सब तरह से पूज्य और श्रीरामचन्द्रजीके कृपापात्र हैं ।।२।।

तुमहिं न संशय मोह न माया ❁ मो पर नाथ कीन्ह तुम दाया
पठय मोह मिसु खगपति तोहीं ❁ रघुपति दीन्ह बड़ाई मोहीं

आप को न सन्देह है न मोह और न माया, हे नाथ ! आपने मुझपर कृपा की है ।।३।। हे पक्षिराज! मोह के बहानें से रघुनाथजी ने आपको यहाँ भेजकर मुझे बड़ाई दी है ।।४।।

तुम निज मोह कहा खगराई ❁ सो नहिं कछु आश्चर्य गुसाईं
नारद शिव बिरंचि सनकादी ❁ जे मुनिनायक आतम वादी

हे गरुड़जी ! तुमने अपना मोह कहा, सो हे स्वामी ! यह कुछ आश्चर्य की बात नहीं है ।।५।। नारद, शिव, ब्रह्मा तथा सनकादि मुनीश्वर जो आत्मज्ञानी हैं—।।६।।

मोह न अन्ध कीन्ह केहि केही ❁ को जग काम नचाव न जेही
तृष्णा केहि न कीन्ह बौराहा ❁ केहि कर हृदय क्रोध नहिं दाहा

मोह ने किसको अंधा नहीं किया ? संसार में ऐसा कौन है, जिसे कामदेव ने नचाया न हो ? ।। तृष्णा ने किसको पागल नहीं किया और क्रोध ने किसके हृदय को नहीं जलाया?।।

दोहा—ज्ञानी तापस शूर कवि, कोविद गुन आगार ।
केहिके लोभ बिडंबना, कीन्ह न यहि संसार ।।९७।।

ज्ञानी, तपस्वी, शूरवीर, कवि, विद्वान् और गुणनिधान इनमें से इस ससार में लोभ ने किसकी विडम्बवा नहीं कर डाला ।।९७।।

श्रीमद बक्र न कीन्ह केहि, प्रभुता बधिर न काहि ।
मृगनयनी के नयन सर, को अस लाग न जाहि ।।९८।।

लक्ष्मी के मद ने किसको टेढ़ा नहीं किया और प्रभुताने किसे बहरा नहीं बनाया ?। मृगलोचनी स्त्रियों के नेत्ररूपी बाण, कौन ऐसा है जिसको न लगें हों ।।९८।।

गुनकृत सन्निपात नहिं केही ❁ को न मान मद ब्यापेउ जेही
यौवन ज्वर केहि नहिं बलकावा ❁ ममता केहिकर यश न नशावा

गुणों का किया हुआ सन्निपात किसको नहीं होता है ? ऐसा कौन है जिसे मान और मद नहीं व्यापा ? यौवनरूपी ज्वर ने किसे नहीं बलकाया ? ममता ने किसके यशको नष्ट नहीं किया ?।।

मत्सर काहि कलंक न लावा ❁ काहि न शोक समीर डोलावा
चिन्ता साँपिनि काहि न खाया ❁ को जग जाहि न व्यापी माया

ईर्ष्या और डाह ने किसे कलंक नहीं लगाया ? शोकरूपी पवन ने किसे नहीं हिलाया ? चिन्तारूपी साँपिनि ने किसे नहीं डँसा । संसार में ऐसा कौन है जिसे माया न व्यापी हो ?।।

कोट मनोरथ दारु शरीरा ❁ जेहि न लाग घुन को अस धीरा
सुत वित नारि ईषणा तीनी ❁ केहिकी मति इन्ह कृत न मलीनी

शरीररूपी काठ में मनोरथरूपो घुन जिसको न लगा हो, ऐसा कौन-सा मतिधीर है ? पुत्र, धन और स्त्री ये तीन प्रकार की इच्छाएँ हैं, जिन्होंने किसकी बुद्धि को मलिन नहीं किया ।।

यह सब माया कर परिवारा ❁ प्रबल अमित को बरनै पारा
शिव चतुरानन देखि डेराहीं ❁ अपर जीव कहि लेखे माहीं

यह सब माया का बड़ा प्रबल परिवार है, इसका वर्णन कर कौन पार पा सकता है ? शिव और ब्रह्मा भी देखकर डरते हैं, फिर दूसरे जीव तो किस गिनती में हैं ।।८।।

दोहा—व्यापि रहेउ संसार महँ, माया कटक प्रचण्ड ।
सेनापति कामादि भट, दंभ कपट पाखण्ड ।। ९९ ।।

माया की प्रचण्ड सेना संसार में व्याप रही है जिसके काम, क्रोध और लोभ सेनापति हैं, अभिमान, छल-पाखण्ड आदि योद्धा हैं ।।९९।।

सो दासी रघुबीर की, समुझे मिथ्या सोऽपि ।
छूट न राम कृपा बिनु, नाथ कहौं प्रण रोपि ।।१००।।

वह माया रघुनाथजी की दासी और समझ लेने पर वह निश्चय झूठी है। कागभुशुण्डिजी कहते हैं, हे नाथ ! प्रतिज्ञा करके कहता हूँ कि बिना रामजीकी कृपा से वह छूट नहीं सकती ।।१००।।

जो माया सब जगहि नचावा ❁ जासु चरित लखि काहु न पावा
सोइ प्रभु भ्रू बिलास खगराजा ❁ नाच नटी इव सहित समाजा

जिस माया ने सारे जगत् को नचाया और जिसके चरित्र को किसी ने न देख पाया ।। हे पक्षिराज ! वही माया स्वामी की भृकुटि के विलास से अपने समाज सहित नटी जैसी नाचती है ।।

सोइ सच्चिदानन्दघन रामा ❁ अज विज्ञान रूप गुण धामा
व्यापक व्याप्य अखंड अनन्ता ❁ अखिल अमोघ शक्ति भगवन्ता

श्रीरामचन्द्रजी वही सत्, चित्, आनन्दघन, चैतन्यरूप, अखण्ड, अज, विज्ञानरूप, गुण के घर हैं, भगवान् व्यापक और व्याप्य, अखण्ड, अनन्त, सम्पूर्ण अमोघ शक्तिमय हैं ॥

अगुण अदभ्र गिरा गोतीता ❀ समदरशी अनवद्य अजीता
निर्मम निराकार निर्मोहा ❀ नित्य निरंजन सुख संदोहा
जिमि शिशु तन ब्रण होइ गुसाईं ❀ मातु चिराव कठिन की नाईं

वे निर्गुण, पूर्ण, वाणी और इन्द्रियों से अगम्य, समदर्शी, अनिद्य और अजित हैं। वे निर्मम, निराकार, निर्मोह, नित्य निरंजन और सुखके समूह हैं। इसलिये कृपानिधान रामचन्द्र जी भक्तों के अभिमान का नाश कर देते हैं, उन्हें भक्तों पर बड़ी ममता है, हे गुसाईं! जैसे बालक के शरीर में ब्रण (फोड़ा) हो जाय, तो माता खड़ी होकर उसको चिरा देती है ॥

प्रकृति पार प्रभु सब उरबासी ❀ ब्रह्म निरीह बिरज अविनासी
इहाँ मोहकर कारण नाहीं ❀ रबि सनमुख तम कबहुँ कि जाहीं

हे स्वामी! प्रकृति से परे, सबके हृदय के निवासी, ब्रह्म, शुद्ध और अविनाशी हैं ॥ वहाँ मोह का कारण नहीं लग सकता, क्या कभी अँधेरा सूर्य के सन्मुख जा सकता है? ॥ ९ ॥

दोहा—भक्तहेतु भगवान् प्रभु, राम धरेउ तनु भूप।
किय चरित्र पावन परम, प्राकृत नर अनुरूप ॥१०१॥

भगवान् रामजी ने भक्तों के कारण राजा का शरीर धारण किया और परम पवित्र चरित्र साधारण मनुष्यों के समान किया ॥ १०१ ॥

यथा अनेक वेष धरि, नृत्य करै नट कोइ।
जो जो भाव दिखावइ, आप न होइ न सोइ ॥१०२॥

जैसे अनेक वेष धारण करके कोई नट नृत्य करता है और जो-जो भाव दिखलाता है, उसमें वह स्वयं वही हो जाता, पर सचमुच वह नहीं रहता है ॥ १०२ ॥

अस रघुपति लीला उरगारी ❀ दनुज बिमोहन जन सुखकारी
जे मति मलिन विषय वश कामी ❀ प्रभु पर मोह धरहिं इमि स्वामी

हे गरुड़जी! रामजी की ऐसी लीला राक्षसों को मोहक और भक्तों को सुखकारी है ॥ हे स्वामी! जो मलिन और कामी हैं, वे प्रभु के ऊपर अज्ञानतावश दोषारोपण करते हैं ॥२॥

नयन दोष जाकहँ जब होई ❀ पीत बरन शशि कहँ कह सोई
जब जेहि दिशि भ्रम होइ खगेशा ❀ सो कह पच्छिम उगेउ दिनेशा

जब जिसके नेत्र में विकार हो जाता है, तब वह चन्द्रमा को पीले रंग का कहता है। हे पक्षिराज! जब किसी को दिशाभ्रम हो जाता है तब वह सूर्यको पश्चिम में उदय हुआ कहता है।

नौकारूढ़ चलत जग देखा ❀ अचल मोहवश आपुहिं लेखा
बालक भ्रमहिं न भ्रमहिं गृहादी ❀ कहहिं परस्पर मिथ्यावादी

नौकारूढ़ संसार को चलता हुआ देखता है, और अज्ञानतावश अपने को अचल समझता है। बालक घूमते हैं घर आदि नहीं, वे मिथ्यावादी हैं जो घर आदि को घूमना कहते हैं ॥

हरि विषइक अस मोह बिहंगा ❀ सपनेहुँ नहिं अज्ञान प्रसंगा
मायाबश मतिमन्द अभागी ❀ हृदय यवनिका बहु बिधि लागी
ते शठ हठवश संशय करहीं ❀ निज अज्ञान रामपर धरहीं

हे गरुड़जी ! श्रीरामचन्द्रजी के विषय में मोह का प्रसंग ऐसा ही है। परन्तु उनके संबंध में अज्ञान या मोह की बात स्वप्न में भी नहीं ठहर सकती ॥ मन्द बुद्धि अभागे लोग माया के वश में हो रहे हैं, उनके हृदय के समक्ष अनेक प्रकार के पर्दे पड़े हैं ॥ वे दुष्ट हठ के वश संशय करते हैं और अपनी अज्ञानता रामचन्द्रजी पर धरते हैं ॥

दोहा—काम क्रोध मद लोभरत, गृहासक्त दुखरूप ।
ते किमि जानहिं रघुपतिहिं, मूढ़ परे तमकूप ॥१०३॥

जो काम, क्रोध, मद, लोभ में तत्पर रहते हैं और दुःख-रूप घर के कार्यों में आसक्त हैं, वे रघुनाथ जी को कैसे जान सकते हैं ? वे मूर्ख स्वयं ही अज्ञावता-रूपी अंधकारम यकुएँ में पड़े हैं । १०३ ॥

निर्गुन रूप सुलभ अति, सगुन न जानहिं कोइ ।
सुगम अगम नाना चरित, सुनि मुनि मन भ्रम होइ ॥१०४॥

निर्गुण रूप अत्यन्त सुलभ है, सगुण रूप को कोई जानता ही नहीं। भगवान् का निर्गुणरूप सुगम और सगुणरूप दुर्गम है यह सुनकर मुनियों के मन में भी भ्रम हो जाता है ॥ १०४ ॥

सुनु खगेश रघुपति प्रभुताई ❀ कहहुँ यथा मति कथा सुहाई
जेहि विधि मोह भयउ प्रभु मोहीं ❀ सो सब कथा सुनावौं तोहीं

हे गरुड़ ! श्रीरामचन्द्रजी की प्रभुता सुनिये, जिसकी सुहावनी कथा मैं यथाबुद्धि कहता हूँ ॥ १ ॥ हे प्रभो ! जिस प्रकार मुझे मोह हुआ था, वह सब कथा आपको सुनाता हूँ ॥ २ ॥

राम कृपा भाजन तुम ताता ❀ हरि गुन प्रीति मोहिं सुखदाता
ताते नहिं कछु तुमहिं दुरावौं ❀ परम रहस्य मनोहर गावौं

हे तात ! आप रामचन्द्रजी के कृपा पात्र हैं, भगवान् के गुणों में आप की प्रीति है, आप मुझे सुख देने वाले हैं। इसलिए मैं आपसे कुछ भी न छिपाऊंगा और बहुत ही सुन्दर रहस्य गाऊँगा ॥४॥

सुनहु रामकर सहज स्वभाऊ ❀ जन अभिमान न राखहिं काऊ
संसृति मूल शूलप्रद नाना ❀ सकल शोकदायक अभिमाना

सुनिए, श्रीरामचन्द्रजी का यह सहज स्वभाव है कि, वे अपने सेवक में अभिमान नहीं रहने देते ॥ अभिमान संसार का मूल हैं और यही नाना प्रकार के शोकों को देनेवाला है ॥६॥

ताते करहिं कृपानिधि दूरी ❀ सेवक पर ममता अति भूरी
जिमि सिसु तन ब्रन होइ गोसाईं ❀ मातु चिराव कठिनकी नाईं

इससे कृपा-निधान राम अपने भक्त का शोक दूर करते हैं क्योंकि उनकी सेवक पर बड़ी ममता है ॥ जैसे बालकके शरीर में हुए फोड़े को माता कठिन होकर उसे चिरवा देती है ॥

दोहा—यदपि परम दुख पावइ, रोवै बाल अधीर ।
व्याधि नाश हित जननी, गनत न सो शिशु पीर ॥१०५॥

यद्यपि नश्तर लगाने पर पहले बालक दुःख पाकर अधीर होकर रोने लगता है। तो भी उसका रोग नाश होने के लिए माता बालक की उस पीड़ा को नहीं गिनती है ॥ १०५ ॥

दोहा—तिमि रघुपति निज दास कर, हरहिं मान हित लागि।
तुलसिदास ऐसे प्रभुहिं, कस न भजसि भ्रम त्यागि ॥१०६॥

इसी प्रकार श्रीरामचन्द्रजी अपने दास का अभिमान, उसके हित के लिए नष्ट कर देते हैं। तुलसीदासजी कहते हैं कि (हे मन) तू ऐसे स्वामी को भ्रम छोड़कर क्यों नहीं भजता ! ॥

राम कृपा आपनि जड़ताई ❁ कहहुँ खगेश सुनहु मनलाई
जब जब राम मनुज तन धरहीं ❁ भक्त हेतु लीला बहु करहीं

हे गरुड़जी ! अब श्रीरामचन्द्र की कृपा और अपना मूर्खता कहता हूँ, मन लगाकर सुनिये। जब-जब रामजी मनुष्य शरीर धारण करते और भक्तों के कारण लीलायें करते हैं ॥

तब तब अवधपुरी मैं जाऊँ ❁ बाल चरित बिलोकि हरषाऊँ
जनम महोत्सव देखौं जाई ❁ वर्ष पाँच तहँ रहउँ लोभाई

तब-तब मैं अयोध्यापुरी में जाता हूँ और बाल-चरित्र देख कर प्रसन्न होता हूँ ॥ मैं जाकर राम-जन्म का महोत्सव देखता हूँ और उनमें भुलाकर पाँच वर्ष पर्यन्त वहीं रहता हूँ ॥४॥

इष्टदेव मम बालक रामा ❁ सोभा बपुष कोटि शत कामा
निज प्रभु बदन निहारि निहारी ❁ लोचन सुफल करउँ उरगारी
लघु बायस बपुधरि हरि संगा ❁ देखौं बाल चरित बहु रंगा

हमारे इष्ट देव बालरूप राम हैं, कि जिनके शरीर की सुन्दरता करोड़ों कामदेव की तरह है ॥ मैं अपने प्रभु के शरीर को बार-बार देख कर अपना लोचन (नेत्र) सुफल करता हूँ ॥ और छोटे कौवे का रूप धारण कर अनेक प्रकार की बाल-लीलायें देखता हूँ ॥ ७ ॥

दोहा—लरिकाई जहँ जहँ फिरहिं, तहँ तहँ संग उड़ाउँ।
जूठन परै अजिर महँ, सोइ उठाय कर खाउँ ॥१०७॥

श्रीरामचन्द्रजी लड़कपन में जहाँ-जहाँ फिरते वहाँ-वहाँ मैं भी उनके साथ उड़ता था, आँगन में उनका जो जूठन पड़ता था, उसको उठा कर मैं खा लेता था ॥ १०७ ॥

एक बार अति शैशव, चरित किये रघुबीर।
सुमिरत प्रभु लीला सोइ, पुलकित भयउ शरीर ॥१०८॥

एक बार रामचन्द्रजी ने बहुत बाल चरित्र किये। प्रभु रामचन्द्रजी की उस लीला का स्मरण करते ही शरीर पुलकित हो गया ॥ १०८ ॥

कहै भुशुण्डि सुनहु खगनायक ❁ रामचरित सेवक सुखदायक
नृप मन्दिर सुन्दर सब भाँती ❁ खचित कनक मनि नाना जाती

कागभुशुण्डिजी कहते हैं, हे खगनाथ! सुनिये, रामचरित सेवकों को आनंद प्रदान करता है॥ राज महल सब तरह से सुन्दर था, सुवर्ण और नाना प्रकार की मणियों से जड़ा हुआ था ॥

बरनि न जाइ रुचिर अँगनाई ❁ जहँ खेलहिं नित चारिउ भाई
बाल बिनोद करत रघुराई ❁ बिचरत अजिर जननि सुखदाई

उस सुन्दर आँगन का वर्णन नहीं किया जा सकता, जहाँ चारों भाई खेलते थे ।। श्रीरामचन्द्रजी बाल लीला करते थे, और आँगन में विचरण कर माताओंको सुख देते थे ।।

मरकत मृदुल कलेवर श्यामा ❀ अंग अंग प्रति छबि बहु कामा
नव राजीव तरुण मृदु चरना ❀ पद पंकज नख शशि द्युति हरना

नीलमणि के समान श्याम रंग का कोमल शरीर प्रत्येक अँगमें बहुतसे कामदेवों की शोभा ।। नवीन कमल के समान लाल कोमल चरण और अँगुलियों के नख चन्द्रमा की कांति को हरने वाले थे ।।

ललित अंग कुलिशादिक चारी ❀ नूपुर चारु मधुर रवकारी
चारु पुरट मनि रचित बनाई ❀ कटि किंकिनिकल मुखर सुहाई

चरणों में वज्र, अंकुश, ध्वजा, कमल-चारों मनोहर चिन्ह और शब्द करने वाले नूपुर ।। कमर में सोने की सुन्दर करधनी मणियों से रच कर बनाई गई थी और कमर में वह करधनी सुन्दर शब्द कर रही थी ।।

दोहा—रेखात्रय सुन्दर उदर, नाभि रुचिर गंभीर ।
उर आयत भ्राजत विविध, बाल विभूषण चीर ।।१०९।।

उदर पर सुन्दर तीन रेखाएँ थीं और नाभि गहरी और मनोहर थी । विशाल वक्षस्थल पर बालकपनके अनेक भूषण और वस्त्र सुशोभित थे ।। १०९ ।।

अरुण पाणि नख करज मनोहर ❀ बाहु बिशाल बिभूषन सुन्दर
कंध बाल केहरि दर ग्रीवाँ ❀ चारु चिबुक आनन छबि सीवाँ

हाथों की अँगुलियाँ लाल और नख मनोहर थे, विशाल बाहुओं में सुन्दर आभूषण शोभित थे ।। सिंह शावक के समान कन्धा, शंख के समान गला और मुख शोभा की सीमा था ।।

कलबल बचन अधर अरुनारे ❀ दुइ दुइ दशन विशद बर बारे
ललित कपोल मनोहर नासा ❀ कमल सुखद ससिकर सम हासा

उनकी तोतली वाणी, लाल-लाल हाथ और सुन्दर तथा श्वेत छोटी-छोटी दो दँतुलियाँ थीं ।। सुन्दर कपोल, मनोहर नाक और सबको सुख देनें वाली चन्द्रमा की किरणों के समान हँसी थी ।।

नीलकंज लोचन भव मोचन ❀ भ्राजत भाल तिलक गोरोचन
बिकट भृकुटि सम श्रवण सुहाये ❀ कुंचित कच मेचक छबि छाये

नील कमल के समान नेत्र भव-बन्धन से छुड़ाने वाले थें, मस्तक पर गोरोचन का तिलक शोभित था । टेढ़ी भौंहें, सुन्दर समान कान और घुँघराले काले बाल शोभायमान हो रहे थे ।

पीत झीन झँगुली तनु सोही ❀ किलकनि चितवनि भावति मोहीं
रूपराशि नृप अजिर बिहारी ❀ नाचहिं निज प्रतिबिम्ब निहारी

पीले पतले-वस्त्र की अंगरखी शरीर पर थी, जिनकी किलकारी और चितवन मुझे अच्छी लगती थी ।। राज-भवन के आँगन में रूप की राशि रामचन्द्रजी अपनी परछाहीं देख कर नाचते थे ।।

मोसन करहिं विविध विधि क्रीड़ा ❀ बरनत चरित होति मोहिं व्रीड़ा
किलकत मोहिं धरन जब धावहिं ❀ चलउँ भाजि तब पूप दिखावहिं

मुझसे नाना प्रकार की क्रीड़ा करते थे, उस चरित्र का वर्णन करते हुए मुझे लज्जा आती है। जब किलकारी मार कर मुझे पकड़ने दौड़ते तब मैं भाग जाता, तो वे मुझे पूप (मालपुआ) दिखाते ॥

दोहा—आवत निकट हँसहिं प्रभु, भाजत रुदन कराहिं।
जाउँ समीप गहन पद, फिरि फिरि चितै पराहिं ॥११०॥

प्रभु श्रीरामचन्द्रजी मेरे समीप जाने पर हँसते और मैं भागता तो रोने लगते। मैं पाँव पकड़ने की इच्छा से पास जाता तो मुझे बार-बार देखते हुए भागते जाते थे ॥ ११० ॥

प्राकृत शिशु इव लीला, देखि भयउ मोहिं मोह।
कवन चरित्र करत प्रभु, चितानन्द संदोह ॥१११॥

तब उन्हें साधारण बालक की भाँति लीला करते देख कर मुझे मोह हुआ कि, प्रभु तो सच्चिदानन्द और परब्रह्म हैं फिर यह कौन सा चरित्र करते हैं ! ॥ १११ ॥

इतना मन आनत खगराया ❋ रघुपति प्रेरित व्यापी माया
सो माया न दुखद मोहिं काहीं ❋ आन जीव इव संसृति नाहीं

हे गरुड़ ! इतना भाव मन में आते ही श्रीरामचन्द्रजी की प्रेरणा से मुझे माया व्याप गई। परन्तु वह माया मुझे दुखदाई नहीं हुई और अन्य जीवों की भाँति संसार में न गिरा सकी ॥

नाथ इहाँ कछु कारण आना ❋ सुनहु सो सावधान हरियाना
ज्ञान अखण्ड एक सीतावर ❋ मायाबस्य जीव सचराचर

हे गरुड़ ! यहाँ कुछ और ही कारण था, उसे सावधान हो कर सुनो ॥ एक श्रीसीतापति श्रीरामचन्द्रजी ही अखण्ड और ज्ञानके भण्डार हैं और सब चराचर जीव माया के वश में हैं ॥

जो सबके रह ज्ञान एक रस ❋ ईश्वर जीवहिं भेद कहहु कस
माया बस्य जीव अभिमानी ❋ ईश बस्य माया गुन खानी

जो सबका ज्ञान एक ही रस रहे, तो फिर कहो ईश्वर और जीव में क्या भेद रहे ? ॥५॥ अभिमानी जीव माया के वश में हैं और गुणों की खानि माया ईश्वर के वश में है ॥६॥

परवश जीव स्ववश भगवन्ता ❋ जीव अनेक एक श्रीकन्ता
द्विविध भेद जद्यपि कृतमाया ❋ बिनु हरि जाइ न कोटि उपाया

ज़ीव पराधीन हैं और भगवान् स्वाधीन, जीव अनेक हैं, ईश्वर एक है ॥ यद्यपि माया के कारण जीव और ईश्वर में दो प्रकार के भेद हैं, बिना भगवान् की कृपा के माया नहीं छूटती ॥

दोहा—रामचन्द्र के भजन बिनु, जो चह पद निर्वान।
ज्ञानवन्त अपि सो नर, पशु बिनु पूछ विषान ॥११२॥

मनुष्य चाहे जैसा भी ज्ञानी हो, परन्तु रामचन्द्रजी के भजन के बिना निर्वाण-पद चाहे तो वह बिना पूँछ और सींग का पशु ही है ॥ ११२ ॥

राकापति षोडश उर्गहिं, तारागण समुदाय।
सकल गिरिन दव लाइय, बिनु रवि राति न जाय ॥११३॥

चाहे चन्द्रमा सोलह कलाओं से उदय हों, सभी तारा गण भी उदय हों और पर्वतों में भी आग लग जाये, परन्तु बिना सूर्य के रात्रि नहीं जाती ।। ११३ ।।

ऐसे बिन हरिभजन खगेशा ❀ मिटै न जीवन केर कलेशा
हरि सेवकहिं न ब्याप अविद्या ❀ प्रभु प्रेरित तेहि व्यापे विद्या

ऐसे ही हे गरुड़ ! भगवद्-भजन बिना जीवों का क्लेश नहीं नष्ट होता ।।१।। भगवान् के सेवक को अविद्या नहीं व्यापती है ।। २ ।।

ताते नाश न होइ दासकर ❀ भेद भक्ति बाढ़ै बिहंगवर
भ्रमते चकित राम मोहिं देखा ❀ बिहँसे सो सनु चरित विशेखा

इसलिए सेवक का नाश नहीं होता, हे पक्षिश्रेष्ठ ! भेद से भक्ति की वृद्धि होती है ।।३।। रामजी मुझे भ्रम से चकित देख कर हँसे, उस विशेष चरित्र को सुनिए ।। ४ ।।

तेहि कौतुक कर मर्म न काहू ❀ जाना अनुज न मात पिताहू
जानु पानि धाए मोहिं धरना ❀ श्यामल गात अरुण कर चरना

उस चरित्र के मर्म को उनके किसी भाई और माता-पिता ने भी नहीं जाना ।। हाथ और घुटने के बल (बकइयां चाल से) पकड़ने को दौड़े जिनके श्याम शरीर और हाथ पैर लाल थे ।।

तब मैं भागि चलेउँ उरगारी ❀ राम गहन कहँ भुजा पसारी
जिमि जिमि दूरि उड़उँ अकाशा ❀ तिमि तिमि भुज देखौं निज पासा

हे गरुड़जी ! तब मैं भाग चला और रामजी ने पकड़ने के लिए बाहें फैलायीं ।। मैं ज्यों-ज्यों आकाश में दूर उड़ता जाता था, त्यों-त्यों भगवान् की भुजाओं को अपने पास देखता था ।।

दोहा—ब्रह्मलोक लगि गयउँ मैं, चितयउ पाछ उड़ात ।
जुग अंगुल कर बीच रह, राम भुजहिं मोहिं तात ।।११४।।

मैं ब्रह्मलोक तक गया, उड़ते हुए मैंने पीछे की ओर देखा तो हे तात, रामजी की भुजाओं में और मुझ में केवल दो अंगुल का अन्तर था ।। ११४ ।।

सप्तावरण भेद करि, जहँ लगि गति रहि मोरि ।
गयउँ तहाँ प्रभु भुज निरखि, व्याकुल भयउँ बहोरि ।।११५।।

सातो आवरणों को भेद कर जहाँ तक मेरी गति थी मैं गया । वहाँ भी प्रभु की भुजाओं को देख कर फिर व्याकुल हो गया ।। ११५ ।।

मूँदेउँ नयन त्रसित जब भयऊँ ❀ पुनि चितवत कोशलपुर गयऊँ
मोहिं बिलोकि राम मुसुकाहीं ❀ बिहँसत तुरत गयउँ मुखमाहीं

जब मैं भयभीत हुआ तब आँखें बन्द कर लीं, देखा तो अयोध्यापुरी में आ गया ।।१।। मुझे देख कर रामजी मुस्कराने लगे और उनके हँसते ही मैं उनके मुख में चला गया ।।२।।

उदर माँझ सुनु अंडज राया ❀ देखेउँ बहु ब्रह्माण्ड निकाया
अति विचित्र तहँ लोक अनेका ❀ रचना अधिक एकते एका

हे पक्षिराज ! सुनिए, उनके उदर में मैंने बहुत से ब्रह्माण्डों के समूह देखे ।। ३ ।। जहाँ अत्यंत विचित्र अनेकों लोक थे, जिनकी रचना एक से एक बढ़ कर थी ।। ४ ।।

कोटिन चतुरानन गौरीशा ❀ अगणित उडुगण रवि रजनीशा
अगनित लोकपाल यम काला ❀ अगणित भूधर भूमि विशाला

वहाँ करोड़ों, ब्रह्मा, शिव और असंख्य तारा गण, सूर्य, चन्द्रमा ।।५।। अगणित लोकपाल, यमराज, काल और असंख्य पर्वतों सहित विशाल भूमि मैंने देखा ।। ६ ।।

सागर सरि सर विपिन अपारा ❀ नाना भाँति सृष्टि विस्तारा
सुर मुनि सिद्ध नाग नर किन्नर ❀ चारि प्रकार जीव सचराचर

अपार समुद्र, नदी, सरोवर, बन तथा नाना प्रकार की लोक रचना का विस्तार ।।७।। देवता, मुनि, सिद्ध, नाग, मनुष्य, किन्नर और चारों प्रकार के जड़ चेतन जीव ।। ८ ।।

दोहा—जो नहिं देखा नहिं सुना, जो नहिं मनहुँ समाइ ।
सो सब अद्भुत देखेउँ, बरनि कवनि विधि जाइ ।।११६।।

जो न कभी देखा न सुना था, न मन में जिसकी कल्पना की थी, वह अद्भुत चरित्र वहाँ देखा, वह किस प्रकार वर्णन किया जाये ? ।। ११६ ।।

एक एक ब्रह्माण्ड महँ, रहेउँ वर्ष शत एक ।
यहि विधि मैं देखत फिरेउँ, अण्ड कटाह अनेक ।।११७।।

एक-एक ब्रह्माण्ड में सौ-सौ वर्ष तक रहा और इस प्रकार से अनेक ब्रह्माण्डों को देखता फिरा ।। ११७ ।।

लोक लोक प्रति भिन्न बिधाता ❀ भिन्न विष्णु शिव मनु दिशि त्राता
नर गंधर्व भूत बैताला ❀ किन्नर निशिचर पशु खग ब्याला

हर एक लोकमें अलग-अलग ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, मनु और दिग्पाल थे ।। मनुष्य, गन्धर्व, भूत, वैताल, किन्नर, पशु, पक्षी और सर्प थे ।।

देव दनुज गण नाना जाती ❀ सकल जीव तहँ आनहिं भाँती
महि सरि सागर सर गिरि नाना ❀ सब प्रपञ्च तहँ आनहिं आना

अनेक जातियों के देवता और दैत्यों के गण तथा सभी जीव वहाँ और ही तरह के थे ।। अनेक पृथ्वी, नदी, समुद्र, तालाब, पर्वत सभी प्रपंच (संसार) वहाँ और ही और था ।।

अंडकोष प्रति प्रति निज रूपा ❀ देखेउँ जिनिस अनेक अनूपा
अवधपुरी प्रति भुवन निहारी ❀ सरयू भिन्न भिन्न नर नारी

हर एक ब्रह्माण्ड में मैंने अपना प्रतिरूप देखा और अनेक अनुपम वस्तुएँ देखीं ।। हर ब्रह्माण्ड में अयोध्यापुरी भिन्न थी और सरयू नदी तथा पुरुष और स्त्रियाँ भी भिन्न थीं ।।

दशरथ कौशल्या सुनु ताता ❀ विविध रूप भरतादिक भ्राता
प्रति ब्रह्माण्ड राम अवतारा ❀ देखेऊँ बाल बिनोद उदारा

हे तात ! सुनिये, अयोध्या में दशरथ कौशल्या थीं और तरह-तरह के रूपवाले भरत आदि भाई थे ॥ हर ब्रह्माण्ड में रामजीका अवतार और विनोद उदार बालचरित्र मैंने देखे ॥

दोहा–भिन्न भिन्न सब देखि मैं, श्रुति विचित्र हरियान ।
अगनित भुवन फिरेउँ प्रभु, राम न देखेउँ आन ॥११८॥

हे विष्णुवाहन गरुड़जी ! मैंने सभी पदार्थ पृथक्-पृथक् अत्यन्त विचित्र देखी । मैं असंख्य ब्रह्माण्ड में फिरा किन्तु सर्वत्र रामचन्द्रजी वे ही थे, दूसरे मैंने नहीं देखे ॥ ११८ ॥

सोइ शिशुपन सोइ शोभा, सोइ कृपालु रघुबीर ।
भुवन भुवन देखत फिरौं, प्रेरित मोह शरीर ॥११९॥

मोह से प्रेरित शरीर लिए मैं उसी लड़कपन, उसी शोभा और उन्हीं दयालु श्रीरामचन्द्रजी को लोक-लोकान्तरों में देखता फिरा ॥ ११९ ॥

भ्रमत मोहिं ब्रह्माण्ड अनेका ❋ बीते मनहुँ कल्प शत एका
फिरत फिरत निज आश्रम आयउँ ❋ तहँ पुनि रहि कछु काल गँवायउ

मुझे असंख्य ब्रह्माण्डों में घूमते हुए मानों एक सौ कल्प बीत गये ॥ फिरता-फिरता अपने आश्रम में आया, फिर वहाँ रहकर कुछ समय व्यतीत किया ॥

निज प्रभु जन्म अवध सुनि पायउँ ❋ निर्भर प्रेम हर्षि उठि धायउँ
देखेउँ जन्म महोत्सव जाई ❋ जेहि विधि प्रथम कहा मैं गाई

फिर अपने प्रभु का जन्म अयोध्या में हुआ सुनकर प्रेमविह्वल होकर प्रसन्न हो उठ दौड़ा ॥ जाकर जन्म-महोत्सव देखा जिस प्रकार से पहले मैंने गाकर कहा है ॥

राम उदर देखेउँ जग नाना ❋ देखत बनै न जाइ बखाना
तहँ पुनि देखेउँ राम सुजाना ❋ मायापति कृपालु भगवाना

रामजी के उदर में अनेक जगत् देखे, वे देखते ही बनते थे, वर्णन नहीं किये जा सकते ॥ फिर वहाँ मायापति सुजान कृपालु रामचन्द्रजी को देखा ॥

करौं बिचार बहोरि बहोरी ❋ मोह कलित व्यापित मति मोरी
उभय घरी महँ मैं सब देखा ❋ भयउ भ्रमित मन मोह विशेखा

मैं बार-बार विचार करता था कि मेरी बुद्धि मोहरूपी मैल में फँसी है ॥ दो घड़ी में मैंने यह सब देखा, अज्ञान की विशेषता से जब थक गया ॥

दोहा–देखि कृपालु बिकल मोहिं, बिहँसे तब रघुबीर ।
बिहँसत ही मुख बाहर, आयउँ सुनु मतिधीर ॥१२०॥

तब कृपालु श्रीरामचन्द्रजी मुझे व्याकुल देखकर हँसे । हे मतिधीर ! सुनिए, हँसते ही मैं मुख से बाहर आ गया ॥ १२० ॥

सोइ लरिकाई मो सन, लगे करन पुनि राम ।
कोटि भाँति समुझावत, मन न लहै विश्राम ॥१२१॥

तब वही लड़कपन रामजी मुझसे फिर करने लगे। करोड़ों तरह से मनको समझाया। परन्तु मन में शान्ति नहीं होती थी ॥ १२१ ॥

देखि चरित यह सो प्रभुताई ❀ समुझत देह दशा बिसराई
धरणिं परेउँ मुख आव न बाता ❀ त्राहि त्राहि आरत जन त्राता

यह चरित्र देखकर और प्रभुता समझकर मुझे देह की दशा भूल गई। मुख से बात नहीं निकलती और यह कहकर कि हे दुखियों के परित्राणकर्ता ! रक्षा कीजिए ! धरती पर गिर पड़ा ॥

परमाकुल प्रभु मोहिं विलोकी ❀ निज माया प्रभुता तब रोकी
कर सरोज प्रभु मम शिर धरेऊ ❀ दीनदयालु दुसह दुख हरेऊ

प्रभु रामजी ने मुझे बहुत व्याकुल देखा, तब अपनी माया की प्रभुता को रोका। प्रभु ने अपने कर-कमलोंको मेरे शिरपर रखा, दीनोंपर दया करनेवाले भगवान् ने कठिन दुःख हर लिया ॥

कीन्ह राम मोहिं बिगत बिमोहा ❀ सेवक सुखद कृपा सन्दोहा
प्रभुता प्रथम बिचारि बिचारी ❀ मनमहँ होइ हर्ष अति भारी

सेवकों को सुख देनेवाले कृपा की राशि रामजी ने मुझे मोह से रहित कर दिया ॥ पहली महिमा को विचार कर मेरे मन में अत्यन्त आनन्द होने लगा ॥

भक्त बछलता प्रभु कै देखी ❀ उपजी मम उर प्रीति विशेखी
सजल नयन पुलकित कर जोरी ❀ कीन्हीं बहु विधि विनय बहोरी

प्रभु रामजीकी भक्तवत्सलता को देखकर मेरे हृदय में बड़ी प्रीति उत्पन्न हुई ॥ नेत्रोंमें जल भर आया, पुलकित हो और हाथ जोड़कर बहुत प्रकार विनती की ॥ ८ ॥

दोहा–सुनि सप्रेम मम बानी, देखि दीन निज दास।
बचन सुखद गम्भीर मृदु, बोले रमानिवास ॥१२२॥

मेरी प्रेम पूर्ण वाणी सुनकर और अपने दास को दुःखी देखकर भगवान् रामजी कोमल और गम्भीर तथा सुख देनेवाले वचन बोले ॥ १२२ ॥

कागभुशुण्डि माँगु वर, अति प्रसन्न मोहिं जानि।
अणिमादिक सिधि अपर ऋधि, मोक्ष सकल सुखखानि ॥१२३॥

हे काकभुशुण्डि ! मुझे अत्यन्त प्रसन्न जानकर वर माँगो, अणिमा आदि सिद्धियाँ और अन्य ऋद्धियाँ तथा समस्त सुखों की खानि मोक्ष, ॥ १२३ ॥

ज्ञान विवेक विरति विज्ञाना ❀ सुर दुर्लभ गति जे जग जाना
आज देउँ सब संशय नाहीं ❀ माँगु जो तोहिं भाव मनमाहीं

ज्ञान, विवेक, वैराग्य, विज्ञान और जिन गुणों को संसार ने दुर्लभ समझा है ॥ आज मैं सब दूँगा, इसमें सन्देह नहीं जो तेरे मनमें भावे वह वर माँग ॥

सुनि प्रभु बचन अधिक अनुरागेउँ ❀ मन अनुमान करन तब लागेउँ
प्रभु कह देन सकल सुख सही ❀ भक्ति आपनी देन न कही

प्रभु के वचन सुनकर मैं प्रेम-विह्वल हो गया और मन में अनुमान करने लगा कि, स्वामी ने तो मुझे सम्पूर्ण सुख देने को अवश्य कहा, परन्तु अपनी भक्ति देने के लिए नहीं कहा ।।

भक्ति हीन गुण सब सुख कैसे ❀ लवण बिना बहु व्यंजन जैसे
भक्तिहीन सुख कवने काजा ❀ अस बिचारि बोलेउँ खगराजा

भक्ति के बिना गुण और सब सुख कैसे फीके हैं, जैसे नमक के बिना बहुत प्रकारके व्यंजन ।। भजन-विहीन सुख किस काम का ? हे पक्षिराज ! इस प्रकार से विचार कर मैं बोला—।।

जो प्रभु होइ प्रसन्न बर देहू ❀ मोपर करहु कृपा अरु नेहू
मन भावत बर माँगौं स्वामी ❀ तुम उदार उर अन्तर्यामी

हे स्वामी ! जो प्रसन्न होकर वर देते हो और मुझ पर कृपा-स्नेह रखते हो तो ।। मेरे मन में जो अच्छा लगता है वह वरदान मांगता हूँ, आप उदार और अन्तर्यामी हो ।।

दोहा—अविरल भक्ति विशद्ध तव, श्रुति पुरान जो गाव ।
जेहि खोजत जोगीश मुनि, प्रभु प्रसाद कोउ पाव ।।१२४।।

आपकी अचल और परम पावन भक्ति जिसे वेद-पुराण गाते हैं तथा योगीश्वर और मुनि खोजते हैं, परन्तु आपकी कृपा से कोई ही पाते हैं ।। १२४ ।।

भक्त कल्पतरु प्रणत हित, कृपासिन्धु सुखधाम ।
सोइ निजभक्ति मोहिं प्रभु, देहु दया करि राम ।।१२५।।

हे भक्तों के लिए कल्पतरु, शरणागतों के हितकारी, कृपा सागर और सुख के धाम रामजी ! वही अपनी भक्ति कृपा करके हे राम ! दयाकर मुझे दीजिये ।। १२५ ।।

एवमस्तु कहि रघुकुल नायक ❀ बोले बचन परम सुखदायक
सुनु बायस तैं परम सयाना ❀ काहे न माँगसि अस बरदाना

रघुकुल के नायक श्रीरामचन्द्रजी ने कहा—एवमस्तु, ऐसा ही होगा, फिर परम सुख देने वाले वचन बोले--।। हे कौआ ! सुन, तू सहज चतुर है, क्यों न ऐसा वर मांगें ? ।।

सब सुख खानि भक्ति तैं माँगी ❀ नहिं कोउ तोहि समान बड़भागी
जे मुनि कोटि जतन नहिं लहहीं ❀ जे जप योग अनल तनु दहहीं

तू ने सब सुखों की खानि भक्ति माँगी, संसारमें तेरे समान बड़भागी कोई नहीं है। जिसको मुनिजन करोड़ों यत्नसे भी नहीं पाते कि, जो जप-योग की अग्निमें शरीर को जला देते हैं ।।

रीझेउँ देखि तोरि चतुराई ❀ माँगेहु भक्ति मोहिं अति भाई
सुनु बिहंग प्रसाद अब मोरे ❀ सब शुभ गुन बसिहैं उर तोरे

तेरी चतुराई देखकर मैं प्रसन्न हुआ, तू ने भक्ति माँगी, मुझे यह बात अच्छी लगी ।। हे पक्षिन ! सुन, अब मेरी कृपासे समस्त शुभ गुण तेरे हृदयमें निवास करेंगे ।।

भक्ति ज्ञान विज्ञान विरागा ❀ योग चरित्र रहस्य विभागा
जानत तुम सबही कर भेदा ❀ मम प्रसाद नहिं साधन खेदा

भक्ति, ज्ञान, विज्ञान, वैराग्य, योग, चरित्र और प्रकट-अप्रकट रहस्य ।। पृथक्-पृथक् सभी के भेदों को तू जानेगा, मेरी कृपासे तुझे साधनों का कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा ।।

दोहा—मायासंभव भ्रम सब, अब नहिं व्यापिहिं तोहिं ।
जानेसि ब्रह्म अनादि अज, अगुन गुनाकर मोहिं ॥१२६॥

मायासे उत्पन्न होने वाले समस्त भ्रम अब तुझे न व्यापेंगे । मुझे अनादि ब्रह्म जन्म रहित निर्गुण और गुणों की खानि समझना ।।१२६।।

मोहिं भक्त प्रिय संतत, अस बिचारि सुनु काग ।
काय बचन मन मम चरन, करेसु अचल अनुराग ॥१२७॥

हे कागभुशुण्डि ! सुनो, मुझे भक्त सदा ही प्यारे हैं, ऐसा विचार कर वचन और मनसे मेरे चरणोंमें अटल प्रेम करना ।।१२७।।

अब सुनु परम बिमल मम बानी ❀ सत्य सुगम निगमादि बखानी
निज सिद्धान्त सुनावौं तोहीं ❀ सुनि मन धरु सब तजि भजु मोहीं

अब अत्यन्त निर्मल, सत्य और सुगम शास्त्रादिकोंमें कही हुई मेरी वाणी तुम सुनो ।। मैं तुमको अपना सिद्धान्त सुनाता हूँ, सुन कर मनमें रक्खो और सब छोड़कर मुझे भजो ।।

मम माया सम्भव परिवारा ❀ जीव चराचर विविध प्रकारा
सब मम प्रिय सब मम उपजाये ❀ सबते अधिक मनुज मोहिं भाये

चर-अचर अनेक तरह के जीवोंके परिवार मेरी माया से रचित हैं ।। सभी जीव मुझे प्रिय हैं, और मेरे उत्पन्न किये हुए हैं तथापि मनुष्य ही मुझे सबसे ज्यादा प्यारे हैं ।।

तिन महँ द्विज द्विज महँ श्रुतिधारी ❀ तिन महँ निगम धर्म अनुसारी
तिन महँ प्रिय बिरक्त पुनि ज्ञानी ❀ ज्ञानिहुँते अति प्रिय विज्ञानी

सब मनुष्योंमें ब्राह्मण, ब्राह्मणोंमें वेदज्ञ, उनमें वेदोक्त धर्मका अनुसरण करनेवाले, उनमें विरक्त और विरक्तोंमें अधिक ज्ञानी तथा ज्ञानियोंमें भी विज्ञानी मुझे बहुत प्रिय हैं ।।६।।

तिन्हतें पुनि मोहिं प्रिय निज दासा ❀ जेहि गति मोरि न दूसरि आसा
पुनि पुनि सत्य कहौं तोहिं पाहीं ❀ मोहिं सेवक सम प्रिय कोउ नाहीं

विज्ञानियोंसे अधिक प्रिय मुझे अपने दास हैं जिन्हें मेरी ही गति है और दूसरी आशा नहीं है । मैं तुमसे बार-बार और सत्य कहता हूँ कि मुझे सेवक से प्यारा कोई नहीं है ।।

भगति हीन बिरंचि किन होई ❀ सब जीवन महँ अप्रिय सोई
भगतिवंत अति नीचउ प्रानी ❀ मोहिं प्रान प्रिय अस मम बानी

भक्ति से हीन ब्रह्मा ही क्यों न हों, परन्तु सब जीवों में मुझे वह अप्रिय हैं ।। किन्तु भक्तिवाला अत्यन्त नीच प्राणी भी मुझे प्राणों के समान प्रिय है, ऐसा मेरा वचन है ।।

दोहा—शुचि सुशील सेवक सुमति, प्रिय कहु काहि न लाग ।
श्रुति पुराण कह नीति अस, सावधान सुनु काग ॥१२८॥

पवित्र, सुशील और सुन्दर मतिमान् सेवक कहो किसको प्रिय नहीं लगता है ? । हे काग ! वेद ऐसी नीति कहते हैं, तू सावधान होकर सुन ॥१२८॥

एक पिता के बिपुल कुमारा ❀ होहिं पृथक गुन शील अचारा
कोउ पण्डित कोउ तापस ज्ञाता ❀ कोउ धनवंत शूर कोउ दाता

एक पिता के बहुत से पुत्र होते हैं परन्तु गुण और शील तथा आचरणमें भिन्न-भिन्न होते हैं। कोई पण्डित, कोई तपस्वी, कोई ज्ञानी, कोई धनवान्, कोई योद्धा और कोई दानी होता है।

कोउ सर्वज्ञ धर्मरत कोई ❀ सब पर पितहिं प्रीति सम होई
कोउ पितु भक्त बचन मन कर्मा ❀ सपनेहुँ जान न दूसर धर्मा

कोई सर्वज्ञ और कोई धर्ममें तत्पर होता है, परन्तु पिताकी प्रीति सबपर समान होती है। यदि कोई पुत्र मन, वचन और कर्मसे पिताका भक्त है, वह दूसरा धर्म स्वप्न में भी नहीं जानता है तो ॥

सो सुत प्रिय पितु प्रान समाना ❀ यद्यपि सो सब भाँति अयाना
एहि विधि जीव चराचर जेते ❀ त्रिजग देव नर असुर समेते

वह पुत्र पिताको प्राणोंके समान प्रिय होता है, भले ही वह सब तरहसे मूर्ख ही क्यों न हो। इस प्रकारसे तीनों लोकोंमें देवता, मनुष्य और दैत्यों के सहित जड़ चेतन जितने जीव हैं ॥

अखिल विश्व यह मम उपजाया ❀ सब पर मोहिं बराबर दाया
तिन्ह महँ जो परिहरि मद माया ❀ भजहिं मोहिं मन बच अरु काया

यह अखिल संसार मेरा उत्पन्न किया हुआ है और सबपर मेरी बराबर दया रहती है। उनमें जो अभिमान और माया छोड़कर मन, वचन, शरीरसे मुझे भजते हैं ॥८॥

दोहा—पुरुष नपुंसक नारि वा, जीव चराचर कोइ।
सर्वभाव भज कपट तजि, मोहिं परम प्रिय सोइ ॥१२९॥

पुरुष, नपुंसक, स्त्री, वा जड़-चेतन जीवोंमें कोई हो, जो सब भाव से कपट त्याग कर मुझे भजता है, वही मेरा प्यारा है ॥१२९॥

सोरठा—सत्य कहौं खग तोहिं, सुचि सेवक मम प्रान प्रिय।
अस विचारि भजु मोहिं, परिहरि आस भरोस सब ॥४॥

हे पक्षी ! मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि, पवित्र सेवक मुझे प्राणोंके समान प्यारे हैं। ऐसा विचार और सब आशा तथा भरोसा छोड़कर तू मेरा भजन कर ॥४॥

कबहुँ काल नहिं ब्यापिहि तोहीं ❀ सुमिरहु भजहु निरन्तर मोहीं
प्रभु बचनामृत सुनि न अघाऊँ ❀ तनु पुलकित मन अति हर्षाऊँ

तुझे कभी काल नहीं व्यापेगा, मुझे निरन्तर भजना और स्मरण करना। प्रभुके वचनामृत सुनकर मैं अघाता नहीं था, शरीर पुलकित हो गया और मनमें अत्यन्त हर्ष हुआ ॥

सो सुख जानै मन अरु काना ❀ नहिं रसना प्रति जाइ बखाना
प्रभु शोभा सुख जानहिं नयना ❀ किमि कहि सकैं तिन्हहिं नहिं बयना

उस सुख को मन और कान जानते हैं, जीभ से वह बखाना नहीं जा सकता। रामकी शोभाके आनन्दको आँखें जानती हैं परन्तु वह कह कैसे सकती हैं! उन्हें वाणी नहीं है॥

बहु विधि मोहिं प्रबोधि सुख देई ❀ लगे करन शिशु कौतुक तेई
सजल नयन कछु मुख करि रूखा ❀ चितै मातु तन लागी भूखा

बहुत तरहसे समझाकर मुझे सुख दिया फिर वही बालक्रीड़ा करने लगे। आँखोंमें जल भरकर और मुखको कुछ रूखा करके माताके शरीरकी ओर देखने लगे कि भूख लगी है॥

देखि मातु आतुर उठि धाई ❀ कहि मृदु बचन लिये उर लाई
गोद राखि कराव पय पाना ❀ रघुपति चरित ललित कर गाना

मुझे देखकर माता आतुर हो उठकर दौड़ीं और मीठे वचन कह छातीसे लगा लिया॥ तथा गोदमें बैठाकर दुध पिलाते हुए रघुनाथजीके सुन्दर चरित्रका गान करने लगीं॥

सोरठा—जेहि सुख लागि पुरारि, अशुभ वेष कृत शिव सुखद।
अवधपुरी नर नारि, तेहि सुख महँ संतत मगन॥५॥

जिस सुखके लोभमें कल्याण-स्वरूप शिवजीने वेष त्याग सुखदायी अमंगल वेष धारण किया उसी सुखमें अयोध्याके स्त्री-पुरुष मग्न हैं॥५॥

सोइ सुख कर लवलेस, जिन्ह बारक सपनेहुँ लहेउ।
ते नहिं गनहिं खगेश, ब्रह्म सुखहिं सज्जन सुमति॥६॥

उस सुखका लवलेश-मात्र एक बार स्वप्नमें भी जो पाया है। हे पक्षिराज! वह सुन्दर मतिमान् सज्जन ब्रह्मानन्दको कुछ भी नहीं समझता॥६॥

मैं पुनि अवध रहेउँ कछु काला ❀ देखहुँ बाल बिनोद रसाला
राम प्रसाद भगति बर पायउँ ❀ प्रभु पद बन्दि निजाश्रम आयउँ

फिर मैंने कुछ समय तक अयोध्यामें रहकर सुन्दर बाल-क्रीड़ा देखी॥ रामचन्द्रजीकी कृपा से भक्ति का वर पाया और प्रभु रामचन्द्रजी की चरणों की बन्दना करके अपने आश्रममें आया॥

तबते मोहिं न व्यापी माया ❀ जबते रघुनायक अपनाया
यह सब गुप्त चरित मैं गावा ❀ हरि माया जिमि मोहिं नचावा

जबसे श्रीरामचन्द्रजीने अपनाया तब से मुझे माया नही व्यापी॥३॥ भगवान् के सब गुप्त चरित्र मैंने गाकर कहा, जिस प्रकार कि माया ने मुझे नचाया॥४॥

निज अनुभव अब कहौं खगेशा ❀ बिनु हरि-भजन न जाहिं कलेशा
रामकृपा बिनु सुनु खगराई ❀ जानि न जाइ राम प्रभुताई

हे गरुड़! मैं अपना अनुभव कहता हूँ कि बिना भगवान् के भजन के क्लेश दूर नहीं होता॥ हे गरुड़! सुनिए, रामचन्द्रजीकी कृपाके बिना रामचन्द्रजी की प्रभुता नहीं जाना जाती॥६॥

जाने बिनु न होइ परतीती ❀ बिनु परतीति होइ नहि प्रीती
प्रीति बिना नहिं भक्ति दृढ़ाई ❀ जिमि खगेश जलकी चिकनाई

बिना जाने विश्वास नहीं होता, बिना विश्वासके प्रीति नहीं होती ॥७॥ और प्रीतिके बिना भक्तिमें दृढ़ता नहीं आती, जैसे जल में चिकनाई नहीं टिकती ॥८॥

सोरठा—बिनु गुरु होइ कि ज्ञान, ज्ञान कि होइ बिराग बिनु ।
गावहिं वेद पुराण, सुख कि लहहिं हरिभक्ति बिनु ॥७॥

क्या बिना गुरुके ज्ञान होता है ? और ज्ञान क्या वैराग्य के बिना हो सकता है ? । क्या बिना भगद्भक्तिके जीव को सुख मिलता है ? ऐसा वेद और पुराण गाते हैं ॥७॥

कोउ विश्राम कि पाव, तात सहज संतोष बिनु ।
चलै कि जल बिनु नाव, कोटि जतन करि पचि मरिय ॥८॥

हे तात ! क्या कोई स्वाभाविक सन्तोष के बिना सुख पा सकता है ? चाहे करोड़ों यत्न करके क्यों न पच मरे किन्तु क्या जलके बिना नाव चल सकती है ? ॥८॥

बिनु संतोष न काम नसाहीं ❀ काम अछत सुख सपनेहुँ नाहीं
राम भजन बिनु मिटहिं न कामा ❀ थल बिहीन तरु कबहुँ कि जामा

बिना सन्तोषके कामनाओं का नाश नहीं होता और कामनाओं के रहते स्वप्नमें भी सुख नहीं होता ॥ राम-भजनके बिना क्या कामना मिटती है ? क्या बिना पृथ्वीके वृक्ष जमता है ?॥

बिनु बिज्ञान कि समता आवै ❀ कोउ अवकाश कि नभ बिनु पावै
श्रद्धा बिना धर्म नहिं होई ❀ बिनु महि गंध कि पावै कोई

बिना सुन्दर ज्ञानके क्या समता का भाव आ सकता है ? आकाश के बिना क्या कोई अवकाश पा सकता है ? श्रद्धाके बिना धर्म नहीं होता, क्या बिना धरतीके कोई गन्ध पाता है ॥

बिनु तप तेज कि करु बिस्तारा ❀ जल बिनु रस कि होइ संसारा
शील कि मिल बिनु बुध सेवकाई ❀ जिमि बिनु तेज न रूप गुसाईं

बिना तपके क्या तेज विस्तार कर सकता है ? क्या बिना जलके संसारमें रस हो सकता है ? क्या विद्वानों की सेवाके बिना शील और हे गोसाइँ ! जैसे बिना तेज का रूप नहीं होता ॥

निज सुख बिनु मन होइ कि थीरा ❀ परस कि होइ बिहीन समीरा
कवनिउँ सिद्धि कि बिनु विश्वासा ❀ बिनु हरि भजन न भवभय नासा

क्या अपने सुखके बिना मन स्थिर होता है ? क्या बिना पवन के स्पर्श हो सकता है ? कोई सिद्धि विश्वासके बिना नहीं और भगवान्‌के भजनके बिना संसारके भयका नाश नहीं हो सकता ॥

दोहा—बिनु विश्वास भक्ति नहिं, तेहि बिनु द्रवहिं न राम ।
रामकृपा बिनु सपनेहुँ, जीव न लह विश्राम ॥१३०॥

बिना विश्वास के भक्ति नहीं होती; बिना भक्ति के रामचन्द्रजी प्रसन्न नहीं होते । बिना रामचन्द्रजी की कृपा के जीव को स्वप्न में भी चैन नहीं मिलता ॥ १३० ॥

सोरठा—अस बिचारि मतिधीर, तजि कुतर्क संशय सकल ।
भजहु राम रघुबीर, करुनाकर सुन्दर सुखद ॥ ९ ॥

हे मतिधीर ! ऐसा विचार कर सम्पूर्ण सन्देहों और कुतर्कों को त्याग कर सुन्दर सुखदायक, दया के समुद्र श्रीरामचन्द्रजी को भजिये ।। ९ ।।

निज मति सरिस नाथ मैं गाया ❋ प्रभु प्रताप महिमा खगराया
कहेउँ न कछु करि जुगुति विशेखा ❋ यह सब मैं निज नयनन्ह देखा

हे पक्षिराज ! मैंने अपनी बुद्धि के अनुसार स्वामी के प्रभाव की महिमा का गान किया ।।१।। इसमें मैंने कोई विशेष युक्ति नहीं लगाई, यह सब मैंने अपनी आँखों से देखा है।।२।।

महिमा नाम रूप गुन गाथा ❋ सकल अमित अनंत रघुनाथा
निजनिजमतिमुनिहरिगुनगावहिं ❋ निगम शेष शिव पार न पावहिं

श्रीरामचन्द्रजी की महिमा, उनका स्वरूप और गुणों की कथा इन सबका अन्त नहीं है ।। ३ ।। मुनिजन अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार भगवद्‌गुण गाते हैं, उसका पार तो वेद, शेषजी और शिवजी भी नहीं पाते ।। ४ ।।

तुमहिं आदि खग मसक प्रयन्ता ❋ नभ उड़ाहिं नहिं पावहिं अन्ता
तिमि रघुपति महिमा अवगाहा ❋ तात कबहुँ कोउ पाव कि थाहा

हे गरुड़जी ! आप से लगाकर मच्छड़ तक आकाश में उड़ते हैं पर उसका अन्त कोई नहीं पाता। हे तात ! इसी तरह रघुनाथजी की महिमा अथाह है। क्या कोई भी उसका थाह पा सकता है ? ।।

राम काम शतकोटि सुभग तन ❋ दुर्गा कोटि अमित अरि मर्दन
शक्रकोटि शत सरिस बिलासा ❋ नभ शत कोटि अमित अवकासा

रामचन्द्रजी सौ करोड़ कामदेव के समान सुन्दर, असंख्य दुर्गाजी के समान शत्रुओं का नाश करनेवाले, सौ करोड़ इन्द्रों के समान विलासी और सौ करोड़ आकाश के समान अमित अवकाश युक्त हैं।

दोहा—मरुत कोटि शत बिपुल बल, रवि शत कोटि प्रकाश।
शशि शत कोटि सुशीतल, समन सकल भवत्रास ।।१३१।।

सौ करोड़ वायु के समान उनका अपार बल है, सौ करोड़ सूर्य के समान प्रकाश है ।। उनका प्रकाश सौ करोड़ चन्द्र के समान शीतल और समस्त भवत्रास का शमनकारी है ।। १३१ ।।

काल कोटि शत सरिस अति, दुस्तर दुर्ग दुरन्त ।
धूम्रकेत शत कोटि सम, दुराधर्ष भगवन्त ।।१३२।।

भगवान् रामचन्द्रजी सौ करोड़ कालों के समान अत्यन्त दुस्तर-दुरन्त और दुर्गम हैं। वे सौ करोड़ धूम्रकेतु के समान दुराधर्ष हैं ।। १३२ ।।

प्रभु अगाध शत कोटि पताला ❋ शमन कोटिशत सरिस कराला
तीरथ अमित कोटि शत पावन ❋ नाम अखिल अघपुंज नशावन

प्रभु रघुनाथजी करोड़ों पातालों के समान गहरे, सौ करोड़ यमराजों के समान विकराल। अपार तीर्थों के समान पवित्र करने वाले हैं, उनका नाम सब पापों को नष्ट करनेवाला है ।।

हिमगिरि कोटि अचल रघुबीरा ❋ सिंधु कोटि शत मन गंभीरा
कामधेनु शत कोटि समाना ❋ सकल कामदायक भगवाना

श्रीरामचन्द्रजी सौ करोड़ हिमालय पर्वत के समान अचल और सौ करोड़ समुद्र के समान उनका मन गम्भीर है ।। सौ करोड़ कामधेनु के समान भगवान् सम्पूर्ण कामनाओं के देने वाले हैं ।।

शारद कोटि अमित चतुराई ❀ बिधि शतकोटि सृष्टि निपुनाई
विष्णु कोटि शत पालन करता ❀ रुद्र कोटि शत सम संहरता

अवगिवत, करोड़ों सरस्वती के समान चतुर, सौ करोड़ ब्रह्मा के समान सृष्टि में निपुण ।। सौ करोड़ विष्णु के समान पालन-कर्ता और सौ करोड़ रुद्रों के समान संहारकर्ता हैं ।।६।।

धनद कोटि शत सम धनवाना ❀ माया कोटि प्रपंच निधाना
भार धरन शत कोटि अहीशा ❀ निरवधि निरुपम प्रभु जगदीशा

सौ करोड़ कुबेर के समान धनवान् हैं और करोड़ों माया के समान प्रपंच के निधान हैं, सौ करोड़ शेषों के समान भार धारण करने वाले निरवधि निरुपम प्रभु और जगत् के स्वामी हैं ।।

छन्द—निरुपम न उपमा आन राम समान निगमागम कहै ।
जिमि कोटि शत खद्योतसम रवि कहत अति लघुता लहै ।।
एहि भाँति निजनिज मति विलास मुनीश हरिहिं बखानहीं ।
प्रभु भावगाहक अति कृपाल सप्रेम सुनि सुख मानहीं ।।१५।।

वेद और शास्त्र कहते हैं कि ऐसे उपमा रहित रामचन्द्रजी की समानता के लिए कोई उपमा नहीं, जैसे सूर्यको करोड़ों खद्योत(जुगुनुओं) के बराबर कह देने पर भी सूर्य के लिए वह उपमा बहुत तुच्छ है । इसी तरह अपनी-अपनी बुद्धि की गति के अनुसार मुनीश्वर भगवान् का वर्णन करते हैं और प्रभु श्रीरामचन्द्रजी भाव के ग्रहणकर्ता हैं, अत्यन्त दयालु हैं, अतएव अपने प्रेमयुक्त वर्णन को सुनकर वे सुख मानते हैं ।।१५।।

दोहा—राम अमित गुनसागर, थाह कि पावै कोइ ।
संतन सन जस कछु सुनेउँ, तुम्हहिं सुनायउँ सोइ ।।१३३।।

श्रीरामचन्द्रजी अपार गुणों के सागर हैं, क्या कोई उनका थाह पा सकता है ? जैसा मैंने सन्तों से सुना था, वही आपको सुनाया ।। १३३ ।।

भाववस्य भगवान, सुख निधान करुना अयन ।
तजि ममता मद मान, भजिय राम सीता रमन ।।१३४।।

भगवान् सुख-निधान, करुणा के भवन, प्रेम के वश में हैं । मद और अभिमान को त्याग सीता-रमण श्रीरामचन्द्रजी का भजन कीजिये ।। १३४ ।।

सुनि भुसुण्डिके बचन सुहाये ❀ हर्षित खगपति पंख फुलाये
नयन नीर मन अति हर्षाना ❀ श्रीरघुपति प्रताप उर आना

कागभुशुण्डिजी के सुन्दर वचन सुनकर गरुड़जी ने पंख फैला दिया ।।१।। नेत्रों में आँसू भर आये और मन अत्यन्त प्रसन्न हुआ, तब श्रीरामचन्द्रजी का प्रताप हृदय में सोचने लगे ।। २ ।।

पाछिल मोह समुझि पछिताना ❀ ब्रह्म अनादि मनुज करि जाना
पुनि-पुनि काक चरन शिर नावा ❀ जानि राम सम प्रेम बढ़ावा

पिछली अज्ञानता को समझकर पछताते हैं कि अनादि ब्रह्म को मैंने मनुष्य जाना । बार-बार कागभुशुण्डिजी के चरणों में शिर नवाया और रामचन्द्रजी के समान जानकर प्रेम बढ़ाया ॥

गुरु बिनु भव निधि तरै न कोई ❀ जो बिरंचि शंकर सम होई
संशय सर्प ग्रसेउ मोंहि ताता ❀ सुखद लहरि कुतर्क बहु ब्राता

संसार-सागरका बिना गुरुके कोई पार नहीं पा सकता, चाहे ब्रह्मा और शिव ही क्यों न हों । हे तात ! मुझे सन्देहरूपी साँपने डँस लिया था जिससे कुतर्करूपी बहुत दुःखदायिनी लहरें आ रही थीं ॥

तव स्वरूप गारुड़ि रघुनायक ❀ मोंहि जिम्रायहु जन सुखदायक
तव प्रसाद मम मोह नसाना ❀ राम रहस्य अनूपम जाना

आप सरीखे गारुड़ी मंत्रके जाननेवालेके पास भेज भक्तोंको सुख देनेवाले रघुनाथजीने मुझे जिला लिया । आपकी कृपासे मेरी अज्ञानता नष्ट हुई और रामचन्द्रजोका अनुपम भेद जाना ॥

दोहा—ताहि प्रशंसेउ विविध विधि, शीश नाइ कर जोरि ।
बचन सप्रेम विनीत मृदु, बोले गरुड़ बहोरि ॥१२५॥

कागभुशुण्डिजीको शिर नवाकर और हाथ जोड़कर अनेक प्रकारसे उनकी प्रशंसा की । फिर गरुड़जी प्रेमके साथ यह मधुर तथा विनीत वचन बोले ॥१३५॥

प्रभु अपने अविवेक ते, बूझौं स्वामी तोहिं ।
कृपासिंधु सादर कहहु, जानि दास निज मोंहि ॥१३६॥

हे प्रभो ! मैं अपनी अज्ञानतावश आपसे पूछता हूँ । हे कृपासागर स्वामी ! मुझे अपना दास जानकर आदर पूर्वक कहिये ॥ १३६ ॥

तुम्ह सर्वज्ञ तज्ञ तम पारा ❀ सुमति सुशील सरल म्राचारा
ज्ञान बिरति विज्ञान निवासा ❀ रघुनायक कै प्रिय तुम दासा

आप सर्वज्ञ, तत्वज्ञ, अज्ञानसे परे, सुन्दर, मतिमान्, सुशील, सरल आचरणवाले हैं ॥ ज्ञान, वैराग्य और विज्ञानके निवास हैं तथा श्रीरामचन्द्रजीके तुम प्यारे दास हो ॥ २ ॥

कारन कवन देह यह पाई ❀ तात सकल मोंहि कहहु बुझाई
रामचरित सर सुन्दर स्वामी ❀ पायहु कहाँ कहहु नभगामी

हे तात ! आपने किस कारणसे यह कौए की देह पायी, यह मुझे सब समझाकर कहिये । हे स्वामी ! आप आकाशगामी हैं, कहिए आपने इस सुन्दर रामचरित मानस को किस जगह पाया ॥

नाथ सुना मैं अस शिव पाहीं ❀ महा प्रलयहु नाश तव नाहीं
मृषा बचन नहिं शंकर कहहीं ❀ सो मोरे मन संशय ग्रहहीं

हे नाथ ! शिवजी से मैंने ऐसा सुना है कि महा प्रलयमें भी आपका नाश नहीं होता ॥ ५ ॥ शंकरजी झूठी बात नहीं कह सकते, सो मेरे मनमें सन्देह है ॥ ६ ॥

अग जग जीव नाग नर देवा ❀ नाथ सकल जग काल कलेवा
अंडकटाह अमित लयकारी ❀ काल सदा दुरतिक्रम भारी

हे नाथ ! पर्वत आदि जगत्के जीव, सर्प, मनुष्य और देवता यह सारा संसार काल का कलेवा है ।।७।। इसमें अखण्ड ब्रह्माण्डों का नाश करने वाला काल निरन्तर ही प्रबल है ।।८।।

सो०--तुम्हहिं न व्यापत काल, अति कराल कारन कवन।
सो मोहिं कहहु कृपाल, ज्ञान प्रभाव कि योगबल ।।१०।।

हे कृपालु ! मुझे वह अत्यन्त कठोर काल आपको नहीं व्यापता, इसका क्या कारण है ? उसको समझा कर कहिये । ज्ञानके प्रभावसे ऐसा होता है या योग-बलके कारण ।। १० ।।

दोहा--प्रभु तव आश्रम आयउँ, मोर मोह भ्रम भाग।
कारन कवन सो नाथ सब, कहहु सहित अनुराग ।।१३७।।

हे प्रभो ! आपके आश्रममें आनेसे मेरा मोह-भ्रम जाता रहा । सो हे नाथ ! क्या कारण है ? सब स्नेहपूर्वक कहिये ।।१३७।।

गरुड़ गिरा सुनि हर्षेउ कागा ❀ बोला उमा परम अनुरागा
धन्य धन्य तव मति उरगारी ❀ प्रश्न तुम्हार मोहिं अति प्यारी

शिवजी कहते हैं–हे पार्वती ! गरुड़ की वाणी सुनकर कागभुशुण्डि परम प्रसन्न हो कर स्नेहसे बोले–हे गरुड़जी ! आपकी बुद्धि धन्य है, आपकी प्रश्नावली मुझे अत्यन्त प्यारी लगी ।।२।।

सुनि तव प्रश्न सप्रेम सुहाई ❀ बहुत जन्म कै सुधि मोहिं आई
सब निज कथा कहौं मैं गाई ❀ तात सुनहु सादर मन लाई

यह प्रेमपूर्ण आपकी प्रश्नावली सुन कर मुझे बहुतसे जन्मों की सुध हो आयी ।।३।। मैं अपनी सब कथा गाकर कहता हूँ । हे तात ! आदरपूर्वक मन लगा कर सुनिये ।। ४ ।।

जप तप मख सम दम ब्रत दाना ❀ बिरति बिवेक योग विज्ञाना
सबकर फल रघुपति पद प्रेमा ❀ तहि बिनु कोउ न पावै छेमा

जप, तप, शम, इन्द्रिय-दमन, उपवास, दान, वैराग्य, योग और विज्ञान ।। इन सबका यही फल है कि श्रीरामचन्द्रजीके चरणोंमें प्रेम हो, क्योंकि उसके बिना कोई कल्याण नहीं पाता ।।

एहि तनु राम भक्ति मैं पाई ❀ ताते मोहिं ममता अधिकाई
जेहि ते निज स्वारथ कछु होई ❀ तेहि पर ममता कर सब कोई

इस शरीरसे मैंने राम की भक्ति पायी है, इसीसे इस पर मुझे बड़ी ममता है ।। ७ ।। जिससे अपना कुछ स्वार्थ होता है, उसपर सभी कोई ममता करते हैं ।। ८ ।।

सोरठा–पन्नगारि अस नीति, श्रुति संतत सज्जन कहहिं ।
अति नीचहु सन प्रीति, करिय जानि निज परम हित ।।११।।

हे गरुड़ ! वेद मतके अनुसार सज्जन लोग ऐसी नीति कहते हैं कि अपना परस्पर कल्याण जान नीचसे भी प्रीति करनी चाहिए ।। ११ ।।

सोरठा—पाट कीटते होइ, तेहिते पाटम्बर रुचिर।
कृमि पालै सब कोइ, परम अपावन प्रान सम ॥१२॥

रेशम कीड़ेसे उत्पन्न होता है, उससे सुन्दर रेशमी वस्त्र बनते हैं। इससे उस अत्यन्त अपवित्र कीड़े को सब लोग प्राणके समान पालते हैं ॥ १२ ॥

स्वारथ साँच जीव कहँ एहा ❀ मन क्रम बचन राम पद नेहा
सोइ पावन सोइ सुभग सरीरा ❀ जो तनु पाइ भजिय रघुबीरा

परन्तु जीव का सच्चा स्वार्थ यही है कि मन, कर्म और वचनसे रामजीके चरणोंमें स्नेह करे॥ वही पवित्र और सुन्दर शरीर वाला है, जो यह शरीर पाकर रामजी का भजन करता है ॥

रामबिमुख लहि बिधि सम देही ❀ कवि कोविद न प्रशंसहिं तेही
राम भक्ति यहि तनु महँ जामी ❀ ताते मोहिं परम प्रिय स्वामी

रामजी से विमुख रहकर ब्रह्मा के समान शरीर क्यों न पावे, पर कवि और पण्डित उसकी प्रशंसा नहीं करते। इस देह से मेरे हृदय में राम-भक्ति उत्पन्न हुई, इसलिए मुझे यह प्यारी है॥

तजौं न तनु निज इच्छा मरना ❀ तनु बिनु भजन वेद नहिं बरना
प्रथम मोह मोहिं बहुत बिगोवा ❀ राम बिमुख सुख कबहुँ न सोवा

मैं इस देह को इसलिए नहीं छोड़ता कि बिना शरीर के भजन नहीं होता ॥५॥ पहले मोह ने मुझे बहुत नष्ट-भ्रष्ट किया था, मैं रामजी से विमुख कभी सुख की नींद नहीं सोया ॥६॥

नाना जन्म कर्म पुनि नाना ❀ किए योग जप तप मख दाना
कवन योनि जन्मेउँ जहँ नाहीं ❀ मैं खगेश भ्रमि भ्रमि जग माहीं

अनेक जन्म लेकर फिर उनमें नाना प्रकार के कर्म, योग, जप, यज्ञ और दान किये॥ हे पक्षिराज! संसार में कौन-सी ऐसी योनि है, जिसमें भटक-भटककर मैंने जन्म न लिया हो ॥

देखेउँ करि सब कर्म गुसाईं ❀ सुखी न भयउँ अबहिं की नाईं
सुधि मोहि नाथ जन्म बहु केरी ❀ शिव प्रसाद मति मोह न घेरी

हे गोसाईं! सब कर्म करके मैंने देख लिये, अबकी भाँति सुखी नहीं हुआ ॥ हे नाथ! मुझे बहुत जन्मों को सुधि है, शिवजी की कृपा से मेरी मति को अज्ञान ने नहीं घेरा ॥१०॥

दोहा—प्रथम जन्म के चरित अब, कहहुँ सुनहु विहँगेश।
सुनि प्रभु पद रति ऊपजै, ताते मिटै कलेश ॥१३८॥

हे पक्षिराज! अब मैं अपने पहले जन्म का चरित्र कहता हूँ, सुनिये। इससे ईश्वर रामजी के चरणों में प्रीति उत्पन्न होगी, जिससे समस्त संकट मिट जायेंगे ॥१३८॥

पूर्व कल्प में एक प्रभु, कलियुग मलकर मूल।
नर अरु नारि अधर्मरत, सकल निगम प्रतिकूल ॥१३९॥

हे प्रभो! पहले एक कल्प में पाप का मूल कलियुग नामक युग आया था। उसमें सम्पूर्ण स्त्री-पुरुष अधर्म में संलग्न हो वेद के प्रतिकूल आचरण करने लगे ॥१३९॥

तेहि कलियुग कोशलपुर जाई ❁ जन्मत भयउँ शूद्र तनु पाई
शिव सेवक मन क्रम अरु बानी ❁ आन देव निन्दक अभिमानी

उस कलियुग में शूद्र का शरीर पाकर अयोध्यापुरी में मैंने जन्म लिया। मन, कर्म और वचन से शिवजी का सेवक तो रहा, परन्तु अभिमान से दूसरे देवताओं की निन्दा करता था।।

धन मदमत्त परम बाचाला ❁ उग्र बुद्धि उर दम्भ विशाला
जदपि रहउँ रघुपति रजधानी ❁ तदपि नाहिं कछु महिमा जानी

धन के मद से मतवाला, अत्यन्त वाचाल, उग्र बुद्धि और हृदय में अत्यन्त गर्व था।। यद्यपि श्रीरामचन्द्रजी की राजधानी में रहता था; पर उसकी कुछ भी महिमा नहीं जानता था ।।४।।

अब जाना मैं अवध प्रभावा ❁ निगमागम पुरान अस गावा
कवनेउ जन्म अवध बस जोई ❁ राम परायण सो फुर होई

मैंने अब अयोध्या का महत्त्व जाना है, शास्त्रों और पुराणों ने कहा है कि किसी भी जन्म में जो अयोध्या में बास करता है, वह रामजी की भक्ति में अत्यन्त परायण होता है ।।६।।

अवध प्रभाव जान तब प्राणी ❁ जब उर बसहिं राम धनु पाणी
सो कलिकाल कठिन उरगारी ❁ पाप परायण सब नर नारी

अयोध्या का प्रभाव प्राणी तब जानते हैं, जब रामजी हाथ में धनुष लेकर हृदय में बास करते हैं। हे गरुड़जी! वह कलिकाल बड़ा कठिन था जिसमें सब स्त्री-पुरुष पाप में लगे हुए थे।।

दोहा—कलिमल ग्रसे धर्म सब, लुप्त भये सद्ग्रन्थ।
दंभिन निजमति कल्पि करि, प्रगट किये बहु पंथ ।।१४०।।

कलियुग के पापों ने सब धर्म ग्रस लिये और सद्ग्रन्थ लुप्त हो गये तथा पाखण्डियों ने मनमाने अनेक पन्थ चलाये ।।१४०।।

भये लोग सब मोह बश, लोभ ग्रसे शुभ कर्म।
सुनु हरियान ज्ञान निधि, कहौं कछुक कलि धर्म ।।१४१।।

सब लोग अज्ञान के वश हो गये, शुभ कर्म करने में लोभ ग्रसता था। हे विष्णु के वाहन! सुनिये, थोड़ा कलियुग का धर्म कहता हूँ ।।१४१।।

बर्ण धर्म नहिं आश्रम चारी ❁ श्रुति बिरोध रत सब नर नारी
द्विज श्रुतिवंचक भूप प्रजासन ❁ कोउ नहिं मान निगम अनुशासन

चारों वर्ण और आश्रम में धर्म नहीं रहते। सब स्त्री-पुरुष वेद-विरोध में तत्पर रहते।। ब्राह्मण वेद के वंचक और राजा प्रजा के भक्षक होते और कोई वेद की आज्ञा को नहीं मानता ।।२।।

मारग सोइ जाकहँ जो भावा ❁ पंडित सोइ जो गाल बजावा
मिथ्यारंभ दम्भरत जोई ❁ ता कहँ संत कहैं सब कोई

जिसको जो अच्छा लगता है, वही मार्ग है पण्डित वही है जो गाल बजाता है।। जो मिथ्या कर्मों का आरम्भ करता और पाखण्ड में तत्पर रहता है, उसको सब लोग सन्त कहते हैं ।।

सोइ सयान जो परधन हारी ❀ जो कर दम्भ सो बड़ आचारी
जो कह झूठ मसखरी जाना ❀ कलियुग सोइ गुनवंत बखाना

वही चतुर है, जो परधन को हरण कर ले। जो पाखण्ड करे वही बड़ा आचारी कहलाता है। जो झूठ कहता और मसखरी करना जानता है कलियुगमें वही गुणवान् कहलाता है ॥

निराचार जे श्रुतिपथ त्यागी ❀ कलियुग सोइ ज्ञानी बैरागी
जाके नख अरु जटा विशाला ❀ सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला

जो आचार-भ्रष्ट और वेदमार्ग को त्यागे हुए हैं, कलियुग में वही ज्ञानी और वैरागी हैं ॥ तथा जिनके नाखून बड़े और जटाएँ लम्बी हैं वे ही कलियुग में तपस्वी हैं ॥८॥

दोहा—अशुभ वेष भूषण धरे, भक्ष्याभक्ष्य जे खाहिं।
ते योगी ते सिद्ध नर, पूजित कलियुग माहिं ॥१४२॥

जो अमंगल वेष-भूषाधारी और भक्ष्याभक्ष्य खाते हैं, वे ही योगी तथा सिद्ध-पुरुष हैं और उन्हीं की कलियुग में पूजा होती है ॥१४२॥

सो०—जे अपकारी चार, तिन्हकर गौरव मान्यता।
मन क्रम बचन लबार, ते बक्ता कलिकाल महँ ॥१३॥

जो बुराई करनेवालों के दास हैं, उन्हीं का गौरव है, वे ही मान्य हैं। वे मन, क्रम, वचन से झूठे हैं, वे ही कलियुग में वक्ता कहे जाते हैं ॥१३॥

नारि विवश नर सकल गुसाईं ❀ नार्चाहं नट मर्कट की नाईं
शूद्र द्विजन्ह उपदेशहिं ज्ञाना ❀ मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना

हे गोसाईं! सब पुरुष स्त्री के वश में होकर बाजीगर के बन्दर की तरह नाचते हैं ॥ शूद्र द्विजों को ज्ञानोपदेश करते हैं और जनेऊ पहनकर कुदान लेते हैं ॥२॥

सब नर काम लोभरत क्रोधी ❀ वेद विप्र गुरु सन्त बिरोधी
गुन मन्दिर सुन्दर पति त्यागी ❀ भजहिं नारि पर पुरुष अभागी

सब लोग काम, लोभ और क्रोध में तत्पर, वेद, ब्राह्मण, गुरु और सन्तजनों के विरोधी हैं ॥ अभागिनी स्त्रियाँ गुणवान् और सुन्दर पति को छोड़कर पर-पुरुष का सेवन करती हैं ॥४॥

सौभागिनी विभूषन हीना ❀ बिधवन के श्रृङ्गार नवीना
गुरु शिष अन्ध बधिर कर लेखा ❀ एक न सुनै एक नहिं देखा

सुहागिनी स्त्रियाँ आभूषणों से रहित हैं और विधवाओं के नित्य नवीन श्रृङ्गार होते हैं। गुरु शिष्य का लेखा बहिरे-अन्धे का-सा है, एक सुनता नहीं और दूसरा देखता नहीं ॥

हरै शिष्य धन शोक न हरई ❀ सो गुरु घोर नरक महँ परई
मातु पिता बालकन्हि बुलावहिं ❀ उदर भरै सोइ कर्म सिखावहिं

जो गुरु शिष्य के धन को हरता है, किन्तु उसके शोक को नहीं हरता वह भयावक नरक में पड़ता है ॥ मात-पिता बालकों को बुलाते हैं और जिस प्रकार पेट भरे, वही कर्म सिखलाते हैं ॥

दोहा—ब्रह्मज्ञान बिनु नारि नर, करहिं न दूसरि बात ।
कौड़ी कारण मोह वश, करहिं विप्र गुरु घात ॥१४३॥

ब्रह्म-ज्ञान के सिवा स्त्री-पुरुष दूसरी बात नहीं करते और कौड़ी के लोभ के वश में होकर ब्राह्मण और गुरु की हत्या कर डालते हैं ॥१४३॥

बादहिं शूद्र द्विजन्ह सन, हम तुम्हते कछु घाटि ।
जानै ब्रह्म सो बिप्रवर, आँखि दिखावहिं डाँटि ॥१४४॥

शूद्र लोग ब्राह्मणों से कहते हैं कि हम क्या तुमसे कुछ कम हैं ? डांटकर आंख दिखाते हैं कि जो ब्रह्म को जाने वही श्रेष्ठ ब्राह्मण हैं ॥१४४॥

पर तिय लंपट कपट सयाने ❁ मोह द्रोह ममता लपटाने
तेइ अभेदवादी ज्ञानी नर ❁ देखा मैं चरित्र कलियुग कर

जो पर-स्त्री से व्यभिचार करने वाले, कपट, मोह, अज्ञान, द्रोह और अहंकार में लिपटे हुए हैं ॥ वही मनुष्य अद्वैतवादी, ज्ञानी कहे जाते हैं ऐसा चरित्र मैंने कलियुग का देखा ॥२॥

आपु गये अरु आनहिं घालहिं ❁ जो कोउ सत मारग प्रति पालहिं
कल्प कल्प भरि इक इक नर्का ❁ परहिं जे दूषहिं श्रुति करि तर्का

आप तो गये गुजरे हैं ही, अन्य को भी चौपट करते हैं जो किसी तरहसे सत्यमार्गका पालन करते हैं। जो तर्क करके वेदों को दोष लगा देते हैं, वे एक-एक कल्पपर्यन्त नरकमें पड़े रहते हैं ॥

जे बर्णाधम तेलि कुम्हारा ❁ श्वपच किरात कोल कलवारा
नारि मुई गृह संपति नासी ❁ मूँड़ मुड़ाय भये संन्यासी

जो अधम जातिके तेली, कुम्हार, चाण्डाल, भील, कोल और कलवार-जन हैं ॥ उनकी स्त्री मरी और घर की सम्पत्ति नष्ट हुई, कि वे मूड़ मुड़ाकर संन्यासी हो जाते हैं ॥ ६॥

ते बिप्रन्ह सन पाँव पुजावहिं ❁ उभय लोक निज हाथ नसावहिं
बिप्र निरक्षर लोलुप कामी ❁ निराचार शठ वृषली स्वामी

वे ब्राह्मणोंसे पांव पुजाते, लोक-परलोक दोनों अपने हाथसे नष्ट करते हैं ॥ ब्राह्मण निरक्षर, लालची और कामी, आचारहीन, दुष्ट, वृषली (दुराचारिणी) स्त्रीके पति होते हैं ॥

शूद्र करहिं जप तप ब्रत नाना ❁ बैठि बरासन कहहिं पुराना
सब नर कल्पित करहिं अचारा ❁ जाइ न बरणि अनीति अपारा

शूद्र नाना प्रकारके तप करते हैं और व्यास-गद्दो पर बैठकर पुराणों की कथा कहते हैं ॥ सब मनमाना आचरण करते हैं, उनकी अनीति का वर्णन नहीं किया जा सकता ॥

दोहा—भये बरण संकर कलि, भिन्न सेतु सब लोग ।
करहिं पाप दुख पावहीं, भय रुज शोक वियोग ॥१४५॥

कलियुगमें सब वर्ण-संकर हो गये और मर्यादा नष्ट हो गयी। पाप करते हैं और उनके बदले दुःख, भय रोग और वियोगका शोक पाते हैं ॥ १४५ ॥

दोहा—श्रुति सम्मत हरि भक्ति पथ, संयुत बिरति विवेक।
ते न चलहिं नर मोहवश, कल्पहिं पंथ अनेक ॥१४६॥

जो वेद-मतानुसार वैराग्य और ज्ञानसे संयुक्त हरि-भक्ति का मार्ग है। उससे मनुष्य नहीं चलते और वे अज्ञानवश बहुतसे पन्थ चलाते हैं ॥१४६॥

तो०छं०-बहु दाम सँवारहिं धाम यती, बिषया हरिलीन्हनरहिविरती
तपसी धनवन्त दरिद्रगृही, कलि कौतुक तात न जात कही ॥१६॥

योगी और संन्यासी बहुतसा धन लगाकर मंदिरको सजाते, विषयोंमें आसक्त हैं, इससे वैराग्य नष्ट हो गया है.तपस्वी धनवान् और गृहस्थ दरिद्री होते हैं। कलियुगकी लीला कही नहीं जाती ॥

कुलवंति निकारहिं नारि सती, गृह आनहिं चेरि निबेरि गती।
सुत मानहिं मातुपिता तबलौं, अबलानन दीख नहीं जबलौं ॥१७॥

कुलीन सती स्त्रियों को निकाल देते हैं और घरमें चेरीसे दासी (रखनी) लाते हैं ॥ पुत्र माता-पिता को तबतक ही मानते हैं जबतक स्त्री का मुख नहीं देखते ॥ १७ ॥

ससुरारि पियारि लगी जबते, रिपुरूप कुटुम्ब भये तबते।
नृप पाप परायण धर्म नहीं, करि दण्डबिडम्ब प्रजा नितही ॥१८॥

जबसे ससुराल प्यारी लगी तबसे परिवारके लोग शत्रुरूप हो गये। राजा पाप-परायण धर्म-हीन और नित्य ही प्रजाको (निरर्थक) दण्ड देकर न्यायकी विडम्बना करते हैं ॥१८॥

धनवंत कुलीन मलीन अपी, द्विज चिन्ह जनेउ उघार तपी।
नहिं मान पुरान न वेदहिं जो, हरि सेवक संत महा कलि सो ॥१९॥

धनवान् कुलीन, ब्राह्मण की पहचान जनेऊ; तपस्वी का चिन्ह नङ्ग-धड़ङ्ग रहना और जो पुराण-वेद को न माने वे ही कलियुगमें सच्चे हरि-भक्त कहे जाते हैं ॥१९॥

कबिबृन्द उदार दुनी न सुनी, गुन दूषन बात न कोपि गुनी।
कलि बारहिं बार दुकाल परै, बिनु अन्न दुखी सब लोग मरै ॥२०॥

कवियोंके झुण्ड तो दीख पड़ते हैं, परन्तु दाता सुननेमें नहीं आते। गुणी कोई नहीं। कलियुगमें बार-बार अकाल पड़ते। सब लोग अन्नके बिना दुःखी होकर मरते हैं ॥२०॥

दोहा—सुनु खगेश कलि कपट हठ, दंभ द्वेष पाखण्ड।
काम क्रोध लोभादि मद, व्यापि रहेउ ब्रह्मण्ड ॥१४७॥

हे गरुड़जी! सुनो कलियुगमें कपट, हठ, दम्भ, द्वेष, पाखण्ड, काम, क्रोध और अभिमान आदि संसारमें व्याप्त रहते हैं ॥१४७॥

तामस धर्म करहिं नर, जप तप ब्रत मख दान।
दैव न बरसै धरनि पर, बुये न जामहिं धान ॥१४८॥

लोग जप, तप, व्रत, यज्ञ और दान आदिक धर्म तामसी वृत्तिसे करते हैं। बादल धरती पर पानी नहीं बरसते जिससे बोने पर धान नहीं जमते ॥१४८॥

तो०छ०-अबला कचभूषन भूरि क्षुधा, धन हीन दुखी ममता बहुधा।
सुख चाहहिं मूढ़ न धर्मरता, मति थोरि कठोर न कोमलता ॥२१॥

कलियुगमें स्त्रियोंके बाल ही भूषण हैं, उन्हें भूख बहुत लगती है। धनहीन दुःखी रहनेपर भी ममतासे भरे हैं, धर्ममें मति थोड़ी है. कोमलता तनिक भी नहीं, कठोरता बहुत है ॥२१॥

नर पीड़ित रोग न भोग कहीं, अभिमान विरोध अकारणहीं।
लघु जीवन संवत पंच दसा, कल्पान्त न नाश गुमान असा ॥२२॥

पुरुष व्याधियोंसे पीड़ित, सुखका कहीं नाम नहीं, अकारण ही विरोध और अभिमान करते हैं। जीना थोड़ा पर अहंकार इतना कि मानो कल्पान्त तक नाश न होगा ॥२२॥

कलिकाल बिहाल किये मनुजा, नहिं मानत कोउ अनुजा तनुजा।
नहिं तोष विचार न शीतलता, सब जाति कुजाति भये मँगता।२३।

कलिकालने मनुष्योंको बेहाल कर डाला है; न किसीको बहनकी ममता है, न बेटीकी, न संतोष है॥ न विचार और न शान्ति, सब जाति-कुजाति माँगनेवाले हो जाते हैं ॥२३॥

इरिषा परुषाक्षर लोलुपता, भरि पूरि रही ममता विगता।
सब लोग वियोग विशोक हुए, वर्णाश्रम धर्म अचार गए ॥२४॥

ईर्ष्या, कटु वचन और लोलुपता भरपूर है, प्रीति जाती रही, सब लोग वियोग से दुःखी होते और वर्ण तथा आश्रमों का धर्माचार नष्ट हो जाता है॥ २४ ॥

दम दान दया नहिं जान पनी, जड़ता परबंचकता सुघनी।
तनु पोषक नारि नरा सगरे, परनिन्दक जो जगमें बगरे ॥२५॥

इन्द्रिय-दमन, दान, दया और बुद्धिमानी नहीं रही, सबमें दूसरे को ठगने की प्रवृत्ति और मूर्खताने डेरा डाला है, सब स्त्री-पुरुष शरीरको पालनेवाले और पर निन्दकही संसारमें बिगड़रहे हैं

दोहा—सुनु व्यालारि कराल कलि, मल-अवगुन आगार।
गुणहु बहुत कलिकाल कर, बिनु प्रयास निस्तार ॥१४९॥

हे सर्पोंके शत्रु ! सुनो, कलिकाल पापों और अवगुणों का घर है। कलिकाल के गुण भी बहुत हैं। क्योंकि कलियुगमें बिना प्रयास ही निस्तार होता है ॥ १४९ ॥

कृतयुग त्रेता द्वापरहिं, पूजा मख अरु योग।
जो गति होइ सो कलि हरि, नामते पावहिं लोग ॥१५०॥

कृत युग, त्रेता और द्वापरमें पूजा, यज्ञ और योगसे गति होती है, परन्तु कलियुग में लोग वही गति भगवन्नामके स्मरणसे पाते हैं ॥ १५० ॥

कृतयुग सब योगी विज्ञानी ❀ करि हरि ध्यान तरहिं भव प्रानी
त्रेता विविध यज्ञ नर करहीं ❀ प्रभुहिं समर्पि कर्म भव तरहीं

सतयुगमें सब प्राणी योगी और विज्ञानी होकर भगवान्‌का ध्यान करके भवसागरसे पार होते हैं। त्रेतामें अनेक प्रकारके यज्ञ करके प्रभु को कर्मों का समर्पण कर संसारसे तरते हैं ॥

द्वापर करि रघुपति पद पूजा ❀ नर भव तरहिं उपाय न दूजा
कलियुग केवल हरिगुन गाहा ❀ गावत नर पावहिं भव थाहा

द्वापरमें श्रीरामजीके चरणोंकी पूजा करके मनुष्य भवसागर से तरते हैं दूसरा उपाय नहीं है। कलियुगमें केवल भगवान्‌के गुणोंकी कथा को गाने से ही संसार-सागर का थाह पाते हैं ॥

कलियुग योग न यज्ञ न ज्ञाना ❀ एक अधार राम गुन गाना
सब भरोस तजि जो जप रामहिं ❀ प्रेम समत गाव गुन ग्रामहिं

कलियुगमें न योग न यज्ञ और न ज्ञानका ही बल है, एकमात्र रामजीके गुणगान का आधार है। सब भरोसा त्यागकर जो रामजीका भजन करते और उनके गुणोंका गान करते हैं।

सोइ भव तर कछु संशय नाहीं ❀ नाम प्रताप प्रगट कलि माहीं
कलिकर एक पुनीत प्रतापा ❀ मानस पुण्य होहिं नहिं पापा

वह भवसागर तरते हैं, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है क्योंकि कलियुगमें नाम की महिमा प्रसिद्ध है। कलियुगका यह पवित्र प्रभाव है कि मानसिक पुण्योंका फल होता है, पाप का नहीं ॥

दोहा—कलियुग समयुग आन नहिं, जो नर कर विश्वास।
गाइ राम गुणगण विमल, भवतर बिनहि प्रयास ॥१५१॥

कलियुगके समान दूसरा युग नहीं है, यदि मनुष्य विश्वास करे तो रामचन्द्रजी के विमल गुण-गान करके बिना प्रयास ही भवसागर पार हो जाय ॥१५१॥

प्रगट चारि पद धर्मके, कलिमहँ एक प्रधान।
येन केन विधि दीन्हे, दान करै कल्यान ॥१५२॥

तप, ज्ञान, यज्ञ और दान ये धर्मके चारों चरण प्रसिद्ध हैं, परन्तु कलियुगमें एक ही प्रधान है—किसी तरहसे भी दिया हुआ दान कल्याण करता है ॥१५२॥

नित युग धर्म होहिं सब केरे ❀ हृदय राम माया के प्रेरे
शुद्ध सत्व समता विज्ञाना ❀ कृत प्रभाव प्रसन्न मन जाना

युगोंके धर्म नित्य ही रामचन्द्रजीकी प्रेरणासे सबके हृदयमें होते हैं ॥१॥ जब शुद्ध सात्विक भाव, समता, विज्ञानसे मन प्रसन्न हो, तब सत्ययुगका प्रभाव जानना चाहिये ॥ २ ॥

सत्व बहुत रज कछु रति कर्मा ❀ सब बिधि सुख त्रेताकर धर्मा
बहु रज स्वल्प सत्व कछु तामस ❀ द्वापर हर्ष धर्म भय मानस

सतोगुण बहुत और रजोगुण थोड़ा, कर्मोंमें प्रीति और सब तरह प्रसन्न रहना त्रेता युगका धर्म है। रजोगुण अधिक, सतोगुण थोड़ा और कुछ तमोगुण, मनमें हर्ष तथा भय द्वापर युगका धर्म है ॥

तामस बहुत रजोगुन थोरा ❀ कलि प्रभाव विरोध चहुँ ओरा
बुध युगधर्म जानि मनमाहीं ❀ तजि अधर्म रति धर्म कराहीं

तमोगुण बहुत और रजोगुण थोड़ा और चारों ओर विरोध कलियुगकी महिमा है ॥
इससे बुद्धिमान् लोग मनमें धर्म को जानकर अधर्मसे प्रीति छोड़कर धर्म करते हैं ॥६॥

कालधर्म नहिं व्यापहिं ताही ❁ रघुपति चरन प्रीतिअति जाही
नटकृत कपट बिकट खगराया ❁ नट सेवकहिं न व्यापै माया

कलिधर्म उसे नहीं व्यापता जिसकी रघुनाथजीके चरणोंमें अत्यन्त प्रीति है। हे पक्षिराज ! मदारीके किए हुए कपट जालकी माया विकट होती है, पर उनके सेवकोंको नहीं व्यापती ॥

दोहा—हरिमाया कृत दोष गुण, बिनु हरि भजन न जाहिं।
भजिय रामसबकाम तजि, अस बिचारि मनमाहिं ॥१५३॥

भगवान्की माया द्वारा किए दोष-गुण, बिना रामजीका भजन किए नहीं जाते। ऐसा मनमें विचारकर सब कामों को छोड़ रामचन्द्रजीका भजन कीजिये ॥१५३॥

तेहि कलिकाल बरष बहु, बसेउँ अवध विहँगेश।
परेउ दुकाल विपत्ति वश, तब मैं गयउँ विदेश ॥१५४॥

हे गरुड़जी ! सुनिए, मैं उस कलिकालमें अयोध्यामें बहुत वर्षों तक रहा, फिर दुकाल पड़ा तब मैं विपत्तिके वश विदेश चला गया ॥१५४॥

गयउँ उजेनी सुनु उरगारी ❁ दीन मलीन दरिद्र दुखारी
गये काल कछु संपति पाई ❁ तहँ पुनि करउँ शंभु सेवकाई

हे गरुड़जी ! सुनिए, मैं दीन, मलीन, दरिद्र और दुःखी हो उज्जैनको गया ॥ कुछ समय बीतने पर मुझे कुछ सम्पत्ति मिली, तब मैं फिर वहीं महादेवजोकी सेवा करने लगा ॥

बिप्र एक वैदिक शिवपूजा ❁ करइ सदा तेहि काज न दूजा
परम साधु परमारथ विंदक ❁ शंभु उपासक नहिं हरि-निंदक

एक ब्राह्मण था, वह वैदिक विधिसे सदा शिवजीकी पूजा किया करता था। उसको दूसरा कुछ काम नहीं था, वह शिवजीका उपासक तो था, परन्तु विष्णुजीका निन्दक नहीं था ॥

तेहि सेवौं मैं कपट समेता ❁ द्विज दयालु अति नीति निकेता
बाहिज नम्र देखि मोहिं साईं ❁ बिप्र पढ़ाव पुत्र की नाईं

कपटसे भरा हुआ मैं उस ब्राह्मणकी सेवा करता था। वह ब्राह्मण दयालु अत्यन्त ही नीतिमान् था। हे स्वामिन् ! वह ब्राह्मण मुझे बाहरसे नम्र देखकर पुत्रके समान पढ़ाता था ॥

शंभु मंत्र मोहिं द्विजवर दीन्हा ❁ शुभ उपदेश बिबिध बिधि कीन्हा
जपौं मंत्र शिव मन्दिर जाई ❁ हृदय दंभ अहमिति अधिकाई

उस श्रेष्ठ ब्राह्मणने मुझे शिव-मन्त्र दिया और बहुत तरह का शुभ उपदेश किया। मैं शिवजीके मन्दिरमें जाकर मन्त्र का जप तो करता था, पर मेरे हृदयमें अहङ्कार भरा था ॥

दोहा—मैं खल मल संकुल मति, नीच जाति वश मोह।
द्विज हरिजन देखत जरौं, करौं विष्णुकर द्रोह ॥१५५॥

मैं दुष्ट मलिन-बुद्धि नीच जातिका था इसलिए मोहके वश होकर भगवान्‌के भक्तों और ब्राह्मणोंको देखकर जलता और विष्णुका द्वेष करता था ।।१५५।।

सोरठा—गुरु मोंहि नित्य प्रबोध, दुखित देखि आचरन मम ।
मोंहि उपजै अतिक्रोध, दंभिहिं नीति कि भावई ।।१५।।

गुरुजी मेरा आचरण देखकर दुःखी होते थे । मुझे नित्य समझाते थे, किन्तु मुझे बहुत क्रोध उत्पन्न होता था, भला दम्भी मनुष्यको कभी नीति अच्छी लगती है ।।१५।।

एक बार गुरु लीन्ह बुलाई ❀ मोंहि नीति बहु भाँति सिखाई
शिव सेवा कै सुत फल सोई ❀ अविरल भक्ति राम पद होई

एक बार मुझे गुरुने बुला लिया और बहुत तरहसे नीति सिखाई ।। उन्होंने कहा—हे पुत्र ! शिवजीकी सेवाका यही फल है कि रामजीके चरणोंमें अविरल भक्ति हो ।।२।।

रामहिं भजहिं तात शिव धाता ❀ नर पामर कै केतिक बाता
जासु चरन अज शिव अनुरागी ❀ तासु द्रोह सुख चहसि अभागी

हे तात ! शिव और ब्रह्मा भी रामचन्द्रजीका भजन करते हैं, तब नीच मनुष्यकी तो बात ही कितनी है । जो ब्रह्मा और शिवजी के उपास्य हैं उनसे तू द्रोह करके सुख चाहता है ।।४।।

हर कहँ हरि-सेवक गुरु कहेऊ ❀ सुनि खगनाथ हृदय मम दहेऊ
अधम जाति मैं विद्या पाये ❀ भयउँ यथा अहि दूध पिआये

हे गरुड़जी ! जब गुरुने महादेवजीको विष्णु का सेवक कहा, तो यह सुनकर मेरी छाती जल उठी । मैं नीच जाति विद्या पाने पर वैसा ही हो गया, जैसा दूध पिलाने पर साँप हो जाता है ।

मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती ❀ गुरुकर द्रोह करउँ दिन राती
अति दयालु गुरु स्वल्प न क्रोधा ❀ पुनि पुनि मोंहि सिखाव सुबोधा

मैं अभिमानी, भाग्यहीन, दुष्ट, कुजाति दिन-रात गुरुका द्रोह करता था ।। किन्तु गुरु बड़े दयालु थे, उनको जरा भी क्रोध नहीं होता था । वे मुझे बार-बार उत्तम ज्ञान सिखाते थे ।।

जेहि ते नीच बड़ाई पावा ❀ सो प्रथमहिं हठि ताहि नशावा
धूम अनल संभव सुनु भाई ❀ तेहि बुझाव घन पदवी पाई

नीच जिससे बड़ाई पाता है, वह पहले हठ पूर्वक उसीका नाश करता है ।। हे भाई ! सुनो, धूआँ अग्निसे पैदा होता है, वही मेघकी पदवी पाकर उसी अग्निको बुझाता है ।।१०।।

रज मग परी निरादर रहई ❀ सबकर पग प्रहार नित सहई
मरुत उड़ाइ प्रथम तेहि भरई ❀ नृप किरीट पुनि नयनन्ह परई

धूल रास्तेमें पड़ी निरादृत रहती है और सबका नित्य पाद-प्रहार सहती है ।। वही वायुके संसर्गसे ऊँचे उठती और राजाके किरीट-मुकुट और आँखोंमें पड़ती है ।।१२।।

सुनु खगपति अस समुझि प्रसंगा ❀ बुध नहिं करहिं अधम कर संगा
कवि कोविद गावहिं अस नीती ❀ खल सन कलह न भल नहिं प्रीती

हे पक्षियोंके नायक गरुड़जी ! सुनो, चतुर जन इस प्रसङ्गको समझकर नीचोंका संग नहीं करते । कुशल विद्वान् ऐसी नीति कहते हैं कि दुष्टसे न तो विरोध ही अच्छा है, न प्रीति ही ।।

उदासीन नीति रहिय गुसाईं ❀ खल परिहरिय स्वान की नाईं
मैं खल हृदय कपट कुटिलाई ❀ गुरु हित कहहिं न मोहिं सुहाई

हे स्वामिन् ! दुष्टसे नित्य उदासीन रहना चाहिये, दुष्टको कुत्तेके समान त्याग देना चाहिये।। मैं दुष्ट था इसलिए गुरु मेरे हितकी बात कहते थे, पर वह मुझे न सुहाती थी ।।१६।।

दोहा—एक बार हर-मन्दिर, जपत रहेउँ शिव नाम ।
गुरु आयउ अभिमानते, उठि नहिं कीन्ह प्रणाम ।।१५६।।

एक बार मैं शिवजीके मन्दिर में शिवजीका नाम जपता था । गुरुजी आये और मैंने अभिमान वश उन्हें उठकर प्रणाम नहीं किया ।। १५६ ।।

सो दयालु नहिं कहेउ कछु, उर न रोष लवलेश ।
अति अघ गुरु अपमानता, सहि नहिं सकेउ महेश ।।१५७।।

वे दयालु थे, कुछ नहीं कहे, उनके हृदयमें क्रोध का लवलेश भी न हुआ । परन्तु गुरुके अपमानके पापको शिवजी सह नहीं सके ।। १५७ ।।

मन्दिर माँझ भयउ नभ बानी ❀ रे हतभाग्य अधम अभिमानी
यद्यपि तव गुरु स्वल्प न क्रोधा ❀ अति कृपालु चित सम्यक बोधा

तब मन्दिरमें यह आकाशवाणी हुई कि रे हतभाग्य, मूर्ख, अभिमानी ! ।। १ ।। यद्यपि तेरे गुरुको रंचमात्र भी क्रोध नहीं है, क्योंकि वे दयालु-चित्त हैं ।। २ ।।

तदपि शाप देहौं शठ तोहीं ❀ नीति बिरोध सुहात न मोहीं
जौं नहिं दण्ड करौं खल तोरा ❀ भ्रष्ट होइ श्रुति मारग मोरा

तो भी रे शठ ! तुझे मैं शाप दूंगा, क्योंकि नीति-विरुद्ध कार्य मुझे अच्छा नहीं लगता ।। रे खल ! यदि तुझे दण्ड न दूंगा, तो मेरा वेदमार्ग भ्रष्ट हो जायेगा ।। ४ ।।

जे शठ गुरुसन इर्षा करहीं ❀ रौरव नरक कल्प शत परहीं
त्रियक योनि पुनि धरहिं शरीरा ❀ अयुत जन्म भरि पावहिं पीरा

जो शठ गुरुसे ईर्ष्या करते हैं वे सौ कल्पतक रौरव-नरकमें पड़ते हैं ।। फिर तिर्यग्योनि में जाकर शरीर धारण करते हैं और दश हजार जन्म तक दुःख पाते हैं ।। ६ ।।

बैठि रहेसि अजगर इव पापी ❀ सर्प होहु खल मलमति व्यापी
महा बिटप कोटर महँ जाई ❀ रहु रे अधम अधोगति पाई

अरे पापी खल ! तू गुरुको देखकर अजगरके समान बैठा रह गया, तेरी बुद्धिमें पाप व्याप गया ।। इससे तू सर्प होके नीच अधोगति पाकर वृक्षके कोटरमें जाकर रह ।।८।।

दोहा—हाहाकार कीन्ह गुरु, सुनि दारुन शिव शाप ।
कंपित मोहिं बिलोकि अति, उर उपजा परिताप ।।१५८।।

शिवके कठिन शापको सुनकर गुरुने बड़ा हाहाकार किया और मुझे बहुत काँपता हुआ देखकर उनके मनमें बड़ा सन्ताप हुआ ॥१५८॥

दोहा—करि दण्डवत सप्रेम गुरु, शिव सन्मुख कर जोरि।
विनय करत गदगद्र गिरा, समुझि घोर गति मोरि॥१५९॥

गुरुजी मेरी घोर गतिको समझकर प्रेम सहित दण्डवत् करके महादेवजीके सामने हाथ जोड़कर गद्गद वाणीसे स्तुति करने लगे ॥१५९॥

छं०-नमामीशमीशाननिर्वाणरूपम्। विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम्॥
अजंनिर्गुणंनिर्विकल्पं निरीहम्। चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम्॥

हे शंकर, स्वामी निर्वाणरूप, समर्थ, व्यापक, ब्रह्म और वेदस्वरूप, मैं आपको प्रणाम करता हूँ। जन्म रहित, निर्गुण. निर्विकल्प, चेष्टारहित ज्ञानस्वरूप, आकाशरूप, मैं आपको भजता हूँ॥

निराकारमोंकारमूलं तुरीयम्। गिराज्ञानगोतीतमीशं गिरीशम्॥
करालं महाकालकालं कृपालुम्। गुणागार संसारपारं नतोऽहम्॥

निराकार, ओंकारके मूल, तुरीयसे परे, वाणी, ज्ञान और इन्द्रियोंसे दूर ईश्वर, कैलाशके स्वामी, विकराल महाकाल और महाकालसे भी काल, आपको नमस्कार करता हूँ॥

तुषाराद्रि संकाशगौरं गभीरम्। मनोभूत कोटिप्रभा श्री शरीरम्॥
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारुगंगा। लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा॥

हिमगिरिके समान गौर वर्ण, गम्भीर स्वभाव, करोड़ों कामदेवके समान सुन्दर शरीर वाले, जटाजूटमें गंगाजीको धारण किए बालचन्द्रसे शोभित गलेमें सर्पोंसे युक्त॥

चलत्कुण्डलं शुभ्रनेत्रं विशालम्। प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालुम्॥
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालम्। प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि॥

कानमें चंचल कुण्डल, सुन्दर विशाल नेत्र प्रसन्नमुख, नीलकंठ. दयालु, सिंहचर्मके वस्त्र धारण किये, मुण्डमाला पहने हुए, सबके स्वामी, सबके प्रिय शंकरजीको मैं भजता हूँ॥

प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशम्। अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशम्॥
त्रयः शूलनिर्मूलनं शूलपाणिम्। भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम्॥

प्रचण्ड, श्रेष्ठ, प्रगल्भ, ईश्वर, जन्मरहित, करोड़ों सूर्यके समान प्रकाशमान्, तीनों प्रकार की पीड़ाओंको निर्मूल करनेवाले, त्रिशूलधारी, भक्तिसे प्राप्त उमापतिजीको मैं भजता हूँ॥

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी। सदा सज्जनानंददाता पुरारी॥
चिदानंद संदोह मोहापहारी। प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी॥

आप कलातीत, कल्याण और कल्पान्तकारी, सदा सज्जनोंको आनन्द देनेवाले, त्रिपुरासुरके शत्रु, ज्ञानानन्दके राशि, मोहनाशक, कामदेवके शत्रु, हे प्रभो! शंकर! मुझपर प्रसन्न होइये॥

न यावत् उमानाथ पादारविन्दम्। भजन्तीह लोके परे वा नराणाम्॥
न तावत्सुखं शांति संतापनाशम्। प्रसीद प्रभो सर्वभताधिवासम्॥

हे उमापति! जबतक आपके चरण-कमलका स्मरण न करें तबतक मनुष्यों को इसलोक और परलोकमें सुख-शान्ति नहीं होती, अतः हे सब प्राणियोंमें व्यापक प्रभो! आप प्रसन्न होइये ॥

न जानामि योगं जपं नैव पूजाम्। नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यम्॥
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानम्। प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो॥२६

न मैं योग जानता हूँ, न जप और न पूजा, हे शम्भो! सदा सर्वदा मैं आपको नमस्कार करता हूँ। हे ईश! वृद्धावस्था और जन्मके दुःखसे संतप्त मुझ दुःखीकी रक्षा कीजिये ॥

श्लोक—रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतुष्टये।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शंभुः प्रसीदति ॥१॥

यह रुद्राष्टक ब्राह्मणने शिवजीको प्रसन्न करनेके लिए कहा, जो मनुष्य भक्ति पूर्वक इसका पाठ करेंगे उनपर शंकरजी प्रसन्न होंगे ॥ १ ॥

दोहा—सुनि बिनती सर्वज्ञ शिव, देखि बिप्र अनुराग।
पुनि मन्दिर बानी भई, हे द्विजवर वर माँगु ॥१६०॥

सर्वज्ञ महादेवजी यह विनती सुन तथा ब्राह्मणका अनुराग देखकर प्रसन्न हुए। फिर मन्दिरमें यह आकाशवाणी हुई कि हे विप्रवर! वर माँगो ॥ १६० ॥

जो प्रसन्न प्रभु मोपर, नाथ दीन पर नेह।
निज पद भक्ति देइ प्रभु, पुनि दूसर वर देहु ॥१६१॥

हे प्रभो! यदि आप मुझपर प्रसन्न हैं और इस दीनपर स्नेह रखते हैं, तो पहले अपने चरणोंकी भक्ति देकर फिर दूसरा वर दीजिये ॥ १६१ ॥

तव माया वश जीव जड़, संतत फिरहिं भुलान।
तेहि पर क्रोध न करिय प्रभु, कृपासिन्धु भगवान ॥१६२॥

यह जड़ जीव आपकी मायाके वशमें होकर संसारमें निरन्तर भटकता फिरता है। हे प्रभो! आप कृपासागर भगवान् हैं, अतः इसपर क्रोध न कीजिये ॥१६२॥

शंकर दीनदयालु अब, एहिपर होहु कृपाल।
शापानुग्रह होहि जेहिं, नाथ थोर ही काल ॥१६३॥

हे दीनदयालु शंकर! अब आप इसपर कृपा करें। हे नाथ! जिससे आपके अनुग्रहसे थोड़े ही समयमें इसका शापमोचन हो जाय ॥ १६३ ॥

एहि कर होइ परम कल्याना ❀ सोइ करहु अब कृपानिधाना
बिप्र गिरा सुनि परहित सानी ❀ एवमस्तु इति भइ नभ बानी

और हे कृपानिधान! अब वही कीजिये, जिससे इसका परम कल्याण हो। परहितमें सनी ब्राह्मणकी विनतीको सुनकर आकाशवाणी हुई कि 'एवमस्तु'—अर्थात् ऐसा ही होगा ॥

यदपि कीन्ह एहि दारुन पापा ❀ पुनि मैं दीन्ह क्रोध करि शापा
तदपि तुम्हारि साधुता देखी ❀ करिहौं एहिपर कृपा विशेखी

यद्यपि इसने भीषण पाप किया है, और मैंने भी क्रोध करके शाप दिया है ।।३।। तथापि तुम्हारी साधुता देखकर इसपर विशेष कृपा करूँगा ।। ४ ।।

छमाशील जे पर उपकारी ❁ ते द्विज प्रिय मोहिं यथा खरारी
मोर शाप द्विज व्यर्थ न जाइहि ❁ जन्म सहस्र अवसि यह पाइहि

जो क्षमा-शील और परोपकारी हैं, वे ब्राह्मण मुझे राक्षसोंके बैरी रामचन्द्रजीके समान प्रिय हैं । हे द्विज ! मेरा शाप व्यर्थ नहीं जायेगा, यह अवश्य ही हजार जन्म पायेगा ।।६।।

जनमत मरत दुसह दुख होई ❁ यहि कहँ स्वल्प न व्यापिहि सोई
कवनेहु जन्म मिटहिं नहिं ज्ञाना ❁ सुनहु शूद्र मम बचन प्रमाना

जन्मते-मरते जो दुसह दुःख होता है, इसको वह थोड़ा सा भी न होगा ।। ७ ।। इसका ज्ञान किसी जन्ममें भी नष्ट नहीं होगा, हे शूद्र ! तू मेरा प्रामाणिक वचन सुन ले ।।८।।

रघुपति पुरी जन्म तव भयऊ ❁ पुनि तैं मम सेवा मन दयऊ
पुरी प्रभाव अनुग्रह मोरे ❁ रामभक्ति उपजिहि उर तोरे

श्रीरामचन्द्रजी की पुरी में तेरा जन्म हुआ, फिर तूने मेरी सेवा में मन लगाया ।। ९ ।। इसलिये पुरी के प्रभाव और मेरे अनुग्रह से तेरे हृदय में रामकी भक्ति उत्पन्न होगी ।।१०।।

सुनु मम बचन सत्य अब भाई ❁ हरि तोषक ब्रत द्विज सेवकाई
अब जनि करेसि बिप्र अपमाना ❁ जानेसु संत अनंत समाना

हे भाई ! अब मेरे सत्य वचन को सुनो, रामचन्द्रजी को सन्तुष्ट करने का व्रत ग्रहण कर ।। ब्राह्मण का अपमान मत करना और सन्तोंको भगवान् के समान ही समझना ।। १२ ।।

इन्द्र कुलिश मम शूल विशाला ❁ कालदण्ड हरि चक्र कराला
जो इनकर मारा नहिं मरई ❁ बिप्र द्रोह पावक सो जरई

इन्द्र का वज्र, मेरा विशाल त्रिशूल, यमराज का दण्ड तथा विष्णु का विकराल चक्र ।। इनके मारने से भी जो नहीं मरता वह विप्र-द्रोह की अग्नि में जल जाता है ।। १४ ।।

अस विवेक राखेउ मन माहीं ❁ तुम कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं
औरो एक आशिषा मोरी ❁ अव्याहत गति होइहि तोरी

ऐसा ज्ञान मन में रखना, तुझको संसार में कुछ भी दुर्लभ नहीं होगा ।। तुमको और भी मेरा आशीर्वाद है कि तुम्हारी अप्रतिहत गति होगी, अर्थात् सब जगह जा सकोगे ।।१६।।

दोहा—सुनि शिवबचन हरषि गुरु, एवमस्तु इति भाखि ।
मोहि प्रबोधि गयउ गृह, शंभु चरन उर राखि ।।१६४।।

शिवजी के वचन सुन कर गुरुजी प्रसन्न होकर बोले—एवमस्तु, ऐसा ही हो । वे मुझे समझा कर और शंकरजी के चरणों को हृदय में रख कर घर गये ।। १६४ ।।

प्रेरित काल बिंध्यगिरि, जाइ भयउँ मैं व्याल ।
पुनि प्रयास बिनु सो तनु, तजेउँ गये कछु काल ।।१६५।।

फिर काल से प्रेरित मैं विन्ध्याचल पर्वत पर जाकर सर्प हुआ। फिर कुछ समय बीतने पर बिना ही परिश्रम उस देह को मैंने त्याग दिया ॥ १६५ ॥

दोहा—जो तन धरउँ तजउँ पुनि, अनायास हरियान।
जिमि नूतन पट पहिरई, नर परिहरै पुरान ॥१६६॥

हे गरुड़जी ! इस प्रकार मैं जिस शरीर को धारण करता उसी को आसानी से त्याग देता था, जैसे कोई पुराने कपड़े को उतार कर नवीन वस्त्र पहन लेता है ॥ १६६ ॥

शिव राखी श्रुति नीति अरु, मैं नहिं पाव कलेश।
एहि विधि धरउँ विविध तनु, ज्ञान न गयउ खगेश ॥१६७॥

हे गरुड़जी ! इस प्रकार शिवजी ने वेद की मर्यादा भी रख ली और मैंने दुःख भी नहीं पाया। इसी विधि से अनेक देह धारण किए पर मेरा ज्ञान नहीं नष्ट हुआ ॥ १६७ ॥

त्रिजग देव नर जो तनु धरऊँ ❀ तहँ तहँ राम भजन अनुसरऊँ
एक शूल मोहिं बिसर न काऊ ❀ गुरु कर कोमल शील सुभाऊ

मैं तीनों लोक में देवता मनुष्य का जो शरीर जहाँ धरता, वहाँ-वहाँ राम-भजन का अनुसरण करता था। किंतु एक बात का दुःख मुझे कभी न भूला कि गुरुजी का स्वभाव बड़ा कोमल था।

चरम देह मैं द्विजकर पाई ❀ सुर दुर्लभ पुरान श्रुति गाई
खेलउँ तहाँ बालकन्ह मीला ❀ करउँ सकल रघुनायक लीला

मैंने अन्त में ब्राह्मण की देह पाई, जो कि देवताओं के लिए भी दुर्लभ वेदों ने बताया है ॥ वहाँ मैं बालकों में मिलकर खेलता था और सम्पूर्ण रामचन्द्रजी की लीला करता था ॥४॥

प्रौढ़ भये मोहिं पिता पढ़ावा ❀ समुझौं सुनौं गुनौं नहिं भावा
मनते सकल बासना भागी ❀ केवल रामचरन लव लागी

मेरे प्रौढ़ होनेपर पिता ने मुझे पढ़ाया, मैं उस पढ़ाई को समझता, सुनता और गुनता था ॥ पर मेरे मन में वह अच्छी न लगती थी, केवल रामचन्द्रजी के चरणों में मेरी लगन लग गयी ॥

कहु खगेश अस कवन अभागा ❀ खरी सेव सुरधेनुहिं त्यागा
प्रेम मगन मोहिं कछु न सुहाई ❀ हारेउ पिता पढ़ाइ पढ़ाई

हे गरुड़जी ! कहिए, ऐसा अभागा कौन है जो कामधेनु छोड़कर गधी की सेवा करे। मैं प्रेम में मग्न था, इसलिए मुझे कुछ न सुहाता था, मेरे पिता मुझे पढ़ा-पढ़ा कर हार गये॥

भये कालबश जब पितु माता ❀ मैं बन गयउँ भजन जन त्राता
जहँ जहँ विपिन मुनीश्वर पावउँ ❀ आश्रम जाइ वहाँ शिर नावउँ

जब पिता-माता मर गये तब मैं भगवान् का भजन करने के लिए वन में गया ॥९॥ वन में जहाँ मैं ऋषीश्वरों के दर्शन पाता वहाँ उनके आश्रमों में जा-जाकर शिर नवाता था ॥१०॥

बूझौं तिनहिं राम गुन गाहा ❀ कहहिं सुनौं हरषित खगनाहा
सुनत फिरौं हरिगुन अनुवादा ❀ अव्याहत गति शंभु प्रसादा

उनसे रामचन्द्रजी के गुण पूछता, जब वह कहते तो मैं प्रसन्न होकर सुनता । मैं ईश्वर गुणानुवाद सुनता फिरता था, शिवजी की दया से मेरी स्वच्छन्दगति तो थी ही ॥

छूटी त्रिविध ईषना गाढ़ी ❀ एक लालसा उर अति बाढ़ी
राम चरण बारिज जब देखौं ❀ तब निज जन्म सुफल करि लेखौं

तीनों प्रकार की दृढ़ इच्छायें तो छूटीं पर हृदय में एक लालसा बहुत बढ़ी ॥ वह लालसा यह थी कि मैं श्रीरामचन्द्रजी के चरण-कमलोंको देखूं तब अपना जन्म सफल समझूं ॥१४॥

जेहि पूछउँ सोइ मुनि अस कहई ❀ ईश्वर सर्व भूतमय अहई
निर्गुण मत नहिं मोहिं सुहाई ❀ सगुन ब्रह्म रति उर अधिकाई

मैं जिन ऋषियों से पूछता वे सभी ही ऐसा कहते कि ईश्वर सब वस्तु मय (सर्वव्यापी) हैं ॥ किन्तु मुझे यह निर्गुण मत नहीं सुहाता था, मेरी प्रीति सगुण ब्रह्ममें अधिक बढ़ती थी ॥

दोहा—गुरुके बचन सुरति करि, रामचरण मन लाग ।
रघुपति यश गावत फिरौं, क्षण क्षण नव अनुराग ॥१६८॥

गुरुजी के वचनों को स्मरण कर मेरा चित्त रामचन्द्रजी के चरणों में लग गया जिससे मैं श्रीरामचन्द्रजी का यश गाता फिरता था, क्षण-क्षण उनपर अनुराग बढ़ता जाता था ॥१६८॥

मेरु शिखर बट छाया, मुनि लोमश आसीन ।
देखि चरण शिर नायउँ, बचन कहेउँ अतिदीन ॥१६९॥

सुमेरु पर्वत पर वट के वृक्ष की छाया में लोमश ऋषि बैठे थे । उनको देखकर मैंने उनके चरणों में शिर नवाया और बहुत दीन वचन कहा ॥ १६९ ॥

सुनि मम बचन बिनीत मृदु, मुनि कृपालु खगराज ।
मोहिं सादर पूछत भये, द्विज आयउ केहि काज ॥१७०॥

हे गरुड़जी ! दयालु मुनि मेरे विनय युक्त कोमल वचन सुनकर बड़े आदर के साथ मुझसे पूछने लगे कि-हे ब्राह्मण ! तुम किस कार्य के लिए आये हो ? ॥ १७० ॥

तब मैं कहा कृपानिधि, तुम सर्वज्ञ सुजान ।
सगुन ब्रह्म आराधना, मोहिं कहहु भगवान ॥१७१॥

तब मैंने कहा—हे कृपानिधे ! आप सर्वज्ञ और चतुर हैं । हे भगवन् ! आप मुझपर कृपा कर सगुण ब्रह्म की आराधना (उपासना) कहिए ॥ १७१ ॥

तब मुनीश रघुपति गुणगाथा ❀ कहे कछुक सादर खगनाथा
ब्रह्मज्ञान रत मुनि विज्ञानी ❀ मोहिं परम अधिकारी जानी

हे गरुड़जी ! तब मुनीश्वर लोमश ने श्रीरामचन्द्रजी के गुणों को थोड़ी सी गाथा आदर पूर्वक कही । फिर ब्रह्मज्ञान में लीन विज्ञानी मुनि लोमश मुझे बहुत अच्छा अधिकारी जान कर॥२॥

लागे करन ब्रह्म उपदेशा ❀ अज अद्वैत अगुन हृदयेशा
अकल अनीह अनाम अरूपा ❀ अनुभव गम्य अखण्ड अनूपा

मुझे ब्रह्म संबंधी उपदेश करने लगे कि ब्रह्म अज, अद्वैत, निर्गुण, हृदयों के स्वामी ॥ अकल, अनीह, नाम रहित, रूप रहित, अनुभव से जानने योग्य, अखण्ड और अनुपम है ॥४॥

मन गोतीत अमल अविनाशी ❋ निर्विकार निरवधि सुखराशी
सो तैं ताहि तोहिं नहिं भेदा ❋ बारि बीचि इव गावहिं बेदा

वह मन और इन्द्रियों की पहुँच से बाहर, निर्मल, विकार रहित और सुखोंका ढेर है ॥ ब्रह्म और तुममें भेद उसी तरह नहीं है जैसे—पानी और लहर में नहीं है, ऐसा वेद गाते हैं ॥

बिबिध भाँति मुनि मोहिं समुझावा ❋ निर्गुण मत मोहिं हृदय न आवा
पुनि मैं कहेउँ नाइ पद शीशा ❋ सगुण उपासन कहहु मुनीशा

मुझे लोमश मुनि ने अनेक प्रकार से समझाया, पर निर्गुण मत मेरे हृदय में नहीं आया । फिर मैंने मुनि के चरणों में प्रणाम कर कहा—हे मुनीश्वर ! आप मुझसे सगुण उपासना कहिये ॥

राम भगति जल मम मन मीना ❋ किमि बिलगाइ मुनीश प्रवीना
सो उपदेश करहु करि दाया ❋ निज नयनन देखउँ रघुराया

रामचन्द्रजी की भक्ति तो जल है और मेरा मन उसमें मछली है, तब मछली पानीसे कैसे अलग हो सकती है ? आप कृपा कर मुझे वह उपदेश दीजिये जिससे मैं रामजी को अपनी आँखसे देखूँ ।

भरि लोचन बिलोकि अवधेशा ❋ तब सुनिहहुँ निर्गुण उपदेशा
मुनि पुनि कहि हरिकथा अनूपा ❋ खंडि सगुनमत अगुन निरूपा

अयोध्यानाथ को आँखों भर देख कर तब मैं निर्गुण उपदेश सुनूंगा । मुनीश्वर ने फिर अनुपम हरि कथा कही और सगुण ब्रह्म के मत का खण्डन कर निर्गुण रूप का प्रतिपादन किया ॥

तब मैं निर्गुण मत करि दूरी ❋ सगुण निरूपउँ करि हठ भूरी
उत्तर प्रति उत्तर मैं कीन्हा ❋ मुनि तन भये क्रोध के चीन्हा

तब मैं निर्गुण मत को दूर कर बड़े हठसे सगुण मत का निरूपण करने लगा ॥१३॥ इस प्रकार मैंने उत्तर-प्रति उत्तर किये, जिससे मुनिजी के शरीर में क्रोध के चिन्ह प्रगट हो गये ॥१४॥

सुनु प्रभु बहुत अवज्ञा किये ❋ उपज क्रोध ज्ञानिहुँ के हिये
अति संघर्ष करै जो कोई ❋ अनल प्रगट चंदन ते होई

हे प्रभो ! सुनिए, बहुत अवज्ञा करने पर ज्ञानी के हृदय में भी क्रोध उत्पन्न हो जाता है ॥१५॥ क्योंकि बहुत रगड़ करने पर चन्दन से भी अग्नि प्रगट हो जाती है ॥ १६ ॥

दोहा—बार बार सकोप मुनि, करहिं निरूपण ज्ञान ।
मैं अपने मन बैठि तब, करौं बिबिध अनुमान ॥१७२॥

मुनि लोमशजी क्रोध के साथ बार-बार ज्ञान का निरूपण करते थे और मैं बैठ कर अपने मनमें तरह-तरह के अनुमान करता था ॥ १७२ ॥

द्वैत बुद्धि बिनु क्रोध किमि, द्वैत कि बिनु अज्ञान ।
माया वश परिछिन्न जड़, जीव कि ईश समान ॥१७३॥

कि, द्वैत के बिना क्रोध कैसे आ सकता है और द्वैत क्या विना अज्ञान के हो सकता है ? माया के अधीन, परिछिन्न (भेदयुक्त) मूर्ख जीव क्या ईश्वर के समान हो सकता है ॥१७३॥

कबहुँ कि दुख सब कर हित ताके ❀ तेहि कि दरिद्र परस मणि जाके
पर द्रोही कि होइ निःशंका ❀ कामी पुनि कि रहइ अकलंका

जो सबका हितकारी है उसको क्या कभी दुःख हो सकता है, जिसके पास पारसमणि है उसे क्या दरिद्रता सता सकती है ? पर द्रोही क्या निःशंक हो सकता है, क्या कामी निष्कलंक रहेगा ?

वंश कि रह द्विज अनहित कीन्हे ❀ कर्म कि होहिं स्वरूपहिं चीन्हे
काहु सुमति कि खल सँग जामी ❀ शुभ गति पाव कि परतिय गामी

ब्राह्मणका अनहित करने पर क्या वंश रह सकता है ? स्वरूप पहचानें लेनेपर क्या कर्म रहेंगे ? क्या दुष्टके संगसे अच्छी बुद्धि उपजती है ? क्या पर-स्त्री गामी शुभगति पा सकता है ?

भव कि परहिं परमारथ विन्दक ❀ सुखी कि होहिं कबहुँ पर निन्दक
राज कि करै नीति बिनु जाने ❀ अघ कि रहै हरि चरित बखाने

परमात्माके जाननेवाले क्या संसारके बन्धनमें पड़ सकते हैं, क्या परनिन्दक सुखी होंगे ? नीति जाने बिना क्या कोई राज्य कर सकता है ? भगवान्‌के चरित्र के वर्णनसे क्या पाप रह सकता है ?

पावन यश कि पुण्य बिनु होई ❀ बिनु अघ अयश कि पावै कोई
लाभ कि कछु हरि भक्ति समाना ❀ जेहि गावहिं श्रुति सन्त पुराना

क्या बिना पवित्र पुण्यके यश होता है ? क्या कोई बिना पापके अपयश पाता है ? जिस भगवान्‌की भक्तिको महात्मा और पुराण गाते हैं उसके समान क्या कुछ लाभ है ?

हानि कि जग एहि सम कछु भाई ❀ भजिय न रामहिं नर तन पाई
अघ कि पिशुनता सम कछु आना ❀ कर्म कि दया सरिस हरियाना

हे भाई ! मनुष्य शरीर पाकर रामचन्द्रजीका भजन न करे, इसके बराबर भी क्या कोई हानि है ? चुगलखोरी के बराबर क्या और कुछ पाप है ? क्या दया जैसा और कोई कर्म है ?

एहि बिधि अमित युक्ति मन गुनऊँ ❀ मुनि उपदेश न सादर सुनऊँ
पुनि पुनि सगुण पक्ष मैं रोपा ❀ तब मुनि बोले बचन सकोपा

इस प्रकार अनेक युक्तियाँ मनमें सोचता था और मुनिका दिया उपदेश आदर पूर्वक नहीं सुनता था । जब मैंने बारम्बार सगुण का ही समर्थन किया तब मुनि क्रुद्ध हो बोले ॥

मूढ़ परम सिख देउँ न मानसि ❀ उत्तर प्रति उत्तर बहु आनसि
सत्य बचन विश्वास न करही ❀ बायस इव सबही ते डरही

अरे मूर्ख ! मैं अच्छी सीख देता हूँ, पर तू उसे नहीं मानता, बहुतसे जबाब पर जबाब देता है, सच्चे वचनों पर विश्वास नहीं करता और कौवेके समान सबसे डरता है ॥

शठ स्वपक्ष तब हृदय विशाला ❀ सपदि होहु पक्षी चंडाला
लीन्ह शाप मैं शीश चढ़ाई ❀ नहिं कछु भय न दीनता आई

रे दुष्ट ! तेरे मनमें अपने मतका बहुत हठ है, इसलिये तू अभी चाण्डाल पक्षी (कौवा) हो जा। मैंने शापको मस्तक पर चढ़ा लिया। उससे मुझे न भय हुआ, न दीनता आई ॥

दोहा–तुरत भयउँ मैं काग तब, पुनि मुनिपद शिरनाइ।
सुमिरि राम रघुवंशमणि, हर्षित चलेउँ पराइ ॥१७४॥

तब मैं तुरन्त ही कौवा हो गया और मुनिके चरणोंमें बारम्बार मस्तक नवाकर, रघुवंश भूषण श्रीरामचन्द्रजीको स्मरणकर प्रसन्तापूर्वक उड़कर वहाँसे चल दिया ॥१७४॥

उमा जे राम चरनरत, बिगत काम मद क्रोध।
निजप्रभुमय देखहिं जगत, का सन करहिं बिरोध ॥१७५॥

शिवजी कहते हैं, हे पार्वती ! जो काम, मद और क्रोध से रहित होकर रामजीके चरणों में संलग्न है, वे जगत् को अपने प्रभुमय देखते हैं, फिर बिरोध किससे करें ? ॥१७५॥

सुनु खगेश नहिं कछु ऋषि दूषन ❁ उर प्रेरक रघुवंश विभूषन
कृपासिन्धु मुनि मति करि भोरी ❁ लीन्हीं प्रेम परीक्षा मोरी

कागभुशुण्डिजी कहते हैं—हे पक्षिराज ! सुनो, ऋषिका इसमें कुछ दोष नहीं, क्योंकि हृदयमें प्रेरणा करनेवाले श्रीरामचन्द्रजी हैं ॥१॥ कृपासागर रामजीने मुनिकी बुद्धिको भोली बनाकर मेरी परीक्षा ली ॥ २ ॥

मन क्रम बच मोहिं निज जन जाना ❁ मुनि मति पुनि फेरी भगवाना
ऋषि मम सहन शीलता देखी ❁ राम चरन विश्वास विशेखी

मन, वचन ओर कर्मसे मुझे अपना सेवक जान फिर भगवान्‌ने मुनिकी बुद्धिको फेरा। ऋषिने मेरी सहनशीलता और रामजीके चरणोंमें मेरा विशेष विश्वास देखकर ॥४॥

अति विस्मय पुनि पुनि पछिताई ❁ सादर मुनि मोहिं लीन्ह बुलाई
मम परितोष विविध विधि कीन्हा ❁ हर्षित राम मन्त्र तब दीन्हा

बड़े आश्चर्यसे बार-बार पछताकर मुनिने आदरके साथ मुझे बुला लिया ॥ ५ ॥ मुझे अनेक प्रकारसे सन्तुष्ट किया और प्रसन्न होकर राम-नामका मन्त्र दिया ॥ ६ ॥

बालक रूप राम कर ध्याना ❁ कहेउ मोहिं मुनि कृपा निधाना
सुन्दर सुखद मोहिं अति भावा ❁ सो जु प्रथम मैं तुमहिं सुनावा

कृपानिधान मुनिने बालकरूप रामजी का ध्यान करनेको मुझे कहा ॥७॥ जो सुन्दर सुख देनेवाला मुझे बहुत अच्छा लगा, वह पहले ही मैंने तुमको सुनाया है ॥८॥

मुनि मोहिं कछुक काल तहँ राखा ❁ राम चरित मानस तब भाखा
सादर यह मोहिं कथा सुनाई ❁ पुनि बोले मुनि गिरा सुहाई

मुनिने कुछ समय तक मुझे वहाँ रखा, तब उन्होंने रामचरितमानस वर्णन किया ॥९॥ आदरके साथ मुझे यह कथा सुनायी फिर मुनि यह सुन्दर वचन बोले—॥१०॥

राम चरित रस गुप्त सुहावा ❀ शंभु प्रसाद तात मैं पावा
तोहिं निज भक्त राम-कर जानी ❀ ताते मैं सब कहेउँ बखानी

हे तात ! यह सुन्दर रामचरित मानस गुप्त वस्तु है, जिसे मैंने शिवजीकी कृपासे पाया है ॥ तुमको रामजी का निज भक्त जाना, इसलिए मैंने सब कुछ वर्णन किया ॥१२॥

राम भक्ति जिन्हके उर नाहीं ❀ कबहुँ न तात कहिय तिन्ह पाहीं
मुनि मोहिं विविध भाँति समुझावा ❀ मैंस प्रेम मुनि पद शिर नावा

जिनके हृदयमें रामजीकी भक्ति नहीं है उनसे हे तात ! इसे कभी नहीं कहना । मुनि ने मुझे अनेक तरहसे समझाया, मैंने प्रेमके साथ मुनिके चरणों में शिर नवाया ॥ १४ ॥

निजकर कमल परसि मम शीशा ❀ हर्षित आशिष दीन्ह मुनीशा
राम भक्ति अविरल उर तोरे ❀ बसहिं सदा प्रसाद अब मोरे

अपने कर, कमलोंको मेरे शिरपर फेर कर मुनि नें प्रसन्न हो आशीर्वाद दिया कि अब मेरी कृपा से तेरे हृदय में श्रीरामचन्द्रजी की सर्वदा अविरल भक्ति बास करेगी ॥ १६ ॥

दोहा—सदा रामप्रिय होहु तुम, शुभ गुण भवन अमान ।
कामरूप इच्छा मरन, ज्ञान विराग निधान ॥१७६॥

तुम सर्वदा रामजी के प्रिय और शुभगुणों के स्थान और निरभिमान होओगे । मनमाना रूप धारण कर सकोगे, स्वेच्छा से मरोगे और ज्ञान-वैराग्य के भण्डार होगे ॥ १७६ ॥

जेहि आश्रम तुम बसहु पुनि, सुमिरत श्रीभगवन्त ।
ब्यापहिं तहँ न अविद्या, योजन इक पर्यन्त ॥१७७॥

फिर तुम भगवान् श्रीरामजी का स्मरण करते हुए, जिस आश्रम में बास करोगे, वहाँ एक योजन पर्यन्त अविद्या न व्यापेगी ॥ १७७ ॥

काल कर्म गुन दोष सुभाऊ ❀ कछु दुख तुमहिं न ब्यापिहि काऊ
राम रहस्य ललित बिधि नाना ❀ गुप्त प्रगट इतिहास पुराना

तुमको काल, कर्म और स्वभाव के गुण-दोष का दुःख कभी न होगा । तुम श्रीरामजी के नाना प्रकार के सुन्दर छिपे हुए और प्रत्यक्ष रहस्यों सहित सब पुराणों तथा इतिहास—

बिनु श्रम तुम जानब सब सोऊ ❀ नित नव नेह रामपद होऊ
जो इच्छा करिहहु मन माहीं ❀ हरि प्रसाद कछु दुर्लभ नाहीं

वह सब तुम बिना परिश्रम के ही जानोगे और रामजी के चरणों में नित्य नया स्नेह होगा ॥३॥ मन में जो इच्छा करोगे, श्रीराम-कृपा से कुछ भी दुर्लभ नहीं होगा ॥ ४ ॥

सुनि मुनि आशिष सुनु मतिधीरा ❀ ब्रह्म गिरा भइ गगन गँभीरा
एवमस्तु तव बच मुनि ज्ञानी ❀ यह मम भक्त कर्म मन बानी

हे मतिधीर ! सुनिए, मुनि के आशीर्वाद को सुनकर आकाश से गम्भीर ब्रह्मवाणी हुई कि हे ज्ञानी मुनि ! तुमने जो कहा है वैसा ही हो, क्योंकि यह कर्म, मन और वाणी से मेरा भक्त है ॥

सुनि नभ गिरा हर्ष मोहिं भयऊ ❀ प्रेम मगन मन संशय गयऊ
करि बिनती मुनि आयसु पाई ❀ पद सरोज पुनि पुनि शिर नाई

आकाशवाणी सुनकर मुझे हर्ष हुआ, सब सन्देह दूर हो गया और मैं प्रेम में मग्न हुआ। विनती कर और मुनि की आज्ञा पाकर तथा बार-बार मुनि के चरण-कमलों में शिर नवाकर—

हर्ष सहित यहि आश्रम आयउँ ❀ प्रभु प्रसाद दुर्लभ वर पायउँ
इहाँ बसत मोहिं सुनु खग ईशा ❀ बीते कल्प सात अरु बीसा

आनंदपूर्वक इस आश्रम में आया। ईश्वर की कृपा से दुर्लभ बर पाया ।।९।। हे खगेश! सुनो, मुझे यहाँ रहते सत्ताइस कल्प बीत गये ।। १० ।।

करौं सदा रघुपति गन गाना ❀ सादर सुनहिं विहंग सुजाना
जब जब अवधपुरी रघुबीरा ❀ धरहिं भक्त हित मनुज शरीरा

मैं यहाँ सर्वदा श्रीरामचन्द्रजी के गुणों का गान करता हूँ जिसे आदर सहित चतुर पक्षी सुनते हैं ।।ज ब-जब अयोध्या में श्रीरामचन्द्रजी भक्तों के हित के लिए शरीर धारण करते हैं—

तब तब जाइ रामपुर रहऊँ ❀ शिशुलीला बिलोकि सुख लहऊँ
पुनि उर राखि राम शिशु रूपा ❀ निज आश्रम आवौं खगभूपा

तब-तब जाकर रामकी पुरी अयोध्या में रहता हूँ और बाललीला देखकर सुख पाता हूँ। हे पक्षिराज! फिर रामजी के बालरूपको हृदय में रखकर अपने आश्रम को लौट आता हूँ ।।१६।।

कथा सकल मैं तुमहिं सुनाई ❀ काग देह जेहि कारन पाई
कहेउँ तात सब प्रश्न तुम्हारी ❀ राम भक्ति महिमा अति भारी

जिस कारण मैंने कौएकी देह पायी वह कथा तुमको सुनाई है। हे तात! तुम्हारी सारी प्रश्नावली और रामभक्ति की बहुत बड़ी महिमा मैंने कही, जो अति गम्भीर है ।।

दोहा—ताते यह तनु मोहिं प्रिय, भयउ रामपद नेह।
निज प्रभु दर्शन पायउँ, गयउ सकल सन्देह ।।१७८।।

इसी से यह शरीर मुझे प्यारा है कि इसी शरीर से रामजी के चरणों में स्नेह हुआ, अपने स्वामी का दर्शन पाया और सम्पूर्ण सन्देह दूर हो गये ।। १७८ ।।

भक्तिपक्ष हठ करि रहेउँ, दीन्ह महाऋषि शाप।
मुनि दुर्लभ वर पायउँ, देखहु भजन प्रताप ।।१७९।।

मैं भक्ति पक्ष का हठ करता ही रहा जिससे महर्षि ने मुझे शाप दिया। परन्तु भजनका यह प्रताप तो देखिए कि जो वर मुनियों को भी दुर्लभ है, वह मैंने पाया ।। १७९ ।।

जे अस भक्ति जानि परिहरहीं ❀ केवल ज्ञान हेतु श्रम करहीं
ते जड़ कामधेनु गृह त्यागी ❀ खोजत आक फिरहिं पय लागी

जो ऐसा भक्ति को जानकर छोड़ देते हैं और केवल ज्ञान के लिए परिश्रम करते हैं ।।१।। वे मूर्ख घर में कामधेनु को छोड़कर दूध के लिए मदार का वृक्ष खोजते फिरते हैं ।।२।।

सुनु खगेश हरि भक्ति बिहाई ❀ सुख जे चाहहिं आन उपाई
ते सठ महासिन्धु बिनु तरनी ❀ पैरि पार चाहत जड़ करनी

हे खगेश ! सुनो, भगवद्भक्ति को छोड़कर जो दूसरे उपायों से सुख चाहते हैं ॥३॥ वे मूर्ख बिना नौका के ही महासागर को अपनी जड़ करनी से तैरकर पार होना चाहते हैं ॥४॥

सुनि भुशुण्डि के बचन भवानी ❀ बोलेउ गरुड़ हर्षि मृदु बानी
तव प्रसाद प्रभु मम उर माहीं ❀ संशय शोक मोह भ्रम नाहीं

महादेवजी कहते हैं—हे पार्वती ! कागभुशुण्डिजी के वचन सुनकर गरुड़ प्रसन्न होकर कोमल वाणीसे बोले—हे प्रभो ! आपकी कृपासे अब मेरे हृदयमें संशय, शोक, अज्ञान और भ्रम नहीं रहा ॥

सुनेउँ पुनीत राम गुन ग्रामा ❀ तुम्हरी कृपा लहेउँ विश्रामा
एक बात प्रभु पूछौं तोहीं ❀ कहहु बझाइ कृपानिधि मोहीं

राम के पवित्र गुणगान को सुनकर आपकी कृपा से विश्राम पाया, हे कृपानिधान प्रभो ! मैं आप से एक बात पूछता हूँ वह मुझे समझा कर कहिए ॥ ८ ॥

कहहिं सन्त मुनि वेद पुराना ❀ नहिं कछु दुर्लभ ज्ञान समाना
सो मुनि तुम सन कहेउ गुसाईं ❀ नहिं आदरेउ भक्ति की नाईं

वेद, पुराण, सन्त और मुनि कहते हैं कि ज्ञान के समान दुर्लभ पदार्थ और दूसरा कुछ नहीं है ॥ वही ज्ञान लोमश ऋषि ने कहा पर भक्ति के समान आपने आदर नहीं किया ॥१०॥

ज्ञानहिं भक्तिहिं अन्तर केता ❀ सकल कहहु प्रभु कृपा निकेता
सुनि उरगारि बचन सुख माना ❀ सादर बोलेउ काग सुजाना

हे कृपानिकेतन प्रभो ! ज्ञान और भक्ति में कितना अन्तर है ? वह सब कहिए ॥ इस प्रकार गरुड़ के वचन सुन कागभुशुण्डिजी प्रसन्न होकर आदर के साथ बोले—॥१२॥

भक्तिहिं ज्ञानहिं नहिं कछु भेदा ❀ उभय हरहिं भव सम्भव खेदा
नाथ मुनीश कहहिं कछु अंतर ❀ सावधान होइ सुनु बिहंगवर

भक्ति और ज्ञान में कुछ भेद नहीं है, दोनों संसार में उत्पन्न क्लेशों को हरते हैं परन्तु हे नाथ ! मुनीश्वर लोग कुछ अन्तर कहते हैं । हे श्रेष्ठ पक्षी ! उसको सावधान होकर सुनिए॥

ज्ञान बिराग योग बिज्ञाना ❀ ये सब पुरुष सुनहु हरियाना
पुरुष प्रताप प्रबल सब भाँती ❀ अबला अबल सहज जड़ जाती

हे गरुड़जी ! सुनिए, ज्ञान, वैराग्य, योग और विज्ञान ये सब पुरुष वर्ग हैं। पुरुष का प्रताप सब प्रकार से प्रबल होता है, अबला सहज ही मूर्ख जातिकी निर्बल होती है ॥१६॥

दोहा—पुरुष त्यागि सक नारिहिं, जौं विरक्त मति धीर ।
न तु कामी जो विषयवश, विमुख जो पद रघुबीर ॥१८०॥

स्त्री को वही पुरुष त्याग सकता है जो मतिधीर और वैराग्यवान् हो । किन्तु काम विषयी भोग विलासी और श्रीरामचन्द्रजी के चरणों से विमुख का यह साहस नहीं है ॥ १८० ॥

सोरठा—सोउ मुनि ज्ञान निधान, मृगनयनी बिधुमख निरखि।
विकल होहिं हरियान, नारि विश्व माया प्रकट ॥१५॥

हे गरुड़ ! वे ज्ञान-निधान मुनि भी मृग नयनी चन्द्रमुखी को देख कर व्याकुल हो जाते हैं। क्योंकि स्त्री संसार में साक्षात् माया है ॥ १५ ॥

इहाँ न पक्षपात कछु राखौं ❁ वेद पुरान सन्तमत भाखौं
मोह न नारि नारिके रूपा ❁ पन्नगारि यह नीति अनूपा

यहाँ कुछ भी पक्षपात न करके वेद, पुराण और सन्तों का मत वर्णन करता हूँ ॥१॥ हे गरुड़जी ! यह एक अनुपम रीति है कि स्त्री के रूप को देख कर स्त्री मोहित नहीं होती॥२॥

माया भक्ति सुनहु प्रभु दोऊ ❁ नारि वर्ग जानैं सब कोऊ
पुनि रघुबीरहिं भक्ति पियारी ❁ माया खलु नर्तकी बिचारी

हे पक्षिराज ! आप सुनिये, माया और भक्ति जो स्त्री-वर्ग हैं इनको सब कोई जानते हैं। फिर श्रीरामचन्द्रजी को तो भक्ति प्यारी है और माया बेचारी निश्चय ही नाचनेवाली नर्तकी है ॥

भक्तिहिं सानुकूल रघुराया ❁ ताते तेहि डरपति अति माया
राम भक्ति निरुपम निरुपाधी ❁ बसै जासु उर सदा अबाधी

भक्ति पर श्रीरामचन्द्रजी प्रसन्न रहते हैं इससे माया उससे बहुत डरती है ॥५॥ वह अनुपम उपद्रव रहित अखण्ड राम भक्ति जिसके हृदय में सदा बसती है—॥ ६ ॥

तेहि बिलोकि माया सकुचाई ❁ करि न सकै कछु निज प्रभुताई
अस बिचारि जो मुनि विज्ञानी ❁ याचहिं भक्ति सकल गुनखानी

उस प्राणी को देख कर माया सकुचाती है, कुछ अपनी प्रभुता नहीं कर सकती ॥७॥ ऐसा समझ कर जो विज्ञानी मुनि हैं वे संपूर्ण गुणों की खानि भक्ति की ही याचना करते हैं ॥८॥

दोहा—यह रहस्य रघुनाथकर, बेगि न जानै कोइ।
जाने ते रघुपति कृपा, सपनेहुँ मोह न होइ ॥ १८१ ॥

श्रीरामचन्द्रजी का यह रहस्यमय चरित्र है इसको जल्दी से कोई नहीं जानता, जो श्रीरामचन्द्रजी की कृपा से जान लेता है, उसको स्वप्न में भी मोह नहीं होता ॥१८१॥

औरो ज्ञान भक्तिकर, भेद सुनहु सुप्रवीन।
जो सुनि होइ रामपद, प्रीति सदा अविछीन ॥१८२॥

हे चतुर गरुड़जी ! ज्ञान और भक्ति के भेद को सुनो जिसे सुन कर रामचन्द्रजी के चरणों में न घटने वाली भक्ति होगी ॥ १८२ ॥

सुनहु तात यह अकथ कहानी ❁ समुझत बनै न जाइ बखानी
ईश्वर अंश जीव अविनाशी ❁ चेतन अमल सहज सुखरासी

हे नाथ ! यह अकथ कहानी सुनिये, जो समझते ही बनती है, पर बखानी नहीं जा सकती। जीव ईश्वर का अंश, नाश रहित, चैतन्य, निर्मल और स्वाभाविक सुख की राशि है ॥

सो मायावश भयउ गुसाईं ❀ बँध्यो कीर मर्कट की नाईं
जड़ चेतनहिं ग्रन्थि परि गई ❀ यदपि मृषा छूटत कठिनई

हे गोसाईं ! वह माया के वश में होकर तोते और बन्दर की तरह से बँधा है ॥३॥ जड़-चेतन की ग्रन्थि पड़ गयी है, यद्यपि वह झूठी है तथापि छूटने में कठिनता है ॥ ४ ॥

जबते जीव भयउ संसारी ❀ ग्रन्थि न छूट न होइ सुखारी
श्रुति पुरान बहु कहेउ उपाई ❀ छूट न अधिक अधिक अरुझाई

जबसे जीव संसारी हुआ तब से न वह ग्रन्थि खुलती है और न वह सुखी होता है ॥५॥ वेद पुराणों में बहुत से उपाय कहे हैं पर, छूटती नहीं, अधिक-अधिक उलझती ही जाती हैं ॥६॥

जीव हृदय तम मोह विशेखी ❀ ग्रन्थि न छूटि परै किमि देखी
अस संयोग ईश जब करई ❀ तबहुँ कदाचित सो निरुबरई

जीवके हृदयमें विशेष अज्ञान का अन्धकार है, जिससे दिखाई नहीं पड़ता—अर्थात् भला-बुरा नहीं सूझता ॥ फिर यह गाँठ कैसे छूटे, ईश्वर जब ऐसा संयोग करे तब वह कदाचित् सुलझ जाय ॥

सात्विक श्रद्धा धेनु सुहाई ❀ जो हरि कृपा हृदय बस आई
जप-तप व्रत यम नियम अपारा ❀ जे श्रुति कहै सुधर्म अचारा

सतोगुणी श्रद्धा रूपी सुन्दर गाय जो भगवत् कृपासे आकर हृदयमें निवास करे ॥ और जप, तप, व्रत, संयम जिनको वेद शुभ कर्म और कल्याणकारी आचरण कहते हैं ॥१०॥

तेइ तृन हरित चरै जब गाई ❀ भाव बत्स शिशु पाइ पेन्हाई
नोइ निवृत्ति पात्र विश्वासा ❀ निर्मल मन अहीर निज दासा

उस हरे तृण को जब गाय चरे, तब भाव रूपी बछड़े को पाकर पेन्हाती है ॥११॥ निवृत्ति नोवना हैं, विश्वास पात्र है और निर्मल मन रूपी अहीर गाय का सेवक है ॥ १२ ॥

परम धर्ममय पय दुहि भाई ❀ अवटै अनल अकाम बनाई
तोष मरुत तब क्षमा जुड़ावै ❀ धृतिसम जावन देइ जमावै

हे भाई! जब उस परम धर्म रूपी दूधको दुह कर निष्कामरूपी अग्नि बना कर औटावे॥१३॥ तब सन्तोष और क्षमा रूपी वायुसे ठण्डा करके सौम्यतारूपी जावन देकर जमावे ॥ १४ ॥

मुदिता मथ बिचार मथानी ❀ दम अधार रजु सत्य सुबानी
तब मथि काढ़ि लेइ नवनीता ❀ बिमल बिराग सुभग सुपुनीता

प्रसन्नतारूपी स्त्री विचाररूपी मथानीसे मथे। इन्द्रिय दमन आधार है, सत्य और सुन्दर वाणी रूपी रस्सी लाये तब मथकर निर्मल पवित्र सुन्दर कल्याणकारी वैराग्यरूपी मक्खन निकाल ले ॥

दोहा—योग अग्नि करि प्रगट तब, कर्म शुभाशुभ लाय ।
बुद्धि सिरावै ज्ञान घृत, ममता मल जरि जाय ॥१८३॥

तब योग रूपी अग्नि प्रगट करके शुभाशुभ कर्म रूपी इंधन लगावे तो ममता रूपी मैल जल जावे और ज्ञान रूपी स्त्री शीतल करे ॥ १८३ ॥

दोहा—तब विज्ञान निरूपिनी, बुद्धि विशद घृत पाइ।
चित्त दिया भरि धरै दृढ़, समता दियठ बनाइ ॥१८४॥

तब विज्ञान रूपिणी बुद्धि स्वच्छ घी पाकर चित्त रूपी दीयेमें भरे और समता रूपी दृढ़ दीयठ बनाकर उस पर रखे ॥ १८४ ॥

तीनि अवस्था तीनि गुण, तिहि कपास ते काढ़ि।
तूल तुरीय सँवारि पुनि, बाती करै सुगाढ़ि ॥१८५॥

जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति तीनों अवस्था और सत्, रज, तम तीनों गुण रूपी कपाससे तुरीय अस्था रूपी रूई निकाल कर फिर सुन्दर मोटी बत्ती बनावे ॥ १८५ ॥

सोरठा—यहि विधि लेसइ दीप, तेजराशि बिज्ञानमय।
जातहिं जासु समीप, जरहिं मदादिक सलभ सब ॥ १६ ॥

इस प्रकार तेज की राशि विज्ञान रूपी दीपक को जलावे जिसके समीप में जाते ही अभिमान आदिक समस्त पतंगे भस्म हो जायें ॥ १६ ॥

सोहमस्मि इति वृत्ति अखण्डा ❀ दीप सिखा सोइ परम प्रचण्डा
आतम अनुभव सुख सुप्रकासा ❀ तब भवमूल भेद भ्रम नासा

वह ईश्वर मैं हूँ यह अखण्ड वृत्ति ही दीपक की अत्यन्त प्रचण्ड लौ है ॥१॥ तब आत्मानन्दका अनुभव करना सुन्दर उँजेला होता है और संसारका मूल भेद-भ्रम दूर हो जाता है ॥२॥

प्रबल अविद्या कर परिवारा ❀ मोह आदि तम मिटै अपारा
तब सोइ बुद्धि पाइ उजियारा ❀ उर गृह बैठि ग्रन्थि निरुवारा

इस प्रकार जब अविद्याके प्रबल कुटुम्बी अज्ञान आदि का अपार अन्धकार मिट जाता है ॥३॥ तब उस उँजेले को पाकर बुद्धीरूपी स्त्री हृदयरूपी भवनमें बैठकर गाँठ को खोलती है ॥४॥

छोरन ग्रन्थि पाव जब सोई ❀ तब यह जीव कृतारथ होई
छोरत ग्रन्थि जानि खगराया ❀ बिघ्न अनेक करहिं तब माया

यदि वह गाँठ छुड़ाने पावे तो यह जीव सफल मनोरथ हो जावे ॥५॥ परन्तु हे पक्षिराज ! गाँठ खोली जाती देख कर माया अनेक प्रकारके विघ्न उपस्थित करती है ॥ ६ ॥

ऋद्धि सिद्धि प्रेरइ बहु भाई ❀ बुद्धिहि लोभ देखावहिं जाई
कल बल छल करि जाइ समीपा ❀ अंचल बात बुझावहिं दीपा

हे भाई! बहुत सी ऋद्धि-सिद्धियोंको भेजती है वे आकर बुद्धिको लोभ दिखाती हैं। माया चतुराई के साथ बल पूर्वक उसके पास जाती है और अंचल की वायुसे दीपक को बुझा देती है ॥८॥

होइ बुद्धि जो परम सयानी ❀ तेहि तन चितव न अनहित जानी
जो तेहि बिघ्न बुद्धि नहिं बाधी ❀ तौ बहोरि सुर करहिं उपाधी

यदि बुद्धि अत्यन्त चतुर हुई तो उनकी ओर अपना अनहित करती जान कर नहीं देखती। यदि माया कृत विघ्न बुद्धि को नहीं बाँध सके तो फिर देवता उपद्रव करते हैं ॥१०॥

इन्द्रिय द्वार झरोखा नाना ❀ तहँ तहँ सुर बैठे करि थाना
आवत देखहिं बिषय बयारी ❀ ते हठि देहिं कपाट उघारी

इंद्रियाँ अनेकों द्वार और झरोखा हैं, वहाँ-वहाँ देवता स्थान बना कर बैठे हैं ॥११॥ वे विषय रूपी हवा के झोकों को आते देख कर हठ से किवाड़ खोल देते हैं ॥ १२ ॥

जब सो प्रभंजन उर गृह जाई ❀ तबहिं दीप बिज्ञान बुझाई
ग्रन्थि न छूटि मिटा सो प्रकासा ❀ बुद्धि बिकल भइ विषय बतासा

जब वह हवाका झोंका हृदयरूपी मंदिर में जाता है तब ज्ञानरूपी दीपक बुझ जाता है। तब गाँठ तो छुटी नहीं और वह उँजेला भी मिल गया, विषय रूपी वायु से बुद्धि व्याकुल हो गई ॥

इन्द्रिन्ह सुरन्ह न ज्ञान सुहाई ❀ विषय भोग पर प्रीति सदाई
विषय समीर बुद्धि कृत भोरी ❀ तेहि विधि दीप को बार बहोरी

इन्द्रियोंके देवताओं को ज्ञान नहीं सुहाता उनको विषयों को भोगने पर हीं सदा प्रीति रहती है। विषय रूपी हवाके झोंकेसे मति भ्रमित हो जाने पर कौन दीपक को फिर जलाता है ?॥

दोहा—तब फिरि जीव विविध विधि, पावै संसति क्लेश।
हरि माया अति दुस्तर, तरि न जाइ बिहँगेश ॥१८६॥

तब फिर हे पक्षिराज ! यह जीव संसार की योनियोंमें फिर कर क्लेश पाता है। श्रीरामचन्द्रजी की माया दुस्तर है, वह पार नहीं की जा सकती ॥ १८६ ॥

कहत कठिन समझत कठिन, साधन कठिन विवेक।
होइ घुनाक्षर न्याय जो, पुनि प्रत्यूह अनेक ॥१८७॥

ज्ञान कहनेमें कठिन, समझनेमें कठिन और साधनमें कठिन है। घुनाक्षर न्याय की भाँति कुछ हुआ भी तो फिर असंख्य विघ्न आ पड़ते हैं ॥ १८७ ॥

ज्ञान पंथ कृपानकै धारा ❀ परत खगेश न लागै बारा
जो निर्विघ्न पन्थ निर्बहई ❀ सो कैवल्य परमपद लहई

हे गरुड़ ! ज्ञान का मार्ग तलवार की धारके समान है, गिरनेमें देरी नहीं लगती ॥१॥ जो निर्विघ्न रास्ता पार कर लेता है, वही जीव मोक्ष रूपी श्रेष्ठ पद को पाता है ॥ २ ॥

अति दुर्लभ कैवल्य परम पद ❀ संत पुरान निगम आगम बद
राम भजन सोइ मुक्ति गुसाईं ❀ अनइच्छित आवत बरिआई

कैवल्य परम पद की प्राप्ति सन्त, पुराण और वेदोंने अत्यन्त दुर्लभ कही है ॥३॥ हे गोसाईं ! वह मोक्ष-परम पद राम भजन द्वारा बिना इच्छाके ही अवश्यमेव स्वयं आ जाता है ॥४॥

जिमि थल बिनु जल रहि न सकाई ❀ कोटि भाँति कोउ करै उपाई
तथा मोक्ष सुख सुनु खगराई ❀ रहि न सकै हरि भक्ति बिहाई

जैसे बिना धरतीके पानी नहीं रह सकता चाहे कोई करोड़ो तरहके उपाय करें हे खगराज ! सुनिये, उसी प्रकार हरि भक्ति को छोड़ कर मोक्ष सुख अन्यत्र नहीं रह सकता ॥६॥

अस बिचारि हरि भक्त सयाने ❀ मुक्ति निरादरि भक्ति लुभाने
भक्ति करत बिनु जतन प्रयासा ❀ संसृति मूल अविद्या नासा

ऐसा विचार कर चतुर हरि भक्ति मुक्ति का अनादर करके भक्ति पर लुभाते हैं ।।७।। भक्ति करते ही बिना यत्न और श्रमके ही जड़ अविद्या का समूल नाश हो जाता है ।।८।।

भोजन करिय तृप्ति हित लागी ❀ जिमि सो असन पचव जठरागी
प्रभु हरि भक्ति सुगम सुखदाई ❀ को अस मूढ़ न जाहि सुहाई

भोजन क्षुधा की तृप्तिके लिये किया जाता है और उसको जठराग्नि पचाती है ।। ऐसे ही हरि भक्ति सहज सुख देने वाली है, कौन ऐसा मूर्ख है, जिसको वह अच्छी न लगेगी ।।१०।।

दोहा—सेवक सेब्य भाव बिनु, भव न तरिय उरगारि ।
भजहु रामपद पंकज, अस सिद्धान्त बिचारि ।।१८८।।

हे गरुड़जी ! जीव सेवक स्वामी-भावके बिना संसार-सागरसे पार नहीं हो पाता, ऐसा सिद्धांत विचार कर श्रीरामचन्द्रजीके चरण-कमलों को भजिये ।। १८८ ।।

जो चेतन कहँ जड़ कर, जड़हिं करै चैतन्य ।
अस समर्थ रघुनायकहिं, भजहिं जीव ते धन्य ।।१८९।।

जो चेतन को जड़ करते और जड़ को चैतन्य करते हैं, ऐसे समर्थ श्रीरामचन्द्रजी को जो जीव भजते हैं, वे धन्य हैं ।। १८९ ।।

कहेउँ ज्ञान सिद्धान्त बुझाई ❀ सुनहु भक्ति मणि की प्रभुताई
राम भक्ति चिन्तामनि सुन्दर ❀ बसै गरुड़ जाके उर अन्तर

हे गरुड़जी ! ज्ञान का सिद्धान्त मैंने समझाकर कहा, अब भक्ति रूपी मणि की महिमा को सुनिये ।।१।। राम भक्तिरूपी सुन्दर चिन्तामणि जिसके हृदयमें निवास करती है—।।२।।

परम प्रकाश रूप दिन राती ❀ नहिं कछु चहिय दिया घृत बाती
मोह दरिद्र निकट नहिं आवा ❀ लोभ बात नहिं ताहि बुझावा

उसको रात-दिन परम प्रकाश प्राप्त रहता है, उसको दीपक, घी और बत्ती कुछ भी नहीं चाहिये ।। मोहरूपी दरिद्र पास नहीं आता और लोभ रूपी हवा भी उसे नहीं बुझाती ।।४।।

प्रबल अविद्या तम मिटि जाई ❀ हारहिं सकल सलभ समुदाई
खल कामादि निकट नहिं जाहीं ❀ बसै भक्ति मनि जेहि उर माहीं

तब अविद्या रूपी घोर अन्धकार मिट जाता है और सम्पूर्ण विकार रूपी फतिंगों का झुण्ड नाश हो जाता है ।। काम आदिक खल उसके पास नहीं जाते जिसमें राम भक्ति होती है ।।

गरल सुधा सम अरि हित होई ❀ तेहि मनि बिन सुख पाव न कोई
व्यापहिं मानस रोग न भारी ❀ जेहिक बस सब जवी दुखारी

जिसके प्रभाव से विष अमृत केसमान और शत्रु हितकारी हो जाते हैं । उस मणिके बिना कोई सुख नहीं पाता । भक्ति प्रतापसे मानस रोग नहीं व्यापते जिसके अधीन जीव दुखी हैं।।

राम भक्ति मनि उर बस जाके ❁ दुख लवलेस न सपनेहुँ ताके
चतुर सिरोमनि तेइ जगमाहीं ❁ जे मनि लागि सुजतन कराहीं

राम भक्ति रूपी मणि जिसके हृदयमें बसती है उसको स्वप्नमें भी लव लेश मात्र दुःख नहीं होता। संसारमें चतुर शिरोमणि वही हैं जो मणिके लिए अच्छे यत्न करते हैं ॥१०॥

सो मनि यदपि प्रगट जग अहई ❁ राम कृपा बिनु नहि कोउ लहई
सुगम उपाय पाइबे केरे ❁ नर हत भाग्य देत भट भेरे

वह मणि यद्यपि जगत्‌में प्रसिद्ध है तथापि बिना रामचन्द्रजी की कृपाके कोई नहीं पाता ॥११॥ उसके पाने का सरल उपाय है, परन्तु भाग्यहीन मनुष्य उसे ठुकरा देते हैं ॥१२॥

पावन पर्वत वेद पुराना ❁ रामकथा रुचिराकर नाना
मर्मी सज्जन सुमति कुदारी ❁ ज्ञान बिराग नयन उरगारी

वेद और पुराण पवित्र पर्वत रूप हैं जिनमें नाना प्रकार की राम-कथा सुन्दर खान रूपिणी है। सज्जन लोग मर्म जानते हैं, बुद्धि कुदारीके समान है, हे गरुड़जी! ज्ञान और वैराग्य नेत्र हैं ॥

भाव सहित खोदइ जेइ प्रानी ❁ पाव भगति मनि सब सुख खानी
मोरे मन प्रभु अस बिस्वासा ❁ राम ते अधिक राम कै दासा

जो प्राणी प्रीतिके साथ खोदता है वह समस्त सुखों की खानि भक्ति मणि को पाता है। कागभुशुण्डिजी कहते हैं हे प्रभो! मेरे मनमें तो ऐसा विश्वास है कि रामजीके दास रामजीसे बढ़ कर हैं।

राम सिन्धु घन सज्जन धीरा ❁ चंदन तरु हरि सन्त समीरा
सब कर फल हरिभक्ति सुहाई ❁ सो बिनु संत न काहुहि पाई

रामचन्द्रजी समुद्र रूपी हैं, धीरजवान् सज्जन मेघस्वरूप हैं, भगवान् चन्दन वृक्ष हैं, सन्त पवन रूप हैं, सबका फल सुन्दर हरि भक्ति है जो बिना सन्तों की कृपासे नहीं मिलती। हे पक्षिराज! जो ऐसा विचार कर सत्संग करेगा उसको राम भक्ति सहजमें प्राप्त होगी ॥

दोहा—ब्रह्म पयोनिधि मंदर, ज्ञान संत सुर आहि।
कथा सुधा मथि काढ़ई, भक्ति मधुरता जाहि ॥१९०॥

वेद सागर रूप हैं, ज्ञान मन्दराचल रूप, सज्जन देवता रूप हैं, जो समुद्र को मथ कर कथा रूपी अमृत निकालते हैं, चित्तमें भक्ति रूपी मिठास रहती है ॥ १९० ॥

बिरति चर्म असि ज्ञान मद, लोभ मोह रिपु मारि।
जय पाइय सो हरि भगत, देखु खगेश बिचारि ॥१९१॥

वैराग्य रूपी ढाल और ज्ञान रूपी तलवार लेकर मद, लोभ और अज्ञान रूपी शत्रुओं को मार कर विजय प्राप्त होती है, हे गरुड़जी! देखिये, वही रामजी का भक्त है ॥१९१॥

पुनि सप्रेम बोले खगराऊ ❁ जो कृपालु मोहिं ऊपर भाऊ
नाथ मोहिं निज सेवक जानी ❁ सप्त प्रश्न मम कहहु बखानी

तब पक्षिराज गरुड़ प्रेमके साथ बोले- हे कृपानाथ ! यदि आपकी मुझ पर प्रीति है ॥१॥ तो मुझे अपना सेवक जान कर मेरे सात प्रश्नोंके उत्तर बखान कर दीजिए ॥ २ ॥

प्रथमहिं कहहु नाथ मतिधीरा ❀ सब ते दुर्लभ कवन शरीरा
बड़ दुख कवन कवन सुख भारी ❀ सो संक्षेपहिं कहहु बिचारी

हे मतिधीर स्वामी ! यह कहिए कि,सबसे दुर्लभ शरीर कौन है ? ॥ ३ ॥ बड़ा दुःख कौन है और सबसे बड़ा सुख कौन है ? यह विचार कर संक्षेपमें कहिये ॥ ४ ॥

संत असंत मर्म तुम जानहु ❀ तेहि कर सहज सुभाव बखानहु
कवन पुन्य श्रुति विदित विशाला❀कहहु कवन अघ परम कराला

संत और असंतोंके भेद तुम जानते हो उनका सहज स्वभाव बखान कर कहिये । वेद में प्रसिद्ध बहुत बड़ा पुण्य कौन है ? अत्यन्त विकराल पाप कौन है ? उसको भी कहिये ॥

मानस रोग कहहु समुझाई ❀ तुम सर्वज्ञ कृपा अधिकाई
तात सुनहु सादर अति प्रीती ❀ मैं संक्षेप कहौं यह नीती

मानस रोग समझाकर कहिये, भुशुण्डिजीने कहा, तुम सर्वज्ञ मुझ पर बड़ी कृपा रखते हो ॥ इसीसे ऐसा कहा है, हे तात ! आदरके साथ सुनिये, यह नीति मैं संक्षेपमें कहता हूँ ॥

नर तनु सम नहिं कवनिउ देही ❀ जीव चराचर याचत जेही
नरक स्वर्ग अपवर्ग निसेनी ❀ ज्ञान बिराग भक्ति सुख देनी

मनुष्य शरीरके समान कोई शरीर नहीं, जिसको जड़-चेतन सब चाहते हैं ॥ ९ ॥ जो नरक, स्वर्ग और मोक्ष की सीढ़ी है; ज्ञान, वैराग्य और भक्तिके सुख को देने वाली है ॥१०॥

सो तनु धरि हरि भजहिं न जो नर ❀ होइ विषय रत मन्द मन्दतर
कंचन काँच बदल शठ लेहीं ❀ करते डारि परसमणि देहीं

उस शरीर को धारण कर मनुष्य श्री रामचन्द्रजी का भजन नहीं करते, विषयासक्त होते हैं,वे नीचसे भी नीच हैं । वे पारसमणि हाथसे फेंक देते हैं और सुवर्णके बदले काँच लेते हैं ॥

नहिं दरिद्र सम दुख जग माहीं ❀ संत मिलन सम सुख कछु नाहीं
पर उपकार बचन मन काया ❀ संत सहज सुभाव खग राया

संसारमें दरिद्रताके समान दुःख नहीं, सन्त समागमके समान कुछ सुख नहीं है । हे पक्षिराज ! सन्तों का सहज स्वभाव है कि वचन, मन और शरीरसे परोपकार करना है ॥

संत सहहिं दुख परहित लागी ❀ पर दुख हेतु असंत अभागी
भरुज तरु सम संत कृपाला ❀परहित सह नित विपति विशाला

संत दूसरों की भलाईके लिए दुःख सहते हैं अभागे दुर्जन दूसरों को दुःख देनेके लिए कष्ट भोगते हैं । संत जन भोजपत्रके समान हैं जो दूसरोंके कल्याणके लिए विपत्ति सहते हैं ॥

सन इव खल पर बंधन करई ❀ खाल कढ़ाइ बिपति सहि मरई
खल बिनु स्वारथ पर अपकारी ❀ अहि मूषक इव सुनु उरगारी

सन की तरह दुष्ट लोग पर-बंधन करते हैं, अपनी खाल निकलवाकर विपत्ति सह कर मरते हैं, हे गरुड़ ! दुर्जन लोग सांप-चूहे की तरह बिना स्वार्थके दूसरों को हानि करते हैं ॥

पर सम्पदा बिनासि नसाहीं ❀ जिमि शशि हति हिम उपल बिलाहीं
दुष्ट उदय जग आरत हेतू ❀ यथा प्रसिद्ध अधम ग्रह केतू

दुष्टजन परायी सम्पत्ति नाश करके स्वयं नष्ट हो जाते हैं, जैसे ओले खेतीको नाश करके स्वयं नष्ट हो जाते हैं। ऐसे ही दुष्टोंका उदय जगत्‌के अमङ्गलका कारण है जैसे पुच्छल तारा ॥

संत उदय संतत सुखकारी ❀ विश्व सुखी जिमि इंदु तमारी
परम धर्म श्रुति विदित अहिंसा ❀ पर निन्दा सम अघ न गरिसा

संतोंका उदय सदा सुखकारी है, जैसे सूर्य चंद्रमाका उदय होना संसारके लिऐ सुखदाई है। वेदमें विख्यात उत्तम धर्म अहिंसा है। पर-निंदाके समान अन्य बड़ा पाप नहीं है ॥

हरि गुरु निन्दक दादुर होई ❀ जन्म सहस्र पाव तनु सोई
द्विज निन्दक बहु नरक भोग करि ❀ जग जन्मै बायस शरीर धरि

विष्णु और गुरु की निन्दा कर मेढ़क हो हजार जन्म तक उसी शरीर को पाता है। ब्राह्मण की निन्दा करनेवाला बहुतसे नरक भोगकर कौवेका शरीर धारण कर संसारमें जन्म लेता है ॥

सुर श्रुति निन्दक जे अभिमानी ❀ रौरव नरक परहिं ते प्रानी
होंहि उलूक संत निन्दारत ❀ मोह निसा प्रिय ज्ञान भानुगत

जो अभिमानी देवता और वेदकी निन्दा करते हैं वे रौरव नरकमें पड़ते हैं। निन्दामें संत जीव उल्लूके समान हैं जिन्हें अज्ञानकी रात्रि प्रिय है और ज्ञानरूपी सूर्यसे विमुख हैं ॥

सबकै निन्दा जे जड़ करहीं ❀ ते चमगादुर होइ अवतरहीं
सुनहु तात अब मानस रोगा ❀ जिन्हते दुख पावहिं सब लोगा

जो मूर्ख सबकी निन्दा करते हैं वह चमगादर होकर जन्म लेते है ।।२७।। कागभुशुण्डि जी कहते हैं हे तात ! अब मानस रोगोंको सुनो जिससे लोग दुःख पाते हैं ।।२८।।

मोह सकल व्याधिन कर मूला ❀ तेहिते पुनि उपजहिं बहु शूला
काम वात कफ लोभ अपारा ❀ क्रोध पित्त नित छाती जारा

अज्ञानता सब व्याधियोंका मूल कारण है जिससे बहुत पीड़ा उत्पन्न होती है ।।२९।। कामरूपी वात, कफ रूपी अपार लोभ और क्रोधरूपी पित्त नित्य छाती को जलाते हैं ।।३०।।

प्रीति करहिं जो तीनिउ भाई ❀ उपजै सन्निपात दुखदाई
विषय मनोरथ दुर्गम नाना ❀ ते सब शूल नाम को जाना

हे भाई ! जब ये तीनों भाई प्रीति करते हैं, तब दुखदायी सन्निपात रोग उत्पन्न होता है। नाना प्रकारकी दुर्गम अभिलाषायें सब तरह की पीड़ाऐं हैं जिनका नाम कौन जान सकता है ॥

ममता दादु कंडु इरषाई ❀ हर्ष विषाद नहरु बहुताई
पर सुख देखि जरनि सो छई ❀ कुष्ट दुष्टता मन कुटिलई

ममता दादरूप है, ईर्ष्या खजुली है, हर्ष-शोक बड़ा भारी नहरुआ नामक रोग है। दूसरेके सुख को देखकर जलना क्षय रोग है और दुष्टता तथा मन की कुटिलता कुष्ट रोग है ॥३४॥

अहंकार अति दुखद डमरुआ ❀ दंभ कपट मद मान नहरुआ
तृष्णा उदर वृद्धि अति भारी ❀ त्रिविध ईषना तरुन तिजारी
जुग विधि ज्वर मत्सर अविवेका ❀ कहँ लगि कहौं कुरोग अनेका

अभिमान अत्यन्त दुखदायी गठिया रोग है, दम्भ, पाखण्ड, मद और मान नहरुवा रोग है। तृष्णा जलोदर रोग है और तीनों प्रकारकी इच्छाएँ तरुण अँतरिया ज्वर हैं। डाह और अज्ञान दो प्रकारके ज्वर हैं, कहां तक कहूँ, इस तरह अनेक प्रकारके रोग हैं ॥३७॥

दोहा—एक व्याधि बस नर मरहिं, ये असाधि बहु व्याधि।
संतत पीड़हिं जीव कहँ, सो किमि लहहिं समाधि ॥१९२॥

मनुष्य एक ही व्याधि से मर जाते हैं और ये तो अनेक असाध्य रोग हैं जो निरन्तर जीव को दुःख देते रहते हैं, फिर वह कैसे स्थिर रह सकता है ? ॥ १९२ ॥

नेम धर्म आचार तप, ज्ञान यज्ञ जप दान।
भेषज पुनि कोटिन्ह करहिं, रुज न जाहिं हरियान ॥१९३॥

हे गरुड़ ! नेम, धर्म, आचार, तप, यज्ञ, जप और दान रूपी करोड़ों औषधि करते हैं, फिर भी रोग नहीं जाते ॥ १९३ ॥

एहि बिधि सकल जीव जग रोगी ❀ शोक हर्ष भय प्रीति बियोगी
मानस रोग कछुक हम गाये ❀ हैं सबके लखि बिरलहिं पाये

इस प्रकार से समस्त जगत् के जीव रोगी हैं, जिन्हें शोक, हर्ष, भय, प्रीति और कभी वियोग होता है। मैंने मानस रोगों को थोड़ा कहा जो सबको हैं परन्तु कोई-कोई ही देख पाते हैं ॥

जाने ते छीजहिं कछु पापी ❀ नास न पावहिं जन परितापी
विषय कुपथ्य पाइ अंकुरे ❀ मुनिन्ह हृदय का नर बापुरे

ये पापी कुछ जान लेने पर यद्यपि कम हो जाते हैं, पर नाश नहीं होते ॥३॥ विषयरूपी कुपथ्य पाकर मुनियों के मन में भी उत्पन्न होते हैं, बेचारे मनुष्य तो क्या चीज हैं ? ॥४॥

राम कृपा नाशहिं सब रोगा ❀ जो यहि भाँति बनै संयोगा
सद्गुरु बैद्य बचन बिस्वासा ❀ संयम ग्रहण विषय कर आसा

श्रीरामचन्द्रजी की कृपा से यदि इस भांति संयोग बन जाय तो सब रोग नाश हो जाते हैं। श्रेष्ठ गुरुरूपी वैद्य के वचनों में विश्वास हो और संयम से रहे, विषयों की आशा न करे ॥६॥

रघुपति भक्ति सजीवन मूरी ❀ अनूपान श्रद्धा मति पूरी
एहि बिधि भल सो रोग नसाहीं ❀ नाहिं त जतन कोटि नहिं जाहीं

श्रीरामचन्द्रजी की भक्ति संजीवनी जड़ी है और श्रद्धा से पूर्ण बुद्धि अनुपान है ॥७॥ इस प्रकार से भले ही वे रोग नष्ट हों, नहीं तो करोड़ों यत्न करने पर भी नहीं छूटते ॥८॥

जानिय तब मन बिरुज गुसाईं ❀ जब उर बस बिराग अधिकाई
सुमति क्षुधा बाढ़ै नित नई ❀ विषय आस दुर्बलता गई

हे गुसाईं! मन को तब आरोग्य जानना चाहिये, जब हृदय में वैराग्यरूपी बल बढ़ जाय ॥ सुबुद्धिरूप भूख नित्य नवीन बढ़ने लगे और विषयों की इच्छा रूपी निर्बलता चली जाय ॥

बिमल ज्ञान जल पाइ नहाई ❀ तब रह राम भक्ति उर छाई
शिव अज शुक सनकादिक नारद ❀ जे मुनि ब्रह्म बिचार विशारद
सब कर मत खगनायक एहा ❀ करिय रामपद पंकज नेहा

जब बिमल ज्ञानरूपी जल से मनुष्य स्नान करता है, तब हृदय में श्रीरामचन्द्रजी की भक्ति छा जाती है। शिव, ब्रह्मा, शुकदेव, सनकादि और नारद आदि मुनि जो ब्रह्म के विचार में प्रवीण हैं–हे गरुड़! यही सबका मत है कि, रामजी के चरण-कमलों में स्नेह कीजिये ॥

श्रुति पुरान सद्ग्रन्थ कहाहीं ❀ रघुपति भक्ति बिना सुख नाहीं
कमठ पीठ जामहिं बरु बारा ❀ बंध्या सुत बरु काहुहिं मारा

वेद पुराण सब सद्ग्रन्थ कहते हैं कि, श्रीरामचन्द्रजी की भक्तिके बिना सुख नहीं है ॥ चाहे कछुये की पीठ पर बाल जम जावें, चाहे बंध्या का पुत्र किसी को मार डाले ॥

फूलहिं नभ बरु बहु बिधि फूला ❀ जीव न लह सुख हरि प्रतिकूला
तृषा जाइ बरु मृग जल पाना ❀ बरु जामहिं शश शीश विषाना

चाहे आकाशमें फूल खिलने लगें, पर जीव हरिसे प्रतिकूल रहकर सुख नहीं पा सकता ॥ चाहे मृगतृष्णाके पानीको पीकर प्यास मिट जाय, या खरगोशके शिर पर सींग उग जावें ॥

अन्धकार बरु रबिहिं नशावै ❀ राम बिमुख न जीव सुख पावै
हिम ते अनल प्रगट बरु होई ❀ राम बिमुख सुख पाव न कोई

चाहे अन्धेरा सूर्य को मिटा दे, पर रामचन्द्रजीसे विमुख रहने वाला जीव सुख नहीं पाता ॥ चाहे बर्फसे आग निकलने लगे, पर रामचन्द्रजीसे विमुख रहनेवाला कोई सुख नहीं पाता ॥

दोहा–बारि मथे बरु होइ घृत, सिकता ते बरु तेल ।
बिनु हरि भजन न भव तरिय, यह सिद्धान्त अपेल ॥१९४॥

पानीके मथने पर भले ही घी उत्पन्न हो, बालूसे भी तेल निकल आवे। पर जीव बिना हरि भजनके संसारसे पार नहीं होता, यह सिद्धान्त अटल है ॥ १९४ ॥

मसकहिं करहिं बिरंचि प्रभु, अजहिं मसक ते हीन ।
अस बिचारि तजि संशय, रामहिं भजहिं प्रवीन ॥१९५॥

(ईश्वर) मच्छड़ को ब्रह्मा और ब्रह्मा को मच्छड़से छोटा कर सकते हैं। ऐसा विचार कर संशय को त्याग प्रवीण मनुष्य रामजी को ही भजते हैं ॥ १९५ ॥

छन्द–विनिश्चितं वदामि ते न अन्यथा वचांसि मे ।
हरिं नरा भजंति येऽति दुस्तरं तरंति ते ॥ २७ ॥

हे गरुड़जी ! मैं तुमसे निश्चय किया हुआ सिद्धान्त कहता हूँ, मेरा वचन झूठा नहीं है। जो भगवद्-भजन करते हैं, दुस्तर संसार रूपी समुद्रसे पार हो जाते हैं ॥२७॥

कहेउँ नाथ हरि चरित अनूपा ❀ व्यास समास स्वमति अनुरूपा
श्रुति सिद्धान्त इह उरगारी ❀ भजिय राम सब काम बिसारी

हे नाथ ! मैंने यह अनुपम हरिचरित्र अपनी बुद्धिके अनुसार कहा है। हे गरुड़ ! वेद की निश्चित की हुई बात है, कि सब कामों को त्याग रामचन्द्रजी का भजन करना चाहिये ॥

प्रभु रघपति तजि सेइय काही ❀ मोसे शठ पर ममता जाही
तुम विज्ञान रूप नहिं मोहा ❀ कीन्ह नाथ मोपर अति छोहा

प्रभु रामजी को त्याग कर किसकी सेवा करनी चाहिये ? जिनकी मेरे जैसे शठ पर भी प्रीति है। हे नाथ ! आप को मोह नहीं था, आपने तो यह मुझ पर बड़ी कृपा की है ॥

पूछेउ रामकथा अति पावनि ❀ शुक सनकादि शम्भु मन भावनि
संत संगति दुर्लभ संसारा ❀ निमिष दण्ड भरि एकौ बारा

आपने शुक, सनकादि और शिवजीके मनको सुख देने वाली रामजीकी अत्यन्त पवित्र कथा पूछी। संसारमें एक दण्ड, एक पल और एक बार भी सत्संग होना दुर्लभ है ॥

देखु गरुड़ निज हृदय बिचारी ❀ मैं रघुबीर भजन अधिकारी
शकुनाधम सब भाँति अपावन ❀ प्रभु मोहिं कीन्ह बिदित जगपावन

हे गरुड़जी ! हृदयसे विचारकर देखिये, कि क्या मैं रामचन्द्रजीके भजनका अधिकारी हूँ ? पक्षियोंमें नीच सब तरहसे अपवित्र मुझको भी श्रीरामजीने जगत्-प्रसिद्ध और पावन बना दिया ॥

दोहा—आजु धन्य मैं धन्य अति, यद्यपि सब विधि हीन।
निज जन जानि राम मोहिं, संत समागम दीन ॥१९६॥

यद्यपि मैं सब तरहसे तुच्छ हूँ परन्तु फिर भी आज धन्यवाद का पात्र हो गया हूँ। क्योंकि अपना दास जानकर रामजी ने मुझे सन्त-समागम दिया है ॥ १९६ ॥

नाथ यथामति भाषेउँ, राखेउँ कछु नहिं गोइ।
चरित सिन्धु रघुनाथ कर, थाह कि पावहि कोइ ॥१९७॥

हे नाथ ! अपनी बुद्धिके अनुसार मैंने सब कुछ कहा, कुछ छिपा नहीं रखा। रामजी के चरित्ररूपी समुद्र की थाह कौन पा सकता है ? ॥ १९७ ॥

सुमिरि रामके गुन गन नाना ❀ पुनि पुनि हर्ष भुशुण्डि सुजाना
महिमा निगम नेति करि गाई ❀ अतुलित बल प्रताप प्रभुताई

रामचन्द्रजी के गुणों का स्मरण कर चतुर कागभुशुण्डिजी बार-बार प्रसन्न हो रहे हैं श्रीरामचन्द्रजीका बल प्रताप अतुल है, उनकी महिमाको वेदोंने 'नेति-नेति' कहकर गाया है ॥

शिव अज पूज्य चरन रघुराई ❀ मोपर कृपा परम मृदुलाई
अस सुभाव कहुँ सुनउँ न देखउँ ❀ केहि खगेश रघुपति सम लेखउँ

श्रीरामचन्द्रजीके चरण शिव और ब्रह्मा पूजते हैं, मुझपर कृपा होना कोमलता है। हे पक्षिराज! ऐसा स्वभाव न कहीं सुना है, न देखा है, फिर किसको श्रीरामचन्द्रजीके समान समझूं।

साधक सिद्ध विमुक्त उदासी ❀ कवि कोविद कृतज्ञ संन्यासी
योगीश्वर अरु तापस ज्ञानी ❀ धर्म निरत पण्डित बिज्ञानी

साधक, सिद्ध, जीवनमुक्त, विरक्त, पुरुष, कवि, विद्वान्, संन्यासी, योगीश्वर, तपस्वी, ज्ञानी, धर्मात्मा, पण्डित और विज्ञानी ॥

तरहिं न बिनु सेये मम स्वामी ❀ राम नमामि नमामि नमामी
शरण गये मोसे अघराशी ❀ होहिं शुद्ध नमामि अविनाशी

ऐसे मेरे स्वामी को सेये बिना कोई तर नहीं सकता, ऐसे रामजी को नमस्कार करता हूँ। जिनकी शरण जानेसे मुझ सा पापी शुद्ध होता है अविनाशी परमात्मा को नमस्कार करता हूँ।

दोहा—जासु नाम भवभेषज, हरन घोर त्रयशूल।
सो कृपालु मोहिं तोहिं पर, सदा रहहिं अनुकूल ॥१९८॥

जिनका नाम संसाररूपी रोग की औषधि है और तापों की पीड़ा को हरने वाला है, सो कृपालु रामजी मुझपर और तुम पर प्रसन्न रहैं ॥ १९८ ॥

सुनि भुशुण्डिके बचन शुभ, देखि रामपद नेह।
बोलेउ प्रेम सहित गिरा, गरुड़ विगत संदेह ॥१९९॥

कागभुशुण्डि के श्रेष्ठ वचन सुनकर और रामजी के चरणों में प्रीति देख कर गरुड़जी प्रेम सहित सन्देह रहित हो बोले ॥ १९९ ॥

मैं कृत कृत्य भयउँ तव बानी ❀ सुनि रघुबीर भक्ति रस सानी
राम चरन नूतन रति भई ❀ माया जनित बिपति सब गई

रामजी की भक्ति के रस में सनी हुई आपकी वाणी सुनकर मैं कृत-कृत्य हुआ ॥१॥ रामजी के चरणों में नवीन प्रेम हुआ और माया जनित विपत्ति जाती रही ॥ २ ॥

मोह जलधि बोहित तुम भयऊ ❀ मो कहँ नाथ विविध सुख दयऊ
मोसन होइ न प्रत्युपकारा ❀ बन्दौं तव पद बारहिं बारा

हे नाथ! आप मुझे अज्ञानरूपी समुद्र में जहाजरूप हुए, डूबते को नाना प्रकार से सुख दिये। आपका कोई प्रत्युपकार मुझसे नहीं हो सकता, मैं बार-बार आपके चरणों की वन्दना करता हूँ

पूरन काम राम अनुरागी ❀ तुम सम तात न कोउ बड़ भागी
संत बिटप सरिता गिरि धरनी ❀ पर हित हेतु सबन्ह की करनी

हे तात! आप पूर्णकाम रामजी के अनुरागी हैं, आपके समान बड़भागी कोई नहीं है ॥ संत, वृक्ष, नदी, पहाड़ और पृथ्वी इत्यादि की करनी दूसरों के लाभ के लिये होती है ॥६॥

संत हृदय नवनीत समाना ❀ कहा कविन्ह पै कहइ न जाना
निज परिताप द्रवइ नवनीता ❀ पर दुख द्रवहिं सुसन्त पुनीता

जाना ।।७।। क्योंकि कवीश्वरों ने सन्तों का हृदय मक्खन के समान कहा परन्तु कहना नहीं जाना ।।७।। क्योंकि मक्खन तो अपने ही ताप से पिघलता है पर पवित्र संत पराये दुख से पिघलते हैं ।।८।।

जीवन जन्म सफल मम भयऊ ❀ तव प्रसाद सब संशय गयऊ
जानेहु सदा मोहिं निज किंकर ❀ पुनि पुनि उमा कहै विहंगवर

शिवजी कहते हैं—हे पार्वती ! बार-बार पक्षिश्रेष्ठ गरुड़जी ने कहा कि आपकी कृपा से मेरे सब संशय दूर हो गए ।।९।। मुझे सदा अपना सेवक जानकर कृपा बनाये रखना ।।१०।।

दोहा—तासु चरन सिर नाइ कर, प्रेम सहित मति धीर ।
गरुड़ गयउ बैकुण्ठ तब, हृदय राखि रघुबीर ।।२००।।

फिर धीर बुद्धि गरुड़जी कागभुशुण्डिजी के चरणों में शिर नवाकर रामचन्द्रजीको हृदयमें रख कर वैकुण्ठ को चले गये ।। २०० ।।

गिरिजा सन्त समागम, सम न लाभ कछु आन ।
बिनु हरि कृपा न होइ सो, गावहिं वेद पुरान ।।२०१।।

शिवजी कहते हैं—हे पार्वती ! संतों के समागम के समान दूसरा कुछ लाभ नहीं हैं और वह भी रामजी की कृपा बिना नहीं होता, वेद-पुराण ऐसा कहते हैं ।। २०१ ।।

कहेउँ परम पुनीत इतिहासा ❀ सुनत श्रवण छूटहिं भव पासा
प्रनत कल्पतरु करुना पुंजा ❀ उपजै प्रीति रामपद कंजा

मैंने यह अत्यन्त पवित्र इतिहास कहा जिसे सुनने से भवबन्धन छूट जाता है ।।१।। इससे भक्तों के कल्पवृक्ष, दया की राशि रामजी के चरण-कमलों में प्रीति उत्पन्न होती है ।।२।।

मन बच कर्म जनित अघ जाई ❀ सुनै जो कथा श्रवन मन लाई
तिर्थाटन साधन समुदाई ❀ योग बिराग ज्ञान निपुणाई

मन, वचन और कर्म से उत्पन्न हुआ पाप नष्ट हो जाता है जो मन लगाकर इस कथा को कानों से सुनते हैं । तीर्थ-यात्रा, शुभ साधनों के समूह, योग, वैराग्य और ज्ञानकी निपुणता—

नाना कर्म धर्म ब्रत दाना ❀ संयम नियम जोग जप नाना
भूत दया द्विज गुरु सेवकाई ❀ विद्या विनय विवेक बड़ाई

नाना प्रकार के शुभ कर्म, धर्म, व्रत, दान, संयम, इंद्रिय-दमन, जप, तप, अनेक प्रकारके यज्ञ, जीवों पर दया, ब्राह्मण तथा गुरुकी सेवा, विद्या, नम्रता और ज्ञान की बड़ाई ।।६।।

जहँ लगि साधन बेद बखानी ❀ सब कर फल हरि भक्ति भवानी
सो रघुनाथ भक्ति श्रुति गाई ❀ राम कृपा काहू एक पाई

जहाँ तक वेदों ने साधन कहे हैं, हे पार्वती ! उन सबोंका फल भगवद्भक्ति है । वह रामजी की भक्ति, जिसकी महिमा श्रुतियों ने गायी है, रामजीकी कृपा से कोई एक पाते है ।।

दोहा—मुनि दुर्लभ हरिभक्ति नर, पावहिं बिनहिं प्रयास ।
जे यह कथा निरन्तर, सुनहिं मानि विश्वास ।।२०२।।

मुनियों द्वारा दुर्लभ हरिभक्ति वे मनुष्य बिना प्रयास के पाते हैं, जो विश्वास पूर्वक इस कथा को सर्वदा सुनते हैं ॥ २०२ ॥

सोइ सर्वज्ञ गुनी सोइ ज्ञाता ❁ सोइ महि मण्डन पण्डित दाता
धर्म परायण सोइ कुल त्राता ❁ रामचरन जाकर मन राता

वही सर्वज्ञ, वही गुणी, वही ज्ञानवान्, वही पृथ्वीका आभूषण, वही पंडित, वही दानी ॥१॥ वही धर्मात्मा और वही कुलका रक्षक है जिसका मन रामजी के चरणों में लगा है ॥२॥

नीति निपुण सो परम सयाना ❁ श्रुति सिद्धान्त नीक तेहि जाना
सोइ कवि कोविद सोइ रनधीरा ❁ जो छल छाँड़ि भजे रघुबीरा

वही नीति निपुण, वही परम चतुर है और उसी ने वेदका सिद्धान्त ठीक तरह से जाना है ॥ वही कवीश्वर है, वहीं पंडित, रणधीर है, जो छल-कपटको त्याग कर रामजी को भजता है ॥

धन्य सो देश जहाँ सुरसरी ❁ धन्य नारि पतिब्रत अनुसरी
धन्य सो भूप नीति जो करई ❁ धन्य सो द्विज निज धर्म न टरई

वह देश धन्य है जहाँ गंगाजी हैं, वह स्त्री धन्य है जो पतिव्रता है ॥५॥ वह राजा धन्य है जो नीतिज्ञ है और वह ब्राह्मण धन्य है, जो अपने धर्म से विरत नहीं होता ॥६॥

सो धन धन्य प्रथम गति जाकी ❁ धन्य पुण्य-रत मति सोइ पाकी
धन्य घरी सोइ जब सतसंगा ❁ धन्य जन्म द्विज भक्त अभंगा

वह धन धन्य है जिसकी प्रथम गति है, वह बुद्धि धन्य है जो पवित्र कार्य में लगी रहती है ॥ वह घड़ी धन्य है जब सत्संग हो, उस ब्राह्मणका जन्म धन्य है जिसमें अखण्ड भक्ति हो ॥

दोहा—सो कुल धन्य उमा सुनु, जगत पूज्य सुपुनीत ।
श्री रघुबीर परायन, जेहि नर उपज विनीत ॥२०३॥

हे पार्वती ! सुनो, वह कुल धन्य, जगत्-पूज्य और अत्यन्त पवित्र है जिसमें श्रीरामचन्द्रजी की भक्ति में रत विनीत मनुष्य उत्पन्न होते हैं ॥ २०३ ॥

मति अनुरूप कथा मैं भाखी ❁ यद्यपि प्रथम गुप्त करि राखी
तव मन प्रीति देखि अधिकाई ❁ तब मैं रघुपति कथा सुनाई

यद्यपि मैंने पहले गुप्त रक्खी थी तथापि अब वह कथा बुद्धि के अनुसार मैंने वर्णन की है ॥ हे पार्वती ! तुम्हारे मन में प्रीति बढ़ी हुई देखकर मैंने श्रीरामचंद्रजी की कथा तुम्हें सुनाई ॥

यह न कहिय जे शठ हठ शीलहि ❁ जो मन लाइ न सुन हरि लीलहि
कहिय न लोभिहि क्रोधिहि कामिहि ❁ जे न भजइ सचराचर स्वामिहि

यह कथा दुष्ट और हठी स्वभाववाले से नहीं कहनी चाहिये, जो मन लगाकर हरिकी लीला न सुनता हो ॥३॥ जो लोभी, क्रोधी तथा कामी हो और जो चराचर जगत् के स्वामी श्रीरामचंद्रजी को न भजता हो, उससे इस कथा को न कहना चाहिये ॥ ४ ॥

द्विज द्रोहिहि न सुनाइय कबहूँ ❀ सुरपति सरिस होइ नृप तबहूँ
राम-कथा के ते अधिकारी ❀ जिन्हके सत् संगति अति प्यारी

जो ब्राह्मण से द्रोह रखता हो, उसे कभी न सुनावे, चाहे वह इंद्र के समान राजा क्यों न हो ।।५।। राम-कथा के अधिकारी वे ही हैं जिनकी सत्संगति बहुत ही प्यारी है ।।६।।

गुरुपद प्रीति नीति रत जोई ❀ द्विज सेवक अधिकारी सोई
ताकहँ यह विशेष सुखदाई ❀ जाहि प्रान प्रिय श्रीरघुराई

जो गुरु के चरणों में प्रेम रखते हैं, नीति में तत्पर हैं और ब्राह्मणों के सेवक हैं, वे ही राम-कथा के अधिकारी हैं जिन्हें रघुनाथजी प्राण प्रिय हैं, उनको यह अधिक सुख देनेवाली है ।।

दोहा—राम चरन रति जो चहै, अथवा पद निर्वान ।
भाव सहित सो यह कथा, करइ श्रवण पटपान ।।२०४।।

जो रामचन्द्रजी के चरणों में प्रीति अथवा जो निर्वाणपद (मोक्ष) चाहते हों, वे इस कथा को भाव सहित अपने कान रूपी दोनों छेदों में भर कर पान करे ।। २०४ ।।

राम कथा गिरिजा मैं बरनी ❀ कलि-मल-समन मनोमल हरनी
संसृति रोग सजीवन मूरी ❀ राम कथा गावहिं श्रुति भूरी

हे पार्वती ! मैंने कलियुग के पापों की नाशक तथा मन के मैलको हरनेवाली रामकी कथा वर्णन किया कि जो सांसारिक रोगोंके लिए संजीवनी बूटी है, वेदोंने इसकी महिमाको बहुत गाया है ।।

एहि महँ रुचिर सप्त सोपाना ❀ रघुपति भक्ति केर पथ नाना
अति हरिकृपा जाहि पर होई ❀ पाँव देइ यहि मारग सोई

इसमें सुन्दर सात सोपान (सीढ़ियाँ) हैं, जो रघुनाथजीकी भक्ति के अनेक रास्ते हैं ।।३।। जिस पर भगवान् की बड़ी कृपा होती है, वही इस रास्ते पर पाँव रखता है ।। ४ ।।

मन कामना सिद्धि नर पावै ❀ जो यह कथा कपट तजि गावै
कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं ❀ ते गोपद इव भवनिधि तरहीं

जो मनुष्य कपट त्याग कर इस कथा को गावेंगे, उनकी मनोकामना सिद्ध होगी ।।५।। जो कहेंगे, सुनेंगे और अनुमोदन करेंगे, वे गौ के खुर के समान संसार रूपी समुद्र से तर जायेंगे ।।६।।

सुनि शुभ कथा हृदय अति भाई ❀ गिरिजा बोलीं गिरा सुहाई
नाथ कृपा मम गत सन्देहा ❀ राम चरन उपजेउ नव नेहा

यह कल्याणमयी कथा सुनकर पार्वतीजी के मनको बहुत अच्छा लगा । वह बोलीं हे नाथ ! आपकी कृपा से मेरा संदेह दूर हो गया और रामजी के चरणों में नवीन स्नेह उत्पन्न हुआ ।।

दोहा—मैं कृतकृत्य भयउँ अब, तव प्रसाद विश्वेस ।
उपजी राम भक्ति दृढ़, बीते सकल कलेस ।।२०५।।

हे विश्वनाथ ! मैं आपकी कृपा से अब सफल मनोरथ हुई। मुझे दृढ़ राम-भक्ति उत्पन्न हुई और मेरे सम्पूर्ण क्लेश नष्ट हो गये ।। २०५ ।।

यह शुभ शम्भु उमा सम्बादा ❁ सुख सम्पादन समन विषादा
भव भञ्जन गञ्जन सन्देहा ❁ जन रंजन सज्जन प्रिय एहा

यह शिव-पार्वती का शुभ संवाद सुखका प्रकाश करनेवाला और विषादका नाश करनेवाला है। यह सांसारिक कष्टों को दूर करनेवाला, सन्देह-नाशक और सज्जनोंका प्यारा है ।।२।।

राम उपासक ज जग माहीं ❁ एहि सम प्रिय तिन कहँ कछु नाहीं
रघुपति कृपा यथा मति गावा ❁ मैं यह पावन चरित सुहावा

जगत् में जो रामजी के उपासक हैं उनको इस कथा के समान कुछ भी प्रिय नहीं है ।।३।।
मैंने यह सुन्दर पवित्र चरित्र रामचन्द्रजीकी कृपा से अपनी बुद्धि के अनुसार गाया है ।।४।।

एहि कलि काल न साधन दूजा ❁ योग यज्ञ जप तप व्रत पूजा
रामहिं सुमिरिय गाइय रामहिं ❁ सन्तत सुनिय राम गुन ग्रामहिं

इस कलियुग में योग, यज्ञ, तप, व्रत और पूजा आदि कोई दूसरा साधन नहीं है अतः रामजी का स्मरण करना चाहिये और रामजी के गुण-समूह को ही सदा सुनना चाहिये ।।

जासु पतित्त पावन वर बाना ❁ गावहिं कवि श्रुति सन्त पुराना
ताहि भजिय तजि मन कुटिलाई ❁ राम भजे केहि गति नहिं पाई

जिस भगवान् के पतितपावन नामके बाने को कवीश्वर, वेद, सन्त और पुराण गाते हैं ।। कुटिलता को त्याग रामजी का भजन करने से किसने मोक्ष नहीं पाया ? ।। ८ ।।

छन्द—पाई न गति केहि पतित पावन राम भजु सुनु सठ मना ।
गनिका अजामिल ब्याध गीध गजादि खल तारेउ घना ।।
आभीर यवन किरात खल स्वपचादि अति अघ रूप जे ।
कहि नाम बारक तेऽपि पावन होहिं राम नमामि ते ।।२८।।

किसने गति नहीं पायी ? अरे मूर्ख मन ! सुन, उन पतितपावन रामजी को भज, जिन्होंने गणिका, अजामिल, गीध, व्याध और गज आदि अनेक दुष्टों को तार दिया ।। एक बार राम का नाम लेकर पवित्र हो जाते हैं ऐसे रामजी को नमस्कार है ।।२८।।

रघुवंश भूषण चरित यह नर कहहिं सुनहिं जे गावहीं ।
कलिमल मनोमल धोइ बिनु श्रम राम धाम सिधावहीं ।।
सतपंच चौपाई मनोहर जानि जे नर उर धरैं ।
दारुन अविद्या पंचजनित विकार श्री रघुपति हरैं ।।२९।।

रघुवंश-भूषण श्रीरामचंद्रजी के इस चरित्र को जो मनुष्य कहते, सुनते और गाते हैं वे कलियुग और मन के पापों को धोकर बिना प्रयास ही राम के धामको सिधारेंगे ।। और जो मनुष्य मनोहर चौपाइयों को सच्चा पंच जानकर हृदय में धारण करेंगे, उनके और मायाके कपट से उत्पन्न सब दोषों को श्रीरामचंद्रजी हर लेंगे ।।२९।।

छन्द—सुन्दर सुजान कृपानिधान अनाथ पर कर प्रीति जो।
सोएक राम अकाम हित निरबानप्रद सम आनको ॥
जाकी कृपा लवलेश ते मतिमन्द तुलसीदास हूँ।
पायो परम विश्राम राम समान प्रभु नाहीं कहूँ ॥३०॥

जो सुन्दर, सुजान, कृपानिधान रामजी अनाथों पर प्रीति करते हैं. ऐसा अद्वितीय, निष्प्रयोजन दूसरे का हित करनेवाला और मोक्षप्रद रामजी के समान कौन है कि, जिसकी कृपा से मैं मतिमंद तुलसीदास ने भी परम शान्ति लाभकी, इससे रामचन्द्रजीके समान स्वामी कहीं नहीं है ॥

दोहा—मो सम दीन न दीन हित, तुम समान रघुबीर।
अस बिचारि रघुवंशमणि, हरहु विषम भवपीर ॥२०६॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि, हे श्रीरामचन्द्रजी! मेरे समान कोई दीन नहीं है और आपके समान दीनों का कोई हितकारी नहीं है। हे रघुवंशमणि! ऐसा विचार कर मेरे संसार के भीषण दुःख को हर लीजिए॥ २०६ ॥

कामिहिं नारि पियारि जिमि, लोभिहिं प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरन्तर, प्रिय लागहु मोहिं राम ॥२०७॥

हे श्रीरामचंद्रजी! मुझे आप निरंतर वैसे ही प्यारे लगें, जैसे कामी पुरुषों को स्त्री प्यारी लगती है और लोभियों को जैसे धन प्यारा लगता है ॥ २०७ ॥

श्लोक—यत्पूर्वं प्रभुणा कृतं सुकविना श्रीशम्भुना दुर्गमम्
श्रीमद्रामपदाब्ज-भक्तिमनिशं प्राप्त्यै तु रामायणम्।
मत्वा तद्रघुनाथनामनिरतं स्वान्तस्तमःशान्तये
भाषाबद्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसम् ॥१॥

पूर्वकाल में सुकवि शिवजी ने जिस अत्यंत कठिन रामायण को रचा था, जिससे श्रीरामजी के चरण-कमलों में प्रीति होती है उसी को बहुत मान देकर श्रीरामजी के नाम में तत्पर तुलसीदास ने अपने अन्तःकरण के अन्धकार को दूर करने के लिए इस रामचरित-मानस को भाषाबद्ध किया ॥ १ ॥

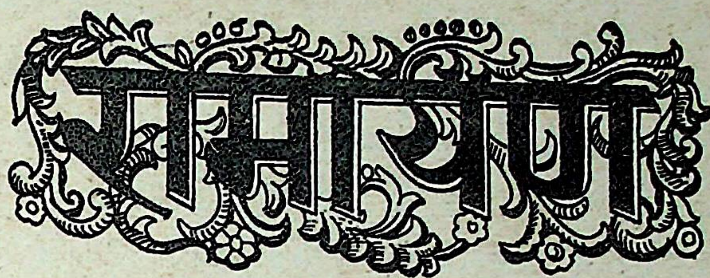
पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदम्
मायामोहमलापहं सुविमलं प्रेमाम्बुपूरं शुभम्।
श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्यावगाहन्ति ये
ते संसार-पतंग-घोरकिरणैर्दह्यन्ति नो मानवाः ॥२॥

यह रामायण पुण्यरूप, पापों को दूर करनेवाली, सदा कल्याणकारी, विज्ञान और भक्ति को देनेवाली है, माया, मोह और मलीनता को दूर करनेवाली, अत्यंत निर्मल प्रेम रूपी जल से भरी हुई और शुभ है। इस रामचरित मानस में जो मनुष्य भक्ति पूर्वक डुबकी लगाते हैं, वे संसार-रूपी सूर्य की प्रचण्ड किरणों से नहीं जलते और सर्वदा आनंद पाते रहते हैं ॥ २ ॥

—: इति उत्तरकाण्ड समाप्त :—

श्रीगणेशाय नमः

श्रीमद् गोस्वामी तुलसीदासजी कृत–



रामायण

लवकुशकाण्ड

(सर्व-सञ्जीवनी टीका सहित)

।। मङ्गलाचरण ।।

दोहा–श्रीभुशुण्डि के बचन सुनि, देखि रामपद प्रीत।
होइ प्रसन्न बोले गरुड़, बाणी परम पुनीत ।।१।।
सुरसरि सम पावन भयो, नाथ हृदय अब मोर।
जन्म जन्म छूटै नहीं, नाथ पदाम्बुज तोर ।।२।।

श्रीकागभुशुण्डिजीके वचन सुन और श्रीरामचन्द्रजी के चरणों में प्रीति देखकर गरुड़जी प्रसन्न हो यह परम पुनीत वाणी बोले ।।१।। हे नाथ! अब मेरा हृदय गङ्गाके समान पवित्र हो गया। हे स्वामी ! अब आपके चरण-कमल मुझसे जन्म-जन्मान्तरमें भी नहीं छूटेंगे ।। २ ।।

छन्द–नमामीश घन ज्ञान रघुवंशदासं, सदानन्ददाता सुविद्याप्रकाशम्
विशद शैल नीलं कृपालुं निवासं, चरणाम्बुजं सेवितं पापनाशम्

हे गुरो ! मैं आपको नमस्कार करता हूँ, आप ज्ञानके समुद्र और श्रीरामचन्द्रजीके सेवक हैं और सर्वदा आनन्द देनेवाले तथा सुविद्यासे प्रगट हैं। हे कृपालु ! आपका निवासस्थान यह सुन्दर नील पर्वत है। आपके चरण-कमल सेवन करने योग्य तथा आपको दूर करनेवाले हैं।।

गतं मोहमारादि शूलं विशालं, हरं ताप-सन्ताप-भवशोकजालम्
नमो काकपादं सुबुद्धि सुशीलं, सदा भक्तवात्सल्य-वासाद्रिनीलम्

मोह, कामादि बड़े शूल आपके दर्शनसे ही नष्ट हो जाते हैं। ताप-सन्ताप और जगत् के शोकमय जालको आप हरनेवाले हैं। आप उत्तम बुद्धिवाले और सुशील हो, आपके चरणोंको नमस्कार है। आप सर्वदा अपने भक्तोंपर दया करते हुए नील पर्वतपर वास करते हैं।।

प्रसन्नाननं नीलवदनं सुश्यामं, नमो पाहि शरणं सुरामाभिरामं
माँग्यो उमानाथ यशनाथनामं, देख्यो कृपासिन्धुको राम धामं

आपका मुख सर्वदा प्रसन्न है और आपका शरीर नील श्यामरूप है, आपको नमस्कार है, आप अपनी शरणमें आए हुएको अत्यन्त सुख देनेवाले हैं। आपने मुझे श्रीरामचन्द्रजीका नाम बतलाया कि जिसके प्रभावसे कृपासिन्धु भगवान्‌का धाम मुझे ज्ञान-नेत्रोंसे दीखता है ॥

इच्छा बपुष काककल्याणकारी, जिन्हें एक आशा अयोध्याबिहारी
भागीं सकल बासना त्रास भारं, चिदानन्द सन्दोह भक्तविलासं

प्रभुका सगुण अवतार केवल पृथ्वी का भार हटाने के लिए होता है, किन्तु मैंने श्रीरामचन्द्रजीके अवतारके मोहको दूर करनेवाली कथा सुनी है। जगत् के राक्षसोंको मारनेवाले रामचन्द्र को मैंने चिदानन्द और भक्ति की लीला करनेवाला देखा है ॥ ४ ॥

अचल ज्ञान गोतीततन्त्रं विशालं, पायो कृपानाथ निज भाग्यभालं
विगत षष्टरोगं अयोगं दयालुं, नमो पाहि शरणं नमामी कृपालुं

हे कृपालु ! आप अचल ज्ञानवाले हैं, आपका मंत्र इन्द्रियोंसे दूर है और आप विशाल स्वरूप हैं, आपकी शरण आया हूँ, आप मेरी रक्षा करें, हे कृपानिधि ! मैंने बड़े भाग्यसे आपको पाया है, आपकी कृपासे अब मेरे कुरोग और कामादि छहों इन्द्रिय रोग मिट गये ॥

सुने सकल गणगण प्रभु केरे ❁ पूजे नाथ मनोरथ मेरे
तव प्रसाद बायस कुल नाथा ❁ हृदय बसहिं अब प्रभु गुणगाथा

हे नाथ ! मैंने प्रभु श्रीरामचन्द्रजीके सम्पूर्ण गुण सुने, मेरे सब मनोरथ पूरे हो गये। हे कागभुशुण्डिजी ! आपकी कृपासे अब मेरे हृदयमें प्रभुके गुणोंकी सब कथा बस गई है ॥

मन सन्तोष न हृदय अघाई ❁ यथा उदधि सरिता सरि जाई
पशु पक्षी जड़ जंगम जाती ❁ सचराचर बरणौं केहि भाँती

मनको संतोष नहीं है और हृदय नहीं अघाता है, जैसे छोटी-बड़ी नदियाँ समुद्रमें जाती हैं, वैसे ही पशु-पक्षी, चेतन, चराचर इन सबका वर्णन मैं किसी भाँति करूँ ॥

जो जन अवध बसहिं सुखधामा ❁ लिए संग सादर श्रीरामा
तजि सब अवध गये सहदेहा ❁ यह मोहिं नाथ परम सन्देहा

जो प्राणी सुखधाम अयोध्यापुरीमें निवास करते थे, उन्हें श्रीरामचन्द्रजी आदर सहित साथ ले अयोध्याको छोड़कर संदेह स्वर्गको गये, हे नाथ ! यह मुझे बड़ा सन्देह है ॥

सो प्रभु मोहिं सब कहहु बुझाई ❁ पिता जानि मैं करौं ढिठाई
यह इतिहास पुनीत कृपाला ❁ जिमि मख कीन्ह राम महिपाला

हे प्रभो ! वह मुझसे समझाकर कहिये, आपको पिता समझकर मैं यह ढिठाई कर रहा हूँ। हे कृपालु ! यह पवित्र इतिहास और जैसे रामजीने यज्ञ किया वह भी मुझसे कहिये ॥

दोहा—अस कहि गद्‌गद कण्ठ मृदु, पुलकावली शरीर ।
सुनि सप्रेम हरि विशद यश, बायस कुलमति धीर ॥३॥

ऐसी कोमल वाणी कह प्रेमसे गरुड़का कण्ठ गद्‌गद हो गया और शरीर रोमांचित हो गया। तब गरुड़की वाणी सुनकर कागभुशुण्डिजी हर्षित हो बोले— ॥ ३ ॥

राम कृपा तुम्हरे मन माहीं ❀ संशय शोक मोह भ्रम नाहीं
धन्य धन्य धनि तुम खगराया ❀ कीन्हीं अमित मोहिं पर दाया

रामजीकी कृपासे तुम्हारे मनमें मोह, संशय और भ्रम नहीं है। हे गरुड़जी! तुमको धन्यवाद है, तुम धन्य हो जो तुमने मुझपर यह कृपा की है ।।

अति प्रिय बचन रसज्ञ तुम्हारे ❀ लागत नाथ मोहिं अति प्यारे
अब प्रभु कथा विशद विस्तारी ❀ सकल सुनावउँ प्रभु हितकारी

तुम्हारे वचन अति प्रिय और रसीले हैं जो मुझको अति प्रिय लगते हैं, हे प्रभो! अब मैं जगत् हितकारी प्रभुकी विशद कथाका वर्णन करता हूँ। हे गरुड़जी! तुम्हारे मन की प्रीति देखकर अनेकों अमङ्गल और दुःख नष्ट हो जाते हैं ।।

सुनु अब राम रहस्य अनूपा ❀ चरित अनूप अवधपुर भूपा
अज अद्वैत अमल अविनासी ❀ रहित सकल कलिमल भय फाँसी

अब श्रीरामचन्द्रजीके रहस्यजन्य और अनुपम चरित्र सुनो कि जो अयोध्यापुरीके राजा थे।। अद्वैत, अजन्मा, पवित्र, अविनाशी, कलिकालके मल और भयके फन्दोंसे रहित हैं ।।

नव सहस्र वर्ष खग ईसा ❀ कीन्ह चरित रहि पुर जगदीसा
सो सब बिसद कथा बिस्तारी ❀ कहौं सुनो जगहित उरगारी

हे गरुड़जी! ईश्वर श्रीरामचन्द्रजी नौ हजार वर्ष तक रहकर चरित्र अयोध्यापुरीमें किए ।। हे गरुड़जी! वह कथा विस्तार पूर्व कहता हूँ। संसारका कल्याण करनेवाली उस कथाको सुनो ।।

दोहा—बिधि बर बचन सँभारि उर, राजत करुणा ऐन।
युग जोड़ी शोभा निरखि, लजित कोटि शत मैन ।।४।।

दक्षके घर श्रीरामचन्द्रजी ब्रह्माजीके श्रेष्ठ वचनोंको मनमें संभालकर कुछ दिनों तक अयोध्यामें रहे। राम-लक्ष्मण दोनोंकी जोड़ी संकड़ों और करोड़ों कामदेवको लज्जित करती थी ।।४।।

अनुज सहित प्रभु प्रजा बुलाए ❀ गुरु गृह सादर मुनि सब आए
मकर मास रवि पर्व सुहावा ❀ बिदा माँगि प्रभु पद सिरनावा

प्रभुने भाइयों सहित समस्त प्रजाको बुलाया तो सादर सब मुनि वसिष्ठजीके घरपर आये। मकरका महीना और सुहावना सूर्य-पर्व था, जिसमें सबसे बिदा मांग उनके चरणोंमें शिर नवाकर।

काशी धर्म क्षेत्र जग जाना ❀ चले सकल सजि सजि सब याना
चतुरंगिणी अनी सब साथा ❀ इहि बिधि चले राम रघुनाथा

जिस काशीको सभीलोग धर्मक्षेत्र जानते हैं, वहांके लिए विमानमें सब सज-सजकर चले।। श्रीरामचन्द्रजीके साथ चतुरंगिणी सेना थी, इसप्रकार रघुकुलके स्वामी राम काशीकी यात्रा किये ।।

तीन बास करि शिवपुर आये ❀ सादर पुरी शीश तिन नाये
आय सुरसरिहिं कीन्ह प्रणामा ❀ अमित अनन्य पाय विश्रामा

तब मार्गमें तीन मुकाम करके वह शिवपुरमें आये और सादर पुरीको प्रणाम किये ।। फिर आकर गङ्गाजीको प्रणाम किए जिसका अन्त नहीं ऐसा अधिक सुख पाये ।।

महिसुर दण्डि यती संन्यासी ❀ पूजेउ कृपा सिन्धु सुख रासी
दीन्ह दान कछु बरनि न जाई ❀ धनद सुरेश कुबेर लजाई

फिर आनन्दकर श्रीरामजी ब्राह्मण, दण्डी, यती, संन्यासी सभीका सत्कार किये। उन्होंने इतना दान किया कि जिसका वर्णन नहीं हो सकता जिसे देखकर इन्द्र और कुबेर लज्जित हो गये।

दोहा—इहि विधि प्रभु रहि विपुल दिन, सुखी किए मुनिवृन्द ।
आए पुनि निज नगर महँ, हर्षित करुणा कन्द ।।५।।

इस प्रकार प्रभु काशी में कई दिन रहकर मुनियों के समूहों को हर्षित किये। फिर प्रसन्नता पूर्वक श्रीरामचन्द्रजी अपने नगरमें आये ।। ५ ।।

प्रति दिन अवध अनन्द उछाहू ❀ दान देहिं प्रति दिन नरनाहू
झूठ प्रपंच दुख नहिं काहू ❀ व्याप न कबहुँ सुनहु खगनाहू

इस प्रकार नगरमें आनन्दका उत्सव हो रहा था और राजा राम प्रत्येक दिन दान दिया करते थे ।। झूठ और प्रपंच कहीं था, सब सुखी थे दुःख कभी किसी को नहीं व्यापा ।।

सुनियत जहँ तहँ वेद पुराना ❀ दूसर धर्म न काहू जाना
दिन दिन प्रीति देखि भगवाना ❀ अति आनन्द सकल पुर जाना

लोग जहाँ-तहाँ वेद पुराण सुनते और दूसरे धर्मको कोई नहीं जानते थे ।। दिनों दिन भगवान्‌को प्रीतिपूर्वक देख अयोध्यापुरीके लोग अत्यन्त आनन्दित होते थे ।।

वर्ष सहस परमान हमारी ❀ भए शोच बस राम खरारी
अश्वमेध मख करहुँ सुहाई ❀ गाय तरहिं नर भव समुदाई

तब हमारी रहनेकी अवधि हजार वर्ष है यह विचारकर खरारि राम चिन्तित हो गये। फिर उन्होंने अश्वमेध यज्ञ करनेका निश्चय किया जिसको पाकर मनुष्य संसारसे पार हो जावें।

पुनि निज धामहिं तुरत सिधावौं ❀ बिधिके बचन बिलम्ब न लावौं
प्रात जाइ गुरु भवन सप्रीती ❀ कहौं करौं सब सुन्दर नीती

फिर तो अब शीघ्र ही अपने धामको जाऊँगा और ब्रह्माजीके वचनको पूरा करने में विलंब न करूँगा। प्रातःकाल गुरुजीके घरपर जाऊँगा और वे जो कहेंगे उन सब सुन्दर नीतियोंको करूँगा।।

दोहा—अस बिचारि उर राखि कै, कृपासिन्धु मतिधीर ।
करत चरित नाना अमित, हरत शोक भवपीर ।।६।।

धीर-बुद्धि कृपासिन्धु श्रीरामचन्द्रजी मनमें ऐसा विचारकर अनेक प्रकार के चरित्र करते और शोक एवं भवपीरको मिटाते थे ।। ६ ।।

कहौं सुनौं रघुपति प्रभुताई ❀ जो पुरान ऋषि नारद गाई
रामचन्द्र महिमा अति भूरी ❀ सो बरनत कवि मन कदरूरी

श्रीरामचन्द्रजीकी प्रभुताको कहता हूँ सुनो, उसे पुराणों और ऋषियों और नारदजीने गाया है। रामचन्द्रजीकी महिमा अति अधिक है, जिनका वर्णन करनेमें कवि का हृदय कदरा रहा है।

मैं मतिमन्द कहौं किहि भाँती ❀ सोहत काग कि हंस सुपाती
सुनिय न पुहुमि कतहुँ अघ काना ❀ पढ़हिं चतुर नर वेद पुराना

फिर मैं मतिमंद किस प्रकार कहूँ, क्या हंसोंकी सुन्दर पंक्ति में कौवा शोभा पाता है ।। पृथ्वी पर कहीं भी पाप सुनाई नहीं देता था, चतुर मनुष्य वेद और पुराणों को पढ़ते थे ।।

गावहिं प्रभु-गुणगण भयहारी ❀ निन्दहिं अमरलोक नरनारी
आज्ञा मात पिता गुरु करहीं ❀ तप मख दान करहिं हरि भजहीं

प्रभु के भयहारी गुण का सब लोग गान करते और अमरलोक की निन्दा करते थे तथा तप, यज्ञ, दान करते थे। सभी माता-पिता और गुरु की आज्ञा मानते थे ।।

प्रति दिन प्रजा राज्य प्रभु केरे ❀ मानहुँ शक्र कुबेर घनेरे
राजत सब रनिवास अनन्दा ❀ सुखी चकोर शरद लखि चन्दा

प्रजा, सुखी थी, सब लोग कुबेर और इन्द्रकी तरह धवी थे। सारा रनिवास आनन्दसे शोभित था जैसे शरद पूर्णिमा के चांद को देखकर चकोर सुखी होता है ।।

दोहा—रघुबर राज बिराज अति, सकल अवनि अघ भाग।
बिचरहिं मुनि कानन बिपुल, प्रीति सहित अनुराग ।।७।।

श्रीरामचन्द्रजी के प्रभाव से पृथ्वी का पाप दूर हो गया। मुनि लोग घने जंगलों में प्रभु की भक्ति करते दिखाई पड़ते थे ।।७।।

मही सुहावनि कानन चारू ❀ खग-मृग सब मिलि करहिं बिहारू
बैर न सुनिय रामके राजा ❀ मिलि बिचरहिं बन सकल समाजा

सार पृथ्वी में अच्छे सुहावने जंगलों के भीतर पशु-पक्षी और हिरण आदि सब हिलमिलकर विहार करते। रामराज्य में किसी से वैर सुनाई नहीं देता था, सभी एक साथ विचरते थे ।।

नाना ग्रन्थ स्मृति समुदाई ❀ गायन करहिं राम प्रभुताई
सादर कोटिक शेष अहीशा ❀ अगणित चतुरानन गौरीशा

अनेक प्रकार से ग्रन्थों का समूह ब्रह्मा और शंकर, मेष सभी एक साथ विचरते थे ।।

कवि कोविद जहँ लगि जगमाहीं ❀ राम राज्य गुण बरणि न जाहीं
असित शैल कज्जल मसि भूरी ❀ जलनिधि पात्र सरित सर रूरी

जगत् में जितने बड़े-बड़े विद्वान् कवि हैं उनसे भी रामराज्यका वर्णन नहीं हो सकता। यदि नील-गिरि पर्वत स्याही बनावे के लिए और स्याही घोलने के लिए समुद्र को दावात बनाया जावे ।।

कर लेखनि सुरतरुवर डारी ❀ सप्तद्वीप महि पात्र बिचारी
बाणी हरिहर बिधि अरु शेषा ❀ सहस कला शत लिखैं विशेषा

कल्पवृक्ष की डाल की कलम बनाई जावे और सातों द्वीपों की पृथ्वीको कागज बनाया जाए, सरस्वती ब्रह्मा शेष और शंकर लिखने को बैठें और हजार शत कलाओं से बैठकर लिखते रहें।।

सोरठा—बरणि न पावैं पार, राम-राज्य कौतुक अमित ।
सुनु अब चरित अपार, खगपति जस आगे भयउ ॥१॥

उसपर भी उनके चरित्र का पार नहीं पा सकते हैं क्योंकि रामराज्य का कौतुक अपार है। हे गरुड़! अब आगें जो चरित्र हुए हैं उनको मैं कहता हूँ, उस अपार चरित्रको सुनो ॥१॥

एक समय एक श्वान पुकारी ❀ पाहि पाहि प्रणतारति हारी
बिनु अपराध कृपालु खरारी ❀ हनेउ मोहिं द्विज अतिबलभारी

एक कुत्ता प्रभुको पुकारा कि हे प्राणरक्षक ! बचाइये । हे दयालु रामचन्द्रजी । बिना अपराध ही इस महा बलवान् ब्राह्मण ने मुझ को मारा है ॥

सुनि प्रभु दीन बचन दुख जाना ❀ द्विज पर पठवउ दूत सुजाना
आनेउ बिप्र तुरत तेहि काला ❀ कहेउ बचन तब दीनदयाला

उस दीन-दुःखी कुत्ते की वाणी सुनकर प्रभु ने ब्राह्मण के पास अपना दूत भेजा ॥ तब दूत उस ब्राह्मण को उसी समय वहां ले आए तो प्रभु ने पूछा कि, ॥

हनेउ श्वान सो केहि अपराधा ❀ सुनु सर्वज्ञ न कछु कृत बाधा
क्रोध बिबश प्रभु बिनहिं बिचारी ❀ नाथ प्रबल मैं याकहँ मारी

आपने कुत्तेको क्यों मारा? इसने क्या अपराध किया था? ब्राह्मणने कहा—हे प्रभो! इसने हमारा कुछ नहीं बिगाड़ा था, मुझे प्रबल गुस्सा आया जिससे मैंने बिना बिचारेही इसे मारा ॥

कहहु दण्ड मुनि सकल समाजा ❀ बिप्र दण्ड देवौं रघुराजा
उचित दण्ड जस देहु बताई ❀ कहहु श्वान तस मोहिं सुहाई

रामजीने मुनियोंसे कहा कि ब्राह्मणको कौन दण्ड दिया जाय? इस पर उन लोगोंने कहा कि आप उचित दण्ड दीजिये। तब प्रभुने कहा कि हे श्वान! इनके लिए जो दण्ड उचित हो वह कहो ॥

दोहा—मठपति या कहँ करहु प्रभु, मन भावन सुख ऐन ।
तुरत मँगायउ पीत पट, गज कुण्डल सुख दैन ॥८॥

तब उस कुत्ते ने कहा कि ब्राह्मण को मठपति कर देना ठीक है; क्योंकि यह कार्य मेरे मन भावन और सुख का धाम भी है। इसपर प्रभुने तुरन्त पीला दुपट्टा हाथी और कुण्डल मँगाये ॥

पूजि चरण गज बिप्र चढ़ायो ❀ दुन्दुभि बाजत मठ सो आयो
कहैं परस्पर सब नर नारी ❀ देखहु श्वान दण्ड अति भारी

ब्राह्मण का चरण पूजकर प्रभु उसको हाथी पर चढ़ाये और मठसे दुन्दुभी बजती हुई आ रही थी स्त्री और पुरुष यही कहते थे कि श्वान ने जो बड़ा भारी दण्ड दिया सो देखो ॥

तासु अनन्द देखि नर नारी ❀ कहहु दण्ड फल कृपा खरारी
पूछहु श्वान कही सो बाता ❀ पूरब सब प्रसंग सुखदाता

इस आनन्द को देखकर स्त्री-पुरुष कहने लगे कि हे कृपालु खरारी! कौनसे दण्डका फल दिया जा रहा है। तो प्रभुने कहा—कुत्ते से पूछो, तो उसने पहले का सब सुखद प्रसंग कह सुनाया ॥

काशी बिप्र वंश मम भयऊ ❋ शिव सेवा सादर मन दयऊ
हिम ऋतु होम कीन्ह अति प्रीती ❋ घृत नख रहउ नाथ सुनु नीती

मैं पूर्व जन्म में ब्राह्मण था और काशी में रहकर तन, मन, वचन से शंकरजी की पूजा करता था। मैंने यज्ञों में बड़ी प्रीति के साथ हवन किया, वह घी मेरे नखों में लगा रहा ॥

दोहा—तप्तौदन भोजन करत, पाप गयउ सो भाग।
बिबिध योनि भरमत फिरेउँ, मिटत न सो अनुराग ॥९॥

उसके पश्चात् मैं गर्म-गर्म भात खाने लगा जिसकी वजह से घी पिघलकर भात में आया, मैं उसको खाता रहा, उसी पापसे मैं कई योनिमें भटकता हूँ, मगर पाप की कील नहीं गई ॥९॥

राज-सभा शिर नाय बहोरी ❋ चला श्वान मन त्रास न थोरी
उठि मध्यान्ह कीन्ह रघुनन्दन ❋ पूजि पुरारि भक्त उर चन्दन

फिर वह श्वान राज-सभा को प्रणाम करके निडरता पूर्वक अपने धाम को सिधारा। इस प्रकार प्रभु ने उठकर मध्यान्ह की सन्ध्या कर महादेवजी की पूजा की ॥

भोजन शयन जगतपति कीन्हा ❋ निज निज धाम सबन पग दीन्हा
रहेउ दिवस जब घटिका चारी ❋ जुरी सभा तब आय खरारी

जब प्रभु भोजन करने गए तो सभी लोग अपने-अपने घर गये। जब चार घड़ी दिन और बाकी रहा तब प्रभु के पास फिर सभा आ जुटी ॥

सुनि पुराण सब अनुज समेता ❋ सन्ध्या भई दान शुभ देता
सबही सन्ध्या बन्दन कीन्हा ❋ भवन चले प्रभु आयसु दीन्हा

उस समय सभामें प्रभु अपने छोटे भाइयोंके साथ पुराण सुनते फिर संध्या समय दान देते हुए सबलोग सन्ध्या-वन्दन किए और प्रभुकी आज्ञा पाकर सबलोग अपने-अपने घर गये ॥

नित्य कोटिचर अवनि सिधावहिं ❋ दिवस अंत सब खबरि सुनावहिं
पृथक पृथक सुनि चरबर बानी ❋ मौन एक चर रहा भवानी

नित्य करोड़ों दूत पृथ्वी पर जाते और सन्ध्या समय दूत प्रभुके पास आकर समाचार सुनाते ॥ उनकी बातें प्रभु अलग-अलग सुनते थे, हे पार्वती ! तब एक दूतने प्रभुसे कुछ भी खबर न सुनाई ॥

छन्द—कछु कहेउ नहिं तेहि पूछि सादर बचन बेगि न आवही।
इक रजक पत्निहिं कहत डाँटत ब्यंग बचन सुनावही ॥
सुनि बचन कृपा निधान चर के मध्य उर राखत भये।
निशि स्वप्न देखत जगतपति पुनि जागि दारुण दुख भये ॥६॥

जब चरने कुछ नहीं कहा, तब प्रभुने प्रेम पूर्वक पूछा कि आजका समाचार क्या है ? तो भी उसने मुँहसे कुछ नहीं कहा, आखिर उसने कहा कि एक धोबी अपनी स्त्री से बड़ी कठोर वाणी कह रहा था कि क्या मैं राम हूँ कि दूसरेके घरमें रही हुई स्त्रीको रख लूँगा ? चरकी ऐसी वाणी प्रभुने अपने हृदयमें रख ली। प्रभु रातको स्वप्न देखे और अति दुखी हुए ॥ ६ ॥

दोहा—बीती अवधि प्रमाण युग, कीन्ह बिचार कृपाल।
एक सहस पितुराज शुचि, करौं सत्य इहि काल ॥१०॥

अब अवधि का युग व्यतीत हो गया तब प्रभु ने बिचार किया कि अब एक हजार वर्ष पिता के पवित्र राज्य को करेंगे ॥१०॥

त्यागेहु जनकसुता मन माहीं ❀ राख्यो श्रुतिपथ धर्म न जाहीं
करि मन टेक सिया पहँ आये ❀ सादर बोले बचन सुहाये

ऐसा विचार मन से सीता का परित्याग कर, वेद की मर्यादाको दृढ़ की जिससे सांसारिक धर्म का नाश न हो। ऐसा निश्चयकर सीताके पास आकर यह सुहावने वचन बोले ॥

सुमुखि न कछु माँगेहु कोइ काला ❀ अस हँसि कहेउ रमेश कृपाला
निज छाया महि राखि विनीता ❀ रहहु जाय निज धाम पुनीता

हे सुमुखि ! आज तक तुमने कुछ नहीं मांगा, जो इच्छा हो माँगो, फिर हँसकर कहा कि हे विनीता ! अब तुम इस पृथ्वी पर अपनी छाया रखकर अपने धाम को चली जाओ ॥

प्रभु पद बन्दि गई नभ सोई ❀ जीव चराचर लखा न कोई
तासन प्रभु अस कहा बुझाई ❀ मन भावन माँगहु सुखदाई

प्रभु की आज्ञा होते ही सीताजी प्रभु के चरणों को प्रणाम कर आकाश में चली गई जिसे कोई देख नहीं सका, तब उस छाया से रामजी ने कहा कि, जो इच्छा हो वह वर मांगो ॥

नाथ साथ मुनि धाम बिहाई ❀ आयउँ निज गृह मन सकुचाई
मुनि तिय भूषन बसन सुहाये ❀ पहिराइय प्रभु जो मन भाये

तब सीताजीने कहा कि मैं आपके साथ मुनियोंके धामको छोड़कर अपने घर सकुच कर चली आई। अब मेरी इच्छा है कि मैं एक बार मुनियों की स्त्रियों को जाकर वस्त्र और आभूषण पहनाऊँ ॥

दोहा—होत प्रात जब जगतपति, जागे रमानिवास।
याचक यश गावहिं मुदित, शोभा जगत-प्रकाश ॥११॥

सवेरा होते ही जब लक्ष्मी-निवास रामजी जागे तो याचक लोग प्रभु के यश गाने लगे, उस शोभा से जगत् शोभायमान हो गया ॥ ११ ॥

भरत शेष रिपु दमन समेता ❀ आये जहँ प्रभु कृपा निकेता
कीन्ह प्रणाम माथ महि लाई ❀ बोले नहिं कछु श्रीरघुराई

जहाँ श्रीरामजी रहते वहाँ पर भरत, लक्षमण और शत्रुघ्नजी आये। वे लोग आकर पृथ्वी पर लेटकर श्रीरामचन्द्रजी को प्रणाम किए तो प्रभु कुछ नहीं बोले ॥

बदन बिलोकि सशंकित अंगा ❀ श्रीहत देखि बपुष कर रंगा
थर थर काँपहिं तीनौं भाई ❀ जानि न जाय चरित रघुराई

प्रभु के मन शंकित और अंगों को कान्तिहीन देखकर तीनों भाई थर-थर काँपने लगे तब भी प्रभु का चरित्र उन लोगों को समझ में नहीं आया ॥

खैंचि श्वास तकि कुसमय जानी ❀ बोले गूढ़ मनोहर बानी
बचन मोर हिय धरि तुम भ्राता ❀ लै बन जाहु जानकी माता

कुअवसर जानकर वे श्वास खींचकर भाई के मुखकी ओर देखते हुए गूढ़ और मनोहर वाणी बोले, हे भाइयों ! जो मैं कहता हूँ उसको मनमें रक्खो और सीताको साथ लेकर बनमें जाओ ।।

सखि सहमि सुनि बचन कराला ❀ जरे गात उपजी उर ज्वाला
हँसत कि सत्य कहहिं रघुराई ❀ असमंजस मन दुख खगराई

इस भयंकर वाणीको सुनकर तीनों भाइयोंका मुख सूखकर सहम गया । शरीर जल गया और हृदयमें ज्वाला उत्पन्न हुई ।। तब बोले—यह आप हँसी करते या सत्य कहते हैं ? हे गरुड़जी ! उस दुःखसे मन द्विविधामें पड़ गया ।।

दोहा—भरत आदि व्याकुल अनुज, नहिं आवत कहि बैन ।
जोरि जुगल कर शत्रुहन, कहेउ नीर भरि नैन ।।१२।।

भरत आदि सब छोटे भाई व्याकुल हो गए, मुँहसे वाणी नहीं निकलती । इस पर शत्रुघ्नजी दोनों हाथोंको जोड़ और आँखमें आँसू भरकर बोले—।।१२।।

भरत जोरि कर कहा तब, सुनि प्रभु बचन कठोर ।
सुनु बिनती सर्वज्ञ प्रभु, नाथ मोर मति थोर ।।१३।।

तब स्वामी रामकी ऐसी कठोर वाणी सुनकर भरतजी दोनों हाथ जोड़कर बोले—हे नाथ ! आप सर्वज्ञ हैं, मेरी एक विनती सुनिए, क्योंकि मैं मन्द-बुद्धिवाला हूँ ।। १३ ।।

हंस वंश जग महँ विख्याता ❀ दशरथ पिता कौशला माता
त्रिभुवनपति प्रभु सब जग जाना ❀ गावहिं यश शुचि वेद पुराना

हे प्रभो ! यह सूर्यवंश जगत् में अति विख्यात है । दशरथ आपके पिता और कौशल्या माता हैं।।सारा संसार जानता है कि, आप त्रिलोकीके स्वामी हैं और वेद पुराण आपके पवित्र यशको गाते हैं ।।

सत्य शक्ति तव प्रकट सुहाई ❀ बरणि न सके बेद अहि राई
शोभा खानि जानकी ख्याता ❀ रहित अमंगल मंगल दाता

हे प्रभो ! आपकी सत्यरूपी शक्ति जगत्-प्रसिद्ध और सुन्दर है, वेद और शेष भी वर्णन नहीं कर सकते हैं ।। सीता तो शोभाकी खानि, अमंगल-रहित और मंगलको देनेवाली हैं ।।

छाया जेहि तिय पति-व्रत धरहीं ❀ तुमहिं बिहाय छिनक नहिं जियहीं
जलबिनमीनकिजियहिं कृपाला ❀ होय कृषी बिनु बारिद माला

जिनकी छायासे स्त्री गण पति-व्रत को धारण करती हैं वह सीता आपके बिना क्षणभर भी जिवित नहीं रह सकतीं । हे प्रभो ! क्या बिना जलके मछली जीवित रह सकती है ? ।।

असतुमबिनहिंजियहिकिमिसीता ❀ ज्ञानवन्त अति निपुण बिनीता
सुनि करुणामय बचन सप्रीती ❀ कही भरत तुम सुन्दर नीती

ऐसे ही हे प्रभो ! क्या आपके बिना सीता जीती रह सकती हैं, आप तो बड़े ही निपुण और ज्ञानी हैं ।। भरतके करुणाभरे वचनसुन श्रीरामचन्द्रजीने कहा-हे भरत ! तुमने यह अच्छी नीति कही है ।।

दोहा—तदपि नृपहिं चाहिय सदा, राजनीति धन धाम।
प्रजापाल हित शोच नहिं, बचन प्रीति सत्काम ॥१४॥

तथापि राजाको सर्वदा राजनीतिके अनुसार धन और घर रखना तथा प्रजाका पालन करना चाहिये। राजाको मन, कर्म, वाणीसे प्रजाको सुखी बनावा चाहिये ॥ १४ ॥

दूत चरित जस सुनेउ सो कहेऊ ❁ कुल कलंक यह दारुन भयेऊ
तरणि वंश नृप अमित अपारा ❁ एक ते एक जान संसारा

फिर प्रभुने दूतसे जो धोबीके समाचार सुने थे कहे कि, हे भाई! यह तो कुलको भयंकर कलंक हुआ ॥ सूर्यवंशमें एकसे एक बहुत बड़े बड़े राजा हुए हैं जिनको संसार जावता है ॥

रघु दिलीप सूरज मनु जानू ❁ सगर भगीरथ वेद बखानू
दशरथ विदित देखि तुम नीके ❁ बचन न टारेउ लालच जीके

जैसे रघु, दिलीप, मनु, सगर तथा भगीरथ जिनका यश वेदोंमें वर्णित है। प्रसिद्ध दशरथको तुम लोगोंने आँखोंसे ही देखा है कि जिन्होंने अपना प्राण दे दिया; परन्तु वचन नहीं टाला ॥

तेहि कुल रंचक सुनत कलंकू ❁ रहे जीव तो अधम अशंकू
सुनु सर्वज्ञ सकल अघ हारी ❁ रहित कलंक बिदेह कुमारी

उस कुलमें रंचमात्र कलंक सुननेपर प्राण रह जाय तो यह अधम और बड़ानिडर है ॥ हे सर्वज्ञ! सुनिये, आप तो पापोंके नाशक हैं और सीता भीकलंक रहित हैं ॥

बिधि हरि हर बैदेहि सिहाई ❁ पावक अवटि कनक सम भाई
सो सुर नर मुनि सपनेहुँ नाहीं ❁ यह चरित्र जग कहि हर्षाहीं

हे भाई! ब्रह्मा, विष्णु और शंकर भी सीता की प्रशंसा करते हैं, जो अग्निमें शुद्ध अग्निसे तपाये हुए सोनेके समान सर्वदा पवित्र हैं, इस चरित्रको कह-सुनकर संसार प्रसन्न होता है ॥

दोहा—ते शठ रौरव नरक में, कोटि कल्प भरि बास।
रहहिं भोग तजि रोग वश, भोगहिं नरक निवास ॥१५॥

जो मूर्ख इस चरित्रको सुनकर प्रसन्न नहीं होते, वे करोड़ों कल्पतक रौरव नरकमें पड़े रहते हैं। भोगको छोड़ रोगी हो नरक का निवास भोगते हैं ॥ १५ ॥

रिस रुख देखि नयन बर तीछे ❁ आयेउ भरत लषन के पीछे
सुनु सौमित्र छाँडु हठ शोचू ❁ जग भल कहै मोहि किन पोचू

तब उसी समय प्रभुके क्रोधी रुखको देखकर भरतजी लक्ष्मणके पीछे आ गये ॥ तब प्रभुने लक्ष्मणसे कहा कि लक्ष्मण! तुम हठ और शोक छोड़कर सुनो, चाहे जगत् मुझे भला या कायर कहे; पर मैं सीताको अवश्य त्याग दूँगा ॥

तजि आज्ञा प्रत्युत्तर करिहौ ❁ मोहि बिनु शोक जन्म भरि सहिहौ
अति गहबर बन जहाँ न कोई ❁ छाँड़हु तात जानकिहि सोई

यदि मेरी आज्ञा का उलघन करोगे तो मेरे बिना जन्म भर दुःखी हो शोकमें रहोगे। सीताको अति निर्जन कठोर और घने बनमें छोड़ आओ, ऐसा कहकर प्रभु चुप हो गये ।।

प्रेरी मति कहि बचन उदासा ❁ मरन ठानि कर चले निराशा
सुभग विमान सिया बैठाई ❁ पट भोजन बहु दिये धराई

तब लक्ष्मण उदासीन हो प्रभुकी प्रेरी हुई बुद्धिके अनुकूल अपना मरना ठान निराश होकर चले ।। अच्छे रथपर सीताजीको बिठाकर उसपर बहुतसे बहुमूल्य वस्त्र और भोजनकी सामग्री रखवा दिये ।।

अति आनँद मगु चलीं जानकी ❁ अतिशय प्रिय करुणानिधानकी

तब जानकी अति प्रसन्न हो चलीं, जो करुणानिधान श्रीरामचन्द्रजोकी अति प्यारी थीं ।।

दोहा—लक्ष्मण शोक निहारि करि, सीय चकित भइ बाल ।
हृदय शोक नहिं कहि सकत, मणि बिनु ब्याकुल ब्याल ।।१६।।

तब लक्ष्मणजीको शोकित देखकर बाल सीताजी भी चकित हुईं। हृदयमें इतना शोक हुआ जितना साँपको मणिके बिना शोक होता है ।। १६ ।।

उतरि देवसरि यान सुहावा ❁ अति उद्यान देखि भय पावा
कारण अपर जान भयभीता ❁ बोलीं बचन मनोहर सीता

गङ्गा पार उतरकर बड़ा भारी जंगल देखकर रथमें बैठी सीता जी अति डरीं। तब दूसरा कारण जानकर मनोहर सीता यह वाक्य बोलीं—।।

दीखत नाहिं मुनिन के धामा ❁ जात कहाँ प्रिय अनुज सकामा
खग-मृग केहरि विषधर ब्याला ❁ करि बराह बृक बाघ मराला

हे लक्ष्मण ! यहां मुनियोंके धाम दिखाई तो नहीं दे रहे हैं, तुम कहां चले जा रहे हो ? यहां तो पशु, पक्षी, हिरण, सिंह, सर्प, बिच्छी, हाथी, बाराह, भेड़िया ही दृष्टि आते हैं ।।

कोउ मुनि मिलै न आवत जाता ❁ निकसत तात प्राण मग गाता
सिया बिकल लखि मनहिं अहीशा ❁ कीन्ह कहा बिधि हरि गौरीशा

हे तात ! यहां कोई मुनि आते-जाते दृष्टि नहीं आते हैं इससे अब मेरा प्राण निकलना ही चाहता है ! लक्ष्मणजी सीता को विकल देख कहने लगे—हे ब्रह्मा ! आपने यह क्या किया ?

मूर्छित रथ ते भय बिकराला ❁ भूमि गिरत तब आप सम्हाला
सिय बिलोकि मन धीरज आना ❁ तृषा बिना जल जात है प्राना

लक्ष्मणजी मूर्छित हो पृथ्वीपर गिरने लगे तब फिर पीछे से आपही सँभल गये ।। सीताजी को देखकर उनके मन में धैर्य आया पर प्यास से, बिना जल के जीव जाने लगा ।।

दोहा—धरणिसुता ब्याकुल बिकल, प्रान कंठगत जान ।
तजन चहत तन शेष तब, धिकधिक जीवन मान ।।१७।।

लक्ष्मणजी के कण्ठगत प्राण देखकर सीता अति व्याकुल और विह्वल हुई। इस पर लक्ष्मण अपना प्राण धिक्-धिक् ! कह और ऐसा मानकर उसे त्याग देना चाहे ।। १७ ।।

प्रान बिना लक्ष्मण कहँ देखा ❀ गगन गिरा तब भई विशेषा
सुनु सौमित्र जाहु सिय त्यागी ❀ जनक पुत्रिका जियहिं सुभागी

लक्ष्मणकी श्वास-गति रुकने लगी तब यह आकाशवाणी हुई कि, हे लक्ष्मण! सुनो, सीता को त्याग दो, यह सौभाग्यवती सीता वन में कुशल पूर्वक जीवित रहेगी ।।

गगन गिरा सुनि धीरज कीन्हा ❀ हाथ जोरि प्रदक्षिण दीन्हा
लै रथ चरन बन्दि सिय केरे ❀ चले अवध उर त्रास घनेरे

लक्ष्मणजी आकाशवाणी सुनकर धीरज धारण किए और हाथ जोड़कर तब प्रदक्षिणा की। सीताजी को दण्डवत् कर रथ ले अवधपुरी की ओर त्रसित होकर चले ।।

जागी सीय सकल दिशि देखा ❀ नहिं रथ अश्व नहीं तहँ शेषा
रहे प्रथम दुख सहि ये प्राना ❀ पुनि सोइ चाहत करन पयाना

जब सीताजीको होश आया तो सब ओर देखों परन्तु न घोड़ोंको देखा न रथ और न लक्ष्मण को ही पायीं। तब तो पहले दुःखको सहकर जो प्राण रह गया था, वह अब चलना चाहता है ।।

करुना करत बिपिन अति प्यारी ❀ बाल्मीकि आये मुनि भारी
पुत्री बाल्मीकि मुनि जानी ❀ बन आवन निज चरित बखानी

सीताजी उस वनमें अति करुणाकर बिलख रही थीं कि उसी समय प्रसिद्ध बाल्मीकि मुनि वहाँ आये। जानकीजी मुनिको पहचान गईं और अपना वन में आनेका सम्पूर्ण वृत्तान्त कहने लगीं ।।

दोहा—मुनि पुत्री मैं जनक की, राम प्रिया जगजान ।
त्याग न जाना हेतु कछु, बिधि गति अति बलवान ।।१८।।

हे मुनि! मैं जनक की पुत्री और रामचन्द्रजी की स्त्री हूँ जिसको सारा जगत् जानता है। न जाने किस हेतु से मुझे त्याग दिया, ब्रह्माकी अत्यन्त बलवान् गति जानी नहीं जाती ।।१८।।

देवर लखन इहाँ लै आये ❀ हेतु न जाना सुनु मुनिराये
सुनु सीता मिथिला-पति मोरा ❀ परम शिष्य सब बिधि पितु तोरा

हे मुनिवर! मुझको मेरे देवर लक्ष्मणजी न मालूम किस हेतु से यहाँ ले आये। तब बाल्मीकि ने कहा—हे सीते! सुन, तेरे पिताजी मिथिला के राजा हैं, वे मेरे शिष्य हैं ।।

चिन्ता अब जनि करहु कुमारी ❀ मिलिहहिं तोहिं शेष हितकारी
सादर पर्णकुटी सिय आनी ❀ पुनि करि मज्जन सब गति जानी

ऐ कुमारी! अब तुम किसी बात की चिन्ता मत करो, अन्त में तुम्हारा भला होगा ।। ऐसा कह मुनि आदर पूर्वक सीताको आश्रम में ले आए और स्नान कर सब बातें जान लीं ।।

विविध भाँति मुनि धीरज दीना ❀ सिय सुरसरि तब मज्जन कीना
सुमिरि राम मूरति उर राखी ❀ दीन्हें फल सुन्दर मुनि भाखी

फिर मुनि ने अनेक प्रकार से सीताको समझाया, तब सीता ने गङ्गा में स्नान किया ।। फिर रामका स्मरणकर हृदय में उनकी मूर्ति रखीं तो मुनि सुन्दर फलोंको लाकर सीताको दिये ।।

सुनि मुनि कथा अनेक प्रसंगा * कहहिं सुनहिं सिय सहित बिहंगा
ज्ञान अनेक प्रकारहिं छावा * लक्ष्मण सुनहु अवध जस आवा

हे गरुड़ ! वहाँ मुनि लोगोंके साथ अनेक प्रकारके कथा-प्रसङ्ग सुव पक्षी भी सीताके साथ कहते-सुनते । मुनिके आश्रममें अनेक प्रकारके ज्ञान छाये हुऐ थे, अब लक्ष्मणके अवध आनेकी कथा कहता हूँ, सनो ॥

छन्द—आये जु लक्ष्मण त्यागि सीतहिं बिकल निज आश्रम गये ।
बहु भाँति रोवति मातु मन कहि सियहिं दारुण दुःख दये ॥
सुनिसहमि मुर्छित मातु बानी बिकल जिमि फणि मणिगये ।
तिमि मात बिलपति जाति व्याकुल कौशला सब दुःख भये ॥

लक्ष्मणजी सीताजीको वनमें त्याग, विकल हो अपने घरमें आये । सब मातायें अति विलाप करती रो रही थीं और कहती, आह ! आह ! हा, प्यारी सीताको बड़ा दुख हुआ । लक्ष्मणजी माताओंकी वाणी सुन सहमकर ऐसे मूर्छित हो गए, जैसे मणिके बिना सर्प बिकल हो जाता है । माताओंको ऐसे बिलखते देख सम्पूर्ण अयोध्यापुरी दुःखमयी हो गई ॥

छन्द—रोदति बदति बहु भाँति को कह बिपति यह दारुण भये ।
सुनि शोर राउर सहित लक्ष्मण राम निज मन्दिर गये ॥
निज ज्ञान दे समुझाइ मातहिं खोलि पट अन्तर दये ।
हम जानि तोहिं सुतमानिप्रभु जग भूलि भ्रम फन्दनभय ॥८॥

मातायें अनेक प्रकारसे रोती हुई कहतीं कि अरे ! इस कठिन दुःखको कौन कह सकता है ? इस कोलाहलको सुन श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मणजी समेत अपने मन्दिरको गये । तब प्रभु ने मातओंको बुलाकर अपने ब्रह्मज्ञानका उपदेश किया, जिससे अन्तःकरणके पर्दे खुल गये । तब माताओंने प्रभुसे विनती की कि, हे प्रभो ! हम सब आजकल भ्रममें पड़कर आपको पुत्र समझती थीं ॥८॥

अब कृपा करि जगदीश स्वामी देहु भक्ति सुहावनी ।
जेहि खोजि मुनि योगीश तापस देव अविचल पावनी ॥
वर कहँ सोइ सोइ लहे मातन दीन्ह करुणाकर तबै ।
मन शोधि कर शुभ योग निर्मल ज्ञान संयुत भईं सबै ॥९॥

हे प्रभो ! अब मुझे कृपाकर अपनी भक्ति दो कि, जिस परम पवित्र भक्ति को देवता, योगी तथा बड़े-बड़े तपस्वी ढूंढ़कर करना चाहते हैं, करुणनिधान प्रभु माताओं की ऐसी वाणी सुन मुँह माँगा वर दिये । उन सबका अन्तःकरण शुद्ध होने के कारण शुभ-योगके प्रतापसे सबको शुद्ध अविनाशी ज्ञान उत्पन्न हो गया ॥ ९ ॥

दोहा—योग अग्नि तनु भस्म करि, सकल गईं पति धाम ।
भरत शत्रुहन लषण अरु, शोक भवन श्रीराम ॥१९॥

तब वे मातायें योगानलसे शरीरको भस्मकर पतिके धामको सिधारी । भरत, शत्रुघ्न लक्ष्मण और श्रीरामजी शोकमें, त्रस्त अपने-अपने भवन को गये ॥ १९ ॥

विधिवत कर्म सकल श्रुति गाये ❀ प्रभु सन गुरु सादर करवाये
दीन्ह दान तहँ कोटि प्रकारा ❀ को अस जग जो बरणै पारा

विधि पूर्वक गुरुवसिष्ठजीने माताओंके सब अन्त्येष्टि संस्कार भगवान् श्रीरामचन्द्रजीसे करवाये। उन्होंने वहाँ करोड़ों प्रकारसे जो दान दिया संसारमें ऐसा कौन है जो वर्णन कर सके।।

धेनु बसन मणि हाटक हीरा ❀ हय गय गजमुक्ता सुठि चीरा
रथ सुख बाग भूमि बहुतेरी ❀ रंकहु धनद बड़ाई घेरी

गौ, वस्त्र, रत्न, सुवर्ण, हीरा, घोड़ा, मोती और रेशमी कपड़े। रथ-सुहावने, बगीचे, बहुतेरी जमीन और नाना प्रकारके दान दिए। यहाँ तक कि दरिद्र भी कुबेर की बड़ाई को प्राप्त हो गये।।

बेद पढ़हिं द्विज देहिं अशीशा ❀ चिरंजीव दशरथ सुत ईशा
राम दान दे सब बिधि पोषे ❀ भये निवृत्त कार्य करि चोखे

ब्राह्मण वेद पढ़ते और आशीर्वाद देते कि, महाराज दशरथके पुत्र चिरंजीवी रहे। रामचन्द्रजीने दान देकर सबको सन्तुष्ट कर दिया, ऐसा बढ़िया कार्य करके छुट्टी पाये।।

गृह द्विज याचक सकल सिधाये ❀ अमित प्रकार राम सुख पाये
बिप्र दण्ड तापस बिधि कीन्हा ❀ सुरपुर बास मातु कहँ दीन्हा

तब जितने ब्राह्मण और याचक थे अपने-अपने घर गये। बहुत प्रकार रामचन्द्रजी अपार सुख पाये, तपस्वी ब्राह्मणको सविधि दण्डित किए तथा माताओं को स्वर्ग लोक का वास दिया।।

दोहा—अजय करी प्रभु यज्ञ पुनि, अश्वमेध जग जान।
कलुष दलन संताप दहि, अंगदादि अभिमान ।।२०।।

फिर प्रभुने अनेक यज्ञ करनेके पश्चात् अश्वमेध यज्ञ किया जिसे सारा जगत् जानता है। उस यज्ञमें प्रभुने सबके पाप मिटा दिये तथा संताप को हर कर अंगद आदि बन्दरों का गर्व मर्दन किया।। २०।।

एक बार गुरु गृह सुखदाई ❀ गे सँग सचिव अनुज रघुराई
कीन्ह दण्डवत महि शिर लाई ❀ सादर हर्षि मिले मुनिराई

एकबार श्रीरामचन्द्रजी अपने छोटे भाइयों समेत गुरुके गृह गए और पृथ्वी पर अपने शिर रखकर मुनिको साष्टाँग प्रणाम किए तो मुनि भी उन लोगोंसे प्रसन्नता पूर्वक मिले।।

पूछा कुशल देखि मृदु गाता ❀ कुशल देखि पदपंकज ताता
गुरु पद बंदि द्विजन शिर नाई ❀ बैठे गुरु अनुशासन पाई

तब प्रभुके कोमल शरीरको देखकर मुनि कुशल-क्षेम पूछे तो प्रभुने कहा कि, हे मुने! आपके कमलवत् चरणोंकी कृपासे मैं सकुशल हूँ। गुरुके कमलवत् चरणोंमें प्रणामकर फिर ब्राह्मणोंके चरणोंमें प्रभुने प्रणाम किया, फिर गुरुकी आज्ञा पाकर बैठे।।

कहत पुराण नवल इतिहासा ❀ सुनत कृपानिधि परम हुलासा
भाइ नअमित अमित सुख दीन्हा ❀ मुनि तन चितै प्रेम अति कीन्हा

वहाँ प्रभु अपने भाइयों सहित पुराण और नए इतिहास प्रेम पूर्वक कहते-सुनते रहे। फिर भाइयों को अपार सुख देते हुए प्रेम पूर्वक मुनि की ओर देखने लगे ॥

दोउ कर जोरि सच्चिदानन्दा ❀ बोले बचन भानुकुल चन्दा
नाथ सकल तव चरण प्रसादा ❀ भा जग विपुल मोर मरयादा

तब भानुकूल के चन्द्रमा श्रीरामचन्द्रजी दोनों कर जोड़ कोमल वाणी से बोले। हे नाथ! आपके चरण-कमलों के प्रसाद से जगत् में मेरी बड़ी मर्यादा हो गई है ॥

दोहा—समय समुझि करुणायतन, सादर बचन बहोरि।
प्रभु अन्तर्यामी करहु, सकल मनोरथ मोरि ॥ २१ ॥

तब प्रभु उचित अवसर जानकर, गुरु से आदर पूर्वक कहे कि, हे नाथ! आप तो अन्तर्यामी हैं सो मेरा सब मनोरथ पूर्ण करो ॥२१॥

तव प्रसाद जग यज्ञ अनेका ❀ कीन्हें अमित एक ते एका
नाथ सकल पुरजन मन अहहीं ❀ देखन अश्वमेध मख चहहीं

हे महाराज! आपकी कृपा से अनेक यज्ञ एक से एक संसार में किये॥ किन्तु, नाथ! अयोध्यापुरी के सभी लोग अश्वमेध की इच्छा करते हैं कि अश्वमेध यज्ञ होवे तो देखा जाय ॥

जस कछु आयसु दीजिय नाथा ❀ सो सब करौं नाय महि माथा

हे नाथ! आप जैसी आज्ञा दीजिए सो सिर झुकाकर करने को तैयार हूँ ॥

सुनि पुलके मुनि बचन सप्रीती ❀ कस न कहहु तुम सुन्दर नीती
पुरवहिं बिधिअभिलाष तुम्हारी❀ उठहु भरत अब करहु तयारी

प्रभु की ऐसी वाणी सुन वसिष्ठ मुनि पुलकायमान हो गये और रामचन्द्र से बोले—हे नाथ! आप कैसे नहीं सुन्दर नीति कहेंगे? विधाता आपकी अभिलाषा पूर्ण करे। हे भरत! उठो और यज्ञ की तैयारी करो ॥

सुनि मुनि बचन भरतरिपुदमनू ❀ हर्ष सचिव लक्ष्मण गृह गमनू
बिबिध प्रकार चरण करि सेवा ❀ चले भरत सँग सब महि देवा

मुनि की वाणी सुनकर लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न प्रेम पूर्वक उठे और घर की ओर चले। अनेक प्रकार से गुरु के चरणों की सेवा करके भरतजी चले, उनके साथ बहुत से ब्राह्मण भी हो लिये ॥

चले सकल सेवक सुनि बानी ❀ सुनत बचन हर्षीं सब रानी
रचहिं बितान अनेक प्रकारा ❀ देखि अवध छबि बिधि मन हारा

भरत की आज्ञा पाते ही सम्पूर्ण सेवक चले और रानियाँ भी सुनकर अति प्रसन्न हुईं। कारीगर नानाप्रकार के सुन्दर वितान रचने लगे जिसको देखकर ब्रह्मा लज्जित होवे लगें ॥

दोहा—सेवक पुरजन सचिव सब, सादर तुरत बुलाय।
हाट बाट पुर द्वार गृह, रचहु बितान बनाय ॥२२॥

तुरन्त ही सेवक, पुरी के लोग और सचिव प्रेम पूर्वक बुलाये गए कि तुम लोग जाकर नगर के बाजार, रास्ते, द्वार और घरों पर नानाप्रकार से तोरण बनाकर रचो ॥२२॥

लगे सँवारन रथ गज बाजी ❀ सुनि मख गगन दुन्दुभी बाजी
तुरत सचिव चर बहुरि बुलाये ❀ कहि जयजीव माथ तिन्ह नाये

फिर तो सबने जाकर हाथियों घोड़ों और रथों को सँवारकर तैयार किया, तब यज्ञ होना सुनकर आकाश से देवताओं ने दुन्दुभी बजाये, फिर सचिव बुलाए गए तो जयजीव मनाकर अपने-अपने शीश झुकाये ॥

जाहु मुनिनके थल बन माहीं ❀ सादर नेवत देहु सब पाहीं
उहाँ राम पूछी मुनि देवा ❀ आज्ञा होइ करौं सोइ सेवा

इस पर भरत की आज्ञा मिली कि तुम लोग वन में जाकर आनन्द पूर्वक मुनियों को नेवता दे आओ। जब सब मुनियों को सादर बुलाने की भरतजी ने आज्ञा दी ॥ तब आनन्दकन्द श्रीरामचन्द्रजी ने वशिष्ठजी से पूछा कि हे गुरु महाराज! जो आज्ञा हो वह सेवा की जाय ॥

प्रभु मनकी गति मुनिवर जानी ❀ बोले अति सनेह मृदु बानी
पठवहु दूत जनकपुर आजू ❀ आवहिं जनक समेत समाजू

मुनि महाराज प्रभु ने हृदय की बात समझकर अति प्रेम के साथ कोमल वाणी बोले कि आज ही जनकपुरी को दूत भेजिये जिससे राजा जनक अपने समाज सहित यहाँ आवें ॥

दोहा—सुनहु राम रघुवंशमणि, नेवतहु सकुल स्वजाति ।
बरुण कुबेर इन्द्र यम, पुनि मुनिवर सब ज्ञाति ॥२३॥

हे रघुवंशमणि श्रीरामचन्द्रजी ! आप अपने सब स्वजातियों को न्योता दीजिये। पहले वरुन, इन्द्र, कुबेर, यम फिर मुनियों को भी बुलाइए ॥२३॥

गुरु समेत प्रभु जब गृह आये ❀ राम सखा सब बोलि पठाये
जामवंत सुग्रीव विभीषण ❀ नल अरु नील द्विविद कुलभूषण

जब प्रभु गुरु वसिष्ठ सहित गृह को आये तब श्रीरामचन्द्र अपने मित्रों को बुलाये। उनकी आज्ञा पाकर जामवन्त, सुग्रीव, विभीषण, नल, नील और कुलभूषण द्विविद आये ॥

आये सब जहँ राम कृपाला ❀ बरुण कुबेर इन्द्र यम काला
चढ़ि विमान सुर तियन सुहाई ❀ करत गान कल कण्ठ लजाई

रामचन्द्रजी के पास वे बानर और बरुण, कुबेर, इन्द्र तथा यम और कामदेव आये। विमानों में बैठी देवताओं की स्त्रियाँ मीठी वाणी से गान करती हुई आईं ॥

आवहिं मुनि जन यूथ घनेरे ❀ देहिं कृपानिधि सुन्दर डेरे
शशि रविहरिहरबिधिसनकादी ❀ आये सुर जे परम अनादी

मुनियों के समूह आते ही श्रीरामचन्द्रजी उनको सुन्दर आसन पर बिठाते थे। सूर्य, चन्द्रमा, शंकर, ब्रह्मा, सनकादिक मुनि और देवता जो सभी परम अनादि थे, आये ॥

विश्वामित्र संग मुनि झारी ❀ सहस सात ऋषि इच्छाचारी

विश्वामित्रजी के साथ ऋषियों का अति भारी समूह आया जिसमें सात सहस्र ऋषि इच्छानुसार विचरने वाले थे ॥

दोहा–पाराशर भृगु अंगिरा, नारद व्यास अगस्त्य।
आये यूथप मुनि सकल, देव समस्त पुलस्त्य ॥२४॥

पाराशर, भृगु, अङ्गिरा, नारद, व्यास, अगस्त्य मुनि और पुलस्त्य ऋषि आये। साथ ही ऋषियों का प्रचण्ड समूह और सब देवता भी आये॥ २४॥

यज्ञस्थल अति दीख सुहावा ❋ नाना भाँति मुनिन सुख पावा
मिथिलापुर जे दूत सिधाये ❋ देखि नगर बासिन सुख पाये

यज्ञ-स्थल की शोभा अति विचित्र बनी थी जिसको मुनि देखकर अति प्रसन्न हुए। जो दूत मिथिला पुरी में गए थे, उनको देखकर मिथिलापुरी के सभी लोग अति सुखी हुए॥

द्वारपाल तब खबर जनाई ❋ अवध नगर से पाती आई
सुनि बिदह सहसा उठि धाये ❋ तन मन पुलकि नयन जल छाये

तब द्वारपाल ने महाराज जनकको अयोध्यापुरी से दूत के आनेकी सूचना दी। जनक जी सुनते ही एकाएक नेत्रों में आंसू भरे हुए और पुलकित शरीर से दौड़ पड़े॥

भयउ भूप मन आनन्द जेता ❋ कहि न सकैं शारद अति तेता
शिथिल अंग नृप द्वारहिं आये ❋ देखि दूत अतिशय सुख पाय

कवि वर्णन करता है कि, उस समय राजा जनकको जितना हर्ष हुआ, उसको सरस्वती भी नहीं कह सकती हैं। राजा द्वारपर शिथिल अङ्ग आये और दूतको देखकर अति प्रसन्न हुए।

कहहु कुशल रघुपति सब भाई ❋ पाती दै सब कथा सुनाई
हृदय राखि पुनि नयनन लाई ❋ गदगद कंठ न कुछ कहि जाई

ऐ दूत! श्रीरामचन्द्रजीका और उनके भाइयों का कुशल-समाचार कहो तब पत्रको देकर दूतने सब समाचार कहा। राजा ने उस पत्रीको हृदय से लगा आँखों से देखा तो उनका कण्ठ गद्‌गद हो गया और कुछ कहते न बना॥

दोहा–भूप मोद तेहि अवसर, को बरणै मति धीर।
तुलसी भवन उछाह बड़, जय जय शब्द गँभीर॥२५॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि उस समय राजाके आनन्द का वर्णन कहो कौन मतिधीर कर सकता है?॥ राजा जनक के मन में बड़ा आनन्द और उछाह छा गया, तथा जय-जय की ध्वनि होने लगी॥ २५॥

बाँचत प्रीति न हृदय समाता ❋ चरवर बोलि कही सब बाता
नगर गाँव पुर मंगल साजे ❋ अमित अपार बाजने बाजे

पाती को पढ़ते ही राजा फूल उठे और अपने बुद्धिमान् दूतको बुलाकर सम्पूर्ण बात कही कि जाओ सम्पूर्ण नगर और गाँवको सजाकर मङ्गलगान की और बाजे बजवाने की आज्ञा दो॥

सचिव बोलि नृप पाती दीन्हीं ❋ उठि कर जोरि बिनय करि लीन्हीं
पढ़ी सचिव अति प्रेम अनन्दा ❋ सुमिरि राम कोशलपुर चन्दा

राजा अपने मंत्रियोंको बुलाकर प्यारी पत्री दी, सो उठकर विनयपूर्वक उन्होंने ली ।। मंत्री ने बड़े प्रेम और आनन्द के साथ चिटठी पढ़कर श्रीरामजीका हृदय से स्मरण किया ।।

घरघर खबरि ब्यापि छिन माहीं ❋ मंगल कलश रचे सब काहीं
भयो अनन्द न जाय बखानी ❋ कीन्हे बिबुध वश्य नृप दानी

क्षण भर में सम्पूर्ण नगर में यह खुश-खबरी फैल गई. सभीने मंगलाचरण करने लगे तथा सुन्दर कलश सँवारे गये । मिथिलापुरी के उस अकथनीय आनन्दका वर्णन नहीं हो सकता । राजा ने अनेक प्रकार के दान देकर पण्डितों और ब्राह्मणों को प्रसन्न किया ।।

धरि नर देह अमित नभ बासी ❋ आये भूप नगर सुख रासी
कहै बचन नृपके हितकारी ❋ चलहिं अवध सब कार्य बिसारी

राजा जनक के नगरकी खुशहाली देखने के लिए आकाश से देवता मनुष्य रूप होकर आये और राजा जनक के प्रति कहने लगें कि हे राजन् ! सब कार्य छोड़कर अयोध्यापुरीको चलें ।।

दोहा—कहि कहि सुर सादर चले, बाहन रचे बनाय ।
जोरि युगल कर भूपमणि, अस्तुति करत बनाय ।।२६।।

ऐसा कहकर देवतागण अपनी-अपनी सवारियों को सजा अयोध्यापुरीको चले । तब राजाओं में मणिरूप राजा जनक ने हाथ जोड़ प्रभुकी स्तुति, बनाकर करने लगे ।। २६ ।।

छन्द—पद सुमिरि करुणाकन्द रघुकुलचन्द दशरथ नायकम् ।
श्रीसहित अनुज बसिष्ठ पद-रज बसहु मम उर लायकम् ।।
अंभोज नयन विशाल लाल कृपाल दशरथ नन्दनम् ।
शत कोटि मार उदार शोभा अनुज बल महि मंडनम् ।१०।

करुणाकन्द रघुकुल के सूर्य, दशरथ पुत्र, श्रीरामजी के चरणों का स्मरण कर जनकजी बोले कि—हे प्रभो ! सीता और गुरु वसिष्ठ सहित भरतादि छोटे भाइयों के साथ सदा मेरे हृदयमें वास करें । प्रभु के नेत्र नील कमल के समान विशाल हैं, जो दया के सागर पृथ्वी के अलंकार हैं उनको मैं नमस्कार करता हूँ ।। १० ।।

दोहा—पूछेउ बिबिध प्रकार नृप, सादर दूत हँकारि ।
गुरु गृह गवने मुदित मन, पाय पदारथ चारि ।।२७।।

फिर अयोध्या से गये हुए दूतों को जनक ने सादर बुलाकर अनेक प्रकार से समाचार पूछा । फिर प्रसन्नचित्त हो चारों पदार्थोंको पा गुरु के घर गये ।। २७ ।।

सकल कथा महिपाल सुनाई ❋ शतानन्द आनन्द अघाई
चलहु नृपति मख देखिय जाई ❋ साजहु जाय सकल कटकाई

राजा ने गुरु (शतानन्द) के पास जाकर सम्पूर्ण समाचार सुनाया । शतानन्द आनन्दमें मग्न हो जनक से बोले कि हे महाराज ! सब सेना को सजा अश्वमेध यज्ञ देखने चला जाय ।।

करि बिनती नृप मन्दिर आये ❋ सादर सेवक सकल बुलाये
सजहु सैन्य चतुरंग सहाई ❋ भवन गये सबहीं शिर नाई

राजा जनक गुरुकी स्तुति करके अपने मन्दिर आये और सेवकोंको आदर पूर्वक बुलाये ॥ फिर चतुरंगिणी सेनाको सजानेका हुक्म दिये और सभी लोग प्रणाम करके अपने-अपने घर गये ॥

पाती सहित राज गृह आए ❀ बाँचि नृपति पुनि सकल सुनाए
आनन्द सब रनिवास बुलाई ❀ देइ दान महिसुरन बुलाई

महाराज जनक वह पाती ले राजभवनमें गये और सबको वह खुशखबरी सुनाये। तब रनिवास की रानियों ने अति प्रसन्न हो ब्राह्मणों को दान दे हर्षित किया ॥

बहुत अशीश याचकन दीन्हें ❀ सादर बोलि युगल चर लीन्हें
बिलग बिलग पूछहिं सब बामा ❀ सुनहिं राम के पूरण कामा

याचकोंने बड़ा आशीर्वाद दिया फिर आदर पूर्वक उन दोनों दूतोंको रानियोंने बुलाया और अलग-अलग बुला रामके कार्य पूर्ण होनेका समाचार पूछा ॥

छन्द—शुभ काम पूरण रामके सुनि पुलकि बाजन बाजहीं।
पुर द्वार घर रखवार राख सेन भट सब साजहीं ॥
दस सहस सिन्धुर षष्टि रथ गज बाजि चर बहु को गने।
जगमगत जीन जड़ाव रवि मणि देखि कवि कैसे भने ॥११॥

तब रामचन्द्रजीके शुभ कार्यके पूर्ण होनेका समाचार सुनकर जनकपुर वासियोंने जाकर नगर में दुन्दुभी बजाई। तथा घर पर द्वारपाल रखकर अपनी सेनायें सज-धज के साथ तैयार करने लगे। दस हजार हाथी, साठ हजार रथ और अनेकों घोड़े तैयार हुए जिनके ऊपर सूर्य के समान चमकने वाली मणियाँ जगमगा रही थीं, ऐसी शोभा व सज-धज का वर्णन कवि कैसे कर सकता है ? ॥ ११ ॥

चढ़ि शूर प्रबल प्रवीण जे असि चलत सब सादर भये।
सुखपाल परम विशाल युग चढ़ि गुरुहिं लै आदर नये ॥
महि डोल धसकत कमठ अहि दल देखि अमित बिदेह को।
भट यूथ चरवर अमित कहि जग मूढ़ लेखा करत को ॥१२॥

तब उन हाथियों, रथों और घोड़ों पर बड़े-बड़े योद्धा जो कि सब विद्याओंमें निपुण थे। बड़े शान और सजावट के साथ चढ़कर अयोध्यापुरी को रवाना हुए और विशाल सुन्दर सुखासन पर गुरु शतानन्द और दूसरे पर राजा जनकजी जिस समय चढ़कर चले उस समय कच्छप और शेषनाग उनके दल के बोझ से धसकने लगे। राजा जनकजीके दलमें नये और अगणित अच्छे-अच्छे वीर समूहों एवं दूतोंकी संख्या इतनी थी कि उनका उल्लेख नहीं हो सकता ॥१२॥

दोहा—नृप आगमन बिचारि प्रभु, सादर आये लेन।
मिले परस्पर प्रीति अति, चले सुथल थल देन ॥२८॥

श्रीरामचन्द्रजी राजा जनकजीका आना सुनकर आदर पूर्वक उनकी अगवानी करनेके लिए उनके पास गये और प्रीति पूर्वक उनसे मिलाकर उनको अच्छे स्थान पर डेरा देने चले ॥२८॥

पुर बाहर सरयू शुचि तीरा ❀ बास दीन नृप कहँ रघुबीरा
सौंपि अनुज कहँ राम समाजू ❀ आये प्रभु जहँ नृपमणि राजू

अयोध्याके बाहर सरयू नदीके पवित्र तटपर रामचन्द्रजी राजा जनकके समाज का डेरा देकर और सारा समाज अपने प्रिय भ्राता को सौंपकर आप राजा जनकजीके पास आये ।।

मिलि पुनि नृपति निकट बैठारे ❀ गदगद ह्वै नृप बचन उचारे
बदन चूमि निरखे सब गाता ❀ आनँद उमँगि न हृदय समाता

तब श्रीरामचन्द्रजीको पास आया देखकर राजा जनक उनसे मिले और प्रेमपूर्वक अपने पास बिठाकर आनन्दसे गद्गद कण्ठ हो बोले और उनके मुखको चूमकर प्रेमपूर्वक सब शरीर देखे। उस समय राजा को ऐसा आनन्द हुआ कि वे प्रेम से फूले न समाये ।।

प्रभु बिनती करि सब सेवकाई ❀ सचिव भरत पुनि लीन्ह बुलाई
नृप सेवक सब भरत सँभारी ❀ सुनु खगपति जस कीन्ह खरारी

श्रीरामचन्द्रजी ने प्रेम पूर्वक सबकी विनती कर यथा योग्य सबकी सेवा की, फिर भरतजी ने अपने मन्त्रियों को बुलाकर आये हुए राजाओं की यथोचित सेवा सौंपी । कागभुशुण्डिजी बोले, हे गरुड़ ! इसके पश्चात् रामजी ने जैसा किया वैसा सुनो ।।

आय गुरुहिं सादर शिर नाई ❀ मन भावत बर आशिष पाई
पुनि प्रभु सकल देवगण बन्दे ❀ अभिमत आशिष पाय अनन्दे

फिर रामजी गुरुके पास आकर आदर पूर्वक शिर नवाये और मनवांछित वर तथा आशीर्वाद पाये । फिर सब देवताओंकी वन्दना किए और उनसे भी मनचाहा वरदान पाकर बहुत प्रसन्न हुए ।।

दोहा—दश सहस्र मुनिगण सहित, आये प्रभु मख धाम ।
बोले बचन बिनीत गुरु, मन्त्र सुनहु मम राम ।।२९।।

फिर दस हजार मुनियोंको साथ ले रामचन्द्रजी गुरुसे जाकर बोले कि मैं यज्ञ करना चाहता हूँ, तब नम्र वचनों से गुरुजी ने कहा—हे राम ! पहले एक मेरा मन्त्र सुनो ।। २९ ।।

धर्म सकल जग बद बखाने ❀ सन्त पुराण लोक सब जाने
बिनु तिय अनफल होय खरारी ❀ अब चाहिय मिथिलेश कुमारी

वेद और पुराणों में जो धर्म कहे गये हैं उनको सन्त पुराण और सारा संसार जानता है कि बिना स्त्रीके यज्ञ पूर्ण नहीं हो सकता इसलिए अब सीताका यहाँ होना अति आवश्यक है ।।

सुनि मुनि बचन मौन प्रभु गहेऊ ❀ सत्य असत्य न एकौ कहेऊ
मम प्रण विरद जानि मुनिराया ❀ रहै सुकृत यह करहु जु दाया

गुरु वशिष्ठ की वाणी सुनकर रामचन्द्रजी सर्वथा ही मौन हो गये और झूठ सत्य कुछ न कह सके । फिर हाथ जोडकर विनती करते हुए बोले कि हे महाराज ! मेरे प्रण और विरद को बिचार आप मेरे ऊपर ऐसी दया कीजिये जिससे मेरा उद्धार हो ।।

दोउ गुरु मिलि नारद सनकादी ❀ बचन कहे सुनु परम अनादी
कनक जटित मणि सुन्दर बाला ❀ रचि सिय रूप सुशील विशाला

रामजी की ऐसी प्रार्थना को सुन वशिष्ठ, विश्वामित्र और नारद, सनकादि सब लोगो ने मिलकर रामजी से कहा, हे अनादि ! हम परम पवित्र वचन कहते हैं उसे सुनो, तुम एक सीता के समान रूपवती सुशील मणि-जटित सोने की मूर्ति बनवाओ, तब मुनियों की आज्ञा पाकर रामजी ने वैसा ही किया ॥

अंग अंग सब भूषण साज ❋ तासु रूप लखि रतिपति लाज
सहसा लखि न सकहिं नर नारी ❋ सियहिं देखि सब अचरज भारी

सीताकी मूर्ति बनाकर उनके अंग-प्रतिअंग सुसज्जित कराये जिसका रूप देखकर कामदेव भी लज्जित हो गया, सभी स्त्री-पुरुष उसे एकाएक न पहचान सकते थे ॥

दोहा—तेहि अवसर शोभा अधिक, को कवि बरणै पार ।
जगदाधार कृपालु प्रभु, कीन्हे चरित अपार ॥३०॥

उस समयकी शोभा अति विचित्र थी कि कोई कवि उसका ठीक-ठीक वर्णन नहीं कर सकता । उस समय संसार के आधार कृपालु रामचन्द्रजी ने ऐसे अनेकों चरित्र किये ॥३०॥

मणिन जटित सुन्दर मृगछाला ❋ सीय सहित आसीन कृपाला
सुर नर मुनि सबही मन माहीं ❋ करि प्रणाम मन अति हरषाहीं

सुन्दर मणियों से जड़ी मृगछालापर सीता सहित कृपालु श्रीरामचन्द्रजी विराजमान है । उन्हें देखकर देवता, मुनि, मनुष्य मन ही मन प्रणाम कर मनमें अत्यन्त आनन्दित होते है ॥

भीर अपार लखी गुरु ज्ञानी ❋ सिद्धि बुलाय सकल सनमानी
कहा जाय आलय सब करहू ❋ जस कछु चाहिय सोइ अनुसरहू

तब गुरुवर वसिष्ठजी ने अपार भीड़ देखकर सब सिद्धियों को आदर पूर्वक बुला उनका सत्कार कर कहा कि तुम सब जाकर यथा योग्य भवनों का निर्माण कर सबकी सेवा करो और जैसी आवश्यकता हो वैसा करो ॥

सुनि रजाय रघुपति रुख पाई ❋ रचेउ कोटि गृह बिधिहिं लजाई
सुर सुरभी सुरतरु सुखखानी ❋ शारद शेष न सकहिं बखानी

वे सिद्धियाँ मुनिकी आज्ञा पाकर रामजीका रुख देखकर करोड़ो सुन्दर गृह बनाये जिसे देखकर ब्रह्माजी भी लज्जित हो गये । वहाँ पर सुख की राशि कामधेनु और कल्पवृक्ष उपस्थित थे, वहाँ के वैभव का बयान शेष शारदा भी नहीं कर सकती ॥

पर गृह बाहर गली अँटारी ❋ भरि सुगन्ध रचि सकल सँवारी
रहे तहाँ दिशिपाल अनेका ❋ जे परमारथ निपुण विवेका

अयोध्यापुरी के बाहर-भीतर गली और अटारियाँ सब सुगन्ध से भरी हुई थी और परोपकार में निपुण तथा ज्ञानी अनेकों दिग्पाल वहाँ संरक्षक थे ॥

छन्द—जे निपुण परम बिबेकि तिन कहँ भरत लखि राखे तहीं ।
निज भाग्य प्रबल सराहि निदरहिं धनदकी पदवी कहीं ॥

आये त्रिलोकी नाग खग सुर असुर जे बिधि ने रचे।
सन्मानि सकल सनेह सादर राम सन कोउ ना बचे ॥१३॥

भरतजी परम विवेकी और निपुण दिग्पालों को वहाँ रख दिये। वे लोग वहाँ का आनन्ददायी उत्सव देखकर कुबेर की सम्पदा की निन्दा करते और अपने भाग्य की सराहना करते थे। ब्रह्माजी ने त्रिलोकी में नाग, पक्षी, देवता, राक्षस आदि जितने भी रचे हैं, वे सभी उस महोत्सव में आये थे और रामजी उन सबका आदर-सत्कार बड़े प्रेम-भावसे किये ऐसा कोई न छूटा जिसका सत्कार रामजी ने न किया हो ॥ १३ ॥

दोहा—बाण सहस वर वीर पुग, सुन्दर परम प्रवीन।
जानहिं श्रुतिकर मत सकल, रहिं मख संग अधीन ॥३१॥

तब दस हजार सुन्दर व साहसी परम प्रवीण नीति को जाननेवाले योद्धाओं के अधीन यज्ञ होने लगा ॥ ३१ ॥

माघ मास ऋतु शिशिर सुहाई ❀ मख मंडप बैठे रघुराई
तब बोले गुरु बचन सुहाए ❀ आनहु बाजि जो बेद जनाए

शिशिर ऋतु, माघ महीने, शुक्लपक्षमें रामजी यज्ञ-मण्डप में आसीन हुए। तबसे गुरु वशिष्ठजीने श्री रामचन्द्रजी से कहा कि श्यामकर्ण घोड़ा लाओ जिसका विधान यज्ञ में है ॥

लक्ष्मण सुनि गुरु बचन अनन्दे ❀ बार बार पद पंकज बन्दे
हयशाला सादर चलि आये ❀ विविध विभूषण तेहि पहिराये

गुरुजीकी बात सुनकर लक्ष्मणजी बहुत आनन्दित हुए और बार-बार गुरु के चरणों की वन्दना किए। फिर प्रसन्नता पूर्वक हयशाला में जाकर यज्ञ करने वाला घोड़ा लेकर उसे भाँति-भाँति के भूषणों से सुसज्जित कर गुरुजी के पास ले आये ॥

श्वेत बरण सुन्दर श्रुति कारे ❀ हरि हय चितव मनोज सँवार
जीन जराउ न जात बखाना ❀ चढ़ि रथ आवत रवि जग जाना

वह सजा हुआ श्वेत वर्ण और सुन्दर कानवाला घोड़ा उस समय ऐसा मालूम पड़ता था, मानों कामदेव ने अपने हाथों से सँवारकर बनाया है। उसकी जड़ाऊ जीन बखानी नहीं जाती मालूम पड़ता था मानों सूर्य-भगवान् रथ पर चढ़कर आ रहे हैं॥

माथे मोर पक्ष मणि लागे ❀ सो नभ नखत देखि अनुरागे
सेवक चारु पाटमय डोरी ❀ दामिनि दमकि निकट अति थोरी

उस घोड़ेके शिरपर मोरपुच्छ का मुकुट और लगी हुई मणियाँ ऐसी जगमगा रही थीं मानों स्वच्छ आकाश में तारे चमकते हैं। अच्छे-अच्छे साज हैं और रेशमी बागडोरें ऐसी चमक रही हैं कि जिसे देखकर बिजली की चमक भी मात हो जाती थी ॥

दोहा—षष्टि सहस सँग वीर वर, रामानुज रणधीर।
श्यामकर्ण लायो सघर, जहाँ राम रघुबीर ॥३२॥

साठ हजार योद्धाओंके साथ युद्धमें वीर लक्ष्मणजी उस श्यामवर्ण घोड़े को लिये हुए रामचन्द्रजीके पास आए ॥३२॥

पूजेउ हय प्रभु जग जय हेतू ❋ जस कछु कहा गाधिकुल केतू
दीन्ह बिबिध बिधि दान अनेका ❋ लिखे पत्र सोइ करि अभिषेका

विश्वामित्रजीके कहनेके अनुसार श्रीरामचन्द्रजीने उस विश्वविजय करनेवाले घोड़ेका पूजन किया और अनेकों प्रकारसे ब्राह्मणोंको दान दे अभिषेक कर सुवर्ण-पत्र लिखा ॥

एक बीर कोशलपुर माहीं ❋ अरिदल दलन सुरेश सकाहीं
जेहि बल होय गहै सोइ बाजी ❋ देहु दण्ड बन जाहुकि भाजी

उस पत्र पर रामजीने लिखा कि अयोध्यामें एक वीर पुरुष हैं जिन्होंने शत्रुओंकी सेना का संहार किया है, जिनको देवता भी डरते हैं, उन्हीका यह घोड़ा छोड़ा है, इसलिए जिसको सामर्थ्य हो वह इस घोड़े को पकड़े नहीं तो राजदण्ड देवे या भागकर बनमें जावे ॥

लिखि बाँधेउ हय शीश सँवारी ❋ तहि सुनि पुनि आये मुनिचारी
भार्गव आदि सकल मुनि संगा ❋ आये जहँ कुल कमल पतंगा

ऐसा पत्र लिखकर घोड़ेके शरीर पर अच्छी तरह सँवारकर बाँध दिए, यह सुनकर भार्गव आदि मुनि बहुतसे मुनियोंको साथमें लेकर सूर्यकुलकमलके पतंग श्रीरामजीके पास आये ॥

कथा सकल लवणासुर केरी ❋ मुनिन त्रास दीने जनु घेरी
सुनि ऋषि बचन नयन जल छाये ❋ बिहँसि राम निज त्रोण मँगाये

सभी लोग आकर लवणासुरको सारी कथा कह सुनाये जिसने मुनियोंको बहुत त्रास दिया था, मुनियोंकी बात सुन रामजीके नेत्र अश्रुपूर्ण हो गए और अपना तरकस मँगाये ॥

दोहा—दीन्हीं रिपुसूदनहिं सोइ, बाण अमोघ कराल ।
मन्त्र मोर पढ़ि ताहि हति, जीतहु सकल भुवाल ॥३३॥

उस तरकससे अमोघ बाण निकालकर रामजीने शत्रुघ्न को दिया और कहा कि मेरा मन्त्र पढ़ लवणासुरको मारकर फिर समस्त राजाओं पर विजय प्राप्त करो ॥३३॥

बहुरि बिभीषण राम बुलाये ❋ सादर आये माथ तिन नाये
लवणासुर के चरित अपारा ❋ पूछे दिनमणि वंश उदारा

फिर रामजीने विभीषण को बुलाया, वे आकर रामचन्द्रजीको शिर नवाये ॥ इसके बाद रामजीने उनसे लवणासुरके चरित्र पूछे ॥

कर पुनि जोरि निशाचर नाहा ❋ सत्य कहौं प्रभु सुन अवगाहा
भगिनि विमात्र मातु सोइ मोरी ❋ कुम्भ निशा तेहि नाम बहोरी

श्रीरामचन्द्रजीके पूछने पर विभीषण हाथ जोड़कर बोले कि, हे प्रभो ! मैं सत्य कहता हूँ उसे सुनिये—एक कुम्भनिशा नाम की मेरी बहन सौतेली मातासे उत्पन्न हुई थी ॥

मधु दानव कहँ रावण दीना ❋ बहु बिनती करि तेहि तब लीना
तनय तासु लवणासुर भयऊ ❋ शिव सेवा सादर तिन कियऊ

उस मेरी बहन को रावणने मधु नामक दैत्यको दे दिया, उसने बड़ी विनतीके साथ मेरी बहनका पाणिग्रहण किया था। उसी मेरी बहनके गर्भसे लवणासुरका जन्म हुआ और उसने महादेवजी को कठिन तपस्या की ॥

अगम तासु तप शंकर जाना ❋ दीन शूल सुनु कृपानिधाना
जेहिकर रहे अस्त्र मम भारी ❋ चौदह भुवन जीत कर डारी

उस दैत्यकी अगम और कठिन तपस्या देख महादेवजी बहुत प्रसन्न हुए और उसे एक त्रिशूल दिए और कहे कि जिसके हाथमें यह शस्त्र रहेगा वह चौदहों भुवन जीतेगा ॥

दोहा–तहि बल प्रभु सो नहिं गनै, अमर दनुज नर नाग।
जीति सकल वश कीन्हेसि, हठ करि पीछे लाग ॥३४॥

हे रामजी ! उसीके बलसे वह देवता, मनुष्य, राक्षस किसीको कुछ नहीं जानता और सबको जीतकर अपने वशमें कर लिया है और हठ पूर्वक सबके पीछे पड़ा हुआ है ॥३४॥

पूरे शंख चला दल साजी ❋ अमित अपार दुन्दुभी बाजी
पुर बाहर सब आनि सवारी ❋ तनय युगल लखि परम सुखारी

जब शत्रुघ्नजी शंख बजा और दल सजाकर चले तो अनेकों बाजे बजे तथा दुन्दुभी बजने लगी। अयोध्यासे बाहर आकर सब सवारियाँ खड़ी हुई और शत्रुघ्नजीके दोनों पुत्र भी आ गये जिनको देखकर शत्रुघ्नजी बहुत खुश हुए ॥

दोहा–रवितनया पद बन्दि करि, सादर पूजि पुरारि।
चले शत्रुसूदन सुमिरि, सीता राम खरारि ॥३५॥

शत्रुघ्नजीने यमुनाजीके कमलवत् चरणोंकी वन्दनाकर शंकर भगवान्की पूजा की और खरके शत्रु रामचन्द्र और सीताका ध्यानकर चल पड़े ॥ ३५ ॥

द्वादश दिन बीते मगमाहीं ❋ पहुँचे जाय यमुन तट पाहीं
दिन प्रति दान देहिं बहु भाँती ❋ प्रभु पद पूजहिं दिन अरु राती

चलके-चलते मार्गमें १२ दिन बीत गए, तेरहवें दिन शत्रुघ्न यमुनाके किनारे पहुँच गये। मार्गमें अनेकों प्रकारसे दान देते और रामचन्द्रके कमलवत् चरणों की पूजा करते चले जाते थे ॥

चमू चपल अति सुभट गुहारी ❋ घेरी नगर वीर बरिआरी
विपुल निशान बजे तेहि काला ❋ सुनि निशिचरपति गर्व विशाला

अत्यन्त साहसी चञ्चल और पराक्रमी शत्रुघ्नजीकी सेनाने लवणासुरके नगर को घेर लिया ॥ उस समय सेनामें अनेकों तरहके डंके बजने लगे जिसे सुन लवणासुर गर्वमें आ गया ॥

मारहु खाहु धरहु नृप बाँधहु ❋ जेहि जय होय यत्न सो साधहु
अस कहि सन्मुख फौज चलाई ❋ कज्जल गिरि जनु आँधी आई

लवणासुरने आते ही आज्ञा दिया कि इन सबको पकड़कर मारो और खा जाओ। राजाको पकड़कर बांध रखो और जिस तरह विजय हो वैसी ही युक्ति करो ॥ ऐसा कहकर शत्रुघ्नजीके सन्मुख अपनी फौज चलाया, वह ऐसी मालूम पड़ती थी, मानों कज्जल गिरिसे उमड़ती हुई आंधी आ रही है ॥ ५-६ ॥

मारू शब्द सुनत भट गार्जहिं ❁ बिपुल बाजने दुहुँ दिशि बाजहिं
निज प्रभु जय कहि जोरी जानी ❁ हर्षि भिर भट मन हठ ठानी

मारू बाजेका शब्द सुनकर सुभट गर्जना करने लगे, साथ ही दोनों ओरसे बहुतसे बाजे बजने लगे ॥ अपने-अपने प्रभुओंकी जय बोलकर और अपनी-अपनी जोड़ी समझकर खुशी हो मनमें हठ ठानकर एक दूसरेसे भिड़ गये ॥

छन्द—हठ ठानि प्रबल प्रवीण जे भट भिरे अति रिपु प्रबल से।
इक मल्ल युद्ध कराहिं एकहिं इक हनत इक कर फँसे ॥
शर शक्ति तोमर शूल परशु कृपाण शूल चलावहीं।
कर चरण शिर हति तीक्ष्ण धारण भूमि जान न पावहीं ।१३।

जो चतुर और बहादुर सिपाही थे वे दृढ़ता पूर्वक बड़े-बड़े प्रबल योद्धाओंसे भिड़ते, वे आपसमें मल्लयुद्ध करते और एक-एकको हाथोंसे पकड़कर मारने लगे। योद्धा लोग बाण, शक्ति, भाला, त्रिशूल और तलवार चलाते हैं। हथियारोंसे कटे हुए हाथ, पांव और शिरको गिद्ध आदिक पक्षी ऊपर आसमान को ले जाते हैं और वह जमीन पर नहीं आने पाते ॥ १३ ॥

दोहा—बिचलत अनी बिलोकि निज, लवणासुर बरिबंड।
संग तनय मातंग भट, दूसर केतु प्रचंड ॥३६॥

तब अपनी सेनाको तितर-बितर होते देखकर बलवान् लवणासुर अपने मातङ्ग और केतु नामके दोनों पुत्रोंको साथ ले आगे बढ़ा ॥ ३६ ॥

प्रभु सुत ज्येष्ठ सुबाहु विशाला ❁ भिरा मतंग होय जनु काला
यूपकेतु अरु केतु प्रचारी ❁ कौतुक लरहिं प्रचारि प्रचारी

वह मातङ्ग नामक कालवत् योद्धा शत्रुघ्नजीके जेष्ठ पुत्र सुबाहुसे मल्लयुद्ध करने लगा। इधर केतु और यूपकेतु एक दूसरेसे लड़ने लगे। ये खिलवाड़में ही लड़ते और एक दूसरेसे हार नहीं मानते थे॥

लवणासुर रिपुहन बल भारी ❁ कौतुक लरहिं प्रचारि प्रचारी
अनी समूह जानि निज जोरी ❁ अस्त्र शस्त्र गहि भिरे बहोरी

बड़े बलवान् लवणासुर और शत्रुघ्नजी खिलवाड़कर जैसा एक दूसरेको ललकार-ललकार कर लड़ते हैं॥ वैसे ही सेनाके योद्धा भी अपने जोड़ोंको जानकर अस्त्र-शस्त्र ले संग्राम करते हैं॥

यूपकेतु करि कोप अपारा ❁ हति रिपु केतु खंड महि डारा
इहाँ सुबाहु मतङ्गहि मारी ❁ करपद काटि अवनि महँ डारी

तब संग्राममें क्रोधित हो यूपकेतुने केतुको मार डाला, इधर सुबाहुने मतङ्गको मार उसके हाथ-पांव काट पृथ्वीपर गिरा दिये ॥

छन्द—दोउ धीर वीर प्रताप निशिचर सैन्य दुहुँ दिशि मुरि चली ।
शिर बाहु चरण उड़ात नभ पथ योगिनी आनँद भली ।।
कहुँ रुधिर मज्जन करहिं सादर गुहहिं नर शिर मालिका ।
आनन्द भामिनि मुदित गावहिं गात खचर नायिका ।।१४।।

लवणासुर और शत्रुघ्नजीमें ऐसा घोर संग्राम हुआ कि दोनों तरफ की सेनायें इधर-उधर भाग गईं । शिर, बाहु और चरण आकाशमें उड़ने लगे । कहीं योगिनियाँ आनन्द मना रही थीं, कहा रुधिरकी नदियोंमें स्नान कर रही थीं और कहीं मनुष्योंके शिरकी मालायें बनाती हुई पिशाचिनियाँ आनन्दित हो गीत गाकर नाचती थी ।। १४ ।।

ध्वनि बढ़हि शंख मृदङ्ग की, सुनि शूर हर्ष बढ़ावहीं ।
गति लेति निरतति प्रततिय, शिरमाल हरहि चढ़ावहीं ।।
कहुं करति पान प्रमान नरकहुं, भरति शोणित शालिनी ।
सब मद मांस अहार कर, मन मुदित डोलहि डाकिनी ।।१५।।

शंख, मृदंग आदि बाजोंको सुनकर शूरवीर अत्यन्त हर्षित होवें और उत्साहमें आकर लड़ते । कहीं पिशाचिनियाँ लोहूसे खप्पर भरकर पान करतीं और मस्त होकर नाचतीं और महादेवजीकी मुण्डमाल चढ़ाता ।। कहीं शाकिनियाँ लोहू पान करती हैं और कहीं डाकिनी मेदके मांसका आहार कर मदमस्त हो डोलती हैं ।। १५ ।।

दोहा—मारे रथ वर वीर बहु, गिरे समर रणधीर ।
छिन महँ निश्चर बध निरखि, अन्तर ह्वै बलबीर ।।३७।।

शत्रुओंका नाश करनेवाले शत्रुघ्नजी क्षण भरमें बड़े-बड़े शूर-वीरोंको संग्राममें मार गिराये। इस तरह क्षणमात्रमें राक्षसोंका नाश देखकर लवणासुर अन्तर्ध्यान हो गया ।।३७।।

करि छल प्रगटेसि विविध बरूथा ❀ अस्त्र शस्त्र गहि सब सुर यूथा
धाये बिधि हरि शिव सनकादी ❀ जे मुनि अपर कहे श्रुतिवादी

उस राक्षसने माया करके अस्त्र-शस्त्र सहित देवताओंको रण-भूमिमें उपस्थित किया और शत्रुघ्नजी क्या देखते हैं कि ब्रह्मा, शिव, सनकादि आदि बड़े-बड़े देवता महात्मा जिनका कि वेदोंमें वर्णन है, वे मेरे ऊपर चढ़े आ रहे हैं ।।

शक्ति शूल असि चर्म सुहाई ❀ गदा परशु धनु बाण चलाई
धरु धरु मारु मारु सुर करहीं ❀ लरत न भट विस्मित ह्वै रहहीं

वे मायावी देवता शत्रुघ्नजीपर शक्ति, त्रिशूल, तलवार, गदा, परशु और बाण चलाते हैं ।। सब देवता धरो-धरो, मारो-मारोका शब्द करते हैं, यह आश्चर्य देखकर सब वीर अचम्भेमें पड़कर युद्ध करना बन्द कर दिये ।।

निशिचर प्रबल भये रघुनाथा ❀ केतिक बीर मलहिं निज हाथा
सैन्य विकल लखि नारद आये ❀ समाचार सब कहि समुझाये

उस समय राक्षसों की शक्ति प्रबल हो गई और शत्रुघ्नजी के वीर योद्धा हाथ मलने लगे, इसलिये कि देवता उनके पूज्य थे। तब उस निशिचर को मायासे सेना को व्याकुल देख-कर नारदजी वहाँ आए और कह कर समझाये कि, ये देवता नही राक्षस हैं, इन्हें मारो ॥

दोहा—मंत्र प्रेरि चले कोटि शर, जहँ तहँ रहे नभ छाय।
मनहुँ बलाहक प्रबल बहु, मारुत देखि बिलाप ॥३८॥

तब शत्रुघ्नजीने जो मन्त्र पढ़ कर बाण छोड़ा तो उसमेसे करोड़ो बाण इस तरह निकले कि सारा आकाश छा गया और उन बाणोसे मायावी देवता ऐसे नाश हुए जैसे बादल के समूह हवाके झोकेसे नष्ट हो जाते हैं ॥३८॥

सुर समाज कतहूँ नहिं देखा ❋ चलेउ सुबाहु काल जनु वेषा
खल सँभारि गहि शूल प्रचारी ❋ अस कहि गदा क्रोध उर मारी

सुबाहुने जब देखा कि कोई देवता संग्राममें नहीं हैं, तो वे अत्यन्त क्रोधित हो काल की तरह कराल होकर लवणासुरके पास जाकर बोले कि ॥ ऐ दुष्ट! तू अपना शूल संभाल, ऐसा कह सुबाहुने क्रोध पूर्वक एक गदा उसको छाती पर मारी ॥

सहि न सका सो तेज अपारा ❋ मूर्छित धरणि परा बिकरारा
निजपति बिकल देखि भट भारी ❋ धाये भट कर अस्त्र सँवारी

उससे वह अपार तेज न सहा गया और मूर्छित होकर जमीन पर गिर पड़ा ॥ तब अपने स्वामी को मूर्छित देख योद्धा अस्त्र लेकर दौड़े ॥

कैटभ नाम बीर बलवाना ❋ मूर्छित लवणासुर मन जाना
तीन सहस्र लिये रण गाढ़े ❋ आनि सुबाहु सामुहें ठाढ़े

तब लवणासुर को मूर्छित जान कैटभ नामक वीर बलवान् योद्धा तीन हजार रण-बाँकुरों को लेकर सुबाहुके सामने आकर खड़ा हो गया ॥

सो०—मारेसि हृदय सँभारि, गिरे जपत करुणायतन।
मूर्छित गिरा पुकारि, रामचन्द्र रघुकुल तिलक ॥ २ ॥

कैटभ का चलाया हुआ शूल जाकर यूपकेतुके हृदयमें लगा ॥ तब वे करुणायतन जपते गिर पड़े। और मूर्छित होते समय रघुकुल मे श्रेष्ठ रामचन्द्रजी को पुकारा ॥२॥

मूर्छित बन्धु सुबाहु बिलोकी ❋ भइ रिस अमित रहे नहिं रोकी
कठिन बाण करि क्रोध अपारा ❋ छाँड़े बाण सहस इक बारा

अपने भाई यूप केतु को मूर्छित देखकर सुबाहु अत्यन्त क्रोधित हुए और अपने को रोक न सके ॥ तब अपार क्रोध करके उन्होंने भयंकर बाणो को लेकर एक हजार बाण एक साथ छोड़े ॥

खैंचि शूल तन बाहर कीन्हा ❋ राम नाम बर औषधि दीन्हा
उठि शुचि अंग अनुज के संगा ❋ लीन्ह धनुष असि बिहँसि निषंगा

यूप केतुने खैंच कर सुबाहुके शरीरसे इस शूल को निकाला और उनको रामके नाम

रूप की औषधि दिया जिससे वे कष्ट रहित हो उठ बैठे, और प्रसन्न चित्त हो हाथमें धनुषबाण और तलवार लेकर छोटे भाईके साथ रणभूमिमें उपस्थित हुए ।।

आय समर महँ सुभट प्रचारे ❀ बाणन अमित देव-अरि मारे
मूर्छा गत कैंटभ बलवाना ❀ मधु सुत दीख बहुत पछताना

वे दोनों वीर संग्राम-भूमिमें अनेक वीरों को ललकार कर मार डाले ।। इस तरह सेना नष्ट-भ्रष्ट होते देखकर लवणासुर पश्चात्ताप करने लगा ।।

लेकर गदा अनी बिचलाई ❀ घेरि रहे निश्चर समुदाई
भंजसि रथ तिहिं आनेउ बाना ❀ ताहि चढ़ाय उपाय बिधाना

तब लवणासुर हाथमें गदा और अपनी सेना को साथ ले शत्रुघ्न की सेना को घेर लिया और एक गदा चलाया जिससे सुबाहु का रथ टूट गया, तब सुबाहु बाण साध किसी तरह रथ को डेरे तक लाये ।।

दोहा—करि उपाय रथ राखि तहिं, पठय भवन रणधीर ।
आय समर गर्जत भयउ, संग महा बलबीर ।।३९।।

उपाय करते हुए सुबाहु किसी तरह रथ को घर तक लाए फिर अपने महाबली योद्धाओं को साथ लिए रणभूमिमें गरजने लगे ।। ३९ ।।

भागा कैंटभ यम सम आवा ❀ अस सुबाहु कहि बचन सुनावा
रावण रिपु लघु भ्राता जानू ❀ तनय तासु बल शील निधानू

वह कैंटभ भागता हुआ सुबाहु के पास आकर बोला कि मैं जानता हूँ कि तू रावणके शत्रु राम के छोटे भाई शत्रुघ्न का पुत्र है और अत्यन्त बली व शील का निधान है ।।

हम सुर कैंटभ सुर बहु मारे ❀ बालक नृपति निरखि हिय हारे
रिपु लखि सुनिकर हृदयकलापू ❀ पठवा मोहिं जानि जिय आपू
रवितनया महँ सैनहिं डारौं ❀ तनय समेत अनुज रिपु मारौं

कैंटभ सुबाहुसे कहता है कि हमने बहुत वीर देवताओं को मारा है, पर तुमको बालक जान कर छोड़ दिया। लेकिन अब मेरे स्वामीने तुझे अपना दुश्मन समझ कर तेरी बुरी बातों को सुनकर मुझे भेजा है। इसलिए अब तू निश्चय कर ले कि तेरी सेना को मार कर यमुनामें डूबा दूंगा और तुम्हारे साथ शत्रुघ्न को भी मार डालूंगा ।।

छन्द—रिपु अनुज मारौं सैन्य यमनहिं डारि नर शिर नावहूँ ।
तजि सोच सैन्य सँभारि चलि भट बगि जो अरि पावहूँ ।।
उत मत्त गर्व विशाल निशिचर आय रण गर्जत भये ।
इत यूपकेतु सुबाहु शर धनु हाथ लै आतुर गये ।।१६।।

कैंटभ सुबाहुसे कह रहा है कि मैं अभी शत्रुघ्न को मार कर सारी सेना को यमुनामें डुबाकर और अपनी सेना को सँभाल सोच छोड़ प्रसन्नता पूर्वक अपने स्वामीके पास जाऊँगा ।।

मेरे सामने मनुष्यों की कुछ गिनती नही है। ऐसा कह कर मदमस्त राक्षस संग्राम भूमि में आकर गर्जने लगा। इधर सुबाहु और यूपकेतु भी अपने हथियार ले लड़ाई के लिए तैयार हो गये ॥ १६ ॥

छन्द—भट भिरे निज निज जयति कहि, निज जान जोरी समर की।
शिर कटत अरु कर चरण योगिनि, खाति बालक बालिकी ॥
हठि गीध जम्बुक काक शोणित, पियहिं अति सख पावहीं।
बहु दान देव मनाय मन महँ, बिहँसि मंगल गावहीं ॥१७॥

योद्धा लोग अपने-अपने स्वामी की जय-जय कह और लड़ाईमें अपनी जोड़ी जान कर भिड़ते हैं, जहां सिर, पांव आदि कट-कट कर गिरते हैं उन्हें योगिनियों के बालक और बालिकायें खाती हैं। हठ पूर्वक गृद्ध, स्यार, कौवे खून पीते और प्रसन्न होते तथा सुभट लोग अनेकों तरह के दान दे मन में देवताओं को मना कर प्रसन्नता पूर्वक मंगल गाते और युद्ध करते हैं ॥ १७॥

दोहा—साजि बाजि गज बाहन, गह गह हने निशान।
आयउ समर सकोप तब, लवणासुर बलवान ॥४०॥

इस प्रकार विचार कर हाथी, घोड़े और रथों को सजा कर गह-गह डंका बजा कर उस वक्त क्रोध पूर्वक बलवान लवणासुर संग्राम में आया ॥ ४० ॥

शिवहिं सुमिरि लै शूल विशाला ❁ रिपु दल परेउ मनहुँ यम काला
छिनक माँझ मारे बहु योधा ❁ चलेउ सकोप अनज करि क्रोधा

वह राक्षस शङ्कर का स्मरण कर अपना विशाल त्रिशूल ले सेना में टूट पड़ा और काल की तरह सेना का संहार करने लगा। क्षणमात्रमें हीउसनेबहुतसेवीरोंको मार डाला, तब शत्रुघ्न क्रोध करके चले॥

आवत शूल हनेउ प्रभु छाती ❁ घूमित गिरे धरणि रिपु घाती
मूर्छित देखि खड्ग लै धावा ❁ निरखि सुबाहु क्रोध उर छावा

शत्रुघ्नजी को आते ही उसने उनकी छाती पर एक ऐसा शूल मारा जिससे शत्रुघ्नजी मूर्छित हो घूम कर जमीन पर गिर पड़े। उनको मूर्छित देखकर लवणासुर तलवार ले कर दौड़ा, तब यह देख कर सुबाहु क्रोध कर लवणासुर पर चले॥

प्रबल गदा रथ सारथि भंजेउ ❁ बिहँसि महाबल रिपुदल गंजेउ
रथ विहीन व्याकुल रण माहीं ❁ मूर्छित परेउ अवनि सुधि नाहीं

सुबाहु ने अपनी विशाल गदा के प्रहार से लवणासुर के रथ को सारथी सहित चकनाचूर कर दिया और बिहँसते हुए शत्रु की सेना को मार डाला॥ अब लवणासुर रथहीन हो मूर्छा खा जमीन पर गिर पड़ा और स्मृति न रही॥

पुनि उठि बैठ सकोप सुरारी ❁ अस्त्र सँभारि क्रोध करि भारी
विस्मित विकल देव सब जाने ❁ राम बाण अति सुन्दर ताने

फिर वह राक्षस उठ बैठा और बड़े क्रोध पूर्वक अपना अस्त्र सँभाला॥ तब देवताओंको विस्मित और विकल देखकर शत्रुघ्नजी श्रीरामचन्द्रजीके दिए हुए बाणको आदर पूर्वक सँभाले॥

दोहा—सुमिरि अवधपति चरण युग, छाँड़ेउ तीव्र नराच ।
परेउ अवनि तन भिन्न हइ, व्याकुल बिकट पिशाच ॥४१॥

शत्रुघ्नजी रामजी के चरणों को स्मरण करके एक तीव्र बाण चलाये। जिससे वह राक्षस घायल हो शरीर से छिन्न-भिन्न होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा ॥ ४१ ॥

तास मरण सुनि सब सुर यूथा ❀ चढ़ि विमान नभ आय बरूथा
बाजहिं दुन्दुभि बर्षहिं फूला ❀ आज नाथ बीते सब शूला

लवणासुर का मरना सुन कर सब देवताओं का समूह विमानों में चढ़-चढ़ आकाश में दुन्दुभी बजा और फूल वर्षा कर कहने लगा, हे नाथ ! आज सब कष्ट मिट गये ॥

करि किलकार गर्जि अति घोरी ❀ शिला एक मेली बहु जोरी
शर हति शैल सुबाहु प्रचारी ❀ काटी दुष्ट भुजा महि डारी

तब कैटभ किलकारता और गर्जता हुआ एक बहुत बड़ी चट्टान ला कर छोड़ा। सुबाहु ने उसको बाणों से छिन्न-भिन्न कर दिया और ललकार कर उस दुष्ट की एक भुजा काट गिराये ॥

काटि शीश तेहि बाण गिरावा ❀ सुनासीर आतुर चलि आवा
जोरि युगल कर अति अनुरागे ❀ बोलेउ बचन प्रेम रस पागे

उसी बाण से उसका सिर कट गया और वह पृथ्वी पर गिर पड़ा, तब वहाँ पर इन्द्र आये और दोनों हाथ जोड कर नम्र वचनो से स्तुति करते हुए बोले ॥

हमहिं सहित सुर कीन्ह सनाथा ❀ अस्तुति योग जीव नहिं नाथा
अस्तुति विनय शक्र बहु कीन्हीं ❀ बार-बार बहु आशिष दीन्हीं

हे नाथ ! आपने आज देवताओं के साथ हमें सनाथ कर दिया। हे नाथ ! मैं पापी जीव आपकी स्तुति करने योग्य नहीं हूँ। इस तरह इन्द्र ने उन्हें बहुत आशीर्वाद दिये ॥

दोहा—देवन सहित सुदेव गुरु, आये जहँ मख धाम ।
समाचार सादर सकल, कहे सबन के नाम ॥४२॥

फिर गुरु बृहस्पति देवताओं को साथ लेकर यज्ञ-भूमि में आये और प्रभु के पास जा सबका नाम सहित वहाँ के समाचार कहे ॥ ४२ ॥

तहँ युग नगर रच अति रूरे ❀ राखे तनय युगल बल पूरे
मथुरा नाम जगत यश जाना ❀ दूसर विदित सो वेद बखाना

इस स्थान पर शत्रुघ्नजी दो सुन्दर नगर बनवाये जिसमें अपने दोनों पुत्रों को रख छोड़े उनमें एक नगर का नाम मथुरा है दूसरा विदित नामका नगर जिसका वेद बखान करता है ॥

ज्येष्ठ तनय बल बुद्धि बिसाला ❀ नाम सुबाहु विदित महिपाला
राखेउ यमुनातट बल पूरी ❀ विदित नगर पश्चिम दिशि दूरी

तब अपने ज्येष्ठ पुत्र सुबाहु को जो कि बल-बुद्धि के राशि थे उनको मथुरा नगर का राज्य दिया और धूमकेतु को "विदित" नामक नगर का राज्य दिया जो यमुनाके पश्चिममें है ॥

यूपकेतु पुनि साथ रखावा ❀ राजनीति दोउ सुत समझावा
सौंपि नगर बहु आशिष दीन्हा ❀ नृपमणि गवन विजय कहँ कीन्हा

फिर यूपकेतु को उनके ही साथ रखवा दिया और दोनों पुत्रों को राजनीति समझा दी ।। साथ ही नगर को सौंप कर उन्हें बहुत आशीर्वाद दिया और उन राज-मणि ने देश-विजय की यात्रा की ।।

चिरंजीव कहि हने निसाना ❀ दक्षिण अपर बली जग जाना
सचिवन हय राखेउ सुत संगा ❀ उतरे सब जल यमन तरंगा

शत्रुघ्नजी उन्हें चिरंजीवी कह कर दक्षिण दिशाके दूसरे बलवान् नगरों में चलने के लिए डङ्का बजाये । मन्त्रियों और पुत्रों को घोड़े के साथ रखा और सब तरंगित यमुना जल के पार उतरे ।।

दोहा—रवितनया पद बन्दि करि, चली अनी सब संग ।
हर्षहिं बर्षहिं सुमन सुर, देखि सेन चतुरंग ।।४३।।

शत्रुघ्नजी सब सेना को साथ लिए यमुनाजी को प्रणाम कर चले, उस चतुरंगिणि सेना को देख कर देवता लोग प्रसन्न हो फूलों की वर्षा करने लगे ।। ४३ ।।

बाल्मीकि दल सैन्य समेता ❀ कानन सघन मनीश निकेता
सिय सुत युगल बीर बरिबण्डा ❀ भुजबल अमित दिनेश प्रचण्डा

शत्रुघ्नजी चलते-चलते सेना को साथ लिए उस सघन वनमें पहुँचे कि जहाँ पर वाल्मीकि मुनिके आश्रम में सीताजी के अत्यन्त तेजस्वी दो वीर पुत्र थे जिनका भुजबल सूर्य के समान था ।।

वीर बली हय देखेउ आई ❀ पत्र बँधेउ शिर बाँच्यो ताही
कटि कसि तूण हाथ धनु तीरा ❀ समर हेतु बैठे बल बीरा

वे वीर बलवान् आकर घोड़े को देखे और शिर पर बँधे हुए पत्र को बाँच कर कमर में तरकस बाँध हाथ में धनुषबाण को ले युद्ध के लिए उद्यत हो गये ।।

देहु तुरँग घर जाहु सुहाये ❀ धन्य मात पितु जिन्ह तुम जाये
माँगहु भीख समर चढ़ि भाई ❀ क्षत्री कुलहिं कलंक लगाई

तुम अपने घर चले जाओ और घोड़ा हमें दे दो तुम्हारे माता-पिता बड़े भाग्यशाली हैं जिन्होंने तुमको पैदा किया ।। इसपर लव-कुशने कहा कि तुम लोग संग्राम के लिए तो आए पर माँगते हो भीख, तुम लोगों ने क्षत्रिय-कुल को कलङ्कित कर दिया ।।

छन्द—जनि क्षत्रि कुलहिं कलंक लावहु समर शर सहावने ।
बल हीन तुरँग प्रवीन छाँड़े धरा भट बिन जानने ।।
सुनि बचन कठिन कठोर बालक जानि भट धावत भये ।
धनु तानि एकहि बाण लव हँसि हने तन जर्जर किये ।।१८।।

लव-कुश कहते हैं कि, हे शूरवीरों ! तुम लोग युद्ध के समय सुन्दर क्षत्रिय कुल को कलङ्कित मत करो। क्या तुम लोगों ने पृथ्वी को वीरों से रहित जानकर अनजान में घोड़ा छोड़ा था ? तब उन बालकों की ऐसी कठोर बातें सुन कर बड़े-बड़े योद्धा उन पर दौड़ पड़े । तब तो धनुष तान कर लव ने हँसते हुए एक ही बाण मार कर उनके शरीरों को जर्जर कर दिया ।।१८।।

सो०-सुनि मुनि बाल मराल, देहु अश्व तजि कोप निज ।
पूजि तुम्हैं तेहि काल, करिहहिं जन्म सफल प्रभु ॥३॥

फिर शत्रुघ्नजीने लव-कुशसे कहा कि हे मुनिबालकों ! तुम लोग क्रोध छोड़कर घोड़ा हमें दे दो, यज्ञके समयमें प्रभु श्रीरामचन्द्रजी तुम्हारा भी पूजन करके जन्म सफल करेंगे ॥ ३ ॥

कौन नाम नृप केहि पुर बासी ❀ फिरहु बिपिन सँग सैन्य प्रकासी
छाँड़ेउ बाजि हेतु केहि लागी ❀ लिख्यो पत्र बाँध्यो भय त्यागी

शत्रुघ्नजी की बातें सुन कर लव-कुशने कहा जिसने यह घोड़ा छोड़ा है, उस राजा का नाम क्या है और वह किस नगर में रहता है जिसके लिए तुम सेना लिए बनमें फिरते हो । तुम पहले यह बताओ कि इसके शिर पर पत्र बांध कर यह घोड़ा क्यों छोड़ा गया है ? ॥

हमहिं प्रचारत नृप बल भारी ❀ डरपहिं सिंह बजायें तारी
अस कहि धनुष बाण कर लीन्हा ❀ मुनिवर चरण विनय चित दीन्हा

लव-कुशने कहा—आप ऐसे बलवान् हैं कि युद्धके लिए ललकारते हैं, अरे ! हमारी ताली सुन सिंह भी डर जाते हैं, ऐसे कह हाथमें धनुषबाण ले मुनिके चरण की बन्दना करने लगे ॥

मारे रथ सारथी तुरंगा ❀ कठिन बाण मारे सब अंगा
करि मूर्छित सब कटक सँहारा ❀ खाहिं मांस सब गृद्ध करारा

मुनिके चरणों का ध्यान कर लड़ाई करने लगे और शत्रुघ्नजीके रथ सारथी और घोड़ों को मार डाले और शत्रुघ्नजी का शरीर भी बाणोंसे शिथिल हो गया । जिससे शत्रुघ्नजी मूर्छित हो गये और सारी सेना का संहार होने लगा । शृगाल और गीध मांस खाने लगे ॥

दोहा—एकहिं एक प्रचार कर, हन सकल रणशूर ।
आये सब रघुबीर पहँ, कायर करणी क्रूर ॥४४॥

बीर लव-कुशने एक-एक कर सब बीरों को मारा । तब सेनाके भीतर जो कायर और क्रूर थे वे भाग कर रामजीके पास आये ॥ ४४ ॥

ऋषि बालक सुनि बिकल खरारी ❀ बिकल होय पुनि कहा बिचारी
लक्ष्मण संग जाहु सब धाई ❀ मुनि बालक बाँधहु बरिआई

ऋषि बालकों का नाम सुन कर रामजी व्याकुल हुए फिर विचार कर बोले कि हे भाई ! तुम सब लक्ष्मणके साथ जा कर मुनि बालकों को जबरदस्ती बांध लाओ ॥

मारेउ जनि आनेउ पुर माहीं ❀ ऋषि सुत बधब उचित है नाहीं
चलेउ शेष सँग सैन्य अपारा ❀ आये तुरत समर जेहि मारा

उन बालकों को मारना मत यहां ले आना, क्योंकि मुनियोंके बालकों को मारना उचित नहीं है । लक्ष्मणजीके साथ रामजी की आज्ञा पाते ही अपार सेना युद्धमें पहुँच गई ॥

समर भूमि देखेउ भट भाई ❀ परेउ अवनि जनु मिरगी आई
लै घर जाहु जीव मुनि बालक ❀ दिनकर वंश देव मुनि पालक
आँखिन ओट होहु अब ताता ❀ आवत क्रोध चढ़त मम गाता

लक्ष्मणजी रणभूमिमें जाकर देखते हैं कि सारे सुभट रणभूमिमें इस तरह पड़े हैं मानो खिरगी आयी है। लक्ष्मणजीने लव-कुशसे कहा कि, हे मुनिबालक! तुम अपनी जान लेकर घर भाग जाओ, क्योंकि सूर्य वंश हमेशा देवताओं और ब्राह्मणों को पालता है, नहीं तो अब तुम्हें देखकर मेरा शरीर क्रोधसे जल रहा है ॥

दोहा—सुनि लक्ष्मण के वचन तब, बिहँसे बालक बीर।
अनुज बिलोकहु जाय अब, प्रबल महा रणधीर ॥४५॥

लक्ष्मणजी की ऐसी क्रोधपूर्ण बातें सुनकर लव-कुशने हँसकर उत्तर दिया कि, हे प्रबल रणधीर! अब जाकर अपने छोटे भाई की दशा देखो ॥ ४५ ॥

अनुज बिलोकि बचन सुनि काना ❁ धनुष चढ़ाइ गहे कर बाना
बेष बिलोकि बाल मुनि जाना ❁ निज कुल समुझि करौं मनमाना

लव-कुश की बातें सुनकर लक्ष्मणजीने हाथमें धनुषबाण उठाया, लेकिन मुनिके बालक समझ और अपने कुल की मर्यादा विचार कुछ लज्जित हुए ॥

निज सहाय शठ आनु बुलाई ❁ केवल तोहिं न हते भलाई
सुनि कुश कठिन बान संधाना ❁ काँपी पुहुमि शेष अकुलाना

जो तुम्हारी सहायता करनेवाले हैं उन्हें बुला लो तुम्हें अकेले मारनेसे क्या लाभ? ऐसा सुनकर कुशने अपना बाण सँधाना जिससे पृथ्वी काँपने लगी और शेष व्याकुल हो गये ॥

छूटे बिशिख रहे नभ छाई ❁ बाण भानु प्रतिबिम्ब छिपाई
रिपुहिं प्रबल लखि चला सकोपी ❁ तीव्र बाण छाँड़ेउ रथ रोपी

उस समय इतने बाण छूटे कि सारा आकाश व सूर्य भगवान् भी छिप गये ॥ शत्रु कुश को बलवान् जानकर लक्ष्मणजी रथ रोककर तीव्र बाण चलाने लगे ॥

काटहिं बिशिष बिशिष सब भाई ❁ कौतुक करहिं बिबिध खगराई
झपटि गदा लक्ष्मण तेहि मारी ❁ गिरे भूमि कुश मूर्छित भारी

कागभुशुण्डिजी गरुड़जीसे कहते हैं कि हे गरुड़! आपसमें दोनों दौड़-दौड़ कर बाणसे बाण काटते हैं, और अनेकों कौतुक करते हैं, इसी बीचमें लक्ष्मणजीने कुश को एक गदा झपट कर मारी जिससे कुश मूर्छित हो गिर पड़े।

दोहा—मूर्छित कुशहिं निहारि कर, धावा लव करि शोर।
आवत ही शर उर हनेउ, गिरा न महि बल जोर ॥४६॥

कुश को मूर्छित देखकर लव ललकार कर दौड़े। तब लव को आते देख लक्ष्मणजी उनकी छातीमें एक बाण मारे लेकिन योद्धा न गिरा ॥ ४६ ॥

मल्ल युद्ध दोउ भिरे प्रचारी ❁ लरहिं सक्रोध न मानहिं हारी
लरहिं उपाय बिपुल बल करहीं ❁ मारहिं भिरहिं बिपुल सो भिरहीं

फिर लव और लक्ष्मणजी ललकार कर मल्लयुद्ध करने लगे, क्रोधमें दोनों हार नहीं मानते ॥ दोनों एक दूसरे पर वार करते हैं, अपना दाँव दिखाते हैं और लड़ते तथा घोर युद्ध करते हैं ॥

मुष्टिक एक बज्र सम मारी ❀ बिकल शेष मन मानेउ हारी
सुमिरि कोशलाधीश खरारी ❀ मारेउ बाण बिकल लव डारी

फिर लवने लक्ष्मणजी को एक मुष्टिक मारा जिससे वे विकल हो गये और मनमें हार मान गये ।। फिर लक्ष्मणजीने लव को एक बाण मारा जिससे लव मूर्छित हो गिर पड़े ।।

सुमिरि सीय मुनि चरण सुहाये ❀ गत मूर्छा कुश आतुर आये
बिकल बिलोकि बन्धु बड़ जानी ❀ चला बीर मन बहुत गलानी

इतनेमें ही कुश की मूर्छा जाती रही और वे मुनि व सीताजीके चरणों का ध्यान कर दौड़े ।। तब भाई लव को मूर्छित देख कुश लक्ष्मणजी पर क्रोध कर चले ।।

लक्ष्मण देखि बीरवर आयो ❀ धनुष बाण धरि आगे धायो
शक्रजीत अरि जेहि शर मारे ❀ ते सब बालक काटि निवारे

तब उस श्रेष्ठ वीर को आते देखकर लक्ष्मणजी धनुषबाण ले उसके सामने दौड़े ।। और मेघनाद को जिस बाणसे मारे थे वही बाण चलाये लेकिन कुशने सब काट गिराया ।।

दोहा—रामानुज बिस्मित बिकल, देखि सबल आराति ।
सीय त्याग उर सोच बहु, प्राण देउँ इहि भाँति ।।४७।।

लक्ष्मणजी प्रबल शत्रु को देखकर बहुत आश्चर्यमें पड़ गये । और सीताजी को बनमें छोड़ना सोच कर अपने मनमें कहने लगे कि मैं इसी तरह अपना प्राण त्याग दूंगा ।।४७।।

कुश करि क्रोध विशिख सो लीने ❀ मंत्र प्रेरि मुनिवर जो दीने
नाक रसातल भूतल माहीं ❀ सो सर छूटे बचे कोउ नाहीं

लक्ष्मणजी इसी विचारमें पड़े थे कि कुशने क्रोध पूर्वक वह बाण धारण किया जिसे मुनिने मन्त्र प्रेरकर कुश को दिया था, वह बाण ऐसा था जिसके चलानेसे कोई नहीं बच सकता था ।।

मोहन बाण जगत तेहि जानै ❀ विष्णु महेश ब्रह्म जेहि मानै
मारेउ ताकि शेष उर माहीं ❀ परेउ धरणि तन सुधि कछु नाहीं

वह ऐसा बाण था जिसे सारा संसार और ब्रह्मा-विष्णु, महेश तक जानते हैं, उस महान् बाण को कुशने संभालकर लक्ष्मणजीको मारा जिससे लक्ष्मणजी व्याकुल हो पृथ्वीपर गिर पड़े ।।

चली भाग सब अनी अपारा ❀ कोशलपुर महँ परी पुकारा
करणी सकल युद्ध की बरणी ❀ लक्ष्मण विरथ परे जिमि धरणी

लक्ष्मणजी को मूर्छित देखकर सब सेना भाग गई और अयोध्यापुरीमें हाहाकार मच गया और सैनिकोंने आकर रामजीसे सब हाल कहा ।।

वय किशोर दोउ बाल अनूपा ❀ तव प्रतिबिम्ब सुनहु सुर भूपा
काक पक्ष शिर धरे बनाई ❀ बालक बीर बरणि नहिं जाई

उन लोगोंने कहा कि हे प्रभो ! जिस तरह सारी सेना का नाश हुआ वह सब हमने अपनी आंखोंसे देखा, किशोर अवस्था वाले दोनों वीर बालक आप ही के सदृश हैं, उनके शिर पर काक पक्ष अति सुन्दर मालूम होता है और वे इतने बलवान् हैं कि कुछ कहा नहीं जाता ।।

दोहा—भरत जोरि कर कहेउ तब, बचन अमित बिलखाय।
सीय त्याग फल दीन बिधि, बोले श्री रघुराय ॥४८॥

लोगोंकी ऐसी बातें सुनकर भरतजी दुःखित हो नम्र वचनोंसे कहने लगे कि विधाताने यह सीता त्यागका फल दिया है। भरतजीकी यह बात सुनकर श्रीरामजी बोले ॥४८॥

अनुज समर महँ तुम हिय हारे ❀ साजहु हय रथ गज मतवारे
रहौ यज्ञ रिपु देखहु जाई ❀ बालक रावण के दुखदाई

हे भरतजी ! बहुत जल्द घोड़े, रथ और हाथियोंको सजाओ ॥ यज्ञ भले ही रह जाय पर बैरियों को देखिये, शायद वे रावणके दुःखदाई पुत्र हों ॥

तीव्र बचन सुनि भरत लजाने ❀ बहुत भाँति रघुपति सनमाने
प्रथम सखा सब लेहु बुलाई ❀ हनूमान अंगद समुदाई

रामजीकी ऐसी बातें सुनकर भरतजी लजा गये, तब रामजीने उन्हें बहुत समझाया और कहा कि हे भाई ! पहले आप हनुमान् और अंगद आदिको बुलवा लो ॥

माथ नाय सँग कटक विशाला ❀ चलेउ भरत उपजी उर ज्वाला
शोणित सरिता समर बिलोकी ❀ डरपे वीर आश रिस रोकी

रामजीकी बात सुन भरतजी उनको प्रणामकर अपनी सेना लेकर चले, उस समय उनको अत्यन्त क्रोध हुआ। तब रणमें आकर देखते हैं कि खूनकी नदी बह रही है जिसे देख शूर-वीर भी अपनेको आशा छोड़ क्रोधको रोके रह गये ॥

दोहा—समर सिया सुत बीर दोउ, आइ गये बलवान।
देखि डरे कपि भालु सब, तब पूछेउ हनुमान ॥४९॥

रणभूमिमें सीताके दोवों बालकोंको देखकर बीर बानर-भालू थर-थर-काँपने लगें। तब हनुमान्‌जीने पूछा ॥४९॥

धन्य मातु पितु जेहि तुम जाये ❀ पुरुष युगल वर जाहु सुहाये
समर विमुख सुनि भट बिलखाना ❀ कीन्ह क्रोध कह सुनु हनुमाना

हे भाई ! तुम्हारे माता-पिता धन्य हैं, अब तुम लोग अपने घर जाओ ॥ हनुमान्‌जीको समर विमुख सुनकर लवकुश बहुत दुःखित हुए और कहे, हे बीर हनुमान् ! सुनो।

नहिं बल होय जाहु घर भाई ❀ हतौं न देखि जानि कदराई
भाषेउ बचन भरत सुनि काना ❀ लेहु सँभारि बाल धनु बाना

यदि तुम्हें बल नहीं है तो तुम अपने घर चले जाओ, तुम्हारी कायरतापर हम तुम्हें नहीं मारेंगे ॥ इतनी बात सुनकर भरतजी बोले, हे बालकों ! तुम अपने धनुष-बाण सँभाल लो।

कटकटाइ कपि भालु समूहा ❀ लीन्ह उपारि सकल तरु जूहा
एकहि बार सदल मिलि मारा ❀ सकल काटि लव तिल सम डारा

इसी समय बानर और भालु कटकटाकर वृक्षोंके समूह उखाड़ और एक साथ हो मिलकर फेंके लेकिन लवने सबको तिलके समान काट दिया।

दोहा—विषम युद्ध दोउ बन्धु करि, जीतेहु कपि संग्राम।
आये पुनि तहँ नृप भरत, सुमिरि बिधाता बाम ॥५०॥

दोनों भाइयोंने घोर युद्ध किया और बानरोंको संग्राममें जीत लिया, तब सेनाका नाश होते देख ब्रह्माको उलटा समझ भरतजी समर भूमिमें युद्ध करनेके लिए आये ॥५०॥

कपि मारे घायल सब धावहिं ❁ बाण त्रास मन अति दुख पावहिं
जामवन्त कपिराज बुलाई ❁ अंगद हनूमान सुखदाई

रणभूमिमें मरे हुए और घायल बानरोंको छटपटाते देख भरतजीको बड़ा दुःख हुआ ॥ उन्होंने जामवन्त, सुग्रीव, अङ्गद और हनुमान्‌को बुलाकर युद्ध करनेको भेजा ॥

बोले कुश सनु बालि कुमारा ❁ तव बल बिदित जान संसारा
पितहिं मराय मातु पर हेली ❁ सकल लाज आये तुम बेली

अङ्गदको देख कुशने कहा, तू युद्ध करने क्यों आया है ? तेरा बलतो संसारको विदित है। तूने अपने पिताको मरवाकर माता दूसरेको देदी, सब लाजको गँवाकर तुम युद्ध करने आये हो ॥

सो फल लेहु समर महँ आजू ❁ त्यागहु सकल कलंक समाजू
सुनत क्रोध अंगद उर छावा ❁ गहि गिरि एक ताहि पर धावा

उसका फल आज लो और सारा कलंक छोड़ दो। कुशकी बातें सुन अङ्गद क्रोध कर एक पहाड़ ले उनके ऊपर दौड़े ॥

दोहा—आवत शैल विशाल लखि, तिल सम शर हति कीन्ह।
अंगद गर्व अपार अति, जस प्रभु उत्तर दीन्ह ॥५१॥

उस विशाल पर्वतको आते देख कुशने उसे अपने बाणोंसे तिलके समान काट गिराया और जैसा अंगदको गर्व था, कुशने वही किया ॥५१॥

तमकि ताकि कुश बाण चलावा ❁ अंगद नील अकाश उड़ावा
आवत जानि पुहुमि करि भारी ❁ मारे बाण प्रचारि प्रचारी

कुशने क्रोध पूर्वक एक ऐसा बाण मारा कि अंगद व नील दोनों आकाशको उड़ गये, फिर पृथ्वीपर आते देख ललकारते हुए ऐसा बाण मारा कि— ॥

इत उत जान कतहुँ नहिं पावा ❁ पवनपात जिमि महि नहिं आवा
छिन आकाश छिन भूतल माहीं ❁ बोलेउ शरण शरण प्रभु पाहीं

वे हवामें उड़ते हुए पत्तोंकी भाँति आकाशमें चक्कर काटते हैं और पृथ्वीपर नहीं आने पाते। क्षणमें आकाशमें जाते हैं और क्षणमें पृथ्वीपर आते हैं, वे अत्यन्त व्याकुल हो त्राहि-त्राहि पुकारने लगे कि, हे भगवन्! मेरी रक्षा करो ॥

रहेउ गर्व मोहि कृपानिधाना ❁ अगजग नाथ न तोहिं पहिचाना
पाँच बाण बाँधेउ कपि दोऊ ❁ दीन जानि त्यागेउ हँसि सोऊ

हे चराचरके स्वामी! मुझे गर्व था इससे मैंने आपको न पहचाना, इससे मेरा अपराध क्षमा कीजिये। ऐसी बात सुनकर कुशने पाँच बाणोंसे बाँध लिया फिर हँसकर छोड़ दिया ॥

फिरे भरत के सन्मुख आई ❀ दशा देखि कपि दशा भुलाई
जामवन्त हनुमान कपीशा ❀ धायउ तहँ गिरि लै बहु कीशा

फिर कुश भरतजीके सन्मुख चले, उनको फुर्ती देख बानरों के होश उड़ गये। जामवन्त व हनुमान् आदि बहुत से बानर पर्वत और वृक्ष लेकर कुश पर टूट पड़े ॥

दोहा—हँसे कुँवर वर देखि कपि, अनुजहिं कहा बुझाय।
आजु भरत जीतहु समर, भालु कपिहिं बिलगाय ॥५२॥

बानरों को आते देख श्रेष्ठ कुमार हँसे और उनने छोटे भाई कुशसे समझाकर कहा कि आज रीछ-बानरों को भगाकर भरतको युद्ध में जीत लो ॥ ५२ ॥

प्रभु सत समर कीन्ह जस करणी ❀ निगम शेष शारद नहिं बरणी
चरित तासु सुनु शैल कुमारी ❀ मारउ समर शूर कपि भारी

शिवजी पार्वतीजी से कहते हैं कि हे पार्वती ! रामजी के पुत्रोंने लड़ाईमें जो वीरता दिखलाई, उसे वेद, शेष और सरस्वती भी नहीं कह सकतीं। उन्होंने बड़े-बड़े शूर-वीरों और बन्दरों को मार गिराया ॥

मूर्छित सैन्य परा महि माहीं ❀ बचो न घायल कोउ कपि माहीं
परेउ मूर्छि धरणीतल माहीं ❀ अतिहि विकल तनमन सुधि नाहीं

सारी सेना मूर्छित हो पृथ्वीपर पड़ी थी, सेनामें कोई भी बानर, भालु घायल हुए बिना न बचा और सब ऐसे मूर्छित हो गिर पड़े कि उनको तन-मनकी सुधि न रही ॥

देखि भरत सब सैन्य निपाती ❀ कोपि बाण मारेउ लव छाती
मूर्छित विकल परेउ महि माहीं ❀ अति व्याकुल तनकी सुधि नाहीं

भरतजी अपनी सारी सेना को गिरी देखकर लव की छातीमें एक बाण मारे। लव व्याकुल होकर पृथ्वीपर मूर्छित हो गिर पड़े और शरीरकी सुधि न रही ॥

दुखित देखि कुश अतिहि रिसाना ❀ चाप चढ़ाय बाण संधाना
श्रवण प्रयन्त खैंचि धनु बीरा ❀ भरत हृदय मारे शत तीरा

लव को दुःखित देख कर कुश बहुत क्रोधित हुए और धनुष चढ़ा कानों तक खैंचकर भरतजी के हृदय में सौ बाण मारे ॥

दोहा—समर भूमि सोवत भरत, लवहिं लीन्ह उर लाय।
सुमिरि मातु गुरु चरण युग, रहे समर जय पाय ॥५३॥

भरतजी मूर्छित हो पृथ्वी पर गिर पड़े और जब लव की मूर्छा गई तो कुशने उन्हें हृदय से लगाया, तब माता और गुरुके चरणों की वन्दना कर समर में विजय पा गये ॥५३॥

आये खबर लेन चर चारी ❀ भरत सैन्य तिन सकल निहारी
शोणित सरिता देखि डराने ❀ हय गज बहे जात रथ जाने

रणभूमि में रामचन्द्रजी के भेजे हुए चार दूत आये और भरतजी की सेना की दशा और रक्तकी नदी बहती हुई देखकर डर गये जिसमें हाथी, घोड़े और रथ बहे जाते थे ॥

देखेउ सरित भयंकर भारी ❀ कठिन कराल सुनहु उरगारी
बहुतक उछरि बूड़ि पुनि जाईं ❀ चर्म मनहु कच्छप की नाईं

हे गरुड़ ! सुनो, उन्होंने लोहू की बिकराल नदी देखी । जिसमें बहुत से वीर उछलते और डूबते थे जिसमें ढालें मानों कच्छप थीं ॥

ग्रहिनायक झख जंतु घनेरे ❀ देखि दूत ते तिन मन फेरे
लहरि तरंग बीर सब जाहीं ❀ घायल पर बीर छपटाहीं

उसी नदीमें जल-जन्तु की तरह जो भाँति-भाँति की चीजें तैर रही थीं उनको देख दूत डरे और लौट जाने का विचार किये । बड़ी तरंगों के साथ सब घायल वीर बहे जाते थे ॥

फिरे दूत कोशलपुर आये ❀ समाचार सब बरणि सुनाये
चरवर बचन सुनत दुख पावा ❀ त्यागेउ मख निज कटक बनावा

सेना की दशा देखकर दूत लौटकर अयोध्यापुरी को चले गये और जाकर रामचन्द्रजी से सब समाचार सुनाया । रामचन्द्रजी दुःखीं हो यज्ञको त्याग अपनी सेना तैयारकर ॥

चल सकोप कृपालु उदारा ❀ आये प्रभु जहँ कटक सँहारा
मुनिवर बालक देखि सुहाये ❀ सर निवारि प्रभु निकट बुलाये

कुपित हो अपनी सेना लेकर रामचन्द्रजी संग्राम भूमिमें पहुँचे और वहाँ आये जहाँ सेना मारी गई थी । श्रेष्ठ मुनिके बालकों को देखकर बाण उतारकर उन्हें प्रेमपूर्वक पास बुलाये ॥

दोहा—पूछेउ बाल बुलाय दोउ, कहहु मातु पितु नाम ।
देश नाम निज कहहु सब, जीते अति संग्राम ॥५४॥

हे बालकों ! तुम्हारे माता-पिताका क्या नाम है, तुम्हारा देश कौन है और तुम लोगोंका नाम क्या है ? वह मुझे बता दो, क्योंकि तुम लोग संग्राम में बहुत विजय पाये हो ॥५४॥

गहहु शस्त्र जनि कहहु कहानी ❀ पूछेउ स्वर्ग लागि अस जानी
समर बात बहु अति कदराई ❀ छाँड़ि सोच अब करहु लराई

लव-कुशने कहा कि बातोंमें टाल-मटोल न कीजिये, अगर लड़ना हो तो अपना अस्त्र सँभाल लीजिये क्योंकि मैं जानता हूँ कि स्वर्ग जानेके लिये आप यह बात मुझसे पूछ रहे हैं । लड़ाईमें ज्यादा बातचीत करना कायरपन है, इसलिये सोच छोड़कर लड़ाई कीजिये ॥

बंश नाम बिनु बूझे ताता ❀ हतौं न बाण मनोहर गाता
माता सिया जनक की जाता ❀ बाल्मीकि पालेउ मुनि ताता

फिर रामचन्द्रजी बोले कि बिना वंशका नाम जाने हम कभी सुन्दर शरीर पर बाण नहीं चला सकते । रामचन्द्रजी की बात सुनकर उन्होंने कहा कि जनक की कन्या सीता हमारीमाता हैं और बाल्मीकि मुनि ने हमारा पालन किया है ॥

पिता बंश नहिं जानिय आजू ❁ कुश लव नाम सुनहु रघुराजू
सुनि सब कथा राखि उर माहीं ❁ बाल बिलोकि बधब भल नाहीं

पिताके वंश को हम नहीं जानते हैं, हे रामचन्द्र ! सुनिये लव-कुश हमारा नाम है। यह सुन प्रभुने विचारा कि ये तो मेरे ही पुत्र हैं अतः इनको मारना ठीक नहीं ॥

आवत सुभट समूह हमारे ❁ लरिहैं तुम सन परम सुखारे
अस कहि अंगद नील उठावा ❁ जामवन्त कपि पतिहिं बुलावा

हमारे वीर योद्धा जो आते हैं, वह तुमसे सुख पूर्वक लड़ेंगे। ऐसा कह रामचन्द्रजीने अङ्गद और नील को उठाया और जामवन्त सुग्रीव को बुलाया ॥

छन्द—कपिराज अंगद जामवन्तहिं बोलि निशिचर नायकम्।
हनुमान द्विविद मयंद नीलहिं सुभट जे अति लायकम् ॥
रणशूर हति तन पार दारुण कहेउ हँसि रघुनंदनम्।
भरतादि रिपुहन सहित लक्ष्मण परे खल दल गंजनम् ॥२७॥

सुग्रीव, अंगद, जामवन्त, नील, विभीषण, हनुमान्, द्विविद और मयंद आदि वीरों को बुला कर दुख भंजन प्रभुने हँस कर कहा कि भरतादि महाबली शत्रुघ्न तथा लक्ष्मण ऐसे योधा खलों को नाश करने वाले पृथ्वी पर गिर पड़े ॥२७॥

दोहा—सावधान धनु बाण लै, धायेउ लव बलवान।
सन्मुख चलेउ विभीषणहिं, बोले बहुत रिसान ॥५५॥

उसी समय सावधान हो कर लव धनुष-बाण ले कर दौड़े और विभीषण उनके सामने दौड़े तब लव क्रोध पूर्वक बोले ॥ ५५ ॥

सुनु सठ बन्धुहिं समर जुझाई ❁ शत्रुहिं मिलेउ परम कदराई
पिता समान बन्धु बड़ तोरा ❁ त्रिया तासु लै घर वर जोरा

हे मूर्ख ! सुनो, शत्रु से मिलना परम कायरता है। तुमने अपने पिता के समान बड़े भाई को समर में मरवा उसकी स्त्री को अपने घर में रख लिया।

पापी मातु कही कइ बारा ❁ सो पत्नी यह धर्म तुम्हारा
बूड़ि मरहु सागर महँ जाई ❁ मरु गर काटि अधम अन्याई

ऐ पापी ! तुमने जिसे कई बार माता कहा उसे ही पत्नी बना लिया यही तुम्हारा धर्म है ? तू सागर में डूब मरो अथवा गला काट कर मर जाओ तू अधम-अन्यायी है ॥

समर भूमि मम सन्मुख आवा ❁ लाज तोहिं नहिं गाल बजावा
आँखिन आगे ते टरि जाई ❁ नाहित मृत्यु निकट खल आई

रे खल ! समर में मेरे सामने आते तुम्हें लाज नहीं आई ? मेरे आँखों के सामने से हट जा, नहीं तो तेरी मृत्यु निकट आ गई है ॥

सुनि खिसियान गदा कर लीन्हीं ❁ शर हति खंड-खंड लव कीन्हीं
गिरत कोप करि शूल चलावा ❁ लव तन तड़ित समान समावा

अंगद की बात सुन विभीषणने क्रोधित हो हाथमें गदा ली जिसे लव ने बाण से टुकड़े-टुकड़े कर दिया। लव की चोट से जमीन पर गिरते समय लव पर शूल चलाया जो उनके शरीर में बिजली के समान प्रविष्ट हो गया॥

दोहा—दूर शूल करि बन्धु दोउ, सर मारेउ पुनि दाप।
जामवन्त कपिराज नल, अंगद करहिं विलाप॥५६॥

शूल को निकाल पुन: दोनों भाई उत्तेजित हो बाण मारे जिससे जामवन्त, सुग्रीव, नल और अङ्गद दिलपने (बिलखने) लगे॥५६॥

जो गिरि तरु कपि डारहिं आई ❁ रज सम करि तेहि देहिं उड़ाई
निज बाणन कपि घायल कीन्हें ❁ जो जस उचित सो तस फल दीन्हें

जो वृक्ष, पहाड़ बानर लाकर डालते उन्हें लव-कुश धूल के समान चूर-चूर कर उड़ा देते। उन्होंने अपने बाणों से कपियों को घायल कर उचित फल दिया॥

हति दोऊ कपि भूमि गिराये ❁ जामवन्त कपिपति पहँ आये
अब लौं कौटिक समर लड़ाई ❁ जीते लरे बहुत हम भाई

लव-कुशने दोनों बानरों को भूमि पर गिराया तब जामवन्त सुग्रीवके पास जाकर बोले कि हे महाराज! अब-तक मैंने करोड़ों लड़ाई की और जहाँ गए वहाँसे जीत कर आये॥

दोहा—ये बालक त्रिभुवन बली, जीति सकै नहिं कोय।
चलहु प्राण दीजै समर, अयश जगत नहिं होय॥५७॥

लेकिन ये बालक त्रिभुवनके बली हैं और इन्हें संसारमें कोई जीतनेवाला नहीं है। इसलिए अब लड़ाईमें चल कर प्राण दे देना चाहिये जिससे संसारमें अपयश न हो॥५७॥

हृदय ताकि लव मारा सायक ❁ योजन सात गयो कपिनायक

लवने एक बाण खींच कर सुग्रीव को मारा जिससे वह सात योजन पर जा गिरे॥

चले भालु कपि कोप बढ़ाई ❁ मल्लयुद्ध कुश कीन्ह बनाई
निज बल भालुहिं अवनि पछारा ❁ दोउ कर चरण बाँध विकरारा

तब जामवन्त क्रोध बढ़ाकर चले, कुश ने मल्लयुद्ध कर उन्हें पछाड़कर दोनों पैर बाँध दिया॥

हनुमन्तहिं बाँधा पुनि धाई ❁ राखा निकट अश्व थल जाई
रखवारी लव छाड़्यो बीरा ❁ आपु चला रघुनायक तीरा

फिर कुशने दौड़ कर हनुमान्‌जी को पकड़ कर उन्हें घोड़े के पास ले जाकर बाँध दिया और उनकी रखवालीके लिए लव को छोड़ कर आप श्रीरामचन्द्रजीके पास चले॥

देखे रथ पर श्रीपति सोये ❁ फिरे वीर निज लाज विगोये
सुभग अस्त्र वर भूषण नाना ❁ लै घर चले अश्व हनुमाना

कुशने आकर देखा कि, रामचन्द्रजी रथ पर सोये हैं जिससे लज्जित होकर कुश पीछे फिर गये। लेकिन रामचन्द्रजीके बहुतसे अच्छे आभूषण, अस्त्र और घोड़ा तथा हनुमानजी को लेकर घर चले॥

छन्द—शुभ अस्त्र पट भूषण सुमर्कट ऋक्ष सँग हय घर चले।
सिय निकट नायो माथ दोउ सुत भेंट भूषण जे भले॥
पहिचान दोउ कपि निरखि भूषण सहमि सिय धरनी परी।
एहि बीच मुनिवर सघन आये सियहिं प्रति बिनती करी।२८।

सुन्दर अस्त्र-वस्त्र तथा गहने और हनुमान्‌जी तथा रीछके साथ घर चले, जानकी के निकट आ माथा नवा दोनों पुत्रों ने वह भेंट दी। दोनों वानरों को पहचान और भूषणादि देख जानकी सहम कर पृथ्वी पर गिर पड़ी। उसी समय मुनिराज भी वनसे आये तो सीताजी से बहुत विनती की॥ २८॥

हनुमान भालुहिं छोरि बन्धन त्यागि बहु समुझायऊ।
रिपु दमन लक्ष्मण सहित भरतहिं राम रण पौढ़ायऊ॥
सुत कीन्ह कर्म कलंक कुल महँ मोहिं बिधि बिधवा करी।
तजि शोच चन्दन अगर आनहु जाउं पिय संग मैं जरी॥२९॥

हनुमान् और जामवन्त को छोड़ कर सीताजी ने कुश को अनेकों प्रकार से समझाया कि हे तात! तू ने शत्रुघ्न, और भरत के सहित रामजी को भी लड़ाई में पौढ़ाया। यह काम तुमने अच्छा नहीं किया। इससे कुल को कलङ्क लग गया और विधाता ने हमको विधवा भी कर दिया। इसलिये अब तुम सोच को त्याग कर चन्दन और अगर लाओ तो उन्हीं की चिता पर राम के साथ मैं जल मरूं॥ २९॥

मुनि धीर जानकि देइ लव कुश संग ले सादर चले।
रण देखि बालक चरित देखत बिहँसि मन प्रमुदित भले॥
रथ देखि हय पहिचानि प्रभु कहँ जात मुनि आगे भये।
उठि बैठु कोशलनाथ आरत तनय तव आगे छये॥३०॥

धीर मुनिराज वाल्मीकिजीने जानकीजी को धीरज बँधाय और दोनों कुमारो को सादर साथ लेकर रणभूमि को चले। युद्धको देख बालकोंका चरित्र देखते हुए हँसकर मनमें अति प्रसन्न हुए, फिर रथ देख और घोड़ों को पहचान कर मुनि श्रीरामचन्द्रजीके पास जाकर खड़े हुए और बोले-हे रघुनाथ! उठ बैठो, ये आपके दोनों पुत्र आगे खड़े हैं॥ ३०॥

सो०—सुनि मुनिवर बर बैन, जागे रघुपति भय हरन।
बिहँसि उघारे नैन, लीन्हेउ हृदय लगाय मुनि॥४॥

श्रेष्ठ मुनि की प्रेम की पूर्ण बातें सुनकर भयको दूर करनेवाले श्रीरामचन्द्रजी जाग गये। उन्होंने मुसकुराकर नेत्र खोले और मुनिको छाती से लगा लिया॥ ४॥

प्रभुहिं देखि मुनि अति हरषाने ❋ बार बार निज भाग्य बखाने
जेहि बिधि शेष सीय बन आनी ❋ मुनिवर सो सब कथा बखानी

श्रीरामचन्द्रजीको देखकर मुनि बहुत प्रसन्न हुए और बार-बार अपने भाग्यको सराहने लगे॥ फिर लक्ष्मण जिस तरह सीताजीको वनमें ले आए थे मुनिवर वह कथा कह सुनाये।

लवकुश कथा सकल मुनि भाखी ❀ शिव बिरंचि सूरज करि साखी
मिले तनय दोउ हृदय लगाई ❀ सुधा वर्षि सुर सैन्य जियाई

फिर मुनिने ब्रह्मा और सूर्यको साक्षी करके लवकुशकी सब कथा सुनाई।।३।। तब श्रीरामचन्द्रजी ने दोनों पुत्रोंको हृदयसे लगा लिया और देवताओंने अमृत वर्षा कर सेनाको जिला दिया।।४।।

भरत आदि जागे सब भ्राता ❀ लक्ष्मण चले जहाँ सिय माता
बहुरि राम लक्ष्मणहिं बुलाई ❀ सुनहु तात अस बचन सुनाई

उसके बाद भरत आदि सब भाई जाग उठे और जहाँ माता सीताजी थीं उनके पास चले ।।५।। फिर रामचन्द्रजी लक्ष्मण को बुलाए और बोले—हे तात ! मेरी बात सुनो ।।

ऐसे बचन मानि मम भाई ❀ सियसन शपथ लेहु तुम जाई
लक्ष्मण जाय शीश सिय नावा ❀ कुशल कही बहु बिधि समुझावा
हरि इच्छा सिय मन अस आवा ❀ शेष सहस फण आनि दिखावा

हे भाई ! मेरा कहा मानकर तुम जाकर सीतासे शपथ लो।।७।। लक्ष्मणने जाकर सीताजी को मस्तक नवाया और कुशल कहकर बहुत भाँतिसे समझाया।।८।। भगवान्‌की इच्छा से सीता के मनमें ऐसा ही आया, तबतक शेषजी ने आकर हजार फण दिखलाये ।। ९ ।।

दोहा—जड़ित मनिक सिंहासन, सादर सीय चढ़ाय ।
भयो अलोप पताल महँ, महिमा किमि कहि जाय ।।५८।।

शेषनाग मणियोंसे जड़े हुए सिंहासन पर आदरपूर्वक सीताजी को चढ़ा लिये । और उसी मार्गसे पातालमें अलक्षित हो गए, उनकी महिमा कैसे कही जाय ? ।। ५८ ।।

लक्ष्मण चरित देखि सब ठाढ़े ❀ नयन प्रवाह चले अति गाढ़े
सकल चरित सुनि कृपानिधाना ❀ चलन हमार सीय मन जाना

यह सब चरित्र देखकर लक्ष्मणजी चकित हो खड़े रह गये और नेत्रोंसे अश्रु बहने लगा ।। यह चरित्र सुन रामचन्द्रजीने जाना कि सीता ने हमारा चलवा जान लिया ।।

तनय सहित प्रभु निज पुर आये ❀ दीन्ह दान शुभ यज्ञ कराये
जेहि जेहि विधि गुरु आयसु दीन्हा❀कोटि कोटि बिधि सो प्रभु कीन्हा

ऐसा विचार कर अपने पुत्रों सहित रामचन्द्रजी अयोध्यापुरी को चले आये और ब्राह्मणोको दान दे यज्ञ करने लगे । गुरुने जैसी आज्ञा दी उसे अनेकों प्रकार से किये ।।

कोटिक धेनु धाम धन धरनी ❀ दीन्ह कृपानिधि को सक बरनी
भोजन विविध भाँति करवाई ❀ बिदा किये मुनिवृन्द बुलाई

रामजीने यज्ञ करते समय गो, घर और पृथ्वी करोड़ों बार दान किया जिसका वर्णन कौन कर सकता है ? ।। फिर मुनियोंको भोजन करा उन्हें बुला दक्षिणा देकर बिदा किया ।।

जनकहिं पूजि बिदा प्रभु कीन्हा ❀ दोउ गुरु पूजि पदोदक लीन्हा
आये जनक गुरुहिं पहुँचाई ❀ बैठे प्रभु महि सुरन बुलाई

रामचन्द्रजीने राजा जनकको पूजाकर उन्हें बिदा किया और दोनों गुरुओंकी पूजाकर उनके पैर का जल शिरपर चढ़ाये। राजाजनक और गुरुको पहुँचाकर रामचन्द्रजी आए तो ब्राह्मणों को बुलाकर सभामें बैठे ॥

दोहा—लक्ष लक्ष वर धेनु धन, पूजि पूजि द्विज पाँय।
एक-एक विप्रन दई, हर्षित कोशलराय ॥५९॥

ब्राह्मणोंके चरणों की पूजाकर एक-एक ब्राह्मणको सुन्दर-सुन्दर लाख-लाख गौवें दिये और कोशलराय श्रीरामचन्द्रजीने उनके साथ और बहुत-सा द्रव्य दिये ॥५९॥

गये सब मुनि सज्जन निज धामा॥ पाये अमित परम सुख रामा
पुरबासी आये सब झारी ॥ सुनहिं पुराण सो होहिं सुखारी

वे मुनि सज्जन सब अपने धाम को चले गये और रामचन्द्रजीने बड़ा सुख पाया। सम्पूर्ण पुरवासी प्रभु का दर्शन करने को आते और पुराण सुनकर प्रसन्न होते थे ॥

जे जड़ चेतन जीव घनेरे॥ सचर अचर कोशलपुर केरे
तिन सुख पटतर नहिं सुरराया ॥ करहिं बिनोद बिहाय अमाया

जितने जड़-चेतन जीव तथा स्थावर-जगम अयोध्यापुरीके थे। उनसे बराबर इन्द्रको भी सुख नहीं था, वे माया छोड़कर आनन्द करते थे ॥

यहि विधि बिपुल काल पुनि गयऊ॥ निजपुर गमन सुअवसर भयऊ
बीतो अवधि ब्रह्म जब जानी ॥ नारद मुनिसन कहा बखानी

इस प्रकारसे जब बहुत समय बीत गया और श्रीरामचन्द्रजी को अपने लोकमें जानेका समय आ गया। और जब वहाँ ब्रह्माजीने जाना कि अब श्रीरामचन्द्रजीके भुलोकमें रहनेकी ग्यारह हजार वर्षकी अवधि बीत गयी तब नारदजीसे बखानकर कहा ॥

निजपुर आवन चहत खरारी ॥ धर्मराज कहँ करहु हँकारी
बिनती बहु बिरंचि जब भाखी ॥ चलेउ धर्म रघुपति उर राखी

अब रामजी अपने पुरमें आना चाहते हैं, फिर धर्मराजको बुलाकर ब्रह्माजीने कहा कि तुम श्रीरामचन्द्रजीसे कहो कि अब अवधि बीत चुकी है ॥ जब ब्रह्माजीने बहुत सी बिनती की तो धर्मराज श्रीरामचन्द्रजीको हृदयमें रखकर चले ॥

दोहा—आयउ यम रघुबीर पुर, मुनिवर बेष बनाय।
तेज पुञ्ज सुन्दर तरुन, कटि मृग त्वचा सहाय ॥६०॥

यमराज मुनिका वेष धारणकर अयोध्यापुरीमें आये। वे एक तेजस्वी और तरुण मुनिकी तरह मालूम होते थे जिनकी कमरमें मृगछाला शोभायमान थी ॥ ६० ॥

द्वारपाल लक्ष्मन ऋषि जानी ॥ बोलेउ तापस अति मृदु बानी
तुरत शेष तब खबर जनाई ॥ सुनत बचन आये रघुराई

लक्ष्मणको द्वारपाल जान तपस्वी बहुत मीठी वाणीसे बोले। लक्ष्मणजीने शीघ्र ही खबर जनाई जिसे सुनते ही रामचन्द्रजी आये ॥

मुनिहिं निरखि प्रभु कीन्ह प्रनामा ❀ सादर उचित करे श्रीरामा
अर्घ दीन्ह आगे बैठारी ❀ मुनिवर सुन्दर गिरा उचारी

मुनिको देख रामचन्द्रजी प्रणामकर आदर पूर्वक कुशल पूछे और आगे बैठा अर्घ्य दे आसन पर बैठाये, तब श्रेष्ठ मुनि मीठे वचन सुनकर बोले ॥

सुनु सर्वज्ञ कृपालु दिनेशा ❀ आयउँ मुनिवर तापस वेशा
हम तुम रहैं अपर नहिं कोई ❀ तीसर सुनत नाश तेहि होई

हे सर्वज्ञ दयालु प्रभो ! सुनिये, जिसलिये मैं तपस्वी वेषमें आया हूँ, हमारे और आपके सिवाय जो दूसरा न हो तब कहूँगा, क्योंकि यदि तीसरा सुनेगा तो उसका नाश हो जायेगा ॥

सुनै शब्द तेहि देहुँ शरापू ❀ बिधि हरि हर जो आवैं आपू
सुनहु लखन चलि बैठहु द्वारे ❀ ना कोउ आवै निकट हमारे
इतने पर आवा जो कोई ❀ मरहि सत्य यह मृषा न होई

जो हमारे शब्दोंको सुनेगा उसे शाप दूँगा, चाहे वह ब्रह्मा, विष्णु अथवा महेश ही क्यों न हों। मुनिकी बात सुनकर लक्ष्मणजीसे रामजी बोले कि तुम द्वारपर चलकर बैठो ताकि कोई भीतर न आवे और न बोले, इतने पर भी जो आयेगा, तो सत्य ही मरेगा, यह वृथा नहीं हो सकता ॥

दोहा—बोल तापस बचन मृदु, पाहि पाहि रघुनाथ।
कहा सकल इतिहास मुनि, कहि मुनि नायो माथ ॥६१॥

तब लक्ष्मणजीको द्वारपर बिठा मुनि कोमलवाणीसे बोले—हे प्रभो ! शरण हूँ, शरण हूँ ॥ फिर सब इतिहास कहकर मुनिने बार-बार शिर नवाया ॥ ६१ ॥

प्रभु इच्छा भावी बलवाना ❀ दुर्वासा मुनि आइ तुलाना
मुनिहिं देखि लछिमन चलि आगे ❀ गये निकट विनती अनुरागे

हरि इच्छा और होनहार बलवान् है, उस समय दुर्वासा ऋषि आकर प्राप्त हुए। मुनि को देखकर लक्ष्मणजी उन्हें आगे लेने आये और निकट जाकर प्रेमसे बिनती की ॥

पूछेउ मुनि कहँ रघुकुल ईशा ❀ जाउँ तहाँ मैं सुनहु अहीशा
जो प्रति उत्तर करिहौ आजू ❀ भस्म करौं तव घर पुर राजू

फिर मुनिने लक्ष्मणजीसे पूछा कि, श्रीरामचन्द्रजी कहाँ हैं, मैं वहीं जाऊँगा। यदि तुम छेड़छाड़ करोगे तो तुम्हारा घर पुर राज्य सब कुछ भस्म कर दूँगा ॥

कंपेउ लषन सुनत मुनि बानी ❀ निज बध जानि सो चलेउ भवानी
दोउ कर जोरि कहेउ प्रभु सनहीं ❀ दुर्वासा मुनि आवन चहहीं

दुर्वासाकी ऐसी बातें सुन लक्ष्मणजी थर-थर कांपने लगे और अपनी मृत्यु समझकर रामजीसे हाथ जोड़कर बोले—हे महाराज ! दुर्वासा मुनिआना चाहते हैं ॥

तात कीन्ह अति अवगुण भारी ❀ काल कर्म गति टरै न टारी
कीन्ह बचन दिनकर कुलकेतू ❀ सुनहु खगेश कथाकर हेतू

तब रामजी बोले—हे तात ! तुमने बड़ा अवगुण किया, काल और कर्मकी गति टाले नहीं टलती । कागभुशुण्डिजी कहते हैं कि, हे गरुड़जी ! प्रभुने जिस तरह अपना वचन पूरा किया, उस कथा का कारण सुनो ।।

दोहा—तुरत कहेउ मुनि लावहु, सादर कृपानिधान ।
चलेउ बेगि मुनि तुरत तब, कहा राम भगवान ।।६२।।

तब तुरन्त ही कृपानिधानने कहा कि, जाकर मुनिको सादर ले आओ तब लक्ष्मणजी आकर दुर्वासा ऋषिसे कहे कि जल्दी चलिए, श्रीरामचन्द्रजीने बहुत शीघ्र आपको बुलाया है ।।६२।।

छन्द—अति तेज पुञ्ज बिलोकि प्रमुदित तुरत उठि आसन दियो ।
जल आनि सादर चरण धोय सुभग पादोदक लियो ।।
जन जानि मुनिवर देहु आयसु बेगि सो सादर करौं ।
बहु काल क्षुधित कृपायतन अब अशन बिनु बहु दिन मरौं ।३१।

अत्यन्त तेजपुंज मुनिको देख आसनसे उठ उन्हें आसन दिये और जल मँगाकर उनका पैर धो जलको शिरपर चढ़ाये और बोले कि. हे मुने ! जो आज्ञा हो सो शीघ्र करूँ । मुनिजी बोले, हे कृपासिंधो ! मैं बहुत दिनका भूखा बिना भोजनके मरता हूँ ।।३१।।

मन भाव भोजन दीन्ह रघुपति बहुत विधि विनती करी ।
सन्तोष पाय मुनीश स्तुति विनय करि आशिष भरी ।।
करि विदा मुनिवर देखि लछिमन हृदय दारुन दुख भये ।
भरतादि अनुज समेत पुरजन ताहि छन देखन गये ।।३२।।

श्री रामजी मुनि को मनभावना भोजन कराकर बहुत भाँतिसे विनय किये । संतोष से मुनि ने आशीर्वाद दे स्तुति की । फिर मुनि को विदाकर लक्ष्मण जी को देख श्रीरामजी बड़े दुःखी हुए । उस समय भरत शत्रुघ्न पुरवासियों समेत उन्हें देखने को गये ।।३२।।

पद बंदि ठाढ़े जोरि दोउ कर बदन लखि अति कंपही ।
भरि नयन पंकज नीर आरत भरत सन प्रभु सब कही ।।
अब गुरुहिं आनहु बेगि सादर दुखित अति आतुर गये ।
सब कथा गुरुहिं सुनाय आतुर यान चढ़ि आवत भये ।।३३।।

लक्ष्मणजी रामजीको प्रणामकर उनके पास खड़े हो गये. उन्हें देख रामचन्द्रजी कंपायमान शरीर हो रो-रोकर भरतजीसे कहने लगे कि, हे भाई ! तुम शीघ्र जाकर गुरु वसिष्ठ को बुला लाओ । रामजी की बात सुन भरतजी दुःखित हो गुरुके पास जा सब समाचार कह सुनाये, तब गुरुजी रथपर चढ़ अयोध्यापुरी को शीघ्र आये ।।३३।।

आये वसिष्ठ बिलोकि रघुपति बिकल उठि चरणन परे ।
संवाद सुनि मुनि समय जान्यो त्यागि हैं हमको हरे ।।
सुनि बचन शेष बिचार निज उर राम बिन धिक जीवना ।
गहि चरन सरयू तीर आये देखि जल शुभ पीवना ।।३४।।

तब वसिष्ठजीको आये देख रामचन्द्रजी व्याकुल हुए और उठकर चरणोंपर गिर पड़े। संवाद सुनते ही मुनिने उस समय जाना कि, भगवान् हमारा त्याग करेंगे। और वचन सुनकर लक्ष्मण ने अपने हृदयमें विचारा कि, भगवान् रामचन्द्रजीके विना जीवनको धिक्कार है॥ वह उनके चरण छूकर सरयूके किनारेपर आये और पवित्र जलका आचमन किये ॥३४॥

दोहा—कटि प्रमाण जल मध्य में, कीन्हों ध्यान अखण्ड।
योग यत्न करि राम कहि, फोर्‌यो निज ब्रह्मण्ड ॥६३॥

फिर कमर तक जलमें खड़े हो अखण्ड ब्रह्मका ध्यानकर योग मार्गके अनुसार समाधि लगाकर रामचन्द्रका स्मरणकर अपने ब्रह्माण्डको फोड़ संसारको छोड़ दिये ॥ ६३ ॥

रामधाम पहुँचे तुरत, लषन चतुर्थ विभाग।
सुनि ब्याकुल रघुपति भरत, मिटेउ सकल अनुराग ॥६४॥

लक्ष्मणजी भगवान्‌के चतुर्थांश थे, वे तुरन्त ही रामधामको पहुँच गये। ऐसा समाचार पा रामचन्द्रजी व भरतादि बहुत दुःखी हुए और उनका सब अनुराग मिट गया ॥६४॥

मैं नहिं तज्यों तज्यो मोहिं ताता ❁ अब करु यत्न सो देखहुँ भ्राता
करहु भरत पुर जन्म सखारी ❁ सुनत गिरे महि ब्याकुल भारी

रामजी भरतजीसे बोले कि, मैंने लक्ष्मणको नहीं त्यागा उन्होंने ही मुझे त्याग दिया, इसलिये अब ऐसा उपाय करो जिससे भाई लक्ष्मणजीको देखूं इसलिये अब तुम पुरवासियों के जन्मको सुखी करो, ऐसी बात सुन भरतजी गिर पड़े ॥

चलन चहत अब प्राण गुसाईं ❁ पुनि लक्ष्मण बिनु रह न सकाईं
तात चलहु कहि तनय बुलाई ❁ कीन्ह तिलक बहु नीति सिखाई

थोड़ी देरमें होश आनेपर भरतजी रामजीसे बोले कि, हे नाथ! अब ये प्राण निकलना चाहते हैं। लक्ष्मण के बिना रहा नहीं जाता, इसलिए हे प्रभो! पुत्रों को राज्य देकर उन्हें राजनीति बतलाकर अब चल देना ठीक है ॥

भरत तनय तक्षक जेहि नामा ❁ दक्षिण नगर दिये तेहि रामा
दूसर पुष्कर जो जग जाना ❁ पुहकर नगर दीन्ह भगवाना

भरतकी बात सुन रामजीने भरतजीके दोनों पुत्रोंको बुलाकर उनमें तक्षकको दक्षिण राज्य और दूसरे जगत्-प्रसिद्ध पुष्कर को पुहकर नगर का राज्य दिया ॥

दोहा—पश्चिम देश पिशाच बहु, जीति हते संग्राम।
तहँ राखे सुत सरिस दोउ, बिलग बिलग कहि नाम ॥६५॥

पश्चिम दिशाके बहुतसे पिशाचों को मार अंगद और चित्रकूट नामक नगर बसाया, वहां पर लक्ष्मणजीके दोनों सुन्दर पुत्रों को रख छोड़ा ॥६५॥

अवध नृपति कुश कीन्ह बहोरी ❁ सिखै नीति पुनि कहउ बहोरी
भ्रातन पर सुत दया करेहू ❁ राजनीति उर माहिं धरेहू

रामजी अयोध्याका राज्य कुशको देकर राजनीति समझाये और कहे कि हे पुत्र! भाइयोंपर दया करना और राजनीतिको हृदयमें धारण करना ॥

उत्तर नगर सु उत्तर दूरी ❀ सुख सम्पदा जहाँ अति रूरी
लव कहँ दीन्ह कृपानिधि सोई ❀ पटतर अमर नगर नहिं होई

उत्तर दिशा में बहुत दूर उत्तर नामक एक नगर जो धन और सम्पदा से परिपूर्ण था, वहाँ का राज्य लव को दिया, वहाँ ऐसा सुख था जिसकी बराबरी देवपुरी भी नहीं कर सकती थी ॥

आठ सहस रथ तुरँग पचासा ❀ दश सहस्र गज मत्त विलासा
भजै इन्द्र गज तिन्हैं विलोकी ❀ दिग्पालन निज प्रभुता रोकी

आठ हजार रथ, पचास हजार घोड़े तथा दस हजार ऐसे मस्त हाथी थे जिन्हें देखकर ऐरावत भी भाग जाय और दिग्पाल भी उन हाथियोंपर अपना अधिकार नहीं चला सकते थे ॥

इक इक सुतन दियउ रघुराया ❀ रह्यो सो कुशहिं दीन्ह करि दाया
धनद कोटि सम भरा भँडारा ❀ यथा योग करि भाग उदारा

इस तरह से रामचन्द्रजी ने एक-एक पुत्रोंको दे दिया और जो कुछ बचा वह कुशको दिये। दीनदयालु भगवान् ने कुबेर ऐसा अनन्त धन पुत्रों को यथा योग्य बांट दिया ॥

दोहा—सकल तनय परितोष करि, बिदा कीन्ह रघुबीर।
बिप्र बृन्द याचक सकल, लिये बोलि मति धीर ॥६६॥

फिर श्रीरामचन्द्रजी सब पुत्रों को सन्तोषित कर विदा किए और ब्राह्मणों तथा सब याचक जनों को बुला लिये ॥ ६६ ॥

धेनु बसन धरणी धन धामा ❀ दीन्ह द्विजन परिपूरण कामा
याचक विप्र अवध के वासी ❀ बोले प्रभु सुनु अज अविनासी

श्रीरामजी, ब्राह्मणों को गौवें, वस्त्र, पृथ्वी, धन और घर आदि अनेक प्रकार के दान दे मनोकामनाएँ पूर्ण किये, तब अयोध्यावासी हाथ जोड़कर बोले—हे प्रभो! एक विनती सुनो ॥

हम प्रभु जन्म चरण अनुरागी ❀ अन्तकाल अब होत अभागी
जो हित मानि लेहु मम साथा ❀ करहु कृपानिधि सकल सनाथा

हे प्रभो! हमलोग जन्मभर आपके कमलवत् चरणों के प्रेमी बने थे, अन्त समय अभागे हुए जाते हैं, इसलिए अब हमलोगों को भी साथ लेकर सनाथ कीजिए ॥

सुनि सनेहमय बचन सुहाये ❀ चलेउ कहेउ प्रभु अति सुख पाये
समय जानि कपिपति तब आवा ❀ अंगद राज दीन्ह सुख पावा

उनकी प्रेमपूर्ण बातें सुन रामजी खुश हुए और कहे कि यदि तुम लोगों की इच्छा है तो चलो। इस तरह सबको साथ ले निज धाम जाने को तैयार हुए तो समय जानकर सुग्रीव अंगद को राज्य दे चले आये ॥

जामवन्त लंकापति धीरा ❀ नल अरु नील द्विविद गम्भीरा
कोटिन कीश जे सुर अवतारी ❀ आये जहाँ कृपालु खरारी

जामवन्त, विभीषण, नल, नील और द्विविद आदि करोड़ों वीर वानर जो कि देवताओं के अंश से पैदा हुए थे अयोध्यापुरी में आये ॥

सो०—कह प्रभु सुनु लंकेश, राज्य कल्प भरि करहु तुम ।
अचल बचन मम शेष, अन्त अमरपुर तात तोहिं ॥ ५ ॥

तब प्रभु ने विभीषण से कहा कि हे लंकापति ! तू मेरा कहना मान कर कल्पान्त भर राज्य करो, फिर अन्त में स्वर्ग को चले जाना ॥ ५ ॥

जामवन्त सुनु मम मृदु बानी ❁ रहु द्वापर भर तुम जिय जानी
कृष्णरूप सुनु मिलिहौं तोहीं ❁ समर भूमि तब जानेउ मोहीं

हे जामवन्त ! आप मेरी बात मानकर द्वापर भर रहिए, फिर मैं कृष्ण अवतार में तुमसे मिलूंगा और जब युद्ध करूँगा, तब मुझे पहचानना ॥

अस कहि सब बिधि धीरज दीन्हा ❁ आपु गमन सरयू तट कीन्हा
दक्षिण भरत बाम रिपुदमनू ❁ पुरवासी सब निज कुल तरनू

इस प्रकार सबको धैर्य दे प्रभु सरयू की तरफ चले । वहाँ प्रभु के दाहिनी ओर भरत और बाईं तरफ शत्रुघ्न थे । सब पुरवासी प्रसन्न चित्त थे और सब कुटुम्बी पीछे चले ॥

अग्नि वेद गायत्री छन्दा ❁ धरि निज रूप चले सुर वृन्दा
पीताम्बर पट सुन्दर धारी ❁ चेतन जड़ चर अचर सुखारी

प्रभु को जाते हुए देखकर अग्नि, वेद, गायत्री, छन्द और सब देवतागण अपना-अपना स्वरूप धारण कर प्रभु के साथ चले । प्रभु पीताम्बर पहने हुए सुन्दर शरीर धारण किए हैं जिसे देखकर जड़-चेतन, चर-अचर सब सुखी हुए ॥

अमर रूप धरि सुन्दर आई ❁ जस कछु कीन्ह सो सुन खगराई
समय जानि तब पवन कुमारा ❁ बोले बचन कृपा आगारा

सब देवता सुन्दर रूप धर-धर कर वहाँ आए, अब जो कुछ प्रभु ने किया है गरुड़जी ! वह आप सब सुनो । तब समय जानकर हनुमान्‌जी से कृपासागर रघुनाथजी बोले ॥

दोहा—चिरंजीवि सुत रहहु तुम, जब लगि रवि शशि शेष ।
तोहिं सुमिरि सब मिटिहहिं, दुस्तर कठिन कलेश ॥ ६७ ॥

हे पुत्र ! जबतक सूर्य-चन्द्रमा रहैं तब तक तुम जिओ और जो तुम्हें स्मरण करेगा उसका कठिन से कठिन क्लेश मिट जायेगा ॥ ६७ ॥

चतुरानन पहँ धर्म सिधाये ❁ सरयू तीर जगतपति आये
चले देखि अज भव सनकादी ❁ जो मुनि परम अलौकिक वादी

प्रभुकी आज्ञा पाकर धर्मराज चले गयें और रामजी सरयू के तीर पर आये। तब प्रभुका प्रस्थान देखने के लिए ब्रह्मा, महादेव, सनकादिक ऋषि चले आये जो परम अलौकिक बातोंको जानते थे।

कोटिन रथ बाहन विधि नाना ❁ अरुण अकाश न जाय बखाना
नभ सुर जय जय जय ध्वनि होई ❁ पावहिं बर याचहिं सुर जोई

देवताओं के अनेकों विमानों से आसमान ढक गया, रत्न-जटित विमानों से ऐसा लाल हो गया कि जिसकी प्रशंसा नहीं हो सकती। आकाश में देवता जय-जय करते हैं और जो वर चाहते हैं वही पाते हैं ॥

देखि नाक रथ मग परछाहीं ❀ जिमि गिरि कृमि नभ पंथ उड़ाहीं
करहिं परस जल जे तनुधारी ❀ पाइ चतुरभुज रूप सुखारी

आकाश में इतने विमानों की भीड़ लगी थी कि, जिसकी छाया ऐसी प्रतीत होती है मानो टिड्डी दल छाया हुआ है। उधर देवताओं की भीड़ थी और इधर जो सरयू जलका स्पर्शकर चतुर्भुज रूप पाकर विमानों में बैठ कर जाते थे उनकी भीड़ थी ॥

चढ़ि विमान प्रभु धाम सिधाये ❀ सकल अमरपति सम सुख पाये
सुमन वृष्टि नभ होय अपारा ❀ होहिं नाद विधि वेद प्रकारा

इधर सरयूजल स्पर्शकर चतुर्भुज रूप धर विमानों में बैठ राम धामको जाकर सबलोग इन्द्र के समान सुख प्राप्त करते थे, उधर आकाश से पुष्प-वृष्टि और वेद-ध्वनि हो रही है ॥

छन्द—उचरहिं वेद प्रसन्न भरत कृपालु हँसि सादर लयो।
जल परसि कर रिपु दमन सादर पद्मकर राजित भयो॥
कपि आनि यूथप सखा प्रभुके सकल निज निज घर गये।
सुग्रीव प्रभु पद बन्दि बारहिं बार रवि मंडल गये॥३५॥

तब वेद मन्त्र का उच्चारण करते हुए भरतजी प्रभु-स्वरूप में लोप हो गए और शत्रुघ्न जी भी जल छूकर परमधाम गए। बानर आदि प्रभु के सखा जल छूकर अपना नवीन रूप बना घरको चले। सुग्रीव बार-बार प्रभु की वन्दना कर सूर्यमंडल में लीन हुए ॥ ३५ ॥

सुर सहित दिनकर वंश भूषण आनि जल आश्रित रहे।
तेहि समय बोलि अनादि सुर शिव बचन प्रभु पावन कहे॥
इक मास रहु यहि तीर तुम मम पुरी जीव जो आवहीं।
यह परम पावन भूमि सरयू एक पल जे पावहीं॥३६॥

देवताओं के साथ प्रभु भानुकुल भूषण श्रीरामजी जल के पास विराजमान हैं, उस समय ब्रह्मा और महादेव आदि देवताओं को बतला कर प्रभु परम पवित्र वचन कहे कि, आप लोग एक महीने तक यहीं सरयू के किनारे रहें और जो प्राणी यहाँ आवें उन्हें मेरे धाम पहुँचा देना, यह पवित्र नदी है, जो यहाँ क्षण भर के लिएभी आ जाता है ॥ ३६ ॥

अति रुचिर प्रेम सनेह मज्जहिं मम चरण रति कर सदा।
तरि जाहिं सुरपुर सकल सादर सुनहु मम वाणी मुदा॥
कहि बचन अन्तर्धान प्रभु जिमि दामिनी घन माँझ में।
नभ जयति जय-जय करत जय-जय जयति-जयति नमामि मेः ३७

(और) सरयू में प्रेम के साथ स्नान करता है, वह मेरे धामको पहुँचता है. उसका मेरे चरणोंमें दृढ़ प्रेम हो आता है, इसलिए मेरी बात मान कर एक मास तक यहाँ रहो, ऐसा

कह कर प्रभु अन्तर्धान हो गए और ऐसा मालूम हुआ मानों बादल में बिजली चमकी हो, उस समय आकाश में 'जय जय, नमामि-नमामि और जय-जयति' शब्द होने लगे ।। ३७ ।।

छन्द—इहि भाँति रघुपति गे चराचर सकल लै निज धाम को ।
सो कहेउ उमहिं कृपायतन उर राखि सादर राम को ।।
यह चरित पावन सुनहिं सादर जे नित्य चित्तहिं लाइके ।
ते लहहिं नर शुभ परमपद भवजनित दुःख नसाइके ।।३८।।

इस तरह रामजी सब चराचर प्राणियों को साथ ले निज धाम को चले गये । इस कथा को बड़े ध्यान के साथ शंकरजी ने पार्वती से कहा । जो लोग ध्यान लगा कर इस पवित्र चरित्र को कहते और सुनते हैं वे संसार के दुःखों को त्याग मोक्ष को प्राप्त होते हैं ।।३८।।

दोहा—यहि विधि शिव संवाद सुनि, प्रफुलित गरुड़ शरीर ।
बार-बार तब चरण गहि, जानि दास रघुबीर ।।६८।।

इस तरह शंकर भगवान् और पार्वती के संवाद को सुनकर गरुड़जी गद्‌गद हो गये और कागभुशुण्डिजी को अपने प्रभु का दास जान कर बार-बार उनके चरण पकड़े और बोले ।।६८।।

मैं कृत-कृत्य भयउ तव बानी ❀ सुनि रघुबीर भक्ति रस सानी
राम चरण नूतन रति भई ❀ माया जनित बिपति सब गई

हे भगवन् ! आपकी वार्ता को सुन मैं कृतार्थ हो गया, क्योंकि आपकी वाणी भक्ति-रससे भरी है, आपकी कृपा से मेरे हृदय में राम चरणों की प्रीति उत्पन्न हुई और दुःख मिट गया ।।

मोह जलधि बोहित तुम भयऊ ❀ मो कहँ नाथ विविध सुख दयऊ
मोसन होय न प्रति उपकारा ❀ बन्दौं तव पद बारहिं बारा

हे भगवन् ! आप मुझे मोह रूपी समुद्र से पार उतारने के लिए नौका रूप हैं। आपने मुझे सब प्रकार सुख दिया है, जिसका बदला नहीं दे सकता, इसलिये मैं आपके चरणों की वन्दना करता हूँ।

पूरण काम राम अनुरागी ❀ तुम सम तात न कोउ बड़ भागी
संत बिटप सरिता गिरि धरणी ❀ परहित हेतु सबन की करणी

हे भगवन् ! आप पूर्ण काम हो, आप प्रीति करनेवाले हैं, आप जैसा भाग्यशाली संसार में कोई नहीं है । अच्छे पुरुष, पेड़, नदी, पहाड़ और पृथ्वी का जन्म परोपकार के लिये ही हुआ है ।।

सन्त हृदय नवनीत समाना ❀ कहा कविन पै कहै न जाना
निज संताप द्रवै नवनीता ❀ पर दुख द्रवहिं सुसंत पुनीता

कवियों ने सत्पुरुषों के हृदय को नवनीत के समान कहा है पर यह ठीक नहीं, क्योंकि नवनीत अपनी मुसीबतपर पिघलता है और सन्त दूसरे के कष्ट पर पिघल जाते हैं ।।

जीवन जन्म सफल मम भयऊ ❀ तव प्रसाद संशय सब गयऊ
जानेउ सदा मोहिं निज किंकर ❀ पुनि-पुनि उमा कहै विहंगवर

अब मेरा जन्म सफल हो गया और आपके प्रसाद से सब संशय दूर हो गया । गरुड़जी कागभुशुण्डिजी से कहते हैं कि, आप मुझे सर्वदा अपना दास जानियेगा ।।

दोहा—तासु चरन शिर नाय करि, प्रेम सहित मतिधीर।
गयो गरुड़ बैकुण्ठ तब, हृदय राखि रघुबीर ।।६९।।

वह मतिधीर प्रीतिपूर्वक उनके चरणोंमें शिर नवा और हृदयमें रामजी का स्वरूप रख कर वैकुण्ठ को गये ।। ६९ ।।

गिरिजा सन्त समागम, सम न लाभ कछु आन।
बिनु हरि कृपा न होय सो, गावैं वेद पुरान ।।७०।।

शंकरजी कहते हैं कि हे पार्वती ! संत संगतिके समान संसारमें दूसरा लाभ नहीं है। वेद और पुराण कहते हैं कि वह बिना ईश्वर की कृपाके नहीं होता ।। ७० ।।

कहेउ परम पुनीत इतिहासा ❋ सुनत बचन छूटै सब त्रासा
प्रनत कल्पतरु करुणापुंजा ❋ उपजै प्रीति रामपद कंजा

जो इस परम पवित्र चरित्र को मन लगा कर कहता और सुनता है, उसका सब भय मिट जाता है और कृपालु श्रीरामचन्द्रजीके चरणोंमें प्रीति उत्पन्न होती है ।।

मन क्रम बचन जान अघ जाई ❋ सुनहिं जे कथा श्रवण मन लाई
तीर्थाटन साधन समुदाई ❋ योग ज्ञान विराग निपुणाई

जो मनुष्य ध्यानपूर्वक इस कथा को सुनता है उसके सब पाप नष्ट हो जाते हैं। संसारमें कल्याणके साधन तीर्थाटन, योग, ज्ञान और वैराग्य की निपुणता है ।।

नाना कर्म धर्म ब्रत दाना ❋ संयम दम जप तप मख नाना
भूत दया द्विज गुरु सेवकाई ❋ विद्या विनय विवेक बड़ाई

अनेक प्रकार के कर्म, व्रत, दान, संयम, दम, जप तथा तप एवं जो अनेक प्रकार के यज्ञ हैं ।। जीवों पर दया, ब्राह्मण और गुरु की सेवा, विद्या, ज्ञान, विनय और बड़ाई ।।

जहँ लगि साधन बेद बखानी ❋ सबकर फल हरिभक्ति भवानी
सो रघुनाथ भक्ति श्रुति गाई ❋ राम कृपा काहू एक पाई

जितने कल्याण के साधन हैं और जहाँ तक वेदों में कहा है, उन सबका फल भगवान् की भक्ति ही है, लेकिन प्रभुकी भक्ति उन्हींको प्राप्त होती है जिनपर रामकी कृपा होती है ।।

दोहा—मुनि दुर्लभ हरिभक्ति नर, पावहिं विनहिं प्रयास।
जो यह कथा निरन्तर, सुनहिं मानि विश्वास ।।७१।।

लेकिन जो सर्वदा विश्वास मानकर इस कथाको सुनते और पढ़ते हैं, वे बिना परिश्रम ही भगवान् की भक्ति को पा जाते हैं ।। ७१ ।।

—: इति लवकुश-काण्ड समाप्त :—

।। एक श्लोकी रामायण ।।

आदौ रामतपोवनादिगमनं हत्वा मृगं काञ्चनम्
बैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसम्भाषणम् ।

बालीनिर्दलनं समुद्रतरणं लङ्कापुरीदाहनम्
पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननं चैतद्धि रामायणम् ।।

❀ श्रीरामायणजी की आरती ❀

आरति श्री रामायण जी की । कीरतिकलित ललित सिय पीकी
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद । वालमीकि विज्ञान विशारद
शुक सनकादि शेष अरु शारद ।बरणि पवनसुत कीरति नीकी।१।
सन्तत गावत शम्भु भवानी । औघट सम्भव मुनिवर ज्ञानी
व्यास आदि कवि पुंग बखानी । कागभुशुण्डि गरुड़ के ही की ।२।
चारिउ वेद पुराण अष्ट दश । छवउ शास्त्र सब ग्रन्थन को रस
तन मन धन सन्तन को सर्वस । सार अंश सम्मत सबही की ।३।
कलिमलहरणि विषय रसफीकी। सुभग सिंगार मुक्ति युवती की
हरणि रोग भवमूरि अमी की ।तात मातु सब विधि तुलसीकी।४।

❀ अथ शिवस्तुति प्रारम्भ ❀

दोहा—गिरिजापति पद बन्दि कर, चरण मध्य शिर नाय ।
कहत अयोध्यादास तुम, मोपर होहु सहाय ।।

❀ कवित्त ❀

नन्दी की सवारी नाग अंगीकार धारी नित संतसुखकारी नीलकण्ठ त्रिपुरारी हैं । गले मुण्डमाला शिर सोहै जटाधारी बाम अंगमें बिहारी गिरिजा सुतवारी हैं । दानी देख भारी शेष शारदा पुकारी काशी पति मदनारी कर शूल चक्रधारी हैं। कला उँजियारी लखि देव सो निहारी यशगावैं वेदचारी सो हमारी रखवारी हैं ।१।
शम्भु बैठे हैं विशाला भंग पीवे हैं निराला नित रहते मतवाला अहिअंग पै चढ़ाये हैं । गले सोहे मुण्डमाला कर डमरू विशाला अरू ओढ़े मृगछाला भस्म अंगमें लगाये हैं । संग सुरभी सुतशाला करे जगत प्रतिपाला मृत्यु हरे अकाला शिर जटा को बढ़ाये हैं । कहैं रामलाला मोहिं करौ तुम निहाला गिरिजापति भोला जैसे कामको जलाये हैं ।।२।। मारा है जलन्धर और त्रिपुरको सँहारा जिन जारा है काम जाके शीश गंगधारा है । धारा है अपारा जासु महिमा है तीन लोक भाल सोहै इन्दु जाके सुखमा को सारा है ।

सारा है बात सब खायो हलाहल तीनों जगतके अधारा जाहि वेदन उचारा है। चारों हैं भाग जाके द्वार हैं गीरीश कन्था कहत अयोध्या सोई मालिक हमारा है ।।३।। अष्टगुरु ज्ञानी जाके मुख वेद बानी भवन में भवानी सुख सम्पति लहा करै। मुण्डनक मालाजाके चन्द्रमा ललाट सोहैं, दासन के दास जाके दारिद दहा करैं ।। चारों द्वारबन्दी जाके द्वारपाल नन्दी कहत कवि अनन्दी नाहकनर हहाकर ।। जगत रिसाय यमराजको कहाँ बसाय शंकर सहाय तो भयंकर कहा करैं ।।४।। गौर शरीरमें गौरि विराजत मोर जटाशिर सोहत जाके। नागन को उपवीत लसे ये अयोध्या कहैं शशिभालमें वाके ।। दान करैं पलमें फलचारि और टारत अंक लिख बिधना के। शंकर नाम निशंक सदा ही भरोसे रहै निशिवासर ताके ।।५।।

दोहा—मगसर मास हेमन्त ऋतु, छठ दिन है शुभ बुद्ध।
कहत अयोध्या प्रात ही, शिव के विनय समुद्ध ।।

।। शिवस्तुति-समाप्त ।।

❀ आरती श्री रामचन्द्रजी की ❀

जगभग जगमग जोति जगी है ❀ राम आरती होन लगी है ।।
कंचन भवन रतन सिंहासन ❀ दासन डासे झिलमिल डासन ।।
तापर राजत जगत प्रकाशन ❀ देखत छवि मात प्रेम पगी है ।।
महकत धूप बरत महताबी ❀ झलकत कुण्डल रबिछबि दाबी।।
अंग अंग सुन्दरता फाबी ❀ आनँदकी सरिता उमँगी है ।।
घण्टा घड़ी मृदंग बजावत ❀ नूपुर पग भरि नाचत गावत ।।
परित शंखहि चँवर डोलावत ❀ सुनतहिं दूरि बलाय भगी है ।।
रूप देखि जननी हरषतु हैं ❀ अँजुरिन दव सुमन बरषतु हैं।।
करि दण्डवत चरन परसतु हैं ❀ सुमति राम के रंग रँगी हैं ।।

❀ आरती श्री सियबर की ❀

नखसिख श्याम रूप छबिधर की ❀ आरती करिये सियवर की ।।
लाल पीत अंबर अति साजै ❀ मुख निरखत शारद शशि लाजै।।
तिलक चिलक भालन पर राजै ❀ कुंकुम केसर की ।।१।।
शीश फल कुण्डल झलकतु हैं ❀ चन्द्रहार मोती हलकतु हैं ।।
कर कंकन की छबि झलकतु हैं ❀ जगमग दिनकर की ।।२।।
मृदु तरुवन में अधिक ललाई ❀ हास विलास न कछु कहि जाई।।
चितवन की गति अति सुखदाई ❀ मनहीं मन फरकी ।।

सिंहासन पर चँवर ढुरतु हैं ❀ साज बजत जै जै उचरतु हैं ॥
सादर अस्तुति देव करतु हैं ❀ सियवर अनुचर की ॥४॥

❀ आरती बजरंगबली की ❀

आरति कीजै हनुमान लला की। दुष्टदलन रघुनाथ कला की ॥
जाके बलसे गिरिवर काँपै। रोग दोष भय निकट न झाँपै ॥
अंजनि-पुत्र महा बलदाई। संतन के प्रभु सदा सहाई ॥
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिया सुधि लाये ॥
लंका ऐसे कोट समुद्र अस खाई। जात पवनसुत बार न लाई ॥
लंका जारि असुर सब मारे। सीयाराम के काज सँवारे ॥
लक्ष्मण मूर्छि परे धरणी पै। लाय सजीवन प्राण उबारे ॥
पैठि पताल तोरि यमकातर। अहिरावण के भुजा उखारे ॥
बायें भुजा असुर संहारे। दहिने भुजा सब संत उबारे ॥
सुर नर मुनिजन आरती उतारें। जै जै जै हनुमानजी उचारें ॥
कंचन थार कपूर की बाती। आरति करत अंजनी माई ॥
जो हनुमानजी की आरति गावै। बसि बैकुण्ठ अमर पद पावै ॥
लंका विध्वंस किये रघुराई। तुलसीदास स्वामी कीरति गाई ॥

❀ हनुमानजी की आरती ❀

जय अञ्जनिसुत बीरा। बल प्रताप जग रेख तुम्हारी प्रथमे रणधीरा ॥टेक॥ रक्तवर्ण तनु तेजा गिरिसम देह लसे। गमन दमन मद चलन खगेशा बलनिधि असुर खसे।१। रविको फलजान्यो ताहि कियो भक्षा। देवन त्रास करो तब छाँड्यो बेगि करो रक्षा।२। लक्ष्मण मूर्छि परे रणमाहीं रघुबर शोक भरे। लाय सजीवन जीव कीन्हों देवन सुमन झरे॥ ३॥ रावण दुष्ट हरो बैदेही चिन्ताराम भई। लंका जार सँभार सुधि सीता रघुबर आन दई ॥४॥ बल अतुलित तुम विपुल बड़ाई निजमुख राम कही। रामरंग तनताप न घेर्यो तुम्हरी शरण लही ॥५॥ जय अञ्जनिसुत बीरा ॥

❀ आरती श्रीगणेशजी की ❀

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ॥टेक॥ माता जाकी पार्वती पिता महादेवा। लड्डुवन को भोग लगे संत करें सेवा ॥ जय गणेश०॥एकदन्त दयावन्त चार भुजाधारी। मस्तक सिंदूर

सोहे मूसे की सवारी ॥ अन्धनको आँख देत कोढ़िनको काया । बाँझनको पुत्र देत निर्धनको माया ॥ जय गणेश०॥ पुष्पनको भोग लगत संत करत सेवा । हार चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा ॥ जय गणेश०॥ दीननकी लाज राखो शम्भुसुत वारी । कामनाको पूरी करो जाऊँ बलिहारी ॥ जय गणेश० ॥

❀ आरती श्रीशंकरजी की ❀

ओं जय शिव ओंकारा हर शिव ओंकारा । ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धाङ्गी धारा ॥ टेक ॥ एकानन चतुरानन पंचानन राजै, हंसासन गरुड़ासन वृषभासन साजै ॥ ओं जय शिव० ॥ दो भुज चार चतुर्भुज दशभुज सोहे, त्रिगुण रूप निरखता त्रिभुवन जन मोहे ॥ ओं जय० ॥ अक्षमाला बनमाला मुंडमाला धारी, चन्दन मृगमद चन्द्र भाल पै सोहे शुभकारी ॥ ओं जय० ॥ श्वेताम्बर, पीताम्बर, बाघम्बर अंगे, ब्रह्मादिक सनकादिक भूतादिक संगे ॥ ओं जय० ॥ करके मध्य कमण्डलु चक्र त्रिशूल धरता, जग करता जग भर्ता, जगसंहार करता ॥ ओं जय० ॥ ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका । प्रणवाक्षर मध्ये ये तिनों एका ॥ओं जय०॥ त्रिगुणात्मककी आरती जो कोई नर गावै । भनत शिवानन्द स्वामी सुख-सम्पति पावै ॥ ओं जय० ॥

❀ अथ बजरंगबाण ❀

दोहा—निश्चय प्रेम प्रतीति ते, विनय करैं सनमान ।
तेहिके कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान ॥

जय हनुमन्त सन्त हितकारी ❀ सुनि लीजै प्रभु अरज हमारी
जन के काज विलम्ब न कीजै ❀ आतुर दौरि महा सुख दीजै
जैसे कूदि सिन्धु वहि पारा ❀ सुरसा बदन पैठि बिस्तारा
आगे जाइ लंकिनी रोका ❀ मारेहु लात गई सुर लोका
जाय विभीषण को सुख दीन्हा ❀ सीता निरखि परम पद लीन्हा
बाग उजारि सिन्धु महँ बोरा ❀ अति आतुर यम कातर तोरा
अक्षय कुमार को मारि संहारा ❀ लूम लपेटि लंक को जारा
लाह समान लंक जरि गई ❀ जै जै धुनि सुरपुर महँ भई
अब विलम्ब केहि कारण स्वामी❀ कृपा करहु उर अन्तरयामी
जै जै लक्ष्मण प्राण के दाता ❀ आतुर होइ दुख करहु निपाता

गिरिधर जै जै सुख सागर ❀ सुर समूह समरथ भट नागर
ओं हनु हन हनु हनुमन्त हठीले ❀ बैरिहिं मारु वज्र की कीले
गदा वज्र लै बैरिहिं मारो ❀ महाराज प्रभु दास उबारो
ओंकार हुंकार महा प्रभु धावो ❀ गदा वज्र हनु बिलंब न लावो
ओं ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमन्त कपीसा ❀ ओं हुँ हुँ हुँ हनु अरि उर शीशा
सत्य होहु हरि सत्य पायकै ❀ राम दूत अरि मारु धायकै
जै जै जै हनुमन्त अगाधा ❀ दुख पावत जन केहि अपराधा
पूजा जप तप नेम अचारा ❀ नहिं जानत है दास तुम्हारा
वन उपवन मग गिरि गृह माहीं ❀ तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं
पाँय परौं कर जोरि मनावौं ❀ येहि अवसर अब केहि गोहरावौं
जै अञ्जनि कुमार बलवन्ता ❀ शंकर सुवन वीर हनुमन्ता
बदन कराल काल कुल घालक ❀ राम सहाय सदा प्रति पालक
भूत परेत पिशाच निशाचर ❀ अग्नि बैताल काल मारी मर
इन्हैं मारु तोहिं शपथ रामकी ❀ राखु नाथ मर्याद नामकी
जनकसुता हरिदास कहावो ❀ ताकी शपथ विलम्ब न लावो
जै जै जै धुनि होत अकाशा ❀ सुमिरत होत दुसह दुख नाशा
शरण शरण कर जोरि मनावौं ❀ यहि अवसर अब केहि गोहरावौं
उठु उठु चलु तोहिं राम दोहाई ❀ पाँय परौं कर जोरि मनाई
ओं चं चं चं चं चपल चलन्ता ❀ ओं हनु हनु हनु हनु हनु हनुमन्ता
ओं हं हं हाँक देत कपि चंचल ❀ ओं सं सं सहमि पराने खलदल
अपने जन को तुरत उबारो ❀ सुमिरत होय आनन्द हमारो
यह बजरंग बाण जेहि मारो ❀ ताहि कहो फिर कौन उबारो
पाठ करै बजरंग बाण की ❀ हनुमत रक्षा करैं प्राण की
यह बजरंग बाण जो जापै ❀ तेहि भूत प्रेत सब काँपै
धूप देय अरु जपै हमेशा ❀ ताकै तन नहिं रहे कलेशा

दोहा—प्रेम प्रतीतिहिं कपि भजै, सदा धरैं उर ध्यान ।
तेहिके कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान ॥

॥ इति श्रीगोस्वामीतुलसीदासजीकृत बजरंगबाण समाप्त ॥

मुद्रक—ठाकुर प्रसाद प्रेस ... गली, वाराणसी

